अर्हम्

सकलस्वपरसमयपारावारपारीण-तीर्थरक्षणप्रवण-विद्यापीठादि-
स्थानपञ्चकसमाराधक-शासनसम्राट् सूरिचक्रचक्रवर्त्ति जग-
गुरुतपोगच्छाधिपतिभट्टारकाचार्यवर्यपरमगुरु-श्रीमद्विजय-
नेमिसूरिभगवद्भ्यो नमः ॥



स्वपरसमयपारावारपारीण-तीर्थोद्धारैकनिबद्धकक्ष-अखण्डविजय-
तपोगच्छाधिराज-भट्टारक-श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वर-
पट्टालङ्कारान्तेवासि न्यायवाचस्पति-शास्त्रविशारदा-
चार्य श्रीविजयदर्शनसूरि-शिष्यरत्न-
मुनिश्री-गुणविजयप्रणीता

# ॥ हैमधातुमाला ॥

तपोगच्छाधिराज-विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीय
तपोगच्छाचार्यश्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासि-
सिद्धान्तवाचस्पति-न्यायविशारदाचार्यश्रीविजयोदय-
सूरि-पट्टालङ्कारान्तेवासि-न्यायवाचस्पति-सिद्धान्त-
मार्त्तण्ड-शास्त्रविशारद-कविरत्न-विजयनन्दन-
सूरिणा बहुषु स्थलेषु परिवर्धिता ।

प्रकाशिका—
जैनग्रन्थप्रकाशक सभा.
घीकांटावाडी-अमदावाद.

द्वितीयावृत्तिः ] सन्ने १९३० [ प्रत १०००

मुद्रणादि सर्वेऽप्यधिकाराः स्वायत्तीकृता प्रकाशकेन

पुस्तकमिदं अमदावाद "घीकांटा वाडी" अन्तर्गत "जैन एडवोकेट"

मुद्रणालये वाडीलाल बापुलाल शाह

इत्यनेन मुद्रितम् ।

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-शासनसम्राट्-सूरिचक्रचक्रवर्त्ति जगद्गुरु—

तपोगच्छाधिपति-भट्टारक

## आचार्य श्रीविजयनेमिसूरीश्वरः



| | | |
|---|---|---|
| पन्यासपद सं, १९६० | | सूरिपद सं. १९६४ |
| मागर शु. ३ | | ज्येष्ठ शु. ५ |
| जन्म सं. १९२९ | दीक्षा सं. १९४५ | गणिपद सं. १९६० |
| कार्तिक शु. १ | ज्येष्ठ शु. ७ | कार्तिक कृष्ण ७ |

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र सूरिचक्रचक्रवर्ति शासनसम्राट् जगद्गुरु तपागच्छाधिपति
भट्टारकाचार्य श्रीमद् विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कार शिष्यरत्न.
न्यायवाचस्पति शास्त्रविशारद आचार्यश्री

## ॥ विजयदर्शनसूरीश्वरः ॥



जन्म सं. १९४३ दीक्षा सं. १९५९, सूरिपद सं. १९७९

॥ अर्हम् ॥

## ॥ प्रस्तावना ॥



जैनेन्द्रशासनरसिकसज्जनाः ! इह खलु सुविदितमेतज्जगत्यस्मिन्नपरिशेषप्रेक्षावतां यदुत निःश्रेयसनिबन्धनहेयोपादेयज्ञानोपयोगि-जैनसुगतमीमांसककपिलाक्षपादादिनिःशेषमतानुयायिराद्धान्तग्रन्थानां ज्योतिर्वैद्यकसामुद्रिकनिमित्तकाव्यनाटयादिसाहित्यप्रभृतिग्रन्थानां च गीर्वाणगीर्गुम्फितत्वान्न तदविसंवादि परिज्ञान पदपदार्थज्ञानमृते, पदपदार्थज्ञानं च परमार्थतो नयनिक्षेपादिभिरिधिगमोपायैः, व्यवहारस्तु प्रकृतिप्रत्ययविवेकादेव, तद्विवेकश्च व्याक्रियन्ते-व्युत्पाद्यन्ते-प्रकृतिप्रत्ययादिविभागविषयतामापाद्यन्ते शब्दा अनेनेति व्युत्पत्त्याऽन्वर्थाभिधायिनो व्याकरणादेवेत्यावश्यकं तस्याध्ययनमिति ॥ तदेव चाभिसन्धाय गुर्जरमेदिनीपतिश्रीसिद्धराजाभ्यर्थनया सार्धत्रिकोटिश्लोकमितग्रन्थप्रासादविनिर्माणवर्धकिभिः प्रतिबोधितकरुणाधर्मविस्तारकपरललनासहोदरपरमार्हतराजर्षिश्रीकुमारपालाद्यगण्यभव्यनिवहैः कलिकालसर्वज्ञैर्भगवद्भिः **श्रीहेमचन्द्रसूरिपुरन्दरैः** प्रणीतं निःशेषशब्दशास्त्रेषु शिरोमणिभावं बिभ्रत्स्वोपज्ञबृहल्लघुवृत्तिबृहन्न्यासादिविभूषितं **श्रीसिद्धहेमशब्दानुशासनाभिधानं** व्याकरणमिति ॥ परमस्य प्रयोगाननुपातिसूत्रक्रमेण सन्दब्धत्वेन महामतिशालिभिरेव तदधिगन्तुमलमिति परामृश्य सर्वेषां मन्दमन्दतरमन्दतमशेमुषीशालिनामपि समनुग्रहाय तत एवोद्धृत्य संज्ञासन्धिलिङ्गकारकादिप्रकरणक्रमतः प्रणिन्ये बृहल्लघुपरमलघुहेमप्रभाभिधानव्याकरणत्रिकं सूरिचक्रचक्रवर्त्ति-शासनसम्राट्तपोगच्छाधिपति-जगद्गुरु- **श्रीमद्विजयनेमिसूरिभगवद्भिरिति** ॥ व्याकरणे च तत्र द्विधा साधनिका स्याद्यन्तपदसाधनिका तिवाद्यन्तपदसाधनिका च । तत्र स्याद्यन्तपदेष्वपि प्रायो धातुजशब्दानामेव प्राचुर्यमिति धातुप्रयोगस्वरूपज्ञानमेवात्यावश्यकम् ॥ तदुपायभूताश्च यद्यपि क्रियारत्नसमुच्चयादयो बहवो ग्रन्था दरीदृश्यन्ते, परं न तत्प्रणालिका बालजीवानां तथाविधोपकारप्रत्यलेत्यालोच्य विनिर्मितोऽयं बालजीवोपकारक्षमः **श्रीहैमधातुमालेत्यभिधानो** ग्रन्थः-पूज्यपाद-प्रातःस्मरणीयचारित्रादिगुणयोगक्षेमविधायक-विमलब्रह्मचर्यप्रधानलोकोत्तरसद्गुणनिधान-जङ्गमकल्पतरु-कलिकालगुरुगौतमसंनिभ-श्रीजैनेन्द्रशासनतीर्थरक्षणपरायण-परोपकारशील-भावकरुणाजलनिधि-भावाचार्यपुर-

न्द्र-श्रीस्थानाङ्गोक्तपञ्चातिशयधारकसूरिचक्रचक्रवर्त्ति-शासनसम्राट्-तपोगच्छाधिपति-जगद्गुरुश्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टपूर्वाचलनभोमणि-न्यायवाचस्पतिशास्त्रविशारद-पूज्यपाद-श्रीमद्विजयदर्शनसूरिशिष्यरत्नमुनिश्रीगुणविजयेनेति ॥

सोऽयं ग्रन्थप्रणेता-पूर्वं सौराष्ट्रजनपदान्तर्गत " बोटाद " ग्रामवास्तव्यवणिग्वर पानाचन्द्रात्मजनागरदासभार्याझवेरीरत्नकुक्षिसम्भवो नाम्ना गुलाबचन्द्र इति । बभूवास्य जन्म गजवेदनिधीन्दुप्रमिते (१९४८) वैक्रमीये संवत्सरे भाद्रपदसितपञ्चम्यामिति ॥ समाददे च जैनेन्द्रीं प्रव्रज्यां चन्द्रहयनिधिनिशाकरमिते [१९७१] वैक्रमीये संवत्सरे मृगशीर्षासितपञ्चम्यामिति ॥ ततोऽधीतलघुहैमप्रभा-तर्कसंग्रह-न्यायमुक्तावल्यादिग्रन्थः पपाठ सिद्धान्तवाचस्पति-न्यायविशारदपरमोपकारकाचार्यवर्यश्रीमद्विजयोदयसूरीणां पार्श्वे प्रज्ञापना-लोकप्रकाशादिसैद्धान्तिकग्रन्थानिति । व्यरचयच्चायं-स्तोत्रमालां तदनु प्रस्तुतग्रन्थं च । अलमकार्षीच्च स्वर्गमयं शशिकरिनिधिनिशीथिनीनाथप्रमिते [१९८१] वैक्रमीयसंवत्सरे पौषमासासितपक्षद्वितीयायामिति ॥ ग्रन्थे चास्मिन् पूर्वविभागे हैमधातुपाठक्रमेण प्रायः सर्वेषां भ्वादिगणस्थधातूनां वर्त्तमानादिविभक्तिभाविरूपाणि, द्वितीयविभागे च-णिगन्तादिप्रक्रियाप्रपयोगिदुरवबोधधातूनां रूपाणि ॥ परिवर्धितश्चायं ग्रन्थाध्येतॄणां प्रभूतोपकारकः स्याद्यथा बहुषु स्थलेषु सूरिचक्रचक्रवर्त्ति-शासनसम्राट् तपोगच्छाधिपति-जगद्गुरुश्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टपूर्वाचलगगनमणि-परमोपकारि-पूज्यपाद-सिद्धान्तवाचस्पति-न्यायविशारदाचार्यवर्य श्रीमद्विजयोदयसूरिपट्टालङ्कारान्तेवासि-न्यायवाचस्पति-सिद्धान्तमार्त्तण्ड-शास्त्रविशारद कविरत्न-पूज्यपाद-श्रीमद्विजयनन्दनसूरिभिरिति ॥ समशोधि चायं सूरिचक्रचक्रवर्त्ति-शासनसम्राट्-तपोगच्छाधिपतिजगद्गुरु श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरशिष्यरत्न मुनिश्रीगीर्वाणविजयेन ॥ अस्मिंश्च ग्रन्थे ये भ्रमप्रमादादिनिबन्धनदोषा ये च मुद्रणव्यापारादिजन्याक्षरमात्रादिच्युत्याधिक्यादिदोषास्तान् विशदीकरिष्यन्ति कृपापरा विपश्चितः । वितन्यतां परमां मुदं पाठकानामयमाजैनेन्द्रशासनमित्यावेदयति—

वीर सं० २४५६
विक्रम सं० १९८६
आश्विन शुक्ल दशमी.

श्रुतयोगसम्पत्सम्पादनादिप्रभूतोपकाराधायक-
श्रीगुरुविजयनेमिसूरीश्वरचरणकिङ्करः
पन्यासपद्मविजयो गणिः ॥

सर्वतन्त्रस्वतंत्र सूरिचक्रचक्रवर्त्ति, शासनसम्राट् जगद्गुरु तपागच्छाधिपति
भट्टारकाचार्य श्रीमद् विजयनेमिसूरीश्वर पट्टालङ्कार शिष्यरत्न
सिद्धान्तवाचस्पति न्यायविशारद आचार्यश्री

## ॥ विजयोदयसूरीश्वरः ॥



ज. सं. १९४४ दीक्षा सं. १९६२ सूरिपद सं. १९७९



# द्वितीयावृत्तिनी प्रस्तावना

आ ग्रन्थनी प्रथम आवृत्ति पाटणनिवासी सद्धर्मैकनिष्ठ संघवी शेठ नगीनदास करमचंद तरफथी छपाववामां आवी हती परंतु तेनी नकल फकत ५०० छपाववामां आवी हती. संस्कृतना अभ्यासी वर्गने अति उपयोगी होवाना कारणे चारे तरफ मागणी विशेष थवाथी घणा सुधारा वधारा साथे आ द्वितीय आवृत्ति बहार पाडवामां आवी छे, जेमां नीचे प्रमाणे वधारो करवामां आव्यो छे

दरेक धातुओना गुजराती भाषामां अर्थ आपवामां आव्या छे, दशविभक्ति संबंधी विचार दाखल कर्यो छे, दरेक प्रकरणमां मतमतान्तराना रूपो पण दाखल करेला छे, तेमज "उपसर्गवृत्ति, तथा उपसर्गवर्ग" ए नामना प्राचीन ग्रन्थो उपयोगी होवाथी पाछळना भागमां दाखल कर्या छे,

तेमज आग्रन्थना रूपो शुद्ध करवामां खास ध्यान आपवामां आवेलुं छे, छतां प्रेस दोषथी जे कांइ अशुद्धि रही होय ते सुज्ञपुरुषोए सुधारी वांचवा विनन्ति छे.

वीर सं.
विक्रम सं० १९८६
आश्विन शुक्ल दशमी.

ली० ग्रन्थप्रकाशक सभा ना
ओनररी सेक्रेटरी.
वाडीलाल बापुलाल शाह.
पांजरापोळ-अमदावाद.

## ॥ हैमधातुमालास्थधातूनामकाराद्यक्षरानुपूर्व्या सूची ॥

## ॥ अथ द्वितीयविभागे णिगन्तप्रक्रियाधातूनामनुक्रमणिका ॥

## अथ सन्नन्त-प्रक्रियानुक्रमणिका

अथ यङ्लुगन्त प्रक्रियानुक्रमणिका

# अथ शुद्धिपत्रकम्

| अशुद्ध | शुद्ध | पत्र | पं. |
|---|---|---|---|
| ध्रास्यथः | ध्रास्यतः | ३ | २८ |
| अस्मापुः | अस्मार्पुः | ९ | १४ |
| स्वयासु. | स्वर्यासुः | १० | १७ |
| ध्ययासम् | ध्यायासम् | १३ | २१ |
| हष | हर्ष | १४ | २८ |
| प | सँ | १४ | १४ |
| ० | सायति असासीत् असात् सेयात्। मतान्तरे असात् सेयाद्विति न भवति | १४ | २१ |
| मथयोः | मर्थयोः | १६ | २५ |
| ललच् | ललञ्ज | २१ | ४ |
| आञ्जीत् | आजीत | २३ | २५ |
| लज्यात् | लाज्यात् | २४ | ५ |
| ० | अजाजीत् अजजीत् | २४ | ११ |
| केरतु | करतु। | २५ | २६ |
| लाल्ये | वाल्ये | २५ | १८ |
| उवोटिठ | उवोटिठ | २६ | ८ |
| शेषे | देशे | २६ | २५ |
| च्योतिष्यामि | च्योतिष्यसि | २९ | २२-२३ |
| च्योतिष्यसि | च्योतिष्यामि | | |
| स्कदेतम् | स्कन्देतम् | ३१ | २ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| स्कदेव | स्कन्देव | ३२ | ३ |
| शिषेद्ध, शिषिद्ध | सिषेद्ध सिषिद्ध | ३३ | २० |
| सिषेधिस | सिषेधिथ | ३३ | २२ |
| सिषित | सिषिध | ,, | ,, |
| | मतान्तरे सायादित्याद्यपि | ३४ | १६ |
| धूपायितास्त: | धूपायितास्म: | ३६ | १६ |
| ० | चुम्बति, अचुम्बीत्, चुचुम्ब | ३८ | २४ |
| जभति । अजभीत् । अजाभीत् जजाभ-जेभतुः जेभिथ । | जम्भति, अजम्भीत् जजम्भ | ३८ | ३१ |
| अक्मरीत् | अक्मारीत् | ४१ | ३२ |
| शाल | शील | ४२ | १९ |
| गता | गतौ | ४२ | ८ |
| छिव्यात् छिव्यास्तामित्यादि | छीव्यात् छीव्यास्ताम् छीव्यासुः | ४३ | ३१ |
| दृशृं क्षणे | दृशृं प्रेक्षणे | ४४ | २४ |
| घर्षृ | घुर्षृ | ४५ | २२ |
| ० | लूषतीत्यादि मतान्तरे, | ४६ | २९ |
| वृष | वृषू | ४७ | २५ |
| मृषू | मुषू | ४७ | २ |
| मृपु | मृषू | ४७ | १ |
| प्लृष | प्लुषु | | |
| ० | शंसू स्तुतौ च ॥ शंसति | ४[illegible] | ३५ |
| वह | वृह | ५० | ३ |
| वृहृ | वृहृ | ५० | ७ |
| वृहु | वृहु | ५० | ७ |
| अद्दने | अर्दने | ५० | ९ |
| ० | आक्ष्यत् आक्ष्यताम् आक्ष्यन् इत्याद्यपि | ५२ | १० |
| ० | तनूकरणादन्यार्थे श्नुर्न भवति । | ५२ | ३२ |
| डय | डयै | ५५ | ९ |
| ओष्यति | ओष्यते | ५६ | ७ |
| ध्रकते | ध्रेकते | ५८ | ७ |
| स्रकृङ् | रेकृङ् | ५८ | २२ |
| सष्वक्के | षष्वक्के | ५८ | ३१ |
| ० | धातुपारायणे आनृञ्जे | ५९ | २६ |
| स्विदुङ् | श्विदुङ् | ६४ | २ |
| स्विन्दते अस्विन्दिष्ट | श्विन्दते अश्विन्दिष्ट | ६४ | ३ |
| सिस्विन्दे | शिश्विन्दे | ६४ | ३ |
| एधि | येधि | ६५ | १७ |
| पधि | ,, | | |
| वाधृङ् | बाधृङ् | ६ | २३ |
| वा-३- | वा-२ | ६५ | २५ |
| टूवेपृङ् | टुवेपृङ् | ६७ | ३१ |
| ० | मतान्तरे त्रेपृध्वे त्रेपृवहे त्रेपृमहे इत्यपि | ६८ | २९ |
| ० | अर्थान्तरे गोपते गोपयति | ६८ | २९ |
| ० | पारायणे तु बीभृङ् । बीभते इति | ६९ | १३ |
| जभते अजभिष्ट जेभे | अजम्भिष्ट । जजम्भे । | ६९ | ३४ |
| भासष्ये | भासिष्ये | ७७ | ६ |
| असिषे | आसिषे | ७७ | २८ |
| आसिष्यन्त | आसिष्यन्ते | ७७ | ४ |
| नेसे | ननासे | ७८ | ३५ |
| अवहिष्ट | अवर्हिष्ट | ७८ | २४ |
| ग्लहौङ् | ग्लहौङ् | ७९ | २० |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ईक्षाञ्चक्रिरे | ईक्षाञ्चक्रिरे | ८१ | ८ |
| नेष्ते | नेष्यते | ८४ | २ |
| अहर्म | अहार्ष्म | ८४ | २३ |
| ढ्वम् | ० | ८४ | २० |
| भृङ्ग | भृंग् | ८४ | ३४ |
| भाषुः | अभार्षुः | ८५ | १३ |
| धृङ् भत्ता | भर्त्ता धृग् | ८५ | २७ |
| डुकृङ | डुकृंग् | ८६ | १८ |
| याचृङ् | याचृग्,याञ्च,याम् | ८७ | १७ |
| | भ्राजृधातोर्नित्य मात्मनेपदं भवति इति भ्राजतीत्यादि परस्मैपदरूपाणि सर्वाण्यप्यशुद्धानि, प्रमादतो मुद्रिता नीति बोध्यम् | ८९ | ५ |
| भ्राजिषीढ्वम् | भ्राजिषीध्वम् | ९० | |
| मेदते अमेदिष्ट | मेदति अमेदीत् | ९२ | ३२ |
| मृधृग | मृधृग् | ९३ | ३ |
| अमृधिष्ट | अमृधिष्ट | ९३ | ५ |
| अमधिष्ट | अमर्धिष्ट | ९५ | ३१ |
| शिशांसाञ्चके | शिशांसाञ्चक्रे | | |
| शीयांमांचकार | शिशांसाञ्चकार | ९५ | ३२ |
| तिन्वषिरे | तित्विषिरे | ९९ | २८ |
| जुगूहतुः जुगूहुः | जुगुहतुः | १०० | ४ |
| तित्वषिथ | तित्वेषिथ | ९८ | ३३ |
| | मतान्तरे जुगोढ जुगुह्व जुगुह्म | १०१ | ६ |
| अघोक्ष्याव | अधोक्ष्याव | १०० | २७ |
| न्यधृङ्ढ्वम् | न्यधृढ्वम् | १०० | ११ |
| | घोतथाम् घोतेथाम् | १०१ | ११ |
| शर्धे | शर्धेरन् | १०४ | ९ |
| चक्लृप्ध्वे | चक्लृप्ध्वे | १०५ | ३४ |
| चक्लृपवहे | चक्लृप्वहे | १०५ | ३४ |
| | कल्सा कल्प्तासि कल्प्तास्मि इत्याद्यपि | १०५ | १२ |
| घृतादयः | घुतादयः | १०५ | ३१ |
| | मतान्तरे एत्वं न | १०८ | १८ |
| सकर्मांड | सकर्मकोढ | १०८ | १८ |
| | ववृद्वे इत्यपि | ११३ | १६ |
| | वहा वढाव | ११६ | १६ |
| ऋधिव ऋदिम | ऋध्वि ऋध्मि | ११८ | २८ |
| ऊर्जवे | ऊर्जने | १२० | १ |
| | मतान्तरे असीषीत् इत्यादि | १२४ | ५ |
| केचित्तु | केचित्तु तुरुस्तु धातुभ्यो व्यञ्जनादौ शिति ईतमिच्छन्ति यथा तुतः तुवीतः इत्यादि | १२५ | १ |
| शब्द | शुद्ध | १३५ | १ |
| अवर्जिध्वम् | | | |
| दृध्वम | दृढ्वम् | १३५ | २१ |
| इड्ढ्वम | ईड्ढ्वम् | १३५ | १४ |
| पेड्ढाः | पड्ढाः | १३५ | १६ |
| पडिड्ढ्वम् | पड्ढ्वम | १३५ | १९ |
| इष्टे | ईष्टे | १३६ | ७ |
| स्यमि | स्यामि | १३८ | १७ |
| त्रुगुक् | त्रुंगुक् | १४१ | १ |
| त्रमहे | त्रमते | १४२ | १ |
| अत्रवहि | अत्रुवहि | १४२ | १० |
| अद्रट् | अद्रट् | १४२ | ५ |
| द्विक्ष्य | द्विक्ष्व | १४२ | ३२ |
| द्वपै | द्वेपै | १४२ | ३३ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अलीढ्ढृवम् ढ्ढवम् | अलीढ्ढवम् | १४५ | १९ |
| जहिहि | जह्निहि जहीहि | १४७ | ७ |
| ओहांक् | ओहाङ्क् | १५० | १७ |
| अद्दार्प्सुः | अदार्प्सुः | १७० | २६ |
| अन्नप्स्य | अन्नप्स्यन् | १७० | १ |
| संयस्यामि | संयस्यामि | १७६ | १२ |
| दुद्रोग्धा | दुद्रोग्ध | १८२ | ३३ |
| दुदुवि वे | दुदुविढ्वे | १८५ | २२ |
| धीढ्ढ्च् | धीङ्ग्च् | १८५ | ३४ |
| मोढ्ढ्च् | मीङ्ग्च् | ,, | ३६ |
| रीढ्ढ्च् | रीङ्ग्च् | १८६ | २ |
| लिढ्ढ्च् | लीङ्ग्च् | ,, | ४ |
| ० | मतान्तरे, दुधोथ इत्यपि | २०४ | ११ |
| ध्वम् | ढ्वम | २०४ | २० |
| वरिथ | ववरिथ | २०७ | ३३ |
| स्मयासु | स्मर्यासुः | २१० | ५ |
| अस्ताढः | अंसाढ | २११ | ४ |
| आप्लुंढ्ढ | आप्लंढ्ढ | २१२ | २० |
| ० | मतान्तरे आनक्षे आनड्ढ्वे आनक्ष्वहे आनश्महे इत्यपि | २१५ | १८ |
| वहै—महै | " वहे—महे | २२० | २० |
| कीयास्तम् | कीर्यास्तम् | | |
| कीयास्त | कीर्यास्त | २२९ | १ |
| ओव्रश्चीत् | ओव्रस्चीत् | २३० | ३१ |
| ऋच्छत | ऋछत | २३१ | २ |
| विच्छत | विछत् | ,, | ३४ |
| | पारायणकृतस्तु वाया मृच्छन्ति, तन्मते विच्छतीत्यादि. | २३२ | १ |
| उच्छैत् | उछैत् | २३२ | २२ |
| मिच्छत् | मिछैत् | २३२ | २४ |
| उच्छुत् | उछुत | ,, | २६ |
| प्रच्छत | प्रच्छुत | ,, | २८ |
| ततर्फिय | ततर्फिथ | २३६ | ३५ |
| तृफत | तृम्फत | २३७ | १३ |
| अस्पृशत | अस्पृशन् | २३९ | ११ |
| स्फस्फुलत | स्फरुत् | ,, | ८ |
| इपुः | ईपुः | २४२ | २४ |

२४४ पत्रनी २९ लीटीमां तृंहति विगेरे वर्तमाना सप्तमी पंचमी, ह्यस्तनी आ चार रुपो छे ते दरेकमां तृहति । तृहेत् । तृहतु । अतृहत । आ प्रमाणे समजवा अनुस्वार नही

तेम २४५ पत्रमां स्तृंहति स्तृंहतः विगेरे वर्तमाना सप्तमी पंचमी, ह्यस्तनी, आ चार रूपो छे त्यां पण स्तृहति । स्तृहेत् । स्तृहतु । अस्तृहत् । ए प्रमाणे समजवा अनुस्वार नही

| | | | |
|---|---|---|---|
| घुव | ध्रुव | २४७ | १६ |
| घुड | थुड | २४९ | ३१ |
| थुडति अथुडीत तुथुडिथ | | | |
| घुडति अघुडीत जुघुडिथ | | २४९ | ३३ |
| आत्रियै | आद्रिये | २५२ | १४ |
| धृक्त | धृंक्त | २५२ | २७ |
| कधुम्पी | कधुंपी | २५५ | २३ |
| रिट्टम्पी | रिट्टंपी | २५५ | २० |
| विट्टम्पी | विट्टंपी | २५६ | १७ |
| क्षुदुम्पी | क्षुद्दंपी | २५ | २६ |
| भिदम्पी | भिद्दंपी | २५८ | १० |
| भिनाद्धि | भिन्द्धि | २५८ | २८ |
| छिदम्पी | छिदंपी | २५९ | १३ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| उछृदृम्पी | उछृदृंपी | २६० | ६ |
| ० | आशिषि छृत्सीष्ट छृत्सीयास्ताम् छृत्सीरन् इत्यादि अस्मत्सम्मतं, अन्याभिप्रायेण तु छर्दिषीष्ट इत्यादि बोध्यम | २६१ | २९ |
| अतदिष्ठाः | अतर्दिष्टाः | २६२ | २९ |
| भुञ्जन् | अभुञ्जन् | २६४ | ७ |
| ओविजैप् | ओविजैप् | २६५ | ३२ |
| इद्धे | इन्द्धे | २६९ | १४ |
| ० | अतनीत अतनिश्चामित्याद्यपि | २७० | २५ |
| ० | मतान्तरे सायादित्याद्यपि | २७१ | १५ |
| अघत | अघृत | २७६ | १२ |
| अश्रेषीत् | अश्रैषीत् | २८१ | ८ |
| युग्रा | युंगश्र | २८२ | १ |
| गृण्हाण | गृहाण | २८६ | ३३ |
| कीर्षीध्वम् | कीर्षीढ्वम् | २९२ | २८ |
| भृणावः भृणामः | भृणीवः भृणीमः | २९८ | २४ |
| भृणीव भृणीव | भृणाव भृणाम | २९८ | ३० |
| ऋश्र | ऋश्र | ३०१ | १० |
| हेठ्ठान | हेठान | ३०३ | १२ |
| शश्रान्थ | शश्रन्थ | ३०३ | २४ |
| गजयाञ्चकार | गाजयाञ्चकार | ३१२ | २५ |
| छुटण् | छुट्टण् | ३१२ | ८ |
| ० | पारायणकृन्मते तु आदिट्टदित्यादि | ३१३ | ६ |
| श्वठ | श्वाठ | ३१३ | ११ |
| यश्लीलत | अश्लीलत्त | ,, | २१ |
| अचखडत | अचीखडत् | ३१५ | १६ |
| प्रथ धातुना दरेक रूपोमां प्राथने बदले प्रथ समजवुं प्रथयतीत्यादि | | ३१७ | ३४ |
| ० | अन्यमते परिवेषणे यमयति अन्यत्र यामयति | ३१९ | १४ |
| पुसण् | पुंसण् | ३२१ | २ |
| सज्ञ | संज्ञ | ३२३ | ३ |
| कादित्वाच्छना | क्यादित्वाच्छ्ना | ३२३ | २२ |
| संज्ञयि | संज्ञपयि | ३२३ | ९ |
| ० | मतान्तरे अचिच्यवत् इति न । | ३२६ | २५ |
| वंचिण् | वञ्चिण् | ३२९ | १६ |
| अमीमन्त | अमीमनन्ते | ३३० | १० |
| व | च | ३३२ | ४ |
| ,, | ,, | ,, | ५ |
| डंपि डिंपि | डम्पि डिम्पि | | |
| डंभि | डम्भि | ३३२ | ७ |
| अंकण् | अङ्कण | ३३३ | ८ |
| यथयत्ति | कथयति | ३३५ | ३२ |
| ध्राथयत्ति | श्रथयति | ,, | ३४ |
| ० | अचविढ्वम् इत्यपि | ३४४ | १५ |
| ० | अजरद्दिति न सूरिसम्मतम् | ३४५ | २१ |
| आसाप्सीदित्यादि | आसत्ता आसीत्सीदित्यादि | ३४७ | ७ |
| शुंधिण | शुन्धिण | ,, | १३ |
| अशुन्धित् | अशुन्धिष्ट | ,, | १५ |

॥ हैमधातुमाला द्वितीयभागस्य शुद्धिपत्रकम् ॥

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | पंक्ति |
|---|---|---|---|
| श्रु | श्रुं | ६ | ३१ |
| वथः | वथाः | ७ | ११ |
| अस्ति | आशि | ७ | १२ |
| अशु- | अनु- | ८ | ५ |
| अशया | अशशा | ८ | १५ |
| चक | चका | ९ | २९ |
| ,, | ,, | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, |
| चकर्थ | चकर्थ | १० | १ |
| इन्त | इन्त | ११ | १ |
| इ | इ | १२ | ३ |
| ० अविवेष्टत अविवेष्टताम अविवेष्टन | | १२ | २३ |
| अवष्ट | अवेष्ट | १२ | ४ |
| स्थ | स्थः | १४ | ३३ |
| पावहे | पयावहे | २२ | १७ |
| वथः | वथाः | २४ | १३ |
| चि | चिं | ३० | २९ |
| यिष्यम् | यिष्यन् | ३१ | २६ |
| यायचकु | यावकुः | ३७ | ४ |
| भूपि | अपि | ४० | २१ |
| चकिछ | चकिङ् | ४९ | १० |
| वुधू | वुधूं | ५० | २८ |
| विजू | विजूं | ५२ | २८ |
| स्तृ | स्तृं | ५३ | १६ |
| प्री | प्रीं | ५५ | २ |
| मी | मीं | ५५ | ३ |
| भिपु | भूषि | ५६ | १५ |
| वुभू | वुभू | ५६ | २६ |
| अटि | आटि | ५६ | ३ |
| क्षया | क्षा | ५८ | २८ |
| धिकीर्षा | चिकीर्षा | ६० | ७ |
| इङ्क | इङ्क् | ६० | १२ |
| गासे | गांसे | ६० | १२ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | पंक्ति |
|---|---|---|---|
| ,, | ,, | ,, | २१ |
| पु | पुः | ६३ | ७ |
| दुध | दुग्ध | ६३ | ३५ |
| ,, | ,, | ६३ | ३७ |
| विय | विष | ६४ | ६ |
| बम् | षम् | ६४ | २५ |
| ,, | षम् | ६४ | २५ |
| उर्णु | ऊर्णु | ६५ | २३ |
| षित् | ष्ठत | ६९ | ३ |
| स्व | स्व | ६८ | ८ |
| ० प्रावविवरिष्यात् | | ६८ | २३ |
| वित् | वीत् | ६९ | ३ |
| तृ | तृ | ६९ | ६ |
| त्लि | त्सी | ७० | ४ |
| तये | तरे | ७१ | १५ |
| ऊच्छ् | उच्छ् | ७१ | २२ |
| निते | चिते | ७३ | २३ |
| वञ्चु | वञ्चू | ७३ | १२ |
| रन | रन् | ७६ | ५ |
| भू | भूय | ७६ | ९ |
| बोभू | बोभू | ७६ | १७ |
| स्व | स्व | ७६ | २८ |
| पत्र | पत्रं | ७६ | ५ |
| पीष्ट | पीष्ट | ७६ | ८-२९-३२ |
| प्व | ष्व | ७६ | २५ |
| अटा | आटा | ७७ | ७ |
| मूत्र | मूत्र | ७७ | १४ |
| अर्णु | ऊर्णु | ७७ | १८ |
| तरी | नरी | ७७ | २३ |
| लिय | लिथ | ७८ | ५ |
| ,, | ,, | ७९ | ३३ |
| शाशा | शाशा | ७८ | ३४ |
| कुषि | कुषि | ८० | २९ |
| थाम् | थाः | ८० | ३० |
| लुब्ध | लुब्ध | ८१ | ३ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | पंक्ति |
|---|---|---|---|
| द्रुम | द्रुम | ८२ | ७ |
| यात | यात् | ८२ | १३ |
| याम | याम | ८२ | १८ |
| योभवम् | योभवम् | ८२ | ९ |
| भोत | भोत् | ८२ | १४ |
| बत्रा | भत्रा | ८२ | १९ |
| ,, | ,, | ,, | २० |
| ह्नमि | ह्नमि | ८३ | ३ |
| जाधा | जागाधा | ८३ | २० |
| ह्मात् | ह्माः | ८८ | २० |
| जरी | जरि | ८८ | २६ |
| जगृ | जगृं | ८८ | ३१ |
| जरि | जरी | ८८ | ३३ |
| पप | पपं | ८९ | १४ |
| ष्ठा | ष्टा | ८९ | २ |
| पर्ह | पर्हं | ८९ | १० |
| पपृ | पर्पृ | ८९ | २७ |
| पाणि | पाणिनि | ९० | १७ |
| जग | जरिग | ९२ | २६ |
| व्यूः | व्युः | ९२ | १८ |
| जजू | जाजू | ९३ | १२ |
| त्वरि | त्वरी | ९३ | २७-२८ |
| घमः | भमः | ९४ | ८ |
| जोहो | जोहो | ९४ | १८-२९ |
| श्रि | श्रिव | ९६ | ७ |
| श्रिव | शेश्रिव | ९६ | १५ |
| स्थः | त्यः | ९७ | ८ |
| क्य | कय | ९७ | २३ |
| वय | कय | ९७ | २८ |
| वोर्ही | वर्ही | ९८ | १२ |
| अण्ड | अकण्ड | १०३ | ११ |
| पूया | पूजा | १०३ | १५ |
| जजोः | जयोः | १०३ | २० |

॥ श्री जिनाय नमः ॥

## आ ग्रन्थमा प्रथम ५६ पाना सुधी धातुओना गुजराती अर्थ लखवा रही गयेला ते अहीं जोडया छे.

| | | |
|---|---|---|
| भू | सत्तायाम् ( थवुं होवुं ) | २ |
| पां | (पीवुं) | ,, |
| घ्रां | सुंघवुं | २ |
| ध्मां | [शब्द करवो शङ्ख विगेरे वगाडवा फुंकवुं, धमवुं | ३ |
| म्नां | अभ्यास करवो, मनन करवुं, | ३ |
| ष्ठां | उभा रहेवुं | ४ |
| दाम् | देवुं | ४ |
| जि | जितवुं | ५ |
| ज्रि | ,, | ५ |
| क्षि | क्षय पामवुं | ६ |
| इं | जवुं | ७ |
| दुं | ,, | ,, |
| द्रुं | ,, | ,, |
| शुं | ,, | ,, |
| स्रुं | ,, | ८ |
| ध्रुं | स्थिर थवुं, जवुं | ८ |
| श्रुं | जाणवुं, संमति आपवी, ठकुराइ भोगववी | ९ |
| स्मृं | याद करवो | ९ |
| गृं घृं | छांटवुं | ९ |
| ओंस्वृ | शब्द करवो, | १० |
| सृं | जवुं | १० |
| वृ | ढांकवुं, स्वीकारवुं | १० |
| ध्वृं | वांकुं करवुं | १० |
| ह्वृं | वक्रता करवी | १० |
| ऋं | लइ जवुं, जवुं | ११ |
| तॄं | तरवुं, पार जवुं | ११ |
| ट्धें | पीवुं | १२ |
| दैंव् | शुद्ध करवुं | |
| ध्यैं | ध्यान करवुं, विचारवुं | १३ |
| फक्क् | धीमे चालवुं, खोटो व्यवहार करवो | १४ |
| ग्लैं | करमावुं, क्षीण थवुं, ग्लान थवुं | १४ |
| म्लैं | फीका चेरावाला थवुं, करमावुं | ,, |
| धैं | अंगने खराब करवुं तिरस्कारवुं | ,, |
| द्रैं | सुवुं | ,, |
| ध्रैं | तृप्त थवुं | ,, |
| कैं गैं रैं | शब्द करवो | ,, |
| ष्ट्यैं स्त्यैं | ढगला रूप थवुं एकठुं करवुं | ,, |
| खैं | हिंसा करवी, स्थिर थवुं खोदवुं | ,, |
| क्षैं जैं सैं | क्षीण थवुं | ,, |
| स्रैं श्रैं | पकाववुं | ,, |
| पैं | सुकाववुं | ,, |
| ओवैं | ,, | ,, |
| ष्टैं | वींटवुं | ,, |
| तक | हसवुं | ,, |
| तकु | दुःखी अवस्थामां जीववुं | १५ |
| शुक | जवुं | १५ |
| बुक्क | भसवुं | १६ |
| ओखृ | सुकावुं, समर्थ थवुं शोभाववुं, अटकाववुं | |
| राखृ | | |
| लाखृ | | |
| द्राखृ | | |
| ध्राखृ | ,, | |
| शाखृ | व्यापीने रहेवुं | १६ |
| श्लाखृ | ,, | ,, |
| कक्ख | हसवुं | १७ |
| उख | जवुं | ,, |
| नख णख भख | | |
| रख लख वख | जवुं | ,, |
| मखु रखु लखु | | |
| रिखु रगु लगु | | |
| तगु श्रगु श्लगु. | | |
| वगु मगु स्लगु | | |
| रिगु लिगु | जवुं | १८ |
| इख, ईखु, इखु | | |

| | | |
|---|---|---|
| ईगु उगु | जवुं | „ |
| वल्ग | जवुं | „ |
| अगु | „ | „ |
| त्वगु | धूजवुं, जवुं | „ |
| युगु, जुगु, वुगु | वर्जन करवुं | „ |
| गघ | हसवुं | „ |
| दघु | पालवुं | „ |
| शिघु | सुंघवुं | „ |
| मघु | शणगारवुं | „ |
| लघु | मुकाववुं | १९ |
| शुच | शोक करवो | „ |
| कुच | मोटो अवाज करवो | „ |
| कुञ्च | वांकु करवुं, छोटा थवुं | „ |
| क्रुञ्च | „ | „ |
| लुञ्च | नकामी वस्तु फेंकी देवी | „ |
| वञ्चू चञ्चू | | |
| तञ्चू त्वञ्चू | | |
| मञ्चू मुञ्चू | | |
| पस्च | जवुं | „ |
| अर्च | पूजवुं | २० |
| क्रञ्चू | जवुं | „ |
| म्रुच | „ | „ |
| म्लुचू ग्लुञ्चू | „ | २१ |
| ग्रुचू ग्लुचू | चोरी करवी | „ |
| म्लेच्छ | अस्पष्ट बोलवुं | |
| वाछु | इच्छवुं | „ |
| लाछु लछ | निशानी वालुं करवुं, बतलाववुं | „ |
| आछु | लांबुं थवुं, लांबुं करवुं | २१ |
| ह्रीच्छ | शरमावुं | „ |
| हुर्छा | वक्रता करवी | „ |
| मुर्छा | मूर्छा पामवी, उंचा वधवुं | „ |
| स्फुर्छा स्मुर्छा | भुली जवुं | „ |
| युच्छ | आलस करवी, प्रमाद करवो | „ |
| ध्रज | जवुं | २२ |
| धृजू, ध्वजु ध्रजु | | |
| ध्रज, ध्वज वज | | |
| पस्ज | जवुं | „ |

| | | |
|---|---|---|
| कुजू खुजू | चोरी करवी | „ |
| अर्ज, सर्ज | मेळववुं, कमावुं | „ |
| कर्ज | पीडा करवी | „ |
| खर्ज | साफ करवुं, पीडा करवी | |
| खज | मंथन करवुं | „ |
| खजु | लंगडा चालवुं | „ |
| व्रज | जवुं | „ |
| अज | फेंकवुं, जवुं | २३ |
| एजृ | धुजवुं | „ |
| ट्वो स्फूर्जा | वज्रनो शब्द थवो, कडाको थवो | „ |
| क्षीज, कूज | | |
| गुज गुजु | अर्थ नहि समजाय तेवुं, बोलवुं | „ |
| लज लजु तर्ज | ठपको आपवो | |
| लाज लाजु | भुंजवुं, ठपको आपवो | „ |
| जज जजु | युद्ध करवुं | २४ |
| तुज | हिंसा करवी | „ |
| तुजु | श्वास लेवो मुकवो हिंसा करवी | „ |
| गर्ज | शब्द करवो | |
| गजु, गृजु | | |
| मुजु, मृजु | „ | „ |
| गृज, मृज | | |
| मुज, मज | „ | „ |
| गज | मद करवो, शब्द करवो | „ |
| त्यज | त्याग करवो | „ |
| षञ्ज | सोबत करवी, वळगवुं | „ |
| कटे | वरसवुं, ढांकवुं | २५ |
| शट | जवुं, पतला थवुं, रोगी थवुं सडी जवुं | „ |
| वट | विंटवुं | „ |
| किट खिट | भय पामवुं, त्रास पमाडवो | „ |
| शिट, षिट | अनादर करवो | „ |
| जट, झट | एकठुं करवुं, जत्थारूप थवुं | „ |
| पिट | शब्द करवो, एकठुं करवुं | „ |
| भट | भाडुं लेवुं,(पगार लेवो पोषण करवुं | „ |
| तट | उंचु वधवुं | „ |
| णट | नाचवुं | „ |

| | | |
|---|---|---|
| षट | विभाग करवो, एक भाग होवुं | ,, |
| पट | जवुं | ,, |
| लट | बालक्रिया करवी, बोलवुं | ,, |
| रट | बोलवुं | |
| खट | अभिलाषा करवी | ,, |
| हट | चलकवुं | ,, |
| कट, कटे | जवुं | |
| लुट | आलोटवुं | ,, |
| मुट | मरडवुं | ,, |
| चुट | नानुं थवुं, थोडुं थवुं | २५ |
| स्फुट | फुटी जवुं | २६ |
| चिट | दास थवुं मोकलवुं | ,, |
| बिट | शब्द करवो | ,, |
| किट | जवुं | ,, |
| हेट | दुःख देवुं, रोकवुं | ,, |
| अट इट, कट्ट | जवुं | ,, |
| कुट्ट | विकलता करवी | ,, |
| चुट्ट | नानुं थवुं | ,, |
| वट्ट | जुदुं करवुं | ,, |
| रुट्ट | चोरी करवी | ,, |
| लुट्ट | ,, | ,, |
| स्फट | फुटी जवुं | ,, |
| स्फुट | ,, | ,, |
| रट | बोलवुं | ,, |
| पठ | स्पष्ट बोलवुं | ,, |
| वठ | जाडा थवुं | ,, |
| मठ | मद करवो, रहेवुं जाडा थवुं | ,, |
| कठ | दुःखी अवस्थामां जीववुं | ,, |
| हठ | हठ करवुं | ,, |
| उठ | खेद पमाडवो | |
| रुठ | ,, सामे मारवुं | |
| लुठ | ,, | |
| पिट | हिंसा करवी, क्लेश करावबो क्लेश पामवो | |
| शठ | कपट करवुं, हिंसा करवी दुःख पामवुं | ,, |
| शुठ | गति अटकाववी | ,, |
| कुठ | आलस करवी, गति अटकाववी | |

| | | |
|---|---|---|
| लुठ | ,, | २६ |
| शुठ | सुकाववुं | ,, |
| रुठ, अठ | जवुं | ,, |
| पुड | मरडवुं | ,, |
| मुड | वाळ कपाववा, मर्दन करवुं | ,, |
| मड | शणगारवुं | ,, |
| गड | मुखना एक भाग थवुं | ,, |
| शौडृ | अभिमान करवुं | ,, |
| यौडृ | जोडावुं | ,, |
| लौड | गांडा थवुं | ,, |
| रौडृ | अनादर करवो | २७ |
| तौडृ | ,, | |
| होडृ | जवुं | |
| मेडृ | गांडा थवुं | |
| म्रेडृ | ,, | |
| लेडृ | ,, | |
| लोडृ | ,, | |
| रोडृ | अनादर करवुं | २७ |
| क्रीडृ | क्रीडा करवी | |
| तुडृ तूडृ | तोडी नाखवुं | |
| हुडृ हूडृ | जवुं | |
| खोडृ | गति अटकाववी, लंगडा थवुं | |
| विड | तर्जना करवी | |
| अड | उद्यम करवो | |
| लड | रमवुं, लाड करवा | |
| कड्ड | मद करवो | |
| कड्ड | कठिण थवुं | |
| अड्ड | हल्लो करवो सामे जोडावुं | |
| चुड्ड | भाव जणाववो | |
| रण, वण, भण | | |
| चण शाण | शब्द करवो | |
| वण व्रण भ्रण | | |
| धण ध्वण ध्रण | | |
| कण क्वण | शब्द करवो | २८ |
| अण | शब्द करवो | |
| ओणृ | दूर करवुं | |
| शोण | लाल थवुं, जवुं | |

| | | |
|---|---|---|
| श्रोणृ | भेगा थवुं | |
| श्लोणृ | ,, | |
| पंणृ | जवुं. प्रेरणा करवी, भेटवुं | |
| चिंत | जाणवुं | |
| अत | निरंतर जवुं | |
| च्युतृ | थोडुं छांटवुं | |
| चुतृ स्तुतृ श्च्युतृ | झरवुं | २९ |
| जुतृ | झळकवुं | |
| अतु | बांधवुं | |
| कित | वसवुं | |
| कृत | दया करवी जवुं हरीफाइ करवी | |
| कुथु पुथु लुथु | | |
| मथु मन्थ मान्थ | हिंसा करवी, पीडा करवी | ३० |
| खाद | खावुं, | |
| वद | स्थिर थवुं | |
| खद | हिंसा करवी, स्थिर थवुं | |
| गद | स्पष्ट बोलवुं | |
| रद | खोदवुं उखेडवुं | |
| णद | अस्पष्ट बोलवुं | |
| ञिक्ष्विदा | ,, | |
| अर्द | जवुं, मागवुं | ३१ |
| नर्द णर्द गर्द | शब्द करवो | |
| तर्द | हिंसा करवी | |
| पर्द | पादवुं | |
| खर्द | सर्पनुं करडवुं | |
| अदु | बांधवुं | |
| इदु | ठकुराइ भोगववी | |
| णिदु | निन्दा करवी | |
| विदु | एक भागमां क्रिया करवी | |
| टुनदु | समृद्धिवाळा थवुं | |
| चदु | झळकवुं, आनन्द पमाडवो | ३२ |
| त्रदु | चेष्टा करवी | |
| कदु क्रदु क्लदु | रडवुं, बोलाववुं | |
| क्लिदु | शोक करवो | |
| स्कन्द | जवुं, सुकावुं | |
| षिधू | जवुं | |
| षिधौ | शास्त्र संबंधी शिखामण देवी | |
| | मंगलकारी काम करवुं | |
| शुन्ध | शुद्ध थवुं करवुं | |
| स्तन ध्वन चन | शब्द करवो | ३३ |
| वन | ,, | |
| स्वन वन षन | भजन करवुं | |
| कन | झळकवुं शोभवुं जवुं | |
| गुपौ | रक्षण करवुं | |
| तपं | सन्ताप करवो | |
| धूप | तापवुं तपाववुं | |
| जल्प | स्पष्ट बोलवुं | |
| रप लप | ,, | |
| जप | जपवुं स्पष्ट बोलवुं | |
| चप | खुशी करवुं | |
| षप | एक थइ जवुं | |
| सृप्लृ | जवुं | |
| चुप | धीमे धीमे जवुं | ३७ |
| तुप तुम्प त्रुप | | |
| त्रुम्प तुफ तुम्फ | | |
| त्रुफ त्रुम्फ | हिंसा करवी | ३८ |
| पर्फ रफ | जवुं | |
| कुबु | ढांकवुं | |
| लुबु | दुखः आपवुं | |
| तुबु | ,, | |
| चुबु | चुंबन करवुं | |
| षृभू षृम्भू | | |
| षिभू षिभू | हिंसा करवी | |
| शुम्भ | बोलवुं, हिंसा करवी | |
| जभ यभं | मैथुन करवुं | ३९ |
| यमू | निवृत्त थवुं | |
| ष्यमू | शब्द करवो | |
| णम | नमवुं | |
| चमू छमू | | |
| जमू झमू | खावुं | ३९ |
| जिमू क्रमू | चालवुं | ४० |
| षम ष्टम | कायर थवुं | ४० |
| अम | जवुं | |
| अम द्रम हम्म मीमृ | जवुं | ४० |

गम्लृ जवुं ४०
हृत्र हुर्य थाकी जवुं, जवुं ४१
मव्य बांधवुं
सूर्क्ष्य ईर्क्ष्य
ईर्ष्य ईर्ष्या करवी ४१
शुच्य चुच्य प्रवाही वस्तुथी प्रवाही वस्तुने
सुगन्धि बनाववी
हसर कपटथी जवुं
षमर वक्रता करवी
अभ्र वभ्र मभ्र जवुं
चर खावुं
धोर्ऋ चतुराईथी जवुं
खोर्ऋ लुला थावुं, लंगडावुं
दल खडी जवुं, ( फाडवुं ) ४१
ञिफला ,, ,,
मील, श्मील
स्मील क्ष्मील संकोचित करवुं, मींचावुं ४२
पील रोपवुं, रोकवुं ,,
णील लीला थवुं, रंगवुं ,,
शील एकाग्र थवुं, चिंतववुं ,,
कील बांधवुं ,,
कूल ढांकवुं ,,
शूल रोगी थवुं
तूल अंदरनी वस्तुने बहार काढवी
पूल एकठुं करवुं
मूल आधार रूप थवुं
फल सिद्ध थवुं, फळवुं ४२
फुल्ल खोलवुं ४२
चुल्ल मैथुननी इच्छाथी शरीरनी
चेष्टा करवी
चिल्ल ढीला थवुं, संभोगनी इच्छाथी
शरीरनी चेष्टा करवी
पेलृ इत्यादि जवुं, ,,
वेलृ इत्यादि चालवुं ,,
खल एकठुं करवुं, चालवुं ,,
भल चल जल्दी जवुं ,,
गल गर्व खावुं, स्रववुं ,,

पूर्व पर्व मर्व पूरवुं
मर्व शव जवुं
थव ,,
मर्वति अमर्वीत
ममर्व, धन्वति
अधन्वीत् दधन्व
इति शुद्धम्,
क्षिवू ष्ठिवू थुंकवुं, फेंकवुं
कर्व खर्व गर्व अभिमान करवो
जीव जीववुं ४३
पीव मीव तीव जाडा थवुं ,,
नीव
उर्वी तुर्वी थुर्वी
दुर्वी धुर्वी जुर्वी
अर्व मर्व शर्व हिंसा करवी ,,
मुर्वी मव बन्धने बांधवुं ,,
गुर्वी उद्यम करवो, उगामवुं ,,
पिवु, मिवु, निवु छांटवुं ,,
हिवु, दिवु, जिवु खुश करवुं ४४
इवु व्यापीने रहेवुं, खुश करवुं ,,
अव पाळवुं, जवुं, शोभवुं, प्रेम करवो
तृप्त थवुं, जाणवुं, अंदर जवुं
सांभळवुं, मांगवुं, इच्छवुं,
चळकवुं, मेळववुं भेटवुं हणवुं बाळवुं
करवुं, वधवुं, होवुं समर्थ थवुं
मिश मश क्रोध करवो, शब्द करवो
कश शब्द करवो
शश ठेकता, ठेकता चालवुं ,,
णिश एकाग्र थवुं ,,
दृशृ जोवुं ,,
दंश करडवुं, डसवुं ,,
घुषिर् शब्द करवो ४५
चूष पीवुं ,,
तूष सन्तोष पामवो ,,
पूष वधवुं ,,
लुष, मूष चोरी करवी ,,
सूष जन्म आपवो, परवानगी करवी

| | | |
|---|---|---|
| ऊष | रोगी थवुं | |
| ईष | वीणवुं | |
| कृषं | हळ खेडवुं | ४६ |
| कष इत्यादि | हिंसा करवी | ४७ |
| श्रृष | जत्था रुप थवुं, हिंसा करवी | ,, |
| भष | खराब शब्द करवो, भसवुं | ,, |
| जिषू इत्यादि | छांटवुं | ,, |
| मृषू | सहन करवुं, छांटवुं | ,, |
| उष इत्यादि | बाळवुं | ,, |
| घृषू | घसवुं | ,, |
| हृषू | जुठुं बोलवुं, मिथ्या करवु | ,, |
| पुष | पुष्ट थवुं | ,, |
| भूष तसु | शोभाववुं | ,, |
| तुस इत्यादि | शब्द करवो | ,, |
| लस | भेटवुं, क्रिडा करी | |
| पिसृ पेसृ वेसृ | जवुं | ,, |
| शंसू | वखाणवुं, हिंसा करवी | |
| घस्लृं | खावुं | |
| हसे | हसवुं | |
| शसू | हिंसा करवी | |
| मिहं | छांटवुं | |
| दहं | बाळवुं | |
| चह | लुच्चाइ करवी ठगवुं | |

| | | |
|---|---|---|
| रह | त्याग करवो | |
| रह | जवुं | |
| दृह, दृहु, बृह | वधवुं | ५० |
| बृहुँ बृहु | शब्द करवो, वधवुं | ,, |
| उहृँ तुहृँ दुहृँ | पीडा करवी | ,, |
| अर्हं | पूजवुं | ,, |
| लह | ,, | ,, |
| उक्ष | छांटवुं | ५१ |
| रक्ष | रक्षण करवुं | ,, |
| मक्ष, मुक्ष | एकठा थवुं ( रोकवुं ) भरवुं | ,, |
| अक्षौ | व्यापीने रहेवुं, एकठा थवुं | ,, |
| तक्षौ, त्वक्षौ | छोलवुं, पातळुं थवुं | ५२ |
| णिक्ष | चुंबन करवुं | ५३ |
| तृक्ष, स्तृक्ष | | |
| णक्ष | जवुं | ५३ |
| वक्ष | क्रोध करवो | |
| त्वक्ष | चामडी पकडवी ढांकवुं | |
| सूर्क्ष्य | अनादर करवो | |
| काक्षु, वाक्षु | | |
| माक्षु | अभिलाषा करवी | |
| द्राक्षु, ध्राक्षु | | |
| ध्वाक्षु | मोटो शब्द करवो, अभिलाषा करवी | |

श्री जैन ग्रन्थप्रकाशकसभानुं पुस्तक प्रसिद्ध खातुं

जैनधर्मना महान् तत्त्वज्ञानथी भरपूर.



| | | |
|---|---|---|
| १ सम्बोधप्रकरण | मुल्य रु, | १—८—० |
| ३ न्यायालोकवृत्ति (तत्वप्रभा) | ,, | ५—०—० |
| २ स्याद्वादबिन्दु. | ,, | २—०—० |
| ४ जैनतत्त्वपरीक्षा | ,, | ०—७—० |
| ५ स्तोत्रभानु. | ,, | ०—४—० |
| ६ नवतत्त्वविस्तरार्थ ५० फरमानु डेमी साइझमां | ,, | ३—०—० |
| ७ दण्डकविस्तरार्थ २५ फरमानु ,, | ,, | १—०—० |
| ८ धातुरत्नाकर पहेलो भाग | ,, | ३—०—० |
| ८ ,, बीजो भाग | ,, | ४—०—० |
| १० जैनमुक्तावली अने समुद्घाततत्त्व | ,, | १—०—० |
| ११ हैमधातुमाला. | ,, | ४—०—० |

मळवानुं ठेकाणुं—

श्री जैन ग्रन्थप्रकाशक सभा.

घीकांटा, शेठ. डेसींगभाइनी वाडीमां

श्री जैन एडवोकेट प्रेस—अमदावाद,

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र शासनसम्राट् सूरिचक्रचक्रवर्ति जगद्गुरु तपागच्छाधिपति भट्टारकाचार्यश्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारशिष्यरत्न न्यायवाचस्पति शास्त्रविशारदाचार्य श्री विजयदर्शनसूरिशिष्यरत्न–

## ॥ मुनिगुणविजयः ॥



| | | |
|---|---|---|
| जन्म सं. १९४८ | दीक्षा सं. १९७१ | स्वर्ग सं. १९८१ |
| भाद्रपद शु. ५ | मृगशीर्ष कृष्ण ५ | पोष कृष्ण ३ |

॥ अर्हम् ॥

॥ श्रीस्तम्भनपतिपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्रीश्रुतदेवतायै नमः ॥

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र–सूरिचक्रचक्रवर्त्ति–शासनसम्राड्जगद्गुरु–तीर्थसंरक्षणप्रवण–विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक–तपोगच्छाधिपतिभट्टारकाचार्यवर्य परमगुरु–श्रीमद्विजयनेमिसूरिभगवद्भ्यो नमः ॥

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र–सूरिचक्रचक्रवर्त्ति–शासनसम्राड्जगद्गुरु–तपोगच्छाधिराजभट्टारकश्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासि–न्यायवाचस्पति शास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजय–दर्शनसूरिसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ सर्वतन्त्रस्वतन्त्र–सूरिचक्रचक्रवर्त्ति–शासनसम्राड्जगद्गुरु–तपोगच्छाधिराजभट्टारकश्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासि–सिद्धान्तवाचस्पति–न्यायविशारदाचार्य–श्रीविजयोदयसूरिभ्यो ज्ञानदातृभ्यो नमः

॥ मुनिश्री गुणविजयप्रणीता ॥

# ॥ हैमधातुमाला ॥

जयत्यशेषान्तरशात्रवान्तको, मलोज्झितज्ञानविभासिताखिलः ।
सुरासुरैः सेवितपादपङ्कजः, सुतथ्यवाक् स्तम्भनतीर्थनायकः ॥१॥

वीरं नौमि त्रिभुवननतं गौतमं लब्धिपूर्ण,
वाचं जैनीं भविकशिवदां विश्वकल्पद्रुकल्पाम् ।
विद्वद्वृन्दप्रणतचरणं नेमिसूरीश्वरं च,
न्यायस्नातं गुरुवरमहं दर्शनं सूरिवर्यम् ॥ २ ॥

स्वल्पधीरप्यहं हैम–धातुमालां सुबोधदाम् ।
गुणविजय आतन्वे सद्गुरूणां प्रसादतः ॥ ३ ॥

॥ भू-सत्तायाम्, ॥ वर्त्तमाना-लट्-

भवति भवतः भवन्ति
भवसि भवथः भवथ
भवामि भवावः भवामः

सप्तमी-लिङ्—

भवेत् भवेताम् भवेयुः
भवेः भवेतम् भवेत
भवेयम् भवेव भवेम

पञ्चमी लोट्-

भवतु भवतात्-भवताम् भवन्तु
भव ,, भवतम् भवत
भवानि भवाव भवाम

ह्यस्तनी-लङ्-

अभवत् अभवताम् अभवन्
अभवः अभवतम् अभवत
अभवम् अभवाव अभवाम

अद्यतनी-लुङ्-

अभूत् अभूताम् अभूवन्
अभूः अभूतम् अभूत
अभूवम् अभूव अभूम

परोक्षा-लिट्-

बभूव बभूवतुः बभूवुः
बभूविथ बभूवथुः बभूव
बभूव बभूविव बभूविम

आशीः-लिङ्-

भूयात् भूयास्ताम् भूयासुः
भूयाः भूयास्तम् भूयास्त
भूयासम् भूयास्व भूयास्म

श्वस्तनी-लुट्-

भविता भवितारौ भवितारः
भवितासि भवितास्थः भवितास्थ
भवितास्मि भवितास्वः भवितास्मः

भविष्यन्ति-लृट्-

भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति
भविष्यसि भविष्यथः भविष्यथ
भविष्यामि भविष्यावः भविष्यामः

क्रियातिपत्ति लृङ्-

अभविष्यत् अभविष्यताम् अभविष्यन्
अभविष्यः अभविष्यतम् अभविष्यत
अभविष्यम् अभविष्याव अभविष्याम

॥ पां-पाने, ॥

व० पिबति पिबतः पिबन्ति
पिबसि पिबथः पिबथ
पिबामि पिबावः पिबामः

स० पिबेत् पिबेताम् पिबेयुः
पिबेः पिबेतम् पिबेत
पिबेयम् पिबेव पिबेम

प० पिबतु पिबतात् पिबताम् पिबन्तु
पिब ,, पिबतम् पिबत
पिबानि पिबाव पिबाम

ह्य०अपिबत् अपिबताम् अपिबन्
अपिबः अपिबतम् अपिबत
अपिबम् अपिबाव अपिबाम

अ० अपात् अपाताम् अपुः
अपाः अपातम् अपात
अपाम् अपाव अपाम

प० पपौ पपतुः पपुः
पपाथ पपिथ पपथुः पप
पपौ पपिव पपिम

आ०पेयात् पेयास्ताम् पेयासुः
पेयाः पेयास्तम् पेयास्त
पेयासम् पेयास्व पेयास्म

श्व०पाता पातारौ पातारः
पातासि पातास्थः पातास्थ
पातास्मि पातास्वः पातास्मः

भ० पास्यति पास्यतः पास्यन्ति
पास्यसि पास्यथः पास्यथ
पास्यामि पास्यावः पास्यामः

क्रि० अपास्यत् अपास्यताम् अपास्यन्
अपास्यः अपास्यतम् अपास्यत
अपास्यम् अपास्याव अपास्याम

॥ घ्रां गन्धोपादाने, ॥

व० जिघ्रति जिघ्रतः जिघ्रन्ति
जिघ्रसि जिघ्रथः जिघ्रथ
जिघ्रामि जिघ्रावः जिघ्रामः

स० जिघ्रेत् जिघ्रेताम् जिघ्रेयुः
जिघ्रेः जिघ्रेतम् जिघ्रेत
जिघ्रेयम् जिघ्रेव जिघ्रेम
प० जिघ्रतु जिघ्रतात् जिघ्रताम् जिघ्रन्तु
जिघ्र ,, जिघ्रतम् जिघ्रत
जिघ्राणि जिघ्राव जिघ्राम
ह्य० अजिघ्रत् अजिघ्रताम् अजिघ्रन्
अजिघ्रः अजिघ्रतम् अजिघ्रत
अजिघ्रम् अजिघ्राव अजिघ्राम
अ० अघ्रात् अघ्राताम् अघ्रुः
अघ्राः अघ्रातम् अघ्रात
अघ्राम् अघ्राव अघ्राम
अघ्रासीत् अघ्रासिष्टाम् अघ्रासिषुः
अघ्रासीः अघ्रासिष्टम् अघ्रासिष्ट
अघ्रासिषम् अघ्रासिष्व अघ्रासिष्म
प० जघ्रौ जघ्रतुः जघ्रुः
जघ्राथ जघ्रिथ जघ्रथुः जघ्र
जघ्रौ जघ्रिव जघ्रिम
आ० घ्रेयात् घ्रेयास्ताम् घ्रेयासुः
घ्रेयाः घ्रेयास्तम् घ्रेयास्त
घ्रेयासम् घ्रेयास्व घ्रेयास्म
घ्रायात् घ्रायास्ताम् घ्रायासुः
घ्रायाः घ्रायास्तम् घ्रायास्त
घ्रायासम् घ्रायास्व घ्रायास्म
श्व० घ्राता घ्रातारौ घ्रातारः
घ्रातासि घ्रातास्थः घ्रातास्थ
घ्रातास्मि घ्रातास्वः घ्रातास्मः
भ० घ्रास्यति घ्रास्यतः घ्रास्यन्ति
घ्रास्यसि घ्रास्यथः घ्रास्यथ
घ्रास्यामि घ्रास्यावः घ्रास्यामः
क्रि० अघ्रास्यत् अघ्रास्यताम् अघ्रास्यन्
अघ्रास्यः अघ्रास्यतम् अघ्रास्यत
अघ्रास्यम् अघ्रास्याव अघ्रास्याम

॥ ध्मा–शब्दाग्निसंयोगयोः ॥

व० धमति धमतः धमन्ति
धमसि धमथः धमथ
धमामि धमावः धमामः
स० धमेत् धमेताम् धमेयुः
धमेः धमेतम् धमेत
धमेयम् धमेव धमेम
प० धमतु धमतात् धमताम् धमन्तु
धम ,, धमतम् धमत
धमानि धमाव धमाम
ह्य० अधमत् अधमताम् अधमन्
अधमः अधमतम् अधमत
अधमम् अधमाव अधमाम
अ० अध्मासीत् अध्मासिष्टाम् अध्मासिषुः
अध्मासीः अध्मासिष्टम् अध्मासिष्ट
अध्मासिषम् अध्मासिष्व अध्मासिष्म
प० दध्मौ दध्मतुः दध्मुः
दध्माथ दध्मिथ, दध्मथुः दध्म
दध्मौ दध्मिव दध्मिम
आ० ध्मेयात् ध्मेयास्ताम् ध्मेयासुः
ध्मेयाः ध्मेयास्तम् ध्मेयास्त
ध्मेयासम् ध्मेयास्व ध्मेयास्म
ध्मायात् ध्मायास्ताम् ध्मायासुः
ध्मायाः ध्मायास्तम् ध्मायास्त
ध्मायासम् ध्मायास्व ध्मायास्म
श्व० ध्माता ध्मातारौ ध्मातारः
ध्मातासि ध्मातास्थः ध्मातास्थ
ध्मातास्मि ध्मातास्वः ध्मातास्मः
भ० ध्मास्यति ध्मास्यतः ध्मास्यन्ति
ध्मास्यसि ध्मास्यथः ध्मास्यथ
ध्मास्यामि ध्मास्यावः ध्मास्यामः
क्रि० अध्मास्यत् अध्मास्यताम् अध्मास्यन्
अध्मास्यः अध्मास्यतम् अध्मास्यत
अध्मास्यम् अध्मास्याव अध्मास्याम

॥ म्ना–अभ्यासे ॥

व० मनति मनतः मनन्ति
मनसि मनथः मनथ
मनामि मनावः मनामः

| | | | |
|---|---|---|---|
| स० | मनेत् | मनेताम् | मनेयुः |
| | मनेः | मनेतम् | मनेत |
| | मनेयम् | मनेव | मनेम |
| प० | मनतु मनतात् | मनताम् | मनन्तु |
| | मन ,, | मनतम् | मनत |
| | मनानि | मनाव | मनाम |
| ह्य० | अमनत् | अमनताम् | अमनन् |
| | अमनः | अमनतम् | अमनत |
| | अमनम् | अमनाव | अमनाम |
| अ० | अम्नासीत् | अम्नासिष्टाम् | अम्नासिषुः |
| | अम्नासीः | अम्नासिष्टम् | अम्नासिष्ट |
| | अम्नासिषम् | अम्नासिष्व | अम्नासिष्म |
| प० | मम्नौ | मम्नतुः | मम्नुः |
| | मम्नाथ मम्निथ | मम्नथुः | मम्न |
| | मम्नौ | मम्निव | मम्निम |
| आ० | म्नेयात् | म्नेयास्ताम् | म्नेयासुः |
| | म्नेयाः | म्नेयास्तम् | म्नेयास्त |
| | म्नेयासम् | म्नेयास्व | म्नेयास्म |
| | म्नायात् | म्नायास्ताम् | म्नायासुः |
| | म्नायाः | म्नायास्तम् | म्नायास्त |
| | म्नायासम् | म्नायास्व | म्नायास्म |
| श्व० | म्नाता | म्नातारौ | म्नातारः |
| | म्नातासि | म्नातास्थः | म्नातास्थ |
| | म्नातास्मि | म्नातास्वः | म्नातास्मः |
| भ० | म्नास्यति | म्नास्यतः | म्नास्यन्ति |
| | म्नास्यसि | म्नास्यथः | म्नास्यथ |
| | म्नास्यामि | म्नास्यावः | म्नास्यामः |
| क्रि० | अम्नास्यत् | अम्नास्यताम् | अम्नास्यन् |
| | अम्नास्यः | अम्नास्यतम् | अम्नास्यत |
| | अम्नास्यम् | अम्नास्याव | अम्नास्याम |

॥ ष्ठां—गतिनिवृत्तौ ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | तिष्ठति | तिष्ठतः | तिष्ठन्ति |
| | तिष्ठसि | तिष्ठथः | तिष्ठथ |
| | तिष्ठामि | तिष्ठावः | तिष्ठामः |
| स० | तिष्ठेत् | तिष्ठेताम् | तिष्ठेयुः |
| | तिष्ठेः | तिष्ठेतम् | तिष्ठेत |
| | तिष्ठेयम् | तिष्ठेव | तिष्ठेम |
| प० | तिष्ठतु तिष्ठतात् | तिष्ठताम् | तिष्ठन्तु |
| | तिष्ठ ,, | तिष्ठतम् | तिष्ठत |
| | तिष्ठानि | तिष्ठाव | तिष्ठाम |
| ह्य० | अतिष्ठत् | अतिष्ठताम् | अतिष्ठन् |
| | अतिष्ठः | अतिष्ठतम् | अतिष्ठत |
| | अतिष्ठम् | अतिष्ठाव | अतिष्ठाम |
| अ० | अस्थात् | अस्थाताम् | अस्थुः |
| | अस्थाः | अस्थातम् | अस्थात |
| | अस्थाम् | अस्थाव | अस्थाम |
| | अध्यष्ठात् | अध्यष्ठाताम् | अध्यष्ठुः |
| | अध्यष्ठाः | अध्यष्ठातम् | अध्यष्ठात |
| | अध्यष्ठाम् | अध्यष्ठाव | अध्यष्ठाम |
| प० | अधितष्ठौ तस्थौ, | तस्थतुः | तस्थुः |
| | तस्थाथ तस्थिथ, | तस्थथुः | तस्थ |
| | तस्थौ | तस्थिव | तस्थिम |
| आ० | स्थेयात् | स्थेयास्ताम् | स्थेयासुः |
| | स्थेयाः | स्थेयास्तम् | स्थेयास्त |
| | स्थेयासम् | स्थेयास्व | स्थेयास्म |
| श्व० | स्थाता | स्थातारौ | स्थातारः |
| | स्थातासि | स्थातास्थः | स्थातास्थ |
| | स्थातास्मि | स्थातास्वः | स्थातास्मः |
| भ० | स्थास्यति | स्थास्यतः | स्थास्यन्ति |
| | स्थास्यसि | स्थास्यथः | स्थास्यथ |
| | स्थास्यामि | स्थास्यावः | स्थास्यामः |
| क्रि० | अस्थास्यत् | अस्थास्यताम् | अस्थास्यन् |
| | अस्थास्यः | अस्थास्यतम् | अस्थास्यत |
| | अस्थास्यम् | अस्थास्याव | अस्थास्याम |

॥ दां दाने, ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | यच्छति | यच्छतः | यच्छन्ति |
| | यच्छसि | यच्छथः | यच्छथ |
| | यच्छामि | यच्छावः | यच्छामः |
| स० | यच्छेत् | यच्छेताम् | यच्छेयुः |
| | यच्छेः | यच्छेतम् | यच्छेत |

यच्छेयम् यच्छेव यच्छेम
प० यच्छतु यच्छतात् यच्छताम् यच्छन्तु
यच्छ ,, यच्छतम् यच्छत
यच्छानि यच्छाव यच्छाम
ह्य० अयच्छत् अयच्छताम् अयच्छन्
अयच्छः अयच्छतम् अयच्छत
अयच्छम् अयच्छाव अयच्छाम
अ० अदात् अदाताम् अदुः
अदाः अदातम् अदात
अदाम् अदाव अदाम
प० ददौ ददतुः ददुः
ददाथ ददिथ ददथुः दद
ददौ ददिव ददिम
आ० देयात् देयास्ताम् देयासुः
देयाः देयास्तम् देयास्त
देयासम् देयास्व देयास्म
श्व० दाता दातारौ दातारः
दातासि दातास्थः दातास्थ
दातास्मि दातास्वः दातास्मः
भ० दास्यति दास्यतः दास्यन्ति
दास्यसि दास्यथः दास्यथ
दास्यामि दास्यावः दास्यामः
क्रि० अदास्यत् अदास्यताम् अदास्यन्
अदास्यः अदास्यतम् अदास्यत
अदास्यम् अदास्याव अदास्याम

॥ जि अभिभवे ॥

व० जयति जयतः जयन्ति
जयसि जयथः जयथ
जयामि जयावः जयामः
स० जयेत् जयेताम् जयेयुः
जयेः जयेतम् जयेत
जयेयम् जयेव जयेम
प० जयतु जयतात् जयताम् जयन्तु
जय ,, जयतम् जयत
जयानि जयाव जयाम
ह्य० अजयत् अजयताम् अजयन्
अजयः अजयतम् अजयत
अजयम् अजयाव अजयाम
अ० अजैषीत् अजैष्टाम् अजैषुः
अजैषीः अजैष्टम् अजैष्ट
अजैषम् अजैष्व अजैष्म
प० जिगाय जिग्यतुः जिग्युः
जिगयिथ जिगेथ जिग्यथुः जिग्य
जिगाय जिगय जिग्यिव जिग्यिम
आ० जीयात् जीयास्ताम् जीयासुः
जीयाः जीयास्तम् जीयास्त
जीयासम् जीयास्व जीयास्म
श्व० जेता जेतारौ जेतारः
जेतासि जेतास्थः जेतास्थ
जेतास्मि जेतास्वः जेतास्मः
भ० जेष्यति जेष्यतः जेष्यन्ति
जेष्यसि जेष्यथः जेष्यथ
जेष्यामि जेष्यावः जेष्यामः
क्रि० अजेष्यत् अजेष्यताम् अजेष्यन्
अजेष्यः अजेष्यतम् अजेष्यत
अजेष्यम् अजेष्याव अजेष्याम

॥ ज्रि अभिभवे ॥

व० ज्रयति ज्रयतः ज्रयन्ति
ज्रयसि ज्रयथः ज्रयथ
ज्रयामि ज्रयावः ज्रयामः
स० ज्रयेत् ज्रयेताम् ज्रयेयुः
ज्रयेः ज्रयेतम् ज्रयेत
ज्रयेयम् ज्रयेव ज्रयेम
प० ज्रयतु ज्रयतात् ज्रयताम् ज्रयन्तु
ज्रय ,, ज्रयतम् ज्रयत
ज्रयाणि ज्रयाव ज्रयाम
ह्य० अज्रयत् अज्रयताम् अज्रयन्
अज्रयः अज्रयतम् अज्रयत
अज्रयम् अज्रयाव अज्रयाम
अ० अज्रैषीत् अज्रैष्टाम् अज्रैषुः
अज्रैषीः अज्रैष्टम् अज्रैष्ट
अज्रैषम् अज्रैष्व अज्रैष्म

प० जिज्राय जिज्रियतुः जिज्रियुः
जिज्रयिथ जिज्रेथ जिज्रियथुः जिज्रिय
जिज्राय जिज्रय जिज्रियिव जिज्रियिम
आ० ज्रीयात् ज्रीयास्ताम् ज्रीयासुः
ज्रीयाः ज्रीयास्तम् ज्रीयास्त
ज्रीयासम् ज्रीयास्व ज्रीयास्म
श्व० ज्रेता ज्रेतारौ ज्रेतारः
ज्रेतासि ज्रेतास्थः ज्रेतास्थ
ज्रेतास्मि ज्रेतास्वः ज्रेतास्मः
भ० ज्रेष्यति ज्रेष्यतः ज्रेष्यन्ति
ज्रेष्यसि ज्रेष्यथः ज्रेष्यथ
ज्रेष्यामि ज्रेष्यावः ज्रेष्यामः
क्रि० अज्रेष्यत् अज्रेष्यताम् अज्रेष्यन्
अज्रेष्यः अज्रेष्यतम् अज्रेष्यत
अज्रेष्यम् अज्रेष्याव अज्रेष्याम

॥ क्षि क्षये ॥

व० क्षयति क्षयतः क्षयन्ति
क्षयसि क्षयथः क्षयथ
क्षयामि क्षयावः क्षयामः
स० क्षयेत् क्षयेताम् क्षयेयुः
क्षयेः क्षयेतम् क्षयेत
क्षयेयम् क्षयेव क्षयेम
प० क्षयतु क्षयतात् क्षयताम् क्षयन्तु
क्षय ,, क्षयतम् क्षयत
क्षयाणि क्षयाव क्षयाम
ह्य० अक्षयत् अक्षयताम् अक्षयन्
अक्षयः अक्षयतम् अक्षयत
अक्षयम् अक्षयाव अक्षयाम
अ० अक्षैषीत् अक्षैष्टाम् अक्षैषुः
अक्षैषीः अक्षैष्टम् अक्षैष्ट
अक्षैषम् अक्षैष्व अक्षैष्म
प० चिक्षाय चिक्षियतुः चिक्षियुः
चिक्षयिथ चिक्षेथ चिक्षियथुः चिक्षिय
चिक्षाय चिक्षय चिक्षियिव चिक्षियिम
आ० क्षीयात् क्षीयास्ताम् क्षीयासुः
क्षीयाः क्षीयास्तम् क्षीयास्त
क्षीयासम् क्षीयास्व क्षीयास्म
श्व० क्षेता क्षेतारौ क्षेतारः
क्षेतासि क्षेतास्थः क्षेतास्थ
क्षेतास्मि क्षेतास्वः क्षेतास्मः
भ० क्षेष्यति क्षेष्यतः क्षेष्यन्ति
क्षेष्यसि क्षेष्यथः क्षेष्यथ
क्षेष्यामि क्षेष्यावः क्षेष्यामः
क्रि० अक्षेष्यत् अक्षेष्यताम् अक्षेष्यन्
अक्षेष्यः अक्षेष्यतम् अक्षेष्यत
अक्षेष्यम् अक्षेष्याव अक्षेष्याम

॥ इं गतौ ॥

व० अयति अयतः अयन्ति
अयसि अयथः अयथ
अयामि अयावः अयामः
स० अयेत् अयेताम् अयेयुः
अयेः अयेतम् अयेत
अयेयम् अयेव अयेम
प० अयतु अयतात् अयताम् अयन्तु
अय ,, अयतम् अयत
अयानि अयाव अयाम
ह्य० आयत् आयताम् आयन्
आयः आयतम् आयत
आयम् आयाव आयाम
अ० ऐषीत् ऐष्टाम् ऐषुः
ऐषीः ऐष्टम् ऐष्ट
ऐषम् ऐष्व ऐष्म
प० इयाय इयतुः इयुः
इययिथ इयेथ इयथुः इय
इयाय इयय इयिव इयिम
आ० ईयात् ईयास्ताम् ईयासुः
ईयाः ईयास्तम् ईयास्त
ईयासम् ईयास्व ईयास्म
श्व० एता एतारौ एतारः
एतासि एतास्थः एतास्थ
एतास्मि एतास्वः एतास्मः

| | | | |
|---|---|---|---|
| भ० | पश्यति | पश्यतः | पश्यन्ति |
| | पश्यसि | पश्यथः | पश्यथ |
| | पश्यामि | पश्यावः | पश्यामः |
| क्रि० | पेश्यत् | पेश्यताम् | पेश्यन् |
| | पेश्यः | पेश्यतम् | पेश्यत |
| | पेश्यम् | पेश्याव | पेश्याम |

॥ दुं गतौ ॥

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| व० | दवति | दवतः | दवन्ति | |
| | दवसि | दवथः | दवथ | |
| | दवामि | दवावः | दवामः | |
| स० | दवेत् | दवेताम् | दवेयुः | |
| | दवेः | दवेतम् | दवेत | |
| | दवेयम् | दवेव | दवेम | |
| प० | दवतु | दवतात् | दवताम् | दवन्तु |
| | दव | दवतात् | दवतम् | दवत |
| | दवानि | दवाव | दवाम | |
| ह्य० | अदवत् | अदवताम् | अदवन् | |
| | अदवः | अदवतम् | अदवत | |
| | अदवम् | अदवाव | अदवाम | |
| अ० | अदौषीत् | अदौष्टाम् | अदौषुः | |
| | अदौषीः | अदौष्टम् | अदौष्ट | |
| | अदौषम् | अदौष्व | अदौष्म | |
| प० | दुदाव | दुदुवतुः | दुदुवुः | |
| | दुदविथ | दुदोथ | दुदुवथुः | दुदुव |
| | दुदाव | दुदव | दुदुविव | दुदुविम |
| आ० | दूयात् | दूयास्ताम् | दूयासुः | |
| | दूयाः | दूयास्तम् | दूयास्त | |
| | दूयासम् | दूयास्व | दूयास्म | |
| श्व० | दोता | दोतारौ | दोतारः | |
| | दोतासि | दोतास्थः | दोतास्थ | |
| | दोतास्मि | दोतास्वः | दोतास्मः | |
| भ० | दोष्यति | दोष्यतः | दोष्यन्ति | |
| | दोष्यसि | दोष्यथः | दोष्यथ | |
| | दोष्यामि | दोष्यावः | दोष्यामः | |
| क्रि० | अदोष्यत् | अदोष्यताम् | अदोष्यन् | |
| | अदोष्यः | अदोष्यतम् | अदोष्यत | |
| | अदोष्यम् | अदोष्याव | अदोष्याम | |

॥ द्रुं गतौ. ॥

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| व० | द्रवति | द्रवतः | द्रवन्ति | |
| | द्रवसि | द्रवथः | द्रवथ | |
| | द्रवामि | द्रवावः | द्रवामः | |
| स० | द्रवेत् | द्रवेताम् | द्रवेयुः | |
| | द्रवेः | द्रवेतम् | द्रवेत | |
| | द्रवेयम् | द्रवेव | द्रवेम | |
| प० | द्रवतु | द्रवतात् | द्रवताम् | द्रवन्तु |
| | द्रव | द्रवतात् | द्रवतम् | द्रवत |
| | द्रवाणि | द्रवाव | द्रवाम | |
| ह्य० | अद्रवत् | अद्रवताम् | अद्रवन् | |
| | अद्रवः | अद्रवतम् | अद्रवत | |
| | अद्रवम् | अद्रवाव | अद्रवाम | |
| अ० | अदुद्रुवत् | अदुद्रुवताम् | अदुद्रुवन् | |
| | अदुद्रुवः | अदुद्रुवतम् | अदुद्रुवत | |
| | अदुद्रुवम् | अदुद्रुवाव | अदुद्रुवाम | |
| प० | दुद्राव | दुद्रुवतुः | दुद्रुवुः | |
| | दुद्रोथ | दुद्रुवथुः | दुद्रुव | |
| | दुद्राव | दुद्रव | दुद्रुव | दुद्रुम |
| आ० | द्रूयात् | द्रूयास्ताम् | द्रूयासुः | |
| | द्रूयाः | द्रूयास्तम् | द्रूयास्त | |
| | द्रूयासम् | द्रूयास्व | द्रूयास्म | |
| श्व० | द्रोता | द्रोतारौ | द्रोतारः | |
| | द्रोतासि | द्रोतास्थः | द्रोतास्थ | |
| | द्रोतास्मि | द्रोतास्वः | द्रोतास्मः | |
| भ० | द्रोष्यति | द्रोष्यतः | द्रोष्यन्ति | |
| | द्रोष्यसि | द्रोष्यथः | द्रोष्यथ | |
| | द्रोष्यामि | द्रोष्यावः | द्रोष्यामः | |
| क्रि० | अद्रोष्यत् | अद्रोष्यताम् | अद्रोष्यन् | |
| | अद्रोष्यः | अद्रोष्यतम् | अद्रोष्यत | |
| | अद्रोष्यम् | अद्रोष्याव | अद्रोष्याम | |

॥ शुं गतौ ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | शवति | शवतः | शवन्ति |
| | शवसि | शवथः | शवथ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | शवामि | शवावः | शवामः |
| स० | शवेत् | शवेताम् | शवेयुः |
| | शवेः | शवेतम् | शवेत |
| | शवेयम् | शवेव | शवेम |
| प० | शवतु शवतात् | शवताम् | शवन्तु |
| | शव ,, | शवतम् | शवत |
| | शवानि | शवाव | शवाम |
| ह्य० | अशवत् | अशवताम् | अशवन् |
| | अशवः | अशवतम् | अशवत |
| | अशवम् | अशवाव | अशवाम |
| अ० | अशौषीत् | अशौष्टाम् | अशौषुः |
| | अशौषीः | अशौष्टम् | अशौष्ट |
| | अशौषम् | अशौष्व | अशौष्म |
| प० | शुशाव | शुशुवतुः | शुशुवुः |
| | शुशविथ शुशोथ | शुशुवथुः | शुशुव |
| | शुशाव शुशव | शुशुविव | शुशुविम |
| आ० | शूयात् | शूयास्ताम् | शूयासुः |
| | शूयाः | शूयास्तम् | शूयास्त |
| | शूयासम् | शूयास्व | शूयास्म |
| श्व० | शोता | शोतारौ | शोतारः |
| | शोतासि | शोतास्थः | शोतास्थ |
| | शोतास्मि | शोतास्वः | शोतास्मः |
| भ० | शोष्यति | शोष्यतः | शोष्यन्ति |
| | शोष्यसि | शोष्यथः | शोष्यथ |
| | शोष्यामि | शोष्यावः | शोष्यामः |
| क्रि० | अशोष्यत् | अशोष्यताम् | अशोष्यन् |
| | अशोष्यः | अशोष्यतम् | अशोष्यत |
| | अशोष्यम् | अशोष्याव | अशोष्याम |

॥ स्रुं—गतौ ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | स्रवति | स्रवतः | स्रवन्ति |
| | स्रवसि | स्रवथः | स्रवथ |
| | स्रवामि | स्रवावः | स्रवामः |
| स० | स्रवेत् | स्रवेताम् | स्रवेयुः |
| | स्रवेः | स्रवेतम् | स्रवेत |
| | स्रवेयम् | स्रवेव | स्रवेम |
| प० | स्रवतु स्रवतात् | स्रवताम् | स्रवन्तु |
| | स्रव ,, | स्रवतम् | स्रवत |
| | स्रवाणि | स्रवाव | स्रवाम |
| ह्य० | अस्रवत् | अस्रवताम् | अस्रवन् |
| | अस्रवः | अस्रवतम् | अस्रवत |
| | अस्रवम् | अस्रवाव | अस्रवाम |
| अ० | असुस्रुवत् | असुस्रुवताम् | असुस्रुवन् |
| | असुस्रुवः | असुस्रुवतम् | असुस्रुवत |
| | असुस्रुवम् | असुस्रुवाव | असुस्रुवाम |
| प० | सुस्राव | सुस्रुवतुः | सुस्रुवुः |
| | सुस्रोथ | सुस्रुवथुः | सुस्रुव |
| | सुस्राव सुस्रव | सुस्रुव | सुस्रुम |
| आ० | स्रूयात् | स्रूयास्ताम् | स्रूयासुः |
| | स्रूयाः | स्रूयास्तम् | स्रूयास्त |
| | स्रूयासम् | स्रूयास्व | स्रूयास्म |
| श्व० | स्रोता | स्रोतारौ | स्रोतारः |
| | स्रोतासि | स्रोतास्थः | स्रोतास्थ |
| | स्रोतास्मि | स्रोतास्वः | स्रोतास्मः |
| भ० | स्रोष्यति | स्रोष्यतः | स्रोष्यन्ति |
| | स्रोष्यसि | स्रोष्यथः | स्रोष्यथ |
| | स्रोष्यामि | स्रोष्यावः | स्रोष्यामः |
| क्रि० | अस्रोष्यत् | अस्रोष्यताम् | अस्रोष्यन् |
| | अस्रोष्यः | अस्रोष्यतम् | अस्रोष्यत |
| | अस्रोष्यम् | अस्रोष्याव | अस्रोष्याम |

॥ ध्रुं—स्थैर्ये च ॥

ध्रवति, ध्रवेत्, ध्रवतु, अध्रवत्,

| | | | |
|---|---|---|---|
| अ० | अध्रौषीत् | अध्रौष्टाम् | अध्रौषुः |
| | अध्रौषीः | अध्रौष्टम् | अध्रौष्ट |
| | अध्रौषम् | अध्रौष्व | अध्रौष्म |
| प० | दुध्राव | दुध्रुवतुः | दुध्रुवुः |
| | दुध्रविथ दुध्रोथ | दुध्रुवथुः | दुध्रुव |
| | दुध्राव दुध्रव | दुध्रुविव | दुध्रुविम |

ध्रूयात्, ध्रोता, ध्रोष्यति, अध्रोष्यत्,

॥ सुं-प्रसवैश्वर्ययोः ॥

| | | |
|---|---|---|
| व० सवति | सवतः | सवन्ति |
| सवसि | सवथः | सवथ |
| सवामि | सवावः | सवामः |
| स० सवेत् | सवेताम् | सवेयुः |
| सवेः | सवेतम् | सवेत |
| सवेयम् | सवेव | सवेम |
| प० सवतु सवतात् | सवताम् | सवन्तु |
| सव " | सवतम् | सवत |
| सवानि | सवाव | सवाम |
| ह्य० असवत् | असवताम् | असवन् |
| असवः | असवतम् | असवत |
| असवम् | असवाव | असवाम |
| अ० असावीत् | असाविष्टाम् | असाविषुः |
| असावीः | असाविष्टम् | असाविष्ट |
| असाविषम् | असाविष्व | असाविष्म |

क्रियारत्नसमुच्चये तु—

| | | |
|---|---|---|
| असौषीत् | असौष्टाम् | असौषुः |
| असौषीः | असौष्टम् | असौष्ट |
| असौषम् | असौष्व | असौष्म |
| प० सुसाव | सुसुवतुः | सुसुवुः |
| सुसविथ सुसोथ | सुसुवथुः | सुसुव |
| सुसाव सुसव | सुसुविव | सुसुविम |

पाणि० मते सुषावेत्यादि

| | | |
|---|---|---|
| आ० सूयात् | सूयास्ताम् | सूयासुः |
| सूयाः | सूयास्तम् | सूयास्त |
| सूयासम् | सूयास्व | सूयास्म |
| श्व० सोता | सोतारौ | सोतारः |
| सोतासि | सोतास्थः | सोतास्थ |
| सोतास्मि | सोतास्वः | सोतास्मः |
| भ० सोष्यति | सोष्यतः | सोष्यन्ति |
| सोष्यसि | सोष्यथः | सोष्यथ |
| सोष्यामि | सोष्यावः | सोष्यामः |
| क्रि० असोष्यत् | असोष्यताम् | असोष्यन् |
| असोष्यः | असोष्यतम् | असोष्यत |
| असोष्यम् | असोष्याव | असोष्याम |

॥ स्मृं—चिन्तायाम् ॥

| | | |
|---|---|---|
| व० स्मरति | स्मरतः | स्मरन्ति |
| स्मरसि | स्मरथः | स्मरथ |
| स्मरामि | स्मरावः | स्मरामः |
| स० स्मरेत् | स्मरेताम् | स्मरेयुः |
| स्मरेः | स्मरेतम् | स्मरेत |
| स्मरेयम् | स्मरेव | स्मरेम |
| प० स्मरतु स्मरतात् | स्मरताम् | स्मरन्तु |
| स्मर " | स्मरतम् | स्मरत |
| स्मराणि | स्मराव | स्मराम |
| ह्य० अस्मरत् | अस्मरताम् | अस्मरन् |
| अस्मरः | अस्मरतम् | अस्मरत |
| अस्मरम् | अस्मराव | अस्मराम |
| अ० अस्मार्षीत् | अस्मार्ष्टाम् | अस्मार्षुः |
| अस्मार्षीः | अस्मार्ष्टम् | अस्मार्ष्ट |
| अस्मार्षम् | अस्मार्ष्व | अस्मार्ष्म |
| प० सस्मार | सस्मरतुः | सस्मरुः |
| सस्मर्थ | सस्मरथुः | सस्मर |
| सस्मार सस्मर | सस्मरिव | सस्मरिम |
| आ० स्मर्यात् | स्मर्यास्ताम् | स्मर्यासुः |
| स्मर्याः | स्मर्यास्तम् | स्मर्यास्त |
| स्मर्यासम् | स्मर्यास्व | स्मर्यास्म |
| श्व० स्मर्ता | स्मर्तारौ | स्मर्तारः |
| स्मर्तासि | स्मर्तास्थः | स्मर्तास्थ |
| स्मर्तास्मि | स्मर्तास्वः | स्मर्तास्मः |
| भ० स्मरिष्यति | स्मरिष्यतः | स्मरिष्यन्ति |
| स्मरिष्यसि | स्मरिष्यथः | स्मरिष्यथ |
| स्मरिष्यामि | स्मरिष्यावः | स्मरिष्यामः |
| क्रि० अस्मरिष्यत् | अस्मरिष्यताम् | अस्मरिष्यन् |
| अस्मरिष्यः | अस्मरिष्यतम् | अस्मरिष्यत |
| अस्मरिष्यम् | अस्मरिष्याव | अस्मरिष्याम |

॥ गृं-घृं—सेचने ॥

| | | |
|---|---|---|
| व० गरति | गरतः | गरन्ति |
| गरसि | गरथः | गरथ |
| गरामि | गरावः | गरामः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| स० | गरेत् | गरेताम् | गरेयुः |
| | गरेः | गरेतम् | गरेत |
| | गरेयम् | गरेव | गरेम |
| प० | गरतु गरतात् | गरताम् | गरन्तु |
| | गर गरतात् | गरतम् | गरत |
| | गराणि | गराव | गराम |
| ह्य० | अगरत् | अगरताम् | अगरन् |
| | अगरः | अगरतम् | अगरत |
| | अगरम् | अगराव | अगराम |
| अ० | अगार्षीत् | अगार्ष्टाम् | अगार्षुः |
| | अगार्षीः | अगार्ष्टम् | अगार्ष्ट |
| | अगार्षम् | अगार्ष्व | अगार्ष्म |
| प० | जगार | जग्रतुः | जग्रुः |
| | जगर्थ | जग्रथुः | जग्र |
| | जगार जगर | जग्रिव | जग्रिम |
| आ० | ग्रियात् | ग्रियास्ताम् | ग्रियासुः |
| | ग्रियाः | ग्रियास्तम् | ग्रियास्त |
| | ग्रियासम् | ग्रियास्व | ग्रियास्म |
| श्व० | गर्त्ता | गर्त्तारौ | गर्त्तारः |
| | गर्त्तासि | गर्त्तास्थः | गर्त्तास्थ |
| | गर्त्तास्मि | गर्त्तास्वः | गर्त्तास्मः |
| भ० | गरिष्यति | गरिष्यतः | गरिष्यन्ति |
| | गरिष्यसि | गरिष्यथः | गरिष्यथ |
| | गरिष्यामि | गरिष्यावः | गरिष्यामः |
| क्रि० | अगरिष्यत् | अगरिष्यताम् | अगरिष्यन् |
| | अगरिष्यः | अगरिष्यतम् | अगरिष्यत |
| | अगरिष्यम् | अगरिष्याव | अगरिष्याम |

घरति, अघार्षीत्, जघार ।

॥ औ स्वृ–शब्दोपतापयोः ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | स्वरति | स्वरतः | स्वरन्ति |
| | स्वरसि | स्वरथः | स्वरथ |
| | स्वरामि | स्वरावः | स्वरामः |
| स० | स्वरेत् | स्वरेताम् | स्वरेयुः |
| | स्वरेः | स्वरेतम् | स्वरेत |
| | स्वरेयम् | स्वरेव | स्वरेम |
| प० | स्वरतु स्वरतात् | स्वरताम् | स्वरन्तु |
| | स्वर ,, | स्वरतम् | स्वरत |
| | स्वराणि | स्वराव | स्वराम |
| ह्य० | अस्वरत् | अस्वरताम् | अस्वरन् |
| | अस्वरः | अस्वरतम् | अस्वरत |
| | अस्वरम् | अस्वराव | अस्वराम |
| अ० | अस्वारीत् | अस्वारिष्टाम् | अस्वारिषुः |
| | अस्वारीः | अस्वारिष्टम् | अस्वारिष्ट |
| | अस्वारिषम् | अस्वारिष्व | अस्वारिष्म |
| | अस्वार्षीत् | अस्वार्ष्टाम् | अस्वार्षुः |
| | अस्वार्षीः | अस्वार्ष्टम् | अस्वार्ष्ट |
| | अस्वार्षम् | अस्वार्ष्व | अस्वार्ष्म |
| प० | सस्वार | सस्वरतुः | सस्वरुः |
| | सस्वरिथ | सस्वरथुः | सस्वर |
| | सस्वार सस्वर | सस्वरिव | सस्वरिम |

पाणिनिमते तु थवि सस्वरिथ सस्वर्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | स्वर्यात् | स्वर्यास्ताम् | स्वर्यासुः |
| | स्वर्याः | स्वर्यास्तम् | स्वर्यास्त |
| | स्वर्यासम् | स्वर्यास्व | स्वर्यास्म |
| श्व० | स्वर्त्ता | स्वर्त्तारौ | स्वर्त्तारः |
| | स्वर्त्तासि | स्वर्त्तास्थः | स्वर्त्तास्थ |
| | स्वर्त्तास्मि | स्वर्त्तास्वः | स्वर्त्तास्मः |
| | स्वरिता | स्वरितारौ | स्वरितारः |
| | स्वरितासि | स्वरितास्थः | स्वरितास्थ |
| | स्वरितास्मि | स्वरितास्वः | स्वरितास्मः |
| भ० | स्वरिष्यति | स्वरिष्यतः | स्वरिष्यन्ति |
| | स्वरिष्यसि | स्वरिष्यथः | स्वरिष्यथ |
| | स्वरिष्यामि | स्वरिष्यावः | स्वरिष्यामः |
| क्रि० | अस्वरिष्यत् | स्वरिअष्यताम् | अस्वरिष्यन् |
| | अस्वरिष्यः | अस्वरिष्यतम् | अस्वरिष्यत |
| | अस्वरिष्यम् | अस्वरिष्याव | अस्वरिष्याम |

ह्वृ वरणे–ह्वरति अह्वार्षीत् दह्वार ।

ध्वृ ह्वृ कौटिल्ये । ध्वरति । अध्वार्षीत् दध्वार । ह्वरति । अह्वार्षीत् । जह्वार ।

॥ सृ–गतौ ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | सरति | सरतः | सरन्ति |

सरसि सरथः सरथ
सरामि सरावः सरामः
स० सरेत् सरेताम् सरेयुः
सरेः सरेतम् सरेत
सरेयम् सरेव सरेम
प० सरतु सरतात् सरताम् सरन्तु
सर ,, सरतम् सरत
सराणि सराव सराम
ह्य० असरत् असरताम् असरन्
असरः असरतम् असरत
असरम असराव असराम
अ० असार्षीत् असार्ष्टाम् असार्षुः
असार्षीः असार्ष्टम् असार्ष्ट
असार्षम असार्ष्व असार्ष्म
प० असरत् असरताम् असरन्
असरः असरतम् असरत
असरम् असराव असराम
पाणिनिमते नेदं रूपम्
प० ससार सस्रतुः सस्रुः
ससर्थ सस्रथुः सस्र
ससार. ससर सस्रुव सस्रुम
आ० स्रियात् स्रियास्ताम् स्रियासुः
स्रियाः स्रियास्तम् स्रियास्त
स्रियासम स्रियास्व स्रियास्म
श्व० सर्त्ता सर्त्तारौ सर्त्तारः
सर्त्तासि सर्त्तास्थः सर्त्तास्थ
सर्त्तास्मि सर्त्तास्वः सर्त्तास्मः
भ० सरिष्यति सरिष्यतः सरिष्यन्ति
सरिष्यसि सरिष्यथः सरिष्यथ
सरिष्यामि सरिष्यावः सरिष्यामः
क्रि० असरिष्यत् असरिष्यताम् असरिष्यन्
असरिष्यः असरिष्यतम् असरिष्यत
असरिष्यम् असरिष्याव असरिष्याम

॥ ऋ--प्रापणे च ॥

व० ऋच्छति ऋच्छतः ऋच्छन्ति
ऋच्छसि ऋच्छथः ऋच्छथ
ऋच्छामि ऋच्छावः ऋच्छामः
स० ऋच्छेत् ऋच्छेताम् ऋच्छेयुः
ऋच्छेः ऋच्छेतम् ऋच्छेत
ऋच्छेयम् ऋच्छेव ऋच्छेम
प० ऋच्छतु ऋच्छतात् ऋच्छताम् ऋच्छन्तु
ऋच्छ ,, ऋच्छतम् ऋच्छत
ऋच्छानि ऋच्छाव ऋच्छाम
ह्य० आर्च्छत् आर्च्छताम् आर्च्छन्
आर्च्छः आर्च्छतम् आर्च्छत
आर्च्छम् आर्च्छाव आर्च्छाम
अ० आरत् आरताम् आरन्
आरः आरतम् आरत
आरम आराव आराम
नेदं पाणिनिमते
आर्षीत् आर्ष्टाम् आर्षुः
आर्षीः आर्ष्टम् आर्ष्ट
आर्षम् आर्ष्व आर्ष्म
प० आर आरतुः आरुः
आरिथ आरथुः आर
आर आरिव आरिम
आ० अर्यात् अर्यास्ताम् अर्यासुः
अर्याः अर्यास्तम् अर्यास्त
अर्यासम् अर्यास्व अर्यास्म
श्व० अर्त्ता अर्त्तारौ अर्त्तारः
अर्त्तासि अर्त्तास्थः अर्त्तास्थ
अर्त्तास्मि अर्त्तास्वः अर्त्तास्मः
भ० अरिष्यति अरिष्यतः अरिष्यन्ति
अरिष्यसि अरिष्यथः अरिष्यथ
अरिष्यामि अरिष्यावः अरिष्यामः
क्रि० आरिष्यत् आरिष्यताम् आरिष्यन्
आरिष्यः आरिष्यतम् आरिष्यत
आरिष्यम् आरिष्याव आरिष्याम

॥ तॄ—प्लवनतरणयोः ॥

व० तरति तरतः तरन्ति
तरसि तरथः तरथ

तरामि तरावः तरामः
स० तरेत् तरेताम् तरेयुः
तरेः तरेतम् तरेत
तरेयम् तरेव तरेम
प० तरतु तरतात् तरताम् तरन्तु
तर तरतात् तरतम् तरत
तराणि तराव तराम
ह्य० अतरत् अतरताम् अतरन्
अतरः अतरतम् अतरत
अतरम् अतराव अतराम
अ० अतारीत् अतारिष्टाम् अतारिषुः
अतारीः अतारिष्टम् अतारिष्ट
अतारिषम् अतारिष्व अतारिष्म
प० ततार तेरतुः तेरुः
तेरिथ तेरथुः तेर
ततार ततर तेरिव तेरिम
आ० तीर्यात् तीर्यास्ताम् तीर्यासुः
तीर्याः तीर्यास्तम् तीर्यास्त
तीर्यासम् तीर्यास्व तीर्यास्म
श्व० तरीता तरीतारौ तरीतारः
तरीतासि तरीतास्थः तरीतास्थ
तरीतास्मि तरीतास्वः तरीतास्मः
तरिता तरितारौ तरितारः
तरितासि तरितास्थः तरितास्थ
तरितास्मि तरितास्वः तरितास्मः
भ० तरीष्यति तरीष्यतः तरीष्यन्ति
तरीष्यसि तरीष्यथः तरीष्यथ
तरीष्यामि तरीष्यावः तरीष्यामः
तरिष्यति तरिष्यतः तरिष्यन्ति
तरिष्यसि तरिष्यथः तरिष्यथ
तरिष्यामि तरिष्यावः तरिष्यामः
क्रि० अतरीष्यत् अतरीष्यताम् अतरीष्यन्
अतरीष्यः अतरीष्यतम् अतरीष्यत
अतरीष्यम् अतरीष्याव अतरीष्याम
अतरिष्यत् अतरिष्यताम् अतरिष्यन्
अतरिष्यः अतरिष्यतम् अतरिष्यत
अतरिष्यम् अतरिष्याव अतरिष्याम

ट्धें—पाने २२

व० धयति धयतः धयन्ति
धयसि धयथः धयथ
धयामि धयावः धयामः
स० धयेत् धयेताम् धयेयुः
धयेः धयेतम् धयेत
धयेयम् धयेव धयेम
प० धयतु धयतात् धयताम् धयन्तु
धय ,, धयतम् धयत
धयानि धयाव धयाम
ह्य० अधयत् अधयताम् अधयन्
अधयः अधयतम् अधयत
अधयम् अधयाव अधयाम
अ० अदधत् अदधताम् अदधन्
अदधः अदधतम् अदधत
अदधम् अदधाव अदधाम
अधात् अधाताम् अधुः
अधाः अधातम् अधात
अधाम् अधाव अधाम
अधासीत् अधासिष्टाम् अधासिषुः
अधासीः अधासिष्टम् अधासिष्ट
अधासिषम् अधासिष्व अधासिष्म
प० दधौ दधतुः दधुः
दधाथ दधिथ दधथुः दध
दधौ दधिव दधिम
आ० धेयात् धेयास्ताम् धेयासुः
धेयाः धेयास्तम् धेयास्त
धेयासम् धेयास्व धेयास्म
श्व० धाता धातारौ धातारः
धातासि धातास्थः धातास्थ
धातास्मि धातास्वः धातास्मः
भ० धास्यति धास्यतः धास्यन्ति
धास्यसि धास्यथः धास्यथ
धास्यामि धास्यावः धास्यामः
क्रि० अधास्यत् अधास्यताम् अधास्यन्
अधास्यः अधास्यतम् अधास्यत
अधास्यम् अधास्याव अधास्याम.

### दैप्—शोधने

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | दायति | दायतः | दायन्ति |
| | दायसि | दायथः | दायथ |
| | दायामि | दायावः | दायामः |
| स० | दायेत् | दायेताम् | दायेयुः |
| | दायेः | दायेतम् | दायेत |
| | दायेयम् | दायेव | दायेम |
| प० | दायतु दायतात् | दायताम् | दायन्तु |
| | दाय ,, | दायतम् | दायत |
| | दायानि | दायाव | दायाम |
| ह्य० | अदायत् | अदायताम् | अदायन् |
| | अदायः | अदायतम् | अदायत |
| | अदायम् | अदायाव | अदायाम |
| अ० | अदासीत् | अदासिष्टाम् | अदासिषुः |
| | अदासीः | अदासिष्टम् | अदासिष्ट |
| | अदासिषम् | अदासिष्व | अदासिष्म |
| प० | ददौ | ददतुः | ददुः |
| | ददिथ ददाथ | ददथुः | दद |
| | ददौ | ददिव | ददिम |
| आ० | दायात् | दायास्ताम् | दायासुः |
| | दायाः | दायास्तम् | दायास्त |
| | दायासम् | दायास्व | दायास्म |
| श्व० | दाता | दातारौ | दातारः |
| | दातासि | दातास्थः | दातास्थ |
| | दातास्मि | दातास्वः | दातास्मः |
| भ० | दास्यति | दास्यतः | दास्यन्ति |
| | दास्यसि | दास्यथः | दास्यथ |
| | दास्यामि | दास्यावः | दास्यामः |
| क्रि० | अदास्यत् | अदास्यताम् | अदास्यन् |
| | अदास्यः | अदास्यतम् | अदास्यत |
| | अदास्यम् | अदास्याव | अदास्याम |

### ध्यै · चिन्तायाम्

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | ध्यायति | ध्यायतः | ध्यायन्ति |
| | ध्यायसि | ध्यायथः | ध्यायथ |
| | ध्यायामि | ध्यायावः | ध्यायामः |
| स० | ध्यायेत् | ध्यायेताम् | ध्यायेयुः |
| | ध्यायेः | ध्यायेतम् | ध्यायेत |
| | ध्यायेयम् | ध्यायेव | ध्यायेम |
| प० | ध्यायतु ध्यायतात् | ध्यायताम् | ध्यायन्तु |
| | ध्याय ,, | ध्यायतम् | ध्यायत |
| | ध्यायानि | ध्यायाव | ध्यायाम |
| ह्य० | अध्यायत् | अध्यायताम् | अध्यायन् |
| | अध्यायः | अध्यायतम् | अध्यायत |
| | अध्यायम् | अध्यायाव | अध्यायाम |
| अ० | अध्यासीत् | अध्यासिष्टाम् | अध्यासिषुः |
| | अध्यासीः | अध्यासिष्टम् | अध्यासिष्ट |
| | अध्यासिषम् | अध्यासिष्व | अध्यासिष्म |
| प० | दध्यौ | दध्यतुः | दध्युः |
| | दध्याथ दध्यिथ | दध्यथुः | दध्य |
| | दध्यौ | दध्यिव | दध्यिम |
| आ० | ध्येयात् | ध्येयास्ताम् | ध्येयासुः |
| | ध्येयाः | ध्येयास्तम् | ध्येयास्त |
| | ध्येयासम् | ध्येयास्व | ध्येयास्म |
| | ध्यायात् | ध्यायास्ताम् | ध्यायासुः |
| | ध्यायाः | ध्यायास्तम् | ध्यायास्त |
| | ध्यायासम् | ध्यायास्व | ध्यायास्म |
| श्व० | ध्याता | ध्यातारौ | ध्यातारः |
| | ध्यातासि | ध्यातास्थः | ध्यातास्थ |
| | ध्यातास्मि | ध्यातास्वः | ध्यातास्मः |
| भ० | ध्यास्यति | ध्यास्यतः | ध्यास्यन्ति |
| | ध्यास्यसि | ध्यास्यथः | ध्यास्यथ |
| | ध्यास्यामि | ध्यास्यावः | ध्यास्यामः |
| क्रि० | अध्यास्यत् | अध्यास्यताम् | अध्यास्यन् |
| | अध्यास्यः | अध्यास्यतम् | अध्यास्यत |
| | अध्यास्यम् | अध्यास्याव | अध्यास्याम |

### फक्क—नीचैर्गतौ,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | फक्कति | फक्कतः | फक्कन्ति |
| | फक्कसि | फक्कथः | फक्कथ |
| | फक्कामि | फक्कावः | फक्कामः |

स० फक्केत् फक्केताम् फक्केयुः
फक्केः फक्केतम् फक्केत
फक्केयम् फक्केव फक्केम
प० फक्कतु फक्कतात फक्कताम फक्कन्तु
फक्क „ फक्कतम् फक्कत
फक्कानि फक्काव फक्काम
ह्य० अफक्कत् अफक्कताम् अफक्कन्
अफक्कः अफक्कतम् अफक्कत
अफक्कम् अफक्काव अफक्काम
अ० अफक्कीत् अफक्किष्टाम् अफक्किषुः
अफक्कीः अफक्किष्टम् अफक्किष्ट
अफक्किषम् अफक्किष्व अफक्किष्म
प० पफक्क पफक्कतुः पफक्कुः
पफक्किथ पफक्कथुः पफक्क
पफक्क पफक्किव पफक्किम
आ० फक्क्यात् फक्क्यास्ताम् फक्क्यासुः
फक्क्याः फक्क्यास्तम् फक्क्यास्त
फक्क्यासम् फक्क्यास्व फक्क्यास्म
श्व० फक्किता फक्कितारौ फक्कितारः
फक्कितासि फक्कितास्थः फक्कितास्थ
फक्कितास्मि फक्कितास्वः फक्कितास्मः
भ० फक्किष्यति फक्किष्यतः फक्किष्यन्ति
फक्किष्यसि फक्किष्यथः फक्किष्यथ
फक्किष्यामि फक्किष्यावः फक्किष्यामः
अफक्किष्यत् अफक्किष्यताम् अफक्किष्यन्
अफक्किष्यः अफक्किष्यतम् अफक्किष्यत
अफक्किष्यम् अफक्किष्याव अफक्किष्याम

---

॥ ग्लैं हर्षक्षये ॥ ग्लायति । अग्लासीत् ।
जग्लौ । ग्लायात् । ग्लेयात्
॥ म्लैं गात्रविनामे ॥ म्लायति । अम्लासीत्
मम्लौ । म्लायात् । म्लेयात्
॥ धैं न्यक्करणे ॥ धायति । अधासीत् । दधौ
॥ द्रैं स्वप्ने ॥ द्रायति । अद्रासीत् । दद्रौ
॥ ध्रैं तृप्तौ ॥ ध्रायति । अध्रासीत । दध्रौ
॥ कैं गैं रैं शब्दे ॥ कायति । अकासीत् । चकौ
गायति । अगासीत् । जगौ ।
रायति । अरासीत् । ररौ ।

आशिषि तु त्रयाणाम्- ।

कायात् कायास्ताम् कायासुः
कायाः कायास्तम् कायास्त
कायासम् कायास्व कायास्म
गेयात् गेयास्ताम् गेयासुः
गेयाः गेयास्तम् गेयास्त
गेयासम् गेयास्व गेयास्म
रायात् रायास्ताम् रायासुः
रायाः रायास्तम् रायास्त
रायासम् रायास्व रायास्म

ष्ट्यैं स्त्यैं—सङ्घाते च ॥ खैं - खदने ।
क्षैं—क्षये ॥ जैं षैं—क्षये ॥ सैं श्रैं—पाके
पैं—शोषणे ।
॥ ष्ट्यैं ॥ ष्ट्यायति । अष्ट्यासीत् । तष्ट्यौ
॥ स्त्यैं ॥ स्त्यायति । अस्त्यासीत् । तस्त्यौ
॥ खैं ॥ खायति । अखासीत् । चखौ ॥
॥ क्षैं ॥ क्षायति । अक्षासीत् । चक्षौ ॥
जायति अजासीत् जजौ
सायति असासीत् ससौ
स्रायति अस्रासीत् सस्रौ
श्रायति अश्रासीत् शश्रौ
॥ पैं ॥ पायति । अपासीत् । पपौ ॥
(॥ पाणिनिमते नेदं रूपम् ।)
आ० पेयात् पेयास्ताम् पेयासुः
पेयाः पेयास्तम् पेयास्त
पेयासम् पेयास्व पेयास्म
ओवैं शोषणे । वायति । अवासीत् । ववौ
ष्णैं वेष्टने । स्नायति । अस्नासीत् । सस्नौ
स्नायात् । स्नेयात्

---

॥ तक् हसने ॥

व० तकति तकतः तकन्ति
तकसि तकथः तकथ
तकामि तकावः तकामः

स० तकेत् तकेताम् तकेयुः
तकेः तकेतम् तकेत
तकेयम् तकेव तकेम
प० तकतु तकतात् तकताम् तकन्तु
तक ,, तकतम् तकत
तकानि तकाव तकाम
ह्य० अतकत् अतकताम् अतकन्
अतकः अतकतम् अतकत
अतकम् अतकाव अतकाम
अ० अताकीत् अताकिष्टाम् अताकिषुः
अताकीः अताकिष्टम् अताकिष्ट
अताकिषम् अताकिष्व अताकिष्म
अतकीत् अतकिष्टाम् अतकिषुः
अतकीः अतकिष्टम् अतकिष्ट
अतकिषम् अतकिष्व अतकिष्म
प० तताक तेकतुः तेकुः
तेकिथ तेकथुः तेक
तताक ततक तेकिव तेकिम
आ० तक्यात् तक्यास्ताम् तक्यासुः
तक्याः तक्यास्तम् तक्यास्त
तक्यासम् तक्यास्व तक्यास्म
श्व० तकिता तकितारौ तकितारः
तकितासि तकितास्थः तकितास्थ
तकितास्मि तकितास्वः तकितास्मः
भ० तकिष्यति तकिष्यतः तकिष्यन्ति
तकिष्यसि तकिष्यथः तकिष्यथ
तकिष्यामि तकिष्यावः तकिष्यामः
क्रि० अतकिष्यत् अतकिष्यताम् अतकिष्यन्
अतकिष्यः अतकिष्यतम् अतकिष्यत
अतकिष्यम् अतकिष्याव अतकिष्याम

। तङ्कु—कृच्छ्रजीवने ।

व० तङ्कति तङ्कतः तङ्कन्ति
तङ्कसि तङ्कथः तङ्कथ
तङ्कामि तङ्कावः तङ्कामः
स० तङ्केत् तङ्केताम् तङ्केयुः
तङ्केः तङ्केतम् तङ्केत
तङ्केयम् तङ्केव तङ्केम
प० तङ्कतु तङ्कतात् तङ्कताम् तङ्कन्तु
तङ्क ,, तङ्कतम् तङ्कत
तङ्कानि तङ्काव तङ्काम
ह्य० अतङ्कत् अतङ्कताम् अतङ्कन्
अतङ्कः अतङ्कतम् अतङ्कत
अतङ्कम् अतङ्काव अतङ्काम
अ० अतङ्कीत् अतङ्किष्टाम् अतङ्किषुः
अतङ्कीः अतङ्किष्टम् अतङ्किष्ट
अतङ्किषम् अतङ्किष्व अतङ्किष्म
प० ततङ्क ततङ्कतुः ततङ्कुः
ततङ्किथ ततङ्कथुः ततङ्क
ततङ्क ततङ्किव ततङ्किम
आ० तङ्क्यात् तङ्क्यास्ताम् तङ्क्यासुः
तङ्क्याः तङ्क्यास्तम् तङ्क्यास्त
तङ्क्यासम् तङ्क्यास्व तङ्क्यास्म
श्व० तङ्किता तङ्कितारौ तङ्कितारः
तङ्कितासि तङ्कितास्थः तङ्कितास्थ
तङ्कितास्मि तङ्कितास्वः तङ्कितास्मः
भ० तङ्किष्यति तङ्किष्यतः तङ्किष्यन्ति
तङ्किष्यसि तङ्किष्यथः तङ्किष्यथ
तङ्किष्यामि तङ्किष्यावः तङ्किष्यामः
क्रि० अतङ्किष्यत् अतङ्किष्यताम् अतङ्किष्यन्
अतङ्किष्यः अतङ्किष्यतम् अतङ्किष्यत
अतङ्किष्यम् अतङ्किष्याव अतङ्किष्याम

॥ शुक-गतौ ॥

व० शोकति शोकतः शोकन्ति
शोकसि शोकथः शोकथ
शोकामि शोकावः शोकामः
स० शोकेत् शोकेताम् शोकेयुः
शोकेः शोकेतम् शोकेत
शोकेयम् शोकेव शोकेम
प० शोकतु शोकतात् शोकताम् शोकन्तु
शोक ,, शोकतम् शोकत
शोकानि शोकाव शोकाम

ह्य० अशोकत् अशोकताम् अशोकन्
अशोकः अशोकतम् अशोकत
अशोकम् अशोकाव अशोकाम
अ० अशोकीत् अशोकिष्टाम् अशोकिषुः
अशोकीः अशोकिष्टम् अशोकिष्ट
अशोकिषम् अशोकिष्व अशोकिष्म
प० शुशोक शुशुकतुः शुशुकुः
शुशोकिथ शुशुकथुः शुशुक
शुशोक शुशुकिव शुशुकिम
आ० शुक्यात् शुक्यास्ताम् शुक्यासुः
शुक्याः शुक्यास्तम् शुक्यास्त
शुक्यासम् शुक्यास्व शुक्यास्म
श्व० शोकिता शोकितारौ शोकितारः
शोकितासि शोकितास्थः शोकितास्थ
शोकितास्मि शोकितास्वः शोकितास्मः
भ० शोकिष्यति शोकिष्यतः शोकिष्यन्ति
शोकिष्यसि शोकिष्यथः शोकिष्यथ
शोकिष्यामि शोकिष्यावः शोकिष्यामः
क्रि० अशोकिष्यत् अशोकिष्यताम् अशोकिष्यन्
अशोकिष्यः अशोकिष्यतम् अशोकिष्यत
अशोकिष्यम् अशोकिष्याव अशोकिष्याम

बुक्क-भाषणे

बुक्कति । अबुक्कत् । बुबुक्क ।

ओखृ-शोषणालमर्थयोः

व० ओखति ओखतः ओखन्ति
ओखसि ओखथः ओखथ
ओखामि ओखावः ओखामः
स० ओखेत् ओखेताम् ओखेयुः
ओखेः ओखेतम् ओखेत
ओखेयम् ओखेव ओखेम
प० ओखतु ओखतात् ओखताम् ओखन्तु
ओख ,, ओखतम् ओखत
ओखानि ओखाव ओखाम
ह्य० औखत् औखताम् औखन्
औखः औखतम् औखत
औखम् औखाव औखाम
अ० औखीत् औखिष्टाम् औखिषुः
औखीः औखिष्टम् औखिष्ट
औखिषम् औखिष्व औखिष्म
प० ओखाञ्चकार ओखाञ्चक्रतुः ओखाञ्चक्रुः
ओखाञ्चकर्थ ओखाञ्चक्रथुः ओखाञ्चक्र
ओखाञ्चकार ओखाञ्चकृव ओखाञ्चकृम
ओखाञ्चकर
ओखामास ओखामासतुः ओखामासुः
ओखामासिथ ओखामासथुः ओखामास
ओखामास ओखामासिव ओखामासिम
ओखाम्बभूव ओखाम्बभूवतुः ओखाम्बभूवुः
ओखाम्बभूविथ ओखाम्बभूवथुः ओखाम्बभूव
ओखाम्बभूव ओखाम्बभूविव ओखाम्बभूविम
आ० ओख्यात् ओख्यास्ताम् ओख्यासुः
ओख्याः ओख्यास्तम् ओख्यास्त
ओख्यासम् ओख्यास्व ओख्यास्म
श्व० ओखिता ओखितारौ ओखितारः
ओखितासि ओखितास्थः ओखितास्थ
ओखितास्मि ओखितास्वः ओखितास्मः
भ० ओखिष्यति ओखिष्यतः ओखिष्यन्ति
ओखिष्यसि ओखिष्यथः ओखिष्यथ
ओखिष्यामि ओखिष्यावः ओखिष्यामः
क्रि० औखिष्यत् औखिष्यताम् औखिष्यन्
औखिष्यः औखिष्यतम् औखिष्यत
औखिष्यम् औखिष्याव औखिष्याम

राखृ लाखृ द्राखृ ध्राखृ—

शोषणालमर्थयोः

व० राखति राखतः राखन्ति
राखसि राखथः राखथ
राखामि राखावः राखामः
स० राखेत् राखेताम् राखेयुः
राखेः राखेतम् राखेत
राखेयम् राखेव राखेम

प० राखतु राखतात् राखताम् राखन्तु
राख ,, राखतम् राखत
राखाणि राखाव राखाम
ह्य० अराखत् अराखताम् अराखन्
अराखः अराखतम् अराखत
अराखम् अराखाव अराखाम
अ० अराखीत् अराखिष्टाम् अराखिषुः
अराखीः अराखिष्टम् अराखिष्ट
अराखिषम् अराखिष्व अराखिष्म
प० रराख रराखतुः रराखुः
रराखिथ रराखथुः रराख
रराख रराखिव रराखिम
आ० राख्यात् राख्यास्ताम् राख्यासुः
राख्याः राख्यास्तम् राख्यास्त
राख्यासम् राख्यास्व राख्यास्म
श्व० राखिता राखितारौ राखितारः
राखितासि राखितास्थः राखितास्थ
राखितास्मि राखितास्वः राखितास्मः
भ० राखिष्यति राखिष्यतः राखिष्यन्ति
राखिष्यसि राखिष्यथः राखिष्यथ
राखिष्यामि राखिष्यावः राखिष्यामः
क्रि० अराखिष्यत् अराखिष्यताम् अराखिष्यन्
अराखिष्यः अराखिष्यतम् अराखिष्यत
अराखिष्यम् अराखिष्याव अराखिष्याम
एवं लाखति । अलाखीत् । ललाख
द्राखति । अद्राखीत् । दद्राख ॥
ध्राखति । अध्राखीत् । दध्राख ॥

॥ शाखृ श्लाखृ व्याप्तौ ॥
शाखति । अशाखीत् । शशाख ।
श्लाखति । अश्लाखीत् । शश्लाख ।

॥ कक्ख हसने ॥
कक्खति । अकक्खीत् । चकक्ख ।

---

॥ उख गतौ ॥
व० ओखति ओखतः ओखन्ति
ओखसि ओखथः ओखथ
ओखामि ओखावः ओखामः
स० ओखेत् ओखेताम् ओखेयुः
ओखेः ओखेतम् ओखेत
ओखेयम् ओखेव ओखेम
प० ओखतु ओखतात् ओखताम् ओखन्तु
ओख ,, ओखतम् ओखत
ओखानि ओखाव ओखाम
ह्य० औखत् औखताम् औखन्
औखः औखतम् औखत
औखम् औखाव औखाम
अ० औखीत् औखिष्टाम् औखिषुः
औखीः औखिष्टम् औखिष्ट
औखिषम् औखिष्व औखिष्म
प० उवोख ऊखतुः ऊखुः
उवोखिथ ऊखथुः ऊख
उवोख ऊखिव ऊखिम
आ० उख्यात् उख्यास्ताम् उख्यासुः
उख्याः उख्यास्तम् उख्यास्त
उख्यासम् उख्यास्व उख्यास्म
श्व० ओखिता ओखितारौ ओखितारः
ओखितासि ओखितास्थः ओखितास्थ
ओखितास्मि ओखितास्वः ओखितास्मः
भ० ओखिष्यति ओखिष्यतः ओखिष्यन्ति
ओखिष्यसि ओखिष्यथः ओखिष्यथ
ओखिष्यामि ओखिष्यावः ओखिष्यामः
क्रि० औखिष्यत् औखिष्यताम् औखिष्यन्
औखिष्यः औखिष्यतम् औखिष्यत
औखिष्यम् औखिष्याव औखिष्याम ।

नख णख मख रख लख गतौ वख गतौ
नखति अनाखीत् अनखीत् नेखतुः नेखिथ
णखति अनाखीत् अनखीत् ननाख
मखति अमाखीत् अमखीत् ममाख
रखति अराखीत् अरखीत् रराख
लखति अलाखीत् अलखीत् ललाख लेखतुः
वखति । अवाखीत् । अवखीत्
प० ववाख ववखतुः ववखुः
ववखिथ ववखथुः ववख

ववाङ्घ ववङ्ख ववङ्खिव ववङ्खिम

मखु रखु लखु रिखु रगु लगु तगु श्रगु श्लगु वगु मगु स्वगु रिगु लिगु गतौ

मखु-मङ्खति । अमङ्खीत् । ममङ्ख

रखु-रङ्खति । अरङ्खीत् । ररङ्ख

लखु-लङ्खति । अलङ्खीत् । ललङ्ख

रिखु-रिङ्खति । अरिङ्खीत् । रिरिङ्ख

रगु-रङ्गति । अरङ्गीत् । ररङ्ग

लगु-लङ्गति । अलङ्गीत् । ललङ्ग

तगु-तङ्गति । अतङ्गीत् । ततङ्ग

श्रगु-श्रङ्गति । अश्रङ्गीत् । शश्रङ्ग

श्लगु-श्लङ्गति । अश्लङ्गीत् । शश्लङ्ग

वगु-वङ्गति । अवङ्गीत् । ववङ्ग

मगु-मङ्गति । अमङ्गीत् । ममङ्ग

स्वगु-स्वङ्गति । अस्वङ्गीत् । सस्वङ्ग

रिगु-रिङ्गति । अरिङ्गीत् । रिरिङ्ग

लिगु-लिङ्गति । अलिङ्गीत् । लिलिङ्ग

॥ इख गतौ ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | एखति | एखतः | एखन्ति |
| | एखसि | एखथः | एखथ |
| | एखामि | एखावः | एखामः |
| स० | एखेत् | एखेताम् | एखेयुः |
| | एखेः | एखेतम् | एखेत |
| | एखेयम् | एखेव | एखेम |
| प० | एखतु एखतात् | एखताम् | एखन्तु |
| | एख ” | एखतम् | एखत |
| | एखानि | एखाव | एखाम |
| ह्य० | ऐखत् | ऐखताम् | ऐखन् |
| | ऐखः | ऐखतम् | ऐखत |
| | ऐखम् | ऐखाव | ऐखाम |
| अ० | ऐखीत् | ऐखिष्टाम् | ऐखिषुः |
| | ऐखीः | ऐखिष्टम् | ऐखिष्ट |
| | ऐखिषम् | ऐखिष्व | ऐखिष्म |
| प० | इयेख | ईखतुः | ईखुः |
| | इयेखिथ | ईखथुः | ईख |
| | इयेख | ईखिव | ईखिम |
| आ० | इख्यात् | इख्यास्ताम् | इख्यासुः |
| | इख्याः | इख्यास्तम् | इख्यास्त |
| | इख्यासम् | इख्यास्व | इख्यास्म |
| श्व० | एखिता | एखितारौ | एखितारः |
| | एखितासि | एखितास्थः | एखितास्थ |
| | एखितास्मि | एखितास्वः | एखितास्मः |
| भ० | एखिष्यति | एखिष्यतः | एखिष्यन्ति |
| | एखिष्यसि | एखिष्यथः | एखिष्यथ |
| | एखिष्यामि | एखिष्यावः | एखिष्यामः |
| क्रि० | ऐखिष्यत् | ऐखिष्यताम् | ऐखिष्यन् |
| | ऐखिष्यः | ऐखिष्यतम् | ऐखिष्यत |
| | ऐखिष्यम् | ऐखिष्याव | ऐखिष्याम |

ईखु इखु इगु उगु गतौ—

ईङ्खति । इङ्खति । इङ्गति । उङ्गति ।

अ० ऐङ्खीत् । ऐङ्खीत । ऐङ्गीत । औङ्गीत् ।

प० इङ्खाञ्चकार । इङ्खामास । इङ्खाम्बभूव

ईङ्खाञ्चकार । ईङ्खामास । ईङ्खाम्बभूव ।

इङ्गाञ्चकार । इङ्गामास । इङ्गाम्बभूव ।

उङ्गाञ्चकार । उङ्गामास । उङ्गाम्बभूव ।

॥ वल्ग गतौ ॥

वल्गति । अवल्गीत् । ववल्ग ।

अगु गतौ ॥ अङ्गति । आङ्गीत् ।

आनङ्ग आनङ्गतुः आनङ्गुः

आनङ्गिथ आनङ्गथुः आनङ्ग

आनङ्ग आनङ्गिव आनङ्गिम

त्वगु कम्पने च । युगु जुगु वुगु वर्जने ।

त्वङ्गति अत्वङ्गीत् तत्वङ्ग

युङ्गति अयुङ्गीत् युयुङ्ग

जुङ्गति अजुङ्गीत् जुजुङ्ग

वुङ्गति अवुङ्गीत् वुवुङ्ग

गग्ध हसने । दघु पालने । शिघु आघ्राणे

मघु मण्डने । लघु शोषणे ।

गग्धति अगग्धीत् जगग्ध

दङ्घति अदङ्घीत् ददङ्घ

| | | |
|---|---|---|
| शिङ्घति | अशिङ्घीत् | शिशिङ्घ |
| मङ्घति | अमङ्घीत् | ममङ्घ |
| लङ्घति | अलङ्घीत् | ललङ्घ |

॥ शुच् शोके ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | शोचति | शोचतः | शोचन्ति |
| | शोचसि | शोचथः | शोचथ |
| | शोचामि | शोचावः | शोचामः |
| स० | शोचेत् | शोचेताम् | शोचेयुः |
| | शोचेः | शोचेतम् | शोचेत |
| | शोचेयम् | शोचेव | शोचेम |
| प० | शोचतु शोचतात् | शोचताम् | शोचन्तु |
| | शोच ,, | शोचतम् | शोचत |
| | शोचानि | शोचाव | शोचाम |
| ह्य० | अशोचत् | अशोचताम् | अशोचन् |
| | अशोचः | अशोचतम् | अशोचत |
| | अशोचम् | अशोचाव | अशोचाम |
| अ० | अशोचीत् | अशोचिष्टाम् | अशोचिषुः |
| | अशोचीः | अशोचिष्टम् | अशोचिष्ट |
| | अशोचिषम् | अशोचिष्व | अशोचिष्म |
| प० | शुशोच | शुशुचतुः | शुशुचुः |
| | शुशोचिथ | शुशुचथुः | शुशुच |
| | शुशोच | शुशुचिव | शुशुचिम |
| आ० | शुच्यात् | शुच्यास्ताम् | शुच्यासुः |
| | शुच्याः | शुच्यास्तम् | शुच्यास्त |
| | शुच्यासम् | शुच्यास्व | शुच्यास्म |
| श्व० | शोचिता | शोचितारौ | शोचितारः |
| | शोचितासि | शोचितास्थः | शोचितास्थ |
| | शोचितास्मि | शोचितास्वः | शोचितास्मः |
| भ० | शोचिष्यति | शोचिष्यतः | शोचिष्यन्ति |
| | शोचिष्यसि | शोचिष्यथः | शोचिष्यथ |
| | शोचिष्यामि | शोचिष्यावः | शोचिष्यामः |
| क्रि० | अशोचिष्यत् | अशोचिष्यताम् | अशोचिष्यन् |
| | अशोचिष्यः | अशोचिष्यतम् | अशोचिष्यत |
| | अशोचिष्यम् | अशोचिष्याव | अशोचिष्याम |

॥ कुच-शब्दे तारे ॥

कोचति अकोचीत्

| | | |
|---|---|---|
| चुकोच | चुकुचतुः | चुकुचुः |
| चुकोचिथ | चुकुचथुः | चुकुच |
| चुकोच | चुकुचिव | चुकुचिम |

॥ कुञ्च-गतौ ॥

कुञ्चति । अकुञ्चीत् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | चुकुञ्च | चुकुञ्चतुः | चुकुञ्चुः |
| | चुकुञ्चिथ | चुकुञ्चथुः | चुकुञ्च |
| | चुकुञ्च | चुकुञ्चिव | चुकुञ्चिम |
| आ० | कुच्यात् | कुच्यास्ताम् | कुच्यासुः |
| | कुच्याः | कुच्यास्तम् | कुच्यास्त |
| | कुच्यासम् | कुच्यास्व | कुच्यास्म |

कुञ्च च कौटिल्याल्पीभावयोः

लुञ्च अपनयने । वञ्चू चञ्चू तञ्चू

त्वञ्चू मञ्चू मुञ्चू म्रुञ्चू गतौ ।

| | | |
|---|---|---|
| कुञ्चति | अकुञ्चीत् | चुकुञ्च |
| लुञ्चति । | अलुञ्चीत् । | लुलुञ्च |
| वञ्चति । | अवञ्चीत् । | ववञ्च |
| चञ्चति । | अचञ्चीत् । | चचञ्च |
| तञ्चति । | अतञ्चीत् । | ततञ्च |
| त्वञ्चति । | अत्वञ्चीत् । | तत्वञ्च |
| मञ्चति । | अमञ्चीत् । | ममञ्च |
| मुञ्चति । | अमुञ्चीत् । | मुमुञ्च |
| म्रुञ्चति । | अम्रुञ्चीत् । | मुम्रुञ्च |

॥ षञ्च-गतौ ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | सञ्चति | सञ्चतः | सञ्चन्ति |
| | सञ्चसि | सञ्चथः | सञ्चथ |
| | सञ्चामि | सञ्चावः | सञ्चामः |
| अ० | असञ्चीत् | असञ्चिष्टाम् | असञ्चिषुः |
| | असञ्चीः | असञ्चिष्टम् | असञ्चिष्ट |
| | असञ्चिषम् | असञ्चिष्व | असञ्चिष्म |
| प० | ससञ्च | ससञ्चतुः | ससञ्चुः |
| | ससञ्चिथ | ससञ्चथुः | ससञ्च |
| | ससञ्च | ससञ्चिव | ससञ्चिम |

शेषं फक्कवत् ॥

॥ अर्च — पूजायाम्, ॥

व० अर्चति अर्चतः अर्चन्ति
अर्चसि अर्चथः अर्चथ
अर्चामि अर्चावः अर्चामः
स० अर्चेत् अर्चेताम् अर्चेयुः
अर्चेः अर्चेतम् अर्चेत
अर्चेयम् अर्चेव अर्चेम
प० अर्चतु अर्चतात् अर्चताम् अर्चन्तु
अर्च ,, अर्चतम् अर्चत
अर्चानि अर्चाव अर्चाम
ह्य० आर्चत् आर्चताम् आर्चन्
आर्चः आर्चतम् आर्चत
आर्चम् आर्चाव आर्चाम
अ० आर्चीत् आर्चिष्टाम् आर्चिषुः
आर्चीः आर्चिष्टम् आर्चिष्ट
आर्चिषम् आर्चिष्व आर्चिष्म
प० आनर्च आनर्चतुः आनर्चुः
आनर्चिथ आनर्चथुः आनर्च
आनर्च आनर्चिव आनर्चिम
आ०अर्च्यात् अर्च्यास्ताम् अर्च्यासुः
अर्च्याः अर्च्यास्तम् अर्च्यास्त
अर्च्यासम् अर्च्यास्व अर्च्यास्म
श्व०अर्चिता अर्चितारौ अर्चितारः
अर्चितासि अर्चितास्थः अर्चितास्थ
अर्चितास्मि अर्चितास्वः अर्चितास्मः
भ० अर्चिष्यति अर्चिष्यतः अर्चिष्यन्ति
अर्चिष्यसि अर्चिष्यथः अर्चिष्यथ
अर्चिष्यामि अर्चिष्यावः अर्चिष्यामः
क्रि०आर्चिष्यत् आर्चिष्यताम् आर्चिष्यन्
आर्चिष्यः आर्चिष्यतम् आर्चिष्यत
आर्चिष्यम् आर्चिष्याव आर्चिष्याम

---

अञ्चू गतौ

व० अञ्चति अञ्चतः अञ्चन्ति
अञ्चसि अञ्चथः अञ्चथ
अञ्चामि अञ्चावः अञ्चामः
स० अञ्चेत् अञ्चेताम् अञ्चेयुः
अञ्चेः अञ्चेतम् अञ्चेत
अञ्चेयम् अञ्चेव अञ्चेम
प० अञ्चतु अञ्चतात् अञ्चताम् अञ्चन्तु
अञ्च ,, अञ्चतम् अञ्चत
अञ्चानि अञ्चाव अञ्चाम
ह्य० आञ्चत् आञ्चताम् आञ्चन्
आञ्चः आञ्चतम् आञ्चत
आञ्चम् आञ्चाव आञ्चाम
अ० आञ्चीत् आञ्चिष्टाम् आञ्चिषुः
आञ्चीः आञ्चिष्टम् आञ्चिष्ट
आञ्चिषम् आञ्चिष्व आञ्चिष्म
प० आनञ्च आनञ्चतुः आनञ्चुः
आनञ्चिथ आनञ्चथुः आनञ्च
आनञ्च आनञ्चिव आनञ्चिम
आ०अच्यात् अच्यास्ताम् अच्यासुः
अच्याः अच्यास्तम् अच्यास्त
अच्यासम् अच्यास्व अच्यास्म
पूजायाम्,
अञ्च्यात् अञ्च्यास्ताम् अञ्च्यासुः
अञ्च्याः अञ्च्यास्तम् अञ्च्यास्त
अञ्च्यासम् अञ्च्यास्व अञ्च्यास्म
श्व०अञ्चिता अञ्चितारौ अञ्चितारः
अञ्चितासि अञ्चितास्थः अञ्चितास्थ
अञ्चितास्मि अञ्चितास्वः अञ्चितास्मः
भ० अञ्चिष्यति अञ्चिष्यतः अञ्चिष्यन्ति
अञ्चिष्यसि अञ्चिष्यथः अञ्चिष्यथ
अञ्चिष्यामि अञ्चिष्यावः अञ्चिष्यामः
क्रि०आञ्चिष्यत् आञ्चिष्यताम् आञ्चिष्यन्
आञ्चिष्यः आञ्चिष्यतम् आञ्चिष्यत
आञ्चिष्यम् आञ्चिष्याव आञ्चिष्याम

---

म्रुचू गतौ

म्रोचति ।

अ० अम्रुचत् अम्रुचताम् अम्रुचन्
अम्रुचः अम्रुचतम् अम्रुचत

अमुचम् अमुचाव अमुचाम
अम्रोचीत् अम्रोचिष्टाम् अम्रोचिषुः
अम्रोचीः अम्रोचिष्टम् अम्रोचिष्ट
अम्रोचिषम् अम्रोचिष्व अम्रोचिष्म

मुम्रोच ।

म्लुचू ग्लुञ्चू गतौ । ग्रुचू ग्लुचू स्तेये ।
म्लोचति । अम्लोचीत् । अम्लुचत्
मुम्लोच ।ग्रोचति । अग्रोचीत् ।
अग्रुचत् । जुग्रोच । ग्लोचति
अग्लोचीत् । अग्लुचत् । जुग्लोच ।

नेदं रूपमन्येषां मते ।

ग्लुञ्चू गतौ,—ग्लुञ्चति

अ० अग्लुचत् अग्लुचताम् अग्लुचन्
अग्लुचः अग्लुचतम् अग्लुचत
अग्लुचम् अग्लुचाव अग्लुचाम

केषाञ्चिन्मते अग्लुञ्चत् इत्यादि ।
अग्लुञ्चीत् अग्लुञ्चिष्टाम् अग्लुञ्चिषुः
अग्लुञ्चीः अग्लुञ्चिष्टम् अग्लुञ्चिष्ट
अग्लुञ्चिषम् अग्लुञ्चिष्व अग्लुञ्चिष्म

प० जुग्लुञ्च जुग्लुञ्चतुः जुग्लुञ्चुः
जुग्लुञ्चिथ जुग्लुञ्चथुः जुग्लुञ्च
जुग्लुञ्च जुग्लुञ्चिव जुग्लुञ्चिम

म्लेच्छ अव्यक्तायां वाचि ।

म्लेच्छति म्लेच्छेत् म्लेच्छतु
अम्लेच्छत् अम्लेच्छीत्

प० मिम्लेच्छ मिम्लेच्छतुः मिम्लेच्छुः
मिम्लेच्छिथ मिम्लेच्छथुः मिम्लेच्छ
मिम्लेच्छ मिम्लेच्छिव मिम्लेच्छिम
म्लेच्छ्यात् म्लेच्छिता म्लेच्छिष्यति
अम्लेच्छिष्यत् ।

॥ वाछि इच्छायाम् ॥

वाञ्छति । वाञ्छेत् । वाञ्छतु ।
अवाञ्छत् । अवाञ्छीत् । ववाञ्छ
। वाञ्छ्यात् । वाञ्छिता ।
वाञ्छिष्यति । अवाञ्छिष्यत् ।

॥ लाछि लक्षणे ॥

लाञ्छति । अलाञ्छीत् । ललाञ्छ ।

॥ लच्छ लक्षणे ॥

लच्छति । अलच्छीत् । ललच्छ

॥ आछि आयामे ॥

आञ्छति । आञ्छेत् । आञ्छतु ।
आञ्छत् । आञ्छीत् ।

प० आञ्छ आञ्छतुः आञ्छुः
आञ्छिथ आञ्छथुः आञ्छ
आञ्छ आञ्छिव आञ्छिम
मतान्तरे । आनाञ्छ । आनाञ्छिथ इ०
आञ्छ्यात् । आञ्छिता । आञ्छिष्यति
। आञ्छिष्यत ।

॥ ह्रीच्छ लज्जायाम् ॥

ह्रीच्छति । ह्रीच्छेत । ह्रीच्छतु ।
अह्रीच्छत् । अह्रीच्छीत् । जिह्रीच्छ ।
ह्रीच्छ्यात् । ह्रीच्छिता । ह्रीच्छिष्यति ।
अह्रीच्छिष्यत् ।

॥ हुर्च्छा कौटिल्ये ॥

हूर्च्छति । हूर्च्छेत् । हूर्च्छतु । अहूर्च्छत् ।
अहूर्च्छीत् ।

प० जुहूर्च्छ जुहूर्च्छतुः जुहूर्च्छुः
जुहूर्च्छिथ जुहूर्च्छथुः जुहूर्च्छ
जुहूर्च्छ जुहूर्च्छिव जुहूर्च्छिम
हूर्च्छ्यात् । हूर्च्छिता । हूर्च्छिष्यति ।
अहूर्च्छिष्यत् ।

॥ मुर्च्छा मोहसमुच्छ्राययोः ॥

मूर्च्छति । अमूर्च्छीत । मुमूर्च्छ ।

॥ स्फुर्च्छा स्मुर्च्छा विस्मृतौ ॥

स्फूर्च्छति । अस्फूर्च्छीत् । पुस्फूर्च्छ ।
स्मूर्च्छति । अस्मूर्च्छीत् । सुस्मूर्च्छ ।

॥ युच्छ प्रमादे ॥

युच्छति । युच्छेत् । युच्छतु ।

अयुच्छत् । अयुच्छीत् । युयुच्छ ।
युच्छयात् । युच्छिता । युच्छिष्यति ।
अयुच्छिष्यत् ।

॥ धृज गतौ ॥

धर्जति । धर्जेत् । धर्जतु । अधर्जत् ।
अधर्जीत् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | दधर्ज | दधृजतुः | दधृजुः |
| | दधर्जिथ | दधृजथुः | दधृज |
| | दधर्ज | दधृजिव | दधृजिम |

धृज्यात् । धर्जिता । धर्जिष्यति ।
अधर्जिष्यत् ।

॥ धृजु ध्वजु ध्रजु ध्रज गतौ ॥

धृञ्जति । अधृञ्जीत् । दधृञ्ज ।
ध्वञ्जति । अध्वञ्जीत् । दध्वञ्ज ।
ध्रञ्जति । अध्रञ्जीत् । दध्रञ्ज ।
ध्रजति । अध्राजीत् । अध्रजीत् ।
दध्राज ।

॥ ध्वज गतौ ॥

ध्वजति । अध्वजीत् । अध्वाजीत् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | दध्वाज | दध्वजतुः | दध्वजुः |
| | दध्वजिथ | दध्वजथुः | दध्वज |
| | दध्वाज दध्वज | दध्वजिव | दध्वजिम |

॥ वज गतौ ॥

वजति । अवजीत् । अवाजीत् ।
ववाज । ववजिथ ।

॥ षस्ज गतौ ॥

सज्जति । असज्जीत् । ससज्ज ।
मतान्तरेऽयं आत्मनेपदीपि सज्जते ।

॥ कुजू खुजू स्तेये ॥

कोजति । अकोजीत् । चुकोज ।
खोजति । अखोजीत् । चुखोज ।

॥ अर्ज सर्ज अर्जने ॥

अर्जति । आर्जीत् । आनर्ज ।
सर्जति । सर्जेत् । सर्जतु । असर्जत् ।
असर्जीत् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | ससर्ज | ससर्जतुः | ससर्जुः |
| | ससर्जिथ | ससर्जथुः | ससर्ज |
| | ससर्ज | ससर्जिव | ससर्जिम |

सर्ज्यात् । सर्जिता । सर्जिष्यति ।
असर्जिष्यत् ।

॥ कर्ज व्यथने ॥

कर्जति । अकर्जीत् । चकर्ज ।

॥ खर्ज मार्जने च ॥

खर्जति । अखर्जीत् । चखर्ज ।

॥ खज मन्थे ॥

खजति । अखाजीत् । अखजीत्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | चखाज | चखजतुः | चखजुः |
| | चखजिथ | चखजथुः | चखज |
| | चखाज चखज | चखजिव | चखजिम |

॥ खजु गतिवैकल्ये ॥

खञ्जति । अखञ्जीत् । चखञ्ज ।

॥ व्रज गतौ ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | व्रजति | व्रजतः | व्रजन्ति |
| | व्रजसि | व्रजथः | व्रजथ |
| | व्रजामि | व्रजावः | व्रजामः |
| स० | व्रजेत् | व्रजेताम् | व्रजेयुः |
| | व्रजेः | व्रजेतम् | व्रजेत |
| | व्रजेयम् | व्रजेव | व्रजेम |
| प० | व्रजतु व्रजतात् | व्रजताम् | व्रजन्तु |
| | व्रज ,, | व्रजतम् | व्रजत |
| | व्रजानि | व्रजाव | व्रजाम |
| ह्य० | अव्रजत् | अव्रजताम् | अव्रजन् |
| | अव्रजः | अव्रजतम् | अव्रजत |
| | अव्रजम् | अव्रजाव | अव्रजाम |
| अ० | अव्राजीत् | अव्राजिष्टाम् | अव्राजिषुः |
| | अव्राजीः | अव्राजिष्टम् | अव्राजिष्ट |
| | अव्राजिषम् | अव्राजिष्व | अव्राजिष्म |
| प० | वव्राज | वव्रजतुः | वव्रजुः |
| | वव्रजिथ | वव्रजथुः | वव्रज |
| | वव्राज वव्रज | वव्रजिव | वव्रजिम |
| आ० | व्रज्यात् | व्रज्यास्ताम् | व्रज्यासुः |
| | व्रज्याः | व्रज्यास्तम् | व्रज्यास्त |
| | व्रज्यासम् | व्रज्यास्व | व्रज्यास्म |

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्व० | व्रजिता | व्रजितारौ | व्रजितारः |
| | व्रजितासि | व्रजितास्थः | व्रजितास्थ |
| | व्रजितास्मि | व्रजितास्वः | व्रजितास्मः |
| भ० | व्रजिष्यति | व्रजिष्यतः | व्रजिष्यन्ति |
| | व्रजिष्यसि | व्रजिष्यथः | व्रजिष्यथ |
| | व्रजिष्यामि | व्रजिष्यावः | व्रजिष्यामः |
| क्रि० | अव्रजिष्यत् | अव्रजिष्यताम् | अव्रजिष्यन् |
| | अव्रजिष्यः | अव्रजिष्यतम् | अव्रजिष्यत |
| | अव्रजिष्यम् | अव्रजिष्याव | अव्रजिष्याम |

॥ अज—क्षेपणे च ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | अजति | अजतः | अजन्ति |
| | अजसि | अजथः | अजथ |
| | अजामि | अजावः | अजामः |
| स० | अजेत् | अजेताम् | अजेयुः |
| | अजेः | अजेतम् | अजेत |
| | अजेयम् | अजेव | अजेम |
| प० | अजतु अजतात् | अजताम् | अजन्तु |
| | अज ,, | अजतम् | अजत |
| | अजानि | अजाव | अजाम |
| ह्य० | आजत् | आजताम् | आजन् |
| | आजः | आजतम् | आजत |
| | आजम् | आजाव | आजाम |
| अ० | अवैषीत् | अवैष्टाम् | अवैषुः |
| | अवैषीः | अवैष्टम् | अवैष्ट |
| | अवैषम् | अवैष्व | अवैष्म |

आजीत् इत्याद्यपि मतान्तरे

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | विवाय | विव्यतुः | विव्युः |
| | विवयिथ विवेथ | विव्यथुः | विव्य |
| | विवाय विवय | विव्यिव | विव्यिम |

पाणिनिमते आजिथ

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | वीयात् | वीयास्ताम् | वीयासुः |
| | वीयाः | वीयास्तम् | वीयास्त |
| | वीयासम् | वीयास्व | वीयास्म |
| श्व० | वेता | वेतारौ | वेतारः |
| | वेतासि | वेतास्थः | वेतास्थ |
| | वेतास्मि | वेतास्वः | वेतास्मः |

अजिता इत्याद्यपि

| | | | |
|---|---|---|---|
| भ० | वेष्यति | वेष्यतः | वेष्यन्ति |
| | वेष्यसि | वेष्यथः | वेष्यथ |
| | वेष्यामि | वेष्यावः | वेष्यामः |

पाणिनिमते अजिष्यति इत्याद्यपि

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्रि० | अवेष्यत् | अवेष्यताम् | अवेष्यन् |
| | अवेष्यः | अवेष्यतम् | अवेष्यत |
| | अवेष्यम् | अवेष्याव | अवेष्याम |

आजिष्यत्

। एजृ कम्पने ।

एजति । एजेत् । एजतु । ऐजत् । ऐजीत् एजाञ्चकार – एजामास – एजाम्बभूव एज्यात् । एजिता । एजिष्यति । ऐजिष्यत् ।

॥ टुओस्फूर्जा वज्रनिर्घोषे ॥

स्फूर्जति । अस्फूर्जीत् । पुस्फूर्ज

॥ क्षीज कूज गुज गुजु अव्यक्ते शब्दे ॥

क्षीजति । अक्षीजीत् ।
गोजति । अगोजीत् । जुगोज ।
गुञ्जति । अगुञ्जीत् । जुगुञ्ज ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | चिक्षीज | चिक्षीजतुः | चिक्षीजुः |
| | चिक्षीजिथ | चिक्षीजथुः | चिक्षीज |
| | चिक्षीज | चिक्षीजिव | चिक्षीजिम |

कूजति । कूजेत् । कूजतु । अकूजत् । अकूजीत् । चुकूज । कूज्यात् । कूजिता । कूजिष्यति । अकूजिष्यत् ।

॥ लज लजु तर्ज भर्त्सने ॥

लजति । अलाजीत् । अलजीत् । ललाज ।
लञ्जति । अलञ्जीत् । ललञ्ज ।
तर्जति । अतर्जीत् । ततर्ज ।

॥ लाज लाजु भर्जने च ॥

लाजति । लाजेत् । लाजतु ।

अलाजत् । अलाजीत् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | ललाज | ललाजतुः | ललाजुः |
| | ललाजिथ | ललाजथुः | ललाज |
| | ललाज | ललाजिव | ललाजिम |

लज्यात् । लाजिता । लाजिष्यति ।
अलाजिष्यत् ।

॥ लाजु ॥

लाञ्जति । अलाञ्जीत् । ललाञ्ज ।

॥ जज युद्धे । जजु युद्धे । तुज हिंसायाम् । तुजु बलने च ॥

जजति । अजजीत् । जजाज ।
जञ्जति । अजञ्जीत् । जजञ्ज ।
तोजति । अतोजीत् । तुतोज ।
तुञ्जति । अतुञ्जीत् । तुतुञ्ज ।

॥ गर्ज शब्दे ॥

गर्जति । अगर्जीत् । जगर्ज ।

॥ गजु गृजु मुजु मृजु शब्दे ॥

गञ्जति । अगञ्जीत् । जगञ्ज ।
गृञ्जति । अगृञ्जीत् । जगृञ्ज ।
मुञ्जति । अमुञ्जीत् । मुमुञ्ज ।
मृञ्जति । अमृञ्जीत् । ममृञ्ज

॥ गृज मृज शब्दे ॥

गर्जति । अगर्जीत् । जगर्ज ।
मर्जति । अमर्जीत् । ममर्ज ।

॥ मुज शब्दे ॥

मोजति । अमोजीत् । मुमोज

॥ मज शब्दे ॥

मजति । अमाजीत् । ममाज । अमजीत् ।

॥ गज मदने च ॥

गजति । अगाजीत् । अगजीत्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | जगाज | जगजतुः | जगजुः |
| | जगजिथ | जगजथुः | जगज |
| | जगाज,जगज | जगजिव | जगजिम |

॥ त्यर्ज—हानौ ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | त्यजति | त्यजतः | त्यजन्ति |
| | त्यजसि | त्यजथः | त्यजथ |
| | त्यजामि | त्यजावः | त्यजामः |
| स० | त्यजेत् | त्यजेताम् | त्यजेयुः |
| | त्यजेः | त्यजेतम् | त्यजेत |
| | त्यजेयम् | त्यजेव | त्यजेम |
| प० | त्यजतु त्यजतात् | त्यजताम् | त्यजन्तु |
| | त्यज ,, | त्यजतम् | त्यजत |
| | त्यजानि | त्यजाव | त्यजाम |
| ह्य० | अत्यजत् | अत्यजताम् | अत्यजन् |
| | अत्यजः | अत्यजतम् | अत्यजत |
| | अत्यजम् | अत्यजाव | अत्यजाम |
| अ० | अत्याक्षीत् | अत्याक्ताम् | अत्याक्षुः |
| | अत्याक्षीः | अत्याक्तम् | अत्याक्त |
| | अत्याक्षम् | अत्याक्ष्व | अत्याक्ष्म |
| प० | तत्याज | तत्यजतुः | तत्यजुः |
| | तत्यजिथ तत्यक्थ | तत्यजथुः | तत्यज |
| | तत्याज तत्यज | तत्यजिव | तत्यजिम |
| आ० | त्यज्यात् | त्यज्यास्ताम् | त्यज्यासुः |
| | त्यज्याः | त्यज्यास्तम् | त्यज्यास्त |
| | त्यज्यासम् | त्यज्यास्व | त्यज्यास्म |
| श्व० | त्यक्ता | त्यक्तारौ | त्यक्तारः |
| | त्यक्तासि | त्यक्तास्थः | त्यक्तास्थ |
| | त्यक्तास्मि | त्यक्तास्वः | त्यक्तास्मः |
| भ० | त्यक्ष्यति | त्यक्ष्यतः | त्यक्ष्यन्ति |
| | त्यक्ष्यसि | त्यक्ष्यथः | त्यक्ष्यथ |
| | त्यक्ष्यामि | त्यक्ष्यावः | त्यक्ष्यामः |
| क्रि० | अत्यक्ष्यत् | अत्यक्ष्यताम् | अत्यक्ष्यन् |
| | अत्यक्ष्यः | अत्यक्ष्यतम् | अत्यक्ष्यत |
| | अत्यक्ष्यम् | अत्यक्ष्याव | अत्यक्ष्याम |

षञ्ज—सङ्ग

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | सजति | सजतः | सजन्ति |
| | सजसि | सजथः | सजथ |
| | सजामि | सजावः | सजामः |
| स० | सजेत् | सजेताम् | सजेयुः |
| | सजेः | सजेतम् | सजेत |
| | सजेयम् | सजेव | सजेम |

प० सजतु सजतात् सजताम् सजन्तु
सज ,, सजतम् सजत
सजानि सजाव सजाम
ल० असजत् असजताम् असजन्
असजः असजतम् असजत
असजम् असजाव असजाम
अ० असाङ्क्षीत् असाङ्क्ताम् असाङ्क्षुः
असाङ्क्षीः असाङ्क्तम् असाङ्क्त
असाङ्क्षम् असाङ्क्ष्व असाङ्क्ष्म
प० ससञ्ज ससञ्जतुः ससञ्जुः
ससञ्जिथ ससङ्क्थ ससञ्जथुः ससञ्ज
ससञ्ज ससञ्जिव ससञ्जिम
आ० सज्यात् सज्यास्ताम् सज्यासुः
सज्याः सज्यास्तम् सज्यास्त
सज्यासम् सज्यास्व सज्यास्म
श्व० सङ्क्ता सङ्क्तारौ सङ्क्तारः
सङ्क्तासि सङ्क्तास्थः सङ्क्तास्थ
सङ्क्तास्मि सङ्क्तास्वः सङ्क्तास्मः
भ० सङ्क्ष्यति सङ्क्ष्यतः सङ्क्ष्यन्ति
सङ्क्ष्यसि सङ्क्ष्यथः सङ्क्ष्यथ
सङ्क्ष्यामि सङ्क्ष्यावः सङ्क्ष्यामः
क्रि० असङ्क्ष्यत् असङ्क्ष्यताम् असङ्क्ष्यन्
असङ्क्ष्यः असङ्क्ष्यतम् असङ्क्ष्यत
असङ्क्ष्यम् असङ्क्ष्याव असङ्क्ष्याम

---

॥ कटे वर्षावरणयोः ॥

कटति । कटेत् । कटतु । अकटत् ।
अ० अकटीत् अकटिष्टाम् अकटिषुः
अकटीः अकटिष्टम् अकटिष्ट
अकटिषम् अकटिष्व अकटिष्म
प० चकाट चकटतुः चकटुः
चकटिथ चकटथुः चकट
चकाट, चकट चकटिव चकटिम

॥ शट रुजा विशरणगत्यवसादनेषु ॥

शटति । अशाटीत् । अशटीत् । शशाट ।

॥ वट वेष्टने ॥

वटति । अवाटीत् । अवटीत् । ववाट

॥ किट खिट–उत्त्रासे ॥

केटति । केटेत् । केटतु । अकेटत् ।
अकेटीत् । चिकेट । किट्यात् । केटिता ।
केटिष्यति । अकेटिष्यत् ।
खेटति । अखेटीत् । चिखेट ।

॥ शिट षिट–अनादरे ॥

शेटति । अशेटीत् । शिशेट ।
सेटति । असेटीत् । सिषेट ।

॥ झट–संघाते ॥

झटति । झटेत् । झटतु । अझटत् ।
अझाटीत् । अझटीत् ।
प० जझाट जझटतुः जझटुः
जझटिथ जझटथुः जझट
जझाट जझट जझटिव जझटिम
जट संघाते । पिट शब्दे च । भट भृतौ ।
तट उच्छ्राये । णट नृत्तौ ।
षट अवयवे । पट गतौ । लट बाल्ये ।
रट परिभाषणे । खट कांक्षे । हट दीप्तौ ।
जटति । अजाटीत् । अजटीत् । जजाट
पेटति । अपेटीत् । पिपेट ।
भटति । अभटीत् । अभाटीत् ।
बभाट । बभटतुः । बभटुः ।
तटति । अतटीत् । अताटीत् । तताट
नटति । अनटीत् । अनाटीत् । ननाट
सटति । असाटीत् । असटीत् । ससाट
पटति । अपाटीत् । अपटीत् । पपाट
लटति । अलाटीत् । अलटीत् । ललाट
रटति । अराटीत् । अरटीत् । रराट
खटति । अखाटीत् । अखटीत् । चखाट
हटति । अहाटीत् । अहटीत् । जहाट

॥ कट कटे–गतौ ॥

कटति । अकाटीत् । अकटीत् । चकाट
कटति । अकाटीत् । अकटीत् । चकाट

॥ लुट विलोटने ॥

लुटति । अलोटीत् । लुलोट ।
मुट प्रमर्दने । चुट अल्पीभावे । स्फुट

विशरणे । चिट प्रैष्ये । घिट शब्दे । किट गतौ ॥

मोटति । अमोटीत् । मुमोट ।
चोटति । अचोटीत् । चुचोट ।
स्फोटति । अस्फोटीत् । पुस्फोट ।
चेटति । अचेटीत् । चिचेट ।
वेटति । अवेटीत् । विवेट ।
केटति । अकेटीत् । चिकेट ।

॥ हेट विबाधायाम् ॥

हेटति । हेटेत् । हेटतु । अहेटत् । अहेटीत् । जिहेट । हेट्यात् । हेटिता हेटिष्यति । अहेटिष्यत् ।

॥ अट गतौ ॥

अटति । अटेत् । अटतु । आटत् । आटीत् । आट । अट्यात् । अटिता । अटिष्यति । आटिष्यत् ।

॥ इट गतौ ॥

एटति । ऐटीत् । इयेट । इयेटिथ

कुट्ट वैकल्ये । कट्ट गतौ । घुट्ट अल्पीभावे । वट्ट विभाजने । रुट्ट लुट्ट स्तेये । स्फट स्फुट्ट विशरणे ।

कुण्टति । अकुण्टीत् । चुकुण्ट ।
कण्टति । अकण्टीत् । चकण्ट ।
चुण्टति । अचुण्टीत् । चुचुण्ट ।
वण्टति । अवण्टीत् । ववण्ट ।
रुण्टति । अरुण्टीत् । रुरुण्ट ।
लुण्टति । अलुण्टीत् । लुलुण्ट ॥

स्फटति । अस्फाटीत् । अस्फटीत् । पस्फाट
स्फोटति । अस्फोटीत् । अस्फुटत् । पुस्फोट

रठ परिभाषणे । पठ व्यक्तायां वाचि । वठ स्थौल्ये । मठ मदनिवासयोश्च । कठ कृच्छ्रजीवने । हठ बलात्कारे । उठ उपघाते । रुठ लुठ उपघाते । पिठ हिंसासंक्लेशयोः । शठ कैतवे च । शुठ गतिप्रतीघाते । कुठु लुठु आलस्ये च । शुठु शोषणे । रुठु गतौ । अठ गतौ ।

रठति । अराठीत् । अरठीत् । रराठ ।
पठति । अपाठीत् । अपठीत् । पपाठ ।
वठति । अवाठीत् । अवठीत् ।
ववाठ । ववठतुः ।
मठति । अमाठीत् । अमठीत् । ममाठ ।
कठति । अकाठीत् । अकठीत् । चकाठ ।
हठति । अहाठीत् । अहठीत् । जहाठ ।
ओठति । औठीत् । उवोठ । उवोठिथ
रोठति । अरोठीत् । रुरोठ ।
लोठति । अलोठीत् । लुलोठ ।
पेठति । अपेठीत् । पिपेठ ।
शठति । अशाठीत् । अशठीत् । शशाठ
शोठति । अशोठीत् । शुशोठ ।
कुण्ठति । अकुण्ठीत् । चुकुण्ठ ।
लुण्ठति । अलुण्ठीत् । लुलुण्ठ ।
शुण्ठति । अशुण्ठीत् । शुशुण्ठ ।
रुण्ठति । अरुण्ठीत् । रुरुण्ठ ।
अठति । आठीत् । आठ ।

॥ पुडु प्रमर्दने । मुडु खण्डने च ॥

पुण्डति । अपुण्डीत् । पुपुण्ड
मुण्डति । मुण्डेत् । मुण्डतु अमुण्डत् । अमुण्डीत् । मुमुण्ड मुण्ड्यात् । मुण्डिता । मुण्डिष्यति अमुण्डिष्यत् ।

॥ मडु भूषायाम् । गडु वदनैकदेशे ॥

मण्डति । अमण्डीत् । ममण्ड
गण्डति । अगण्डीत् । जगण्ड.

॥ शौड़ गर्वे ॥

शौडति । शौडेत् । शौडतु । अशौडत् । अशौडीत् । शुशौड शौड्यात् । शौडिता । शौडिष्यति अशौडिष्यत् ।

॥ यौड़ सम्बन्धे ॥

यौडति । अयौडीत् । युयौड

॥ लौड़ उन्मादे ॥

लौडति । अलौडीत् । लुलौड

॥ रौडृ रौडृ अनादरे ॥
रौडति । अरौडीत् । ररौड ।
तौडति । अतौडीत् । तुतौड
॥ हौडृ गतौ ॥
हौडति । अहौडीत् । जुहौड
॥ मेडृ म्रेडृ म्लेडृ उन्मादे ॥
मेडति । मेडेत् । मेडतु
अमेडत् । अमेडीत् । मिमेड
मेड्यात् । मेडिता । मेडिष्यति
अमेडिष्यत् ।
म्रेडति । अम्रेडीत् । मिम्रेड
म्लेडति । अम्लेडीत् । मिम्लेड
॥ लोडृ उन्मादे ॥
लोडति । लोडेत् । लोडतु
अलोडत् । अलोडीत् । लुलोड ।
लोड्यात् । लोडिता । लोडिष्यति
अलोडिष्यत् ।
॥ रोडृ अनादरे, पूर्ववत् ॥
रोडति । अरोडीत् । ररोड
॥ क्रीडृ विहारे ॥
क्रीडति । क्रीडेत् । क्रीडतु
अक्रीडत् । चिक्रीड । अक्रीडीत्
क्रीड्यात् । क्रीडिता । क्रीडिष्यति
अक्रीडिष्यत् ।
॥ तुडृ तोडने ॥
तोडति । अतोडीत् । तुतोड
॥ तूडृ तोडने ॥
तूडति । तूडेत् । तूडतु
अतूडत् । अतूडीत् । तुतोड ।
तूडिता । तूडिष्यति । अतूडिष्यत्
॥ हुडृ गतौ शुचवत् ॥
होडति अहोडीत् जुहोड
॥ हूडृ हूडृ गतौ ॥
हूडति । अहूडीत् । जुहूड ।
हूडति । अहूडीत् । जुहूड ।
॥ खोडृ प्रतिघाते ॥
खोडति । अखोडीत् । चुखोड ।

॥ विड आक्रोशे ॥
वेडति । अवेडीत् । विवेड ।
॥ अड उद्यमे ॥
अडति । आडीत् । आड ।
॥ लड विलासे ॥
लडति । लडेत् । लडतु । अलडत् ।
अलाडीत् । अलडीत् । ललाड ।
लेडतुः । लेडुः । लड्यात् । लडिता
लडिष्यति । अलडिष्यत् ।
डस्य लत्वे तु —
ललति । ललेत् । ललतु । अललत् ।
अलालीत् । ललाल-लेलतुः-लेलुः ।
लल्यात् । ललिता । ललिष्यति ।
अललिष्यत् ।
कडु — मदे । कड्ड—कार्कश्ये ।
कण्डति । अकण्डीत् । चकण्ड ।
कड्डति । चकड्ड । अकड्डीत् ।
॥ अड्ड अभियोगे ॥
अड्डति । अड्डेत् । अड्डतु । आड्डत् ।
आड्डीत् । आनड्ड । अड्ड्यात् ।
अड्डिता । अड्डिष्यति । आड्डिष्यत् ।
॥ चुड्ड हावकरणे. ॥
चड्डति । चुड्डेत् । चुड्डतु । अचुड्डत् ।
अचुड्डीत् । चुचुड्ड । चुड्ड्यात् ।
चुड्डिता । चुड्डिष्यति । अचुड्डिष्यत् ।
॥ रण वण मण चण—शब्दे ॥
रणति । अराणीत् । अरणीत् । रराण
वणति । अवाणीत् । अवणीत् । ववाण
मणति । अमाणीत् । अमणीत् । ममाण
चणति । अचाणीत् । अचणीत् । चचाण
॥ भण-शब्दे ॥
भणति । भणेत् । भणतु । अभणत् ।
अभाणीत् । अभणीत् । बभाण ।
बभणतुः । बभणुः । भण्यात् । भणिता
भणिष्यति । अभणिष्यत् ।

॥ वण व्रण भ्रण धण ध्वण ध्रण कण क्वण शब्दे ॥

वणति । अवाणीत् । अवणीत् । ववाण
व्रणति । अव्राणीत् । अव्रणीत् । वव्राण
भ्रणति । अभ्राणीत् । अभ्रणीत् । बभ्राण
धणति । अधाणीत् । अधणीत् । दधाण
ध्वणति । अध्वाणीत् । अध्वणीत् । दध्वाण
ध्रणति । अध्राणीत् । अध्रणीत् । दध्राण ।
कणति । अकाणीत् । अकणीत् । चकाण
क्वणति । अक्वाणीत् । अक्वणीत् । चक्वाण

॥ अण शब्दे ॥

अणति । आणीत् । आण ।

॥ ओणृ अपनयने ॥

ओणति । ओणेत् । ओणतु । औणत्
औणीत् । ओणाञ्चकार । ओण्यात् ।
ओणिता । ओणिष्यति । औणिष्यत् ।

॥ शोणृ वर्णगत्योः ॥

शोणति । अशोणीत् । शुशोण ।

॥ श्रोणृ श्लोणृ सङ्घाते ॥

श्रोणति । अश्रोणीत् । शुश्रोण ।

श्लोणति । अश्लोणीत् । शुश्लोण ।

॥ पैणृ गतिप्रेरणश्लेषणेषु ॥

पैणति । पैणेत् । पैणतु । अपैणत् ।
अपैणीत् । पिपैण । पिपैणतुः ।
पिपैणुः । पैण्यात् । पैणिता । पैणिष्यति । अपैणिष्यत् ।

---

॥ चितै-संज्ञाने ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | चेतति | चेततः | चेतन्ति |
| | चेतसि | चेतथः | चेतथ |
| | चेतामि | चेतावः | चेतामः |
| स० | चेतेत् | चेतेताम् | चेतेयुः |
| | चेतेः | चेतेतम् | चेतेत |
| | चेतेयम् | चेतेव | चेतेम |

प० चेततु चेततात् चेतताम् चेतन्तु
चेत „ चेततम् चेतत

| | | | |
|---|---|---|---|
| | चेतानि | | चेताव | चेताम |
| ह्य० | अचेतत् | अचेतताम् | अचेतन् |
| | अचेतः | अचेततम् | अचेतत |
| | अचेतम् | अचेताव | अचेताम |
| अ० | अचेतीत् | अचेतिष्टाम् | अचेतिषुः |
| | अचेतीः | अचेतिष्टम् | अचेतिष्ट |
| | अचेतिषम् | अचेतिष्व | अचेतिष्म |
| प० | चिचेत | चिचिततुः | चिचितुः |
| | चिचेतिथ | चिचितथुः | चिचित |
| | चिचेत | चिचितिव | चिचितिम |
| आ० | चित्यात् | चित्यास्ताम् | चित्यासुः |
| | चित्याः | चित्यास्तम् | चित्यास्त |
| | चित्यासम् | चित्यास्व | चित्यास्म |
| श्व० | चेतिता | चेतितारौ | चेतितारः |
| | चेतितासि | चेतितास्थः | चेतितास्थ |
| | चेतितास्मि | चेतितास्वः | चेतितास्मः |
| भ० | चेतिष्यति | चेतिष्यतः | चेतिष्यन्ति |
| | चेतिष्यसि | चेतिष्यथः | चेतिष्यथ |
| | चेतिष्यामि | चेतिष्यावः | चेतिष्यामः |
| क्रि० | अचेतिष्यत् | अचेतिष्यताम् | अचेतिष्यन् |
| | अचेतिष्यः | अचेतिष्यतम् | अचेतिष्यत |
| | अचेतिष्यम् | अचेतिष्याव | अचेतिष्याम |

---

॥ अत सातत्यगमने ॥

अतति । आतीत् । आत ।

---

च्युतृ-आसेचने ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | च्योतति | च्योततः | च्योतन्ति |
| | च्योतसि | च्योतथः | च्योतथ |
| | च्योतामि | च्योतावः | च्योतामः |
| स० | च्योतेत् | च्योतेताम् | च्योतेयुः |
| | च्योतेः | च्योतेतम् | च्योतेत |
| | च्योतेयम् | च्योतेव | च्योतेम |

प० च्योततु च्योततात् च्योतताम् च्योतन्तु
च्योत „ च्योततम् च्योतत

च्योतानि च्योताव च्योताम
ह्य० अच्योतत् अच्योतताम् अच्योतन्
अच्योतः अच्योततम् अच्योतत
अच्योतम् अच्योताव अच्योताम
अ० अच्युतत् अच्युतताम् अच्युतन्
अच्युतः अच्युततम् अच्युतत
अच्युतम् अच्युताव अच्युताम
अच्योतीत् अच्योतिष्टाम् अच्योतिषुः
अच्योतीः अच्योतिष्टम् अच्योतिष्ट
अच्योतिषम् अच्योतिष्व अच्योतिष्म
प० चुच्योत चुच्युततुः चुच्युतुः
चुच्योतिथ चुच्युतथुः चुच्युत
चुच्योत चुच्युतिव चुच्युतिम
आ० च्युत्यात् च्युत्यास्ताम् च्युत्यासुः
च्युत्याः च्युत्यास्तम् च्युत्यास्त
च्युत्यासम् च्युत्यास्व च्युत्यास्म
श्व० च्योतिता च्योतितारौ च्योतितारः
च्योतितासि च्योतितास्थः च्योतितास्थ
च्योतितास्मि च्योतितास्वः च्योतितास्मः
भ० च्योतिष्यति च्योतिष्यतः च्योतिष्यन्ति
च्योतिष्यसि च्योतिष्यथः च्योतिष्यथ
च्योतिष्यामि च्योतिष्यावः च्योतिष्यामः
क्रि० अच्योतिष्यत् अच्योतिष्यताम् तिष्यन्
अच्योतिष्यः अच्योतिष्यतम् अच्योतिष्यत
अच्योतिष्यम् अच्योतिष्याव अच्योतिष्याम

---

॥ चुतॄ श्चुतॄ श्च्युतॄ क्षरणे ॥

चुतॄ-चोतति अचोतीत् अचुतत् चुचोत
श्चोतति अश्चोतीत् अश्चुतत् चुश्चोत
श्च्योतति अश्च्युतत् अश्च्योतीत् चुश्च्योत

॥ जुतॄ भासने ॥

जोतति अजुतत् अजोतीत् जुजोत

॥ अतु बन्धने ॥

अन्तति । अन्तेत् । अन्ततु ।
आन्तत् । आन्तीत् । आनन्त । अन्त्यात्
अन्तिता । अन्तिष्यति । आन्तिष्यत्

॥ कित-निवासे ॥

केतति अकेतीत् चिकेत
मतान्तरे निवासे, केतयति
(धातूनामनेकार्थत्वात् रोगापनयने संशये च
व० चिकित्सति चिकित्सतः चिकित्सन्ति
चिकित्ससि चिकित्सथः चिकित्सथ
चिकित्सामि चिकित्सावः चिकित्सामः
स०—चिकित्सेत् । प०—चिकित्सतु ।
ह्य०—अचिकित्सत् । अ० अचिकित्सीत् ।
प०—चिकित्साञ्चकार । आ०—चिकित्स्यात्
श्व०—चिकित्सिता । भ०—चिकित्सिष्यति
क्रि०—अचिकित्सिष्यत् ।

---

॥ ऋत-घृणागतिस्पर्द्धेषु ॥

व० ऋतीयते ऋतीयेते ऋतीयन्ते
ऋतीयसे ऋतीयेथे ऋतीयध्वे
ऋतीये ऋतीयावहे ऋतीयामहे
स० ऋतीयेत ऋतीयेयाताम् ऋतीयेरन्
ऋतीयेथाः ऋतीयेयाथाम् ऋतीयेध्वम्
ऋतीयेय ऋतीयेवहि ऋतीयेमहि
प० ऋतीयताम् ऋतीयेताम् ऋतीयन्ताम्
ऋतीयस्व ऋतीयेथाम् ऋतीयध्वम्
ऋतीयै ऋतीयावहै ऋतीयामहै
ह्य० आर्तीयत आर्तीयेताम् आर्तीयन्त
आर्तीयथाः आर्तीयेथाम् आर्तीयध्वम्
आर्तीये आर्तीयावहि आर्तीयामहि
अ० आर्तीयिष्ट आर्तीयिषाताम् आर्तीयिषत
आर्तीयिष्ठाः आर्तीयिषाथाम् आर्तीयिढ्वम्
आर्तीयिड्ढ्वम् आर्तीयिध्वम्
आर्तीयिषि आर्तीयिष्वहि आर्तीयिष्महि
आर्तीत् आर्तिष्टाम् आर्तिषुः
आर्तीः आर्तिष्टम् आर्तिष्ट
आर्तिषम् आर्तिष्व आर्तिष्म
प० ऋतीयाञ्चक्रे ऋतीयाञ्चक्राते ऋतीयाञ्चक्रिरे
ऋतीयाञ्चकृषे ऋतीयाञ्चक्राथे ऋतीयाञ्चकृढ्वे
ऋतीयाञ्चक्रे ऋतीयाञ्चकृवहे ऋतीयाञ्चकृमहे

ऋतीयामास ऋतीयामासतुः ऋतीयामासुः
ऋतीयामासिथ ऋतीयामासथुः ऋतीयामास
ऋतीयामास ऋतीयामासिव ऋतीयामासिम
ऋतीयाम्बभूव ऋतीयाम्बभूवतुः ऋतीयाम्बभूवुः
ऋतीयाम्बभूविथ ऋतीयाम्बभूवथुः-याम्बभूव
ऋतीयाम्बभूव ऋतीयाम्बभूविव-याम्बभूविम
आनर्त आनृततुः आनृतुः
आनर्तिथ आनृतथुः आनृत
आनर्त आनृतिव आनृतिम
ऋतीयिषीष्टऋतीयिषीयास्तामऋतीयिषीरन्
ऋतीयिषीष्ठाःऋतीयिषीयास्थाम् ऋतीयिषीढ्वम्
ऋतीयिषीध्वम्
ऋतीयिषीय ऋतीयिषीवहि ऋतीयिषीमहि
ऋत्यात् ऋत्यास्ताम् ऋत्यासुः
ऋत्याः ऋत्यास्तम् ऋत्यास्त
ऋत्यासम् ऋत्यास्व ऋत्यास्म
श्व०ऋतीयिता ऋतीयितारौ ऋतीयितारः
ऋतीयितासे ऋतीयितासाथे ऋतीयिताध्वे
ऋतीयिताहे ऋतीयितास्वहे ऋतीयितास्महे
अर्तिता अर्तितारौ अर्तितारः
अर्तितासि अर्तितास्थः अर्तितास्थ
अर्तितास्मि अर्तितास्वः अर्तितास्मः
भ० ऋतीयिष्यते ऋतीयिष्येते ऋतीयिष्यन्ते
ऋतीयिष्यसे ऋतीयिष्येथे ऋतीयिष्यध्वे
ऋतीयिष्ये ऋतीयिष्यावहे ऋतीयिष्यामहे
अर्तिष्यति अर्तिष्यतः अर्तिष्यन्ति
अर्तिष्यसि अर्तिष्यथः अर्तिष्यथ
अर्तिष्यामि अर्तिष्यावः अर्तिष्यामः
आर्तीयिष्यत आर्तीयिष्येताम् आर्तीयिष्यन्त
आर्तीयिष्यथाःआर्तीयिष्येथाम् आर्तीयिष्यध्वम्
आर्तीयिष्ये आर्तीयिष्यावहि आर्तीयिष्यामहि
आर्तिष्यत् आर्तिष्यताम् आर्तिष्यन्
आर्तिष्यः आर्तिष्यतम् आर्तिष्यत
आर्तिष्यम् आर्तिष्याव आर्तिष्याम

॥ कुथु पुथु लुथु मथु-हिंसासङ्क्लेशयोः ॥
कुन्थति । कुन्थेत् । कुन्थतु
अकुन्थत् । अकुन्थीत् । चुकुन्थ
कुन्थ्यात् । कुन्थिता । कुन्थिष्यति
अकुन्थिष्यत् । एवमेव चान्येयत्रयोऽपि
पुन्थति अपुन्थीत् पुपुन्थ
लुन्थति अलुन्थीत् लुलुन्थ
मन्थति अमन्थीत् ममन्थ
॥ मन्थ मान्थ हिंसासंक्लेशयोः ॥
मन्थति । मन्थेत् । मन्थतु ।
अमन्थत् । अमन्थीत् । ममन्थ
मथ्यात् । मन्थिता । मन्थिष्यति
अमन्थिष्यत् ।
एवम्—
मान्थति । मान्थेत् । मान्थतु ।
अमान्थत् । अमान्थीत् ।ममान्थ ।
माथ्यात् । मान्थिता । मान्थिष्यति ।
अमान्थिष्यत् ।
॥ खादृ-भक्षणे ॥
खादति । खादेत् । खादतु ।
अखादत् । अखादीत् । चखाद-चखा
दतुः—चखादुः । खाद्यात् । खादिता
खादिष्यति । अखादिष्यत् ।
॥ बद-स्थैर्ये । खद-हिंसायां च ।
बदति अबादीत् अबदीत् बबाद बेदतुः
खदति अखादीत् अखदीत्
प० चखाद चखदतुः चखदुः
चखदिथ चखदथुः चखद
चखाद चखद चखदिव चखदिम
॥ गद-व्यक्तायां वाचि ॥
गदति अगादीत् अगदीत् जगाद जगदतुः
॥ रद-विलेखने ॥
रदति अरादीत् अरदीत् रराद रेदतुः
॥ णद-अव्यक्ते शब्दे ॥
नदति अनादीत् अनदीत् ननाद नेदतुः
॥ ञिक्ष्विदा अव्यक्ते शब्दे ॥
क्ष्वेदति । अक्ष्वेदीत् इत्यादि
चितै धातुवत् ॥
प० चिक्ष्वेद चिक्ष्विदतुः चिक्ष्विदुः

चिक्ष्वेदिथ चिक्ष्विदथुः चिक्ष्विद
चिक्ष्वेद चिक्ष्विदिव चिक्ष्विदिम

॥ अर्द गतियाचनयोः ॥
अर्दति । आर्दीत् । आनर्द ।

॥ नर्द णर्द गर्द-शब्दे ॥
नर्द-नर्दति अनर्दीत् ननर्द
णर्द-नर्दति अनर्दीत् ननर्द
गर्द-गर्दति अगर्दीत् जगर्द

॥ तर्द हिंसायाम् ॥
तर्द-तर्दति अतर्दीत् ततर्द

कर्द कुत्सिते शब्दे ॥
कर्द-कर्दति अकर्दीत् चकर्द

॥ खर्द-दर्शने ॥
खर्द-खर्दति अखर्दीत चखर्द

॥ अदु-बन्धने ॥
अदु-अन्दति आन्दीत आनन्द

---

॥ इदु-परमैश्वर्ये ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | इन्दति | इन्दतः | इन्दन्ति |
| | इन्दसि | इन्दथः | इन्दथ |
| | इन्दामि | इन्दावः | इन्दामः |
| स० | इन्देत् | इन्देताम् | इन्देयुः |
| | इन्देः | इन्देतम् | इन्देत |
| | इन्देयम् | इन्देव | इन्देम |
| प० | इन्दतु इन्दतात् | इन्दताम् | इन्दन्तु |
| | इन्द ,, | इन्दतम् | इन्दत |
| | इन्दानि | इन्दाव | इन्दाम |
| ह्य० | ऐन्दत् | ऐन्दताम् | ऐन्दन् |
| | ऐन्दः | ऐन्दतम् | ऐन्दत |
| | ऐन्दम् | ऐन्दाव | ऐन्दाम |
| अ० | ऐन्दीत् | ऐन्दिष्टाम् | ऐन्दिषुः |
| | ऐन्दीः | ऐन्दिष्टम् | ऐन्दिष्ट |
| | ऐन्दिषम् | ऐन्दिष्व | ऐन्दिष्म |

प० इन्दाञ्चकार । इन्दामास । इन्दाम्बभूव

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | इन्द्यात् | इन्द्यास्ताम् | इन्द्यासुः |
| | इन्द्याः | इन्द्यास्तम् | इन्द्यास्त |
| | इन्द्यासम् | इन्द्यास्व | इन्द्यास्म |
| श्व० | इन्दिता | इन्दितारौ | इन्दितारः |
| | इन्दितासि | इन्दितास्थः | इन्दितास्थ |
| | इन्दितास्मि | इन्दितास्वः | इन्दितास्मः |
| भ० | इन्दिष्यति | इन्दिष्यतः | इन्दिष्यन्ति |
| | इन्दिष्यसि | इन्दिष्यथः | इन्दिष्यथ |
| | इन्दिष्यामि | इन्दिष्यावः | इन्दिष्यामः |
| क्रि० | ऐन्दिष्यत् | ऐन्दिष्यताम् | ऐन्दिष्यन् |
| | ऐन्दिष्यः | ऐन्दिष्यतम् | ऐन्दिष्यत |
| | ऐन्दिष्यम् | ऐन्दिष्याव | ऐन्दिष्याम |

---

॥ णिदु—कुत्सायाम् ॥
निन्दति । निन्देत् । निन्दतु ।
अनिन्दत् । अनिन्दीत् । निनिन्द ।
निन्द्यात् । निन्दिता । निन्दिष्यति
अनिन्दिष्यत्

॥ विदु—अवयवे ॥
विन्दति । अविन्दीत् ।
विविन्द । इत्यादि पूर्ववत् ।

---

॥ टुणदु -समृद्धौ ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | नन्दति | नन्दतः | नन्दन्ति |
| | नन्दसि | नन्दथः | नन्दथ |
| | नन्दामि | नन्दावः | नन्दामः |
| स० | नन्देत् | नन्देताम् | नन्देयुः |
| | नन्देः | नन्देतम् | नन्देत |
| | नन्देयम् | नन्देव | नन्देम |
| प० | नन्दतु नन्दतात् | नन्दताम् | नन्दन्तु |
| | नन्द ,, | नन्दतम् | नन्दत |
| | नन्दानि | नन्दाव | नन्दाम |
| ह्य० | अनन्दत् | अनन्दताम् | अनन्दन् |
| | अनन्दः | अनन्दतम् | अनन्दत |
| | अनन्दम् | अनन्दाव | अनन्दाम |

अ० अनन्दीत् अनन्दिष्टाम् अनन्दिषुः
अनन्दीः अनन्दिष्टम् अनन्दिष्ट
अनन्दिषम् अनन्दिष्व अनन्दिष्म
प० ननन्द ननन्दतुः ननन्दुः
ननन्दिथ ननन्दथुः ननन्द
ननन्द ननन्दिव ननन्दिम
आ० नन्द्यात् नन्द्यास्ताम् नन्द्यासुः
नन्द्याः नन्द्यास्तम् नन्द्यास्त
नन्द्यासम् नन्द्यास्व नन्द्यास्म
श्व० नन्दिता नन्दितारौ नन्दितारः
नन्दितासि नन्दितास्थः नन्दितास्थ
नन्दितास्मि नन्दितास्वः नन्दितास्मः
भ० नन्दिष्यति नन्दिष्यतः नन्दिष्यन्ति
नन्दिष्यसि नन्दिष्यथः नन्दिष्यथ
नन्दिष्यामि नन्दिष्यावः नन्दिष्यामः
क्रि०अनन्दिष्यत् अनन्दिष्यताम् अनन्दिष्यन्
अनन्दिष्यः अनन्दिष्यतम् अनन्दिष्यत
अनन्दिष्यम् अनन्दिष्याव अनन्दिष्याम

---

॥ चदु दीप्त्याह्लादनयोः ॥

चन्दति अचन्दीत् चचन्द

॥ त्रदु चेष्टायाम् ॥

त्रन्दति । अत्रन्दीत् । तत्रन्द ।

॥ कदु क्रदु क्लदु रोदना—ह्लादनयो. ॥

कन्दति । क्रन्दति । क्लन्दति
अकन्दीत् । अक्रन्दीत् । अक्लन्दीत्
चकन्द । चक्रन्द । चक्लन्द ।

॥ क्लिदु परिदेवने ॥

क्लिन्दति । क्लिन्देत् । क्लिन्दतु
अक्लिन्दत् । अक्लिन्दीत् ।
चिक्लिन्द । क्लिन्द्यात् । क्लिन्दिता
क्लिन्दिष्यति । अक्लिन्दिष्यत् ।

॥ स्कन्दृ-गतिशोषणयोः ॥

व० स्कन्दति स्कन्दतः स्कन्दन्ति
स्कन्दसि स्कन्दथः स्कन्दथ
स्कन्दामि स्कन्दावः स्कन्दामः
स० स्कन्देत् स्कन्देताम् स्कन्देयुः
स्कन्देः स्कन्देतम् स्कन्देत
स्कन्देयम् स्कन्देव स्कन्देम
प० स्कन्दतु स्कन्दतात् स्कन्दताम् स्कन्दन्तु
स्कन्द स्कन्दतात् स्कन्दतम् स्कन्दत
स्कन्दानि स्कन्दाव स्कन्दाम
ह्य० अस्कन्दत् अस्कन्दताम् अस्कन्दन्
अस्कन्दः अस्कन्दतम् अस्कन्दत
अस्कन्दम् अस्कन्दाव अस्कन्दाम
अ० अस्कदत् अस्कदताम् अस्कदन्
अस्कदः अस्कदतम् अस्कदत
अस्कदम् अस्कदाव अस्कदाम
अस्कान्त्सीत् अस्कान्ताम् अस्कान्त्सुः
अस्कान्त्सीः अस्कान्तम् अस्कान्त
अस्कान्त्सम् अस्कान्त्स्व अस्कान्त्स्म
प० चस्कन्द चस्कन्दतुः चस्कन्दुः
चस्कन्दिथ चस्कन्त्थ चस्कन्दथुः चस्कन्द
चस्कन्द चस्कन्दिव चस्कन्दिम
आ०स्कद्यात् स्कद्यास्ताम् स्कद्यासुः
स्कद्याः स्कद्यास्तम् स्कद्यास्त
स्कद्यासम् स्कद्यास्व स्कद्यास्म
श्व०स्कन्ता स्कन्तारौ स्कन्तारः
स्कन्तासि स्कन्तास्थः स्कन्तास्थ
स्कन्तास्मि स्कन्तास्वः स्कन्तास्मः
भ० स्कन्त्स्यति स्कन्त्स्यतः स्कन्त्स्यन्ति
स्कन्त्स्यसि स्कन्त्स्यथः स्कन्त्स्यथ
स्कन्त्स्यामि स्कन्त्स्यावः स्कन्त्स्यामः
क्रि०अस्कन्त्स्यत् अस्कन्त्स्यताम् अस्कन्त्स्यन्
अस्कन्त्स्यः अस्कन्त्स्यतम् अस्कन्त्स्यत
अस्कन्त्स्यम् अस्कन्त्स्याव अस्कन्त्स्याम

---

॥ षिधू गत्याम् ॥

सेधति । सेधेत् । सेधतु
असेधत् । असेधीत् । सिषेध ।
सिध्यात् । सेधिता । सेधिष्यति ।
असेधिष्यत् ।

षिधौ शास्त्रमाङ्गल्ययोः

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | सेधति | सेधतः | सेधन्ति |
| | सेधसि | सेधथः | सेधथ |
| | सेधामि | सेधावः | सेधामः |
| स० | सेधेत् | सेधेताम् | सेधेयुः |
| | सेधेः | सेधेतम् | सेधेत |
| | सेधेयम् | सेधेव | सेधेम |
| प० | सेधतु सेधतात् | सेधताम् | सेधन्तु |
| | सेध ,, | सेधतम् | सेधत |
| | सेधानि | सेधाव | सेधाम |
| ह्य० | असेधत् | असेधताम् | असेधन् |
| | असेधः | असेधतम् | असेधत |
| | असेधम् | असेधाव | असेधाम |
| अ० | असेधीत् | असेधिष्टाम् | असेधिषुः |
| | असेधीः | असेधिष्टम् | असेधिष्ट |
| | असेधिषम् | असेधिष्व | असेधिष्म |
| | असैत्सीत् | असैद्धाम् | असैत्सुः |
| | असैत्सीः | असैद्धम् | असैद्ध |
| | असैत्सम् | असैत्स्व | असैत्स्म |

मतान्तरे-शिषेद्ध । शिषिष्व । सिषिध्म ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | सिषेध | सिषिधतुः | सिषिधुः |
| | सिषेधिस | सिषिधथुः | सिषिध |
| | सिषेध | सिषिधिव | सिषिधिम |
| आ० | सिध्यात् | सिध्यास्ताम् | सिध्यासुः |
| | सिध्याः | सिध्यास्तम् | सिध्यास्त |
| | सिध्यासम् | सिध्यास्व | सिध्यास्म |
| श्व० | सेधिता | सेधितारौ | सेधितारः |
| | सेधितासि | सेधितास्थः | सेधितास्थ |
| | सेधितास्मि | सेधितास्वः | सेधितास्मः |
| | सेद्धा | सेद्धारौ | सेद्धारः |
| | सेद्धासि | सेद्धास्थः | सेद्धास्थ |
| | सेद्धास्मि | सेद्धास्वः | सेद्धास्मः |
| भ० | सेत्स्यति | सेत्स्यतः | सेत्स्यन्ति |
| | सेत्स्यसि | सेत्स्यथः | सेत्स्यथ |
| | सेत्स्यामि | सेत्स्यावः | सेत्स्यामः |
| | सेधिष्यति | सेधिष्यतः | सेधिष्यन्ति |
| | सेधिष्यसि | सेधिष्यथः | सेधिष्यथ |
| | सेधिष्यामि | सेधिष्यावः | सेधिष्यामः |
| क्रि० | असेधिष्यत् | असेधिष्यताम् | असेधिष्यन् |
| | असेधिष्यः | असेधिष्यतम् | असेधिष्यत |
| | असेधिष्यम् | असेधिष्याव | असेधिष्याम |
| | असेत्स्यत् | असेत्स्यताम् | असेत्स्यन् |
| | असेत्स्यः | असेत्स्यतम् | असेत्स्यत |
| | असेत्स्यम् | असेत्स्याव | असेत्स्याम |

शुन्ध शुद्धौ.

शुन्धति । शुन्धेत् । शुन्धतु । अशुन्धत् । अशुन्धीत् । शुशुन्ध । शुद्ध्यात् शुन्धिता । शुन्धिष्यति । अशुन्धिष्यत्

| | | |
|---|---|---|
| स्तनति | अस्तानीत् | अस्तनीत् |
| धनति | अधानीत् | अधनीत् |
| ध्वनति | अध्वानीत् | अध्वनीत् |
| चनति | अचानीत् | अचनीत् |
| वनति | अवानीत् | अवनीत् |

स्तन धन ध्वन चन वन शब्दे.

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | तस्तान | तस्तनतुः | तस्तनुः |
| | तस्तनिथ | तस्तनथुः | तस्तन |
| | तस्तान तस्तन | तस्तनिव | तस्तनिम |
| | दधान | दधनतुः | दधनुः |
| | दधनिथ | दधनथुः | दधन |
| | दधान दधन | दधनिव | दधनिम |
| | दध्वान | दध्वनतुः | दध्वनुः |
| | दध्वनिथ | दध्वनथुः | दध्वन |
| | दध्वान दध्वन | दध्वनिव | दध्वनिम |
| | चचान | चेनतुः | चेनुः |
| | चेनिथ | चेनथुः | चेन |
| | चचान चचन | चेनिव | चेनिम |
| | ववान | ववनतुः | ववनुः |
| | ववनिथ | ववनथुः | ववन |
| | ववान ववन | ववनिव | ववनिम |

॥ स्वन शब्दे ॥

व० स्वनति स्वनतः स्वनन्ति
स्वनसि स्वनथः स्वनथ
स्वनामि स्वनावः स्वनामः

स० स्वनेत् स्वनेताम् स्वनेयुः
स्वनेः स्वनेतम् स्वनेत
स्वनेयम् स्वनेव स्वनेम

प० स्वनतु स्वनतात् स्वनताम् स्वनन्तु
स्वन „ स्वनतम् स्वनत
स्वनानि स्वनाव स्वनाम

ह्य० अस्वनत् अस्वनताम् अस्वनन्
अस्वनः अस्वनतम् अस्वनत
अस्वनम् अस्वनाव अस्वनाम

अ० अस्वानीत् अस्वानिष्टाम् अस्वानिषुः
अस्वानीः अस्वानिष्टम् अस्वानिष्ट
अस्वानिषम् अस्वानिष्व अस्वानिष्म
अस्वनीत् अस्वनिष्टाम् अस्वनिषुः
अस्वनीः अस्वनिष्टम् अस्वनिष्ट
अस्वनिषम् अस्वनिष्व अस्वनिष्म

प० सस्वान स्वेनतुः स्वेनुः
स्वेनिथ स्वेनथुः स्वेन
सस्वान सस्वन स्वेनिव स्वेनिम

सस्वान सस्वनतुः सस्वनुः
सस्वनिथ सस्वनथुः सस्वन
सस्वान सस्वन सस्वनिव सस्वनिम

आ० स्वन्यात् स्वन्यास्ताम् स्वन्यासुः
स्वन्याः स्वन्यास्तम् स्वन्यास्त
स्वन्यासम् स्वन्यास्व स्वन्यास्म

श्व० स्वनिता स्वनितारौ स्वनितारः
स्वनितासि स्वनितास्थः स्वनितास्थ
स्वनितास्मि स्वनितास्वः स्वनितास्मः

भ० स्वनिष्यति स्वनिष्यतः स्वनिष्यन्ति
स्वनिष्यसि स्वनिष्यथः स्वनिष्यथ
स्वनिष्यामि स्वनिष्यावः स्वनिष्यामः

क्रि० अस्वनिष्यत् अस्वनिष्यताम् अस्वनिष्यन्
अस्वनिष्यः अस्वनिष्यतम् अस्वनिष्यत
अस्वनिष्यम् अस्वनिष्याव अस्वनिष्याम

---

॥ वन संभक्तौ ॥

वनति । अवानीत् । अवनीत् ।

प० ववान ववनतुः ववनुः
ववनिथ ववनथुः ववन
ववान ववन ववनिव ववनिम

॥ षन संभक्तौ ॥

सनति । असानीत् । असनीत् ।

प० ससान सेनतुः सेनुः
सेनिथ सेनथुः सेन
ससान ससन सेनिव सेनिम

आ० सन्यात् सन्यास्ताम् सन्यासुः
सन्याः सन्यास्तम् सन्यास्त
सन्यासम् सन्यास्व सन्यास्म

॥ कन दीप्तिकान्तिगतिषु ॥

कनति । अकानीत् । अकनीत् ।

प० चकान चकनतुः चकनुः
चकनिथ चकनथुः चकन
चकान चकन चकनिव चकनिम

शेषं तकधातुवत् ।

---

॥ गुपौ रक्षणे ॥

व० गोपायति गोपायतः गोपायन्ति
गोपायसि गोपायथः गोपायथ
गोपायामि गोपायावः गोपायामः

स० गोपायेत् गोपायेताम् गोपायेयुः
गोपायेः गोपायेतम् गोपायेत
गोपायेयम् गोपायेव गोपायेम

प० गोपायतु—तात् गोपायताम् गोपायन्तु
गापाय-तात् गोपायतम् गोपायत
गोपायानि गोपायाव गोपायाम

ल० अगोपायत् अगोपायताम् अगोपायन्
अगोपायः अगोपायतम् अगोपायत
अगोपायम् अगोपायाव अगोपायाम

लु० अगोपायीत् अगोपायिष्टाम् अगोपायिषुः
अगोपायीः अगोपायिष्टम् अगोपायिष्ट
अगोपायिषम् अगोपायिष्व अगोपायिष्म

अगोपीत् अगोपिष्टाम् अगोपिषुः
अगोपीः अगोपिष्टम् अगोपिष्ट
अगोपिषम् अगोपिष्व अगोपिष्म

अगौप्सीत् अगौप्ताम् अगौप्सुः
अगौप्सीः अगौप्तम् अगौप्त
अगौप्सम् अगौप्स्व अगौप्स्म

प० गोपायाञ्चकार गोपायाञ्चक्रतुः गोपायांचक्रुः
गोपायाञ्चकर्थ गोपायाञ्चक्रथुः गोपायाञ्चक्र
गोपायाञ्चकार-चकर गोपायाञ्चकृव
गोपायांचकृम

गोपायाम्बभूव । गोपायामास ।
जुगोप जुगुपतुः जुगुपुः
जुगोपिथ जुगुपथुः जुगुप
जुगोप जुगुपिव जुगुपिम

मतान्तरे-जुगोप्थ, जुगुप्व जुगुप्म इत्यपि

आ० गोपाय्यात् गोपाय्यास्ताम् गोपाय्यासुः
गोपाय्याः गोपाय्यास्तम् गोपाय्यास्त
गोपाय्यासम् गोपाय्यास्व गोपाय्यास्म

गुप्यात् गुप्यास्ताम् गुप्यासुः
गुप्याः गुप्यास्तम् गुप्यास्त
गुप्यासम् गुप्यास्व गुप्यास्म

श्व० गोपायिता गोपायितारौ गोपायितारः
गोपायितासि गोपयितास्थः गोपायितास्थ
गोपायितास्मि गोपायितास्वः गोपायितास्मः

गोपिता गोपितारौ गोपितारः
गोपितासि गोपितास्थः गोपितास्थ
गोपितास्मि गोपितास्वः गोपितास्मः

गोप्ता गोप्तारौ गोप्तारः
गोप्तासि गोप्तास्थः गोप्तास्थ
गोप्तास्मि गोप्तास्वः गोप्तास्मः

भ० गोपायिष्यति गोपायिष्यतः गोपायिष्यन्ति
गोपायिष्यसि गोपायिष्यथः गोपायिष्यथ
गोपायिष्यामि गोपायिष्यावः गोपायिष्यामः

गोपिष्यति गोपिष्यतः गोपिष्यन्ति
गोपिष्यसि गोपिष्यथः गोपिष्यथ
गोपिष्यामि गोपिष्यावः गोपिष्यामः

गोप्स्यति गोप्स्यतः गोप्स्यन्ति
गोप्स्यसि गोप्स्यथः गोप्स्यथ
गोप्स्यामि गोप्स्यावः गोप्स्यामः

अगोपायिष्यत् अगोपायिष्यताम् अगोपायिष्यन्
अगोपायिष्यः अगोपायिष्यतम् अगोपायिष्यत
अगोपायिष्यम् अगोपायिष्याव अगोपायिष्याम

अगोपिष्यत् अगोपिष्यताम् अगोपिष्यन्
अगोपिष्यः अगोपिष्यतम् अगोपिष्यत
अगोपिष्यम् अगोपिष्याव अगोपिष्याम

अगोप्स्यत् अगोप्स्यताम् अगोप्स्यन्
अगोप्स्यः अगोप्स्यतम् अगोप्स्यत
अगोप्स्यम् अगोप्स्याव अगोप्स्याम

---

## ॥ तप—सन्तापे ॥

व० तपति तपतः तपन्ति
तपसि तपथः तपथ
तपामि तपावः तपामः

स० तपेत् तपेताम् तपेयुः
तपेः तपेतम् तपेत
तपेयम् तपेव तपेम

प० तपतु तपतात् तपताम् तपन्तु
तप तपतात् तपतम् तपत
तपानि तपाव तपाम

ह्य० अतपत् अतपताम् अतपन्
अतपः अतपतम् अतपत
अतपम् अतपाव अतपाम

अ० अताप्सीत् अताप्ताम् अताप्सुः

अताप्सीः अताप्तम् अताप्त
अताप्सम् अताप्स्व अताप्स्म
प० तताप तेपतुः तेपुः
तेपिथ ततप्थ तेपथुः तेप
तताप ततप तेपिव तेपिम
आ० तप्यात् तप्यास्ताम् तप्यासुः
तप्याः तप्यास्तम् तप्यास्त
तप्यासम् तप्यास्व तप्यास्म
श्व० तप्ता तप्तारौ तप्तारः
तप्तासि तप्तास्थः तप्तास्थ
तप्तास्मि तप्तास्वः तप्तास्मः
भ० तप्स्यति तप्स्यतः तप्स्यन्ति
तप्स्यसि तप्स्यथः तप्स्यथ
तप्स्यामि तप्स्यावः तप्स्यामः
क्रि० अतप्स्यत् अतप्स्यताम् अतप्स्यन्
अतप्स्यः अतप्स्यतम् अतप्स्यत
अतप्स्यम् अतप्स्याव अतप्स्याम

॥ धूप—सन्तापे ॥

व० धूपायति धूपायतः धूपायन्ति
धूपायसि धूपायथः धूपायथ
धूपायामि धूपायावः धूपायामः
स० धूपायेत् धूपायेताम् धूपायेयुः
धूपायेः धूपायेतम् धूपायेत
धूपायेयम् धूपायेव धूपायेम
प० धूपायतु धूपायतात् धूपायताम् धूपायन्तु
धूपाय „ धूपायतम् धूपायत
धूपायानि धूपायाव धूपायाम
ह्य० अधूपायत् अधूपायताम् अधूपायन्
अधूपायः अधूपायतम् अधूपायत
अधूपायम् अधूपायाव अधूपायाम
अ० अधूपायीत् अधूपायिष्टाम् अधूपायिषुः
अधूपायीः अधूपायिष्टम् अधूपायिष्ट
अधूपायिषम् अधूपायिष्व अधूपायिष्म

अधूपीत् अधूपिष्टाम् अधूपिषुः
अधूपीः अधूपिष्टम् अधूपिष्ट
अधूपिषम् अधूपिष्व अधूपिष्म
प० धूपायाञ्चकार धूपायाञ्चक्रतुः धूपायाञ्चक्रुः
धूपायाञ्चकर्थ धूपायाञ्चक्रथुः धूपायाञ्चक्र
धूपायाञ्चकार-चकर धूपायाञ्चकृव धूपायाञ्चकृम
धूपायाम्बभूव । धूपायामास ।
आ० धूपाय्यात् धूपाय्यास्ताम् धूपाय्यासुः
धूपाय्याः धूपाय्यास्तम् धूपाय्यास्त
धूपाय्यासम् धूपाय्यास्व धूपाय्यास्म
धूप्यात् धूप्यास्ताम् धूप्यासुः
धूप्याः धूप्यास्तम् धूप्यास्त
धूप्यासम् धूप्यास्व धूप्यास्म
श्व० धूपायिता धूपायितारौ धूपायितारः
धूपायितासि धूपायितास्थः धूपायितास्थ
धूपायितास्मि धूपायितास्वः धूपायितास्मः
धूपिता धूपितारौ धूपितारः
धूपितासि धूपितास्थः धूपितास्थ
धूपितास्मि धूपितास्वः धूपितास्मः
भ० धूपायिष्यति धूपायिष्यतः धूपायिष्यन्ति
धूपायिष्यसि धूपायिष्यथः धूपायिष्यथ
धूपायिष्यामि धूपायिष्यावः धूपायिष्यामः
धूपिष्यति धूपिष्यतः धूपिष्यन्ति
धूपिष्यसि धूपिष्यथः धूपिष्यथ
धूपिष्यामि धूपिष्यावः धूपिष्यामः
अधूपायिष्यत् अधूपायिष्यताम् अधूपायिष्यन्
अधूपायिष्यः अधूपायिष्यतम् अधूपायिष्यत
अधूपायिष्यम् अधूपायिष्याव अधूपायिष्याम
अधूपिष्यत् अधूपिष्यताम् अधूपिष्यन्
अधूपिष्यः अधूपिष्यतम् अधूपिष्यत
अधूपिष्यम् अधूपिष्याव अधूपिष्याम

॥ जल्प अव्यक्ते शब्दे ॥

जल्पति । जल्पेत् । जल्पतु । अजल्पत् ।
अजल्पीत् । जजल्प-जजल्पतुः जजल्पुः ।

जल्प्यात् । जल्पिता । जल्पिष्यति
अजल्पिष्यत् ॥

रप लप अव्यक्ते शब्दे ।

रपति । अरापीत् । अरपीत् । रराप
रेपतुः । लपति । अलापीत् । अलपीत् । लेपतुः

जप मानसे च । चप सान्त्वने । षप समवाये ।

जपति । अजापीत् । अजपीत् । जेपतुः
चपति । अचापीत् । अचपीत् ।
सपति । असापीत् । असपीत् । सेपतुः

---

॥ सृप्लृ—गतौ, ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | सर्पति | सर्पतः | सर्पन्ति |
| | सर्पसि | सर्पथः | सर्पथ |
| | सर्पामि | सर्पावः | सर्पामः |
| स० | सर्पेत् | सर्पेताम् | सर्पेयुः |
| | सर्पेः | सर्पेतम् | सर्पेत |
| | सर्पेयम् | सर्पेव | सर्पेम |
| पं० | सर्पतु सर्पतात् | सर्पताम् | सर्पन्तु |
| | सर्प सर्पतात् | सर्पतम् | सर्पत |
| | सर्पाणि | सर्पाव | सर्पाम |
| ह्य० | असर्पत् | असर्पताम् | असर्पन् |
| | असर्पः | असर्पतम् | असर्पत |
| | असर्पम् | असर्पाव | असर्पाम |
| अ० | असृपत् | असृपताम् | असृपन् |
| | असृपः | असृपतम् | असृपत |
| | असृपम् | असृपाव | असृपाम |
| प० | ससर्प | ससृपतुः | ससृपुः |
| | ससर्पिथ | ससृपथुः | ससृप |
| | ससर्प | ससृपिव | ससृपिम |
| आ० | सृप्यात् | सृप्यास्ताम् | सृप्यासुः |
| | सृप्याः | सृप्यास्तम् | सृप्यास्त |
| | सृप्यासम् | सृप्यास्व | सृप्यास्म |
| श्व० | स्रप्ता | स्रप्तारौ | स्रप्तारः |
| | स्रप्तासि | स्रप्तास्थः | स्रप्तास्थ |
| | स्रप्तास्मि | स्रप्तास्वः | स्रप्तास्मः |
| | सर्प्ता | सर्प्तारौ | सर्प्तारः |
| | सर्प्तासि | सर्प्तास्थः | सर्प्तास्थ |
| | सर्प्तास्मि | सर्प्तास्वः | सर्प्तास्मः |
| भ० | स्रप्स्यति | स्रप्स्यतः | स्रप्स्यन्ति |
| | स्रप्स्यसि | स्रप्स्यथः | स्रप्स्यथ |
| | स्रप्स्यामि | स्रप्स्यावः | स्रप्स्यामः |
| | सर्प्स्यति | सर्प्स्यतः | सर्प्स्यन्ति |
| | सर्प्स्यसि | सर्प्स्यथः | सर्प्स्यथ |
| | सर्प्स्यामि | सर्प्स्यावः | सर्प्स्यामः |
| क्रि० | असर्प्स्यत् | असर्प्स्यताम् | असर्प्स्यन् |
| | असर्प्स्यः | असर्प्स्यतम् | असर्प्स्यत |
| | असर्प्स्यम् | असर्प्स्याव | असर्प्स्याम |
| | अस्रप्स्यत् | अस्रप्स्यताम् | अस्रप्स्यन् |
| | अस्रप्स्यः | अस्रप्स्यतम् | अस्रप्स्यत |
| | अस्रप्स्यम् | अस्रप्स्याव | अस्रप्स्याम |

---

चुप मन्दायाम् ।

चोपति । अचोपीत् । चुचोप ।

तुप तुम्प त्रुप त्रुम्प तुफ तुम्फ त्रुफ त्रुम्फ हिंसायाम् ।

तोपति । अतोपीत् । तुतोप ।
तुम्पति । अतुम्पीत् । तुतुम्प
प्रस्तुम्पति गौः । प्रास्तुम्पीत् । प्रतुस्तुम्प
त्रोपति । अत्रोपीत् । तुत्रोप ।
त्रुम्पति । अत्रुम्पीत् । तुत्रुम्प ।
तोफति । अतोफीत् । तुतोफ ।
तुम्फति । अतुम्फीत् । तुतुम्फ ।
त्रोफति । अत्रोफीत् । तुत्रोफ ।
त्रुम्फति । अत्रुम्फीत् । तुत्रुम्फ ।

पर्फ रफ रफु अर्व कर्व खर्व गर्व चर्व तर्व नर्व पर्व बर्व शर्व षर्व सर्व रिवु रबु गतौ.

वर्फति । अवर्फीत् । ववर्फ ॥
रफति । अराफीत्-अरफीत् ।
रराफ । रेफतुः । रेफिथ ।
रम्फति । अरम्फीत् । ररम्फ ।
अर्वति । आर्वीत् । आनर्व ।
कर्वति । अकर्वीत् । चकर्व ।
खर्वति । अखर्वीत् ॥ चखर्व ।
गर्वति । अगर्वीत् । जगर्व ।
चचर्व । चर्वति । अचर्वीत् ।
तर्वति । अतर्वीत् । ततर्व
नर्वति । अनर्वीत् । ननर्व ।
पर्वति । अपर्वीत् । पपर्व ।
बर्वति । अबर्वीत । बबर्व ।
शर्वति । अशर्वीत् । शशर्व ।
सर्वति । असर्वीत् । ससर्व ।
सर्वति । असर्वीत् । ससर्व ।
रिम्बति । अरिम्बीत् । रिरिम्ब ।
रम्बति । अरम्बीत् । ररम्ब ॥
कुबु आच्छादने.
कुम्बति । अकुम्बीत् । चुकुम्ब ।
लुबु तुबु अर्दने,
लुम्बति । अलुम्बीत् । लुलुम्ब ।
तुम्बति । अतुम्बीत । तुतुम्ब ।

॥ चुबु वक्त्रसंयोगे ॥

सृभू सृम्भू षिभू षिंभू भर्भ हिंसायाम् ।

सर्भति । असर्भीत् । ससर्भ ।
सृभ्यात् । सृम्भति । असृम्भीत् ।
ससृम्भ । सृभ्यात् ।
सेभति । असेभीत् । सिसेभ ।
सिम्भति । असिम्भीत् । सिषिम्भ
। सिभ्यात् ।
भर्भति । अभर्भीत । बभर्भ भर्भ्यात्

॥ शुम्भ भाषणे च ॥

शुम्भति । अशुम्भीत् । शुशुम्भ

॥ यभं जभ मैथुने. ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | यभति | यभतः | यभन्ति |
| | यभसि | यभथः | यभथ |
| | यभामि | यभावः | यभामः |
| स० | यभेत् | यभेताम् | यभेयुः |
| | यभेः | यभेतम् | यभेत |
| | यभेयम् | यभेव | यभेम |
| प० | यभतु यभतात् | यभताम् | यभन्तु |
| | यभ ,, | यभतम् | यभत |
| | यभानि | यभाव | यभाम |
| ह्य० | अयभत् | अयभताम् | अयभन् |
| | अयभः | अयभतम् | अयभत |
| | अयभम् | अयभाव | अयभाम |
| अ० | अयाप्सीत् | अयाब्धाम् | अयाप्सुः |
| | अयाप्सीः | अयाब्धम् | अयाब्ध |
| | अयाप्सम् | अयाप्स्व | अयाप्स्म |
| प० | ययाभ | येभतुः | येभुः |
| | येभिथ ययब्ध | येभथुः | येभ |
| | ययाभ ययभ | येभिव | येभिम |
| आ० | यभ्यात् | यभ्यास्ताम् | यभ्यासुः |
| | यभ्याः | यभ्यास्तम् | यभ्यास्त |
| | यभ्यासम् | यभ्यास्व | यभ्यास्म |
| श्व० | यब्धा | यब्धारौ | यब्धारः |
| | यब्धासि | यब्धास्थः | यब्धास्थ |
| | यब्धास्मि | यब्धास्वः | यब्धास्मः |
| भ० | यप्स्यति | यप्स्यतः | यप्स्यन्ति |
| | यप्स्यसि | यप्स्यथः | यप्स्यथ |
| | यप्स्यामि | यप्स्यावः | यप्स्यामः |
| क्रि० | अयप्स्यत् | अयप्स्यताम् | अयप्स्यन् |
| | अयप्स्यः | अयप्स्यतम् | अयप्स्यत |
| | अयप्स्यम् | अयप्स्याव | अयप्स्याम |

जभति । अजभीत् । अजाभीत् ।
जजाभ-जेभतुः जेभिथ ।

॥ यमूं—उपरमे ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | यच्छति | यच्छतः | यच्छन्ति |
| | यच्छसि | यच्छथः | यच्छथ |
| | यच्छामि | यच्छावः | यच्छामः |
| स० | यच्छेत् | यच्छेताम् | यच्छेयुः |
| | यच्छेः | यच्छेतम् | यच्छेत |
| | यच्छेयम् | यच्छेव | यच्छेम |
| प० | यच्छतु यच्छतात् | यच्छताम् | यच्छन्तु |
| | यच्छ ,, | यच्छतम् | यच्छत |
| | यच्छानि | यच्छाव | यच्छाम |
| ह्य० | अयच्छत् | अयच्छताम् | अयच्छन् |
| | अयच्छः | अयच्छतम् | अयच्छत |
| | अयच्छम् | अयच्छाव | अयच्छाम |
| अ० | अयंसीत् | अयंसिष्टाम् | अयंसिषुः |
| | अयंसीः | अयंसिष्टम् | अयंसिष्ट |
| | अयंसिषम् | अयंसिष्व | अयंसिष्ट |
| प० | ययाम | येमतुः | येमुः |
| | येमिथ ययंथ | येमथुः | येम |
| | ययाम यमम | येमिव | येमिम |
| आ० | यम्यात् | यम्यास्ताम् | यम्यासुः |
| | यम्याः | यम्यास्तम् | यम्यास्त |
| | यम्यासम् | यम्यास्व | यम्यास्म |
| श्व० | यन्ता | यन्तारौ | यन्तारः |
| | यन्तासि | यन्तास्थः | यन्तास्थ |
| | यन्तास्मि | यन्तास्वः | यन्तास्मः |
| भ० | यंस्यति | यंस्यतः | यंस्यन्ति |
| | यंस्यसि | यंस्यथः | यंस्यथ |
| | यंस्यामि | यंस्यावः | यंस्यामः |
| क्रि० | अयंस्यत् | अयंस्यताम् | अयंस्यन् |
| | अयंस्यः | अयंस्यतम् | अयंस्यत |
| | अयंस्यम् | अयंस्याव | अयंस्याम |

॥ स्यमू—शब्दे ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | स्यमति | स्यमतः | स्यमन्ति |
| | स्यमसि | स्यमथः | स्यमथ |
| | स्यमामि | स्यमावः | स्यमामः |
| स० | स्यमेत् | स्यमेताम् | स्यमेयुः |
| | स्यमेः | स्यमेतम् | स्यमेत |
| | स्यमेयम् | स्यमेव | स्यमेम |
| प० | स्यमतु स्यमतात् | स्यमताम् | स्यमन्तु |
| | स्यम ,, | स्यमतम् | स्यमत |
| | स्यमानि | स्यमाव | स्यमाम |
| ह्य० | अस्यमत् | अस्यमताम् | अस्यमन् |
| | अस्यमः | अस्यमतम् | अस्यमत |
| | अस्यमम् | अस्यमाव | अस्यमाम |
| अ० | अस्यमीत् | अस्यमिष्टाम् | अस्यमिषुः |
| | अस्यमीः | अस्यमिष्टम् | अस्यमिष्ट |
| | अस्यमिषम् | अस्यमिष्व | अस्यमिष्म |
| प० | सस्याम | स्येमतुः | स्येमुः |
| | स्येमिथ | स्येमथुः | स्येम |
| | सस्याम सस्यम, | स्येमिव | स्येमिम |
| | सस्याम | सस्यमतुः | सस्यमुः |
| | सस्यमिथ | सस्यमथुः | सस्यम |
| | सस्याम सस्यम, | सस्यमिव | सस्यमिम |
| आ० | स्यम्यात् | स्यम्यास्ताम् | स्यम्यासुः |
| | स्यम्याः | स्यम्यास्तम् | स्यम्यास्त |
| | स्यम्यासम् | स्यम्यास्व | स्यम्यास्म |
| श्व० | स्यमिता | स्यमितारौ | स्यमितारः |
| | स्यमितासि | स्यमितास्थः | स्यमितास्थ |
| | स्यमितास्मि | स्यमितास्वः | स्यमितास्मः |
| भ० | स्यमिष्यति | स्यमिष्यतः | स्यमिष्यन्ति |
| | स्यमिष्यसि | स्यमिष्यथः | स्यमिष्यथ |
| | स्यमिष्यामि | स्यमिष्यावः | स्यमिष्यामः |
| क्रि० | अस्यमिष्यत् | अस्यमिष्यताम् | अस्यमिष्यन् |
| | अस्यमिष्यः | अस्यमिष्यतम् | अस्यमिष्यत |
| | अस्यमिष्यम् | अस्यमिष्याव | अस्यमिष्याम |

॥ णमं-प्रह्वत्वे ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | नमति | नमतः | नमन्ति |

नमसि नमथः नमथ
नमामि नमावः नमामः
स० नमेत् नमेताम् नमेयुः
नमेः नमेतम् नमेत
नमेयम् नमेव नमेम
प० नमतु नमतात् नमताम् नमन्तु
नम ,, नमतम् नमत
नमानि नमाव नमाम
ह्य० अनमत् अनमताम् अनमन्
अनमः अनमतम् अनमत
अनमम् अनमाव अनमाम
अ० अनंसीत् अनंसिष्टाम् अनंसिषुः
अनंसीः अनंसिष्टम् अनंसिष्ट
अनंसिषम् अनंसिष्व अनंसिष्म
प० ननाम नेमतुः नेमुः
नेमिथ ननंथ नेमथुः नेम
ननाम ननम नेमिव नेमिम
आ०नम्यात् नम्यास्ताम् नम्यासुः
नम्याः नम्यास्तम् नम्यास्त
नम्यासम् नम्यास्व नम्यास्म
श्व०नन्ता नन्तारौ नन्तारः
नन्तासि नन्तास्थः नन्तास्थ
नन्तास्मि नन्तास्वः नन्तास्मः
भ० नंस्यति नंस्यतः नंस्यन्ति
नंस्यसि नंस्यथः नंस्यथ
नंस्यामि नंस्यावः नंस्यामः
क्रि०अनंस्यत् अनंस्यताम् अनंस्यन्
अनंस्यः अनंस्यतम् तनंस्यत
अनंस्यम् अनंस्याव अनंस्याम

॥ चमू छमू जमू झमू जिमू अदने ॥
चमति । अचमीत् ।
चचाम । चेमिथ । आचामति ।
छमति । अच्छमीत् ।
चच्छाम-चच्छमतुः ।
जमति । अजमीत् । जजाम ।
जेमिथ । झमति । अझमीत् ।
। जझाम । जझमतुः । जेमति ।
अजेमीत् । जिजेम ।

॥ क्रमू पादविक्षेपे ॥
क्राम्यति । क्रामति । अक्रमीत् ।
चक्राम । चक्रमिथ ।

॥ षम ष्टम वैक्लव्ये ॥
समति । असमीत् । ससाम-सेमिथ । स्तमति । अस्तमीत् । तस्ताम-तस्तमतुः । तस्तमिथ ।

॥ अम शब्दभक्त्योः ॥
अमति । आमीत् । आम ।

॥ अम द्रम हम्म मीमृ गतौ ॥
अमति । आमीत् । आम । द्रमति अद्रमीत् । दद्राम । हम्मति । अहम्मीत् । जहम्म । मीमति । अमीमीत् । मिमीम ।

गम्लृं—गतौ.

व० गच्छति गच्छतः गच्छन्ति
गच्छसि गच्छथः गच्छथ
गच्छामि गच्छावः गच्छामः
स० गच्छेत् गच्छेताम् गच्छेयुः
गच्छेः गच्छेतम् गच्छेत
गच्छेयम् गच्छेव गच्छेव
प० गच्छतु गच्छतात् गच्छताम् गच्छन्तु
गच्छ ,, गच्छतम् गच्छत
गच्छानि गच्छाम गच्छाम
ह्य० अगच्छत् अगच्छताम् अगच्छन्
अगच्छः अगच्छतम् अगच्छत
अगच्छम् अगच्छाव अगच्छाम
अ० अगमत् अगमताम् अगमन्
अगमः अगमतम् अगमत
अगमम् अगमाव अगमाव
प० जगाम जग्मतुः जग्मुः
जगमिथ जगन्थ जग्मथुः जग्म
जगाम जगम जग्मिव जग्मिम

आ०गम्यात् गम्यास्ताम् गम्यासुः
गम्याः गम्यास्तम् गम्यास्त
गम्यासम् गम्यास्व गम्यास्म

लु०गन्ता गन्तारौ गन्तारः
गन्तासि गन्तास्थः गन्तास्थ
गन्तास्मि गन्तास्वः गन्तास्मः

भ० गमिष्यति गमिष्यतः गमिष्यन्ति
गमिष्यसि गमिष्यथः गमिष्यथ
गमिष्यामि गमिष्यावः गमिष्यामः

क्रि०अगमिष्यत् अगमिष्यताम् अगमिष्यन्
अगमिष्यः अगमिष्यतम् अगमिष्यत
अगमिष्यम् अगमिष्याव अगमिष्याम

॥ हय हर्य क्लान्तौ च ॥

हयति । अहयीत् । जहाय ॥ हर्यति । अहर्यीत् । जहर्य ।

॥ मव्य बन्धने ॥

मव्यति । अमव्यीत् । ममव्य ॥

॥ सूर्क्ष्य ईर्क्ष्य ईर्ष्य ईर्ष्यार्थाः ॥

सूर्क्ष्यति । असूर्क्ष्यीत् । असूर्क्षियष्टाम्-असूर्क्षियषुः । सुसूर्क्ष्य सुसूर्क्षियथ । ईर्क्ष्यति । ईर्क्ष्येत् । ईर्क्ष्यतु । ऐर्क्ष्यीत् । ईर्क्ष्यांचकार-ईर्क्ष्यामास—ईर्क्ष्याम्बभूव । ईर्क्ष्यात् । ईर्क्षिता । ईर्क्षिष्यति । ऐर्क्षिष्यत् । ईर्ष्यति । ऐर्ष्यीत् । ईर्ष्यांचकार-ईर्ष्यामास—ईर्ष्याम्बभूव ।

॥ शुच्यै चुच्यै अभिषवे ॥

शुच्यति । अशुच्यीत् । शुशुच्य । चुच्यति । अचुच्यीत् । चुचुच्य ।

॥ त्सर छद्मगतौ ॥

त्सरति । अत्सारीत् । तत्सार । क्मर हूर्च्छने । क्मरति । अक्मरीत् चक्मार

॥ अभ्र वभ्र मभ्र गतौ ॥

अभ्रति । आभ्रीत् आनभ्र । वभ्रति अवभ्रीत् । ववभ्र । मभ्रति । अमभ्रीत् ममभ्र

॥ चर भक्षणे च ॥

चरति । अचारीत् । चचार-चेरिथ

॥ धोर्ऋ गतिचातुर्ये ॥

धोरति । अधोरीत् । दुधोर ।

॥ खोर्ऋ प्रतिघाते ॥

खोरति । अखोरीत् चुखोर ।

॥ दल विशरणे ॥

दलति । अदालीत् । ददाल-देलिथ

॥ ञिफला विशरणे— ॥

व० फलति फलतः फलन्ति
फलसि फलथः फलथ
फलामि फलावः फलामः

स० फलेत् फलेताम् फलेयुः
फलेः फलेतम् फलेत
फलेयम् फलेव फलेम

प० फलतु फलतात् फलताम् फलन्तु
फल ,, फलतम् फलत
फलानि फलाव फलाम

ह्य० अफलत् अफलताम् अफलन्
अफलः अफलतम् अफलत
अफलम् अफलाव अफलाम

अ० अफालीत् अफालिष्टाम् अफालिषुः
अफालीः अफालिष्टम् अफालिष्ट
अफालिषम् अफालिष्व अफालिष्म

प० पफाल फेलतुः फेलुः
फेलिथ फेलथुः फेल
पफाल पफल फेलिव फेलिम

आ० फल्यात् फल्यास्ताम् फल्यासुः
फल्याः फल्यास्तम् फल्यास्त
फल्यासम् फल्यास्व फल्यास्म

श्व० फलिता फलितारौ फलितारः
फलितासि फलितास्थः फलितास्थ
फलितास्मि फलितास्वः फलितास्मः
भ० फलिष्यति फलिष्यतः फलिष्यन्ति
फलिष्यसि फलिष्यथः फलिष्यथ
फलिष्यामि फलिष्यावः फलिष्यामः
क्रि० अफलिष्यत् अफलिष्यताम् अफलिष्यन्
अफलिष्यः अफलिष्यतम् अफलिष्यत
अफलिष्यम् अफलिष्याव अफलिष्याम

---

मील श्मील स्मील क्ष्मील—निमेषणे,
मीलति । अमीलीत् । मिमील ।
श्मीलति । अश्मीलीत् । शिश्मील ।
स्मीलति । अस्मीलीत् । सिस्मील ।
क्ष्मीलति । अक्ष्मीलीत् । चिक्ष्मील ।

॥ पील प्रतिष्टम्भे ॥

पीलति । अपीलीत् । पिपील ।

॥ णील वरणे ॥

नीलति । अनीलीत् । निनील ।

॥ शील समाधौ ॥

शीलति । अशीलीत् । शिशील ।

॥ कील बन्धे ॥

कीलति । अकीलीत् । चिकील ।

॥ कूल आवरणे ॥

कूलति । अकूलीत् चुकूल ।

॥ शूल रुजायाम् ॥

शूलति । अशूलीत् । शुशूल ।

॥ तूल निष्कर्षे ॥

तूलति । अतूलीत् । तुतूल ।

॥ पूल सङ्घाते ॥

पूलति । अपूलीत् । पुपूल ।

॥ मूल प्रतिष्ठायाम् ॥

मूलति । अमूलीत् । मुमूल ।

॥ फल-निष्पत्तौ ॥

फलति । अफालीत् । पफाल । फेलतुः
फेलिथ ।

॥ फुल्ल विकसने ॥

फुल्लति । अफुल्लीत् । पुफुल्ल ।

॥ चुल्ल-हावकरणे ॥

चुल्लति । अचुल्लीत् । चुचुल्ल ।

॥ चिल्ल शैथिल्ये च ॥

चिल्लति । अचिल्लीत् । चिचिल्ल ।
पेल , फेल , शेल , षेल , सेल ,
वेल्ल , सल , तिल , तिल्ल, पल्ल,
वेल्ल-गतौ ॥
पेलति । अपेलीत् पिपेल ॥ फेलति ।
अफेलीत् । पिफेल ॥ शेलति । अशेलीत्
शिशेल ॥ सेलति । असेलीत् सिसेल ॥
वेह्लति । अवेह्लीत् । विवेह्ल ॥ तेलति ।
अतेलीत् । तितेल ॥ तिल्लति । अति-
ल्लीत् । तितिल्ल ॥ पल्लति अपल्लीत्
पपल्ल ॥ वेल्लति । अवेल्लीत् विवेल्ल ॥
॥ वेल चेल केल क्वेल खेल
स्खल चलने ॥
वेलति । अवेलीत् । विवेल ॥ चेलति
अचेलीत् । चिचेल ॥ केलति । अकेलीत्
चिकेल ॥ क्वेलति । अक्वेलीत् । चि-
क्वेल ॥ खेलति । अखेलीत् । चिखेल ॥
स्खलति । अस्खालीत् । चस्खाल ॥

॥ खल संचये च ॥

खलति । अखालीत् । चखाल चखलिथ

॥ श्वल श्वल्ल आशुगतौ ॥

श्वलति । अश्वालीत् शश्वाल ।
श्वल्लति । अश्वल्लीत् । शश्वल्ल ॥

॥ गल चर्व अदने ॥

गलति । अगालीत् जगाल-जगलिथ
चर्वति । अचर्वीत् । चचर्व ।

॥ पूर्व पर्व मर्व पूरणे ॥

पूर्वति । अपूर्वीत् । पुपूर्व । पर्वति
अपर्वीत् । पपर्व ॥ मर्वति । अमर्वीत्
ममर्व ।

॥ गर्व धिवु शव गतौ ॥

गर्वति । अगर्वीत् । जगर्व । धिन्वति

अधिन्वीत । दिधिन्व । शवति ।
अशावीत्-अशवीत् शशाव-शेविथ ।

॥ कर्व खर्व गर्व-दर्पे ॥

कर्वति । अकर्वीत् चकर्व । खर्वति
अखर्वीत् । चखर्व । गर्वति ।
अगर्वीत् । जगर्व ।

॥ क्षिवू निरसने ॥

क्षेवति । अक्षेवीत् । चिक्षेव ।

॥ ष्ठिवू निरसने ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | ष्ठीवति | ष्ठीवतः | ष्ठीवन्ति |
| | ष्ठीवसि | ष्ठीवथः | ष्ठीवथ |
| | ष्ठीवामि | ष्ठीवावः | ष्ठीवामः |
| स० | ष्ठीवेत् | ष्ठीवेताम् | ष्ठीवेयुः |
| | ष्ठीवेः | ष्ठीवेतम् | ष्ठीवेत |
| | ष्ठीवेयम् | ष्ठीवेव | ष्ठीवेम |

प० ष्ठीवतु ष्ठीवतात् ष्ठीवताम् ष्ठीवन्तु
ष्ठीव ,, ष्ठीवतम् ष्ठीवत
ष्ठीवानि ष्ठीवाव ष्ठीवाम

| | | | |
|---|---|---|---|
| ह्य० | अष्ठीवत् | अष्ठीवताम् | अष्ठीवन् |
| | अष्ठीवः | अष्ठीवतम् | अष्ठीवत |
| | अष्ठीवम् | अष्ठीवाव | अष्ठीवाम |
| अ० | अष्ठेवीत् | अष्ठेविष्टाम् | अष्ठेविषुः |
| | अष्ठेवीः | अष्ठेविष्टम् | अष्ठेविष्ट |
| | अष्ठेविषम् | अष्ठेविष्व | अष्ठेविष्म |
| प० | तिष्ठेव | तिष्ठिवतुः | तिष्ठिवुः |
| | तिष्ठेविथ | तिष्ठिवथुः | तिष्ठिव |
| | तिष्ठेव | तिष्ठिविव | तिष्ठिविम |
| | टिष्ठेव | टिष्ठिवतुः | टिष्ठिवुः |
| | टिष्ठेविथ | टिष्ठिवथुः | टिष्ठिव |
| | टिष्ठेव | टिष्ठिविव | टिष्ठिविम |
| आ० | ष्ठिव्यात् | ष्ठिव्यास्ताम् | ष्ठिव्यासुः |
| | ष्ठिव्याः | ष्ठिव्यास्तम् | ष्ठिव्यास्त |
| | ष्ठिव्यासम् | ष्ठिव्यास्व | ष्ठिव्यास्म |
| श्व० | ष्ठेविता | ष्ठेवितारौ | ष्ठेवितारः |
| | ष्ठेवितासि | ष्ठेवितास्थः | ष्ठेवितास्थ |
| | ष्ठेवितास्मि | ष्ठेवितास्वः | ष्ठेवितास्मः |
| भ० | ष्ठेविष्यति | ष्ठेविष्यतः | ष्ठेविष्यन्ति |
| | ष्ठेविष्यसि | ष्ठेविष्यथः | ष्ठेविष्यथ |
| | ष्ठेविष्यामि | ष्ठेविष्यावः | ष्ठेविष्यामः |
| क्रि० | अष्ठेविष्यत् | अष्ठेविष्यताम् | अष्ठेविष्यन् |
| | अष्ठेविष्यः | अष्ठेविष्यतम् | अष्ठेविष्यत |
| | अष्ठेविष्यम् | अष्ठेविष्याव | अष्ठेविष्याम |

॥ जीव प्राणधारणे ॥

जीवति । अजीवीत् । जिजीव ।

॥ पीव मीव तीव नीव-स्थौल्ये ॥

पीवति । अपीवीत् । पिपीव ।
मीवति । अमीवीत् । मिमीव ।
तीवति । अतीवीत् । तितीव ।
नीवति । अनीवीत् । निनीव ।

॥ उर्वी तुर्वी थुर्वी दुर्वी धुर्वी जुर्वी
अर्व भर्व शर्व हिंसायाम् ॥

ऊर्वति । और्वीत् । ऊर्वाञ्चकार ।
तूर्वति । अतूर्वीत् । तुतूर्व ।
थूर्वति । अथूर्वीत् । तुथूर्व ।
दूर्वति । अदूर्वीत् । दुदूर्व ।
धूर्वति । अधूर्वीत् । दुधूर्व ।
जूर्वति । अजूर्वीत् । जुजूर्व ।
अर्वति । आर्वीत् । आनर्व ।
भर्वति । अभर्वीत् । बभर्व ।
शर्वति । अशर्वीत् । शशर्व ।

॥ मुर्वी मव बन्धने ॥

मूर्वति । अमूर्वीत् । मुमूर्व ।
मवति । अमवीत्-अमावीत् ।
ममाव मेविथ ।

॥ गुर्वी-उद्यमे ॥

गूर्वति । अगूर्वीत् । जुगूर्व ।

॥ पिवु मिवु निवु-सेचने ॥

पिन्वति । अपिन्वीत् । पिपिन्व ।
मिन्वति । अमिन्वीत् । मिमिन्व ।
निन्वति । अनिन्वीत् । निनिन्व ।

॥ हिवु दिवु जिवु प्रीणने ॥

हिन्वति । अहिन्वीत् । जिहिन्व ।
दिन्वति । अदिन्वीत् । दिदिन्व ।

॥ इवु–व्याप्तौ च ॥

इन्वति । इन्वेत् । इन्वतु । ऐन्वत् । ऐन्वीत् । इन्वाञ्चकार–इन्वामास इन्वाम्बभूव । इन्व्यात् । इन्विता । इन्विष्यति । ऐन्विष्यत् ।

अव—रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमनप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादहनभाववृद्धिषु

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | अवति | अवतः | अवन्ति |
| | अवसि | अवथः | अवथ |
| | अवामि | अवावः | अवामः |
| स० | अवेत् | अवेताम् | अवेयुः |
| | अवेः | अवेतम् | अवेत |
| | अवेयम् | अवेव | अवेम |
| प० | अवतु अवतात् | अवताम् | अवन्तु |
| | अव ,, | अवतम् | अवत |
| | अवानि | अवाव | अवाम |
| ह्य० | आवत् | आवताम् | आवन् |
| | आवः | आवतम् | आवत |
| | आवम् | आवाव | आवाम |
| अ० | आवीत् | आविष्टाम् | आविषुः |
| | आवीः | आविष्टम् | आविष्ट |
| | आविषम् | आविष्व | आविष्म |
| प० | आव | आवतुः | आवुः |
| | आविथ | आवथुः | आव |
| | आव | आविव | आविम |
| आ० | अव्यात् | अव्यास्ताम् | अव्यासुः |
| | अव्याः | अव्यास्तम् | अव्यास्त |
| | अव्यासम् | अव्यास्व | अव्यास्म |
| श्व० | अविता | अवितारौ | अवितारः |
| | अवितासि | अवितास्थः | अवितास्थ |
| | अवितास्मि | अवितास्वः | अवितास्मः |
| भ० | अविष्यति | अविष्यतः | अविष्यन्ति |
| | अविष्यसि | अविष्यथः | अविष्यथ |
| | अविष्यामि | अविष्यावः | अविष्यामः |
| क्रि० | आविष्यत् | आविष्यताम् | आविष्यन् |
| | आविष्यः | आविष्यतम् | आविष्यत |
| | आविष्यम् | आविष्याव | आविष्याम |

॥ कश–शब्दे ॥

कशति । अकशीत् । अकाशीत् । चकाश—चकशिथ ।

॥ मिश मश–रोषे च ॥

मेशति । अमेशीत् । मिमेश । मशति । अमशीत् । अमाशीत् । ममाश—मेशिथ ।

॥ शश–प्लुतिगतौ ॥

शशति । अशशीत्—अशाशीत् । शशाश—शेशिथ ।

॥ णिश–समाधौ ॥

नेशति । अनेशीत् । निनेश

॥ दृशं प्रेक्षणे ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | पश्यति | पश्यतः | पश्यन्ति |
| | पश्यसि | पश्यथः | पश्यथ |
| | पश्यामि | पश्यावः | पश्यामः |
| स० | पश्येत् | पश्येताम् | पश्येयुः |
| | पश्येः | पश्येतम् | पश्येत |
| | पश्येयम् | पश्येव | पश्येम |
| प० | पश्यतु पश्यतात् | पश्यताम् | पश्यन्तु |
| | पश्य | पश्यतम् | पश्यत |

पश्यामि पश्यावः पश्यामः
ह्य० अपश्यत् अपश्यताम् अपश्यन्
अपश्यः अपश्यतम् अपश्यत
अपश्यम् अपश्याव अपश्याम
अ० अदर्शत् अदर्शताम् अदर्शन्
अदर्शः अदर्शतम् अदर्शत
अदर्शम् अदर्शाव अदर्शाम
अद्राक्षीत् अद्राष्टाम् अद्राक्षुः
अद्राक्षीः अद्राष्टम् अद्राष्ट
अद्राक्षम् अद्राक्ष्व अद्राक्ष्म
प० ददर्श ददृशतुः ददृशुः
ददर्शिथ दद्रष्ठ ददृशथुः ददृश
ददर्श ददृशिव ददृशिम
आ० दृश्यात् दृश्यास्ताम् दृश्यासुः
दृश्याः दृश्यास्तम् दृश्यास्त
दृश्यासम् दृश्यास्व दृश्यास्म
श्व० द्रष्टा द्रष्टारौ द्रष्टारः
द्रष्टासि द्रष्टास्थः द्रष्टास्थ
द्रष्टास्मि द्रष्टास्वः द्रष्टास्मः
भ० द्रक्ष्यति द्रक्ष्यतः द्रक्ष्यन्ति
द्रक्ष्यसि द्रक्ष्यथः द्रक्ष्यथ
द्रक्ष्यामि द्रक्ष्यावः द्रक्ष्यामः
क्रि० अद्रक्ष्यत् अद्रक्ष्यताम् अद्रक्ष्यन्
अद्रक्ष्यः अद्रक्ष्यतम् अद्रक्ष्यत
अद्रक्ष्यम् अद्रक्ष्याव अद्रक्ष्याम

---

व० दशति दशतः दशन्ति
दशसि दशथः दशथ
दशामि दशावः दशामः
स० दशेत् दशेताम् दशेयुः
दशेः दशेतम् दशेत
दशेयम् दशेव दशेम
प० दशतु दशतात् दशताम् दशन्तु
दश ,, दशतम् दशत
दशानि दशाव दशाम
ह्य० अदशत् अदशताम् अदशन्
अदशः अदशतम् अदशत
अदशम् अदशाव अदशाम
अ० अदाङ्क्षीत् अदांष्टाम् अदाङ्क्षुः
अदाङ्क्षीः अदांष्टम् अदांष्ट
अदाङ्क्षम् अदाङ्क्ष्व अदाङ्क्ष्म
प० ददंश ददंशतुः ददंशुः
ददंशिथ ददंष्ठ ददंशथुः ददंश
ददंश ददंशिव ददंशिम
आ० दश्यात् दश्यास्ताम् दश्यासुः
दश्याः दश्यास्तम् दश्यास्त
दश्यासम् दश्यास्व दश्यास्म
श्व० दंष्टा दंष्टारौ दंष्टारः
दंष्टासि दंष्टास्थः दंष्टास्थ
दंष्टास्मि दंष्टास्वः दंष्टास्मः
भ० दङ्क्ष्यति दङ्क्ष्यतः दङ्क्ष्यन्ति
दङ्क्ष्यसि दङ्क्ष्यथः दङ्क्ष्यथ
दङ्क्ष्यामि दङ्क्ष्यावः दङ्क्ष्यामः
क्रि० अदङ्क्ष्यत् अदङ्क्ष्यताम् अदङ्क्ष्यन्
अदङ्क्ष्यः अदङ्क्ष्यतम् अदङ्क्ष्यत
अदङ्क्ष्यम् अदङ्क्ष्याव अदङ्क्ष्याम

---

॥ घुँ—शब्दे ॥

व० घोपति घोपतः घोपन्ति
घोपसि घोपथः घोपथ
घोपामि घोपावः घोपामः
स० घोपेत् घोपेताम् घोपेयुः
घोपेः घोपेतम् घोपेत
घोपेयम् घोपेव घोपेम
प० घोपतु घोपतात् घोपताम् घोपन्तु
घोप ,, घोपतम् घोपत
घोपाणि घोपाव घोपाम
ह्य० अघोपत् अघोपताम् अघोपन्
अघोपः अघोपतम् अघोपत
अघोपम् अघोपाव अघोपाम

| | | | |
|---|---|---|---|
| अ० | अघुषत् | अघुषताम् | अघुषन् |
| | अघुषः | अघुषतम् | अघुषत |
| | अघुषम् | अघुषाव | अघुषाम |
| | अघोषीत् | अघोषिष्टाम् | अघोषिषुः |
| | अघोषीः | अघोषिष्टम् | अघोषिष्ट |
| | अघोषिषम् | अघोषिष्व | अघोषिष्म |
| प० | जुघोष | जुघुषतुः | जुघुषुः |
| | जुघोषिथ | जुघुषथुः | जुघुष |
| | जुघोष | जुघुषिव | जुघुषिम |
| आ० | घुष्यात् | घुष्यास्ताम् | घुष्यासुः |
| | घुष्याः | घुष्यास्तम् | घुष्यास्त |
| | घुष्यासम् | घुष्यास्व | घुष्यास्म |
| श्व० | घोषिता | घोषितारौ | घोषितारः |
| | घोषितासि | घोषितास्थः | घोषितास्थ |
| | घोषितास्मि | घोषितास्वः | घोषितास्मः |
| भ० | घोषिष्यति | घोषिष्यतः | घोषिष्यन्ति |
| | घोषिष्यसि | घोषिष्यथः | घोषिष्यथ |
| | घोषिष्यामि | घोषिष्यावः | घोषिष्यामः |
| क्रि० | अघोषिष्यत् | अघोषिष्यताम् | अघोषिष्यन् |
| | अघोषिष्यः | अघोषिष्यतम् | अघोषिष्यत |
| | अघोषिष्यम् | अघोषिष्याव | अघोषिष्याम |

|| चूष पाने. ||

चूषति । अचूषीत् । चुचूष ।

|| तूष तुष्टौ. ||

तूषति । अतूषीत् । तुतूष ।

|| पूष वृद्धौ ||

पूषति । अपूषीत् । पुपूष ।

|| लुष मूष स्तेये. ||

लूषति । अलूषीत् । लुलूष ।

लोषति । अलोषीत् । लुलोष ।

मूषति । अमूषीत् । मुमूष ।

|| सूष प्रसवे ||

सूषति । असूषीत् । सुसूष ।

|| ऊष रुजायाम् ||

ऊषति । औषीत् । ऊषाञ्चकार ३

|| ईष उञ्छे. ||

ईषति । ऐषीत् । ईषाञ्चकार ३

|| कृष विलेखने ||

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | कर्षति | कर्षतः | कर्षन्ति |
| | कर्षसि | कर्षथः | कर्षथ |
| | कर्षामि | कर्षावः | कर्षामः |
| स० | कर्षेत् | कर्षेताम् | कर्षेयुः |
| | कर्षेः | कर्षेतम् | कर्षेत |
| | कर्षेयम् | कर्षेव | कर्षेम |
| प० | कर्षतु कर्षतात् | कर्षताम् | कर्षन्तु |
| | कर्ष ,, | कर्षतम् | कर्षत |
| | कर्षाणि | कर्षाव | कर्षाम |
| ह्य० | अकर्षत् | अकर्षताम् | अकर्षन् |
| | अकर्षः | अकर्षतम् | अकर्षत |
| | अकर्षम् | अकर्षाव | अकर्षाम |
| अ० | अक्राक्षीत् | अक्राष्टाम् | अक्राक्षुः |
| | अक्राक्षीः | अक्राष्टम् | अक्राष्ट |
| | अक्राक्षम् | अक्राक्ष्व | अक्राक्ष्म |
| | अकार्क्षीत् | अकार्ष्टाम् | अकार्क्षुः |
| | अकार्क्षीः | अकार्ष्टम् | अकार्ष्ट |
| | अकार्क्षम् | अकार्क्ष्व | अकार्क्ष्म |
| | अकृक्षत् | अकृक्षताम् | अकृक्षन् |
| | अकृक्षः | अकृक्षतम् | अकृक्षत |
| | अकृक्षम् | अकृक्षाव | अकृक्षाम |
| प० | चकर्ष | चकृषतुः | चकृषुः |
| | चकर्षिथ | चकृषथुः | चकृष |
| | चकर्ष | चकृषिव | चकृषिम |
| आ० | कृष्यात् | कृष्यास्ताम् | कृष्यासुः |
| | कृष्याः | कृष्यास्तम् | कृष्यास्त |
| | कृष्यासम् | कृष्यास्व | कृष्यास्म |
| श्व० | कर्ष्टा | कर्ष्टारौ | कर्ष्टारः |
| | कर्ष्टासि | कर्ष्टास्थः | कर्ष्टास्थ |
| | कर्ष्टास्मि | कर्ष्टास्वः | कर्ष्टास्मः |

| | | |
|---|---|---|
| कष्टा | कष्टारौ | कष्टारः |
| कष्टासि | कष्टास्थः | कष्टास्थ |
| कष्टास्मि | कष्टास्वः | कष्टास्मः |
| क्रि० अकक्ष्यर्त् | अकक्ष्यर्ताम् | अकक्ष्यर्न् |
| अकक्ष्यर्ः | अकक्ष्यर्तम् | अकक्ष्यर्त |
| अकक्ष्यर्म् | अकक्ष्यर्ाव | अकक्ष्यर्ाम |
| अकक्ष्यत् | अकक्ष्यताम् | अकक्ष्यन् |
| अकक्ष्यः | अकक्ष्यतम् | अकक्ष्यत |
| अकक्ष्यम् | अकक्ष्याव | अकक्ष्याम |

कष शिष जष झष वष मष मुष रुष रिष यूष जूष शष चष-हिंसायाम् । कषति । अकषीत्-अकाषीत् । चकाष शेषति । अशेषीत् । शिशेष । जषति अजषीत्-अजाषीत् । जजाष ॥ जेषिथ । झषति । अझाषीत्-अझषीत् । जझाष वषति । अवाषीत्-अवषीत् । ववाष-ववषिथ ॥ मषति । अमषीत्-अमाषीत् । ममाष । मेषिथ । मोषति । अमोषीत् मुमोष ॥ रोषति । अरोषीत् । रुरोष । रेषति अरेषीत् । रिरेष ॥ यूषति । अयूषीत् युयूष ॥ जूषति । अजूषीत् । जुजूष ॥ शषति । अशषीत्-अशाषीत् । शशाष-शेषिथ । चषति । अचषीत् अचाषीत् । चचाष । चेषिथ ।

॥ वृष सङ्घाते च ॥

वर्षति । अवर्षीत् । ववर्ष ।

॥ भष-भर्त्सने ॥

भषति । अभषीत्-अभाषीत् । बभाष

॥ जिषु विषु मिषु निषू पृषु वृषु

जेषति । अजेषीत् । जिजेष ।
वेषति । अवेषीत् । विवेष ।
मेषति । अमेषीत् । मिमेष ।
नेषति । अनेषीत् । निनेष ।
पर्षति । अपर्षीत् । पपर्ष ।
वर्षति । अवर्षीत् । ववर्ष ।

॥ मृषु संहने च ॥

मर्षति । अमर्षीत् । ममर्ष ।

॥ उष श्रिषु श्लिषु प्रषु प्लुषु-दाहे ॥

ओषति । ओषेत् । ओषतु । औषत् ।

| | | |
|---|---|---|
| अ० औषीत् | औषिष्टाम् | औषिषुः |
| औषीः | औषिष्टम् | औषिष्ट |
| औषिषम् | औषिष्व | औषिष्म |
| प० उवोष | ऊषतुः | ऊषुः |
| उवोषिथ | ऊषथुः | ऊष |
| उवोष | ऊषिव | ऊषिम |

ओषाञ्चकार ओषामास । ओषाम्बभूव । उष्यात् ओषिता । औषिष्यति । औषिष्यत्

श्रेषति । अश्रेषीत् । शिश्रेष ।
श्लेषति । अश्लेषीत् । शिश्लेष ।
प्रोषति । अप्रोषीत् । पुप्रोष ।
प्लोषति । अप्लोषीत् । पुप्लोष ।

॥ घृषु सङ्घर्षे ॥

घर्षति । अघर्षीत् । जघर्ष ।

॥ हृषु अलीके ॥

हर्षति । अहर्षीत् । जहर्ष ।

॥ पुष पुष्टौ ॥

पोषति । अपोषीत् । पुपोष ।

॥ भूष तसु अलङ्कारे ॥

भूषति । अभूषीत् । बुभूष ।
तंसति । अतंसीत् । ततंस ।

॥ तुस ह्रस ह्लस रस-शब्दे ॥

तोसति । अतोसीत् । तुतोस ।
ह्रसति । अह्रसीत् । अह्रासीत् । जह्रास
ह्लसति । अह्लसीत्-अह्लासीत् । जह्लास
रसति । अरसीत् । अरासीत् । ररास रेसिथ ।

॥ लस श्लेषणक्रीडनयोः ॥

लसति । अलसीत्-अलासीत् । ललास-लेसिथ ।

॥ पिसृ पेसृ वेसृ गतौ ॥

पेसति । अपेसीत् । पिपेस ।
पेसति । अपेसीत् । पिपेस--पिपेसतुः
वेसति ।अवेसीत् ।विवेस । विवेसतुः ।

॥ शंसु स्तुतौ च ॥

शंसति । अशंसीत् । शशंस ।

---

॥ घस्लृ अदने. ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | घसति | घसतः | घसन्ति |
| | घससि | घसथः | घसथ |
| | घसामि | घसावः | घसामः |
| स० | घसेत् | घसेताम् | घसेयुः |
| | घसेः | घसेतम् | घसेत |
| | घसेयम् | घसेव | घसेम |
| प० | घसतु घसतात् | घसताम् | घसन्तु |
| | घस ,, | घसतम् | घसत |
| | घसानि | घसाव | घसाम |
| ह्य० | अघसत् | अघसताम् | अघसन् |
| | अघसः | अघसतम् | अघसत |
| | अघसम् | अघसाव | अघसाम |
| अ० | अघसत् | अघसताम् | अघसन् |
| | अघसः | अघसतम् | अघसत |
| | अघसम् | अघसाव | अघसाम |
| प० | जघास | जक्षतुः | जक्षुः |
| | जघसिथ जघस्थ | जक्षथुः | जक्ष |
| | जघास जघस | जक्षिव | जक्षिम |

पाणिनिमते घसॢ धातोर्लिट्याशिषि च न रूपाणि भवन्ति, इति ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | घस्यात् | घस्यास्ताम् | घस्यासुः |
| | घस्याः | घस्यास्तम् | घस्यास्त |
| | घस्यासम् | घस्यास्व | घस्यास्म |
| श्व० | घस्ता | घस्तारौ | घस्तारः |
| | घस्तासि | घस्तास्थः | घस्तास्थ |
| | घस्तास्मि | घस्तास्वः | घस्तास्मः |
| भ० | घत्स्यति | घत्स्यतः | घत्स्यन्ति |
| | घत्स्यसि | घत्स्यथः | घत्स्यथ |
| | घत्स्यामि | घत्स्यावः | घत्स्यामः |
| क्रि० | अघत्स्यत् | अघत्स्यताम् | अघत्स्यन् |
| | अघत्स्यः | अघत्स्यतम् | अघत्स्यत |
| | अघत्स्यम् | अघत्स्याव | अघत्स्याम |

---

हसे—हसने

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | हसति | हसतः | हसन्ति |
| | हससि | हसथः | हसथ |
| | हसामि | हसावः | हसामः |
| स० | हसेत् | हसेताम् | हसेयुः |
| | हसेः | हसेतम् | हसेत |
| | हसेयम् | हसेव | हसेम |
| प० | हसतु हसतात् | हसताम् | हसन्तु |
| | हस ,, | हसतम् | हसत |
| | हसानि | हसाव | हसाम |
| ह्य० | अहसत् | अहसताम् | अहसन् |
| | अहसः | अहसतम् | अहसत |
| | अहसम् | अहसाव | अहसाम |
| अ० | अहसीत् | अहसिष्टाम् | अहसिषुः |
| | अहसीः | अहसिष्टम् | अहसिष्ट |
| | अहसिषम् | अहसिष्व | अहसिष्म |
| प० | जहास | जहसतुः | जहसुः |
| | जहसिथ | जहसथुः | जहस |
| | जहास जहस | जहसिव | जहसिम |
| आ० | हस्यात् | हस्यास्ताम् | हस्यासुः |
| | हस्याः | हस्यास्तम् | हस्यास्त |
| | हस्यासम् | हस्यास्व | हस्यास्म |
| श्व० | हसिता | हसितारौ | हसितारः |
| | हसितासि | हसितास्थः | हसितास्थ |
| | हसितास्मि | हसितास्वः | हसितास्मः |
| भ० | हसिष्यति | हसिष्यतः | हसिष्यन्ति |
| | हसिष्यसि | हसिष्यथः | हसिष्यथ |
| | हसिष्यामि | हसिष्यावः | हसिष्यामः |

क्रि० अद्दसिष्यत् अद्दसिष्यताम् अद्दसिष्यन्
अद्दसिष्यः अद्दसिष्यतम् अद्दसिष्यत
अद्दसिष्यम् अद्दसिष्याव अद्दसिष्याम

शस्—हिंसायाम्

व० शसति शसतः शसन्ति
शससि शसथः शसथ
शसामि शसावः शसामः

स० शसेत् शसेताम् शसेयुः
शसेः शसेतम् शसेत
शसेयम् शसेव शसेम

प० शसतु शसतात् शसताम् शसन्तु
शस „ शसतम् शसत
शसानि शसाव शसाम

ह्य० अशसत् अशसताम् अशसन्
अशसः अशसतम् अशसत
अशसम् अशसाव अशसाम

अ० अशसीत् अशसिष्टाम् अशसिषुः
अशसीः अशसिष्टम् अशसिष्ट
अशसिषम् अशसिष्व अशसिष्म
मतान्तरे-अशासीत्, अशसीत्,

प० शशास शशसतुः शशसुः
शशसिथ शशसथुः शशस
शशास शशस शशसिव शशसिम

आ० शस्यात् शस्यास्ताम् शस्यासुः
शस्याः शस्यास्तम् शस्यास्त
शस्यासम् शस्यास्व शस्यास्म

श्व० शसिता शसितारौ शसितारः
शसितासि शसितास्थः शसितास्थ
शसितास्मि शसितास्वः शसितास्मः

भ० शसिष्यति शसिष्यतः शसिष्यन्ति
शसिष्यसि शसिष्यथः शसिष्यथ
शसिष्यामि शसिष्यावः शसिष्यामः

क्रि० अशसिष्यत् अशसिष्यताम् अशसिष्यन्
अशसिष्यः अशसिष्यतम् अशसिष्यत
अशसिष्यम् अशसिष्याव अशसिष्याम

मिहं— सेचने

व० मेहति मेहतः मेहन्ति
मेहसि मेहथः मेहथ
मेहामि मेहावः मेहामः

स० मेहेत् मेहेताम् मेहेयुः
मेहेः मेहेतम् मेहेत
मेहेयम् मेहेव मेहेम

प० मेहतु मेहतात् मेहताम् मेहन्तु
मेह „ मेहतम् मेहत
मेहानि मेहाव मेहाम

ह्य० अमेहत् अमेहताम् अमेहन्
अमेहः अमेहतम् अमेहत
अमेहम् अमेहाव अमेहाम

अ० अमिक्षत् अमिक्षताम् अमिक्षन्
अमिक्षः अमिक्षतम् अमिक्षत
अमिक्षम् अमिक्षाव अमिक्षाम

प० मिमेह मिमिहतुः मिमिहुः
मिमेहिथ मिमिहथुः मिमिह
मिमेह मिमिहिव मिमिहिम

आ० मिह्यात् मिह्यास्ताम् मिह्यासुः
मिह्याः मिह्यास्तम् मिह्यास्त
मिह्यासम् मिह्यास्व मिह्यास्म

श्व० मेढा मेढारौ मेढारः
मेढासि मेढास्थः मेढास्थ
मेढास्मि मेढास्वः मेढास्मः

भ० मेक्ष्यति मेक्ष्यतः मेक्ष्यन्ति
मेक्ष्यसि मेक्ष्यथः मेक्ष्यथ
मेक्ष्यामि मेक्ष्यावः मेक्ष्यामः

क्रि० अमेक्ष्यत् अमेक्ष्यताम् अमेक्ष्यन्
अमेक्ष्यः अमेक्ष्यतम् अमेक्ष्यत
अमेक्ष्यम् अमेक्ष्याव अमेक्ष्याम

॥ दहं—भस्मीकरणे ॥

व० दहति दहतः दहन्ति

| | | | |
|---|---|---|---|
| | दहसि | दहथः | दहथ |
| | दहामि | दहावः | दहामः |
| स० | दहेत् | दहेताम् | दहेयुः |
| | दहेः | दहेतम् | दहेत |
| | दहेयम् | दहेव | दहेम |
| प० | दहतु दहतात् | दहताम् | दहन्तु |
| | दह „ | दहतम् | दहत |
| | दहानि | दहाव | दहाम |
| ह्य० | अदहत् | अदहताम् | अदहन् |
| | अदहः | अदहतम् | अदहत |
| | अदहम् | अदहाव | अदहाम |
| अ० | अधाक्षीत् | अदाग्धाम् | अधाक्षुः |
| | अधाक्षीः | अदाग्धम् | अदाग्ध |
| | अधाक्षम् | अधाक्ष्व | अधाक्ष्म |
| प० | ददाह | देहतुः | देहुः |
| | देहिथ ददग्ध | देहथुः | देह |
| | ददाह ददह | देहिव | देहिम |
| आ० | दह्यात् | दह्यास्ताम् | दह्यासुः |
| | दह्याः | दह्यास्तम् | दह्यास्त |
| | दह्यासम् | दह्यास्व | दह्यास्म |
| श्व० | दग्धा | दग्धारौ | दग्धारः |
| | दग्धासि | दग्धास्थः | दग्धास्थ |
| | दग्धास्मि | दग्धास्वः | दग्धास्मः |
| भ० | धक्ष्यति | धक्ष्यतः | धक्ष्यन्ति |
| | धक्ष्यसि | धक्ष्यथः | धक्ष्यथ |
| | धक्ष्यामि | धक्ष्यावः | धक्ष्यामः |
| क्रि० | अधक्ष्यत् | अधक्ष्यताम् | अधक्ष्यन् |
| | अधक्ष्यः | अधक्ष्यतम् | अधक्ष्यत |
| | अधक्ष्यम् | अधक्ष्याव | अधक्ष्याम |

---

चह—कल्कने ।

चहति । अचहीत् । चचाह, चेहिथ

रह—त्यागे ।

रहति । अरहीत् । रराह—रेहिथ

॥ रहु गतौ ॥

रंहति । अरंहीत् । ररंह ॥

---

॥ दृह दृहु वृह—वृद्धौ ॥

दर्हति । अदर्हीत् । ददर्ह ।

दृंहति । अदृंहीत् । ददृंह ।

वर्हति । अवर्हीत् । ववर्ह ।

॥ वृहूँ वृहु—शब्दे च ॥

वर्हति । अवर्हीत् । अवृहत् ।

ववर्ह । वृंहति । अवृंहीत् । ववृंह

॥ उहूँ तुहूँ दुहूँ—अर्दने ॥

ओहति औहीत् औहत् ।

उवोह । ऊहतुः । उवोहिथ ।

तोहति । अतोहीत्-अतुहत् । तुतोह ।

दोहति । अदोहीत् । अदुहत् । दुदोह

---

॥ अर्ह—पूजायाम् ॥

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| व० | अर्हति | अर्हतः | अर्हन्ति | |
| | अर्हसि | अर्हथः | अर्हथ | |
| | अर्हामि | अर्हावः | अर्हामः | |
| स० | अर्हेत् | अर्हेताम् | अर्हेयुः | |
| | अर्हेः | अर्हेतम् | अर्हेत | |
| | अर्हेयम् | अर्हेव | अर्हेम | |
| प० | अर्हतु | अर्हतात् | अर्हताम् | अर्हन्तु |
| | अर्ह | „ | अर्हतम् | अर्हत |
| | अर्हाणि | अर्हाव | अर्हाम | |
| ह्य० | आर्हत् | आर्हताम् | आर्हन् | |
| | आर्हः | आर्हतम् | आर्हत | |
| | आर्हम् | आर्हाव | आर्हाम | |
| अ० | आर्हीत् | आर्हिष्टाम् | आर्हिषुः | |
| | आर्हीः | आर्हिष्टम् | आर्हिष्ट | |
| | आर्हिषम् | आर्हिष्व | आर्हिष्म | |
| प० | आनर्ह | आनर्हतुः | आनर्हुः | |
| | आनर्हिथ | आनर्हथुः | आनर्ह | |

आनर्ह आनर्हिव आनर्हिम

आ०अर्ह्यात् अर्ह्यास्ताम् अर्ह्यासुः
अर्ह्याः अर्ह्यास्तम् अर्ह्यास्त
अर्ह्यासम् अर्ह्यास्व अर्ह्यास्म

श्व०अर्हिता अर्हितारौ अर्हितारः
अर्हितासि अर्हितास्थः अर्हितास्थ
अर्हितास्मि अर्हितास्वः अर्हितास्मः

भ० अर्हिष्यति अर्हिष्यतः अर्हिष्यन्ति
अर्हिष्यसि अर्हिष्यथः अर्हिष्यथ
अर्हिष्यामि अर्हिष्यावः अर्हिष्यामः

क्रि०आर्हिष्यत् आर्हिष्यताम् आर्हिष्यन्
आर्हिष्यः आर्हिष्यतम् आर्हिष्यत
आर्हिष्यम् आर्हिष्याव आर्हिष्याम

॥ मह—पूजायाम् ॥

महति । अमहीत् । ममाह-मेहिथ ।

॥ उक्ष—सेचने ॥

उक्षति । औक्षीत् । उक्षाञ्चकार ३ ।

॥ रक्ष—पालने ॥

रक्षति । अरक्षीत् । ररक्ष ।

॥ मक्ष मुक्ष—सङ्घाते ॥

मक्षति । अमक्षीत् । ममक्ष ।
मुक्षति । अमुक्षीत् । मुमुक्ष ॥

---

॥ अक्षौ-व्याप्तौ च ॥

व० अक्ष्णोति अक्ष्णुतः अक्ष्णुवन्ति
अक्ष्णोषि अक्ष्णुथः अक्ष्णुथ
अक्ष्णोमि अक्ष्णुवः अक्ष्णुमः

स० अक्षति अक्षतः अक्षन्ति
अक्षसि अक्षथः अक्षथ
अक्षामि अक्षावः अक्षामः

स. अक्ष्णुयात् अक्ष्णुयाताम् अक्ष्णुयुः
अक्ष्णुयाः अक्ष्णुयातम् अक्ष्णुयात
अक्ष्णुयाम् अक्ष्णुयाव अक्ष्णुयाम
अक्षेत् अक्षेताम् अक्षेयुः
अक्षेः अक्षेतम् अक्षेत
अक्षेयम् अक्षेव अक्षेम

प० अक्ष्णोतु अक्ष्णुतात् अक्ष्णुताम् अक्ष्णुवन्तु
अक्ष्णुहि „ अक्ष्णुतम् अक्ष्णुत
अक्ष्णवानि अक्ष्णवाव अक्ष्णवाम

अक्षतु अक्षतात् अक्षताम् अक्षन्तु
अक्ष „ अक्षतम् अक्षत
अक्षाणि अक्षाव अक्षाम

ह्य० आक्ष्णोत् आक्ष्णुताम् आक्ष्णुवन्
आक्ष्णोः आक्ष्णुतम् आक्ष्णुत
आक्ष्णवम् आक्ष्णुव आक्ष्णुम

आक्षत् आक्षताम् आक्षन्
आक्षः आक्षतम् आक्षत
आक्षम् आक्षाव आक्षाम

अ० आक्षीत् आष्टाम् आक्षुः
आक्षीः आष्टम् आष्ट
आक्षम् आक्ष्व आक्ष्म

आक्षीत् आक्षिष्टाम् आक्षिषुः
आक्षीः आक्षिष्टम् आक्षिष्ट
आक्षिषम् आक्षिष्व आक्षिष्म

प० आनक्ष आनक्षतुः आनक्षुः
आनक्षिथ आनक्षथुः आनक्ष
आनक्ष आनक्षिव आनक्षिम

मतान्तरे—आनष्ठ

आ०अक्ष्यात् अक्ष्यास्ताम् अक्ष्यासुः
अक्ष्याः अक्ष्यास्तम् अक्ष्यास्त
अक्ष्यासम् अक्ष्यास्व अक्ष्यास्म

श्व०अक्षिता अक्षितारौ अक्षितारः
अक्षितासि अक्षितास्थः अक्षितास्थ
अक्षितास्मि अक्षितास्वः अक्षितास्मः

अष्टा अष्टारौ अष्टारः
अष्टासि अष्टास्थः अष्टास्थ
अष्टास्मि अष्टास्वः अष्टास्मः

भ० अक्षिष्यति　अक्षिष्यतः　अक्षिष्यन्ति
अक्षिष्यसि　अक्षिष्यथः　अक्षिष्यथ
अक्षिष्यामि　अक्षिष्यावः　अक्षिष्यामः

अक्ष्यति　अक्ष्यतः　अक्ष्यन्ति
अक्ष्यसि　अक्ष्यथः　अक्ष्यथ
अक्ष्यामि　अक्ष्यावः　अक्ष्यामः

क्रि० आक्षिष्यत् आक्षिष्यताम्　आक्षिष्यन्
आक्षिष्यः　आक्षिष्यतम्　आक्षिष्यत
आक्षिष्यम् आक्षिष्याव　आक्षिष्याम

॥ तक्षौ—तनूकरणे ॥

व० तक्ष्णोति　तक्ष्णुतः　तक्ष्णुवन्ति
तक्ष्णोषि　तक्ष्णुथः　तक्ष्णुथ
तक्ष्णोमि　तक्ष्णुवः　तक्ष्णुमः

तक्षति　तक्षतः　तक्षन्ति
तक्षसि　तक्षथः　तक्षथ
तक्षामि　तक्षावः　तक्षामः

स० तक्ष्णुयात्　तक्ष्णुयाताम्　तक्ष्णुयुः
तक्ष्णुयाः　तक्ष्णुयातम्　तक्ष्णुयात
तक्ष्णुयाम्　तक्ष्णुयाव　तक्ष्णुयाम

तक्षेत्　तक्षेताम्　तक्षेयुः
तक्षेः　तक्षेतम्　तक्षेत
तक्षेयम्　तक्षेव　तक्षेम

प० तक्ष्णोतु तक्ष्णुतात् तक्ष्णुताम्　तक्ष्णुवन्तु
तक्ष्णुहि　,,　तक्ष्णुतम्　तक्ष्णुत
तक्ष्णवानि　तक्ष्णवाव　तक्ष्णवाम

तक्षतु　तक्षतात्　तक्षताम्　तक्षन्तु
तक्ष　,,　तक्षतम्　तक्षत
तक्षाणि　तक्षाव　तक्षाम

ह्य० अतक्ष्णोत्　अतक्ष्णुताम्　अतक्ष्णुवन्
अतक्ष्णोः　अतक्ष्णुतम्　अतक्ष्णुत
अतक्ष्णवम्　अतक्ष्णुव　अतक्ष्णुम

अतक्षत्　अतक्षताम्　अतक्षन्
अतक्षः　अतक्षतम्　अतक्षत
अतक्षम्　अतक्षाव　अतक्षाम

अ० अतक्षीत्　अतक्षिष्टाम्　अतक्षिषुः
अतक्षीः　अतक्षिष्टम्　अतक्षिष्ट
अतक्षिषम्　अतक्षिष्व　अतक्षिष्म
अताक्षीत्　अताष्टाम्　अताक्षुः
अताक्षीः　अताष्टम्　अताष्ट
अताक्षम्　अताक्ष्व　अताक्ष्म

प० ततक्ष　ततक्षतुः　ततक्षुः
ततक्षिथ　ततक्षथुः　ततक्ष
ततक्ष　ततक्षिव　ततक्षिम
ततष्ठ　ततक्ष्व　ततक्ष्म इत्यपि।

आ० तक्ष्यात्　तक्ष्यास्ताम्　तक्ष्यासुः
तक्ष्याः　तक्ष्यास्तम्　तक्ष्यास्त
तक्ष्यासम्　तक्ष्यास्व　तक्ष्यास्म

श्व० तक्षिता　तक्षितारौ　तक्षितारः
तक्षितासि तक्षितास्थः तक्षितास्थ
तक्षितास्मि तक्षितास्वः तक्षितास्मः

तष्टा　तष्टारौ　तष्टारः
तष्टासि　तष्टास्थः　तष्टास्थ
तष्टास्मि　तष्टास्वः　तष्टास्मः

भ० तक्षिष्यति　तक्षिष्यतः　तक्षिष्यन्ति
तक्षिष्यसि　तक्षिष्यथः　तक्षिष्यथ
तक्षिष्यामि　तक्षिष्यावः　तक्षिष्यामः

तक्ष्यति　तक्ष्यतः　तक्ष्यन्ति
तक्ष्यसि　तक्ष्यथः　तक्ष्यथ
तक्ष्यामि　तक्ष्यावः　तक्ष्यामः

क्रि० अतक्षिष्यत् अतक्षिष्यताम् अतक्षिष्यन्
अतक्षिष्यः अतक्षिष्यतम्　अतक्षिष्यत
अतक्षिष्यम् अतक्षिष्याव अतक्षिष्याम

अतक्ष्यत्　अतक्ष्यताम्　अतक्ष्यन्
अतक्ष्यः　अतक्ष्यतम्　अतक्ष्यत
अतक्ष्यम्　अतक्ष्याव　अतक्ष्याम

॥ त्वक्षौ—तनूकरणे ॥

व० त्वक्षति　त्वक्षतः　त्वक्षन्ति
त्वक्षसि　त्वक्षथः　त्वक्षथ
त्वक्षामि　त्वक्षावः　त्वक्षामः

| | | | |
|---|---|---|---|
| स० | त्वक्षेत् | त्वक्षेताम् | त्वक्षेयुः |
| | त्वक्षेः | त्वक्षेतम् | त्वक्षेत |
| | त्वक्षेयम् | त्वक्षेव | त्वक्षेम |
| प० | त्वक्षतु त्वक्षतात् | त्वक्षताम् | त्वक्षन्तु |
| | त्वक्ष | " त्वक्षतम् | त्वक्षत |
| | त्वक्षाणि | त्वक्षाव | त्वक्षाम |
| ह्य० | अत्वक्षत् | अत्वक्षताम् | अत्वक्षन् |
| | अत्वक्षः | अत्वक्षतम् | अत्वक्षत |
| | अत्वक्षम् | अत्वक्षाव | अत्वक्षाम |
| अ० | अत्वक्षीत् | अत्वक्षिष्टाम् | अत्वक्षिषुः |
| | अत्वक्षीः | अत्वक्षिष्टम् | अत्वक्षिष्ट |
| | अत्वक्षिषम् | अत्वक्षिष्व | अत्वक्षिष्म |
| | अत्वाक्षीत् | अत्वाष्टाम् | अत्वाक्षुः |
| | अत्वाक्षीः | अत्वाष्टम् | अत्वाष्ट |
| | अत्वाक्षम् | अत्वाक्ष्व | अत्वाक्ष्म |
| प० | तत्वक्ष | तत्वक्षतुः | तत्वक्षुः |
| | तत्वक्षिथ | तत्वक्षथुः | तत्वक्ष |
| | तत्वक्ष | तत्वक्षिव | तत्वक्षिम |

मतान्तरे—

तत्वष्ठ । तत्वक्ष्व । तत्वक्ष्म इत्यपि

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | त्वक्ष्यात् | त्वक्ष्यास्ताम् | त्वक्ष्यासुः |
| | त्वक्ष्याः | त्वक्ष्यास्तम् | त्वक्ष्यास्त |
| | त्वक्ष्यासम् | त्वक्ष्यास्व | त्वक्ष्यास्म |
| श्व० | त्वक्षिता | त्वक्षितारौ | त्वक्षितारः |
| | त्वक्षितासि | त्वक्षितास्थः | त्वक्षितास्थ |
| | त्वक्षितास्मि | त्वक्षितास्वः | त्वक्षितास्मः |
| | त्वष्टा | त्वष्टारौ | त्वष्टारः |
| | त्वष्टासि | त्वष्टास्थः | त्वष्टास्थ |
| | त्वष्टास्मि | त्वष्टास्वः | त्वष्टास्मः |
| भ० | त्वक्षिष्यति | त्वक्षिष्यतः | त्वक्षिष्यन्ति |
| | त्वक्षिष्यसि | त्वक्षिष्यथः | त्वक्षिष्यथ |
| | त्वक्षिष्यामि | त्वक्षिष्यावः | त्वक्षिष्यामः |
| | त्वक्ष्यति | त्वक्ष्यतः | त्वक्ष्यन्ति |
| | त्वक्ष्यसि | त्वक्ष्यथः | त्वक्ष्यथ |
| | त्वक्ष्यामि | त्वक्ष्यावः | त्वक्ष्यामः |
| क्रि० | अत्वक्षिष्यत् | अत्वक्षिष्यताम् | अत्वक्षिष्यन् |
| | अत्वक्षिष्यः | अत्वक्षिष्यतम् | अत्वक्षिष्यत |
| | अत्वक्षिष्यम् | अत्वक्षिष्याव | अत्वक्षिष्याम |
| | अत्वक्ष्यत् | अत्वक्ष्यताम् | अत्वक्ष्यन् |
| | अत्वक्ष्यः | अत्वक्ष्यतम् | अत्वक्ष्यत |
| | अत्वक्ष्यम् | अत्वक्ष्याव | अत्वक्ष्याम |

॥ णिक्ष—चुम्बने ॥

निक्षति । अनिक्षीत् । निनिक्ष ।

॥ तृक्ष—स्तृक्ष णक्ष गतौ ॥

तृक्षति । अतृक्षीत् । ततृक्ष ।

स्तृक्षति । अस्तृक्षीत् । तस्तृक्ष ।

नक्षति । अनक्षीत् । ननक्ष ।

॥ वक्ष—रोषे ॥

वक्षति । अवक्षीत् । ववक्ष ।

॥ त्वक्ष—त्वचने ॥

त्वक्षति । अत्वक्षीत् । तत्वक्ष ।

॥ सूर्क्ष्य—अनादरे ॥

सूर्क्ष्यति । असूर्क्ष्यीत् । सुसूर्क्ष्य ।

॥ काक्षि वाक्षि माक्षि कांक्षायाम् ॥

कांक्षति । अकांक्षीत् । चकांक्ष ।

वांक्षति । अवांक्षीत् । ववांक्ष ।

मांक्षति । अमांक्षीत् । ममांक्ष ।

॥ द्राक्षि ध्राक्षि ध्वाक्षि—घोरवासिते च ॥

द्रांक्षति । अद्रांक्षीत् । दद्रांक्ष ।

ध्रांक्षति । अध्रांक्षीत् । दध्रांक्ष ।

ध्वांक्षति । अध्वांक्षीत् । दध्वांक्ष ।

॥ इति भ्वादयः परस्मैपदिनः ॥

—(०)—

## ॥ अथात्मनेपदिनः ॥

गाङ्-गतौ, ( जवुं )

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | गाते | गाते | गाते |
| | गासे | गाथे | गाध्वे |
| | गे (पा० मते—गै) | गावहे | गामहे |
| स० | गेत | गेयाताम् | गेरन् |
| | गेथाः | गेयाथाम् | गेध्वम् |
| | गेय | गेवहि | गेमहि |
| प० | गाताम् | गाताम् | गाताम् |
| | गास्व | गाथाम् | गाध्वम् |
| | गै | गावहै | गामहै |
| ह्य० | अगात | अगाताम् | अगात |
| | अगाथाः | अगाथाम् | अगाध्वम् |
| | अगे | अगावहि | अगामहि |
| अ० | अगास्त | अगासाताम् | अगासत |
| | अगास्थाः | अगासाथाम् | अगाध्वम् अगाढ्वम् |
| | अगासि | अगास्वहि | अगास्महि |
| प० | जगे | जगाते | जगिरे |
| | जगिषे | जगाथे | जगिध्वे |
| | जगे | जगिवहे | जगिमहे |
| आ० | गासीष्ट | गासीयास्ताम् | गासीरन् |
| | गासीष्ठाः | गासीयास्थाम् | गासीध्वम् |
| | गासीय | गासीवहि | गासीमहि |
| श्व० | गाता | गातारौ | गातारः |
| | गातासे | गातासाथे | गाताध्वे |
| | गाताहे | गातास्वहे | गातास्महे |
| भ० | गास्यते | गास्येते | गास्यन्ते |
| | गास्यसे | गास्येथे | गास्यध्वे |
| | गास्ये | गास्यावहे | गास्यामहे |
| क्रि० | अगास्यत | अगास्येताम् | अगास्यन्त |
| | अगास्यथाः | अगास्येथाम् | अगास्यध्वम् |
| | अगास्ये | अगास्यावहि | अगास्यामहि |

ष्मिङ्—ईषद्धसने. ( जरा हसवुं )

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | स्मयते | स्मयेते | स्मयन्ते |
| | स्मयसे | स्मयेथे | स्मयध्वे |
| | स्मये | स्मयावहे | स्मयामहे |
| स० | स्मयेत | स्मयेयाताम् | स्मयेरन् |
| | स्मयेथाः | स्मयेयाथाम् | स्मयेध्वम् |
| | स्मयेय | स्मयेवहि | स्मयेमहि |
| प० | स्मयताम् | स्मयेताम् | स्मयन्ताम् |
| | स्मयस्व | स्मयेथाम् | स्मयध्वम् |
| | स्मयै | स्मयावहै | स्मयामहै |
| ह्य० | अस्मयत | अस्मयेताम् | अस्मयन्त |
| | अस्मयथाः | अस्मयेथाम् | अस्मयध्वम् |
| | अस्मये | अस्मयावहि | अस्मयामहि |
| अ० | अस्मेष्ट | अस्मेषाताम् | अस्मेषत |
| | अस्मेष्ठाः | अस्मेषाथाम् | अस्मेड्ढ्वम् अस्मेढ्वम् |
| | अस्मेषि | अस्मेष्वहि | अस्मेष्महि |
| प० | सिष्मिये | सिष्मियाते | सिष्मियिरे |
| | सिष्मियिषे | सिष्मियाथे | सिष्मियिढ्वे-ध्वे |
| | सिष्मिये | सिष्मियिवहे | सिष्मियिमहे |
| आ० | स्मेषीष्ट | स्मेषीयास्ताम् | स्मेषीरन् |
| | स्मेषीष्ठाः | स्मेषीयास्थाम् | स्मेषीढ्वम् |
| | स्मेषीय | स्मेषीवहि | स्मेषीमहि |
| श्व० | स्मेता | स्मेतारौ | स्मेतारः |
| | स्मेतासे | स्मेतासाथे | स्मेताध्वे |
| | स्मेताहे | स्मेतास्वहे | स्मेतास्महे |
| भ० | स्मेष्यते | स्मेष्येते | स्मेष्यन्ते |
| | स्मेष्यसे | स्मेष्येथे | स्मेष्यध्वे |
| | स्मेष्ये | स्मेष्यावहे | स्मेष्यामहे |
| क्रि० | अस्मेष्यत | अस्मेष्येताम् | अस्मेष्यन्त |
| | अस्मेष्यथाः | अस्मेष्येथाम् | अस्मेष्यध्वम् |
| | अस्मेष्ये | अस्मेष्यावहि | अस्मेष्यामहि |

---

डीङ्—विहायसा गतौ,
(पक्षिनुं उडवुं)

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | डयते | डयेते | डयन्ते |
| | डयसे | डयेथे | डयध्वे |
| | डये | डयावहे | डयामहे |
| स० | डयेत | डयेयाताम् | डयेरन् |
| | डयेथाः | डयेयाथाम् | डयेध्वम् |
| | डयेय | डयेवहि | डयेमहि |
| प० | डयताम् | डयेताम् | डयन्ताम् |
| | डयस्व | डयेथाम् | डयध्वम् |
| | डयै | डयावहै | डयामहै |
| ह्य० | अडयत | अडयेताम् | अडयन्त |
| | अडयथाः | अडयेथाम् | अडयध्वम् |
| | अडये | अडयावहि | अडयामहि |
| अ० | अडयिष्ट | अडयिषाताम् | अडयिषत |
| | अडयिष्ठाः | अडयिषाथाम् | अडयिढ्वम् ध्वम्-ढ्वम् |
| | अडयिषि | अडयिष्वहि | अडयिष्महि |
| प० | डिड्ये | डिड्याते | डिड्यिरे |
| | डिड्यिषे | डिड्याथे | डिड्यिध्वे -ढ्वे |
| | डिड्ये | डिड्यिवहे | डिड्यिमहे |
| आ० | डयिषीष्ट | डयिषीयास्ताम् | डयिषीरन् |
| | डयिषीष्ठाः | डयिषीयास्थाम् | डयिषीढ्वम् |
| | डयिषीय | डयिषीवहि | डयिषीमहि |
| श्व० | डयिता | डयितारौ | डयितारः |
| | डयितासे | डयितासाथे | डयिताध्वे |
| | डयिताहे | डयितास्वहे | डयितास्महे |
| भ० | डयिष्यते | डयिष्येते | डयिष्यन्ते |
| | डयिष्यसे | डयिष्येथे | डयिष्यध्वे |
| | डयिष्ये | डयिष्यावहे | डयिष्यामहे |
| क्रि० | अडयिष्यत | अडयिष्येताम् | अडयिष्यन्त |
| | अडयिष्यथाः | अडयिष्येथाम् | अडयिष्यध्वम् |
| | अडयिष्ये | अडयिष्यावहि | अडयिष्यामहि |

---

कुङ्--शब्दे ( शब्द करवो )

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | कवते | कवेते | कवन्ते |
| | कवसे | कवेथे | कवध्वे |
| | कवे | कवावहे | कवामहे |
| स० | कवेत | कवेयाताम् | कवेरन् |
| | कवेथाः | कवेयाथाम् | कवेध्वम् |
| | कवेय | कवेवहि | कवेमहि |
| प० | कवताम् | कवेताम् | कवन्ताम् |
| | कवस्व | कवेथाम् | कवध्वम् |
| | कवै | कवावहै | कवामहै |
| ह्य० | अकवत | अकवेताम् | अकवन्त |
| | अकवथाः | अकवेथाम् | अकवध्वम् |
| | अकवे | अकवावहि | अकवामहि |
| अ० | अकोष्ट | अकोषाताम् | अकोषत |
| | अकोष्ठाः | अकोषाथाम् | अकोढ्वम् ढ्वम् |
| | अकोषि | अकोष्वहि | अकोष्महि |
| प० | चुकुवे | चुकुवाते | चुकुविरे |
| | चुकुविषे | चुकुवाथे | चुकुविढ्वे ध्वे |
| | चुकुवे | चुकुविवहे | चुकुविमहे |
| आ० | कोषीष्ट | कोषीयास्ताम् | कोषीरन् |
| | कोषीष्ठाः | कोषीयास्थाम् | कोषीढ्वम् |
| | कोषीय | कोषीवहि | कोषीमहि |
| श्व० | कोता | कोतारौ | कोतारः |
| | कोतासे | कोतासाथे | कोताध्वे |
| | कोताहे | कोतास्वहे | कोतास्महे |
| भ० | कोष्यते | कोष्येते | कोष्यन्ते |
| | कोष्यसे | कोष्येथे | कोष्यध्वे |
| | कोष्ये | कोष्यावहे | कोष्यामहे |
| क्रि० | अकोष्यत | अकोष्येताम् | अकोष्यन्त |
| | अकोष्यथाः | अकोष्येथाम् | अकोष्यध्वम् |
| | अकोष्ये | अकोष्यावहि | अकोष्यामहि |

---

उंङ्, गुङ्, घुंङ्, ङुङ्--शब्दे ।
( शब्द करवो )

अवते । अवेत । अवताम् । आवत

अ० औष्ट औषाताम् औषत
औष्ठाः औषाथाम् औड्ढ्वम्- ढ्वम्
औषि औष्वहि औष्महि
प० ऊवे ऊवाते ऊविरे
ऊविषे ऊवाथे ऊविढ्वे-ध्वे
ऊवे ऊविवहे ऊविमहे
ओषीष्ट । ओता । ओष्यति । औष्यत
गवते । अगोष्ट । जुगुवे । घवते ।
अघोष्ट । जुघुवे । ङवते । अङोष्ट । जुङुवे ।
च्युंङ् ज्युंङ् जुंङ् प्रुङ् प्लुङ्-गतौ [ जवुं)
च्यवते । अच्योष्ट । चुच्युवे ।
ज्यवते । अज्योष्ट । जुज्युवे ।
जवते । अजोष्ट । जुजुवे । प्रवते ।
अप्रोष्ट । पुप्रुवे । प्लवते । अप्लोष्ट । पुप्लुवे

॥ रुंङ्—रेषणे च । (हिंसा करवी जवुं) ॥
रवते । अरोष्ट । रुरुवे ।

॥ पूङ्—पवने (पवित्र करवुं)

व० पवते पवेते पवन्ते
पवसे पवेथे पवध्वे
पवे पवावहे पवामहे
स० पवेत पवेयाताम् पवेरन्
पवेथाः पवेयाथाम् पवेध्वम्
पवेय पवेवहि पवेमहि
प० पवताम् पवेताम् पवन्ताम्
पवस्व पवेथाम् पवध्वम्
पवै पवावहै पवामहै
ह्य० अपवत अपवेताम् अपवन्त
अपवथाः अपवेथाम् अपवध्वम्
अपवे अपवावहि अपवामहि
अ० अपविष्ट अपविषाताम् अपविषत
अपविष्ठाः अपविषाथाम् अपविड्ढ्वम्
ध्वम् ढ्वम्
अपविषि अपविष्वहि अपविष्महि
प० पुपुवे पुपुवाते पुपुविरे
पुपुविषे पुपुवाथे पुपुविढ्वे-ध्वे
पुपुवे पुपुविवहे पुपुविमहे
आ० पविषीष्ट पविषीयास्ताम् पविषीरन्
पविषीष्ठाः पविषीयास्थाम् पविषीढ्वम्ध्वम्
पविषीय पविषीवहि पविषीमहि
श्व० पविता पवितारौ पवितारः
पवितासे पवितासाथे पविताध्वे
पविताहे पवितास्वहे पवितास्महे
भ० पविष्यते पविष्येते पविष्यन्ते
पविष्यसे पविष्येथे पविष्यध्वे
पविष्ये पविष्यावहे पविष्यामहे
क्रि अपविष्यत अपविष्येताम् अपविष्यन्त
अपविष्यथाः अपविष्येथाम् अपविष्यध्वम्
अपविष्ये अपविष्यावहि अपविष्यामहि

॥ मूङ्-बन्धने [ बांधवुं ]
मवते । अमविष्ट । मुमुवे ।

॥ धृङ्—अवध्वंसने ॥ (धारण करवुं)

व धरते धरेते धरन्ते
धरसे धरेथे धरध्वे
धरे धरावहे धरामहे
स० धरेत धरेयाताम् धरेरन्
धरेथाः धरेयाथाम् धरेध्वम्
धरेय धरेवहि धरेमहि
प० धरताम् धरेताम् धरन्ताम्
धरस्व धरेथाम् धरध्वम्
धरै धरावहै धरामहै
ह्य० अधरत अधरेताम् अधरन्त
अधरथाः अधरेथाम् अधरध्वम्
अधरे अधरावहि अधरामहि
अ० अधृत अधृषाताम् अधृषत
अधृथाः अधृषाथाम् अधृड्ढ्वम्-ढ्वम्
अधृषि अधृष्वहि अधृष्महि

प० दध्रे दध्राते दध्रिरे
दध्रिषे दध्राथे • दध्रिध्वे दध्रिढ्वे
दध्रे दध्रिवहे दध्रिमहे

आ० धृषीष्ट धृषीयास्ताम् धृषीरन्
धृषीष्ठाः धृषीयास्थाम् धृषीढ्वम्
धृषीय धृषीवहि धृषीमहि

श्व० धर्त्ता धर्त्तारौ धर्त्तारः
धर्त्तासे धर्त्तासाथे धर्त्ताध्वे
धर्त्ताहे धर्त्तास्वहे धर्त्तास्महे

भ० धरिष्यते धरिष्येते धरिष्यन्ते
धरिष्यसे धरिष्येथे धरिष्यध्वे
धरिष्ये धरिष्यावहे धरिष्यामहे

क्रि० अधरिष्यत अधरिष्येताम् अधरिष्यन्त
अधरिष्यथाः अधरिष्येथाम् अधरिष्यध्वम्
अधरिष्ये अधरिष्यावहि अधरिष्यामहि

॥ मेङ् प्रतिदाने ॥ पाछुं आपवुं ॥

मयते । मयेत । मयताम् ।
अमयत । अमास्त । ममे ।
मासीष्ट । माता । मास्यते । अमास्यत

---

॥ देङ् त्रैङ् पालने । रक्षण करवुं ॥

व० दयते दयेते दयन्ते
दयसे दयेथे दयध्वे
दये दयावहे दयामहे

स० दयेत दयेयाताम् दयेरन्
दयेथाः दयेयाथाम् दयेध्वम्
दयेय दयेवहि दयेमहि

प० दयताम् दयेताम् दयन्ताम्
द स्व दयेथाम् दयध्वम्
दयै दयावहै दयामहै

ह्य० अदयत अदयेताम् अदयन्त
अदयथाः अदयेथाम् अदयध्वम्
अदये अदयावहि अदयामहि

अ० अदित अदिषाताम् अदिषत
अदिथाः अदिषाथाम् अदिढ्ढ्वम्
ढ्वम्
अदिषि अदिष्वहि अदिष्महि

प० दिग्ये दिग्याते दिग्यिरे
दिग्यिषे दिग्याथे दिग्यिध्वे-ढ्वे
दिग्ये दिग्यिवहे दिग्यिमहे

आ० दासीष्ट दासीयास्ताम् दासीरन्
दासीष्ठाः दासीयास्थाम् दासीध्वम्
दासीय दासीवहि दासीमहि

श्व० दाता दातारौ दातारः
दातासे दातासाथे दाताध्वे
दाताहे दातास्वहे दातास्महे

भ० दास्यते दास्येते दास्यन्ते
दास्यसे दास्येथे दास्यध्वे
दास्ये दास्यावहे दास्यामहे

क्रि० अदास्यत अदास्येताम् अदास्यन्त
अदास्यथाः अदास्येथाम् अदास्यध्वम्
अदास्ये अदास्यावहि अदास्यामहि

---

त्रायते । अत्रास्त । तत्रे ।

श्यैङ् गतौ । जवुं
श्यायते । अश्यास्त । शश्ये ।

प्यैङ् वृद्धौ । वधवुं
प्यायते । अप्यास्त । पप्ये ।

वकुङ् कौटिल्ये । वांका थवुं
वङ्कते । अवङ्किष्ट । ववङ्के ।

मकुङ् मण्डने । शोभाववुं
मङ्कते । अमङ्किष्ट । ममङ्के ।

अकुङ् लक्षणे । चिह्न करवुं
अङ्कते । आङ्किष्ट । आनङ्के ।

शीकृङ् सेचने । छांटवुं
शीकते । अशीकिष्ट । शिशीके ।

लोकृङ् दर्शने । जोवुं

लोकते । अलोकिष्ट । लुलोके ।

श्लोकृङ् सङ्घाते । एकठुं करवुं

श्लोकते । अश्लोकिष्ट । शुश्लोके

द्रेकृङ् ध्रेकृङ् शब्दोत्साहे । वधारे बोलवुं उद्धताइ भरेलुं बोलवुं

द्रेकते । अद्रेकिष्ट । दिद्रेके ।

ध्रेकते । अध्रेकिष्ट । दिध्रेके ।

रेकृङ् शकुङ् शङ्कायाम् । शंका करवी

रेकते । अरेकिष्ट । रिरेके ।

शङ्कते । अशङ्किष्ट । शशङ्के ।

ककि लौल्ये । चंचळ थवुं

ककते । अककिष्ट । चकके ।

कुकि वृकि आदाने । लेवुं

कोकते । अकोकिष्ट । चुकुके ।

वर्कते । अवर्किष्ट । ववृके ।

चकि तृप्तिप्रतिघातयोः । तृप्त थवुं मार मारवो—

चकते । अचकिष्ट । चेके ।

ककुङ् । श्वकुङ् । त्रकुङ् । श्रकुङ् ।

श्लकुङ् । ढौकृङ् । त्रौकृङ् । ष्वष्कि ।

वस्कि । मस्कि । तिकि । टिकि ।

टीकृङ् । सेकृङ् । स्रकुङ् । रघुङ् ।

लघुङ् । गतौ । जवुं

कङ्कते । अकङ्किष्ट । चकङ्के ।

श्वङ्कते । अश्वङ्किष्ट शश्वङ्के ।

त्रङ्कते । अत्रङ्किष्ट । तत्रङ्के

श्रङ्कते । अश्रङ्किष्ट । शश्रङ्के ।

श्लङ्कते । अश्लङ्किष्ट । शश्लङ्के ।

ढौकते । अढौकिष्ट । डुढौके ।

त्रौकते । अत्रौकिष्ट । तुत्रौके ।

ष्वष्कते । अष्वष्किष्ट । सष्वष्के ।

वस्कते । अवस्किष्ट । ववस्के ।

मस्कते । अमस्किष्ट । ममस्के ।

तेकते । अतेकिष्ट । तितिके ।

टेकते । अटेकिष्ट । टिटिके

टीकते । अटीकिष्ट । टिटीके ।

सेकते । असेकिष्ट । सिषेके ।

स्रेकते । अस्रेकिष्ट । सिस्रेके ।

रङ्घते । अरङ्घिष्ट । ररङ्घे ।

लङ्घते । अलङ्घिष्ट । ललङ्घे ।

अघुङ् वघुङ् गत्याक्षेपे । उतावळुं जवुं जवानी शरुआत करवी

अङ्घते । आङ्घिष्ट । आनङ्घे ।

वङ्घते । अवङ्घिष्ट ववङ्घे ।

मघुङ् कैतवे च । ठगवुं उतावळा जवुं

मङ्घते । अमङ्घिष्ट । ममङ्घे ।

राघृङ् । लाघृङ् । सामर्थ्ये । समर्थ थवुं

राघते । अराघिष्ट । रराघे ।

लाघते । अलाघिष्ट । ललाघे ।

द्राघृङ् आयासे च । समर्थ थवुं

द्राघते । अद्राघिष्ट । दद्राघे ।

श्लाघृङ् कत्थने । प्रशंसा करवी

श्लाघते । अश्लाघिष्ट । शश्लाघे ।

लोचृङ् दर्शने । देखवुं

लोचते । अलोचिष्ट । लुलोचे ।

षचि सेचने । भजवुं

सचते । असचिष्ट । सेचे ।

शचि व्यक्तायाम् वाचि । स्पष्ट बोलवुं

शचते । अशचिष्ट । शेचे ।

कचि बन्धने । बांधवुं

कचते । अकचिष्ट । चकचे ।

कचुङ् दीप्तौ च । चळकवुं

कञ्चते । अकञ्चिष्ट । चकञ्चे ।

श्वचि श्वचुङ् गतौ । जवुं

श्वचते । अश्वचिष्ट । शश्वचे ।

श्वञ्चते । अश्वञ्चिष्ट । शश्वञ्चे ।

वर्चि दीप्तौ । चळकवुं

वर्चते । अवर्चिष्ट । ववर्चे ।

मचि मुचुङ् कल्कने । वातुं ढवुं उकाळवुं-लुच्चाइ करवी

मचते । अमचिष्ट । मेचे ।

मुञ्चते । अमुञ्चिष्ट । मुमुञ्चे ।

मचुङ् धारणोच्छ्रायपूजनेषु च । पूजवुं धारण करवुं उंचुं थथवुं

मञ्चते । अमञ्चिष्ट । ममञ्चे

पचुङ् व्यक्तीकरणे । स्पष्ट करवुं

पञ्चते । अपञ्चिष्ट । पपञ्चे ।

ष्टुचि प्रसादे । महेरबानी करवी

स्तोचते । अस्तोचिष्ट । तुष्टुचे ।

---

पजृङ् भ्रेजृङ्-दीप्तौ । चळकवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | पजते | पजेते | पजन्ते |
| | पजसे | पजेथे | पजध्वे |
| | पजे | पजावहे | पजामहे |
| स० | पजेत | पजेयाताम् | पजेरन् |
| | पजेथाः | पजेयाथाम् | पजेध्वम् |
| | पजेय | पजेवहि | पजेमहि |
| प० | पजताम् | पजेताम् | पजन्ताम् |
| | पजस्व | पजेथाम् | पजध्वम् |
| | पजै | पजावहै | पजामहै |
| ह्य० | पेजत | पेजेताम् | पेजन्त |
| | पेजथाः | पेजेथाम् | पेजध्वम् |
| | पेजे | पेजावहि | पेजामहि |
| अ० | पेजिष्ट | पेजिषाताम् | पेजिषत |
| | पेजिष्ठाः | पेजिषाथाम् | पेजिड्ढ्वम् पे ध्वम् |
| | पेजिषि | पेजिष्वहि | पेजिष्महि |
| प० | पजांचक्रे | पजांचक्राते | पजांचक्रिरे |
| | पजांचकृषे | पजांचक्राथे | पजांचकृढ्वे |
| | पजांचक्रे | पजांचकृवहे | पजांचकृमहे |
| | पजाम्बभूव | पजाम्बभूवतुः | पजाम्बभूवुः |
| | पजामास | पजामासतुः | पजामासुः |
| आ० | पजिषीष्ट | पजिषीयास्ताम् | पजिषीरन् |
| | पजिषीष्ठाः | पजिषीयास्थाम् | पजिषीध्वम् |
| | पजिषीय | पजिषीवहि | पजिषीमहि |
| श्व० | पजिता | पजितारौ | पजितारः |
| | पजितासे | पजितासाथे | पजिताध्वे |
| | पजिताहे | पजितास्वहे | पजितास्महे |
| भ० | पजिष्यते | पजिष्येते | पजिष्यन्ते |
| | पजिष्यसे | पजिष्येथे | पजिष्यध्वे |
| | पजिष्ये | पजिष्यावहे | पजिष्यामहे |
| क्रि० | पेजिष्यत | पेजिष्येताम् | पेजिष्यन्त |
| | पेजिष्यथाः | पेजिष्येथाम् | पेजिष्यध्वम् |
| | पेजिष्ये | पेजिष्यावहि | पेजिष्यामहि |

---

भ्रेजृङ् । भ्रेजते । अभ्रेजिष्ट । भ्रेजे

इजुङ् गतौ इञ्जते ।

ऐञ्जिष्ट । इञ्जांचक्रे । इञ्जामास ।

इञ्जाम्बभूव । ईजि कुत्सने च ।

ईजते । ऐजिष्ट । ईजांचक्रे ।

ऋजि गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु । जवुं-स्थानरुप थवुं-पेदाकरवुं श्वासोश्वास-लेवो ॥

क्रियारत्नसमुच्चये तु ऋजि गतिस्थानार्जनोर्जनेषु, ऊर्जनं प्राणनम् ।

अर्जते । आर्जिष्ट । आनृजे ।

ऋजुङ् भृजैङ् भर्जने । भुंजवुं

ऋञ्जते । आर्ञ्जिष्ट । ऋञ्जांचक्रे । २

भर्जते । अभर्जिष्ट । बभृजे ।

---

भ्राजि दीप्तौ, चळकवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | भ्राजते | भ्राजेते | भ्राजन्ते |
| | भ्राजसे | भ्राजेथे | भ्राजध्वे |
| | भ्राजे | भ्राजावहे | भ्राजामहे |
| स० | भ्राजेत | भ्राजेयाताम् | भ्राजेरन् |
| | भ्राजेथाः | भ्राजेयाथाम् | भ्राजेध्वम् |

आजेय आजेवहि आजेमहि
प० आजताम् आजेताम् आजन्ताम्
आजस्व आजेथाम् आजध्वम्
आजै आजावहै आजामहै
ह्य० अभ्राजत अभ्राजेताम् अभ्राजन्त
अभ्राजथाः अभ्राजेथाम् अभ्राजध्वम्
अभ्राजे अभ्राजावहि अभ्राजामहि
अ० अभ्राजिष्ट अभ्राजिषाताम् अभ्राजिषत
अभ्राजिष्ठाः अभ्राजिषाथाम् अभ्राजिड्ढ्वम्-ध्वम्
अभ्राजिषि अभ्राजिष्वहि अभ्राजिष्महि
प० बभ्राजे बभ्राजाते बभ्राजिरे
बभ्राजिषे बभ्राजाथे बभ्राजिध्वे
बभ्राजे बभ्राजिवहे बभ्राजिमहे
आ० भ्राजिषीष्ट भ्राजिषीयास्ताम् भ्राजिषीरन्
भ्राजिषीष्ठाः भ्राजिषीयास्थाम् भ्राजिषीध्वम्
भ्राजिषीय भ्राजिषीवहि भ्राजिषीमहि
श्व० भ्राजिता भ्राजितारौ भ्राजितारः
भ्राजितासे भ्राजितासाथे भ्राजिताध्वे
भ्राजिताहे भ्राजितास्वहे भ्राजितास्महे
भ० भ्राजिष्यते भ्राजिष्येते भ्राजिष्यन्ते
भ्राजिष्यसे भ्राजिष्येथे भ्राजिष्यध्वे
भ्राजिष्ये भ्राजिष्यावहे भ्राजिष्यामहे
क्रि० अभ्राजिष्यत अभ्राजिष्येताम् अभ्राजिष्यन्त
अभ्राजिष्यथाः अभ्राजिष्येथाम् अभ्राजिष्यध्वम्
अभ्राजिष्ये अभ्राजिष्यावहि अभ्राजिष्यामहि

---

॥ तिजि-क्षमानिशानयोः ॥

॥ सहनकरवु: धारवालुंकरवु ॥

तत्र क्षमायाम्—

व० तितिक्षते तितिक्षेते तितिक्षन्ते
तितिक्षसे तितिक्षेथे तितिक्षध्वे
तितिक्षे तितिक्षावहे तितिक्षामहे
स० तितिक्षेत तितिक्षेयाताम् तितिक्षेरन्
तितिक्षेथाः तितिक्षेयाथाम् तितिक्षेध्वम्
तितिक्षेय तितिक्षेवहि तितिक्षेमहि
प० तितिक्षताम् तितिक्षेताम् तितिक्षन्ताम्
तितिक्षस्व तितिक्षेथाम् तितिक्षध्वम्
तितिक्षै तितिक्षावहै तितिक्षामहै
ह्य० अतितिक्षत अतितिक्षेताम् अतितिक्षन्त
अतितिक्षथाः अतितिक्षेथाम् अतितिक्षध्वम्
अतितिक्षे अतितिक्षावहि अतितिक्षामहि
अतितिक्षिष्ट अतितिक्षिषाताम् अतितिक्षिषत
अतितिक्षिष्ठाः अतितिक्षिषाथाम् अतितिक्षिड्ढ्वम्-ध्वम्
अतितिक्षिषि अतितिक्षिष्वहि अतितिक्षिष्महि
प० तितिक्षांचक्रे तितिक्षांचक्राते तितिक्षांचक्रिरे
तितिक्षांचकृषे तितिक्षांचक्राथे तितिक्षांचकृढ्वे
तितिक्षांचक्रे तितिक्षांचकृवहे तितिक्षांचकृमहे
तितिक्षाम्बभूव । तितिक्षामास ।
तितिक्षामासतुः । तितिक्षामासुः ।
तितिक्षिषीष्ट तितिक्षिषीयास्ताम् तितिक्षिषीरन्
तितिक्षिषीष्ठाः तितिक्षिषीयास्थाम् तितिक्षिषीध्वम्
तितिक्षिषीय तितिक्षिषीवहि तितिक्षिषीमहि
श्व० तितिक्षिता तितिक्षितारौ तितिक्षितारः
तितिक्षितासे तितिक्षितासाथे तितिक्षिताध्वे
तितिक्षिताहे तितिक्षितास्वहे तितिक्षितास्महे
तितिक्षिष्यते तितिक्षिष्येते तितिक्षिष्यन्ते
तितिक्षिष्यसे तितिक्षिष्येथे तितिक्षिष्यध्वे
तितिक्षिष्ये तितिक्षिष्यावहे तितिक्षिष्यामहे
अतितिक्षिष्यत अतितिक्षिष्येताम्—,,ष्यन्त
अतितिक्षिष्यथाः अतितिक्षिष्येथाम्—,,ष्यध्वम्
अतितिक्षिष्ये अतितिक्षिष्यावहि—,,ष्यामहि

---

मतान्तरे तेजते इत्याद्यपि ।

निशाने तु तेजयतीत्यादि ।

घट्ट चलने । चालवुं ।

घट्टते । अघट्टिष्ट । जघट्टे ।
स्फुटि विकसने । खीलवुं ।
स्फोटते । अस्फोटिष्ट । पुस्फुटे ।
चेष्टि चेष्टायाम । चेष्टाकरवी ।
चेष्टते । अचेष्टिष्ट । चिचेष्टे ।
गोष्टि लोष्टि सङ्घाते । जथा रुप थवुं ।
गोष्टते । अगोष्टिष्ट । जुगोष्टे ।
लोष्टते । अलोष्टिष्ट । लुलोष्टे ।
वेष्टि वेष्टने । गुंथवुं । लोटवुं । कमकरीनाखवुं
वेष्टते । अवेष्टिष्ट । विवेष्टे ।
अट्टि हिंसातिक्रमयोः । हिंसाकरवी उलङ्घन-
करवुं ।
अट्टते । आट्टिष्ट । आनट्टे ।
एठि हेठि विबाधायाम । पीडाकरवी ।
एठते । ऐठिष्ट । एठांचके ३ ।
हेठते । अहेठिष्ट । जिहेठे ।
मठुङ् कठुङ् शोके । शोक करवो ।
मण्ठते । अमण्ठिष्ट । ममण्ठे
कण्ठते । अकण्ठिष्ट । चकण्ठे ।
मुठुङ् पलायने । नाशी जवुं ।
मुण्ठते । अमुण्ठिष्ट । मुमुण्ठे ।
वठुङ् एकचर्यायाम । वंठीजवुं एकलाजवुं ।
वण्ठते । अवण्ठिष्ट । ववण्ठे ।
अठुङ् पठुङ् गतौ । जवुं ।
अण्ठते । आण्ठिष्ट । आनण्ठे ।
पण्डते । अपण्डिष्ट । पपण्डे ।
हुडुङ् । पिडुङ् सङ्घाते । भेगामळीजवुं ।
हुण्डते । अहुण्डिष्ट । जुहुण्डे ।
पिण्डते । अपिण्डिष्ट । पिपिण्डे ।
शडुङ् रुजायां च । रोगीथवुं ।
शण्डते । अशण्डिष्ट । शशण्डे ।
तडुङ् ताडने । मारवुं ।
तण्डते । अतण्डिष्ट । ततण्डे ।
कडुङ् मदे । मदकरवो ।
कण्डते । अकण्डिष्ट । चकण्डे ।

खडुङ् मन्थे । मन्थन करवुं ।
खण्डते । अखण्डिष्ट । चखण्डे
खुडुङ् गतिवैकल्ये । लथडीयाखाताजवुं ।
खुण्डते । अखुण्डिष्ट । चुखुण्डे ।
कुडुङ् दाहे । बाळवुं ।
कुण्डते । अकुण्डिष्ट । चुकुण्डे ।
वडुङ् मडुङ् वेष्टने । वींटवुं ।
वण्डते । अवण्डिष्ट । ववण्डे ।
मण्डते । अमण्डिष्ट । ममण्डे ।
भडुङ् परिभाषणे । वातचीतकरवी ।
भण्डते । अभण्डिष्ट । बभण्डे ।
मुडुङ् मज्जने । साफकरवुं ।
मुण्डते । अमुण्डिष्ट । मुमुण्डे ।
तुडुङ् तोडने । हिंसाकरवी ।
तुण्डते । अतुण्डिष्ट । तुतुण्डे ।
भुडुङ् वरणे । अंगिकारकरवुं ।
भुण्डते । अभुण्डिष्ट । बुभुण्डे ।
चडुङ् कोपे । कोपकरवो ।
चण्डते । अचण्डिष्ट । चचण्डे ।
द्राडृङ् ध्राडृङ् विशरणे । चीरराइजवुं
द्राडते । अद्राडिष्ट । दद्राडे ।
ध्राडते । अध्राडिष्ट । दध्राडे ।
शाडृङ् श्लाघायाम् । वखाणवुं ।
शाडते । अशाडिष्ट । शशाडे ।
वाडृङ् आप्लाव्ये । पाणीमां डुबकीमारीने न्हावुं
वाडते । अवाडिष्ट । ववाडे ।
हेडृङ् होडृङ् अनादरे । अनादरकरवो
हेडते । अहेडिष्ट । जिहेडे ।
होडते । अहोडिष्ट । जुहोडे ।
हिडुङ् गतौ । जवुं ।
हिण्डते । अहिण्डिष्ट । जिहिण्डे ।
घिणुङ् घुणुङ् घृणुङ् ग्रहणे ।
घिण्णते । अघिण्णिष्ट । जिघिण्णे
घुण्णते । अघुण्णिष्ट । जुघुण्णे

घृणते । अघृणिष्ट । जघृणे ।
घुणि घूर्णि भ्रमणे । ।
घोणते अघोणिष्ट । जुघुणे ।
घूर्णते । अघूर्णिष्ट । जुघूर्णे ।

---

॥ पणि-व्यवहारस्तुत्योः, ॥

॥ वेपारकरवो वखाणवुं ॥

व० पणायति पणायतः पणायन्ति
पणायसि पणायथः पणायथ
पणायामि पणायावः पणायामः

स० पणायेत पणायेताम् पणायेयुः
पणायेः पणायेतम् पणायेत
पणायेयम् पणायेव पणायेम

प० पणायतु पणायतात् पणायताम् पणायन्तु
पणाय ,, पणायतम् पणायत
पणायानि पणायाव पणायाम

ह्य० अपणायत् अपणायताम् अपणायन्
अपणायः अपणायतम् अपणायत
अपणायम् अपणायाव अपणायाम

अ० अपणायीत् अपणायिष्टाम् अपणायिषुः
अपणायीः अपणायिष्टम् अपणायिष्ट
अपणायिषम् अपणायिष्व अपणायिष्म

अपणिष्ट अपणिषाताम् अपणिषत
अपणिष्ठाः अपणिषाथाम् अपणिड्ढ्-
वम्-ध्वम्
अपणिषि अपणिष्वहि अपणिष्महि

प०पणायाञ्चकार पणायाञ्चक्रतुः पणायाञ्चक्रुः
पणायाञ्चकर्थ पणायाञ्चक्रथुः पणायाञ्चक्र
पणायाञ्चकार-चकर पणायाञ्चकृव पणायाञ्चकृम

पणायाम्बभूव । पणायामास

पेणे पेणाते पेणिरे
पेणिषे पेणाथे पेणिध्वे
पेणे पेणिवहे पेणिमहे

आ० पणाय्यात् पणाय्यास्ताम् पणाय्यासुः
पणाय्याः पणाय्यास्तम् पणाय्यास्त
पणाय्यासम् पणाय्यास्व पणाय्यास्म

पणिषीष्ट पणिषीयास्ताम् पणिषीरन्
पणिषीष्ठाः पणिषीयास्तम् पणिषीध्वम्
पणिषीय पणिषीवहि पणिषीमहि

श्व० पणायिता पणायितारौ पणायितारः
पणायितासि पणायितास्थः पणायितास्थ
पणायितास्मि पणायितास्वः पणायितास्मः

पणिता पणितारौ पणितारः
पणितासे पणितासाथे पणिताध्वे
पणिताहे पणितास्वहे पणितास्महे

भ० पणायिष्यति पणायिष्यतः पणायिष्यन्ति
पणायिष्यसि पणायिष्यथः पणायिष्यथ
पणायिष्यामि पणायिष्यावःपणायिष्यामः

पणिष्यते पणिष्येते पणिष्यन्ते
पणिष्यसे पणिष्येथे पणिष्यध्वे
पणिष्ये पणिष्यावहे पणिष्यामहे

क्रि०अपणायिष्यत् अपणायिष्यताम् अपणायिष्यन्
अपणायिष्यः अपणायिष्यतम् अपणायिष्यत
अपणायिष्यम् अपणायिष्याव अपणायिष्याम

अपणिष्यत अपणिष्येताम् अपणिष्यन्त
अपणिष्यथाः अपणिष्येथाम् अपणिष्यध्वम्
अपणिष्ये अपणिष्यावहि अपणिष्यामहि

---

॥ यतैङ् प्रयत्ने ॥ प्रयत्न करवो ॥

व० यतते यतेते यतन्ते
यतसे यतेथे यतध्वे
यते यतावहे यतामहे

स० यतेत यतेयाताम् यतेरन्
यतेथाः यतेयाथाम् यतेध्वम्
यतेय यतेवहि यतेमहि

प० यतताम् यतेताम् यतन्ताम्
यतस्व यतेथाम् यतध्वम्
यतै यतावहै यतामहै

ह्य० अयतत अयतेताम् अयतन्त
अयतथाः अयतेथाम् अयतध्वम्
अयते अयतावहि अयतामहि

अ० अयतिष्ट अयतिषाताम् अयतिषत
अयतिष्ठाः अयतिषाथाम् अयतिड्ढ्वम्-ध्वम्
अयतिषि अयतिष्वहि अयतिष्महि

प० येते येताते येतिरे
येतिषे येताथे येतिध्वे
येते येतिवहे येतिमहे

आ० यतिषीष्ट यतिषीयास्ताम् यतिषीरन्
यतिषीष्ठाः यतिषीयास्थाम् यतिषीध्वम्
यतिषीय यतिषीवहि यतिषीमहि

श्व० यतिता यतितारौ यतितारः
यतितासे यतितासाथे यतिताध्वे
यतिताहे यतितास्वहे यतितास्महे

भ० यतिष्यते यतिष्येते यतिष्यन्ते
यतिष्यसे यतिष्येथे यतिष्यध्वे
यतिष्ये यतिष्यावहे यतिष्यामहे

क्रि० अयतिष्यत अयतिष्येताम् अयतिष्यन्त
अयतिष्यथाः अयतिष्येथाम् अयतिष्यध्वम्
अयतिष्ये अयतिष्यावहि अयतिष्यामहि

युतृङ् जुतृङ् भासने । प्रकाशीतकरवुं ।
योतते । अयोतिष्ट । युयुते ।
जोतते । अजोतिष्ट । जुजुते ।

विथृङ् वेथृङ् याचने । मागवुं ।
वेथते । अवेथिष्ट । विविथे ।
वेथते । अवेथिष्ट । विवेथे ।

---

॥ नाथृङ् उपतापैश्वर्याशीःषु च ॥
दुःख लागवुं ठकुराइ भोगववी आशीर्वाद देवो
॥ तत्राशिषि ॥

व० नाथते नाथेते नाथन्ते
नाथसे नाथेथे नाथध्वे
नाथे नाथावहे नाथामहे

स० नाथेत नाथेयाताम् नाथेरन्
नाथेथाः नाथेयाथाम् नाथेध्वम्
नाथेय नाथेवहि नाथेमहि

प० नाथताम् नाथेताम् नाथन्ताम्
नाथस्व नाथेथाम् नाथध्वम्
नाथै नाथावहै नाथामहै

ह्य० अनाथत अनाथेताम् अनाथन्त
अनाथथाः अनाथेथाम् अनाथध्वम्
अनाथे अनाथावहि अनाथामहि

अ० अनाथिष्ट अनाथिषाताम् अनाथिषत
अनाथिष्ठाः अनाथिषाथाम् अनाथिध्वम्-ड्ढ्वम्
अनाथिषि अनाथिष्वहि अनाथिष्महि

प० ननाथे ननाथाते ननाथिरे
ननाथिषे ननाथाथे ननाथिध्वे
ननाथे ननाथिवहे ननाथिमहे

आ० नाथिषीष्ट नाथिषीयास्ताम् नाथिषीरन्
नाथिषीष्ठाः नाथिषीयास्थाम् नाथिषीध्वम्
नाथिषीय नाथिषीवहि नाथिषीमहि

श्व० नाथिता नाथितारौ नाथितारः
नाथितासे नाथितासाथे नाथिताध्वे
नाथिताहे नाथितास्वहे नाथितास्महे

भ० नाथिष्यते नाथिष्येते नाथिष्यन्ते
नाथिष्यसे नाथिष्येथे नाथिष्यध्वे
नाथिष्ये नाथिष्यावहे नाथिष्यामहे

क्रि० अनाथिष्यत अनाथिष्येताम् अनाथिष्यन्त
अनाथिष्यथाः अनाथिष्येथाम् अनाथिष्यध्वम्
अनाथिष्ये अनाथिष्यावहि अनाथिष्यामहि

॥ अन्यत्राऽयं परस्मैपदी नाथति इत्यादि ।

श्रथुङ् शैथिल्ये । ढीलाथवुं ।
श्रन्थते । अश्रन्थिष्ट । शश्रन्थ ।

ग्रथुङ् कौटिल्ये । वांकवुं इन्द्रजाळ करवी ।
ग्रन्थते । अग्रन्थिष्ट । जग्रन्थे ।

कत्थि श्लाघायाम् । वखाणवुं ।

कत्थते । अकत्थिष्ट । चकत्थे ।

स्विदुङ् श्वैत्ये । धोळाकरवुं-धोळाथवुं ।
स्विन्दते । अस्विन्दिष्ट । सिस्विन्दे ।

वदुङ्-स्तुत्यभिवन्दनयोः वखाणवुं पगेलागवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | वन्दते | वन्देते | वन्दन्ते |
| | वन्दसे | वन्देथे | वन्दध्वे |
| | वन्दे | वन्दावहे | वन्दामहे |
| स० | वन्देत | वन्देयाताम् | वन्देरन् |
| | वन्देथाः | वन्देयाथाम् | वन्देध्वम् |
| | वन्देय | वन्देवहि | वन्देमहि |
| प० | वन्दताम् | वन्देताम् | वन्दन्ताम् |
| | वन्दस्व | वन्देथाम् | वन्दध्वम् |
| | वन्दै | वन्दावहै | वन्दामहै |
| ह्य० | अवन्दत | अवन्देताम् | अवन्दन्त |
| | अवन्दथाः | अवन्देथाम् | अवन्दध्वम् |
| | अवन्दे | अवन्दावहि | अवन्दामहि |
| अ० | अवन्दिष्ट | अवन्दिषाताम् | अवन्दिषत |
| | अवन्दिष्ठाः | अवन्दिषाथाम् | अवन्दिढ्वम् |
| | अवन्दिषि | अवन्दिष्वहि | अवन्दिष्महि |
| प० | ववन्दे | ववन्दाते | ववन्दिरे |
| | ववन्दिषे | ववन्दाथे | ववन्दिध्वे |
| | ववन्दे | ववन्दिवहे | ववन्दिमहे |
| आ० | वन्दिषीष्ट | वन्दिषीयास्ताम् | वन्दिषीरन् |
| | वन्दिषीष्ठाः | वन्दिषीयास्थाम् | वन्दिषीध्वम् |
| | वन्दिषीय | वन्दिषीवहि | वन्दिषीमहि |
| श्व० | वन्दिता | वन्दितारौ | वन्दितारः |
| | वन्दितासे | वन्दितासाथे | वन्दिताध्वे |
| | वन्दिताहे | वन्दितास्वहे | वन्दितास्महे |
| भ० | वन्दिष्यते | वन्दिष्येते | वन्दिष्यन्ते |
| | वन्दिष्यसे | वन्दिष्येथे | वन्दिष्यध्वे |
| | वन्दिष्ये | वन्दिष्यावहे | वन्दिष्यामहे |
| क्रि० | अवन्दिष्यत | अवन्दिष्येताम् | अवन्दिष्यन्त |
| | अवन्दिष्यथाः | अवन्दिष्येथाम् | अवन्दिष्यध्वम् |
| | अवन्दिष्ये | अवन्दिष्यावहि | अवन्दिष्यामहि |

भदुङ् सुखकल्याणयोः । कल्याण कारीथवुं-
॥ सुखी थवुं ॥
भन्दते । अभन्दिष्ट । बभन्दे ।

मदुङ् स्तुतिमोदमदस्वप्नगतिषु । वखाणवुं
हरखावुं अभिमान करवो ॥
मन्दते । अमन्दिष्ट । ममन्दे ।
उंघवुं आळस करवो जवुं ।

स्पदुङ् किञ्चिच्चलने ।
स्पन्दते । अस्पन्दिष्ट । पस्पन्दे ।

क्लिदुङ् परिदेवने । शोक करवो ।
क्लिन्दते । अक्लिन्दिष्ट । चिक्लिन्दे ।

मुदि हर्षे । खुश थवुं ।
मोदते । अमोदिष्ट । मुमुदे ।

ददि दाने । आपवुं ।
ददते । अददिष्ट ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | ददde | ददाते | ददिरे |
| | ददिषे | ददाथे | ददिध्वे |
| | ददे | ददिवहे | ददिमहे |

हदि पुरीषोत्सर्गे । जंगल जवुं ।
हदते । हदेत । हदताम् । अहदत

| | | | |
|---|---|---|---|
| अ० | अहत्त | अहत्साताम् | अहत्सत |
| | अहत्थाः | अहत्साथाम् | अहद्ध्वम् |
| | | | ध्वम् |
| | अहत्सि | अहत्स्वहि | अहत्स्महि |
| प० | जहदे | जहदाते | जहदिरे |
| | जहदिषे | जहदाथे | जहदिध्वे |
| | जहदे | जहदिवहे | जहदिमहे |

हत्सीष्ट । हत्ता । हत्स्यते ।
अहत्स्यत ।

ष्वदि स्वर्दि स्वादि आस्वादने ।
स्वदते । अस्वदिष्ट । सस्वदे ।
स्वर्दते । अस्वर्दिष्ट । सस्वर्दे ।
स्वादते । अस्वादिष्ट । सस्वादे ।

उर्दि मानक्रीडयोश्च । क्रीडा करवी मापवुं ।

उर्दते । और्दिष्ट । ऊर्दाञ्चक्रे ।
ऊर्दामास । ऊर्दाम्बभूव ।

॥ कुर्दि गुर्दि गुदि । क्रीडायाम् ॥ रमवुं ।
कूर्दते । अकूर्दिष्ट । चुकूर्दे ।
गूर्दते । अगूर्दिष्ट । जुगूर्दे ।
गोदते । अगोदिष्ट । जुगुदे ।

॥ षूदि क्षरणे । शुं कवु, । वारवुं, ।
। मारी नाखवुं, ।
सूदते । असूदिष्ट । सुषूदे ।

॥ ह्रादि-शब्दे ॥ शब्द करवो. ।
ह्रादते । अह्रादिष्ट । जह्रादे ।

॥ ह्लादैङ्-सुखे च ॥ सुखी थवुं ।
। शब्द करवो ।
ह्लादते । अह्लादिष्ट । जह्लादे ।

। पर्दि कुत्सिते शब्दे । पादवुं ।
पर्दते । अपर्दिष्ट । पपर्दे ।

॥ स्कुदुङ्-आप्रवणे. ॥ ठेकता जवुं ।
। चढाइ करवी ।
स्कुन्दते । अस्कुन्दिष्ट । चुस्कुन्दे ।

॥ एधि वृद्धौ ॥ वधवुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | एधते | एधेते | एधन्ते |
| | एधसे | एधेथे | एधध्वे |
| | एधे | एधावहे | एधामहे |
| स० | एधेत | एधेयाताम् | एधेरन् |
| | एधेथाः | एधेयाथाम् | एधेध्वम् |
| | एधेय | एधेवहि | एधेमहि |
| प० | एधताम् | एधेताम् | एधन्ताम् |
| | एधस्व | एधेथाम् | एधध्वम् |
| | एधै | एधावहै | एधामहै |
| ह्य० | ऐधत | ऐधेताम् | ऐधन्त |
| | ऐधथाः | ऐधेथाम् | ऐधध्वम् |
| | ऐधे | ऐधावहि | ऐधामहि |
| अ० | ऐधिष्ट | ऐधिषाताम् | ऐधिषत |
| | ऐधिष्ठाः | ऐधिषाथाम् | ऐधिढ्ढ्वम्-ध्वम् |
| | ऐधिषि | ऐधिष्वहि | ऐधिष्महि |
| प० | एधाञ्चक्रे | एधाञ्चक्राते | एधाञ्चक्रिरे |
| | एधाञ्चकृषे | एधाञ्चक्राथे | एधाञ्चकृढ्वे |
| | एधाञ्चक्रे | एधाञ्चकृवहे | एधाञ्चकृमहे |
| | एधामास । | एधाम्बभूव । | |
| आ० | एधिषीष्ट | एधिषीयास्ताम् | एधिषीरन् |
| | एधिषीष्ठाः | एधिषीयास्थाम् | एधिषीध्वम् |
| | एधिषीय | एधिषीवहि | एधिषीमहि |
| श्व० | एधिता | एधितारौ | एधितारः |
| | एधितासे | एधितासाथे | एधिताध्वे |
| | एधिताहे | एधितास्वहे | एधितास्महे |
| भ० | एधिष्यते | एधिष्येते | एधिष्यन्ते |
| | एधिष्यसे | एधिष्येथे | एधिष्यध्वे |
| | एधिष्ये | एधिष्यावहे | एधिष्यामहे |
| क्रि० | ऐधिष्यत | ऐधिष्येताम् | ऐधिष्यन्त |
| | ऐधिष्यथाः | ऐधिष्येथाम् | ऐधिष्यध्वम् |
| | ऐधिष्ये | ऐधिष्यावहि | ऐधिष्यामहि |

॥ स्पर्द्धि संघर्षे । हरिफाइ करवी ।
स्पर्द्धते । अस्पर्द्धिष्ट । पस्पर्द्धे ।

गाधृङ् प्रतिष्ठालिप्साग्रन्थेषु । स्थान रूप थवु. मेळववानी इच्छा करवी. गुंथवु
गाधते । अगाधिष्ट । जगाधे ।

बाधृङ्-रोटने । खुंचवु । पीडवु ।
विघ्न करवुं ।
बाधते । अबाधिष्ट । बबाधे ।

दधि-धारणे । धारण करवुं ।
दधते । दधेत । दधताम् ।
अदधत । अदधिष्ट । देधे ।
दधिषीष्ट । दधिता । दधिष्यते ।
अदधिष्यत ।

॥ बधि-बन्धने ॥ बांधवुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | बीभत्सते | बीभत्सेते | बीभत्सन्ते |
| | बीभत्ससे | बीभत्सेथे | बीभत्सध्वे |
| | बीभत्से | बीभत्सावहे | बीभत्सामहे |

स० बीभत्सेत बीभत्सेयाताम् बीभत्सेरन्
बीभत्सेथाः बीभत्सेयाथाम् बीभत्सेध्वम्
बीभत्सेय बीभत्सेवहि बीभत्सेमहि

प० बीभत्सताम् बीभत्सेताम् बीभत्सन्ताम्
बीभत्सस्व बीभत्सेथाम् बीभत्सध्वम्
बीभत्सै बीभत्सावहै बीभत्सामहै

ह्य० अबीभत्सत अबीभत्सेताम् अबीभत्सन्त
अबीभत्सथाः अबीभत्सेथाम् अबीभत्सध्वम्
अबीभत्से अबीभत्सावहि अबीभत्सामहि

अ० अबीभत्सिष्ट अबीभत्सिषाताम्–त्सिषत
अबीभत्सिष्ठाः अबीभत्सिषाथाम् अबीभत्सिध्वम्–ड्ढ्वम्
अबीभत्सिषि अबीभत्सिष्वहि–त्सिष्महि

प० बीभत्साञ्चक्रे बीभत्साञ्चक्राते बीभत्साञ्चक्रिरे
बीभत्साञ्चकृषे बीभत्साञ्चक्राथे बीभत्साञ्चकृढ्वे
बीभत्साञ्चक्रे बीभत्साञ्चकृवहे–त्साञ्चकृमहे
बीभत्साम्बभूव । बीभत्सामास ।

आ० बीभत्सिषीष्ट बीभत्सिषीयास्ताम्–षीरन्
बीभत्सिषीष्ठाः बीभत्सिषीयास्थाम्–षीध्वम्
बीभत्सिषीय बीभत्सिषीवहि त्सिषीमहि

श्व० बीभत्सिता बीभत्सितारौ बीभत्सितारः
बीभत्सितासे बीभत्सितासाथे बीभत्सिताध्वे
बीभत्सिताहे बीभत्सितास्वहे–त्सितास्महे

भ० बीभत्सिष्यते बीभत्सिष्येते बीभत्सिष्यन्ते
बीभत्सिष्यसे बीभत्सिष्येथे बीभत्सिष्यध्वे
बीभत्सिष्ये बीभत्सिष्यावहे बीभत्सिष्यामहे

क्रि० अबीभत्सिष्यत अबीभत्सिष्येताम् अबीभत्सिष्यन्त
अबीभत्सिष्यथाः अबीभत्सिष्येथाम्–ष्यध्वम्
अबीभत्सिष्ये अबीभत्सिष्यावहि–त्सिष्यामहि

अर्थान्तरे तु बाधयति इत्यादि, बधते इत्याद्यपि

नाधृङ् नाथृङ्वत् दुःख लाभवु ।
नाधते । अनाधिष्ट । ननाधे ।
पनि–स्तुतौ ॥

व० पनायति पनायतः पनायन्ति
पनायसि पनायथः पनायथ
पनायामि पनायावः पनायामः

स० पनायेत् पनायेताम् पनायेयुः
पनायेः पनायेतम् पनायेत
पनायेयम् पनायेव पनायेम

प० पनायतु–तात् पनायताम् पनायन्तु
पनाय „ पनायतम् पनायत
पनायानि पनायाव पनायाम

ह्य० अपनायत् अपनायताम् अपनायन्
अपनायः अपनायतम् अपनायत
अपनायम् अपनायाव अपनायाम

अ० अपनायीत् अपनायिष्टाम् अपनायिषुः
अपनायीः अपनायिष्टम् अपनायिष्ट
अपनायिषम् अपनायिष्व अपनायिष्म

अपनिष्ट अपनिषाताम् अपनिषत
अपनिष्ठाः अपनिषाथाम् अपनिध्वम्
ड्ढ्वम्
अपनिषि अपनिष्वहि अपनिष्महि

प० पनायाञ्चकार पनायाञ्चक्रतुः पनायाञ्चक्रुः
पनायाञ्चकर्थ पनायाञ्चक्रथुः पनायाञ्चक्र
पनायाञ्चकार–चकर पनायाञ्चकृव पनायाञ्चकृम

पेने पेनाते पेनिरे
पेनिषे पेनाथे पेनिध्वे
पेने पेनिवहे पेनिमहे

आ० पनाय्यात् पनाय्यास्ताम् पनाय्यासुः
पनाय्याः पनाय्यास्तम् पनाय्यास्त
पनाय्यासम् पनाय्यास्व पनाय्यास्म

पनिषीष्ट पनिषीयास्ताम् पनिषीरन्
पनिषीष्ठाः पनिषीयास्थाम् पनिषीध्वम्
पनिषीय पनिषीवहि पनिषीमहि

श्व० पनायिता पनायितारौ पनायितारः
पनायितासि पनायितास्थः पनायितास्थ
पनायितास्मि पनायितास्वः पनायितास्मः

पनिता पनितारौ पनितार:
पनितासे पनितासाथे पनिताध्वे
पनिताहे पनितास्वहे पनितास्महे
भ० पनायिष्यति पनायिष्यत: पनायिष्यन्ति
पनायिष्यसि पनायिष्यथः पनायिष्यथ
पनायिष्यामि पनायिष्यावः पनायिष्यामः
पनिष्यते पनिष्येते पनिष्यन्ते
पनिष्यसे पनिष्येथे पनिष्यध्वे
पनिष्ये पनिष्यावहे पनिष्यामहे
क्रि० अपनायिष्यत् अपनायिष्यताम्–यिष्यन्
अपनायिष्यः अपनायिष्यतम् अपनायिष्यत
अपनायिष्यम् अपनायिष्याव अपनायिष्याम
अपनिष्यत अपनिष्येताम् अपनिष्यन्त
अपनिष्यथाः अपनिष्येथाम् अपनिष्यध्वम्
अपनिष्ये अपनिष्यावहि अपनिष्यामहि

मानि—पूजायाम् ॥ पूजवुं ।
विचारे ।

व० मीमांसते मीमांसेते मीमांसन्ते
मीमांससे मीमांसेथे मीमांसध्वे
मीमांसे मीमांसावहे मीमांसामहे
स० मीमांसेत मीमांसेयाताम् मीमांसेरन्
मीमांसेथाः मीमांसेयाथाम् मीमांसेध्वम्
मीमांसेय मीमांसेवहि मीमांसेमहि
प० मीमांसताम् मीमांसेताम् मीमांसन्ताम्
मीमांसस्व मीमांसेथाम् मीमांसध्वम्
मीमांसै मीमांसावहै मीमांसामहै
ह्य० अमीमांसत अमीमांसेताम् अमीमांसन्त
अमीमांसथाः अमीमांसेथाम् अमीमांसध्वम्
अमीमांसे अमीमांसावहि अमीमांसामहि
अमीमांसिष्ट अमीमांसिषाताम् अमीमांसिषत
अमीमांसिष्ठाः अमीमांसिषाथाम् अमीमांसिध्वम् इढ्वम्
अमीमांसिषि अमीमांसिष्वहि अमीमांसिष्महि

प० मीमांसाञ्चक्रे मीमांसाञ्चक्राते मीमांसाञ्चक्रिरे
मीमांसाञ्चकृषे मीमांसाञ्चक्राथे मीमांसाञ्चकृढ्वे
मीमांसाञ्चक्रे मीमांसाञ्चकृवहे मीमांसाञ्चकृमहे
मीमांसामास । मीमांसाम्बभूव ।
आ० मीमांसिषीष्ट मीमांसिषीयास्थाम् मीमांसिषीरन्
मीमांसिषीष्ठाः मीमांसिषीयास्थाम् मीमांसिषीध्वम्
मीमांसिषीय मीमांसिषीवहि मीमांसिषीमहि
श्व० मीमांसिता मीमांसितारौ मीमांसितार:
मीमांसितासे मीमांसितासाथे मीमांसिताध्वे
मीमांसिताहे मीमांसितास्वहे मीमांसितास्महे
भ० मीमांसिष्यते मीमांसिष्येते मीमांसिष्यन्ते
मीमांसिष्यसे मीमांसिष्येथे मीमांसिष्यध्वे
मीमांसिष्ये मीमांसिष्यावहे मीमांसिष्यामहे
क्रि० अमीमांसिष्यत अमीमांसिष्येताम् अमीमांसिष्यन्त
अमीमांसिष्यथाः अमीमांसिष्येथाम् अमीमांसिष्यध्वम्
अमीमांसिष्ये अमीमांसिष्यावहि अमीमांसिष्यामहि

अर्थान्तरे तु मानयति इत्यादि
तिपृङ् ष्टिपृङ् ष्टेपृङ् क्षरणे–झरवुं, टपकवुं
तेपते । अतेपिष्ट । तितिपे ।
स्तेपते । अस्तेपिष्ट । तिष्टिपे ।
स्तेपते । अस्तेपिष्ट । तिष्टेपे ।
तेपृङ् कम्पने च । ध्रुजवुं
तेपते । अतेपिष्ट । तितेपे ।
टुवेपृङ् केपृङ् गेपृङ् कपुङ्–चलने । ध्रुजवुं
वेपते । अवेपिष्ट । विवेपे ।
केपते । अकेपिष्ट । चिकेपे ।
गेपते । अगेपिष्ट । जिगेपे ।

कम्पते । अकम्पिष्ट । चकम्पे ।

ग्लेपृङ् दैन्ये च । गरीबाइ करवी धुजवुं

ग्लेपते । अग्लेपिष्ट । जिग्लेपे ।

मेपृङ् रेपृङ् लेपृङ्–गतौ ॥ जवुं ।

मेपते । अमेपिष्ट । मिमेपे ।

रेपते । अरेपिष्ट । रिरेपे

लेपते । अलेपिष्ट । लिलेपे

त्रपौषि–लज्जायाम् ॥ शरमावुं ।

| | | |
|---|---|---|
| व० त्रपते | त्रपेते | त्रपन्ते |
| त्रपसे | त्रपेथे | त्रपध्वे |
| त्रपे | त्रपावहे | त्रपामहे |
| स० त्रपेत | त्रपेयाताम् | त्रपेरन् |
| त्रपेथाः | त्रपेयाथाम् | त्रपेध्वम् |
| त्रपेय | त्रपेवहि | त्रपेमहि |
| प० त्रपताम् | त्रपेताम् | त्रपन्ताम् |
| त्रपस्व | त्रपेथाम् | त्रपध्वम् |
| त्रपै | त्रपावहै | त्रपामहै |
| ह्य० अत्रपत | अत्रपेताम् | अत्रपन्त |
| अत्रपथाः | अत्रपेथाम् | अत्रपध्वम् |
| अत्रपे | अत्रपावहि | अत्रपामहि |
| अ० अत्रपिष्ट | अत्रपिषाताम् | अत्रपिषत |
| अत्रपिष्ठाः | अत्रपिषाथाम् | अत्रपिड्ढ्वम् |
| अत्रपिषि | अत्रपिष्वहि | अत्रपिष्महि |
| अत्रप्त | अत्रप्साताम् | अत्रप्सत |
| अत्रप्थाः | अत्रप्साथाम् | अत्रब्ध्वम् |
| अत्रप्सि | अत्रप्स्वहि | अत्रप्स्महि |
| प० त्रेपे | त्रेपाते | त्रेपिरे |
| त्रेप्से त्रेपिषे | त्रेपाथे | त्रेपिध्वे |
| त्रेपे | त्रेपिवहे | त्रेपिमहे |
| आ० त्रपिषीष्ट | त्रपिषीयास्ताम् | त्रपिषीरन् |
| त्रपिषीष्ठाः | त्रपिषीयास्थाम् | त्रपिषीध्वम् |
| त्रपिषीय | त्रपिषीवहि | त्रपिषीमहि |
| त्रप्सीष्ट | त्रप्सीयास्ताम् | त्रप्सीरन् |
| त्रप्सीष्ठाः | त्रप्सीयास्थाम् | त्रप्सीध्वम् |
| त्रप्सीय | त्रप्सीवहि | त्रप्सीमहि |
| श्व० त्रपिता | त्रपितारौ | त्रपितारः |
| त्रपितासे | त्रपितासाथे | त्रपिताध्वे |
| त्रपिताहे | त्रपितास्वहे | त्रपितास्महे |
| त्रप्ता | त्रप्तारौ | त्रप्तारः |
| त्रप्तासे | त्रप्तासाथे | त्रप्ताध्वे |
| त्रप्ताहे | त्रप्तास्वहे | त्रप्तास्महे |
| भ० त्रपिष्यते | त्रपिष्येते | त्रपिष्यन्ते |
| त्रपिष्यसे | त्रपिष्येथे | त्रपिष्यध्वे |
| त्रपिष्ये | त्रपिष्यावहे | त्रपिष्यामहे |
| त्रप्स्यते | त्रप्स्येते | त्रप्स्यन्ते |
| त्रप्स्यसे | त्रप्स्येथे | त्रप्स्यध्वे |
| त्रप्स्ये | त्रप्स्यावहे | त्रप्स्यामहे |
| क्रि० अत्रपिष्यत | अत्रपिष्येताम् | अत्रपिष्यन्त |
| अत्रपिष्यथाः | अत्रपिष्येथाम् | अत्रपिष्यध्वम् |
| अत्रपिष्ये | अत्रपिष्यावहि | अत्रपिष्यामहि |
| अत्रप्स्यत | अत्रप्स्येताम् | अत्रप्स्यन्त |
| अत्रप्स्यथाः | अत्रप्स्येथाम् | अत्रप्स्यध्वम् |
| अत्रप्स्ये | अत्रप्स्यावहि | अत्रप्स्यामहि |

गुपि गोपनकुत्सनयोः । छानुं राखवुं.
निंदवुं तत्र कुत्सनेऽर्थे
अर्थांतरे गोपयति ।

जुगुप्सते । जुगुप्सेत । जुगुप्सताम्

अजुगुप्सत । अजुगुप्सिष्ट ।

जुगुप्साञ्चक्रे । जुगुप्सामास ।

जुगुप्साम्बभूव जुगुप्सिषीष्ट ।

जुगुप्सिता । जुगुप्सिष्यते ।अजुगुप्सिष्यत

॥ अबुङ् रबुङ् शब्दे ॥ अवाज करवो ।

अम्बते । आम्बिष्ट । आनम्बे ।

रम्बते । अरम्बिष्ट । ररम्बे ।

॥ लबुङ् अवस्रंसने च । लटकवुं ।

शब्द करवो. ।

लम्बते । अलम्बिष्ट । ललम्बे ।

॥ कवृङ् वर्णे । वर्णन करवुं ।
कबते । अकबिष्ट । चकबे ।
॥ अयं वान्तोऽपि वृद्धोक्तत्वात् वान्तेषु ॥
प्रोक्त इति क्रियारत्नसमुच्चये ।
॥ क्लीबृङ् अधाष्टर्ये । नबळा थवुं,
नपुंसक थवुं,
क्लीबते । अक्लीबिष्ट । चिक्लीबे ।
॥ क्षीवृङ्-मदे ॥ मद करवो ॥
क्षीवते । अक्षीविष्ट । चिक्षीवे ।
शीभृङ् चीभृङ् शल्भि-कत्थने ॥ वखाणवुं
शीभते । अशीभिष्ट । शिशीभे ।
चीभते । अचीभिष्ट । चिचीभे ।
शल्भते । अशल्भिष्ट । शशल्भे ।
॥ वल्भि-भोजने । जमवुं ॥
वल्भते । अवल्भिष्ट । ववल्भे ।
॥ गल्भि-धाष्टर्ये । बहादूर थवुं
निर्भय थवुं
गल्भते । अगल्भिष्ट । जगल्भे ।

॥ रेभृङ् । अभुङ् । रभुङ् । लभुङ् ।
शब्दे । शब्द करवो ॥
रेभते । अरेभिष्ट । रिरेभे ।
अम्भते । आम्भिष्ट । आनम्भे ।
रम्भते । अरम्भिष्ट । ररम्भे ।
लम्भते । अलम्भिष्ट । ललम्भे ।
॥ ष्टभुङ् स्कभुङ् ष्टुभूङ्-स्तम्भे ।
स्थंभित थवुं ।
स्तम्भते । अस्तम्भिष्ट । तस्तम्भे ।
स्कम्भते । अस्कम्भिष्ट । चस्कम्भे ।
स्तोभते । अस्तोभिष्ट । तुष्टुभे ।
जभुङ् । जभैङ् । जृभुङ् । गात्रविनामे ।
बगासुं खावुं म्लान थवुं
जम्भते । अजम्भिष्ट । जजम्भे ।
जभते । अजभिष्ट । जेभे ।
जृम्भते । अजृम्भिष्ट । जजृम्भे ।

॥ रभि-राभस्ये कार्योद्यमे । शरु करवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | रभते | रभेते | रभन्ते |
| | रभसे | रभेथे | रभध्वे |
| | रभे | रभावहे | रभामहे |
| स० | रभेत | रभेयाताम् | रभेरन् |
| | रभेथाः | रभेयाथाम् | रभेध्वम् |
| | रभेय | रभेवहि | रभेमहि |
| प० | रभताम् | रभेताम् | रभन्ताम् |
| | रभस्व | रभेथाम् | रभध्वम् |
| | रभै | रभावहै | रभामहै |
| ह्य० | अरभत | अरभेताम् | अरभन्त |
| | अरभथाः | अरभेथाम् | अरभद्ध्वम्-ध्वम् |
| | अरभे | अरभावहि | अरभामहि |
| अ० | अरब्ध | अरप्साताम् | अरप्सत |
| | अरब्धाः | अरप्साथाम् | अरब्ध्वम् |
| | अरप्सि | अरप्स्वहि | अरप्स्महि |
| प० | रेभे | रेभाते | रेभिरे |
| | रेभिषे | रेभाथे | रेभिध्वे |
| | रेभे | रेभिवहे | रेभिमहे |
| आ० | रप्सीष्ट | रप्सीयास्ताम् | रप्सीरन् |
| | रप्सीष्ठाः | रप्सीयास्थाम् | रप्सीध्वम् |
| | रप्सीय | रप्सीवहि | रप्सीमहि |
| श्व० | रब्धा | रब्धारौ | रब्धारः |
| | रब्धासे | रब्धासाथे | रब्धाध्वे |
| | रब्धाहे | रब्धास्वहे | रब्धास्महे |
| भ० | रप्स्यते | रप्स्येते | रप्स्यन्ते |
| | रप्स्यसे | रप्स्येथे | रप्स्यध्वे |
| | रप्स्ये | रप्स्यावहे | रप्स्यामहे |
| क्रि० | अरप्स्यत | अरप्स्येताम् | अरप्स्यन्त |
| | अरप्स्यथाः | अरप्स्येथाम् | अरप्स्यध्वम् |
| | अरप्स्ये | अरप्स्यावहि | अरप्स्यामहि |

॥ डुलभिष्-प्राप्तौ ॥ मेळववुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | लभते | लभेते | लभन्ते |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | लभसे | लभेथे | लभध्वे |
| | लभे | लभावहे | लभामहे |
| स० | लभेत | लभेयाताम् | लभेरन् |
| | लभेथाः | लभेयाथाम् | लभेध्वम् |
| | लभेय | लभेवहि | लभेमहि |
| प० | लभताम् | लभेताम् | लभन्ताम् |
| | लभस्व | लभेथाम् | लभध्वम् |
| | लभै | लभावहै | लभामहै |
| ह्य० | अलभत | अलभेताम् | अलभन्त |
| | अलभथाः | अलभेथाम् | अलभध्वम् |
| | अलभे | अलभावहि | अलभामहि |
| अ० | अलब्ध | अलप्साताम् | अलप्सत |
| | अलब्धाः | अलप्साथाम् | अलब्ध्वम् |
| | अलप्सि | अलप्स्वहि | अलप्स्महि |
| प० | लेभे | लेभाते | लेभिरे |
| | लेभिषे | लेभाथे | लेभिध्वे |
| | लेभे | लेभिवहे | लेभिमहे |
| आ० | लप्सीष्ट | लप्सीयास्ताम् | लप्सीरन् |
| | लप्सीष्ठाः | लप्सीयास्थाम् | लप्सीध्वम् |
| | लप्सीय | लप्सीवहि | लप्सीमहि |
| श्व० | लब्धा | लब्धारौ | लब्धारः |
| | लब्धासे | लब्धासाथे | लब्धाध्वे |
| | लब्धाहे | लब्धास्वहे | लब्धास्महे |
| भ० | लप्स्यते | लप्स्येते | लप्स्यन्ते |
| | लप्स्यसे | लप्स्येथे | लप्स्यध्वे |
| | लप्स्ये | लप्स्यावहे | लप्स्यामहे |
| क्रि० | अलप्स्यत | अलप्स्येताम् | अलप्स्यन्त |
| | अलप्स्यथाः | अलप्स्येथाम् | अलप्स्यध्वम् |
| | अलप्स्ये | अलप्स्यावहि | अलप्स्यामहि |

॥ भामि–क्रोधे । क्रोध करवो ॥

भामते । अभामिष्ट । बभामे ।

॥ क्षमौषि–सहने, सहन करवुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | क्षमते | क्षमेते | क्षमन्ते |
| | क्षमसे | क्षमेथे | क्षमध्वे |
| | क्षमे | क्षमावहे | क्षमामहे |
| स० | क्षमेत | क्षमेयाताम् | क्षमेरन् |
| | क्षमेथाः | क्षमेयाथाम् | क्षमेध्वम् |
| | क्षमेय | क्षमेवहि | क्षमेमहि |
| प० | क्षमेत | क्षमेताम् | क्षमन्ताम् |
| | क्षमस्व | क्षमेथाम् | क्षमध्वम् |
| | क्षमै | क्षमावहै | क्षमामहै |
| ह्य० | अक्षमत | अक्षमेताम् | अक्षमन्त |
| | अक्षमथाः | अक्षमेथाम् | अक्षमध्वम् |
| | अक्षमे | अक्षमावहि | अक्षमामहि |
| अ० | अक्षमिष्ट | अक्षमिषाताम् | अक्षमिषत |
| | अक्षमिष्ठाः | अक्षमिषाथाम् | अक्षमिध्वम् ढ्वम् |
| | अक्षमिषि | अक्षमिष्वहि | अक्षमिष्महि |
| | अक्षंस्त | अक्षंसाताम् | अक्षं |
| | अक्षंस्थाः | अक्षंसाथाम् | अक्षंध्वम्-ढ्ध्वम् |
| | अक्षंसि | अक्षंस्वहि | अक्षंस्महि |
| प० | चक्षमे | चक्षमाते | चक्षमिरे |
| | चक्षमिषे चक्षंसे | चक्षमाथे | चक्षमिध्वे |
| | चक्षमे | चक्षमिवहे | चक्षमिमहे |

मतान्तरे चक्षमिषे इत्येव ।
मतांतरे चक्षन्ध्वे चक्षण्वहे ॥
चक्षण्महे इत्यपि ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | क्षमिषीष्ट | क्षमिषीयास्ताम् | क्षमिषीरन् |
| | क्षमिषीष्ठाः | क्षमिषीयास्थाम् | क्षमिषीध्वम् |
| | क्षमिषीय | क्षमिषीवहि | क्षमिषीमहि |
| | क्षंसीष्ट | क्षंसीयास्ताम् | क्षंसीरन् |
| | क्षंसीष्ठाः | क्षंसीयास्थाम् | क्षंसीध्वम् |
| | क्षंसीय | क्षंसीवहि | क्षंसीमहि |
| श्व० | क्षमिता | क्षमितारौ | क्षमितारः |
| | क्षमितासे | क्षमितासाथे | क्षमिताध्वे |
| | क्षमिताहे | क्षमितास्वहे | क्षमितास्महे |
| | क्षन्ता | क्षन्तारौ | क्षन्तारः |
| | क्षन्तासे | क्षन्तासाथे | क्षन्ताध्वे |

क्षन्ताहे क्षन्तास्वहे क्षन्तास्महे
भ० क्षमिष्यते क्षमिष्येते क्षमिष्यन्ते
क्षमिष्यसे क्षमिष्येथे क्षमिष्यध्वे
क्षमिष्ये क्षमिष्यावहे क्षमिष्यामहे
क्षंस्यते क्षंस्येते क्षंस्यन्ते
क्षंस्यसे क्षंस्येथे क्षंस्यध्वे
क्षंस्ये क्षंस्यावहे क्षंस्यामहे
क्रि० अक्षमिष्यत अक्षमिष्येताम् अक्षमिष्यन्त
अक्षमिष्यथाः अक्षमिष्येथाम् अक्षमिष्यध्वम्
अक्षमिष्ये अक्षमिष्यावहि अक्षमिष्यामहि
अक्षंस्यत अक्षंस्येताम् अक्षंस्यन्त
अक्षंस्यथाः अक्षंस्येथाम् अक्षंस्यध्वम्
अक्षंस्ये अक्षंस्यावहि अक्षंस्यामहि

॥ कमूङ्–कान्तौ ॥ कान्तिरिच्छा, इच्छवुं

व० कामयते कामयेते कामयन्ते
कामयसे कामयेथे कामयध्वे
कामये कामयावहे कामयामहे
स० कामयेत कामयेयाताम् कामयेरन्
कामयेथाः कामयेयाथाम् कामयेध्वम्
कामयेय कामयेवहि कामयेमहि
प० कामयताम् कामयेताम् कामयन्ताम्
कामयस्व कामयेथाम् कामयध्वम्
कामयै कामयावहै कामयामहै
ह्य० अकामयत अकामयेताम् अकामयन्त
अकामयथाः अकामयेथाम् अकामयध्वम्
अकामये अकामयावहि अकामयामहि
अ० अचकमत अचकमेताम् अचकमन्त
अचकमथाः अचकमेथाम् अचकमध्वम्
अचकमे अचकमावहि अचकमामहि
अ३ अचीकमत अचीकमेताम् अचीकमन्त
अचीकमथाः अचीकमेथाम् अचीकमध्वम्
अचीकमे अचीकमावहि अचीकमामहि
प० चकमे चकमाते चकमिरे
चकमिषे चकमाथे चकमिध्वे
चकमे चकमिवहे चकमिमहे
कामयाञ्चक्रे कामयाञ्चक्राते कामयाञ्चक्रिरे
कामयाञ्चकृषे कामयाञ्चक्राथे-ञ्चकृढ्वे
कामयाञ्चक्रे कामयाञ्चकृवहे कामयाञ्चकृमहे
कामयामास । कामयाम्बभूव
आ० कामयिषीष्ट कामयिषीयास्ताम् कामयिषीरन्
कामयिषीष्ठाः कामयिषीयास्थाम् कामयिषीढ्वम्-ध्वम्
कामयिषीय कामयिषीवहि कामयिषीमहि
कमिषीष्ट कमिषीयास्ताम् कमिषीरन्
कमिषीष्ठाः कमिषीयास्थाम् कमिषीध्वम्
कमिषीय कमिषीवहि कमिषीमहि
श्व० कमिता कमितारौ कमितारः
कमितासे कमितासाथे कमिताध्वे
कमिताहे कमितास्वहे कमितास्महे
कामयिता कामयितारौ कामयितारः
कामयितासे कामयितासाथे कामयिताध्वे
कामयिताहे कामयितास्वहे कामयितास्महे
भ० कमिष्यते कमिष्येते कमिष्यन्ते
कमिष्यसे कमिष्येथे कमिष्यध्वे
कमिष्ये कमिष्यावहे कमिष्यामहे
कामयिष्यते कामयिष्येते कामयिष्यन्ते
कामयिष्यसे कामयिष्येथे कामयिष्यध्वे
कामयिष्ये कामयिष्यावहे कामयिष्यामहे
अकमिष्यत अकमिष्येताम् अकमिष्यन्त
अकमिष्यथाः अकमिष्येथाम् अकमिष्यध्वम्
अकमिष्ये अकमिष्यावहि अकमिष्यामहि
अकामयिष्यत अकामयिष्येताम् अकामयिष्यन्त
अकामयिष्यथाः अकामयिष्येथाम्-मयिष्यध्वम्
अकामयिष्ये अकामयिष्यावहि अकामयिष्यामहि

अयि—गतौ. जवुं

व० अयते अयेते अयन्ते
अयसे अयेथे अयध्वे

अये अयावहे अयामहे
पलायते पलायेते पलायन्ते
पलायसे पलायेथे पलायध्वे
पलाये पलायावहे पलायामहे
प्लायते प्लायेते प्लायन्ते
प्लायसे प्लायेथे प्लायध्वे
प्लाये प्लायावहे प्लायामहे

स० अयेत अयेयाताम् अयेरन्
अयेथाः अयेयाथाम् अयेध्वम्
अयेय अयेवहि अयेमहि

प० अयताम् अयेताम् अयन्ताम्
अयस्व अयेथाम् अयध्वम्
अयै अयावहै अयामहै

ह्य० आयत आयेताम् आयन्त
आयथाः आयेथाम् आयध्वम्
आये आयावहि आयामहि

अ० आयिष्ट आयिषाताम् आयिषत
आयिष्ठाः आयिषाथाम् आयिढ्वम्
ध्वम्-ड्ढ्वम्
आयिषि आयिष्वहि आयिष्महि

प० अयाञ्चक्रे अयाञ्चक्राते अयाञ्चक्रिरे
अयाञ्चकृषे अयाञ्चक्राथे अयाञ्चकृढ्वे
अयाञ्चक्रे अयाञ्चकृवहे अयाञ्चकृमहे
अयामास । अयाम्बभूव

आ० अयिषीष्ट अयिषीयास्ताम् अयिषीरन्
अयिषीष्ठाः अयिषीयास्थाम्
अयिषीढ्वम्-ध्वम्
अयिषीय अयिषीवहि अयिषीमहि

श्व० अयिता अयितारौ अयितारः
अयितासे अयितासाथे अयिताध्वे
अयिताहे अयितास्वहे अयितास्महे

भ० अयिष्यते अयिष्येते अयिष्यन्ते
अयिष्यसे अयिष्येथे अयिष्यध्वे
अयिष्ये अयिष्यावहे अयिष्यामहे

क्रि० आयिष्यत आयिष्येताम् आयिष्यन्ताम्
आयिष्यथाः आयिष्येथाम् आयिष्यध्वम्
आयिष्ये आयिष्यावहि आयिष्यामहि

वयि पयि मयि नयि चयि रयि-गतौ ॥ जवुं
वयते । अवयिष्ट । ववये ।
पयते । अपयिष्ट । पेये ।
मयते । अमयिष्ट । मेये ।
नयते । अनयिष्ट । नेये ।
चयते । अचयिष्ट । चेये ।
रयते । अरयिष्ट । रेये ।

तयि-रक्षणे च ॥ रक्षण करवुं

व० तयते तयेते तयन्ते
तयसे तयेथे तयध्वे
तये तयावहे तयामहे

स० तयेत तयेयाताम् तयेरन्
तयेथाः तयेयाथाम् तयेध्वम्
तयेय तयेवहि तयेमहि

प० तयताम् तयेताम् तयन्ताम्
तयस्व तयेथाम् तयध्वम्
तयै तयावहै तयामहै

ह्य० अतयत अतयेताम् अतयन्त
अतयथाः अतयेथाम् अतयध्वम्
अतये अतयावहि अतयामहि

अ० अतयिष्ट अतयिषाताम् अतयिषत
अतयिष्ठाः अतयिषाथाम् अतयिड्ढ्वम्
ढ्वम्-ध्वम्
अतयिषि अतयिष्वहि अतयिष्महि

प० तेये तेयाते तेयिरे
तेयिषे तेयाथे तेयिढ्वे-ध्वे
तेये तेयिवहे तेयिमहे

आ० तयिषीष्ट तयिषीयास्ताम् तयिषीरन्
तयिषीष्ठाः तयिषीयास्थाम् तयिषीढ्वम्
ध्वम्
तयिषीय तयिषीवहि तयिषीमहि

श्व० तयिता  तयितारौ  तयितारः
तयितासे  तयितासाथे  तयिताध्वे
तयिताहे  तयितास्वहे  तयितास्महे

भ० तयिष्यते  तयिष्येते  तयिष्यन्ते
तयिष्यसे  तयिष्येथे  तयिष्यध्वे
तयिष्ये  तयिष्यावहे  तयिष्यामहे

क्रि० अतयिष्यत अतयिष्येताम् अतयिष्यन्त
अतयिष्यथाः अतयिष्येथाम् अतयिष्यध्वम्
अतयिष्ये अतयिष्यावहि अतयिष्यामहि

णयि-रक्षणे च, रक्षण करवुं, जवुं

व० नयते  नयेते  नयन्ते
नयसे  नयेथे  नयध्वे
नये  नयावहे  नयामहे

स० नयेत  नयेयाताम्  नयेरन्
नयेथाः  नयेयाथाम्  नयेध्वम्
नयेय  नयेवहि  नयेमहि

प० नयताम्  नयेताम्  नयन्ताम्
नयस्व  नयेथाम्  नयध्वम्
नयै  नयावहै  नयामहै

ह्य० अनयत  अनयेताम्  अनयन्त
अनयथाः  अनयेथाम्  अनयध्वम्
अनये  अनयावहि  अनयामहि

अ० अनयिष्ट अनयिषाताम् अनयिषत
अनयिष्ठाः अनयिषाथाम् अनयिड्ढ्वम्
ढ्वम्-ध्वम्
अनयिषि अनयिष्वहि अनयिष्महि

प० नेये  नेयाते  नेयिरे
नेयिषे  नेयाथे  नेयिढ्वे-ध्वे
नेये  नेयिवहे  नेयिमहे

आ० नयिषीष्ट  नयिषीयास्ताम् नयिषीरन्
नयिषीष्ठाः नयिषीयास्ताम् नयिषीढ्व-ध्वम्
नयिषीय  नयिषीवहि  नयिषीमहि

श्व० नयिता  नयितारौ  नयितारः
नयितासे  नयितासाथे  नयिताध्वे
नयिताहे  नयितास्वहे  नयितास्महे

भ० नयिष्यते  नयिष्येते  नयिष्यन्ते
नयिष्यसे  नयिष्येथे  नयिष्यध्वे
नयिष्ये  नयिष्यावहे  नयिष्यामहे

क्रि० अनयिष्यत अनयिष्येताम् अनयिष्यन्त
अनयिष्यथाः अनयिष्येथाम् अनयिष्यध्वम्
अनयिष्ये  अनयिष्यावहि  अनयिष्यामहि

॥ दयि-दान-गति-हिंसा-दहनेषु च ॥
। आपवु, जवुं हिंसा करवी. बाळवुं

व० दयते  दयेते  दयन्ते
दयसे  दयेथे  दयध्वे
दये  दयावहे  दयामहे

स० दयेत  दयेयाताम्  दयेरन्
दयेथाः  दयेयाथाम्  दयेध्वम्
दयेय  दयेवहि  दयेमहि

प० दयताम्  दयेताम्  दयन्ताम्
दयस्व  दयेथाम्  दयध्वम्
दयै  दयावहै  दयामहै

ह्य० अदयत  अदयेताम्  अदयन्त
अदयथाः अदयेथाम्  अदयध्वम्
अदये  अदयावहि  अदयामहि

अ० अदयिष्ट अदयिषाताम् अदयिषत
अदयिष्ठाः अदयिषाथाम् अदयिड्ढ्वम्
ढ्वम् ध्वम्
अदयिषि अदयिष्वहि अदयिष्महि

प० दयाञ्चक्रे दयाञ्चक्राते  दयाञ्चक्रिरे
दयाञ्चकृषे दयाञ्चक्राथे  दयाञ्चकृढ्वे
दयाञ्चक्रे  दयाञ्चकृवहे  दयाञ्चकृमहे
दयामास । दयाम्बभूव ।

आ० दयिषीष्ट दयिषीयास्ताम् दयिषीरन्
दयिषीष्ठाः दयिषीयास्थाम् दयिषीढ्वम्-ध्वम्
दयिषीय  दयिषीवहि  दयिषीमहि

श्व० दयिता  दयितारौ  दयितारः
दयितासे  दयितासाथे दयिताध्वे

दयिताहे दयितास्वहे दयितास्महे
भ० दयिष्यते दयिष्येते दयिष्यन्ते
दयिष्यसे दयिष्येथे दयिष्यध्वे
दयिष्ये दयिष्यावहे दयिष्यामहे
क्रि० अदयिष्यत अदयिष्येताम् अदयिष्यन्त
अदयिष्यथाः अदयिष्येथाम् अदयिष्यध्वम्
अदयिष्ये अदयिष्यावहि अदयिष्यामहि

॥ उयैङ्-तन्तुसन्ताने । वणवुं ।
ऊयते । औयिष्ट । ऊयाञ्चक्रे ।

॥ पूयैङ्-दुर्गन्धविशरणयोः । गंधाइ जवुं विखेराइ जवुं, सडी जवुं ।
पूयते । अपूयिष्ट । पुपूये ।

॥ क्नूयैङ्-शब्दोन्दनयोः । शब्द करवो, । भींजावधुं ।
क्नूयते । अक्नूयिष्ट । चुक्नूये ।

॥ क्ष्मायैङ्-विधूनने । हलावधुं ।
क्ष्मायते । अक्ष्मायिष्ट । चक्ष्माये ।

॥ स्फायैङ्-वृद्धौ ॥ वधवुं ।
स्फायते । अस्फायिष्ट । पस्फाये ।

॥ ओप्यायैङ्-वृद्धौ, ॥ वधवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | प्यायते | प्यायेते | प्यायन्ते |
| | प्यायसे | प्यायेथे | प्यायध्वे |
| | प्याये | प्यायावहे | प्यायामहे |
| स० | प्यायेत | प्यायेयाताम् | प्यायेरन् |
| | प्यायेथाः | प्यायेयाथाम् | प्यायेध्वम् |
| | प्यायेय | प्यायेवहि | प्यायेमहि |
| प० | प्यायताम् | प्यायेताम् | प्यायन्ताम् |
| | प्यायस्व | प्यायेथाम् | प्यायध्वम् |
| | प्यायै | प्यायावहै | प्यायामहै |
| ह्य० | अप्यायत | अप्यायेताम् | अप्यायन्त |
| | अप्यायथाः | अप्यायेथाम् | अप्यायध्वम् |
| | अप्याये | अप्यायावहि | अप्यायामहि |

अ० अप्यायि अप्यायिष्ट अप्यायिषाताम् अप्यायिषत
अप्यायिष्ठाः अप्यायिषाथाम् अप्यायिढ्ढ्वम्-ढ्वम्-ध्वम्
अप्यायिषि अप्यायिष्वहि अप्यायिष्महि
प० पिप्ये पिप्याते पिप्यिरे
पिप्यिषे पिप्याथे पिप्यिढ्वे-ध्वे
पिप्ये पिप्यिवहे पिप्यिमहे
आ० प्यायिषीष्टप्यायिषीयास्ताम्प्यायिषीरन्
प्यायिषीष्ठाःप्यायिषीयास्थाम्प्यायिषीढ्वम् ध्वम्
प्यायिषीय प्यायिषीवहि प्यायिषीमहि
श्व० प्यायिता प्यायितारौ प्यायितारः
प्यायितासे प्यायितासाथे प्यायिताध्वे
प्यायिताहे प्यायितास्वहे प्यायितास्महे
भ० प्यायिष्यते प्यायिष्येते प्यायिष्यन्ते
प्यायिष्यसे प्यायिष्येथे प्यायिष्यध्वे
प्यायिष्ये प्यायिष्यावहे प्यायिष्यामहे
क्रि० अप्यायिष्यत अप्यायिष्येताम्-यिष्यन्त
अप्यायिष्यथाःअप्यायिष्येथामअप्यायिष्यध्वम्
अप्यायिष्ये अप्यायिष्यावहि अप्यायिष्यामहि

॥ स्फायैङ्-वृद्धौ ॥ वधवुं ।
स्फायते । अस्फायिष्ट । पस्फाये ।

॥ तायृङ्-सन्तानपालनयोः ॥ रचना करवी, रक्षण करवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | तायते | तायेते | तायन्ते |
| | तायसे | तायेथे | तायध्वे |
| | ताये | तायावहे | तायामहे |
| स० | तायेत | तायेयाताम् | तायेरन् |
| | तायेथाः | तायेयाथाम् | तायेध्वम् |
| | तायेय | तायेवहि | तायेमहि |
| प० | तायताम् | तायेताम् | तायन्ताम् |
| | तायस्व | तायेथाम् | तायध्वम् |
| | तायै | तायावहै | तायामहै |
| ह्य० | अतायत | अतायेताम् | अतायन्त |
| | अतायथाः | अतायेथाम् | अतायध्वम् |

अताये अतायावहि अतायामहि
अ० अतायि-अतायिष्ट अतायिषाताम् अतायिषत
अतायिष्ठाः अतायिषाथाम् अतायिढ्ढ्वम्
ढ्वम्-ध्वम्
अतायिषि अतायिष्वहि अतायिष्महि

प० तताये ततायाते ततायिरे
ततायिषे ततायाथे ततायिढ्वे-ध्वे
तताये ततायिवहे ततायिमहे

आ० तायिषीष्ट तायिषीयास्ताम् तायिषीरन्
तायिषीष्ठाः तायिषीयास्थाम् तायिषीढ्वम्-ध्वम्
तायिषीय तायिषीवहि तायिषीमहि

तायिता तायितारौ तायितारः
तायितासे तायितासाथे तायिताध्वे
तायिताहे तायितास्वहे तायितास्महे

भ० तायिष्यते तायिष्येते तायिष्यन्ते
तायिष्यसे तायिष्येथे तायिष्यध्वे
तायिष्ये तायिष्यावहे तायिष्यामहे

क्रि० अतायिष्यत अतायिष्येताम् अतायिष्यन्त
अतायिष्यथाः अतायिष्येथाम् अतायिष्यध्वम्
अतायिष्ये अतायिष्यावहि अतायिष्यामहि

॥ वलि वल्लि-संवरणे । ढाकवुं ।
वलते । अवलिष्ट । ववले ।
वल्लते । अवल्लिष्ट । ववल्ले ।

॥ शलि चलने च ।. चालवुं ।
शलते । अशलिष्ट । शेले ।

मलि मल्लि-धारणे ॥ धारण करवुं ।
मलते । अमलिष्ट । मेले ।
मल्लते । अमल्लिष्ट । ममल्ले ।

॥ भलि भल्लि-परिभाषणहिंसादानेषु ॥
वात करवी, हिंसा करवी, दान देवुं ।
भलते । अभलिष्ट । बभले ।
भल्लते । अभल्लिष्ट । बभल्ले ।

॥ कलि-शब्दसङ्ख्यानयोः । शब्द करवो
गणतरी करवी ।
कलते । अकलिष्ट । चकले ।

॥ कल्लि-अशब्दे ॥ मौन रहेवु ।
कल्लते । अकल्लिष्ट । चकल्ले ।

॥ तेवृङ् देवृङ्-देवने ॥ खेलवुं ।
तेवते । अतेविष्ट । तितेवे ।
देवते । अदेविष्ट । दिदेवे ।

॥ सेवृङ् केवृङ् खेवृङ् गेवृङ् ग्लेवृङ् पेवृङ्
प्लेवृङ् मेवृङ् म्लेवृङ्-सेवने ॥ सेवा करवी
सेवते । परिसेवते । असेविष्ट । सिसेवे
केवते । अकेविष्ट । चिकेवे ।
खेवते । अखेविष्ट । चिखेवे ।
गेवते । अगेविष्ट । जिगेवे ।
ग्लेवते । अग्लेविष्ट । जिग्लेवे ।
पेवते । अपेविष्ट । पिपेवे ।
प्लेवते । अप्लेविष्ट । पिप्लेवे ।
मेवते । अमेविष्ट । मिमेवे ।
म्लेवते । अम्लेविष्ट । मिम्लेवे ।

॥ पेवृङ्-सेवने ॥ सेववुं ।

व० परिषेवते परिषेवेते परिषेवन्ते
परिषेवसे परिषेवेथे परिषेवध्वे
परिषेवे परिषेवावहे परिषेवामहे

निषेवते । विषेवते । अनुसेवते । प्रतिसेवते

स० सेवेत सेवेयाताम् सेवेरन्
सेवेथाः सेवेयाथाम् सेवेध्वम्
सेवेय सेवेवहि सेवेमहि

प० सेवताम् सेवेताम् सेवन्ताम्
सेवस्व सेवेथाम् सेवध्वम्
सेवै सेवावहै सेवामहै

ह्य० असेवत असेवेताम् असेवन्त
असेवथाः असेवेथाम् असेवध्वम्
असेवे असेवावहि असेवामहि
पर्यषेवत । न्यषेवत । व्यषेवत ।

अ० असेविष्ट असेविषाताम् असेविषत
असेविष्ठाः असेविषाथाम् असेविढ्ढ्वम्
ढ्वम् ध्वम्
असेविषि असेविष्वहि असेविष्महि

प० सिषेवे सिषेवाते सिषेविरे
सिषेविषे सिषेवाथे सिषेविढ्वे-ध्वे
सिषेवे सिषेविवहे सिषेविमहे
आ०सेविषीष्ट सेविषीयास्ताम् सेविषीरन्
सेविषीष्ठाः सेविषीयास्थाम् सेविषीढ्वम् ध्वम्
सेविषीय सेविषीवहि सेविषीमहि
श्व०सेविता सेवितारौ सेवितारः
सेवितासे सेवितासाथे सेविताध्वे
सेविताहे सेवितास्वहे सेवितास्महे
भ० सेविष्यते सेविष्येते सेविष्यन्ते
सेविष्यसे सेविष्येथे सेविष्यध्वे
सेविष्ये सेविष्यावहे सेविष्यामहे
क्रि० असेविष्यत असेविष्येताम् असेविष्यन्त
असेविष्यथाः असेविष्येथाम् असेविष्यध्वम्
असेविष्ये असेविष्यावहि असेविष्यामहि

रेवृङ् पवि-गतौ । जवुं
रेवते । अरेविष्ट । रिरेवे ।
पवते । अपविष्ट । पेवे ।
काशृङ् दीप्तौ । चळकवु
काशते । अकाशिष्ट । चकाशे ।
॥ क्लेशि-विबाधने । क्लेश करवो-
क्लेशते । अक्लेशिष्ट । चिक्लेशे
॥ भाषि-व्यक्तायां वाचि । स्पष्ट बोलवुं ।
भाषते । अभाषिष्ट । बभाषे ।
॥ ईषि-गतिहिंसादर्शनेषु । जवुं, हिंसा करवो, देखवुं
ईषते । ऐषिष्ट । ईषाञ्चक्रे ।
॥ गेषृङ् अन्विच्छायाम् । शोधवुं
गेषते । अगेषिष्ट । जिगेषे ।
॥ येषृङ्-प्रयत्ने । यत्न करवो ।
येषते । अयेषिष्ट । यियेषे ।
॥ जेषृङ् णेषृङ् एषृङ् ह्रेषृङ्-गतौ । जवुं
जेषते । अजेषिष्ट । जिजेषे ।
नेषते । अनेषिष्ट । निनेषे ।
एषते । ऐषिष्ट । एषाञ्चक्रे ।
ह्रेषते । अह्रेषिष्ट । जिह्रेषे ।

॥ रेषृङ् हेषृङ्-अव्यक्ते शब्दे । अस्पष्ट शब्द करवो
रेषते । अरेषिष्ट । रिरेषे ।
हेषते । अहेषिष्ट । जिहेषे ।
॥ पर्षि-स्नेहने । चीकणा थवुं स्नेहवाळुं थवुं
पर्षते । अपर्षिष्ट । पपर्षे ।
घुषुङ् कान्तिकरणे । खराब वस्तुने सुंदर बनाववी
घुंषते । अघुंषिष्ट । जुघुंषे ।
॥ स्रंसुङ्-प्रमादे । अभिमान करवुं ॥
स्रंसते । अस्रंसिष्ट । सस्रंसे ।
॥ कासृङ्-शब्दकुत्सायाम् । उधरस खावी
कासते । अकासिष्ट । चकासे ।
॥ भासि-दीप्तौ ॥ चळकवुं
व० भासते भासेते भासन्ते
भाससे भासेथे भासध्वे
भासे भासावहे भासामहे
स० भासेत भासेयाताम् भासेरन्
भासेथाः भासेयाथाम् भासेध्वम्
भासेय भासेवहि भासेमहि
प० भासताम् भासेताम् भासन्ताम्
भासस्व भासेथाम् भासध्वम्
भासै भासावहै भासामहै
ह्य० अभासत अभासेताम् अभासन्त
अभासथाः अभासेथाम् अभासध्वम्
अभासे अभासावहि अभासामहि
अ० अभासिष्ट अभासिषाताम् अभासिषत
अभासिष्ठाः अभासिषाथाम् अभासिध्वम् ढ्वम्
अभासिषि अभासिष्वहि अभासिष्महि
प० बभासे बभासाते बभासिरे
बभासिषे बभासाथे बभासिध्वे
बभासे बभासिवहे बभासिमहे
आ०भासिषीष्ट भासिषीयास्ताम् भासिषीरन्
भासिषीष्ठाः भासिषीयास्थाम् भासिषीध्वम्
भासिषीय भासिषीवहि भासिषीमहि

प्र० भासिता भासितारौ भासितारः
भासितासे भासितासाथे भासिताध्वे
भासिताहे भासितास्वहे भासितास्महे
भ० भासिष्यते भासिष्येते भासिष्यन्ते
भासिष्यसे भासिष्येथे भासिष्यध्वे
भासिष्ये भासिष्यावहे भासिष्यामहे
क्रि० अभासिष्यत अभासिष्येताम् अभासिष्यन्त
अभासिष्यथाः अभासिष्येथाम् अभासिष्यध्वम्
अभासिष्ये अभासिष्यावहि अभासिष्यामहि

॥ टुभ्रासि–दीप्तौ ॥ चत्कवुं

व० भ्रास्यते भ्रास्येते भ्रास्यन्ते
भ्रास्यसे भ्रास्येथे भ्रास्यध्वे
भ्रास्ये भ्रास्यावहे भ्रास्यामहे
स० भ्रास्येत भ्रास्येयाताम् भ्रास्येरन्
भ्रास्येथाः भ्रास्येयाथाम् भ्रास्येध्वम्
भ्रास्येय भ्रास्येवहि भ्रास्येमहि
प० भ्रास्याताम् भ्रास्येताम् भ्रास्यन्ताम्
भ्रास्यस्व भ्रास्येथाम् भ्रास्यध्वम्
भ्रास्यै भ्रास्यावहै भ्रास्यामहै
ह्य० अभ्रास्यत अभ्रास्येताम् अभ्रास्यन्त
अभ्रास्यथाः अभ्रास्येथाम् अभ्रास्यध्वम्
अभ्रास्ये अभ्रास्यावहि अभ्रास्यामहि
अ० अभ्रासिष्ट अभ्रासिषाताम् अभ्रासिषत
अभ्रासिष्ठाः अभ्रासिषाथाम् अभ्रासिध्वम्
ड्ढ्वम्
अभ्रासिषि अभ्रासिष्वहि अभ्रासिष्महि
प० भ्रेसे भ्रेसाते भ्रेसिरे
भ्रेसिषे भ्रेसाथे भ्रेसिध्वे
भ्रेसे भ्रेसिवहे भ्रेसिमहे
बभ्रासे बभ्रासाते बभ्रासिरे
बभ्रासिषे बभ्रासाथे बभ्रासिध्वे
बभ्रासे बभ्रासिवहे बभ्रासिमहे
आ० भ्रासिषीष्ट भ्रासिषीयास्ताम् भ्रासिषीरन्
भ्रासिषीष्ठाः भ्रासिषीयास्थाम् भ्रासिषीध्वम्
भ्रासिषीय भ्रासिषीवहि भ्रासिषीमहि

प्र० भ्रासिता भ्रासितारौ भ्रासितारः
भ्रासितासे भ्रासितासाथे भ्रासिताध्वे
भ्रासिताहे भ्रासितास्वहे भ्रासितास्महे
भ० भ्रासिष्यते भ्रासिष्येते भ्रासिष्यन्त
भ्रासिष्यसे भ्रासिष्येथे भ्रासिष्यध्वे
भ्रासिष्ये भ्रासिष्यावहे भ्रासिष्यामहे
क्रि० अभ्रासिष्यत अभ्रासिष्येताम् अभ्रासिष्यन्त
अभ्रासिष्यथाः अभ्रासिष्येथाम् अभ्रासिष्यध्वम्
अभ्रासिष्ये अभ्रासिष्यावहि अभ्रासिष्यामहि
व० भ्रासते भ्रासेते भ्रासन्ते
भ्राससे भ्रासेथे भ्रासध्वे
भ्रासे भ्रासावहे भ्रासामहे
स० भ्रासेत भ्रासेयाताम् भ्रासेरन्
भ्रासेथाः भ्रासेयाथाम् भ्रासेध्वम्
भ्रासेय भ्रासेवहि भ्रासेमहि
प० भ्रासताम् भ्रासेताम् भ्रासन्ताम्
भ्रासस्व भ्रासेथाम् भ्रासध्वम्
भ्रासै भ्रासावहै भ्रासामहै
ह्य० अभ्रासत अभ्रासेताम् अभ्रासन्त
अभ्रासथाः अभ्रासेथाम् अभ्रासध्वम्
अभ्रासे अभ्रासावहि अभ्रासामहि

॥ टुभ्लासृ–दीप्तौ ॥ प्रकाशवुं ।

व० भ्लास्यते भ्लास्येते भ्लास्यन्ते
भ्लास्यसे भ्लास्येथे भ्लास्यध्वे
भ्लास्ये भ्लास्यावहे भ्लास्यामहे
स० भ्लासते भ्लासेते भ्लासन्ते
भ्लाससे भ्लासेथे भ्लासध्वे
भ्लासे भ्लासावहे भ्लासामहे
स० भ्लास्येत भ्लास्येयाताम् भ्लास्येरन्
भ्लास्येथाः भ्लास्येयाथाम् भ्लास्येध्वम्
भ्लास्येय भ्लास्येवहि भ्लास्येमहि
भ्लासेत भ्लासेयाताम् भ्लासेरन्
भ्लासेथाः भ्लासेयाथाम् भ्लासेध्वम्
भ्लासेय भ्लासेवहि भ्लासेमहि
प० भ्लास्यताम् भ्लास्येताम् भ्लास्यन्ताम्
भ्लास्यस्व भ्लास्येथाम् भ्लास्यध्वम्

भ्लास्यै भ्लास्यावहै भ्लास्यामहै
भ्लासताम् भ्लासेताम् भ्लासन्ताम्
भ्लासस्व भ्लासेथाम् भ्लासध्वम्
भ्लासै भ्लासावहै भ्लासामहै
ह्य० अभ्लास्यत अभ्लास्येताम् अभ्लास्यन्त
अभ्लास्यथाः अभ्लास्येथाम् अभ्लास्यध्वम्
अभ्लास्ये अभ्लास्यावहि अभ्लास्यामहि
अभ्लासत अभ्लासेताम् अभ्लासन्त
अभ्लासथाः अभ्लासेथाम् अभ्लासध्वम्
अभ्लासे अभ्लासावहि अभ्लासामहि
अ० अभ्लासिष्ट अभ्लासिषाताम् अभ्लासिषत
अभ्लासिष्ठाः अभ्लासिषाथाम् अभ्लासिढ्वम् ध्वम्
अभ्लासिषि अभ्लासिष्वहि अभ्लासिष्महि
प० भ्लेसे भ्लेसाते भ्लेसिरे
भ्लेसिषे भ्लेसाथे भ्लेसिध्वे
भ्लेसे भ्लेसिवहे भ्लेसिमहे
बभ्लासे बभ्लासाते बभ्लासिरे
बभ्लासिषे बभ्लासाथे बभ्लासिध्वे
बभ्लासे बभ्लासिवहे बभ्लासिमहे
आ० भ्लासिषीष्ट भ्लासिषीयास्ताम् भ्लासिषीरन्
भ्लासिषीष्ठाः भ्लासिषीयास्थाम् भ्लासिषीध्वम्
भ्लासिषीय भ्लासिषीवहि भ्लासिषीमहि
श्व० भ्लासिता भ्लासितारौ भ्लासितारः
भ्लासितासे भ्लासितासाथे भ्लासिताध्वे
भ्लासिताहे भ्लासितास्वहे भ्लासितास्महे
भ० भ्लासिष्यते भ्लासिष्येते भ्लासिष्यन्ते
भ्लासिष्यसे भ्लासिष्येथे भ्लासिष्यध्वे
भ्लासिष्ये भ्लासिष्यावहे भ्लासिष्यामहे
क्रि० अभ्लासिष्यत अभ्लासिष्येताम्-सिष्यन्त
अभ्लासिष्यथाः अभ्लासिष्येथाम्-सिष्यध्वम्
अभ्लासिष्ये अभ्लासिष्यावहि अभ्लासिष्यामहि

॥ रासृङ् णासृङ् शब्दे । शब्द करवो
रासते । अरासिष्ट । ररासे ।
॥ नासते । अनासिष्ट । नेसे ।
॥ णसि कौटिल्ये । कुटिलता करवी
नसते । अनसिष्ट । नेसे ।
॥ भ्यसि-भये । भय पामवो
भ्यसते । अभ्यसिष्ट । बभ्यसे ।
॥ आङः शसुङ् इच्छायाम् । इच्छवुं
आशंसते । आशंसिष्ट । आशशंसे
॥ ग्रसूङ् ग्लसूङ्-अदने । खावुं
ग्रसते । अग्रसिष्ट । जग्रसे ।
ग्लसते । अग्लसिष्ट । जग्लसे ।
॥ घसुङ्-करणे । करवुं
घंसते । अघंसिष्ट । जघंसे ।
॥ ईहि-चेष्टायाम् । चेष्टा करवी
ईहते । ईहेत ईहताम् ।
ऐहत । ऐहिष्ट । ईहाञ्चक्रे ।
ईहामास । ईहाम्बभूव । ईहिषीष्ट
ईहिता । ईहिष्यते । ऐहिष्यत ।
॥ अहुङ् प्लिहि-गतौ । जवुं
अंहते । आंहिष्ट । आनंहे ।
प्लेहते । अप्लेहिष्ट । पिप्लिहे ।
॥ गर्हि गल्हि-कुत्सने । निन्दा करवी
गर्हते । अगर्हिष्ट । जगर्हे ।
गल्हते । अगल्हिष्ट । जगल्हे ।
॥ बर्हि बल्हि-प्राधान्ये । आगेवान थवुं मुख्य थवुं
बर्हते । अबर्हिष्ट । बबर्हे ।
बल्हते । अबल्हिष्ट । बबल्हे ।
बर्हि बल्हि-परिभाषणहिंसाच्छादनेषु ।
वात चित करवी, हिंसा करवी ढांकवुं
बर्हते । अबर्हिष्ट । बबर्हे ।
बल्हते । अबल्हिष्ट । बबल्हे ।
॥ वेहृङ् जेहृङ् वाहृङ्-प्रयत्ने ॥ प्रयत्न करवो
वेहते । अवेहिष्ट । विवेहे ।
जेहते । अजेहिष्ट । जिजेहे ।
॥ द्राहृङ्-निक्षेपे ॥ स्थापन करवुं
द्राहते । अद्राहिष्ट । दद्राहे ।
॥ ऊहि-तर्के ॥ वितर्क करवो.

ऊहते । ऊहेत । ऊहताम् ।
औहत । औहिष्ट । ऊहाञ्चक्रे ।
ऊहामास । ऊहाम्बभूव । ऊहिषीष्ट
ऊहिता । ऊहिष्यते । औहिष्यत ।

॥ गाहौङ्-विलोडने. ॥ डुबकी मारवी.

| | | |
|---|---|---|
| व० गाहते | गाहे | गाहन्ते |
| गाहसे | गाहेथे | गाहध्वे |
| गाहे | गाहावहे | गाहामहे |
| स० गाहेत | गाहेयाताम् | गाहेरन् |
| गाहेथाः | गाहेयाथाम् | गाहेध्वम् |
| गाहेय | गाहेवहि | गाहेमहि |
| प० गाहताम् | गाहेताम् | गाहन्ताम् |
| गाहस्व | गाहेथाम् | गाहध्वम् |
| गाहै | गाहावहै | गाहामहै |
| ह्य० अगाहत | अगाहेताम् | अगाहन्त |
| अगाहथाः | अगाहेथाम् | अगाहध्वम् |
| अगाहे | अगाहावहि | अगाहामहि |
| अ० अगाहिष्ट | अगाहिषाताम् | अगाहिषत |
| अगाहिष्ठाः | अगाहिषाथाम् | अगाहिढ्ढ्वम् ढ्वम्-ध्वम् |
| अगाहिषि | अगाहिष्वहि | अगाहिष्महि |
| अगाढ | अघाक्षाताम् | अघाक्षत |
| अगाढाः | अघाक्षाथाम् | अघाड्ढ्वम् ढ्वम् |
| अघाक्षि | अघाक्ष्वहि | अघाक्ष्महि |
| प० जगाहे | जगाहाते | जगाहिरे |
| जगाहिषे जघाक्षे | जगाहाथे | जगाहिढ्वे-ध्वे |
| जगाहे | जगाहिवहे | जगाहिमहे |
| मतांतरे-जघाढ्वे | जघाह्वहे | जघाह्महे |
| आ० गाहिषीष्ट | गाहिषीयास्ताम् | गाहिषीरन् |
| गाहिषीष्ठाः | गाहिषीयास्थाम् | गाहिषीढ्वम् ध्वम् |
| गाहिषीय | गाहिषीवहि | गाहिषीमहि |
| घाक्षीष्ट | घाक्षीयास्ताम् | घाक्षीरन् |
| घाक्षीष्ठाः | घाक्षीयास्थाम् | घाक्षीध्वम् |
| घाक्षीय | घाक्षीवहि | घाक्षीमहि |
| श्व० गाहिता | गाहितारौ | गाहितारः |
| गाहितासे | गाहितासाथे | गाहिताध्वे |
| गाहिताहे | गाहितास्वहे | गाहितास्महे |
| गाढा | गाढारौ | गाढारः |
| गाढासे | गाढासाथे | गाढाध्वे |
| गाढाहे | गाढास्वहे | गाढास्महे |
| भ० गाहिष्यते | गाहिष्येते | गाहिष्यन्ते |
| गाहिष्यसे | गाहिष्येथे | गाहिष्यध्वे |
| गाहिष्ये | गाहिष्यावहे | गाहिष्यामहे |
| घाक्ष्यते | घाक्ष्येते | घाक्ष्यन्ते |
| घाक्ष्यसे | घाक्ष्येथे | घाक्ष्यध्वे |
| घाक्ष्ये | घाक्ष्यावहे | घाक्ष्यामहे |
| क्रि० अगाहिष्यत | अगाहिष्येताम् | अगाहिष्यन्त |
| अगाहिष्यथाः | अगाहिष्येथाम् | अगाहिष्यध्वम् |
| अगाहिष्ये | अगाहिष्यावहि | अगाहिष्यामहि |
| अघाक्ष्यत | अघाक्ष्येताम् | अघाक्ष्यन्त |
| अघाक्ष्यथाः | अघाक्ष्येथाम् | अघाक्ष्यध्वम् |
| अघाक्ष्ये | अघाक्ष्यावहि | अघाक्ष्यामहि |

॥ ग्लहौङ्-ग्रहणे. ॥ ग्रहण करवुं

| | | |
|---|---|---|
| व० ग्लहते | ग्लहेते | ग्लहन्ते |
| ग्लहसे | ग्लहेथे | ग्लहध्वे |
| ग्लहे | ग्लहावहे | ग्लहामहे |
| स० ग्लहेत | ग्लहेयाताम् | ग्लहेरन् |
| ग्लहेथाः | ग्लहेयाथाम् | ग्लहेध्वम् |
| ग्लहेय | ग्लहेवहि | ग्लहेमहि |
| प० ग्लहताम् | ग्लहेताम् | ग्लहन्ताम् |
| ग्लहस्व | ग्लहेथाम् | ग्लहध्वम् |
| ग्लहै | ग्लहावहै | ग्लहामहै |
| ह्य० अग्लहत | अग्लहेताम् | अग्लहन्त |
| अग्लहथाः | अग्लहेथाम् | अग्लहध्वम् |
| अग्लहे | अग्लहावहि | अग्लहामहि |
| अ० अग्लाढ | अघ्लक्षाताम् | अघ्लक्षत |
| अग्लाढाः | अघ्लक्षाथाम् | अघ्लाड्ढ्वम् ढ्वम् |

अग्लक्षि अग्लक्ष्वहि अग्लक्ष्महि
अग्लहिष्ट अग्लहिषाताम् अग्लहिषत
अग्लहिष्ठाः अग्लहिषाथाम् अग्लहिड्ढ्वम्
ध्वम्-ढ्वम्
अग्लहिषि अग्लहिष्वहि अग्लहिष्महि
प० जग्लहे जग्लहाते जग्लहिरे
जग्लहिषे जघ्लक्षे जग्लहाथे
जग्लहिढ्वे-ध्वे
जग्लहे जग्लहिवहे जग्लहिमहे
आ० ग्लहिषीष्ट ग्लहिषीयास्ताम् ग्लहिषीरन्
ग्लहिषीष्ठाः ग्लहिषीयास्थाम् ग्लहिषीढ्वम् ध्वम्
ग्लहिषीय ग्लहिषीवहि ग्लहिषीमहि
घ्लक्षीष्ट घ्लक्षीयास्ताम् घ्लक्षीरन्
घ्लक्षीष्ठाः घ्लक्षीयास्थाम् घ्लक्षीध्वम्
घ्लक्षीय घ्लक्षीवहि घ्लक्षीमहि
श्व० ग्लहिता ग्लहितारौ ग्लहितारः
ग्लहितासे ग्लहितासाथे ग्लहिताध्वे
ग्लहिताहे ग्लहितास्वहे ग्लहितास्महे
ग्लाढा ग्लाढारौ ग्लाढारः
ग्लाढासे ग्लाढासाथे ग्लाढाध्वे
ग्लाढाहे ग्लाढास्वहे ग्लाढास्महे
भ० घ्लक्ष्यते घ्लक्ष्येते घ्लक्ष्यन्ते
घ्लक्ष्यसे घ्लक्ष्येथे घ्लक्ष्यध्वे
घ्लक्ष्ये घ्लक्ष्यावहे घ्लक्ष्यामहे
ग्लहिष्यते ग्लहिष्येते ग्लहिष्यन्ते
ग्लहिष्यसे ग्लहिष्येथे ग्लहिष्यध्वे
ग्लहिष्ये ग्लहिष्यावहे ग्लहिष्यामहे
क्रि० अग्लहिष्यत अग्लहिष्येताम् अग्लहिष्यन्त
अग्लहिष्यथाः अग्लहिष्येथाम् अग्लहिष्यध्वम्
अग्लहिष्ये अग्लहिष्यावहि अग्लहिष्यामहि
अघ्लक्ष्यत अघ्लक्ष्येताम् अघ्लक्ष्यन्त
अघ्लक्ष्यथाः अघ्लक्ष्येथाम् अघ्लक्ष्यध्वम्
अघ्लक्ष्ये अघ्लक्ष्यावहि अघ्लक्ष्यामहि

॥ गृहौङ्-इत्येके, ॥ ग्रहण करवुं ।
व० गर्हते गर्हेते गर्हन्ते
गर्हसे गर्हेथे गर्हध्वे
गर्हे गर्हावहे गर्हामहे
स० गर्हेत गर्हेयाताम् गर्हेरन्
गर्हेथाः गर्हेयाथाम् गर्हेध्वम्
गर्हेय गर्हेवहि गर्हेमहि
प० गर्हताम् गर्हेताम् गर्हन्ताम्
गर्हस्व गर्हेथाम् गर्हध्वम्
गर्है गर्हावहै गर्हामहै
ह्य० अगर्हत अगर्हेताम् अगर्हन्त
अगर्हथाः अगर्हेथाम् अगर्हध्वम्
अगर्हे अगर्हावहि अगर्हामहि
अगर्हिष्ट अगर्हिषाताम् अगर्हिषत
अगर्हिष्ठाः अगर्हिषाथाम् अगर्हिड्ढ्वम्
ध्वम्-ढ्वम्
अगर्हिषि अगर्हिष्वहि अगर्हिष्महि
अ० अघृक्षत अघृक्षाताम् अघृक्षन्त
अघृक्षथाः अघृक्षाथाम् अघृक्षध्वम्
अघृक्षि अघृक्षावहि अघृक्षामहि
प० जगृहे जगृहाते जगृहिरे
जगृहिषे जघृक्षे पाणि० म० पक्षम्; जगृहाथे
जगृहिध्वे जगृहिढ्वे-मतांतरे जघृढ्वे जघृह्वहे
जघृह्महे जगृहे जगृहिवहे जगृहिमहे
आ० घृक्षीष्ट घृक्षीयास्ताम् घृक्षीरन्
घृक्षीष्ठाः घृक्षीयास्थाम् घृक्षीध्वम्
घृक्षीय घृक्षीवहि घृक्षीमहि
गर्हिषीष्ट गर्हिषीयास्ताम् गर्हिषीरन्
गर्हिषीष्ठाः गर्हिषीयास्थाम् गर्हिषीढ्वम्-ध्वम्
गर्हिषीय गर्हिषीवहि गर्हिषीमहि
श्व० गर्हिता गर्हितारौ गर्हितारः
गर्हितासे गर्हितासाथे गर्हिताध्वे
गर्हिताहे गर्हितास्वहे गर्हितास्महे
गर्ढा गर्ढारौ गर्ढारः
गर्ढासे गर्ढासाथे गर्ढाध्वे
गर्ढाहे गर्ढास्वहे गर्ढास्महे

भ० गर्हिष्यते गर्हिष्येते गर्हिष्यन्ते
गर्हिष्यसे गर्हिष्येथे गर्हिष्यध्वे
गर्हिष्ये गर्हिष्यावहे गर्हिष्यामहे
घर्क्ष्यते घर्क्ष्येते घर्क्ष्यन्ते
घर्क्ष्यसे घर्क्ष्येथे घर्क्ष्यध्वे
घर्क्ष्ये घर्क्ष्यावहे घर्क्ष्यामहे

क्रि० अगर्हिष्यत अगर्हिष्येताम् अगर्हिष्यन्त
अगर्हिष्यथाः अगर्हिष्येथाम् अगर्हिष्यध्वम्
अगर्हिष्ये अगर्हिष्यावहि अगर्हिष्यामहि
अघर्क्ष्यत अघर्क्ष्येताम् अघर्क्ष्यन्त
अघर्क्ष्यथाः अघर्क्ष्येथाम् अघर्क्ष्यध्वम्
अघर्क्ष्ये अघर्क्ष्यावहि अघर्क्ष्यामहि

॥ बहुङ् महुङ्–वृद्धौ ॥ वधवुं ।
बंहते । अबंहिष्ट । बबंहे ।
मंहते । अमंहिष्ट । ममंहे ।

॥ दक्षि शैघ्र्ये च । स्फूर्तिवाळा थवुं वधवुं
दक्षते । अदक्षिष्ट । ददक्षे ।

॥ धुक्षि धिक्षि सन्दीपन–क्लेशन–जीवनेषु
उत्तेजित करवुं. क्लेश कराववो जीवाडवुं
धुक्षते । अधुक्षिष्ट । दुधुक्षे ।
धिक्षते । अधिक्षिष्ट । दिधिक्षे ।

॥ वृक्षि–वरणे ॥ स्वीकारवुं, पसंद करवुं
वृक्षते । अवृक्षिष्ट । ववृक्षे ।

॥ शिक्षि–विद्योपादाने ॥ शिखवुं ।

व० शिक्षते शिक्षेते शिक्षन्ते
शिक्षसे शिक्षेथे शिक्षध्वे
शिक्षे शिक्षावहे शिक्षामहे

स० शिक्षेत शिक्षेयाताम् शिक्षेरन्
शिक्षेथाः शिक्षेयाथाम् शिक्षेध्वम्
शिक्षेय शिक्षेवहि शिक्षेमहि

प० शिक्षताम् शिक्षेताम् शिक्षन्ताम्
शिक्षस्व शिक्षेथाम् शिक्षध्वम्
शिक्षै शिक्षावहै शिक्षामहै

ह्य० अशिक्षत अशिक्षेताम् अशिक्षन्त
अशिक्षथाः अशिक्षेथाम् अशिक्षध्वम्
अशिक्षे अशिक्षावहि अशिक्षामहि

अ० अशिक्षिष्ट अशिक्षिषाताम् अशिक्षिषत
अशिक्षिष्ठाः अशिक्षिषाथाम् अशिक्षिध्वम्
इढ्वम्
अशिक्षिषि अशिक्षिष्वहि अशिक्षिष्महि

प० शिशिक्षे शिशिक्षाते शिशिक्षिरे
शिशिक्षिषे शिशिक्षाथे शिशिक्षिध्वे
शिशिक्षे शिशिक्षिवहे शिशिक्षिमहे

आ० शिक्षिषीष्ट शिक्षिषीयास्ताम् शिक्षिषीरन्
शिक्षिषीष्ठाः शिक्षिषीयास्थाम् शिक्षिषीध्वम्
शिक्षिषीय शिक्षिषीवहि शिक्षिषीमहि

श्व० शिक्षिता शिक्षितारौ शिक्षितारः
शिक्षितासे शिक्षितासाथे शिक्षिताध्वे
शिक्षिताहे शिक्षितास्वहे शिक्षितास्महे

भ० शिक्षिष्यते शिक्षिष्येते शिक्षिष्यन्ते
शिक्षिष्यसे शिक्षिष्येथे शिक्षिष्यध्वे
शिक्षिष्ये शिक्षिष्यावहे शिक्षिष्यामहे

क्रि० अशिक्षिष्यत अशिक्षिष्येताम् अशिक्षिष्यन्त
अशिक्षिष्यथाः अशिक्षिष्येथाम् अशिक्षिष्यध्वम्
अशिक्षिष्ये अशिक्षिष्यावहि अशिक्षिष्यामहि

॥ भिक्षि–याञ्चायाम् ॥ मागवुं ।
भिक्षते । अभिक्षिष्ट । बिभिक्षे ।

॥ दीक्षि–मौण्ड्येज्योपनयननियमव्रता–
देशेषु । मुंडाववुं, यज्ञ करवो, जनोइ
देवी, व्रत करवुं, संस्कार करवो.
दीक्षते । अदीक्षिष्ट । दिदीक्षे ।

॥ ईक्षि–दर्शने ॥ जोवुं ।

व० ईक्षते ईक्षेते ईक्षन्ते
ईक्षसे ईक्षेथे ईक्षध्वे
ईक्षे ईक्षावहे ईक्षामहे

स० ईक्षेत ईक्षेयाताम् ईक्षेरन्
ईक्षेथाः ईक्षेयाथाम् ईक्षेध्वम्
ईक्षेय ईक्षेवहि ईक्षेमहि

प० ईक्षताम् ईक्षेताम् ईक्षन्ताम्
ईक्षस्व ईक्षेथाम् ईक्षध्वम्

ईक्षे ईक्षावहे ईक्षामहे

ह्य० ऐक्षत ऐक्षेताम् ऐक्षन्त
ऐक्षथाः ऐक्षेथाम् ऐक्षध्वम्
ऐक्षे ऐक्षावहि ऐक्षामहि

अ० ऐक्षिष्ट ऐक्षिषाताम् ऐक्षिषत
ऐक्षिष्ठाः ऐक्षिषाथाम् ऐक्षिध्वम्ड्ढ्वम्
ऐक्षिषि ऐक्षिष्वहि ऐक्षिष्महि

प० ईक्षाञ्चक्रे ईक्षाञ्चक्राते ईक्षाञ्चक्रिरे
ईक्षाञ्चकृषे ईक्षाञ्चक्राथे ईक्षाञ्चकृढ्वे
ईक्षाञ्चक्रे ईक्षाञ्चकृवहे ईक्षाञ्चकृमहे

आ० ईक्षिषीष्ट ईक्षिषीयास्ताम् ईक्षिषीरन्
ईक्षिषीष्ठाः ईक्षिषीयास्थाम् ईक्षिषीध्वम्
ईक्षिषीय ईक्षिषीवहि ईक्षिषीमहि

श्व० ईक्षिता ईक्षितारौ ईक्षितारः
ईक्षितासे ईक्षितासाथे ईक्षिताध्वे
ईक्षिताहे ईक्षितास्वहे ईक्षितास्महे

भ० ईक्षिष्यते ईक्षिष्येते ईक्षिष्यन्ते
ईक्षिष्यसे ईक्षिष्येथे ईक्षिष्यध्वे
ईक्षिष्ये ईक्षिष्यावहे ईक्षिष्यामहे

क्रि० ऐक्षिष्यत ऐक्षिष्येताम् ऐक्षिष्यन्त
ऐक्षिष्यथाः ऐक्षिष्येथाम् ऐक्षिष्यध्वम्
ऐक्षिष्ये ऐक्षिष्यावहि ऐक्षिष्यामहि

## ॥ इति भ्वादयः आत्मनेपदिनः ॥

## ॥ अथोभयपदिनः ॥

॥ श्रिग्–सेवायाम् ॥ सेववुं

व० श्रयति श्रयतः श्रयन्ति
श्रयसि श्रयथः श्रयथ
श्रयामि श्रयावः श्रयामः

स० श्रयेत् श्रयेताम् श्रयेयुः
श्रयेः श्रयेतम् श्रयेत
श्रयेयम् श्रयेव श्रयेम

प० श्रयतु श्रयतात् श्रयताम् श्रयन्तु
श्रय ,, श्रयतम् श्रयत
श्रयाणि श्रयाव श्रयाम

ह्य० अश्रयत् अश्रयताम् अश्रयन्
अश्रयः अश्रयतम् अश्रयत
अश्रयम् अश्रयाव अश्रयाम

अ० अशिश्रियत् अशिश्रियताम् अशिश्रियन्
अशिश्रियः अशिश्रियतम् अशिश्रियत
अशिश्रियम् अशिश्रियाव अशिश्रियाम

प० शिश्राय शिश्रियतुः शिश्रियुः
शिश्रियिथ शिश्रियथुः शिश्रिय
शिश्राय शिश्रय शिश्रियिव शिश्रियिम

श्व० श्रयिता श्रयितारौ श्रयितारः
श्रयितासि श्रयितास्थः श्रयितास्थ
श्रयितास्मि श्रयितास्वः श्रयितास्मः

भ० श्रयिष्यति श्रयिष्यतः श्रयिष्यन्ति
श्रयिष्यसि श्रयिष्यथः श्रयिष्यथ
श्रयिष्यामि श्रयिष्यावः श्रयिष्यामः

क्रि० अश्रयिष्यत् अश्रयिष्यताम् अश्रयिष्यन्
अश्रयिष्यः अश्रयिष्यतम् अश्रयिष्यत
अश्रयिष्यम् अश्रयिष्याव अश्रयिष्याम

व० श्रयते श्रयेते श्रयन्ते
श्रयसे श्रयेथे श्रयध्वे
श्रये श्रयावहे श्रयामहे

स० श्रयेत श्रयेयाताम् श्रयेरन्
श्रयेथाः श्रयेयाथाम् श्रयेध्वम्
श्रयेय श्रयेवहि श्रयेमहि

प० श्रयताम् श्रयेताम् श्रयन्ताम्
श्रयस्व श्रयेथाम् श्रयध्वम्
श्रयै श्रयावहै श्रयामहै

ह्य० अश्रयत अश्रयेताम् अश्रयन्त
अश्रयथाः अश्रयेथाम् अश्रयध्वम्
अश्रये अश्रयावहि अश्रयामहि

अ० अशिश्रियत अशिश्रियेताम् अशिश्रियन्त
अशिश्रियथाः अशिश्रियेथाम् अशिश्रियध्वम्
अशिश्रिये अशिश्रियावहि अशिश्रियामहि

प० शिश्रिये शिश्रियाते शिश्रियिरे
शिश्रियिषे शिश्रियाथे शिश्रियिढ्वे-ध्वे
शिश्रिये शिश्रियिवहे शिश्रियिमहे

आ० श्रयिषीष्ट श्रयिषीयास्ताम् श्रयिषीरन्
श्रयिषीष्ठाः श्रयिषीयास्थाम् श्रयिषीढ्वम्-ध्वम्
श्रयिषीय श्रयिषीवहि श्रयिषीमहि

श्व० श्रयिता श्रयितारौ श्रयितारः
श्रयितासे श्रयितासाथे श्रयिताध्वे
श्रयिताहे श्रयितास्वहे श्रयितास्महे

भ० श्रयिष्यते श्रयिष्येते श्रयिष्यन्ते
श्रयिष्यसे श्रयिष्येथे श्रयिष्यध्वे
श्रयिष्ये श्रयिष्यावहे श्रयिष्यामहे

क्रि० अश्रयिष्यत अश्रयिष्येताम् अश्रयिष्यन्त
अश्रयिष्यथाः अश्रयिष्येथाम् अश्रयिष्यध्वम्
अश्रयिष्ये अश्रयिष्यावहि अश्रयिष्यामहि

॥ णींञ्–प्रापणे ॥ दोरवुं, लइ जवुं ।

व० नयति नयतः नयन्ति
नयसि नयथः नयथ
नयामि नयावः नयामः

स० नयेत् नयेताम् नयेयुः
नयेः नयेतम् नयेत
नयेयम् नयेव नयेम

प० नयतु नयतात् नयताम् नयन्तु
नय ,, नयतम् नयत
नयानि नयाव नयाम

ह्य० अनयत् अनयताम् अनयन्
अनयः अनयतम् अनयत
अनयम् अनयाव अनयाम

अ० अनैषीत् अनैष्टाम् अनैषुः
अनैषीः अनैष्टम् अनैष्ट
अनैषम् अनैष्व अनैष्म

प० निनाय निन्यतुः निन्युः
निनयिथ निनेथ निन्यथुः निन्य
निनाय निनय निन्यिव निन्यिम

आ० नीयात् नीयास्ताम् नीयासुः
नीयाः नीयास्तम् नीयास्त
नीयासम् नीयास्व नीयास्म

श्व० नेता नेतारौ नेतारः
नेतासि नेतास्थः नेतास्थ
नेतास्मि नेतास्वः नेतास्मः

भ० नेष्यति नेष्यतः नेष्यन्ति
नेष्यसि नेष्यथः नेष्यथ
नेष्यामि नेष्यावः नेष्यामः

क्रि० अनेष्यत् अनेष्यताम् अनेष्यन्
अनेष्यः अनेष्यतम् अनेष्यत
अनेष्यम् अनेष्याव अनेष्याम

व० नयते नयेते नयन्ते
नयसे नयेथे नयध्वे
नये नयावहे नयामहे

स० नयेत नयेयाताम् नयेरन्
नयेथाः नयेयाथाम् नयेध्वम्
नयेय नयेवहि नयेमहि

प० नयताम् नयेताम् नयन्ताम्
नयस्व नयेथाम् नयध्वम्
नयै नयावहै नयामहै

ह्य० अनयत अनयेताम् अनयन्त
अनयथाः अनयेथाम् अनयध्वम्
अनये अनयावहि अनयामहि

अ० अनेष्ट अनेषाताम् अनेषत
अनेष्ठाः अनेषाथाम् अनेढ्ढ्वम्–ढ्वम्
अनेषि अनेष्वहि अनेष्महि

प० निन्ये निन्याते निन्यिरे
निन्यिषे निन्याथे निन्यिढ्वे–ध्वे
निन्ये निन्यिवहे निन्यिमहे

आ० नेषीष्ट नेषीयास्ताम् नेषीरन्
नेषीष्ठाः नेषीयास्थाम् नेषीढ्वम्
नेषीय नेषीवहि नेषीमहि

श्व० नेता नेतारौ नेतारः
नेतासे नेतासाथे नेताध्वे

नेताहे नेतास्वहे नेतास्महे
भ० नेष्यते नेष्येते नेष्यन्ते
नेष्यसे नेष्येथे नेष्यध्वे
नेष्ये नेष्यावहे नेष्यामहे
क्रि० अनेष्यत अनेष्येताम् अनेष्यन्त
अनेष्यथाः अनेष्येथाम् अनेष्यध्वम्
अनेष्ये अनेष्यावहि अनेष्यामहि

॥ हृंग् हरणे, ॥ हरण करवुं ।

व० हरति हरतः हरन्ति
हरसि हरथः हरथ
हरामि हरावः हरामः
स० हरेत् हरेताम् हरेयुः
हरेः हरेतम् हरेत
हरेयम् हरेव हरेम
प० हरतु हरतात् हरताम् हरन्तु
हर „ हरतम् हरत
हराणि हराव हराम
ह्य० अहरत् अहरताम् अहरन्
अहरः अहरतम् अहरत
अहरम् अहराव अहराम
अ० अहार्षीत् अहार्ष्टाम् अहार्षुः
अहार्षीः अहार्ष्टम् अहार्ष्ट
अहार्षम् अहार्ष्व अहार्ष्म
प० जहार जह्रतुः जह्रुः
जहर्थ जह्रथुः जह्र
जहार जहर जह्रिव जह्रिम
आ० ह्रियात् ह्रियास्ताम् ह्रियासुः
ह्रियाः ह्रियास्तम् ह्रियास्त
ह्रियासम् ह्रियास्व ह्रियास्म
श्व० हर्ता हर्तारौ हर्तारः
हर्तासि हर्तास्थः हर्तास्थ
हर्तास्मि हर्तास्वः हर्तास्मः
भ० हरिष्यति हरिष्यतः हरिष्यन्ति
हरिष्यसि हरिष्यथः हरिष्यथ
हरिष्यामि हरिष्यावः हरिष्यामः

क्रि० अहरिष्यत् अहरिष्यताम् अहरिष्यन्
अहरिष्यः अहरिष्यतम् अहरिष्यत
अहरिष्यम् अहरिष्याव अहरिष्याम
व० हरते हरेते हरन्ते
हरसे हरेथे हरध्वे
हरे हरावहे हरामहे
स० हरेत हरेयाताम् हरेरन्
हरेथाः हरेयाथाम् हरेध्वम्
हरेय हरेवहि हरेमहि
प० हरताम् हरेताम् हरन्ताम्
हरस्व हरेथाम् हरध्वम्
हरै हरावहै हरामहै
ह्य० अहरत अहरेताम् अहरन्त
अहरथाः अहरेथाम् अहरध्वम्
अहरे अहरावहि अहरामहि
अ० अहृत अहृषाताम् अहृषत
अहृथाः अहृषाथाम् अहृड्ढ्वम्-ढ्वम्
अहृषि अहृष्वहि अहृष्महि
प० जह्रे जह्राते जह्रिरे
जह्रिषे जह्राथे जह्रिढ्वे-ध्वे-ढ्वम्
जह्रे जह्रिवहे जह्रिमहे
आ० हृषीष्ट हृषीयास्ताम् हृषीरन्
हृषीष्ठाः हृषीयास्थाम् हृषीढ्वम्
हृषीय हृषीवहि हृषीमहि
श्व० हर्ता हर्तारौ हर्तारः
हर्तासे हर्तासाथे हर्ताध्वे
हर्ताहे हर्तास्वहे हर्तास्महे
भ० हरिष्यते हरिष्येते हरिष्यन्ते
हरिष्यसे हरिष्येथे हरिष्यध्वे
हरिष्ये हरिष्यावहे हरिष्यामहे
क्रि० अहरिष्यत अहरिष्येताम् अहरिष्यन्त
अहरिष्यथाः अहरिष्येथाम् अहरिष्यध्वम्
अहरिष्ये अहरिष्यावहि अहरिष्यामहि

॥ भृङ्-भरणे ॥ पोषण करवुं ।

व० भरति भरतः भरन्ति
भरसि भरथः भरथ
भरामि भरावः भरामः
स० भरेत् भरेताम् भरेयुः
भरेः भरेतम् भरेत
भरेयम् भरेव भरेम
प० भरतु भरतात् भरताम् भरन्तु
भर ,, भरतम् भरत
भराणि भराव भराम
ह्य० अभरत् अभरताम् अभरन्
अभरः अभरतम् अभरत
अभरम् अभराव अभराम
अ० अभार्षीत् अभार्ष्टाम् अभार्षुः
अभार्षीः अभार्ष्टम् अभार्ष्ट
अभार्षम् अभार्ष्व अभार्ष्म
प० बभार बभ्रतुः बभ्रुः
बभर्थ बभ्रथुः बभ्र
बभार बभर बभृव बभृम
आ० भ्रियात् भ्रियास्ताम् भ्रियासुः
भ्रियाः भ्रियास्तम् भ्रियास्त
भ्रियासम् भ्रियास्व भ्रियास्म
श्व० भर्ता भर्तारौ भर्तारः
भर्तासि भर्तास्थः भर्तास्थ
भर्तास्मि भर्तास्वः भर्तास्मः
भ० भरिष्यति भरिष्यतः भरिष्यन्ति
भरिष्यसि भरिष्यथः भरिष्यथ
भरिष्यामि भरिष्यावः भरिष्यामः
क्रि० अभरिष्यत् अभरिष्यताम् अभरिष्यन्
अभरिष्यः अभरिष्यतम् अभरिष्यत
अभरिष्यम् अभरिष्याव अभरिष्याम
व० भरते भरेते भरन्ते
भरसे भरेथे भरध्वे
भरे भरावहे भरामहे
स० भरेत भरेयाताम् भरेरन्
भरेथाः भरेयाथाम् भरेध्वम्
भरेय भरेवहि भरेमहि
प० भरताम् भरेताम् भरन्ताम्
भरस्व भरेथाम् भरध्वम्
भरै भरावहै भरामहै
ह्य० अभरत अभरेताम् अभरन्त
अभरथाः अभरेथाम् अभरध्वम्
अभरे अभरावहि अभरामहि
अ० अभृत अभृषाताम् अभृषत
अभृथाः अभृषाथाम् अभृढ्ढ्वम्
ढ्वम्
अभृषि अभृष्वहि अभृष्महि
प० बभ्रे बभ्राते बभ्रिरे
बभृषे बभ्राथे बभृढ्वे
बभ्रे बभृवहे बभृमहे
आ० भृषीष्ट भृषीयास्ताम् भृषीरन्
भृषीष्ठाः भृषीयास्थाम् भृषीढ्वम्
भृषीय भृषीवहि भृषीमहि
श्व० भर्ता भर्तारौ भर्तारः
भर्तासे भर्तासाथे भर्ताध्वे
भर्ताहे भर्तास्वहे भर्तास्महे
भ० भरिष्यते भरिष्येते भरिष्यन्ते
भरिष्यसे भरिष्येथे भरिष्यध्वे
भरिष्ये भरिष्यावहे भरिष्यामहे
क्रि० अभरिष्यत अभरिष्येताम् अभरिष्यन्त
अभरिष्यथाः अभरिष्येथाम् अभरिष्यध्वम्
अभरिष्ये अभरिष्यावहि अभरिष्यामहि

॥ धृञ्—धारणे. ॥ धारण करवुं

व० धरति धरतः धरन्ति
धरसि धरथः धरथ
धरामि धरावः धरामः
स० धरेत् धरेताम् धरेयुः
धरेः धरेतम् धरेत
धरेयम् धरेव धरेम
प० धरतु धरतात् धरताम् धरन्तु
धर ,, धरतम् धरत

धराणि धराव धराम
ह्य० अधरत् अधरताम् अधरत
अधरः अधरतम् अधरन्
अधरम् अधराव अधराम
अ० अधार्षीत् अधार्ष्टाम् अधार्षुः
अधार्षीः अधार्ष्टम् अधार्ष्ट
अधार्षम् अधार्ष्व अधार्ष्म
प० दधार दध्रतुः दध्रुः
दधर्थ दध्रथुः दध्र
दधार दधर दध्रिव दध्रिम
आ० ध्रियात् ध्रियास्ताम् ध्रियासुः
ध्रियाः ध्रियास्तम् ध्रियास्त
ध्रियासम् ध्रियास्व ध्रियास्म
श्व० धर्त्ता धर्त्तारौ धर्त्तारः
धर्त्तासि धर्त्तास्थः धर्त्तास्थ
धर्त्तास्मि धर्त्तास्वः धर्त्तास्मः
भ० धरिष्यति धरिष्यतः धरिष्यन्ति
धरिष्यसि धरिष्यथः धरिष्यथ
धरिष्यामि धरिष्यावः धरिष्यामः
क्रि० अधरिष्यत् अधरिष्यताम् अधरिष्यन्
अधरिष्यः अधरिष्यतम् अधरिष्यत
अधरिष्यम् अधरिष्याव अधरिष्याम
व० धरते धरेते धरन्ते
धरसे धरेथे धरध्वे
धरे धरावहे धरामहे
स० धरेत धरेयाताम् धरेरन्
धरेथाः धरेयाथाम् धरेध्वम्
धरेय धरेवहि धरेमहि
प० धरताम् धरेताम् धरन्ताम्
धरस्व धरेथाम् धरध्वम्
धरै धरावहै धरामहै
ह्य० अधरत अधरेताम् अधरन्त
अधरथाः अधरेथाम् अधरध्वम्
अधरे अधरावहि अधरामहि
अ० अधृत अधृषाताम् अधृषत
अधृथाः अधृषाथाम् अधृड्ढ्वम्-ढ्वम्
अधृषि अधृष्वहि अधृष्महि
प० दध्रे दध्राते दध्रिरे
दध्रिषे दध्राथे दध्रिढ्वे-ध्वे
दध्रे दध्रिवहे दध्रिमहे
आ० धृषीष्ट धृषीयास्ताम् धृषीरन्
धृषीष्ठाः धृषीयास्थाम् धृषीढ्वम्
धृषीय धृषीवहि धृषीमहि
श्व० धर्त्ता धर्त्तारौ धर्त्तारः
धर्त्तासे धर्त्तासाथे धर्त्ताध्वे
धर्त्ताहे धर्त्तास्वहे धर्त्तास्महे
भ० धरिष्यते धरिष्येते धरिष्यन्ते
धरिष्यसे धरिष्येथे धरिष्यध्वे
धरिष्ये धरिष्यावहे धरिष्यामहे
क्रि० अधरिष्यत अधरिष्येताम् अधरिष्यन्त
अधरिष्यथाः अधरिष्येथाम् अधरिष्यध्वम्
अधरिष्ये अधरिष्यावहि अधरिष्यामहि

॥ डुकृङ्-करणे ॥ करवु,

व० करोति कुरुतः कुर्वन्ति
करोषि कुरुथः कुरुथ
करोमि कुर्वः कुर्मः
स० कुर्यात् कुर्याताम् कुर्युः
कुर्याः कुर्यातम् कुर्यात
कुर्याम् कुर्याव कुर्याम
प० करोतु कुरुतात् कुरुताम् कुर्वन्तु
कुरु „ कुरुतम् कुरुत
करवाणि करवाव करवाम
ह्य० अकरोत् अकुरुताम् अकुर्वन्
अकरोः अकुरुतम् अकुरुत
अकरवम् अकुर्व अकुर्म
अ० अकार्षीत् अकार्ष्टाम् अकार्षुः
अकार्षीः अकार्ष्टम् अकार्ष्ट
अकार्षम् अकार्ष्व अकार्ष्म
प० चकार चक्रतुः चक्रुः
चकर्थ चक्रथुः चक्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| | चकार चकर | चकृव | चकृम |
| आ० | क्रियात् | क्रियास्ताम् | क्रियासुः |
| | क्रियाः | क्रियास्तम् | क्रियास्त |
| | क्रियासम् | क्रियास्व | क्रियास्म |
| श्व० | कर्ता | कर्तारौ | कर्तारः |
| | कर्तासि | कर्तास्थः | कर्तास्थ |
| | कर्तास्मि | कर्तास्वः | कर्तास्मः |
| भ० | करिष्यति | करिष्यतः | करिष्यन्ति |
| | करिष्यसि | करिष्यथः | करिष्यथ |
| | करिष्यामि | करिष्यावः | करिष्यामः |
| क्रि० | अकरिष्यत् | अकरिष्यताम् | अकरिष्यन् |
| | अकरिष्यः | अकरिष्यतम् | अकरिष्यत |
| | अकरिष्यम् | अकरिष्याव | अकरिष्याम |
| व० | कुरुते | कुर्वाते | कुर्वते |
| | कुरुषे | कुर्वाथे | कुरुध्वे |
| | कुर्वे | कुर्वहे | कुर्महे |
| स० | कुर्वीत | कुर्वीयताम् | कुर्वीरन् |
| | कुर्वीथाः | कुर्वीयाथाम् | कुर्वीध्वम् |
| | कुर्वीय | कुर्वीवहि | कुर्वीमहि |
| प० | कुरुताम् | कुर्वाताम् | कुर्वताम् |
| | कुरुष्व | कुर्वाथाम् | कुरुध्वम् |
| | करवै | करवावहै | करवामहै |
| ह्य० | अकुरुत | अकुर्वाताम् | अकुर्वत |
| | अकुरुथाः | अकुर्वाथाम् | अकुरुध्वम् |
| | अकुर्वि | अकुर्वहि | अकुर्महि |
| अ० | अकृत | अकृषाताम् | अकृषत |
| | अकृथाः | अकृषाथाम् | अकृड्ढ्वम्-ढ्वम् |
| | अकृषि | अकृष्वहि | अकृष्महि |
| प० | चक्रे | चक्राते | चक्रिरे |
| | चकृषे | चक्राथे | चकृढ्वे |
| | चक्रे | चकृवहे | चकृमहे |
| आ० | कृषीष्ट | कृषीयास्ताम् | कृषीरन् |
| | कृषीष्ठाः | कृषीयास्थाम् | कृषीढ्वम् |
| | कृषीय | कृषीवहि | कृषीमहि |

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्व० | कर्ता | कर्तारौ | कर्तारः |
| | कर्तासे | कर्तासाथे | कर्ताध्वे |
| | कर्ताहे | कर्तास्वहे | कर्तास्महे |
| भ० | करिष्यते | करिष्येते | करिष्यन्ते |
| | करिष्यसे | करिष्येथे | करिष्यध्वे |
| | करिष्ये | करिष्यावहे | करिष्यामहे |

क्रि० अकरिष्यत अकरिष्येताम् अकरिष्यन्त
अकरिष्यथाः अकरिष्येथाम् अकरिष्यध्वम्
अकरिष्ये अकरिष्यावहि अकरिष्यामहि

॥ हिक्की-अव्यक्तेशब्दे ॥ हेडको खावी अस्पष्ट शब्द करवो ।

हिक्कति । हिक्कते । अहिक्कीत् । अहिक्किष्ट । जिहिक्क । जिहिक्के

॥ अञ्चूग्-गतौ ॥ जवुं ।

अञ्चति । अञ्चते । आञ्चीत् । आञ्चिष्ट । आनञ्च । आनञ्चे ।

॥ डुयाचृङ् याञ्चायाम् ॥ मागवुं ।

याचति । याचते । अयाचीत् । अयाचिष्ट । ययाच । ययाचे ।

॥ डुपचींष्-पाके ॥ रांधवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | पचति | पचतः | पचन्ति |
| | पचसि | पचथः | पचथ |
| | पचामि | पचावः | पचामः |
| स० | पचेत् | पचेताम् | पचेयुः |
| | पचेः | पचेतम् | पचेत |
| | पचेयम् | पचेव | पचेम |
| प० | पचतु पचतात् | पचताम् | पचन्तु |
| | पच ,, | पचतम् | पचत |
| | पचानि | पचाव | पचाम |
| ह्य० | अपचत् | अपचताम् | अपचन् |
| | अपचः | अपचतम् | अपचत |
| | अपचम् | अपचाव | अपचाम |
| अ० | अपाक्षीत् | अपाक्ताम् | अपाक्षुः |
| | अपाक्षीः | अपाक्तम् | अपाक्त |
| | अपाक्षम् | अपाक्ष्व | अपाक्ष्म |

प० पपाच पेचतुः पेचुः
पेचिथ पपक्थ पेचथुः पेच
पपाच पपच पेचिव पेचिम

आ० पच्यात् पच्यास्ताम् पच्यासुः
पच्याः पच्यास्तम् पच्यास्त
पच्यासम् पच्यास्व पच्यास्म

श्व० पक्ता पक्तारौ पक्तारः
पक्तासि पक्तास्थः पक्तास्थ
पक्तास्मि पक्तास्वः पक्तास्मः

भ० पक्ष्यति पक्ष्यतः पक्ष्यन्ति
पक्ष्यसि पक्ष्यथः पक्ष्यथ
पक्ष्यामि पक्ष्यावः पक्ष्यामः

क्रि० अपक्ष्यत् अपक्ष्यताम् अपक्ष्यन्
अपक्ष्यः अपक्ष्यतम् अपक्ष्यत
अपक्ष्यम् अपक्ष्याव अपक्ष्याम

व० पचते पचेते पचन्ते
पचसे पचेथे पचध्वे
पचे पचावहे पचामहे

स० पचेत पचेयाताम् पचेरन्
पचेथाः पचेयाथाम् पचेध्वम्
पचेय पचेवहि पचेमहि

प० पचताम् पचेताम् पचन्ताम्
पचस्व पचेथाथाम् पचध्वम्
पचै पचाव पचामहै

ह्य० अपचत अपचेताम् अपचन्त
अपचथाः अपचेथाम् अपचध्वम्
अपचावहि अपचामहि

अ० अपक्त अपक्षाताम् अपक्षत
अपक्थाः अपक्षाथाम् अपग्ध्वम्-ग्ध्वम्
अपक्षि अपक्ष्वहि अपक्ष्महि

प० पेचे पेचाते पेचिरे
पेचिषे पेचाथे पेचिध्वे
पेचे पेचिवहे पेचिमहे

आ० पक्षीष्ट पक्षीयास्ताम् पक्षीरन्
पक्षीष्ठाः पक्षीयास्थाम् पक्षीध्वम्
पक्षीय पक्षीवहि पक्षीमहि

श्व० पक्ता पक्तारौ पक्तारः
पक्तासे पक्तासाथे पक्ताध्वे
पक्ताहे पक्तास्वहे पक्तास्महे

भ० पक्ष्यते पक्ष्येते पक्ष्यन्ते
पक्ष्यसे पक्ष्येथे पक्ष्यध्वे
पक्ष्ये पक्ष्यावहे पक्ष्यामहे

क्रि० अपक्ष्यत अपक्ष्येताम् अपक्ष्यन्त
अपक्ष्यथाः अपक्ष्येथाम् अपक्ष्यध्वम्
अपक्ष्ये अपक्ष्यावहि अपक्ष्यामहि

॥ राजृग्-दीप्तौ, ॥ अकारान्तः

व० राजति राजतः राजन्ति
राजसि राजथः राजथ
राजामि राजावः राजामः

स० राजेत् राजेताम् राजेयुः
राजेः राजेतम् राजेत
राजेयम् राजेव राजेम

प० राजतु राजतात् राजताम् राजन्तु
राज ,, राजतम् राजत
राजानि राजाव राजाम

ह्य० अराजत् अराजताम् अराजन्
अराजः अराजतम् अराजत
अराजम् अराजाव अराजाम

अ० अराजीत् अराजिष्टाम् अराजिषुः
अराजीः अराजिष्टम् अराजिष्ट
अराजिषम् अराजिष्व अराजिष्म

प० रराज रेजतुः रराजतुः रेजुः रराजुः
रराजिथ रेजिथ रेजथुः रराजथुः रेज रराज
रराज रेजिव रराजिव रेजिम रराजिम

आ० राज्यात् राज्यास्ताम् राज्यासुः
राज्याः राज्यास्तम् राज्यास्त
राज्यासम् राज्यास्व राज्यास्म

श्व० राजिता राजितारौ राजितारः
राजितासि राजितास्थः राजितास्थ
राजितास्मि राजितास्वः राजितास्मः

भ० राजिष्यति राजिष्यतः राजिष्यन्ति
राजिष्यसि राजिष्यथः राजिष्यथ
राजिष्यामि राजिष्यावः राजिष्यामः
क्रि०अराजिष्यत् अराजिष्यताम् अराजिष्यन्
अराजिष्यः अराजिष्यतम् अराजिष्यत
अराजिष्यम् अराजिष्याव अराजिष्याम

व० राजते राजेते राजन्ते
राजसे राजेथे राजध्वे
राजे राजावहे राजामहे

स० राजेत राजेयाताम् राजेरन्
राजेथाः राजेयाथाम् राजेध्वम्
राजेय राजेवहि राजेमहि

प० राजताम् राजेताम् राजन्ताम्
राजस्व राजेथाम् राजध्वम्
राजै राजावहै राजामहै

ह्य० अराजत अराजेताम् अराजन्त
अराजथाः अराजेथाम् अराजध्वम्
अराजे अराजावहि अराजामहि

अ० अराजिष्ट अराजिषाताम् अराजिषत
अराजिष्ठाः अराजिषाथाम् अराजिड्ढ्वम्-ध्वम्
अराजिषि अराजिष्वहि अराजिष्महि

प० रराजे रराजाते रराजिरे
रेजे रेजाते रेजिरे
रराजिषे रराजाथे रराजिध्वे
रेजिषे रेजाथे रेजिध्वे
रराजे रराजिवहे रराजिमहे
रेजे रेजिवहे रेजिमहे

आ०राजिषीष्ट राजिषीयास्ताम् राजिषीरन्
राजिषीष्ठाः राजिषीयास्थाम् राजिषीध्वम्
राजिषीय राजिषीवहि राजिषीमहि

श्व० राजिता राजितारौ राजितारः
राजितासे राजितासाथे राजिताध्वे
राजिताहे राजितास्वहे राजितास्महे

भ० राजिष्यते राजिष्येते राजिष्यन्ते
राजिष्यसे राजिष्येथे राजिष्यध्वे
राजिष्ये राजिष्यावहे राजिष्यामहे

क्रि०अराजिष्यत अराजिष्येताम् अराजिष्यन्त
अराजिष्यथाः अराजिष्येथाम् अराजिष्यध्वम्
अराजिष्ये अराजिष्यावहि अराजिष्यामहि

॥ टुभ्राजी-दीप्तौ ॥ प्रकाशवुं.

व० भ्राजति भ्राजतः भ्राजन्ति
भ्राजसि भ्राजथः भ्राजथ
भ्राजामि भ्राजावः भ्राजामः

स० भ्राजेत् भ्राजेताम् भ्राजेयुः
भ्राजेः भ्राजेतम् भ्राजेत
भ्राजेयम् भ्राजेव भ्राजेम

प० भ्राजतु भ्राजतात् भ्राजताम् भ्राजन्तु
भ्राज ,, भ्राजतम् भ्राजन्तु
भ्राजानि भ्राजाव भ्राजाम

ह्य० अभ्राजत् अभ्राजताम् अभ्राजन्
अभ्राजः अभ्राजतम् अभ्राजत
अभ्राजम् अभ्राजाव अभ्राजाम

अ० अभ्राजीत् अभ्राजिष्टाम् अभ्राजिषुः
अभ्राजीः अभ्राजिष्टम् अभ्राजिष्ट
अभ्राजिषम् अभ्राजिष्व अभ्राजिष्म

प० बभ्राज भ्रेजतुः बभ्राजतुः
भ्रेजुः बभ्राजुः
भ्रेजिथ बभ्राजिथ भ्रेजथुः
बभ्राजथुः भ्रेज बभ्राज
बभ्राज भ्रेजिव बभ्राजिव भ्रेजिम बभ्राजिम

आ०भ्राज्यात् भ्राज्यास्ताम् भ्राज्यासुः
भ्राज्याः भ्राज्यास्तम् भ्राज्यास्त
भ्राज्यासम् भ्राज्यास्व भ्राज्यास्म

श्व० भ्राजिता भ्राजितारौ भ्राजितारः
भ्राजितासि भ्राजितास्थः भ्राजितास्थ
भ्राजितास्मि भ्राजितास्वः भ्राजितास्मः

भ० भ्राजिष्यति भ्राजिष्यतः भ्राजिष्यन्ति
भ्राजिष्यसि भ्राजिष्यथः भ्राजिष्यथ
भ्राजिष्यामि भ्राजिष्यावः भ्राजिष्यामः

क्रि० अभ्राजिष्यत् अभ्राजिष्यताम् अभ्राजिष्यन्
अभ्राजिष्यः अभ्राजिष्यतम् अभ्राजिष्यत
अभ्राजिष्यम् अभ्राजिष्याव अभ्राजिष्याम

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | भ्राजते | भ्राजेते | भ्राजन्ते |
| | भ्राजसे | भ्राजेथे | भ्राजध्वे |
| | भ्राजे | भ्राजावहे | भ्राजामहे |
| स० | भ्राजेत | भ्राजेयाताम् | भ्राजेरन् |
| | भ्राजेथाः | भ्राजेयाथाम् | भ्राजेध्वम् |
| | भ्राजेय | भ्राजेवहि | भ्राजेमहि |
| प० | भ्राजताम् | भ्राजेताम् | भ्राजन्ताम् |
| | भ्राजस्व | भ्राजेथाम् | भ्राजध्वम् |
| | भ्राजै | भ्राजावहै | भ्राजामहै |
| ह्य० | अभ्राजत | अभ्राजेताम् | अभ्राजन्त |
| | अभ्राजथाः | अभ्राजेथाम् | अभ्राजध्वम् |
| | अभ्राजे | अभ्राजावहि | अभ्राजामहि |
| अ० | अभ्राजिष्ट | अभ्राजिषाताम् | अभ्राजिषत |
| | अभ्राजिष्ठाः | अभ्राजिषाथाम् | अभ्राजिड्ढ्वम्-ध्वम् |
| | अभ्राजिषि | अभ्राजिष्वहि | अभ्राजिष्महि |
| प० | भ्रेजे | बभ्राजे | भ्रेजाते |
| | बभ्राजाते | भ्रेजिरे | बभ्राजिरे |
| | भ्रेजिषे | बभ्राजिषे | भ्रेजाथे |
| | बभ्राजाथे | भ्रेजिध्वे | बभ्राजिध्वे |
| | भ्रेजे | बभ्राजे | भ्रेजिवहे |
| | बभ्राजिवहे | भ्रेजिमहे | बभ्राजिमहे |
| आ० | भ्राजिषीष्ट | भ्राजिषीयास्ताम् | भ्राजिषीरन् |
| | भ्राजिषीष्ठाः | भ्राजिषीयास्थाम् | भ्राजिषीढ्वम् |
| | भ्राजिषीय | भ्राजिषीवहि | भ्राजिषीमहि |
| श्व० | भ्राजिता | भ्राजितारौ | भ्राजितारः |
| | भ्राजितासे | भ्राजितासाथे | भ्राजिताध्वे |
| | भ्राजिताहे | भ्राजितास्वहे | भ्राजितास्महे |
| भ० | भ्राजिष्यते | भ्राजिष्येते | भ्राजिष्यन्ते |
| | भ्राजिष्यसे | भ्राजिष्येथे | भ्राजिष्यध्वे |
| | भ्राजिष्ये | भ्राजिष्यावहे | भ्राजिष्यामहे |

क्रि० अभ्राजिष्यत अभ्राजिष्येताम् अभ्राजिष्यन्त
अभ्राजिष्यथाः अभ्राजिष्येथाम् अभ्राजिष्यध्वम्
अभ्राजिष्ये अभ्राजिष्यावहि अभ्राजिष्यामहि

॥ भजीं-सेवायाम् ॥ सेवनं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | भजति | भजतः | भजन्ति |
| | भजसि | भजथः | भजथ |
| | भजामि | भजावः | भजामः |
| स० | भजेत् | भजेताम् | भजेयुः |
| | भजेः | भजेतम् | भजेत |
| | भजेयम् | भजेव | भजेम |
| प० | भजतु भजतात् | भजताम् | भजन्तु |
| | भज ,, | भजतम् | भजत |
| | भजानि | भजाव | भजाम |
| ह्य० | अभजत् | अभजताम् | अभजन् |
| | अभजः | अभजतम् | अभजत |
| | अभजम् | अभजाव | अभजाम |
| अ० | अभाक्षीत् | अभाक्ताम् | अभाक्षुः |
| | अभाक्षीः | अभाक्तम् | अभाक्त |
| | अभाक्षम् | अभाक्ष्व | अभाक्ष्म |
| प० | बभाज | भेजतुः | भेजुः |
| | भेजिथ बभक्थ | भेजथुः | भेज |
| | बभाज बभज | भेजिव | भेजिम |
| आ० | भज्यात् | भज्यास्ताम् | भज्यासुः |
| | भज्याः | भज्यास्तम् | भज्यास्त |
| | भज्यासम् | भज्यास्व | भज्यास्म |
| श्व० | भक्ता | भक्तारौ | भक्तारः |
| | भक्तासि | भक्तास्थः | भक्तास्थ |
| | भक्तास्मि | भक्तास्वः | भक्तास्मः |
| भ० | भक्ष्यति | भक्ष्यतः | भक्ष्यन्ति |
| | भक्ष्यसि | भक्ष्यथः | भक्ष्यथ |
| | भक्ष्यामि | भक्ष्यावः | भक्ष्यामः |
| क्रि० | अभक्ष्यत् | अभक्ष्यताम् | अभक्ष्यन् |
| | अभक्ष्यः | अभक्ष्यतम् | अभक्ष्यत |
| | अभक्ष्यम् | अभक्ष्याव | अभक्ष्याम |
| व० | भजते | भजेते | भजन्ते |
| | भजसे | भजेथे | भजध्वे |
| | भजे | भजावहे | भजामहे |

स० भजेत भजेयाताम् भजेरन्
भजेथाः भजेयाथाम् भजेध्वम्
भजेय भजेवहि भजेमहि

प० भजताम् भजेताम् भजन्ताम्
भजस्व भजेथाम् भजध्वम्
भजै भजावहै भजामहै

ह्य० अभजत अभजेताम् अभजन्त
अभजथाः अभजेथाम् अभजध्वम्
अभजे अभजावहि अभजामहि

अ० अभक्त अभक्षाताम् अभक्षत
अभक्थाः अभक्षाथाम् अभग्ढ्वम्-ग्ध्वम्
अभक्षि अभक्ष्वहि अभक्ष्महि

प० भेजे भेजाते भेजिरे
भेजिषे भेजाथे भेजिध्वे
भेजे भेजिवहे भेजिमहे

आ० भक्षीष्ट भक्षीयास्ताम् भक्षीरन्
भक्षीष्ठाः भक्षीयास्थाम् भक्षीध्वम्
भक्षीय भक्षीवहि भक्षीमहि

श्व० भक्ता भक्तारौ भक्तारः
भक्तासे भक्तासाथे भक्ताध्वे
भक्ताहे भक्तास्वहे भक्तास्महे

भ० भक्ष्यते भक्ष्येते भक्ष्यन्ते
भक्ष्यसे भक्ष्येथे भक्ष्यध्वे
भक्ष्ये भक्ष्यावहे भक्ष्यामहे

क्रि० अभक्ष्यत अभक्ष्येताम् अभक्ष्यन्त
अभक्ष्यथाः अभक्ष्येथाम् अभक्ष्यध्वम्
अभक्ष्ये अभक्ष्यावहि अभक्ष्यामहि

॥ रञ्जँ-रागे ॥ रंगवु ।

व० रजति रजतः रजन्ति
रजसि रजथः रजथ
रजामि रजावः रजामः

स० रजेत् रजेताम् रजेयुः
रजेः रजेतम् रजेत
रजेयम् रजेव रजेम

प० रजतु रजतात् रजताम् रजन्तु
रज ,, रजतम् रजत
रजानि रजाव रजाम

ह्य० अरजत् अरजताम् अरजन्
अरजः अरजतम् अरजत
अरजम् अरजाव अरजाम

अ० अराङ्क्षीत् अराङ्क्ताम् अराङ्क्षुः
अराङ्क्षीः अराङ्क्तम् अराङ्क्त
अराङ्क्षम् अराङ्क्ष्व अराङ्क्ष्म

प० ररञ्ज ररञ्जतुः ररञ्जुः
ररञ्जिथ ररङ्क्थ ररञ्जथुः ररञ्ज
ररञ्ज ररञ्जिव ररञ्जिम

आ० रज्यात् रज्यास्ताम् रज्यासुः
रज्याः रज्यास्तम् रज्यास्त
रज्यासम् रज्यास्व रज्यास्म

श्व० रङ्क्ता रङ्क्तारौ रङ्क्तारः
रङ्क्तासि रङ्क्तास्थः रङ्क्तास्थ
रङ्क्तास्मि रङ्क्तास्वः रङ्क्तास्मः

भ० रङ्क्ष्यति रङ्क्ष्यतः रङ्क्ष्यन्ति
रङ्क्ष्यसि रङ्क्ष्यथः रङ्क्ष्यथ
रङ्क्ष्यामि रङ्क्ष्यावः रङ्क्ष्यामः

क्रि० अरङ्क्ष्यत् अरङ्क्ष्यताम् अरङ्क्ष्यन्
अरङ्क्ष्यः अरङ्क्ष्यतम् अरङ्क्ष्यत
अरङ्क्ष्यम् अरङ्क्ष्याव अरङ्क्ष्याम

व० रजते रजेते रजन्ते
रजसे रजेथे रजध्वे
रजे रजावहे रजामहे

स० रजेत रजेयाताम् रजेरन्
रजेथाः रजेयाथाम् रजेध्वम्
रजेय रजेवहि रजेमहि

प० रजताम् रजेताम् रजन्ताम्
रजस्व रजेथाम् रजध्वम्
रजै रजावहै रजामहै

ह्य० अरजत अरजेताम् अरजन्त
अरजथाः अरजेथाम् अरजध्वम्

अरजे अरञ्जावहि अरञ्जामहि
अ० अरङ्क्त अरङ्क्षाताम् अरङ्क्षत
अरङ्क्थाः अरङ्क्षाथाम् अरङ्ग्ध्वम्
अरङ्क्ष्वम्
अरङ्क्षि अरङ्क्ष्वहि अरङ्क्ष्महि
प० ररञ्जे ररञ्जाते ररञ्जिरे
ररञ्जिषे ररञ्जाथे ररञ्जिध्वे
ररञ्जे ररञ्जिवहे ररञ्जिमहे
आ० रङ्क्षीष्ट रङ्क्षीयास्ताम् रङ्क्षीरन्
रङ्क्षीष्ठाः रङ्क्षीयास्थाम् रङ्क्षीध्वम्
रङ्क्षीय रङ्क्षीवहि रङ्क्षीमहि
श्व० रङ्क्ता रङ्क्तारौ रङ्क्तारः
रङ्क्तासे रङ्क्तासाथे रङ्क्ताध्वे
रङ्क्ताहे रङ्क्तास्वहे रङ्क्तास्महे
भ० रङ्क्ष्यते रङ्क्ष्येते रङ्क्ष्यन्ते
रङ्क्ष्यसे रङ्क्ष्येथे रङ्क्ष्यध्वे
रङ्क्ष्ये रङ्क्ष्यावहे रङ्क्ष्यामहे
क्रि० अरङ्क्ष्यत अरङ्क्ष्येताम् अरङ्क्ष्यन्त
अरङ्क्ष्यथाः अरङ्क्ष्येथाम् अरङ्क्ष्यध्वम्
अरङ्क्ष्ये अरङ्क्ष्यावहि अरङ्क्ष्यामहि

॥ रेटृग्-परिभाषणयाचनयोः ॥ वात चीत करवी, मांगवुं ।
व० रेटति अरेटीत् रिरेट
रेटते अरेटिष्ट रिरेटे

॥ वेणृग्-गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु । जवुं, जाणवुं चिंता करवी सारु नरसुं विचारवुं, वगाडवा माटे वाजींत्र लेवुं ।
वेणति अवेणीत् विवेण
वेणते अवेणिष्ट विवेणे

॥ चतेग्-याचने ॥ मागवुं ।
चतति अचतीत् चचात
चतते अचतिष्ट चेते

॥ प्रोथृग्-पर्याप्तौ । पूर्ण थवुं ।
प्रोथति अप्रोथीत् पुप्रोथ
प्रोथते अप्रोथिष्ट पुप्रोथे

॥ मिथृग्-मेधाहिंसनयोः ॥ बुद्धि वाळा थवुं हिंसा करवी ।
मेथति अमेथीत् मिमेथ
मेथते अमेथिष्ट मिमिथे

॥ मेथृग्-सङ्गमे च । मळवुं, बुद्धि वाळा थवुं, हिंसा करवी ।
मेथति अमेथीत् मिमेथ
मेथते अमेथिष्ट मिमेथे

॥ चदेग्-याचने । मागवुं ।
चदति अचदीत् चचाद
चदते अचदिष्ट चेदे

॥ ऊबुन्दृग् निशामने । हिताहितनो विचार करवो ।
बुन्दति । बुन्देत् । बुन्दतु ।
अबुन्दत् । अबुदत् अबुन्दीत ।
बुबुन्द । बुद्यात् । बुन्दिता ।
बुन्दिष्यति । अबुन्दिष्यत् । बुन्दते ।
बुन्देत । बुन्दताम् । अबुन्दत ।
अबुन्दिष्ट । बुबुन्दे । बुन्दिषीष्ट ।
बुन्दिता । बुन्दिष्यते । अबुन्दिष्यत ।

॥ णिदृग् णेदृग्-कुत्सासन्निकर्षयोः ॥ निंदा करवी, पासे जवुं ।
नेदति । अनेदीत् । निनेद ।
नेदते । अनेदिष्ट । निनिदे ।
नेदति । अनेदीत् । निनेदतुः ।
नेदते । अनेदिष्ट । निनेदे ।

॥ मिदृग् मेदृग्-मेधाहिंसयोः । बुद्धि वाळा थवुं, हिंसा करवी ।
मेदति । अमेदीत । मिमेद ।
मेदते । अमेदिष्ट । मिमिदे ।
मेदते । अमेदिष्ट । मिमेदतुः ।
मेदते । अ[illegible] । मि[illegible]दे ।

॥ मेधृग्-सङ्गमे च ॥ मळवुं, बुद्धिवाळा थवुं, हिंसा करवी ।

मेधते । अमेधीत् । मिमेध ।
मेधते । अमेधिष्ट । मिमेधे ।
॥ शृधूग् मृधूग्–उन्दे ॥ भीनुं करवुं ।
शर्धति । अशर्धीत् । शशर्ध ।
शर्धते । अशर्धिष्ट । शशृधे ।
मर्धति । अमर्धीत् । ममर्ध ।
मर्धते । अमर्धिष्ट । ममृधे ।
॥ बुधृग्–बोधने ॥ जाणवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | बोधति | बोधतः | बोधन्ति |
| | बोधसि | बोधथः | बोधथ |
| | बोधामि | बोधावः | बोधामः |
| स० | बोधेत् | बोधेताम् | बोधेयुः |
| | बोधेः | बोधेतम् | बोधेत |
| | बोधेयम् | बोधेव | बोधेम |
| प० | बोधतु बोधतात् | बोधताम् | बोधन्तु |
| | बोध ,, | बोधतम् | बोधत |
| | बोधानि | बोधाव | बोधाम |
| ह्य० | अबोधत् | अबोधताम् | अबोधन् |
| | अबोधः | अबोधतम् | अबोधत |
| | अबोधम् | अबोधाव | अबोधाम |
| अ० | अबुधत् | अबुधताम् | अबुधन् |
| | अबुधः | अबुधतम् | अबुधत |
| | अबुधम् | अबुधाव | अबुधाम |
| | अबोधीत् | अबोधिष्टाम् | अबोधिषुः |
| | अबोधीः | अबोधिष्टम् | अबोधिष्ट |
| | अबोधिषम् | अबोधिष्व | अबोधिष्म |
| प० | बुबोध | बुबुधतुः | बुबुधुः |
| | बुबोधिथ | बुबुधथुः | बुबुध |
| | बुबोध | बुबुधिव | बुबुधिम |
| आ० | बुध्यात् | बुध्यास्ताम् | बुध्यासुः |
| | बुध्याः | बुध्यास्तम् | बुध्यास्त |
| | बुध्यासम् | बुध्यास्व | बुध्यास्म |
| श्व० | बोधिता | बोधितारौ | बोधितारः |
| | बोधितासि | बोधितास्थः | बोधितास्थ |
| | बोधितास्मि | बोधितास्वः | बोधितास्मः |
| भ० | बोधिष्यति | बोधिष्यतः | बोधिष्यन्ति |
| | बोधिष्यसि | बोधिष्यथः | बोधिष्यथ |
| | बोधिष्यामि | बोधिष्यावः | बोधिष्यामः |
| क्रि० | अबोधिष्यत् | अबोधिष्यताम् | अबोधिष्यन् |
| | अबोधिष्यः | अबोधिष्यतम् | अबोधिष्यत |
| | अबोधिष्यम् | अबोधिष्याव | अबोधिष्याम |
| व० | बोधते | बोधेते | बोधन्ते |
| | बोधसे | बोधेथे | बोधध्वे |
| | बोधे | बोधावहे | बोधामहे |
| स० | बोधेत | बोधेयाताम् | बोधेरन् |
| | बोधेथाः | बोधेयाथाम् | बोधेध्वम् |
| | बोधेय | बोधेवहि | बोधेमहि |
| प० | बोधताम् | बोधेताम् | बोधन्ताम् |
| | बोधस्व | बोधेथाम् | बोधध्वम् |
| | बोधै | बोधावहै | बोधामहै |
| ह्य० | अबोधत | अबोधेताम् | अबोधन्त |
| | अबोधथाः | अबोधेथाम् | अबोधध्वम् |
| | अबोधे | अबोधावहि | अबोधामहि |
| अ० | अबोधिष्ट | अबोधिषाताम् | अबोधिषत |
| | अबोधिष्ठाः | अबोधिषाथाम् | अबोधिढ्वम्, ध्वम् |
| | अबोधिषि | अबोधिष्वहि | अबोधिष्महि |
| प० | बुबुधे | बुबुधाते | बुबुधिरे |
| | बुबुधिषे | बुबुधाथे | बुबुधिध्वे |
| | बुबुधे | बुबुधिवहे | बुबुधिमहे |
| आ० | बोधिषीष्ट | बोधिषीयास्ताम् | बोधिषीरन् |
| | बोधिषीष्ठाः | बोधिषीयास्थाम् | बोधिषीध्वम् |
| | बोधिषीय | बोधिषीवहि | बोधिषीमहि |
| श्व० | बोधिता | बोधितारौ | बोधितारः |
| | बोधितासे | बोधितासाथे | बोधिताध्वे |
| | बोधिताहे | बोधितास्वहे | बोधितास्महे |
| भ० | बोधिष्यते | बोधिष्येते | बोधिष्यन्ते |
| | बोधिष्यसे | बोधिष्येथे | बोधिष्यध्वे |
| | बोधिष्ये | बोधिष्यावहे | बोधिष्यामहे |
| क्रि० | अबोधिष्यत | अबोधिष्येताम् | अबोधिष्यन्त |

अबोधिष्यथाः अबोधिष्येथाम् अबोधिष्यध्वम्
अबोधिष्ये अबोधिष्यावहि अबोधिष्यामहि

॥ खनूग्-अवदारणे ॥ खोदवुं ।

व० खनति खनतः खनन्ति
खनसि खनथः खनथ
खनामि खनावः खनामः

स० खनेत् खनेताम् खनेयुः
खनेः खनेतम् खनेत
खनेयम् खनेव खनेम

प० खनतु खनतात् खनताम् खनन्तु
खन ,, खनतम् खनत
खनानि खनाव खनाम

ह्य० अखनत् अखनताम् अखनन्
अखनः अखनतम् अखनत
अखनम् अखनाव अखनाम

अ० अखनीत् अखनिष्टाम् अखनिषुः
अखनीः अखनिष्टम् अखनिष्ट
अखनिषम् अखनिष्व अखनिष्म
अखानीत् अखानिष्टाम् अखानिषुः
अखानीः अखानिष्टम् अखानिष्ट
अखानिषम् अखानिष्व अखानिष्म

प० चखान चखनतुः चख्नुः
चखनिथ चखनथुः चख्न
चखान चखन चख्निव चख्निम
मतान्तरे खायादित्याद्यपि

आ० खन्यात् खन्यास्ताम् खन्यासुः
खन्याः खन्यास्तम् खन्यास्त
खन्यासम् खन्यास्व खन्यास्म

श्व० खनिता खनितारौ खनितारः
खनितासि खनितास्थः खनितास्थ
खनितास्मि खनितास्वः खनितास्मः

भ० खनिष्यति खनिष्यतः खनिष्यन्ति
खनिष्यसि खनिष्यथः खनिष्यथ
खनिष्यामि खनिष्यावः खनिष्यामः

क्रि० अखनिष्यत् अखनिष्यताम् अखनिष्यन्
अखनिष्यः अखनिष्यतम् अखनिष्यत
अखनिष्यम् अखनिष्याव अखनिष्याम

व० खनते खनेते खनन्ते
खनसे खनेथे खनध्वे
खने खनावहे खनामहे

खनेत खनेयाताम् खनेरन्
खनेथाः खनेयाथाम् खनेध्वम्
खनेय खनेवहि खनेमहि

प० खनताम् खनेताम् खनन्ताम्
खनस्व खनेथाम् खनध्वम्
खनै खनावहै खनामहै

ह्य० अखनत अखनेताम् अखनन्त
अखनथाः अखनेथाम् अखनध्वम्
अखने अखनावहि अखनामहि

अ० अखनिष्ट अखनिषाताम् अखनिषत
अखनिष्ठाः अखनिषाथाम् अखनिढ्वम् ध्वम्
अखनिषि अखनिष्वहि अखनिष्महि

प० चख्ने चख्नाते चख्निरे
चख्निषे चख्नाथे चख्निध्वे
चख्ने चख्निवहे चख्निमहे

आ० खनिषीष्ट खनिषीयास्ताम् खनिषीरन्
खनिषीष्ठाः खनिषीयास्थाम् खनिषीध्वम्
खनिषीय खनिषीवहि खनिषीमहि

श्व० खनिता खनितारौ खनितारः
खनितासे खनितासाथे खनिताध्वे
खनिताहे खनितास्वहे खनितास्महे

भ० खनिष्यते खनिष्येते खनिष्यन्ते
खनिष्यसे खनिष्येथे खनिष्यध्वे
खनिष्ये खनिष्यावहे खनिष्यामहे

क्रि० अखनिष्यत अखनिष्येताम् अखनिष्यन्त
अखनिष्यथाः अखनिष्येथाम् अखनिष्यध्वम्
अखनिष्ये अखनिष्यावहि अखनिष्यामहि

॥ खानी-अवखण्डने ; आर्जवेऽथ ; तु ॥
खंडित करवुं,

व० दीदांसति दीदांसतः दीदांसन्ति
दीदांससि दीदांसथः दीदांसथ
दीदांसामि दीदांसाव दीदांसामः
सं० दीदांसेत दीदांसेताम् दीदांसेयुः
दीदांसेः दीदांसेतम् दीदांसेत
दीदांसेयम् दीदांसेव दीदांसेम
प० दीदांसतु:दीदांसतानदीदांसनामदीदांसन्तु
दीदांस ,, दीदांसतम दीदांसत
दीदांसानि दीदांसाव दीदांसाम
ह्य० अदीदांसत् अदीदांसताम् अदीदांसन्
अदीदांसः अदीदांसतम् अदीदांसत
अदीदांसम् अदीदांसाव अदीदांसाम
अ० अदीदांसीत् अदीदांसिष्टाम् अदीदांसिषुः
अदीदांसीः अदीदांसिष्टम् अदीदांसिष्ट
अदीदांसिषम् अदीदांसिष्व अदीदांसिष्म
प० दीदांसाञ्चकार दीदांसाञ्चक्रतुः -साञ्चक्रुः
दीदांसाञ्चकर्थ दीदांसाञ्चक्रथुः दीदांसाञ्चक
दीदांसाञ्चकार चकर दीदांसाञ्चकृव-साञ्चकृम
आ० दीदांस्यात् दीदांस्यास्ताम् दीदांस्यासुः
दीदांस्याः दीदांस्यास्तम् दीदांस्यास्त
दीदांस्यासम् दीदांस्यास्व दीदांस्यास्म
श्व०दीदांसिता दीदांसितारौ दीदांसितारः
दीदांसितासि दीदांसितास्थः दीदांसितास्थ
दीदांसितास्मि दीदांसितास्वः दीदांसितास्मः
भ० दीदांसिष्यतिदीदांसिष्यतःदीदांसिष्यन्ति
दीदांसिष्यसि दीदांसिष्यथः दीदांसिष्यथ
दीदांसिष्यामिदीदांसिष्यावःदीदांसिष्यामः
क्रि०अदीदांसिष्यत्अदीदांसिष्यताम्-सिष्यन्
अदीदांसिष्यःअदीदांसिष्यतमअदीदांसिष्यत
अदीदांसिष्यम्अदीदांसिष्याव अदीदांसिष्याम
व० दीदांसते दीदांसेते दीदांसन्ते
दीदांससे दीदांसेथे दीदांसध्वे
दीदांसे दीदांसावहे दीदांसामहे
सं० दीदांसेत दीदांसेयाताम् दीदांसेरन्
दीदांसेथाः दीदांसेयाथाम् दीदांसेध्वम्
दीदांसेय दीदांसेवहि दीदांसेमहि
प० दीदांसताम् दीदांसेताम् दीदांसन्ताम्
दीदांसस्व दीदांसेथाम् दीदांसध्वम्
दीदांसै दीदांसावहै दीदांसामहै
ह्य० अदीदांसत अदीदांसेताम् अदीदांसन्त
अदीदांसथाः अदीदांसेथाम् अदीदांसध्वम्
अदीदांसे अदीदांसावहि अदीदांसामहि
अ०अदीदांसिष्टअदीदांसिषाताम्अदीदांसिषत
अदीदांसिष्ठाःअदीदांसिषाथाम् अदीदांसिध्वम्
-ढ्ढ्वम्
अदीदांसिषि अदीदांसिष्वहि अदीदांसिष्महि
प० दीदांसाञ्चक्रेदीदांसाञ्चक्रातेदीदांसाञ्चक्रिरे
दीदांसाञ्चकृषे दीदांसाञ्चक्राथे दीदांसाञ्चकृढ्वे
दीदांसाञ्चक्रे दीदांसाञ्चकृवहे दीदांसाञ्चकृमहे
दीदांसामास । दीदांसाम्बभूव
आ० दीदांसिषीष्टदीदांसिषीयास्तामदीदांसिषीरन्
दीदांसिषीष्ठाः दीदांसिषीयास्थाम् दीदांसिषीध्वम्
दीदांसिषीय दीदांसिषीवहि दीदांसिषीमहि
श्व०दीदांसिता दीदांसितारौ दीदांसितारः
दीदांसितासे दीदांसितासाथे दीदांसिताध्वे
दीदांसिताहे दीदांसितास्वहे दीदांसितास्महे
भ० दीदांसिष्यते दीदांसिष्येते दीदांसिष्यन्ते
दीदांसिष्यसे दीदांसिष्येथे दीदांसिष्यध्वे
दीदांसिष्ये दीदांसिष्यावहे दीदांसिष्यामहे
क्रि०अदीदांसिष्यत अदीदांसिष्येताम् सिष्यन्त
अदीदांसिष्यथाः अदीदांसिष्येथाम्-सिष्यध्वम्
अदीदांसिष्ये अदीदांसिष्यावहिअदीदांसिष्यामहि

॥ अर्थान्तरे-दानयति ॥

॥ शानि-तेजने ॥ तीक्ष्ण करवुं अणीदार थवुं
शीशांसते । अशीशांसिष्ट । शिशांसाञ्चक्रे
शीशांसति । अशीशांसीत् । शीशांसाञ्चकार

अर्थान्तरे तु-शानयति

॥ शपोंग्-आक्रोशे. ॥ शाप देवो

व० शपति शपतः शपन्ति
शपसि शपथः शपथ
शपामि शपावः शपामः
स० शपेत् शपेताम् शपेयुः
शपेः शपेतम् शपेत
शपेयम् शपेव शपेम
प० शपतु शपतात् शपताम् शपन्तु
शप ,, शपतम् शपत
शपानि शपाव शपाम
ह्य० अशपत अशपताम् अशपन्
अशपः अशपतम् अशपत
अशपम् अशपाव अशपाम
अ० अशाप्सीत् अशाप्ताम् अशाप्सुः
अशाप्सीः अशाप्तम् अशाप्त
अशाप्सम् अशाप्स्व अशाप्स्म
प० शशाप शेपतुः शेपुः
शेपिथ शशप्थ शेपथुः शेप
शशाप शशप शेपिव शेपिम
०शप्यात् शप्यास्ताम् शप्यासुः
शप्याः शप्यास्तम्
शप्यासम् शप्यास्व शप्यास्म
श्व०शप्ता शप्तारौ शप्तारः
शप्तासि शप्तास्थः शप्तास्थ
शप्तास्मि शप्तास्वः शप्तास्मः
भ० शप्स्यति शप्स्यतः शप्स्यन्ति
शप्स्यसि शप्स्यथः शप्स्यथ
शप्स्यामि शप्स्यावः शप्स्यामः
क्रि०अशप्स्यत् अशप्स्यताम् अशप्स्यन्
अशप्स्यः अशप्स्यतम् अशप्स्यत
अशप्स्यम् अशप्स्याव अशप्स्याम
व० शपते शपेते शपन्ते
शपसे शपेथे शपध्वे
शपे शपावहे शपामहे
स० शपेत शपेयाताम् शपेरन्
शपेथाः शपेयाथाम् शपेध्वम्
शपेय शपेवहि शपेमहि
प० शपताम् शपेताम् शपन्ताम्
शपस्व शपेथाम् शपध्वम्
शपै शपावहै शपामहै
ह्य० अशपत अशपेताम् अशपन्त
अशपथाः अशपेथाम् अशपध्वम्
अशपे अशपावहि अशपामहि
अ० अशप्त. अशप्साताम् अशप्सत
अशप्थाः अशप्साथाम् अशब्ध्वम्-ध्वम्
अशप्सि अशप्स्वहि अशप्स्महि
प० शेपे शेपाते शेपिरे
शेपिषे शेपाथे शेपिध्वे
शेपे शेपिवहे शेपिमहे
आ०शप्सीष्ट शप्सीयास्ताम् शप्सीरन्
शप्सीष्ठाः शप्सीयास्थाम् शप्सीध्वम्
शप्सीय शप्सीवहि शप्सीमहि
श्व०शप्ता शप्तारौ शप्तारः
शप्तासे शप्तासाथे शप्ताध्वे
शप्ताहे शप्तास्वहे शप्तास्महे
भ० शप्स्यते शप्स्येते शप्स्यन्ते
शप्स्यसे शप्स्येथे शप्स्यध्वे
शप्स्ये शप्स्यावहे शप्स्यामहे
क्रि० अशप्स्यत अशप्स्येताम् अशप्स्यन्त
अशप्स्यथाः अशप्स्येथाम् अशप्स्यध्वम्
अशप्स्ये अशप्स्यावहि अशप्स्यामहि

॥ चायृग्-पूजानिशामनयोः ॥ पूजवुं, हिताहितनो विचार करवो ।
चायति । अचायीत् । चचाय ।
चायते । अचायिष्ट । चचाये ।

॥ व्ययी-गतौ ॥ जवुं ।
व्ययति । अव्ययीत् । वव्याय ।
व्ययते । अव्ययिष्ट । वव्यये ।

॥ अली भूषणपर्याप्तिवारणषु ॥ शोभाववु पुरु पडवुं, निवारण करवुं ।

अलति । आलीत् । आल ।
अलते । आलिष्ट । आले ।
॥ धावृग्-गतिशुद्धयोः ॥ जवुं, शुद्ध थवुं
धावति । अधावीत । दधाव ।
धावते । अधाविष्ट । दधावे ।
॥ चीवृग्-ग्रपोयत ॥ लेवुं, ढाकवुं ।
चीवति । अचीवीत । चिचीव ।
चीवते । अचीविष्ट । चिचीवे ।
॥ दाशृग्-दाने ॥ आपवुं ॥
दाशति । अदाशीत् । ददाश ॥
दाशते । अदाशिष्ट । ददाशे ।
॥ झषी-आदानसंवरणयोः ॥
ग्रहण करवुं ढाकवुं ।
झषति अझाषीत् ,अझषीत् जझाष
झषते । अझषिष्ट । जझषे.।
॥ भेषृग्-भये ॥ भय पामवो ।
भेषति । अभेषीत् । बिभेष ।
भेषते । अभेषिष्ट । बिभेषे ।
॥ भ्रेषृग्-चलने च ॥ चालवुं बीवुं ।
भ्रेषति । अभ्रेषीत । बिभ्रेष ।
भ्रेषते । अभ्रेषिष्ट । बिभ्रेषे ।
॥पषी-बाधनस्पर्शनयोः ॥ पीडा करवी शुं थवुं
पषति । अपाषीत् । अपषीत् ।
पपाष । पषते ।। अपषिष्ट । पेषे.।
॥ लषी-कान्तौ, कान्तिरिच्छा ॥ इच्छा करव
व० अभिलष्यति अभिलष्यतः अभिलष्यन्ति
अभिलष्यसि अभिलष्यथः अभिलष्यथ
अभिलष्यामि अभिलष्यावः अभिलष्यामः
स० लष्येत् लष्येताम् लष्येयुः
लष्येः लष्येतम् लष्येत
लष्येयम् लष्येव लष्येम
प० लष्यतु लष्यतात् लष्यन्ताम् लष्यन्तु
लष्य ,, लष्यतम् लष्यत
लष्याणि लष्याव लष्याम
ह्य० अलष्यत् अलष्यताम् अलष्यन्
अलष्यः अलष्यतम् अलष्यत
अलष्यम् अलष्याव अलष्याम
व० अभिलषति अभिलषतः अभिलषन्ति
अभिलषसि अभिलषथः अभिलषथ
अभिलषामि अभिलषावः अभिलषामः
स० लषेत् लषेताम् लषेयुः
लषेः लषेतम् लषेत
लषेयम् लषेव लषेम
प० लषतु लषतात् लषताम् लषन्तु
लष ,, लषतम् लषत
लषाणि लषाव लषाम
ह्य० अलषत् अलषताम् अलषन्
अलषः अलषतम् अलषत
अलषम् अलषाव अलषाम
अ० अलषीत् अलषिष्टाम् अलषिषुः
अलषीः अलषिष्टम् अलषिष्ट
अलषिषम् अलषिष्व अलषिष्म
अलाषीत् अलाषिष्टाम् अलाषिषुः
अलाषीः अलाषिष्टम् अलाषिष्ट
अलाषिषम् अलाषिष्व अलाषिष्म
प० ललाष लेषतुः लेषुः
लेषिथ लेषथुः लेष
ललाष ललष लेषिव लेषिम
आ० लष्यात् लष्यास्ताम् लष्यासुः
लष्याः लष्यास्तम् लष्यास्त
लष्यासम् लष्यास्व लष्यास्म
श्व० लषिता लषितारौ लषितारः
लषितासि लषितास्थः लषितास्थ
लषितास्मि लषितास्वः लषितास्मः
भ० लषिष्यति लषिष्यतः लषिष्यन्ति
लषिष्यसि लषिष्यथः लषिष्यथ
लषिष्यामि लषिष्यावः लषिष्यामः
क्रि० अलषिष्यत् अलषिष्यताम् अलषिष्यन्
अलषिष्यः अलषिष्यतम् अलषिष्यत

अलषिष्यम् अलषिष्याव अलषिष्याम

व० अभिलष्यते अभिलष्येते अभिलष्यन्ते
अभिलष्यसे अभिलष्येथे अभिलष्यध्वे
अभिलष्ये अभिलष्यावहे अभिलष्यामहे

स० लष्येत लष्येयाताम् लष्येरन्
लष्येथाः लष्येयाथाम् लष्येध्वम्
लष्येय लष्येवहि लष्येमहि

प० लष्यताम् लष्येताम् लष्यन्ताम्
लष्यस्व लष्येथाम् लष्यध्वम्
लष्यै लष्यावहै लष्यामहै

ह्य० अलष्यत अलष्येताम् अलष्यन्त
अलष्यथाः अलष्येथाम् अलष्यध्वम्
अलष्ये अलष्यावहि अलष्यामहि

व० अभिलषते अभिलषेते अभिलषन्ते
अभिलषसे अभिलषेथे अभिलषध्वे
अभिलषे अभिलषावहे अभिलषामहे

स० लषेत लषेयाताम् लषेरन्
लषेथाः लषेयाथाम् लषेध्वम्
लषेय लषेवहि लषेमहि

प० लषताम् लषेताम् लषन्ताम्
लषस्व लषेथाम् लषध्वम्
लषै लषावहै लषामहै

ह्य० अलषत अलषेताम् अलषन्त
अलषथाः अलषेथाम् अलषध्वम्
अलषे अलषावहि अलषामहि

अ० अलषिष्ट अलषिषाताम् अलषिषत
अलषिष्ठाः अलषिषाथाम् अलषिढ्ढ्वम्-ध्वम्
अलषिषि अलषिष्वहि अलषिष्महि

प० लेषे लेषाते लेषिरे
लेषिषे लेषाथे लेषिध्वे
लेषे लेषिवहे लेषिमहे

आ० लषिषीष्ट लषिषीयास्ताम् लषिषीरन्
लषिषीष्ठाः लषिषीयास्थाम् लषिषीध्वम्
लषिषीय लषिषीवहि लषिषीमहि

श्व० लषिता लषितारौ लषितारः
लषितासे लषितासाथे लषिताध्वे
लषिताहे लषितास्वहे लषितास्महे

भ० लषिष्यते लषिष्येते लषिष्यन्ते
लषिष्यसे लषिष्येथे लषिष्यध्वे
लषिष्ये लषिष्यावहे लषिष्यामहे

क्रि० अलषिष्यत अलषिष्येताम् अलषिष्यन्त
अलषिष्यथाः अलषिष्येथाम् अलषिष्यध्वम्
अलषिष्ये अलषिष्यावहि अलषिष्यामहि

॥ चषी–भक्षणे ॥ खावुं ।
चषति । अचाषीत्–अचषीत् । चचाष
चषते । अचषिष्ट । चेषे ।

॥ छषी–हिंसायाम् ॥ हिंसा करवी ।
छषति । अच्छषीत् । अच्छाषीत् ।
चच्छाष । छषते । अच्छषिष्ट चच्छषे

॥ त्विषी–दीप्तौ ॥ चळकवुं ।

व० त्वेषति त्वेषतः त्वेषन्ति
त्वेषसि त्वेषथः त्वेषथ
त्वेषामि त्वेषावः त्वेषामः

स० त्वेषेत् त्वेषेताम् त्वेषेयुः
त्वेषेः त्वेषेतम् त्वेषेत
त्वेषेयम् त्वेषेव त्वेषेम

प० त्वेषतु त्वेषतात् त्वेषताम् त्वेषन्तु
त्वेष ,, त्वेषतम् त्वेषत
त्वेषाणि त्वेषाव त्वेषाम

ह्य० अत्वेषत् अत्वेषताम् अत्वेषन्
अत्वेषः अत्वेषतम् अत्वेषत
अत्वेषम् अत्वेषाव अत्वेषाम

अ० अत्विक्षत् अत्विक्षताम् अत्विक्षन्
अत्विक्षः अत्विक्षतम् अत्विक्षत
अत्विक्षम् अत्विक्षाव अत्विक्षाम

प० तित्वेष तित्विषतुः तित्विषुः
तित्वेषिथ तित्विषथुः तित्विष
तित्वेष तित्विषिव तित्विषिम

आ० त्विष्यात् त्विष्यास्ताम् त्विष्यासुः
त्विष्याः त्विष्यास्तम् त्विष्यास्त
त्विष्यासम् त्विष्यास्व त्विष्यास्म
श्व० त्वेष्टा त्वेष्टारौ त्वेष्टारः
त्वेष्टासि त्वेष्टास्थः त्वेष्टास्थ
त्वेष्टास्मि त्वेष्टास्वः त्वेष्टास्मः
भ० त्वेक्ष्यति त्वेक्ष्यतः त्वेक्ष्यन्ति
त्वेक्ष्यसि त्वेक्ष्यथः त्वेक्ष्यथ
त्वेक्ष्यामि त्वेक्ष्यावः त्वेक्ष्यामः
क्रि० अत्वेक्ष्यत् अत्वेक्ष्यताम् अत्वेक्ष्यन्
अत्वेक्ष्यः अत्वेक्ष्यतम् अत्वेक्ष्यत
अत्वेक्ष्यम् अत्वेक्ष्याव अत्वेक्ष्याम
व० त्वेषते त्वेषेते त्वेषन्ते
त्वेषसे त्वेषेथे त्वेषध्वे
त्वेषे त्वेषावहे त्वेषामहे
स० त्वेषेत त्वेषेयाताम् त्वेषेरन्
त्वेषेथाः त्वेषेयाथाम् त्वेषेध्वम्
त्वेषेय त्वेषेवहि त्वेषेमहि
प० त्वेषताम् त्वेषेताम् त्वेषन्ताम्
त्वेषस्व त्वेषेथाम् त्वेषध्वम्
त्वेषै त्वेषावहै त्वेषामहै
ह्य० अत्वेषत अत्वेषेताम् अत्वेषन्त
अत्वेषथाः अत्वेषेथाम् अत्वेषध्वम्
अत्वेषे अत्वेषावहि अत्वेषामहि
अ० अत्विक्षत अत्विक्षाताम् अत्विक्षन्त
अत्विक्षथाः अत्विक्षाथाम् अत्विक्षध्वम्
अत्विक्षि अत्विक्षावहि अत्विक्षामहि
प० तित्विषे तित्विषाते तित्विषिरे
तित्विषिषे तित्विषाथे तित्विषिध्वे
तित्विषे तित्विषिवहे तित्विषिमहे
आ० त्विक्षीष्ट त्विक्षीयास्ताम् त्विक्षीरन्
त्विक्षीष्ठाः त्विक्षीयास्थाम् त्विक्षीध्वम्
त्विक्षीय त्विक्षीवहि त्विक्षीमहि
श्व० त्वेष्टा त्वेष्टारौ त्वेष्टारः
त्वेष्टासे त्वेष्टासाथे त्वेष्टाध्वे
त्वेष्टाहे त्वेष्टास्वहे त्वेष्टास्महे
भ० त्वेक्ष्यते त्वेक्ष्येते त्वेक्ष्यन्ते
त्वेक्ष्यसे त्वेक्ष्येथे त्वेक्ष्यध्वे
त्वेक्ष्ये त्वेक्ष्यावहे त्वेक्ष्यामहे
क्रि० अत्वेक्ष्यत अत्वेक्ष्येताम् अत्वेक्ष्यन्त
अत्वेक्ष्यथाः अत्वेक्ष्येथाम् अत्वेक्ष्यध्वम्
अत्वेक्ष्ये अत्वेक्ष्यावहि अत्वेक्ष्यामहि

॥ अषी असी–गत्यादानयोश्च ॥ जवुं, लेवुं, चळकवुं ।
अषति । आषीत् । आष ।
अषते । आषिष्ट । आषे ।
असति । आसीत् । आस ।
असते । आसिष्ट । आसे ।

॥ दासृग्–दाने ॥ आपवुं ।
दासति । अदासीत् । ददास ।
दासते । अदासिष्ट । ददासे ।

॥ माहृग्–माने ॥ वरतवुं, मापवुं ।
माहति । अमाहीत् । ममाह ।
माहते । अमाहिष्ट । ममाहे ।

॥ गुहौग्–संवरणे ॥ ढांकवुं ।
व० निगूहति निगूहतः निगूहन्ति
निगूहसि निगूहथः निगूहथ
निगूहामि निगूहावः निगूहामः
स० निगूहेत् निगूहेताम् निगूहेयुः
निगूहेः निगूहेतम् निगूहेत
निगूहेयम् निगूहेव निगूहेम
प० निगूहतु निगूहतात् निगूहताम् निगूहन्तु
निगूह ,, निगूहतम् निगूहत
निगूहानि निगूहाव निगूहाम
ह्य० न्यगूहत् न्यगूहताम् न्यगूहन्
न्यगूहः न्यगूहतम् न्यगूहत
न्यगूहम् न्यगूहाव न्यगूहाम
अ० न्यगूहीत् न्यगूहिष्टाम् न्यगूहिषुः
न्यगूहीः न्यगूहिष्टम् न्यगूहिष्ट
न्यगूहिषम् न्यगूहिष्व न्यगूहिष्म

न्यघुक्षत् न्यघुक्षताम् न्यघुक्षन्
न्यघुक्षः न्यघुक्षतम् न्यघुक्षत
न्यघुक्षम् न्यघुक्षाव न्यघुक्षाम

प० जुगूह जुगुहतुः जुगुहुः
जुगूहिथ जुगुहथुः जुगुह
जुगूह जुगुहिव जुगुहिम

आ० गुह्यात् गुह्यास्ताम् गुह्यासुः
गुह्याः गुह्यास्तम् गुह्यास्त
गुह्यासम् गुह्यास्व गुह्यास्म

श्व० गूहिता गूहितारौ गूहितारः
गूहितासि गूहितास्थः गूहितास्थ
गूहितास्मि गूहितास्वः गूहितास्मः
गोढा गोढारौ गोढारः
गोढासि गोढास्थः गोढास्थ
गोढास्मि गोढास्वः गोढास्मः

भ० गूहिष्यति गूहिष्यतः गूहिष्यन्ति
गूहिष्यसि गूहिष्यथः गूहिष्यथ
गूहिष्यामि गूहिष्यावः गूहिष्यामः
घोक्ष्यति घोक्ष्यतः घोक्ष्यन्ति
घोक्ष्यसि घोक्ष्यथः घोक्ष्यथ
घोक्ष्यामि घोक्ष्यावः घोक्ष्यामः

क्रि० अगूहिष्यत् अगूहिष्यताम् अगूहिष्यन्
अगूहिष्यः अगूहिष्यतम् अगूहिष्यत
अगूहिष्यम् अगूहिष्याव अगूहिष्याम
अघोक्ष्यत् अघोक्ष्यताम् अघोक्ष्यन्
अघोक्ष्यः अघोक्ष्यतम् अघोक्ष्यत
अघोक्ष्यम् अघोक्ष्याव अघोक्ष्याम

व० निगूहते निगूहेते निगूहन्ते
निगूहसे निगूहेथे निगूहध्वे
निगूहे निगूहावहे निगूहामहे

स० निगूहेत निगूहेयाताम् निगूहेरन्
निगूहेथाः निगूहेयाथाम् निगूहेध्वम्
निगूहेय निगूहेवहि निगूहेमहि

प० निगूहताम् निगूहेताम् निगूहन्ताम्
निगूहस्व निगूहेथाम् निगूहध्वम्
निगूहै निगूहावहै निगूहामहै

ह्य० न्यगूहत न्यगूहेताम् न्यगूहन्त
न्यगूहथाः न्यगूहेथाम् न्यगूहध्वम्
न्यगूहे न्यगूहावहि न्यगूहामहि

अ० न्यगूहिष्ट न्यगूहिषाताम् न्यगूहिषत
न्यगूहिष्ठाः न्यगूहिषाथाम् न्यगूहिढ्ढ्वम्
ढ्वम्-ध्वम्
न्यगूहिषि न्यगूहिष्वहि न्यगूहिष्महि
न्यगूढ न्यघुक्षत न्यघुक्षाताम् न्यघुक्षन्त
न्यगूढाः न्यघुक्षथाः न्यघुक्षाथाम्
न्यघूढ्ढ्वम्-न्यघुक्षध्वम्
न्यघुक्षि न्यघुक्षावहि न्यगुह्वहि न्यघुक्षामहि

प० जुगुहे जुगुहाते जुगुहिरे
जुगुहिषे जुघुक्षे जुगुहाथे जुगुहिढ्वे-ध्वे
जुगुहे जुगुहिवहे जुगुहिमहे

आ० गूहिषीष्ट गूहिषीयास्ताम् गूहिषीरन्
गूहिषीष्ठाः गूहिषीयास्थाम् गूहिषीढ्वम्-ध्वम्
गूहिषीय गूहिषीवहि गूहिषीमहि
घुक्षीष्ट घुक्षीयास्ताम् घुक्षीरन्
घुक्षीष्ठाः घुक्षीयास्थाम् घुक्षीध्वम्
घुक्षीय घुक्षीवहि घुक्षीमहि

श्व० गूहिता गूहितारौ गूहितारः
गूहितासे गूहितासाथे गूहिताध्वे
गूहिताहे गूहितास्वहे गूहितास्महे
गोढा गोढारौ गोढारः
गोढासे गोढासाथे गोढाध्वे
गोढाहे गोढास्वहे गोढास्महे

भ० गूहिष्यते गूहिष्येते गूहिष्यन्ते
गूहिष्यसे गूहिष्येथे गूहिष्यध्वे
गूहिष्ये गूहिष्यावहे गूहिष्यामहे
घोक्ष्यते घोक्ष्येते [illegible]न्ते
घोक्ष्यसे घोक्ष्येथे घोक्ष्यध्वे
घोक्ष्ये घोक्ष्यावहे घोक्ष्यामहे

क्रि० अगूहिष्यत अगूहिष्येताम् अगूहिष्यन्त
अगूहिष्यथाः अगूहिष्येथाम् अगूहिष्यध्वम्

अगूहिष्ये अगूहिष्यावहि अगूहिष्यामहि
अघोक्ष्यत अघोक्ष्येताम् अघोक्ष्यन्त
अघोक्ष्यथाः अघोक्ष्येथाम् अघोक्ष्यध्वम्
अघोक्ष्ये अघोक्ष्यावहि अघोक्ष्यामहि

॥ भ्लक्षी— भक्षणे, ॥ खावुं

भ्लक्षति अभ्लक्षीत् बभ्लक्ष
भ्लक्षते अभ्लक्षिष्ट बभ्लक्षे

## ॥ इति भ्वादयः उभयपदिनः ॥

---

## ॥ अथ द्युतादयः ॥

॥ द्युति दीप्तौ ॥ चळकवुं

व० द्योतते द्योतेते द्योतन्ते
द्योतसे द्योतेथे द्योतध्वे
द्योते द्योतावहे द्योतामहे

स० द्योतेत द्योतेयाताम् द्योतेरन्
द्योतेथाः द्योतेयाथाम् द्योतेध्वम्
द्योतेय द्योतेवहि द्योतेमहि

प० द्योतताम् द्योतेताम् द्योतन्ताम्
द्योतस्व द्योतेथाम् द्योतध्वम्
द्योतै द्योतावहै द्योतामहै

ह्य० अद्योतत अद्योतेताम् अद्योतन्त
अद्योतथाः अद्योतेथाम् अद्योतध्वम्
अद्योते अद्योतावहि अद्योतामहि

अ० अद्युतत् अद्युतताम् अद्युतन्
अद्युतः अद्युततम् अद्युतत
अद्युतम् अद्युताव अद्युताम
अद्योतिष्ट अद्योतिषाताम् अद्योतिषत
अद्योतिष्ठाः अद्योतिषाथाम् अद्योतिड्ढ्वम्-ध्वम्
अद्योतिषि अद्योतिष्वहि अद्योतिष्महि

प० दिद्युते दिद्युताते दिद्युतिरे
दिद्युतिषे दिद्युताथे दिद्युतिध्वे
दिद्युते दिद्युतिवहे दिद्युतिमहे

आ० द्योतिषीष्ट द्योतिषीयास्ताम् द्योतिषीरन्
द्योतिषीष्ठाः द्योतिषीयास्थाम् द्योतिषीध्वम्
द्योतिषीय द्योतिषीवहि द्योतिषीमहि

श्व० द्योतिता द्योतितारौ द्योतितारः
द्योतितासे द्योतितासाथे द्योतिताध्वे
द्योतिताहे द्योतितास्वहे द्योतितास्महे

भ० द्योतिष्यते द्योतिष्येते द्योतिष्यन्ते
द्योतिष्यसे द्योतिष्येथे द्योतिष्यध्वे
द्योतिष्ये द्योतिष्यावहे द्योतिष्यामहे

क्रि० अद्योतिष्यत अद्योतिष्येताम् अद्योतिष्यन्त
अद्योतिष्यथाः अद्योतिष्येथाम् अद्योतिष्यध्वम्
अद्योतिष्ये अद्योतिष्यावहि अद्योतिष्यामहि

॥ रुचि-अभिप्रीत्यां च ॥ अभिलाष करवी, चळकवुं, रुचवुं,

व० रोचते रोचेते रोचन्ते
रोचसे रोचेथे रोचध्वे
रोचे रोचावहे रोचामहे

स० रोचेत रोचेयाताम् रोचेरन्
रोचेथाः रोचेयाथाम् रोचेध्वम्
रोचेय रोचेवहि रोचेमहि

प० रोचताम् रोचेताम् रोचन्ताम्
रोचस्व रोचेथाम् रोचध्वम्
रोचै रोचावहै रोचामहै

ह्य० अरोचत अरोचेताम् अरोचन्त
अरोचथाः अरोचेथाम् अरोचध्वम्
अरोचे अरोचावहि अरोचामहि

अ० अरुचत् अरुचताम् अरुचन्
अरुचः अरुचतम् अरुचत
अरुचम् अरुचाव अरुचाम
अरोचिष्ट अरोचिषाताम् अरोचिषत
अरोचिष्ठाः अरोचिषाथाम् अरोचिड्ढ्वम्-ध्वम्
अरोचिषि अरोचिष्वहि अरोचिष्महि

प० रुरुचे रुरुचाते रुरुचिरे
रुरुचिषे रुरुचाथे रुरुचिध्वे
रुरुचे रुरुचिवहे रुरुचिमहे

आ० रोचिषीष्ट रोचिषीयास्ताम् रोचिषीरन्
रोचिषीष्ठाः रोचिषीयास्थाम् रोचिषीध्वम्
रोचिषीय रोचिषीवहि रोचिषीमहि

श्व०रोचिता रोचितारौ रोचितारः
रोचितासे रोचितासाथे रोचिताध्वे
रोचिताहे रोचितास्वहे रोचितास्महे
भ० रोचिष्यते रोचिष्येते रोचिष्यन्ते
रोचिष्यसे रोचिष्येथे रोचिष्यध्वे
रोचिष्ये रोचिष्यावहे रोचिष्यामहे
क्रि०अरोचिष्यत अरोचिष्येताम् अरोचिष्यन्त
अरोचिष्यथाः अरोचिष्येथाम् अरोचिष्यध्वम्
अरोचिष्ये अरोचिष्यावहि अरोचिष्यामहि

॥ घुटि-परिवर्त्तने ॥ फेरफार थवो, पाछुं आपवुं

घोटते । अघुटत् । अघोटिष्ट । जुघुटे ।

॥ रुटि लुटि लुठि -प्रतिघाते ॥ पीडा करवी, दुःख देवुं, सामु मारवुं,

रोटते । अरुटत् । अरोटिष्ट । रुरुटे ।
लोटते । अलुटत् । अलोटिष्ट । लुलुटे ।
लोठते । अलुठत् । अलोठिष्ट । लुलुठे ।

॥ श्विताङ्-वर्णे ॥ धोळा थवुं,

श्वेतते । अश्वितत् । अश्वेतिष्ट । शिश्विते

॥ ञिमिदाङ्-स्नेहने ॥ चीकणा थवुं,

मेदते । अमिदत् । अमेदिष्ट । मिमिदे ।

॥ ञिक्ष्विदाङ्, ञिष्विदाङ्-मोचने च ॥ मुकावबुं, चीकणा थवुं,

क्ष्वेदते । अक्ष्विदत् । अक्ष्वेदिष्ट । चिक्ष्विदे । स्वेदते । अस्विदत् । अस्वेदिष्ट । सिष्विदे

॥ शुभि-दीप्तौ, ॥ चळकवुं, शोभवुं,

शोभते । अशुभत् । अशोभिष्ट । शुशुभे ।

॥ क्षुभि-सञ्चलने ॥ खळभळवुं, क्षोभ पामवो

॥ क्षोभते । अक्षुभत् । अक्षोभिष्ट । चुक्षुभे ।

॥ णभि तुभि-हिंसायाम् ॥ हिंसा करवी,

नभते । अनभत् । अनभिष्ट । नेभे
तोभते । अतुभत् । अतोभिष्ट । तुतुभे

॥ स्रम्भूङ्-विश्वासे ॥ विश्वास करवो

स्रम्भते । अस्रभत् । अस्रम्भिष्ट । सस्रम्भे ।

॥ भ्रंशूङ् स्रंसूङ् अवस्रंसने ॥ नाश पामवुं,

भ्रंशते । अभ्रशत् । अभ्रंशिष्ट । बभ्रंशे ।
स्रंसते । अस्रसत् । अस्रंसिष्ट । सस्रंसे ।

॥ ध्वंसूङ्-गतौ च ॥ जवुं, नाश पामवुं,

ध्वंसते । अध्वसत । अध्वंसिष्ट । दध्वंसे

॥ अथ द्युताद्यन्तर्गणो वृतादिपञ्चकः ॥

---

॥ वृतङ्-वर्त्तने ॥ वर्तवुं, होवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | वर्त्तते | वर्त्तेते | वर्त्तन्ते |
| | वर्त्तसे | वर्त्तेथे | वर्त्तध्वे |
| | वर्त्ते | वर्त्तावहे | वर्त्तामहे |
| स० | वर्त्तेत | वर्त्तेयाताम् | वर्त्तेरन् |
| | वर्त्तेथाः | वर्त्तेयाथाम् | वर्त्तेध्वम् |
| | वर्त्तेय | वर्त्तेवहि | वर्त्तेमहि |
| प० | वर्त्तताम् | वर्त्तेताम् | वर्त्तन्ताम् |
| | वर्त्तस्व | वर्त्तेथाम् | वर्त्तध्वम् |
| | वर्त्तै | वर्त्तावहै | वर्त्तामहै |
| ह्य० | अवर्त्तत | अवर्त्तेताम् | अवर्त्तन्त |
| | अवर्त्तथाः | अवर्त्तेथाम् | अवर्त्तध्वम् |
| | अवर्त्ते | अवर्त्तावहि | अवर्त्तामहि |
| अ० | अवृतत् | अवृतताम् | अवृतन् |
| | अवृतः | अवृततम् | अवृतत |
| | अवृतम् | अवृताव | अवृताम |
| | अवर्त्तिष्ट | अवर्त्तिषाताम् | अवर्त्तिषत |
| | अवर्त्तिष्ठाः | अवर्त्तिषाथाम् | अवर्त्तिड्ढ्वम् |
| | अवर्त्तिषि | अवर्त्तिष्वहि | अवर्त्तिष्महि |
| प | ववृते | ववृताते | ववृतिरे |
| | ववृतिषे | ववृताथे | ववृतिध्वे |
| | ववृते | ववृतिवहे | ववृतिमहे |
| आ० | वर्त्तिषीष्ट | वर्त्तिषीयास्ताम् | वर्त्तिषीरन् |
| | वर्त्तिषीष्ठाः | वर्त्तिषीयास्थाम् | वर्त्तिषीध्वम् |
| | वर्त्तिषीय | वर्त्तिषीवहि | वर्त्तिषीमहि |
| श्व० | वर्त्तिता | वर्त्तितारौ | वर्त्तितारः |
| | वर्त्तितासे | वर्त्तितासाथे | वर्त्तिताध्वे |
| | वर्त्तिताहे | वर्त्तितास्वहे | वर्त्तितास्महे |
| भ० | वर्त्तिष्यते | वर्त्तिष्येते | वर्त्तिष्यन्ते |

वर्त्तिष्यसे वर्त्तिष्येथे वर्त्तिष्यध्वे
वर्त्तिष्ये वर्त्तिष्यावहे वर्त्तिष्यामहे
वर्त्स्यति वर्त्स्यतः वर्त्स्यन्ति
वर्त्स्यसि वर्त्स्यथः वर्त्स्यथ
वर्त्स्यामि वर्त्स्यावः वर्त्स्यामः

क्रि० अवर्त्तिष्यत अवर्त्तिष्येताम् अवर्त्तिष्यन्त
अवर्त्तिष्यथाः अवर्त्तिष्येथाम् अवर्त्तिष्यध्वम्
अवर्त्तिष्ये अवर्त्तिष्यावहि अवर्त्तिष्यामहि
अवर्त्स्यत् अवर्त्स्यताम् अवर्त्स्यन्
अवर्त्स्यः अवर्त्स्यतम् अवर्त्स्यत
अवर्त्स्यम् अवर्त्स्याव अवर्त्स्याम

॥ स्यन्दौङ्-स्रवणे ॥ झरवुं, टपकवुं ।

व० स्यन्दते स्यन्देते स्यन्दन्ते
स्यन्दसे स्यन्देथे स्यन्दध्वे
स्यन्दे स्यन्दावहे स्यन्दामहे

स० स्यन्देत स्यन्देयाताम् स्यन्देरन्
स्यन्देथाः स्यन्देयाथाम् स्यन्देध्वम्
स्यन्देय स्यन्देवहि स्यन्देमहि

प० स्यन्दताम् स्यन्देताम् स्यन्दन्ताम्
स्यन्दस्व स्यन्देथाम् स्यन्दध्वम्
स्यन्दै स्यन्दावहै स्यन्दामहै

ह्य० अस्यन्दत अस्यन्देताम् अस्यन्दन्त
अस्यन्दथाः अस्यन्देथाम् अस्यन्दध्वम्
अस्यन्दे अस्यन्दावहि अस्यन्दामहि

अ० अस्यदत् अस्यदताम् अस्यदन्
अस्यदः अस्यदतम् अस्यदत
अस्यदम् अस्यदाव अस्यदाम
अस्यन्दिष्ट अस्यन्दिषाताम् अस्यन्दिषत
अस्यन्दिष्ठाः अस्यन्दिषाथाम् अस्यन्दि-
ढ्ढ्वम्-ध्वम्
अस्यन्दिषि अस्यन्दिष्वहि अस्यन्दिष्महि
अस्यन्त अस्यन्त्साताम् अस्यन्त्सत
अस्यन्त्थाः अस्यन्त्साथाम् अस्यन्ध्वम्
न्द्ध्वम् न्द्द्ध्वम्
अस्यन्त्सि अस्यन्त्स्वहि अस्यन्त्स्महि

प० सस्यन्दे सस्यन्दाते सस्यन्दिरे
सस्यन्दिषे सस्यन्दाथे सस्यन्दिध्वे
सस्यन्त्से सस्यन्द्ध्वे
सस्यन्दे सस्यन्दिवहे सस्यन्दिमहे
मतांतरे--सस्यन्द्वहे सस्यन्द्महे

आ० स्यन्दिषीष्ट स्यन्दिषीयास्ताम् स्यन्दिषीरन्
स्यन्दिषीष्ठाः स्यन्दिषीयास्थाम् स्यन्दिषीध्वम्
स्यन्दिषीय स्यन्दिषीवहि स्यन्दिषीमहि
स्यन्त्सीष्ट स्यन्त्सीयास्ताम् स्यन्त्सीरन्
स्यन्त्सीष्ठाः स्यन्त्सीयास्थाम् स्यन्त्सीध्वम्
स्यन्त्सीय स्यन्त्सीवहि स्यन्त्सीमहि

श्व० स्यन्दिता स्यन्दितारौ स्यन्दितारः
स्यन्दितासे स्यन्दितासाथे स्यन्दिताध्वे
स्यन्दिताहे स्यन्दितास्वहे स्यन्दितास्महे
स्यन्ता स्यन्तारौ स्यन्तारः
स्यन्तासे स्यन्तासाथे स्यन्ताध्वे
स्यन्ताहे स्यन्तास्वहे स्यन्तास्महे

भ० स्यन्दिष्यते स्यन्दिष्येते स्यन्दिष्यन्ते
स्यन्दिष्यसे स्यन्दिष्येथे स्यन्दिष्यध्वे
स्यन्दिष्ये स्यन्दिष्यावहे स्यन्दिष्यामहे
स्यन्त्स्यते स्यन्त्स्येते स्यन्त्स्यन्ते
स्यन्त्स्यसे स्यन्त्स्येथे स्यन्त्स्यध्वे
स्यन्त्स्ये स्यन्त्स्यावहे स्यन्त्स्यामहे
स्यन्त्स्यति स्यन्त्स्यतः स्यन्त्स्यन्ति
स्यन्त्स्यसि स्यन्त्स्यथः स्यन्त्स्यथ
स्यन्त्स्यामि स्यन्त्स्यावः स्यन्त्स्यामः

क्रि अस्यन्दिष्यत अस्यन्दिष्येताम् अस्यन्दिष्यन्त
अस्यन्दिष्यथाः अस्यन्दिष्येथाम् अस्यन्दिष्यध्वम्
अस्यन्दिष्ये अस्यन्दिष्यावहि अस्यन्दिष्यामहि
अस्यन्त्स्यत अस्यन्त्स्येताम् अस्यन्त्स्यन्त
अस्यन्त्स्यथाः अस्यन्त्स्येथाम् अस्यन्त्स्यध्वम्
अस्यन्त्स्ये अस्यन्त्स्यावहि अस्यन्त्स्यामहि
अस्यन्त्स्यत् अस्यन्त्स्यताम् अस्यन्त्स्यन्
अस्यन्त्स्यः अस्यन्त्स्यतम् अस्यन्त्स्यत
अस्यन्त्स्यम् अस्यन्त्स्याव अस्यन्त्स्याम

॥ वृधूङ्–वृद्धौ ॥ वर्धवुं ।

व० वर्धते वर्धेते वर्धन्ते
वर्धसे वर्धेथे वर्धध्वे
वर्धे वर्धावहे वर्धामहे
स० वर्धेत वर्धेयाताम् वर्धेरन्
वर्धेथाः वर्धेयाथाम् वर्धेध्वम्
वर्धेय वर्धेवहि वर्धेमहि
प० वर्धताम् वर्धेताम् वर्धन्ताम्
वर्धस्व वर्धेथाम् वर्धध्वम्
वर्धै वर्धावहै वर्धामहै
ह्य० अवर्धत अवर्धेताम् अवर्धन्त
अवर्धथाः अवर्धेथाम् अवर्धध्वम्
अवर्धे अवर्धावहि अवर्धामहि
अ० अवृधत् अवृधताम् अवृधन्
अवृधः अवृधतम् अवृधत
अवृधम् अवृधाव अवृधाम
अवर्धिष्ट अवर्धिषाताम् अवर्धिषत
अवर्धिष्ठाः अवर्धिषाथाम् अवर्धिड्ढ्वम् ध्वम्
अवर्धिषि अवर्धिष्वहि अवर्धिष्महि
प० ववृधे ववृधाते ववृधिरे
ववृधिषे ववृधाथे ववृधिध्वे
ववृधे ववृधिवहे ववृधिमहे
आ० वर्धिषीष्ट वर्धिषीयास्ताम् वर्धिषीरन्
वर्धिषीष्ठाः वर्धिषीयास्थाम् वर्धिषीध्वम्
वर्धिषीय वर्धिषीवहि वर्धिषीमहि
श्व० वर्धिता वर्धितारौ वर्धितारः
वर्धितासे वर्धितासाथे वर्धिताध्वे
वर्धिताहे वर्धितास्वहे वर्धितास्महे
भ० वर्त्स्यति वर्त्स्यतः वर्त्स्यन्ति
वर्त्स्यसि वर्त्स्यथः वर्त्स्यथ
वर्त्स्यामि वर्त्स्यावः वर्त्स्यामः
वर्धिष्यते वर्धिष्येते वर्धिष्यन्ते
वर्धिष्यसे वर्धिष्येथे वर्धिष्यध्वे
वर्धिष्ये वर्धिष्यावहे वर्धिष्यामहे
क्रि० अवर्धिष्यत अवर्धिष्येताम् अवर्धिष्यन्त
अवर्धिष्यथाः अवर्धिष्येथाम् अवर्धिष्यध्वम्
अवर्धिष्ये अवर्धिष्यावहि अवर्धिष्यामहि
अवर्त्स्यत् अवर्त्स्यताम् अवर्त्स्यन्
अवर्त्स्यः अवर्त्स्यतम् अवर्त्स्यत
अवर्त्स्यम् अवर्त्स्याव अवर्त्स्याम

॥ शृधूङ्–शब्दकुत्सायाम् ॥ पादवुं ।

व० शर्धते शर्धेते शर्धन्ते
शर्धसे शर्धेथे शर्धध्वे
शर्धे शर्धावहे शर्धामहे
स० शर्धेत शर्धेयाताम् शर्धेरन्
शर्धेथाः शर्धेयाथाम् शर्धेध्वम्
शर्धेय शर्धेवहि शर्धेमहि
प० शर्धताम् शर्धेताम् शर्धन्ताम्
शर्धस्व शर्धेथाम् शर्धध्वम्
शर्धै शर्धावहै शर्धामहै
ह्य० अशर्धत अशर्धेताम् अशर्धन्त
अशर्धथाः अशर्धेथाम् अशर्धध्वम्
अशर्धे अशर्धावहि अशर्धामहि
अ० अशृधत् अशृधताम् अशृधन्
अशृधः अशृधतम् अशृधत
अशृधम् अशृधाव अशृधाम
अशर्धिष्ट अशर्धिषाताम् अशर्धिषत
अशर्धिष्ठाः अशर्धिषाथाम् अशर्धिड्ढ्वम् ध्वम्
अशर्धिषि अशर्धिष्वहि अशर्धिष्महि
प० शशृधे शशृधाते शशृधिरे
शशृधिषे शशृधाथे शशृधिध्वे
शशृधे शशृधिवहे शशृधिमहे
आ० शर्धिषीष्ट शर्धिषीयास्ताम् शर्धिषीरन्
शर्धिषीष्ठाः शर्धिषीयास्थाम् शर्धिषीध्वम्
शर्धिषीय शर्धिषीवहि शर्धिषीमहि
श्व० शर्धिता शर्धितारौ शर्धितारः
शर्धितासे शर्धितासाथे शर्धिताध्वे
शर्धिताहे शर्धितास्वहे शर्धितास्महे
भ० शर्धिष्यते शर्धिष्येते शर्धिष्यन्ते
शर्धिष्यसे शर्धिष्येथे शर्धिष्यध्वे
शर्धिष्ये शर्धिष्यावहे शर्धिष्यामहे

शत्स्यॅति शत्स्यॅतः शत्स्यॅन्ति
शत्स्यॅसि शत्स्यॅथः शत्स्यॅथ
शत्स्यॉमि शत्स्यॉवः शत्स्यॉमः

क्रि०अशर्धिष्यत अशर्धिष्येताम् अशर्धिष्यन्त
अशर्धिष्यथाः अशर्धिष्येथाम् अशर्धिष्यध्वम्
अशर्धिष्ये अशर्धिष्यावहि अशर्धिष्यामहि

अशत्स्यॅत् अशत्स्यॅताम् अशत्स्यॅन्
अशत्स्यॅः अशत्स्यॅतम् अशत्स्यॅत
अशत्स्यॅम् अशत्स्यॉव अशत्स्यॉम

॥ कृपौङ्-सामर्थ्ये ॥ समर्थ थवुं ।

व० कल्पते कल्पेते कल्पन्ते
कल्पसे कल्पेथे कल्पध्वे
कल्पे कल्पावहे कल्पामहे

स० कल्पेत कल्पेयाताम् कल्पेरन्
कल्पेथाः कल्पेयाथाम् कल्पेध्वम्
कल्पेय कल्पेवहि कल्पेमहि

प० कल्पताम् कल्पेताम् कल्पन्ताम्
कल्पस्व कल्पेथाम् कल्पध्वम्
कल्पै कल्पावहै कल्पामहै

ह्य० अकल्पत अकल्पेताम् अकल्पन्त
अकल्पथाः अकल्पेथाम् अकल्पध्वम्
अकल्पे अकल्पावहि अकल्पामहि

अ० अक्लृपत् अक्लृपताम् अक्लृपन्
अक्लृपः अक्लृपतम् अक्लृपत
अक्लृपम् अक्लृपाव अक्लृपाम

अकल्पिष्ट अकल्पिषाताम् अकल्पिषत
अकल्पिष्ठाः अकल्पिषाथाम् अकल्पिढ्ढ्वम् ध्वम्
अकल्पिषि अकल्पिष्वहि अकल्पिष्महि

अक्लृप्त अक्लृप्साताम् अक्लृप्सत
अक्लृप्थाः अक्लृप्साथाम् अक्लृब्ध्वम् ध्वम्
अक्लृप्सि अक्लृप्स्वहि अक्लृप्स्महि

प० चक्लृपे चक्लृपाते चक्लृपिरे
चक्लृपिषे चक्लृप्से चक्लृपाथे चक्लृपिध्वे
चक्लृपे चक्लृपिवहे चक्लृपिमहे
मतान्तरे. चक्लृपध्वे चक्लृपवहे चक्लृपमहे

आ०कल्पिषीष्ट कल्पिषीयास्ताम् कल्पिषीरन्
कल्पिषीष्ठाः कल्पिषीयास्थाम् कल्पिषीध्वम्
कल्पिषीय कल्पिषीवहि कल्पिषीमहि

क्लृप्सीष्ट क्लृप्सीयास्ताम् क्लृप्सीरन्
क्लृप्सीष्ठाः क्लृप्सीयास्थाम् क्लृप्सीध्वम्
क्लृप्सीय क्लृप्सीवहि क्लृप्सीमहि

श्व० कल्पिता कल्पितारौ कल्पितारः
कल्पितासे कल्पितासाथे कल्पिताध्वे
कल्पिताहे कल्पितास्वहे कल्पितास्महे

कल्प्ता कल्प्तारौ कल्प्तारः
कल्प्तासे कल्प्तासाथे कल्प्ताध्वे
कल्प्ताहे कल्प्तास्वहे कल्प्तास्महे

भ० कल्पिष्यते कल्पिष्येते कल्पिष्यन्ते
कल्पिष्यसे कल्पिष्येथे कल्पिष्यध्वे
कल्पिष्ये कल्पिष्यावहे कल्पिष्यामहे
कल्प्स्यते कल्प्स्येते कल्प्स्यन्ते
कल्प्स्यसे कल्प्स्येथे कल्प्स्यध्वे
कल्प्स्ये कल्प्स्यावहे कल्प्स्यामहे
कल्प्स्यति कल्प्स्यतः कल्प्स्यन्ति
कल्प्स्यसि कल्प्स्यथः कल्प्स्यथ
कल्प्स्यामि कल्प्स्यावः कल्प्स्यामः

क्रिअकल्पिष्यत अकल्पिष्येताम् अकल्पिष्यन्त
अकल्पिष्यथाः अकल्पिष्येथाम् अकल्पिष्यध्वम्
अकल्पिष्ये अकल्पिष्यावहि अकल्पिष्यामहि

अकल्प्स्यत अकल्प्स्येताम् अकल्प्स्यन्त
अकल्प्स्यथाः अकल्प्स्येथाम् अकल्प्स्यध्वम्
अकल्प्स्ये अकल्प्स्यावहि अकल्प्स्यामहि

अकल्प्स्यत् अकल्प्स्यताम् अकल्प्स्यन्
अकल्प्स्यः अकल्प्स्यतम् अकल्प्स्यत
अकल्प्स्यम् अकल्प्स्याव अकल्प्स्याम

## ॥ इति द्युतादयः ॥

---

## ॥ अथ ज्वलादिः ॥

॥ ज्वल-दीप्तौ ॥ चळकवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | ज्वलति | ज्वलतः | ज्वलन्ति |
| | ज्वलसि | ज्वलथः | ज्वलथ |
| | ज्वलामि | ज्वलावः | ज्वलामः |
| स० | ज्वलेत् | ज्वलेताम् | ज्वलेयुः |
| | ज्वलेः | ज्वलेतम् | ज्वलेत |
| | ज्वलेयम् | ज्वलेव | ज्वलेम |
| प० | ज्वलतु ज्वलतात् | ज्वलताम् | ज्वलन्तु |
| | ज्वल ,, | ज्वलतम् | ज्वलत |
| | ज्वलानि | ज्वलाव | ज्वलाम |
| ह्य० | अज्वलत् | अज्वलताम् | अज्वलन् |
| | अज्वलः | अज्वलतम् | अज्वलत |
| | अज्वलम् | अज्वलाव | अज्वलाम |
| अ० | अज्वालीत् | अज्वालिष्टाम् | अज्वालिषुः |
| | अज्वालीः | अज्वालिष्टम् | अज्वालिष्ट |
| | अज्वालिषम् | अज्वालिष्व | अज्वालिष्म |
| प० | जज्वाल | जज्वलतुः | जज्वलुः |
| | जज्वलिथ | जज्वलथुः | जज्वल |
| | जज्वाल-जज्वल | जज्वलिव | जज्वलिम |
| आ० | ज्वल्यात् | ज्वल्यास्ताम् | ज्वल्यासुः |
| | ज्वल्याः | ज्वल्यास्तम् | ज्वल्यास्त |
| | ज्वल्यासम् | ज्वल्यास्व | ज्वल्यास्म |
| श्व० | ज्वलिता | ज्वलितारौ | ज्वलितारः |
| | ज्वलितासि | ज्वलितास्थः | ज्वलितास्थ |
| | ज्वलितास्मि | ज्वलितास्वः | ज्वलितास्मः |
| भ० | ज्वलिष्यति | ज्वलिष्यतः | ज्वलिष्यन्ति |
| | ज्वलिष्यसि | ज्वलिष्यथः | ज्वलिष्यथ |
| | ज्वलिष्यामि | ज्वलिष्यावः | ज्वलिष्यामः |
| क्रि० | अज्वलिष्यत् | अज्वलिष्यताम् | अज्वलिष्यन् |
| | अज्वलिष्यः | अज्वलिष्यतम् | अज्वलिष्यत |
| | अज्वलिष्यम् | अज्वलिष्याव | अज्वलिष्याम |

॥ कुच-सम्पर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भनेषु ॥ मिश्रण करवुं, कुटिलता करवी, रोकवुं, खेंचवुं ।

कोचति । अकोचीत् । चुकोच ।

॥ पत्ल-गतौ ॥ जवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | पतति | पततः | पतन्ति |
| | पतसि | पतथः | पतथ |
| | पतामि | पतावः | पतामः |
| स० | पतेत् | पतेताम् | पतेयुः |
| | पतेः | पतेतम् | पतेत |
| | पतेयम् | पतेव | पतेम |
| प० | पततु पततात् | पतताम् | पतन्तु |
| | पत ,, | पततम् | पतत |
| | पतानि | पताव | पताम |
| ह्य० | अपतत् | अपतताम् | अपतन् |
| | अपतः | अपततम् | अपतत |
| | अपतम् | अपताव | अपताम |
| अ० | अपप्तत् | अपप्तताम् | अपप्तन् |
| | अपप्तः | अपप्ततम् | अपप्तत |
| | अपप्तम् | अपप्ताव | अपप्ताम |
| प० | पपात | पेततुः | पेतुः |
| | पेतिथ | पेतथुः | पेत |
| | पपात पपत | पेतिव | पेतिम |
| आ० | पत्यात् | पत्यास्ताम् | पत्यासुः |
| | पत्याः | पत्यास्तम् | पत्यास्त |
| | पत्यासम् | पत्यास्व | पत्यास्म |
| श्व० | पतिता | पतितारौ | पतितारः |
| | पतितासि | पतितास्थः | पतितास्थ |
| | पतितास्मि | पतितास्वः | पतितास्मः |
| भ० | पतिष्यति | पतिष्यतः | पतिष्यन्ति |
| | पतिष्यसि | पतिष्यथः | पतिष्यथ |
| | पतिष्यामि | पतिष्यावः | पतिष्यामः |
| क्रि० | अपतिष्यत् | अपतिष्यताम् | अपतिष्यन् |
| | अपतिष्यः | अपतिष्यतम् | अपतिष्यत |
| | अपतिष्यम् | अपतिष्याव | अपतिष्याम |

॥ पथे-गतौ ॥ जवुं ।

पथति । अपथीत् । पपाथ । पेथतुः ।

॥ क्वथे-निष्पाके ॥ उकाळवुं ।

क्वथति । अक्वथीत् । चक्वाथ ।

॥ मथे-विलोडने ॥ मंथन करवुं, वलोववुं

मथति । अमथीत् । ममाथ । मेथतुः ।

॥ बुध-अवगमने ॥ जाणवुं ।

बोधति । अबोधीत् । बुबोध ।

॥ षद्लृ-विशरणगत्यवसादनेषु ॥ सडी जवुं, जवुं, निरुत्साह थवुं, दुःखी थवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | सीदति निषीदति | सीदतः | सीदन्ति |
| | सीदसि | सीदथः | सीदथ |
| | सीदामि | सीदावः | सीदामः |
| स० | सीदेत् | सीदेताम् | सीदेयुः |
| | सीदेः | सीदेतम् | सीदेत |
| | सीदेयम् | सीदेव | सीदेम |
| प० | सीदतु सीदतात् | सीदताम् | सीदन्तु |
| | सीद ,, | सीदतम् | सीदत |
| | सीदानि | सीदाव | सीदाम |
| ह्य० | असीदत् | असीदताम् | असीदन् |
| | असीदः | असीदतम् | असीदत |
| | असीदम् | असीदाव | असीदाम |
| अ० | असदत् | असदताम् | असदन् |
| | असदः | असदतम् | असदत |
| | असदम् | असदाव | असदाम |
| प० | ससाद | सेदतुः | सेदुः |
| | सेदिथ ससत्थ | सेदथुः | सेद |
| | ससाद ससद | सेदिव | सेदिम |
| आ० | सद्यात् | सद्यास्ताम् | सद्यासुः |
| | सद्याः | सद्यास्तम् | सद्यास्त |
| | सद्यासम् | सद्यास्व | सद्यास्म |
| श्व० | सत्ता | सत्तारौ | सत्तारः |
| | सत्तासि | सत्तास्थः | सत्तास्थ |
| | सत्तास्मि | सत्तास्वः | सत्तास्मः |
| भ० | सत्स्यति | सत्स्यतः | सत्स्यन्ति |
| | सत्स्यसि | सत्स्यथः | सत्स्यथ |
| | सत्स्यामि | सत्स्यावः | सत्स्यामः |
| क्रि० | असत्स्यत् | असत्स्यताम् | असत्स्यन् |
| | असत्स्यः | असत्स्यतम् | असत्स्यत |
| | असत्स्यम् | असत्स्याव | असत्स्याम |

॥ शद्लृ-शातने ॥ छोलवुं पातळुं करवुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | शीयते | शीयेते | शीयन्ते |
| | शीयसे | शीयेथे | शीयध्वे |
| | शीये | शीयावहे | शीयामहे |
| स० | शीयेत | शीयेयाताम् | शीयेरन् |
| | शीयेथाः | शीयेयाथाम् | शीयेध्वम् |
| | शीयेय | शीयेवहि | शीयेमहि |
| प० | शीयताम् | शीयेताम् | शीयन्ताम् |
| | शीयस्व | शीयेथाम् | शीयध्वम् |
| | शीयै | शीयावहै | शीयामहै |
| ह्य० | अशीयत | अशीयेताम् | अशीयन्त |
| | अशीयथाः | अशीयेथाम् | अशीयध्वम् |
| | अशीये | अशीयावहि | अशीयामहि |
| अ० | अशदत् | अशदताम् | अशदन् |
| | अशदः | अशदतम् | अशदत |
| | अशदम् | अशदाव | अशदाम |
| प० | शशाद | शेदतुः | शेदुः |
| | शेदिथ शशत्थ | शेदथुः | शेद |
| | शशाद शशद | शेदिव | शेदिम |
| आ० | शद्यात् | शद्यास्ताम् | शद्यासुः |
| | शद्याः | शद्यास्तम् | शद्यास्त |
| | शद्यासम् | शद्यास्व | शद्यास्म |
| श्व० | शत्ता | शत्तारौ | शत्तारः |
| | शत्तासि | शत्तास्थः | शत्तास्थ |
| | शत्तास्मि | शत्तास्वः | शत्तास्मः |
| भ० | शत्स्यति | शत्स्यतः | शत्स्यन्ति |
| | शत्स्यसि | शत्स्यथः | शत्स्यथ |
| | शत्स्यामि | शत्स्यावः | शत्स्यामः |
| क्रि० | अशत्स्यत् | अशत्स्यताम् | अशत्स्यन् |
| | अशत्स्यः | अशत्स्यतम् | अशत्स्यत |
| | अशत्स्यम् | अशत्स्याव | अशत्स्याम |

॥ टुवमु-उद्गिरणे, ॥ ओकवुं, उलटी करवी ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | वमति | वमतः | वमन्ति |
| | वमसि | वमथः | वमथ |
| | वमामि | वमावः | वमामः |

स० वमेत् वमेताम् वमेयुः
वमेः वमेतम् वमेत
वमेयम् वमेव वमेम

प० वमतु वमतात् वमताम् वमन्तु
वम ,, वमतम् वमत
वमानि वमाव वमाम

ह्य० अवमत् अवमताम् अवमन्
अवमः अवमतम् अवमत
अवमम् अवमाव अवमाम

अ० अवमीत् अवमिष्टाम् अवमिषुः
अवमीः अवमिष्टम् अवमिष्ट
अवमिषम् अवमिष्व अवमिष्म

प० ववाम ववमतुः ववमुः
ववमिथ ववमथुः ववम
ववाम ववम ववमिव ववमिम

ववाम वेमतुः वेमुः
वेमिथ वेमथुः वेम
ववाम ववम वेमिव वेमिम

आ० वम्यात् वम्यास्ताम् वम्यासुः
वम्याः वम्यास्तम् वम्यास्त
वम्यासम् वम्यास्व वम्यास्म

श्व० वमिता वमितारौ वमितारः
वमितासि वमितास्थः वमितास्थ
वमितास्मि वमितास्वः वमितास्मः

भ० वमिष्यति वमिष्यतः वमिष्यन्ति
वमिष्यसि वमिष्यथः वमिष्यथ
वमिष्यामि वमिष्यावः वमिष्यामः

क्रि० अवमिष्यत् अवमिष्यताम् अवमिष्यन्
अवमिष्यः अवमिष्यतम् अवमिष्यत
अवमिष्यम् अवमिष्याव अवमिष्याम

॥ भ्रमू-चलने ॥ भमवुं ॥

व० भ्रम्यति भ्रम्यतः भ्रम्यन्ति
भ्रम्यसि भ्रम्यथः भ्रम्यथ
भ्रम्यामि भ्रम्यावः भ्रम्यामः

स० भ्रम्येत् भ्रम्येताम् भ्रम्येयुः
भ्रम्येः भ्रम्येतम् भ्रम्येत
भ्रम्येयम् भ्रम्येव भ्रम्येम

प० भ्रम्यतु भ्रम्यतात् भ्रम्यताम् भ्रम्यन्तु
भ्रम्य ,, भ्रम्यतम् भ्रम्यत
भ्रम्याणि भ्रम्याव भ्रम्याम

ह्य० अभ्रम्यत् अभ्रम्यताम् अभ्रम्यन्
अभ्रम्यः अभ्रम्यतम् अभ्रम्यत
अभ्रम्यम् अभ्रम्याव अभ्रम्याम

व० भ्रमति भ्रमतः भ्रमन्ति
भ्रमसि भ्रमथः भ्रमथ
भ्रमामि भ्रमावः भ्रमामः

स० भ्रमेत् भ्रमेताम् भ्रमेयुः
भ्रमेः भ्रमेतम् भ्रमेत
भ्रमेयम् भ्रमेव भ्रमेम

प० भ्रमतु भ्रमतात् भ्रमताम् भ्रमन्तु
भ्रम ,, भ्रमतम् भ्रमत
भ्रमाणि भ्रमाव भ्रमाम

ह्य० अभ्रमत् अभ्रमताम् अभ्रमन्
अभ्रमः अभ्रमतम् अभ्रमत
अभ्रमम् अभ्रमाव अभ्रमाम

अ० अभ्रमीत् अभ्रमिष्टाम् अभ्रमिषुः
अभ्रमीः अभ्रमिष्टम् अभ्रमिष्ट
अभ्रमिषम् अभ्रमिष्व अभ्रमिष्म

प० बभ्राम भ्रेमतुः बभ्रमतुः भ्रेमुः बभ्रमुः
भ्रेमिथ बभ्रमिथ भ्रेमथुः बभ्रमथुः भ्रेम बभ्रम
बभ्राम बभ्रम भ्रेमिव बभ्रमिव भ्रेमिम बभ्रमिम

आ० भ्रम्यात् भ्रम्यास्ताम् भ्रम्यासुः
भ्रम्याः भ्रम्यास्तम् भ्रम्यास्त
भ्रम्यासम् भ्रम्यास्व भ्रम्यास्म

श्व० भ्रमिता भ्रमितारौ भ्रमितारः
भ्रमितासि भ्रमितास्थः भ्रमितास्थ
भ्रमितास्मि भ्रमितास्वः भ्रमितास्मः

भ० भ्रमिष्यति भ्रमिष्यतः भ्रमिष्यन्ति
भ्रमिष्यसि भ्रमिष्यथः भ्रमिष्यथ

अभ्रमिष्यामि अभ्रमिष्यावः अभ्रमिष्यामः
क्रि०अभ्रमिष्यत् अभ्रमिष्यताम् अभ्रमिष्यन्
अभ्रमिष्यः अभ्रमिष्यतम् अभ्रमिष्यत
अभ्रमिष्यम अभ्रमिष्याव अभ्रमिष्याम

॥ क्षर-सञ्चलने सकर्माऽकर्मा चायम् । क्षरति गौः पयो मुञ्चतीत्यर्थः । क्षरति जलं स्रवतीत्यर्थः ॥ झरवुं, झरावबुं

क्षरति । अक्षारीत् । चक्षार ।

॥ चल-कम्पने ॥ चालवुं

चलति । अचालीत् । चचाल ।

॥ जल-घात्ये ॥ जड थवुं

जलति । अजालीत् । जजाल ।

॥ टल ट्वल वैक्लव्ये ॥ कायर थवुं, गांडा थवुं,

टलति । अटालीत् । टटाल ।
ट्वलति । अट्वालीत् । टट्वाल ।

॥ ष्ठल-स्थाने ॥ उभा रहेवुं

स्थलति । अस्थालीत् । तस्थाल ।

॥ हल-विलेखने ॥ खेंचवुं, खेडवुं

हलति । अहालीत् । जहाल ।

॥ बल-प्राणनधान्यावरोधयोः ॥ जीववुं, काठी संबन्धी क्रिया करवी

बलति । अबालीत् । बबाल ।

॥ णल-गन्धे ॥ पीडा करवी

नलति । अनालीत् । ननाल ।

॥ पुल-महत्वे ॥ मोटुं थवुं

पोलति । अपोलीत् । पुपोल ।

॥ कुल-बन्धुसंस्त्यानयोः ॥ कुटुंम्बी थवुं, मळी जवुं, जथ्थारुप थवुं,

कोलति । अकोलीत् । चुकोल ।

॥ पल-गतौ ॥ जवुं

पलति । अपालीत् । पेलतुः

॥ शल-गतौ ॥ जवुं

शलति । अशालीत् । शशाल । शेलतुः । उच्छलति । उदशालीत् ।

॥ हुल-हिंसासंवरणयोश्च ॥ हिंसा करवी ढांकवुं-जवुं-

होलति । अहोलीत् । जुहोल ।

॥ फल-गतौ, ॥ जवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | फलति | फलतः | फलन्ति |
| | फलसि | फलथः | फलथ |
| | फलामि | फलावः | फलामः |
| स० | फलेत् | फलेताम् | फलेयुः |
| | फलेः | फलेतम् | फलेत |
| | फलेयम् | फलेव | फलेम |
| प० | फलतु फलतात् | फलताम् | फलन्तु |
| | फल ,, | फलतम् | फलत |
| | फलानि | फलाव | फलाम |
| अ० | अफलत् | अफलताम् | अफलन् |
| | अफलः | अफलतम् | अफलत |
| | अफलम् | अफलाव | अफलाम |
| अ० | अफालीत् | अफालिष्टाम् | अफालिषुः |
| | अफालीः | अफालिष्टम् | अफालिष्ट |
| | अफालिषम् | अफालिष्व | अफालिष्म |
| प० | पफाल | फेलतुः | फेलुः |
| | फेलिथ | फेलथुः | फेल |
| | पफाल पफल | फेलिव | फेलिम |
| आ० | फल्यात् | फल्यास्ताम् | फल्यासुः |
| | फल्याः | फल्यास्तम् | फल्यास्त |
| | फल्यासम् | फल्यास्व | फल्यास्म |
| श्व० | फलिता | फलितारौ | फलितारः |
| | फलितासि | फलितास्थः | फलितास्थ |
| | फलितास्मि | फलितास्वः | फलितास्मः |
| भ० | फलिष्यति | फलिष्यतः | फलिष्यन्ति |
| | फलिष्यसि | फलिष्यथः | फलिष्यथ |
| | फलिष्यामि | फलिष्यावः | फलिष्यामः |
| क्रि० | अफलिष्यत् | अफलिष्यताम् | अफलिष्यन् |
| | अफलिष्यः | अफलिष्यतम् | अफलिष्यत |
| | अफलिष्यम् | अफलिष्याव | अफलिष्याम |

॥ क्रुश-आह्वानरोदनयोः ॥ बोलाववुं

रोवुं-रोवराववुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व॰ | क्रोशति | क्रोशतः | क्रोशन्ति |
| | क्रोशसि | क्रोशथः | क्रोशथ |
| | क्रोशामि | क्रोशावः | क्रोशामः |
| स॰ | क्रोशेत | क्रोशेताम् | क्रोशेयुः |
| | क्रोशेः | क्रोशेतम् | क्रोशेत |
| | क्रोशेयम् | क्रोशेव | क्रोशेम |
| प॰ | क्रोशतु क्रोशतात् | क्रोशताम् | क्रोशन्तु |
| | क्रोश ,, | क्रोशतम् | क्रोशत |
| | क्रोशानि | क्रोशाव | क्रोशाम |
| ह्य॰ | अक्रोशत् | अक्रोशताम् | अक्रोशन् |
| | अक्रोशः | अक्रोशतम् | अक्रोशत |
| | अक्रोशम् | अक्रोशाव | अक्रोशाम |
| अ॰ | अक्रुक्षत् | अक्रुक्षताम् | अक्रुक्षन् |
| | अक्रुक्षः | अक्रुक्षतम् | अक्रुक्षत |
| | अक्रुक्षम् | अक्रुक्षाव | अक्रुक्षाम |
| प॰ | चुक्रोश | चुक्रुशतुः | चुक्रुशुः |
| | चुक्रोशिथ | चुक्रुशथुः | चुक्रुश |
| | चुक्रोश | चुक्रुशिव | चुक्रुशिम |
| आ॰ | क्रुश्यात् | क्रुश्यास्ताम् | क्रुश्यासुः |
| | क्रुश्याः | क्रुश्यास्तम् | क्रुश्यास्त |
| | क्रुश्यासम् | क्रुश्यास्व | क्रुश्यास्म |
| श्व॰ | क्रोष्टा | क्रोष्टारौ | क्रोष्टारः |
| | क्रोष्टासि | क्रोष्टास्थः | क्रोष्टास्थ |
| | क्रोष्टास्मि | क्रोष्टास्वः | क्रोष्टास्मः |
| भ॰ | क्रोक्ष्यति | क्रोक्ष्यतः | क्रोक्ष्यन्ति |
| | क्रोक्ष्यसि | क्रोक्ष्यथः | क्रोक्ष्यथ |
| | क्रोक्ष्यामि | क्रोक्ष्यावः | क्रोक्ष्यामः |
| क्रि॰ | अक्रोक्ष्यत् | अक्रोक्ष्यताम् | अक्रोक्ष्यन् |
| | अक्रोक्ष्यः | अक्रोक्ष्यतम् | अक्रोक्ष्यत |
| | अक्रोक्ष्यम् | अक्रोक्ष्याव | अक्रोक्ष्याम |

॥ कस-गतौ, ॥ जवुं

विकसति । अकासीत् । अकसीत् । चकास

॥ रुहं-जन्मनि वीजजन्मनीत्येके ॥ पेदा थवुं, उगवुं, वधवुं, अंकुर थवो.

| | | | |
|---|---|---|---|
| व॰ | रोहति | रोहतः | रोहन्ति |
| | रोहसि | रोहथः | रोहथ |
| | रोहामि | रोहावः | रोहामः |
| स॰ | रोहेत् | रोहेताम् | रोहेयुः |
| | रोहेः | रोहेतम् | रोहेत |
| | रोहेयम् | रोहेव | रोहेम |
| प॰ | रोहतु रोहतात् | रोहताम् | रोहन्तु |
| | रोह ,, | रोहतम् | रोहत |
| | रोहाणि | रोहाव | रोहाम |
| ह्य॰ | अरोहत | अरोहताम् | अरोहन् |
| | अरोहः | अरोहतम् | अरोहत |
| | अरोहम् | अरोहाव | अरोहाम |
| अ॰ | अरुक्षत् | अरुक्षताम् | अरुक्षन् |
| | अरुक्षः | अरुक्षतम् | अरुक्षत |
| | अरुक्षम् | अरुक्षाव | अरुक्षाम |
| प॰ | रुरोह | रुरुहतुः | रुरुहुः |
| | रुरोहिथ | रुरुहथुः | रुरुह |
| | रुरोह | रुरुहिव | रुरुहिम |
| आ॰ | रुह्यात् | रुह्यास्ताम् | रुह्यासुः |
| | रुह्याः | रुह्यास्तम् | रुह्यास्त |
| | रुह्यासम् | रुह्यास्व | रुह्यास्म |
| श्व॰ | रोढा | रोढारौ | रोढारः |
| | रोढासि | रोढास्थः | रोढास्थ |
| | रोढास्मि | रोढास्वः | रोढास्मः |
| भ॰ | रोक्ष्यति | रोक्ष्यतः | रोक्ष्यन्ति |
| | रोक्ष्यसि | रोक्ष्यथः | रोक्ष्यथ |
| | रोक्ष्यामि | रोक्ष्यावः | रोक्ष्यामः |
| क्रि॰ | अरोक्ष्यत् | अरोक्ष्यताम् | अरोक्ष्यन् |
| | अरोक्ष्यः | अरोक्ष्यतम् | अरोक्ष्यत |
| | अरोक्ष्यम् | अरोक्ष्याव | अरोक्ष्याम |

॥ रमिं-क्रीडायाम् ॥ रमवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व॰ | रमते | रमेते | रमन्ते |
| | रमसे | रमेथे | रमध्वे |
| | रमे | रमावहे | रमामहे |

स० रमेत रमेयाताम् रमेरन्
रमेथाः रमेयाथाम् रमेध्वम्
रमेय रमेवहि रमेमहि

प० रमताम् रमेताम् रमन्ताम्
रमस्व रमेथाम् रमध्वम्
रमै रमावहै रमामहै

ह्य० अरमत अरमेताम् अरमन्त
अरमथाः अरमेथाम् अरमध्वम्
अरमे अरमावहि अरमामहि

अ० अरंस्त अरंसाताम् अरंसत
अरंस्थाः अरंसाथाम् अरन्ध्वम्-द्ध्वम्
अरंसि अरंस्वहि अरंस्महि

प० रेमे रेमाते रेमिरे
रेमिषे रेमाथे रेमिध्वे
रेमे रेमिवहे रेमिमहे

आ० रंसीष्ट रंसीयास्ताम् रंसीरन्
रंसीष्ठाः रंसीयास्थाम् रंसीध्वम्
रंसीय रंसीवहि रंसीमहि

श्व० रन्ता रन्तारौ रन्तारः
रन्तासे रन्तासाथे रन्ताध्वे
रन्ताहे रन्तास्वहे रन्तास्महे

भ० रंस्यते रंस्येते रंस्यन्ते
रंस्यसे रंस्येथे रंस्यध्वे
रंस्ये रंस्यावहे रंस्यामहे

क्रि० अरंस्यत अरंस्येताम् अरंस्यन्त
अरंस्यथाः अरंस्येथाम् अरंस्यध्वम्
अरंस्ये अरंस्यावहि अरंस्यामहि

॥ षहि–मर्षणे ॥ सहन करवो ।

व० सहते सहेते सहन्ते
सहसे सहेथे सहध्वे
सहे सहावहे सहामहे

स० सहेत सहेयाताम् सहेरन्
सहेथाः सहेयाथाम् सहेध्वम्
सहेय सहेवहि सहेमहि

प० सहताम् सहेताम् सहन्ताम्
सहस्व सहेथाम् सहध्वम्
सहै सहावहै सहामहै

ह्य० असहत असहेताम् असहन्त
असहथाः असहेथाम् असहध्वम्
असहे असहावहि असहामहि

अ० असहिष्ट असहिषाताम् असहिषत
असहिष्ठाः असहिषाथाम् असहिध्वम्
इढ्वम्-ढ्वम्
असहिषि असहिष्वहि असहिष्महि

प० सेहे सेहाते सेहिरे
सेहिषे सेहाथे सेहिध्वे–ढ्वे
सेहे सेहिवहे सेहिमहे

आ० सहिषीष्ट सहिषीयास्ताम् सहिषीरन्
सहिषीष्ठाः सहिषीयास्थाम् सहिषीढ्वम्-ध्वम्
सहिषीय सहिषीवहि सहिषीमहि

श्व० सोढा सोढारौ सोढारः
सोढासे सोढासाथे सोढाध्वे
सोढाहे सोढास्वहे सोढास्महे

सहिता सहितारौ सहितारः
सहितासे सहितासाथे सहिताध्वे
सहिताहे सहितास्वहे सहितास्महे

भ० सहिष्यते सहिष्येते सहिष्यन्ते
सहिष्यसे सहिष्येथे सहिष्यध्वे
सहिष्ये सहिष्यावहे सहिष्यामहे

क्रि० असहिष्यत असहिष्येताम् असहिष्यन्त
असहिष्यथाः असहिष्येथाम् असहिष्यध्वम्
असहिष्ये असहिष्यावहि असहिष्यामहि

## ॥ इति ज्वलादिः ॥

## ॥ अथ यजादिः ॥

। यजीं–देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु ॥
देवनी पूजा करवी, सोबत करवी, आपवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | यजति | यजतः | यजन्ति |
| | यजसि | यजथः | यजथ |
| | यजामि | यजावः | यजामः |
| स० | यजेत् | यजेताम् | यजेयुः |
| | यजेः | यजेतम् | यजेत |
| | यजेयम् | यजेव | यजेम |
| प० | यजतु यजतात् | यजताम् | यजन्तु |
| | यज ,, | यजतम् | यजत |
| | यजानि | यजाव | यजाम |
| ह्य० | अयजत् | अयजताम् | अयजन् |
| | अयजः | अयजतम् | अयजत |
| | अयजम् | अयजाव | अयजाम |
| अ० | अयाक्षीत् | अयाष्टाम् | अयाक्षुः |
| | अयाक्षीः | अयाष्टम् | अयाष्ट |
| | अयाक्षम् | अयाक्ष्व | अयाक्ष्म |
| प० | इयाज | ईजतुः | ईजुः |
| | इयजिथ इयष्ठ | ईजथुः | ईज |
| | इयाज इयज | ईजिव | ईजिम |
| आ० | इज्यात् | इज्यास्ताम् | इज्यासुः |
| | इज्याः | इज्यास्तम् | इज्यास्त |
| | इज्यासम् | इज्यास्व | इज्यास्म |
| श्व० | यष्टा | यष्टारौ | यष्टारः |
| | यष्टासि | यष्टास्थः | यष्टास्थ |
| | यष्टास्मि | यष्टास्वः | यष्टास्मः |
| भ० | यक्ष्यति | यक्ष्यतः | यक्ष्यन्ति |
| | यक्ष्यसि | यक्ष्यथः | यक्ष्यथ |
| | यक्ष्यामि | यक्ष्यावः | यक्ष्यामः |
| क्रि० | अयक्ष्यत् | अयक्ष्यताम् | अयक्ष्यन् |
| | अयक्ष्यः | अयक्ष्यतम् | अयक्ष्यत |
| | अयक्ष्यम् | अयक्ष्याव | अयक्ष्याम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | यजते | यजेते | यजन्ते |
| | यजसे | यजेथे | यजध्वे |
| | यजे | यजावहे | यजामहे |
| स० | यजेत | यजेयाताम् | यजेरन् |
| | यजेथाः | यजेयाथाम् | यजेध्वम् |
| | यजेय | यजेवहि | यजेमहि |
| प० | यजताम् | यजेताम् | यजन्ताम् |
| | यजस्व | यजेथाम् | यजध्वम् |
| | यजै | यजावहै | यजामहै |
| ह्य० | अयजत | अयजेताम् | अयजन्त |
| | अयजथाः | अयजेथाम् | अयजध्वम् |
| | अयजे | अयजावहि | अयजामहि |
| अ० | अयष्ट | अयक्षाताम् | अयक्षत |
| | अयष्ठाः | अयक्षाथाम् | अयड्ढ्वम् अयग्ड्ढ्वम् |
| | अयक्षि | अयक्ष्वहि | अयक्ष्महि |
| प० | ईजे | ईजाते | ईजिरे |
| | ईजिषे | ईजाथे | ईजिध्वे |
| | ईजे | ईजिवहे | ईजिमहे |
| आ० | यक्षीष्ट | यक्षीयास्ताम् | यक्षीरन् |
| | यक्षीष्ठाः | यक्षीयास्थाम् | यक्षीध्वम् |
| | यक्षीय | यक्षीवहि | यक्षीमहि |
| श्व० | यष्टा | यष्टारौ | यष्टारः |
| | यष्टासे | यष्टासाथे | यष्टाध्वे |
| | यष्टाहे | यष्टास्वहे | यष्टास्महे |
| भ० | यक्ष्यते | यक्ष्येते | यक्ष्यन्ते |
| | यक्ष्यसे | यक्ष्येथे | यक्ष्यध्वे |
| | यक्ष्ये | यक्ष्यावहे | यक्ष्यामहे |
| क्रि० | अयक्ष्यत | अयक्ष्येताम् | अयक्ष्यन्त |
| | अयक्ष्यथाः | अयक्ष्येथाम् | अयक्ष्यध्वम् |
| | अयक्ष्ये | अयक्ष्यावहि | अयक्ष्यामहि |

॥ वेंगृ–तन्तुसन्ताने, ॥ वणवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | वयति | वयतः | वयन्ति |
| | वयसि | वयथः | वयथ |
| | वयामि | वयावः | वयामः |
| स० | वयेत् | वयेताम् | वयेयुः |
| | वयेः | वयेतम् | वयेत |

वयेयम् वयेव वयेम
प० वयत वयतात् वयताम् वयन्तु
वय ,, वयतम् वयत
वयानि वयाव वयाम
ह्य० अवयत् अवयताम् अवयन्
अवयः अवयतम् अवयत
अवयम् अवयाव अवयाम
अ० अवासीत् अवासिष्टाम् अवासिषुः
अवासीः अवासिष्टम् अवासिष्ट
अवासिषम् अवासिष्व अवासिष्म
प० उवाय ऊयतुः ऊयुः
उवयिथ ऊयथुः ऊय
उवाय उवय ऊयिव ऊयिम
ववौ ऊवतुः ऊवुः
वविथ ववाथ ऊवथुः ऊव
ववौ ऊविव ऊविम
ववौ ववतुः ववुः
वविथ ववाथ ववथुः वव
ववौ वविव वविम
आ० ऊयात् ऊयास्ताम् ऊयासुः
ऊयाः ऊयास्तम् ऊयास्त
ऊयासम् ऊयास्व ऊयास्म
श्व०. वाता वातारौ वातारः
वातासि वातास्थः वातास्थ
वातास्मि वातास्वः वातास्मः
भ० वास्यति वास्यतः वास्यन्ति
वास्यसि वास्यथः वास्यथ
वास्यामि वास्यावः वास्यामः
क्रि० अवास्यत् अवास्यताम् अवास्यन्
अवास्यः अवास्यतम् अवास्यत
अवास्यम् अवास्याव अवास्याम
व० वयते वयेते वयन्ते
वयसे व वयध्वे
वये वयावहे वयामहे
स० वयेत वयेयाताम् वयेरन्
वयेथाः वयेयाथाम् वयेध्वम्
वयेय वयेवहि वयेमहि
प० वयताम् वयेताम् वयन्ताम्
वयस्व वयेथाम् वयध्वम्
वयै वयावहै वयामहै
ह्य० अवयत अवयेताम् अवयन्त
अवयथाः अवयेथाम् अवयध्वम्
अवये अवयावहि अवयामहि
अ० अवास्त अवासाताम् अवासत
अवास्थाः अवासाथाम् अवाद्ध्वम्-ध्वम्
अवासि अवास्वहि अवास्महि
प० ऊये ऊयाते ऊयिरे
ऊयिषे ऊयाथे ऊयिध्वे-ढ्वे
ऊये ऊयिवहे ऊयिमहे
ववे ववाते वविरे
वविषे ववाथे वविध्वे
ववे वविवहे वविमहे
ऊवे ऊवाते ऊविरे
ऊविषे ऊवाथे ऊविध्वे-ढ्वे
ऊवे ऊविवहे ऊविमहे
आ० वासीष्ट वासीयास्ताम् वासीरन्
वासीष्ठाः वासीयास्थाम् वासीध्वम्
वासीय वासीवहि वासीमहि
श्व० वाता वातारौ वातारः
वातासे वातासाथे वाताध्वे
वाताहे वातास्वहे वातास्महे
भ० वास्यते वास्येते वास्यन्ते
वास्यसे वास्येथे वास्यध्वे
वास्ये वास्यावहे वास्यामहे
क्रि० अवास्यत अवास्येताम् अवास्यन्त
अवास्यथाः अवास्येथाम् अवास्यध्वम्
अवास्ये अवास्यावहि अवास्यामहि

॥ व्येञ्-संवरणे, आच्छादने ॥ ढांकवुं ।

व० व्ययति व्ययतः व्ययन्ति
व्ययसि व्ययथः व्ययथ

व्ययामि व्ययावः व्ययामः
स० व्ययेत् व्ययेताम् व्ययेयुः
व्ययेः व्ययेतम् व्ययेत
व्ययेयम् व्ययेव व्ययेम

प० व्ययतु व्ययतात् व्ययताम् व्ययन्तु
व्यय ,, व्ययतम् व्ययत
व्ययानि व्ययाव व्ययाम

ह्य० अव्ययत् अव्ययताम् अव्ययन्
अव्ययः अव्ययतम् अव्ययत
अव्ययम् अव्ययाव अव्ययाम

अ० अव्यासीत् अव्यासिष्टाम् अव्यासिषुः
अव्यासीः अव्यासिष्टम् अव्यासिष्ट
अव्यासिषम् अव्यासिष्व अव्यासिष्म

प० विव्याय विव्यतुः विव्युः
विव्ययिथ विव्यथुः विव्य
विव्याय विव्यय विव्यियव विव्यियम

आ० वीयात् वीयास्ताम् वीयासुः
वीयाः वीयास्तम् वीयास्त
वीयासम् वीयास्व वीयास्म

श्व० व्याता व्यातारौ व्यातारः
व्यातासि व्यातास्थः व्यातास्थ
व्यातास्मि व्यातास्वः व्यातास्मः

भ० व्यास्यति व्यास्यतः व्यास्यन्ति
व्यास्यसि व्यास्यथः व्यास्यथ
व्यास्यामि व्यास्यावः व्यास्यामः

क्रि० अव्यास्यत् अव्यास्यताम् अव्यास्यन्
अव्यास्यः अव्यास्यतम् अव्यास्यत
अव्यास्यम् अव्यास्याव अव्यास्याम

व० व्ययते व्ययेते व्ययन्ते
व्ययसे व्ययेथे व्ययध्वे
व्यये व्ययावहे व्ययामहे

स० व्ययेत व्ययेयाताम् व्ययेरन्
व्ययेथाः व्ययेयाथाम् व्ययेध्वम्
व्ययेय व्ययेवहि व्ययेमहि

प० व्ययताम् व्ययेताम् व्ययन्ताम्
व्ययस्व व्ययेथाम् व्ययध्वम्
व्ययै व्ययावहै व्ययामहै

ह्य० अव्ययत अव्ययेताम् अव्ययन्त
अव्ययथाः अव्ययेथाम् अव्ययध्वम्
अव्यये अव्ययावहि अव्ययामहि

अ० अव्यास्त अव्यासाताम् अव्यासत
अव्यास्थाः अव्यासाथाम् अव्याद्ध्वम्-ध्वम्
अव्यासि अव्यास्वहि अव्यास्महि

प० विव्ये विव्याते विव्यिरे
विव्यिषे विव्याथे विव्यिढ्वे-ध्वे
विव्ये विव्यिवहे विव्यिमहे

आ० व्यासीष्ट व्यासीयास्ताम् व्यासीरन्
व्यासीष्ठाः व्यासीयास्थाम् व्यासीध्वम्
व्यासीय व्यासीवहि व्यासीमहि

श्व० व्याता व्यातारौ व्यातारः
व्यातासे व्यातासाथे व्याताध्वे
व्याताहे व्यातास्वहे व्यातास्महे

भ० व्यास्यते व्यास्येते व्यास्यन्ते
व्यास्यसे व्यास्येथे व्यास्यध्वे
व्यास्ये व्यास्यावहे व्यास्यामहे

क्रि० अव्यास्यत अव्यास्येताम् अव्यास्यन्त
अव्यास्यथाः अव्यास्येथाम् अव्यास्यध्वम्
अव्यास्ये अव्यास्यावहि अव्यास्यामहि

॥ ह्वें‌ग् स्पर्धाशब्दयोः ॥ हरिफाइ करवी शब्द करवो।

व० ह्वयति ह्वयतः ह्वयन्ति
ह्वयसि ह्वयथः ह्वयथ
ह्वयामि ह्वयावः [illegible]यामः

स० ह्वयेत् ह्वयेताम् ह्वयेयुः
ह्वयेः ह्वयेतम् ह्वयेत
ह्वयेयम् ह्वयेव ह्वयेम

प० ह्वयतु ह्वयतात् ह्वयताम् ह्वयन्तु
ह्वय ,, ह्वयतम् ह्वयत
ह्वयानि ह्वयाव ह्वयाम

| | | | |
|---|---|---|---|
| ह्य० | अह्वयत् | अह्वयताम् | अह्वयन् |
| | अह्वयः | अह्वयतम् | अह्वयत |
| | अह्वयम् | अह्वयाव | अह्वयाम |
| अ० | आह्वत् | आह्वताम् | आह्वन् |
| | आह्वः | आह्वतम् | आह्वत |
| | आह्वम् | आह्वाव | आह्वाम |
| प० | आजुहाव | आजुहुवतुः | आजुहुवुः |

आजुहविथ आजुहोथ आजुहुवथुः आजुहुव
आजुहव आजुहाव आजुहुविव आजुहुविम

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | हूयात् | हूयास्ताम् | हूयासुः |
| | हूयाः | हूयास्तम् | हूयास्त |
| | हूयासम् | हूयास्व | हूयास्म |
| श्व० | ह्वाता | ह्वातारौ | ह्वातारः |
| | ह्वातासि | ह्वातास्थः | ह्वातास्थ |
| | ह्वातास्मि | ह्वातास्वः | ह्वातास्मः |
| भ० | ह्वास्यति | ह्वास्यतः | ह्वास्यन्ति |
| | ह्वास्यसि | ह्वास्यथः | ह्वास्यथ |
| | ह्वास्यामि | ह्वास्यावः | ह्वास्यामः |
| क्रि० | अह्वास्यत् | अह्वास्यताम् | अह्वास्यन् |
| | अह्वास्यः | अह्वास्यतम् | अह्वास्यत |
| | अह्वास्यम् | अह्वास्याव | अह्वास्याम |
| व० | ह्वयते | ह्वयेते | ह्वयन्ते |
| | ह्वयसे | ह्वयेथे | ह्वयध्वे |
| | ह्वये | ह्वयावहे | ह्वयामहे |
| स० | ह्वयेत | ह्वयेयाताम् | ह्वयेरन् |
| | ह्वयेथाः | ह्वयेयाथाम् | ह्वयेध्वम् |
| | ह्वयेय | ह्वयेवहि | ह्वयेमहि |
| प० | ह्वयताम् | ह्वयेताम् | ह्वयन्ताम् |
| | ह्वयस्व | ह्वयेथाम् | ह्वयध्वम् |
| | ह्वयै | ह्वयावहै | ह्वयामहै |
| ह्य० | आह्वयत | आह्वयेताम् | आह्वयन्त |
| | आह्वयथाः | आह्वयेथाम् | आह्वयध्वम् |
| | आह्वये | आह्वयावहि | आह्वयामहि |
| अ० | आह्वत | आह्वेताम् | आह्वन्त |
| | आह्वथाः | आह्वेथाम् | आह्वध्वम् |
| | आह्वे | आह्वावहि | आह्वामहि |
| | आह्वास्त | आह्वासाताम् | आह्वासत |

आह्वास्थाः आह्वासाथाम् आह्वाध्वम्-ढ्वम्

| | | | |
|---|---|---|---|
| | आह्वासि | आह्वास्वहि | आह्वास्महि |
| प० | जुहुवे | जुहुवाते | जुहुविरे |
| | जुहुविषे | जुहुवाथे | जुहुविध्वे-ढ्वे |
| | जुहुवे | जुहुविवहे | जुहुविमहे |
| आ० | ह्वासीष्ट | ह्वासीयास्ताम् | ह्वासीरन् |
| | ह्वासीष्ठाः | ह्वासीयास्थाम् | ह्वासीध्वम् |
| | ह्वासीय | ह्वासीवहि | ह्वासीमहि |
| श्व० | ह्वाता | ह्वातारौ | ह्वातारः |
| | ह्वातासे | ह्वातासाथे | ह्वाताध्वे |
| | ह्वाताहे | ह्वातास्वहे | ह्वातास्महे |
| भ० | ह्वास्यते | ह्वास्येते | ह्वास्यन्ते |
| | ह्वास्यसे | ह्वास्येथे | ह्वास्यध्वे |
| | ह्वास्ये | ह्वास्यावहे | ह्वास्यामहे |
| क्रि० | अह्वास्यत | अह्वास्येताम् | अह्वास्यन्त |
| | अह्वास्यथाः | अह्वास्येथाम् | अह्वास्यध्वम् |
| | अह्वास्ये | अह्वास्यावहि | अह्वास्यामहि |

॥ टुवपँ-बीजसन्ताने ॥ वाप्तुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | वपति | वपतः | वपन्ति |
| | वपसि | वपथः | वपथ |
| | वपामि | वपावः | वपामः |
| स० | वपेत् | वपेताम् | वपेयुः |
| | वपेः | वपेतम् | वपेत |
| | वपेयम् | वपेव | वपेम |

प० वपतु वपतात् वपताम् वपन्तु
वप „ वपतम् वपत
वपानि वपाव वपाम

| | | | |
|---|---|---|---|
| ह्य० | अवपत् | अवपताम् | अवपन् |
| | अवपः | अवपतम् | अवपत |
| | अवपम् | अवपाव | अवपाम |
| अ० | अवाप्सीत् | अवाप्ताम् | अवाप्सुः |
| | अवाप्सीः | अवाप्तम् | अवाप्त |
| | अवाप्सम् | अवाप्स्व | अवाप्स्म |

प० उवाप ऊपतुः ऊपुः
उवपिथ उवप्थ ऊपथुः ऊप
उवाप उवप ऊपिव ऊपिम
आ० उप्यात् उप्यास्ताम् उप्यासुः
उप्याः उप्यास्तम् उप्यास्त
उप्यासम् उप्यास्व उप्यास्म
श्व० वप्ता वप्तारौ वप्तारः
वप्तासि वप्तास्थः वप्तास्थ
वप्तास्मि वप्तास्वः वप्तास्मः
भ० वप्स्यति वप्स्यतः वप्स्यन्ति
वप्स्यसि वप्स्यथः वप्स्यथ
वप्स्यामि वप्स्यावः वप्स्यामः
क्रि० अवप्स्यत् अवप्स्यताम् अवप्स्यन्
अवप्स्यः अवप्स्यतम् अवप्स्यत
अवप्स्यम् अवप्स्याव अवप्स्याम

व० वपते वपेते वपन्ते
वपसे वपेथे वपध्वे
वपे वपावहे वपामहे
स० वपेत वपेयाताम् वपेरन्
वपेथाः वपेयाथाम् वपेध्वम्
वपेय वपेवहि वपेमहि
प० वपताम् वपेताम् वपन्ताम्
वपस्व वपेथाम् वपध्वम्
वपै वपावहै वपामहै
ह्य० अवपत अवपेताम् अवपन्त
अवपथाः अवपेथाम् अवपध्वम्
अवपे अवपावहि अवपामहि
अ० अवप्त अवप्साताम् अवप्सत
अवप्थाः अवप्साथाम् अवब्द्ध्वम् ध्वम्
अवप्सि अवप्स्वहि अवप्स्महि
प० ऊपे ऊपाते ऊपिरे
ऊपिषे ऊपाथे ऊपिध्वे
ऊपे ऊपिवहे ऊपिमहे
आ० वप्सीष्ट वप्सीयास्ताम् वप्सीरन्
वप्सीष्ठाः वप्सीयास्थाम् वप्सीध्वम्
वप्सीय वप्सीवहि वप्सीमहि
श्व० वप्ता वप्तारौ वप्तारः
वप्तासे वप्तासाथे वप्ताध्वे
वप्ताहे वप्तास्वहे वप्तास्महे
भ० वप्स्यते वप्स्येते वप्स्यन्ते
वप्स्यसे वप्स्येथे वप्स्यध्वे
वप्स्ये वप्स्यावहे वप्स्यामहे
क्रि० अवप्स्यत अवप्स्येताम् अवप्स्यन्त
अवप्स्यथाः अवप्स्येथाम् अवप्स्यध्वम्
अवप्स्ये अवप्स्यावहि अवप्स्यामहि

वहीं-प्रापणे ॥ वहेवुं, लई जवुं ।

व० वहति वहतः वहन्ति
वहसि वहथः वहथ
वहामि वहावः वहामः
स० वहेत् वहेताम् वहेयुः
वहेः वहेतम् वहेत
वहेयम् वहेव वहेम
प० वहतु वहतात् वहताम् वहन्तु
वह „ वहतम् वहत
वहानि वहाव वहाम
ह्य० अवहत् अवहताम् अवहन्
अवहः अवहतम् अवहत
अवहम् अवहाव अवहाम
अ० अवाक्षीत् अवोढाम् अवाक्षुः
अवाक्षीः अवोढम् अवोढ
अवाक्षम् अवाक्ष्व अवाक्ष्म
प० उवाह ऊहतुः ऊहुः
उवहिथ उवोढ ऊहथुः ऊह
उवाह उवह ऊहिव ऊहिम
आ० उह्यात् उह्यास्ताम् उह्यासुः
उह्याः उह्यास्तम् उह्यास्त
उह्यासम् उह्यास्व उह्यास्म
श्व० वोढा वोढारौ वोढारः
वोढासि वोढास्थः वोढास्थ
वोढास्मि वोढास्वः वोढास्मः

भ० वक्ष्यति वक्ष्यतः वक्ष्यन्ति
वक्ष्यसि वक्ष्यथः वक्ष्यथ
वक्ष्यामि वक्ष्यावः वक्ष्यामः

क्रि० अवक्ष्यत् अवक्ष्यताम् अवक्ष्यन्
अवक्ष्यः अवक्ष्यतम् अवक्ष्यत
अवक्ष्यम् अवक्ष्याव अवक्ष्याम

व० वहते वहेते वहन्ते
वहसे वहेथे वहध्वे
वहे वहावहे वहामहे

स० वहेत वहेयाताम् वहेरन्
वहेथाः वहेयाथाम् वहेध्वम्
वहेय वहेवहि वहेमहि

प० वहताम् वहेताम् वहन्ताम्
वहस्व वहेथाम् वहध्वम्
वहै वहावहै वहामहै

ह्य० अवहत अवहेताम् अवहन्त
अवहथाः अवहेथाम् अवहध्वम्
अवहे अवहावहि अवहामहि

अ० अवोढ अवक्षाताम् अवक्षत
अवोढाः अवक्षाथाम् अवोढ्वम्
—अवड्ढ्वम्
अवक्षि अवक्ष्वहि अवक्ष्महि

प० ऊहे ऊहाते ऊहिरे
ऊहिषे ऊहाथे ऊहिध्वे-ढ्वे
ऊहे ऊहिवहे ऊहिमहे

आ० वक्षीष्ट वक्षीयास्ताम् वक्षीरन्
वक्षीष्ठाः वक्षीयास्थाम् वक्षीध्वम्
वक्षीय वक्षीवहि वक्षीमहि

श्व० वोढा वोढारौ वोढारः
वोढासे वोढासाथे वोढाध्वे
वोढाहे वोढास्वहे वोढास्महे

भ० वक्ष्यते वक्ष्येते वक्ष्यन्ते
वक्ष्यसे वक्ष्येथे वक्ष्यध्वे
वक्ष्ये वक्ष्यावहे वक्ष्यामहे

क्रि० अवक्ष्यत अवक्ष्येताम् अवक्ष्यन्त
अवक्ष्यथाः अवक्ष्येथाम् अवक्ष्यध्वम्
अवक्ष्ये अवक्ष्यावहि अवक्ष्यामहि

॥ टु ओश्वि—गतिवृद्ध्योः ॥ नवुं, वधवुं ।

व० श्वयति श्वयतः श्वयन्ति
श्वयसि श्वयथः श्वयथ
श्वयामि श्वयावः श्वयामः

स० श्वयेत् श्वयेताम् श्वयेयुः
श्वयेः श्वयेतम् श्वयेत
श्वयेयम् श्वयेव श्वयेम

प० श्वयतु श्वयतात् श्वयताम् श्वयन्तु
श्वय ,, श्वयतम् श्वयत
श्वयानि श्वयाव श्वयाम

ह्य० अश्वयत् अश्वयताम् अश्वयन्
अश्वयः अश्वयतम् अश्वयत
अश्वयम् अश्वयाव अश्वयाम

अ० अशिश्वियत् अशिश्वियताम् अशिश्वियन्
अशिश्वियः अशिश्वियतम् अशिश्वियत
अशिश्वियम् अशिश्वियाव अशिश्वियाम

अश्वत् अश्वताम् अश्वन्
अश्वः अश्वतम् अश्वत
अश्वम् अश्वाव अश्वाम

अश्वयीत् अश्वयिष्टाम् अश्वयिषुः
अश्वयीः अश्वयिष्टम् अश्वयिष्ट
अश्वयिषम् अश्वयिष्व अश्वयिष्म

प० शुशाव शुशुवतुः शुशुवुः
शुशुविथ शुशुवथुः शुशुव
शुशाव शुशव शुशुविव शुशुविम

शिश्वाय शिश्वियतुः शिश्वियुः
शिश्वयिथ शिश्वियथुः शिश्विय
शिश्वाय-शिश्वय शिश्वियिव शिश्वियिम

आ० शूयात् शूयास्ताम् शूयासुः
शूयाः शूयास्तम् शूयास्त
शूयासम् शूयास्व शूयास्म

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्व० | श्वयिता | श्वयितारौ | श्वयितारः |
| | श्वयितासि | श्वयितास्थः | श्वयितास्थ |
| | श्वयितास्मि | श्वयितास्वः | श्वयितास्मः |
| भ० | श्वयिष्यति | श्वयिष्यतः | श्वयिष्यन्ति |
| | श्वयिष्यसि | श्वयिष्यथः | श्वयिष्यथ |
| | श्वयिष्यामि | श्वयिष्यावः | श्वयिष्यामः |
| क्रि० | अश्वयिष्यत | अश्वयिष्यताम् | अश्वयिष्यन् |
| | अश्वयिष्यः | अश्वयिष्यतम् | अश्वयिष्यत |
| | अश्वयिष्यम् | अश्वयिष्याव | अश्वयिष्याम |

॥ वद्-व्यक्तायां वाचि ॥ स्पष्ट बोलवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | वदति | वदतः | वदन्ति |
| | वदसि | वदथः | वदथ |
| | वदामि | वदावः | वदामः |
| स० | वदेत् | वदेताम् | वदेयुः |
| | वदेः | वदेतम् | वदेत |
| | वदेयम् | वदेव | वदेम |
| प० | वदतु वदतात् | वदताम् | वदन्तु |
| | वद ,, | वदतम् | वदत |
| | वदानि | वदाव | वदाम |
| ह्य० | अवदत् | अवदताम् | अवदन् |
| | अवदः | अवदतम् | अवदत |
| | अवदम् | अवदाव | अवदाम |
| अ० | अवादीत् | अवादिष्टाम् | अवादिषुः |
| | अवादीः | अवादिष्टम् | अवादिष्ट |
| | अवादिषम् | अवादिष्व | अवादिष्म |
| प० | उवाद | ऊदतुः | ऊदुः |
| | उवदिथ | ऊदथुः | ऊद |
| | उवाद उवद | ऊदिव | ऊदिम |
| आ० | उद्यात् | उद्यास्ताम् | उद्यासुः |
| | उद्याः | उद्यास्तम् | उद्यास्त |
| | उद्यासम् | उद्यास्व | उद्यास्म |
| श्व० | वदिता | वदितारौ | वदितारः |
| | वदितासि | वदितास्थः | वदितास्थ |
| | वदितास्मि | वदितास्वः | वदितास्मः |
| भ० | वदिष्यति | वदिष्यतः | वदिष्यन्ति |
| | वदिष्यसि | वदिष्यथः | वदिष्यथ |
| | वदिष्यामि | वदिष्यावः | वदिष्यामः |
| क्रि० | अवदिष्यत् | अवदिष्यताम् | अवदिष्यन् |
| | अवदिष्यः | अवदिष्यतम् | अवदिष्यत |
| | अवदिष्यम् | अवदिष्याव | अवदिष्याम |

॥ वसं-निवासे ॥ वसवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | वसति | वसतः | वसन्ति |
| | वससि | वसथः | वसथ |
| | वसामि | वसावः | वसामः |
| स० | वसेत् | वसेताम् | वसेयुः |
| | वसेः | वसेतम् | वसेत |
| | वसेयम् | वसेव | वसेम |
| प० | वसतु वसतात् | वसताम् | वसन्तु |
| | वस | वसतम् | वसत |
| | वसानि | वसाव | वसाम |
| ह्य० | अवसत् | अवसताम् | अवसन् |
| | अवसः | अवसतम् | अवसत |
| | अवसम् | अवसाव | अवसाम |
| अ० | अवात्सीत् | अवात्ताम् | अवात्सुः |
| | अवात्सीः | अवात्तम् | अवात्त |
| | अवात्सम् | अवात्स्व | अवात्स्म |
| प० | उवास | ऊषतुः | ऊषुः |
| | उवसिथ उवस्थ | ऊषथुः | ऊष |
| | उवास उवस | ऊषिव | ऊषिम |
| आ० | उष्यात् | उष्यास्ताम् | उष्यासुः |
| | उष्याः | उष्यास्तम् | उष्यास्त |
| | उष्यासम् | उष्यास्व | उष्यास्म |
| श्व० | वस्ता | वस्तारौ | वस्तारः |
| | वस्तासि | वस्तास्थः | वस्तास्थ |
| | वस्तास्मि | वस्तास्वः | वस्तास्मः |
| भ० | वत्स्यति | वत्स्यतः | वत्स्यन्ति |
| | वत्स्यसि | वत्स्यथः | वत्स्यथ |
| | वत्स्यामि | वत्स्यावः | वत्स्यामः |

क्रि० अवत्स्यत अवत्स्यताम् अवत्स्यन्
अवत्स्यः अवत्स्यतम् अवत्स्यत
अवत्स्यम् अवत्स्याव अवत्स्याम

## ॥ इति यजादिः ॥

## ॥ अथ घटादिः ॥

॥ घटिष्-चेष्टायाम् चेष्टा करवी ।
घटते । अघटिष्ट । जघटे ।
क्षजुङ्-गतिदानयोः ॥ जवुं आपवुं ।
क्षञ्जते । अक्षञ्जिष्ट । चक्षञ्जे ।
॥ व्यथिष्-भयचलनयोः ॥ बीवुं, चालवुं
व्यथते । अव्यथिष्ट । विव्यथे ।
॥ प्रथिष्-प्रख्याने ॥ प्रसिद्ध करवुं ।
प्रथते । अप्रथिष्ट । पप्रथे ।
॥ म्रदिष्-मर्दने ॥ मर्दन करवुं चोळवुं
म्रदते । अम्रदिष्ट । मम्रदे ।
॥ स्खदिष्-स्खदने ॥ फाडी नाखवुं ।
स्खदनं-विदारणम् ।
स्खदते । अस्खदिष्ट । चस्खदे ।
॥ कदुङ् क्रदुङ् क्लदुङ् वैक्लव्ये ॥
कायर थवुं । गांडा थवुं भुलवुं
कन्दते । अकन्दिष्ट । चकन्दे ।
क्रन्दते । अक्रन्दिष्ट चक्रन्दे
क्लन्दते । अक्लन्दिष्ट । चक्लन्दे ।
॥ क्रपि-कृपायाम् ॥ दया करवी ।
क्रपते । अक्रपिष्ट । चक्रपे ।
॥ ञित्वरिष्-सम्भ्रमे ॥ उतावळ करवी
त्वरते । अत्वरिष्ट । तत्वरे ।
॥ प्रसिष्-विस्तारे ॥ विस्तारवुं ।
प्रसते अप्रसिष्ट । पप्रसे ।
॥ दक्षि-हिंसागत्योः ॥ हिंसा करवी,
जवुं, पकावबुं, रांधवुं ।

दक्षते । अदक्षिष्ट । ददक्षे ।
श्रा पाके । अग्रेऽस्य रूपाणि । स्मृं आ-
ध्याने, उत्कण्ठायाम् । दर्शितान्यस्य
रूपाणि ॥ दॄ भये । बीवुं ।
दरति । अदारीत् । ददार । ददरतुः
॥ नॄ-नये ॥ लइ जवुं ।
नरति । अनारीत् । ननरतुः ।
॥ ष्टक स्तक-प्रतीघाते ॥ पीडा करवी
दुःख देवुं ।
स्तकति । अस्ताकीत् । अस्तकीत् । तस्ताक
चक तृप्तौ च ॥ तृप्ति थवुं, पीडा करवी,
चकति । अचाकीत् । अचकीत् ।
चचाक । चचकतुः ।
॥ अक कुटिलायां-गतौ ॥ वांकु चालवुं
अकति । आकीत् । आक ।
॥ कखे-हसने ॥ हसवुं ।
कखति । अकखीत् । चकाख ।
॥ अग-अकवत् ॥ वांकुं चालवुं ।
अगति । आगीत् । आग ।
॥ रगे शङ्कायाम् ॥ शंका करवी ।
रगति । अरगीत् । रेगतुः ।
॥ लगे सङ्गे ॥ सोबत करवी, वळगवुं
लगति । अलगीत् । लेगिथ ।
ह्रगे, ह्लगे, षगे, ष्टगे स्थगे-संवरणे॥ ढांकवुं
ह्रगति । अह्रगीत् । जह्राग ।
ह्लगति । अह्लगीत् । जह्लाग ।
सगति । असगीत् । सेगिथ ।
स्थगति । अस्थगीत् । तस्थाग ।
॥ घट, भट, परिभाषणे॥ वातचीत करवी
घटति । अघाटीत् । अघटीत् ।
घघाट । घघटिथ ।
भटति । अभटीत् । अभाटीत् । बभटतुः
॥ णट-नतौ ॥ नमवुं ॥
नटति । अनाटीत् । अनटीत् नेटिथ ।
॥ गड-सेचने ॥ छांटवुं ।

गडति । अगाडीत् ।अगडीत् जगडतुः
॥ हेड-वेष्टने ॥ विंटवुं ।
हेडति । अहेडीत् । जिहेड ।
॥ लड जिह्वोन्मथने। उन्मथनं क्षापनम् ।
क्वचित् जिह्वोन्मन्थन इति ।जीभ हलाववी
लडति । अलाडीत् । अलडीत् लेडिथ
लत्वे तु ललति । अलालीत् । लेलिथ
॥ फण, कण, रण-गतौ ॥ जवुं ।
फणति । अफाणीत् । अफणीत् । पफाण
कणति । अकाणीत् । अकणीत् ।चकाण
रणति । अराणीत् । अरणीत् ।रेणिथ
॥ चण-हिंसादानयोश्च ॥ हिंसा करवी,
आपवुं जवुं ।
चणति । अचाणीत् । अचणीत् । चचाण
शण, श्रण-दाने ॥ आपवुं ।
शणति । अशणीत् । अशाणीत् । शशाण
श्रणति । अश्राणीत् । अश्रणीत् । शश्राण
॥ स्नथ, क्नथ, क्रथ, क्लथ-हिंसार्थाः ॥
हिंसा करवी ।
स्नथति । अस्नाथीत् । अस्नथीत् । सस्नाथ
क्नथति । अक्नाथीत् । अक्नथीत् । चक्नाथ
क्रथति । अक्राथीत् । अक्रथीत् । चक्राथ
क्लथति । अक्लाथीत्। अक्लथीत् । चक्लथ

॥ छद ऊर्जने ॥ बळवुं जीववुं ।
छदति । अच्छादीत् अच्छदीत् । चच्छाद
॥ मदै-हर्षग्लपनयो ॥ अग्रेऽस्य रूपाणि ।
खुशी थवुं, ग्लानी करवुं ।
॥ ष्टन स्तन ध्वन-शब्दे ॥ शब्द करवो
स्तनति अस्तानीत् अस्तनीत् तस्तान ।
ध्वनति अध्वानीत् अध्वनीत् दध्वान ।
॥ स्वन अवतंसने ॥ शोभाववुं ।
स्वनति अस्वानीत अस्वनीत् सस्वान ।
॥ चन-हिंसायाम् ॥ हिंसा करवी ।
चनति । अचानीत । अचनीत् चेनिथ
॥ ज्वर-रोगे ॥ ताव आववो ।
ज्वरति । अज्वारीत् । जज्वार ।
॥ चल-कम्पने ॥ धुजवुं, हालवुं ।
चलति । अचालीत् । चचाल ।
॥ ह्वल ह्मल-चलने ॥ चालवुं ॥
ह्वलति । अह्वालीत् । जह्वाल ।
ह्मलति । अह्मालीत् । जह्माल ।
॥ ज्वल-दीप्तौ च ॥ बळवुं ।
प्रकाशवुं चालवुं ।
ज्वलति । अज्वालीत् । जज्वाल ।
केचित्तु दलिवलिस्खलिक्षपित्रपीणा-
मपि घटादित्वमिच्छन्ति, तन्मते दलयति
वलयति स्खलयति त्रपयतीत्यपिभवति

## ॥ इति घटादिः ॥

श्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंरक्षणप्रवण
विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य
श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशा-
स्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजय-
विरचितायां हैमधातुमालायां

## ॥ भ्वादिगणः समाप्तः ॥

॥ अर्हम् ॥

## ॥ अथादादयः ॥

## ॥ परस्मैपदिनः ॥

॥ अदं-भक्षणे ॥ खावुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | अत्ति | अत्तः | अदन्ति |
| | अत्सि | अत्थः | अत्थ |
| | अद्मि | अद्वः | अद्मः |
| स० | अद्यात् | अद्याताम् | अद्युः |
| | अद्याः | अद्यातम् | अद्यात |
| | अद्याम् | अद्याव | अद्याम |
| प० | अत्तु अत्तात् | अत्ताम् | अदन्तु |
| | अद्धि ,, | अत्तम् | अत्त |
| | अदानि | अदाव | अदाम |
| ह्य० | आदत् | आत्ताम् | आदन् |
| | आदः | आत्तम् | आत्त |
| | आदम् | आद्व | आद्म |
| अ० | अघसत् | अघसताम् | अघसन् |
| | अघसः | अघसतम् | अघसत |
| | अघसम् | अघसाव | अघसाम |
| प० | जघास | जक्षतुः | जक्षुः |
| | जघसिथ | जक्षथुः | जक्ष |
| | जघास जघस | जक्षिव | जक्षिम |
| | आद | आदतुः | आदुः |
| | आदिथ | आदथुः | आद |
| | आद | आदिव | आदिम |
| आ० | अद्यात् | अद्यास्ताम् | अद्यासुः |
| | अद्याः | अद्यास्तम् | अद्यास्त |
| | अद्यासम् | अद्यास्व | अद्यास्म |
| श्व० | अत्ता | अत्तारौ | अत्तारः |
| | अत्तासि | अत्तास्थः | अत्तास्थ |
| | अत्तास्मि | अत्तास्वः | अत्तास्मः |
| भ० | अत्स्यति | अत्स्यतः | अत्स्यन्ति |
| | अत्स्यसि | अत्स्यथः | अत्स्यथ |
| | अत्स्यामि | अत्स्यावः | अत्स्यामः |
| क्रि० | आत्स्यत् | आत्स्यताम् | आत्स्यन् |
| | आत्स्यः | आत्स्यतम् | आत्स्यत |
| | आत्स्यम् | आत्स्याव | आत्स्याम |

॥ भांक्-दीप्तौ ॥ चळकवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | भाति | भातः | भान्ति |
| | भासि | भाथः | भाथ |
| | भामि | भावः | भामः |
| स० | भायात् | भायाताम् | भायुः |
| | भायाः | भायातम् | भायात |
| | भायाम् | भायाव | भायाम |
| प० | भातु भातात् | भाताम् | भान्तु |
| | भाहि ,, | भातम् | भात |
| | भानि | भाव | भाम |
| ह्य० | अभात् | अभाताम् | अभुः अभान् |
| | अभाः | अभातम् | अभात |
| | अभाम् | अभाव | अभाम |
| अ० | अभासीत् | अभासिष्टाम् | अभासिषुः |
| | अभासीः | अभासिष्टम् | अभासिष्ट |
| | अभासिषम् | अभासिष्व | अभासिष्म |
| प० | बभौ | बभतुः | बभुः |
| | बभिथ बभाथ | बभथुः | बभ |
| | बभौ | बभिव | बभिम |
| आ० | भायात् | भायास्ताम् | भायासुः |
| | भायाः | भायास्तम् | भायास्त |
| | भायासम् | भायास्व | भायास्म |
| श्व० | भाता | भातारौ | भातारः |
| | भातासि | भातास्थः | भातास्थ |
| | भातास्मि | भातास्वः | भातास्मः |
| भ० | भास्यति | भास्यतः | भास्यन्ति |
| | भास्यसि | भास्यथः | भास्यथ |
| | भास्यामि | भास्यावः | भास्यामः |
| क्रि० | अभास्यत् | अभास्यताम् | अभास्यन् |
| | अभास्यः | अभास्यतम् | अभास्यत |
| | अभास्यम् | अभास्याव | अभास्याम |

॥ प्सांक्-भक्षणे ॥ खावुं ।
व० प्साति । ह्य० अप्सात् । अप्सुः
अप्सान् । अ० अप्सासीत् ।
प० पप्सौ । आ० प्सायात् । प्सेयात्
॥ यांक्-प्रापणे ॥ जवुं ।
याति । अयासीत् । ययौ । यायात् ।
वांक्-गतिगन्धनयोः ॥ जवुं पीडा करवी
वाति । अवासीत् । ववौ । वायात् ।
॥ ष्णांक्-शौचे ॥ स्नान करवुं ।
स्नाति । अस्नासीत् । सस्नौ ।
स्नेयात् । स्नायात् ।
॥ श्रांक् पाके ॥ रांधवुं, पकाववुं ।
श्राति । अश्रासीत् । शश्रौ ।
श्रायात् । श्रेयात् ।
॥ द्रांक्-कुत्सितगतौ ॥ भागी जवुं उंघवुं
द्राति । अद्रासीत् । दद्रौ । द्रायात् द्रेयात्
॥ पांक्-रक्षणे ॥ रक्षण करवुं ।
पाति । अपासीत् । पपौ । पायात् ।
॥ लांक्-आदाने ॥ लेवुं ।
लाति । अलासीत् । ललौ । लायात् ।
॥ रांक्-दाने ॥ आपवुं ।
राति । अरासीत् । ररौ । रायात् ।
॥ दांवक्-लवने ॥ कापवुं ।
दाति । अदासीत् । ददौ । दायात्
॥ प्रांक् पूरणे ॥ पुरं करवुं ।
प्राति । अप्रासीत् पप्रौ । प्रायात् प्रेयात्
॥ मांक् माने, मानं वर्त्तनम ॥ मावुं ।
माति । अमासीत् । ममौ । मायात् ।
पाणिनीयमते ख्याधातोः अद्यतनीप्रभृतिषु रूपाणि न भवन्ति
॥ ख्यांक् प्रकथने ॥ कहेवुं प्रसिद्ध थवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | ख्याति | ख्यातः | ख्यान्ति |
| | ख्यासि | ख्याथः | ख्याथ |
| | ख्यामि | ख्यावः | ख्यामः |
| स० | ख्यायात् | ख्यायाताम् | ख्यायुः |
| | ख्यायाः | ख्यायातम् | ख्यायात |
| | ख्यायाम् | ख्यायाव | ख्यायाम |
| प० | ख्यातु ख्यातात् | ख्याताम् | ख्यान्तु |
| | ख्याहि ,, | ख्यातम् | ख्यात |
| | ख्यानि | ख्याव | ख्याम |
| ह्य० | आख्यात् | आख्याताम् | आख्युः आख्यान् |
| | आख्याः | आख्यातम् | आख्यात |
| | आख्याम् | आख्याव | आख्याम |
| अ० | आख्यत् | आख्यताम् | आख्यन् |
| | आख्यः | आख्यतम् | आख्यत |
| | आख्यम् | आख्याव | आख्याम |
| प० | आचख्यौ | आचख्यतुः | आचख्युः |
| | आचख्यिथ आचख्याथ | आचख्यथुः | आचख्य |
| | आचख्यौ | आचख्यिव | आचख्यिम |
| आ० | ख्येयात् | ख्येयास्ताम् | ख्येयासुः |
| | ख्येयाः | ख्येयास्तम् | ख्येयास्त |
| | ख्येयासम् | ख्येयास्व | ख्येयास्म |
| | ख्यायात् | ख्यायास्ताम् | ख्यायासुः |
| | ख्यायाः | ख्यायास्तम् | ख्यायास्त |
| | ख्यायासम् | ख्यायास्व | ख्यायास्म |
| श्व० | ख्याता | ख्यातारौ | ख्यातारः |
| | ख्यातासि | ख्यातास्थः | ख्यातास्थ |
| | ख्यातास्मि | ख्यातास्वः | ख्यातास्मः |
| भ० | ख्यास्यति | ख्यास्यतः | ख्यास्यन्ति |
| | ख्यास्यसि | ख्यास्यथः | ख्यास्यथ |
| | ख्यास्यामि | ख्यास्यावः | ख्यास्यामः |
| क्रि० | अख्यास्यत् | अख्यास्यताम् | अख्यास्यन् |
| | अख्यास्यः | अख्यास्यतम् | अख्यास्यत |
| | अख्यास्यम् | अख्यास्याव | अख्यास्याम |

॥ इंक्-स्मरणे ॥ याद करवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | अध्येति | अधीतः | अधियन्ति अधीयन्ति |
| | अध्येषि | अधीथः | अधीथ |
| | अध्येमि | अधीवः | अधीमः |
| स० | अधीयात् | अधीयाताम् | अधीयुः |
| | अधीयाः | अधीयातम् | अधीयात |

अधीयाम् अधीयाव अधीयाम
प० अध्येतु अधीतात् अधीताम् अधियन्तु
अधीयन्तु
अधीहि „ अधीतम् अधीत
अध्ययानि अध्ययाव अध्ययाम
ह्य० अध्यैत् अध्यैताम् अध्यायन् अध्यैयन्
अध्यैः अध्यैतम् अध्यैत
अध्यायम् अध्यैव अध्यैम
अ० अध्यगात् अध्यगाताम् अध्यगुः
अध्यगाः अध्यगातम् अध्यगात
अध्यगाम् अध्यगाव अध्यगाम
प० अधीयाय अधीयतुः अधीयुः
अधीययिथ अधीयेथ अधीयथुः अधीय
अधीयाय अधीयय अधीयिव अधीयिम
आ० अधीयात् अधीयास्ताम् अधीयासुः
अधीयाः अधीयास्तम् अधीयास्त
अधीयासम् अधीयास्व अधीयास्म
श्व० अध्येता अध्येतारौ अध्येतारः
अध्येतासि अध्येतास्थः अध्येतास्थ
अध्येतास्मि अध्येतास्वः अध्येतास्मः
भ० अध्येष्यति अध्येष्यतः अध्येष्यन्ति
अध्येष्यसि अध्येष्यथः अध्येष्यथ
अध्येष्यामि अध्येष्यावः अध्येष्यामः
क्रि० अध्यैष्यत् अध्यैष्यताम् अध्यैष्यन्
अध्यैष्यः अध्यैष्यतम् अध्यैष्यत
अध्यैष्यम् अध्यैष्याव अध्यैष्याम

॥ इंणक्-गतौ ॥ जवुं ।

व० एति इतः यन्ति
एषि इथः इथ
एमि इवः इमः
स० इयात् इयाताम् इयुः
इयाः इयातम् इयात
इयाम् इयाव इयाम
प० एतु इतात् इताम् यन्तु
इहि „ इतम् इत
अयानि अयाव अयाम
ह्य० ऐत् ऐताम् आयन्
ऐः ऐतम् ऐत
आयम् ऐव ऐम
अ० अगात् अगाताम् अगुः
अगाः अगातम् अगात
अगाम् अगाव अगाम
प० इयाय ईयतुः ईयुः
इययिथ इयेथ ईयथुः ईय
इयाय इयय ईयिव ईयिम
आ० ईयात् ईयास्ताम् ईयासुः
ईयाः ईयास्तम् ईयास्त
ईयासम् ईयास्व ईयास्म
श्व० एता एतारौ एतारः
एतासि एतास्थः एतास्थ
एतास्मि एतास्वः एतास्मः
भ० एष्यति एष्यतः एष्यन्ति
एष्यसि एष्यथः एष्यथ
एष्यामि एष्यावः एष्यामः
क्रि० ऐष्यत् ऐष्यताम् ऐष्यन्
ऐष्यः ऐष्यतम् ऐष्यत
ऐष्यम् ऐष्याव ऐष्याम

॥ वींक्-प्रजनकान्त्यसनखादने च । प्रजनः प्रथमगर्भग्रहणमसनं क्षेपणम् ॥
गर्भवाळा थवुं, इच्छवुं, फेकवुं खावुं,

व० वेति वीतः वियन्ति
वेषि वीथः वीथ
वेमि वीवः वीमः
स० वीयात् वीयाताम् वीयुः
वीयाः वीयातम् वीयात
वीयाम् वीयाव वीयाम
प० वेतु वीतात् वीताम् वियन्तु
वीहि „ वीतम् वीत
वयानि वयाव वयाम
ह्य० अवेत् अवीताम् अवियन्
अवेः अवीतम् अवीत
अवयम् अवीव अवीम
अ० अवैषीत् अवैष्टाम् अवैषुः

| | | |
|---|---|---|
| अवेषीः | अवैष्टम् | अवैष्ट |
| अवेषम् | अवेष्व | अवेष्म |
| प० विवाय | विव्यतुः | विव्युः |
| विवयिथ-विवेथ | विव्यथु | विव्य |
| विवाय विवय | विव्यिव | विव्यिम |
| आ० वीयात् | वीयास्ताम् | वीयासुः |
| वीयाः | वीयास्तम् | वीयास्त |
| वीयासम् | वीयास्व | वीयास्म |
| श्व० वेता | वेतारौ | वेतारः |
| वेतासि | वेतास्थः | वेतास्थ |
| वेतास्मि | वेतास्वः | वेतास्मः |
| भ० वेष्यति | वेष्यतः | वेष्यन्ति |
| वेष्यसि | वेष्यथः | वेष्यथ |
| वेष्यामि | वेष्यावः | वेष्यामः |
| क्रि० अवेष्यत् | अवेष्यताम् | अवेष्यन् |
| अवेष्यः | अवेष्यतम् | अवेष्यत |
| अवेष्यम् | अवेष्याव | अवेष्याम |

॥ इव-ईंक् इति प्रश्लेषः ॥
एति । ईतः । इयन्ति ।
ऐषीत् । अयाञ्चकार ।

॥ युंक्-अभिगमे ॥ सामा जवुं ।
द्यौति । अद्यौषीत् । दुद्याव ।
दुद्यविथ । दुद्योथ ।

षुंक्-प्रसवैश्वर्ययोः ॥ जन्म आपवो. उत्पन्न करवुं वैभववाळा थवुं.

| | | |
|---|---|---|
| व० सौति | सुतः | सुवन्ति |
| सौषि | सुथः | सुथ |
| सौमि | सुवः | सुमः |
| स० सुयात् | सुयाताम् | सुयुः |
| सुयाः | सुयातम् | सुयात |
| सुयाम् | सुयाव | सुयाम |
| प० सौतु | सुतात् सुताम् | सुवन्तु |
| सुहि | ,, सुतम् | सुत |
| सवानि | सवाव | सवाम |
| ह्य० असौत् | असुताम् | असुवन् |
| असौः | असुतम् | असुत |
| असवम् | असुव | असुम |
| अ० असावीत् | असाविष्टाम् | असाविषुः |
| असावीः | असाविष्टम् | असाविष्ट |
| असाविषम् | असाविष्व | असाविष्म |
| प० सुषाव | सुषुवतुः | सुषुवुः |
| सुषविथ-सुषोथ | सुषुवथु | सुषुव |
| सुषाव सुषव | सुषुविव | सुषुविम |
| आ० सूयात् | सूयास्ताम् | सूयासुः |
| सूयाः | सूयास्तम् | सूयास्त |
| सूयासम् | सूयास्व | सूयास्म |
| श्व० सोता | सोतारौ | सोतारः |
| सोतासि | सोतास्थः | सोतास्थ |
| सोतास्मि | सोतास्वः | सोतास्मः |
| भ० सोष्यति | सोष्यतः | सोष्यन्ति |
| सोष्यसि | सोष्यथः | सोष्यथ |
| सोष्यामि | सोष्यावः | सोष्यामः |
| क्रि० असोष्यत् | असोष्यताम् | असोष्यन् |
| असोष्यः | असोष्यतम् | असोष्यत |
| असोष्यम् | असोष्याव | असोष्याम |

॥ तुंक्-वृत्तिहिंसापूरणेषु ॥ आजीविका चलाववी हिंसा करवी. पुरवुं ।
तौति । तवीति । अतौषीत् ।तुतविथ ।तुतोथ

॥ युक्-मिश्रणे ॥ मिश्रण करवुं ।
यौति । अयावीत् । युयविथ ।

॥ णुक्-स्तुतौ ॥ स्तुति करवी, वखाणवुं
नौति । अनावीत् । नुनविथ ।

॥ क्ष्णुक्-तेजने ॥ तीक्ष्ण बनाववुं, अणीदार अथवा धारवाळु बनाववुं ।
क्ष्णौति । अक्ष्णावीत् । चुक्ष्णविथ ।

॥ स्नुक्-प्रस्रवणे ॥ झरवुं, टपकवुं ।
स्नौति । अस्नावीत् । सुष्णविथ ।

॥ टुक्षु रु कुंक्-शब्दे ॥ शब्द करवो. । अन्ये तु युगुणुभ्यां व्यंजनादौ विति शिति ईतमपीच्छन्ति यवीति, नवीति,

केचित्तु तुतः तुवीतः तूयात् तुवीयात्
इति सर्वत्र इत इत्याहुः ।
क्षौति । अक्षावीत् । चुक्षविथ ।
रवोति । रौति । अरावीत् । रुरविथ
कौति । अकौषीत् । चुकाव ।
चुकविथ । चुकोथ ।

॥ रुदृक्-अश्रुविमोचने ॥ रुदुं ।

| | | |
|---|---|---|
| व० रोदिति | रुदितः | रुदन्ति |
| रोदिषि | रुदिथः | रुदिथ |
| रोदिमि | रुदिवः | रुदिमः |
| स० रुद्यात् | रुद्याताम् | रुद्युः |
| रुद्याः | रुद्यातम् | रुद्यात |
| रुद्याम् | रुद्याव | रुद्याम |
| प० रोदितु रुदितात् | रुदिताम् | रुदन्तु |
| रुदिहि ,, | रुदितम् | रुदित |
| रोदानि | रोदाव | रोदाम |
| ह्य० अरोदीत् अरोदत् | अरुदिताम् | अरुदन् |
| अरोदीः अरोदः | अरुदितम् | अरुदित |
| अरोदम् | अरुदिव | अरुदिम |
| अ० अरोदीत् | अरोदिष्टाम् | अरोदिषुः |
| अरोदीः | अरोदिष्टम् | अरोदिष्ट |
| अरोदिषम् | अरोदिष्व | अरोदिष्म |
| अरुदत् | अरुदताम् | अरुदन् |
| अरुदः | अरुदतम् | अरुदत |
| अरुदम् | अरुदाव | अरुदाम |
| प० रुरोद | रुरुदतुः | रुरुदुः |
| रुरोदिथ | रुरुदथुः | रुरुद |
| रुरोद | रुरुदिव | रुरुदिम |
| आ० रुद्यात् | रुद्यास्ताम् | रुद्यासुः |
| रुद्याः | रुद्यास्तम् | रुद्यास्त |
| रुद्यासम् | रुद्यास्व | रुद्यास्म |
| श्व० रोदिता | रोदितारौ | रोदितारः |
| रोदितासि | रोदितास्थः | रोदितास्थ |
| रोदितास्मि | रोदितास्वः | रोदितास्मः |
| भ० रोदिष्यति | रोदिष्यतः | रोदिष्यन्ति |
| रोदिष्यसि | रोदिष्यथः | रोदिष्यथ |
| रोदिष्यामि | रोदिष्यावः | रोदिष्यामः |
| क्रि० अरोदिष्यत् | अरोदिष्यताम् | अरोदिष्यन् |
| अरोदिष्यः | अरोदिष्यतम् | अरोदिष्यत |
| अरोदिष्यम् | अरोदिष्याव | अरोदिष्याम |

॥ ञिष्वपंक्-शये ॥ सुवुं,

| | | |
|---|---|---|
| व० स्वपिति | स्वपितः | स्वपन्ति |
| स्वपिषि | स्वपिथः | स्वपिथ |
| स्वपिमि | स्वपिवः | स्वपिमः |
| स० स्वप्यात् | स्वप्याताम् | स्वप्युः |
| स्वप्याः | स्वप्यातम् | स्वप्यात |
| स्वप्याम् | स्वप्याव | स्वप्याम |
| प० स्वपितु स्वपितात् | स्वपिताम् | स्वपन्तु |
| स्वपिहि ,, | स्वपितम् | स्वपित |
| स्वपानि | स्वपाव | स्वपाम |
| ह्य० अस्वपीत् अस्वपत् | अस्वपिताम् | अस्वपन् |
| अस्वपीः अस्वपः | अस्वपितम् | अस्वपित |
| अस्वपम् | अस्वपिव | अस्वपिम |
| अ० अस्वाप्सीत् | अस्वाप्ताम् | अस्वाप्सुः |
| अस्वाप्सीः | अस्वाप्तम् | अस्वाप्त |
| अस्वाप्सम् | अस्वाप्स्व | अस्वाप्स्म |
| प० सुष्वाप | सुषुपतुः | सुषुपुः |
| सुष्वपिथ सुष्वप्थ | सुषुपथुः | सुषुप |
| सुष्वाप सुष्वप | सुषुपिव | सुषुपिम |
| आ० सुप्यात् | सुप्यास्ताम् | सुप्यासुः |
| सुप्याः | सुप्यास्तम् | सुप्यास्त |
| सुप्यासम् | सुप्यास्व | सुप्यास्म |
| श्व० स्वप्ता | स्वप्तारौ | स्वप्तारः |
| स्वप्तासि | स्वप्तास्थः | स्वप्तास्थ |
| स्वप्तास्मि | स्वप्तास्वः | स्वप्तास्मः |
| भ० स्वप्स्यति | स्वप्स्यतः | स्वप्स्यन्ति |
| स्वप्स्यसि | स्वप्स्यथः | स्वप्स्यथ |
| स्वप्स्यामि | स्वप्स्यावः | स्वप्स्यामः |
| क्रि० अस्वप्स्यत् | अस्वप्स्यताम् | अस्वप्स्यन् |
| अस्वप्स्यः | अस्वप्स्यतम् | अस्वप्स्यत |

अस्वप्स्यम् अस्वप्स्याव अस्वप्स्याम
॥ अन श्वसक्-प्राणने, ॥ जीववुं श्वास लेवो, मुकवो, ॥
व० अनिति अनितः अनन्ति
अनिषि अनिथः अनिथ
अनिमि अनिवः अनिमः
स० अन्यात् अन्यास्ताम् अन्युः
अन्याः अन्यास्तम् अन्यास्त
अन्याम् अन्याव अन्याम
प० अनितु अनितात् अनिताम् अनन्तु
अनिहि ,, अनितम् अनित
अनानि अनाव अनाम
ह्य० आनीत् आनत् आनिताम् आनन्
आनीः आनः आनितम् आनित
आनम् आनिव आनिम
अ० आनीत् आनिष्टाम् आनिषुः
आनीः आनिष्टम् आनिष्ट
आनिषम् आनिष्व आनिष्म
प० आन आनतुः आनुः
आनिथ आनथुः आन
आन आनिव आनिम
आ० अन्यात् अन्यास्ताम् अन्यासुः
अन्याः अन्यास्तम् अन्यास्त
अन्यासम् अन्यास्व अन्यास्म
श्व० अनिता अनितारौ अनितारः
अनितासि अनितास्थः अनितास्थ
अनितास्मि अनितास्वः अनितास्मः
भ० अनिष्यति अनिष्यतः अनिष्यन्ति
अनिष्यसि अनिष्यथः अनिष्यथ
अनिष्यामि अनिष्यावः अनिष्यामः
क्रि० आनिष्यत् आनिष्यताम् आनिष्यन्
आनिष्यः आनिष्यतम् आनिष्यत
आनिष्यम् आनिष्याव आनिष्याम
व० श्वसिति श्वसितः श्वसन्ति
श्वसिषि श्वसिथः श्वसिथ
श्वसिमि श्वसिवः श्वसिमः
स० श्वस्यात् श्वस्यास्ताम् श्वस्युः
श्वस्याः श्वस्यास्तम् श्वस्यास्त
श्वस्याम् श्वस्याव श्वस्याम
प० श्वसितु श्वसितात् श्वसिताम् श्वसन्तु
श्वसिहि ,, श्वसितम् श्वसित
श्वसानि श्वसाव श्वसाम
ह्य० अश्वसीत् अश्वसत् अश्वसिताम् अश्वसन्
अश्वसीः अश्वसः अश्वसितम् अश्वसित
अश्वसम् अश्वसिव अश्वसिम
अ० अश्वासीत् अश्वासिष्टाम् अश्वासिषुः
अश्वासीः अश्वासिष्टम् अश्वासिष्ट
अश्वासिषम् अश्वासिष्व अश्वासिष्म
॥ पाणि० मते अश्वसीदित्यादि ॥
अश्वसीत् अश्वसिष्टाम् अश्वसिषुः
अश्वसीः अश्वसिष्टम् अश्वसिष्ट
अश्वसिषम् अश्वसिष्व अश्वसिष्म
प० शश्वास शश्वसतुः शश्वसुः
शश्वसिथ शश्वसथुः शश्वस
शश्वास शश्वस शश्वसिव शश्वसिम
आ० श्वस्यात् श्वस्यास्ताम् श्वस्यासुः
श्वस्याः श्वस्यास्तम् श्वस्यास्त
श्वस्यासम् श्वस्यास्व श्वस्यास्म
श्व० श्वसिता श्वसितारौ श्वसितारः
श्वसितासि श्वसितास्थः श्वसितास्थ
श्वसितास्मि श्वसितास्वः श्वसितास्मः
भ० श्वसिष्यति श्वसिष्यतः श्वसिष्यन्ति
श्वसिष्यसि श्वसिष्यथः श्वसिष्यथ
श्वसिष्यामि श्वसिष्यावः श्वसिष्यामः
क्रि० अश्वसिष्यत् अश्वसिष्यताम् अश्वसिष्यन्
अश्वसिष्यः अश्वसिष्यतम् अश्वसिष्यत
अश्वसिष्यम् अश्वसिष्याव अश्वसिष्याम
॥ जक्षक्-भक्षहसनयोः खावुं. हसवुं ॥
व० जक्षिति जक्षितः जक्षति
जक्षिषि जक्षिथः जक्षिथ
जक्षिमि जक्षिवः जक्षिमः

स० जक्ष्यात् जक्ष्यातम् जक्ष्युः
जक्ष्याः जक्ष्यातम् जक्ष्यात
जक्ष्याम् जक्ष्याव जक्ष्याम

प० जक्षितु जक्षितात् जक्षिताम् जक्षतु
जक्षिहि ,, जक्षितम् जक्षित
जक्षाणि जक्षाव जक्षाम

ह्य० अजक्षीत अजक्षत अजक्षिताम अजक्षुः
अजक्षो· अजक्षः अजक्षितम अजक्षित
अजक्षम अजक्षिव अजक्षिम

अ० अजक्षीत् अजक्षिष्टाम् अजक्षिषुः
अजक्षीः अजक्षिष्टम् अजक्षिष्ट
अजक्षिषम् अजक्षिष्व अजक्षिष्म

प० जजक्ष जजक्षतुः जजक्षुः
जजक्षिथ जजक्षथुः जजक्ष
जजक्ष जजक्षिव जजक्षिम

आ० जक्ष्यात् जक्ष्यास्ताम् जक्ष्यासुः
जक्ष्याः जक्ष्यास्तम् जक्ष्यास्त
जक्ष्यासम् जक्ष्यास्व जक्ष्यास्म

श्व० जक्षिता जक्षितारौ जक्षितारः
जक्षितासि जक्षितास्थः जक्षितास्थ
जक्षितास्मि जक्षितास्वः जक्षितास्मः

भ० जक्षिष्यति जक्षिष्यतः जक्षिष्यन्ति
जक्षिष्यसि जक्षिष्यथः जक्षिष्यथ
जक्षिष्यामि जक्षिष्यावः जक्षिष्यामः

क्रि० अजक्षिष्यत् अजक्षिष्यताम् अजक्षिष्यन्
अजक्षिष्यः अजक्षिष्यतम् अजक्षिष्यत
अजक्षिष्यम् अजक्षिष्याव अजक्षिष्याम

॥ दरिद्राकृ-दुर्गतौ ॥ दरिद्र थवुं

व० दरिद्राति दरिद्रितः दरिद्रति
दरिद्रासि दरिद्रिथः दरिद्रिथ
दरिद्रामि दरिद्रिवः दरिद्रिमः

स० दरिद्रियात् दरिद्रियाताम् दरिद्रियुः
दरिद्रियाः दरिद्रियातम् दरिद्रियात
दरिद्रियाम् दरिद्रियाव दरिद्रियाम

प० दरिद्रातु दरिद्रितात् दरिद्रिताम् दरिद्रतु
दरिद्रिहि ,, दरिद्रितम् दरिद्रित
दरिद्राणि दरिद्राव दरिद्राम

ह्य० अदरिद्रात् अदरिद्रिताम् अदरिद्रुः
अदरिद्राः अदरिद्रितम् अदरिद्रित
अदरिद्राम् अदरिद्रिव अदरिद्रिम

अ० अदरिद्रीत् अदरिद्रिष्टाम् अदरिद्रिषुः
अदरिद्रीः अदरिद्रिष्टम् अदरिद्रिष्ट
अदरिद्रिषम् अदरिद्रिष्व अदरिद्रिष्म
अदरिद्रासीत् अदरिद्रासिष्टाम् अदरिद्रासिषुः
अदरिद्रासीः अदरिद्रासिष्टम् अदरिद्रासिष्ट
अदरिद्रासिषम् अदरिद्रासिष्व अदरिद्रासिष्म

प० दरिद्राञ्चकार दरिद्राञ्चक्रतुः दरिद्राञ्चक्रुः
दरिद्राञ्चकर्थ दरिद्राञ्चक्रथुः दरिद्राञ्चक्र
दरिद्राञ्चकार-चकर दरिद्राञ्चकृव दरिद्राञ्चकृम

ददरिद्रौ ददरिद्रतुः ददरिद्रुः
ददरिद्रिथ ददरिद्रथुः ददरिद्र
ददरिद्रौ ददरिद्रिव ददरिद्रिम

आ० दरिद्र्यात् दरिद्र्यास्ताम् दरिद्र्यासुः
दरिद्र्याः दरिद्र्यास्तम् दरिद्र्यास्त
दरिद्र्यासम् दरिद्र्यास्व दरिद्र्यास्म

श्व० दरिद्रिता दरिद्रितारौ दरिद्रितारः
दरिद्रितासि दरिद्रितास्थः दरिद्रितास्थ
दरिद्रितास्मि दरिद्रितास्वः दरिद्रितास्मः

भ० दरिद्रिष्यति दरिद्रिष्यतः दरिद्रिष्यन्ति
दरिद्रिष्यसि दरिद्रिष्यथः दरिद्रिष्यथ
दरिद्रिष्यामि दरिद्रिष्यावः दरिद्रिष्यामः

क्रि० अदरिद्रिष्यत् अदरिद्रिष्यताम् अदरिद्रिष्यन्
अदरिद्रिष्यः अदरिद्रिष्यतम् अदरिद्रिष्यत
अदरिद्रिष्यम् अदरिद्रिष्याव अदरिद्रिष्याम

॥ जागृक्-निद्राक्षये, ॥ जागवुं,

व० जागर्ति जागृतः जाग्रति
जागर्षि जागृथः जागृथ
जागर्मि जागृवः जागृमः

स० जागृयात् जागृयाताम् जागृयुः
जागृयाः जागृयातम् जागृयात
जागृयाम् जागृयाव जागृयाम
प० जागर्तु जागृतात् जागृताम् जाग्रतु
जागृहि ,, जागृतम् जागृत
जागराणि जागराव जागराम
ह्य० अजागः अजागृताम् अजागरुः
अजागः अजागृतम् अजागृत
अजागरम् अजागृव अजागृम
अ० अजागरीत् अजागरिष्टाम् अजागरिषुः
अजागरीः अजागरिष्टम् अजागरिष्ट
अजागरिषम् अजागरिष्व अजागरिष्म
प० जजागार जजागरतुः जजागरुः
जजागरिथ जजागरथुः जजागर
जजागार जजागर जजागरिव जजागरिम
जागराञ्चकार । जागरामास । जागराम्बभूव
आ० जागर्यात् जागर्यास्ताम् जागर्यासुः
जागर्याः जागर्यास्तम् जागर्यास्त
जागर्यासम् जागर्यास्व जागर्यास्म
श्व० जागरिता जागरितारौ जागरितारः
जागरितासि जागरितास्थः जागरितास्थ
जागरितास्मि जागरितास्वः जागरितास्मः
भ० जागरिष्यति जागरिष्यतः जागरिष्यन्ति
जागरिष्यसि जागरिष्यथः जागरिष्यथ
जागरिष्यामि जागरिष्यावः जागरिष्यामः
अजागरिष्यत् अजागरिष्यताम् अजागरिष्यन्
अजागरिष्यः अजागरिष्यतम् अजागरिष्यत
अजागरिष्यम् अजागरिष्याव अजागरिष्याम

॥ चकासृक्-दीप्तौ, ॥ चळकवुं

व० चकास्ति चकास्तः चकासति
चकास्सि चकास्थः चकास्थ
चकास्मि चकास्वः चकास्मः
स० चकास्यात् चकास्याताम् चकास्युः
चकास्याः चकास्यातम् चकास्यात
चकास्याम् चकास्याव चकास्याम
प० चकास्तु चकास्तात् चकास्ताम् चकासतु
चकाधि चकाद्धि चकास्तम् चकास्त
चकासानि चकासाव चकासाम
ह्य० अचकात्-द् अचकास्ताम् अचकासुः
अचकाः अचकात्-द् अचकास्तम् अचकास्त
अचकासम् अचकास्व अचकास्म
अ० अचकासीत् अचकासिष्टाम् अचकासिषुः
अचकासीः अचकासिष्टम् अचकासिष्ट
अचकासिषम् अचकासिष्व अचकासिष्म
प० चकासाञ्चकार चकासाञ्चक्रतुः चकासाञ्चक्रुः
चकासाञ्चकर्थ चकासाञ्चक्रथुः चकासाञ्चक्र
चकासाञ्चकार चकासाञ्चकृव चकासाञ्चकृम
आ० चकास्यात् चकास्यास्ताम् चकास्यासुः
चकास्याः चकास्यास्तम् चकास्यास्त
चकास्यासम् चकास्यास्व चकास्यास्म
श्व० चकासिता चकासितारौ चकासितारः
चकासितासि चकासितास्थः चकासितास्थ
चकासितास्मि चकासितास्वः चकासितास्मः
भ० चकासिष्यति चकासिष्यतः चकासिष्यन्ति
चकासिष्यसि चकासिष्यथः चकासिष्यथ
चकासिष्यामि चकासिष्यावः चकासिष्यामः
अचकासिष्यत् अचकासिष्यताम् अचकासिष्यन्
अचकासिष्यः अचकासिष्यतम् अचकासिष्यत
अचकासिष्यम् अचकासिष्याव अचकासिष्याम

॥ शासूक्-अनुशिष्टौ, ॥ हुकम चलाववो

व० शास्ति शिष्टः शासति
शास्सि शिष्ठः शिष्ठ
शास्मि शिष्वः शिष्मः
स० शिष्यात् शिष्याताम् शिष्युः
शिष्याः शिष्यातम् शिष्यात
शिष्याम् शिष्याव शिष्याम
प० शास्तु शिष्टात् शिष्टाम् शासतु

शाधि ,, शिष्टम् शिष्ट
शासानि शासाव शासाम
ह्य० अशात् अशिष्टाम् अशासुः
अशाः अशात् अशिष्टम् अशिष्ट
अशासम् अशिष्व अशिष्म
अ० अशिषत् अशिषताम् अशिषन्
अशिषः अशिषतम् अशिषत
अशिषम् अशिषाव अशिषाम
प० शशास शशासतुः शशासुः
शशासिथ शशासथुः शशास
शशास शशासिव शशासिम
आ० शिष्यात् शिष्यास्ताम् शिष्यासुः
शिष्याः शिष्यास्तम् शिष्यास्त
शिष्यासम् शिष्यास्व शिष्यास्म
श्व० शासिता शासितारौ शासितारः
शासितासि शासितास्थः शासितास्थ
शासितास्मि शासितास्वः शासितास्मः
भ० शासिष्यति शासिष्यतः शासिष्यन्ति
शासिष्यसि शासिष्यथः शासिष्यथ
शासिष्यामि शासिष्यावः शासिष्यामः
क्रि० अशासिष्यत् अशासिष्यताम्-सिष्यन्
अशासिष्यः अशासिष्यतम् अशासिष्यत
अशासिष्यम् अशासिष्याव अशासिष्याम

॥ वचं क्-भाषणे ॥ बोलवुं । अन्तौ वचेः प्रयोगं नेच्छान्त्येके । वचनपरो वचधातुर्न प्रयुज्यते इत्यन्ये । (तन्मते पुरुषत्रये बहुवचनं नास्तीति, )

व० वक्ति वक्तः वचन्ति
वक्षि वक्थः वक्थ
वच्मि वच्वः वच्मः
स० वच्यात् वच्याताम् वच्युः
वच्याः वच्यातम् वच्यात
वच्याम् वच्याव वच्याम
प० वक्तु वक्तात् वक्ताम् वचन्तु
वग्धि ,, वक्तम् वक्त
वचानि वचाव वचाम
ह्य० अवक्-ग् अवक्ताम् अवचन्
,, ,, अवक्तम् अवक्त
अवचम् अवच्व अवच्म
अ० अवोचत् अवोचताम् अवोचन्
अवोचः अवोचतम् अवोचत
अवोचम् अवोचाव अवोचाम
प० उवाच ऊचतुः ऊचुः
उवचिथ उवक्थ ऊचथुः ऊच
उवाच उवच ऊचिव ऊचिम
आ० उच्यात् उच्यास्ताम् उच्यासुः
उच्याः उच्यास्तम् उच्यास्त
उच्यासम् उच्यास्व उच्यास्म
श्व० वक्ता वक्तारौ वक्तारः
वक्तासि वक्तास्थः वक्तास्थ
वक्तास्मि वक्तास्वः वक्तास्मः
भ० वक्ष्यति वक्ष्यतः वक्ष्यन्ति
वक्ष्यसि वक्ष्यथः वक्ष्यथ
वक्ष्यामि वक्ष्यावः वक्ष्यामः
क्रि० अवक्ष्यत् अवक्ष्यताम् अवक्ष्यन्
अवक्ष्यः अवक्ष्यतम् अवक्ष्यत
अवक्ष्यम् अवक्ष्याव अवक्ष्याम

॥ मृजौक्-शुद्धौ ॥ शुद्ध थवुं अथवा करवुं

व० मार्ष्टि मृष्टः मृजन्ति मार्जन्ति
मार्क्षि मृष्ठः मृष्ठ
मार्ज्मि मृज्वः मृज्मः
स० मृज्यात् मृज्याताम् मृज्युः
मृज्याः मृज्यातम् मृज्यात
मृज्याम् मृज्याव मृज्याम
प० मार्ष्टु मृष्टात् मृष्टाम् मृजन्तु मार्जन्तु
मृड्ढि ,, मृष्टम् मृष्ट
मार्जानि मार्जाव मार्जाम
ह्य० अमार्ट्-ड् अमृष्टाम् अमार्जन् अमृजन्

अमार्ड्-ड् अमृष्व्म् अमृष्ट
अमार्जम् अमृज्व अमृज्म
अ० अमार्जीत् अमार्जिष्टाम् अमार्जिषुः
अमार्जीः अमार्जिष्टम् अमार्जिष्ट
अमार्जिषम् अमार्जिष्व अमार्जिष्म

अमार्क्षीत् अमार्ष्टाम् अमार्क्षुः
अमार्क्षीः अमार्ष्टम् अमार्ष्ट
अमार्क्षम् अमार्क्ष्व अमार्क्ष्म

प० ममार्ज ममार्जतुः ममार्जुः
ममृजतुः ममृजुः
ममार्जिथ ममार्जथुः ममार्ज
ममृजथुः ममृज
ममार्ज ममार्जिव ममार्जिम
ममृजिव ममृजिम

आ०मृज्यात् मृज्यास्ताम् मृज्यासुः
मृज्याः मृज्यास्तम् मृज्यास्त
मृज्यासम् मृज्यास्व मृज्यास्म
श्व०मार्जिता मार्जितारौ मार्जितारः
मार्जितासि मार्जितास्थः मार्जितास्थ
मार्जितास्मि मार्जितास्वः मार्जितास्मः

मार्ष्टा मार्ष्टारौ मार्ष्टारः
मार्ष्टासि मार्ष्टास्थः मार्ष्टास्थ
मार्ष्टास्मि मार्ष्टास्वः मार्ष्टास्मः

भ० मार्जिष्यति मार्जिष्यतः मार्जिष्यन्ति
मार्जिष्यसि मार्जिष्यथः मार्जिष्यथ
मार्जिष्यामि मार्जिष्यावः मार्जिष्यामः

मार्क्ष्यति मार्क्ष्यतः मार्क्ष्यन्ति
मार्क्ष्यसि मार्क्ष्यथः मार्क्ष्यथ
मार्क्ष्यामि मार्क्ष्यावः मार्क्ष्यामः

क्रि०अमार्क्ष्यत् अमार्क्ष्यताम् अमार्क्ष्यन्
अमार्क्ष्यः अमार्क्ष्यतम् अमार्क्ष्यत
अमार्क्ष्यम् अमार्क्ष्याव अमार्क्ष्याम

अमार्जिष्यत् अमार्जिष्यताम् अमार्जिष्यन्
अमार्जिष्यः अमार्जिष्यतम् अमार्जिष्यत
अमार्जिष्यम् अमार्जिष्याव अमार्जिष्याम

॥ सस्तुक्-स्वप्ने ॥ ऊंघवुं,
संस्ति । संस्तः । संस्तन्ति
क्वचित्-सन्ति । संतः इति ।
असंस्तीत् । ससंस्त ।

॥ विदक्-विज्ञाने ॥ जाणवुं ॥

व० वेत्ति वित्तः विदन्ति
वेत्सि वित्थः वित्थ
वेद्मि विद्वः विद्मः
वेद विदतुः विदुः
वेत्थ विदथुः विद
वेद विद्व विद्म
स० विद्यात् विद्यास्ताम् विद्युः
विद्याः विद्यातम् विद्यात
विद्याम् विद्याव विद्याम

प० वेत्तु वित्तात् वित्ताम् विदन्तु
विद्धि „ वित्तम् वित्त
वेदानि वेदाव वेदाम
विदांकरोतु विदांकुरुताम् विदांकुर्वन्तु
विदांकुरुतात्
विदांकुरु विदांकुरुतम् विदांकुरुत
विदांकरवाणि विदांकरवाव विदांकरवाम
ह्य० अवेत्-द् अवित्ताम् अविदुः
अवेः अवेत्-द् अवित्तम् अवित्त
अवेदम् अविद्व अविद्म
अ० अवेदीत् अवेदिष्टाम् अवेदिषुः
अवेदीः अवेदिष्टम् अवेदिष्ट
अवेदिषम् अवेदिष्व अवेदिष्म
प० विदाञ्चकार विदाञ्चक्रतुः विदाञ्चक्रुः
विदाञ्चकर्थ विदाञ्चक्रथुः विदाञ्चक्र
विदाञ्चकार-चकर विदाञ्चकृव विदाञ्चकृम
विवेद विविदतुः विविदुः
विवेदिथ विविदथुः विविद
विवेद विविदिव विविदिम
आ०विद्यात् विद्यास्ताम् विद्यासुः
विद्याः विद्यास्तम् विद्यास्त

विद्यासम् विद्यास्व विद्यास्म

श्व० वेदिता वेदितारौ वेदितारः
वेदितासि वेदितास्थः वेदितास्थ
वेदितास्मि वेदितास्वः वेदितास्मः

भ० वेदिष्यति वेदिष्यतः वेदिष्यन्ति
वेदिष्यसि वेदिष्यथः वेदिष्यथ
वेदिष्यामि वेदिष्यावः वेदिष्यामः

क्रि० अवेदिष्यत् अवेदिष्यताम् अवेदिष्यन्
अवेदिष्यः अवेदिष्यतम् अवेदिष्यत
अवेदिष्यम् अवेदिष्याव अवेदिष्याम

॥ हनक्-हिंसा-गत्योः, ॥ मारवुं जवुं

व० हन्ति हतः घ्नन्ति
हंसि हथः हथ
हन्मि हन्वः हन्मः

स० हन्यात् हन्याताम् हन्युः
हन्याः हन्यातम् हन्यात
हन्याम् हन्याव हन्याम

हन्तु हतात् हताम् घ्नन्तु
जहि ,, हतम् हत
हनानि हनाव हनाम

ह्य० अहन् अहताम् अघ्नन्
,, अहतम् अहत
अहनम् अहन्व अहन्म

अ० अवधीत् अवधिष्टाम् अवधिषुः
अवधीः अवधिष्टम् अवधिष्ट
अवधिषम् अवधिष्व अवधिष्म

प० जघान जघ्नतुः जघ्नुः
जघनिथ जघन्थ जघ्नथुः जघ्न
जघान जघन जघ्निव जघ्निम

आ० वध्यात् वध्यास्ताम् वध्यासुः
वध्याः वध्यास्तम् वध्यास्त
वध्यासम् वध्यास्व वध्यास्म

श्व० हन्ता हन्तारौ हन्तारः
हन्तासि हन्तास्थः हन्तास्थ
हन्तास्मि हन्तास्वः हन्तास्मः

भ० हनिष्यति हनिष्यतः हनिष्यन्ति
हनिष्यसि हनिष्यथः हनिष्यथ
हनिष्यामि हनिष्यावः हनिष्यामः

क्रि० अहनिष्यत् अहनिष्यताम् अहनिष्यन्
अहनिष्यः अहनिष्यतम् अहनिष्यत
अहनिष्यम् अहनिष्याव अहनिष्याम

॥ वशक्-कान्तौ, ॥ इच्छवुं

व० वष्टि उष्टः उशन्ति
वक्षि उष्ठः उष्ट
वश्मि उश्वः उश्मः

स० उश्यात् उश्याताम् उश्युः
उश्याः उश्यातम् उश्यात
उश्याम् उश्याव उश्याम

प० वष्टु उष्टात् उष्टाम् उशन्तु
उड्ढि ,, उष्टम् उष्ट
वशानि वशाव वशाम

ह्य० अवट्-ड् औष्टाम् औशन्
अवट् ड् औष्टम् औष्ट
अवशम् औश्व औश्म

अ० अवाशीत् अवाशिष्टाम् अवाशिषुः
अवाशीः अवाशिष्टम् अवाशिष्ट
अवाशिषम् अवाशिष्व अवाशिष्म

अवशीत् अवशिष्टाम् अवशिषुः
अवशीः अवशिष्टम् अवशिष्ट
अवशिषम् अवशिष्व अवशिष्म

प० उवाश ऊशतुः ऊशुः
उवशिथ ऊशथुः ऊश
उवाश उवश ऊशिव ऊशिम

आ० उश्यात् ऊश्यास्ताम् उश्यासुः
ऊश्याः ऊश्यास्तम् उश्यास्त
ऊश्यासम् उश्यास्व ऊश्यास्म

श्व० वशिता वशितारौ वशितारः
वशितासि वशितास्थः वशितास्थ
वशितास्मि वशितास्वः वशितास्मः

भ० वशिष्यति वशिष्यतः वशिष्यन्ति
वशिष्यसि वशिष्यथः वशिष्यथ
वशिष्यामि वशिष्यावः वशिष्यामः
क्रि० अवशिष्यत् अवशिष्यताम् अवशिष्यन्
अवशिष्यः अवशिष्यतम् अवशिष्यत
अवशिष्यम् अवशिष्याव अवशिष्याम

॥ असक्-भुवि, ॥ होवुं, थवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | अस्ति | स्तः | सन्ति |
| | असि | स्थः | स्थ |
| | अस्मि | स्वः | स्मः |
| स० | स्यात् | स्याताम् | स्युः |
| | स्याः | स्यातम् | स्यात |
| | स्याम् | स्याव | स्याम |
| प० | अस्तु स्तात् | स्ताम् | सन्तु |
| | एधि ,, | स्तम् | स्त |
| | असानि | असाव | असाम |
| ह्य० | आसीत् | आस्ताम् | आसन् |
| | आसीः | आस्तम् | आस्त |
| | आसम् | आस्व | आस्म |
| अ० | अभूत् | अभूताम् | अभूवन् |
| | अभूः | अभूतम् | अभूत |
| | अभूवम् | अभूव | अभूम |
| प० | बभूव | बभूवतुः | बभूवुः |
| | बभूविथ | बभूवथुः | बभूव |
| | बभूव | बभूविव | बभूविम |
| आ० | भूयात् | भूयास्ताम् | भूयासुः |
| | भूयाः | भूयास्तम् | भूयास्त |
| | भूयासम् | भूयास्व | भूयास्म |
| श्व० | भविता | भवितारौ | भवितारः |
| | भवितासि | भवितास्थः | भवितास्थ |
| | भवितास्मि | भवितास्वः | भवितास्मः |
| भ० | भविष्यति | भविष्यतः | भविष्यन्ति |
| | भविष्यसि | भविष्यथः | भविष्यथ |
| | भविष्यामि | भविष्यावः | भविष्यामः |

क्रि० अभविष्यत् अभविष्यताम् अभविष्यन्
अभविष्यः अभविष्यतम् अभविष्यत
अभविष्यम् अभविष्याव अभविष्याम

॥ षसक्-स्वप्ने ॥ ऊंघवु,

व० सस्ति । सस्तः । ससन्ति ।
प० सस्तु । सधि । सद्धि
ह्य० असत् । असः । असत् ।
अ० असासीत् । अससीत् ।
प० ससास । सेसतुः । सेसिथ ।

## ॥ इति अदादयः परस्मैपदिनः ॥

---

## ॥ अथात्मनेपदिनः ॥

॥ इङ्क्-अध्ययने, ॥ भणवुं, अभ्यास करवो

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | अधीते | अधीयाते | अधीयते |
| | अधीषे | अधीयाथे | अधीध्वे |
| | अधीये | अधीवहे | अधीमहे |
| स० | अधीयीत | अधीयीयाताम् | अधीयीरन् |
| | अधीयीथाः | अधीयीयाथाम् | अधीयीध्वम् |
| | अधीयीय | अधीयीवहि | अधीयीमहि |
| प० | अधीताम् | अधीयाताम् | अधीयताम् |
| | अधीष्व | अधीयाथाम् | अधीध्वम् |
| | अध्ययै | अध्ययावहै | अध्ययामहै |
| ह्य० | अध्यैत | अध्यैयाताम् | अध्यैयत |
| | अध्यैथाः | अध्यैयाथाम् | अध्यैध्वम् |
| | अध्यैयि | अध्यैवहि | अध्यैमहि |

अ० अध्यगीष्ट अध्यगीषाताम् अध्यगीषत
अध्यगीष्ठाः अध्यगीषाथाम् अध्यगीढ्वम्
ढ्वम्
अध्यगीषि अध्यगीष्वहि अध्यगीष्महि
अध्यैष्ट अध्यैषाताम् अध्यैषत
अध्यैष्ठाः अध्यैषाथाम् अध्यैढ्वम् ढ्वम्

अध्यैषि अध्यैष्वहि अध्यैष्महि

प० अधिजगे अधिजगाते अधिजगिरे
अधिजगिषे अधिजगाथे अधिजगिध्वे
अधिजगे अधिजगिवहे अधिजगिमहे

आ० अध्येषीष्ट अध्येषीयास्ताम् अध्येषीरन्
अध्येषीष्ठाः अध्येषीयास्थाम् अध्येषीढ्वम्
अध्येषीय अध्येषीवहि अध्येषीमहि

श्व० अध्येता अध्येतारौ अध्येतारः
अध्येतासे अध्येतासाथे अध्येताध्वे
अध्येताहे अध्येतास्वहे अध्येतास्महे

भ० अध्येष्यते अध्येष्येते अध्येष्यन्ते
अध्येष्यसे अध्येष्येथे अध्येष्यध्वे
अध्येष्ये अध्येष्यावहे अध्येष्यामहे

अध्यगीष्यत अध्यगीष्येताम् अध्यगीष्यन्त
अध्यगीष्यथाः अध्यगीष्येथाम् अध्यगीष्यध्वम्
अध्यगीष्ये अध्यगीष्यावहि अध्यगीष्यामहि

अध्यैष्यत अध्यैष्येताम् अध्यैष्यन्त
अध्यैष्यथाः अध्यैष्येथाम् अध्यैष्यध्वम्
अध्यैष्ये अध्यैष्यावहि अध्यैष्यामहि

॥ शीङ्कृ–स्वप्ने, ॥ सुवुं

व० शेते शयाते शेरते
शेषे शयाथे शेध्वे
शये शेवहे शेमहे

स० शयीत शयीयाताम् शयीरन्
शयीथाः शयीयाथाम् शयीध्वम्
शयीय शयीवहि शयीमहि

प० शेताम् शयाताम् शेरताम्
शेष्व शयाथाम् शेध्वम्
शयै शयावहै शयामहै

ह्य० अशेत अशयाताम् अशेरत
अशेथाः अशयाथाम् अशेध्वम्
अशयि अशेवहि अशेमहि

अ० अशयिष्ट अशयिषाताम् अशयिषत
अशयिष्ठाः अशयिषाथाम् अशयिढ्ढ्वम्
ढ्वम्, ध्वम्

अशयिषि अशयिष्वहि अशयिष्महि

प० शिशाय शिश्यतुः शिश्युः
शिशयिथ शिश्यथुः शिश्य
शिशाय शिशय शिश्यिव शिश्यिम

आ० शयिषीष्ट शयिषीयास्ताम् शयिषीरन्
शयिषीष्ठाः शयिषीयास्थाम् शयिषीढ्वम्
ध्वम्

शयिषीय शयिषीवहि शयिषीमहि

श्व० शयिता शयितारौ शयितारः
शयितासे शयितासाथे शयिताध्वे
शयिताहे शयितास्वहे शयितास्महे

भ० शयिष्येते शयिष्येते शयिष्यन्ते
शयिष्यसे शयिष्येथे शयिष्यध्वे
शयिष्ये शयिष्यावहे शयिष्यामहे

क्रि० अशयिष्यत अशयिष्येताम् अशयिष्यन्त
अशयिष्यथाः अशयिष्येथाम् अशयिष्यध्वम्
अशयिष्ये अशयिष्यावहि अशयिष्यामहि

॥ ह्नुङ्कृ–अपनयने । छुपाववुं ॥

व० ह्नुते ह्नुवाते ह्नुवते
ह्नुषे ह्नुवाथे ह्नुध्वे
ह्नुवे ह्नुवहे ह्नुमहे

चैत्रो मैत्राय निह्नुते ।

स० ह्नुवीत ह्नुवीयाताम् ह्नुवीरन्
ह्नुवीथाः ह्नुवीयाथाम् ह्नुवीध्वम्
ह्नुवीय ह्नुवीवहि ह्नुवीमहि

प० ह्नुताम् ह्नुवाताम् ह्नुवताम्
ह्नुष्व ह्नुवाथाम् ह्नुध्वम्
ह्नवै ह्नवावहै ह्नवामहै

ह्य० अह्नुत अह्नुवाताम् अह्नुवत
अह्नुथाः अह्नुवाथाम् अह्नुध्वम्
अह्नुवि अह्नुवहि अह्नुमहि

अ० अह्नोष्ट अह्नोषाताम् अह्नोषत
अह्नोष्ठाः अह्नोषाथाम् अह्नोढ्ढ्वम्
ढ्वम्

अह्नोषि अह्नोष्वहि अह्नोष्महि

प० जुह्नुवे जुह्नुवाते जुह्नुविरे

जुह्नुविषे जुह्नुवाथे जुह्नुविढ्वे
जुह्नुविध्वे
जुह्नुवे जुह्नुविहे जुह्नुविमहे
आ० ह्नोषीष्ट ह्नोषीयास्ताम् ह्नोषीरन्
ह्नोषीष्ठाः ह्नोषीयास्थाम् ह्नोषीढ्वम्
ह्नोषीय ह्नोषीवहि ह्नोषीमहि
श्व० ह्नोता ह्नोतारौ ह्नोतारः
ह्नोतासे ह्नोतासाथे ह्नोताध्वे
ह्नोताहे ह्नोतास्वहे ह्नोतास्महे
भ० ह्नोष्यते ह्नोष्येते ह्नोष्यन्ते
ह्नोष्यसे ह्नोष्येथे ह्नोष्यध्वे
ह्नोष्ये ह्नोष्यावहे ह्नोष्यामहे
क्रि० अह्नोष्यत अह्नोष्येताम् अह्नोष्यन्त
अह्नोष्यथाः अह्नोष्येथाम् अह्नोष्यध्वम्
अह्नोष्ये अह्नोष्यावहि अह्नोष्यामहि

॥ षूङ्क्-प्राणिगर्भविमोचने ॥ प्राणीने जन्म आपवो

व० सूते सुवाते सुवते
सूषे सुवाथे सूध्वे
सुवे सूवहे सूमहे
स० सुवीत सुवीयाताम् सुवीरन्
सुवीथाः सुवीयाथाम् सुवीध्वम्
सुवीय सुवीवहि सुवीमहि
प० सुताम् सुवाताम् सुवताम्
सूष्व सुवाथाम् सूध्वम्
सुवै सुवावहै सुवामहै
ह्य० असूत असुवाताम् असुवत
असूथाः असुवाथाम् असूध्वम्
असुवि असूवहि असूमहि
अ० असविष्ट असविषाताम् असविषत
असविष्ठाः असविषाथाम् असविढ्वम्
ड्ढ्वम्-ध्वम्
असविषि असविष्वहि असविष्महि
असोष्ट असोषाताम् असोषत
असोष्ठाः असोषाथाम् असोड्ढ्वम्-ढ्वम्
असोषि असोष्वहि असोष्महि
प० सुषुवे सुषुवाते सुषुविरे
सुषुविषे सुषुवाथे सुषुविध्वे-ढ्वे
सुषुवे सुषुविवहे सुषुविमहे
आ० सविषीष्ट सविषीयास्ताम् सविषीरन्
सविषीष्ठाः सविषीयास्थाम् सविषीढ्वम्
ध्वम्
सविषीय सविषीवहि सविषीमहि
सोषीष्ट सोषीयास्ताम् सोषीरन्
सोषीष्ठाः सोषीयास्थाम् सोषीढ्वम्
सोषीय सोषीवहि सोषीमहि
श्व० सविता सवितारौ सवितारः
सवितासे सवितासाथे सविताध्वे
सविताहे सवितास्वहे सवितास्महे
सोता सोतारौ सोतारः
सोतासे सोतासाथे सोताध्वे
सोताहे सोतास्वहे सोतास्महे
भ० सविष्यते सविष्येते सविष्यन्ते
सविष्यसे सविष्येथे सविष्यध्वे
सविष्ये सविष्यावहे सविष्यामहे
सोष्यते सोष्येते सोष्यन्ते
सोष्यसे सोष्येथे सोष्यध्वे
सोष्ये सोष्यावहे सोष्यामहे
क्रि० असविष्यत असविष्येताम् असविष्यन्त
असविष्यथाः असविष्येथाम् असविष्यध्वम्
असविष्ये असविष्यावहि असविष्यामहि
असोष्यत असोष्येताम् असोष्यन्त
असोष्यथाः असोष्येथाम् असोष्यध्वम्
असोष्ये असोष्यावहि असोष्यामहि

॥ पृचैङ्, पृजुङ्, पिजुकि,-सम्पर्चने सम्पर्कने मिश्रणम् ॥ मिश्रण करवुं

पृक्ते । अपर्चिष्ट । पपृचे ।
पृङ्क्ते । अपृञ्जिष्ट । पपृञ्जे ।
पिङ्क्ते । अपिञ्जिष्ट । पिपिञ्जे

॥ णिजुकि-विशुद्धौ ॥ शुद्ध थवुं,
निङ्क्ते । अनिञ्जिष्ट । निनिञ्जे ।

॥ शिजुकि-अव्यक्ते शब्दे ॥ अर्थ
. न समजाय तेवुं बोलवुं

शिङ्क्ते । अशिञ्जिष्ट । शिशिञ्जे ।
॥ वृजैकि-वर्जने, ॥ त्याग करवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | वृक्ते | वृजाते | वृजते |
| | वृक्षे | वृजाथे | वृग्ध्वे |
| | वृजे | वृज्वहे | वृज्महे |
| स० | वृजीत | वृजीयाताम् | वृजीरन् |
| | वृजीथाः | वृजीयाथाम् | वृजीध्वम् |
| | वृजीय | वृजीवहि | वृजीमहि |
| प० | वृक्ताम् | वृजाताम् | वृजताम् |
| | वृक्ष्व | वृजाथाम् | वृग्ध्वम् |
| | वर्जै | वर्जावहै | वर्जामहै |
| ह्य० | अवृक्त | अवृजाताम् | अवृजत |
| | अवृक्थाः | अवृजाथाम् | अवृग्ध्वम् |
| | अवृजि | अवृज्वहि | अवृज्महि |
| अ० | अवर्जिष्ट | अवर्जिषाताम् | अवर्जिषत |
| | अवर्जिष्ठाः | अवर्जिषाथाम् | अवर्जिध्वम् ढ्ढ्वम् |
| | अवर्जिषि | अवर्जिष्वहि | अवर्जिष्महि |
| प० | ववृजे | ववृजाते | ववृजिरे |
| | ववृजिषे | ववृजाथे | ववृजिध्वे |
| | ववृजे | ववृजिवहे | ववृजिमहे |
| आ० | वर्जिषीष्ट | वर्जिषीयास्ताम् | वर्जिषीरन् |
| | वर्जिषीष्ठाः | वर्जिषीयास्थाम् | वर्जिषीध्वम् |
| | वर्जिषीय | वर्जिषीवहि | वर्जिषीमहि |
| श्व० | वर्जिता | वर्जितारौ | वर्जितारः |
| | वर्जितासे | वर्जितासाथे | वर्जिताध्वे |
| | वर्जिताहे | वर्जितास्वहे | वर्जितास्महे |
| भ० | वर्जिष्यते | वर्जिष्येते | वर्जिष्यन्ते |
| | वर्जिष्यसे | वर्जिष्येथे | वर्जिष्यध्वे |
| | वर्जिष्ये | वर्जिष्यावहे | वर्जिष्यामहे |
| क्रि० | अवर्जिष्यत | अवर्जिष्येताम् | अवर्जिष्यन्त |
| | अवर्जिष्यथाः | अवर्जिष्येथाम् | अवर्जिष्यध्वम् |
| | अवर्जिष्ये | अवर्जिष्यावहि | अवर्जिष्यामहि |

॥ ईडिक्-स्तुतौ, ॥ वखाणवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | ईट्टे | ईडाते | ईडते |
| | ईडिषे | ईडाथे | ईडिध्वे |
| | ईडे | ईड्वहे | ईड्महे |
| स० | ईडीत | ईडीयाताम् | ईडीरन् |
| | ईडीथाः | ईडीयाथाम् | ईडीध्वम् |
| | ईडीय | ईडीवहि | ईडीमहि |
| प० | ईट्टाम् | ईडाताम् | ईडताम् |
| | ईडिष्व | ईडाथाम् | ईडिध्वम् |
| | ईडै | ईडावहै | ईडामहै |

मतान्तरे ईड्ढ्वम्

| | | | |
|---|---|---|---|
| ह्य० | ऐट्ट | ऐडाताम् | ऐडत |
| | ऐड्ढाः | ऐडाथाम् | ऐड्ढ्वम् |
| | ऐडि | ऐड्वहि | ऐड्महि |
| अ० | ऐडिष्ट | ऐडिषाताम् | ऐडिषत |
| | ऐडिष्ठाः | ऐडिषाथाम् | ऐडिड्ढ्वम् |
| | ऐडिषि | ऐडिष्वहि | ऐडिष्महि |
| प० | ईडाञ्चक्रे | ईडाञ्चक्राते | ईडाञ्चक्रिरे |
| | ईडाञ्चकृषे | ईडाञ्चक्राथे | ईडाञ्चकृढ्वे |
| | ईडाञ्चक्रे | ईडाञ्चकृवहे | ईडाञ्चकृमहे |
| | ईडाम्बभूव । ईडामास । | | |
| आ० | ईडिषीष्ट | ईडिषीयास्ताम् | ईडिषीरन् |
| | ईडिषीष्ठाः | ईडिषीयास्थाम् | ईडिषीध्वम् |
| | ईडिषीय | ईडिषीवहि | ईडिषीमहि |
| श्व० | ईडिता | ईडितारौ | ईडितारः |
| | ईडितासे | ईडितासाथे | ईडिताध्वे |
| | ईडिताहे | ईडितास्वहे | ईडितास्महे |
| भ० | ईडिष्यते | ईडिष्येते | ईडिष्यन्ते |
| | ईडिष्यसे | ईडिष्येथे | ईडिष्यध्वे |
| | ईडिष्ये | ईडिष्यावहे | ईडिष्यामहे |
| क्रि० | ऐडिष्यत | ऐडिष्येताम् | ऐडिष्यन्त |

पेडिष्यथाः पेडिष्येथाम् पेडिष्यध्वम्
पेडिष्ये पेडिष्यावहि पेडिष्यामहि

॥ ईरिक्-गतिकम्पनयोः ॥ जवुं धुजावबुं
ईर्ते । ऐरिष्ट । ईराञ्चक्रे

॥ ईशिक्-ऐश्वर्ये, ॥ समर्थ थवुं, राज्य करवुं, धणी थवुं

व० ईष्टे ईशाते ईशते
ईशिषे ईशाथे ईशिध्वे
ईशे ईश्वहे ईश्महे

स० ईशीत ईशीयाताम् ईशीरन्
ईशीथाः ईशीयाथाम् ईशीध्वम्
मतांतरे ईड्ढ्वम्
ईशीय ईशीवहि ईशीमहि

प० ईष्टाम् ईशाताम् ईशताम्
ईशिष्व ईशाथाम् ईशिध्वम्
ईशै ईशावहै ईशामहै

ह्य० ऐष्ट ऐशाताम् ऐशत
ऐष्ठाः ऐशाथाम् ऐड्ढ्वम्
ऐशि ऐश्वहि ऐश्महि

अ० ऐशिष्ट ऐशिषाताम् ऐशिषत
ऐशिष्ठाः ऐशिषाथाम् ऐशिड्ढ्वम्
ध्वम्
ऐशिषि ऐशिष्वहि ऐशिष्महि

प० ईशाञ्चक्रे ईशाञ्चक्राते ईशाञ्चक्रिरे
ईशाञ्चकृषे ईशाञ्चक्राथे ईशाञ्चकृढ्वे
ईशाञ्चक्रे ईशाञ्चकृवहे ईशाञ्चकृमहे
. ईशाम्बभूव । ईशामास ।

आ० ईशिषीष्ट ईशिषीयास्ताम् ईशिषीरन्
ईशिषीष्ठाः ईशिषीयास्थाम् ईशिषीध्वम्
ईशिषीय ईशिषीवहि ईशिषीमहि

श्व० ईशिता ईशितारौ ईशितारः
ईशितासे ईशितासाथे ईशिताध्वे
ईशिताहे ईशितास्वहे ईशितास्महे

भ० ईशिष्यते ईशिष्येते ईशिष्यन्ते
ईशिष्यसे ईशिष्येथे ईशिष्यध्वे
ईशिष्ये ईशिष्यावहे ईशिष्यामहे

क्रि० ऐशिष्यत ऐशिष्येताम् ऐशिष्यन्त
ऐशिष्यथाः ऐशिष्येथाम् ऐशिष्यध्वम्
ऐशिष्ये ऐशिष्यावहि ऐशिष्यामहि

॥ वसिक्-आच्छादने ॥ ढांकवुं
वस्ते । वद्ध्वे-ध्वे । अवसिष्ट । ववसे ।

॥ आङ्-शासूकि इच्छायाम् । इच्छवुं
आशास्ते । आशासिष्ट । आशशासे ।

॥ आसिक्-उपवेशने, ॥ बेसवुं

व० आस्ते आसाते आसते
आस्से आसाथे आद्ध्वे-आध्वे
आसे आस्वहे आस्महे

स० आसीत आसीयाताम् आसीरन्
आसीथाः आसीयाथाम् आसीध्वम्
आसीय आसीवहि आसीमहि

प० आस्ताम् आसाताम् आसताम्
आस्स्व आसाथाम् आद्ध्वम्
आध्वम्
आसै आसावहै आसामहै

ह्य० आस्त आसाताम् आसत
आस्थाः आसाथाम् आद्ध्वम् आध्वम्
आसि आस्वहि आस्महि

अ० आसिष्ट आसिषाताम् आसिषत
आसिष्ठाः आसिषाथाम् आसिड्ढ्वम्-ध्वम्
आसिषि आसिष्वहि आसिष्महि

प० आसाञ्चक्रे आसाञ्चक्राते आसाञ्चक्रिरे
आसाञ्चकृषे आसाञ्चक्राथे आसाञ्चकृढ्वे
आसाञ्चक्रे आसाञ्चकृवहे आसाञ्चकृमहे
आसाम्बभूव आसामास ।

आ० आसिषीष्ट आसिषीयास्ताम् आसिषीरन्
आसिषीष्ठाः आसिषीयास्थाम् आसिषीध्वम्
आसिषीय आसिषीवहि आसिषीमहि

श्व० आसिता आसितारौ आसितारः
आसितासे आसितासाथे आसिताध्वे
आसिताहे आसितास्वहे आसितास्महे

अं० आसिष्यते आसिष्येते आसिष्यन्ते
आसिष्यसे आसिष्येथे आसिष्यध्वे
आसिष्ये आसिष्यावहे आसिष्यामहे

क्रि० आसिष्यत आसिष्येताम् आसिष्यन्त
आसिष्यथाः आसिष्येथाम् आसिष्यध्वम्
आसिष्ये आसिष्यावहि आसिष्यामहि

॥ कसुकि-गतिशासनयोः । कंस्ते, अकंसिष्ट चकंसे तालव्यान्तोऽप्ययमित्येके, तन्मते कंष्टे कंशे कंड्ढ्वे णिसुकि चुम्बने निंस्ते अनिंसिष्ट निनिंसे ॥

॥ चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि ॥ स्पष्ट बोलवुं ।

व० आचष्टे आचक्षाते आचक्षते
आचक्षे आचक्षाथे आचड्ढ्वे
आचक्षे आचक्ष्वहे आचक्ष्महे

स० आचक्षीत आचक्षीयाताम् आचक्षीरन्
आचक्षीथाः आचक्षीयाथाम् आचक्षीध्वम्
आचक्षीय आचक्षीवहि आचक्षीमहि

प० आचष्टाम् आचक्षाताम् आचक्षताम्
आचक्ष्व आचक्षाथाम् आचड्ढ्वम्
आचक्षै आचक्षावहै आचक्षामहै

ह्य० आचष्ट आचक्षाताम् आचक्षत
आचष्ठाः आचक्षाथाम् आचड्ढ्वम्
आचक्षि आचक्ष्वहि आचक्ष्महि

अ० आक्शासीत् आक्शासिष्टाम् आक्शासिषुः
आक्शासीः आक्शासिष्टम् आक्शासिष्ट
आक्शासिषम् आक्शासिष्व आक्शासिष्म

आख्शासीत् आख्शासिष्टाम् आख्शासिषुः
आख्शासीः आख्शासिष्टम् आख्शासिष्ट
आख्शासिषम् आख्शासिष्व आख्शासिष्म

आक्शास्त आक्शासाताम् आक्शासत
आक्शास्थाः आक्शासाथाम् आक्शाध्वम्
द्ध्वम्
आक्शासि आक्शास्वहि आक्शास्महि

आख्शास्त आख्शासाताम् आख्शासत
आख्शास्थाः आख्शासाथाम् आख्शाध्वम् द्ध्वम्
आख्शासि आख्शास्वहि आख्शास्महि

आख्यत् आख्यताम् आख्यन्
आख्यः आख्यतम् आख्यत
आख्यम् आख्याव आख्याम

आख्यत आख्येताम् आख्यन्त
आख्यथाः आख्येथाम् आख्यध्वम्
आख्ये आख्यावहि आख्यामहि

प० आचक्शौ आचक्शतुः आचक्शुः
आचक्शिथ आचक्शाथ आचक्शथुः आचक्श
आचक्शौ आचक्शिव आचक्शिम

आचख्शौ आचख्शतुः आचख्शुः
आचख्शिथ आचख्शाथ आचख्शथुः आचख्श
आचख्शौ आचख्शिव आचख्शिम

आचक्शे आचक्शाते आचक्शिरे
आचक्शिषे आचक्शाथे आचक्शिध्वे
आचक्शे आचक्शिवहे आचक्शिमहे

आचख्शे आचख्शाते आचख्शिरे
आचख्शिषे आचख्शाथे आचख्शिध्वे
आचख्शे आचख्शिवहे आचख्शिमहे

आचख्यौ आचख्यतुः आचख्युः
आचख्यिथ आचख्याथ आचख्यथुः आचख्य
आचख्यौ आचख्यिव आचख्यिम

आचख्ये आचख्याते आचख्यिरे
आचख्यिषे आचख्याथे आचख्यिध्वे-ढ्वे
आचख्ये आचख्यिवहे आचख्यिमहे

आचचक्षे आचचक्षाते आचचक्षिरे
आचचक्षिषे आचचक्षाथे आचचक्षिध्वे
आचचक्षे आचचक्षिवहे आचचक्षिमहे

आ० आक्शायात् आक्शायास्ताम् आक्शायासुः
आक्शायाः आक्शायास्तम् आक्शायास्त
आक्शायासम् आक्शायास्व आक्शायास्म

आक्ष्णायात् आक्ष्णायास्ताम् आक्ष्णायासुः
आक्ष्णायाः आक्ष्णायास्तम् आक्ष्णायास्त
आक्ष्णायासम् आक्ष्णायास्व आक्ष्णायास्म
आक्शेयात् आक्शेयास्ताम् आक्शेयासुः
आक्शेयाः आक्शेयास्तम् आक्शेयास्त
आक्शेयासम् आक्शेयास्व आक्शेयास्म
आक्ष्शेयात् आक्ष्शेयास्ताम् आक्ष्शेयासुः
आक्ष्शेयाः आक्ष्शेयास्तम् आक्ष्शेयास्त
आक्ष्शेयासम् आक्ष्शेयास्व आक्ष्शेयास्म
आख्येयात् आख्येयास्ताम् आख्येयासुः
आख्येयाः आख्येयास्तम् आख्येयास्त
आख्येयासम् आख्येयास्व आख्येयास्म
आख्यायात् आख्यायास्ताम् आख्यायासुः
आख्यायाः आख्यायास्तम् आख्यायास्त
आख्यायासम् आख्यायास्व आख्यायास्म
आक्शासीष्ट आक्शासीयास्ताम् आक्शासीरन्
आक्शासीष्ठाः आक्शासीयास्थाम् आक्शासीध्वम्
आक्शासीय आक्शासीवहि आक्शासीमहि
आक्ष्शासीष्ट आक्ष्शासीयास्ताम् आक्ष्शासीरन्
आक्ष्शासीष्ठाः आक्ष्शासीयास्थाम् आक्ष्शासीध्वम्
आक्ष्शासीय आक्ष्शासीवहि आक्ष्शासीमहि
आख्यासीष्ट आख्यासीयास्ताम् आख्यासीरन्
आख्यासीष्ठाः आख्यासीयास्थाम् आख्यासीध्वम्
आख्यासीय आख्यासीवहि आख्यासीमहि
श्व० आक्शाता आक्शातारौ आक्शातारः
आक्शातासि आक्शातास्थः आक्शातास्थ
आक्शातास्मि आक्शातास्वः आक्शातास्मः
आक्ष्शाता आक्ष्शातारौ आक्ष्शातारः
आक्ष्शातासि आक्ष्शातास्थः आक्ष्शातास्थ
आक्ष्शातास्मि आक्ष्शातास्वः आक्ष्शातास्मः
आख्याता आख्यातारौ आख्यातारः
आख्यातासि आख्यातास्थः आख्यातास्थ
आख्यातास्मि आख्यातास्वः आख्यातास्मः
आक्शाता आक्शातारौ आक्शातारः
आक्शातासे आक्शातासाथे आक्शाताध्वे
आक्शाताहे आक्शातास्वहे आक्शातास्महे
आक्ष्शाता आक्ष्शातारौ आक्ष्शातारः
आक्ष्शातासे आक्ष्शातासाथे आक्ष्शाताध्वे
आक्ष्शाताहे आक्ष्शातास्वहे आक्ष्शातास्महे
आख्याता आख्यातारौ आख्यातारः
आख्यातासे आख्यातासाथे आख्याताध्वे
आख्याताहे आख्यातास्वहे आख्यातास्महे
भ० आक्शास्यति आक्शास्यतः आक्शास्यन्ति
आक्शास्यसि आक्शास्यथः आक्शास्यथ
आक्शास्यामि आक्शास्यावः आक्शास्यामः
आक्ष्शास्यति आक्ष्शास्यतः आक्ष्शास्यन्ति
आक्ष्शास्यसि आक्ष्शास्यथः आक्ष्शास्यथ
आक्ष्शास्यामि आक्ष्शास्यावः आक्ष्शास्यामः
आख्यास्यति आख्यास्यतः आख्यास्यन्ति
आख्यास्यसि आख्यास्यथः आख्यास्यथ
आख्यास्यामि आख्यास्यावः आख्यास्यामः
आक्शास्यते आक्शास्येते आक्शास्यन्ते
आक्शास्यसे आक्शास्येथे आक्शास्यध्वे
आक्शास्ये आक्शास्यावहे आक्शास्यामहे
आक्ष्शास्यते आक्ष्शास्येते आक्ष्शास्यन्ते
आक्ष्शास्यसे आक्ष्शास्येथे आक्ष्शास्यध्वे
आक्ष्शास्ये आक्ष्शास्यावहे आक्ष्शास्यामहे
आख्यास्यते आख्यास्येते आख्यास्यन्ते
आख्यास्यसे आख्यास्येथे आख्यास्यध्वे
आख्यास्ये आख्यास्यावहे आख्यास्यामहे
क्रि० आक्शास्यत् आक्शास्यताम् आक्शास्यन्
आक्शास्यः आक्शास्यतम् आक्शास्यत
आक्शास्यम् आक्शास्याव आक्शास्याम
आक्ष्शास्यत् आक्ष्शास्यताम् आक्ष्शास्यन्
आक्ष्शास्यः आक्ष्शास्यतम् आक्ष्शास्यत
आक्ष्शास्यम् आक्ष्शास्याव आक्ष्शास्याम
आख्यास्यत् आख्यास्यताम् आख्यास्यन्
आख्यास्यः आख्यास्यतम् आख्यास्यत

आख्यास्यम् आख्यास्याव आख्यास्याम
आक्शास्यत आक्शास्येताम् आक्शास्यन्त
आक्शास्यथाः आक्शास्येथाम् आक्शास्यध्वम्
आक्शास्ये आक्शास्यावहि आक्शास्यामहि

आख्शास्यत आख्शास्येताम आख्शास्यन्त
आख्शास्यथाः आख्शास्येथाम् आख्शास्यध्वम्
आख्शास्ये आख्शास्यावहि आख्शास्यामहि

आख्यास्यत आख्यास्येताम् आख्यास्यन्त
आख्यास्यथाः आख्यास्येथाम आख्यास्यध्वम्
आख्यास्ये आख्यास्यावहि आख्यास्यामहि

## इति श्री अदादयः आत्मनेपदिनः

## ॥ अथोभयपदिनः॥ ।

॥ ऊर्णुञ्-कु-आच्छादने. ॥ ढांकवुं
व० ऊर्णोति ऊर्णोति ऊर्णुतः ऊर्णुवन्ति
ऊर्णोषि ऊर्णोषि ऊर्णुथः ऊर्णुथ
ऊर्णोमि ऊर्णोमि ऊर्णुवः ऊर्णुमः
स० ऊर्णुयात् ऊर्णुयाताम् ऊर्णुयुः
ऊर्णुयाः ऊर्णुयातम् ऊर्णुयात
ऊर्णुयाम् ऊर्णुयाव ऊर्णुयाम
प० ऊर्णोतु ऊर्णुतात् ऊर्णुताम् ऊर्णुवन्तु
ऊर्णोतु
ऊर्णुहि ,, ऊर्णुतम् ऊर्णुत
ऊर्णवानि ऊर्णवाव ऊर्णवाम
ह्य० और्णोत् और्णुताम् और्णुवन्
और्णोः और्णुतम् और्णुत
और्णवम् और्णुव और्णुम
अ० और्णावीत् और्णाविष्टाम् और्णाविषुः
और्णावीः और्णाविष्टम् और्णाविष्ट
और्णाविषम् और्णाविष्व और्णाविष्म
और्णवीत् और्णविष्टाम् और्णविषुः
और्णवीः और्णविष्टम् और्णविष्ट
और्णविषम् और्णविष्व और्णविष्म
और्णुवीत् और्णुविष्टाम् और्णुविषुः
और्णुवीः और्णुविष्टम् और्णुविष्ट
और्णुविषम् और्णुविष्व और्णुविष्म

ऊर्णविष्यति ऊर्णविष्यतः ऊर्णविष्यन्ति
ऊर्णविष्यसि ऊर्णविष्यथः ऊर्णविष्यथ
ऊर्णविष्यामि ऊर्णविष्यावः ऊर्णविष्यामः
क्रि० और्णविष्यत् और्णविष्यताम् और्णविष्यन्
और्णविष्यः और्णविष्यतम् और्णविष्यत
और्णविष्यम् और्णविष्याव और्णविष्याम
और्णुविष्यत् और्णुविष्यताम् और्णुविष्यन्
और्णुविष्यः और्णुविष्यतम् और्णुविष्यत
और्णुविष्यम् और्णुविष्याव और्णुविष्याम
व० ऊर्णुते ऊर्णुवाते ऊर्णुवते
ऊर्णुषे ऊर्णुवाथे ऊर्णुध्वे
ऊर्णुवे ऊर्णुवहे ऊर्णुमहे
स० ऊर्णुवीत ऊर्णुवीयाताम् ऊर्णुवीरन्
ऊर्णुवीथाः ऊर्णुवीयाथाम् ऊर्णुवीध्वम्
ऊर्णुवीय ऊर्णुवीवहि ऊर्णुवीमहि
प० ऊर्णुनाव ऊर्णुनुवतुः ऊर्णुनुवुः
ऊर्णुनुविथ ऊर्णुनविथ ऊर्णुनुवथुः ऊर्णुनुव
ऊर्णुनाव ऊर्णुनव ऊर्णुनुविव ऊर्णुनुविम
आ० ऊर्णूयात् ऊर्णूयाताम् ऊर्णूयासुः
ऊर्णूयाः ऊर्णूयास्तम् ऊर्णूयास्त
ऊर्णूयासम् ऊर्णूयास्व ऊर्णूयास्म
श्व० ऊर्णविता ऊर्णवितारौ ऊर्णवितारः
ऊर्णवितासि ऊर्णवितास्थः ऊर्णवितास्थः
ऊर्णवितास्मि ऊर्णवितास्वः ऊर्णवितास्मः
ऊर्णुविता ऊर्णुवितारौ ऊर्णुवितारः
ऊर्णुवितासि ऊर्णुवितास्थः ऊर्णुवितास्थ
ऊर्णुवितास्मि ऊर्णुवितास्वः ऊर्णुवितास्मः
भ० ऊर्णुविष्यति ऊर्णुविष्यतः ऊर्णुविष्यन्ति
ऊर्णुविष्यसि ऊर्णुविष्यथः ऊर्णुविष्यथ
ऊर्णुविष्यामि ऊर्णुविष्यावः ऊर्णुविष्यामः

प० ऊर्णुताम् ऊर्णुवाताम् ऊर्णुवताम्
ऊर्णुष्व ऊर्णुवाथाम् ऊर्णुध्वम्
ऊर्णवै ऊर्णवावहै ऊर्णवामहै
ह्य० और्णुत और्णुवाताम् और्णुवत
और्णुथाः और्णुवाथाम् और्णुध्वम्
और्णुवि और्णुवहि और्णुमहि
अ० और्णुविष्ट और्णुविषाताम् और्णुविषत
और्णुविष्ठाः और्णुविषाथाम् और्णुविड्ढ्वम्-ढ्वम्-ध्वम्
और्णुवि और्णुविष्वहि और्णुविष्महि
और्णविष्ट और्णविषाताम् और्णविषत
और्णविष्ठाः और्णविषाथाम् और्णविड्ढ्वम्-ढ्वम्-ध्वम्
और्णविषि और्णविष्वहि और्णविष्महि
प० ऊर्णुनुवे ऊर्णुनुवाते ऊर्णुनुविरे
ऊर्णुनुविषे ऊर्णुनुवाथे ऊर्णुनुविध्वे-ढ्वे
ऊर्णुनुवे ऊर्णुनुविवहे ऊर्णुनुविमहे
आ० ऊर्णविषीष्टऊर्णविषीयास्तामऊर्णविषीरन्
ऊर्णविषीष्ठाःऊर्णविषीयास्थामऊर्णविषीढ्वम्ध्वम्
ऊर्णविषीय ऊर्णविषीवहि ऊर्णविषीमहि
ऊर्णुविषीष्ट ऊर्णुविषीयास्ताम् ऊर्णुविषीरन्
ऊर्णुविषीष्ठाःऊर्णुविषीयास्थाम्ऊर्णुविषीढ्वम्ध्वम्
ऊर्णुविषीय ऊर्णुविषीवहि ऊर्णुविषीमहि
श्व०ऊर्णुविता ऊर्णुवितारौ ऊर्णुवितारः
ऊर्णुवितासे ऊर्णुवितासाथे ऊर्णुविताध्वे
ऊर्णुविताहे ऊर्णुवितास्वहे ऊर्णुवितास्महे
ऊर्णविता ऊर्णवितारौ ऊर्णवितारः
ऊर्णवितासे ऊर्णवितासाथे ऊर्णविताध्वे
ऊर्णविताहे ऊर्णवितास्वहे ऊर्णवितास्महे
भ० ऊर्णुविष्यते ऊर्णुविष्येते ऊर्णुविष्यन्ते
ऊर्णुविष्यसे ऊर्णुविष्येथे ऊर्णुविष्यध्वे
ऊर्णुविष्ये ऊर्णुविष्यावहे ऊर्णुविष्यामहे
ऊर्णविष्यते ऊर्णविष्येते ऊर्णविष्यन्ते
ऊर्णविष्यसे ऊर्णविष्येथे ऊर्णविष्यध्वे
ऊर्णविष्ये ऊर्णविष्यावहे ऊर्णविष्यामहे
क्रि० और्णुविष्यत और्णुविष्येताम् और्णुविष्यन्त
और्णुविष्यथाः और्णुविष्येथाम् और्णुविष्यध्वम्
और्णुविष्ये और्णुविष्यावहि और्णुविष्यामहि
और्णविष्यत और्णविष्येताम् और्णविष्यन्त
और्णविष्यथाः और्णविष्येथाम् और्णविष्यध्वम्
और्णविष्ये और्णविष्यावहि और्णविष्यामहि

॥ ष्टुंगक् स्तुतौ, ॥ व्याख्यानम् ॥

व० स्तवीति स्तौति स्तुतः स्तुवन्ति
स्तवीषि स्तौषि स्तुथः स्तुथ
स्तवीमि स्तौमि स्तुवः स्तुमः
स० स्तुयात् स्तुयाताम् स्तुयुः
स्तुयाः स्तुयातम् स्तुयात
स्तुयाम् स्तुयाव स्तुयाम
प० स्तवीतु स्तौतु स्तुतात् स्तुताम् स्तुवन्तु
स्तुहि स्तुतात् स्तुतम् स्तुत
स्तवानि स्तवाव स्तवाम
ह्य० अस्तवीत् अस्तौत् अस्तुताम् अस्तुवन्
अस्तवीः अस्तौः अस्तुतम् अस्तुत
अस्तवम् अस्तुव अस्तुम
अ० अस्तावीत् अस्ताविष्टाम् अस्ताविषुः
अस्तावीः अस्ताविष्टम् अस्ताविष्ट
अस्ताविषम् अस्ताविष्व अस्ताविष्म
प० तुष्टाव तुष्टुवतुः तुष्टुवुः
तुष्टोथ तुष्टुवथुः तुष्टुव
तुष्टाव तुष्टव तुष्टुव तुष्टुम
आ० स्तूयात् स्तूयास्ताम् स्तूयासुः
स्तूयाः स्तूयास्तम् स्तूयास्त
स्तूयासम् स्तूयास्व स्तूयास्म
श्व० स्तोता स्तोतारौ स्तोतारः
स्तोतासि स्तोतास्थः स्तोतास्थ
स्तोतास्मि स्तोतास्वः स्तोतास्मः
भ० स्तोष्यति स्तोष्यतः स्तोष्यन्ति
स्तोष्यसि स्तोष्यथः स्तोष्यथ

स्तोष्यामि स्तोष्यावः स्तोष्यामः
क्रि० अस्तोष्यत् अस्तोष्यताम् अस्तोष्यन्
अस्तोष्यः अस्तोष्यतम् अस्तोष्यत
अस्तोष्यम् अस्तोष्याव अस्तोष्याम

व० स्तुते स्तुवाते स्तुवते
स्तुषे स्तुवाथे स्तुध्वे
स्तुवे स्तुवहे स्तुमहे

स० स्तुवीत स्तुवीयाताम् स्तुवीरन्
स्तुवीथाः स्तुवीयाथाम् स्तुवीध्वम्
स्तुवीय स्तुवीवहि स्तुवीमहि

प० स्तुताम् स्तुवाताम् स्तुवताम्
स्तुष्व स्तुवाथाम् स्तुध्वम्
स्तवै स्तवावहै स्तवामहै

ह्य० अस्तुत अस्तुवाताम् अस्तुवत
अस्तुथाः अस्तुवाथाम् अस्तुध्वम्
अस्तुवि अस्तुवहि अस्तुमहि

अ० अस्तोष्ट अस्तोषाताम् अस्तोषत
अस्तोष्ठाः अस्तोषाथाम् अस्तोड्ढ्वम्
ध्वम्
अस्तोषि अस्तोष्वहि अस्तोष्महि

प० तुष्टुवे तुष्टुवाते तुष्टुविरे
तुष्टुषे तुष्टुवाथे तुष्टुढ्वे
तुष्टुवे तुष्टुवहे तुष्टुमहे

आ० स्तोषीष्ट स्तोषीयास्ताम् स्तोषीरन्
स्तोषीष्ठाः स्तोषीयास्थाम् स्तोषीढ्वम्
स्तोषीय स्तोषीवहि स्तोषीमहि

श्व० स्तोता स्तोतारौ स्तोतारः
स्तोतासे स्तोतासाथे स्तोताध्वे
स्तोताहे स्तोतास्वहे स्तोतास्महे

भ० स्तोष्यते स्तोष्येते स्तोष्यन्ते
स्तोष्यसे स्तोष्येथे स्तोष्यध्वे
स्तोष्ये स्तोष्यावहे स्तोष्यामहे

क्रि० अस्तोष्यत अस्तोष्येताम् अस्तोष्यन्त
अस्तोष्यथाः अस्तोष्येथाम् अस्तोष्यध्वम्
अस्तोष्ये अस्तोष्यावहि अस्तोष्यामहि

॥ ब्रूग्क् व्यक्तायां वाचि ॥ स्पष्ट बोलवुं ॥

व० आह आहतुः आहुः
आत्थ आहथुः
ब्रवीति ब्रूतः ब्रुवन्ति
ब्रवीषि ब्रूथः ब्रूथ
ब्रवीमि ब्रूवः ब्रूमः

स० ब्रूयात् ब्रूयाताम् ब्रूयुः
ब्रूयाः ब्रूयातम् ब्रूयात
ब्रूयाम् ब्रूयाव ब्रूयाम

प० ब्रवीतु ब्रूतात् ब्रूतात् ब्रुवन्तु
ब्रूहि ब्रूतात् ब्रूतम् ब्रूत
ब्रवाणि ब्रवाव ब्रवाम

ह्य० अब्रवीत् अब्रूताम् अब्रुवन्
अब्रवीः अब्रूतम् अब्रूत
अब्रवम् अब्रूव अब्रूम

अ० अवोचत् अवोचताम् अवोचन्
अवोचः अवोचतम् अवोचत
अवोचम् अवोचाव अवोचाम

प० उवाच ऊचतुः ऊचुः
उवचिथ उवक्थ ऊचथुः ऊच
उवाच उवच ऊचिव ऊचिम

आ० उच्यात् उच्यास्ताम् उच्यासुः
उच्याः उच्यास्तम् उच्यास्त
उच्यासम् उच्यास्व उच्यास्म

श्व० वक्ता वक्तारौ वक्तारः
वक्तासि वक्तास्थः वक्तास्थ
वक्तास्मि वक्तास्वः वक्तास्मः

भ० वक्ष्यति वक्ष्यतः वक्ष्यन्ति
वक्ष्यसि वक्ष्यथः वक्ष्यथ
वक्ष्यामि वक्ष्यावः वक्ष्यामः

क्रि० अवक्ष्यत् अवक्ष्यताम् अवक्ष्यन्
अवक्ष्यः अवक्ष्यतम् अवक्ष्यत
अवक्ष्यम् अवक्ष्याव अवक्ष्याम

व० ब्रूते ब्रुवाते ब्रुवते
ब्रूषे ब्रुवाथे ब्रूध्वे

ब्रुवे ब्रूवहे ब्रूमहे
स० ब्रुवीत ब्रुवीयाताम् ब्रुवीरन्
ब्रुवीथाः ब्रुवीयाथाम् ब्रुवीध्वम्
ब्रुवीय ब्रुवीवहि ब्रुवीमहि
प० ब्रूताम् ब्रुवाताम् ब्रुवताम्
ब्रूष्व ब्रुवाथाम् ब्रूध्वम्
ब्रवै ब्रवावहै ब्रवामहै
ह्य० अब्रूत अब्रुवाताम् अब्रुवत
अब्रूथाः अब्रुवाथाम् अब्रूध्वम्
अब्रुवि अब्रवहि अब्रूमहि
अ० अवोचत अवोचेताम् अवोचन्त
अवोचथाः अवोचेथाम् अवोचध्वम्
अवोचे अवोचावहि अवोचामहि
प० ऊचे ऊचाते ऊचिरे
ऊचिषे ऊचाथे ऊचिध्वे
ऊचे ऊचिवहे ऊचिमहे
आ० वक्षीष्ट वक्षीयास्ताम् वक्षीरन्
वक्षीष्ठाः वक्षीयास्थाम् वक्षीध्वम्
वक्षीय वक्षीवहि वक्षीमहि
श्व० वक्ता वक्तारौ वक्तारः
वक्तासे वक्तासाथे वक्ताध्वे
वक्ताहे वक्तास्वहे वक्तास्महे
भ० वक्ष्यते वक्ष्येते वक्ष्यन्ते
वक्ष्यसे वक्ष्येथे वक्ष्यध्वे
वक्ष्ये वक्ष्यावहे वक्ष्यामहे
क्रि० अवक्ष्यत अवक्ष्येताम् अवक्ष्यन्त
अवक्ष्यथाः अवक्ष्येथाम् अवक्ष्यध्वम्
अवक्ष्ये अवक्ष्यावहि अवक्ष्यामहि

॥ द्विषींक् अप्रीतौ ॥ द्वेष करवो ॥

व० द्वेष्टि द्विष्टः द्विषन्ति
द्वेक्षि द्विष्ठः द्विष्ठ
द्वेष्मि द्विष्वः द्विष्मः
स० द्विष्यात् द्विष्याताम् द्विष्युः
द्विष्याः द्विष्यातम् द्विष्यात
द्विष्याम् द्विष्याव द्विष्याम
द्वेष्टु द्विष्टात् द्विष्टाम् द्विषन्तु
द्विड्ढि द्विष्टात् द्विष्टम् द्विष्ट
द्वेषाणि द्वेषाव द्वेषाम
ह्य० अद्वेट्-ड् अद्विष्टाम् अद्विषुः अद्विषन्
अद्वेट्-ड् अद्विष्टम् अद्विष्ट
अद्वेषम् अद्विष्व अद्विष्म
अ० अद्विक्षत् अद्विक्षताम् अद्विक्षन्
अद्विक्षः अद्विक्षतम् अद्विक्षत
अद्विक्षम् अद्विक्षाव अद्विक्षाम
प० दिद्वेष दिद्विषतुः दिद्विषुः
दिद्वेषिथ दिद्विषथुः दिद्विष
दिद्वेष दिद्विषिव दिद्विषिम
आ० द्विष्यात् द्विष्यास्ताम् द्विष्यासुः
द्विष्याः द्विष्यास्तम् द्विष्यास्त
द्विष्यासम् द्विष्यास्व द्विष्यास्म
श्व० द्वेष्टा द्वेष्टारौ द्वेष्टारः
द्वेष्टासि द्वेष्टास्थः द्वेष्टास्थ
द्वेष्टास्मि द्वेष्टास्वः द्वेष्टास्मः
भ० द्वेक्ष्यति द्वेक्ष्यतः द्वेक्ष्यन्ति
द्वेक्ष्यसि द्वेक्ष्यथः द्वेक्ष्यथ
द्वेक्ष्यामि द्वेक्ष्यावः द्वेक्ष्यामः
क्रि० अद्वेक्ष्यत् अ क्ष्यताम् अद्वेक्ष्यन्
अद्वेक्ष्यः अद्वेक्ष्यतम् अद्वेक्ष्यत
अद्वेक्ष्यम् अद्वेक्ष्याव अद्वेक्ष्याम
व० द्विष्टे द्विषाते द्विषते
द्विक्षे द्विषाथे द्विड्ढ्वे
द्विषे द्विष्वहे द्विष्महे
स० द्विषीत द्विषीयाताम् द्विषीरन्
द्विषीथाः द्विषीयाथाम् द्विषीध्वम्
द्विषीय द्विषीवहि द्विषीमहि
प० द्विष्टाम् द्विषाताम् द्विषताम्
द्विक्ष्व द्विषाथाम् द्विड्ढ्वम्
द्वेषै द्वेषावहै द्वेषामहै
ह्य० अद्विष्ट अद्विषाताम् अद्विषत
अद्विष्ठाः अद्विषाथाम् अद्विड्ढ्वम्

अद्विषि अद्विष्वहि अद्विष्महि

अ० अद्विक्षत अद्विक्षेताम् अद्विक्षन्त

अद्विक्षथाः अद्विक्षेथाम् अद्विक्षध्वम्

अद्विक्षे अद्विक्षावहि अद्विक्षामहि

प० दिद्विषे दिद्विषाते दिद्विषिरे

दिद्विषिषे दिद्विषाथे दिद्विषिध्वे

दिद्विषे दिद्विषिवहे दिद्विषिमहे

आ० द्विक्षीष्ट द्विक्षीयास्ताम् द्विक्षीरन्

द्विक्षीष्ठाः द्विक्षीयास्थाम् द्विक्षीध्वम्

द्विक्षीय द्विक्षीवहि द्विक्षीमहि

श्व० द्वेष्टा द्वेष्टारौ द्वेष्टारः

द्वेष्टासे द्वेष्टासाथे द्वेष्टाध्वे

द्वेष्टाहे द्वेष्टास्वहे द्वेष्टास्महे

भ० द्वेक्ष्यते द्वेक्ष्येते द्वेक्ष्यन्ते

द्वेक्ष्यसे द्वेक्ष्येथे द्वेक्ष्यध्वे

द्वेक्ष्ये द्वेक्ष्यावहे द्वेक्ष्यामहे

क्रि० अद्वेक्ष्यत अद्वेक्ष्येताम् अद्वेक्ष्यन्त

अद्वेक्ष्यथाः अद्वेक्ष्येथाम् अद्वेक्ष्यध्वम्

अद्वेक्ष्ये अद्वेक्ष्यावहि अद्वेक्ष्यामहि

॥ दुहीँ क्षरणे ॥ दोग्धुं ॥

व० दोग्धि दुग्धः दुहन्ति

धोक्षि दुग्धः दुग्ध

दोह्मि दुह्वः दुह्मः

स० दुह्यात् दुह्याताम् दुह्युः

दुह्याः दुह्यातम् दुह्यात

दुह्याम् दुह्याव दुह्याम

प० दोग्धु दुग्धात् दुग्धाम् दुहन्तु

दुग्धि दुग्धात् दुग्धम् दुग्ध

दोहानि दोहाव दोहाम

ह्य० अधोक्, ग् अदुग्धाम् अदुहन्

,, ,, अदुग्धम् अदुग्ध

अदोहम् अदुह्व अदुह्म

अ० अधुक्षत् अधुक्षताम् अधुक्षन्

अधुक्षः अधुक्षतम् अधुक्षत

अधुक्षम् अधुक्षाव अधुक्षाम

प० दुदोह दुदुहतुः दुदुहुः

दुदोहिथ दुदुहथुः दुदुह

दुदोह दुदुहिव दुदुहिम

आ० दुह्यात् दुह्यास्ताम् दुह्यासुः

दुह्याः दुह्यास्तम् दुह्यास्त

दुह्यासम् दुह्यास्व दुह्यास्म

श्व० दोग्धा दोग्धारौ दोग्धारः

दोग्धासि दोग्धास्थः दोग्धास्थ

दोग्धास्मि दोग्धास्वः दोग्धास्मः

भ० धोक्ष्यति धोक्ष्यतः धोक्ष्यन्ति

धोक्ष्यसि धोक्ष्यथः धोक्ष्यथ

धोक्ष्यामि धोक्ष्यावः धोक्ष्यामः

क्रि० अधोक्ष्यत् अधोक्ष्यताम् अधोक्ष्यन्

अधोक्ष्यः अधोक्ष्यतम् अधोक्ष्यत

अधोक्ष्यम् अधोक्ष्याव अधोक्ष्याम

व० दुग्धे दुहाते दुहते

धुक्षे दुहाथे धुग्ध्वे

दुहे दुह्वहे दुह्महे

स० दुहीत दुहीयाताम् दुहीरन्

दुहीथाः दुहीयाथाम् दुहीध्वम्

दुहीय दुहीवहि दुहीमहि

प० दुग्धाम् दुहाताम् दुहताम्

धुक्ष्व दुहाथाम् धुग्ध्वम्

दोहै दोहावहै दोहामहै

ह्य० अदुग्ध अदुहाताम् अदुहत

अदुग्धाः अदुहाथाम् अधुग्ध्वम्

अदुहि अदुह्वहि अदुह्महि

अ० अदुग्ध अधुक्षत अधुक्षाताम् अधुक्षन्त

अदुग्धाः अधुक्षथाः अधुक्षाथाम् अधुग्ध्वम्

अधुक्षध्वम्

अधुक्षि अदुह्वहि अधुक्षावहि अधुक्षामहि

प० दुदुहे दुदुहाते दुदुहिरे

दुदुहिषे दुदुहाथे दुदुहिढ्वे -ध्वे

दुदुहे दुदुहिवहे दुदुहिमहे
आ० धुक्षीष्ट धुक्षीयास्ताम् धुक्षीरन्
धुक्षीष्ठाः धुक्षीयास्थाम् धुक्षीध्वम्
धुक्षीय धुक्षीवहि धुक्षीमहि
श्व० दोग्धा दोग्धारौ दोग्धारः
दोग्धासे दोग्धासाथे दोग्धाध्वे
दोग्धाहे दोग्धास्वहे दोग्धास्महे
भ० धोक्ष्यते धोक्ष्येते धोक्ष्यन्ते
धोक्ष्यसे धोक्ष्येथे धोक्ष्यध्वे
धोक्ष्ये धोक्ष्यावहे धोक्ष्यामहे
क्रि० अधोक्ष्यत अधोक्ष्येताम् अधोक्ष्यन्त
अधोक्ष्यथाः अधोक्ष्येथाम् अधोक्ष्यध्वम्
अधोक्ष्ये अधोक्ष्यावहि अधोक्ष्यामहि

॥ दिहीं क् लेपे ॥ लेप करवो, ॥

व० देग्धि दिग्धः दिहन्ति
धेक्षि दिग्धः दिग्ध
देह्मि दिह्वः दिह्मः
स० दिह्यात् दिह्याताम् दिह्युः
दिह्याः दिह्यातम् दिह्यात
दिह्याम् दिह्याव दिह्याम
प० देग्धु दिग्धात् दिग्धाम् दिहन्तु
दिग्धि दिग्धात् दिग्धम् दिग्ध
देहानि देहाव देहाम
ह्य० अधेक्-ग् अदिग्धाम् अदिहन्
" " अदिग्धम् अदिग्ध
अदेहम् अदिह्व अदिह्म
अ० अधिक्षत् अधिक्षताम् अधिक्षन्
अधिक्षः अधिक्षतम् अधिक्षत
अधिक्षम् अधिक्षाव अधिक्षाम
प० दिदेह दिदिहतुः दिदिहुः
दिदेहिथ दिदिहथुः दिदिह
दिदेह दिदिहिव दिदिहिम
आ० दिह्यात् दिह्यास्ताम् दिह्यासुः
दिह्याः दिह्यास्तम् दिह्यास्त
दिह्यासम् दिह्यास्व दिह्यास्म
श्व० देग्धा देग्धारौ देग्धारः
देग्धासि देग्धास्थः देग्धास्थ
देग्धास्मि देग्धास्वः देग्धास्मः
भ० धेक्ष्यति धेक्ष्यतः धेक्ष्यन्ति
धेक्ष्यसि धेक्ष्यथः धेक्ष्यथ
धेक्ष्यामि धेक्ष्यावः धेक्ष्यामः
क्रि० अधेक्ष्यत् अधेक्ष्यताम् अधेक्ष्यन्
अधेक्ष्यः अधेक्ष्यतम् अधेक्ष्यत
अधेक्ष्यम् अधेक्ष्याव अधेक्ष्याम
व० दिग्धे दिहाते दिहते
धिक्षे दिहाथे धिग्ध्वे
दिहे दिह्वहे दिह्महे
स० दिहीत दिहीयाताम् दिहीरन्
दिहीथाः दिहीयाथाम् दिहीध्वम्
दिहीय दिहीवहि दिहीमहि
प० दिग्धाम् दिहाताम् दिहताम्
धिक्ष्व दिहाथाम् धिग्ध्वम्
देहै देहावहै देहामहै
ह्य० अदिग्ध अदिहाताम् अदिहत
अदिग्धाः अदिहाथाम् अधिग्ध्वम्
अदिहि अदिह्वहि अदिह्महि
अ० अदिग्ध अधिक्षत अधिक्षाताम् अधिक्षन्त
अदिग्धाः अधिक्षथाः अधिक्षाथाम् अधिक्षध्वम्
अधिग्ध्वम्
अधिक्षि अधिक्षावहि अदिह्वहि अधिक्षामहि
दिदिहे दिदिहाते दिदिहिरे
दिदिहिषे दिदिहाथे दिदिहिढ्वे -ध्वे
दिदिहे दिदिहिवहे दिदिहिमहे
आ० धिक्षीष्ट धिक्षीयास्ताम् धिक्षीरन्
धिक्षीष्ठाः धिक्षीयास्थाम् धिक्षीध्वम्
धिक्षीय धिक्षीवहि धिक्षीमहि
श्व० देग्धा देग्धारौ देग्धारः
देग्धासे देग्धासाथे देग्धाध्वे

देग्धाहे    देग्धास्वहे    देग्धास्महे

भ० घेक्ष्यते    घेक्ष्येते    घेक्ष्यन्ते
घेक्ष्यसे    घेक्ष्येथे    घेक्ष्यध्वे
घेक्ष्ये    घेक्ष्यावहे    घेक्ष्यामहे

क्रि० अघेक्ष्यत    अघेक्ष्येताम्    अघेक्ष्यन्त
अघेक्ष्यथाः    अघेक्ष्येथाम्    अघेक्ष्यध्वम्
अघेक्ष्ये    अघेक्ष्यावहि    अघेक्ष्यामहि

॥ लिहीँक् आस्वादने ॥ चाटवुं, ॥

व० लेढि    लीढः    लिहन्ति
लेक्षि    लीढः    लीढ
लेह्मि    लिह्वः    लिह्मः

स० लिह्यात्    लिह्याताम्    लिह्युः
लिह्याः    लिह्यातम्    लिह्यात
लिह्याम्    लिह्याव    लिह्याम

प० लेढु    लीढात्    लीढाम्    लिहन्तु
लीढि    „    लीढम्    लीढ
लेहानि    लेहाव    लेहाम

ह्य० अलेट्,ड्    अलीढाम्    अलिहन्
„ „    अलीढम्    अलीढ
अलेहम्    अलिह्व    अलिह्म

अ० अलिक्षत्    अलिक्षताम्    अलिक्षन्
अलिक्षः    अलिक्षतम्    अलिक्षत
अलिक्षम्    अलिक्षाव    अलिक्षाम

प० लिलेह    लिलिहतुः    लिलिहुः
लिलेहिथ    लिलिहथुः    लिलिह
लिलेह    लिलिहिव    लिलिहिम

आ० लिह्यात्    लिह्यास्ताम्    लिह्यासुः
लिह्याः    लिह्यास्तम्    लिह्यास्त
लिह्यासम्    लिह्यास्व    लिह्यास्म

श्व० लेढा    लेढारौ    लेढारः
लेढासि    लेढास्थः    लेढास्थ
लेढास्मि    लेढास्वः    लेढास्मः

भ० लेक्ष्यति    लेक्ष्यतः    लेक्ष्यन्ति
लेक्ष्यसि    लेक्ष्यथः    लेक्ष्यथ
लेक्ष्यामि    लेक्ष्यावः    लेक्ष्यामः

क्रि० अलेक्ष्यत्    अलेक्ष्यताम्    अलेक्ष्यन्
अलेक्ष्यः    अलेक्ष्यतम्    अलेक्ष्यत
अलेक्ष्यम्    अलेक्ष्याव    अलेक्ष्याम

व० लीढे    लिहाते    लिहते
लिक्षे    लिहाथे    लीढ्वे
लिहे    लिह्वहे    लिह्महे

स० लिहीत    लिहीयाताम्    लिहीरन्
लिहीथाः    लिहीयाथाम्    लिहीध्वम्
लिहीय    लिहीवहि    लिहीमहि

प० लीढाम्    लिहाताम्    लिहताम्
लिक्ष्व    लिहाथाम्    लीढ्वम्
लेहै    लेहावहै    लेहामहै

ह्य० अलीढ    अलिहाताम्    अलिहत
अलीढाः    अलिहाथाम्    अलीढ्वम्
अलिहि    अलिह्वहि    अलिह्महि

अ० अलीढ अलिक्षत अलिक्षाताम् अलिक्षन्त
अलीढाः अलिक्षथाः अलिक्षाथाम् अलिक्षध्वम्
अलीढ्ढ्वम्-ढ्वम्
अलिक्षि अलिह्वहि अलिक्षावहि अलिक्षामहि

प० लिलिहे    लिलिहाते    लिलिहिरे
लिलिहिषे लिलिहाथे लिलिहिढ्वे-ध्वे
लिलिहे    लिलिहिवहे    लिलिहिमहे

आ० लिक्षीष्ट    लिक्षीयास्ताम्    लिक्षीरन्
लिक्षीष्ठाः    लिक्षीयास्थाम्    लिक्षीध्वम्
लिक्षीय    लिक्षीवहि    लिक्षीमहि

श्व० लेढा    लेढारौ    लेढारः
लेढासे    लेढासाथे    लेढाध्वे
लेढाहे    लेढास्वहे    लेढास्महे

भ० लेक्ष्यते    लेक्ष्येते    लेक्ष्यन्ते
लेक्ष्यसे    लेक्ष्येथे    लेक्ष्यध्वे
लेक्ष्ये    लेक्ष्यावहे    लेक्ष्यामहे

क्रि० अलेक्ष्यत    अलेक्ष्येताम्    अलेक्ष्यन्त
अलेक्ष्यथाः    अलेक्ष्येथाम्    अलेक्ष्यध्वम्
अलेक्ष्ये    अलेक्ष्यावहि    अलेक्ष्यामहि

इति श्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंरक्षणप्रवण
विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य
श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशा-
स्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजय-
विरचितायां हैमधातुमालायां
अदादय उभयपदिनः ॥

## ॥ अथादाद्यन्तरगणो ह्वादिः परस्मैपदिनः ॥

॥ हुंक दानादानयो ॥
दानमिह हविष्प्रक्षेपः ॥

व० जुहोति जुहुतः जुह्वति
जुहोषि जुहुथः जुहुथ
जुहोमि जुहुवः जुहुमः

स० जुहुयात् जुहुयाताम् जुहुयुः
जुहुयाः जुहुयातम् जुहुयात
जुहुयाम्, जुहुयाव जुहुयाम

प० जुहोतु जुहुतात् जुहुताम् जुह्वतु
जुहुधि „ जुहुतम् जुहुत
जुहवानि जुहवाव जुहवाम

ह्य० अजुहोत् अजुहुताम् अजुहवुः
अजुहोः अजुहुतम् अजुहुत
अजुहवम् अजुहुव अजुहुम

अ० अहौषीत् अहौष्टाम् अहौषुः
अहौषीः अहौष्टम् अहौष्ट
अहौषम् अहौष्व अहौष्म

प० जुहवाञ्चकार जुहवाञ्चक्रतुः जुहवाञ्चक्रुः
जुहवाञ्चकर्थ जुहवाञ्चक्रथुः जुहवाञ्चक्र
जुहवाञ्चकार जुहवाञ्चकृव जुहवाञ्चकृम
चकर

जुहाव जुहुवतुः जुहुवुः
जुहविथ जुहोथ जुहुवथुः जुहुव
जुहाव जुहव जुहुविव जुहुविम
जुहवाम्बभूव । जुहवामास

आ० हूयात् हूयास्ताम् हूयासुः
हूयाः हूयास्तम् हूयास्त
हूयासम् हूयास्व हूयास्म

श्व० होता होतारौ होतारः
होतासि होतास्थः होतास्थ
होतास्मि होतास्वः होतास्मः

भ० होष्यति होष्यतः होष्यन्ति
होष्यसि होष्यथः होष्यथ
होष्यामि होष्यावः होष्यामः

क्रि० अहोष्यत् अहोष्यताम् अहोष्यन्
अहोष्यः अहोष्यतम् अहोष्यत
अहोष्यम् अहोष्याव अहोष्याम

॥ ओहांक् त्यागे, ॥ त्याग करवो ॥

व० जहाति जहितः जहीतः जहति
जहासि जहिथः जहीथः जहिथ जहीथ
जहामि जहिवः-जहीवः जहिमः जहीमः

स० जह्यात् जह्याताम् जह्युः
जह्याः जह्यातम् जह्यात
जह्याम् जह्याव जह्याम

प० जहातु जहितात् जहिताम् जहतु
जहीतात् जहीताम्
जहाहि जहितात् जहितम् जहीत
जहिहि जहीतात् जहीतम् जहित
जहानि जहाव जहाम

ह्य० अजहात् अजहिताम् अजहीताम् अजहुः
अजहाः अजहितम् अजहीतम् अजहित
अजहीत

अजहाम् अजहिव अजहीव अजहिम
अजहीम

अ० अहासीत् अहासिष्टाम् अहासीषुः
अहासीः अहासिष्टम् अहासिष्ट
अहासिषम् अहासिष्व अहासिष्म

प० जहौ जहतुः जहुः
जहिथ जहाथ जहथुः जह
जहौ जहिव जहिम

आ० हेयात् हेयास्ताम् हेयासुः
हेयाः हेयास्तम् हेयास्त
हेयासम् हेयास्व हेयास्म

श्व० हाता हातारौ हातारः
हातासि हातास्थः हातास्थ
हातास्मि हातास्वः हातास्मः

भ० हास्यति हास्यतः हास्यन्ति
हास्यसि हास्यथः हास्यथ
हास्यामि हास्यावः हास्यामः

क्रि० अहास्यत् अहास्यताम् अहास्यन्
अहास्यः अहास्यतम् अहास्यत
अहास्यम् अहास्याव अहास्याम

॥ ञिभीँङ् भये, ॥ भीवुं ॥

व० बिभेति बिभीतः बिभितः बिभ्यति
बिभेषि बिभीथः बिभिथः बिभीथ बिभिथ
बिभेमि बिभीवः बिभिवः बिभीमः बिभिमः

स० बिभीयात् बिभीयाताम् बिभीयुः
बिभीयाः बिभीयातम् बिभीयात
बिभीयाम् बिभीयाव बिभीयाम

बिभियात् बिभियाताम् बिभीयुः
बिभियाः बिभियातम् बिभियात
बिभियाम् बिभियाव बिभियाम

प० बिभेतु बिभितात् बिभिताम् बिभ्यतु
बिभीतात् बिभीताम्
बिभीहि बिभितात् बिभितम् बिभित
बिभिहि बिभीतात् बिभीतम् बिभीत
बिभयानि बिभयाव बिभयाम

ह्य० अबिभेत् द् अबिभीताम् अबिभयुः
अबिभिताम्
अबिभेः अबिभीतम् अबिभीत
अबिभितम् अबिभित
अबिभयम् अबिभीव अबिभीम
अबिभिव अबिभिम

अ० अभैषीत् अभैष्टाम् अभैषुः
अभैषीः अभैष्टम् अभैष्ट
अभैषम् अभैष्व अभैष्म

प० बिभयाञ्चकार बिभयाञ्चक्रतुः बिभयाञ्चक्रुः
बिभयाञ्चकर्थ बिभयाञ्चक्रथुः बिभयाञ्चक्र
बिभयाञ्चकार-चकर बिभयाञ्चकृव बिभयाञ्चकृम

बिभाय बिभ्यतुः बिभ्युः
बिभयिथ बिभेथ बिभ्यथुः बिभ्य
बिभाय बिभय बिभ्यिव बिभ्यिम

आ० भीयात् भीयास्ताम् भीयासुः
भीयाः भीयास्तम् भीयास्त
भीयासम् भीयास्व भीयास्म

श्व० भेता भेतारौ भेतारः
भेतासि भेतास्थः भेतास्थ
भेतास्मि भेतास्वः भेतास्मः

| | | | |
|---|---|---|---|
| भ० | भेष्यति | भेष्यतः | भेष्यन्ति |
| | भेष्यसि | भेष्यथः | भेष्यथ |
| | भेष्यामि | भेष्यावः | भेष्यामः |
| क्रि० | अभेष्यत् | अभेष्यताम् | अभेष्यन् |
| | अभेष्यः | अभेष्यतम् | अभेष्यत |
| | अभेष्यम् | अभेष्याव | अभेष्याम |

॥ ह्रींक् लज्जायाम् ॥ शरमावुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | जिह्रेति | जिह्रीतः | जिह्रियति |
| | जिह्रेषि | जिह्रीथः | जिह्रीथ |
| | जिह्रेमि | जिह्रीवः | जिह्रीमः |
| स० | जिह्रीयात् | जिह्रीयाताम् | जिह्रीयुः |
| | जिह्रीयाः | जिह्रीयातम् | जिह्रीयात |
| | जिह्रीयाम् | जिह्रीयाव | जिह्रीयाम |
| प० | जिह्रेतु जिह्रीतात् | जिह्रीताम् | जिह्रियतु |
| | जिह्रीहि ,, | जिह्रीतम् | जिह्रीत |
| | जिह्रयाणि | जिह्रयाव | जिह्रयाम |
| ह्य० | अजिह्रेत् | अजिह्रीताम् | अजिह्रयुः |
| | अजिह्रेः | अजिह्रीतम् | अजिह्रीत |
| | अजिह्रयम् | अजिह्रीव | अजिह्रीम |
| अ० | अह्रैषीत् | अह्रैष्टाम् | अह्रैषुः |
| | अह्रैषीः | अह्रैष्टम् | अह्रैष्ट |
| | अह्रैषम् | अह्रैष्व | अह्रैष्म |

प० जिह्रयाञ्चकार जिह्रयाञ्चक्रथुः जिह्रयाञ्चक्रुः
जिह्रयाञ्चकर्थ जिह्रयाञ्चक्रतुः जिह्रयाञ्चक्र
जिह्रयाञ्चकार-चकर जिह्रयाञ्चकृव-याञ्चकृम

| | | |
|---|---|---|
| जिह्राय | जिह्रियतुः | जिह्रियुः |
| जिह्रयिथ जिह्रेथ | जिह्रियथुः | जिह्रिय |
| जिह्राय जिह्रय | जिह्रियिव | जिह्रियिम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | ह्रीयात् | ह्रीयास्ताम् | ह्रीयासुः |
| | ह्रीयाः | ह्रीयास्तम् | ह्रीयास्त |
| | ह्रीयासम् | ह्रीयास्व | ह्रीयास्म |
| श्व० | ह्रेता | ह्रेतारौ | ह्रेतारः |
| | ह्रेतासि | ह्रेतास्थः | ह्रेतास्थ |
| | ह्रेतास्मि | ह्रेतास्वः | ह्रेतास्मः |
| भ० | ह्रेष्यति | ह्रेष्यतः | ह्रेष्यन्ति |
| | ह्रेष्यसि | ह्रेष्यथः | ह्रेष्यथ |
| | ह्रेष्यामि | ह्रेष्यावः | ह्रेष्यामः |
| क्रि० | अह्रेष्यत् | अह्रेष्यताम् | अह्रेष्यन् |
| | अह्रेष्यः | अह्रेष्यतम् | अह्रेष्यत |
| | अह्रेष्यम् | अह्रेष्याव | अह्रेष्याम |

॥ पॄंक्–पालनपूरणयोः ॥ पालण करवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | पिपर्त्ति | पिपृतः | पिप्रति |
| | पिपर्षि | पिपृथः | पिपृथ |
| | पिपर्मि | पिपृवः | पिपृमः |
| स० | पिपृयात् | पिपृयाताम् | पिपृयुः |
| | पिपृयाः | पिपृयातम् | पिपृयात |
| | पिपृयाम् | पिपृयाव | पिपृयाम |
| प० | पिपर्तु पिपृतात् | पिपृताम् | पिप्रतु |
| | पिपृहि पिपृतात् | पिपृतम् | पिपृत |
| | पिपराणि | पिपराव | पिपराम |
| ह्य० | अपिपः | अपिपृताम् | अपिपरुः |
| | अपिपः | अपिपृतम् | अपिपृत |
| | अपिपरम् | अपिपृव | अपिपृम |
| अ० | अपार्षीत् | अपार्ष्टाम् | अपार्षुः |
| | अपार्षीः | अपार्ष्टम् | अपार्ष्ट |
| | अपार्षम् | अपार्ष्व | अपार्ष्म |
| प० | पपार | पप्रतुः | पप्रुः |
| | पपर्थ | पप्रथुः | पप्र |
| | पपार पपर | पप्रिव | पप्रिम |
| आ० | प्रियात् | प्रियास्ताम् | प्रियासुः |
| | प्रियाः | प्रियास्तम् | प्रियास्त |
| | प्रियासम् | प्रियास्व | प्रियास्म |
| श्व० | पर्ता | पर्तारौ | पर्तारः |
| | पर्तासि | पर्तास्थः | पर्तास्थ |
| | पर्तास्मि | पर्तास्वः | पर्तास्मः |
| भ० | परिष्यति | परिष्यतः | परिष्यन्ति |
| | परिष्यसि | परिष्यथः | परिष्यथ |
| | परिष्यामि | परिष्यावः | परिष्यामः |

क्रि० अपरिष्यत् अपरिष्यताम् अपरिष्यन्
अपरिष्यः अपरिष्यतम् अपरिष्यत
अपरिष्यम् अपरिष्याव अपरिष्याम

॥ अन्यमते पॄ ॥ दीर्घमिच्छन्ति,

व० पिपर्ति पिपूर्तः पिपुरति
पिपर्षि पिपूर्थः पिपूर्थ
पिपर्मि पिपूर्वः पिपूर्मः

स० पिपूर्यात् पिपूर्याताम् पिपूर्युः
पिपूर्याः पिपूर्यातम् पिपूर्यात
पिपूर्याम् पिपूर्याव पिपूर्याम

प० पिपर्तु पिपूर्तात् पिपूर्ताम् पिपुरतु
पिपूर्हि पिपूर्तात् पिपूर्तम् पिपूर्त
पिपराणि पिपराव पिपराम

ह्य० अपिपः अपिपूर्ताम् अपिपरुः
अपिपः अपिपूर्तम् अपिपूर्त
अपिपरम् अपिपूर्व अपिपूर्म

अ० अपारीत् अपारिष्टाम् अपारिषुः
अपारीः अपारिष्टम् अपारिष्ट
अपारिषम् अपारिष्व अपारिष्म

प० पपार पपरतुः पप्रतुः पपरुः पप्रुः
पपरिथ पपरथुः पप्रथुः पपर पप्र
पपार पपर पपरिव पप्रिव पपरिम पप्रिम

आ० पूर्यात् पूर्यास्ताम् पूर्यासुः
पूर्याः पूर्यास्तम् पूर्यास्त
पूर्यासम् पूर्यास्व पूर्यास्म

श्व० परिता परितारौ परितारः
परितासि परितास्थः परितास्थ
परितास्मि परितास्वः परितास्मः

परीता परीतारौ परीतारः
परीतासि परीतास्थः परीतास्थ
परीतास्मि परीतास्वः परीतास्म

भ० परिष्यति परिष्यतः परिष्यन्ति
परिष्यसि परिष्यथः परिष्यथ
परिष्यामि परिष्यावः परिष्यामः

परीष्यति परीष्यतः परीष्यन्ति
परीष्यसि परीष्यथः परीष्यथ
परीष्यामि परीष्यावः परीष्यामः

क्रि० अपरिष्यत् अपरिष्यताम् अपरिष्यन्
अपरिष्यः अपरिष्यतम् अपरिष्यत
अपरिष्यम् अपरिष्याव अपरिष्याम

अपरीष्यत् अपरीष्यताम् अपरीष्यन्
अपरीष्यः अपरीष्यतम् अपरीष्यत
अपरीष्यम् अपरीष्याव अपरीष्याम

॥ ऋक्—गतौ ॥ जवुं ।

व० इयर्ति इयृतः इय्रति
इयर्षि इयृथः इयृथ
इयर्मि इयृवः इयृमः

स० इयृयात् इयृयाताम् इयृयुः
इयृयाः इयृयातम् इयृयात
इयृयाम् इयृयाव इयृयाम

प० इयर्तु इयृतात् इयृताम् इय्रतु
इयृहि „ इयृतम् इयृत
इयराणि इयराव इयराम

ह्य० ऐयः ऐयृताम् ऐयरुः
ऐयः ऐयृतम् ऐयृत
ऐयरम् ऐयृव ऐयृम

अ० आरत् आरताम् आरन्
आरः आरतम् आरत
आरम् आराव आराम

पाणिनिमते—आरदित्यादि भवति

न तु आर्षीदित्यादि ।

आर्षीत् आर्ष्टाम् आर्षुः
आर्षीः आर्ष्टम् आर्ष्ट
आर्षम् आर्ष्व आर्ष्म

प० आर आरतुः आरुः
आरिथ आरथुः आर
आर आरिव आरिम

| | | |
|---|---|---|
| आ०अर्यात् | अर्यास्ताम् | अर्यासुः |
| अर्याः | अर्यास्तम् | अर्यास्त |
| अर्यासम् | अर्यास्व | अर्यास्म |
| श्व०अर्ता | अर्तारौ | अर्तारः |
| अर्तासि | अर्तास्थः | अर्तास्थ |
| अर्तास्मि | अर्तास्वः | अर्तास्मः |
| भ० अरिष्यति | अरिष्यतः | अरिष्यन्ति |
| अरिष्यसि | अरिष्यथः | अरिष्यथ |
| अरिष्यामि | अरिष्यावः | अरिष्यामः |
| क्रि०आरिष्यत् | आरिष्यताम् | आरिष्यन् |
| आरिष्यः | आरिष्यतम् | आरिष्यत |
| आरिष्यम् | आरिष्याव | आरिष्याम |

॥ इति द्वाद्यः परस्मैपदिनः ॥

---

॥ अथात्मनेपदिनौ, ॥

---

॥ मांङ्क्-मानशब्दयोः ॥ मापवुं शब्द करवो

| | | |
|---|---|---|
| व० मिमीते | मिमाते | मिमते |
| मिमीषे | मिमाथे | मिमीध्वे |
| मिमे | मिमीवहे | मिमीमहे |
| स० मिमीत | मिमीयाताम् | मिमीरन् |
| मिमीथाः | मिमीयाथाम् | मिमीध्वम् |
| मिमीय | मिमीवहि | मिमीमहि |
| प० मिमीताम् | मिमाताम् | मिमताम् |
| मिमीष्व | मिमाथाम् | मिमीध्वम् |
| मिमै | मिमावहै | मिमामहै |
| ह्य० अमिमीत | अमिमाताम् | अमिमत |
| अमिमीथाः | अमिमाथाम् | अमिमीध्वम् |
| अमिमि | अमिमीवहि | अमिमीमहि |
| अ० अमास्त | अमासाताम् | अमासत |
| अमास्थाः | अमासाथाम् | अमाध्वम् |
| | | अमाद्ध्वम् |
| अमासि | अमास्वहि | अमास्महि |
| प० ममे | ममाते | ममिरे |
| ममिषे | ममाथे | ममिध्वे |
| ममे | ममिवहे | ममिमहे |
| आ०मासीष्ट | मासीयास्ताम् | मासीरन् |
| मासीष्ठाः | मासीयास्थाम् | मासीध्वम् |
| मासीय | मासीवहि | मासीमहि |
| श्व०माता | मातारौ | मातारः |
| मातासे | मातासाथे | माताध्वे |
| माताहे | मातास्वहे | मातास्महे |
| भ० मास्यते | मास्येते | मास्यन्ते |
| मास्यसे | मास्येथे | मास्यध्वे |
| मास्ये | मास्यावहे | मास्यामहे |
| क्रि०अमास्यत | अमास्येताम् | अमास्यन्त |
| अमास्यथाः | अमास्येथाम् | अमास्यध्वम् |
| अमास्ये | अमास्यावहि | अमास्यामहि |

॥ ओहांङ्क् गतौ, ॥ जवुं. ॥

| | | |
|---|---|---|
| व० जिहीते | जिहाते | जिहते |
| जिहीषे | जिहाथे | जिहीध्वे |
| जिहे | जिहीवहे | जिहीमहे |
| स० जिहीत | जिहीयाताम् | जिहीरन् |
| जिहीथाः | जिहीयाथाम् | जिहीध्वम् |
| जिहीय | जिहीवहि | जिहीमहि |
| प० जिहीताम् | जिहाताम् | जिहताम् |
| जिहीष्व | जिहाथाम् | जिहीध्वम् |
| जिहै | जिहावहै | जिहामहै |
| ह्य० अजिहीत | अजिहाताम् | अजिहत |
| अजिहीथाः | अजिहाथाम् | अजिहीध्वम् |
| अजिहि | अजिहीवहि | अजिहीमहि |
| अ० अहास्त | अहासाताम् | अहासत |
| अहास्थाः | अहासाथाम् | अहाध्वम् |
| | | अहाद्ध्वम् |
| अहासि | अहास्वहि | अहास्महि |

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | जहे | जहाते | जहिरे |
| | जहिषे | जहाथे | जहिध्वे-ढ्वे |
| | जहे | जहिवहे | जहिमहे |
| आ० | हासीष्ट | हासीयास्ताम् | हासीरन् |
| | हासीष्टाः | हासीयास्थाम् | हासीध्वम् |
| | हासीय | हासीवहि | हासीमहि |
| श्व० | हाता | हातारौ | हातारः |
| | हातासे | हातासाथे | हाताध्वे |
| | हाताहे | हातास्वहे | हातास्महे |
| भ० | हास्यते | हास्येते | हास्यन्ते |
| | हास्यसे | हास्येथे | हास्यध्वे |
| | हास्ये | हास्यावहे | हास्यामहे |
| क्रि० | अहास्यत | अहास्येताम् | अहास्यन्त |
| | अहास्यथाः | अहास्येथाम् | अहास्यध्वम् |
| | अहास्ये | अहास्यावहि | अहास्यामहि |

॥ इतिहादी आत्मनेपदिनौ ॥

---

॥ अथोभयपदिनः ॥

॥ डुदांग्क्-दाने ॥ आपवुं

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| व० | ददाति | दत्तः | ददति | |
| | ददासि | दत्थः | दत्थः | |
| | ददामि | दद्वः | दद्मः | |
| स० | दद्यात् | दद्याताम् | दद्युः | |
| | दद्याः | दद्यातम् | दद्यात | |
| | दद्याम् | दद्याव | दद्याम | |
| प० | ददातु | दत्तात् | दत्ताम् | ददतु |
| | देहि | ,, | दत्तम् | दत्त |
| | ददानि | ददाव | ददाम | |
| ह्य० | अददात् | अदत्ताम् | अददुः | |
| | अददाः | अदत्तम् | अदत्त | |
| | अददाम् | अदद्व | अदद्म | |
| अ० | अदात् | अदाताम् | अदुः | |
| | अदाः | अदातम् | अदात | |
| | अदाम् | अदाव | अदाम | |
| प० | ददौ | ददतुः | ददुः | |
| | ददिथ | ददाथ | ददथुः | दद |
| | ददौ | ददिव | ददिम | |
| आ० | देयात् | देयास्ताम् | देयासुः | |
| | देयाः | देयास्तम् | देयास्त | |
| | देयासम् | देयास्व | देयास्म | |
| श्व० | दाता | दातारौ | दातारः | |
| | दातासि | दातास्थः | दातास्थ | |
| | दातास्मि | दातास्वः | दातास्मः | |
| भ० | दास्यति | दास्यतः | दास्यन्ति | |
| | दास्यसि | दास्यथः | दास्यथ | |
| | दास्यामि | दास्यावः | दास्यामः | |
| क्रि० | अदास्यत् | अदास्यताम् | अदास्यन् | |
| | अदास्यः | अदास्यतम् | अदास्यत | |
| | अदास्यम् | अदास्याव | अदास्याम | |
| व० | दत्ते | ददाते | ददते | |
| | दत्से | ददाथे | दद्ध्वे | |
| | ददे | दद्वहे | दद्महे | |
| स० | ददीत | ददीयाताम् | ददीरन् | |
| | ददीथाः | ददीयाथाम् | ददीध्वम् | |
| | ददीय | ददीवहि | ददीमहि | |
| प० | दत्ताम् | ददाताम् | ददताम् | |
| | दत्स्व | ददाथाम् | दद्ध्वम् | |
| | ददै | ददावहै | ददामहै | |
| ह्य० | अदत्त | अददाताम् | अददत | |
| | अदत्थाः | अददाथाम् | अदद्ध्वम् | |
| | अददि | अदद्वहि | अदद्महि | |
| अ० | अदित | अदिषाताम् | अदिषत | |
| | अदिथाः | अदिषाथाम् | अदिड्ढ्वम्, ढ्वम् | |
| | अदिषि | अदिष्वहि | अदिष्महि | |
| प० | ददे | ददाते | ददिरे | |
| | ददिषे | ददाथे | ददिध्वे | |
| | ददे | ददिवहे | ददिमहे | |
| आ० | दासीष्ट | दासीयास्ताम् | दासीरन् | |
| | दासीष्ठाः | दासीयास्थाम् | दासीध्वम् | |
| | दासीय | दासीवहि | दासीमहि | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्व० | दाता | दातारौ | दातारः |
| | दातासे | दातासाथे | दाताध्वे |
| | दाताहे | दातास्वहे | दातास्महे |
| भ० | दास्यते | दास्येते | दास्यन्ते |
| | दास्यसे | दास्येथे | दास्यध्वे |
| | दास्ये | दास्यावहे | दास्यामहे |
| क्रि० | अदास्यत | अदास्येताम् | अदास्यन्त |
| | अदास्यथाः | अदास्येथाम् | अदास्यध्वम् |
| | अदास्ये | अदास्यावहि | अदास्यामहि |

॥ डुधांग्क्–धारणे च ॥ देवुं धारण करवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | दधाति | धत्तः | दधति |
| | दधासि | धत्थः | धत्थ |
| | दधामि | दध्वः | दध्मः |
| स० | दध्यात् | दध्याताम् | दध्युः |
| | दध्याः | दध्यातम् | दध्यात |
| | दध्याम् | दध्याव | दध्याम |
| प० | दधातु धत्तात् | धत्ताम् | दधतु |
| | धेहि धत्तात् | धत्तम् | धत्त |
| | दधानि | दधाव | दधाम |
| ह्य० | अदधात् | अधत्ताम् | अदधुः |
| | अदधाः | अधत्तम् | अधत्त |
| | अदधाम् | अदध्व | अदध्म |
| अ० | अधात् | अधाताम् | अधुः |
| | अधाः | अधातम् | अधात |
| | अधाम् | अधाव | अधाम |
| प० | दधौ | दधतुः | दधुः |
| | दधाथ दधिथ | दधथुः | दध |
| | दधौ | दधिव | दधिम |
| आ० | धेयात् | धेयास्ताम् | धेयासुः |
| | धेयाः | धेयास्तम् | धेयास्त |
| | धेयासम् | धेयास्व | धेयास्म |
| श्व० | धाता | धातारौ | धातारः |
| | धातासि | धातास्थः | धातास्थ |
| | धातास्मि | धातास्वः | धातास्मः |
| भ० | धास्यति | धास्यतः | धास्यन्ति |
| | धास्यसि | धास्यथः | धास्यथ |
| | धास्यामि | धास्यावः | धास्यामः |
| क्रि० | अधास्यत् | अधास्यताम् | अधास्यन् |
| | अधास्यः | अधास्यतम् | अधास्यत |
| | अधास्यम् | अधास्याव | अधास्याम |
| व० | धत्ते | दधाते | दधते |
| | धत्से | दधाथे | धद्ध्वे |
| | दधे | दध्वहे | दध्महे |
| स० | दधीत | दधीयाताम् | दधीरन् |
| | दधीथाः | दधीयाथाम् | दधीध्वम् |
| | दधीय | दधीवहि | दधीमहि |
| प० | धत्ताम् | दधाताम् | दधताम् |
| | धत्स्व | दधाथाम् | धद्ध्वम् |
| | दधै | दधावहै | दधामहै |
| ह्य० | अधत्त | अदधाताम् | अदधत |
| | अधत्थाः | अदधाथाम् | अधद्ध्वम् |
| | अदधि | अदध्वहि | अदध्महि |
| अ० | अधित | अधिषाताम् | अधिषत |
| | अधिथाः | अधिषाथाम् | अधिढ्वम् अधिड्ढ्वम् |
| | अधिषि | अधिष्वहि | अधिष्महि |
| प० | दधे | दधाते | दधिरे |
| | दधिषे | दधाथे | दधिध्वे |
| | दधे | दधिवहे | दधिमहे |
| आ० | धासीष्ट | धासीयास्ताम् | धासीरन् |
| | धासीष्ठाः | धासीयास्थाम् | धासीध्वम् |
| | धासीय | धासीवहि | धासीमहि |
| श्व० | धाता | धातारौ | धातारः |
| | धातासे | धातासाथे | धाताध्वे |
| | धाताहे | धातास्वहे | धातास्महे |
| भ० | धास्यते | धास्येते | धास्यन्ते |
| | धास्यसे | धास्येथे | धास्यध्वे |
| | धास्ये | धास्यावहे | धास्यामहे |

क्रि० अधास्यत अधास्येताम् अधास्यन्त
अधास्यथाः अधास्येथाम् अधास्यध्वम्
अधास्ये अधास्यावहि अधास्यामहि

॥ डुडुभृंगृकृ-पोषणे च ॥ धारण करवुं पोषण करवुं

व० बिभर्ति बिभृतः बिभ्रति
बिभर्षि बिभृथः बिभृथ
बिभर्मि बिभृवः बिभृमः

स० बिभृयात् बिभृयाताम् बिभृयुः
बिभृयाः बिभृयातम् बिभृयात
बिभृयाम् बिभृयाव बिभृयाम

प० बिभर्तु बिभृतात् बिभृताम् बिभ्रतु
बिभृहि बिभृतात् बिभृतम् बिभृत
बिभराणि बिभराव बिभराम

ह्य० अबिभः अबिभृताम् अबिभरुः
अबिभः अबिभृतम अबिभृत
अबिभरम् अबिभृव अबिभृम

अ० अभार्षीत् अभार्ष्टाम् अभार्षुः
अभार्षीः अभार्ष्टम अभार्ष्ट
अभार्षम् अभार्ष्व अभार्ष्म

प० बभार बभ्रतुः बभ्रुः
बभर्थ बभ्रथुः बभ्र
बभार बभर बभृव बभृम

बिभराञ्चकार बिभराञ्चक्रतुः बिभराञ्चक्रुः
बिभराञ्चकर्थ बिभराञ्चक्रथुः बिभराञ्चक्र
बिभराञ्चकार-चकर बिभराञ्चकृव बिभराञ्चकृम

आ० भ्रियात् भ्रियास्ताम् भ्रियासुः
भ्रियाः भ्रियास्तम भ्रियास्त
भ्रियासम् भ्रियास्व भ्रियास्म

श्व० भर्ता भर्तारौ भर्तारः
भर्तासि भर्तास्थः भर्तास्थ
भर्तास्मि भर्तास्वः भर्तास्मः

भ० भरिष्यति भरिष्यतः भरिष्यन्ति
भरिष्यसि भरिष्यथः भरिष्यथ
भरिष्यामि भरिष्यावः भरिष्यामः

क्रि० अभरिष्यत् अभरिष्यताम् अभरिष्यन्
अभरिष्यः अभरिष्यतम् अभरिष्यत
अभरिष्यम् अभरिष्याव अभरिष्याम

व० बिभृते बिभ्राते बिभ्रते
बिभृषे बिभ्राथे बिभृध्वे
बिभ्रे बिभृवहे बिभृमहे

स० बिभ्रीत बिभ्रीयाताम् बिभ्रीरन्
बिभ्रीथाः बिभ्रीयाथाम् बिभ्रीध्वम्
बिभ्रीय बिभ्रीवहि बिभ्रीमहि

प० बिभृताम् बिभ्राताम् बिभ्रताम्
बिभृष्व बिभ्राथाम् बिभृध्वम्
बिभरै बिभरावहै बिभरामहै

ह्य० अबिभृत अबिभ्राताम् अबिभ्रत
अबिभृथाः अबिभ्राथाम् अबिभृध्वम्
अबिभ्रि अबिभृवहि अबिभृमहि

अ० अभृत अभृषाताम् अभृषत
अभृथाः अभृषाथाम् अभृढ्वम्
अभृड्ढ्वम्
अभृषि अभृष्वहि अभृष्महि

प० बिभराञ्चक्रे बिभराञ्चक्राते बिभराञ्चक्रिरे
बिभराञ्चकृषे बिभराञ्चक्राथे बिभराञ्चकृढ्वे
बिभराञ्चक्रे बिभराञ्चकृवहे बिभराञ्चकृमहे
बिभराम्बभूव । बिभरामास

बभ्रे बभ्राते बभ्रिरे
बभृषे बभ्राथे बभृढ्वे
बभ्रे बभृवहे बभृमहे

आ० भृषीष्ट भृषीयास्ताम् भृषीरन्
भृषीष्ठाः भृषीयास्थाम् भृषीढ्वम्
भृषीय भृषीवहि भृषीमहि

श्व० भर्ता भर्तारौ भर्तारः
भर्तासे भर्तासाथे भर्ताध्वे
भर्ताहे भर्तास्वहे भर्तास्महे

भ० भरिष्यते भरिष्येते भरिष्यन्ते

भरिष्यसे भरिष्येथे भरिष्यध्वे
भरिष्ये भरिष्यावहे भरिष्यामहे
क्रि०अभरिष्यत अभरिष्येताम् अभरिष्यन्त
अभरिष्यथाः अभरिष्येथाम् अभरिष्यध्वम्
अभरिष्ये अभरिष्यावहि अभरिष्यामहि

॥ णिजृंकी–शौचे च ॥ साफ करवुं धोवुं

व० नेनेक्ति नेनिक्तः नेनिजति
नेनेक्षि नेनिक्थः नेनिक्थ
नेनेज्मि नेनिज्वः नेनिज्मः
स० नेनिज्यात् नेनिज्याताम् नेनिज्युः
नेनिज्याः नेनिज्यातम् नेनिज्यात
नेनिज्याम् नेनिज्याव नेनिज्याम
प० नेनेक्तु नेनिक्तात् नेनिक्ताम् नेनिजतु
नेनिग्धि ,, नेनिक्तम् नेनिक्त
नेनिजानि नेनिजाव नेनिजाम
ह्य० अनेनेक्-ग् अनेनिक्ताम् अनेनिजुः
अनेनेक्-ग् अनेनिक्तम् अनेनिक्त
अनेनिजम् अनेनिज्व अनेनिज्म
अ० अनिजत् अनिजताम् अनिजन्
अनिजः अनिजतम् अनिजत
अनिजम् अनिजाव अनिजाम
अनैक्षीत् अनैक्ताम् अनैक्षुः
अनैक्षीः अनैक्तम् अनैक्त
अनैक्षम् अनैक्ष्व अनैक्ष्म
प० निनेज निनिजतुः निनिजुः
निनेजिथ निनिजथुः निनिज
निनेज निनिजिव निनिजिम
आ० निज्यात् निज्यास्ताम् निज्यासुः
निज्याः निज्यास्तम् निज्यास्त
निज्यासम् निज्यास्व निज्यास्म
श्व० नेक्ता नेक्तारौ नेक्तारः
नेक्तासि नेक्तास्थः नेक्तास्थ
नेक्तास्मि नेक्तास्वः नेक्तास्मः
भ० नेक्ष्यति नेक्ष्यतः नेक्ष्यन्ति
नेक्ष्यसि नेक्ष्यथः नेक्ष्यथ
नेक्ष्यामि नेक्ष्यावः नेक्ष्यामः
क्रि० अनेक्ष्यत् अनेक्ष्यताम् अनेक्ष्यन्
अनेक्ष्यः अनेक्ष्यतम् अनेक्ष्यत
अनेक्ष्यम् अनेक्ष्याव अनेक्ष्याम
व० नेनिक्ते नेनिजाते नेनिजते
नेनिक्षे नेनिजाथे नेनिग्ध्वे
नेनिजे नेनिज्वहे नेनिज्महे
स० नेनिजीत नेनिजीयाताम् नेनिजीरन्
नेनिजीथाः नेनिजीयाथाम् नेनिजीध्वम्
नेनिजीय नेनिजीवहि नेनिजीमहि
प० नेनिक्ताम् नेनिजाताम् नेनिजताम्
नेनिक्ष्व नेनिजाथाम् नेनिग्ध्वम्
नेनिजै नेनिजावहै नेनिजामहै
ह्य० अनेनिक्त अनेनिजाताम् अनेनिजत
अनेनिक्थाः अनेनिजाथाम् अनेनिग्ध्वम्
अनेनिजि अनेनिज्वहि अनेनिज्महि
अ० अनिक्त अनिक्षाताम् अनिक्षत
अनिक्थाः अनिक्षाथाम् अनिग्ध्वम्
अनिग्ड्ढ्वम्
अनिक्षि अनिक्ष्वहि अनिक्ष्महि
प० निनिजे निनिजाते निनिजिरे
निनिजिषे निनिजाथे निनिजिध्वे
निनिजे निनिजिवहे निनिजिमहे
आ० निक्षीष्ट निक्षीयास्ताम् निक्षीरन्
निक्षीष्ठाः निक्षीयास्थाम् निक्षीध्वम्
निक्षीय निक्षीवहि निक्षीमहि
श्व० नेक्ता नेक्तारौ नेक्तारः
नेक्तासे नेक्तासाथे नेक्ताध्वे
नेक्ताहे नेक्तास्वहे नेक्तास्महे
भ० नेक्ष्यते नेक्ष्येते नेक्ष्यन्ते
नेक्ष्यसे नेक्ष्येथे नेक्ष्यध्वे
नेक्ष्ये नेक्ष्यावहे नेक्ष्यामहे
क्रि० अनेक्ष्यत अनेक्ष्येताम् अनेक्ष्यन्त

अनेक्ष्यथाः अनेक्ष्येथाम् अनेक्ष्यध्वम्
अनेक्ष्ये अनेक्ष्यावहि अनेक्ष्यामहि

॥ विजृंकी–पृथग्भावे ॥ जुदुं करवुं ॥

व० वेवेक्ति वेविक्तः वेविजति
वेवेक्षि वेविक्थः वेविक्थ
वेवेज्मि वेविज्वः वेविज्मः

स० वेविज्यात् वेविज्याताम् वेविज्युः
वेविज्याः वेविज्यातम् वेविज्यात
वेविज्याम् वेविज्याव वेविज्याम

प० वेवेक्तु वेविक्तात् वेविक्ताम् वेविजतु
वेविग्धि वेविक्तात् वेविक्तम् वेविक्त
वेविजानि वेविजाव वेविजाम

ह्य० अवेवेक्-ग् अवेविक्ताम् अवेविजुः
अवेवेक्-ग् अवेविक्तम् अवेविक्त
अवेविजम् अवेविज्व अवेविज्म

अ० अविजत् अविजताम् अविजन्
अविजः अविजतम् अविजत
अविजम् अविजाव अविजाम
अवैक्षीत् अवैक्ताम् अवैक्षुः
अवैक्षीः अवैक्तम् अवैक्त
अवैक्षम् अवैक्ष्व अवैक्ष्म

प० विवेज विविजतुः विविजुः
विवेजिथ विविजथुः विविज
विवेज विविजिव विविजिम

आ० विज्यात् विज्यास्ताम् विज्यासुः
विज्याः विज्यास्तम् विज्यास्त
विज्यासम् विज्यास्व विज्यास्म

श्व० वेक्ता वेक्तारौ वेक्तारः
वेक्तासि वेक्तास्थः वेक्तास्थ
वेक्तास्मि वेक्तास्वः वेक्तास्मः

भ० वेक्ष्यति वेक्ष्यतः वेक्ष्यन्ति
वेक्ष्यसि वेक्ष्यथः वेक्ष्यथ
वेक्ष्यामि वेक्ष्यावः वेक्ष्यामः

क्रि० अवेक्ष्यत् अवेक्ष्यताम् अवेक्ष्यन्
अवेक्ष्यः अवेक्ष्यतम् अवेक्ष्यत
अवेक्ष्यम् अवेक्ष्याव अवेक्ष्याम

व० वेविक्ते वेविजाते वेविजते
वेविक्षे वेविजाथे वेविग्ध्वे
वेविजे वेविज्वहे वेविज्महे

स० वेविजीत वेविजीयाताम् वेविजीरन्
वेविजीथाः वेविजीयाथाम् वेविजीध्वम्
वेविजीय वेविजीवहि वेविजीमहि

प० वेविक्ताम् वेविजाताम् वेविजताम्
वेविक्ष्व वेविजाथाम् वेविग्ध्वम्
वेविजै वेविजावहै वेविजामहै

ह्य० अवेविक्त अवेविजाताम् अवेविजत
अवेविक्थाः अवेविजाथाम् अवेविग्ध्वम्
अवेविजि अवेविज्वहि अवेविज्महि

अ० अविक्त अविक्षाताम् अविक्षत
अविक्थाः अविक्षाथाम् अविग्ध्वम्
ढ्वम्
अविक्षि अविक्ष्वहि अविक्ष्महि

प० विविजे विविजाते विविजिरे
विविजिषे विविजाथे विविजिध्वे
विविजे विविजिवहे विविजिमहे

आ० विक्षीष्ट विक्षीयास्ताम् विक्षीरन्
विक्षीष्ठाः विक्षीयास्थाम् विक्षीध्वम्
विक्षीय विक्षीवहि विक्षीमहि

श्व० वेक्ता वेक्तारौ वेक्तारः
वेक्तासे वेक्तासाथे वेक्ताध्वे
वेक्ताहे वेक्तास्वहे वेक्तास्महे

भ० वेक्ष्यते वेक्ष्येते वेक्ष्यन्ते
वेक्ष्यसे वेक्ष्येथे वेक्ष्यध्वे
वेक्ष्ये वेक्ष्यावहे वेक्ष्यामहे

क्रि० अवेक्ष्यत अवेक्ष्येताम् अवेक्ष्यन्त
अवेक्ष्यथाः अवेक्ष्येथाम् अवेक्ष्यध्वम्
अवेक्ष्ये अवेक्ष्यावहि अवेक्ष्यामहि

॥ विष्लृंकी-व्याप्तौ, व्याप्त थवुं ॥

व० वेवेष्टि वेविष्टः वेविषति
वेवेक्षि वेविष्ठः वेविष्ठ
वेवेष्मि वेविष्वः वेविष्मः

स० वेविष्यात् वेविष्याताम् वेविष्युः
वेविष्याः वेविष्यातम् वेविष्यात
वेविष्याम् वेविष्याव वेविष्याम

प० वेवेष्टु वेविष्टात् वेविष्टाम् वेविषतु
वेविड्ढि वेविष्टात् वेविष्टम् वेविष्ट
वेविषाणि वेविषाव वेविषाम

ह्य० अवेवेट्,ड् अवेविष्टाम् अवेविषुः
अवेवेट्,ड् अवेविष्टम् अवेविष्ट
अवेविषम् अवेविष्व अवेविष्म

अ० अविषत् अविषताम् अविषन्
अविषः अविषतम् अविषत
अविषम् अविषाव अविषाम

नायं लृदिदृदिदित्येके तन्मते तु

अविक्षत् अविक्षताम् अविक्षन्
अविक्षः अविक्षतम् अविक्षत
अविक्षम् अविक्षाव अविक्षाम

प० विवेष विविषतुः विविषुः
विवेषिथ विविषथुः विविष
विवेष विविषिव विविषिम

आ० विष्यात् विष्यास्ताम् विष्यासुः
विष्याः विष्यास्तम् विष्यास्त
विष्यासम् विष्यास्व विष्यास्म

श्व० वेष्टा वेष्टारौ वेष्टारः
वेष्टासि वेष्टास्थः वेष्टास्थ
वेष्टास्मि वेष्टास्वः वेष्टास्मः

भ० वेक्ष्यति वेक्ष्यतः वेक्ष्यन्ति
वेक्ष्यसि वेक्ष्यथः वेक्ष्यथ
वेक्ष्यामि वेक्ष्यावः वेक्ष्यामः

क्रि० अवेक्ष्यत् अवेक्ष्यताम् अवेक्ष्यन्
अवेक्ष्यः अवेक्ष्यतम् अवेक्ष्यत
अवेक्ष्यम् अवेक्ष्याव अवेक्ष्याम

व० वेविष्टे वेविषाते वेविषते
वेविक्षे वेविषाथे वेविड्ढ्वे
वेविषे वेविष्वहे वेविष्महे

स० वेविषीत वेविषीयाताम् वेविषीरन्
वेविषीथाः वेविषीयाथाम् वेविषीध्वम्
वेविषीय वेविषीवहि वेविषीमहि

प० वेविष्टाम् वेविषाताम् वेविषताम्
वेविक्ष्व वेविषाथाम् वेविड्ढ्वम्
वेविषै वेविषावहै वेविषामहै

ह्य० अवेविष्ट अवेविषाताम् अवेविषत
अवेविष्ठाः अवेविषाथाम् अवेविड्ढ्वम्
अवेविषि अवेविष्वहि अवेविष्महि

अ० अविक्षत अविक्षाताम् अविक्षन्त
अविक्षथाः अविक्षाथाम् अविक्षध्वम्
अविक्षि अविक्षावहि अविक्षामहि

प० विविषे विविषाते विविषिरे
विविषिषे विविषाथे विविषिध्वे
विविषे विविषिवहे विविषिमहे

आ० विक्षीष्ट विक्षीयास्ताम् विक्षीरन्
विक्षीष्ठाः विक्षीयास्थाम् विक्षीध्वम्
विक्षीय विक्षीवहि विक्षीमहि

श्व० वेष्टा वेष्टारौ वेष्टारः
वेष्टासे वेष्टासाथे वेष्टाध्वे
वेष्टाहे वेष्टास्वहे वेष्टास्महे

भ० वेक्ष्यते वेक्ष्येते वेक्ष्यन्ते
वेक्ष्यसे वेक्ष्येथे वेक्ष्यध्वे
वेक्ष्ये वेक्ष्यावहे वेक्ष्यामहे

क्रि० अवेक्ष्यत अवेक्ष्येताम् अवेक्ष्यन्त
अवेक्ष्यथाः अवेक्ष्येथाम् अवेक्ष्यध्वम्
अवेक्ष्ये अवेक्ष्यावहि अवेक्ष्यामहि

॥ इति ह्वादय उभयपदिनः ॥

## ॥ अथ दिवादयः ॥

### ॥ परस्मैपदिनः ॥

॥ दिवूच्-क्रीडाजयेच्छापणिद्युतिस्तुतिगतिषु ॥ रमवुं, जीतवुं, इच्छवुं, द्युत रमवुं, प्रकाशवुं, स्तुति करवी जवुं

व० दीव्यति दीव्यतः दीव्यन्ति
दीव्यसि दीव्यथः दीव्यथ
दीव्यामि दीव्यावः दीव्यामः
स० दीव्येत् दीव्येताम् दीव्येयुः
दीव्येः दीव्येतम् दीव्येत
दीव्येयम् दीव्येव दीव्येम
प० दीव्यतु दीव्यतात् दीव्यताम् दीव्यन्तु
दीव्य दीव्यतात् दीव्यतम् दीव्यत
दीव्यानि दीव्याव दीव्याम
ह्य० अदीव्यत् अदीव्यताम् अदीव्यन्
अदीव्यः अदीव्यतम् अदीव्यत
अदीव्यम् अदीव्याव अदीव्याम
अ० अदेवीत् अदेविष्टाम् अदेविषुः
अदेवीः अदेविष्टम् अदेविष्ट
अदेविषम् अदेविष्व अदेविष्म
प० दिदेव दिदिवतुः दिदिवुः
दिदेविथ दिदिवथुः दिदिव
दिदेव दिदिविव दिदिविम
आ० दीव्यात् दीव्यास्ताम् दीव्यासुः
दीव्याः दीव्यास्तम् दीव्यास्त
दीव्यासम् दीव्यास्व दीव्यास्म
श्व० देविता देवितारौ देवितारः
देवितासि देवितास्थः देवितास्थ
देवितास्मि देवितास्वः देवितास्मः
भ० देविष्यति देविष्यतः देविष्यन्ति
देविष्यसि देविष्यथः देविष्यथ
देविष्यामि देविष्यावः देविष्यामः
क्रि० अदेविष्यत् अदेविष्यताम् अदेविष्यन्
अदेविष्यः अदेविष्यतम् अदेविष्यत
अदेविष्यम् अदेविष्याव अदेविष्याम

॥ जॄष् झॄषच् जरसि-वयोहानौ ॥ क्षीण थवुं, घरडा थवुं,

व० जीर्यति जीर्यतः जीर्यन्ति
जीर्यसि जीर्यथः जीर्यथ
जीर्यामि जीर्यावः जीर्यामः
स० जीर्येत् जीर्येताम् जीर्येयुः
जीर्येः जीर्येतम् जीर्येत
जीर्येयम् जीर्येव जीर्येम
प० जीर्यतु जीर्यतात् जीर्यताम् जीर्यन्तु
जीर्य जीर्यतात् जीर्यतम् जीर्यत
जीर्याणि जीर्याव जीर्याम
ह्य० अजीर्यत् अजीर्यताम् अजीर्यन्
अजीर्यः अजीर्यतम् अजीर्यत
अजीर्यम् अजीर्याव अजीर्याम
अ० अजरत् अजरताम् अजरन्
अजरः अजरतम् अजरत
अजरम् अजराव अजराम
अजारीत् अजारिष्टाम् अजारिषुः
अजारीः अजारिष्टम् अजारिष्ट
अजारिषम् अजारिष्व अजारिष्म
प० जजार जजरतुः जेरतुः जेरुः जजरुः
जजरिथ जेरिथ जजरथुः जेरथुः जजर जेर
जजार जजर जजरिव जेरिव जजरिम जेरिम
आ० जीर्यात् जीर्यास्ताम् जीर्यासुः
जीर्याः जीर्यास्तम् जीर्यास्त
जीर्यासम् जीर्यास्व जीर्यास्म
श्व० जरिता जरितारौ जरितारः
जरितासि जरितास्थः जरितास्थ
जरितास्मि जरितास्वः जरितास्मः
जरीता जरीतारौ जरीतारः
जरीतासि जरीतास्थः जरीतास्थ
जरीतास्मि जरीतास्वः जरीतास्मः
भ० जरिष्यति जरिष्यतः जरिष्यन्ति
जरिष्यसि जरिष्यथः जरिष्यथ
जरिष्यामि जरिष्यावः जरिष्यामः

जरीष्यति जरीष्यतः जरीष्यन्ति
जरीष्यसि जरीष्यथः जरीष्यथ
जरिष्यामि जरिष्यावः जरिष्यामः
क्रि०अजरिष्यत् अजरिष्यताम् अजरिष्यन्
अजरिष्यः अजरिष्यतम् अजरिष्यत
अजरिष्यम् अजरिष्याव अजरिष्याम
अजरीष्यत् अजरीष्यताम् अजरीष्यन्
अजरीष्यः अजरीष्यतम् अजरीष्यत
अजरीष्यम् अजरीष्याव अजरीष्याम
झीर्यति । झीर्येत् । झीर्यतु ।
अझीर्यत् । अझारीत् । जझार ।
जझरतुः । जझरिथ । जझरिम ।
झीर्यात् । झरीता । झरिता । झरीष्यति । झरिष्यति । अझरीष्यत् । अझरिष्यत् ।

॥ शोंच्-तक्षणे ॥ कापवुं, छोलवुं.

व० श्यति श्यतः श्यन्ति
श्यसि श्यथः श्यथ
श्यामि श्यावः श्यामः
स० श्येत् श्येताम् श्येयुः
श्येः श्येतम् श्येत
श्येयम् श्येव श्येम
प० श्यतु श्यतात् श्यताम् श्यन्तु
श्य श्यतात् श्यतम् श्यत
श्यानि श्याव श्याम
ह्य० अश्यत् अश्यताम् अश्यन्
अश्यः अश्यतम् अश्यत
अश्यम् अश्याव अश्याम
अ० अशात् अशाताम् अशुः
अशाः अशातम् अशात
अशाम् अशाव अशाम
अशासीत् अशासिष्टाम् अशासिषुः
अशासीः अशासिष्टम् अशासिष्ट
अशासिषम् अशासिष्व अशासिष्म
प० शशौ शशतुः शशुः
शशाथ शशिथ शशथुः शश
शशौ शशिव शशिम
आ० शायात् शायास्ताम् शायासुः
शायाः शायास्तम् शायास्त
शायासम् शायास्व शायास्म
श्व० शाता शातारौ शातारः
शातासि शातास्थः शातास्थ
शातास्मि शातास्वः शातास्मः
भ० शास्यति शास्यतः शास्यन्ति
शास्यसि शास्यथः शास्यथ
शास्यामि शास्यावः शास्यामः
क्रि० अशास्यत् अशास्यताम् अशास्यन्
अशास्यः अशास्यतम् अशास्यत
अशास्यम् अशास्याव अशास्याम

॥ दोंच्-छेदने ॥ छेदवुं ॥

व० द्यति द्यतः द्यन्ति
द्यसि द्यथः द्यथ
द्यामि द्यावः द्यामः
स० द्येत् द्येताम् द्येयुः
द्येः द्येतम् द्येत
द्येयम् द्येव द्येम
प० द्यतु द्यतात् द्यताम् द्यन्तु
द्य द्यतात् द्यतम् द्यत
द्यानि द्याव द्याम
ह्य० अद्यत् अद्यताम् अद्यन्
अद्यः अद्यतम् अद्यत
अद्यम् अद्याव अद्याम
अ० अदात् अदाताम् अदुः
अदाः अदातम् अदात
अदाम् अदाव अदाम
प० ददौ ददतुः ददुः
ददिथ ददाथ ददथुः दद
ददौ ददिव ददिम

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | देयात् | देयास्ताम् | देयासुः |
| | देयाः | देयास्तम् | देयास्त |
| | देयासम् | देयास्व | देयास्म |
| श्व० | दाता | दातारौ | दातारः |
| | दातासि | दातास्थः | दातास्थ |
| | दातास्मि | दातास्वः | दातास्मः |
| भ० | दास्यति | दास्यतः | दास्यन्ति |
| | दास्यसि | दास्यथः | दास्यथ |
| | दास्यामि | दास्यावः | दास्यामः |
| क्रि० | अदास्यत् | अदास्यताम् | अदास्यन् |
| | अदास्यः | अदास्यतम् | अदास्यत |
| | अदास्यम् | अदास्याव | अदास्याम |

॥ षोंच्–अंतकर्मणि ॥ नाश करवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | स्यति | स्यतः | स्यन्ति |
| | स्यसि | स्यथः | |
| | स्यामि | स्यावः | स्यामः |
| स० | स्येत् | स्येताम् | स्येयुः |
| | स्येः | स्येतम् | स्येत |
| | स्येयम् | स्येव | स्येम |
| प० | स्यतु स्यतात् | स्यताम् | स्यन्तु |
| | स्य स्यतात् | स्यतम् | स्यत |
| | स्यानि | स्याव | स्याम |
| ह्य० | अस्यत् | अस्यताम् | अस्यन् |
| | अस्यः | अस्यतम् | अस्यत |
| | अस्यम् | अस्याव | अस्याम |
| अ० | असात् | असाताम् | असुः |
| | असाः | असातम् | असात |
| | असाम् | असाव | असाम |
| | असासीत् | असासिष्टाम् | असासिषुः |
| | असासीः | असासिष्टम् | असासिष्ट |
| | असासिषम् | असासिष्व | असासिष्म |
| प० | ससौ | ससतुः | ससुः |
| | ससाथ - ससिथ | ससथुः | सस |
| | ससौ | ससिव | ससिम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | सेयात् | सेयास्ताम् | सेयासुः |
| | सेयाः | सेयास्तम् | सेयास्त |
| | सेयासम् | सेयास्व | सेयास्म |
| श्व० | साता | सातारौ | सातारः |
| | सातासि | सातास्थः | सातास्थ |
| | सातास्मि | सातास्वः | सातास्मः |
| भ० | सास्यति | सास्यतः | सास्यन्ति |
| | सास्यसि | सास्यथः | सास्यथ |
| | सास्यामि | सास्यावः | सास्यामः |
| क्रि० | असास्यत् | असास्यताम् | असास्यन् |
| | असास्यः | असास्यतम् | असास्यत |
| | असास्यम् | असास्याव | असास्याम |

॥ छोंच्–छेदने ॥ छेदवुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | छ्यति | छ्यतः | छ्यन्ति |
| | छ्यसि | छ्यथः | छ्यथ |
| | छ्यामि | छ्यावः | छ्यामः |
| स० | छ्येत् | छ्येताम् | छ्येयुः |
| | छ्येः | छ्येतम् | छ्येत |
| | छ्येयम् | छ्येव | छ्येम |
| प० | छ्यतु छ्यतात् | छ्यताम् | छ्यन्तु |
| | छ्य छ्यतात् | छ्यतम् | छ्यत |
| | छ्यानि | छ्याव | छ्याम |
| अ० | अच्छात् | अच्छाताम् | अच्छुः |
| | अच्छाः | अच्छातम् | अच्छात |
| | अच्छाम् | अच्छाव | अच्छाम |
| | अच्छासीत् | अच्छासिष्टाम् | अच्छासिषुः |
| | अच्छासीः | अच्छासिष्टम् | अच्छासिष्ट |
| | अच्छासिषम् | अच्छासिष्व | अच्छासिष्म |
| प० | चच्छौ | चच्छतुः | चच्छुः |
| | चच्छाथ चच्छिथ | चच्छथुः | चच्छ |
| | चच्छौ | चच्छिव | चच्छिम |
| आ० | छायात् | छायास्ताम् | छायासुः |
| | छायाः | छायास्तम् | छायास्त |
| | छायासम् | छायास्व | छायास्म |

| | | |
|---|---|---|
| श्व०छाता | छातारौ | छातारः |
| छातासि | छातास्थः | छातास्थ |
| छातास्मि | छातास्वः | छातास्मः |
| भ० छास्यति | छास्यतः | छास्यन्ति |
| छास्यसि | छास्यथः | छास्यथ |
| छास्यामि | छास्यावः | छास्यामः |
| क्रि०अच्छास्यत् | अच्छास्यताम् | अच्छास्यन् |
| अच्छास्यः | अच्छास्यतम् | अच्छास्यत |
| अच्छास्यम् | अच्छास्याव | अच्छास्याम |

व्रीडच् लज्जायाम् । व्रीड्यति । अव्रीडीत् । विव्रीड ।

॥ नृतैच्-नर्तने ॥ नाचवुं

| | | |
|---|---|---|
| व० नृत्यति | नृत्यतः | नृत्यन्ति |
| नृत्यसि | नृत्यथः | नृत्यथ |
| नृत्यामि | नृत्यावः | नृत्यामः |
| स० नृत्येत् | नृत्येताम् | नृत्येयुः |
| नृत्येः | नृत्येतम् | नृत्येत |
| नृत्येयम् | नृत्येव | नृत्येम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० नृत्यतु | नृत्यतात् | नृत्यताम् | नृत्यन्तु |
| नृत्य | नृत्यतात् | नृत्यतम् | नृत्यत |
| नृत्यानि | | नृत्याव | नृत्याम |

| | | |
|---|---|---|
| ह्य० अनृत्यत् | अनृत्यताम् | अनृत्यन् |
| अनृत्यः | अनृत्यतम् | अनृत्यत |
| अनृत्यम् | अनृत्याव | अनृत्याम |
| अ० अनर्तीत् | अनर्तिष्टाम् | अनर्तिषुः |
| अनर्तीः | अनर्तिष्टम् | अनर्तिष्ट |
| अनर्तिषम् | अनर्तिष्व | अनर्तिष्म |
| प० ननर्त | ननृततुः | ननृतुः |
| ननर्तिथ | ननृतथुः | ननृत |
| ननर्त | ननृतिव | ननृतिम |
| आ०नृत्यात् | नृत्यास्ताम् | नृत्यासुः |
| नृत्याः | नृत्यास्तम् | नृत्यास्त |
| नृत्यासम् | नृत्यास्व | नृत्यास्म |
| श्व०नर्तिता | नर्तितारौ | नर्तितारः |
| नर्तितासि | नर्तितास्थः | नर्तितास्थ |
| नर्तितास्मि | नर्तितास्वः | नर्तितास्मः |
| भ० नर्तिष्यति | नर्तिष्यतः | नर्तिष्यन्ति |
| नर्तिष्यसि | नर्तिष्यथः | नर्तिष्यथ |
| नर्तिष्यामि | नर्तिष्यावः | नर्तिष्यामः |
| क्रि०अनर्तिष्यत् | अनर्तिष्यताम् | अनर्तिष्यन् |
| अनर्तिष्यः | अनर्तिष्यतम् | अनर्तिष्यत |
| अनर्तिष्यम् | अनर्तिष्याव | अनर्तिष्याम |
| अनर्त्स्यत् | अनर्त्स्यताम् | अनर्त्स्यन् |
| अनर्त्स्यः | अनर्त्स्यतम् | अनर्त्स्यत |
| अनर्त्स्यम् | अनर्त्स्याव | अनर्त्स्याम |

कुथच् पूतिभावे । कुथ्यति । अकोथीत् । चुकोथ । पुथच् हिंसायाम् । पुथ्यति । अपोथीत् । पुपोथ । गुधच् परिवेष्टने गुध्यति । अगोधीत् । जुगोध ।

॥ राधंच्-वृद्धौ ॥ वधवुं ॥

| | | |
|---|---|---|
| व० राध्यति | राध्यतः | राध्यन्ति |
| राध्यसि | राध्यथः | राध्यथ |
| राध्यामि | राध्यावः | राध्यामः |
| स० राध्येत् | राध्येताम् | राध्येयुः |
| राध्येः | राध्येतम् | राध्येत |
| राध्येयम् | राध्येव | राध्येम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० राध्यतु | राध्यतात् | राध्यताम् | राध्यन्तु |
| राध्य | राध्यतात् | राध्यतम् | राध्यत |
| राध्यानि | | राध्याव | राध्याम |

| | | |
|---|---|---|
| ह्य० अराध्यत् | अराध्यताम् | अराध्यन् |
| अराध्यः | अराध्यतम् | अराध्यत |
| अराध्यम् | अराध्याव | अराध्याम |
| अ० अरात्सीत् | अराद्धाम् | अरात्सुः |
| अरात्सीः | अराद्धम् | अराद्ध |
| अरात्सम् | अरात्स्व | अरात्स्म |
| प० रराध | रराधतुः | रराधुः |
| रराधिथ | रराधथुः | रराध |
| रराध | रराधिव | रराधिम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | राध्यात् | राध्यास्ताम् | राध्यासुः |
| | राध्याः | राध्यास्तम् | राध्यास्त |
| | राध्यासम् | राध्यास्व | राध्यास्म |
| श्व० | राद्धा | राद्धारौ | राद्धारः |
| | राद्धासि | राद्धास्थः | राद्धास्थ |
| | राद्धास्मि | राद्धास्वः | राद्धास्मः |
| भ० | रात्स्यति | रात्स्यतः | रात्स्यन्ति |
| | रात्स्यसि | रात्स्यथः | रात्स्यथ |
| | रात्स्यामि | रात्स्यावः | रात्स्यामः |
| क्रि० | अरात्स्यत् | अरात्स्यताम् | अरात्स्यन् |
| | अरात्स्यः | अरात्स्यतम् | अरात्स्यत |
| | अरात्स्यम् | अरात्स्याव | अरात्स्याम |

॥ व्यधंच्-ताडने ॥ मारवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | विध्यति | विध्यतः | विध्यन्ति |
| | विध्यसि | विध्यथः | विध्यथ |
| | विध्यामि | विध्यावः | विध्यामः |
| स० | विध्येत् | विध्येताम् | विध्येयुः |
| | विध्येः | विध्येतम् | विध्येत |
| | विध्येयम् | विध्येव | विध्येम |
| प० | विध्यतु विध्यतात् | विध्यताम् | विध्यन्तु |
| | विध्य विध्यतात् | विध्यतम् | विध्यत |
| | विध्यानि | विध्याव | विध्याम |
| ह्य० | अविध्यत् | अविध्यताम् | अविध्यन् |
| | अविध्यः | अविध्यतम् | अविध्यत |
| | अविध्यम् | अविध्याव | अविध्याम |
| अ० | अव्यात्सीत् | अव्याद्धाम् | अव्यात्सुः |
| | अव्यात्सीः | अव्याद्धम् | अव्याद्ध |
| | अव्यात्सम् | अव्यात्स्व | अव्यात्स्म |
| प० | विव्याध | विविधतुः | विविधुः |
| | विव्यधिथ विव्यद्ध | विविधथुः | विविध |
| | विव्याध विव्यध | विविधिव | विविधिम |
| आ० | विध्यात् | विध्यास्ताम् | विध्यासुः |
| | विध्याः | विध्यास्तम् | विध्यास्त |
| | विध्यासम् | विध्यास्व | विध्यास्म |
| श्व० | व्यद्धा | व्यद्धारौ | व्यद्धारः |
| | व्यद्धासि | व्यद्धास्थः | व्यद्धास्थ |
| | व्यद्धास्मि | व्यद्धास्वः | व्यद्धास्मः |
| भ० | व्यत्स्यति | व्यत्स्यतः | व्यत्स्यन्ति |
| | व्यत्स्यसि | व्यत्स्यथः | व्यत्स्यथ |
| | व्यत्स्यामि | व्यत्स्यावः | व्यत्स्यामः |
| क्रि० | अव्यत्स्यत् | अव्यत्स्यताम् | अव्यत्स्यन् |
| | अव्यत्स्यः | अव्यत्स्यतम् | अव्यत्स्यत |
| | अव्यत्स्यम् | अव्यत्स्याव | अव्यत्स्याम |

॥ क्षिपंच्-प्रेरणे, ॥ फेंकवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | क्षिप्यति | क्षिप्यतः | क्षिप्यन्ति |
| | क्षिप्यसि | क्षिप्यथः | क्षिप्यथ |
| | क्षिप्यामि | क्षिप्यावः | क्षिप्यामः |
| स० | क्षिप्येत् | क्षिप्येताम् | क्षिप्येयुः |
| | क्षिप्येः | क्षिप्येतम् | क्षिप्येत |
| | क्षिप्येयम् | क्षिप्येव | क्षिप्येम |
| प० | क्षिप्यतु क्षिप्यतात् | क्षिप्यताम् | क्षिप्यन्तु |
| | क्षिप्य क्षिप्यतात् | क्षिप्यतम् | क्षिप्यत |
| | क्षिप्याणि | क्षिप्याव | क्षिप्याम |
| ह्य० | अक्षिप्यत् | अक्षिप्यताम् | अक्षिप्यन् |
| | अक्षिप्यः | अक्षिप्यतम् | अक्षिप्यत |
| | अक्षिप्यम् | अक्षिप्याव | अक्षिप्याम |
| अ० | अक्षैप्सीत् | अक्षैप्ताम् | अक्षैप्सुः |
| | अक्षैप्सीः | अक्षैप्तम् | अक्षैप्त |
| | अक्षैप्सम् | अक्षैप्स्व | अक्षैप्स्म |
| प० | चिक्षेप | चिक्षिपतुः | चिक्षिपुः |
| | चिक्षेपिथ | चिक्षिपथुः | चिक्षिप |
| | चिक्षेप | चिक्षिपिव | चिक्षिपिम |
| आ० | क्षिप्यात् | क्षिप्यास्ताम् | क्षिप्यासुः |
| | क्षिप्याः | क्षिप्यास्तम् | क्षिप्यास्त |
| | क्षिप्यासम् | क्षिप्यास्व | क्षिप्यास्म |
| श्व० | क्षेप्ता | क्षेप्तारौ | क्षेप्तारः |
| | क्षेप्तासि | क्षेप्तास्थः | क्षेप्तास्थ |
| | क्षेप्तास्मि | क्षेप्तास्वः | क्षेप्तास्मः |

भ० क्षेप्स्यति क्षेप्स्यतः क्षेप्स्यन्ति
क्षेप्स्यसि क्षेप्स्यथः क्षेप्स्यथ
क्षेप्स्यामि क्षेप्स्यावः क्षेप्स्यामः

क्रि० अक्षेप्स्यत् अक्षेप्स्यताम् अक्षेप्स्यन्
अक्षेप्स्यः अक्षेप्स्यतम् अक्षेप्स्यत
अक्षेप्स्यम् अक्षेप्स्याव अक्षेप्स्याम

॥ पुष्पच्-विकसने ॥ पोसवुं ॥ खीलवुं
पुष्प्यति । अपुष्पीत् । पुपुष्प ।

तिम तीम ष्टिम ष्टीमच्-आर्द्रभावे भीना थवुं
तिम्यति । अतेमीत् । तितेम ।
तीम्यति । अतीमीत् । तितीम ।
स्तिम्यति । अस्तेमीत् । तिष्टेम ।
स्तीम्यति । अस्तीमीत् । तिष्टीम ।

॥ षिवूच्-उतौ, उतिर्वानं तन्तुसन्तान इत्यर्थः ॥ सीववुं

व० परिषीव्यति परिषीव्यतः परिषीव्यन्ति
परिषीव्यसि परिषीव्यथः परिषीव्यथ
परिषीव्यामि परिषीव्यावः परिषीव्यामः

स० परिषीव्येत् परिषीव्येताम् परिषीव्येयुः
परिषीव्येः परिषीव्येतम् परिषीव्येत
परिषीव्येयम् परिषीव्येव परिषीव्येम

प० परिषीव्यतु परिषीव्यतात् परिषीव्यताम् परिषीव्यन्तु
परिषीव्य परिषीव्यतात् परिषीव्यतम् परिषीव्यत
परिषीव्याणि परिषीव्याव परिषीव्याम

ह्य० पर्यषीव्यत् पर्यषीव्यताम् पर्यषीव्यन्
पर्यषीव्यः पर्यषीव्यतम् पर्यषीव्यत
पर्यषीव्यम् पर्यषीव्याव पर्यषीव्याम
पर्यसीव्यत् पर्यसीव्यताम् पर्यसीव्यन्
पर्यसीव्यः पर्यसीव्यतम् पर्यसीव्यत
पर्यसीव्यम् पर्यसीव्याव पर्यसीव्याम

अ० पर्यषेवीत् पर्यषेविष्टाम् पर्यषेविषुः
पर्यषेवीः पर्यषेविष्टम् पर्यषेविष्ट
पर्यषेविषम् पर्यषेविष्व पर्यषेविष्म
पर्यसेवीत् पर्यसेविष्टाम् पर्यसेविषुः
पर्यसेवीः पर्यसेविष्टम् पर्यसेविष्ट
पर्यसेविषम् पर्यसेविष्व पर्यसेविष्म

प० परिषिषेव परिषिषिवतुः परिषिषिवुः
परिषिषेविथ परिषिषिवथुः परिषिषिव
परिषिषेव परिषिषिविव परिषिषिविम

आ० परिषीव्यात् परिषीव्यास्ताम् परिषीव्यासुः
परिषीव्याः परिषीव्यास्तम् परिषीव्यास्त
परिषीव्यासम् परिषीव्यास्व परिषीव्यास्म

श्व० परिषेविता परिषेवितारौ परिषेवितारः
परिषेवितासि परिषेवितास्थः परिषेवितास्थ
परिषेवितास्मि परिषेवितास्वः परिषेवितास्मः

भ० परिषेविष्यति परिषेविष्यतः परिषेविष्यन्ति
परिषेविष्यसि परिषेविष्यथः परिषेविष्यथ
परिषेविष्यामि परिषेविष्यावः परिषेविष्यामः

क्रि० पर्यषेविष्यत् पर्यषेविष्यताम् पर्यषेविष्यन्
पर्यषेविष्यः पर्यषेविष्यतम् पर्यषेविष्यत
पर्यषेविष्यम् पर्यषेविष्याव पर्यषेविष्याम
पर्यसेविष्यत् पर्यसेविष्यताम् पर्यसेविष्यन्
पर्यसेविष्यः पर्यसेविष्यतम् पर्यसेविष्यत
पर्यसेविष्यम् पर्यसेविष्याव पर्यसेविष्याम

॥ श्रिवूच्-गतिशोषणयोः ॥ जवुं, सुकावुं
श्रीव्यति । अश्रेवीत् । शिश्रेव ।

॥ ष्ठिवूच्-निरसने ॥ थुंकवु ॥

व० ष्ठीव्यति ष्ठीव्यतः ष्ठीव्यन्ति
ष्ठीव्यसि ष्ठीव्यथः ष्ठीव्यथ
ष्ठीव्यामि ष्ठीव्यावः ष्ठीव्यामः

स० ष्ठीव्येत् ष्ठीव्येताम् ष्ठीव्येयुः
ष्ठीव्येः ष्ठीव्येतम् ष्ठीव्येत
ष्ठीव्येयम् ष्ठीव्येव ष्ठीव्येम

प० ष्ठीव्यतु ष्ठीव्यतात् ष्ठीव्यताम् ष्ठीव्यन्तु
ष्ठीव्य ष्ठीव्यतात् ष्ठीव्यतम् ष्ठीव्यत
ष्ठीव्यानि ष्ठीव्याव ष्ठीव्याम

ह्य० अष्ठीव्यत् अष्ठीव्यताम् अष्ठीव्यन्
अष्ठीव्यः अष्ठीव्यतम् अष्ठीव्यत
अष्ठीव्यम् अष्ठीव्याव अष्ठीव्याम

अ० अष्ठेवीत् अष्ठेविष्टाम् अष्ठेविषुः
अष्ठेवीः अष्ठेविष्टम् अष्ठेविष्ट
अष्ठेविषम् अष्ठेविष्व अष्ठेविष्म

प० तिष्ठेव तिष्ठिवतुः तिष्ठिवुः
तिष्ठेविथ तिष्ठिवथुः तिष्ठिव
तिष्ठेव तिष्ठिविव तिष्ठिविम

टिष्ठेव टिष्ठिवतुः टिष्ठिवुः
टिष्ठेविथ टिष्ठिवथुः टिष्ठिव
टिष्ठेव टिष्ठिविव टिष्ठिविम

आ० ष्ठीव्यात् ष्ठीव्यास्ताम् ष्ठीव्यासुः
ष्ठीव्याः ष्ठीव्यास्तम् ष्ठीव्यास्त
ष्ठीव्यासम् ष्ठीव्यास्व ष्ठीव्यास्म

श्व० ष्ठेविता ष्ठेवितारौ ष्ठेवितारः
ष्ठेवितासि ष्ठेवितास्थः ष्ठेवितास्थ
ष्ठेवितास्मि ष्ठेवितास्वः ष्ठेवितास्मः

भ० ष्ठेविष्यति ष्ठेविष्यतः ष्ठेविष्यन्ति
ष्ठेविष्यसि ष्ठेविष्यथः ष्ठेविष्यथ
ष्ठेविष्यामि ष्ठेविष्यावः ष्ठेविष्यामः

क्रि० अष्ठेविष्यत् अष्ठेविष्यताम् अष्ठेविष्यन्
अष्ठेविष्यः अष्ठेविष्यतम् अष्ठेविष्यत
अष्ठेविष्यम् अष्ठेविष्याव अष्ठेविष्याम

॥ क्षिवूष्-निरसने ॥ थुंकवुं

व० क्षीव्यति क्षीव्यतः क्षीव्यन्ति
क्षीव्यसि क्षीव्यथः क्षीव्यथ
क्षीव्यामि क्षीव्यावः क्षीव्यामः

स० क्षीव्येत् क्षीव्येताम् क्षीव्येयुः
क्षीव्येः क्षीव्येतम् क्षीव्येत
क्षीव्येयम् क्षीव्येव क्षीव्येम

प० क्षीव्यतु क्षीव्यतात् क्षीव्यताम् क्षीव्यन्तु
क्षीव्य क्षीव्यतात् क्षीव्यतम् क्षीव्यत

क्षीव्याणि क्षीव्याव क्षीव्याम

ह्य० अक्षीव्यत् अक्षीव्यताम् अक्षीव्यन्
अक्षीव्यः अक्षीव्यतम् अक्षीव्यत
अक्षीव्यम् अक्षीव्याव अक्षीव्याम

अ० अक्षेवीत् अक्षेविष्टाम् अक्षेविषुः
अक्षेवीः अक्षेविष्टम् अक्षेविष्ट
अक्षेविषम् अक्षेविष्व अक्षेविष्म

प० चिक्षेव चिक्षिवतुः चिक्षिवुः
चिक्षेविथ चिक्षिवथुः चिक्षिव
चिक्षेव चिक्षिविव चिक्षिविम

आ० क्षीव्यात् क्षीव्यास्ताम् क्षीव्यासुः
क्षीव्याः क्षीव्यास्तम् क्षीव्यास्त
क्षीव्यासम् क्षीव्यास्व क्षीव्यास्म

श्व० क्षेविता क्षेवितारौ क्षेवितारः
क्षेवितासि क्षेवितास्थः क्षेवितास्थ
क्षेवितास्मि क्षेवितास्वः क्षेवितास्मः

भ० क्षेविष्यति क्षेविष्यतः क्षेविष्यन्ति
क्षेविष्यसि क्षेविष्यथः क्षेविष्यथ
क्षेविष्यामि क्षेविष्यावः क्षेविष्यामः

क्रि० अक्षेविष्यत् अक्षेविष्यताम् अक्षेविष्यन्
अक्षेविष्यः अक्षेविष्यतम् अक्षेविष्यत
अक्षेविष्यम् अक्षेविष्याव अक्षेविष्याम

॥ इषच्-गतौ ॥ जवुं ।
इष्यति । ऐषीत् । इयेष इयेषिथ ।

॥ ष्णसुच् निरसने ॥ थुकवुं ॥
स्नस्यति । अस्नासीत् । अस्नसीत् । सस्नास

॥ क्नसुच् ह्वृतिदीप्त्योः । वांका थवुं, दीपवुं,
क्नस्यति । अक्नासीत् । अक्नसीत् चक्नास ।

॥ त्रसैच् भये-त्रास पामवुं बीवुं ॥

व० त्रस्यति त्रस्यतः त्रस्यन्ति
त्रस्यसि त्रस्यथः त्रस्यथ
त्रस्यामि त्रस्यावः त्रस्यामः
त्रसति त्रसतः त्रसन्ति
त्रससि त्रसथः त्रसथ

| | | | |
|---|---|---|---|
| | त्रसामि | त्रसावः | त्रसामः |
| स० | त्रस्येत् | त्रस्येताम् | त्रस्येयुः |
| | त्रस्येः | त्रस्येतम् | त्रस्येत |
| | त्रस्येयम् | त्रस्येव | त्रस्येम |
| | त्रसेत् | त्रसेताम् | त्रसेयुः |
| | त्रसेः | त्रसेतम् | त्रसेत |
| | त्रसेयम् | त्रसेव | त्रसेम |
| प० | त्रस्यतु त्रस्यतात् | त्रस्यताम् | त्रस्यन्तु |
| | त्रस्य ,, | त्रस्यतम् | त्रस्यत |
| | त्रस्यानि | त्रस्याव | त्रस्याम |
| | त्रसतु त्रसतात् | त्रसताम् | त्रसन्तु |
| | त्रस ,, | त्रसतम् | त्रसत |
| | त्रसानि | त्रसाव | त्रसाम |
| ह्य० | अत्रस्यत् | अत्रस्यताम् | अत्रस्यन् |
| | अत्रस्यः | अत्रस्यतम् | अत्रस्यत |
| | अत्रस्यम् | अत्रस्याव | अत्रस्याम |
| | अत्रसत् | अत्रसताम् | अत्रसन् |
| | अत्रसः | अत्रसतम् | अत्रसत |
| | अत्रसम् | अत्रसाव | अत्रसाम |
| अ० | अत्रसीत् | अत्रसिष्टाम् | अत्रसिषुः |
| | अत्रसीः | अत्रसिष्टम् | अत्रसिष्ट |
| | अत्रसिषम् | अत्रसिष्व | अत्रसिष्म |
| | अत्रासीत् | अत्रासिष्टाम् | अत्रासिषुः |
| | अत्रासीः | अत्रासिष्टम् | अत्रासिष्ट |
| | अत्रासिषम् | अत्रासिष्व | अत्रासिष्म |
| प० | तत्रास | तत्रसतुः | तत्रसुः |
| | | त्रेसतुः | त्रेसुः |
| | त्रेसिथ | त्रेसथुः | त्रेस |
| | तत्रसिथ | तत्रसथुः | तत्रस |
| | तत्रास | त्रेसिव | त्रेसिम |
| | तत्रस | तत्रसिव | तत्रसिम |
| आ० | त्रस्यात् | त्रस्यास्ताम् | त्रस्यासुः |
| | त्रस्याः | त्रस्यास्तम् | त्रस्यास्त |
| | त्रस्यासम् | त्रस्यास्व | त्रस्यास्म |

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्व० | त्रसिता | त्रसितारौ | त्रसितारः |
| | त्रसितासि | त्रसितास्थः | त्रसितास्थ |
| | त्रसितास्मि | त्रसितास्वः | त्रसितास्मः |
| भ० | त्रसिष्यति | त्रसिष्यतः | त्रसिष्यन्ति |
| | त्रसिष्यसि | त्रसिष्यथः | त्रसिष्यथ |
| | त्रसिष्यामि | त्रसिष्यावः | त्रसिष्यामः |
| क्रि० | अत्रसिष्यत् | अत्रसिष्यताम् | अत्रसिष्यन् |
| | अत्रसिष्यः | अत्रसिष्यतम् | अत्रसिष्यत |
| | अत्रसिष्यम् | अत्रसिष्याव | अत्रसिष्याम |

॥ प्युसच्—दाहे । दाझवुं, बाळवुं ॥
प्युस्यति । अप्योसीत् । पुप्योस ।

षह षुहच् शक्तौ ॥ सहन करवुं । शक्तिवाळा थवुं
सह्यति । असहीत् । सेहिथ ।
सहिता । परिषह्यति । सुह्यति ।
असोहीत् । सुषोह । सुषोहिथ ।

॥ अथ पुषादिः ॥

पुषंच् – पुष्टौ ॥ पोषवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | पुष्यति | पुष्यतः | पुष्यन्ति |
| | पुष्यसि | पुष्यथः | पुष्यथ |
| | पुष्यामि | पुष्यावः | पुष्यामः |
| स० | पुष्येत् | पुष्येताम् | पुष्येयुः |
| | पुष्येः | पुष्येतम् | पुष्येत |
| | पुष्येयम् | पुष्येव | पुष्येम |
| प० | पुष्यतु पुष्यतात् | पुष्यताम् | पुष्यन्तु |
| | पुष्य ,, | पुष्यतम् | पुष्यत |
| | पुष्याणि | पुष्याव | पुष्याम |
| ह्य० | अपुष्यत् | अपुष्यताम् | अपुष्यन् |
| | अपुष्यः | अपुष्यतम् | अपुष्यत |
| | अपुष्यम् | अपुष्याव | अपुष्याम |
| अ० | अपुषत् | अपुषताम् | अपुषन् |
| | अपुषः | अपुषतम् | अपुषत |
| | अपुषम् | अपुषाव | अपुषाम |
| प० | पुपोष | पुपुषतुः | पुपुषुः |

पुपोषिथ पुपुषथुः पुपुष
पुपोष पुपुषिव पुपुषिम

आ० पुष्यात् पुष्यास्ताम् पुष्यासुः
पुष्याः पुष्यास्तम् पुष्यास्त
पुष्यासम् पुष्यास्व पुष्यास्म

श्व० पोष्टा पोष्टारौ पोष्टारः
पोष्टासि पोष्टास्थः पोष्टास्थ
पोष्टास्मि पोष्टास्वः पोष्टास्मः

भ० पोक्ष्यति पोक्ष्यतः पोक्ष्यन्ति
पोक्ष्यसि पोक्ष्यथः पोक्ष्यथ
पोक्ष्यामि पोक्ष्यावः पोक्ष्यामः

क्रि० अपोक्ष्यत् अपोक्ष्यताम् अपोक्ष्यन्
अपोक्ष्यः अपोक्ष्यतम् अपोक्ष्यत
अपोक्ष्यम् अपोक्ष्याव अपोक्ष्याम

॥ उचच् समवाये ॥ एकठु करवुं ।
उच्यति । ह्य० औच्यत् । अ० औचत्
उवचिथ ।

॥ लुटच् — विलोटने । आळोटवुं ॥
लुट्यति । अलुटत् । लुलोट ।

॥ ष्विदांच् — गात्रप्रक्षरणे घर्मस्रुतौ ।
परसेवो थवो ।

व० स्विद्यति स्विद्यतः स्विद्यन्ति
स्विद्यसि स्विद्यथः स्विद्यथ
स्विद्यामि स्विद्यावः स्विद्यामः

स० स्विद्येत् स्विद्येताम् स्विद्येयुः
स्विद्येः स्विद्येतम् स्विद्येत
स्विद्येयम् स्विद्येव स्विद्येम

प० स्विद्यतु स्विद्यतात् स्विद्यताम् स्विद्यन्तु
स्विद्य ,, स्विद्यतम् स्विद्यत
स्विद्यानि स्विद्याव स्विद्याम

ह्य० अस्विद्यत् अस्विद्यताम् अस्विद्यन्
अस्विद्यः अस्विद्यतम् अस्विद्यत
अस्विद्यम् अस्विद्याव अस्विद्याम

अ० अस्विदत् अस्विदताम् अस्विदन्
अस्विदः अस्विदतम् अस्विदत
अस्विदम् अस्विदाव अस्विदाम

प० सिष्वेद सिष्विदतुः सिष्विदुः
सिष्वेदिथ सिष्विदथुः सिष्विद
सिष्वेद सिष्विदिव सिष्विदिम

आ० स्विद्यात् स्विद्यास्ताम् स्विद्यासुः
स्विद्याः स्विद्यास्तम् स्विद्यास्त
स्विद्यासम् स्विद्यास्व स्विद्यास्म

श्व० स्वेत्ता स्वेत्तारौ स्वेत्तारः
स्वेत्तासि स्वेत्तास्थः स्वेत्तास्थ
स्वेत्तास्मि स्वेत्तास्वः स्वेत्तास्मः

भ० स्वेत्स्यति स्वेत्स्यतः स्वेत्स्यन्ति
स्वेत्स्यसि स्वेत्स्यथः स्वेत्स्यथ
स्वेत्स्यामि स्वेत्स्यावः स्वेत्स्यामः

क्रि० अस्वेत्स्यत् अस्वेत्स्यताम् अस्वेत्स्यन्
अस्वेत्स्यः अस्वेत्स्यतम् अस्वेत्स्यत
अस्वेत्स्यम् अस्वेत्स्याव अस्वेत्स्याम

॥ क्लिदौंच् आर्द्रभावे ॥ भीनुं थवुं ॥

व० क्लिद्यति क्लिद्यतः क्लिद्यन्ति
क्लिद्यसि क्लिद्यथः क्लिद्यथ
क्लिद्यामि क्लिद्यावः क्लिद्यामः

स० क्लिद्येत् क्लिद्येताम् क्लिद्येयुः
क्लिद्येः क्लिद्येतम् क्लिद्येत
क्लिद्येयम् क्लिद्येव क्लिद्येम

प० क्लिद्यतु क्लिद्यतात् क्लिद्यताम् क्लिद्यन्तु
क्लिद्य ,, क्लिद्यतम् क्लिद्यत
क्लिद्यानि क्लिद्याव क्लिद्याम

ह्य० अक्लिद्यत् अक्लिद्यताम् अक्लिद्यन्
अक्लिद्यः अक्लिद्यतम् अक्लिद्यत
अक्लिद्यम् अक्लिद्याव अक्लिद्याम

अ० अक्लिदत् अक्लिदताम् अक्लिदन्
अक्लिदः अक्लिदतम् अक्लिदत
अक्लिदम् अक्लिदाव अक्लिदाम

प० चिक्लेद चिक्लिदतुः चिक्लिदुः

चिक्लेदिथ चिक्लिदथुः चिक्लिद
चिक्लेद चिक्लिदिव चिक्लिदिम
मतांतरे तु, चिक्लेत्थ चिक्लिद्व चिक्लिद्म

आ० क्लिद्यात् क्लिद्यास्ताम् क्लिद्यासुः
क्लिद्याः क्लिद्यास्तम् क्लिद्यास्त
क्लिद्यासम् क्लिद्यास्व क्लिद्याम

श्व० क्लेदिता क्लेदितारौ क्लेदितारः
क्लेदितासि क्लेदितास्थः क्लेदितास्थ
क्लेदितास्मि क्लेदितास्वः क्लेदितास्मः

क्लेत्ता क्लेत्तारौ क्लेत्तारः
क्लेत्तासि क्लेत्तास्थः क्लेत्तास्थ
क्लेत्तास्मि क्लेत्तास्वः क्लेत्तास्मः

भ० क्लेदिष्यति क्लेदिष्यतः क्लेदिष्यन्ति
क्लेदिष्यसि क्लेदिष्यथः क्लेदिष्यथ
क्लेदिष्यामि क्लेदिष्यावः क्लेदिष्यामः

क्लेत्स्यति क्लेत्स्यतः क्लेत्स्यन्ति
क्लेत्स्यसि क्लेत्स्यथः क्लेत्स्यथ
क्लेत्स्यामि क्लेत्स्यावः क्लेत्स्यामः

क्रि० अक्लेदिष्यत् अक्लेदिष्येताम् अक्लेदिष्यन्
अक्लेदिष्यः अक्लेदिष्यतम् अक्लेदिष्यत
अक्लेदिष्यम् अक्लेदिष्याव अक्लेदिष्याम

अक्लेत्स्यत् अक्लेत्स्यताम् अक्लेत्स्यन्
अक्लेत्स्यः अक्लेत्स्यतम् अक्लेत्स्यत
अक्लेत्स्यम् अक्लेत्स्याव अक्लेत्स्याम

॥ ञिमिदाच्–स्नेहने ॥ चोकणुं थवुं ॥

व० मेद्यति मेद्यतः मेद्यन्ति
मेद्यसि मेद्यथः मेद्यथ
मेद्यामि मेद्यावः मेद्यामः

स० मेद्येत् मेद्येताम् मेद्येयुः
मेद्येः मेद्येतम् मेद्येत
मेद्येयम् मेद्येव मेद्येम

प० मेद्यतु मेद्यतात् मेद्यताम् मेद्यन्तु
मेद्य „ मेद्यतम् मेद्यत
मेद्यानि मेद्याव मेद्याम

ह्य० अमेद्यत् अमेद्यताम् अमेद्यन्
अमेद्यः अमेद्यतम् अमेद्यत
अमेद्यम् अमेद्याव अमेद्याम

अ० अमिदत् अमिदताम् अमिदन्
अमिदः अमिदतम् अमिदत
अमिदम् अमिदाव अमिदाम

प० मिमेद मिमिदतुः मिमिदुः
मिमेदिथ मिमिदथुः मिमिद
मिमेद मिमिदिव मिमिदिम

आ० मिद्यात् मिद्यास्ताम् मिद्यासुः
मिद्याः मिद्यास्तम् मिद्यास्त
मिद्यासम् मिद्यास्व मिद्यास्म

श्व० मेदिता मेदितारौ मेदितारः
मेदितासि मेदितास्थः मेदितास्थ
मेदितास्मि मेदितास्वः मेदितास्मः

भ० मेदिष्यति मेदिष्यतः मेदिष्यन्ति
मेदिष्यसि मेदिष्यथः मेदिष्यथ
मेदिष्यामि मेदिष्यावः मेदिष्यामः

क्रि० अमेदिष्यत् अमेदिष्यताम् अमेदिष्यन्
अमेदिष्यः अमेदिष्यतम् अमेदिष्यत
अमेदिष्यम अमेदिष्याव अमेदिष्याम

ञिक्ष्विदाच् मोचने च । मुकवुं, चोकणुं थवुं
क्ष्विद्यति । अक्ष्वेदीत् । चिक्ष्वेद ।

॥ क्षुधंच् बुभुक्षायाम्, ॥ भुख लागवी

व० क्षुध्यति क्षुध्यतः क्षुध्यन्ति
क्षुध्यसि क्षुध्यथः क्षुध्यथ
क्षुध्यामि क्षुध्यावः क्षुध्यामः

स० क्षुध्येत् क्षुध्येताम् क्षुध्येयुः
क्षुध्येः क्षुध्येतम् क्षुध्येत
क्षुध्येयम् क्षुध्येव क्षुध्येम

प० क्षुध्यतु क्षुध्यतात् क्षुध्यताम् क्षुध्यन्तु
क्षुध्य „ क्षुध्यतम् क्षुध्यत
क्षुध्यानि क्षुध्याव क्षुध्याम

ह्य० अक्षुध्यत् अक्षुध्यताम् अक्षुध्यन्

अक्षुध्यः अक्षुध्यतम् अक्षुध्यत

अक्षुध्यम् अक्षुध्याव अक्षुध्याम

अ० अक्षुधत् अक्षुधताम् अक्षुधन्

अक्षुधः अक्षुधतम् अक्षुधत

अक्षुधम् अक्षुधाव अक्षुधाम

प० चुक्षोध चुक्षुधतुः चुक्षुधुः

चुक्षोधिथ चुक्षुधथुः चुक्षुध

चुक्षोध चुक्षुधिव चुक्षुधिम

आ० क्षुध्यात् क्षुध्यास्ताम् क्षुध्यासुः

क्षुध्याः क्षुध्यास्तम् क्षुध्यास्त

क्षुध्यासम् क्षुध्यास्व क्षुध्यास्म

श्व० क्षोद्धा क्षोद्धारौ क्षोद्धारः

क्षोद्धासि क्षोद्धास्थः क्षोद्धास्थ

क्षोद्धास्मि क्षोद्धास्वः क्षोद्धास्मः

भ० क्षोत्स्यति क्षोत्स्यतः क्षोत्स्यन्ति

क्षोत्स्यसि क्षोत्स्यथः क्षोत्स्यथ

क्षोत्स्यामि क्षोत्स्यावः क्षोत्स्यामः

क्रि० अक्षोत्स्यत् अक्षोत्स्यताम् अक्षोत्स्यन्

अक्षोत्स्यः अक्षोत्स्यतम् अक्षोत्स्यत

अक्षोत्स्यम् अक्षोत्स्याव अक्षोत्स्याम

॥ शुधंच्—शौचे, ॥ साफ करवुं, धोवुं

व० शुध्यति शुध्यतः शुध्यन्ति

शुध्यसि शुध्यथः शुध्यथ

शुध्यामि शुध्यावः शुध्यामः

स० शुध्येत् शुध्येताम् शुध्येयुः

शुध्येः शुध्येतम् शुध्येत

शुध्येयम् शुध्येव शुध्येम

प० शुध्यतु शुध्यतात् शुध्यताम् शुध्यन्तु

शुध्य ,, शुध्यतम् शुध्यत

शुध्यानि शुध्याव शुध्याम

ह्य० अशुध्यत् अशुध्यताम् अशुध्यन्

अशुध्यः अशुध्यतम् अशुध्यत

अशुध्यम् अशुध्याव अशुध्याम

अ० अशुधत् अशुधताम् अशुधन्

अशुधः अशुधतम् अशुधत

अशुधम् अशुधाव अशुधाम

प० शुशोध शुशुधतुः शुशुधुः

शुशोधिथ शुशुधथुः शुशुध

शुशोध शुशुधिव शुशुधिम

आ० शुध्यात् शुध्यास्ताम् शुध्यासुः

शुध्याः शुध्यास्तम् शुध्यास्त

शुध्यासम् शुध्यास्व शुध्यास्म

श्व० शोद्धा शोद्धारौ शोद्धारः

शोद्धासि शोद्धास्थः शोद्धास्थ

शोद्धास्मि शोद्धास्वः शोद्धास्मः

भ० शोत्स्यति शोत्स्यतः शोत्स्यन्ति

शोत्स्यसि शोत्स्यथः शोत्स्यथ

शोत्स्यामि शोत्स्यावः शोत्स्यामः

क्रि० अशोत्स्यत् अशोत्स्यताम् अशोत्स्यन्

अशोत्स्यः अशोत्स्यतम् अशोत्स्यत

अशोत्स्यम् अशोत्स्याव अशोत्स्याम

॥ क्रुधंच् कोपे ॥ कोपवुं, गुस्से थवुं

व० क्रुध्यति क्रुध्यतः क्रुध्यन्ति

क्रुध्यसि क्रुध्यथः क्रुध्यथ

क्रुध्यामि क्रुध्यावः क्रुध्यामः

स० क्रुध्येत् क्रुध्येताम् क्रुध्येयुः

क्रुध्येः क्रुध्येतम् क्रुध्येत

क्रुध्येयम् क्रुध्येव क्रुध्येम

प० क्रुध्यतु क्रुध्यतात् क्रुध्यताम् क्रुध्यन्तु

क्रुध्य ,, क्रुध्यतम् क्रुध्यत

क्रुध्यानि क्रुध्याव क्रुध्याम

ह्य० अक्रुध्यत् अक्रुध्यताम् अक्रुध्यन्

अक्रुध्यः अक्रुध्यतम् अक्रुध्यत

अक्रुध्यम् अक्रुध्याव अक्रुध्याम

अ० अक्रुधत् अक्रुधताम् अक्रुधन्

अक्रुधः अक्रुधतम् अक्रुधत

अक्रुधम् अक्रुधाव अक्रुधाम

प० चुक्रोध चुक्रुधतुः चुक्रुधुः

चुक्रोधिथ चुक्रुधथुः चुक्रुध

चुक्रोध चुक्रुधिव चुक्रुधिम
आ० क्रुध्यात् क्रुध्यास्ताम् क्रुध्यासुः
क्रुध्याः क्रुध्यास्तम् क्रुध्यास्त
क्रुध्यासम् क्रुध्यास्व क्रुध्यास्म
श्व० क्रोद्धा क्रोद्धारौ क्रोद्धारः
क्रोद्धासि क्रोद्धास्थः क्रोद्धास्थ
क्रोद्धास्मि क्रोद्धास्वः क्रोद्धास्मः
भ० क्रोत्स्यति क्रोत्स्यतः क्रोत्स्यन्ति
क्रोत्स्यसि क्रोत्स्यथः क्रोत्स्यथ
क्रोत्स्यामि क्रोत्स्यावः क्रोत्स्यामः
क्रि० अक्रोत्स्यत् अक्रोत्स्यताम् अक्रोत्स्यन्
अक्रोत्स्यः अक्रोत्स्यतम् अक्रोत्स्यत
अक्रोत्स्यम् अक्रोत्स्याव अक्रोत्स्याम

॥ षिधूंच्--संराद्धौ--निष्पत्तौ, सिद्धथवुं ॥

व० सिध्यति सिध्यतः सिध्यन्ति
सिध्यसि सिध्यथः सिध्यथ
सिध्यामि सिध्यावः सिध्यामः
स० सिध्येत् सिध्येताम् सिध्येयुः
सिध्येः सिध्येतम् सिध्येत
सिध्येयम् सिध्येव सिध्येम
प० सिध्यतु सिध्यतात् सिध्यताम् सिध्यन्तु
सिध्य ,, सिध्यतम् सिध्यत
सिध्यानि सिध्याव सिध्याम
ह्य० असिध्यत् असिध्यताम् असिध्यन्
असिध्यः असिध्यतम् असिध्यत
असिध्यम् असिध्याव असिध्याम
अ० असिधत् असिधताम् असिधन्
असिधः असिधतम् असिधत
असिधम् असिधाव असिधाम
प० सिषेध सिषिधतुः सिषिधुः
सिषेधिथ सिषिधथुः सिषिध
सिषेध सिषिधिव सिषिधिम
आ० सिध्यात् सिध्यास्ताम् सिध्यासुः
सिध्याः सिध्यास्तम् सिध्यास्त
सिध्यासम् सिध्यास्व सिध्यास्म
श्व० सेद्धा सेद्धारौ सेद्धारः
सेद्धासि सेद्धास्थः सेद्धास्थ
सेद्धास्मि सेद्धास्वः सेद्धास्मः
भ० सेत्स्यति सेत्स्यतः सेत्स्यन्ति
सेत्स्यसि सेत्स्यथः सेत्स्यथ
सेत्स्यामि सेत्स्यावः सेत्स्यामः
क्रि० असेत्स्यत् असेत्स्यताम् असेत्स्यन्
असेत्स्यः असेत्स्यतम् असेत्स्यत
असेत्स्यम् असेत्स्याव असेत्स्याम

। ऋधूच्—वृद्धौ ॥ वधवुं ॥

व० ऋध्यति ऋध्यतः ऋध्यन्ति
ऋध्यसि ऋध्यथः ऋध्यथ
ऋध्यामि ऋध्यावः ऋध्यामः
स० ऋध्येत् ऋध्येताम् ऋध्येयुः
ऋध्येः ऋध्येतम् ऋध्येत
ऋध्येयम् ऋध्येव ऋध्येम
प० ऋध्यतु ऋध्यतात् ऋध्यताम् ऋध्यन्तु
ऋध्य ,, ऋध्यतम् ऋध्यत
ऋध्यानि ऋध्याव ऋध्याम
ह्य० आर्ध्यत् आर्ध्यताम् आर्ध्यन्
आर्ध्यः आर्ध्यतम् आर्ध्यत
आर्ध्यम् आर्ध्याव आर्ध्याम
अ० आर्धत् आर्धताम् आर्धन्
आर्धः आर्धतम् आर्धत
आर्धम् आर्धाव आर्धाम
माङ्योगे न वृद्धिः माऋधत्
प० आनर्ध आनृधतुः आनृधुः
आनर्धिथ आनृधथुः आनृध
आनर्ध आनृधिव आनृधिम
आ० ऋध्यात् ऋध्यास्ताम् ऋध्यासुः
ऋध्याः ऋध्यास्तम् ऋध्यास्त
ऋध्यासम् ऋध्यास्व ऋध्यास्व

श्व० अर्धिता अर्धितारौ अर्धितारः
अर्धितासि अर्धितास्थः अर्धितास्थ
अर्धितास्मि अर्धितास्वः अर्धितास्मः

भ० अर्धिष्यति अर्धिष्यतः अर्धिष्यन्ति
अर्धिष्यसि अर्धिष्यथः अर्धिष्यथ
अर्धिष्यामि अर्धिष्यावः अर्धिष्यामः

क्रि० आर्धिष्यत् आर्धिष्यताम् आर्धिष्यन्
आर्धिष्यः आर्धिष्यतम् आर्धिष्यत
आर्धिष्यम् आर्धिष्याव आर्धिष्याम

॥ गृधूच्-अभिकांक्षायाम् ॥ इच्छा करवी

गृध्यति । अगृध्यत् । जगर्ध । जगृधिव ।

॥ रधौच् हिंसासंराद्ध्योः ॥ हणवुं, रांधवुं

व० रध्यति रध्यतः रध्यन्ति
रध्यसि रध्यथः रध्यथ
रध्यामि रध्यावः रध्यामः

स० रध्येत् रध्येताम् रध्येयुः
रध्येः रध्येतम् रध्येत
रध्येयम् रध्येव रध्येम

प० रध्यतु रध्यतात् रध्यताम् रध्यन्तु
रध्य „ रध्यतम् रध्यत
रध्यानि रध्याव रध्याम

ह्य० अरध्यत् अरध्यताम् अरध्यन्
अरध्यः अरध्यतम् अरध्यत
अरध्यम् अरध्याव अरध्याम

अ० अरधत् अरधताम् अरधन्
अरधः अरधतम् अरधत
अरधम् अरधाव अरधाम

प० ररन्ध ररन्धतुः ररन्धुः
ररन्धिथ ररन्धथुः ररन्ध
ररन्ध ररन्धिव ररन्धिम

मतांतरे ररद्ध रेध्व रेध्म

आ० रध्यात् रध्यास्ताम् रध्यासुः
रध्याः रध्यास्तम् रध्यास्त
रध्यासम् रध्यास्व रध्यास्म

श्व० रधिता रधितारौ रधितारः
रधितासि रधितास्थः रधितास्थ
रधितास्मि रधितास्वः रधितास्मः

रद्धा रद्धारौ रद्धारः
रद्धासि रद्धास्थः रद्धास्थ
रद्धास्मि रद्धास्वः रद्धास्मः

भ० रधिष्यति रधिष्यतः रधिष्यन्ति
रधिष्यसि रधिष्यथः रधिष्यथ
रधिष्यामि रधिष्यावः रधिष्यामः

रत्स्यति रत्स्यतः रत्स्यन्ति
रत्स्यसि रत्स्यथः रत्स्यथ
रत्स्यामि रत्स्यावः रत्स्यामः

क्रि० अरधिष्यत् अरधिष्यताम् अरधिष्यन्
अरधिष्यः अरधिष्यतम् अरधिष्यत
अरधिष्यम् अरधिष्याव अरधिष्याम
अरत्स्यत् अरत्स्यताम् अरत्स्यन्
अरत्स्यः अरत्स्यतम् अरत्स्यत
अरत्स्यम् अरत्स्याव अरत्स्याम

॥ तृपौच्-प्रीतौ ॥ तृप्त थवुं प्रसन्न थवुं

व० तृप्यति तृप्यतः तृप्यन्ति
तृप्यसि तृप्यथः तृप्यथ
तृप्यामि तृप्यावः तृप्यामः

स० तृप्येत् तृप्येताम् तृप्येयुः
तृप्येः तृप्येतम् तृप्येत
तृप्येयम् तृप्येव तृप्येम

प० तृप्यतु तृप्यतात् तृप्यताम् तृप्यन्तु
तृप्य „ तृप्यतम् तृप्यत
तृप्याणि तृप्याव तृप्याम

ह्य० अतृप्यत् अतृप्यताम् अतृप्यन्
अतृप्यः अतृप्यतम् अतृप्यत
अतृप्यम् अतृप्याव अतृप्याम

अ० अत्राप्सीत् अत्राप्ताम् अत्राप्सुः
अत्राप्सीः अत्राप्तम् अत्राप्त
अत्राप्सम् अत्राप्स्व अत्राप्स्म

अतार्प्सीत् अतार्प्ताम् अतार्प्सुः
अतार्प्सीः अतार्प्तम् अतार्प्त
अतार्प्सम् अतार्प्स्व अतार्प्स्म
अतर्पीत् अतर्पिष्टाम् अतर्पिषुः
अतर्पीः अतर्पिष्टम् अतर्पिष्ट
अतर्पिषम् अतर्पिष्व अतर्पिष्म
अतृपत् अतृपताम् अतृपन्
अतृपः अतृपतम् अतृपत
अतृपम् अतृपाव अतृपाम

प॰ ततर्प ततृपतुः ततृपुः
ततर्पिथ ततृपथुः ततृप
ततर्प ततृपिव ततृपिम
मतान्तरे—तत्रप्थ ततर्प्थ ततृप्व ततृप्म

आ॰ तृप्यात् तृप्यास्ताम् तृप्यासुः
तृप्याः तृप्यास्तम् तृप्यास्त
तृप्यासम् तृप्यास्व तृप्यास्म

श्व॰ त्रप्ता त्रप्तारौ त्रप्तारः
त्रप्तासि त्रप्तास्थः त्रप्तास्थ
त्रप्तास्मि त्रप्तास्वः त्रप्तास्मः
तर्प्ता तर्प्तारौ तर्प्तारः
तर्प्तासि तर्प्तास्थः तर्प्तास्थ
तर्प्तास्मि तर्प्तास्वः तर्प्तास्मः
तर्पिता तर्पितारौ तर्पितारः
तर्पितासि तर्पितास्थः तर्पितास्थ
तर्पितास्मि तर्पितास्वः तर्पितास्मः

भ॰ त्रप्स्यति त्रप्स्यतः त्रप्स्यन्ति
त्रप्स्यसि त्रप्स्यथः त्रप्स्यथ
त्रप्स्यामि त्रप्स्यावः त्रप्स्यामः
तर्प्स्यति तर्प्स्यतः तर्प्स्यन्ति
तर्प्स्यसि तर्प्स्यथः तर्प्स्यथ
तर्प्स्यामि तर्प्स्यावः तर्प्स्यामः
तर्पिष्यति तर्पिष्यतः तर्पिष्यन्ति
तर्पिष्यसि तर्पिष्यथः तर्पिष्यथ
तर्पिष्यामि तर्पिष्यावः तर्पिष्यामः

क्रि॰ अत्रप्स्यत् अत्रप्स्यताम् अत्रप्स्यन्
अत्रप्स्यः अत्रप्स्यतम् अत्रप्स्यत
अत्रप्स्यम् अत्रप्स्याव अत्रप्स्याम
अतर्प्स्यत् अतर्प्स्यताम् अतर्प्स्यन्
अतर्प्स्यः अतर्प्स्यतम् अतर्प्स्यत
अतर्प्स्यम् अतर्प्स्याव अतर्प्स्याम
अतर्पिष्यत् अतर्पिष्यताम् अतर्पिष्यन्
अतर्पिष्यः अतर्पिष्यतम् अतर्पिष्यत
अतर्पिष्यम् अतर्पिष्याव अतर्पिष्याम

॥ दृपौच् हर्षमोहनयोः ॥
हर्ष पामवो, गर्व करवो ।

व॰ दृप्यति दृप्यतः दृप्यन्ति
दृप्यसि दृप्यथः दृप्यथ
दृप्यामि दृप्यावः दृप्यामः

स॰ दृप्येत् दृप्येताम् दृप्येयुः
दृप्येः दृप्येतम् दृप्येत
दृप्येयम् दृप्येव दृप्येम

प॰ दृप्यतु दृप्यतात् दृप्यताम् दृप्यन्तु
दृप्य „ दृप्यतम् दृप्यत
दृप्याणि दृप्याव दृप्याम

ह्य॰ अदृप्यत् अदृप्यताम् अदृप्यन्
अदृप्यः अदृप्यतम् अदृप्यत
अदृप्यम् अदृप्याव अदृप्याम

अ॰ अद्राप्सीत् अद्राप्ताम् अद्राप्सुः
अद्राप्सीः अद्राप्तम् अद्राप्त
अद्राप्सम् अद्राप्स्व अद्राप्स्म
अदार्प्सीत् अदार्प्ताम् अदार्प्सुः
अदार्प्सीः अदार्प्तम् अदार्प्त
अदार्प्सम् अदार्प्स्व अदार्प्स्म
अदर्पीत् अदर्पिष्टाम् अदर्पिषुः
अदर्पीः अदर्पिष्टम् अदर्पिष्ट
अदर्पिषम् अदर्पिष्व अदर्पिष्म
अदृपत् अदृपताम् अदृपन्

| | | | |
|---|---|---|---|
| | अदृपः | अदृपतम् | अदृपत |
| | अदृपम् | अदृपाव | अदृपाम |
| प० | ददर्प | ददृपतुः | ददृपुः |
| | ददर्पिथ | ददृपथुः | ददृप |
| | ददर्प | ददृपिव | ददृपिम |

मतांतरे-दद्रप्थ। ददर्प्थ। ददृप्व। ददृप्म।

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | दृप्यात् | दृप्यास्ताम् | दृप्यासुः |
| | दृप्याः | दृप्यास्तम् | दृप्यास्त |
| | दृप्यासम् | दृप्यास्व | दृप्यास्म |
| श्व० | द्रप्ता | द्रप्तारौ | द्रप्तारः |
| | द्रप्तासि | द्रप्तास्थः | द्रप्तास्थ |
| | द्रप्तास्मि | द्रप्तास्वः | द्रप्तास्मः |
| | दर्प्ता | दर्प्तारौ | दर्प्तारः |
| | दर्प्तासि | दर्प्तास्थः | दर्प्तास्थ |
| | दर्प्तास्मि | दर्प्तास्वः | दर्प्तास्मः |
| | दर्पिता | दर्पितारौ | दर्पितारः |
| | दर्पितासि | दर्पितास्थः | दर्पितास्थ |
| | दर्पितास्मि | दर्पितास्वः | दर्पितास्मः |
| भ० | द्रप्स्यति | द्रप्स्यतः | द्रप्स्यन्ति |
| | द्रप्स्यसि | द्रप्स्यथः | द्रप्स्यथ |
| | द्रप्स्यामि | द्रप्स्यावः | द्रप्स्यामः |
| | दर्प्स्यति | दर्प्स्यतः | दर्प्स्यन्ति |
| | दर्प्स्यसि | दर्प्स्यथः | दर्प्स्यथ |
| | दर्प्स्यामि | दर्प्स्यावः | दर्प्स्यामः |
| | दर्पिष्यति | दर्पिष्यति | दर्पिष्यन्ति |
| | दर्पिष्यसि | दर्पिष्यथः | दर्पिष्यथ |
| | दर्पिष्यामि | दर्पिष्यावः | दर्पिष्यामः |
| क्रि० | अद्रप्स्यत् | अद्रप्स्यताम् | अद्रप्स्यन् |
| | अद्रप्स्यः | अद्रप्स्यतम् | अद्रप्स्यत |
| | अद्रप्स्यम् | अद्रप्स्याव | अद्रप्स्याम |
| | अदर्प्स्यत् | अदर्प्स्यताम् | अदर्प्स्यन् |
| | अदर्प्स्यः | अदर्प्स्यतम् | अदर्प्स्यत |
| | अदर्प्स्यम् | अदर्प्स्याव | अदर्प्स्याम |
| | अदर्पिष्यत् | अदर्पिष्यताम् | अदर्पिष्यन् |
| | अदर्पिष्यः | अदर्पिष्यतम् | अदर्पिष्यत |
| | अदर्पिष्यम् | अदर्पिष्याव | अदर्पिष्याम |

॥ कुपच्-क्रोधे ॥ क्रोध करवो ।

कुप्यति । अकुपत् । चुकोप ।

॥ गुपच्-व्याकुलत्वे ॥ गभरावुं ।

गुप्यति । अगुपत् । जुगोप ।

॥ युप रुप लुपच्-विमोहने ॥ मोह पामवो

युप्यति । अयुपत् । युयोप ।

रुप्यति । अरुपत् । रुरोप ।

लुप्यति । अलुपत् । लुलोप ।

डिपच्-क्षेपे फेंकवुं ॥

डिप्यति । अडिपत् । डिडेप ।

ष्टूपच्-समुच्छ्राये उंचा थवुं ॥

स्तूप्यति । अस्तूपत् । तुष्टूप ।

॥ लुभच्-गार्द्ध्ये लोभ करवो ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | लुभ्यति | लुभ्यतः | लुभ्यन्ति |
| | लुभ्यसि | लुभ्यथः | लुभ्यथ |
| | लुभ्यामि | लुभ्यावः | लुभ्यामः |
| स० | लुभ्येत् | लुभ्येताम् | लुभ्येयुः |
| | लुभ्येः | लुभ्येतम् | लुभ्येत |
| | लुभ्येयम् | लुभ्येव | लुभ्येम |
| प० | लुभ्यतु लुभ्यतात् | लुभ्यताम् | लुभ्यन्तु |
| | लुभ्य „ | लुभ्यतम् | लुभ्यत |
| | लुभ्यानि | लुभ्याव | लुभ्याम |
| ह्य० | अलुभ्यत् | अलुभ्यताम् | अलुभ्यन् |
| | अलुभ्यः | अलुभ्यतम् | अलुभ्यत |
| | अलुभ्यम् | अलुभ्याव | अलुभ्याम |
| अ० | अलुभत् | अलुभताम् | अलुभन् |
| | अलुभः | अलुभतम् | अलुभत |
| | अलुभम् | अलुभाव | अलुभाम |
| प० | लुलोभ | लुलुभतुः | लुलुभुः |
| | लुलोभिथ | लुलुभथुः | लुलुभ |

लुलोभ लुलुभिव लुलुभिम

आ० लुभ्यात् लुभ्यास्ताम् लुभ्यासु
लुभ्याः लुभ्यास्तम् लुभ्यास्त
लुभ्यासम् लुभ्यास्व लुभ्यास्म

श्व० लोभिता लोभितारौ लोभितारः
लोभितासि लोभितास्थः लोभितास्थ
लोभितास्मि लोभितास्वः लोभितास्मः

लोब्धा लोब्धारौ लोब्धारः
लोब्धासि लोब्धास्थः लोब्धास्थ
लोब्धास्मि लोब्धास्वः लोब्धास्मः

भ० लोभिष्यति लोभिष्यतः लोभिष्यन्ति
लोभिष्यसि लोभिष्यथः लोभिष्यथ
लोभिष्यामि लोभिष्यावः लोभिष्यामः

क्रि० अलोभिष्यत् अलोभिष्यताम् अलोभिष्यन्
अलोभिष्यः अलोभिष्यतम् अलोभिष्यत
अलोभिष्यम् अलोभिष्याव अलोभिष्याम

॥ क्षुभच्-सञ्चलने ॥ क्षोभ पामवो, गभरावुं, खळभळवु, ।
क्षुभ्यति । अक्षुभत् । चुक्षोभ ।

॥ णभ तुभच्-हिंसायाम् ॥ मारवुं ।
नभ्यति । अनभत् । नेभिथ ।
तुभ्यति । अतुभत् । तुतोभ ।

॥ नशौच्-अदर्शने ॥ नाश पामवो ।

व० नश्यति नश्यतः नश्यन्ति
नश्यसि नश्यथः नश्यथ
नश्यामि नश्यावः नश्यामः

प्रणश्यति । परिणश्यति ।

स० नश्येत् नश्येताम् नश्येयुः
नश्येः नश्येतम् नश्येत
नश्येयम् नश्येव नश्येम

प० नश्यतु नश्यतात् नश्यताम् नश्यन्तु
नश्य „ नश्यतम् नश्यत
नश्यानि नश्याव नश्याम

ह्य० अनश्यत् अनश्यताम् अनश्यन्
अनश्यः अनश्यतम् अनश्यत
अनश्यम् अनश्याव अनश्याम

अ० अनेशत् अनेशताम् अनेशन्
अनेशः अनेशतम् अनेशत
अनेशम् अनेशाव अनेशाम
अनशत् अनशताम् अनशन्
अनशः अनशतम् अनशत
अनशम् अनशाव अनशाम

पाणिनीमते–अद्यतन्याम्–अनशदित्यादिकमेव भवति० न तु–अनेशदित्यादि ।

प० ननाश नेशतुः नेशुः
नेशिथ नेशथुः नेश
ननाश ननश नेशिव नेशिम

मतान्तरे–ननंष्ठ । नेश्व । नेश्म । इत्यपि

आ० नश्यात् नश्यास्ताम् नश्यासुः
नश्याः नश्यास्तम् नश्यास्त
नश्यासम् नश्यास्व नश्यास्म

श्व० नशिता नशितारौ नशितारः
नशितासि नशितास्थः नशितास्थ
नशितास्मि नशितास्वः नशितास्मः
नंष्टा नंष्टारौ नंष्टारः
नंष्टासि नंष्टास्थः नंष्टास्थ
नंष्टास्मि नंष्टास्वः नंष्टास्मः

भ० नशिष्यति नशिष्यतः नशिष्यन्ति
नशिष्यसि नशिष्यथः नशिष्यथ
नशिष्यामि नशिष्यावः नशिष्यामः
नङ्क्ष्यति नङ्क्ष्यतः नङ्क्ष्यन्ति
नङ्क्ष्यसि नङ्क्ष्यथः नङ्क्ष्यथ
नङ्क्ष्यामि नङ्क्ष्यावः नङ्क्ष्यामः

क्रि० अनशिष्यत् अनशिष्यताम् अनशिष्यन्
अनशिष्यः अनशिष्यतम् अनशिष्यत
अनशिष्यम् अनशिष्याव अनशिष्याम
अनङ्क्ष्यत् अनङ्क्ष्यताम् अनङ्क्ष्यन्
अनङ्क्ष्यः अनङ्क्ष्यतम् अनङ्क्ष्यत
अनङ्क्ष्यम् अनङ्क्ष्याव अनङ्क्ष्याम

॥ कुशच्-श्लेसणे ॥ भेटवुं ।
कुश्यति । अकुशत् । चुकोश ।
॥ भृशु भ्रंशूच्-अधःपतने ॥ नीचे पडवुं
भृश्यति । अभृशत् । बभर्श ।
भ्रश्यति । अभ्रशत् । बभ्रंशिम ।
॥ वृशच्-वरणे ॥ स्वीकारवुं. वरवुं ।
वृश्यति । अवृशत् । ववर्श ।
॥ कृशच्-तनुत्वे ॥ क्षीण थवुं. पातळा थवुं
कृश्यति । अकृशत् । चकर्श ।
॥ शुषंच्-शोषणे ॥ सुकावुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | शुष्यति | शुष्यतः | शुष्यन्ति |
| | शुष्यसि | शुष्यथः | शुष्यथ |
| | शुष्यामि | शुष्यावः | शुष्यामः |
| स० | शुष्येत् | शुष्येताम् | शुष्येयु |
| | शुष्येः | शुष्येतम् | शुष्येत |
| | शुष्येयम् | शुष्येव | शुष्येम |
| प० | शुष्यतु शुष्यतात् | शुष्यताम् | शुष्यन्तु |
| | शुष्य ,, | शुष्यतम् | शुष्यत |
| | शुष्याणि | शुष्याव | शुष्याम |
| ह्य० | अशुष्यत् | अशुष्यताम् | अशुष्यन् |
| | अशुष्यः | अशुष्यतम् | अशुष्यत |
| | अशुष्यम् | अशुष्याव | अशुष्याम |
| अ० | अशुषत् | अशुषताम् | अशुषन् |
| | अशुषः | अशुषतम् | अशुषत |
| | अशुषम् | अशुषाव | अशुषाम |
| प० | शुशोष | शुशुषतुः | शुशुषुः |
| | शुशोषिथ | शुशुषथुः | शुशुष |
| | शुशोष | शुशुषिव | शुशुषिम |
| आ० | शुष्यात् | शुष्यास्ताम् | शुष्यासुः |
| | शुष्याः | शुष्यास्तम् | शुष्यास्त |
| | शुष्यासम् | शुष्यास्व | शुष्यास्म |
| श्व० | शोष्टा | शोष्टारौ | शोष्टारः |
| | शोष्टासि | शोष्टास्थः | शोष्टास्थ |
| | शोष्टास्मि | शोष्टास्वः | शोष्टास्मः |
| भ० | शोक्ष्यति | शोक्ष्यतः | शोक्ष्यन्ति |
| | शोक्ष्यसि | शोक्ष्यथः | शोक्ष्यथ |
| | शोक्ष्यामि | शोक्ष्यावः | शोक्ष्यामः |
| क्रि० | अशोक्ष्यत् | अशोक्ष्यताम् | अशोक्ष्यन् |
| | अशोक्ष्यः | अशोक्ष्यतम् | अशोक्ष्यत |
| | अशोक्ष्यम् | अशोक्ष्याव | अशोक्ष्याम |

॥ दुषंच्-वैकृत्ये रूपभङ्गे ॥ विकारी थवुं दोषवान् थवुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | दुष्यति | दुष्यतः | दुष्यन्ति |
| | दुष्यसि | दुष्यथः | दुष्यथ |
| | दुष्यामि | दुष्यावः | दुष्यामः |
| स० | दुष्येत् | दुष्येताम् | दुष्येयुः |
| | दुष्येः | दुष्येतम् | दुष्येत |
| | दुष्येयम् | दुष्येव | दुष्येम |
| प० | दुष्यतु, दुष्यतात् | दुष्यताम् | दुष्यन्तु |
| | दुष्य ,, | दुष्यतम् | दुष्यत |
| | दुष्याणि | दुष्याव | दुष्याम |
| ह्य० | अदुष्यत् | अदुष्यताम् | अदुष्यन् |
| | अदुष्यः | अदुष्यतम् | अदुष्यत |
| | अदुष्यम् | अदुष्याव | अदुष्याम |
| अ० | अदुषत् | अदुषताम् | अदुषन् |
| | अदुषः | अदुषतम् | अदुषत |
| | अदुषम् | अदुषाव | अदुषाम |
| प० | दुदोष | दुदुषतुः | दुदुषुः |
| | दुदोषिथ | दुदुषथुः | दुदुष |
| | दुदोष | दुदुषिव | दुदुषिम |
| आ० | दुष्यात् | दुष्यास्ताम् | दुष्यासुः |
| | दुष्याः | दुष्यास्तम् | दुष्यास्त |
| | दुष्यासम् | दुष्यास्व | दुष्यास्म |
| श्व० | दोष्टा | दोष्टारौ | दोष्टारः |
| | दोष्टासि | दोष्टास्थः | दोष्टास्थ |
| | दोष्टास्मि | दोष्टास्वः | दोष्टास्मः |
| भ० | दोक्ष्यति | दोक्ष्यतः | दोक्ष्यन्ति |
| | दोक्ष्यसि | दोक्ष्यथः | दोक्ष्यथ |

दोक्ष्यामि दोक्ष्यावः दोक्ष्यामः
क्रि० अदोक्ष्यत् अदोक्ष्यताम् अदोक्ष्यन्
अदोक्ष्यः अदोक्ष्यतम् अदोक्ष्यत
अदोक्ष्यम् अदोक्ष्याव अदोक्ष्याम

॥ प्लुषूच् दाहे ॥ दाझवु, ।
प्लुष्यति । अप्लुषत् । पुप्लोष ।

॥ तुषंच् हृषच्-तुष्टौ ॥ प्रसन्न थवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | तुष्यति | तुष्यतः | तुष्यन्ति |
| | तुष्यसि | तुष्यथः | तुष्यथ |
| | तुष्यामि | तुष्यावः | तुष्यामः |
| स० | तुष्येत् | तुष्येताम् | तुष्येयुः |
| | तुष्येः | तुष्येतम् | तुष्येत |
| | तुष्येयम् | तुष्येव | तुष्येम |
| प० | तुष्यतु तुष्यतात् | तुष्यताम् | तुष्यन्तु |
| | तुष्य ,, | तुष्यतम् | तुष्यत |
| | तुष्याणि | तुष्याव | तुष्याम |
| ह्य० | अतुष्यत् | अतुष्यताम् | अतुष्यन् |
| | अतुष्यः | अतुष्यतम् | अतुष्यत |
| | अतुष्यम् | अतुष्याव | अतुष्याम |
| अ० | अतुषत् | अतुषताम् | अतुषन् |
| | अतुषः | अतुषतम् | अतुषत |
| | अतुषम् | अतुषाव | अतुषाम |
| प० | तुतोष | तुतुषतुः | तुतुषुः |
| | तुतोषिथ | तुतुषथुः | तुतुष |
| | तुतोष | तुतुषिव | तुतुषिम |
| आ० | तुष्यात् | तुष्यास्ताम् | तुष्यासुः |
| | तुष्याः | तुष्यास्तम् | तुष्यास्त |
| | तुष्यासम् | तुष्यास्व | तुष्यास्म |
| श्व० | तोष्टा | तोष्टारौ | तोष्टारः |
| | तोष्टासि | तोष्टास्थः | तोष्टास्थ |
| | तोष्टास्मि | तोष्टास्वः | तोष्टास्मः |
| भ० | तोक्ष्यति | तोक्ष्यतः | तोक्ष्यन्ति |
| | तोक्ष्यसि | तोक्ष्यथः | तोक्ष्यथ |
| | तोक्ष्यामि | तोक्ष्यावः | तोक्ष्यामः |
| क्रि० | अतोक्ष्यत् | अतोक्ष्यताम् | अतोक्ष्यन् |
| | अतोक्ष्यः | अतोक्ष्यतम् | अतोक्ष्यत |
| | अतोक्ष्यम् | अतोक्ष्याव | अतोक्ष्याम |

हृष्यति । अहृषत् । जहर्ष ।

॥ रुषच्-रोषे ॥ क्रोध करवो ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | रुष्यति | रुष्यतः | रुष्यन्ति |
| | रुष्यसि | रुष्यथः | रुष्यथ |
| | रुष्यामि | रुष्यावः | रुष्यामः |
| स० | रुष्येत् | रुष्येताम् | रुष्येयुः |
| | रुष्येः | रुष्येतम् | रुष्येत |
| | रुष्येयम् | रुष्येव | रुष्येम |
| प० | रुष्यतु रुष्यतात् | रुष्यताम् | रुष्यन्तु |
| | रुष्य ,, | रुष्यतम् | रुष्यत |
| | रुष्याणि | रुष्याव | रुष्याम |
| ह्य० | अरुष्यत् | अरुष्यताम् | अरुष्यन् |
| | अरुष्यः | अरुष्यतम् | अरुष्यत |
| | अरुष्यम् | अरुष्याव | अरुष्याम |
| अ० | अरुषत् | अरुषताम् | अरुषन् |
| | अरुषः | अरुषतम् | अरुषत |
| | अरुषम् | अरुषाव | अरुषाम |
| प० | रुरोष | रुरुषतुः | रुरुषुः |
| | रुरोषिथ | रुरुषथुः | रुरुष |
| | रुरोष | रुरुषिव | रुरुषिम |
| आ० | रुष्यात् | रुष्यास्ताम् | रुष्यासुः |
| | रुष्याः | रुष्यास्तम् | रुष्यास्त |
| | रुष्यासम् | रुष्यास्व | रुष्यास्म |
| श्व० | रोष्टा | रोष्टारौ | रोष्टारः |
| | रोष्टासि | रोष्टास्थः | रोष्टास्थ |
| | रोष्टास्मि | रोष्टास्वः | रोष्टास्मः |
| | रोषिता | रोषितारौ | रोषितारः |
| | रोषितासि | रोषितास्थः | रोषितास्थ |
| | रोषितास्मि | रोषितास्वः | रोषितास्मः |
| भ० | रोषिष्यति | रोषिष्यतः | रोषिष्यन्ति |
| | रोषिष्यसि | रोषिष्यथः | रोषिष्यथ |
| | रोषिष्यामि | रोषिष्यावः | रोषिष्यामः |
| क्रि० | अरोषिष्यत् | अरोषिष्यताम् | अरोषिष्यन् |
| | अरोषिष्यः | अरोषिष्यतम् | अरोषिष्यत |
| | अरोषिष्यम् | अरोषिष्याव | अरोषिष्याम |

॥ ञितृषप् -पिपासायाम् तरस लागवी ।

व० तृष्यति तृष्यतः तृष्यन्ति
तृष्यसि तृष्यथः तृष्यथ
तृष्यामि तृष्यावः तृष्यामः

स० तृष्येत् तृष्येताम् तृष्येयुः
तृष्येः तृष्येतम् तृष्येत
तृष्येयम् तृष्येव तृष्येम

प० तृष्यतु तृष्यतात् तृष्यताम् तृष्यन्तु
तृष्य „ तृष्यतम् तृष्यत
तृष्याणि तृष्याव तृष्याम

ह्य० अतृष्यत् अतृष्यताम् अतृष्यन्
अतृष्यः अतृष्यतम् अतृष्यत
अतृष्यम् अतृष्याव अतृष्याम

अ० अतृपत् अतृपताम् अतृपन्
अतृपः अतृपतम् अतृपत
अतृपम् अतृपाव अतृपाम

प० ततर्ष ततृषतुः ततृषुः
ततर्षिथ ततृषथुः ततृष
ततर्ष ततृषिव ततृषिम

आ० तृष्यात् तृष्यास्ताम् तृष्यासुः
तृष्याः तृष्यास्तम् तृष्यास्त
तृष्यासम् तृष्यास्व तृष्यास्म

श्व० तर्षिता तर्षितारौ तर्षितारः
तर्षितासि तर्षितास्थः तर्षितास्थ
तर्षितास्मि तर्षितास्वः तर्षितास्मः

भ० तर्षिष्यति तर्षिष्यतः तर्षिष्यन्ति
तर्षिष्यसि तर्षिष्यथः तर्षिष्यथ
तर्षिष्यामि तर्षिष्यावः तर्षिष्यामः

क्रि० अतर्षिष्यत् अतर्षिष्यताम् अतर्षिष्यन्
अतर्षिष्यः अतर्षिष्यतम् अतर्षिष्यत
अतर्षिष्यम् अतर्षिष्याव अतर्षिष्याम

॥ श्लिषंव्-आलिंगने ॥ भेटवुं ।

व० श्लिष्यति श्लिष्यतः श्लिष्यन्ति
श्लिष्यसि श्लिष्यथः श्लिष्यथ
श्लिष्यामि श्लिष्यावः श्लिष्यामः

स० श्लिष्येत् श्लिष्येताम् श्लिष्येयुः
श्लिष्येः श्लिष्येतम् श्लिष्येत
श्लिष्येयम् श्लिष्येव श्लिष्येम

प० श्लिष्यतु तात् श्लिष्यताम् श्लिष्यन्तु
श्लिष्य „ श्लिष्यतम् श्लिष्यत
श्लिष्याणि श्लिष्याव श्लिष्याम

ह्य० अश्लिष्यत् अश्लिष्यताम् अश्लिष्यन्
अश्लिष्यः अश्लिष्यतम् अश्लिष्यत
अश्लिष्यम् अश्लिष्याव अश्लिष्याम

अ० अश्लिक्षत् अश्लिक्षताम् अश्लिक्षन्
अश्लिक्षः अश्लिक्षतम् अश्लिक्षत
अश्लिक्षम् अश्लिक्षाव अश्लिक्षाम

अश्लिक्षत् कन्यां चैत्रः

अश्लिषत् अश्लिषताम् अश्लिषन्
अश्लिषः अश्लिषतम् अश्लिषत
अश्लिषम् अश्लिषाव अश्लिषाम

समाश्लिषत् जतु च काष्ठं च

प० शिश्लेष शिश्लिषतुः शिश्लिषुः
शिश्लेषिथ शिश्लिषथुः शिश्लिष
शिश्लेष शिश्लिषिव शिश्लिषिम

आ० श्लिष्यात् श्लिष्यास्ताम् श्लिष्यासुः
श्लिष्याः श्लिष्यास्तम् श्लिष्यास्त
श्लिष्यासम् श्लिष्यास्व श्लिष्यास्म

श्व० श्लेष्टा श्लेष्टारौ श्लेष्टारः
श्लेष्टासि श्लेष्टास्थः श्लेष्टास्थ
श्लेष्टास्मि श्लेष्टास्वः श्लेष्टास्मः

भ० श्लेक्ष्यति श्लेक्ष्यतः श्लेक्ष्यन्ति
श्लेक्ष्यसि श्लेक्ष्यथः श्लेक्ष्यथ
श्लेक्ष्यामि श्लेक्ष्यावः श्लेक्ष्यामः

क्रि० अश्लेक्ष्यत् अश्लेक्ष्यताम् अश्लेक्ष्यन्
अश्लेक्ष्यः अश्लेक्ष्यतम् अश्लेक्ष्यत
अश्लेक्ष्यम् अश्लेक्ष्याव अश्लेक्ष्याम

॥ प्युष प्युस पुसच्-विभागे ॥

विभाग करवो, भागवुं, चोळवुं भूंसवुं

प्युष्यति । अप्युषत् । पुप्योष ।

प्युस्यति । अप्युसत् । पुप्योस ।

पुस्यति । अपुसत् । पुपोस ।

॥ विसच्—प्रेरणे ॥

विस्यति । अविसत् । विवेस । विविसतुः

॥ कुसच्-श्लेषे ॥ भेटवुं ॥

कुस्यति । अकुसत् । चुकोस ।

॥ असूच्-क्षेपणे ॥ फेंकवुं

व० अस्यति अस्यत अस्यन्ति
अस्यसि अस्यथः अस्यथ
अस्यामि अस्यावः अस्यामः

स० अस्येत् अस्येताम् अस्येयुः
अस्येः अस्येतम् अस्येत
अस्येयम् अस्येव अस्येम

प० अस्यतु अस्यतात् अस्यताम् अस्यन्तु
अस्य अस्यतात् अस्यतम् अस्यत
अस्यानि अस्याव अस्याम

ह्य० आस्यत् आस्यताम् आस्यन्
आस्यः आस्यतम् आस्यत
आस्यम् आस्याव आस्याम

अ० आस्थत् आस्थताम् आस्थन्
आस्थः आस्थतम् आस्थत
आस्थम् आस्थाव आस्थाम

प० आस आसतुः आसुः
आसिथ आसथुः आसथ
आस आसिव आसिम

आ० अस्यात् अस्यास्ताम् अस्यासुः
अस्याः अस्यास्तम् अस्यास्त
अस्यासम् अस्यास्व अस्यास्म

श्व० असिता असितारौ असितारः
असितासि असितास्थः असितास्थ
असितास्मि असितास्वः असितास्मः

भ० असिष्यति असिष्यतः असिष्यन्ति
असिष्यसि असिष्यथः असिष्यथ
असिष्यामि असिष्यावः असिष्यामः

क्रि० आसिष्यत् आसिष्यताम् आसिष्यन्
आसिष्यः आसिष्यतम् आसिष्यत
आसिष्यम् आसिष्याव आसिष्याम

॥ यसूच्—प्रयत्ने ॥ महेनत करवी, यत्न करवो,

व० संयस्यति संयस्यतः संयस्यन्ति
संयस्यसि संयस्यथः संयस्यथ
संयस्यामि संयस्यावः संयस्यामः

व० संयसति संयसतः संयसन्ति
संयससि संयसथः संयसथ
संयसामि संयसावः संयसामः

स० संयस्येत् संयस्येताम् संयस्येयुः
संयस्येः संयस्येतम् संयस्येत
संयस्येयम् संयस्येव संयस्येम

संयसेत् संयसेताम् संयसेयुः
संयसेः संयसेतम् संयसेत
संयसेयम् संयसेव संयसेम

प० संयस्यतु संयस्यतात् संयस्यताम् संयस्यन्तु
संयस्य „ संयस्यतम् संयस्यत
संयस्यानि संयस्याव संयस्याम

संयसतु संयसतात् संयसताम् संयसन्तु
संयस संयसतात् संयसतम् संयसत
संयसानि संयसाव संयसाम

ह्य० समयस्यत् समयस्यताम् समयस्यन्
समयस्यः समयस्यतम् समयस्यत
समयस्यम् समयस्याव समयस्याम

समयसत् समयसताम् समयसन्
समयसः समयसतम् समयसत
समयसम् समयसाव समयसाम

एवं यस्यति यसति, प्रादिपुर.सरं तु प्रयस्यति आयस्यति ।

अ० समयसत् समयसताम् समयसन्
समयसः समयसतम् समयसत
समयसम् समयसाव समयसाम

प० ययास येसतुः येसुः
येसिथ येसथुः येस
ययास ययस येसिव येसिम

आ० यस्यात् यस्यास्ताम् यस्यासुः
यस्याः यस्यास्तम् यस्यास्त
यस्यासम् यस्यास्व यस्यास्म

श्व० यसिता यसितारौ यसितारः
यसितासि यसितास्थः यसितास्थ
यसितास्मि यसितास्वः यसितास्मः

भ० यसिष्यति यसिष्यतः यसिष्यन्ति
यसिष्यसि यसिष्यथः यसिष्यथ
यसिष्यामि यसिष्यावः यसिष्यामः

क्रि० अयसिष्यत् अयसिष्यताम् अयसिष्यन्
अयसिष्यः अयसिष्यतम् अयसिष्यत
अयसिष्यम् अयसिष्याव अयसिष्याम

॥ जसूच्–मोक्षणे ॥ मुकवुं ।
जस्यति । अजसत् । जेसिथ ।

॥ तसू दसूच्–उपक्षये ॥ क्षीण थवुं. ।
तस्यति । अतसत् । तेसिथ ।
दस्यति । अदसत् । देसिथ ।

॥ वसूच्–स्तम्भे ॥ थंभवुं ।
वस्यति । अवसत् । ववसिथ ।

॥ वुसच्–उत्सर्गे ॥ तजवुं ।
वुस्यति । अवुसत् । वुवोसि ।

॥ मुसच्–खण्डने ॥ खांडवुं ।
मुस्यति । अमुसत् । मुमोस ।

॥ मसच्–परिणामे ॥ विकार पामवुं, रूपांतर थवुं, मापवुं. ।
मस्यति । अमसत् । मेसिथ ।

॥ शमू दमूच् उपशमे । शांत थवुं ।

व० शाम्यति शाम्यतः शाम्यन्ति
शाम्यसि शाम्यथः शाम्यथ
शाम्यामि शाम्यावः शाम्यामः

स० शाम्येत् शाम्येताम् शाम्येयुः
शाम्येः शाम्येतम् शाम्येत
शाम्येयम् शाम्येव शाम्येम

प० शाम्यतु तात् शाम्यताम् शाम्यन्तु
शाम्य „ शाम्यतम् शाम्यत
शाम्यानि शाम्याव शाम्याम

ह्य० अशाम्यत् अशाम्यताम् अशाम्यन्
अशाम्यः अशाम्यतम् अशाम्यत
अशाम्यम् अशाम्याव अशाम्याम

अ० अशमत् अशमताम् अशमन्
अशमः अशमतम् अशमत
अशमम् अशमाव अशमाम

प० शशाम शेमतुः शेमुः
शेमिथ शेमथुः शेम
शशाम शशम शेमिव शेमिम

आ० शम्यात् शम्यास्ताम् शम्यासुः
शम्याः शम्यास्तम् शम्यास्त
शम्यासम् शम्यास्व शम्यास्म

श्व० शमिता शमितारौ शमितारः
शमितासि शमितास्थः शमितास्थ
शमितास्मि शमितास्वः शमितास्मः

भ० शमिष्यति शमिष्यतः शमिष्यन्ति
शमिष्यसि शमिष्यथः शमिष्यथ
शमिष्यामि शमिष्यावः शमिष्यामः

क्रि० अशमिष्यत् अशमिष्यताम् अशमिष्यन्
अशमिष्यः अशमिष्यतम् अशमिष्यत
अशमिष्यम् अशमिष्याव अशमिष्याम

व० दाम्यति दाम्यतः दाम्यन्ति
दाम्यसि दाम्यथः दाम्यथ
दाम्यामि दाम्यावः दाम्यामः

स० दाम्येत् दाम्येताम् दाम्येयुः
दाम्येः दाम्येतम् दाम्येत
दाम्येयम् दाम्येव दाम्येम
प० दाम्यतु तात् दाम्यताम् दाम्यन्तु
दाम्य „ दाम्यतम् दाम्यत
दाम्यानि दाम्याव दाम्याम
ह्य० अदाम्यत् अदाम्यताम् अदाम्यन्
अदाम्यः अदाम्यतम् अदाम्यत
अदाम्यम् अदाम्याव अदाम्याम
अ० अदमत् अदमताम् अदमन्
अदमः अदमतम् अदमत
अदमम् अदमाव अदमाम
प० ददाम देमतुः देमुः
देमिथ देमथुः देम
ददाम ददम देमिव देमिम
आ० दम्यात् दम्यास्ताम् दम्यासुः
दम्याः दम्यास्तम् दम्यास्त
दम्यासम् दम्यास्व दम्यास्म
श्व० दमिता दमितारौ दमितारः
दमितासि दमितास्थः दमितास्थ
दमितास्मि दमितास्वः दमितास्मः
भ० दमिष्यति दमिष्यतः दमिष्यन्ति
दमिष्यसि दमिष्यथः दमिष्यथ
दमिष्यामि दमिष्यावः दमिष्यामः
क्रि० अदमिष्यत् अदमिष्यताम् अदमिष्यन्
अदमिष्यः अदमिष्यतम् अदमिष्यत
अदमिष्यम् अदमिष्याव अदमिष्याम

॥ तमूच्–कांक्षायाम् ॥ इच्छवुं. ॥

व० ताम्यति ताम्यतः ताम्यन्ति
ताम्यसि ताम्यथः ताम्यथ
ताम्यामि ताम्यावः ताम्यामः
स० ताम्येत् ताम्येताम् ताम्येयुः
ताम्येः ताम्येतम् ताम्येत
ताम्येयम् ताम्येव ताम्येम
प० ताम्यतु तात् ताम्यताम् ताम्यन्तु
ताम्य „ ताम्यतम् ताम्यत
ताम्यानि ताम्याव ताम्याम
ह्य० अताम्यत् अताम्यताम् अताम्यन्
अताम्यः अताम्यतम् अताम्यत
अताम्यम् अताम्याव अताम्याम
अ० अतमत् अतमताम् अतमन्
अतमः अतमतम् अतमत
अतमम् अतमाव अतमाम
प० तमाम तेमतुः तेमुः
तेमिथ तेमथुः तेम
तताम ततम तेमिव तेमिम
आ० तम्यात् तम्यास्ताम् तम्यासुः
तम्याः तम्यास्तम् तम्यास्त
तम्यासम् तम्यास्व तम्यास्म
श्व० तमिता तमितारौ तमितारः
तमितासि तमितास्थः तमितास्थ
तमितास्मि तमितास्वः तमितास्मः
भ० तमिष्यति तमिष्यतः तमिष्यन्ति
तमिष्यसि तमिष्यथः तमिष्यथ
तमिष्यामि तमिष्यावः तमिष्यामः
क्रि० अतमिष्यत् अतमिष्यताम् अतमिष्यन्
अतमिष्यः अतमिष्यतम् अतमिष्यत
अतमिष्यम् अतमिष्याव अतमिष्याम

॥ श्रमूच्–खेदतपसोः ॥ थाकी जवुं. । तपवुं, खेद पामवो. ।

व० श्राम्यति श्राम्यतः श्राम्यन्ति
श्राम्यसि श्राम्यथः श्राम्यथ
श्राम्यामि श्राम्यावः श्राम्यामः
स० श्राम्येत् श्राम्येताम् श्राम्येयुः
श्राम्येः श्राम्येतम् श्राम्येत
श्राम्येयम् श्राम्येव श्राम्येम
प० श्राम्यतु तात् श्राम्यताम् श्राम्यन्तु
श्राम्य „ श्राम्यतम् श्राम्यत

श्राम्याणि श्राम्याव श्राम्याम

ह्य० अश्राम्यत् अश्राम्यताम् अश्राम्यन्
अश्राम्यः अश्राम्यतम् अश्राम्यत
अश्राम्यम् अश्राम्याव अश्राम्याम

अ० अश्रमत् अश्रमताम् अश्रमन्
अश्रमः अश्रमतम् अश्रमत
अश्रमम् अश्रमाव अश्रमाम

प० शश्राम शश्रमतुः शश्रमुः
शश्रमिथ शश्रमथुः शश्रम
शश्राम शश्रम शश्रमिव शश्रमिम

आ० श्रम्यात् श्रम्यास्ताम् श्रम्यासुः
श्रम्याः श्रम्यास्तम् श्रम्यास्त
श्रम्यासम् श्रम्यास्व श्रम्यास्म

श्व० श्रमिता श्रमितारौ श्रमितारः
श्रमितासि श्रमितास्थः श्रमितास्थ
श्रमितास्मि श्रमितास्वः श्रमितास्मः

भ० श्रमिष्यति श्रमिष्यतः श्रमिष्यन्ति
श्रमिष्यसि श्रमिष्यथः श्रमिष्यथ
श्रमिष्यामि श्रमिष्यावः श्रमिष्यामः

क्रि० अश्रमिष्यत् अश्रमिष्यताम् अश्रमिष्यन्
अश्रमिष्यः अश्रमिष्यतम् अश्रमिष्यत
अश्रमिष्यम् अश्रमिष्याव अश्रमिष्याम

॥ भ्रमु-अनवस्थाने ॥ भ्रमुं ।

व० भ्राम्यति भ्राम्यतः भ्राम्यन्ति
भ्राम्यसि भ्राम्यथः भ्राम्यथ
भ्राम्यामि भ्राम्यावः भ्राम्यामः

भ्रमति भ्रमतः भ्रमन्ति
भ्रमसि भ्रमथः भ्रमथ
भ्रमामि भ्रमावः भ्रमामः

स० भ्राम्येत् भ्राम्येताम् भ्राम्येयुः
भ्राम्येः भ्राम्येतम् भ्राम्येत
भ्राम्येयम् भ्राम्येव भ्राम्येम

भ्रमेत् भ्रमेताम् भ्रमेयुः
भ्रमेः भ्रमेतम् भ्रमेत
भ्रमेयम् भ्रमेव भ्रमेम

प० भ्राम्यतु भ्राम्यतात् भ्राम्यताम् भ्राम्यन्तु
भ्राम्य ,, भ्राम्यतम् भ्राम्यत
भ्राम्याणि भ्राम्याव भ्राम्याम

भ्रमतु भ्रमतात् भ्रमताम् भ्रमन्तु
भ्रम ,, भ्रमतम् भ्रमत
भ्रमाणि भ्रमाव भ्रमाम

ह्य० अभ्राम्यत् अभ्राम्यताम् अभ्राम्यन्
अभ्राम्यः अभ्राम्यतम् अभ्राम्यत
अभ्राम्यम् अभ्राम्याव अभ्राम्याम

अभ्रमत् अभ्रमताम् अभ्रमन्
अभ्रमः अभ्रमतम् अभ्रमत
अभ्रमम् अभ्रमाव अभ्रमाम

अ० अभ्रमत् अभ्रमताम् अभ्रमन्
अभ्रमः अभ्रमतम् अभ्रमत
अभ्रमम् अभ्रमाव अभ्रमाम

प० बभ्राम भ्रेमतुः भ्रेमुः
बभ्रमतुः बभ्रमुः
भ्रेमिथ भ्रेमथुः भ्रेम
बभ्रमिथ बभ्रमथुः बभ्रम
बभ्राम भ्रेमिव भ्रेमिम
बभ्रम बभ्रमिव बभ्रमिम

आ० भ्रम्यात् भ्रम्यास्ताम् भ्रम्यासुः
भ्रम्याः भ्रम्यास्तम् भ्रम्यास्त
भ्रम्यासम् भ्रम्यास्व भ्रम्यास्म

श्व० भ्रमिता भ्रमितारौ भ्रमितारः
भ्रमितासि भ्रमितास्थः भ्रमितास्थ
भ्रमितास्मि भ्रमितास्वः भ्रमितास्मः

भ० भ्रमिष्यति भ्रमिष्यतः भ्रमिष्यन्ति
भ्रमिष्यसि भ्रमिष्यथः भ्रमिष्यथ
भ्रमिष्यामि भ्रमिष्यावः भ्रमिष्यामः

क्रि० अभ्रमिष्यत् अभ्रमिष्यताम् अभ्रमिष्यन्
अभ्रमिष्यः अभ्रमिष्यतम् अभ्रमिष्यत
अभ्रमिष्यम् अभ्रमिष्याव अभ्रमिष्याम

॥ क्षमौच्-सहने ॥ सहन करवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | क्षाम्यति | क्षाम्यतः | क्षाम्यन्ति |
| | क्षाम्यसि | क्षाम्यथः | क्षाम्यथ |
| | क्षाम्यामि | क्षाम्यावः | क्षाम्यामः |
| स० | क्षाम्येत् | क्षाम्येताम् | क्षाम्येयुः |
| | क्षाम्येः | क्षाम्येतम् | क्षाम्येत |
| | क्षाम्येयम् | क्षाम्येव | क्षाम्येम |
| प० | क्षाम्यतु तात् | क्षाम्यताम् | क्षाम्यन्तु |
| | क्षाम्य ,, | क्षाम्यतम् | क्षाम्यत |
| | क्षाम्याणि | क्षाम्याव | क्षाम्याम |
| ह्य० | अक्षाम्यत् | अक्षाम्यताम् | अक्षाम्यन् |
| | अक्षाम्यः | अक्षाम्यतम् | अक्षाम्यत |
| | अक्षाम्यम् | अक्षाम्याव | अक्षाम्याम |
| अ० | अक्षमत् | अक्षमताम् | अक्षमन् |
| | अक्षमः | अक्षमतम् | अक्षमत |
| | अक्षमम् | अक्षमाव | अक्षमाम |
| प० | चक्षाम | चक्षमतुः | चक्षमुः |
| | चक्षमिथ | चक्षमथुः | चक्षम |
| | चक्षाम चक्षम | चक्षमिव | चक्षमिम |
| | मतांतरे चक्षन्थ | चक्षण्व | चक्षण्म |
| आ० | क्षम्यात् | क्षम्यास्ताम् | क्षम्यासुः |
| | क्षम्याः | क्षम्यास्तम् | क्षम्यास्त |
| | क्षम्यासम् | क्षम्यास्व | क्षम्यास्म |
| श्व० | क्षमिता | क्षमितारौ | क्षमितारः |
| | क्षमितासि | क्षमितास्थः | क्षमितास्थ |
| | क्षमितास्मि | क्षमितास्वः | क्षमितास्मः |
| | क्षन्ता | क्षन्तारौ | क्षन्तारः |
| | क्षन्तासि | क्षन्तास्थः | क्षन्तास्थ |
| | क्षन्तास्मि | क्षन्तास्वः | क्षन्तास्मः |
| भ० | क्षमिष्यति | क्षमिष्यतः | क्षमिष्यन्ति |
| | क्षमिष्यसि | क्षमिष्यथः | क्षमिष्यथ |
| | क्षमिष्यामि | क्षमिष्यावः | क्षमिष्यामः |
| | क्षंस्यति | क्षंस्यतः | क्षंस्यन्ति |
| | क्षंस्यसि | क्षंस्यथः | क्षंस्यथ |
| | क्षंस्यामि | क्षंस्यावः | क्षंस्यामः |
| क्रि० | अक्षमिष्यत् | अक्षमिष्यताम् | अक्षमिष्यन् |
| | अक्षमिष्यः | अक्षमिष्यतम् | अक्षमिष्यत |
| | अक्षमिष्यम् | अक्षमिष्याव | अक्षमिष्याम |
| | अक्षंस्यत् | अक्षंस्यताम् | अक्षंस्यन् |
| | अक्षंस्यः | अक्षंस्यतम् | अक्षंस्यत |
| | अक्षंस्यम् | अक्षंस्याव | अक्षंस्याम |

॥ मदैच्-हर्षे ॥ हर्ष थवो ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | माद्यति | माद्यतः | माद्यन्ति |
| | माद्यसि | माद्यथः | माद्यथ |
| | माद्यामि | माद्यावः | माद्यामः |
| स० | माद्येत् | माद्येताम् | माद्येयुः |
| | माद्येः | माद्येतम् | माद्येत |
| | माद्येयम् | माद्येव | माद्येम |
| प० | माद्यतु माद्यतात् | माद्यताम् | माद्यन्तु |
| | माद्य ,, | माद्यतम् | माद्यत |
| | माद्यानि | माद्याव | माद्याम |
| ह्य० | अमाद्यत् | अमाद्यताम् | अमाद्यन् |
| | अमाद्यः | अमाद्यतम् | अमाद्यत |
| | अमाद्यम् | अमाद्याव | अमाद्याम |
| अ० | अमदत् | अमदताम् | अमदन् |
| | अमदः | अमदतम् | अमदत |
| | अमदम् | अमदाव | अमदाम |
| प० | ममाद | मेदतुः | मेदुः |
| | मेदिथ | मेदथुः | मेद |
| | ममाद ममद | मेदिव | मेदिम |
| आ० | मद्यात् | मद्यास्ताम् | मद्यासुः |
| | मद्याः | मद्यास्तम् | मद्यास्त |
| | मद्यासम् | मद्यास्व | मद्यास्म |
| श्व० | मदिता | मदितारौ | मदितारः |
| | मदितासि | मदितास्थः | मदितास्थ |
| | मदितास्मि | मदितास्वः | मदितास्मः |
| भ० | मदिष्यति | मदिष्यतः | मदिष्यन्ति |
| | मदिष्यसि | मदिष्यथः | मदिष्यथ |
| | मदिष्यामि | मदिष्यावः | मदिष्यामः |

क्रि० अमदिष्यत् अमदिष्यताम् अमदिष्यन्
अमदिष्यः अमदिष्यतम् अमदिष्यत
अमदिष्यम् अमदिष्याव अमदिष्याम

॥ क्लमूच्-ग्लानौ ॥ ग्लानी थवो ।

व० क्लाम्यति क्लाम्यतः क्लाम्यन्ति
क्लाम्यसि क्लाम्यथः क्लाम्यथ
क्लाम्यामि क्लाम्यावः क्लाम्यामः

स० क्लाम्येत् क्लाम्येताम् क्लाम्येयुः
क्लाम्येः क्लाम्येतम् क्लाम्येत
क्लाम्येयम् क्लाम्येव क्लाम्येम

प० क्लाम्यतु तात् क्लाम्यताम् क्लाम्यन्तु
क्लाम्य „ क्लाम्यतम् क्लाम्यत
क्लाम्यानि क्लाम्याव क्लाम्याम

ह्य० अक्लाम्यत् अक्लाम्यताम् अक्लाम्यन्
अक्लाम्यः अक्लाम्यतम् अक्लाम्यत
अक्लाम्यम् अक्लाम्याव अक्लाम्याम

अ० अक्लमत् अक्लमताम् अक्लमन्
अक्लमः अक्लमतम् अक्लमत
अक्लमम् अक्लमाव अक्लमाम

प० चक्लाम चक्लमतुः चक्लमुः
चक्लमिथ चक्लमथुः चक्लम
चक्लाम चक्लम चक्लमिव चक्लमिम

आ० क्लम्यात् क्लम्यास्ताम् क्लम्यासुः
क्लम्याः क्लम्यास्तम् क्लम्यास्त
क्लम्यासम् क्लम्यास्व क्लम्यास्म

श्व० क्लमिता क्लमितारौ क्लमितारः
क्लमितासि क्लमितास्थः क्लमितास्थ
क्लमितास्मि क्लमितास्वः क्लमितास्मः

भ० क्लमिष्यति क्लमिष्यतः क्लमिष्यन्ति
क्लमिष्यसि क्लमिष्यथः क्लमिष्यथ
क्लमिष्यामि क्लमिष्यावः क्लमिष्यामः

क्रि० अक्लमिष्यत् अक्लमिष्यताम् अक्लमिष्यन्
अक्लमिष्यः अक्लमिष्यतम् अक्लमिष्यत
अक्लमिष्यम् अक्लमिष्याव अक्लमिष्याम

॥ मुहौच्-वैचित्ये ॥ मोह पामवो, गांडा थवुं मुझावुं ॥.

व० मुह्यति मुह्यतः मुह्यन्ति
मुह्यसि मुह्यथः मुह्यथ
मुह्यामि मुह्यावः मुह्यामः

स० मुह्येत् मुह्येताम् मुह्येयुः
मुह्येः मुह्येतम् मुह्येत
मुह्येयम् मुह्येव मुह्येम

प० मुह्यतु मुह्यतात् मुह्यताम् मुह्यन्तु
मुह्य „ मुह्यतम् मुह्यत
मुह्यानि मुह्याव मुह्याम

ह्य० अमुह्यत् अमुह्यताम् अमुह्यन्
अमुह्यः अमुह्यतम् अमुह्यत
अमुह्यम् अमुह्याव अमुह्याम

अ० अमुहत् अमुहताम् अमुहन्
अमुहः अमुहतम् अमुहत
अमुहम् अमुहाव अमुहाम

प० मुमोह मुमुहतुः मुमुहुः
मुमोहिथ मुमुहथुः मुमुह
मुमोह मुमुहिव मुमुहिम

मतांतरे मुमोग्ध मुमोढ, मुमुह्व मुमुह्म

आ० मुह्यात् मुह्यास्ताम् मुह्यासुः
मुह्याः मुह्यास्तम् मुह्यास्त
मुह्यासम् मुह्यास्व मुह्यास्म

श्व० मोहिता मोहितारौ मोहितारः
मोहितासि मोहितास्थः मोहितास्थ
मोहितास्मि मोहितास्वः मोहितास्मः

मोग्धा मोग्धारौ मोग्धारः
मोग्धासि मोग्धास्थः मोग्धास्थ
मोग्धास्मि मोग्धास्वः मोग्धास्मः

मोढा मोढारौ मोढारः
मोढासि मोढास्थः मोढास्थ
मोढास्मि मोढास्वः मोढास्मः

भ० मोहिष्यति मोहिष्यतः मोहिष्यन्ति
मोहिष्यसि मोहिष्यथः मोहिष्यथ
मोहिष्यामि मोहिष्यावः मोहिष्यामः

मोक्ष्यति मोक्ष्यतः मोक्ष्यन्ति
मोक्ष्यसि मोक्ष्यथः मोक्ष्यथ
मोक्ष्यामि मोक्ष्यावः मोक्ष्यामः

क्रि० अमोहिष्यत् अमोहिष्यताम् अमोहिष्यन्
अमोहिष्यः अमोहिष्यतम् अमोहिष्यत
अमोहिष्यम् अमोहिष्याव अमोहिष्याम

अमोक्ष्यत् अमोक्ष्यताम् अमोक्ष्यन्
अमोक्ष्यः अमोक्ष्यतम् अमोक्ष्यत
अमोक्ष्यम् अमोक्ष्याव अमोक्ष्याम

॥ द्रुहौच्–जिघांसायाम् ॥ हणवानी इच्छा करवी ।

व० द्रुह्यति द्रुह्यतः द्रुह्यन्ति
द्रुह्यसि द्रुह्यथः द्रुह्यथ
द्रुह्यामि द्रुह्यावः द्रुह्यामः

स० द्रुह्येत् द्रुह्येताम् द्रुह्येयुः
द्रुह्येः द्रुह्येतम् द्रुह्येत
द्रुह्येयम् द्रुह्येव द्रुह्येम

प० द्रुह्यतु द्रुह्यतात् द्रुह्यताम् द्रुह्यन्तु
द्रुह्य ,, द्रुह्यतम् द्रुह्यत
द्रुह्याणि द्रुह्याव द्रुह्याम

ह्य० अद्रुह्यत् अद्रुह्यताम् अद्रुह्यन्
अद्रुह्यः अद्रुह्यतम् अद्रुह्यत
अद्रुह्यम् अद्रुह्याव अद्रुह्याम

अ० अद्रुहत् अद्रुहताम् अद्रुहन्
अद्रुहः अद्रुहतम् अद्रुहत
अद्रुहम् अद्रुहाव अद्रुहाम

प० दुद्रोह दुद्रुहतुः दुद्रुहुः
दुद्रोहिथ दुद्रुहथुः दुद्रुह
दुद्रोह दुद्रुहिव दुद्रुहिम
मतांतरे दुद्रोग्धा दुद्रोढ-दुद्रुह्व दुद्रुह्म

आ० द्रुह्यात् द्रुह्यास्ताम् द्रुह्यासुः
द्रुह्याः द्रुह्यास्तम् द्रुह्यास्त
द्रुह्यासम् द्रुह्यास्व द्रुह्यास्म

श्व० द्रोहिता द्रोहितारौ द्रोहितारः
द्रोहितासि द्रोहितास्थः द्रोहितास्थ
द्रोहितास्मि द्रोहितास्वः द्रोहितास्मः

द्रोग्धा द्रोग्धारौ द्रोग्धारः
द्रोग्धासि द्रोग्धास्थः द्रोग्धास्थ
द्रोग्धास्मि द्रोग्धास्वः द्रोग्धास्मः

द्रोढा द्रोढारौ द्रोढारः
द्रोढासि द्रोढास्थः द्रोढास्थ
द्रोढास्मि द्रोढास्वः द्रोढास्मः

भ० ध्रोक्ष्यति ध्रोक्ष्यतः ध्रोक्ष्यन्ति
ध्रोक्ष्यसि ध्रोक्ष्यथः ध्रोक्ष्यथ
ध्रोक्ष्यामि ध्रोक्ष्यावः ध्रोक्ष्यामः

द्रोहिष्यति द्रोहिष्यतः द्रोहिष्यन्ति
द्रोहिष्यसि द्रोहिष्यथः द्रोहिष्यथ
द्रोहिष्यामि द्रोहिष्यावः द्रोहिष्यामः

क्रि० अद्रोहिष्यत् अद्रोहिष्यताम् अद्रोहिष्यन्
अद्रोहिष्यः अद्रोहिष्यतम् अद्रोहिष्यत
अद्रोहिष्यम् अद्रोहिष्याव अद्रोहिष्याम

अध्रोक्ष्यत् अध्रोक्ष्यताम् अध्रोक्ष्यन्
अध्रोक्ष्यः अध्रोक्ष्यतम् अध्रोक्ष्यत
अध्रोक्ष्यम् अध्रोक्ष्याव अध्रोक्ष्याम

॥ ष्णुहौच्–उद्गिरणे ॥ झरवुं टपकवुं,

व० स्नुह्यति स्नुह्यतः स्नुह्यन्ति
स्नुह्यसि स्नुह्यथः स्नुह्यथ
स्नुह्यामि स्नुह्यावः स्नुह्यामः

स० स्नुह्येत् स्नुह्येताम् स्नुह्येयुः
स्नुह्येः स्नुह्येतम् स्नुह्येत
स्नुह्येयम् स्नुह्येव स्नुह्येम

प० स्नुह्यतु स्नुह्यतात् स्नुह्यताम् स्नुह्यन्तु
स्नुह्य ,, स्नुह्यतम् स्नुह्यत
स्नुह्यानि स्नुह्याव स्नुह्याम

ह्य० अस्नुह्यत् अस्नुह्यताम् अस्नुह्यन्
अस्नुह्यः अस्नुह्यतम् अस्नुह्यत
अस्नुह्यम् अस्नुह्याव अस्नुह्याम
अ० अस्नुहत् अस्नुहताम् अस्नुहन्
अस्नुहः अस्नुहतम् अस्नुहत
अस्नुहम् अस्नुहाव अस्नुहाम
प० सुष्णोह सुष्णुहतु सुष्णुहुः
सुष्णोहिथ सुष्णुहथुः सुष्णुह
सुष्णोह सुष्णुहिव सुष्णुहिम
मतान्तरे–सुष्णोग्ध, सुष्णोढ, सुष्णुह्व, सुष्णुह्म
आ० स्नुह्यात् स्नुह्यास्ताम् स्नुह्यासुः
स्नुह्याः स्नुह्यास्तम् स्नुह्यास्त
स्नुह्यासम् स्नुह्यास्व स्नुह्यास्म
श्व० स्नोहिता स्नोहितारौ स्नोहितारः
स्नोहितासि स्नोहितास्थः स्नोहितास्थ
स्नोहितास्मि स्नोहितास्वः स्नोहितास्मः
श्व० स्नोग्धा स्नोग्धारौ स्नोग्धारः
स्नोग्धासि स्नोग्धास्थः स्नोग्धास्थ
स्नोग्धास्मि स्नोग्धास्वः स्नोग्धास्मः
स्नोढा स्नोढारौ स्नोढारः
स्नोढासि स्नोढास्थः स्नोढास्थ
स्नोढास्मि स्नोढास्वः स्नोढास्मः
भ० स्नोहिष्यति स्नोहिष्यतः स्नोहिष्यन्ति
स्नोहिष्यसि स्नोहिष्यथः स्नोहिष्यथ
स्नोहिष्यामि स्नोहिष्यावः स्नोहिष्यामः
स्नोक्ष्यति स्नोक्ष्यतः स्नोक्ष्यन्ति
स्नोक्ष्यसि स्नोक्ष्यथः स्नोक्ष्यथ
स्नोक्ष्यामि स्नोक्ष्यावः स्नोक्ष्यामः
क्रि० अस्नोहिष्यत् अस्नोहिष्यताम् अस्नोहिष्यन्
अस्नोहिष्यः अस्नोहिष्यतम् अस्नोहिष्यत
अस्नोहिष्यम् अस्नोहिष्याव अस्नोहिष्याम
अस्नोक्ष्यत् अस्नोक्ष्यताम् अस्नोक्ष्यन्
अस्नोक्ष्यः अस्नोक्ष्यतम् अस्नोक्ष्यत
अस्नोक्ष्यम् अस्नोक्ष्याव अस्नोक्ष्याम

॥ ष्णिहँच्–प्रीतौ ॥ प्रेम राखवो स्नेह राखवो ।

व० स्निह्यति स्निह्यतः स्निह्यन्ति
स्निह्यसि स्निह्यथः स्निह्यथ
स्निह्यामि स्निह्यावः स्निह्यामः
स० स्निह्येत् स्निह्येताम् स्निह्येयुः
स्निह्येः स्निह्येतम् स्निह्येत
स्निह्येयम् स्निह्येव स्निह्येम
प० स्निह्यतु तात् स्निह्यताम् स्निह्यन्तु
स्निह्य ,, स्निह्यतम् स्निह्यत
स्निह्यानि स्निह्याव स्निह्याम
ह्य० अस्निह्यत् अस्निह्यताम् अस्निह्यन्
अस्निह्यः अस्निह्यतम् अस्निह्यत
अस्निह्यम् अस्निह्याव अस्निह्याम
अ० अस्निहत् अस्निहताम् अस्निहन्
अस्निहः अस्निहतम् अस्निहत
अस्निहम् अस्निहाव अस्निहाम
प० सिष्णेह सिष्णिहतुः सिष्णिहुः
सिष्णेहिथ सिष्णिहथुः सिष्णिह
सिष्णेह सिष्णिहिव सिष्णिहिम
मतान्तरे–सिष्णेग्ध सिष्णेढ सिष्णिह्व सिष्णिह्म
आ० स्निह्यात् स्निह्यास्ताम् स्निह्यासुः
स्निह्याः स्निह्यास्तम् स्निह्यास्त
स्निह्यासम् स्निह्यास्व स्निह्यास्म
श्व० स्नेहिता स्नेहितारौ स्नेहितारः
स्नेहितासि स्नेहितास्थः स्नेहितास्थ
स्नेहितास्मि स्नेहितास्वः स्नेहितास्मः
स्नेग्धा स्नेग्धारौ स्नेग्धारः
स्नेग्धासि स्नेग्धास्थः स्नेग्धास्थ
स्नेग्धास्मि स्नेग्धास्वः स्नेग्धास्मः
स्नेढा स्नेढारौ स्नेढारः
स्नेढासि स्नेढास्थः स्नेढास्थ
स्नेढास्मि स्नेढास्वः स्नेढास्मः

भ० स्नेहिष्यति स्नेहिष्यतः स्नेहिष्यन्ति
स्नेहिष्यसि स्नेहिष्यथः स्नेहिष्यथ
स्नेहिष्यामि स्नेहिष्यावः स्नेहिष्यामः

स्नेक्ष्यति स्नेक्ष्यतः स्नेक्ष्यन्ति
स्नेक्ष्यसि स्नेक्ष्यथः स्नेक्ष्यथ
स्नेक्ष्यामि स्नेक्ष्यावः स्नेक्ष्यामः

क्रि०अस्नेहिष्यत् अस्नेहिष्यताम् अस्नेहिष्यन्
अस्नेहिष्यः अस्नेहिष्यतम् अस्नेहिष्यत
अस्नेहिष्यम् अस्नेहिष्याव अस्नेहिष्याम

अस्नेक्ष्यत् अस्नेक्ष्यताम् अस्नेक्ष्यन्
अस्नेक्ष्यः अस्नेक्ष्यतम् अस्नेक्ष्यत
अस्नेक्ष्यम् अस्नेक्ष्याव अस्नेक्ष्याम

॥ इति पुषादिः ॥

॥ इति दिवादयः परस्मैपदिनः ॥

॥ अथात्मनेपदिनः ॥

॥ षूङौच्-प्राणिप्रसवे ॥ जन्म थवो प्रसववु

व० सूयते सूयेते सूयन्ते
सूयसे सूयेथे सूयध्वे
सूये सूयावहे सूयामहे

स० सूयेत सूयेयाताम् सूयेरन्
सूयेथाः सूयेयाथाम् सूयेध्वम्
सूयेय सूयेवहि सूयेमहि

प० सूयताम् सूयेताम् सूयन्ताम्
सूयस्व सूयेथाम् सूयध्वम्
सूयै सूयावहै सूयामहै

ह्य० असूयत असूयेताम् असूयन्त
असूयथाः असूयेथाम् असूयध्वम्
असूये असूयावहि असूयामहि

अ० असविष्ट असविषाताम् असविषत
असविष्ठाः असविषाथाम् असविढ्ढ्वम्
ध्वम् ढ्वम्
असविषि असविष्वहि असविष्महि
असोष्ट असोषाताम् असोषत
असोष्ठाः असोषाथाम् असोढ्ढ्वम् ढ्वम्
असोषि असोष्वहि असोष्महि

प० सुषुवे सुषुवाते सुषुविरे
सुषुविषे सुषुवाथे सुषुविध्वे ढ्वे
सुषुवे सुषुविवहे सुषुविमहे

आ० सविषीष्ट सविषीयास्ताम् सविषीरन्
सविषीष्ठाः सविषीयास्थाम् सविषीढ्वम्
ध्वम्
सविषीय सविषीवहि सविषीमहि
सोषीष्ट सोषीयास्ताम् सोषीरन्
सोषीष्ठाः सोषीयास्थाम् सोषीढ्वम्
सोषीय सोषीवहि सोषीमहि

श्व० सविता सवितारौ सवितारः
सवितासे सवितासाथे सविताध्वे
सविताहे सवितास्वहे सवितास्महे
सोता सोतारौ सोतारः
सोतासे सोतासाथे सोताध्वे
सोताहे सोतास्वहे सोतास्महे

भ० सविष्यते सविष्येते सविष्यन्ते
सविष्यसे सविष्येथे सविष्यध्वे
सविष्ये सविष्यावहे सविष्यामहे
सोष्यते सोष्येते सोष्यन्ते
सोष्यसे सोष्येथे सोष्यध्वे
सोष्ये सोष्यावहे सोष्यामहे

क्रि० असविष्यत असविष्येताम् असविष्यन्त
असविष्यथाः असविष्येथाम् असविष्यध्वम्
असविष्ये असविष्यावहि असविष्यामहि

असोष्यत असोष्येताम् असोष्यन्त
असोष्यथाः असोष्येथाम् असोष्यध्वम्
असोष्ये असोष्यावहि असोष्यामहि

दूङ्च्-परितापे (खेद पामवुं)

व० दूयते दूयेते दूयन्ते
दूयसे दूयेथे दूयध्वे
दूये दूयावहे दूयामहे

स० दूयेत दूयेयाताम् दूयेरन्
दूयेथाः दूयेयाथाम् दूयेध्वम्
दूयेय दूयेवहि दूयेमहि

प० दूयताम् दूयेताम् दूयन्ताम्
दूयस्व दूयेथाम् दूयध्वम्
दूयै दूयावहै दूयामहै

ह्य० अदूयत अदूयेताम् अदूयन्त
अदूयथाः अदूयेथाम् अदूयध्वम्
अदूये अदूयावहि अदूयामहि

अ० अदविष्ट अदविषाताम् अदविषत
अदविष्ठाः अदविषाथाम् अदविड्ढ्वम्
ढ्वम्-ध्वम्
अदविषि अदविष्वहि अदविष्महि

प० दुदुवे दुदुवाते दुदुविरे
दुदुविषे दुदुवाथे दुदुवि वे-ध्वे
दुदुवे दुदुविवहे दुदुविमहे

आ० दविषीष्ट दविषीयास्ताम् दविषीरन्
दविषीष्ठाः दविषीयास्थाम् दविषीढ्वम्-ध्वम्
दविषीय दविषीवहि दविषीमहि

श्व० दविता दवितारौ दवितारः
दवितासे दवितासाथे दविताध्वे
दविताहे दवितास्वहे दवितास्महे

भ० दविष्यते दविष्येते दविष्यन्ते
दविष्यसे दविष्येथे दविष्यध्वे
दविष्ये दविष्यावहे दविष्यामहे

क्रि० अदविष्यत अदविष्येताम् अदविष्यन्त
अदविष्यथाः अदविष्येथाम् अदविष्यध्वम्
अदविष्ये अदविष्यावहि अदविष्यामहि

॥ दीङ्च्-क्षये नाश थवो ॥

व० दीयते दीयेते दीयन्ते
दीयसे दीयेथे दीयध्वे
दीये दीयावहे दीयामहे

स० दीयेत दीयेयाताम् दीयेरन्
दीयेथाः दीयेयाथाम् दीयेध्वम्
दीयेय दीयेवहि दीयेमहि

प० दीयताम् दीयेताम् दीयन्ताम्
दीयस्व दीयेथाम् दीयध्वम्
दीयै दीयावहै दीयामहै

ह्य० अदीयत अदीयेताम् अदीयन्त
अदीयथाः अदीयेथाम् अदीयध्वम्
अदीये अदीयावहि अदीयामहि

अ० अदास्त अदासाताम् अदासत
अदास्थाः अदासाथाम् अदाध्वम्-द्ध्वम्
अदासि अदास्वहि अदास्महि

प० दिदीये दिदीयाते दिदीयिरे
दिदीयिषे दिदीयाथे दिदीयिध्वे-ढ्वे
दिदीये दिदीयावहे दिदीयामहे

आ० दासीष्ट दासीयास्ताम् दासीरन्
दासीष्ठाः दासीयास्थाम् दासीध्वम्
दासीय दासीवहि दासीमहि

श्व० दाता दातारौ दातारः
दातासे दातासाथे दाताध्वे
दाताहे दातास्वहे दातास्महे

भ० दास्यते दास्येते दास्यन्ते
दास्यसे दास्येथे दास्यध्वे
दास्ये दास्यावहे दास्यामहे

क्रि० अदास्यत अदास्येताम् अदास्यन्त
अदास्यथाः अदास्येथाम् अदास्यध्वम्
अदास्ये अदास्यावहि अदास्यामहि

॥ धीङ्च्-अनादरे ॥ अनादर करवो
धीयते । अधेष्ट । दिध्ये ।

॥ मीङ्च्-हिंसायाम् ॥ मारवुं ।

मीयते । अमेष्ट । मिम्ये ।

॥ रीङ्च्–श्रवणे ॥ सांभळवुं ।

रीयते । अरेष्ट । रिर्ये ।

॥ लिङ्च्–श्लेषणे ॥ वळगवुं चोटवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | लीयते | लीयेते | लीयन्ते |
| | लीयसे | लीयेथे | लीयध्वे |
| | लीये | लीयावहे | लीयामहे |
| स० | लीयेत | लीयेयाताम् | लीयेरन् |
| | लीयेथाः | लीयेयाथाम् | लीयेध्वम् |
| | लीयेय | लीयेवहि | लीयेमहि |
| प० | लीयताम् | लीयेताम् | लीयन्ताम् |
| | लीयस्व | लीयेथाम् | लीयध्वम् |
| | लीयै | लीयावहै | लीयामहै |
| ह्य० | अलीयत | अलीयेताम् | अलीयन्त |
| | अलीयथाः | अलीयेथाम् | अलीयध्वम् |
| | अलीये | अलीयावहि | अलीयामहि |
| अ० | व्यलास्त | व्यलासाताम् | व्यलासत |
| | व्यलास्थाः | व्यलासाथाम् | व्यलाध्वम् द्ध्वम् |
| | व्यलासि | व्यलास्वहि | व्यलास्महि |
| | व्यलेष्ट | व्यलेषाताम् | व्यलेषत |
| | व्यलेष्ठाः | व्यलेषाथाम् | व्यलेढ्ढ्वम् ढ्वम् |
| | व्यलेषि | व्यलेष्वहि | व्यलेष्महि |
| प० | विलिल्ये | विलिल्याते | विलिल्यिरे |
| | विलिल्यिषे | विलिल्याथे | विलिल्यिढ्वे-ध्वे |
| | विलिल्ये | विलिल्यिवहे | विलिल्यिमहे |
| आ० | लेषीष्ट | लेषीयास्ताम् | लेषीरन् |
| | लेषीष्ठाः | लेषीयास्थाम् | लेषीढ्वम् |
| | लेषीय | लेषीवहि | लेषीमहि |
| | लासीष्ट | लासीयास्ताम् | लासीरन् |
| | लासीष्ठाः | लासीयास्थाम् | लासीध्वम् |
| | लासीय | लासीवहि | लासीमहि |
| श्व० | लेता | लेतारौ | लेतारः |
| | लेतासे | लेतासाथे | लेताध्वे |
| | लेताहे | लेतास्वहे | लेतास्महे |
| | लाता | लातारौ | लातारः |
| | लातासे | लातासाथे | लाताध्वे |
| | लाताहे | लातास्वहे | लातास्महे |
| भ० | लेष्यते | लेष्येते | लेष्यन्ते |
| | लेष्यसे | लेष्येथे | लेष्यध्वे |
| | लेष्ये | लेष्यावहे | लेष्यामहे |
| | लास्यते | लास्येते | लास्यन्ते |
| | लास्यसे | लास्येथे | लास्यध्वे |
| | लास्ये | लास्यावहे | लास्यामहे |
| क्रि० | अलेष्यत | अलेष्येताम् | अलेष्यन्त |
| | अलेष्यथाः | अलेष्येथाम् | अलेष्यध्वम् |
| | अलेष्ये | अलेष्यावहि | अलेष्यामहि |
| | अलास्यत | अलास्येताम् | अलास्यन्त |
| | अलास्यथाः | अलास्येथाम् | अलास्यध्वम् |
| | अलास्ये | अलास्यावहि | अलास्यामहि |

॥ डीङ्च्–गतौ ॥ जवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | डीयते | डीयेते | डीयन्ते |
| | डीयसे | डीयेथे | डीयध्वे |
| | डीये | डीयावहे | डीयामहे |
| स० | डीयेत | डीयेयाताम् | डीयेरन् |
| | डीयेथाः | डीयेयाथाम् | डीयेध्वम् |
| | डीयेय | डीयेवहि | डीयेमहि |
| प० | डीयताम् | डीयेयाताम् | डीयन्ताम् |
| | डीयस्व | डीयेथाम् | डीयध्वम् |
| | डीयै | डीयावहै | डीयामहै |
| ह्य० | अडीयत | अडीयेताम् | अडीयन्त |
| | अडीयथाः | अडीयेथाम् | अडीयध्वम् |
| | अडीये | अडीयावहि | अडीयामहि |
| अ० | अडयिष्ट | अडयिषाताम् | अडयिषत |
| | अडयिष्ठाः | अडयिषाथाम् | अडयिढ्ढ्वम् ढ्वम् ध्वम् |
| | अडयिषि | अडयिष्वहि | अडयिष्महि |

प० डिड्ये डिड्याते डिड्यिरे
डिडियषे डिड्याथे डिडियढ्वे-ध्वे
डिड्ये डिडियवहे डिडियमहे
आ० डयिषीष्ट डयिषीयास्ताम् डयिषीरन्
डयिषीष्ठाः डयिषीयास्थाम् डयिषीढ्वम्-ध्वम्
डयिषीय डयिषीवहि डयिषीमहि
डयिता डयितारौ डयितारः
डयितासे डयितासाथे डयिताध्वे
डयिताहे डयितास्वहे डयितास्महे
भ० डयिष्यते डयिष्येते डयिष्यन्ते
डयिष्यसे डयिष्येथे डयिष्यध्वे
डयिष्ये डयिष्यावहे डयिष्यामहे
क्रि० अडयिष्यत अडयिष्येताम् अडयिष्यन्त
अडयिष्यथाः अडयिष्येथाम् अडयिष्यध्वम्
अडयिष्ये अडयिष्यावहि अडयिष्यामहि

॥ व्रींङ्च्-वरणे ॥ वरवुं, स्वीकारवुं ।
व्रीयते । अव्रेष्ट । विव्रिये ।

## ॥ इति सूयत्यादिः ॥

॥ पींङ्च्-पाने ॥ पीवुं ।
पीयते । अपेष्ट । पिप्ये ।

॥ ईङ्च्-गतौ ॥ जवुं ।
ईयते । ऐष्ट । अयाञ्चक्रे । मतान्तरे-ईये.
अयामास अयाम्बभूव ।

॥ प्रींङ्च्-प्रीतौ ॥ प्रसन्न थवुं तृप्त करवुं
प्रीयते । अप्रेष्ट । पिप्रिये ।

॥ युजिंच्-समाधौ चित्तवृत्तेर्निरोधे, ॥
चित्तवृत्ति रोकवी. समाधी करवी.

व० युज्यते युज्येते युज्यन्ते
युज्यसे युज्येथे युज्यध्वे
युज्ये युज्यावहे युज्यामहे
स० युज्येत युज्येयाताम् युज्येरन्
युज्येथाः युज्येयाथाम् युज्येध्वम्
युज्येय युज्येवहि युज्येमहि
प० युज्यताम् युज्येताम् युज्यन्ताम्
युज्यस्व युज्येथाम् युज्यध्वम्
युज्यै युज्यावहै युज्यामहै
ह्य० अयुज्यत अयुज्येताम् अयुज्यन्त
अयुज्यथाः अयुज्येथाम् अयुज्यध्वम्
अयुज्ये अयुज्यावहि अयुज्यामहि
अ० अयुक्त अयुक्षाताम् अयुक्षत
अयुक्थाः अयुक्षाथाम् अयुग्ध्वम्
-ग्ढ्वम्
अयुक्षि अयुक्ष्वहि अयुक्ष्महि
प० युयुजे युयुजाते युयुजिरे
युयुजिषे युयुजाथे युयुजिध्वे
युयुजे युयुजिवहे युयुजिमहे
आ० युक्षीष्ट युक्षीयास्ताम् युक्षीरन्
युक्षीष्ठाः युक्षीयास्थाम् युक्षीध्वम्
युक्षीय युक्षीवहि युक्षीमहि
श्व० योक्ता योक्तारौ योक्तारः
योक्तासे योक्तासाथे योक्ताध्वे
योक्ताहे योक्तास्वहे योक्तास्महे
भ० योक्ष्यते योक्ष्येते योक्ष्यन्ते
योक्ष्यसे योक्ष्येथे योक्ष्यध्वे
योक्ष्ये योक्ष्यावहे योक्ष्यामहे
क्रि० अयोक्ष्यत अयोक्ष्येताम् अयोक्ष्यन्त
अयोक्ष्यथाः अयोक्ष्येथाम् अयोक्ष्यध्वम्
अयोक्ष्ये अयोक्ष्यावहि अयोक्ष्यामहि

॥ सृजिंच्-विसर्गे ॥ त्याग करवुं ॥

व० सृज्यते सृज्येते सृज्यन्ते
सृज्यसे सृज्येथे सृज्यध्वे
सृज्ये सृज्यावहे सृज्यामहे
स० सृज्येत सृज्येयाताम् सृज्येरन्
सृज्येथाः सृज्येयाथाम् सृज्येध्वम्
सृज्येय सृज्येवहि सृज्येमहि
प० सृज्यताम् सृज्येताम् सृज्यन्ताम्

| | | | |
|---|---|---|---|
| | सृज्यस्व | सृज्येथाम् | सृज्यध्वम् |
| | सृज्यै | सृज्यावहै | सृज्यामहै |
| ह्य० | असृज्यत | असृज्येताम् | असृज्यन्त |
| | असृज्यथाः | असृज्येथाम् | असृज्यध्वम् |
| | असृज्ये | असृज्यावहि | असृज्यामहि |
| अ० | असृष्ट | असृक्षाताम् | असृक्षत |
| | असृष्ठाः | असृक्षाथाम् | असृड्ढ्वम् ग्ड्ढ्वम् |
| | असृक्षि | असृक्ष्वहि | असृक्ष्महि |
| प० | ससृजे | ससृजाते | ससृजिरे |
| | ससृजिषे | ससृजाथे | ससृजिध्वे |
| | ससृजे | ससृजिवहे | ससृजिमहे |
| आ० | सृक्षीष्ट | सृक्षीयास्ताम् | सृक्षीरन् |
| | सृक्षीष्ठाः | सृक्षीयास्थाम् | सृक्षीध्वम् |
| | सृक्षीय | सृक्षीवहि | सृक्षीमहि |
| श्व० | स्रष्टा | स्रष्टारौ | स्रष्टारः |
| | स्रष्टासे | स्रष्टासाथे | स्रष्टाध्वे |
| | स्रष्टाहे | स्रष्टास्वहे | स्रष्टास्महे |
| भ० | स्रक्ष्यते | स्रक्ष्येते | स्रक्ष्यन्ते |
| | स्रक्ष्यसे | स्रक्ष्येथे | स्रक्ष्यध्वे |
| | स्रक्ष्ये | स्रक्ष्यावहे | स्रक्ष्यामहे |
| क्रि० | अस्रक्ष्यत | अस्रक्ष्येताम् | अस्रक्ष्यन्त |
| | अस्रक्ष्यथाः | अस्रक्ष्येथाम् | अस्रक्ष्यध्वम् |
| | अस्रक्ष्ये | अस्रक्ष्यावहि | अस्रक्ष्यामहि |

॥ वृतूचि–वरणे ॥ वरवुं. स्वीकारवुं.
वृत्यते । अवर्तिष्ट । ववृते ।
मतान्तरे वावृति इति पाठे ।
वावृत्यते । अवावर्तिष्ट । वावर्ताञ्चक्रे

॥ पदिंच्–गतौ ॥ जवुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | पद्यते | पद्येते | पद्यन्ते |
| | पद्यसे | पद्येथे | पद्यध्वे |
| | पद्ये | पद्यावहे | पद्यामहे |
| स० | पद्येत | पद्येयाताम् | पद्येरन् |
| | पद्येथाः | पद्येयाथाम् | पद्येध्वम् |
| | पद्येय | पद्येवहि | पद्येमहि |
| प० | पद्यताम् | पद्येताम् | पद्यन्ताम् |
| | पद्यस्व | पद्येथाम् | पद्यध्वम् |
| | पद्यै | पद्यावहै | पद्यामहै |
| ह्य० | अपद्यत | अपद्येताम् | अपद्यन्त |
| | अपद्यथाः | अपद्येथाम् | अपद्यध्वम् |
| | अपद्ये | अपद्यावहि | अपद्यामहि |
| अ० | अपादि | अपत्साताम् | अपत्सत |
| | अपत्थाः | अपत्साथाम् | अपद्ध्वम्-द्ध्वम् |
| | अपत्सि | अपत्स्वहि | अपत्स्महि |
| प० | पेदे | पेदाते | पेदिरे |
| | पेदिषे | पेदाथे | पेदिध्वे |
| | पेदे | पेदिवहे | पेदिमहे |
| आ० | पत्सीष्ट | पत्सीयास्ताम् | पत्सीरन् |
| | पत्सीष्ठाः | पत्सीयास्थाम् | पत्सीध्वम् |
| | पत्सीय | पत्सीवहि | पत्सीमहि |
| श्व० | पत्ता | पत्तारौ | पत्तारः |
| | पत्तासे | पत्तासाथे | पत्ताध्वे |
| | पत्ताहे | पत्तास्वहे | पत्तास्महे |
| भ० | पत्स्यते | पत्स्येते | पत्स्यन्ते |
| | पत्स्यसे | पत्स्येथे | पत्स्यध्वे |
| | पत्स्ये | पत्स्यावहे | पत्स्यामहे |
| क्रि० | अपत्स्यत | अपत्स्येताम् | अपत्स्यन्त |
| | अपत्स्यथाः | अपत्स्येथाम् | अपत्स्यध्वम् |
| | अपत्स्ये | अपत्स्यावहि | अपत्स्यामहि |

॥ विदिंच्–सत्तायाम् ॥ थवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | विद्यते | विद्येते | विद्यन्ते |
| | विद्यसे | विद्येथे | विद्यध्वे |
| | विद्ये | विद्यावहे | विद्यामहे |
| स० | विद्येत | विद्येयाताम् | विद्येरन् |
| | विद्येथाः | विद्येयाथाम् | विद्येध्वम् |
| | विद्येय | विद्येवहि | विद्येमहि |
| प० | विद्यताम् | विद्येताम् | विद्यन्ताम् |
| | विद्यस्व | विद्येयाथाम् | विद्यध्वम् |
| | विद्यै | विद्यावहै | विद्यामहै |

ह्य० अविद्यत अविद्येताम् अविद्यन्त
अविद्यथाः अविद्येथाम् अविद्यध्वम्
अविद्ये अविद्यावहि अविद्यामहि
अ० अवित्त अवित्साताम् अवित्सत
अवित्थाः अवित्साथाम् अविद्ध्वम् द्ध्वम्
अवित्सि अवित्स्वहि अवित्स्महि
प० विविदे विविदाते विविदिरे
विविदिषे विविदाथे विविदिध्वे
विविदे विविदिवहे विविदिमहे
आ० वित्सीष्ट वित्सीयास्ताम् वित्सीरन्
वित्सीष्ठाः वित्सीयास्थाम् वित्सीध्वम्
वित्सीय वित्सीवहि वित्सीमहि
श्व० वेत्ता वेत्तारौ वेत्तारः
वेत्तासे वेत्तासाथे वेत्ताध्वे
वेत्ताहे वेत्तास्वहे वेत्तास्महे
भ० वेत्स्यते वेत्स्येते वेत्स्यन्ते
वेत्स्यसे वेत्स्येथे वेत्स्यध्वे
वेत्स्ये वेत्स्यावहे वेत्स्यामहे
क्रि० अवेत्स्यत अवेत्स्येताम् अवेत्स्यन्त
अवेत्स्यथाः अवेत्स्येथाम् अवेत्स्यध्वम्
अवेत्स्ये अवेत्स्यावहि अवेत्स्यामहि

॥ खिदिंच्–दैन्ये ॥ खेद पामवो ।

व० खिद्यते खिद्येते खिद्यन्ते
खिद्यसे खिद्येथे खिद्यध्वे
खिद्ये खिद्यावहे खिद्यामहे
स० खिद्येत खिद्येयाताम् खिद्येरन्
खिद्येथाः खिद्येयाथाम् खिद्येध्वम्
खिद्येय खिद्येवहि खिद्येमहि
प० खिद्यताम् खिद्येताम् खिद्यन्ताम्
खिद्यस्व खिद्येथाम् खिद्यध्वम्
खिद्यै खिद्यावहै खिद्यामहै
ह्य० अखिद्यत अखिद्येताम् अखिद्यन्त
अखिद्यथाः अखिद्येथाम् अखिद्यध्वम्
अखिद्ये अखिद्यावहि अखिद्यामहि
अ० अखित्त अखित्साताम् अखित्सत
अखित्थाः अखित्साथाम् अखिद्ध्वम्-द्ध्वम्
अखित्सि अखित्स्वहि अखित्स्महि
प० चिखिदे चिखिदाते चिखिदिरे
चिखिदिषे चिखिदाथे चिखिदिध्वे
चिखिदे चिखिदिवहे चिखिदिमहे
आ० खित्सीष्ट खित्सीयास्ताम् खित्सीरन्
खित्सीष्ठाः खित्सीयास्थाम् खित्सीध्वम्
खित्सीय खित्सीवहि खित्सीमहि
श्व० खेत्ता खेत्तारौ खेत्तारः
खेत्तासे खेत्तासाथे खेत्ताध्वे
खेत्ताहे खेत्तास्वहे खेत्तास्महे
भ० खेत्स्यते खेत्स्येते खेत्स्यन्ते
खेत्स्यसे खेत्स्येथे खेत्स्यध्वे
खेत्स्ये खेत्स्यावहे खेत्स्यामहे
क्रि० अखेत्स्यत अखेत्स्येताम् अखेत्स्यन्त
अखेत्स्यथाः अखेत्स्येथाम् अखेत्स्यध्वम्
अखेत्स्ये अखेत्स्यावहि अखेत्स्यामहि

॥ युधिंच्–संप्रहारे ॥ प्रहार करवो युद्ध करवुं

व० युध्यते युध्येते युध्यन्ते
युध्यसे युध्येथे युध्यध्वे
युध्ये युध्यावहे युध्यामहे
स० युध्येत युध्येयाताम् युध्येरन्
युध्येथाः युध्येयाथाम् युध्येध्वम्
युध्येय युध्येवहि युध्येमहि
प० युध्यताम् युध्येताम् युध्यन्ताम्
युध्यस्व युध्येथाम् युध्यध्वम्
युध्यै युध्यावहै युध्यामहै
ह्य० अयुध्यत अयुध्येताम् अयुध्यन्त
अयुध्यथाः अयुध्येथाम् अयुध्यध्वम्
अयुध्ये अयुध्यावहि अयुध्यामहि
अ० अयुद्ध अयुत्साताम् अयुत्सत
अयुद्धाः अयुत्साथाम् अयुद्ध्वम् द्ध्वम्

अयुत्सि अयुत्स्वहि अयुत्स्महि

प० युयुधे युयुधाते युयुधिरे
युयुधिषे युयुधाथे युयुधिध्वे
युयुधे युयुधिवहे युयुधिमहे

आ० युत्सीष्ट युत्सीयास्ताम् युत्सीरन्
युत्सीष्ठाः युत्सीयास्थाम् युत्सीध्वम्
युत्सीय युत्सीवहि युत्सीमहि

श्व० योद्धा योद्धारौ योद्धारः
योद्धासे योद्धासाथे योद्धाध्वे
योद्धाहे योद्धास्वहे योद्धास्महे

भ० योत्स्यते योत्स्येते योत्स्यन्ते
योत्स्यसे योत्स्येथे योत्स्यध्वे
योत्स्ये योत्स्यावहे योत्स्यामहे

क्रि० अयोत्स्यत अयोत्स्येताम् अयोत्स्यन्त
अयोत्स्यथाः अयोत्स्येथाम् अयोत्स्यध्वम्
अयोत्स्ये अयोत्स्यावहि अयोत्स्यामहि

॥ अनोरुधिंच्–कामे, काम इच्छा इच्छवुं

व० अनुरुध्यते अनुरुध्येते अनुरुध्यन्ते
अनुरुध्यसे अनुरुध्येथे अनुरुध्यध्वे
अनुरुध्ये अनुरुध्यावहे अनुरुध्यामहे

स० अनुरुध्येत अनुरुध्येयाताम् अनुरुध्येरन्
अनुरुध्येथाः अनुरुध्येयाथाम् अनुरुध्येध्वम्
अनुरुध्येय अनुरुध्येवहि अनुरुध्येमहि

प० अनुरुध्यताम् अनुरुध्येताम् अनुरुध्यन्ताम्
अनुरुध्यस्व अनुरुध्येथाम् अनुरुध्यध्वम्
अनुरुध्यै अनुरुध्यावहै अनुरुध्यामहै

ह्य० अन्वरुध्यत अन्वरुध्येताम् अन्वरुध्यन्त
अन्वरुध्यथाः अन्वरुध्येथाम् अन्वरुध्यध्वम्
अन्वरुध्ये अन्वरुध्यावहि अन्वरुध्यामहि

अ० अन्वरुद्ध अन्वरुत्साताम् अन्वरुत्सत
अन्वरुद्धाः अन्वरुत्साथाम् अन्वरुद्ध्वम्-
द्ध्वम्
अन्वरुत्सि अन्वरुत्स्वहि अन्वरुत्स्महि

प० अनुरुरुधे अनुरुरुधाते अनुरुरुधिरे
अनुरुरुधिषे अनुरुरुधाथे अनुरुरुधिध्वे
अनुरुरुधे अनुरुरुधिवहे अनुरुरुधिमहे

आ० अनुरुत्सीष्ट अनुरुत्सीयास्ताम् अनुरुत्सीरन्
अनुरुत्सीष्ठाः अनुरुत्सीयास्थाम् अनुरुत्सीध्वम्
अनुरुत्सीय अनुरुत्सीवहि अनुरुत्सीमहि

श्व० अनुरोद्धा अनुरोद्धारौ अनुरोद्धारः
अनुरोद्धासे अनुरोद्धासाथे अनुरोद्धाध्वे
अनुरोद्धाहे अनुरोद्धास्वहे अनुरोद्धास्महे

भ० अनुरोत्स्यते अनुरोत्स्येते अनुरोत्स्यन्ते
अनुरोत्स्यसे अनुरोत्स्येथे अनुरोत्स्यध्वे
अनुरोत्स्ये अनुरोत्स्यावहे अनुरोत्स्यामहे

क्रि० अन्वरोत्स्यत अन्वरोत्स्येताम् अन्वरोत्स्यन्त
अन्वरोत्स्यथाः अन्वरोत्स्येथाम् अन्वरोत्स्यध्वम्
अन्वरोत्स्ये अन्वरोत्स्यावहि अन्वरोत्स्यामहि

॥ कामादन्यत्र रुधादित्वात् श्नः—
अनुरुणद्धि । अनुरुन्द्धे । इत्यादि ।

॥ बुधिंच्–ज्ञाने, ॥ जाणवुं, समजवुं,

व० बुध्यते बुध्येते बुध्यन्ते
बुध्यसे बुध्येथे बुध्यध्वे
बुध्ये बुध्यावहे बुध्यामहे

स० बुध्येत बुध्येयाताम् बुध्येरन्
बुध्येथाः बुध्येयाथाम् बुध्येध्वम्
बुध्येय बुध्येवहि बुध्येमहि

प० बुध्यताम् बुध्येताम् बुध्यन्ताम्
बुध्यस्व बुध्येथाम् बुध्यध्वम्
बुध्यै बुध्यावहै बुध्यामहै

ह्य० अबुध्यत अबुध्येताम् अबुध्यन्त
अबुध्यथाः अबुध्येथाम् अबुध्यध्वम्
अबुध्ये अबुध्यावहि अबुध्यामहि

अ० अबोधि अबुद्ध अभुत्साताम् अभुत्सत
अबुद्धाः अभुत्साथाम् अभुद्ध्वम्
अभुद्द्ध्वम्
अभुत्सि अभुत्स्वहि अभुत्स्महि

प० बुबुधे बुबुधाते बुबुधिरे
बुबुधिषे बुबुधाथे बुबुधिध्वे
बुबुधे बुबुधिवहे बुबुधिमहे

आ० भुत्सीष्ट भुत्सीयास्ताम् भुत्सीरन्
भुत्सीष्ठाः भुत्सीयास्थाम् भुत्सीध्वम्
भुत्सीय भुत्सीवहि भुत्सीमहि

श्व० बोद्धा बोद्धारौ बोद्धारः
बोद्धासे बोद्धासाथे बोद्धाध्वे
बोद्धाहे बोद्धास्वहे बोद्धास्महे

भ० भोत्स्यते भोत्स्येते भोत्स्यन्ते
भोत्स्यसे भोत्स्येथे भोत्स्यध्वे
भोत्स्ये भोत्स्यावहे भोत्स्यामहे

क्रि० अभोत्स्यत अभोत्स्येताम् अभोत्स्यन्त
अभोत्स्यथाः अभोत्स्येथाम् अभोत्स्यध्वम्
अभोत्स्ये अभोत्स्यावहि अभोत्स्यामहि

॥ मनिंच्-ज्ञाने ॥ जाणवुं ।

व० मन्यते मन्येते मन्यन्ते
मन्यसे मन्येथे मन्यध्वे
मन्ये मन्यावहे मन्यामहे

स० मन्येत मन्येयाताम् मन्येरन्
मन्येथाः मन्येयाथाम् मन्येध्वम्
मन्येय मन्येवहि मन्येमहि

प० मन्यताम् मन्येताम् मन्यन्ताम्
मन्यस्व मन्येथाम् मन्यध्वम्
मन्यै मन्यावहै मन्यामहै

ह्य० अमन्यत अमन्येताम् अमन्यन्त
अमन्यथाः अमन्येथाम् अमन्यध्वम्
अमन्ये अमन्यावहि अमन्यामहि

अ० अमंस्त अमंसाताम् अमंसत
अमंस्थाः अमंसाथाम् अमंध्वम् द्ध्वम् ध्वम्
अमंसि अमंस्वहि अमंस्महि

प० मेने मेनाते मेनिरे
मेनिषे मेनाथे मेनिध्वे
मेने मेनिवहे मेनिमहे

आ० मंसीष्ट मंसीयास्ताम् मंसीरन्
मंसीष्ठाः मंसीयास्थाम् मंसीध्वम्
मंसीय मंसीवहि मंसीमहि

श्व० मन्ता मन्तारौ मन्तारः
मन्तासे मन्तासाथे मन्ताध्वे
मन्ताहे मन्तास्वहे मन्तास्महे

भ० मंस्यते मंस्येते मंस्यन्ते
मंस्यसे मंस्येथे मंस्यध्वे
मंस्ये मंस्यावहे मंस्यामहे

क्रि० अमंस्यत अमंस्येताम् अमंस्यन्त
अमंस्यथाः अमंस्येथाम् अमंस्यध्वम्
अमंस्ये अमंस्यावहि अमंस्यामहि

॥ अनिच्-प्राणने ॥ श्वास लेवो
अन्यते । अनिष्ट । आने
॥ जनेचि-प्रादुर्भावे ॥ उत्पन्न थवुं

व० जायते जायेते जायन्ते
जायसे जायेथे जायध्वे
जाये जायावहे जायामहे

स० जायेत जायेयाताम् जायेरन्
जायेथाः जायेयाथाम् जायेध्वम्
जायेय जायेवहि जायेमहि

प० जायताम् जायेताम् जायन्ताम्
जायस्व जायेथाम् जायध्वम्
जायै जायावहै जायामहै

ह्य० अजायत अजायेताम् अजायन्त
अजायथाः अजायेथाम् अजायध्वम्
अजाये अजायावहि अजायामहि

अ० अजनि अजनिष्ट अजनिषाताम् अजनिषत
अजनिष्ठाः अजनिषाथाम् अजनिड्ढ्वम्
अजनिध्वम्
अजनिषि अजनिष्वहि अजनिष्महि

प० जज्ञे जज्ञाते जज्ञिरे
जज्ञिषे जज्ञाथे जज्ञिध्वे
जज्ञे जज्ञिवहे जज्ञिमहे

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | जनिषीष्ट | जनिषीयास्ताम् | जनिषीरन् |
| | जनिषीष्ठाः | जनिषीयास्थाम् | जनिषीध्वम् |
| | जनिषीय | जनिषीवहि | जनिषीमहि |
| श्व० | जनिता | जनितारौ | जनितारः |
| | जनितासे | जनितासाथे | जनिताध्वे |
| | जनिताहे | जनितास्वहे | जनितास्महे |
| भ० | जनिष्यते | जनिष्येते | जनिष्यन्ते |
| | जनिष्यसे | जनिष्येथे | जनिष्यध्वे |
| | जनिष्ये | जनिष्यावहे | जनिष्यामहे |
| क्रि० | अजनिष्यत | अजनिष्येताम् | अजनिष्यन्त |
| | अजनिष्यथाः | अजनिष्येथाम् | अजनिष्यध्वम् |
| | अजनिष्ये | अजनिष्यावहि | अजनिष्यामहि |

॥ दीपैचि–दीप्तौ ॥ चळकवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | दीप्यते | दीप्येते | दीप्यन्ते |
| | दीप्यसे | दीप्येथे | दीप्यध्वे |
| | दीप्ये | दीप्यावहे | दीप्यामहे |
| स० | दीप्येत | दीप्येयाताम् | दीप्येरन् |
| | दीप्येथाः | दीप्येयाथाम् | दीप्येध्वम् |
| | दीप्येय | दीप्येवहि | दीप्येमहि |
| प० | दीप्यताम् | दीप्येताम् | दीप्यन्ताम् |
| | दीप्यस्व | दीप्येथाम् | दीप्यध्वम् |
| | दीप्यै | दीप्यावहै | दीप्यामहै |
| ह्य० | अदीप्यत | अदीप्येताम् | अदीप्यन्त |
| | अदीप्यथाः | अदीप्येथाम् | अदीप्यध्वम् |
| | अदीप्ये | अदीप्यावहि | अदीप्यामहि |
| अ० | अदीपि अदीपिष्ट | अदीपिषाताम् | अदीपिषत |
| | अदीपिष्ठाः | अदीपिषाथाम् | अदीपिढ्ढ्वम् अदीपिध्वम् |
| | अदीपिषि | अदीपिष्वहि | अदीपिष्महि |
| प० | दिदीपे | दिदीपाते | दिदीपिरे |
| | दिदीपिषे | दिदीपाथे | दिदीपिध्वे |
| | दिदीपे | दिदीपिवहे | दिदीपिमहे |
| आ० | दीपिषीष्ट | दीपिषीयास्ताम् | दीपिषीरन् |
| | दीपिषीष्ठाः | दीपिषीयास्थाम् | दीपिषीध्वम् |
| | दीपिषीय | दीपिषीवहि | दीपिषीमहि |
| श्व० | दीपिता | दीपितारौ | दीपितारः |
| | दीपितासे | दीपितासाथे | दीपिताध्वे |
| | दीपिताहे | दीपितास्वहे | दीपितास्महे |
| भ० | दीपिष्यते | दीपिष्येते | दीपिष्यन्ते |
| | दीपिष्यसे | दीपिष्येथे | दीपिष्यध्वे |
| | दीपिष्ये | दीपिष्यावहे | दीपिष्यामहे |
| क्रि० | अदीपिष्यत | अदीपिष्येताम् | अदीपिष्यन्त |
| | अदीपिष्यथाः | अदीपिष्येथाम् | अदीपिष्यध्वम् |
| | अदीपिष्ये | अदीपिष्यावहि | अदीपिष्यामहि |

॥ तपिच् ऐश्वर्ये वा ॥ प्रतापी थवुं
तपं धूपसन्तापे इत्यस्यैवैश्वर्येऽर्थे
दिवादित्वमात्मनेपदं च वा विधीयते

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | तप्यते | तप्येते | तप्यन्ते |
| | तप्यसे | तप्येथे | तप्यध्वे |
| | तप्ये | तप्यावहे | तप्यामहे |
| स० | तप्येत | तप्येयाताम् | तप्येरन् |
| | तप्येथाः | तप्येयाथाम् | तप्येध्वम् |
| | तप्येय | तप्येवहि | तप्येमहि |
| प० | तप्यताम् | तप्येताम् | तप्यन्ताम् |
| | तप्यस्व | तप्येथाम् | तप्यध्वम् |
| | तप्यै | तप्यावहै | तप्यामहै |
| ह्य० | अतप्यत | अतप्येताम् | अतप्यन्त |
| | अतप्यथाः | अतप्येथाम् | अतप्यध्वम् |
| | अतप्ये | अतप्यावहि | अतप्यामहि |
| अ० | अतप्त | अतप्साताम् | अतप्सत |
| | अतप्थाः | अतप्साथाम् | अतब्ध्वम्-द्ध्वम् |
| | अतप्सि | अतप्स्वहि | अतप्स्महि |
| प० | तेपे | तेपाते | तेपिरे |
| | तेपिषे | तेपाथे | तेपिध्वे |
| | तेपे | तेपिवहे | तेपिमहे |
| आ० | तप्सीष्ट | तप्सीयास्ताम् | तप्सीरन् |
| | तप्सीष्ठाः | तप्सीयास्थाम् | तप्सीध्वम् |
| | तप्सीय | तप्सीवहि | तप्सीमहि |
| श्व० | तप्ता | तप्तारौ | तप्तारः |
| | तप्तासे | तप्तासाथे | तप्ताध्वे |

तप्ताहे तप्तास्वहे तप्तास्महे
भ० तप्स्यते तप्स्येते तप्स्यन्ते
तप्स्यसे तप्स्येथे तप्स्यध्वे
तप्स्ये तप्स्यावहे तप्स्यामहे

क्रि० अतप्स्यत अतप्स्येताम् अतप्स्यन्त
अतप्स्यथाः अतप्स्येथाम् अतप्स्यध्वम्
अतप्स्ये अतप्स्यावहि अतप्स्यामहि

पूरैचि–आप्यायने ॥ वधवुं, पूर्ण थवु ।
व० पूर्यते पूर्येते पूर्यन्ते
पूर्यसे पूर्येथे पूर्यध्वे
पूर्ये पूर्यावहे पूर्यामहे
स० पूर्येत पूर्येयाताम् पूर्येरन्
पूर्येथाः पूर्येयाथाम् पूर्येध्वम्
पूर्येय पूर्येवहि पूर्येमहि
प० पूर्यताम् पूर्येताम् पूर्यन्ताम्
पूर्यस्व पूर्येथाम् पूर्यध्वम्
पूर्यै पूर्यावहै पूर्यामहै
ह्य० अपूर्यत अपूर्येताम् अपूर्यन्त
अपूर्यथाः अपूर्येथाम् अपूर्यध्वम्
अपूर्ये अपूर्यावहि अपूर्यामहि
अ० अपूरि अपूरिष्ट अपूरिषाताम् अपूरिषत
अपूरिष्ठाः अपूरिषाथाम् अपूरिढ्वम्
ढ्ढ्वम् ध्वम्
अपूरिषि अपूरिष्वहि अपूरिष्महि
प० पुपूरे पुपूराते पुपूरिरे
पुपूरिषे पुपूराथे पुपूरिढ्वे ध्वे
पुपूरे पुपूरिवहे पुपूरिमहे
आ० पूरिषीष्ट पूरिषीयास्ताम् पूरिषीरन्
पूरिषीष्ठाः पूरिषीयास्थाम् पूरिषीढ्वम्ध्वम्
पूरिषीय पूरिषीवहि पूरिषीमहि
श्व० पूरिता पूरितारौ पूरितारः
पूरितासे पूरितासाथे पूरिताध्वे
पूरिताहे पूरितास्वहे पूरितास्महे
भ० पूरिष्यते पूरिष्येते पूरिष्यन्ते
पूरिष्यसे पूरिष्येथे पूरिष्यध्वे
पूरिष्ये पूरिष्यावहे पूरिष्यामहे
क्रि० अपूरिष्यत अपूरिष्येताम् अपूरिष्यन्त
अपूरिष्यथाः अपूरिष्येथाम् अपूरिष्यध्वम्
अपूरिष्ये अपूरिष्यावहि अपूरिष्यामहि

॥ घूरैङ् जूरैचि जरायाम ॥ वृद्ध थवुं ।
॥ घूर्यते । अघूरिष्ट । जुघूरे ।
जूर्यते । अजूरिष्ट । जुजूरे ।

॥ शूरैचि–स्तम्भे ॥ थोभवुं अटकवुं ॥
शूर्यते । अशूरिष्ट । शुशूरे ।
॥ धूरैङ्–गूरैचि । गतौ । जवुं.
धूर्यते । अधूरिष्ट । दुधूरे ।
गूर्यते । अगूरिष्ट । जुगूरे ।
॥ तूरैचि-त्वरायाम् ॥ उतावळ करवी ।
तूर्यते । अतूरिष्ट । तुतूरे ।
॥ घूरादयो–हिंसायाश्च । हणवुं वृद्ध थवुं
॥ चूरैचि–दाहे ॥ दाझवुं, बाळवुं
चूर्यते । अचूरिष्ट । चुचूरे ।

॥ क्लिशिच्–उपतापे ॥ दुःखी थवुं. ॥
क्लिश्यते । अक्लेशिष्ट । चिक्लिशे

॥ लिशिच्–अल्पत्वे, ओछुं थवुं. थोडुं थवुं
व० लिश्यते लिश्येते लिश्यन्ते
लिश्यसे लिश्येथे लिश्यध्वे
लिश्ये लिश्यावहे लिश्यामहे
स० लिश्येत लिश्येयाताम् लिश्येरन्
लिश्येथाः लिश्येयाथाम् लिश्येध्वम्
लिश्येय लिश्येवहि लिश्येमहि
प० लिश्यताम् लिश्येताम् लिश्यन्ताम्
लिश्यस्व लिश्येथाम् लिश्यध्वम्
लिश्यै लिश्यावहै लिश्यामहै
ह्य० अलिश्यत अलिश्येताम् अलिश्यन्त
अलिश्यथाः अलिश्येथाम् अलिश्यध्वम्
अलिश्ये अलिश्यावहि अलिश्यामहि
अ० अलिक्षत अलिक्षाताम् अलिक्षन्त
अलिक्षथाः अलिक्षाथाम् अलिक्षध्वम्

अलिक्षि अलिक्षावहि अलिक्षामहि
प० लिलिशे लिलिशाते लिलिशिरे
लिलिशिषे लिलिशाथे लिलिशिध्वे
लिलिशे लिलिशिवहे लिलिशिमहे
आ० लिक्षीष्ट लिक्षीयास्ताम् लिक्षीरन्
लिक्षीष्ठाः लिक्षीयास्थाम् लिक्षीध्वम्
लिक्षीय लिक्षीवहि लिक्षीमहि

श्व० लेष्टा लेष्टारौ लेष्टारः
लेष्टासे लेष्टासाथे लेष्टाध्वे
लेष्टाहे लेष्टास्वहे लेष्टास्महे

भ० लेक्ष्यते लेक्ष्येते लेक्ष्यन्ते
लेक्ष्यसे लेक्ष्येथे लेक्ष्यध्वे
लेक्ष्ये लेक्ष्यावहे लेक्ष्यामहे

क्रि० अलेक्ष्यत अलेक्ष्येताम् अलेक्ष्यन्त
अलेक्ष्यथाः अलेक्ष्येथाम् अलेक्ष्यध्वम्
अलेक्ष्ये अलेक्ष्यावहि अलेक्ष्यामहि

॥ काशिच्-दीप्तौ ॥ प्रकाशवुं चळकवुं

व० प्रकाश्यते प्रकाश्येते प्रकाश्यन्ते
प्रकाश्यसे प्रकाश्येथे प्रकाश्यध्वे
प्रकाश्ये प्रकाश्यावहे प्रकाश्यामहे

स० प्रकाश्येत प्रकाश्येयाताम् प्रकाश्येरन्
प्रकाश्येथाः प्रकाश्येयाथाम् प्रकाश्येध्वम्
प्रकाश्येय प्रकाश्येवहि प्रकाश्येमहि

प० प्रकाश्यताम् प्रकाश्येताम् प्रकाश्यन्ताम्
प्रकाश्यस्व प्रकाश्येथाम् प्रकाश्यध्वम्
प्रकाश्यै प्रकाश्यावहै प्रकाश्यामहै

ह्य० प्राकाश्यत प्राकाश्येताम् प्राकाश्यन्त
प्राकाश्यथाः प्राकाश्येथाम् प्राकाश्यध्वम्
प्राकाश्ये प्राकाश्यावहि प्राकाश्यामहि

अ० प्राकाशिष्ट प्राकाशिषाताम् प्राकाशिषत
प्राकाशिष्ठाः प्राकाशिषाथाम् प्राकाशि-
ड्ढ्वम् ध्वम्
प्राकाशिषि प्राकाशिष्वहि प्राकाशिष्महि

प० प्रचकाशे प्रचकाशाते प्रचकाशिरे
प्रचकाशिषे प्रचकाशाथे प्रचकाशिध्वे
प्रचकाशे प्रचकाशिवहे प्रचकाशिमहे

प्रकाशिषीष्ट प्रकाशिषीयास्ताम् प्रकाशिषीरन्
प्रकाशिषीष्ठाः प्रकाशिषीयास्थाम् प्रकाशिषीध्वम्
प्रकाशिषीय प्रकाशिषीवहि प्रकाशिषीमहि

श्व० प्रकाशिता प्रकाशितारौ प्रकाशितारः
प्रकाशितासे प्रकाशितासाथे प्रकाशिताध्वे
प्रकाशिताहे प्रकाशितास्वहे प्रकाशितास्महे

भ० प्रकाशिष्यते प्रकाशिष्येते प्रकाशिष्यन्ते
प्रकाशिष्यसे प्रकाशिष्येथे प्रकाशिष्यध्वे
प्रकाशिष्ये प्रकाशिष्यावहे प्रकाशिष्यामहे

क्रि० प्राकाशिष्यत प्राकाशिष्येताम् प्राकाशिष्यन्त
प्राकाशिष्यथाः प्राकाशिष्येथाम् प्राकाशिष्यध्वम्
प्राकाशिष्ये प्राकाशिष्यावहि प्राकाशिष्यामहि

॥ वाशिच्-शब्दे ॥ शब्द करवो ॥
वाश्यते । अवाशिष्ट । ववाशे ।

## ॥इति दिवाद्य आत्मनेपदिनः॥

॥ अथोभयपदिनः ॥

॥ शकींच्-मर्षणे सहन करवुं वेठवुं, खमवुं

व० शक्यति शक्यतः शक्यन्ति
शक्यसि शक्यथः शक्यथ
शक्यामि शक्यावः शक्यामः

स० शक्येत् शक्येताम् शक्येयुः
शक्येः शक्येतम् शक्येत
शक्येयम् शक्येव शक्येम

प० शक्यतु शक्यतात् शक्यताम् शक्यन्तु
शक्य तात् शक्यतम् शक्यत
शक्यानि शक्याव शक्याम

ह्य० अशक्यत् अशक्यताम् अशक्यन्
अशक्यः अशक्यतम् अशक्यत
अशक्यम् अशक्याव अशक्याम

अ० अशाक्षीत् अशाक्ताम् अशाक्षुः
अशाक्षीः अशाक्तम् अशाक्त
अशाक्षम् अशाक्ष्व अशाक्ष्म
प० शशाक शेकतुः शेकुः
शेकिथ शशक्थ शेकथुः शेक
शशाक शशक शेकिव शेकिम
आ० शक्यात् शक्यास्ताम् शक्यासुः
शक्याः शक्यास्तम् शक्यास्त
शक्यासम् शक्यास्व शक्यास्म
श्व० शक्ता शक्तारौ शक्तारः
शक्तासि शक्तास्थः शक्तास्थ
शक्तास्मि शक्तास्वः शक्तास्मः
भ० शक्ष्यति शक्ष्यतः शक्ष्यन्ति
शक्ष्यसि शक्ष्यथः शक्ष्यथ
शक्ष्यामि शक्ष्यावः शक्ष्यामः
क्रि० अशक्ष्यत् अशक्ष्यताम् अशक्ष्यन्
अशक्ष्यः अशक्ष्यतम् अशक्ष्यत
अशक्ष्यम् अशक्ष्याव अशक्ष्याम
व० शक्यते शक्येते शक्यन्ते
शक्यसे शक्येथे शक्यध्वे
शक्ये शक्यावहे शक्यामहे
स० शक्येत शक्येयाताम् शक्येरन्
शक्येथाः शक्येयाथाम् शक्येध्वम्
शक्येय शक्येवहि शक्येमहि
प० शक्यताम् शक्येताम् शक्यन्ताम्
शक्यस्व शक्येथाम् शक्यध्वम्
शक्यै शक्यावहै शक्यामहै
ह्य० अशक्यत अशक्येताम् अशक्यन्त
अशक्यथाः अशक्येथाम् अशक्यध्वम्
अशक्ये अशक्यावहि अशक्यामहि
अ० अशक्त अशक्षाताम् अशक्षत
अशक्थाः अशक्षाथाम् अशग्ध्वम्-ड्ढ्वम्
अशक्षि अशक्ष्वहि अशक्ष्महि
प० शेके शेकाते शेकिरे
शेकिषे शेकाथे शेकिध्वे
शेके शेकिवहे शेकिमहे
आ० शक्षीष्ट शक्षीयास्ताम् शक्षीरन्
शक्षीष्ठाः शक्षीयास्थाम् शक्षीध्वम्
शक्षीय शक्षीवहि शक्षीमहि
श्व० शक्ता शक्तारौ शक्तारः
शक्तासे शक्तासाथे शक्ताध्वे
शक्ताहे शक्तास्वहे शक्तास्महे
भ० शक्ष्यते शक्ष्येते शक्ष्यन्ते
शक्ष्यसे शक्ष्येथे शक्ष्यध्वे
शक्ष्ये शक्ष्यावहे शक्ष्यामहे
क्रि० अशक्ष्यत अशक्ष्येताम् अशक्ष्यन्त
अशक्ष्यथाः अशक्ष्येथाम् अशक्ष्यध्वम्
अशक्ष्ये अशक्ष्यावहि अशक्ष्यामहि

अनीदयमित्येके तन्मते—अनद्यतन्याम् अशकदित्यादि—अन्यत्तु पूर्वोक्तमेवरूपम् । अन्येतु वेडयमिति तन्मते—अशकीत् अशकत्, शकिता, शक्ता इत्यादि ।

॥ शुचूँगैच-पूतिभावे ॥ भीनुं थवुं ।

व० शुच्यति शुच्यतः शुच्यन्ति
शुच्यसि शुच्यथः शुच्यथ
शुच्यामि शुच्यावः शुच्यामः
स० शुच्येत् शुच्येताम् शुच्येयुः
शुच्येः शुच्येतम् शुच्येत
शुच्येयम् शुच्येव शुच्येम
प० शुच्यतु शुच्यतात् शुच्यताम् शुच्यन्तु
शुच्य „ शुच्यतम् शुच्यत
शुच्यानि शुच्याव शुच्याम
ह्य० अशुच्यत् अशुच्यताम् अशुच्यन्
अशुच्यः अशुच्यतम् अशुच्यत
अशुच्यम् अशुच्याव अशुच्याम
अ० अशुचत् अशुचताम् अशुचन्
अशुचः अशुचतम् अशुचत
अशुचम् अशुचाव अशुचाम
अशोचीत् अशोचिष्टाम् अशोचिषुः
अशोचीः अशोचिष्टम् अशोचिष्ट
अशोचिषम् अशोचिष्व अशोचिष्म
प० शुशोच शुशुचतुः शुशुचुः
शुशोचिथ शुशुचथुः शुशुच
शोच शुशुचिव शुशुचिम

आ० शुच्यात् शुच्यास्ताम् शुच्यासुः
शुच्याः शुच्यास्तम् शुच्यास्त
शुच्यासम् शुच्यास्व शुच्यास्म
श्व० शोचिता शोचितारौ शोचितारः
शोचितासि शोचितास्थः शोचितास्थ
शोचितास्मि शोचितास्वः शोचितास्मः
भ० शोचिष्यति शोचिष्यतः शोचिष्यन्ति
शोचिष्यसि शोचिष्यथः शोचिष्यथ
शोचिष्यामि शोचिष्यावः शोचिष्यामः
क्रि०अशोचिष्यत् अशोचिष्यताम् अशोचिष्यन्
अशोचिष्यः अशोचिष्यतम् अशोचिष्यत
अशोचिष्यम् अशोचिष्याव अशोचिष्याम
व० शुच्यते शुच्येते शुच्यन्ते
शुच्यसे शुच्येथे शुच्यध्वे
शुच्ये शुच्यावहे शुच्यामहे
स० शुच्येत शुच्येयाताम् शुच्येरन्
शुच्येथाः शुच्येयाथाम् शुच्येध्वम्
शुच्येय शुच्येवहि शुच्येमहि
प० शुच्यताम् शुच्येताम् शुच्यन्ताम्
शुच्यस्व शुच्येथाम् शुच्यध्वम्
शुच्यै शुच्यावहै शुच्यामहै
ह्य० अशुच्यत अशुच्येताम् अशुच्यन्त
अशुच्यथाः अशुच्येथाम् अशुच्यध्वम्
अशुच्ये अशुच्यावहि अशुच्यामहि
अ० अशोचिष्ट अशोचिषाताम् अशोचिषत
अशोचिष्ठाः अशोचिषाथाम् अशोचिड्ढ्वम्-
ध्वम्
अशोचिषि अशोचिष्वहि अशोचिष्महि
प० शुशुचे शुशुचाते शुशुचिरे
शुशुचिषे शुशुचाथे शुशुचिध्वे
शुशुचे शुशुचिवहे शुशुचिमहे
आ० शोचिषीष्ट शोचिषीयास्ताम् शोचिषीरन्
शोचिषीष्ठाः शोचिषीयास्थाम् शोचिषीध्वम्
शोचिषीय शोचिषीवहि शोचिषीमहि
श्व० शोचिता शोचितारौ शोचितारः
शोचितासे शोचितासाथे शोचिताध्वे
शोचिताहे शोचितास्वहे शोचितास्महे
भ० शोचिष्यते शोचिष्येते शोचिष्यन्ते
शोचिष्यसे शोचिष्येथे शोचिष्यध्वे
शोचिष्ये शोचिष्यावहे शोचिष्यामहे
क्रि०अशोचिष्यत अशोचिष्येताम् अशोचिष्यन्त
अशोचिष्यथाः अशोचिष्येथाम् अशोचिष्यध्वम्
अशोचिष्ये अशोचिष्यावहि अशोचिष्यामहि

॥ रञ्जींच्-रागे रंगवुं ॥ प्रीति करवी,

व० रज्यति रज्यतः रज्यन्ति
रज्यसि रज्यथः रज्यथ
रज्यामि रज्यावः रज्यामः
स० रज्येत् रज्येताम् रज्येयुः
रज्येः रज्येतम् रज्येत
रज्येयम् रज्येव रज्येम
प० रज्यतु रज्यतात् रज्यताम् रज्यन्तु
रज्य „ रज्यतम् रज्यत
रज्यानि रज्याव रज्याम
ह्य० अरज्यत् अरज्यताम् अरज्यन्
अरज्यः अरज्यतम् अरज्यत
अरज्यम् अरज्याव अरज्याम
अ० अराङ्क्षीत् अराङ्क्ताम् अराङ्क्षुः
अराङ्क्षीः अराङ्क्तम् अराङ्क्त
अराङ्क्षम् अराङ्क्ष्व अराङ्क्ष्म
प० ररञ्ज ररञ्जतुः ररञ्जुः
ररञ्जिथ ररङ्क्थ ररञ्जथुः ररञ्ज
ररञ्ज ररञ्जिव ररञ्जिम
आ० रज्यात् रज्यास्ताम् रज्यासुः
रज्याः रज्यास्तम् रज्यास्त
रज्यासम् रज्यास्व रज्यास्म
श्व० रङ्क्ता रङ्क्तारौ रङ्क्तारः
रङ्क्तासि रङ्क्तास्थः रङ्क्तास्थ
रङ्क्तास्मि रङ्क्तास्वः रङ्क्तास्मः
भ० रङ्क्ष्यति रङ्क्ष्यतः रङ्क्ष्यन्ति
रङ्क्ष्यसि रङ्क्ष्यथः रङ्क्ष्यथ
रङ्क्ष्यामि रङ्क्ष्यावः रङ्क्ष्यामः

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्रि० | अरङ्क्ष्यत् | अरङ्क्ष्यताम् | अरङ्क्ष्यन् |
| | अरङ्क्ष्यः | अरङ्क्ष्यतम् | अरङ्क्ष्यत |
| | अरङ्क्ष्यम् | अरङ्क्ष्याव | अरङ्क्ष्याम |
| व० | रज्यते | रज्येते | रज्यन्ते |
| | रज्यसे | रज्येथे | रज्यध्वे |
| | रज्ये | रज्यावहे | रज्यामहे |
| स० | रज्येत | रज्येयाताम् | रज्येरन् |
| | रज्येथाः | रज्येयाथाम् | रज्येध्वम् |
| | रज्येय | रज्येवहि | रज्येमहि |
| प० | रज्यताम् | रज्येताम् | रज्यन्ताम् |
| | रज्यस्व | रज्येथाम् | रज्यध्वम् |
| | रज्यै | रज्यावहै | रज्यामहै |
| ह्य० | अरज्यत | अरज्येताम् | अरज्यन्त |
| | अरज्यथाः | अरज्येथाम् | अरज्यध्वम् |
| | अरज्ये | अरज्यावहि | अरज्यामहि |
| अ० | अरङ्क्त | अरङ्क्षाताम् | अरङ्क्षत |
| | अरङ्क्थाः | अरङ्क्षाथाम् | अरङ्ग्ध्वम् / अरङ्ग्ढ्वम् |
| | अरङ्क्षि | अरङ्क्ष्वहि | अरङ्क्ष्महि |
| प० | ररञ्जे | ररञ्जाते | ररञ्जिरे |
| | ररञ्जिषे | ररञ्जाथे | ररञ्जिध्वे |
| | ररञ्जे | ररञ्जिवहे | ररञ्जिमहे |
| आ० | रङ्क्षीष्ट | रङ्क्षीयास्ताम् | रङ्क्षीरन् |
| | रङ्क्षीष्ठाः | रङ्क्षीयास्थाम् | रङ्क्षीध्वम् |
| | रङ्क्षीय | रङ्क्षीवहि | रङ्क्षीमहि |
| श्व० | रङ्क्ता | रङ्क्तारौ | रङ्क्तारः |
| | रङ्क्तासे | रङ्क्तासाथे | रङ्क्ताध्वे |
| | रङ्क्ताहे | रङ्क्तास्वहे | रङ्क्तास्महे |
| भ० | रङ्क्ष्यते | रङ्क्ष्येते | रङ्क्ष्यन्ते |
| | रङ्क्ष्यसे | रङ्क्ष्येथे | रङ्क्ष्यध्वे |
| | रङ्क्ष्ये | रङ्क्ष्यावहे | रङ्क्ष्यामहे |
| क्रि० | अरङ्क्ष्यत | अरङ्क्ष्येताम् | अरङ्क्ष्यन्त |
| | अरङ्क्ष्यथाः | अरङ्क्ष्येथाम् | अरङ्क्ष्यध्वम् |
| | अरङ्क्ष्ये | अरङ्क्ष्यावहि | अरङ्क्ष्यामहि |

॥ शपींच् आक्रोशे ॥ निंदवुं, शाप देवो

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | शप्यति | शप्यतः | शप्यन्ति |
| | शप्यसि | शप्यथः | शप्यथ |
| | शप्यामि | शप्यावः | शप्यामः |
| स० | शप्येत् | शप्येताम् | शप्येयुः |
| | शप्येः | शप्येतम् | शप्येत |
| | शप्येयम् | शप्येव | शप्येम |
| प० | शप्यतु शप्यतात् | शप्यताम् | शप्यन्तु |
| | शप्य शप्यतात् | शप्यतम् | शप्यत |
| | शप्यानि | शप्याव | शप्याम |
| ह्य० | अशप्यत् | अशप्यताम् | अशप्यन् |
| | अशप्यः | अशप्यतम् | अशप्यत |
| | अशप्यम् | अशप्याव | अशप्याम |
| अ० | अशाप्सीत् | अशाप्ताम् | अशाप्सुः |
| | अशाप्सीः | अशाप्तम् | अशाप्त |
| | अशाप्सम् | अशाप्स्व | अशाप्स्म |
| प० | शशाप | शेपतुः | शेपुः |
| | शेपिथ शशप्थ | शेपथुः | शेप |
| | शशाप शशप | शेपिव | शेपिम |
| आ० | शप्यात् | शप्यास्ताम् | शप्यासुः |
| | शप्याः | शप्यास्तम् | शप्यास्त |
| | शप्यासम् | शप्यास्व | शप्यास्म |
| श्व० | शप्ता | शप्तारौ | शप्तारः |
| | शप्तासि | शप्तास्थः | शप्तास्थ |
| | शप्तास्मि | शप्तास्वः | शप्तास्मः |
| भ० | शप्स्यति | शप्स्यतः | शप्स्यन्ति |
| | शप्स्यसि | शप्स्यथः | शप्स्यथ |
| | शप्स्यामि | शप्स्यावः | शप्स्यामः |
| क्रि० | अशप्स्यत् | अशप्स्यताम् | अशप्स्यन् |
| | अशप्स्यः | अशप्स्यतम् | अशप्स्यत |
| | अशप्स्यम् | अशप्स्याव | अशप्स्याम |
| व० | शप्यते | शप्येते | शप्यन्ते |
| | शप्यसे | शप्येथे | शप्यध्वे |
| | शप्ये | शप्यावहे | शप्यामहे |

स० शप्येत शप्येयाताम् शप्येरन्
शप्येथाः शप्येयाथाम् शप्येध्वम्
शप्येय शप्येवहि शप्येमहि
प० शप्यताम् शप्येताम् शप्यन्ताम्
शप्यस्व शप्येथाम् शप्यध्वम्
शप्यै शप्यावहै शप्यामहै
ह्य० अशप्यत अशप्येताम् अशप्यन्त
अशप्यथाः अशप्येथाम् अशप्यध्वम्
अशप्ये अशप्यावहि अशप्यामहि
अ० अशप्त अशप्साताम् अशप्सत
अशप्थाः अशप्साथाम् अशब्ध्वम्
अशब्द्ध्वम्
अशप्सि अशप्स्वहि अशप्स्महि
प० शेपे शेपाते शेपिरे
शेपिषे शेपाथे शेपिध्वे
शेपे शेपिवहे शेपिमहे
आ० शप्सीष्ट शप्सीयास्ताम् शप्सीरन्
शप्सीष्ठाः शप्सीयास्थाम् शप्सीध्वम्
शप्सीय शप्सीवहि शप्सीमहि
श्व० शप्ता शप्तारौ शप्तारः
शप्तासे शप्तासाथे शप्ताध्वे
शप्ताहे शप्तास्वहे शप्तास्महे
भ० शप्स्यते शप्स्येते शप्स्यन्ते
शप्स्यसे शप्स्येथे शप्स्यध्वे
शप्स्ये शप्स्यावहे शप्स्यामहे
क्रि० अशप्स्यत अशप्स्येताम् अशप्स्यन्त
अशप्स्यथाः अशप्स्येथाम् अशप्स्यध्वम्
अशप्स्ये अशप्स्यावहि अशप्स्यामहि

मृषीच् तितिक्षायाम् । सहन करवुं,

व० मृष्यति मृष्यतः मृष्यन्ति
मृष्यसि मृष्यथः मृष्यथ
मृष्यामि मृष्यावः मृष्यामः
स० मृष्येत् मृष्येताम् मृष्येयुः
मृष्येः मृष्येतम् मृष्येत
मृष्येयम् मृष्येव मृष्येम
प० मृष्यतु मृष्यतात् मृष्यताम् मृष्यन्तु
मृष्य मृष्यतात् मृष्यतम् मृष्यत
मृष्याणि मृष्याव मृष्याम
ह्य० अमृष्यत् अमृष्यताम् अमृष्यन्
अमृष्यः अमृष्यतम् अमृष्यत
अमृष्यम् अमृष्याव अमृष्याम
अ० अमर्षीत् अमर्षिष्टाम् अमर्षिषुः
अमर्षीः अमर्षिष्टम् अमर्षिष्ट
अमर्षिषम् अमर्षिष्व अमर्षिष्म
प० ममर्ष ममृषतुः ममृषुः
ममर्षिथ ममृषथुः ममृष
ममर्ष ममृषिव ममृषिम
आ० मृष्यात् मृष्यास्ताम् मृष्यासुः
मृष्याः मृष्यास्तम् मृष्यास्त
मृष्यासम् मृष्यास्व मृष्यास्म
श्व० मर्षिता मर्षितारौ मर्षितारः
मर्षितासि मर्षितास्थः मर्षितास्थ
मर्षितास्मि मर्षितास्वः मर्षितास्मः
भ० मर्षिष्यति मर्षिष्यतः मर्षिष्यन्ति
मर्षिष्यसि मर्षिष्यथः मर्षिष्यथ
मर्षिष्यामि मर्षिष्यावः मर्षिष्यामः
क्रि० अमर्षिष्यत् अमर्षिष्यताम् अमर्षिष्यन्
अमर्षिष्यः अमर्षिष्यतम् अमर्षिष्यत
अमर्षिष्यम् अमर्षिष्याव अमर्षिष्याम
व० मृष्यते मृष्येते मृष्यन्ते
मृष्यसे मृष्येथे मृष्यध्वे
मृष्ये मृष्यावहे मृष्यामहे
स० मृष्येत मृष्येयाताम् मृष्येरन्
मृष्येथाः मृष्येयाथाम् मृष्येध्वम्
मृष्येय मृष्येवहि मृष्येमहि
प० मृष्यताम् मृष्येताम् मृष्यन्ताम्
मृष्यस्व मृष्येथाम् मृष्यध्वम्
मृष्यै मृष्यावहै मृष्यामहै

ह्य० अमृष्यत अमृष्येताम् अमृष्यन्त
अमृष्यथाः अमृष्येथाम् अमृष्यध्वम्
अमृष्ये अमृष्यावहि अमृष्यामहि

अ० अमर्षिष्ट अमर्षिषाताम् अमर्षिषत
अमर्षिष्ठाः अमर्षिषाथाम् अमर्षिध्वम् ड्ढ्वम्
अमर्षिषि अमर्षिष्वहि अमर्षिष्महि

प० ममृषे ममृषाते ममृषिरे
ममृषिषे ममृषाथे ममृषिध्वे
ममृषे ममृषिवहे ममृषिमहे

आ० मर्षिषीष्ट मर्षिषीयास्ताम् मर्षिषीरन्
मर्षिषीष्ठाः मर्षिषीयास्थाम् मर्षिषीध्वम्
मर्षिषीय मर्षिषीवहि मर्षिषीमहि

श्व० मर्षिता मर्षितारौ मर्षितारः
मर्षितासे मर्षितासाथे मर्षिताध्वे
मर्षिताहे मर्षितास्वहे मर्षितास्महे

भ० मर्षिष्यते मर्षिष्येते मर्षिष्यन्ते
मर्षिष्यसे मर्षिष्येथे मर्षिष्यध्वे
मर्षिष्ये मर्षिष्यावहे मर्षिष्यामहे

क्रि० अमर्षिष्यत अमर्षिष्येताम् अमर्षिष्यन्त
अमर्षिष्यथाः अमर्षिष्येथाम् अमर्षिष्यध्वम्
अमर्षिष्ये अमर्षिष्यावहि अमर्षिष्यामहि

णहींच् बंधने । बांधवुं, ।

व० नह्यति नह्यतः नह्यन्ति
नह्यसि नह्यथः नह्यथ
नह्यामि नह्यावः नह्यामः
प्रणह्यति । अपिनह्यति । पिनह्यति ।

स० नह्येत् नह्येताम् नह्येयुः
नह्येः नह्येतम् नह्येत
नह्येयम् नह्येव नह्येम

प० नह्यतु नह्यतात् नह्यताम् नह्यन्तु
नह्य नह्यतात् नह्यतम् नह्यत
नह्यानि नह्याव नह्याम

ह्य० अनह्यत् अनह्यताम् अनह्यन्
अनह्यः अनह्यतम् अनह्यत
अनह्यम् अनह्याव अनह्याम

अ० अनात्सीत् अनाद्धाम् अनात्सुः
अनात्सीः अनाद्धम् अनाद्ध
अनात्सम् अनात्स्व अनात्स्म

प० ननाह नेहतुः नेहुः
नेहिथ ननद्ध नेहथुः नेह
ननाह ननह नेहिव नेहिम

आ० नह्यात् नह्यास्ताम् नह्यासुः
नह्याः नह्यास्तम् नह्यास्त
नह्यासम् नह्यास्व नह्यास्म

श्व० नद्धा नद्धारौ नद्धारः
नद्धासि नद्धास्थः नद्धास्थ
नद्धास्मि नद्धास्वः नद्धास्मः

भ० नत्स्यति नत्स्यतः नत्स्यन्ति
नत्स्यसि नत्स्यथः नत्स्यथ
नत्स्यामि नत्स्यावः नत्स्यामः

क्रि० अनत्स्यत् अनत्स्यताम् अनत्स्यन्
अनत्स्यः अनत्स्यतम् अनत्स्यत
अनत्स्यम् अनत्स्याव अनत्स्याम

व० नह्यते नह्येते नह्यन्ते
नह्यसे नह्येथे नह्यध्वे
नह्ये नह्यावहे नह्यामहे
प्रणह्यते । अपिनह्यते । पिनह्यते ।

स० नह्येत नह्येयाताम् नह्येरन्
नह्येथाः नह्येयाथाम् नह्येध्वम्
नह्येय नह्येवहि नह्येमहि

प० नह्यताम् नह्येताम् नह्यन्ताम्
नह्यस्व नह्येथाम् नह्यध्वम्
नह्यै नह्यावहै नह्यामहै

ह्य० अनह्यत अनह्येताम् अनह्यन्त
अनह्यथाः अनह्येथाम् अनह्यध्वम्
अनह्ये अनह्यावहि अनह्यामहि

अ० अनद्ध अनत्साताम् अनत्सत

अनद्धाः अनत्साथाम् अनदूध्वम्
अनद्दूध्वम्
अनत्सि अनत्स्वहि अनत्स्महि
प० नेहे नेहाते नेहिरे
नेहिषे नेहाथे नेहिध्वे ढ्वे
नेहे नेहिवहे नेहिमहे
आ० नत्सीष्ट नत्सीयास्ताम् नत्सीरन्
नत्सीष्ठाः नत्सीयास्थाम् नत्सीध्वम्
नत्सीय नत्सीवहि नत्सीमहि
श्व० नद्धा नद्धारौ नद्धारः
नद्धासे नद्धासाथे नद्धाध्वे
नद्धाहे नद्धास्वहे नद्धास्महे
भ० नत्स्यते नत्स्येते नत्स्यन्ते
नत्स्यसे नत्स्येथे नत्स्यध्वे
नत्स्ये नत्स्यावहे नत्स्यामहे
क्रि० अनत्स्यत अनत्स्येताम् अनत्स्यन्त
अनत्स्यथाः अनत्स्येथाम् अनत्स्यध्वम्
अनत्स्ये अनत्स्यावहि अनत्स्यामहि

इति दिवादय उभयपदिनः



इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंरक्षणप्रवण विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजय-विरचितायां हैमधातुमालायां

**दिवादिगणः ॥**

## ॥ अथ स्वादयः ॥

### परस्मैपादिनः

षुंग्ट् । अभिषवे । सोमरसकाढवो, । मथवुं, अर्क काढवो ॥
व० सुनोति सुनुतः सुन्वन्ति
सुनोषि सुनुथः सुनुथ
सुनोमि सुन्वः सुनुवः सुन्मः सुनुमः
अभिषुणोति
स० सुनुयात् सुनुयाताम् सुनुयुः
सुनुयाः सुनुयातम् सुनुयात
सुनुयाम सुनुयाव सुनुयाम
प० सुनोतु सुनुतात् सुनुताम् सुन्वन्तु
सुनु सुनुतात् सुनुतम् सुनुत
सुनवानि सुनवाव सुनवाम
ह्य० असुनोत् असुनुताम् असुन्वन्
असुनोः असुनुतम् असुनुत
असुनवम् असुन्व असुनुव असुन्म असुनुम

पर्यषुणोत् ।

अ० असावीत् असाविष्टाम् असाविषु:
असावीः असाविष्टम् असाविष्ट
असाविषम् असाविष्व असाविष्म

प० सुषाव सुषुवतुः सुषुवुः
सुषविथ सुषोथ सुषुवथुः सुषुव
सुषाव सुषव सुषुविव सुषुविम

आ० सूयात् सूयास्ताम् सूयासुः
सूयाः सूयास्तम् सूयास्त
सूयासम् सूयास्व सूयास्म

श्व०सोता सोतारौ सोतारः
सोतासि सोतास्थ: सोतास्थ
सोतास्मि सोतास्वः सोतास्मः

भ० सोष्यति सोष्यत: सोष्यन्ति
सोष्यसि सोष्यथः सोष्यथ
सोष्यामि सोष्यावः सोष्यामः

क्रि०असोष्यत् असोष्यताम् असोष्यन्
असोष्यः असोष्यतम् असोष्यत
असोष्यम् असोष्याव असोष्याम

व० सुनुते सुन्वाते सुन्वते
सुनुषे सुन्वाथे सुनुध्वे
सुन्वे सुन्वहे सुनुवहे सुन्महे सुनुमहे

स० सुन्वीत सुन्वीयाताम् सुन्वीरन्
सुन्वीथाः सुन्वीयाथाम् सुन्वीध्वम्
सुन्वीय सुन्वीवहि सुन्वीमहि

प० सुनुताम् सुन्वाताम् सुन्वताम्
सुनुष्व सुन्वाथाम् सुनुध्वम्
सुनवै सुनवावहै सुनवामहै

ह्य० असुनुत असुन्वाताम् असुन्वत
असुनुथाः असुन्वाथाम् असुनुध्वम्
असुन्विअसुन्वहिअसुनुवहिअसुन्महिअसुनुमहि

अ० असोष्ट असोषाताम् असोषत
असोष्ठाः असोषाथाम् असोढ्ढ्वम्-ढ्वम्
असोषि असोष्वहि असोष्महि

प० सुषुवे सुषुवाते सुषुविरे
सुषुविषे सुषुवाथे सुषुविढ्वे-ध्वे
सुषुवे सुषुविवहे सुषुविमहे

आ०सोषीष्ट सोषीयास्ताम् सोषीरन्
सोषीष्ठाः सोषीयास्थाम् सोषीढ्वम्
सोषीय सोषीवहि सोषीमहि

श्व० सोता सोतारौ सोतारः
सोतासे सोतासाथे सोताध्वे
सोताहे सोतास्वहे सोतास्महे

भ० सोष्यते सोष्येते सोष्यन्ते
सोष्यसे सोष्येथे सोष्यध्वे
सोष्ये सोष्यावहे सोष्यामहे

क्रि०असोष्यत असोष्येताम् असोष्यन्त
असोष्यथाः असोष्येथाम् असोष्यध्वम्
असोष्ये असोष्यावहि असोष्यामहि

॥ षिग्ट्-बन्धने, ॥ बांधवुं

सिनोति । असैषीत् । सिषाय ।
सिनुते । असेष्ट । सिष्ये ।

॥ शिग्ट्-निशातने ॥ छोलवुं,
धारण करवुं

शिनोति । अशैषीत् । शिशाय
शिनुते अशेष्ट । शिश्ये

॥ डुमिग्ट्-प्रक्षेपणे ॥

व० मिनोति मिनुतः मिन्वन्ति
मिनोषि मिनुथः मिनुथ
मिनोमि मिन्वः मिनुवः मिन्मः मिनुमः

स० मिनुयात् मिनुयाताम् मिनुयुः
मिनुयाः मिनुयातम् मिनुयात
मिनुयाम् मिनुयाव मिनुयाम

प० मिनोतु मिनुतात् मिनुताम् मिन्वन्तु
मिनु मिनुतात् मिनुतम् मिनुत
मिनवानि मिनवाव मिनवाम

ह्य० अमिनोत् अमिनुताम् अमिन्वन्
अमिनोः अमिनुतम् अमिनुत
अमिनवम् अमिन्व अमिनुव अमिन्म
अमिनुम

अ० अमासीत् अमासिष्टाम् अमासिषुः
अमासीः अमासिष्टम् अमासिष्ट
अमासिषम् अमासिष्व अमासिष्म

प० ममौ मिम्यतुः मिम्युः
ममिथ ममाथ मिम्यथुः मिम्य
ममौ मिम्यिव मिम्यिम

आ० मीयात् मीयास्ताम् मीयासुः
मीयाः मीयास्तम् मीयास्त
मीयासम् मीयास्व मीयास्म

श्व० माता मातारौ मातारः
मातासि मातास्थः मातास्थ
मातास्मि मातास्वः मातास्मः

भ० मास्यति मास्यतः मास्यन्ति
मास्यसि मास्यथः मास्यथ
मास्यामि मास्यावः मास्यामः

क्रि० अमास्यत् अमास्यताम् अमास्यन्
अमास्यः अमास्यतम् अमास्यत
अमास्यम् अमास्याव अमास्याम

व० मिनुते मिन्वाते मिन्वते
मिनुषे मिन्वाथे मिनुध्वे
मिन्वे मिन्वहे मिनुवहे मिन्महे
मिनुमहे

स० मिन्वीत मिन्वीयाताम् मिन्वीरन्
मिन्वीथाः मिन्वीयाथाम् मिन्वीध्वम्
मिन्वीय मिन्वीवहि मिन्वीमहि

प० मिनुताम् मिन्वाताम् मिन्वताम्
मिनुष्व मिन्वाथाम् मिनुध्वम्
मिनवै मिनवावहै मिनवामहै

ह्य० अमिनुत अमिन्वाताम् अमिन्वत
अमिनुथाः अमिन्वाथाम् अमिनुध्वम्
अमिन्वि अमिन्वहि अमिनुवहि
अमिन्महि अमिनुमहि

अ० अमास्त अमासाताम् अमासत
अमास्थाः अमासाथाम् अमाध्वम्
अमाद्ध्वम्
अमासि अमास्वहि अमास्महि

प० मिम्ये मिम्याते मिम्यिरे
मिम्यिषे मिम्याथे मिम्यिध्वे
मिम्यिढ्वे
मिम्ये मिम्यिवहे मिम्यिमहे

आ० मासीष्ट मासीयास्ताम् मासीरन्
मासीष्ठाः मासीयास्थाम् मासीध्वम्
मासीय मासीवहि मासीमहि

श्व० माता मातारौ मातारः
मातासे मातासाथे माताध्वे
माताहे मातास्वहे मातास्महे

भ० मास्यते मास्येते मास्यन्ते
मास्यसे मास्येथे मास्यध्वे
मास्ये मास्यावहे मास्यामहे

क्रि० अमास्यत अमास्येताम् अमास्यन्त
अमास्यथाः अमास्येथाम् अमास्यध्वम्
अमास्ये अमास्यावहि अमास्यामहि

॥ चिगट्-चयने ॥ पकटुं करवुं

व० चिनोति चिनुतः चिन्वन्ति
चिनोषि चिनुथः चिनुथ
चिनोमि चिन्वः चिनुवः चिन्मः
चिनुमः

स० चिनुयात् चिनुयाताम् चिनुयुः
चिनुयाः चिनुयातम् चिनुयात
चिनुयाम् चिनुयाव चिनुयाम

प० चिनोतु चिनुतात् चिनुताम् चिन्वन्तु
चिनु चिनुतात् चिनुतम् चिनुत
चिनवानि चिनवाव चिनवाम

ह्य० अचिनोत् अचिनुताम् अचिन्वन्

अचिनोः अचिनुतम् अचिनुत
अचिनवम् अचिन्व अचिनुव अचिन्म
अचिनुम

अ० अचैषीत् अचैष्टाम् अचैषुः
अचैषीः अचैष्टम् अचैष्ट
अचैषम् अचैष्व अचैष्म

प० चिचाय चिच्यतुः चिच्युः
चिचयिथ चिचेथ चिच्यथुः चिच्य
चिचाय चिचय चिच्यिव चिच्यिम

चिकाय चिक्यतुः चिक्युः
चिकयिथ चिकेथ चिक्यथुः चिक्य
चिकाय चिकय चिक्यिव चिक्यिम

आ० चीयात् चीयास्ताम् चीयासुः
चीयाः चीयास्तम् चीयास्त
चीयासम् चीयास्व चीयास्म

श्व० चेता चेतारौ चेतारः
चेतासि चेतास्थः चेतास्थ
चेतास्मि चेतास्वः चेतास्मः

भ० चेष्यति चेष्यतः चेष्यन्ति
चेष्यसि चेष्यथः चेष्यथ
चेष्यामि चेष्यावः चेष्यामः

क्रि० अचेष्यत् अचेष्यताम् अचेष्यन्
अचेष्यः अचेष्यतम् अचेष्यत
अचेष्यम् अचेष्याव अचेष्याम

व० चिनुते चिन्वाते चिन्वते
चिनुषे चिन्वाथे चिनुध्वे
चिन्वे चिन्वहे चिनुवहे चिन्महे
चिनुमहे

स० चिन्वीत चिन्वीयाताम् चिन्वीरन्
चिन्वीथाः चिन्वीयाथाम् चिन्वीध्वम्
चिन्वीय चिन्वीवहि चिन्वीमहि

प० चिनुताम् चिन्वाताम् चिन्वताम्
चिनुष्व चिन्वाथाम् चिनुध्वम्
चिनवै चिनवावहै चिनवामहै

ह्य० अचिनुत अचिन्वाताम् अचिन्वत
अचिनुथाः अचिन्वाथाम् अचिनुध्वम्
अचिन्वि अचिनुवहि अचिन्वहि
अचिनुमहि अचिन्महि

अ० अचेष्ट अचेषाताम् अचेषत
अचेष्ठाः अचेषाथाम् अचेढ्ढ्वम्-ध्वम्
अचेषि अचेष्वहि अचेष्महि

प० चिच्ये चिच्याते चिच्यिरे
चिच्यिषे चिच्याथे चिच्यिध्वे-ढ्वे
चिच्ये चिच्यिवहे चिच्यिमहे

चिक्ये चिक्याते चिक्यिरे
चिक्यिषे चिक्याथे चिक्यिध्वे-ढ्वे
चिक्ये चिक्यिवहे चिक्यिमहे

आ० चेषीष्ट चेषीयास्ताम् चेषीरन्
चेषीष्ठाः चेषीयास्थाम् चेषीढ्वम्
चेषीय चेषीवहि चेषीमहि

श्व० चेता चेतारौ चेतारः
चेतासे चेतासाथे चेताध्वे
चेताहे चेतास्वहे चेतास्महे

भ० चेष्यते चेष्येते चेष्यन्ते
चेष्यसे चेष्येथे चेष्यध्वे
चेष्ये चेष्यावहे चेष्यामहे

क्रि० अचेष्यत अचेष्येताम् अचेष्यन्त
अचेष्यथाः अचेष्येथाम् अचेष्यध्वम्
अचेष्ये अचेष्यावहि अचेष्यामहि

॥ धूञ्–कम्पने । धुजर्वुं ॥

व० धूनोति धूनुतः धून्वन्ति
धूनोषि धूनुथः धूनुथ
धूनोमि धून्वः धूनुवः धून्मः धूनुमः

स० धूनुयात् धूनुयाताम् धूनुयुः
धूनुयाः धूनुयातम् धूनुयात
धूनुयाम् धूनुयाव धूनुयाम

प० धूनोतु धूनुतात् धूनुताम् धून्वन्तु

धूनु धूनुतात् धूनुतम् धूनुत
धूनवानि धूनवाव धूनवाम
ह्य० अधूनोत् अधूनुताम् अधून्वन्
अधूनोः अधूनुतम् अधूनुत
अधूनवम् अधून्व अधूनुव अधून्म
अधूनुम
अ० अधावीत् अधाविष्टाम् अधाविषुः
अधावीः अधाविष्टम् अधाविष्ट
अधाविषम् अधाविष्व अधाविष्म
प० दुधाव दुधुवतुः दुधुवुः
दुधविथ दुधुवथुः दुधुव
दुधाव दुधव दुधुविव दुधुविम
आ० धूयात् धूयास्ताम् धूयासुः
धूयाः धूयास्तम् धूयास्त
धूयासम् धूयास्व धूयास्म
श्व०धविता धवितारौ धवितारः
धवितासि धवितास्थः धवितास्थ
धवितास्मि धवितास्वः धवितास्मः
धोता धोतारौ धोतारः
धोतासि धोतास्थः धोतास्थ
धोतास्मि धोतास्वः धोतास्मः
भ० धोष्यति धोष्यतः धोष्यन्ति
धोष्यसि धोष्यथः धोष्यथ
धोष्यामि धोष्यावः धोष्यामः
धविष्यति धविष्यतः धविष्यन्ति
धविष्यसि धविष्यथः धविष्यथ
धविष्यामि धविष्यावः धविष्यामः
क्रि०अधोष्यत् अधोष्यताम् अधोष्यन्
अधोष्यः अधोष्यतम् अधोष्यत
अधोष्यम् अधोष्याव अधोष्याम
अधविष्यत् अधविष्यताम् अधविष्यन्
अधविष्यः अधविष्यतम् अधविष्यत
अधविष्यम् अधविष्याव अधविष्याम

व० धूनुते धून्वाते धून्वते
धूनुषे धून्वाथे धूनुध्वे
धून्वे धून्वहे धूनुवहे धून्महे धूनुमहे
स० धून्वीत धून्वीयाताम् धून्वीरन्
धून्वीथाः धून्वीयाथाम् धून्वीध्वम्
धून्वीय धून्वीवहि धून्वीमहि
प० धूनुताम् धून्वाताम् धून्वताम्
धूनुष्व धून्वाथाम् धूनुध्वम्
धूनवै धूनवावहै धूनवामहै
ह्य० अधूनुत अधून्वाताम् अधून्वत
अधूनुथाः अधून्वाथाम् अधूनुध्वम्
अधून्वि अधून्वहि अधूनुवहि अधून्महि
अधूनुमहि
अ० अधविष्ट अधविषाताम् अधविषत
अधविष्ठाः अधविषाथाम् अधविड्ढ्वम्-ढ्वम्
ध्वम्
अधविषि अधविष्वहि अधविष्महि
अधोष्ट अधोषाताम् अधोषत
अधोष्ठाः अधोषाथाम् अधोढ्ढ्वम्
ध्वम्
अधोषि अधोष्वहि अधोष्महि
प० दुधुवे दुधुवाते दुधुविरे
दुधुविषे दुधुवाथे दुधुविध्वे-ढ्वे
दुधुवे दुधुविवहे दुधुविमहे
आ०धविषीष्ट धविषीयास्ताम् धविषीरन्
धविषीष्ठाः धविषीयास्थाम् धविषीध्वम्
ढ्वम्
धविषीय धविषीवहि धविषीमहि
धोषीष्ट धोषीयास्ताम् धोषीरन्
धोषीष्ठाः धोषीयास्थाम् धोषीढ्वम्
धोषीय धोषीवहि धोषीमहि
श्व०धविता धवितारौ धवितारः
धवितासे धवितासाथे धविताध्वे
धविताहे धवितास्वहे धवितास्महे

धोता धोतारौ धोतारः
धोतासे धोतासाथे धोताध्वे
धोताहे धोतास्वहे धोतास्महे

भ० धविष्यते धविष्येते धविष्यन्ते
धविष्यसे धविष्येथे धविष्यध्वे
धविष्ये धविष्यावहे धविष्यामहे

धोष्यते धोष्येते धोष्यन्ते
धोष्यसे धोष्येथे धोष्यध्वे
धोष्ये धोष्यावहे धोष्यामहे

क्रि० अधविष्यत अधविष्येताम् अधविष्यन्त
अधविष्यथाः अधविष्येथाम् अधविष्यध्वम्
अधविष्ये अधविष्यावहि अधविष्यामहि

अधोष्यत अधोष्येताम् अधोष्यन्त
अधोष्यथाः अधोष्येथाम् अधोष्यध्वम्
अधोष्ये अधोष्यावहि अधोष्यामहि

॥ स्तृञ्‌ट्‌-आच्छादने ॥ ढांकवुं ।

व० स्तृणोति स्तृणुतः स्तृण्वन्ति
स्तृणोषि स्तृणुथः स्तृणुथ
स्तृणोमि स्तृणुवः स्तृण्वः स्तृणुमः स्तृण्मः

स० स्तृणुयात् स्तृणुयाताम् स्तृणुयुः
स्तृणुयाः स्तृणुयातम् स्तृणुयात
स्तृणुयाम् स्तृणुयाव स्तृणुयाम

प० स्तृणोतु स्तृणुतात् स्तृणुताम् स्तृण्वन्तु
स्तृणु „ स्तृणुतम् स्तृणुत
स्तृणवानि स्तृणवाव स्तृणवाम

ह्य० अस्तृणोत् अस्तृणुताम् अस्तृण्वन्
अस्तृणोः अस्तृणुतम् अस्तृणुत
अस्तृणवम् अस्तृणुव अस्तृण्व अस्तृणुम-ण्म

अ० अस्तार्षीत् अस्तार्ष्टाम् अस्तार्षुः
अस्तार्षीः अस्तार्ष्टम् अस्तार्ष्ट
अस्तार्षम् अस्तार्ष्व अस्तार्ष्म

प० तस्तार तस्तरतुः तस्तरुः
तस्तर्थ तस्तरथुः तस्तर
तस्तार तस्तर तस्तरिव तस्तरिम

आ० स्तर्यात् स्तर्यास्ताम् स्तर्यासुः
स्तर्याः स्तर्यास्तम् स्तर्यास्त
स्तर्यासम् स्तर्यास्व स्तर्यास्म

श्व० स्तर्ता स्तर्तारौ स्तर्तारः
स्तर्तासि स्तर्तास्थः स्तर्तास्थ
स्तर्तास्मि स्तर्तास्वः स्तर्तास्मः

भ० स्तरिष्यति स्तरिष्यतः स्तरिष्यन्ति
स्तरिष्यसि स्तरिष्यथः स्तरिष्यथ
स्तरिष्यामि स्तरिष्यावः स्तरिष्यामः

क्रि० अस्तरिष्यत् अस्तरिष्यताम् अस्तरिष्यन्
अस्तरिष्यः अस्तरिष्यतम् अस्तरिष्यत
अस्तरिष्यम् अस्तरिष्याव अस्तरिष्याम

व० स्तृणुते स्तृण्वाते स्तृण्वते
स्तृणुषे स्तृण्वाथे स्तृणुध्वे
स्तृण्वे स्तृणुवहे स्तृण्वहे स्तृणुमहे स्तृण्महे

स० स्तृण्वीत स्तृण्वीयाताम् स्तृण्वीरन्
स्तृण्वीथाः स्तृण्वीयाथाम् स्तृण्वीध्वम्
स्तृण्वीय स्तृण्वीवहि स्तृण्वीमहि

प० स्तृणुताम् स्तृण्वाताम् स्तृण्वताम्
स्तृणुष्व स्तृण्वाथाम् स्तृणुध्वम्
स्तृणवै स्तृणवावहै स्तृणवामहै

ह्य० अस्तृणुत अस्तृण्वाताम् अस्तृण्वत
अस्तृणुथाः अस्तृण्वाथाम् अस्तृणुध्वम्
अस्तृण्वि अस्तृणुवहि अस्तृणुमहि
अस्तृण्वहि अस्तृण्महि

अ० अस्तरिष्ट अस्तरिषाताम् अस्तरिषत
अस्तरिष्ठाः अस्तरिषाथाम् अस्तरिढ्वम्
ध्वम्-ड्ढ्वम्
अस्तरिषि अस्तरिष्वहि अस्तरिष्महि

अस्तृत अस्तृषाताम् अस्तृषत
अस्तृथाः अस्तृषाथाम् अस्तृड्ढ्वम्
—ढ्वम्
अस्तृषि अस्तृष्वहि अस्तृष्महि

प० तस्तरे तस्तराते तस्तरिरे
तस्तरिषे तस्तराथे तस्तरिढ्वे-ध्वे
तस्तरे तस्तरिवहे तस्तरिमहे
आ० स्तरिषीष्ट स्तरिषीयास्ताम् स्तरिषीरन्
स्तरिषीष्ठाः स्तरिषीयास्थाम् स्तरिषीढ्वम्
ध्वम्
स्तरिषीय स्तरिषीवहि स्तरिषीमहि
स्तृषीष्ट स्तृषीयास्ताम् स्तृषीरन्
स्तृषीष्ठाः स्तृषीयास्थाम् स्तृषीढ्वम्
स्तृषीय स्तृषीवहि स्तृषीमहि
श्व० स्तर्ता स्तर्तारौ स्तर्तारः
स्तर्तासे स्तर्तासाथे स्तर्ताध्वे
स्तर्ताहे स्तर्तास्वहे स्तर्तास्महे
भ० स्तरिष्यते स्तरिष्येते स्तरिष्यन्ते
स्तरिष्यसे स्तरिष्येथे स्तरिष्यध्वे
स्तरिष्ये स्तरिष्यावहे स्तरिष्यामहे
क्रि० अस्तरिष्यत अस्तरिष्येताम् अस्तरिष्यन्त
अस्तरिष्यथाः अस्तरिष्येथाम् अस्तरिष्यध्वम्
अस्तरिष्ये अस्तरिष्यावहि अस्तरिष्यामहि

कृंग्ट्-हिंसायाम् । हिंसा करवी ।

व० कृणोति कृणुतः कृण्वन्ति
कृणोषि कृणुथः कृणुथ
कृणोमि कृण्वः कृणुवः कृण्मः कृणुमः
स० कृणुयात् कृणुयाताम् कृणुयुः
कृणुयाः कृणुयातम् कृणुयात
कृणुयाम् कृणुयाव कृणुयाम
प० कृणोतु कृणुतात् कृणुताम् कृण्वन्तु
कृणु कृणुतात् कृणुतम् कृणुत
कृणवानि कृणवाव कृणवाम
ह्य० अकृणोत् अकृणुताम् अकृण्वन्
अकृणोः अकृणुतम् अकृणुत
अकृणवम् अकृण्व अकृणुव अकृण्म अकृणुम
अ० अकार्षीत् अकार्ष्टाम् अकार्षुः
अकार्षीः अकार्ष्टम् अकार्ष्ट
अकार्षम् अकार्ष्व अकार्ष्म
प० चकार चक्रतुः चक्रुः
चकर्थ चक्रथुः चक्र
चकार चकर चकृव चकृम
आ० क्रियात् क्रियास्ताम् क्रियासुः
क्रियाः क्रियास्तम् क्रियास्त
क्रियासम् क्रियास्व क्रियास्म
श्व० कर्ता कर्तारौ कर्तारः
कर्तासि कर्तास्थः कर्तास्थ
कर्तास्मि कर्तास्वः कर्तास्मः
भ० करिष्यति करिष्यतः करिष्यन्ति
करिष्यसि करिष्यथः करिष्यथ
करिष्यामि करिष्यावः करिष्यामः
क्रि० अकरिष्यत् अकरिष्यताम् अकरिष्यन्
अकरिष्यः अकरिष्यतम् अकरिष्यत
अकरिष्यम् अकरिष्याव अकरिष्याम
व० कृणुते कृण्वाते कृण्वते
कृणुषे कृण्वाथे कृणुध्वे
कृण्वे कृण्वहे कृणुवहे कृण्महे कृणुमहे
स० कृण्वीत कृण्वीयाताम् कृण्वीरन्
कृण्वीथाः कृण्वीयाथाम् कृण्वीध्वम्
कृण्वीय कृण्वीवहि कृण्वीमहि
प० कृणुताम् कृण्वाताम् कृण्वताम्
कृणुष्व कृण्वाथाम् कृणुध्वम्
कृणवै कृणवावहै कृणवामहै
ह्य० अकृणुत अकृण्वाताम् अकृण्वत
अकृणुथाः अकृण्वाथाम् अकृणुध्वम्
अकृण्वि अकृण्वहि अकृण्महि
अकृणुवहि अकृणुमहि
अ० अकृत अकृषाताम् अकृषत
अकृथाः अकृषाथाम् अकृढ्वम्
अकृड्ढ्वम्
अकृषि अकृष्वहि अकृष्महि

प० चक्रे चक्राते चक्रिरे
चकृषे चक्राथे चकृढ्वे
चक्रे चकृवहे चकृमहे

आ० कृषीष्ट कृषीयास्ताम् कृषीरन्
कृषीष्ठाः कृषीयास्थाम् कृषीढ्वम्
कृषीय कृषीवहि कृषीमहि

श्व० कर्ता कर्तारौ कर्तारः
कर्तासे कर्तासाथे कर्ताध्वे
कर्ताहे कर्तास्वहे कर्तास्महे

भ० करिष्यते करिष्येते करिष्यन्ते
करिष्यसे करिष्येथे करिष्यध्वे
करिष्ये करिष्यावहे करिष्यामहे

क्रि० अकरिष्यत अकरिष्येताम् अकरिष्यन्त
अकरिष्यथाः अकरिष्येथाम् अकरिष्यध्वम्
अकरिष्ये अकरिष्यावहि अकरिष्यामहि

वृणुइ्–वरणे ।. स्वीकारतुं. वरवुं ।

व० वृणोति वृणुतः वृण्वन्ति
वृणोषि वृणुथः वृणुथ
वृणोमि वृण्वः वृणुवः वृण्मः वृणुमः

स० वृणुयात् वृणुयाताम् वृणुयुः
वृणुयाः वृणुयातम् वृणुयात
वृणुयाम् वृणुयाव वृणुयाम

प० वृणोतु वृणुतात् वृणुताम् वृण्वन्तु
वृणु वृणुतात् वृणुतम् वृणुत
वृणवानि वृणवाव वृणवाम

ह्य० अवृणोत् अवृणुताम् अवृण्वन्
अवृणोः अवृणुतम् अवृणुत
अवृणवम् अवृण्व अवृणुव अवृण्म अवृणुम

अ० अवारीत् अवारिष्टाम् अवारिषुः
अवारीः अवारिष्टम् अवारिष्ट
अवारिषम् अवारिष्व अवारिष्म

प० ववार वव्रतुः वव्रुः
वरिथ वव्रथुः वव्र
ववार ववर ववृव ववृम

आ० व्रियात् व्रियास्ताम् व्रियासुः
व्रियाः व्रियास्तम् व्रियास्त
व्रियासम् व्रियास्व व्रियास्म

श्व० वरिता वरितारौ वरितारः
वरितासि वरितास्थः वरितास्थ
वरितास्मि वरितास्वः वरितास्मः

वरीता वरीतारौ वरीतारः
वरीतासि वरीतास्थः वरीतास्थ
वरीतास्मि वरीतास्वः वरीतास्मः

भ० वरिष्यति वरिष्यतः वरिष्यन्ति
वरिष्यसि वरिष्यथः वरिष्यथ
वरिष्यामि वरिष्यावः वरिष्यामः

वरीष्यति वरीष्यतः वरीष्यन्ति
वरीष्यसि वरीष्यथः वरीष्यथ
वरीष्यामि वरीष्यावः वरीष्यामः

क्रि० अवरिष्यत् अवरिष्यताम् अवरिष्यन्
अवरिष्यः अवरिष्यतम् अवरिष्यत
अवरिष्यम् अवरिष्याव अवरिष्याम

अवरीष्यत् अवरीष्यताम् अवरीष्यन्
अवरीष्यः अवरीष्यतम् अवरीष्यत
अवरीष्यम् अवरीष्याव अवरीष्याम

व० वृणुते वृण्वाते वृण्वते
वृणुषे वृण्वाथे वृणुध्वे
वृण्वे वृण्वहे वृणुवहे वृण्महे वृणुमहे

स० वृण्वीत वृण्वीयाताम् वृण्वीरन्
वृण्वीथाः वृण्वीयाथाम् वृण्वीध्वम्
वृण्वीय वृण्वीवहि वृण्वीमहि

प० वृणुताम् वृण्वाताम् वृण्वताम्
वृणुष्व वृण्वाथाम् वृणुध्वम्
वृणवै वृणवावहै वृणवामहै

ह्य० अवृणुत अवृण्वाताम् अवृण्वत
अवृणुथाः अवृण्वाथाम् अवृणुध्वम्

अवृण्वि अवृण्वहि अवृण्महि
अवृणुवहि अवृणुमहि

अ० अवृत अवृषाताम् अवृषत
अवृथाः अवृषाथाम् अवृड्ढ्वम्-ढ्वम्
अवृषि अवृष्वहि अवृष्महि

अवरिष्ट अवरिषाताम् अवरिषत
अवरिष्ठाः अवरिषाथाम् अवरिड्ढ्वम्
ढ्वम् ध्वम्
अवरिषि अवरिष्वहि अवरिष्महि

अवरीष्ट अवरीषाताम् अवरीषत
अवरीष्ठाः अवरीषाथाम् अवरीढ्ढ्वम्
ढ्वम् ध्वम्
अवरीषि अवरीष्वहि अवरीष्महि

प० वव्रे वव्राते वव्रिरे
ववृषे वव्राथे ववृढ्वे ध्वे
वव्रे ववृवहे ववृमहे

आ० वरिषीष्ट वरिषीयास्ताम् वरिषीरन्
वरिषीष्ठाः वरिषीयास्थाम् वरिषीढ्वम्
ध्वम्
वरिषीय वरिषीवहि वरिषीमहि

वृषीष्ट वृषीयास्ताम् वृषीरन्
वृषीष्ठाः वृषीयास्थाम् वृषीढ्वम्
वृषीय वृषीवहि वृषीमहि

श्व० वरिता वरितारौ वरितारः
वरितासे वरितासाथे वरिताध्वे
वरिताहे वरितास्वहे वरितास्महे

वरीता वरीतारौ वरीतारः
वरीतासे वरीतासाथे वरीताध्वे
वरीताहे वरीतास्वहे वरीतास्महे

भ० वरिष्यते वरिष्येते वरिष्यन्ते
वरिष्यसे वरिष्येथे वरिष्यध्वे
वरिष्ये वरिष्यावहे वरिष्यामहे

वरीष्यते वरीष्येते वरीष्यन्ते
वरीष्यसे वरीष्येथे वरीष्यध्वे
वरीष्ये वरीष्यावहे वरीष्यामहे

क्रि० अवरिष्यत अवरिष्येताम् अवरिष्यन्त
अवरिष्यथाः अवरिष्येथाम् अवरिष्यध्वम्
अवरिष्ये अवरिष्यावहि अवरिष्यामहि

अवरीष्यत अवरीष्येताम् अवरीष्यन्त
अवरीष्यथाः अवरीष्येथाम् अवरीष्यध्वम्
अवरीष्ये अवरीष्यावहि अवरीष्यामहि

## ॥ इति स्वादय उभयपदिनः ॥

## ॥ अथ परस्मैपदिनः ॥

हिंट्–गतिवृद्ध्योः ॥ जवुं, वधवुं ।

व० हिनोति हिनुतः हिन्वन्ति
हिनोषि हिनुथः हिनुथ
हिनोमि हिन्वः हिनुवः हिन्मः हिनुमः

स० हिनुयात् हिनुयाताम् हिनुयुः
हिनुयाः हिनुयातम् हिनुयात
हिनुयाम् हिनुयाव हिनुयाम

प० हिनोतु हिनुतात् हिनुताम् हिन्वन्तु
हिनु हिनुतात् हिनुतम् हिनुत
हिनवानि हिनवाव हिनवाम

ह्य० अहिनोत् अहिनुताम् अहिन्वन्
अहिनोः अहिनुतम् अहिनुत
अहिनवम् अहिन्व अहिनुव अहिन्म अहिनुम

प्राहिणोत् ।

अ० अहैषीत् अहैष्टाम् अहैषुः
अहैषीः अहैष्टम् अहैष्ट
अहैषम् अहैष्व अहैष्म

प० जिघाय जिघ्यतुः जिघ्युः
जिघयिथ जिघेथ जिघ्यथुः जिघ्य
जिघाय जिघय जिघ्यिव जिघ्यिम

आ० हीयात् हीयास्ताम् हीयासुः
हीयाः हीयास्तम् हीयास्त
हीयासम् हीयास्व हीयास्म

श्व० हेता हेतारौ हेतारः
हेतासि हेतास्थः हेतास्थ
हेतास्मि हेतास्वः हेतास्मः

भ० हेष्यति हेष्यतः हेष्यन्ति
हेष्यसि हेष्यथः हेष्यथ
हेष्यामि हेष्यावः हेष्यामः

क्रि० अहेष्यत् अहेष्यताम् अहेष्यन्
अहेष्यः अहेष्यतम् अहेष्यत
अहेष्यम् अहेष्याव अहेष्याम

॥ श्रुंट्–श्रवणे ॥ सांभळवुं ॥

व० शृणोति शृणुतः शृण्वन्ति
शृणोषि शृणुथः शृणुथ
शृणोमि शृण्वः शृणुवः शृण्मः शृणुमः

स० शृणुयात् शृणुयाताम् शृणुयुः
शृणुयाः शृणुयातम् शृणुयात
शृणुयाम् शृणुयाव शृणुयाम

प० शृणोतु शृणुतात् शृणुताम् शृण्वन्तु
शृणु शृणुतात् शृणुतम् शृणुत
शृणवानि शृणवाव शृणवाम

ह्य० अशृणोत् अशृणुताम् अशृण्वन्
अशृणोः अशृणुतम् अशृणुत
अशृणवम् अशृण्व अशृणुव अशृण्म अशृणुम

अ० अश्रौषीत् अश्रौष्टाम् अश्रौषुः
अश्रौषीः अश्रौष्टम् अश्रौष्ट
अश्रौषम् अश्रौष्व अश्रौष्म

प० शुश्राव शुश्रुवतुः शुश्रुवुः
शुश्रोथ शुश्रुवथुः शुश्रुव
शुश्राव शुश्रव शुश्रुव शुश्रुम

आ० श्रूयात् श्रूयास्ताम् श्रूयासुः
श्रूयाः श्रूयास्तम् श्रूयास्त
श्रूयासम् श्रूयास्व श्रूयास्म

श्व० श्रोता श्रोतारौ श्रोतारः
श्रोतासि श्रोतास्थः श्रोतास्थ
श्रोतास्मि श्रोतास्वः श्रोतास्मः

भ० श्रोष्यति श्रोष्यतः श्रोष्यन्ति
श्रोष्यसि श्रोष्यथः श्रोष्यथ
श्रोष्यामि श्रोष्यावः श्रोष्यामः

क्रि० अश्रोष्यत् अश्रोष्यताम् अश्रोष्यन्
अश्रोष्यः अश्रोष्यतम् अश्रोष्यत
अश्रोष्यम् अश्रोष्याव अश्रोष्याम

॥ दुदुंट्–उपतापे ॥ दुःखी थवुं ॥
दुनोति । अदौषीत् । दुदविथ । दुदोथ ।

॥ पृंट्–प्रीतौ ॥ प्रसन्न थवुं ॥
पृणोति । अपार्षीत् । पपार ।
पप्रतुः । पपर्थ । प्रियात् ।

॥ स्मृंट्–पालने च ॥ पाळवुं, रक्षण करवुं.

व० स्मृणोति स्मृणुतः स्मृण्वन्ति
स्मृणोषि स्मृणुथः स्मृणुथ
स्मृणोमि स्मृणुवः स्मृण्वः स्मृणुमः स्मृण्मः

स० स्मृणुयात् स्मृणुयाताम् स्मृणुयुः
स्मृणुयाः स्मृणुयातम् स्मृणुयात
स्मृणुयाम् स्मृणुयाव स्मृणुयाम

प० स्मृणोतु स्मृणुतात् स्मृणुताम् स्मृण्वन्तु
स्मृणु स्मृणुतात् स्मृणुतम् स्मृणुत
स्मृणवानि स्मृणवाव स्मृणवाम

ह्य० अस्मृणोत् अस्मृणुताम् अस्मृण्वन्
अस्मृणोः अस्मृणुतम् अस्मृणुत
अस्मृणवम् अस्मृणुव अस्मृणुम
अस्मृण्व अस्मृण्म

अ० अस्मार्षीत् अस्मार्ष्टाम् अस्मार्षुः
अस्मार्षीः अस्मार्ष्टम् अस्मार्ष्ट

असमार्षम् असमार्ष्व असमार्ष्म

प० सस्मार सस्मरतुः सस्मरुः
सस्मर्थ सस्मरथुः सस्मर
सस्मार सस्मर सस्मरिव सस्मरिम

आ० स्मर्यात् स्मर्यास्ताम् स्मर्यासुः
स्मर्याः स्मर्यास्तम् स्मर्यास्त
स्मर्यासम् स्मर्यास्व स्मर्यास्म

श्व० स्मर्ता स्मर्तारौ स्मर्तारः
स्मर्तासि स्मर्तास्थः स्मर्तास्थ
स्मर्तास्मि स्मर्तास्वः स्मर्तास्मः

भ० स्मरिष्यति स्मरिष्यतः स्मरिष्यन्ति
स्मरिष्यसि स्मरिष्यथः स्मरिष्यथ
स्मरिष्यामि स्मरिष्यावः स्मरिष्यामः

क्रि० अस्मरिष्यत् अस्मरिष्यताम् अस्मरिष्यन्
अस्मरिष्यः अस्मरिष्यतम् अस्मरिष्यत
अस्मरिष्यम अस्मरिष्याव अस्मरिष्याम

॥ शक्लृंट्-शक्तौ ॥ शक्तिमान थवुं ।

व० शक्नोति शक्नुतः शक्नुवन्ति
शक्नोषि शक्नुथः शक्नुथ
शक्नोमि शक्नुवः शक्नुमः

स० शक्नुयात् शक्नुयाताम् शक्नुयुः
शक्नुयाः शक्नुयातम् शक्नुयात
शक्नुयाम् शक्नुयाव शक्नुयाम

प० शक्नोतु शक्नुतात् शक्नुताम् शक्नुवन्तु
शक्नुहि शक्नुतात् शक्नुतम् शक्नुत
शक्नवानि शक्नवाव शक्नवाम

ह्य० अशक्नोत् अशक्नुताम् अशक्नुवन्
अशक्नोः अशक्नुतम् अशक्नुत
अशक्नवम् अशक्नुव अशक्नुम

अ० अशकत् अशकताम् अशकन्
अशकः अशकतम् अशकत
अशकम् अशकाव अशकाम

प० शशाक शेकतुः शेकुः
शेकिथ शशक्थ शेकथुः शेक
शशाक शशक शेकिव शेकिम

आ० शक्यात् शक्यास्ताम् शक्यासुः
शक्याः शक्यास्तम् शक्यास्त
शक्यासम् शक्यास्व शक्यास्म

श्व० शक्ता शक्तारौ शक्तारः
शक्तासि शक्तास्थः शक्तास्थ
शक्तास्मि शक्तास्वः शक्तास्मः

भ० शक्ष्यति शक्ष्यतः शक्ष्यन्ति
शक्ष्यसि शक्ष्यथः शक्ष्यथ
शक्ष्यामि शक्ष्यावः शक्ष्यामः

क्रि० अशक्ष्यत् अशक्ष्यताम् अशक्ष्यन्
अशक्ष्यः अशक्ष्यतम् अशक्ष्यत
अशक्ष्यम् अशक्ष्याव अशक्ष्याम

॥ तिक तिग षघट्-हिंसायाम् ॥

हिंसा करवी ॥

तिक्नोति । अतेकीत् । तितेक ।
तिग्नोति । अतेगीत् । तितेग ।
सघ्नोति । असाघीत् । असघीत् ।

॥ राधं साधंट्-संसिद्धौ फलसम्पत्तौ ॥
रांधवुं, पचवुं, फल प्राप्त करवुं ॥

व० राध्नोति राध्नुतः राध्नुवन्ति
राध्नोषि राध्नुथः राध्नुथ
राध्नोमि राध्नुवः राध्नुमः

स० राध्नुयात् राध्नुयाताम् राध्नुयुः
राध्नुयाः राध्नुयातम् राध्नुयात
राध्नुयाम् राध्नुयाव राध्नुयाम

प० राध्नोतु राध्नुतात् राध्नुताम् राध्नुवन्तु
राध्नुहि राध्नुतात् राध्नुतम् राध्नुत
राध्नवानि राध्नवाव राध्नवाम

ह्य० अराध्नोत् अराध्नुताम् अराध्नुवन्
अराध्नोः अराध्नुतम् अराध्नुत
अराध्नवम् अराध्नुव अराध्नुम

अ० अरात्सीत् अराद्धाम् अरात्सुः
अरात्सीः अराद्धम् अराद्ध
अरात्सम् अरात्स्व अरात्स्म
प० रराध रराधतुः रराधुः
रराधिथ रराधथुः रराध
रराध रराधिव रराधिम

वधार्थे तु—

प्रतिरराध प्रतिरेधतुः प्रतिरेधुः
प्रतिरेधिथ प्रतिरेधथुः प्रतिरेध
प्रतिरराध प्रतिरेधिव प्रतिरेधिम
आ० राध्यात् राध्यास्ताम् राध्यासुः
राध्याः राध्यास्तम् राध्यास्त
राध्यासम् राध्यास्व राध्यास्म
श्व० राद्धा राद्धारौ राद्धारः
राद्धासि राद्धास्थः राद्धास्थ
राद्धास्मि राद्धास्वः राद्धास्मः
भ० रात्स्यति रात्स्यतः रात्स्यन्ति
रात्स्यसि रात्स्यथः रात्स्यथ
रात्स्यामि रात्स्यावः रात्स्यामः
क्रि० अरात्स्यत् अरात्स्यताम् अरात्स्यन्
अरात्स्यः अरात्स्यतम् अरात्स्यत
अरात्स्यम् अरात्स्याव अरात्स्याम
व० साध्नोति साध्नुतः साध्नुवन्ति
साध्नोषि साध्नुथः साध्नुथ
साध्नोमि साध्नुवः साध्नुमः
स० साध्नुयात् साध्नुयाताम् साध्नुयुः
साध्नुयाः साध्नुयातम् साध्नुयात
साध्नुयाम् साध्नुयाव साध्नुयाम
प० साध्नोतु साध्नुतात् साध्नुताम्
साध्नुवन्तु
साध्नुहि साध्नुतात् साध्नुतम् साध्नुत
साध्नवानि साध्नवाव साध्नवाम
ह्य० असाध्नोत् असाध्नुताम् असाध्नुवन्
असाध्नोः असाध्नुतम् असाध्नुत
असाध्नवम् असाध्नुव असाध्नुम
अ० असात्सीत् असाद्धाम् असात्सुः
असात्सीः असाद्धम् असाद्ध
असात्सम् असात्स्व असात्स्म
प० ससाध ससाधतुः ससाधुः
ससाधिथ ससाधथुः ससाध
ससाध ससाधिव ससाधिम
आ० साध्यात् साध्यास्ताम् साध्यासुः
साध्याः साध्यास्तम् साध्यास्त
साध्यासम् साध्यास्व साध्यास्म
श्व० साद्धा साद्धारौ साद्धारः
साद्धासि साद्धास्थः साद्धास्थ
साद्धास्मि साद्धास्वः साद्धास्मः
भ० सात्स्यति सात्स्यतः सात्स्यन्ति
सात्स्यसि सात्स्यथः सात्स्यथ
सात्स्यामि सात्स्यावः सात्स्यामः
क्रि० असात्स्यत् असात्स्यताम् असात्स्यन्
असात्स्यः असात्स्यतम् असात्स्यत
असात्स्यम् असात्स्याव असात्स्याम

॥ ऋधूट्-वृद्धौ वर्धवुं ॥

व० ऋध्नोति ऋध्नुतः ऋध्नुवन्ति
ऋध्नोषि ऋध्नुथः ऋध्नुथ
ऋध्नोमि ऋध्नुवः ऋध्नुमः
प्रार्ध्नोति परार्ध्नोति
स० ऋध्नुयात् ऋध्नुयाताम् ऋध्नुयुः
ऋध्नुयाः ऋध्नुयातम् ऋध्नुयात
ऋध्नुयाम् ऋध्नुयाव ऋध्नुयाम
प० ऋध्नोतु ऋध्नुतात् ऋध्नुताम् ऋध्नुवन्तु
ऋध्नुहि ऋध्नुतात् ऋध्नुतम् ऋध्नुत
ऋध्नवानि ऋध्नवाव ऋध्नवाम
ह्य० आर्ध्नोत् आर्ध्नुताम् आर्ध्नुवन्
आर्ध्नोः आर्ध्नुतम् आर्ध्नुत

आर्ध्नुवम् आर्ध्नुव आर्ध्नुम

अ० आर्धीत् आर्धिष्टाम् आर्धिषुः
आर्धीः आर्धिष्टम् आर्धिष्ट
आर्धिषम् आर्धिष्व आर्धिष्म

प० आनर्ध आनृधतुः आनृधुः
आनर्धिथ आनृधथुः आनृध
आनर्ध आनृधिव आनृधिम

आ० ऋध्यात् ऋध्यास्ताम् ऋध्यासुः
ऋध्याः ऋध्यास्तम् ऋध्यास्त
ऋध्यासम् ऋध्यास्व ऋध्यास्म

श्व० अर्धिता अर्धितारौ अर्धितारः
अर्धितासि अर्धितास्थः अर्धितास्थ
अर्धितास्मि अर्धितास्वः अर्धितास्मः

भ० अर्धिष्यति अर्धिष्यतः अर्धिष्यन्ति
अर्धिष्यसि अर्धिष्यथः अर्धिष्यथ
अर्धिष्यामि अर्धिष्यावः अर्धिष्यामः

क्रि० आर्धिष्यत् आर्धिष्यताम् आर्धिष्यन्
आर्धिष्यः आर्धिष्यतम् आर्धिष्यत
आर्धिष्यम् आर्धिष्याव आर्धिष्याम

॥ आप्लृंट्-व्याप्तौ, व्याप्त थवु ॥

व० आप्नोति आप्नुतः आप्नुवन्ति
आप्नोषि आप्नुथः आप्नुथ
आप्नोमि आप्नुवः आप्नुमः

स० आप्नुयात् आप्नुयाताम् आप्नुयुः
आप्नुयाः आप्नुयातम् आप्नुयात
आप्नुयाम् आप्नुयाव आप्नुयाम

प० आप्नोतु आप्नुतात् आप्नुताम् आप्नुवन्तु
आप्नुहि आप्नुतात् आप्नुतम् आप्नुत
आप्नवानि आप्नवाव आप्नवाम

ह्य० आप्नोत् आप्नुताम् आप्नुवन्
आप्नोः आप्नुतम् आप्नुत
आप्नवम् आप्नुव आप्नुम

अ० आपत् आपताम् आपन्
आपः आपतम् आपत
आपम् आपाव आपाम

प० आप आपतुः आपुः
आपिथ आपथुः आप
आप आपिव आपिम

आ० आप्यात् आप्यास्ताम् आप्यासुः
आप्याः आप्यास्तम् आप्यास्त
आप्यासम् आप्यास्व आप्यास्म

श्व० आप्ता आप्तारौ आप्तारः
आप्तासि आप्तास्थः आप्तास्थ
आप्तास्मि आप्तास्वः आप्तास्मः

भ० आप्स्यति आप्स्यतः आप्स्यन्ति
आप्स्यसि आप्स्यथः आप्स्यथ
आप्स्यामि आप्स्यावः आप्स्यामः

क्रि० आप्स्यत् आप्स्यताम् आप्स्यन्
आप्स्यः आप्स्यतम् आप्स्यत
आप्स्यम् आप्स्याव आप्स्याम

॥ तृपट्-प्रीणने ॥ तृप्त थवुं
तृप्नोति । अतर्पीत् । ततर्पिथ ।
मुजब करवुं

॥ दम्भूट्-दम्भे ॥

व० दम्नोति दम्नुतः दम्नुवन्ति
दम्नोषि दम्नुथः दम्नुथ
दम्नोमि दम्नुवः दम्नुमः

स० दम्नुयात् दम्नुयाताम् दम्नुयुः
दम्नुयाः दम्नुयातम् दम्नुयात
दम्नुयाम् दम्नुयाव दम्नुयाम

प० दम्नोतु दम्नुतात् दम्नुताम् दम्नुवन्तु
दम्नुहि दम्नुतात् दम्नुतम् दम्नुत
दम्नवानि दम्नवाव दम्नवाम

ह्य० अदम्नोत् अदम्नुताम् अदम्नुवन्
अदम्नोः अदम्नुतम् अदम्नुत
अदम्नवम् अदम्नुव अदम्नुम

अ० अदम्भीत् अदम्भिष्टाम् अदम्भिषुः

अदम्भीः अदम्भिष्टम् अदम्भिष्ट
अदम्भिषम् अदम्भिष्व अदम्भिष्म

कस्यचिन्मते तु पुरुषत्रयैकवचने, । ददम्भ । ददम्भिथ । ददम्भ । इत्येवान्यत्र रूपद्वयं भवति, मतान्तरे सर्वत्र रूपद्वयं भवति—यथा देभ । ददम्भ । देभतुः । ददम्भतुरित्यादि ।

प० ददम्भ देभतुः देभुः
देभिथ ददम्भिथ देभथुः देभ
ददम्भ देभिव देभिम

आ० दभ्यात् दभ्यास्ताम् दभ्यासुः
दभ्याः दभ्यास्तम् दभ्यास्त
दभ्यासम् दभ्यास्व दभ्यास्म

श्व० दम्भिता दम्भितारौ दम्भितारः
दम्भितासि दम्भितास्थः दम्भितास्थ
दम्भितास्मि दम्भितास्वः दम्भितास्मः

भ० दम्भिष्यति दम्भिष्यतः दम्भिष्यन्ति
दम्भिष्यसि दम्भिष्यथः दम्भिष्यथ
दम्भिष्यामि दम्भिष्यावः दम्भिष्यामः

क्रि० अदम्भिष्यत् अदम्भिष्यताम् अदम्भिष्यन्
अदम्भिष्यः अदम्भिष्यतम् अदम्भिष्यत
अदम्भिष्यम् अदम्भिष्याव अदम्भिष्याम

॥ कृवुञ्-हिंसाकरणयोः ॥ हींसा करवी करवुं

व० कृणोति कृणुतः कृण्वन्ति
कृणोषि कृणुथः कृणुथ
कृणोमि कृण्वः कृणुवः कृण्मः कृणुमः

स० कृणुयात् कृणुयाताम् कृणुयुः
कृणुयाः कृणुयातम् कृणुयात
कृणुयाम् कृणुयाव कृणुयाम

प० कृणोतु कृणुतात् कृणुताम् कृण्वन्तु
कृणु कृणुतात् कृणुतम् कृणुत
कृणवानि कृणवाव कृणवाम

ह्य० अकृणोत् अकृणुताम् अकृण्वन्
अकृणोः अकृणुतम् अकृणुत
अकृणवम् अकृण्व अकृणुव अकृण्म अकृणुम

अ० अकृण्वीत् अकृण्विष्टाम् अकृण्विषुः
अकृण्वीः अकृण्विष्टम् अकृण्विष्ट
अकृण्विषम् अकृण्विष्व अकृण्विष्म

प० चकृण्व चकृण्वतुः चकृण्वुः
चकृण्विथ चकृण्वथुः चकृण्व
चकृण्व चकृण्विव चकृण्विम

आ० कृण्व्यात् कृण्व्यास्ताम् कृण्व्यासुः
कृण्व्याः कृण्व्यास्तम् कृण्व्यास्त
कृण्व्यासम् कृण्व्यास्व कृण्व्यास्म

श्व० कृण्विता कृण्वितारौ कृण्वितारः
कृण्वितासि कृण्वितास्थः कृण्वितास्थ
कृण्वितास्मि कृण्वितास्वः कृण्वितास्मः

भ० कृण्विष्यति कृण्विष्यतः कृण्विष्यन्ति
कृण्विष्यसि कृण्विष्यथः कृण्विष्यथ
कृण्विष्यामि कृण्विष्यावः कृण्विष्यामः

क्रि० अकृण्विष्यत् अकृण्विष्यताम् अकृण्विष्यन्
अकृण्विष्यः अकृण्विष्यतम् अकृण्विष्यत
अकृण्विष्यम् अकृण्विष्याव अकृण्विष्याम

॥ धिवुङ्-गतौ । प्रीणनेऽप्यन्ये ॥ जवुं खुश करवुं

व० धिनोति धिनुतः धिन्वन्ति
धिनोषि धिनुथः धिनुथ
धिनोमि धिन्वः धिनुवः धिन्मः धिनुमः

स० धिनुयात् धिनुयाताम् धिनुयुः
धिनुयाः धिनुयातम् धिनुयात
धिनुयाम् धिनुयाव धिनुयाम

प० धिनोतु धिनुतात् धिनुताम् धिन्वन्तु
धिनु " धिनुतम् धिनुत
धिनवानि धिनवाव धिनवाम

ह्य० अधिनोत् अधिनुताम् अधिन्वन्
अधिनोः अधिनुतम् अधिनुत
अधिनवम् अधिन्व अधिनुव अधिन्म
अधिनुम
अ० अधिन्वीत् अधिन्विष्टाम् अधिन्विषुः
अधिन्वीः अधिन्विष्टम् अधिन्विष्ट
अधिन्विषम् अधिन्विष्व अधिन्विष्म
प० दिधिन्व दिधिन्वतुः दिधिन्वुः
दिधिन्विथ दिधिन्वथुः दिधिन्व
दिधिन्व दिधिन्विव दिधिन्विम
आ० धिन्व्यात् धिन्व्यास्ताम् धिन्व्यासुः
धिन्व्याः धिन्व्यास्तम् धिन्व्यास्त
धिन्व्यासम् धिन्व्यास्व धिन्व्यास्म
श्व० धिन्विता धिन्वितारौ धिन्वितारः
धिन्वितासि धिन्वितास्थः धिन्वितास्थ
धिन्वितास्मि धिन्वितास्वः धिन्वितास्मः
भ० धिन्विष्यति धिन्विष्यतः धिन्विष्यन्ति
धिन्विष्यसि धिन्विष्यथः धिन्विष्यथ
धिन्विष्यामि धिन्विष्यावः धिन्विष्यामः
क्रि० अधिन्विष्यत् अधिन्विष्यताम् अधिन्विष्यन्
अधिन्विष्यः अधिन्विष्यतम् अधिन्विष्यत
अधिन्विष्यम् अधिन्विष्याव अधिन्विष्याम

॥ ञिधृषाद्-प्रागल्भ्ये, ॥ बढाइ मारवी

व० धृष्णोति धृष्णुतः धृष्णुवन्ति
धृष्णोषि धृष्णुथः धृष्णुथ
धृष्णोमि धृष्णुवः धृष्णुमः
स० धृष्णुयात् धृष्णुयाताम् धृष्णुयुः
धृष्णुयाः धृष्णुयातम् धृष्णुयात
धृष्णुयाम् धृष्णुयाव धृष्णुयाम
प० धृष्णोतु धृष्णुतात् धृष्णुताम् धृष्णुवन्तु
धृष्णुहि ,, धृष्णुतम् धृष्णुत
धृष्णवानि धृष्णवाव धृष्णवाम
ह्य० अधृष्णोत् अधृष्णुताम् अधृष्णुवन्
अधृष्णोः अधृष्णुतम् अधृष्णुत
अधृष्णवम् अधृष्णुव अधृष्णुम
अ० अधर्षीत् अधर्षिष्टाम् अधर्षिषुः
अधर्षीः अधर्षिष्टम् अधर्षिष्ट
अधर्षिषम् अधर्षिष्व अधर्षिष्म
प० दधर्ष दधृषतुः दधृषुः
दधर्षिथ दधृषथुः दधृष
दधर्ष दधृषिव दधृषिम
आ० धृष्यात् धृष्यास्ताम् धृष्यासुः
धृष्याः धृष्यास्तम् धृष्यास्त
धृष्यासम् धृष्यास्व धृष्यास्म
श्व० धर्षिता धर्षितारौ धर्षितारः
धर्षितासि धर्षितास्थः धर्षितास्थ
धर्षितास्मि धर्षितास्वः धर्षितास्मः
भ० धर्षिष्यति धर्षिष्यतः धर्षिष्यन्ति
धर्षिष्यसि धर्षिष्यथः धर्षिष्यथ
धर्षिष्यामि धर्षिष्यावः धर्षिष्यामः
क्रि० अधर्षिष्यत् अधर्षिष्यताम् अधर्षिष्यन्
अधर्षिष्यः अधर्षिष्यतम् अधर्षिष्यत
अधर्षिष्यम् अधर्षिष्याव अधर्षिष्याम

## ॥ इति स्वादयः परस्मैपदिनः ॥

## ॥ अथात्मनेपदिनौ ॥

॥ ष्टिघिट्-आस्कन्दने ॥ दोडवुं युद्ध करवुं,

व० स्तिघ्नुते स्तिघ्नुवाते स्तिघ्नुवते
स्तिघ्नुषे स्तिघ्नुवाथे स्तिघ्नुध्वे
स्तिघ्नुवे स्तिघ्नुवहे स्तिघ्नुमहे
स० स्तिघ्नुवीत स्तिघ्नुवीयाताम् स्तिघ्नुवीरन्

स्तिघ्नुवीथाः स्तिघ्नुवीयाथाम् स्तिघ्नुवीध्वम्
स्तिघ्नुवीय स्तिघ्नुवीवहि स्तिघ्नुवीमहि
प० स्तिघ्नुताम् स्तिघ्नुवाताम् स्तिघ्नुवताम्
स्तिघ्नुष्व स्तिघ्नुवाथाम् स्तिघ्नुध्वम्
स्तिघ्नवै स्तिघ्नवावहै स्तिघ्नवामहै
ह्य० अस्तिघ्नुत अस्तिघ्नुवाताम् अस्तिघ्नुवत
अस्तिघ्नुथाः अस्तिघ्नुवाथाम् अस्तिघ्नुध्वम्
अस्तिघ्नुवि अस्तिघ्नुवहि अस्तिघ्नुमहि
अ० अस्तेघिष्ट अस्तेघिषाताम् अस्तेघिषत
अस्तेघिष्ठाः अस्तेघिषाथाम् अस्तेघिढ्ढ्वम्
ध्वम्
अस्तेघिषि अस्तेघिष्वहि अस्तेघिष्महि
प० तिष्टिघे तिष्टिघाते तिष्टिघिरे
तिष्टिघिषे तिष्टिघाथे तिष्टिघिध्वे
तिष्टिघे तिष्टिघिवहे तिष्टिघिमहे
आ० स्तेघिषीष्ट स्तेघिषीयास्ताम् स्तेघिषीरन्
स्तेघिषीष्ठाः स्तेघिषीयास्थाम् स्तेघिषीध्वम्
स्तेघिषीय स्तेघिषीवहि स्तेघिषीमहि
श्व० स्तेघिता स्तेघितारौ स्तेघितारः
स्तेघितासे स्तेघितासाथे स्तेघिताध्वे
स्तेघिताहे स्तेघितास्वहे स्तेघितास्महे
भ० स्तेघिष्यते स्तेघिष्येते स्तेघिष्यन्ते
स्तेघिष्यसे स्तेघिष्येथे स्तेघिष्यध्वे
स्तेघिष्ये स्तेघिष्यावहे स्तेघिष्यामहे
क्रि० अस्तेघिष्यत अस्तेघिष्येताम् अस्तेघिष्यन्त
अस्तेघिष्यथाः अस्तेघिष्येथाम् अस्तेघिष्यध्वम्
अस्तेघिष्ये अस्तेघिष्यावहि अस्तेघिष्यामहि

॥ अशौटि व्याप्तौ । सङ्घातेऽप्यन्ये
व्यापवुं, एकत्र करवुं ॥

व० अश्नुते अश्नुवाते अश्नुवते
अश्नुषे अश्नुवाथे अश्नुध्वे
अश्नुवे अश्नुवहे अश्नुमहे
स० अश्नुवीत अश्नुवीयाताम् अश्नुवीरन्
अश्नुवीथाः अश्नुवीयाथाम् अश्नुवीध्वम्
अश्नुवीय अश्नुवीवहि अश्नुवीमहि
प० अश्नुताम् अश्नुवाताम् अश्नुवताम्
अश्नुष्व अश्नुवाथाम् अश्नुध्वम्
अश्नवै अश्नवावहै अश्नवामहै
ह्य० आश्नुत आश्नुवाताम् आश्नुवत
आश्नुथाः आश्नुवाथाम् आश्नुध्वम्
आश्नुवि आश्नुवहि आश्नुमहि
अ० आशिष्ट आशिषाताम् आशिषत
आशिष्ठाः आशिषाथाम् आशिढ्ढ्वम्
ध्वम्
आशिषि आशिष्वहि आशिष्महि
आष्ट आक्षाताम् आक्षत
आष्ठाः आक्षाथाम् आड्ढ्वम्
आग्ढ्वम्
आक्षि आक्ष्वहि आक्ष्महि
प० आनशे आनशाते आनशिरे
आनशिषे आनशाथे आनशिध्वे
आनशे आनशिवहे आनशिमहे
आ० अशिषीष्ट अशिषीयास्ताम् अशिषीरन्
अशिषीष्ठाः अशिषीयास्थाम् अशिषीध्वम्
अशिषीय अशिषीवहि अशिषीमहि
अक्षीष्ट अक्षीयास्ताम् अक्षीरन्
अक्षीष्ठाः अक्षीयास्थाम् अक्षीध्वम्
अक्षीय अक्षीवहि अक्षीमहि
श्व० अशिता अशितारौ अशितारः
अशितासे अशितासाथे अशिताध्वे
अशिताहे अशितास्वहे अशितास्महे
अष्टा अष्टारौ अष्टारः
अष्टासे अष्टासाथे अष्टाध्वे
अष्टाहे अष्टास्वहे अष्टास्महे
भ० अशिष्यते अशिष्येते अशिष्यन्ते
अशिष्यसे अशिष्येथे अशिष्यध्वे
अशिष्ये अशिष्यावहे अशिष्यामहे
अक्ष्यते अक्ष्येते अक्ष्यन्ते

| | | |
|---|---|---|
| अक्ष्यसे | अक्ष्येथे | अक्ष्यध्वे |
| अक्ष्ये | अक्ष्यावहे | अक्ष्यामहे |
| क्रि० आशिष्यत | आशिष्येताम् | आशिष्यन्त |
| आशिष्यथाः | आशिष्येथाम् | आशिष्यध्वम् |
| आशिष्ये | आशिष्यावहि | आशिष्यामहि |

॥ इति स्वादौआत्मनेपदिनो ॥

इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंरक्षणप्रवण विद्यापीठादिमस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजयविरचितायां हैमधातुमालायां

॥ स्वादिगणः ॥

# ॥ अथ तुदादयः ॥

## ॥ उभयपदिनः ॥

॥ तुदींत्–व्यथने ॥ व्यथा करवी, पीडवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | तुदति | तुदतः | तुदन्ति |
| | तुदसि | तुदथः | तुदथ |
| | तुदामि | तुदावः | तुदामः |
| स० | तुदेत् | तुदेताम् | तुदेयुः |
| | तुदेः | तुदेतम् | तुदेत |
| | तुदेयम् | तुदेव | तुदेम |
| प० | तुदतु तुदतात् | तुदताम् | तुदन्तु |
| | तुद ,, | तुदतम् | तुदत |
| | तुदानि | तुदाव | तुदाम |
| ह्य० | अतुदत् | अतुदताम् | अतुदन् |
| | अतुदः | अतुदतम् | अतुदत |
| | अतुदम् | अतुदाव | अतुदाम |
| अ० | अतौत्सीत् | अतौत्ताम् | अतौत्सुः |
| | अतौत्सीः | अतौत्तम् | अतौत्त |
| | अतौत्सम् | अतौत्स्व | अतौत्स्म |
| प० | तुतोद | तुतुदतुः | तुतुदुः |
| | तुतोदिथ | तुतुदथुः | तुतुद |
| | तुतोद | तुतुदिव | तुतुदिम |
| आ० | तुद्यात् | तुद्यास्ताम् | तुद्यासुः |
| | तुद्याः | तुद्यास्तम् | तुद्यास्त |
| | तुद्यासम् | तुद्यास्व | तुद्यास्म |
| श्व० | तोत्ता | तोत्तारौ | तोत्तारः |
| | तोत्तासि | तोत्तास्थः | तोत्तास्थ |
| | तोत्तास्मि | तोत्तास्वः | तोत्तास्मः |
| भ० | तोत्स्यति | तोत्स्यतः | तोत्स्यन्ति |
| | तोत्स्यसि | तोत्स्यथः | तोत्स्यथ |
| | तोत्स्यामि | तोत्स्यावः | तोत्स्यामः |
| क्रि० | अतोत्स्यत् | अतोत्स्यताम् | अतोत्स्यन् |
| | अतोत्स्यः | अतोत्स्यतम् | अतोत्स्यत |
| | अतोत्स्यम् | अतोत्स्याव | अतोत्स्याम |
| व० | तुदते | तुदेते | तुदन्ते |

तुदसे तुदेथे तुदध्वे
तुदे तुदावहे तुदामहे
स० तुदेत तुदेयाताम् तुदेरन्
तुदेथाः तुदेयाथाम् तुदेध्वम्
तुदेय तुदेवहि तुदेमहि
प० तुदताम् तुदेताम् तुदन्ताम्
तुदस्व तुदेथाम् तुदध्वम्
तुदै तुदावहै तुदामहै
ह्य० अतुदत अतुदेताम् अतुदन्त
अतुदथाः अतुदेथाम् अतुदध्वम्
अतुदे अतुदावहि अतुदामहि
अ० अतुत्त अतुत्साताम् अतुत्सत
अतुत्थाः अतुत्साथाम् अतुद्ध्वम्
-द्ध्वम्
अतुत्सि अतुत्स्वहि अतुत्स्महि
प० तुतुदे तुतुदाते तुतुदिरे
तुतुदिषे तुतुदाथे तुतुदिध्वे
तुतुदे तुतुदिवहे तुतुदिमहे
आ० तुत्सीष्ट तुत्सीयास्ताम् तुत्सीरन्
तुत्सीष्ठाः तुत्सीयास्थाम् तुत्सीध्वम्
तुत्सीय तुत्सीवहि तुत्सीमहि
श्व० तोत्ता तोत्तारौ तोत्तारः
तोत्तासे तोत्तासाथे तोत्ताध्वे
तोत्ताहे तोत्तास्वहे तोत्तास्महे
भ० तोत्स्यते तोत्स्येते तोत्स्यन्ते
तोत्स्यसे तोत्स्येथे तोत्स्यध्वे
तोत्स्ये तोत्स्यावहे तोत्स्यामहे
क्रि० अतोत्स्यत अतोत्स्येताम् अतोत्स्यन्त
अतोत्स्यथाः अतोत्स्येथाम् अतोत्स्यध्वम्
अतोत्स्ये अतोत्स्यावहि अतोत्स्यामहि

। भ्रस्जींत्-पाके, शेकवुं ॥ भुंजवुं

व० भृज्जति भृज्जतः भृज्जन्ति
भृज्जसि भृज्जथः भृज्जथ
भृज्जामि भृज्जावः भृज्जामः
स० भृज्जेत् भृज्जेताम् भृज्जेयुः
भृज्जेः भृज्जेतम् भृज्जेत
भृज्जेयम् भृज्जेव भृज्जेम
प० भृज्जतु भृज्जतात् भृज्जताम् भृज्जन्तु
भृज्ज भृज्जतात् भृज्जतम् भृज्जत
भृज्जानि भृज्जाव भृज्जाम
ह्य० अभृज्जत् अभृज्जताम् अभृज्जन्
अभृज्जः अभृज्जतम् अभृज्जत
अभृज्जम् अभृज्जाव अभृज्जाम
अ० अभार्क्षीत् अभार्ष्टाम् अभार्क्षुः
अभार्क्षीः अभार्ष्टम् अभार्ष्ट
अभार्क्षम् अभार्क्ष्व अभार्क्ष्म
अभ्राक्षीत् अभ्राष्टाम् अभ्राक्षुः
अभ्राक्षीः अभ्राष्टम् अभ्राष्ट
अभ्राक्षम् अभ्राक्ष्व अभ्राक्ष्म
प० बभर्ज बभर्जतुः बभर्जुः
बभर्जिथ बभर्ष्ठ बभर्जथुः बभर्ज
बभर्ज बभर्जिव बभर्जिम
बभ्रज्ज बभ्रज्जतुः बभ्रज्जुः
बभ्रज्जिथ बभ्रष्ठ बभ्रज्जथुः बभ्रज्ज
बभ्रज्ज बभ्रज्जिव बभ्रज्जिम
भृज्ज्यात् भृज्ज्यास्ताम् भृज्ज्यासुः
भृज्ज्याः भृज्ज्यास्तम् भृज्ज्यास्त
भृज्ज्यासम् भृज्ज्यास्व भृज्ज्यास्म
श्व० भर्ष्टा भर्ष्टारौ भर्ष्टारः
भर्ष्टासि भर्ष्टास्थः भर्ष्टास्थ
भर्ष्टास्मि भर्ष्टास्वः भर्ष्टास्मः
भ्रष्टा भ्रष्टारौ भ्रष्टारः
भ्रष्टासि भ्रष्टास्थः भ्रष्टास्थ
भ्रष्टास्मि भ्रष्टास्वः भ्रष्टास्मः
भ० भर्क्ष्यति भर्क्ष्यतः भर्क्ष्यन्ति
भर्क्ष्यसि भर्क्ष्यथः भर्क्ष्यथ
भर्क्ष्यामि भर्क्ष्यावः भर्क्ष्यामः
भ्रक्ष्यति भ्रक्ष्यतः भ्रक्ष्यन्ति

| | | |
|---|---|---|
| भ्रक्ष्यसि | भ्रक्ष्यथः | भ्रक्ष्यथ |
| भ्रक्ष्यामि | भ्रक्ष्यावः | भ्रक्ष्यामः |
| क्रि० अभर्क्ष्यत् | अभर्क्ष्यताम् | अभर्क्ष्यन् |
| अभर्क्ष्यः | अभर्क्ष्यतम् | अभर्क्ष्यत |
| अभर्क्ष्यम् | अभर्क्ष्याव | अभर्क्ष्याम |
| अभ्रक्ष्यत् | अभ्रक्ष्यताम् | अभ्रक्ष्यन् |
| अभ्रक्ष्यः | अभ्रक्ष्यतम् | अभ्रक्ष्यत |
| अभ्रक्ष्यम् | अभ्रक्ष्याव | अभ्रक्ष्याम |
| व० भृज्जते | भृज्जेते | भृज्जन्ते |
| भृज्जसे | भृज्जेथे | भृज्जध्वे |
| भृज्जे | भृज्जावहे | भृज्जामहे |
| स० भृज्जेत | भृज्जेयाताम् | भृज्जेरन् |
| भृज्जेथाः | भृज्जेयाथाम् | भृज्जेध्वम् |
| भृज्जेय | भृज्जेवहि | भृज्जेमहि |
| प० भृज्जताम् | भृज्जेताम् | भृज्जन्ताम् |
| भृज्जस्व | भृज्जेथाम् | भृज्जध्वम् |
| भृज्ज | भृज्जावहै | भृज्जामहै |
| ह्य० अभृज्जत | अभृज्जेताम् | अभृज्जन्त |
| अभृज्जथाः | अभृज्जेथाम् | अभृज्जध्वम् |
| अभृज्जे | अभृज्जावहि | अभृज्जामहि |
| अ० अभर्ष्ट | अभर्क्षाताम् | अभर्क्षत |
| अभर्ष्ठाः | अभर्क्षाथाम् | अभर्ड्ढ्वम् / अभर्ग्ढ्वम् |
| अभर्क्षि | अभर्क्ष्वहि | अभर्क्ष्महि |
| अभ्रष्ट | अभ्रक्षाताम् | अभ्रक्षत |
| अभ्रष्ठाः | अभ्रक्षाथाम् | अभ्रड्ढ्वम् / अभ्रग्ढ्वम् |
| अभ्रक्षि | अभ्रक्ष्वहि | अभ्रक्ष्महि |
| प० बभर्जे | बभर्जाते | बभर्जिरे |
| बभर्जिषे | बभर्जाथे | बभर्जिध्वे |
| बभर्जे | बभर्जिवहे | बभर्जिमहे |
| बभ्रज्जे | बभ्रज्जाते | बभ्रज्जिरे |
| बभ्रज्जिषे | बभ्रज्जाथे | बभ्रज्जिध्वे |
| बभ्रज्जे | बभ्रज्जिवहे | बभ्रज्जिमहे |

| | | |
|---|---|---|
| आ० भर्क्षीष्ट | भर्क्षीयास्ताम् | भर्क्षीरन् |
| भर्क्षीष्ठाः | भर्क्षीयास्थाम् | भर्क्षीध्वम् |
| भर्क्षीय | भर्क्षीवहि | भर्क्षीमहि |
| भ्रक्षीष्ट | भ्रक्षीयास्ताम् | भ्रक्षीरन् |
| भ्रक्षीष्ठाः | भ्रक्षीयास्थाम् | भ्रक्षीध्वम् |
| भ्रक्षीय | भ्रक्षीवहि | भ्रक्षीमहि |
| श्व० भर्ष्टा | भर्ष्टारौ | भर्ष्टारः |
| भर्ष्टासे | भर्ष्टासाथे | भर्ष्टाध्वे |
| भर्ष्टाहे | भर्ष्टास्वहे | भर्ष्टास्महे |
| भ्रष्टा | भ्रष्टारौ | भ्रष्टारः |
| भ्रष्टासे | भ्रष्टासाथे | भ्रष्टाध्वे |
| भ्रष्टाहे | भ्रष्टास्वहे | भ्रष्टास्महे |
| भ० भर्क्ष्यते | भर्क्ष्येते | भर्क्ष्यन्ते |
| भर्क्ष्यसे | भर्क्ष्येथे | भर्क्ष्यध्वे |
| भर्क्ष्ये | भर्क्ष्यावहे | भर्क्ष्यामहे |
| भ्रक्ष्यते | भ्रक्ष्येते | भ्रक्ष्यन्ते |
| भ्रक्ष्यसे | भ्रक्ष्येथे | भ्रक्ष्यध्वे |
| भ्रक्ष्ये | भ्रक्ष्यावहे | भ्रक्ष्यामहे |
| क्रि० अभर्क्ष्यत | अभर्क्ष्येताम् | अभर्क्ष्यन्त |
| अभर्क्ष्यथाः | अभर्क्ष्येथाम् | अभर्क्ष्यध्वम् |
| अभर्क्ष्ये | अभर्क्ष्यावहि | अभर्क्ष्यामहि |
| अभ्रक्ष्यत | अभ्रक्ष्येताम् | अभ्रक्ष्यन्त |
| अभ्रक्ष्यथाः | अभ्रक्ष्येथाम् | अभ्रक्ष्यध्वम् |
| अभ्रक्ष्ये | अभ्रक्ष्यावहि | अभ्रक्ष्यामहि |

॥ क्षिपींत्–प्रेरणे, फेंकवुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० क्षिपति | क्षिपतः | क्षिपन्ति | |
| क्षिपसि | क्षिपथः | क्षिपथ | |
| क्षिपामि | क्षिपावः | क्षिपामः | |
| स० क्षिपेत् | क्षिपेताम् | क्षिपेयुः | |
| क्षिपेः | क्षिपेतम् | क्षिपेत | |
| क्षिपेयम् | क्षिपेव | क्षिपेम | |
| प० क्षिपतु | क्षिपतात् | क्षिपताम् | क्षिपन्तु |
| क्षिप | ,, | क्षिपतम् | क्षिपत |
| क्षिपाणि | | क्षिपाव | क्षिपाम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ल० | अक्षिपत् | अक्षिपताम् | अक्षिपन् |
| | अक्षिपः | अक्षिपतम् | अक्षिपत |
| | अक्षिपम् | अक्षिपाव | अक्षिपाम |
| अ० | अक्षैप्सीत् | अक्षैप्ताम् | अक्षैप्सुः |
| | अक्षैप्सीः | अक्षैप्तम् | अक्षैप्त |
| | अक्षैप्सम् | अक्षैप्स्व | अक्षैप्स्म |
| प० | चिक्षेप | चिक्षिपतुः | चिक्षिपुः |
| | चिक्षेपिथ | चिक्षिपथुः | चिक्षिप |
| | चिक्षेप | चिक्षिपिव | चिक्षिपिम |
| आ० | क्षिप्यात् | क्षिप्यास्ताम् | क्षिप्यासुः |
| | क्षिप्याः | क्षिप्यास्तम् | क्षिप्यास्त |
| | क्षिप्यासम् | क्षिप्यास्व | क्षिप्यास्म |
| श्व० | क्षेप्ता | क्षेप्तारौ | क्षेप्तारः |
| | क्षेप्तासि | क्षेप्तास्थः | क्षेप्तास्थ |
| | क्षेप्तास्मि | क्षेप्तास्वः | क्षेप्तास्मः |
| भ० | क्षेप्स्यति | क्षेप्स्यतः | क्षेप्स्यन्ति |
| | क्षेप्स्यसि | क्षेप्स्यथः | क्षेप्स्यथ |
| | क्षेप्स्यामि | क्षेप्स्यावः | क्षेप्स्यामः |
| क्रि० | अक्षेप्स्यत् | अक्षेप्स्यताम् | अक्षेप्स्यन् |
| | अक्षेप्स्यः | अक्षेप्स्यतम् | अक्षेप्स्यत |
| | अक्षेप्स्यम् | अक्षेप्स्याव | अक्षेप्स्याम |
| व० | क्षिपते | क्षिपेते | क्षिपन्ते |
| | क्षिपसे | क्षिपेथे | क्षिपध्वे |
| | क्षिपे | क्षिपावहे | क्षिपामहे |
| स० | क्षिपेत | क्षिपेयाताम् | क्षिपेरन् |
| | क्षिपेथाः | क्षिपेयाथाम् | क्षिपेध्वम् |
| | क्षिपेय | क्षिपेवहि | क्षिपेमहि |
| प० | क्षिपताम् | क्षिपेताम् | क्षिपन्ताम् |
| | क्षिपस्व | क्षिपेथाम् | क्षिपध्वम् |
| | क्षिपै | क्षिपावहै | क्षिपामहै |
| ल० | अक्षिपत | अक्षिपेताम् | अक्षिपन्त |
| | अक्षिपथाः | अक्षिपेथाम् | अक्षिपध्वम् |
| | अक्षिपे | अक्षिपावहि | अक्षिपामहि |
| अ० | अक्षिप्त | अक्षिप्साताम् | अक्षिप्सत |
| | अक्षिप्थाः | अक्षिप्साथाम् | अक्षिब्ध्वम् / अक्षिब्ढ्वम् |
| | अक्षिप्सि | अक्षिप्स्वहि | अक्षिप्स्महि |
| प० | चिक्षिपे | चिक्षिपाते | चिक्षिपिरे |
| | चिक्षिपिषे | चिक्षिपाथे | चिक्षिपिध्वे |
| | चिक्षिपे | चिक्षिपिवहे | चिक्षिपिमहे |
| आ० | क्षिप्सीष्ट | क्षिप्सीयास्ताम् | क्षिप्सीरन् |
| | क्षिप्सीष्ठाः | क्षिप्सीयास्थाम् | क्षिप्सीध्वम् |
| | क्षिप्सीय | क्षिप्सीवहि | क्षिप्सीमहि |
| श्व० | क्षेप्ता | क्षेप्तारौ | क्षेप्तारः |
| | क्षेप्तासे | क्षेप्तासाथे | क्षेप्ताध्वे |
| | क्षेप्ताहे | क्षेप्तास्वहे | क्षेप्तास्महे |
| भ० | क्षेप्स्यते | क्षेप्स्येते | क्षेप्स्यन्ते |
| | क्षेप्स्यसे | क्षेप्स्येथे | क्षेप्स्यध्वे |
| | क्षेप्स्ये | क्षेप्स्यावहे | क्षेप्स्यामहे |
| क्रि० | अक्षेप्स्यत | अक्षेप्स्येताम् | अक्षेप्स्यन्त |
| | अक्षेप्स्यथाः | अक्षेप्स्येथाम् | अक्षेप्स्यध्वम् |
| | अक्षेप्स्ये | अक्षेप्स्यावहि | अक्षेप्स्यामहि |

॥ दिशीँ–अतिसर्जने, ॥ देखाड्वु

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | दिशति | दिशतः | दिशन्ति |
| | दिशसि | दिशथः | दिशथ |
| | दिशामि | दिशावः | दिशामः |
| स० | दिशेत् | दिशेताम् | दिशेयुः |
| | दिशेः | दिशेतम् | दिशेत |
| | दिशेयम् | दिशेव | दिशेम |
| प० | दिशतु दिशतात् | दिशताम् | दिशन्तु |
| | दिश ,, | दिशतम् | दिशत |
| | दिशानि | दिशाव | दिशाम |
| ल० | अदिशत् | अदिशताम् | अदिशन् |
| | अदिशः | अदिशतम् | अदिशत |
| | अदिशम् | अदिशाव | अदिशाम |
| अ० | अदिक्षत् | अदिक्षताम् | अदिक्षन् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | अदिक्षः | अदिक्षतम् | अदिक्षत |
| | अदिक्षम् | अदिक्षाव | अदिक्षाम |
| प० | दिदेश | दिदिशतुः | दिदिशुः |
| | दिदेशिथ | दिदिशथुः | दिदिश |
| | दिदेश | दिदिशिव | दिदिशिम |
| आ० | दिश्यात् | दिश्यास्ताम् | दिश्यासुः |
| | दिश्याः | दिश्यास्तम् | दिश्यास्त |
| | दिश्यासम् | दिश्यास्व | दिश्यास्म |
| श्व० | देष्टा | देष्टारौ | देष्टारः |
| | देष्टासि | देष्टास्थः | देष्टास्थ |
| | देष्टास्मि | देष्टास्वः | देष्टास्मः |
| भ० | देक्ष्यति | देक्ष्यतः | देक्ष्यन्ति |
| | देक्ष्यसि | देक्ष्यथः | देक्ष्यथ |
| | देक्ष्यामि | देक्ष्यावः | देक्ष्यामः |
| क्रि० | अदेक्ष्यत् | अदेक्ष्यताम् | अदेक्ष्यन् |
| | अदेक्ष्यः | अदेक्ष्यतम् | अदेक्ष्यत |
| | अदेक्ष्यम् | अदेक्ष्याव | अदेक्ष्याम |
| व० | दिशते | दिशेते | दिशन्ते |
| | दिशसे | दिशेथे | दिशध्वे |
| | दिशे | दिशावहे | दिशामहे |
| स० | दिशेत | दिशेयाताम् | दिशेरन् |
| | दिशेथाः | दिशेथाम् | दिशेध्वम् |
| | दिशेय | दिशेवहि | दिशेमहि |
| प० | दिशताम् | दिशेताम् | दिशन्ताम् |
| | दिशस्व | दिशेथाम् | दिशध्वम् |
| | दिशै | दिशावहै | दिशामहै |
| ह्य० | अदिशत | अदिशेताम् | अदिशन्त |
| | अदिशथाः | अदिशेथाम् | अदिशध्वम् |
| | अदिशे | अदिशावहि | अदिशामहि |
| अ० | अदिक्षत | अदिक्षाताम् | अदिक्षन्त |
| | अदिक्षथाः | अदिक्षाथाम् | अदिक्षध्वम् |
| | अदिक्षि | अदिक्षावहि | अदिक्षामहि |
| प० | दिदिशे | दिदिशाते | दिदिशिरे |
| | दिदिशिषे | दिदिशाथे | दिदिशिध्वे |
| | दिदिशे | दिदिशिवहे | दिदिशिमहे |
| आ० | दिक्षीष्ट | दिक्षीयास्ताम् | दिक्षीरन् |
| | दिक्षीष्टाः | दिक्षीयास्थाम् | दिक्षीध्वम् |
| | दिक्षीय | दिक्षीवहि | दिक्षीमहि |
| श्व० | देष्टा | देष्टारौ | देष्टारः |
| | देष्टासे | देष्टासाथे | देष्टाध्वे |
| | देष्टाहे | देष्टास्वहे | देष्टास्महे |
| भ० | देक्ष्यते | देक्ष्येते | देक्ष्यन्ते |
| | देक्ष्यसे | देक्ष्येथे | देक्ष्यध्वे |
| | देक्ष्ये | देक्ष्यावहे | देक्ष्यामहे |
| क्रि० | अदेक्ष्यत | अदेक्ष्येताम् | अदेक्ष्यन्त |
| | अदेक्ष्यथाः | अदेक्ष्येथाम् | अदेक्ष्यध्वम् |
| | अदेक्ष्ये | अदेक्ष्यावहि | अदेक्ष्यामहि |

॥ कृषींत्–विलेखने ॥ खेडवुं

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| व० | कृषति | कृषतः | कृषन्ति | |
| | कृषसि | कृषथः | कृषथ | |
| | कृषामि | कृषावः | कृषामः | |
| स० | कृषेत् | कृषेताम् | कृषेयुः | |
| | कृषेः | कृषेतम् | कृषेत | |
| | कृषेयम् | कृषेव | कृषेम | |
| प० | कृषतु | कृषतात् | कृषताम् | कृषन्तु |
| | कृष | कृषतात् | कृषतम् | कृषत |
| | कृषाणि | कृषाव | कृषाम | |
| ह्य० | अकृषत् | अकृषताम् | अकृषन् | |
| | अकृषः | अकृषतम् | अकृषत | |
| | अकृषम् | अकृषाव | अकृषाम | |
| अ० | अकार्क्षीत् | अकार्ष्टाम् | अकार्क्षुः | |
| | अकार्क्षीः | अकार्ष्टम् | अकार्ष्ट | |
| | अकार्क्षम् | अकार्क्ष्व | अकार्क्ष्म | |
| | अक्राक्षीत् | अक्राष्टाम् | अक्राक्षुः | |

अकाक्षीः अकाष्टम् अकाष्ट
अकाक्षम् अकाक्ष्व अकाक्ष्म
अकृक्षत् अकृक्षताम् अकृक्षन्
अकृक्षः अकृक्षतम् अकृक्षत
अकृक्षम् अकृक्षाव अकृक्षाम
प० चकर्ष चकृषतुः चकृषुः
चकर्षिथ चकृषथुः चकृष
चकर्ष चकृषिव चकृषिम
आ० कृष्यात् कृष्यास्ताम् कृष्यासुः
कृष्याः कृष्यास्तम् कृष्यास्त
कृष्यासम् कृष्यास्व कृष्यास्म
श्व० क्रष्टा क्रष्टारौ क्रष्टारः
क्रष्टासि क्रष्टास्थः क्रष्टास्थ
क्रष्टास्मि क्रष्टास्वः क्रष्टास्मः
कर्ष्टा कर्ष्टारौ कर्ष्टारः
कर्ष्टासि कर्ष्टास्थः कर्ष्टास्थ
कर्ष्टास्मि कर्ष्टास्वः कर्ष्टास्मः
भ० क्रक्ष्यति क्रक्ष्यतः क्रक्ष्यन्ति
क्रक्ष्यसि क्रक्ष्यथः क्रक्ष्यथ
क्रक्ष्यामि क्रक्ष्यावः क्रक्ष्यामः
कर्क्ष्यति कर्क्ष्यतः कर्क्ष्यन्ति
कर्क्ष्यसि कर्क्ष्यथः कर्क्ष्यथ
कर्क्ष्यामि कर्क्ष्यावः कर्क्ष्यामः
क्रि० अक्रक्ष्यत् अक्रक्ष्यताम् अक्रक्ष्यन्
अक्रक्ष्यः अक्रक्ष्यतम् अक्रक्ष्यत
अक्रक्ष्यम् अक्रक्ष्याव अक्रक्ष्याम
अकर्क्ष्यत् अकर्क्ष्यताम् अकर्क्ष्यन्
अकर्क्ष्यः अकर्क्ष्यतम् अकर्क्ष्यत
अकर्क्ष्यम् अकर्क्ष्याव अकर्क्ष्याम
व० कृषते कृषेते कृषन्ते
कृषसे कृषेथे कृषध्वे
कृषे कृषावहे कृषामहे
स० कृषेत कृषेयाताम् कृषेरन्
कृषेथाः कृषेयाथाम् कृषेध्वम्
कृषेय कृषेवहि कृषेमहि
प० कृषताम् कृषेताम् कृषन्ताम्
कृषस्व कृषेथाम् कृषध्वम्
कृषै कृषावहै कृषामहै
ह्य० अकृषत अकृषेताम् अकृषन्त
अकृषथाः अकृषेथाम् अकृषध्वम्
अकृषे अकृषावहि अकृषामहि
अ० अकृष्ट अकृक्षाताम् अकृक्षत
अकृष्ठाः अकृक्षाथाम् अकृड्ढ्वम्
अकृड्ढ्वम्
अकृक्षि अकृक्ष्वहि अकृक्ष्महि
अकृक्षत अकृक्षाताम् अकृक्षन्त
अकृक्षथाः अकृक्षाथाम् अकृक्षध्वम्
अकृक्षि अकृक्षावहि अकृक्षामहि
प० चकृषे चकृषाते चकृषिरे
चकृषिषे चकृषाथे चकृषिढ्वे
चकृषे चकृषिवहे चकृषिमहे
आ० कृक्षीष्ट कृक्षीयास्ताम् कृक्षीरन्
कृक्षीष्ठाः कृक्षीयास्थाम् कृक्षीध्वम्
कृक्षीय कृक्षीवहि कृक्षीमहि
श्व० क्रष्टा क्रष्टारौ क्रष्टारः
क्रष्टासे क्रष्टासाथे क्रष्टाध्वे
क्रष्टाहे क्रष्टास्वहे क्रष्टास्महे
कर्ष्टा कर्ष्टारौ कर्ष्टारः
कर्ष्टासे कर्ष्टासाथे कर्ष्टाध्वे
कर्ष्टाहे कर्ष्टास्वहे कर्ष्टास्महे
भ० क्रक्ष्यते क्रक्ष्येते क्रक्ष्यन्ते
क्रक्ष्यसे क्रक्ष्येथे क्रक्ष्यध्वे
क्रक्ष्ये क्रक्ष्यावहे क्रक्ष्यामहे
कर्क्ष्यते कर्क्ष्येते कर्क्ष्यन्ते
कर्क्ष्यसे कर्क्ष्येथे कर्क्ष्यध्वे
कर्क्ष्ये कर्क्ष्यावहे कर्क्ष्यामहे
क्रि० अक्रक्ष्यत अक्रक्ष्येताम् अक्रक्ष्यन्त

अक्रक्ष्यथाः अक्रक्ष्येथाम् अक्रक्ष्यध्वम्
अक्रक्ष्ये अक्रक्ष्यावहि अक्रक्ष्यामहि

अकर्क्ष्यत अकर्क्ष्येताम् अकर्क्ष्यन्त
अकर्क्ष्यथाः अकर्क्ष्येथाम् अकर्क्ष्यध्वम्
अकर्क्ष्ये अकर्क्ष्यावहि अकर्क्ष्यामहि

॥ मुच्लृंती मोक्षणे, मुकवुं ॥

व० मुञ्चति मुञ्चतः मुञ्चन्ति
मुञ्चसि मुञ्चथः मुञ्चथ
मुञ्चामि मुञ्चावः मुञ्चामः

स० मुञ्चेत् मुञ्चेताम् मुञ्चेयुः
मुञ्चेः मुञ्चेतम् मुञ्चेत
मुञ्चेयम् मुञ्चेव मुञ्चेम

प० मुञ्चतु मुञ्चतात् मुञ्चताम् मुञ्चन्तु
मुञ्च ,, मुञ्चतम् मुञ्चत
मुञ्चानि मुञ्चाव मुञ्चाम

ह्य० अमुञ्चत् अमुञ्चताम् अमुञ्चन्
अमुञ्चः अमुञ्चतम् अमुञ्चत
अमुञ्चम् अमुञ्चाव अमुञ्चाम

अ० अमुचत् अमुचताम् अमुचन्
अमुचः अमुचतम् अमुचत
अमुचम् अमुचाव अमुचाम

प० मुमोच मुमुचतुः मुमुचुः
मुमोचिथ मुमुचथुः मुमुच
मुमोच मुमुचिव मुमुचिम

आ० मुच्यात् मुच्यास्ताम् मुच्यासुः
मुच्याः मुच्यास्तम् मुच्यास्त
मुच्यासम् मुच्यास्व मुच्यास्म

श्व० मोक्ता मोक्तारौ मोक्तारः
मोक्तासि मोक्तास्थः मोक्तास्थ
मोक्तास्मि मोक्तास्वः मोक्तास्मः

भ० मोक्ष्यति मोक्ष्यतः मोक्ष्यन्ति
मोक्ष्यसि मोक्ष्यथः मोक्ष्यथ
मोक्ष्यामि मोक्ष्यावः मोक्ष्यामः

क्रि० अमोक्ष्यत् अमोक्ष्यताम् अमोक्ष्यन्
अमोक्ष्यः अमोक्ष्यतम् अमोक्ष्यत
अमोक्ष्यम् अमोक्ष्याव अमोक्ष्याम

व० मुञ्चते मुञ्चेते मुञ्चन्ते
मुञ्चसे मुञ्चेथे मुञ्चध्वे
मुञ्चे मुञ्चावहे मुञ्चामहे

स० मुञ्चेत मुञ्चेयाताम् मुञ्चेरन्
मुञ्चेथाः मुञ्चेयाथाम् मुञ्चेध्वम्
मुञ्चेय मुञ्चेवहि मुञ्चेमहि

प० मुञ्चताम् मुञ्चेताम् मुञ्चन्ताम्
मुञ्चस्व मुञ्चेथाम् मुञ्चध्वम्
मुञ्चै मुञ्चावहै मुञ्चामहै

ह्य० अमुञ्चत अमुञ्चेताम् अमुञ्चन्त
अमुञ्चथाः अमुञ्चेथाम् अमुञ्चध्वम्
अमुञ्चे अमुञ्चावहि अमुञ्चामहि

अ० अमुक्त अमुक्षाताम् अमुक्षत
अमुक्थाः अमुक्षाथाम् अमुग्ध्वम्
अमुग्ड्ढ्वम्
अमुक्षि अमुक्ष्वहि अमुक्ष्महि

प० मुमुचे मुमुचाते मुमुचिरे
मुमुचिषे मुमुचाथे मुमुचिध्वे
मुमुचे मुमुचिवहे मुमुचिमहे

आ० मुक्षीष्ट मुक्षीयास्ताम् मुक्षीरन्
मुक्षीष्ठाः मुक्षीयास्थाम् मुक्षीध्वम्
मुक्षीय मुक्षीवहि मुक्षीमहि

श्व० मोक्ता मोक्तारौ मोक्तारः
मोक्तासे मोक्तासाथे मोक्ताध्वे
मोक्ताहे मोक्तास्वहे मोक्तास्महे

भ० मोक्ष्यते मोक्ष्येते मोक्ष्यन्ते
मोक्ष्यसे मोक्ष्येथे मोक्ष्यध्वे
मोक्ष्ये मोक्ष्यावहे मोक्ष्यामहे

क्रि० अमोक्ष्यत अमोक्ष्येताम् अमोक्ष्यन्त
अमोक्ष्यथाः अमोक्ष्येथाम् अमोक्ष्यध्वम्
अमोक्ष्ये अमोक्ष्यावहि अमोक्ष्यामहि

॥ षिचीँत्-क्षरणे । छांटवुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | सिञ्चति | सिञ्चतः | सिञ्चन्ति |
| | सिञ्चसि | सिञ्चथः | सिञ्चथ |
| | सिञ्चामि | सिञ्चावः | सिञ्चामः |

अभिषिञ्चति ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| स० | सिञ्चेत् | सिञ्चेताम् | सिञ्चेयुः |
| | सिञ्चेः | सिञ्चेतम् | सिञ्चेत |
| | सिञ्चेयम् | सिञ्चेव | सिञ्चेम |
| प० | सिञ्चतु सिञ्चतात् | सिञ्चताम् | सिञ्चन्तु |
| | सिञ्च ,, | सिञ्चतम् | सिञ्चत |
| | सिञ्चानि | सिञ्चाव | सिञ्चाम |
| ह्य० | असिञ्चत् | असिञ्चताम् | असिञ्चन् |
| | असिञ्चः | असिञ्चतम् | असिञ्चत |
| | असिञ्चम् | असिञ्चाव | असिञ्चाम |

अभ्यषिञ्चत् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| अ० | असिचत् | असिचताम् | असिचन् |
| | असिचः | असिचतम् | असिचत |
| | असिचम् | असिचाव | असिचाम |
| प० | सिषेच | सिषिचतुः | सिषिचुः |
| | सिषेचिथ | सिषिचथुः | सिषिच |
| | सिषेच | सिषिचिव | सिषिचिम |
| आ० | सिच्यात् | सिच्यास्ताम् | सिच्यासुः |
| | सिच्याः | सिच्यास्तम् | सिच्यास्त |
| | सिच्यासम् | सिच्यास्व | सिच्यास्म |
| श्व० | सेक्ता | सेक्तारौ | सेक्तारः |
| | सेक्तासि | सेक्तास्थः | सेक्तास्थ |
| | सेक्तास्मि | सेक्तास्वः | सेक्तास्मः |
| भ० | सेक्ष्यति | सेक्ष्यतः | सेक्ष्यन्ति |
| | सेक्ष्यसि | सेक्ष्यथः | सेक्ष्यथ |
| | सेक्ष्यामि | सेक्ष्यावः | सेक्ष्यामः |
| क्रि० | असेक्ष्यत् | असेक्ष्यताम् | असेक्ष्यन् |
| | असेक्ष्यः | असेक्ष्यतम् | असेक्ष्यत |
| | असेक्ष्यम् | असेक्ष्याव | असेक्ष्याम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | सिञ्चते | सिञ्चेते | सिञ्चन्ते |
| | सिञ्चसे | सिञ्चेथे | सिञ्चध्वे |
| | सिञ्चे | सिञ्चावहे | सिञ्चामहे |
| स० | सिञ्चेत | सिञ्चेयाताम् | सिञ्चेरन् |
| | सिञ्चेथाः | सिञ्चेयाथाम् | सिञ्चेध्वम् |
| | सिञ्चेय | सिञ्चेवहि | सिञ्चेमहि |
| प० | सिञ्चताम् | सिञ्चेताम् | सिञ्चन्ताम् |
| | सिञ्चस्व | सिञ्चेथाम् | सिञ्चध्वम् |
| | सिञ्चै | सिञ्चावहै | सिञ्चामहै |
| ह्य० | असिञ्चत | असिञ्चेताम् | असिञ्चन्त |
| | असिञ्चथाः | असिञ्चेथाम् | असिञ्चध्वम् |
| | असिञ्चे | असिञ्चावहि | असिञ्चामहि |
| अ० | असिक्त | असिक्षाताम् | असिक्षत |
| | असिक्थाः | असिक्षाथाम् | असिग्ध्वम् असिग्ड्ढ्वम् |
| | असिक्षि | असिक्ष्वहि | असिक्ष्महि |

सर्वत्रैतादृशस्थले पाणिनिमते सलोपस्य नित्यत्वादेकं रूपं भवति ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| | असिचत | असिचेताम् | असिचन्त |
| | असिचथाः | असिचेथाम् | असिचध्वम् |
| | असिचे | असिचावहि | असिचामहि |
| प० | सिषिचे | सिषिचाते | सिषिचिरे |
| | सिषिचिषे | सिषिचाथे | सिषिचिध्वे |
| | सिषिचे | सिषिचिवहे | सिषिचिमहे |
| आ० | सिक्षीष्ट | सिक्षीयास्ताम् | सिक्षीरन् |
| | सिक्षीष्ठाः | सिक्षीयास्थाम् | सिक्षीध्वम् |
| | सिक्षीय | सिक्षीवहि | सिक्षीमहि |
| श्व० | सेक्ता | सेक्तारौ | सेक्तारः |
| | सेक्तासे | सेक्तासाथे | सेक्ताध्वे |
| | सेक्ताहे | सेक्तास्वहे | सेक्तास्महे |
| भ० | सेक्ष्यते | सेक्ष्येते | सेक्ष्यन्ते |
| | सेक्ष्यसे | सेक्ष्येथे | सेक्ष्यध्वे |
| | सेक्ष्ये | सेक्ष्यावहे | सेक्ष्यामहे |

क्रि० असेक्ष्यत असेक्ष्येताम् असेक्ष्यन्त
असेक्ष्यथाः असेक्ष्येथाम् असेक्ष्यध्वम्
असेक्ष्ये असेक्ष्यावहि असेक्ष्यामहि

॥ विदॢंती—लाभे ॥ मेळववुं ।

व० विन्दति विन्दतः विन्दन्ति
विन्दसि विन्दथः विन्दथ
विन्दामि विन्दावः विन्दामः

स० विन्देत् विन्देताम् विन्देयुः
विन्देः विन्देतम् विन्देत
विन्देयम् विन्देव विन्देम

प० विन्दतु विन्दतात् विन्दताम् विन्दन्तु
विन्द विन्दतात् विन्दतम् विन्दत
विन्दानि विन्दाव विन्दाम

ह्य० अविन्दत् अविन्दताम् अविन्दन्
अविन्दः अविन्दतम् अविन्दत
अविन्दम् अविन्दाव अविन्दाम

अ० अविदत् अविदताम् अविदन्
अविदः अविदतम् अविदत
अविदम् अविदाव अविदाम

कस्यचिन्मते विदाञ्चकारेत्याद्यपि

प० विवेद विविदतुः विविदुः
विवेदिथ विविदथुः विविद
विवेद विविदिव विविदिम

आ० विद्यात् विद्यास्ताम् विद्यासुः
विद्याः विद्यास्तम् विद्यास्त
विद्यासम् विद्यास्व विद्यास्म

व्याघ्रभूत्यादिमते वेदितेत्यादि

श्व० वेत्ता वेत्तारौ वेत्तारः
वेत्तासि वेत्तास्थः वेत्तास्थ
वेत्तास्मि वेत्तास्वः वेत्तास्मः

भ० वेत्स्यति वेत्स्यतः वेत्स्यन्ति
वेत्स्यसि वेत्स्यथः वेत्स्यथ
वेत्स्यामि वेत्स्यावः वेत्स्यामः

क्रि० अवेत्स्यत् अवेत्स्यताम् अवेत्स्यन्
अवेत्स्यः अवेत्स्यतम् अवेत्स्यत
अवेत्स्यम् अवेत्स्याव अवेत्स्याम

व० विन्दते विन्देते विन्दन्ते
विन्दसे विन्देथे विन्दध्वे
विन्दे विन्दावहे विन्दामहे

स० विन्देत विन्देयाताम् विन्देरन्
विन्देथाः विन्देयाथाम् विन्देध्वम्
विन्देय विन्देवहि विन्देमहि

प० विन्दताम् विन्देताम् विन्दन्ताम्
विन्दस्व विन्देथाम् विन्दध्वम्
विन्दै विन्दावहै विन्दामहै

ह्य० अविन्दत अविन्देताम् अविन्दन्त
अविन्दथाः अविन्देथाम् अविन्दध्वम्
अविन्दे अविन्दावहि अविन्दामहि

अ० अवित्त अवित्साताम् अवित्सत
अवित्थाः अवित्साथाम् अविद्ध्वम्
अविद्द्ध्वम्
अवित्सि अवित्स्वहि अवित्स्महि

प० विविदे विविदाते विविदिरे
विविदिषे विविदाथे विविदिध्वे
विविदे विविदिवहे विविदिमहे

आ० वित्सीष्ट वित्सीयास्ताम् वित्सीरन्
वित्सीष्ठाः वित्सीयास्थाम् वित्सीध्वम्
वित्सीय वित्सीवहि वित्सीमहि

श्व० वेत्ता वेत्तारौ वेत्तारः
वेत्तासे वेत्तासाथे वेत्ताध्वे
वेत्ताहे वेत्तास्वहे वेत्तास्महे

भ० वेत्स्यते वेत्स्येते वेत्स्यन्ते
वेत्स्यसे वेत्स्येथे वेत्स्यध्वे
वेत्स्ये वेत्स्यावहे वेत्स्यामहे

क्रि० अवेत्स्यत अवेत्स्येताम् अवेत्स्यन्त

अवेत्स्यथाः अवेत्स्येथाम् अवेत्स्यध्वम्
अवेत्स्ये अवेत्स्यावहि अवेत्स्यामहि

॥ लुम्लॄती–छेदने, छेदवुं ॥

व० लुम्पति लुम्पतः लुम्पन्ति
लुम्पसि लुम्पथः लुम्पथ
लुम्पामि लुम्पावः लुम्पामः
स० लुम्पेत् लुम्पेताम् लुम्पेयुः
लुम्पेः लुम्पेतम् लुम्पेत
लुम्पेयम् लुम्पेव लुम्पेम
प० लुम्पतु लुम्पतात् लुम्पताम् लुम्पन्तु
लुम्प लुम्पतात् लुम्पतम् लुम्पत
लुम्पानि लुम्पाव लुम्पाम
ह्य० अलुम्पत् अलुम्पताम् अलुम्पन्
अलुम्पः अलुम्पतम् अलुम्पत
अलुम्पम् अलुम्पाव अलुम्पाम
अ० अलुपत् अलुपताम् अलुपन्
अलुपः अलुपतम् अलुपत
अलुपम् अलुपाव अलुपाम
प० लुलोप लुलुपतुः लुलुपुः
लुलोपिथ लुलुपथुः लुलुप
लुलोप लुलुपिव लुलुपिम
आ० लुप्यात् लुप्यास्ताम् लुप्यासुः
लुप्याः लुप्यास्तम् लुप्यास्त
लुप्यासम् लुप्यास्व लुप्यास्म
श्व० लोप्ता लोप्तारौ लोप्तारः
लोप्तासि लोप्तास्थः लोप्तास्थ
लोप्तास्मि लोप्तास्वः लोप्तास्मः
भ० लोप्स्यति लोप्स्यतः लोप्स्यन्ति
लोप्स्यसि लोप्स्यथः लोप्स्यथ
लोप्स्यामि लोप्स्यावः लोप्स्यामः
क्रि० अलोप्स्यत् अलोप्स्यताम् अलोप्स्यन्
अलोप्स्यः अलोप्स्यतम् अलोप्स्यत
अलोप्स्यम् अलोप्स्याव अलोप्स्याम
व० लुम्पते लुम्पेते लुम्पन्ते
लुम्पसे लुम्पेथे लुम्पध्वे
लुम्पे लुम्पावहे लुम्पामहे
स० लुम्पेत लुम्पेयाताम् लुम्पेरन्
लुम्पेथाः लुम्पेयाथाम् लुम्पेध्वम्
लुम्पेय लुम्पेवहि लुम्पेमहि
प० लुम्पताम् लुम्पेताम् लुम्पन्ताम्
लुम्पस्व लुम्पेथाम् लुम्पध्वम्
लुम्पै लुम्पावहै लुम्पामहै
ह्य० अलुम्पत अलुम्पेताम् अलुम्पन्त
अलुम्पथाः अलुम्पेथाम् अलुम्पध्वम्
अलुम्पे अलुम्पावहि अलुम्पामहि
अ० अलुप्त अलुप्साताम् अलुप्सत
अलुप्थाः अलुप्साथाम् अलुब्ध्वम्
अलुब्ध्वम्
अलुप्सि अलुप्स्वहि अलुप्स्महि
प० लुलुपे लुलुपाते लुलुपिरे
लुलुपिषे लुलुपाथे लुलुपिध्वे
लुलुपे लुलुपिवहे लुलुपिमहे
आ० लुप्सीष्ट लुप्सीयास्ताम् लुप्सीरन्
लुप्सीष्ठाः लुप्सीयास्थाम् लुप्सीध्वम्
लुप्सीय लुप्सीवहि लुप्सीमहि
श्व० लोप्ता लोप्तारौ लोप्तारः
लोप्तासे लोप्तासाथे लोप्ताध्वे
लोप्ताहे लोप्तास्वहे लोप्तास्महे
भ० लोप्स्यते लोप्स्येते लोप्स्यन्ते
लोप्स्यसे लोप्स्येथे लोप्स्यध्वे
लोप्स्ये लोप्स्यावहे लोप्स्यामहे
क्रि० अलोप्स्यत अलोप्स्येताम् अलोप्स्यन्त
अलोप्स्यथाः अलोप्स्येथाम् अलोप्स्यध्वम्
अलोप्स्ये अलोप्स्यावहि अलोप्स्यामहि

॥ लिपींत्–उपदेहे ॥ वधारवुं, लींपवुं ॥

व० लिम्पति लिम्पतः लिम्पन्ति
लिम्पसि लिम्पथः लिम्पथ
लिम्पामि लिम्पावः लिम्पामः
स० लिम्पेत् लिम्पेताम् लिम्पेयुः
लिम्पेः लिम्पेतम् लिम्पेत
लिम्पेयम् लिम्पेव लिम्पेम
प० लिम्पतु लिम्पतात् लिम्पताम् लिम्पन्तु

लिम्प लिम्पतात् लिम्पतम् लिम्पत
लिम्पानि लिम्पाव लिम्पाम
ह्य० अलिम्पत् अलिम्पताम् अलिम्पन्
अलिम्पः अलिम्पतम् अलिम्पत
अलिम्पम् अलिम्पाव अलिम्पाम
अ० अलिपत् अलिपताम् अलिपन्
अलिपः अलिपतम् अलिपत
अलिपम् अलिपाव अलिपाम
प० लिलेप लिलिपतुः लिलिपुः
लिलेपिथ लिलिपथुः लिलिप
लिलेप लिलिपिव लिलिपिम
आ० लिप्यात् लिप्यास्ताम् लिप्यासुः
लिप्याः लिप्यास्तम् लिप्यास्त
लिप्यासम् लिप्यास्व लिप्यास्म
श्व० लेप्ता लेप्तारौ लेप्तारः
लेप्तासि लेप्तास्थः लेप्तास्थ
लेप्तास्मि लेप्तास्वः लेप्तास्मः
भ० लेप्स्यति लेप्स्यतः लेप्स्यन्ति
लेप्स्यसि लेप्स्यथः लेप्स्यथ
लेप्स्यामि लेप्स्यावः लेप्स्यामः
क्रि० अलेप्स्यत् अलेप्स्यताम् अलेप्स्यन्
अलेप्स्यः अलेप्स्यतम् अलेप्स्यत
अलेप्स्यम् अलेप्स्याव अलेप्स्याम
व० लिम्पते लिम्पेते लिम्पन्ते
लिम्पसे लिम्पेथे लिम्पध्वे
लिम्पे लिम्पावहे लिम्पामहे
स० लिम्पेत लिम्पेयाताम् लिम्पेरन्
लिम्पेथाः लिम्पेयाथाम् लिम्पेध्वम्
लिम्पेय लिम्पेवहि लिम्पेमहि
प० लिम्पताम् लिम्पेताम् लिम्पन्ताम्
लिम्पस्व लिम्पेथाम् लिम्पध्वम्
लिम्पै लिम्पावहै लिम्पामहै
ह्य० अलिम्पत अलिम्पेताम् अलिम्पन्त
अलिम्पथाः अलिम्पेथाम् अलिम्पध्वम्
अलिम्पे अलिम्पावहि अलिम्पामहि
अ० अलिपत अलिपेताम् अलिपन्त
अलिपथाः अलिपेथाम् अलिपध्वम्
अलिपे अलिपावहि अलिपामहि
अलिप्त अलिप्साताम् अलिप्सत
अलिप्थाः अलिप्साथाम् अलिब्ध्वम्
अलिब्द्ध्वम्
अलिप्सि अलिप्स्वहि अलिप्स्महि
प० लिलिपे लिलिपाते लिलिपिरे
लिलिपिषे लिलिपाथे लिलिपिध्वे
लिलिपे लिलिपिवहे लिलिपिमहे
आ० लिप्सीष्ट लिप्सीयास्ताम् लिप्सीरन्
लिप्सीष्ठाः लिप्सीयास्थाम् लिप्सीध्वम्
लिप्सीय लिप्सीवहि लिप्सीमहि
श्व० लेप्ता लेप्तारौ लेप्तारः
लेप्तासे लेप्तासाथे लेप्ताध्वे
लेप्ताहे लेप्तास्वहे लेप्तास्महे
भ० लेप्स्यते लेप्स्येते लेप्स्यन्ते
लेप्स्यसे लेप्स्येथे लेप्स्यध्वे
लेप्स्ये लेप्स्यावहे लेप्स्यामहे
क्रि० अलेप्स्यत अलेप्स्येताम् अलेप्स्यन्त
अलेप्स्यथाः अलेप्स्येथाम् अलेप्स्यध्वम्
अलेप्स्ये अलेप्स्यावहि अलेप्स्यामहि

## ॥ इति तुदादय उभयपदिनः ॥

## ॥ अथ परस्मैपदिनः ॥

॥ कृतैत्–छेदने ॥ छेदवुं ॥
कृन्तति । अकर्तीत् । चकर्त्त । चकृतिम ।
॥ खिदंत्–परिघाते ॥ खेद करवो ।
खिन्दति । अखेत्सीत् । चिखेद ।
॥ पिशत्–अवयवे ॥ दळवुं. चुरेचुरा करवा
पिंशति । अपेशीत् । पिपेश ।

## ॥ इति मुचादिः ॥

॥ रिपित्–गतौ ॥ जवुं ॥
व० रियति रियतः रियन्ति

रियन्ति रियथः रियथ
रियामि रियावः रियामः
स० रियेत् रियेताम् रियेयुः
रियेः रियेतम् रियेत
रियेयम् रियेव रियेम
प० रियतु रियतात् रियताम् रियन्तु
रिय रियतात् रियतम् रियत
रियाणि रियाव रियाम
ह्य० अरियत् अरियताम् अरियन्
अरियः अरियतम् अरियत
अरियम् अरियाव अरियाम
अ० अरैषीत् अरैष्टाम् अरैषुः
अरैषीः अरैष्टम् अरैष्ट
अरैषम् अरैष्व अरैष्म
प० रिराय रिर्यतुः रिर्युः
रिरयिथ रिरेथ रिर्यथुः रिर्य
रिराय रिरय रिर्यिव रिर्यिम
आ० रीयात् रीयास्ताम् रीयासुः
रीयाः रीयास्तम् रीयास्त
रीयासम् रीयास्व रीयास्म
श्व० रेता रेतारौ रेतारः
रेतासि रेतास्थः रेतास्थ
रेतास्मि रेतास्वः रेतास्मः
भ० रेष्यति रेष्यतः रेष्यन्ति
रेष्यसि रेष्यथः रेष्यथ
रेष्यामि रेष्यावः रेष्यामः
क्रि० अरेष्यत् अरेष्यताम् अरेष्यन्
अरेष्यः अरेष्यतम् अरेष्यत
अरेष्यम् अरेष्याव अरेष्याम
व० पियति पियतः पियन्ति
पियसि पियथः पियथ
पियामि पियावः पियामः
स० पियेत् पियेताम् पियेयुः
पियेः पियेतम् पियेत
पियेयम् पियेव पियेम
प० पियतु पियतात् पियताम् पियन्तु
पिय ,, पियतम् पियत
पियानि पियाव पियाम
ह्य० अपियत् अपियताम् अपियन्
अपियः अपियतम् अपियत
अपियम् अपियाव अपियाम
अ० अपैषीत् अपैष्टाम् अपैषुः
अपैषीः अपैष्टम् अपैष्ट
अपैषम् अपैष्व अपैष्म
प० पिपाय पिप्यतुः पिप्युः
पिपयिथ पिपेथ पिप्यथुः पिप्य
पिपाय पिपय पिप्यिव पिप्यिम
आ० पीयात् पीयास्ताम् पीयासुः
पीयाः पीयास्तम् पीयास्त
पीयासम् पीयास्व पीयास्म
श्व० पेता पेतारौ पेतारः
पेतासि पेतास्थः पेतास्थ
पेतास्मि पेतास्वः पेतास्मः
भ० पेष्यति पेष्यतः पेष्यन्ति
पेष्यसि पेष्यथः पेष्यथ
पेष्यामि पेष्यावः पेष्यामः
क्रि० अपेष्यत् अपेष्यताम् अपेष्यन्
अपेष्यः अपेष्यतम् अपेष्यत
अपेष्यम् अपेष्याव अपेष्याम
॥ पृत्-प्रेरणे ॥ हांकवुं, धकेलवुं ॥
व० सुवति सुवतः सुवन्ति
सुवसि सुवथः सुवथ
सुवामि सुवावः सुवामः
स० सुवेत् सुवेताम् सुवेयुः
सुवेः सुवेतम् सुवेत
सुवेयम् सुवेव सुवेम
प० सुवतु सुवतात् सुवताम् सुवन्तु
सुव ,, सुवतम् सुवत
सुवानि सुवाव सुवाम
ह्य० असुवत् असुवताम् असुवन्
असुवः असुवतम् असुवत
असुवम् असुवाव असुवाम

अ० असावीत् असाविष्टाम् असाविषुः
असावीः असाविष्टम् असाविष्ट
असाविषम् असाविष्व असाविष्म
प० सुषाव सुषुवतुः सुषुवुः
सुषविथ सुषुवथुः सुषुव
सुषाव सुषव सुषुविव सुषुविम
आ० सूयात् सूयास्ताम् सूयासुः
सूयाः सूयास्तम् सूयास्त
सूयासम् सूयास्व सूयास्म
श्व० सविता सवितारौ सवितारः
सवितासि सवितास्थः सवितास्थ
सवितास्मि सवितास्वः सवितास्मः
भ० सविष्यति सविष्यतः सविष्यन्ति
सविष्यसि सविष्यथः सविष्यथ
सविष्यामि सविष्यावः सविष्यामः
क्रि० असविष्यत् असविष्यताम् असविष्यन्
असविष्यः असविष्यतम् असविष्यत
असविष्यम् असविष्याव असविष्याम

॥ मृंत्-प्राणत्यागे ॥ मरवुं ॥

व० म्रियते म्रियेते म्रियन्ते
म्रियसे म्रियेथे म्रियध्वे
म्रिये म्रियावहे म्रियामहे
स० म्रियेत म्रियेयाताम् म्रियेरन्
म्रियेथाः म्रियेयाथाम् म्रियेध्वम्
म्रियेय म्रियेवहि म्रियेमहि
प० म्रियताम् म्रियेताम् म्रियन्ताम्
म्रियस्व म्रियेथाम् म्रियध्वम्
म्रियै म्रियावहै म्रियामहै
ह्य० अम्रियत अम्रियेताम् अम्रियन्त
अम्रियथाः अम्रियेथाम् अम्रियध्वम्
अम्रिये अम्रियावहि अम्रियामहि
अ० अमृत अमृषाताम् अमृषत
अमृथाः अमृषाथाम् अमृढ्वम्
अमृड्ढ्वम्
अमृषि अमृष्वहि अमृष्महि
प० ममार मम्रतुः मम्रुः
ममर्थ मम्रथुः मम्र
ममार ममर मम्रिव मम्रिम
आ० मृषीष्ट मृषीयास्ताम् मृषीरन्
मृषीष्ठाः मृषीयास्थाम् मृषीढ्वम्
मृषीय मृषीवहि मृषीमहि
श्व० मर्ता मर्तारौ मर्तारः
मर्तासि मर्तास्थः मर्तास्थ
मर्तास्मि मर्तास्वः मर्तास्मः
भ० मरिष्यति मरिष्यतः मरिष्यन्ति
मरिष्यसि मरिष्यथः मरिष्यथ
मरिष्यामि मरिष्यावः मरिष्यामः
क्रि० अमरिष्यत् अमरिष्यताम् अमरिष्यन्
अमरिष्यः अमरिष्यतम् अमरिष्यत
अमरिष्यम् अमरिष्याव अमरिष्याम

॥ कॄत्-विक्षेपे, फेंकवुं ॥

व० किरति किरतः किरन्ति
किरसि किरथः किरथ
किरामि किरावः किरामः

॥ उत्किरति सूत्रधारः पुत्रिकाम् ॥

स० किरेत् किरेताम् किरेयुः
किरेः किरेतम् किरेत
किरेयम् किरेव किरेम
प० किरतु किरतात् किरताम् किरन्तु
किर किरतात् किरतम् किरत
किराणि किराव किराम
ह्य० अकिरत् अकिरताम् अकिरन्
अकिरः अकिरतम् अकिरत
अकिरम् अकिराव अकिराम
अ० अकारीत् अकारिष्टाम् अकारिषुः
अकारीः अकारिष्टम् अकारिष्ट
अकारिषम् अकारिष्व अकारिष्म
प० चकार चकरतुः चकरुः
चकरिथ चकरथुः चकर
चकार चकर चकरिव चकरिम
आ० कीर्यात् कीर्यास्ताम् कीर्यासुः

कीर्याः कीर्यास्तम् कीर्यास्त
कीर्यासम् कीर्यास्व कीर्यास्म
श्व० करिता करितारौ करितारः
करितासि करितास्थः करितास्थ
करितास्मि करितास्वः करितास्मः
करीता करीतारौ करीतारः
करीतासि करीतास्थः करीतास्थ
करीतास्मि करीतास्वः करीतास्मः
भ० करिष्यति करिष्यतः करिष्यन्ति
करिष्यसि करिष्यथः करिष्यथ
करिष्यामि करिष्यावः करिष्यामः
करीष्यति करीष्यतः करीष्यन्ति
करीष्यसि करीष्यथः करीष्यथ
करीष्यामि करीष्यावः करीष्यामः
क्रि० अकरिष्यत् अकरिष्यताम् अकरिष्यन्
अकरिष्यः अकरिष्यतम् अकरिष्यत
अकरिष्यम् अकरिष्याव अकरिष्याम
अकरीष्यत् अकरीष्यताम् अकरीष्यन्
अकरीष्यः अकरीष्यतम् अकरीष्यत
अकरीष्यम् अकरीष्याव अकरीष्याम

॥ गॄ-निगरणे । भोजने ॥ भोजन करवुं

व० गिरति गिरतः गिरन्ति
गिरसि गिरथः गिरथ
गिरामि गिरावः गिरामः
गिलति गिलतः गिलन्ति
गिलसि गिलथः गिलथ
गिलामि गिलावः गिलामः
उद्गिरति । उद्गिलति ।
स० गिरेत् गिरेताम् गिरेयुः
गिरेः गिरेतम् गिरेत
गिरेयम् गिरेव गिरेम
गिलेत् गिलेताम् गिलेयुः
गिलेः गिलेतम् गिलेत
गिलेयम् गिलेव गिलेम
प० गिरतु गिरतात् गिरताम् गिरन्तु
गिर गिरतात् गिरतम् गिरत
गिराणि गिराव गिराम
गिलतु गिलतात् गिलताम् गिलन्तु
गिल गिलतात् गिलतम् गिलत
गिलानि गिलाव गिलाम
ह्य० अगिरत् अगिरताम् अगिरन्
अगिरः अगिरतम् अगिरत
अगिरम् अगिराव अगिराम
अगिलत् अगिलताम् अगिलन्
अगिलः अगिलतम् अगिलत
अगिलम् अगिलाव अगिलाम
अ० अगारीत् अगारिष्टाम् अगारिषुः
अगारीः अगारिष्टम् अगारिष्ट
अगारिषम् अगारिष्व अगारिष्म
अगालीत् अगालिष्टाम् अगालिषुः
अगालीः अगालिष्टम् अगालिष्ट
अगालिषम् अगालिष्व अगालिष्म
प० जगार जगरतुः जगरुः
जगरिथ जगरथुः जगर
जगार जगर जगरिव जगरिम
जगाल जगलतुः जगलुः
जगलिथ जगलथुः जगल
जगाल जगल जगलिव जगलिम
आ० गीर्यात् गीर्यास्ताम् गीर्यासुः
गीर्याः गीर्यास्तम् गीर्यास्त
गीर्यासम् गीर्यास्व गीर्यास्म
श्व० गरिता गरितारौ गरितारः
गरितासि गरितास्थः गरितास्थ
गरितास्मि गरितास्वः गरितास्मः
गलिता गलितारौ गलितारः
गलितासि गलितास्थः गलितास्थ
गलितास्मि गलितास्वः गलितास्मः
गरीता गरीतारौ गरीतारः
गरीतासि गरीतास्थः गरीतास्थ
गरीतास्मि गरीतास्वः गरीतास्मः
गलीता गलीतारौ गलीतारः
गलीतासि गलीतास्थः गलीतास्थ

गलीतास्मि गलीतास्वः गलीतास्मः
भ० गरिष्यति गरिष्यतः गरिष्यन्ति
गरिष्यसि गरिष्यथः गरिष्यथ
गरिष्यामि गरिष्यावः गरिष्यामः
गलिष्यति गलिष्यतः गलिष्यन्ति
गलिष्यसि गलिष्यथः गलिष्यथ
गलिष्यामि गलिष्यावः गलिष्यामः
गरीष्यति गरीष्यतः गरीष्यन्ति
गरीष्यसि गरीष्यथः गरीष्यथ
गरीष्यामि गरीष्यावः गरीष्यामः
गलीष्यति गलीष्यतः गलीष्यन्ति
गलीष्यसि गलीष्यथः गलीष्यथ
गलीष्यामि गलीष्यावः गलीष्यामः
क्रि०अगरिष्यत् अगरिष्यताम् अगरिष्यन्
अगरिष्यः अगरिष्यतम् अगरिष्यत
अगरिष्यम् अगरिष्याव अगरिष्याम
अगलिष्यत् अगलिष्यताम् अगलिष्यन्
अगलिष्यः अगलिष्यतम् अगलिष्यत
अगलिष्यम् अगलिष्याव अगलिष्याम
अगरीष्यत् अगरीष्यताम् अगरीष्यन्
अगरीष्यः अगरीष्यतम् अगरीष्यत
अगरीष्यम् अगरीष्याव अगरीष्याम
अगलीष्यत् अगलीष्यताम् अगलीष्यन्
अगलीष्यः अगलीष्यतम् अगलीष्यत
अगलीष्यम् अगलीष्याव अगलीष्याम

॥ लिखत्–अक्षरविन्यासे ॥ लखवुं कुटादिरयमित्येके, तन्मते अलिखीत्–इत्यादि

लिखति । अलेखीत् । लिलेख ।

॥ जर्च झर्चत्–परिभाषणे ॥ बोलवुं

॥ जर्चति । अजर्चीत् । जजर्च ।

झर्चति । अझर्चीत् । जझर्च ।

॥ त्वचत्–संवरणे ॥

त्वचति । अत्वाचीत् । अत्वचीत् । तत्वचिथ ।

॥ ऋचत्–स्तुतौ ॥ स्तुति करवी ॥

व० ऋचति ऋचतः ऋचन्ति
ऋचसि ऋचथः ऋचथ
ऋचामि ऋचावः ऋचामः
स० ऋचेत् ऋचेताम् ऋचेयुः
ऋचेः ऋचेतम् ऋचेत
ऋचेयम् ऋचेव ऋचेम
प० ऋचतु ऋचतात् ऋचताम् ऋचन्तु
ऋच ऋचतात् ऋचतम् ऋचत
ऋचानि ऋचाव ऋचाम
ह्य० आर्चत् आर्चताम् आर्चन्
आर्चः आर्चतम् आर्चत
आर्चम् आर्चाव आर्चाम
अ० आर्चीत् आर्चिष्टाम् आर्चिषुः
आर्चीः आर्चिष्टम् आर्चिष्ट
आर्चिषम् आर्चिष्व आर्चिष्म
प० आनर्च आनृचतुः आनृचुः
आनर्चिथ आनृचथुः आनृच
आनर्च आनृचिव आनृचिम
आ० ऋच्यात् ऋच्यास्ताम् ऋच्यासुः
ऋच्याः ऋच्यास्तम् ऋच्यास्त
ऋच्यासम् ऋच्यास्व ऋच्यास्म
श्व०अर्चिता अर्चितारौ अर्चितारः
अर्चितासि अर्चितास्थः अर्चितास्थ
अर्चितास्मि अर्चितास्वः अर्चितास्मः
भ० अर्चिष्यति अर्चिष्यतः अर्चिष्यन्ति
अर्चिष्यसि अर्चिष्यथः अर्चिष्यथ
अर्चिष्यामि अर्चिष्यावः अर्चिष्यामः
क्रि०आर्चिष्यत् आर्चिष्यताम् आर्चिष्यन्
आर्चिष्यः आर्चिष्यतम् आर्चिष्यत
आर्चिष्यम् आर्चिष्याव आर्चिष्याम

॥ ओव्रश्चीत्–छेदने ॥ छेदवुं

व० वृश्चति वृश्चतः वृश्चन्ति
वृश्चसि वृश्चथः वृश्चथ
वृश्चामि वृश्चावः वृश्चामः
स० वृश्चेत् वृश्चेताम् वृश्चेयुः
वृश्चेः वृश्चेतम् वृश्चेत

| | | | |
|---|---|---|---|
| | वृश्चेयम् | वृश्चेव | वृश्चेम |
| प० | वृश्चतु वृश्चतात् | वृश्चताम् | वृश्चन्तु |
| | वृश्च ,, | वृश्चतम् | वृश्चत |
| | वृश्चानि | वृश्चाव | वृश्चाम |
| ह्य० | अवृश्चत् | अवृश्चताम् | अवृश्चन् |
| | अवृश्चः | अवृश्चतम् | अवृश्चत |
| | अवृश्चम् | अवृश्चाव | अवृश्चाम |
| अ० | अव्रश्चीत् | अव्रश्चिष्टाम् | अव्रश्चिषुः |
| | अव्रश्चीः | अव्रश्चिष्टम् | अव्रश्चिष्ट |
| | अव्रश्चिषम् | अव्रश्चिष्व | अव्रश्चिष्म |
| | अव्राक्षीत् | अव्राष्टाम् | अव्राक्षुः |
| | अव्राक्षीः | अव्राष्टम् | अव्राष्ट |
| | अव्राक्षम् | अव्राक्ष्व | अव्राक्ष्म |
| प० | वव्रश्च | वव्रश्चतुः | वव्रश्चुः |
| | वव्रश्चिथ | वव्रश्चथुः | वव्रश्च |
| | वव्रश्च | वव्रश्चिव | वव्रश्चिम |

मतान्तरे-वव्रष्ठ । वव्रश्च्व । वव्रश्च्म

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | वृश्च्यात् | वृश्च्यास्ताम् | वृश्च्यासुः |
| | वृश्च्याः | वृश्च्यास्तम् | वृश्च्यास्त |
| | वृश्च्यासम् | वृश्च्यास्व | वृश्च्यास्म |
| श्व० | व्रष्टा | व्रष्टारौ | व्रष्टारः |
| | व्रष्टासि | व्रष्टास्थः | व्रष्टास्थ |
| | व्रष्टास्मि | व्रष्टास्वः | व्रष्टास्मः |
| | व्रश्चिता | व्रश्चितारौ | व्रश्चितारः |
| | व्रश्चितासि | व्रश्चितास्थः | व्रश्चितास्थ |
| | व्रश्चितास्मि | व्रश्चितास्वः | व्रश्चितास्मः |
| भ० | व्रक्ष्यति | व्रक्ष्यतः | व्रक्ष्यन्ति |
| | व्रक्ष्यसि | व्रक्ष्यथः | व्रक्ष्यथ |
| | व्रक्ष्यामि | व्रक्ष्यावः | व्रक्ष्यामः |
| | व्रश्चिष्यति | व्रश्चिष्यतः | व्रश्चिष्यन्ति |
| | व्रश्चिष्यसि | व्रश्चिष्यथः | व्रश्चिष्यथ |
| | व्रश्चिष्यामि | व्रश्चिष्यावः | व्रश्चिष्यामः |
| क्रि० | अव्रक्ष्यत् | अव्रक्ष्यताम् | अव्रक्ष्यन् |
| | अव्रक्ष्यः | अव्रक्ष्यतम् | अव्रक्ष्यत |
| | अव्रक्ष्यम् | अव्रक्ष्याव | अव्रक्ष्याम |
| | अव्रश्चिष्यत् | अव्रश्चिष्यताम् | अव्रश्चिष्यन् |
| | अव्रश्चिष्यः | अव्रश्चिष्यतम् | अव्रश्चिष्यत |
| | अव्रश्चिष्यम् | अव्रश्चिष्याव | अव्रश्चिष्याम |

॥ ऋच्छत्-इन्द्रियप्रलयमूर्तिभावयोः ॥
मूर्छा पामवुं, आकारवाळा थवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | ऋच्छति | ऋच्छतः | ऋच्छन्ति |
| | ऋच्छसि | ऋच्छथः | ऋच्छथ |
| | ऋच्छामि | ऋच्छावः | ऋच्छामः |
| स० | ऋच्छेत् | ऋच्छेताम् | ऋच्छेयुः |
| | ऋच्छेः | ऋच्छेतम् | ऋच्छेत |
| | ऋच्छेयम् | ऋच्छेव | ऋच्छेम |
| प० | ऋच्छतु ऋच्छतात् | ऋच्छताम् | ऋच्छन्तु |
| | ऋच्छ ऋच्छतात् | ऋच्छतम् | ऋच्छत |
| | ऋच्छानि | ऋच्छाव | ऋच्छाम |
| ह्य० | आर्च्छत् | आर्च्छताम् | आर्च्छन् |
| | आर्च्छः | आर्च्छतम् | आर्च्छत |
| | आर्च्छम् | आर्च्छाव | आर्च्छाम |
| अ० | आर्च्छीत् | आर्च्छिष्टाम् | आर्च्छिषुः |
| | आर्च्छीः | आर्च्छिष्टम् | आर्च्छिष्ट |
| | आर्च्छिषम् | आर्च्छिष्व | आर्च्छिष्म |
| प० | आनर्च्छ | आनर्च्छतुः | आनर्च्छुः |
| | आनर्च्छिथ | आनर्च्छथुः | आनर्च्छ |
| | आनर्च्छ | आनर्च्छिव | आनर्च्छिम |
| आ० | ऋच्छ्यात् | ऋच्छ्यास्ताम् | ऋच्छ्यासुः |
| | ऋच्छ्याः | ऋच्छ्यास्तम् | ऋच्छ्यास्त |
| | ऋच्छ्यासम् | ऋच्छ्यास्व | ऋच्छ्यास्म |
| श्व० | ऋच्छिता | ऋच्छितारौ | ऋच्छितारः |
| | ऋच्छितासि | ऋच्छितास्थः | ऋच्छितास्थ |
| | ऋच्छितास्मि | ऋच्छितास्वः | ऋच्छितास्मः |
| भ० | ऋच्छिष्यति | ऋच्छिष्यतः | ऋच्छिष्यन्ति |
| | ऋच्छिष्यसि | ऋच्छिष्यथः | ऋच्छिष्यथ |
| | ऋच्छिष्यामि | ऋच्छिष्यावः | ऋच्छिष्यामः |
| क्रि० | आर्च्छिष्यत् | आर्च्छिष्यताम् | आर्च्छिष्यन् |
| | आर्च्छिष्यः | आर्च्छिष्यतम् | आर्च्छिष्यत |
| | आर्च्छिष्यम् | आर्च्छिष्याव | आर्च्छिष्याम |

॥ विच्छत्-गतौ, ॥ जवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | विच्छायति | विच्छायतः | विच्छायन्ति |
| | विच्छायसि | विच्छायथः | विच्छायथ |

विच्छयामि विच्छयावः विच्छयामः
स० विच्छायेत् विच्छायेताम् विच्छायेयुः
विच्छायेः विच्छायेतम् विच्छायेत
विच्छायेयम् विच्छायेव विच्छायेम
प० विच्छायतु विच्छायतात् विच्छायताम् विच्छायन्तु
विच्छाय विच्छायतात् विच्छायतम् विच्छायत
विच्छायानि विच्छायाव विच्छायाम
ह्य० अविच्छायत अविच्छायताम् अविच्छायन्
अविच्छायः अविच्छायतम् अविच्छायत
अविच्छायम् अविच्छायाव अविच्छायाम
अ० अविच्छायीत् अविच्छायिष्टाम् अविच्छायिषुः
अविच्छायीः अविच्छायिष्टम् अविच्छायिष्ट
अविच्छायिषम् अविच्छायिष्व अविच्छायिष्म
अविच्छीत् अविच्छिष्टाम् अविच्छिषु
अविच्छीः अविच्छिष्टम् अविच्छिष्ट
अविच्छिषम् अविच्छिष्व अविच्छिष्म
विच्छायाञ्चकार विच्छायाञ्चक्रतुः विच्छायाञ्चक्रुः
विच्छायाञ्चकर्थ विच्छायाञ्चक्रथुः विच्छायाञ्चक्र
विच्छायाञ्चकार-चकर विच्छायाञ्चकृव विच्छायाञ्चकृम
विच्छायाम्बभूव । विच्छायामास
विविच्छ विविच्छतुः विविच्छुः
विविच्छिथ विविच्छथुः विविच्छ
विविच्छ विविच्छिव विविच्छिम
आ० विच्छाय्यात् विच्छाय्यास्ताम् विच्छाय्यासुः
विच्छाय्याः विच्छाय्यास्तम् विच्छाय्यास्त
विच्छाय्यासम् विच्छाय्यास्व विच्छाय्यास्म
विच्छ्यात् विच्छ्यास्ताम् विच्छ्यासुः
विच्छ्याः विच्छ्यास्तम् विच्छ्यास्त
विच्छ्यासम् विच्छ्यास्व विच्छ्यास्म
श्व० विच्छायिता विच्छायितारौ विच्छायितारः
विच्छायितासि विच्छायितास्थः विच्छायितास्थ
विच्छायितास्मि विच्छायितास्वः विच्छायितास्मः
विच्छिता विच्छितारौ विच्छितारः
विच्छितासि विच्छितास्थः विच्छितास्थ
विच्छितास्मि विच्छितास्वः विच्छितास्मः
भ० विच्छायिष्यति विच्छायिष्यतः विच्छायिष्यन्ति
विच्छायिष्यसि विच्छायिष्यथः विच्छायिष्यथ
विच्छायिष्यामि विच्छायिष्यावः विच्छायिष्यामः
विच्छिष्यति विच्छिष्यतः विच्छिष्यन्ति
विच्छिष्यसि विच्छिष्यथः विच्छिष्यथ
विच्छिष्यामि विच्छिष्यावः विच्छिष्यामः
क्रि० अविच्छायिष्यत् अविच्छायिष्यताम्
अविच्छायिष्यन् अविच्छायिष्यः
अविच्छायिष्यतम् अविच्छायिष्यत
अविच्छायिष्यम् अविच्छायिष्याव
अविच्छायिष्याम
अविच्छिष्यत अविच्छिष्यताम अविच्छिष्यन्
अविच्छिष्यः अविच्छिष्यतम् अविच्छिष्यत
अविच्छिष्यम् अविच्छिष्याव अविच्छिष्याम
॥ उच्छैत्–विवासे ॥ ओळंगवुं, समाप्त करवुं
उच्छति । औच्छीत् । उच्छाञ्चकार ।
॥ मिच्छत्–उत्क्लेशे ॥ पीडवुं नडवुं
मिच्छति । अमिच्छीत् । मिमिच्छ ।
॥ उच्छत्-उञ्छे ॥ वीणवुं
उञ्छति । औञ्छीत । उञ्छाञ्चकार
॥ प्रच्छंत्–ज्ञीप्सायाम् ॥ पूछवुं
। ज्ञीप्सा— जिज्ञासा ॥
व० पृच्छति पृच्छतः पृच्छन्ति
पृच्छसि पृच्छथः पृच्छथ
पृच्छामि पृच्छावः पृच्छामः
स० पृच्छेत् पृच्छेताम् पृच्छेयुः
पृच्छेः पृच्छेतम् पृच्छेत
पृच्छेयम् पृच्छेव पृच्छेम

प० पृच्छतु पृच्छतात् पृच्छताम् पृच्छन्तु
पृच्छ पृच्छतात् पृच्छतम् पृच्छत
पृच्छानि पृच्छाव पृच्छाम
ह्य० अपृच्छत् अपृच्छताम् अपृच्छन्
अपृच्छः अपृच्छतम् अपृच्छत
अपृच्छम् अपृच्छाव अपृच्छाम
अ० अप्राक्षीत् अप्राष्टाम् अप्राक्षुः
अप्राक्षीः अप्राष्टम् अप्राष्ट
अप्राक्षम् अप्राक्ष्व अप्राक्ष्म
प० पप्रच्छ पप्रच्छतुः पप्रच्छुः
पप्रच्छिथ पप्रष्ठ पप्रच्छथुः पप्रच्छ
पप्रच्छ पप्रच्छिव पप्रच्छिम
आ०पृच्छ्यात् पृच्छ्यास्ताम् पृच्छ्यासुः
पृच्छ्याः पृच्छ्यास्तम् पृच्छ्यास्त
पृच्छ्यासम् पृच्छ्यास्व पृच्छ्यास्म
श्व० प्रष्टा प्रष्टारौ प्रष्टारः
प्रष्टासि प्रष्टास्थः प्रष्टास्थ
प्रष्टास्मि प्रष्टास्वः प्रष्टास्मः
भ० प्रक्ष्यति प्रक्ष्यतः प्रक्ष्यन्ति
प्रक्ष्यसि प्रक्ष्यथः प्रक्ष्यथ
प्रक्ष्यामि प्रक्ष्यावः प्रक्ष्यामः
क्रि०अप्रक्ष्यत् अप्रक्ष्यताम् अप्रक्ष्यन्
अप्रक्ष्यः अप्रक्ष्यतम् अप्रक्ष्यत
अप्रक्ष्यम् अप्रक्ष्याव अप्रक्ष्याम

॥ उब्जत्–आर्जवे ॥ विनय करवो
उब्जति । औब्जीत् । उब्जाञ्चकार ।

॥ सृजंत्–विसर्गे, सरजवुं ॥

व० सृजति सृजतः सृजन्ति
सृजसि सृजथः सृजथ
सृजामि सृजावः सृजामः
स० सृजेत् सृजेताम् सृजेयुः
सृजेः सृजेतम् सृजेत
सृजेयम् सृजेव सृजेम
प० सृजतु सृजतात् सृजताम् सृजन्तु
सृज सृजतात् सृजतम् सृजत
सृजानि सृजाव सृजाम
ह्य० असृजत् असृजताम् असृजन्
असृजः असृजतम् असृजत
असृजम् असृजाव असृजाम
अ० अस्राक्षीत् अस्राष्टाम् अस्राक्षुः
अस्राक्षीः अस्राष्टम् अस्राष्ट
अस्राक्षम् अस्राक्ष्व अस्राक्ष्म
प० ससर्ज ससृजतुः ससृजुः
ससर्जिथ सस्रष्ठ ससृजथु. ससृज
ससर्ज ससृजिव ससृजिम
आ०सृज्यात् सृज्यास्ताम् सृज्यासुः
सृज्याः सृज्यास्तम् सृज्यास्त
सृज्यासम् सृज्यास्व सृज्यास्म
श्व०स्रष्टा स्रष्टारौ स्रष्टारः
स्रष्टासि स्रष्टास्थः स्रष्टास्थ
स्रष्टास्मि स्रष्टास्वः स्रष्टास्मः
भ० स्रक्ष्यति स्रक्ष्यतः स्रक्ष्यन्ति
स्रक्ष्यसि स्रक्ष्यथः स्रक्ष्यथ
स्रक्ष्यामि स्रक्ष्यावः स्रक्ष्यामः
क्रि०अस्रक्ष्यत् अस्रक्ष्यताम् अस्रक्ष्यन्
अस्रक्ष्यः अस्रक्ष्यतम् अस्रक्ष्यत
अस्रक्ष्यम् अस्रक्ष्याव अस्रक्ष्याम

॥ रुजोंत्–भङ्गे ॥ नडवुं पीडवुं, भांगवुं.

व० रुजति रुजतः रुजन्ति
रुजसि रुजथः रुजथ
रुजामि रुजावः रुजामः
स० रुजेत् रुजेताम् रुजेयुः
रुजेः रुजेतम् रुजेत
रुजेयम् रुजेव रुजेम
प० रुजतु रुजतात् रुजताम् रुजन्तु
रुज रुजतात् रुजतम् रुजत
रुजानि रुजाव रुजाम
ह्य० अरुजत् अरुजताम् अरुजन्
अरुजः अरुजतम् अरुजत
अरुजम् अरुजाव अरुजाम
अ० अरौक्षीत् अरौक्ताम् अरौक्षुः
अरौक्षीः अरौक्तम् अरौक्त

| | | | |
|---|---|---|---|
| | अरौक्षम् | अरौक्ष्व | अरौक्ष्म |
| प० | रुरोज | रुरुजतुः | रुरुजुः |
| | रुरोजिथ | रुरुजथुः | रुरुज |
| | रुरोज | रुरुजिव | रुरुजिम |
| आ० | रुज्यात् | रुज्यास्ताम् | रुज्यासुः |
| | रुज्याः | रुज्यास्तम् | रुज्यास्त |
| | रुज्यासम् | रुज्यास्व | रुज्यास्म |
| श्व० | रोक्ता | रोक्तारौ | रोक्तारः |
| | रोक्तासि | रोक्तास्थः | रोक्तास्थ |
| | रोक्तास्मि | रोक्तस्वः | रोक्तास्मः |
| भ० | रोक्ष्यति | रोक्ष्यतः | रोक्ष्यन्ति |
| | रोक्ष्यसि | रोक्ष्यथः | रोक्ष्यथ |
| | रोक्ष्यामि | रोक्ष्यावः | रोक्ष्यामः |
| क्रि० | अरोक्ष्यत् | अरोक्ष्यताम् | अरोक्ष्यन् |
| | अरोक्ष्यः | अरोक्ष्यतम् | अरोक्ष्यत |
| | अरोक्ष्यम् | अरोक्ष्याव | अरोक्ष्याम |

॥ भुजौंत्–कौटिल्ये ॥ कुटिल थवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | भुजति | भुजतः | भुजन्ति |
| | भुजसि | भुजथः | भुजथ |
| | भुजामि | भुजावः | भुजामः |
| स० | भुजेत् | भुजेताम् | भुजेयुः |
| | भुजेः | भुजेतम् | भुजेत |
| | भुजेयम् | भुजेव | भुजेम |
| प० | भुजतु भुजतात् | भुजताम् | भुजन्तु |
| | भुज भुजतात् | भुजतम् | भुजत |
| | भुजानि | भुजाव | भुजाम |
| ह्य० | अभुजत् | अभुजताम् | अभुजन् |
| | अभुजः | अभुजतम् | अभुजत |
| | अभुजम् | अभुजाव | अभुजाम |
| अ० | अभौक्षीत् | अभौक्ताम् | अभौक्षुः |
| | अभौक्षीः | अभौक्तम् | अभौक्त |
| | अभौक्षम् | अभौक्ष्व | अभौक्ष्म |
| प० | बुभोज | बुभुजतुः | बुभुजुः |
| | बुभोजिथ | बुभुजथुः | बुभुज |
| | बुभोज | बुभुजिव | बुभुजिम |
| आ० | भुज्यात् | भुज्यास्ताम् | भुज्यासुः |
| | भुज्याः | भुज्यास्तम् | भुज्यास्त |
| | भुज्यासम् | भुज्यास्व | भुज्यास्म |
| श्व० | भोक्ता | भोक्तारौ | भोक्तारः |
| | भोक्तासि | भोक्तास्थः | भोक्तास्थ |
| | भोक्तास्मि | भोक्तास्वः | भोक्तास्मः |
| भ० | भोक्ष्यति | भोक्ष्यतः | भोक्ष्यन्ति |
| | भोक्ष्यसि | भोक्ष्यथः | भोक्ष्यथ |
| | भोक्ष्यामि | भोक्ष्यावः | भोक्ष्यामः |
| क्रि० | अभोक्ष्यत् | अभोक्ष्यताम् | अभोक्ष्यन् |
| | अभोक्ष्यः | अभोक्ष्यतम् | अभोक्ष्यत |
| | अभोक्ष्यम् | अभोक्ष्याव | अभोक्ष्याम |

॥ टुमस्जोंत्–शुद्धौ ॥ न्हावुं, बुडवुं

शुद्धया स्नानं ब्रुडनं च

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | मज्जति | मज्जतः | मज्जन्ति |
| | मज्जसि | मज्जथः | मज्जथ |
| | मज्जामि | मज्जावः | मज्जामः |
| स० | मज्जेत् | मज्जेताम् | मज्जेयुः |
| | मज्जेः | मज्जेतम् | मज्जेत |
| | मज्जेयम् | मज्जेव | मज्जेम |
| प० | मज्जतु मज्जतात् | मज्जताम् | मज्जन्तु |
| | मज्ज मज्जतात् | मज्जतम् | मज्जत |
| | मज्जानि | मज्जाव | मज्जाम |
| ह्य० | अमज्जत् | अमज्जताम् | अमज्जन् |
| | अमज्जः | अमज्जतम् | अमज्जत |
| | अमज्जम् | अमज्जाव | अमज्जाम |
| अ० | अमाङ्क्षीत् | अमाङ्क्ताम् | अमाङ्क्षुः |
| | अमाङ्क्षीः | अमाङ्क्तम् | अमाङ्क्त |
| | अमाङ्क्षम् | अमाङ्क्ष्व | अमाङ्क्ष्म |
| प० | ममज्ज | ममज्जतुः | ममज्जुः |
| | ममज्जिथ ममङ्क्थ | ममज्जथुः | ममज्ज |
| | ममज्ज | ममज्जिव | ममज्जिम |
| आ० | मज्ज्यात् | मज्ज्यास्ताम् | मज्ज्यासुः |
| | मज्ज्याः | मज्ज्यास्तम् | मज्ज्यास्त |
| | मज्ज्यासम् | मज्ज्यास्व | मज्ज्यास्म |

श्व० मङ्क्ता मङ्क्तारौ मङ्क्तारः
मङ्क्तासि मङ्क्तास्थः मङ्क्तास्थ
मङ्क्तास्मि मङ्क्तास्वः मङ्क्तास्मः
भ० मङ्क्ष्यति मङ्क्ष्यतः मङ्क्ष्यन्ति
मङ्क्ष्यसि मङ्क्ष्यथः मङ्क्ष्यथ
मङ्क्ष्यामि मङ्क्ष्यावः मङ्क्ष्यामः
क्रि० अमङ्क्ष्यत् अमङ्क्ष्यताम् अमङ्क्ष्यन्
अमङ्क्ष्यः अमङ्क्ष्यतम् अमङ्क्ष्यत
अमङ्क्ष्यम् अमङ्क्ष्याव अमङ्क्ष्याम

॥ जर्ज-झर्झत्-परिभाषणे ॥ बोलवुं
जर्जति । अजर्जीत् । जजर्ज ।
झर्झति । अझर्झीत् । जझर्झ ।

॥ उद्झत्-उत्सर्गे ॥ त्याग करवुं
उज्झति । औज्झीत् । उज्झाञ्चकार

॥ जुडत् गतौ । जवुं
जुडति अजोडीत् । जुजोड

॥ पृडत्-मृडत्-सुखने ॥ सुखीथवुं
पृडति । अपर्डीत् । पपर्ड ।
मृडति । अमर्डीत् । ममर्ड ।

॥ कडत्-मदे ॥ अभिमान करवो,
कडति । अकाडीत् । अकडीत् ।
चकाड । चकडिथ ।

॥ पृणत्-प्रीणने ॥ प्रसन्न करवुं
पृणति । अपर्णीत् । पपर्णिथ ।
तुणत्-कौटिल्ये ॥ वांका थवुं,
तुणति । अतोणीत् । तुतोण ।

॥ मृणत्-हिंसायाम् ॥ हिंसाकरवी
मृणति । अमर्णीत् । ममर्णिथ ।

॥ द्रुणत्-गतिकौटिल्ययोश्च ॥ वांकाथवुं जवुं
द्रुणति । अद्रोणीत् । दुद्रोण ।

॥ पुणत्-शुभे ॥ शोभवुं
पुणति । अपोणीत् । पुपोण ।

॥ मुणत्-प्रतिज्ञाने ॥ कबुल करवुं
मुणति । अमोणीत् । मुमोणिथ ।

॥ कुणत्-शब्दोपकरणयोः ॥ उपकार करवो, शब्द करवो
कुणति । अकोणीत् । चुकुणिम

॥ घुण-घूर्णत्-भ्रमणे ॥ भमवुं
घुणति । अघोणीत् । जुघोण ।
घूर्णति । अघूर्णीत् । जुघूर्ण ।

॥ चृतैत्-हिंसाग्रन्थयोः ॥ हणवुं गूंथवुं

व० चृतति चृततः चृतन्ति
चृतसि चृतथः चृतथ
चृतामि चृतावः चृतामः
स० चृतेत् चृतेताम् चृतेयुः
चृतेः चृतेतम् चृतेत
चृतेयम् चृतेव चृतेम
प० चृततु चृततात् चृतताम् चृतन्तु
चृत चृततात् चृततम् चृतत
चृतानि चृताव चृताम
ह्य० अचृतत् अचृतताम् अचृतन्
अचृतः अचृततम् अचृतत
अचृतम् अचृताव अचृताम
अ० अचर्तीत् अचर्तिष्टाम् अचर्तिषुः
अचर्तीः अचर्तिष्टम् अचर्तिष्ट
अचर्तिषम् अचर्तिष्व अचर्तिष्म
प० चचर्त चचृततुः चचृतुः
चचर्तिथ चचृतथुः चचृत
चचर्त चचृतिव चचृतिम
आ० चृत्यात् चृत्यास्ताम् चृत्यासुः
चृत्याः चृत्यास्तम् चृत्यास्त
चृत्यासम् चृत्यास्व चृत्यास्म
श्व० चर्तिता चर्तितारौ चर्तितारः
चर्तितासि चर्तितास्थः चर्तितास्थ
चर्तितास्मि चर्तितास्वः चर्तितास्मः
भ० चर्तिष्यति चर्तिष्यतः चर्तिष्यन्ति
चर्तिष्यसि चर्तिष्यथः चर्तिष्यथ
चर्तिष्यामि चर्तिष्यावः चर्तिष्यामः
चर्त्स्यति चर्त्स्यतः चर्त्स्यन्ति
चर्त्स्यसि चर्त्स्यथः चर्त्स्यथ

चर्त्स्यामि चर्त्स्यावः चर्त्स्यामः
क्रि० अचर्तिष्यत् अचर्तिष्यताम् अचर्तिष्यन्
अचर्तिष्यः अचर्तिष्यतम् अचर्तिष्यत
अचर्तिष्यम् अचर्तिष्याव अचर्तिष्याम
अचर्त्स्यत् अचर्त्स्यताम् अचर्त्स्यन्
अचर्त्स्यः अचर्त्स्यतम् अचर्त्स्यत
अचर्त्स्यम् अचर्त्स्याव अचर्त्स्याम

॥ णुदंत्-प्रेरणे ॥ हांकवुं, प्रेरवुं
नुदति । प्रणुदति । अनौत्सीत् ।
नुनोद । नुनुदिम ।

इदिदयमित्येके तन्मते नुदते-इत्याद्यपि

षद्लृंत्-अवसादने ॥ ग्लानी पामवी

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | सीदति | सीदतः | सीदन्ति |
| | सीदसि | सीदथः | सीदथ |
| | सीदामि | सीदावः | सीदामः |
| स० | सीदेत् | सीदेताम् | सीदेयुः |
| | सीदेः | सीदेतम् | सीदेत |
| | सीदेयम् | सीदेव | सीदेम |
| प० | सीदतु सीदतात् | सीदताम् | सीदन्तु |
| | सीद सीदतात् | सीदतम् | सीदत |
| | सीदानि | सीदाव | सीदाम |
| ह्य० | असीदत् | असीदताम् | असीदन् |
| | असीदः | असीदतम् | असीदत |
| | असीदम् | असीदाव | असीदाम |
| अ० | असदत् | असदताम् | असदन् |
| | असदः | असदतम् | असदत |
| | असदम् | असदाव | असदाम |
| प० | ससाद | सेदतुः | सेदुः |
| | सेदिथ ससत्थ | सेदथुः | सेद |
| | ससाद ससद | सेदिव | सेदिम |
| आ० | सद्यात् | सद्यास्ताम् | सद्यासुः |
| | सद्याः | सद्यास्तम् | सद्यास्त |
| | सद्यासम् | सद्यास्व | सद्यास्म |
| श्व० | सत्ता | सत्तारौ | सत्तारः |
| | सत्तासि | सत्तास्थः | सत्तास्थ |
| | सत्तास्मि | सत्तास्वः | सत्तास्मः |
| भ० | सत्स्यति | सत्स्यतः | सत्स्यन्ति |
| | सत्स्यसि | सत्स्यथः | सत्स्यथ |
| | सत्स्यामि | सत्स्यावः | सत्स्यामः |
| क्रि० | असत्स्यत् | असत्स्यताम् | असत्स्यन् |
| | असत्स्यः | असत्स्यतम् | असत्स्यत |
| | असत्स्यम् | असत्स्याव | असत्स्याम |

॥ विधत्-विधाने ॥ सृजवुं, घडवुं करवुं
विधति । अवेधीत् । विवेध ।

शुनत्-शुनत्-गतौ ॥ जवुं
शुनति । अशोनीत् । शुशोन ।
शुनति । अशोनीत् । शुशोन ।

॥ छुंपत्-स्पर्शे ॥ अडकवुं
छुपति । अछौप्सीत् । चुच्छोप ।

॥ रिफत्-कथनयुद्धहिंसादानेषु ॥ आपवुं,
रिफति । अरेफीत् । रिरेफ ।

॥ तृफत् तृप्तौ ॥ कहेवुं, लडवुं, मारवुं,
तृप्त थवुं.

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | तृम्फति | तृम्फतः | तृम्फन्ति |
| | तृम्फसि | तृम्फथः | तृम्फथ |
| | तृम्फामि | तृम्फावः | तृम्फामः |
| स० | तृम्फेत् | तृम्फेताम् | तृम्फेयुः |
| | तृम्फेः | तृम्फेतम् | तृम्फेत |
| | तृम्फेयम् | तृम्फेव | तृम्फेम |
| प० | तृम्फतु तृम्फतात् | तृम्फताम् | तृम्फन्तु |
| | तृम्फ तृम्फतात् | तृम्फतम् | तृम्फत |
| | तृम्फाणि | तृम्फाव | तृम्फाम |
| ह्य० | अतृम्फत् | अतृम्फताम् | अतृम्फन् |
| | अतृम्फः | अतृम्फतम् | अतृम्फत |
| | अतृम्फम् | अतृम्फाव | अतृम्फाम |
| अ० | अतर्फीत् | अतर्फिष्टाम् | अतर्फिषुः |
| | अतर्फीः | अतर्फिष्टम् | अतर्फिष्ट |
| | अतर्फिषम् | अतर्फिष्व | अतर्फिष्म |
| प० | ततर्फ | ततृफतुः | ततृफुः |
| | ततर्फिथ | ततृफथुः | ततृफ |
| | ततर्फ | ततृफिव | ततृफिम |

आ० तृफ्यात् तृफ्यास्ताम् तृफ्यासुः
तृफ्याः तृफ्यास्तम् तृफ्यास्त
तृफ्यासम् तृफ्यास्व तृफ्यास्म
श्व० तर्फिता तर्फितारौ तर्फितारः
तर्फितासि तर्फितास्थः तर्फितास्थ
तर्फितास्मि तर्फितास्वः तर्फितास्मः
भ० तर्फिष्यति तर्फिष्यतः तर्फिष्यन्ति
तर्फिष्यसि तर्फिष्यथः तर्फिष्यथ
तर्फिष्यामि तर्फिष्यावः तर्फिष्यामः
क्रि० अतर्फिष्यत् अतर्फिष्यताम् अतर्फिष्यन्
अतर्फिष्यः अतर्फिष्यतम् अतर्फिष्यत
अतर्फिष्यम् अतर्फिष्याव अतर्फिष्याम

॥ तृंफत्-तृप्तौ ॥ तृप्तथवुं,
तृफति । अतृम्फीत् । ततृम्फ ।
पाणिनिमते तृफ-प्रभृतयो-ये नकार-रहिता धातवः तेषां शेपरे नकाराघटितानि रूपाणि ये नकारानुषक्तास्तेषां नकारघटितानि रूपाणि

॥ ऋफ-ऋम्फत्-हिंसायाम् ॥ मारवुं
ऋफति । आर्फीत् । आनर्फ ।
ऋफति । आर्म्फीत् । आनृम्फ
पाणिनिमते-ऋम्फति । ऋम्फाञ्चकारेत्यादि

॥ दृफत्-उत्क्लेशे ॥ पीडवुं
व० दृम्फति दृम्फतः दृम्फन्ति
दृम्फसि दृम्फथः दृम्फथ
दृम्फामि दृम्फावः दृम्फामः
स० दृम्फेत् दृम्फेताम् दृम्फेयुः
दृम्फेः दृम्फेतम् दृम्फेत
दृम्फेयम् दृम्फेव दृम्फेम
प० दृम्फतु दृम्फतात् दृम्फताम् दृम्फन्तु
दृम्फ दृम्फतात् दृम्फतम् दृम्फत
दृम्फाणि दृम्फाव दृम्फाम
ह्य० अदृम्फत् अदृम्फताम् अदृम्फन्
अदृम्फः अदृम्फतम् अदृम्फत
अदृम्फम् अदृम्फाव अदृम्फाम

अ० अदर्फीत् अदर्फिष्टाम् अदर्फिषुः
अदर्फीः अदर्फिष्टम् अदर्फिष्ट
अदर्फिषम् अदर्फिष्व अदर्फिष्म
प० ददर्फ ददृफतुः ददृफुः
ददर्फिथ ददृफथुः ददृफ
ददर्फ ददृफिव ददृफिम
आ० दृफ्यात् दृफ्यास्ताम् दृफ्यासुः
दृफ्याः दृफ्यास्तम् दृफ्यास्त
दृफ्यासम् दृफ्यास्व दृफ्यास्म
श्व० दर्फिता दर्फितारौ दर्फितारः
दर्फितासि दर्फितास्थः दर्फितास्थ
दर्फितास्मि दर्फितास्वः दर्फितास्मः
भ० दर्फिष्यति दर्फिष्यतः दर्फिष्यन्ति
दर्फिष्यसि दर्फिष्यथः दर्फिष्यथ
दर्फिष्यामि दर्फिष्यावः दर्फिष्यामः
क्रि० अदर्फिष्यत् अदर्फिष्यताम् अदर्फिष्यन्
अदर्फिष्यः अदर्फिष्यतम् अदर्फिष्यत
अदर्फिष्यम् अदर्फिष्याव अदर्फिष्याम

॥ दृंफत्-उत्क्लेशे ॥ पीडवुं
दृफति । अदृम्फीत् । ददृम्फ ।

॥ गुफ-गुंफत्-ग्रन्थने ॥ गुंथवुं
गुम्फति । अगोफीत् । जुगोफ ।
गुफति । अगुम्फीत् । जुगुम्फ ।

॥ उभ-उम्भत्-पूरणे ॥ पूरवुं
उम्भति । औभीत् । उवोभ ।
उभति । औम्भीत् । उम्भाञ्चकार ।

॥ शुभत्-शोभार्थे ॥ शोभवुं
व० शुम्भति शुम्भतः शुम्भन्ति
शुम्भसि शुम्भथः शुम्भथ
शुम्भामि शुम्भावः शुम्भामः
स० शुम्भेत् शुम्भेताम् शुम्भेयुः
शुम्भेः शुम्भेतम् शुम्भेत
शुम्भेयम् शुम्भेव शुम्भेम
प० शुम्भतु शुम्भतात् शुम्भताम् शुम्भन्तु
शुम्भ शुम्भतात् शुम्भतम् शुम्भत
शुम्भानि शुम्भाव शुम्भाम

ह्य० अशुम्भत् अशुम्भताम् अशुम्भन्
अशुम्भः अशुम्भतम् अशुम्भत
अशुम्भम् अशुम्भाव अशुम्भाम
अ० अशोभीत् अशोभिष्टाम् अशोभिषुः
अशोभीः अशोभिष्टम् अशोभिष्ट
अशोभिषम् अशोभिष्व अशोभिष्म
प० शुशोभ शुशुभतुः शुशुभुः
शुशोभिथ शुशुभथुः शुशुभ
शुशोभ शुशुभिव शुशुभिम
आ० शुभ्यात् शुभ्यास्ताम् शुभ्यासुः
शुभ्याः शुभ्यास्तम् शुभ्यास्त
शुभ्यासम् शुभ्यास्व शुभ्यास्म
श्व० शोभिता शोभितारौ शोभितारः
शोभितासि शोभितास्थः शोभितास्थ
शोभितास्मि शोभितास्वः शोभितास्मः
भ० शोभिष्यति शोभिष्यतः शोभिष्यन्ति
शोभिष्यसि शोभिष्यथः शोभिष्यथ
शोभिष्यामि शोभिष्यावः शोभिष्यामः
क्रि० अशोभिष्यत् अशोभिष्यताम् अशोभिष्यन्
अशोभिष्यः अशोभिष्यतम् अशोभिष्यत
अशोभिष्यम् अशोभिष्याव अशोभिष्याम

॥ शुंभत्-शोभार्थे ॥ शोभवुं
शुभति । अशुम्भीत् । शुशुम्भ

॥ दृभैत्-ग्रन्थने । गुन्थवुं
दृभति । अदर्भीत् । ददर्भ ।

॥ लुभत्-विमोहने ॥ व्याकुल करवुं मोह थवो,

व० लुभति लुभतः लुभन्ति
लुभसि लुभथः लुभथ
लुभामि लुभावः लुभामः
स० लुभेत् लुभेताम् लुभेयुः
लुभेः लुभेतम् लुभेत
लुभेयम् लुभेव लुभेम
प० लुभतु लुभतात् लुभताम् लुभन्तु
लुभ लुभतात् लुभतम् लुभत
लुभानि लुभाव लुभाम

ह्य० अलुभत् अलुभताम् अलुभन्
अलुभः अलुभतम् अलुभत
अलुभम् अलुभाव अलुभाम
अ० अलोभीत् अलोभिष्टाम् अलोभिषुः
अलोभीः अलोभिष्टम् अलोभिष्ट
अलोभिषम् अलोभिष्व अलोभिष्म
प० लुलोभ लुलुभतुः लुलुभुः
लुलोभिथ लुलुभथुः लुलुभ
लुलोभ लुलुभिव लुलुभिम
आ० लुभ्यात् लुभ्यास्ताम् लुभ्यासुः
लुभ्याः लुभ्यास्तम् लुभ्यास्त
लुभ्यासम् लुभ्यास्व लुभ्यास्म
श्व० लोभिता लोभितारौ लोभितारः
लोभितासि लोभितास्थः लोभितास्थ
लोभितास्मि लोभितास्वः लोभितास्मः
लोब्धा लोब्धारौ लोब्धारः
लोब्धासि लोब्धास्थः लोब्धास्थ
लोब्धास्मि लोब्धास्वः लोब्धास्मः
भ० लोभिष्यति लोभिष्यतः लोभिष्यन्ति
लोभिष्यसि लोभिष्यथः लोभिष्यथ
लोभिष्यामि लोभिष्यावः लोभिष्यामः
क्रि० अलोभिष्यत् अलोभिष्यताम् अलोभिष्यन्
अलोभिष्यः अलोभिष्यतम् अलोभिष्यत
अलोभिष्यम् अलोभिष्याव अलोभिष्याम

॥ कुरत्-शब्दे ॥ शब्द करवो
कुरति । अकोरीत् । चुकोर ।

॥ क्षुरत्-विलेखने ॥ कापवुं, खाडवुं
क्षुरति । अक्षोरीत् । चुक्षोर ।

॥ खुरत्-छेदने च ॥ छेदवुं
खुरति । अखोरीत् । चुखोर ।

॥ घुरत्-भीमार्थशब्दयोः ॥ भय करवो शब्द करवो
घुरति । अघोरीत् । जुघोर ।

॥ पुरत्-अग्रगमने ॥ आगळ जवुं
पुरति । अपोरीत् । पुपोर ।

॥ मुरत् संवेष्टने ॥ वींटवु

मुरति । अमोरीत् । मुमोर ।

घोपदेशोऽयमित्येके-तन्मते-सुपोर ।
इत्यादि ॥

॥ सुरत्-ऐश्वर्यदीप्त्योः ॥ दीपवुं ऐश्वर्यवान् थवुं,

सुरति । असोरीत् । सुसोर ।

॥ स्फर-स्फल्फुलत-स्फुरणे ॥ थडकवुं.

स्फरति । अस्फारीत् । पस्फार ।

स्फलति । अस्फालीत् । पस्फाल ।

॥ किलत्-श्वैत्यक्रीडनयोः ॥ धोळुं करवुं, खेलवुं,

किलति । अकेलीत् । चिकेल ।

॥ इलत्-गतिस्वप्नक्षेपणेषु ॥ अवुं,सुवुं फेंकवुं

इलति । पेलीत् । इयेल ।

॥ हिलत्-हावकरणे ॥ अभिप्राय प्रगट करवो

हिलति । अहेलीत् । जिहेल ।

॥ शिल-सिलत्-उञ्छे ॥ वीणवुं,

शिलति । अशेलीत् । शिशेल ।

सिलति । असेलीत् । सिसेल ।

॥ तिलत्-स्नेहने ॥ चोपडवुं

तिलति । अतेलीत् । तितेल ।

॥ चलत्-विलसने ॥ चालवुं

चलति । अचालीत् । चेलिथ ।

॥ चिलत्-वसने ॥ ढांकवुं

चिलति । अचेलीत् । चिचेल ।

॥ विलत्-वरणे ॥ ढांकवुं

विलति । अवेलीत् । विवेल ।

॥ विलत्-भेदने ॥ भेदवुं

विलति । अवेलीत् । विवेल ।

॥ णिलत्-गहने ॥पीडवुं, दुःख देवुं

निलति । अनेलीत् । निनेल ।

॥ मिलत्-श्लेषणे ॥ मळवुं,

मिलति । अमेलीत् । मिमेल ।

॥ स्पृशत्-संस्पर्शे ॥ अडकवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | स्पृशति | स्पृशतः | स्पृशन्ति |
| | स्पृशसि | स्पृशथः | स्पृशथ |
| | स्पृशामि | स्पृशावः | स्पृशामः |
| स० | स्पृशेत् | स्पृशेताम् | स्पृशेयुः |
| | स्पृशेः | स्पृशेतम् | स्पृशेत |
| | स्पृशेयम् | स्पृशेव | स्पृशेम |
| प० | स्पृशतु स्पृशतात् | स्पृशताम् | स्पृशन्तु |
| | स्पृश स्पृशतात् | स्पृशतम् | स्पृशत |
| | स्पृशानि | स्पृशाव | स्पृशाम |
| ह्य० | अस्पृशत् | अस्पृशताम् | अस्पृशन् |
| | अस्पृशः | अस्पृशतम् | अस्पृशत |
| | अस्पृशम् | अस्पृशाव | अस्पृशाम |
| अ० | अस्प्राक्षीत् | अस्प्राष्टाम् | अस्प्राक्षुः |
| | अस्प्राक्षीः | अस्प्राष्टम् | अस्प्राष्ट |
| | अस्प्राक्षम् | अस्प्राक्ष्व | अस्प्राक्ष्म |
| | अस्पार्क्षीत् | अस्पार्ष्टाम् | अस्पार्क्षुः |
| | अस्पार्क्षीः | अस्पार्ष्टम् | अस्पार्ष्ट |
| | अस्पार्क्षम् | अस्पार्क्ष्व | अस्पार्क्ष्म |
| | अस्पृक्षत् | अस्पृक्षताम् | अस्पृक्षन् |
| | अस्पृक्षः | अस्पृक्षतम् | अस्पृक्षत |
| | अस्पृक्षम् | अस्पृक्षाव | अस्पृक्षाम |
| प० | पस्पर्श | पस्पृशतुः | पस्पृशुः |
| | पस्पर्शिथ | पस्पृशथुः | पस्पृश |
| | पस्पर्श | पस्पृशिव | पस्पृशिम |
| आ० | स्पृश्यात् | स्पृश्यास्ताम् | स्पृश्यासुः |
| | स्पृश्याः | स्पृश्यास्तम् | स्पृश्यास्त |
| | स्पृश्यासम् | स्पृश्यास्व | स्पृश्यास्म |
| श्व० | स्प्रष्टा | स्प्रष्टारौ | स्प्रष्टारः |
| | स्प्रष्टासि | स्प्रष्टास्थः | स्प्रष्टास्थ |
| | स्प्रष्टास्मि | स्प्रष्टास्वः | स्प्रष्टास्मः |
| | स्पर्ष्टा | स्पर्ष्टारौ | स्पर्ष्टारः |
| | स्पर्ष्टासि | स्पर्ष्टास्थः | स्पर्ष्टास्थ |
| | स्पर्ष्टास्मि | स्पर्ष्टास्वः | स्पर्ष्टास्मः |
| भ० | स्प्रक्ष्यति | स्प्रक्ष्यतः | स्प्रक्ष्यन्ति |

स्प्रक्ष्यसि स्प्रक्ष्यथः स्प्रक्ष्यथ
स्प्रक्ष्यामि स्प्रक्ष्यावः स्प्रक्ष्यामः
स्पर्क्ष्यति स्पर्क्ष्यतः स्पर्क्ष्यन्ति
स्पर्क्ष्यसि स्पर्क्ष्यथः स्पर्क्ष्यथ
स्पर्क्ष्यामि स्पर्क्ष्यावः स्पर्क्ष्यामः
क्रि० अस्प्रक्ष्यत अस्प्रक्ष्यताम् अस्प्रक्ष्यन्
अस्प्रक्ष्यः अस्प्रक्ष्यतम् अस्प्रक्ष्यत
अस्प्रक्ष्यम् अस्प्रक्ष्याव अस्प्रक्ष्याम
अस्पर्क्ष्यत् अस्पर्क्ष्यताम् अस्पर्क्ष्यन्
अस्पर्क्ष्यः अस्पर्क्ष्यतम् अस्पर्क्ष्यत
अस्पर्क्ष्यम् अस्पर्क्ष्याव अस्पर्क्ष्याम

॥ रुशं-रिशंत्-हिंसायाम् ॥ हिंसा करवी

व० रुशति रुशतः रुशन्ति
रुशसि रुशथः रुशथ
रुशामि रुशावः रुशामः
स० रुशेत् रुशेताम् रुशेयुः
रुशेः रुशेतम् रुशेत
रुशेयम् रुशेव रुशेम
प० रुशतु रुशतात् रुशताम् रुशन्तु
रुश रुशतात् रुशतम् रुशत
रुशानि रुशाव रुशाम
ह्य० अरुशत् अरुशताम् अरुशन्
अरुशः अरुशतम् अरुशत
अरुशम् अरुशाव अरुशाम
अ० अरुक्षत् अरुक्षताम् अरुक्षन्
अरुक्षः अरुक्षतम् अरुक्षत
अरुक्षम् अरुक्षाव अरुक्षाम
प० रुरोश रुरुशतुः रुरुशुः
रुरोशिथ रुरुशथुः रुरुश
रुरोश रुरुशिव रुरुशिम
आ० रुश्यात् रुश्यास्ताम् रुश्यासुः
रुश्याः रुश्यास्तम् रुश्यास्त
रुश्यासम् रुश्यास्व रुश्यास्म
श्व० रोष्टा रोष्टारौ रोष्टारः
रोष्टासि रोष्टास्थः रोष्टास्थ
रोष्टास्मि रोष्टास्वः रोष्टास्मः

भ० रोक्ष्यति रोक्ष्यतः रोक्ष्यन्ति
रोक्ष्यसि रोक्ष्यथः रोक्ष्यथ
रोक्ष्यामि रोक्ष्यावः रोक्ष्यामः
क्रि० अरोक्ष्यत् अरोक्ष्यताम् अरोक्ष्यन्
अरोक्ष्यः अरोक्ष्यतम् अरोक्ष्यत
अरोक्ष्यम् अरोक्ष्याव अरोक्ष्याम
व० रिशति रिशतः रिशन्ति
रिशसि रिशथः रिशथ
रिशामि रिशावः रिशामः
स० रिशेत् रिशेताम् रिशेयुः
रिशेः रिशेतम् रिशेत
रिशेयम् रिशेव रिशेम
प० रिशतु रिशतात् रिशताम् रिशन्तु
रिश रिशतात् रिशतम् रिशत
रिशानि रिशावः रिशामः
ह्य० अरिशत् अरिशताम् अरिशन्
अरिशः अरिशतम् अरिशत
अरिशम् अरिशाव अरिशाम
अ० अरिक्षत् अरिक्षताम् अरिक्षन्
अरिक्षः अरिक्षतम् अरिक्षत
अरिक्षम् अरिक्षाव अरिक्षाम
प० रिरेश रिरिशतुः रिरिशुः
रिरेशिथ रिरिशथुः रिरिश
रिरेश रिरिशिव रिरिशिम
आ० रिश्यात् रिश्यास्ताम् रिश्यासुः
रिश्याः रिश्यास्तम् रिश्यास्त
रिश्यासम् रिश्यास्व रिश्यास्म
श्व० रेष्टा रेष्टारौ रेष्टारः
रेष्टासि रेष्टास्थः रेष्टास्थ
रेष्टास्मि रेष्टास्वः रेष्टास्मः
भ० रेक्ष्यति रेक्ष्यतः रेक्ष्यन्ति
रेक्ष्यसि रेक्ष्यथः रेक्ष्यथ
रेक्ष्यामि रेक्ष्यावः रेक्ष्यामः
क्रि० अरेक्ष्यत् अरेक्ष्यताम् अरेक्ष्यन्
अरेक्ष्यः अरेक्ष्यतम् अरेक्ष्यत
अरेक्ष्यम् अरेक्ष्याव अरेक्ष्याम

॥ विशंत् प्रवेशने ॥ प्रवेश करवो

॥ विशंत् प्रवेशने ॥ प्रवेश करवो ।

व० विशति विशतः विशन्ति
विशसि विशथः विशथ
विशामि विशावः विशामः

स० विशेत् विशेताम् विशेयुः
विशेः विशेतम् विशेत
विशेयम् विशेव विशेम

प० विशतु विशतात् विशताम् विशन्तु
विश विशतात् विशतम् विशत
विशानि विशाव विशाम

ह्य० अविशत् अविशताम् अविशन्
अविशः अविशतम् अविशत
अविशम् अविशाव अविशाम

अ० अविक्षत् अविक्षताम् अविक्षन्
अविक्षः अविक्षतम् अविक्षत
अविक्षम् अविक्षाव अविक्षाम

प० विवेश विविशतुः विविशुः
विवेशिथ विविशथुः विविश
विवेश विविशिव विविशिम

आ० विश्यात् विश्यास्ताम् विश्यासुः
विश्याः विश्यास्तम् विश्यास्त
विश्यासम् विश्यास्व विश्यास्म

श्व० वेष्टा वेष्टारौ वेष्टारः
वेष्टासि वेष्टास्थः वेष्टास्थ
वेष्टास्मि वेष्टास्वः वेष्टास्मः

भ० वेक्ष्यति वेक्ष्यतः वेक्ष्यन्ति
वेक्ष्यसि वेक्ष्यथः वेक्ष्यथ
वेक्ष्यामि वेक्ष्यावः वेक्ष्यामः

क्रि० अवेक्ष्यत् अवेक्ष्यताम् अवेक्ष्यन्
अवेक्ष्यः अवेक्ष्यतम् अवेक्ष्यत
अवेक्ष्यम् अवेक्ष्याव अवेक्ष्याम

॥ मृशंत् आमर्शने ॥ अडवुं ।

व० मृशति मृशतः मृशन्ति
मृशसि मृशथः मृशथ
मृशामि मृशावः मृशामः

स० मृशेत् मृशेताम् मृशेयुः
मृशेः मृशेतम् मृशेत
मृशेयम् मृशेव मृशेम

प० मृशतु मृशतात् मृशताम् मृशन्तु
मृश मृशतात् मृशतम् मृशत
मृशानि मृशाव मृशाम

ह्य० अमृशत् अमृशताम् अमृशन्
अमृशः अमृशतम् अमृशत
अमृशम् अमृशाव अमृशाम

अ० अम्राक्षीत् अम्राष्टाम् अम्राक्षुः
अम्राक्षीः अम्राष्टम् अम्राष्ट
अम्राक्षम् अम्राक्ष्व अम्राक्ष्म
अमार्क्षीत् अमार्ष्टाम् अमार्क्षुः
अमार्क्षीः अमार्ष्टम् अमार्ष्ट
अमार्क्षम् अमार्क्ष्व अमार्क्ष्म
अमृक्षत् अमृक्षताम् अमृक्षन्
अमृक्षः अमृक्षतम् अमृक्षत
अमृक्षम् अमृक्षाव अमृक्षाम

प० ममर्श ममृशतुः ममृशुः
ममर्शिथ ममृशथुः ममृश
ममर्श ममृशिव ममृशिम

आ० मृश्यात् मृश्यास्ताम् मृश्यासुः
मृश्याः मृश्यास्तम् मृश्यास्त
मृश्यासम् मृश्यास्व मृश्यास्म

श्व० म्रष्टा म्रष्टारौ म्रष्टारः
म्रष्टासि म्रष्टास्थः म्रष्टास्थ
म्रष्टास्मि म्रष्टास्वः म्रष्टास्मः
मर्ष्टा मर्ष्टारौ मर्ष्टारः
मर्ष्टासि मर्ष्टास्थः मर्ष्टास्थ
मर्ष्टास्मि मर्ष्टास्वः मर्ष्टास्मः

भ० म्रक्ष्यति म्रक्ष्यतः म्रक्ष्यन्ति
म्रक्ष्यसि म्रक्ष्यथः म्रक्ष्यथ
म्रक्ष्यामि म्रक्ष्यावः म्रक्ष्यामः
मर्क्ष्यति मर्क्ष्यतः मर्क्ष्यन्ति

| | | |
|---|---|---|
| मर्क्ष्यसि | मर्क्ष्यथः | मर्क्ष्यथ |
| मर्क्ष्यामि | मर्क्ष्यावः | मर्क्ष्यामः |
| क्रि० अम्रक्ष्यत् | अम्रक्ष्यताम् | अम्रक्ष्यन् |
| अम्रक्ष्यः | अम्रक्ष्यतम् | अम्रक्ष्यत |
| अम्रक्ष्यम् | अम्रक्ष्याव | अम्रक्ष्याम |
| अमर्क्ष्यत् | अमर्क्ष्यताम् | अमर्क्ष्यन् |
| अमर्क्ष्यः | अमर्क्ष्यतम् | अमर्क्ष्यत |
| अमर्क्ष्यम् | अमर्क्ष्याव | अमर्क्ष्याम |

॥ लिशंत् गतौ ॥ जवुं ।

| | | |
|---|---|---|
| व० लिशति | लिशतः | लिशन्ति |
| लिशसि | लिशथः | लिशथ |
| लिशामि | लिशावः | लिशामः |
| स० लिशेत् | लिशेताम् | लिशेयुः |
| लिशेः | लिशेतम् | लिशेत |
| लिशेयम् | लिशेव | लिशेम |
| प० लिशतु लिशतात् | लिशताम् | लिशन्तु |
| लिश लिशतात् | लिशतम् | लिशत |
| लिशानि | लिशाव | लिशाम |
| ह्य० अलिशत् | अलिशताम् | अलिशन् |
| अलिशः | अलिशतम् | अलिशत |
| अलिशम् | अलिशाव | अलिशाम |
| अ० अलिक्षत् | अलिक्षताम् | अलिक्षन् |
| अलिक्षः | अलिक्षतम् | अलिक्षत |
| अलिक्षम् | अलिक्षाव | अलिक्षाम |
| प० लिलेश | लिलिशतुः | लिलिशुः |
| लिलेशिथ | लिलिशथुः | लिलिश |
| लिलेश | लिलिशिव | लिलिशिम |
| आ० लिश्यात् | लिश्यास्ताम् | लिश्यासुः |
| लिश्याः | लिश्यास्तम् | लिश्यास्त |
| लिश्यासम् | लिश्यास्व | लिश्यास्म |
| श्व० लेष्टा | लेष्टारौ | लेष्टारः |
| लेष्टासि | लेष्टास्थः | लेष्टास्थ |
| लेष्टास्मि | लेष्टास्वः | लेष्टास्मः |
| भ० लेक्ष्यति | लेक्ष्यतः | लेक्ष्यन्ति |
| लेक्ष्यसि | लेक्ष्यथः | लेक्ष्यथ |
| लेक्ष्यामि | लेक्ष्यावः | लेक्ष्यामः |
| क्रि० अलेक्ष्यत् | अलेक्ष्यताम् | अलेक्ष्यन् |
| अलेक्ष्यः | अलेक्ष्यतम् | अलेक्ष्यत |
| अलेक्ष्यम् | अलेक्ष्याव | अलेक्ष्याम |

॥ ऋषैत् गतौ ॥ जवुं ।

ऋषति । आर्षीत् । आनर्ष ।

॥ इषत् इच्छायाम् ॥ इच्छवुं ।

| | | |
|---|---|---|
| व० इच्छति | इच्छतः | इच्छन्ति |
| इच्छसि | इच्छथः | इच्छथ |
| इच्छामि | इच्छावः | इच्छामः |
| स० इच्छेत् | इच्छेताम् | इच्छेयुः |
| इच्छेः | इच्छेतम् | इच्छेत |
| इच्छेयम् | इच्छेव | इच्छेम |
| प० इच्छतु इच्छतात् | इच्छताम् | इच्छन्तु |
| इच्छ ,, | इच्छतम् | इच्छत |
| इच्छानि | इच्छाव | इच्छाम |
| ह्य० ऐच्छत् | ऐच्छताम् | ऐच्छन् |
| ऐच्छः | ऐच्छतम् | ऐच्छत |
| ऐच्छम् | ऐच्छाव | ऐच्छाम |
| अ० ऐषीत् | ऐषिष्टाम् | ऐषिषुः |
| ऐषीः | ऐषिष्टम् | ऐषिष्ट |
| ऐषिषम् | ऐषिष्व | ऐषिष्म |
| प० इयेष | ईषतुः | ईषुः |
| इयेषिथ | ईषथुः | ईष |
| इयेष | ईषिव | ईषिम |
| आ० इष्यात् | इष्यास्ताम् | इष्यासुः |
| इष्याः | इष्यास्तम् | इष्यास्त |
| इष्यासम् | इष्यास्व | इष्यास्म |
| श्व० एषिता | एषितारौ | एषितारः |
| एषितासि | एषितास्थः | एषितास्थ |
| एषितास्मि | एषितास्वः | एषितास्मः |
| एष्टा | एष्टारौ | एष्टारः |
| एष्टासि | एष्टास्थः | एष्टास्थ |
| एष्टास्मि | एष्टास्वः | एष्टास्मः |

भ० पषिष्यति पषिष्यतः पषिष्यन्ति
पषिष्यसि पषिष्यथः पषिष्यथ
पषिष्यामि पषिष्यावः पषिष्यामः
क्रि० पेषिष्यत् पेषिष्यताम् पेषिष्यन्
पषिष्यः पेषिष्यतम् पेषिष्यत
पेषिष्यम् पेषिष्याव पेषिष्याम

|| मिषत् स्पर्द्धायाम् । चडसा चडसी करवी ।
मिषति । अमेषीत् ।मिमेष ।
|| वृहीत् उद्यमे || उद्यम करवो ।

व० वृहति वृहतः वृहन्ति
वृहसि वृहथः वृहथ
वृहामि वृहावः वृहामः
स० वृहेत् वृहेताम् वृहेयुः
वृहेः वृहेतम् वृहेत
वृहेयम् वृहेव वृहेम
प० वृहतु वृहतात् वृहताम् वृहन्तु
वृह " वृहतम् वृहत
वृहाणि वृहाव वृहाम
ह्य० अवृहत् अवृहताम् अवृहन्
अवृहः अवृहतम् अवृहत
अवृहम् अवृहाव अवृहाम
अ० अवर्हीत् अवर्हिष्टाम् अवर्हिषुः
अवर्हीः अवर्हिष्टम् अवर्हिष्ट
अवर्हिषम् अवर्हिष्व अवर्हिष्म
अवृक्षत् अवृक्षताम् अवृक्षन्
अवृक्षः अवृक्षतम् अवृक्षत
अवृक्षम् अवृक्षाव अवृक्षाम
प० ववर्ह ववृहतुः ववृहुः
ववर्हिथ ववृहथुः ववृह
ववर्ह ववृहिव ववृहिम
मतान्तरे - ववर्ढ ।ववृह्व । ववृह्म ।
आ० वृह्यात् वृह्यास्ताम् वृह्यासुः
वृह्याः वृह्यास्तम् वृह्यास्त
वृह्यासम् वृह्यास्व वृह्यास्म

श्व० वर्हिता वर्हितारौ वर्हितारः
वर्हितासि वर्हितास्थः वर्हितास्थ
वर्हितास्मि वर्हितास्वः वर्हितास्मः
वर्ढा वर्ढारौ वर्ढारः
वर्ढासि वर्ढास्थः वर्ढास्थ
वर्ढास्मि वर्ढास्वः वर्ढास्मः
भ० वर्हिष्यति वर्हिष्यतः वर्हिष्यन्ति
वर्हिष्यसि वर्हिष्यथः वर्हिष्यथ
वर्हिष्यामि वर्हिष्यावः वर्हिष्यामः
वर्क्ष्यति वर्क्ष्यतः वर्क्ष्यन्ति
वर्क्ष्यसि वर्क्ष्यथः वर्क्ष्यथ
वर्क्ष्यामि वर्क्ष्यावः वर्क्ष्यामः
क्रि० अवर्हिष्यत् अवर्हिष्यताम् अवर्हिष्यन्
अवर्हिष्यः अवर्हिष्यतम् अवर्हिष्यत
अवर्हिष्यम् अवर्हिष्याव अवर्हिष्याम
अवर्क्ष्यत् अवर्क्ष्यताम् अवर्क्ष्यन्
अवर्क्ष्यः अवर्क्ष्यतम् अवर्क्ष्यत
अवर्क्ष्यम् अवर्क्ष्याव अवर्क्ष्याम

तृहौ तृंहौ स्तृहौ स्तृंहौत् हिंसायाम्,
मारवुं ॥

व० तृहति तृहतः तृहन्ति
तृहसि तृहथः तृहत
तृहामि तृहावः तृहामः
स० तृहेत् तृहेताम् तृहेयुः
तृहेः तृहेतम् तृहेत
तृहेयम् तृहेव तृहेम
प० तृहतु तृहतात् तृहताम् तृहन्तु
तृह " तृहतात् तृहतम् तृहत
तृहाणि तृहाव तृहाम
ह्य० अतृहत् अतृहताम् अतृहन्
अतृहः अतृहतम् अतृहत
अतृहम् अतृहाव अतृहाम
अ० अतर्हीत् अतर्हिष्टाम् अतर्हिषुः
अतर्हीः अतर्हिष्टम् अतर्हिष्ट
अतर्हिषम् अतर्हिष्व अतर्हिष्म

अतृक्षत् अतृक्षताम् अतृक्षन्
अतृक्षः अतृक्षतम् अतृक्षत
अतृक्षम् अतृक्षाव अतृक्षाम
प० ततर्ह ततृहतुः ततृहुः
ततर्हिथ ततृहथुः ततृह
ततर्ह ततृहिव ततृहिम
मतान्तरे—ततर्ढ । ततृह्व । ततृह्म ।
आ० तृह्यात् तृह्यास्ताम् तृह्यासुः
तृह्याः तृह्यास्तम् तृह्यास्त
तृह्यासम् तृह्यास्व तृह्यास्म
श्व० तर्हिता तर्हितारौ तर्हितारः
तर्हितासि तर्हितास्थः तर्हितास्थ
तर्हितास्मि तर्हितास्वः तर्हितास्मः
तर्ढा तर्ढारौ तर्ढारः
तर्ढासि तर्ढास्थः तर्ढास्थ
तर्ढास्मि तर्ढास्वः तर्ढास्मः
भ० तर्हिष्यति तर्हिष्यतः तर्हिष्यन्ति
तर्हिष्यसि तर्हिष्यथः तर्हिष्यथ
तर्हिष्यामि तर्हिष्यावः तर्हिष्यामः
तर्क्ष्यति तर्क्ष्यतः तर्क्ष्यन्ति
तर्क्ष्यसि तर्क्ष्यथः तर्क्ष्यथ
तर्क्ष्यामि तर्क्ष्यावः तर्क्ष्यामः
क्रि० अतर्हिष्यत् अतर्हिष्यताम् अतर्हिष्यन्
अतर्हिष्यः अतर्हिष्यतम् अतर्हिष्यत
अतर्हिष्यम् अतर्हिष्याव अतर्हिष्याम
अतर्क्ष्यत् अतर्क्ष्यताम् अतर्क्ष्यन्
अतर्क्ष्यः अतर्क्ष्यतम् अतर्क्ष्यत
अतर्क्ष्यम् अतर्क्ष्याव अतर्क्ष्याम
व० तृंहति तृंहतः तृंहन्ति
तृंहसि तृंहथः तृंहथ
तृंहामि तृंहावः तृंहामः
स० तृंहेत् तृंहेताम् तृंहेयुः
तृंहेः तृंहेतम् तृंहेत
तृंहेयम् तृंहेव तृंहेम
प० तृंहतु तृंहतात् तृंहताम् तृंहन्तु
तृंह तृंहतात् तृंहतम् तृंहत
तृंहाणि तृंहाव तृंहाम
ह्य० अतृंहत् अतृंहताम् अतृंहन्
अतृंहः अतृंहतम् अतृंहत
अतृंहम् अतृंहाव अतृंहाम
अ० अतृंहीत् अतृंहिष्टाम् अतृंहिषुः
अतृंहीः अतृंहिष्टम् अतृंहिष्ट
अतृंहिषम् अतृंहिष्व अतृंहिष्म
अ० अताङ्क्षीत् अताण्ढाम् अताङ्क्षुः
अताङ्क्षीः अताण्ढम् अताण्ढ
अताङ्क्षम् अताङ्क्ष्व अताङ्क्ष्म
प० ततृंह ततृंहतुः ततृंहुः
ततृंहिथ ततृंहथुः ततृंह
ततृंह ततृंहिव ततृंहिम
मतान्तरे ततृण्ढ ततृंह्व ततृंह्म
आ० तृह्यात् तृह्यास्ताम् तृह्यासुः
तृह्याः तृह्यास्तम् तृह्यास्त
तृह्यासम् तृह्यास्व तृह्यास्म
श्व० तृंहिता तृंहितारौ तृंहितारः
तृंहितासि तृंहितास्थः तृंहितास्थ
तृंहितास्मि तृंहितास्वः तृंहितास्मः
तृण्ढा तृण्ढारौ तृण्ढारः
तृण्ढासि तृण्ढास्थः तृण्ढास्थ
तृण्ढास्मि तृण्ढास्वः तृण्ढास्मः
भ० तृंहिष्यति तृंहिष्यतः तृंहिष्यन्ति
तृंहिष्यसि तृंहिष्यथः तृंहिष्यथ
तृंहिष्यामि तृंहिष्यावः तृंहिष्यामः
तृङ्क्ष्यति तृङ्क्ष्यतः तृङ्क्ष्यन्ति
तृङ्क्ष्यसि तृङ्क्ष्यथः तृङ्क्ष्यथ
तृङ्क्ष्यामि तृङ्क्ष्यावः तृङ्क्ष्यामः
क्रि० अतृंहिष्यत् अतृंहिष्यताम् अतृंहिष्यन्
अतृंहिष्यः अतृंहिष्यतम् अतृंहिष्यत
अतृंहिष्यम् अतृंहिष्याव अतृंहिष्याम
अतृङ्क्ष्यत् अतृङ्क्ष्यताम् अतृङ्क्ष्यन्
अतृङ्क्ष्यः अतृङ्क्ष्यतम् अतृङ्क्ष्यत
अतृङ्क्ष्यम् अतृङ्क्ष्याव अतृङ्क्ष्याम

व० स्तृहति स्तृहतः स्तृहन्ति
स्तृहसि स्तृहथः स्तृहथ
स्तृहामि स्तृहावः स्तृहामः
स० स्तृहेत् स्तृहेताम् स्तृहेयुः
स्तृहेः स्तृहेतम् स्तृहेत
स्तृहेयम् स्तृहेव स्तृहेम
प० स्तृहतु स्तृहतात् स्तृहताम् स्तृहन्तु
स्तृह स्तृहतात् स्तृहतम् स्तृहत
स्तृहाणि स्तृहाव स्तृहाम
ह्य० अस्तृहत् अस्तृहताम् अस्तृहन्
अस्तृहः अस्तृहतम् अस्तृहत
अस्तृहम् अस्तृहाव अस्तृहाम
अ० अस्तर्हीत् अस्तर्हिष्टाम् अस्तर्हिषुः
अस्तर्हीः अस्तर्हिष्टम् अस्तर्हिष्ट
अस्तर्हिषम् अस्तर्हिष्व अस्तर्हिष्म
अस्तृक्षत् अस्तृक्षताम् अस्तृक्षन्
अस्तृक्षः अस्तृक्षतम् अस्तृक्षत
अस्तृक्षम् अस्तृक्षाव अस्तृक्षाम
प० तस्तर्ह तस्तृहतुः तस्तृहुः
तस्तर्हिथ तस्तृहथुः तस्तृह
तस्तर्ह तस्तृहिव तस्तृहिम
मतान्तरे तस्तर्ढ तस्तृढ्व तस्तृह्म
आ० स्तृह्यात् स्तृह्यास्ताम् स्तृह्यासुः
स्तृह्याः स्तृह्यास्तम् स्तृह्यास्त
स्तृह्यासम् स्तृह्यास्व स्तृह्यास्म
श्व० स्तर्हिता स्तर्हितारौ स्तर्हितारः
स्तर्हितासि स्तर्हितास्थः स्तर्हितास्थ
स्तर्हितास्मि स्तर्हितास्वः स्तर्हितास्मः
स्तर्ढा स्तर्ढारौ स्तर्ढारः
स्तर्ढासि स्तर्ढास्थः स्तर्ढास्थ
स्तर्ढास्मि स्तर्ढास्वः स्तर्ढास्मः
भ० स्तर्हिष्यति स्तर्हिष्यतः स्तर्हिष्यन्ति
स्तर्हिष्यसि स्तर्हिष्यथः स्तर्हिष्यथ
स्तर्हिष्यामि स्तर्हिष्यावः स्तर्हिष्यामः
स्तर्क्ष्यति स्तर्क्ष्यतः स्तर्क्ष्यन्ति
स्तर्क्ष्यसि स्तर्क्ष्यथः स्तर्क्ष्यथ
स्तर्क्ष्यामि स्तर्क्ष्यावः स्तर्क्ष्यामः
क्रि० अस्तर्हिष्यत् अस्तर्हिष्यताम् अस्तर्हिष्यन्
अस्तर्हिष्यः अस्तर्हिष्यतम् अस्तर्हिष्यत
अस्तर्हिष्यम् अस्तर्हिष्याव अस्तर्हिष्याम
अस्तर्क्ष्यत् अस्तर्क्ष्यताम् अस्तर्क्ष्यन्
अस्तर्क्ष्यः अस्तर्क्ष्यतम् अस्तर्क्ष्यत
अस्तर्क्ष्यम् अस्तर्क्ष्याव अस्तर्क्ष्याम
व० स्तृंहति स्तृंहतः स्तृंहन्ति
स्तृंहसि स्तृंहथः स्तृंहथ
स्तृंहामि स्तृंहावः स्तृंहामः
स० स्तृंहेत् स्तृंहेताम् स्तृंहेयुः
स्तृंहेः स्तृंहेतम् स्तृंहेत
स्तृंहेयम् स्तृंहेव स्तृंहेम
प० स्तृंहतु स्तृंहतात् स्तृंहताम् स्तृंहन्तु
स्तृंह ,, स्तृंहतम् स्तृंहत
स्तृंहाणि स्तृंहाव स्तृंहाम
ह्य० अस्तृंहत् अस्तृंहताम् अस्तृंहन्
अस्तृंहः अस्तृंहतम् अस्तृंहत
अस्तृंहम् अस्तृंहाव अस्तृंहाम
अ० अस्तृंहीत् अस्तृंहिष्टाम् अस्तृंहिषुः
अस्तृंहीः अस्तृंहिष्टम् अस्तृंहिष्ट
अस्तृंहिषम् अस्तृंहिष्व अस्तृंहिष्म
अ० अस्ताङ्क्षीत् अस्ताण्ढाम् अस्ताङ्क्षुः
अस्ताङ्क्षीः अस्ताण्ढम् अस्ताण्ढ
अस्ताङ्क्षम् अस्ताङ्क्ष्व अस्ताङ्क्ष्म
प० तस्तृंह तस्तृंहतुः तस्तृंहुः
तस्तृंहिथ तस्तृंहथुः तस्तृंह
तस्तृंह तस्तृंहिव तस्तृंहिम
मतान्तरे तस्तृण्ढ तस्तृंह्व तस्तृंह्म
आ० स्तृह्यात् स्तृह्यास्ताम् स्तृह्यासुः
स्तृह्याः स्तृह्यास्तम् स्तृह्यास्त
स्तृह्यासम् स्तृह्यास्व स्तृह्यास्म
श्व० स्तृंहिता स्तृंहितारौ स्तृंहितारः
स्तृंहितासि स्तृंहितास्थः स्तृंहितास्थ
स्तृंहितास्मि स्तृंहितास्वः स्तृंहितास्मः

स्तृण्ढा　स्तृण्ढारौ　स्तृण्ढारः
स्तृंढासि　स्तृंढास्थः　स्तृंढास्थ
स्तृंढास्मि　स्तृंढास्वः　स्तृंढास्मः
भ० स्तृंहिष्यति स्तृंहिष्यतः　स्तृंहिष्यन्ति
स्तृंहिष्यसि स्तृंहिष्यथः　स्तृंहिष्यथ
स्तृंहिष्यामि स्तृंहिष्यावः स्तृंहिष्यामः
स्तृङ्क्ष्यति　स्तृङ्क्ष्यतः　स्तृङ्क्ष्यन्ति
स्तृंक्ष्यसि　स्तृंक्ष्यथः　स्तृंक्ष्यथ
स्तृंक्ष्यामि　स्तृंक्ष्यावः　स्तृंक्ष्यामः
क्रि० अस्तृंहिष्यत् अस्तृंहिष्यताम् अस्तृंहिष्यन्
अस्तृंहिष्यः अस्तृंहिष्यतम् अस्तृंहिष्यत
अस्तृंहिष्यम् अस्तृंहिष्याव अस्तृंहिष्याम
अस्तृङ्क्ष्यत् अस्तृङ्क्ष्यताम् अस्तृङ्क्ष्यन्
अस्तृङ्क्ष्यः　अस्तृङ्क्ष्यतम्　अस्तृङ्क्ष्यत
अस्तृङ्क्ष्यम्　अस्तृङ्क्ष्याव　अस्तृङ्क्ष्याम

॥ अथ कुटादिः ॥

॥ कुटत् कौटिल्ये ॥ वांका थवुं ।

व० कुटति　कुटतः　कुटन्ति
कुटसि　कुटथः　कुटथ
कुटामि　कुटावः　कुटामः
स० कुटेत्　कुटेताम्　कुटेयुः
कुटेः　कुटेतम्　कुटेत
कुटेयम्　कुटेव　कुटेम
प० कुटतु　कुटतात्　कुटताम्　कुटन्तु
कुट　कुटतात्　कुटतम्　कुटत
कुटानि　कुटाव　कुटाम
ह्य० अकुटत्　अकुटताम्　अकुटन्
अकुटः　अकुटतम्　अकुटत
अकुटम्　अकुटाव　अकुटाम
अ० अकुटीत्　अकुटिष्टाम्　अकुटिषुः
अकुटीः　अकुटिष्टम्　अकुटिष्ट
अकुटिषम्　अकुटिष्व　अकुटिष्म
प० चुकोट　चुकुटतुः　चुकुटुः
चुकुटिथ　चुकुटथुः　चुकुट
चुकोट चुकुट　चुकुटिव　चुकुटिम
आ० कुट्यात्　कुट्यास्ताम्　कुट्यासुः
कुट्याः　कुट्यास्तम्　कुट्यास्त
कुट्यासम्　कुट्यास्व　कुट्यास्म
श्व० कुटिता　कुटितारौ　कुटितारः
कुटितासि　कुटितास्थः　कुटितस्थ
कुटितास्मि कुटितास्वः　कुटितास्मः
भ० कुटिष्यति　कुटिष्यतः　कुटिष्यन्ति
कुटिष्यसि　कुटिष्यथः　कुटिष्यथ
कुटिष्यामि　कुटिष्यावः　कुटिष्यामः
क्रि अकुटिष्यत् अकुटिष्यताम् अकुटिष्यन्
अकुटिष्यः अकुटिष्यतम्　अकुटिष्यत
अकुटिष्यम् अकुटिष्याव　अकुटिष्याम

॥ गुंत् पुरीषोत्सर्गे ॥ मळत्याग करवो, लाजरुं जवुं ।

व० गुवति　गुवतः　गुवन्ति
गुवसि　गुवथः　गुवथ
गुवामि　गुवावः　गुवामः
स० गुवेत्　गुवेताम्　गुवेयुः
गुवेः　गुवेतम्　गुवेत
गुवेयम्　गुवेव　गुवेम
प० गुवतु　गुवतात्　गुवताम्　गुवन्तु
गुव　गुवतात्　गुवतम्　गुवत
गुवानि　गुवाव　गुवाम
ह्य० अगुवत्　अगुवताम्　अगुवन्
अगुवः　अगुवतम्　अगुवत
अगुवम्　अगुवाव　अगुवाम
अ० अगुषीत्　अगुताम्　अगुषुः
अगुषीः　अगुतम्　अगुत
अगुषम्　अगुष्व　अगुष्म
प० जुगाव　जुगुवतुः　जुगुवुः
जुगुविथ　जुगुथ　जुगुवथुः　जुगुव
जुगाव　जुगुव　जुगुविव　जुगुविम
आ० गूयात्　गूयास्ताम्　गूयासुः
गूयाः　गूयास्तम्　गूयास्त
गूयासम्　गूयास्व　गूयास्म
श्व० गुता　गुतारौ　गुतारः
गुतासि　गुतास्थः　गुतास्थ

| | | |
|---|---|---|
| गुतास्मि | गुतास्वः | गुतास्मः |
| भ० गुष्यति | गुष्यतः | गुष्यन्ति |
| गुष्यसि | गुष्यथः | गुष्यथ |
| गुष्यामि | गुष्यावः | गुष्यामः |
| क्रि० अगुष्यत् | अगुष्यताम् | अगुष्यन् |
| अगुष्यः | अगुष्यतम् | अगुष्यत |
| अगुष्यम् | अगुष्याव | अगुष्याम |

॥ ध्रुंत् गतिस्थैर्ययोः ॥ जवुं, स्थिर थवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० ध्रुवति | ध्रुवतः | ध्रुवन्ति | |
| ध्रुवसि | ध्रुवथः | ध्रुवथ | |
| ध्रुवामि | ध्रुवावः | ध्रुवामः | |
| स० ध्रुवेत् | ध्रुवेताम् | ध्रुवेयुः | |
| ध्रुवेः | ध्रुवेतम् | ध्रुवेत | |
| ध्रुवेयम् | ध्रुवेव | ध्रुवेम | |
| प० ध्रुवतु | ध्रुवतात् | ध्रुवताम् | ध्रुवन्तु |
| ध्रुव | " | ध्रुवतम् | ध्रुवत |
| ध्रुवाणि | | ध्रुवाव | ध्रुवाम |
| ह्य० अध्रुवत् | अध्रुवताम् | अध्रुवन् | |
| अध्रुवः | अध्रुवतम् | अध्रुवत | |
| अध्रुवम् | अध्रुवाव | अध्रुवाम | |
| अ० अध्रुषीत् | अध्रुताम् | अध्रुषुः | |
| अध्रुषीः | अध्रुतम् | अध्रुत | |
| अध्रुषम् | अध्रुष्व | अध्रुष्म | |
| प० दुध्राव | दुध्रुवतुः | दुध्रुवुः | |
| दुध्रुविथ | दुध्रुथ | दुध्रुवथुः | दुध्रुव |
| दुध्राव | दुध्रुव | दुध्रुविव | दुध्रुविम |
| आ० ध्रूयात् | ध्रूयास्ताम् | ध्रूयासुः | |
| ध्रूयाः | ध्रूयास्तम् | ध्रूयास्त | |
| ध्रूयासम् | ध्रूयास्व | ध्रूयास्म | |
| श्व० ध्रुता | ध्रुतारौ | ध्रुतारः | |
| ध्रुतासि | ध्रुतास्थः | ध्रुतास्थ | |
| ध्रुतास्मि | ध्रुतास्वः | ध्रुतास्मः | |
| भ० ध्रुष्यति | ध्रुष्यतः | ध्रुष्यन्ति | |
| ध्रुष्यसि | ध्रुष्यथः | ध्रुष्यथ | |
| ध्रुष्यामि | ध्रुष्यावः | ध्रुष्यामः | |

| | | |
|---|---|---|
| क्रि० अध्रुष्यत् | अध्रुष्यताम् | अध्रुष्यन् |
| अध्रुष्यः | अध्रुष्यतम् | अध्रुष्यत |
| अध्रुष्यम् | अध्रुष्याव | अध्रुष्याम |

॥ णूत् स्तवने ॥ स्तुति करवी ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० नुवति | नुवतः | नुवन्ति | |
| नुवसि | नुवथः | नुवथ | |
| नुवामि | नुवावः | नुवामः | |
| प्रणुवति । | | | |
| स० नुवेत् | नुवेताम् | नुवेयुः | |
| नुवेः | नुवेतम् | नुवेत | |
| नुवेयम् | नुवेव | नुवेम | |
| प० नुवतु | नुवतात् | नुवताम् | नुवन्तु |
| नुव | नुवतात् | नुवतम् | नुवत |
| नुवानि | | नुवाव | नुवाम |
| ह्य० अनुवत् | अनुवताम् | अनुवन् | |
| अनुवः | अनुवतम् | अनुवत | |
| अनुवम् | अनुवाव | अनुवाम | |
| अ० अनुवीत् | अनुविष्टाम् | अनुविषुः | |
| अनुवीः | अनुविष्टम् | अनुविष्ट | |
| अनुविषम् | अनुविष्व | अनुविष्म | |
| प० नुनाव | नुनुवतुः | नुनुवुः | |
| नुनुविथ | नुनुवथुः | नुनुव | |
| नुनाव | नुनुव | नुनुविव | नुनुविम |
| आ० नूयात् | नूयास्ताम् | नूयासुः | |
| नूयाः | नूयास्तम् | नूयास्त | |
| नूयासम् | नूयास्व | नूयास्म | |
| श्व० नुविता | नुवितारौ | नुवितारः | |
| नुवितासि | नुवितास्थः | नुवितास्थ | |
| नुवितास्मि | नुवितास्वः | नुवितास्मः | |
| भ० नुविष्यति | नुविष्यतः | नुविष्यन्ति | |
| नुविष्यसि | नुविष्यथः | नुविष्यथ | |
| नुविष्यामि | नुविष्यावः | नुविष्यामः | |
| क्रि० अनुविष्यत् | अनुविष्यताम् | अनुविष्यन् | |
| अनुविष्यः | अनुविष्यतम् | अनुविष्यत | |
| अनुविष्यम् | अनुविष्याव | अनुविष्याम | |

॥ धूत् विधूनने ॥ हलाववुं ।

व० धुवति धुवतः धुवन्ति
धुवसि धुवथः धुवथ
धुवामि धुवावः धुवामः
स० धुवेत् धुवेताम् धुवेयुः
धुवेः धुवेतम् धुवेत
धुवेयम् धुवेव धुवेम
प० धुवतु धुवतात् धुवताम् धुवन्तु
धुव धुवतात् धुवतम् धुवत
धुवानि धुवाव धुवाम
ह्य० अधुवत् अधुवताम् अधुवन्
अधुवः अधुवतम् अधुवत
अधुवम् अधुवाव अधुवाम
अ० अधुवीत् अधुविष्टाम् अधुविषुः
अधुवीः अधुविष्टम् अधुविष्ट
अधुविषम् अधुविष्व अधुविष्म
प० दुधाव दुधुवतुः दुधुवुः
दुधुविथ दुधुवथुः दुधुव
दुधाव दुधुव दुधुविव दुधुविम
आ० धूयात् धूयास्ताम् धूयासुः
धूयाः धूयास्तम् धूयास्त
धूयासम् धूयास्व धूयास्म
श्व० धुविता धुवितारौ धुवितारः
धुवितासि धुवितास्थः धुवितास्थ
धुवितास्मि धुवितास्वः धुवितास्मः
भ० धुविष्यति धुविष्यतः धुविष्यन्ति
धुविष्यसि धुविष्यथः धुविष्यथ
धुविष्यामि धुविष्यावः धुविष्यामः
क्रि० अधुविष्यत् अधुविष्यताम् अधुविष्यन्
अधुविष्यः अधुविष्यतम् अधुविष्यत
अधुविष्यम् अधुविष्याव अधुविष्याम

॥ कुचत् सङ्कोचने ॥ संकोचवुं ।

कुचति । अकुचीत् । चुकोच चुकुचिथ ।

॥ व्यचत् व्याजीकरणे ॥ छेतरवुं, ठगवुं ।

व० विचति विचतः विचन्ति
विचसि विचथः विचथ
विचामि विचावः विचामः
स० विचेत् विचेताम् विचेयुः
विचेः विचेतम् विचेत
विचेयम् विचेव विचेम
प० विचतु विचतात् विचताम् विचन्तु
विच विचतात् विचतम् विचत
विचानि विचाव विचाम
ह्य० अविचत् अविचताम् अविचन्
अविचः अविचतम् अविचत
अविचम् अविचाव अविचाम
अ० अविचीत् अविचिष्टाम् अविचिषुः
अविचीः अविचिष्टम् अविचिष्ट
अविचिषम् अविचिष्व अविचिष्म
प० विव्याच विविचतुः विविचुः
विविचिथ विविचथुः विविच
विव्याच विविच विविचिव विविचिम
आ० विच्यात् विच्यास्ताम् विच्यासुः
विच्याः विच्यास्तम् विच्यास्त
विच्यासम् विच्यास्व विच्यास्म

पाणिनीयमते—व्यचिता । व्यचिष्यति । अव्यचिष्यत् । अव्याचीत् । विव्यचिथ । विव्याच । विव्यच । अव्यचीत् । इति भवति ।

श्व० विचिता विचितारौ विचितारः
विचितासि विचितास्थः विचितास्थ
विचितास्मि विचितास्वः विचितास्मः
भ० विचिष्यति विचिष्यतः विचिष्यन्ति
विचिष्यसि विचिष्यथः विचिष्यथ
विचिष्यामि विचिष्यावः विचिष्यामः
क्रि० अविचिष्यत् अविचिष्यताम् अविचिष्यन्
अविचिष्यः अविचिष्यतम् अविचिष्यत
अविचिष्यम् अविचिष्याव अविचिष्याम

॥ गुजत् शब्दे ॥ शब्द करवो ।

गुजति । अगुजीत् । जुगुजिथ ।

॥ घुटत् प्रतीघाते ॥ सामुं मारवुं ।

घुटति । अघुटीत् । जुघुटिथ ।

॥ चुट छुट छेदने ॥ छेदवुं ।
चुटति । अचुटीत् । चुचोट ।
षिच्छुटति । व्यच्छुटीत् । षिचुच्छुटिथ ।
॥ त्रुटत् छेदने ॥ छेदवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | त्रुट्यति | त्रुट्यतः | त्रुट्यन्ति |
| | त्रुट्यसि | त्रुट्यथः | त्रुट्यथ |
| | त्रुट्यामि | त्रुट्यावः | त्रुट्यामः |
| | त्रुटति | त्रुटतः | त्रुटन्ति |
| | त्रुटसि | त्रुटथः | त्रुटथ |
| | त्रुटामि | त्रुटावः | त्रुटामः |
| स० | त्रुट्येत् | त्रुट्येताम् | त्रुट्येयुः |
| | त्रुट्येः | त्रुट्येतम् | त्रुट्येत |
| | त्रुट्येयम् | त्रुट्येव | त्रुट्येम |
| | त्रुटेत् | त्रुटेताम् | त्रुटेयुः |
| | त्रुटेः | त्रुटेतम् | त्रुटेत |
| | त्रुटेयम् | त्रुटेव | त्रुटेम |
| | त्रुट्यतु त्रुट्यतात् | त्रुट्यताम् | त्रुट्यन्तु |
| | त्रुट्य ,, | त्रुट्यतम् | त्रुट्यत |
| | त्रुट्यानि | त्रुट्याव | त्रुट्याम |
| | त्रुटतु त्रुटतात् | त्रुटताम् | त्रुटन्तु |
| | त्रुट ,, | त्रुटतम् | त्रुटत |
| | त्रुटानि | त्रुटाव | त्रुटाम |
| ह्य० | अत्रुट्यत् | अत्रुट्यताम् | अत्रुट्यन् |
| | अत्रुट्यः | अत्रुट्यतम् | अत्रुट्यत |
| | अत्रुट्यम् | अत्रुट्याव | अत्रुट्याम |
| | अत्रुटत् | अत्रुटताम् | अत्रुटन् |
| | अत्रुटः | अत्रुटतम् | अत्रुटत |
| | अत्रुटम् | अत्रुटाव | अत्रुटाम |
| अ० | अत्रुटीत् | अत्रुटिष्टाम् | अत्रुटिषुः |
| | अत्रुटीः | अत्रुटिष्टम् | अत्रुटिष्ट |
| | अत्रुटिषम् | अत्रुटिष्व | अत्रुटिष्म |
| प० | तुत्रोट | तुत्रुटतुः | तुत्रुटुः |
| | तुत्रुटिथ | तुत्रुटथुः | तुत्रुट |
| | तुत्रोट तुत्रुट | तुत्रुटिव | तुत्रुटिम |
| आ० | त्रुट्यात् | त्रुट्यास्ताम् | त्रुट्यासुः |
| | त्रुट्याः | त्रुट्यास्तम् | त्रुट्यास्त |
| | त्रुट्यासम् | त्रुट्यास्व | त्रुट्यास्म |
| श्व० | त्रुटिता | त्रुटितारौ | त्रुटितारः |
| | त्रुटितासि | त्रुटितास्थः | त्रुटितास्थ |
| | त्रुटितास्मि | त्रुटितास्वः | त्रुटितास्मः |
| भ० | त्रुटिष्यति | त्रुटिष्यतः | त्रुटिष्यन्ति |
| | त्रुटिष्यसि | त्रुटिष्यथः | त्रुटिष्यथ |
| | त्रुटिष्यामि | त्रुटिष्यावः | त्रुटिष्यामः |
| क्रि० | अत्रुटिष्यत् | अत्रुटिष्यताम् | अत्रुटिष्यन् |
| | अत्रुटिष्यः | अत्रुटिष्यतम् | अत्रुटिष्यत |
| | अत्रुटिष्यम् | अत्रुटिष्याव | अत्रुटिष्याम |

॥ तुटत् कलहकर्मणि ॥ क्लेश करवो ।
तुटति । अतुटीत् । तुतुटिव ।
॥ मुटत् आक्षेपप्रमर्दनयोः ॥ निंदवुं, चोळी नाखवुं ।
मुटति । अमुटीत् । मुमुटिम ।
॥ स्फुटत् विकसने ॥ विकास थवो ।
स्फुटति । अस्फुटीत् । पुस्फोट ।
॥ पुट लुठत् संश्लेषणे ॥ भेटवुं ।
पुटति । अपुटीत् । पुपुटिथ ।
लुठति । अलुठीत् । लुलुठिव ।
॥ कृडत् घसने-भक्षणे ॥ खावुं ।
कृडति । अकृडीत् । चकर्ड । चकृडिथ
॥ कुडत् बाल्ये च ॥ बाळपण करवुं, खावुं ।
कुडति । अकुडीत् । चुकोड ।
॥ गुडत् रक्षायाम् ॥ रक्षण करवुं ।
गुडति । अगुडीत् । जुगोड ।
॥ जुडत् बन्धने ॥ बांधवुं ।
जुडति । अजुडीत् । जुजुडिथ ।
॥ तुडत् तोडने ॥ तोडवुं ।
तुडति । अतुडीत् । तुतुडिम ।
॥ लुड थुड स्थुडत् संवरणे ॥ ढांकवुं ।
लुडति । अलुडीत् । लुलोड ।
थुडति । अथुडीत् । तुथुडिथ ।
स्थुडति । अस्थुडीत् । तुस्थुडिम ।
॥ वुडत् उत्सर्गे च ॥ तजवुं, ढांकवुं ।
वुडति । अवुडीत् । वुवोड ।

॥ ब्रुड भ्रुडत् सङ्घाते ॥ एकठुं करवुं

ब्रुडति । अब्रुडीत् । बुब्रुडिथ ।

भ्रुडति । अभ्रुडीत् । बुभ्रुडिम ।

॥ टुड, हुड, त्रुडत् निमज्जने ॥ डुबवुं

टुडति । अटुडीत् । टुटोड ।

हुडति । अहुडीत् । जुहुडिथ ।

त्रुडति । अत्रुडीत् । तुत्रुडिम ।

॥ चुणत् छेदने ॥ छेदवुं ।

चुणति । अचुणीत् । चुचोण ।

॥ डिपंत् क्षेपे ॥ फेकवुं ।

डिपति । अडिपीत् । डिडिपिथ ।

॥ स्फुरत् स्फुरणे ॥ धडकवुं ।

निःष्फुरति । निःस्फुरति । निष्फुरति

निस्फुरति । विष्फुरति । विस्फुरति ।

अस्फुरीत् । पुस्फोर । पुस्फुरिथ ।

॥ स्फुलत् संचये च ॥ एकठुं करवुं ।

निःष्फुलति । निःस्फुलति ।

निष्फुलति । निस्फुलति ।

विष्फुलति । विस्फुलति ।

अस्फुलीत् । पुस्फोल ।पुस्फुलिम ।

॥ छुरत् छेदने ॥ छेदवुं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | छुरति | छुरतः | छुरन्ति |
| | छुरसि | छुरथः | छुरथ |
| | छुरामि | छुरावः | छुरामः |
| स० | छुरेत् | छुरेताम् | छुरेयुः |
| | छुरेः | छुरेतम् | छुरेत |
| | छुरेयम् | छुरेव | छुरेम |
| प० | छुरतु छुरतात् | छुरताम् | छुरन्तु |
| | छुर ,, | छुरतम् | छुरत |
| | छुराणि | छुराव | छुराम |
| ह्य० | अच्छुरत् | अच्छुरताम् | अच्छुरन् |
| | अच्छुरः | अच्छुरतम् | अच्छुरत |
| | अच्छुरम् | अच्छुराव | अच्छुराम |
| अ० | अच्छुरीत् | अच्छुरिष्टाम् | अच्छुरिषुः |
| | अच्छुरीः | अच्छुरिष्टम् | अच्छुरिष्ट |
| | अच्छुरिषम् | अच्छुरिष्व | अच्छुरिष्म |

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | चुच्छोर | चुच्छुरतुः | चुच्छुरुः |
| | चुच्छुरिथ | चुच्छुरथुः | चुच्छुर |
| | चुच्छोर चुच्छुर | चुच्छुरिव | चुच्छुरिम |
| आ० | छुर्यात् | छुर्यास्ताम् | छुर्यासुः |
| | छुर्याः | छुर्यास्तम् | छुर्यास्त |
| | छुर्यासम् | छुर्यास्व | छुर्यास्म |
| श्व० | छुरिता | छुरितारौ | छुरितारः |
| | छुरितासि | छुरितास्थः | छुरितास्थ |
| | छुरितास्मि | छुरितास्वः | छुरितास्मः |
| भ० | छुरिष्यति | छुरिष्यतः | छुरिष्यन्ति |
| | छुरिष्यसि | छुरिष्यथः | छुरिष्यथ |
| | छुरिष्यामि | छुरिष्यावः | छुरिष्यामः |
| क्रि० | अच्छुरिष्यत् | अच्छुरिष्यताम् | अच्छुरिष्यन् |
| | अच्छुरिष्यः | अच्छुरिष्यतम् | अच्छुरिष्यत |
| | अच्छुरिष्यम् | अच्छुरिष्याव | अच्छुरिष्याम |

॥ इति तुदादयः परस्मैपदिनः ॥

---

॥ अथात्मनेपदिनः ॥

॥ कुं कुङत् शब्दे ॥ शब्द करवो ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | कुवते | कुवेते | कुवन्ते |
| | कुवसे | कुवेथे | कुवध्वे |
| | कुवे | कुवावहे | कुवामहे |
| स० | कुवेत | कुवेयाताम् | कुवेरन् |
| | कुवेथाः | कुवेयाथाम् | कुवेध्वम् |
| | कुवेय | कुवेवहि | कुवेमहि |
| प० | कुवताम् | कुवेताम् | कुवन्ताम् |
| | कुवस्व | कुवेथाम् | कुवध्वम् |
| | कुवै | कुवावहै | कुवामहै |
| ह्य० | अकुवत | अकुवेताम् | अकुवन्त |
| | अकुवथाः | अकुवेथाम् | अकुवध्वम् |
| | अकुवे | अकुवावहि | अकुवामहि |
| अ० | अकुत | अकुषाताम् | अकुषत |
| | अकुथाः | अकुषाथाम् | अकुढ्वम् अकुड्ढ्वम् |
| | अकुषि | अकुष्वहि | अकुष्महि |

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | चुकुवे | चुकुवाते | चुकुविरे |
| | चुकुविषे | चुकुवाथे | चुकुविध्वे-ढ्वे |
| | चुकुवे | चुकुविवहे | चुकुविमहे |
| आ० | कुषीष्ट | कुषीयास्ताम् | कुषीरन् |
| | कुषीष्ठाः | कुषीयास्थाम् | कुषीढ्वम् |
| | कुषीय | कुषीवहि | कुषीमहि |
| श्व० | कुता | कुतारौ | कुतारः |
| | कुतासे | कुतासाथे | कुताध्वे |
| | कुताहे | कुतास्वहे | कुतास्महे |
| भ० | कुष्यते | कुष्येते | कुष्यन्ते |
| | कुष्यसे | कुष्येथे | कुष्यध्वे |
| | कुष्ये | कुष्यावहे | कुष्यामहे |
| क्रि० | अकुष्यत | अकुष्येताम् | अकुष्यन्त |
| | अकुष्यथाः | अकुष्येथाम् | अकुष्यध्वम् |
| | अकुष्ये | अकुष्यावहि | अकुष्यामहि |
| व० | कुवते | कुवेते | कुवन्ते |
| | कुवसे | कुवेथे | कुवध्वे |
| | कुवे | कुवावहे | कुवामहे |
| स० | कुवेत | कुवेयाताम् | कुवेरन् |
| | कुवेथाः | कुवेयाथाम् | कुवेध्वम् |
| | कुवेय | कुवेवहि | कुवेमहि |
| प० | कुवताम् | कुवेताम् | कुवन्ताम् |
| | कुवस्व | कुवेथाम् | कुवध्वम् |
| | कुवै | कुवावहै | कुवामहै |
| ह्य० | अकुवत | अकुवेताम् | अकुवन्त |
| | अकुवथाः | अकुवेथाम् | अकुवध्वम् |
| | अकुवे | अकुवावहि | अकुवामहि |
| अ० | अकुविष्ट | अकुविषाताम् | अकुविषत |
| | अकुविष्ठाः | अकुविषाथाम् | अकुविढ्ढ्वम् ध्वम् ढ्वम् |
| | अकुविषि | अकुविष्वहि | अकुविष्महि |
| प० | चुकुवे | चुकुवाते | चुकुविरे |
| | चुकुविषे | चुकुवाथे | चुकुविढ्वे-ध्वे |
| | चुकुवे | चुकुविवहे | चुकुविमहे |
| आ० | कुविषीष्ट | कुविषीयास्ताम् | कुविषीरन् |
| | कुविषीष्ठाः | कुविषीयास्थाम् | कुविषीध्वम्-ढ्वम् |
| | कुविषीय | कुविषीवहि | कुविषीमहि |
| श्व० | कुविता | कुवितारौ | कुवितारः |
| | कुवितासे | कुवितासाथे | कुविताध्वे |
| | कुविताहे | कुवितास्वहे | कुवितास्महे |
| भ० | कुविष्यते | कुविष्येते | कुविष्यन्ते |
| | कुविष्यसे | कुविष्येथे | कुविष्यध्वे |
| | कुविष्ये | कुविष्यावहे | कुविष्यामहे |
| क्रि० | अकुविष्यत | अकुविष्येताम् | अकुविष्यन्त |
| | अकुविष्यथाः | अकुविष्येथाम् | अकुविष्यध्वम् |
| | अकुविष्ये | अकुविष्यावहि | अकुविष्यामहि |

॥ इति कुटादिः ॥

॥ पृङ् व्यायामे उद्योगे ॥

कसरत करवी ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | व्याप्रियते | व्याप्रियेते | व्याप्रियन्ते |
| | व्याप्रियसे | व्याप्रियेथे | व्याप्रियध्वे |
| | व्याप्रिये | व्याप्रियावहे | व्याप्रियामहे |
| स० | व्याप्रियेत | व्याप्रियेयाताम् | व्याप्रियेरन् |
| | व्याप्रियेथाः | व्याप्रियेयाथाम् | व्याप्रियेध्वम् |
| | व्याप्रियेय | व्याप्रियेवहि | व्याप्रियेमहि |
| प० | व्याप्रियताम् | व्याप्रियेताम् | व्याप्रियन्ताम् |
| | व्याप्रियस्व | व्याप्रियेथाम् | व्याप्रियध्वम् |
| | व्याप्रियै | व्याप्रियावहै | व्याप्रियामहै |
| ह्य० | व्याप्रियत | व्याप्रियेताम् | व्याप्रियन्त |
| | व्याप्रियथाः | व्याप्रियेथाम् | व्याप्रियध्वम् |
| | व्याप्रिये | व्याप्रियावहि | व्याप्रियामहि |
| अ० | व्यापृत | व्यापृषाताम् | व्यापृषत |
| | व्यापृथाः | व्यापृषाथाम् | व्यापृड्ढ्वम् व्यापृढ्वम् |
| | व्यापृषि | व्यापृष्वहि | व्यापृष्महि |
| प० | व्यापप्रे | व्यापप्राते | व्यापप्रिरे |
| | व्यापप्रिषे | व्यापप्राथे | व्यापप्रिढ्वे-ध्वे |
| | व्यापप्रे | व्यापप्रिवहे | व्यापप्रिमहे |

आ० व्यापृषीष्ट व्यापृषीयास्ताम् व्यापृषीरन्
व्यापृषीष्ठाः व्यापृषीयास्थाम् व्यापृषीढ्वम्
व्यापृषीय व्यापृषीवहि व्यापृषीमहि
श्व० व्यापर्ता व्यापर्तारौ व्यापर्तारः
व्यापर्तासे व्यापर्तासाथे व्यापर्ताध्वे
व्यापर्ताहे व्यापर्तास्वहे व्यापर्तास्महे
भ० व्यापरिष्यते व्यापरिष्येते व्यापरिष्यन्ते
व्यापरिष्यसे व्यापरिष्येथे व्यापरिष्यध्वे
व्यापरिष्ये व्यापरिष्यावहे व्यापरिष्यामहे
क्रि० व्यापरिष्यत व्यापरिष्येताम् व्यापरिष्यन्त
व्यापरिष्यथाः व्यापरिष्येथाम् व्यापरिष्यध्वम्
व्यापरिष्ये व्यापरिष्यावहि व्यापरिष्यामहि

॥ दृङ्त् आदरे ॥ आदर करवो ।

व० आद्रियते आद्रियेते आद्रियन्ते
आद्रियसे आद्रियेथे आद्रियध्वे
आद्रिये आद्रियावहे आद्रियामहे
स० आद्रियेत आद्रियेयाताम् आद्रियेरन्
आद्रियेथाः आद्रियेयाथाम् आद्रियेध्वम्
आद्रियेय आद्रियेवहि आद्रियेमहि
प० आद्रियताम् आद्रियेताम् आद्रियन्ताम्
आद्रियस्व आद्रियेथाम् आद्रियध्वम्
आद्रियै आद्रियावहै आद्रियामहै
ह्य० आद्रियत आद्रियेताम् आद्रियन्त
आद्रियथाः आद्रियेथाम् आद्रियध्वम्
आद्रियै आद्रियावहि आद्रियामहि
अ० आदृत आदृषाताम् आदृषत
आदृथाः आदृषाथाम् आदृढ्वम्
आदृड्ढ्वम्
आदृषि आदृष्वहि आदृष्महि
प० आदद्रे आदद्राते आदद्रिरे
आदद्रिषे आदद्राथे आदद्रिढ्वे
आदद्रिध्वे
आदद्रे आदद्रिवहे आदद्रिमहे
आ० आदृषीष्ट आदृषीयास्ताम् आदृषीरन्
आदृषीष्ठा आदृषीयास्थाम् आदृषीढ्वम्
आदृषीय आदृषीवहि आदृषीमहि
श्व० आदर्ता आदर्तारौ आदर्तारः
आदर्तासे आदर्तासाथे आदर्ताध्वे
आदर्ताहे आदर्तास्वहे आदर्तास्महे
भ० आदरिष्यते आदरिष्येते आदरिष्यन्ते
आदरिष्यसे आदरिष्येथे आदरिष्यध्वे
आदरिष्ये आदरिष्यावहे आदरिष्यामहे
क्रि० आदरिष्यत आदरिष्येताम् आदरिष्यन्त
आदरिष्यथाः आदरिष्येथाम् आदरिष्यध्वम्
आदरिष्ये आदरिष्यावहि आदरिष्यामहि

॥ धृङ्त् स्थाने ॥ धारण करवुं

स्थिति करवी ।

व० ध्रियते ध्रियेते ध्रियन्ते
ध्रियसे ध्रियेथे ध्रियध्वे
ध्रिये ध्रियावहे ध्रियामहे
स० ध्रियेत ध्रियेयाताम् ध्रियेरन्
ध्रियेथाः ध्रियेयाथाम् ध्रियेध्वम्
ध्रियेय ध्रियेवहि ध्रियेमहि
प० ध्रियताम् ध्रियेताम् ध्रियन्ताम्
ध्रियस्व ध्रियेथाम् ध्रियध्वम्
ध्रियै ध्रियावहै ध्रियामहै
ह्य० अध्रियत अध्रियेताम् अध्रियन्त
अध्रियथाः अध्रियेथाम् अध्रियध्वम्
अध्रिये अध्रियावहि अध्रियामहि
अ० अधृत अधृषाताम् अधृषत
अधृथाः अधृषाथाम् अधृड्ढ्वम्
अधृढ्वम्
अधृषि अधृष्वहि अधृष्महि
प० दध्रे दध्राते दध्रिरे

दध्रिषे दध्राथे दध्रिढ्वे-ध्वे
दध्रे दध्रिवहे दध्रिमहे
आ० धृषीष्ट धृषीयास्ताम् धृषीरन्
धृषीष्ठाः धृषीयास्थाम् धृषीढ्वम्
धृषीय धृषीवहि धृषीमहि
श्व० धर्ता धर्तारौ धर्तारः
धर्तासे धर्तासाथे धर्ताध्वे
धर्ताहे धर्तास्वहे धर्तास्महे
भ० धरिष्यते धरिष्येते धरिष्यन्ते
धरिष्यसे धरिष्येथे धरिष्यध्वे
धरिष्ये धरिष्यावहे धरिष्यामहे
क्रि अधरिष्यत अधरिष्येताम् अधरिष्यन्त
अधरिष्यथाः अधरिष्येथाम् अधरिष्यध्वम्
अधरिष्ये अधरिष्यावहि अधरिष्यामहि

॥ ओविजेति भयचलनयोः ॥ वीर्वुं,
चालवुं ।

व० विजते विजेते विजन्ते
विजसे विजेथे विजध्वे
विजे विजावहे विजामहे
उद्विजते ।
स० विजेत विजेयाताम् विजेरन्
विजेथाः विजेयाथाम् विजेध्वम्
विजेय विजेवहि विजेमहि
प० विजताम् विजेताम् विजन्ताम्
विजस्व विजेथाम् विजध्वम्
विजै विजावहै विजामहै
ह्य० अविजत अविजेताम् अविजन्त
अविजथाः अविजेथाम् अविजध्वम्
अविजे अविजावहि अविजामहि
अ० उदविजिष्ट उदविजिषाताम् उदविजिषत
उदविजिष्ठाः उदविजिषाथाम्
उदविजिढ्वम्-ड्ढ्वम्
उदविजिषि उदविजिष्वहि-उदविजिष्महि

प० विविजे विविजाते विविजिरे
विविजिषे विविजाथे विविजिध्वे
विविजे विविजिवहे विविजिमहे
आ० विजिषीष्ट विजिषीयास्ताम् विजिषीरन्
विजिषीष्ठाः विजिषीयास्थाम्
विजिषीध्वम्
विजिषीय विजिषीवहि विजिषीमहि
श्व० विजिता विजितारौ विजितारः
विजितासे विजितासाथे विजिताध्वे
विजिताहे विजितास्वहे विजितास्महे
भ० विजिष्यते विजिष्येते विजिष्यन्ते
विजिष्यसे विजिष्येथे विजिष्यध्वे
विजिष्ये विजिष्यावहे विजिष्यामहे
क्रि० अविजिष्यत अविजिष्येताम् अविजिष्यन्त
अविजिष्यथाः अविजिष्येथाम् अविजिष्यध्वम्
अविजिष्ये अविजिष्यावहि अविजिष्यामहि

॥ ओलजैङ् औलस्जैति व्रीडे ॥
लजते । अलजिष्ट । लेजे ।
लज्जते । अलज्जिष्ट । ललज्जे ।
॥ ष्वञ्जिंत् संगे ॥

व० परिष्वजते परिष्वजेते परिष्वजन्ते
परिष्वजसे परिष्वजेथे परिष्वजध्वे
परिष्वजे परिष्वजावहे परिष्वजामहे
अभिष्वजते
स० परिष्वजेत परिष्वजेयाताम् परिष्वजेरन्
परिष्वजेथाः परिष्वजेयाथाम् परिष्वजेध्वम्
परिष्वजेय परिष्वजेवहि परिष्वजेमहि
प० परिष्वजताम् परिष्वजेताम् परिष्वजन्ताम्
परिष्वजस्व परिष्वजेथाम् परिष्वजध्वम्
परिष्वजै परिष्वजावहै परिष्वजामहै
ह्य० पर्यष्वजत पर्यष्वजेताम् पर्यष्वजन्त
पर्यष्वजथाः पर्यष्वजेथाम् पर्यष्वजध्वम्
पर्यष्वजे पर्यष्वजावहि पर्यष्वजामहि
पर्यस्वजत पर्यस्वजेताम् पर्यस्वजन्त
पर्यस्वजथाः पर्यस्वजेथाम् पर्यस्वजध्वम्
पर्यस्वजे पर्यस्वजावहि पर्यस्वजामहि

न्यष्वजत । न्यस्वजत । व्यष्वजत । व्यस्वजत

अ० अस्वङ्क्षिष्ट अस्वङ्क्षिषाताम् अस्वङ्क्षिषत
अस्वङ्क्षिष्ठाः अस्वङ्क्षिषाथाम्
अस्वङ्क्षिड्ढ्वम् ध्वम्
अस्वङ्क्षिषि अस्वङ्क्षिष्वहि अस्वङ्क्षिष्महि

प० परिषस्वजे परिषस्वजाते परिषस्वजिरे
परिषस्वजिषे परिषस्वजाथे परिषस्वजिध्वे
परिषस्वजे परिषस्वजिवहे परिषस्वजिमहे

परिषस्वञ्जे परिषस्वञ्जाते परिषस्वञ्जिरे
परिषस्वञ्जिषे परिषस्वञ्जाथे परिषस्वञ्जिध्वे
परिषस्वञ्जे परिषस्वञ्जिवहे परिषस्वञ्जिमहे

अभिषस्वजे । अभिषस्वञ्जे ।

आ० स्वङ्क्षीष्ट स्वङ्क्षीयास्ताम् स्वङ्क्षीरन्
स्वङ्क्षीष्ठाः स्वङ्क्षीयास्थाम् स्वङ्क्षीध्वम्
स्वङ्क्षीय स्वङ्क्षीवहि स्वङ्क्षीमहि

श्व० स्वङ्क्ता स्वङ्क्तारौ स्वङ्क्तारः
स्वङ्क्तासे स्वङ्क्तासाथे स्वङ्क्ताध्वे
स्वङ्क्ताहे स्वङ्क्तास्वहे स्वङ्क्तास्महे

भ० स्वङ्क्ष्यते स्वङ्क्ष्येते स्वङ्क्ष्यन्ते
स्वङ्क्ष्यसे स्वङ्क्ष्येथे स्वङ्क्ष्यध्वे
स्वङ्क्ष्ये स्वङ्क्ष्यावहे स्वङ्क्ष्यामहे

क्रि० अस्वङ्क्ष्यत अस्वङ्क्ष्येताम् अस्वङ्क्ष्यन्त
अस्वङ्क्ष्यथाः अस्वङ्क्ष्येथाम् अस्वङ्क्ष्यध्वम्
अस्वङ्क्ष्ये अस्वङ्क्ष्यावहि अस्वङ्क्ष्यामहि

॥ जुषैति प्रीतिसेवनयोः ॥ प्रेम करवो, सेववुं ।

जुषते । अजोषिष्ट । जुजुषे ।

॥ इति तुदादय आत्मनेपदिनः ॥

इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंरक्षणप्रवण विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजय-विरचितायां हैमधातुमालायां

॥ तुदादिगणः ॥

# ॥ अथ रुधादयः ॥

## ॥ उभयपदिनः ॥

॥ रुधृंम्पी आवरणे ॥ रोकवुं, ढांकवुं ।

व० रुणद्धि रुन्धः रुन्धन्ति
रुणत्सि रुन्धः रुन्ध
रुणध्मि रुन्ध्वः रुन्ध्मः

स० रुन्ध्यात् रुन्ध्याताम् रुन्ध्युः
रुन्ध्याः रुन्ध्यातम् रुन्ध्यात
रुन्ध्याम् रुन्ध्याव रुन्ध्याम

प० रुणद्धु रुन्धात् रुन्धाम् रुन्धन्तु
रुन्द्धि रुन्धात् रुन्धम् रुन्ध

रुणधानि रुणधाव रुणधाम
ह्य० अरुणत्-द् अरुन्धाम् अरुन्धन्
अरुणः-त्-द् अरुन्धम् अरुन्ध
अरुणधम् अरुन्ध्व अरुन्ध्म
अ० अरुधत् अरुधताम् अरुधन्
अरुधः अरुधतम् अरुधत
अरुधम् अरुधाव अरुधाम
अरौत्सीत् अरौद्धाम् अरौत्सुः
अरौत्सीः अरौद्धम् अरौद्ध
अरौत्सम् अरौत्स्व अरौत्स्म
प० रुरोध रुरुधतुः रुरुधुः
रुरोधिथ रुरुधथुः रुरुध
रुरोध रुरुधिव रुरुधिम
आ० रुध्यात् रुध्यास्ताम् रुध्यासुः
रुध्याः रुध्यास्तम् रुध्यास्त
रुध्यासम् रुध्यास्व रुध्यास्म
श्व० रोद्धा रोद्धारौ रोद्धारः
रोद्धासि रोद्धास्थः रोद्धास्थ
रोद्धास्मि रोद्धास्वः रोद्धास्मः
भ० रोत्स्यति रोत्स्यतः रोत्स्यन्ति
रोत्स्यसि रोत्स्यथः रोत्स्यथ
रोत्स्यामि रोत्स्यावः रोत्स्यामः
क्रि० अरोत्स्यत् अरोत्स्यताम् अरोत्स्यन्
अरोत्स्यः अरोत्स्यतम् अरोत्स्यत
अरोत्स्यम् अरोत्स्याव अरोत्स्याम
व० रुन्धे रुन्धाते रुन्धते
रुन्त्से रुन्धाथे रुन्ध्वे
रुन्धे रुन्ध्वहे रुन्ध्महे
स० रुन्धीत रुन्धीयाताम् रुन्धीरन्
रुन्धीथाः रुन्धीयाथाम् रुन्धीध्वम्
रुन्धीय रुन्धीवहि रुन्धीमहि
प० रुन्धाम् रुन्धाताम् रुन्धताम्
रुन्त्स्व रुन्धाथाम् रुन्ध्वम्
रुणधै रुणधावहै रुणधामहै
ह्य० अरुन्ध अरुन्धाताम् अरुन्धत
अरुन्धाः अरुन्धाथाम् अरुन्द्ध्वम्

अरुन्धि अरुन्ध्वहि अरुन्ध्महि
अ० अरुद्ध अरुत्साताम् अरुत्सत
अरुद्धाः अरुत्साथाम् अरुद्ध्वम्-द्द्ध्वम्
अरुत्सि अरुत्स्वहि अरुत्स्महि
प० रुरुधे रुरुधाते रुरुधिरे
रुरुधिषे रुरुधाथे रुरुधिध्वे
रुरुधे रुरुधिवहे रुरुधिमहे
आ० रुत्सीष्ट रुत्सीयास्ताम् रुत्सीरन्
रुत्सीष्ठाः रुत्सीयास्थाम् रुत्सीध्वम्
रुत्सीय रुत्सीवहि रुत्सीमहि
श्व० रोद्धा रोद्धारौ रोद्धारः
रोद्धासे रोद्धासाथे रोद्धाध्वे
रोद्धाहे रोद्धास्वहे रोद्धास्महे
भ० रोत्स्यते रोत्स्येते रोत्स्यन्ते
रोत्स्यसे रोत्स्येथे रोत्स्यध्वे
रोत्स्ये रोत्स्यावहे रोत्स्यामहे
क्रि० अरोत्स्यत अरोत्स्येताम् अरोत्स्यन्त
अरोत्स्यथाः अरोत्स्येथाम् अरोत्स्यध्वम्
अरोत्स्ये अरोत्स्यावहि अरोत्स्यामहि

॥ रिचृँम्पी विरेचने, निःसारणे ॥
खाली करवुं, बहार काढवुं ।

व० रिणक्ति रिङ्क्तः रिञ्चन्ति
रिणक्षि रिङ्क्थः रिङ्क्थ
रिणच्मि रिञ्च्वः रिञ्च्मः
व्यतिरिणक्ति ।
स० रिञ्च्यात् रिञ्च्याताम् रिञ्च्युः
रिञ्च्याः रिञ्च्यातम् रिञ्च्यात
रिञ्च्याम् रिञ्च्याव रिञ्च्याम
प० रिणक्तु रिङ्क्तात् रिङ्क्ताम् रिञ्चन्तु
रिङ्ग्धि रिङ्क्तात् रिङ्क्तम् रिङ्क्त
रिणचानि रिणचाव रिणचाम
ह्य० अरिणक्-ग् अरिङ्क्ताम् अरिञ्चन्
अरिणक्-ग् अरिङ्क्तम् अरिङ्क्त
अरिणचम् अरिञ्च्व अरिञ्च्म
अ० अरिचत् अरिचताम् अरिचन्

अरिचः अरिचतम् अरिचत
अरिचम् अरिचाव अरिचाम
व्यत्यरिचत् ।
अरैक्षीत् अरैक्ताम् अरैक्षुः
अरैक्षीः अरैक्तम् अरैक्त
अरैक्षम् अरैक्ष्व अरैक्ष्म
व्यत्यरैक्षीत् ।
प० रिरेच रिरिचतुः रिरिचुः
रिरेचिथ रिरिचथुः रिरिच
रिरेच रिरिचिव रिरिचिम
आ० रिच्यात् रिच्यास्ताम् रिच्यासुः
रिच्याः रिच्यास्तम् रिच्यास्त
रिच्यासम् रिच्यास्व रिच्यास्म
श्व० रेक्ता रेक्तारौ रेक्तारः
रेक्तासि रेक्तास्थः रेक्तास्थ
रेक्तास्मि रेक्तास्वः रेक्तास्मः
भ० रेक्ष्यति रेक्ष्यतः रेक्ष्यन्ति
रेक्ष्यसि रेक्ष्यथः रेक्ष्यथ
रेक्ष्यामि रेक्ष्यावः रेक्ष्यामः
क्रि० अरेक्ष्यत् अरेक्ष्यताम् अरेक्ष्यन्
अरेक्ष्यः अरेक्ष्यतम् अरेक्ष्यत
अरेक्ष्यम् अरेक्ष्याव अरेक्ष्याम
व० रिङ्क्ते रिञ्चाते रिञ्चते
रिङ्क्षे रिञ्चाथे रिङ्ग्ध्वे
रिञ्चे रिञ्च्वहे रिञ्च्महे
स० रिञ्चीत रिञ्चीयाताम् रिञ्चीरन्
रिञ्चीथाः रिञ्चीयाथाम् रिञ्चीध्वम्
रिञ्चीय रिञ्चीवहि रिञ्चीमहि
प० रिङ्क्ताम् रिञ्चाताम् रिञ्चताम्
रिङ्क्ष्व रिञ्चाथाम् रिङ्ग्ध्वम्
रिणचै रिणचावहै रिणचामहै
ह्य० अरिङ्क्त अरिञ्चाताम् अरिञ्चत
अरिङ्क्थाः अरिञ्चाथाम् अरिङ्ग्ध्वम्
अरिञ्चि अरिञ्च्वहि अरिञ्च्महि
अ० अरिक्त अरिक्षाताम् अरिक्षत
अरिक्थाः अरिक्षाथाम् अरिग्ध्वम्-ग्ढ्वम्
अरिक्षि अरिक्ष्वहि अरिक्ष्महि
प० रिरिचे रिरिचाते रिरिचिरे
रिरिचिषे रिरिचाथे रिरिचिध्वे
रिरिचे रिरिचिवहे रिरिचिमहे
आ० रिक्षीष्ट रिक्षीयास्ताम् रिक्षीरन्
रिक्षीष्ठाः रिक्षीयास्थाम् रिक्षीध्वम्
रिक्षीय रिक्षीवहि रिक्षीमहि
श्व० रेक्ता रेक्तारौ रेक्तारः
रेक्तासे रेक्तासाथे रेक्ताध्वे
रेक्ताहे रेक्तास्वहे रेक्तास्महे
भ० रेक्ष्यते रेक्ष्येते रेक्ष्यन्ते
रेक्ष्यसे रेक्ष्येथे रेक्ष्यध्वे
रेक्ष्ये रेक्ष्यावहे रेक्ष्यामहे
क्रि० अरेक्ष्यत अरेक्ष्येताम् अरेक्ष्यन्त
अरेक्ष्यथाः अरेक्ष्येथाम् अरेक्ष्यध्वम्
अरेक्ष्ये अरेक्ष्यावहि अरेक्ष्यामहि

॥ विचृंपी पृथग्भावे ॥ जुदु करवुं, विवेक करवो ।

व० विनक्ति विङ्क्तः विञ्चन्ति
विनक्षि विङ्क्थः विङ्क्थ
विनच्मि विञ्च्वः विञ्च्मः
स० विञ्च्यात् विञ्च्याताम् विञ्च्युः
विञ्च्याः विञ्च्यातम् विञ्च्यात
विञ्च्याम् विञ्च्याव विञ्च्याम
प० विनक्तु विङ्क्तात् विङ्क्ताम् विञ्चन्तु
विङ्ग्धि विङ्क्तात् विङ्क्तम् विङ्क्त
विनचानि विनचाव विनचाम
ह्य० अविनक्-ग् अविङ्क्ताम् अविञ्चन्
अविनक्-ग् अविङ्क्तम् अविङ्क्त
अविनचम् अविञ्च्व अविञ्च्म
अ० अविचत् अविचताम् अविचन्
अविचः अविचतम् अविचत
अविचम् अविचाव अविचाम
अवैक्षीत् अवैक्ताम् अवैक्षुः
अवैक्षीः अवैक्तम् अवैक्त
अवैक्षम् अवैक्ष्व अवैक्ष्म

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | विवेच | विविचतुः | विविचुः |
| | विवेचिथ | विविचथुः | विविच |
| | विवेच | विविचिव | विविचिम |
| आ | विच्यात् | विच्यास्ताम् | विच्यासुः |
| | विच्याः | विच्यास्तम् | विच्यास्त |
| | विच्यासम् | विच्यास्व | विच्यास्म |
| श्व० | वेक्ता | वेक्तारौ | वेक्तारः |
| | वेक्तासि | वेक्तास्थः | वेक्तास्थ |
| | वेक्तास्मि | वेक्तास्वः | वेक्तास्मः |
| भ० | वेक्ष्यति | वेक्ष्यतः | वेक्ष्यन्ति |
| | वेक्ष्यसि | वेक्ष्यथः | वेक्ष्यथ |
| | वेक्ष्यामि | वेक्ष्यावः | वेक्ष्यामः |
| क्र० | अवेक्ष्यत | अवेक्ष्यताम् | अवेक्ष्यन् |
| | अवेक्ष्यः | अवेक्ष्यतम् | अवेक्ष्यत |
| | अवेक्ष्यम् | अवेक्ष्याव | अवेक्ष्याम |
| व० | विङ्क्ते | विञ्चाते | विञ्चते |
| | विङ्क्षे | विञ्चाथे | विङ्ग्ध्वे |
| | विञ्चे | विञ्च्वहे | विञ्च्महे |
| स० | विञ्चीत | विञ्चीयाताम् | विञ्चीरन् |
| | विञ्चीथाः | विञ्चीयाथाम् | विञ्चीध्वम् |
| | विञ्चीय | विञ्चीवहि | विञ्चीमहि |
| प० | विङ्क्ताम् | विञ्चाताम् | विञ्चताम् |
| | विङ्क्ष्व | विञ्चाथाम् | विङ्ग्ध्वम् |
| | विनचै | विनचावहै | विनचामहै |
| ह्य० | अविङ्क्त | अविञ्चाताम् | अविञ्चत |
| | अविङ्क्थाः | अविञ्चाथाम् | अविङ्ग्ध्वम् |
| | अविञ्चि | अविञ्च्वहि | अविञ्च्महि |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अ० | अविक्त | अविक्षाताम् | अविक्षत |
| | अविक्थाः | अविक्षाथाम् | अविग्ध्वम् |
| | | | अविग्ड्ढ्वम् |
| | अविक्षि | अविक्ष्वहि | अविक्ष्महि |
| प० | विविचे | विविचाते | विविचिरे |
| | विविचिषे | विविचाथे | विविचिध्वे |
| | विविचे | विविचिवहे | विविचिमहे |
| आ० | विक्षीष्ट | विक्षीयास्ताम् | विक्षीरन् |
| | विक्षीष्ठाः | विक्षीयास्थाम् | विक्षीध्वम् |
| | विक्षीय | विक्षीवहि | विक्षीमहि |
| श्व० | वेक्ता | वेक्तारौ | वेक्तारः |
| | वेक्तासे | वेक्तासाथे | वेक्ताध्वे |
| | वेक्ताहे | वेक्तास्वहे | वेक्तास्महे |
| भ० | वेक्ष्यते | वेक्ष्येते | वेक्ष्यन्ते |
| | वेक्ष्यसे | वेक्ष्येथे | वेक्ष्यध्वे |
| | वेक्ष्ये | वेक्ष्यावहे | वेक्ष्यामहे |
| क्रि० | अवेक्ष्यत | अवेक्ष्येताम् | अवेक्ष्यन्त |
| | अवेक्ष्यथाः | अवेक्ष्येथाम् | अवेक्ष्यध्वम् |
| | अवेक्ष्ये | अवेक्ष्यावहि | अवेक्ष्यामहि |

## युजंपी योगे

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | युनक्ति | युङ्क्तः | युञ्जन्ति |
| | युनक्षि | युङ्क्थः | युङ्क्थ |
| | युनज्मि | युञ्ज्वः | युञ्ज्मः |
| स० | युञ्ज्यात् | युञ्ज्याताम् | युञ्ज्युः |
| | युञ्ज्याः | युञ्ज्यातम् | युञ्ज्यात |
| | युञ्ज्याम् | युञ्ज्याव | युञ्ज्याम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | युनक्तु युङ्क्तात् | युङ्क्ताम् | युञ्जन्तु |
| | युङ्ग्धि ,, | युङ्क्तम् | युङ्क्त |
| | युनजानि | युनजाव | युनजाम |
| ह्य० | अयुनक्-ग् | अयुङ्क्ताम् | अयुञ्जन् |
| | अयुनक्-ग् | अयुङ्क्तम् | अयुङ्क्त |
| | अयुनजम् | अयुञ्ज्व | अयुञ्ज्म |
| अ० | अयुजत् | अयुजताम् | अयुजन् |
| | अयुजः | अयुजतम् | अयुजत |
| | अयुजम् | अयुजाव | अयुजाम |
| | अयौक्षीत् | अयौक्ताम् | अयौक्षुः |
| | अयौक्षीः | अयौक्तम् | अयौक्त |
| | अयौक्षम् | अयौक्ष्व | अयौक्ष्म |
| प० | युयोज | युयुजतुः | युयुजुः |
| | युयोजिथ | युयुजथुः | युयुज |
| | युयोज | युयुजिव | युयुजिम |
| आ० | युज्यात् | युज्यास्ताम् | युज्यासुः |
| | युज्याः | युज्यास्तम् | युज्यास्त |
| | युज्यासम् | युज्यास्व | युज्यास्म |
| श्व० | योक्ता | योक्तारौ | योक्तारः |
| | योक्तासि | योक्तास्थः | योक्तास्थ |
| | योक्तास्मि | योक्तास्वः | योक्तास्मः |
| भ० | योक्ष्यति | योक्ष्यतः | योक्ष्यन्ति |
| | योक्ष्यसि | योक्ष्यथः | योक्ष्यथ |
| | योक्ष्यामि | योक्ष्यावः | योक्ष्यामः |
| क्रि० | अयोक्ष्यत् | अयोक्ष्यताम् | अयोक्ष्यन् |
| | अयोक्ष्यः | अयोक्ष्यतम् | अयोक्ष्यत |
| | अयोक्ष्यम् | अयोक्ष्याव | अयोक्ष्याम |
| व० | युङ्क्ते | युञ्जाते | युञ्जते |
| | युङ्क्षे | युञ्जाथे | युङ्ग्ध्वे |
| | युञ्जे | युञ्ज्वहे | युञ्ज्महे |

उद्युङ्क्ते । उपयुङ्क्ते । प्रयुङ्क्ते । नियुंक्ते । वियुङ्क्ते । अनुयुङ्क्ते सिद्धान्तम् । पर्यनुयुङ्क्ते वादिनम् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| स० | युञ्जीत | युञ्जीयाताम् | युञ्जीरन् |
| | युञ्जीथाः | युञ्जीयाथाम् | युञ्जीध्वम् |
| | युञ्जीय | युञ्जीवहि | युञ्जीमहि |
| प० | युङ्क्ताम् | युञ्जाताम् | युञ्जताम् |
| | युङ्क्ष्व | युञ्जाथाम् | युङ्ग्ध्वम् |
| | युनजै | युनजावहै | युनजामहै |
| ह्य० | अयुङ्क्त | अयुञ्जाताम् | अयुञ्जत |
| | अयुङ्क्थाः | अयुञ्जाथाम् | अयुङ्ग्ध्वम् |
| | अयुञ्जि | अयुञ्ज्वहि | अयुञ्ज्महि |
| अ० | अयुक्त | अयुक्षाताम् | अयुक्षत |
| | अयुक्थाः | अयुक्षाथाम् | अयुग्ध्वम् |
| | | | अयुग्ढ्वम् |
| | अयुक्षि | अयुक्ष्वहि | अयुक्ष्महि |
| प० | युयुजे | युयुजाते | युयुजिरे |
| | युयुजिषे | युयुजाथे | युयुजिध्वे |
| | युयुजे | युयुजिवहे | युयुजिमहे |
| आ० | युक्षीष्ट | युक्षीयास्ताम् | युक्षीरन् |
| | युक्षीष्ठाः | युक्षीयास्थाम् | युक्षीध्वम् |
| | युक्षीय | युक्षीवहि | युक्षीमहि |
| श्व० | योक्ता | योक्तारौ | योक्तारः |
| | योक्तासे | योक्तासाथे | योक्ताध्वे |
| | योक्ताहे | योक्तास्वहे | योक्तास्महे |
| भ० | योक्ष्यते | योक्ष्येते | योक्ष्यन्ते |
| | योक्ष्यसे | योक्ष्येथे | योक्ष्यध्वे |
| | योक्ष्ये | योक्ष्यावहे | योक्ष्यामहे |
| क्रि० | अयोक्ष्यत | अयोक्ष्येताम् | अयोक्ष्यन्त |
| | अयोक्ष्यथाः | अयोक्ष्येथाम् | अयोक्ष्यध्वम् |
| | अयोक्ष्ये | अयोक्ष्यावहि | अयोक्ष्यामहि |

॥ क्षुदिर्॒ संपेषे ॥ दळवुं, चुरेचुरा करवा ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | क्षुणत्ति | क्षुन्तः | क्षुन्दन्ति |
| | क्षुणत्सि | क्षुन्त्थः | क्षुन्त्थ |
| | क्षुणद्मि | क्षुन्द्वः | क्षुन्द्मः |
| स० | क्षुन्द्यात् | क्षुन्द्याताम् | क्षुन्द्युः |
| | क्षुन्द्याः | क्षुन्द्यातम् | क्षुन्द्यात |
| | क्षुन्द्याम् | क्षुन्द्याव | क्षुन्द्याम |
| प० | क्षुणत्तु क्षुन्तात् | क्षुन्ताम् | क्षुन्दन्तु |
| | क्षुन्द्धि क्षुन्तात् | क्षुन्तम् | क्षुन्त |
| | क्षुणदानि | क्षुणदाव | क्षुणदाम |

ह्य० अक्षुणत्-द् अक्षुन्ताम् अक्षुन्दन्
अक्षुणः-त्-द् अक्षुन्तम् अक्षुन्त
अक्षुणदम् अक्षुन्द्व अक्षुन्द्म
अ० अक्षुदत् अक्षुदताम् अक्षुदन्
अक्षुदः अक्षुदतम् अक्षुदत
अक्षुदम् अक्षुदाव अक्षुदाम
अक्षौत्सीत् अक्षौत्ताम् अक्षौत्सुः
अक्षौत्सीः अक्षौत्तम् अक्षौत्त
अक्षौत्सम् अक्षौत्स्व अक्षौत्स्म
प० चुक्षोद चुक्षुदतुः चुक्षुदुः
चुक्षोदिथ चुक्षुदथुः चुक्षुद
चुक्षोद चुक्षुदिव चुक्षुदिम
आ० क्षुद्यात् क्षुद्यास्ताम् क्षुद्यासुः
क्षुद्याः क्षुद्यास्तम् क्षुद्यास्त
क्षुद्यासम् क्षुद्यास्व क्षुद्यास्म
श्व० क्षोत्ता क्षोत्तारौ क्षोत्तारः
क्षोत्तासि क्षोत्तास्थः क्षोत्तास्थ
क्षोत्तास्मि क्षोत्तास्वः क्षोत्तास्मः
भ० क्षोत्स्यति क्षोत्स्यतः क्षोत्स्यन्ति
क्षोत्स्यसि क्षोत्स्यथः क्षोत्स्यथ
क्षोत्स्यामि क्षोत्स्यावः क्षोत्स्यामः
क्रि० अक्षोत्स्यत् अक्षोत्स्यताम् अक्षोत्स्यन्
अक्षोत्स्यः अक्षोत्स्यतम् अक्षोत्स्यत
अक्षोत्स्यम् अक्षोत्स्याव अक्षोत्स्याम

व० क्षुन्ते क्षुन्दाते क्षुन्दते
क्षुन्त्से क्षुन्दाथे क्षुन्द्ध्वे
क्षुन्दे क्षुन्द्वहे क्षुन्द्महे
स० क्षुन्दीत क्षुन्दीयाताम् क्षुन्दीरन्
क्षुन्दीथाः क्षुन्दीयाथाम् क्षुन्दीध्वम्
क्षुन्दीय क्षुन्दीवहि क्षुन्दीमहि
प० क्षुन्ताम् क्षुन्दाताम् क्षुन्दताम्
क्षुन्त्स्व क्षुन्दाथाम् क्षुन्द्ध्वम्
क्षुणदै क्षुणदावहै क्षुणदामहै
ह्य० अक्षुन्त अक्षुन्दाताम् अक्षुन्दत
अक्षुन्थाः अक्षुन्दाथाम् अक्षुन्द्ध्वम्
अक्षुन्दि अक्षुन्द्वहि अक्षुन्द्महि
अ० अक्षुत्त अक्षुत्साताम् अक्षुत्सत
अक्षुत्थाः अक्षुत्साथाम् अक्षुद्ध्वम्-द्ध्वम्
अक्षुत्सि अक्षुत्स्वहि अक्षुत्स्महि
प० चुक्षुदे चुक्षुदाते चुक्षुदिरे
चुक्षुदिषे चुक्षुदाथे चुक्षुदिध्वे
चुक्षुदे चुक्षुदिवहे चुक्षुदिमहे
आ० क्षुत्सीष्ट क्षुत्सीयास्ताम् क्षुत्सीरन्
क्षुत्सीष्ठाः क्षुत्सीयास्थाम् क्षुत्सीध्वम्
क्षुत्सीय क्षुत्सीवहि क्षुत्सीमहि
श्व० क्षोत्ता क्षोत्तारौ क्षोत्तारः
क्षोत्तासे क्षोत्तासाथे क्षोत्ताध्वे
क्षोत्ताहे क्षोत्तास्वहे क्षोत्तास्महे
भ० क्षोत्स्यते क्षोत्स्येते क्षोत्स्यन्ते
क्षोत्स्यसे क्षोत्स्येथे क्षोत्स्यध्वे
क्षोत्स्ये क्षोत्स्यावहे क्षोत्स्यामहे
क्रि० अक्षोत्स्यत अक्षोत्स्येताम् अक्षोत्स्यन्त
अक्षोत्स्यथाः अक्षोत्स्येथाम् अक्षोत्स्यध्वम्
अक्षोत्स्ये अक्षोत्स्यावहि अक्षोत्स्यामहि

॥ भिदृंपी विदारणे ॥ फाडवुं, चीरवुं।

व० भिनत्ति भिन्तः भिन्दन्ति
भिनत्सि भिन्थः भिन्थ
भिनद्मि भिन्द्वः भिन्द्मः
स० भिन्द्यात् भिन्द्याताम् भिन्द्युः
भिन्द्याः भिन्द्यातम् भिन्द्यात
भिन्द्याम् भिन्द्याव भिन्द्याम
प० भिनत्तु भिन्तात् भिन्ताम् भिन्दन्तु
भिन्द्धि भिन्तात् भिन्तम् भिन्त
भिनदानि भिनदाव भिनदाम
ह्य० अभिनत्-द् अभिन्ताम् अभिन्दन्
अभिनः-त्-द् अभिन्तम् अभिन्त
अभिनदम् अभिन्द्व अभिन्द्म
अ० अभिदत् अभिदताम् अभिदन्
अभिदः अभिदतम् अभिदत
अभिदम् अभिदाव अभिदाम

अभैत्सीत् अभैत्ताम् अभैत्सुः
अभैत्सीः अभैत्तम् अभैत्त
अभैत्सम् अभैत्स्व अभैत्स्म
प० बिभेद बिभिदतुः बिभिदुः
बिभेदिथ बिभिदथुः बिभिद
बिभेद बिभिदिव बिभिदिम
आ० भिद्यात् भिद्यास्ताम् भिद्यासुः
भिद्याः भिद्यास्तम् भिद्यास्त
भिद्यासम् भिद्यास्व भिद्यास्म
श्व० भेत्ता भेत्तारौ भेत्तारः
भेत्तासि भेत्तास्थः भेत्तास्थ
भेत्तास्मि भेत्तास्वः भेत्तास्मः
भ० भेत्स्यति भेत्स्यतः भेत्स्यन्ति
भेत्स्यसि भेत्स्यथः भेत्स्यथ
भेत्स्यामि भेत्स्यावः भेत्स्यामः
क्रि० अभेत्स्यत् अभेत्स्यताम् अभेत्स्यन्
अभेत्स्यः अभेत्स्यतम् अभेत्स्यत
अभेत्स्यम् अभेत्स्याव अभेत्स्याम
व० भिन्ते भिन्दाते भिन्दते
भिन्त्से भिन्दाथे भिन्द्ध्वे
भिन्दे भिन्द्वहे भिन्द्महे
स० भिन्दीत भिन्दीयाताम् भिन्दीरन्
भिन्दीथाः भिन्दीयाथाम् भिन्दीध्वम्
भिन्दीय भिन्दीवहि भिन्दीमहि
प० भिन्ताम् भिन्दाताम् भिन्दताम्
भिन्त्स्व भिन्दाथाम् भिन्द्ध्वम्
भिनदै भिनदावहै भिनदामहै
ह्य० अभिन्त अभिन्दाताम् अभिन्दत
अभिन्त्थाः अभिन्दाथाम् अभिन्द्ध्वम्
अभिन्दि अभिन्द्वहि अभिन्द्महि
अ० अभित्त अभित्साताम् अभित्सत
अभित्थाः अभित्साथाम् अभिद्ध्वम्
अभिद्द्ध्वम्
अभित्सि अभित्स्वहि अभित्स्महि
प० बिभिदे बिभिदाते बिभिदिरे
बिभिदिषे बिभिदाथे बिभिदिध्वे
बिभिदे बिभिदिवहे बिभिदिमहे
आ० भित्सीष्ट भित्सीयास्ताम् भित्सीरन्
भित्सीष्ठाः भित्सीयास्थाम् भित्सीध्वम्
भित्सीय भित्सीवहि भित्सीमहि
श्व० भेत्ता भेत्तारौ भेत्तारः
भेत्तासे भेत्तासाथे भेत्ताध्वे
भेत्ताहे भेत्तास्वहे भेत्तास्महे
भ० भेत्स्यते भेत्स्येते भेत्स्यन्ते
भेत्स्यसे भेत्स्येथे भेत्स्यध्वे
भेत्स्ये भेत्स्यावहे भेत्स्यामहे
क्रि० अभेत्स्यत अभेत्स्येताम् अभेत्स्यन्त
अभेत्स्यथाः अभेत्स्येथाम् अभेत्स्यध्वम्
अभेत्स्ये अभेत्स्यावहि अभेत्स्यामहि

छिदृंपी–द्वैधीकरणे अद्वैधस्य पृथक्करणे
बे भाग करवा, छेदवुं,

व० छिनत्ति छिन्त्तः छिन्दन्ति
छिनत्सि छिन्त्थः छिन्त्थ
छिनद्मि छिन्द्वः छिन्द्मः
व्यवच्छिनत्ति । परिच्छिनत्ति ।
अवच्छिनत्ति ।
स० छिन्द्यात् छिन्द्याताम् छिन्द्युः
छिन्द्याः छिन्द्यातम् छिन्द्यात
छिन्द्याम् छिन्द्याव छिन्द्याम
प० छिनत्तु छिन्त्तात् छिन्त्ताम् छिन्दन्तु
छिन्द्धि छिन्त्तात् छिन्त्तम् छिन्त्त
छिनदानि छिनदाव छिनदाम
ह्य० अच्छिनत्–द् अच्छिन्त्ताम् अच्छिन्दन्
अच्छिनः–त्–द् अच्छिन्त्तम् अच्छिन्त्त
अच्छिनदम् अच्छिन्द्व अच्छिन्द्म
अ० अच्छिदत् अच्छिदताम् अच्छिदन्
अच्छिदः अच्छिदतम् अच्छिदत
अच्छिदम् अच्छिदाव अच्छिदाम
प० चिच्छेद चिच्छिदतुः चिच्छिदुः
चिच्छेदिथ चिच्छिदथुः चिच्छिद
चिच्छेद चिच्छिदिव चिच्छिदिम
आ० छिद्यात् छिद्यास्ताम् छिद्यासुः
छिद्याः छिद्यास्तम् छिद्यास्त

छिद्यासम् छिद्यास्व छिद्यास्म
श्व० छेत्ता छेत्तारौ छेत्तारः
छेत्तासि छेत्तास्थः छेत्तास्थ
छेत्तास्मि छेत्तास्वः छेत्तास्मः
भ० छेत्स्यति छेत्स्यतः छेत्स्यन्ति
छेत्स्यसि छेत्स्यथः छेत्स्यथ
छेत्स्यामि छेत्स्यावः छेत्स्यामः
क्रि० अच्छेत्स्यत् अच्छेत्स्यताम् अच्छेत्स्यन्
अच्छेत्स्यः अच्छेत्स्यतम् अच्छेत्स्यत
अच्छेत्स्यम् अच्छेत्स्याव अच्छेत्स्याम
व० छिन्ते छिन्दाते छिन्दते
छिन्त्से छिन्दाथे छिन्द्ध्वे
छिन्दे छिन्द्वहे छिन्द्महे
स० छिन्दीत छिन्दीयाताम् छिन्दीरन्
छिन्दीथाः छिन्दीयाथाम् छिन्दीध्वम्
छिन्दीय छिन्दीवहि छिन्दीमहि
प० छिन्ताम् छिन्दाताम् छिन्दताम्
छिन्त्स्व छिन्दाथाम् छिन्द्ध्वम्
छिनदै छिनदावहै छिनदामहै
ह्य० अच्छिन्त अच्छिन्दाताम् अच्छिन्दत
अच्छिन्त्थाः अच्छिन्दाथाम् अच्छिन्द्ध्वम्
अच्छिन्दि अच्छिन्द्वहि अच्छिन्द्महि
अ० अच्छित्त अच्छित्साताम् अच्छित्सत
अच्छित्थाः अच्छित्साथाम् अच्छिद्ध्वम्
अच्छिद्द्ध्वम्
अच्छित्सि अच्छित्स्वहि अच्छित्स्महि
प० चिच्छिदे चिच्छिदाते चिच्छिदिरे
चिच्छिदिषे चिच्छिदाथे चिच्छिदिध्वे
चिच्छिदे चिच्छिदिवहे चिच्छिदिमहे
आ० छित्सीष्ट छित्सीयास्ताम् छित्सीरन्
छित्सीष्ठाः छित्सीयास्थाम् छित्सीध्वम्
छित्सीय छित्सीवहि छित्सीमहि
श्व० छेत्ता छेत्तारौ छेत्तारः
छेत्तासे छेत्तासाथे छेत्ताध्वे
छेत्ताहे छेत्तास्वहे छेत्तास्महे
भ० छेत्स्यते छेत्स्येते छेत्स्यन्ते
छेत्स्यसे छेत्स्येथे छेत्स्यध्वे
छेत्स्ये छेत्स्यावहे छेत्स्यामहे
क्रि० अच्छेत्स्यत अच्छेत्स्येताम् अच्छेत्स्यन्त
अच्छेत्स्यथाः अच्छेत्स्येथाम् अच्छेत्स्यध्वम्
अच्छेत्स्ये अच्छेत्स्यावहि अच्छेत्स्यामहि

॥ ऊँछृँदृम्पी दीप्तिदेवनयोः ॥ दीपवुं, शोभवुं

व० छृणत्ति छृन्त्तः छृन्दन्ति
छृणत्सि छृन्त्थः छृन्त्थ
छृणद्मि छृन्द्वः छृन्द्मः
स० छृन्द्यात् छृन्द्याताम् छृन्द्युः
छृन्द्याः छृन्द्यातम् छृन्द्यात
छृन्द्याम् छृन्द्याव छृन्द्याम
प० छृणत्तु छृन्तात् छृन्ताम् छृन्दन्तु
छृन्द्धि ,, छृन्तम् छृन्त
छृणदानि छृणदाव छृणदाम
ह्य० अच्छृणत्-द् अछृन्ताम् अच्छृन्दन्
अच्छृणः-त्-द् अच्छृन्तम् अच्छृन्त
अच्छृणदम् अच्छृन्द्व अच्छृन्द्म
अ० अच्छृदत् अच्छृदताम् अच्छृदन्
अच्छृदः अच्छृदतम् अच्छृदत
अच्छृदम् अच्छृदाव अच्छृदाम
अछर्दीत् अछर्दिष्टाम् अछर्दिषुः
अछर्दीः अछर्दिष्टम् अछर्दिष्ट
अछर्दिषम् अछर्दिष्व अछर्दिष्म
प० चच्छर्द चच्छृदतुः चच्छृदुः
चच्छर्दिथ चच्छृदथुः चच्छृद
चच्छर्द चच्छृदिव चच्छृदिम
आ० छृद्यात् छृद्यास्ताम् छृद्यासुः
छृद्याः छृद्यास्तम् छृद्यास्त
छृद्यासम् छृद्यास्व छृद्यास्म
श्व० छर्दिता छर्दितारौ छर्दितारः
छर्दितासि छर्दितास्थः छर्दितास्थ
छर्दितास्मि छर्दितास्वः छर्दितास्मः
भ० छर्दिष्यति छर्दिष्यतः छर्दिष्यन्ति
छर्दिष्यसि छर्दिष्यथः छर्दिष्यथ
छर्दिष्यामि छर्दिष्यावः छर्दिष्यामः

छर्त्स्यति छर्त्स्यतः छर्त्स्यन्ति
छर्त्स्यसि छर्त्स्यथः छर्त्स्यथ
छर्त्स्यामि छर्त्स्यावः छर्त्स्यामः
क्रि०अच्छर्दिष्यत् अच्छर्दिष्यताम् अच्छर्दिष्यन्
अच्छर्दिष्यः अच्छर्दिष्यतम् अच्छर्दिष्यत
अच्छर्दिष्यम् अच्छर्दिष्याव अच्छर्दिष्याम
अच्छर्त्स्यत् अच्छर्त्स्यताम् अच्छर्त्स्यन्
अच्छर्त्स्यः अच्छर्त्स्यतम् अच्छर्त्स्यत
अच्छर्त्स्यम् अच्छर्त्स्याव अच्छर्त्स्याम
व० छृन्ते छृन्दाते छृन्दते
छृन्त्से छृन्दाथे छृन्द्ध्वे
छृन्दे छृन्द्वहे छृन्द्महे
स० छृन्दीत छृन्दीयाताम् छृन्दीरन्
छृन्दीथाः छृन्दीयाथाम् छृन्दीध्वम्
छृन्दीय छृन्दीवहि छृन्दीमहि
प० छृन्ताम् छृन्दाताम् छृन्दताम्
छृन्त्स्व छृन्दाथाम् छृन्द्ध्वम्
छृणदै छृणदावहै छृणदामहै
ह्य० अच्छृन्त अच्छृन्दाताम् अच्छृन्दत
अच्छृन्त्थाः अच्छृन्दाथाम् अच्छृन्द्ध्वम्
अच्छृन्दि अच्छृन्द्वहि अच्छृन्द्महि
अ० अच्छर्दिष्ट अच्छर्दिषाताम् अच्छर्दिषत
अच्छर्दिष्ठाः अच्छर्दिषाथाम् अच्छर्दिड्ढ्वम्
ध्वम्
अच्छर्दिषि अच्छर्दिष्वहि अच्छर्दिष्महि
प० चच्छृदे चच्छृदाते चच्छृदिरे
चच्छृदिषे चच्छृत्से चच्छृदाथे चच्छृदिध्वे
चच्छृदे चच्छृदिवहे चच्छृदिमहे
आ०छर्दिषीष्ट छर्दिषीयास्ताम् छर्दिषीरन्
छर्दिषीष्ठाः छर्दिषीयास्थाम् छर्दिषीध्वम्
छर्दिषीय छर्दिषीवहि छर्दिषीमहि
श्व०छर्दिता छर्दितारौ छर्दितारः
छर्दितासे छर्दितासाथे छर्दिताध्वे
छर्दिताहे छर्दितास्वहे छर्दितास्महे
भ० छर्दिष्यते छर्दिष्येते छर्दिष्यन्ते
छर्दिष्यसे छर्दिष्येथे छर्दिष्यध्वे
छर्दिष्ये छर्दिष्यावहे छर्दिष्यामहे
छर्त्स्यते छर्त्स्येते छर्त्स्यन्ते
छर्त्स्यसे छर्त्स्येथे छर्त्स्यध्वे
छर्त्स्ये छर्त्स्यावहे छर्त्स्यामहे
क्रि०अच्छर्दिष्यत अच्छर्दिष्येताम् अच्छर्दिष्यन्त
अच्छर्दिष्यथाः अच्छर्दिष्येथाम् अच्छर्दिष्यध्वम्
अच्छर्दिष्ये अच्छर्दिष्यावहि अच्छर्दिष्यामहि
अच्छर्त्स्यत अच्छर्त्स्येताम् अच्छर्त्स्यन्त
अच्छर्त्स्यथाः अच्छर्त्स्येथाम् अच्छर्त्स्यध्वम्
अच्छर्त्स्ये अच्छर्त्स्यावहि अच्छर्त्स्यामहि

॥ ऊतृदृम्पी-हिंसानादरयोः ॥ मारवुं अनादर करवो.

व० तृणत्ति तृन्तः तृन्दन्ति
तृणत्सि तृन्त्थः तृन्त्थ
तृणद्मि तृन्द्वः तृन्द्मः
स० तृन्द्यात् तृन्द्याताम् तृन्द्युः
तृन्द्याः तृन्द्यातम् तृन्द्यात
तृन्द्याम् तृन्द्याव तृन्द्याम
प० तृणत्तु तृन्तात् तृन्ताम् तृन्दन्तु
तृन्द्धि तृन्तात् तृन्तम् तृन्त
तृणदानि तृणदाव तृणदाम
ह्य० अतृणत्-द् अतृन्ताम् अतृन्दन्
अतृणः-त्-द् अतृन्तम् अतृन्त
अतृणदम् अतृन्द्व अतृन्द्म
अ० अतृदत् अतृदताम् अतृदन्
अतृदः अतृदतम् अतृदत
अतृदम् अतृदाव अतृदाम
अतर्दीत् अतर्दिष्टाम् अतर्दिषुः
अतर्दीः अतर्दिष्टम् अतर्दिष्ट
अतर्दिषम् अतर्दिष्व अतर्दिष्म
प० ततर्द ततृदतुः ततृदुः
ततर्दिथ ततृदथुः ततृद
ततर्द ततृदिव ततृदिम
आ०तृद्यात् तृद्यास्ताम् तृद्यासुः
तृद्याः तृद्यास्तम् तृद्यास्त
तृद्यासम् तृद्यास्व तृद्यास्म

श्व०तर्दिता तर्दितारौ तर्दितारः
तर्दितासि तर्दितास्थः तर्दितास्थ
तर्दितास्मि तर्दितास्वः तर्दितास्मः
भ० तर्दिष्यति तर्दिष्यतः तर्दिष्यन्ति
तर्दिष्यसि तर्दिष्यथः तर्दिष्यथ
तर्दिष्यामि तर्दिष्यावः तर्दिष्यामः
तर्त्स्यति तर्त्स्यतः तर्त्स्यन्ति
तर्त्स्यसि तर्त्स्यथः तर्त्स्यथ
तर्त्स्यामि तर्त्स्यावः तर्त्स्यामः
क्रि०अतर्त्स्यत् अतर्त्स्यताम् अतर्त्स्यन्
अतर्त्स्यः अतर्त्स्यतम् अतर्त्स्यत
अतर्त्स्यम् अतर्त्स्याव अतर्त्स्याम
अतर्दिष्यत् अतर्दिष्यताम् अतर्दिष्यन्
अतर्दिष्यः अतर्दिष्यतम् अतर्दिष्यत
अतर्दिष्यम् अतर्दिष्याव अतर्दिष्याम
व० तृन्ते तृन्दाते तृन्दते
तृन्त्से तृन्दाथे तृन्द्ध्वे
तृन्दे तृन्द्वहे तृन्द्महे
स० तृन्दीत तृन्दीयाताम् तृन्दीरन्
तृन्दीथाः तृन्दीयाथाम् तृन्दीध्वम्
तृन्दीय तृन्दीवहि तृन्दीमहि
प० तृन्ताम् तृन्दाताम् तृन्दताम्
तृन्त्स्व तृन्दाथाम् तृन्द्ध्वम्
तृणदै तृणदावहै तृणदामहै
ह्य० अतृन्त अतृन्दाताम् अतृन्दत
अतृन्त्थाः अतृन्दाथाम् अतृन्द्ध्वम्
अतृन्दि अतृन्द्वहि अतृन्द्महि
अ० अतर्दिष्ट अतर्दिषाताम् अतर्दिषत
अतर्दिष्ठाः अतर्दिषाथाम् अतर्दिड्ढ्वम्
अतर्दिध्वम्
अतर्दिषि अतर्दिष्वहि अतर्दिष्महि
मतान्तरे सर्वत्रैतादृशस्थले ढ्वघटितं रूपम्भवति, यथा अतर्दिढ्वमिति।
प० ततृदे ततृदाते ततृदिरे
ततृदिषे ततृत्से ततृदाथे ततृदिध्वे
ततृदे ततृदिवहे ततृदिमहे

आ०तर्दिषीष्ट तर्दिषीयास्ताम् तर्दिषीरन्
तर्दिषीष्ठाः तर्दिषीयास्थाम् तर्दिषीध्वम्
तर्दिषीय तर्दिषीवहि, तर्दिषीमहि
तृत्सीष्टेत्याद्यपि
श्व०तर्दिष्यते तर्दिष्येते तर्दिष्यन्ते
तर्दिष्यसे तर्दिष्येथे तर्दिष्यध्वे
तर्दिष्ये तर्दिष्यावहे तर्दिष्यामहे
तर्त्स्यते तर्त्स्येते तर्त्स्यन्ते
तर्त्स्यसे तर्त्स्येथे तर्त्स्यध्वे
तर्त्स्ये तर्त्स्यावहे तर्त्स्यामहे
क्रि०अतर्दिष्यत अतर्दिष्येताम् अतर्दिष्यन्त
अतर्दिष्यथाः अतर्दिष्येथाम् अतर्दिष्यध्वम्
अतर्दिष्ये अतर्दिष्यावहि अतर्दिष्यामहि
अतर्त्स्यत अतर्त्स्येताम् अतर्त्स्यन्त
अतर्त्स्यथाः अतर्त्स्येथाम् अतर्त्स्यध्वम्
अतर्त्स्ये अतर्त्स्यावहि अतर्त्स्यामहि
॥ इति रुधादय उभयपदिनः ॥

---

॥ अथ परस्मैपदिनः ॥

---

॥ पृचैप्-संपर्के ॥ संबंध करवो
पृणक्ति । सम्पृणक्ति शाकम् । अपर्चीत् । पपर्च ।
॥ वृचैप्-वरणे ॥ वरवुं,
वृणक्ति । अवर्चीत् । ववर्चिथ ।
॥ तञ्चू-सङ्कोचने ॥ संकोच करवो
तनक्ति । अतञ्चीत् । ततञ्च ।
॥ भञ्जोंप्-आमर्दने ॥ भांगवुं
व० भनक्ति भङ्क्तः भञ्जन्ति
भनक्षि भङ्क्थः भङ्क्थ
भनज्मि भञ्ज्वः भञ्ज्मः
स० भञ्ज्यात् भञ्ज्याताम् भञ्ज्युः
भञ्ज्याः भञ्ज्यातम् भञ्ज्यात
भञ्ज्याम् भञ्ज्याव भञ्ज्याम
प० भनक्तु भङ्क्तात् भङ्क्ताम् भञ्जन्तु
भङ्ग्धि भङ्क्तात् भङ्क्तम् भङ्क्त

भनजानि भनजाव भनजाम
ह्य० अभनक्-ग् अभङ्क्ताम् अभञ्जन्
अभनक्-ग् अभङ्क्तम् अभङ्क्त
अभनजम् अभञ्ज्व अभञ्ज्म
अ० अभाङ्क्षीत् अभाङ्क्ताम् अभाङ्क्षुः
अभाङ्क्षीः अभाङ्क्तम् अभाङ्क्त
अभाङ्क्षम् अभाङ्क्ष्व अभाङ्क्ष्म
प० बभञ्ज बभञ्जतुः बभञ्जुः
बभञ्जिथ बभङ्क्थ बभञ्जथुः बभञ्ज
बभञ्ज बभञ्जिव बभञ्जिम
आ०भज्यात् भज्यास्ताम् भज्यासुः
भज्याः भज्यास्तम् भज्यास्त
भज्यासम् भज्यास्व भज्यास्म
श्व० भङ्क्ता भङ्क्तारौ भङ्क्तारः
भङ्क्तासि भङ्क्तास्थः भङ्क्तास्थ
भङ्क्तास्मि भङ्क्तास्वः भङ्क्तास्मः
भ० भङ्क्ष्यति भङ्क्ष्यतः भङ्क्ष्यन्ति
भङ्क्ष्यसि भङ्क्ष्यथः भङ्क्ष्यथ
भङ्क्ष्यामि भङ्क्ष्यावः भङ्क्ष्यामः
क्रि० अभङ्क्ष्यत् अभङ्क्ष्यताम् अभङ्क्ष्यन्
अभङ्क्ष्यः अभङ्क्ष्यतम् अभङ्क्ष्यत
अभङ्क्ष्यम् अभङ्क्ष्याव अभङ्क्ष्याम

तञ्चौप् संकोचने । संकोच करवुं,

व० तनक्ति तङ्क्तः तञ्जन्ति
तनक्षि तङ्क्थः तङ्क्थ
तनज्मि तञ्ज्वः तञ्ज्मः
स० तञ्ज्यात् तञ्ज्याताम् तञ्ज्युः
तञ्ज्याः तञ्ज्यातम् तञ्ज्यात
तञ्ज्याम् तञ्ज्याव तञ्ज्याम
प० तनक्तु तङ्क्तात् तङ्क्ताम् तञ्जन्तु
तन्ङ्ग्धि तङ्क्तात् तङ्क्तम् तङ्क्त
तनजानि तनजाव तनजाम
ह्य० अतनक्-ग् अतङ्क्ताम् अतञ्जन्
अतनक्-ग् अतङ्क्तम् अतङ्क्त
अतनजम् अतञ्ज्व अतञ्ज्म
अ० अतञ्जीत् अतञ्जिष्टाम् अतञ्जिषुः
अतञ्जीः अतञ्जिष्टम् अतञ्जिष्ट
अतञ्जिषम् अतञ्जिष्व अतञ्जिष्म
अताङ्क्षीत् अताङ्क्ताम् अताङ्क्षुः
अताङ्क्षीः अताङ्क्तम् अताङ्क्त
अताङ्क्षम् अताङ्क्ष्व अताङ्क्ष्म
प० ततञ्ज ततञ्जतुः ततञ्जुः
ततञ्जिथ ततञ्जथुः ततञ्ज
ततञ्ज ततञ्जिव ततञ्जिम
मतान्तरे ततङ्क्थ ततञ्ज्व ततञ्ज्म-इत्यपि
आ०तञ्ज्यात् तञ्ज्यास्ताम् तञ्ज्यासुः
तञ्ज्याः तञ्ज्यास्तम् तञ्ज्यास्त
तञ्ज्यासम् तञ्ज्यास्व तञ्ज्यास्म
श्व० तञ्जिता तञ्जितारौ तञ्जितारः
तञ्जितासि तञ्जितास्थः तञ्जितास्थ
तञ्जितास्मि तञ्जितास्वः तञ्जितास्मः
तङ्क्ता तङ्क्तारौ तङ्क्तारः
तङ्क्तासि तङ्क्तास्थः तङ्क्तास्थ
तङ्क्तास्मि तङ्क्तास्वः तङ्क्तास्मः
भ० तञ्जिष्यति तञ्जिष्यतः तञ्जिष्यन्ति
तञ्जिष्यसि तञ्जिष्यथः तञ्जिष्यथ
तञ्जिष्यामि तञ्जिष्यावः तञ्जिष्यामः
तङ्क्ष्यति तङ्क्ष्यतः त क्ष्यन्ति
तङ्क्ष्यसि तङ्क्ष्यथः तङ्क्ष्यथ
तङ्क्ष्यामि तङ्क्ष्यावः तङ्क्ष्यामः
क्रि०अतञ्जिष्यत् अतञ्जिष्यताम् अतञ्जिष्यन्
अतञ्जिष्यः अतञ्जिष्यतम् अतञ्जिष्यत
अतञ्जिष्यम् अतञ्जिष्याव अतञ्जिष्याम
अतङ्क्ष्यत् अतङ्क्ष्यताम् अतङ्क्ष्यन्
अतङ्क्ष्यः अतङ्क्ष्यतम् अतङ्क्ष्यत
अतङ्क्ष्यम् अतङ्क्ष्याव अतङ्क्ष्याम

भुजंप्-पालनाभ्यवहारयोः अभ्यवहारो भोजनम् ।। पालवुं, जमवुं,

व० भुनक्ति भुङ्क्तः भुञ्जन्ति
भुनक्षि भुङ्क्थः भुङ्क्थ
भुनज्मि भुञ्ज्वः भुञ्ज्मः
भुनक्ति भुवम् पालयतीत्यर्थः ।

स० भुञ्ज्यात् भुञ्ज्याताम् भुञ्ज्युः
भुञ्ज्याः भुञ्ज्यातम् भुञ्ज्यात
भुञ्ज्याम् भुञ्ज्याव भुञ्ज्याम
प० भुनक्तु भुङ्क्तात् भुङ्क्ताम् भुञ्जन्तु
भुङ्ग्धि भुङ्क्तात् भुङ्क्तम् भुङ्क्त
भुनजानि भुनजाव भुनजाम
ह्य० अभुनक्-ग् अभुङ्क्ताम् अभुञ्जन्
अभुनक्-ग् अभुङ्क्तम् अभुङ्क्त
अभुनजम् अभुञ्ज्व अभुञ्ज्म
अ० अभौक्षीत् अभौक्ताम् अभौक्षुः
अभौक्षीः अभौक्तम् अभौक्त
अभौक्षम् अभौक्ष्व अभौक्ष्म
प० बुभोज बुभुजतुः बुभुजुः
बुभोजिथ बुभुजथुः बुभुज
बुभोज बुभुजिव बुभुजिम
आ० भुज्यात् भुज्यास्ताम् भुज्यासुः
भुज्याः भुज्यास्तम् भुज्यास्त
भुज्यासम् भुज्यास्व भुज्यास्म
श्व० भोक्ता भोक्तारौ भोक्तारः
भोक्तासि भोक्तास्थः भोक्तास्थ
भोक्तास्मि भोक्तास्वः भोक्तास्मः
भ० भोक्ष्यति भोक्ष्यतः भोक्ष्यन्ति
भोक्ष्यसि भोक्ष्यथः भोक्ष्यथ
भोक्ष्यामि भोक्ष्यावः भोक्ष्यामः
क्रि० अभोक्ष्यत् अभोक्ष्यताम् अभोक्ष्यन्
अभोक्ष्यः अभोक्ष्यतम् अभोक्ष्यत
अभोक्ष्यम् अभोक्ष्याव अभोक्ष्याम

अत्राणार्थेऽयमात्मनेपदी। उभयपद्यमित्येके।

व० भुङ्क्ते भुञ्जाते भुञ्जते
भुङ्क्षे भुञ्जाथे भुङ्ग्ध्वे
भुञ्जे भुञ्ज्वहे भुञ्ज्महे

अन्नं भुङ्क्ते। उपभुङ्क्ते। परिभुङ्क्ते।

स० भुञ्जीत भुञ्जीयाताम् भुञ्जीरन्
भुञ्जीथाः भुञ्जीयाथाम् भुञ्जीध्वम्
भुञ्जीय भुञ्जीवहि भुञ्जीमहि
प० भुङ्क्ताम् भुञ्जाताम् भुञ्जताम्
भुङ्क्ष्व भुञ्जाथाम् भुङ्ग्ध्वम्
भुनजै भुनजावहै भुनजामहै
ह्य० अभुङ्क्त अभुञ्जाताम् अभुञ्जत
अभुङ्क्थाः अभुञ्जाथाम् अभुङ्ग्ध्वम्
अभुञ्जि अभुञ्ज्वहि अभुञ्ज्महि
अ० अभुक्त अभुक्षाताम् अभुक्षत
अभुक्थाः अभुक्षाथाम् अभुग्ध्वम्
अभुग्ढ्वम्
अभुक्षि अभुक्ष्वहि अभुक्ष्महि
प० बुभुजे बुभुजाते बुभुजिरे
बुभुजिषे बुभुजाथे बुभुजिध्वे
बुभुजे बुभुजिवहे बुभुजिमहे
आ० भुक्षीष्ट भुक्षीयास्ताम् भुक्षीरन्
भुक्षीष्ठाः भुक्षीयास्थाम् भुक्षीध्वम्
भुक्षीय भुक्षीवहि भुक्षीमहि
श्व० भोक्ता भोक्तारौ भोक्तारः
भोक्तासे भोक्तासाथे भोक्ताध्वे
भोक्ताहे भोक्तास्वहे भोक्तास्महे
भ० भोक्ष्यते भोक्ष्येते भोक्ष्यन्ते
भोक्ष्यसे भोक्ष्येथे भोक्ष्यध्वे
भोक्ष्ये भोक्ष्यावहे भोक्ष्यामहे
क्रि० अभोक्ष्यत अभोक्ष्येताम् अभोक्ष्यन्त
अभोक्ष्यथाः अभोक्ष्येथाम् अभोक्ष्यध्वम्
अभोक्ष्ये अभोक्ष्यावहि अभोक्ष्यामहि

॥ अञ्जौप्-व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु ॥

प्रकट करवु, घृतादिके सिंचवुं, चोपडवुं इच्छवुं, जवुं,

व० अनक्ति अङ्क्तः अञ्जन्ति
अनक्षि अङ्क्थः अङ्क्थ
अनज्मि अञ्ज्वः अञ्ज्मः
स० अञ्ज्यात् अञ्ज्याताम् अञ्ज्युः
अञ्ज्याः अञ्ज्यातम् अञ्ज्यात
अञ्ज्याम् अञ्ज्याव अञ्ज्याम
प० अनक्तु अङ्क्तात् अङ्क्ताम् अञ्जन्तु
अङ्ग्धि अङ्क्तात् अङ्क्तम् अङ्क्त
अनजानि अनजाव अनजाम

ह्य० आनक्-ग् आङ्क्ताम् आञ्जन्
आनक्-ग् आङ्क्तम् आङ्क्त
आनजम् आञ्ज्व आञ्ज्म
अ० आञ्जीत् आञ्जिष्टाम् आञ्जिषुः
आञ्जीः आञ्जिष्टम् आञ्जिष्ट
आञ्जिषम् आञ्जिष्व आञ्जिष्म
प० आनञ्ज आनञ्जतुः आनञ्जुः
आनञ्जिथ आनञ्जथुः आनञ्ज
आनञ्ज आनञ्जिव आनञ्जिम
मतान्तरे आनङ्क्थ आनञ्ज्व आनञ्ज्म
आ० अज्यात् अज्यास्ताम् अज्यासुः
अज्याः अज्यास्तम् अज्यास्त
अज्यासम् अज्यास्व अज्यास्म
श्व० अञ्जिता अञ्जितारौ अञ्जितारः
अञ्जितासि अञ्जितास्थः अञ्जितास्थ
अञ्जितास्मि अञ्जितास्वः अञ्जितास्मः
अङ्क्ता अङ्क्तारौ अङ्क्तारः
अङ्क्तासि अङ्क्तास्थः अङ्क्तास्थ
अङ्क्तास्मि अङ्क्तास्वः अङ्क्तास्मः
भ० अञ्जिष्यति अञ्जिष्यतः अञ्जिष्यन्ति
अञ्जिष्यसि अञ्जिष्यथः अञ्जिष्यथ
अञ्जिष्यामि अञ्जिष्यावः अञ्जिष्यामः
अङ्क्ष्यति अङ्क्ष्यतः अङ्क्ष्यन्ति
अङ्क्ष्यसि अङ्क्ष्यथः अङ्क्ष्यथ
अङ्क्ष्यामि अङ्क्ष्यावः अङ्क्ष्यामः
क्रि० आञ्जिष्यत् आञ्जिष्यताम् आञ्जिष्यन्
आञ्जिष्यः आञ्जिष्यतम् आञ्जिष्यत
आञ्जिष्यम् आञ्जिष्याव आञ्जिष्याम
आङ्क्ष्यत् आङ्क्ष्यताम् आङ्क्ष्यन्
आङ्क्ष्यः आङ्क्ष्यतम् आङ्क्ष्यत
आङ्क्ष्यम् आङ्क्ष्याव आङ्क्ष्याम

॥ ओविजैप्-भयचलनयोः ॥ बीवुं चालवुं

व० विनक्ति विङ्क्तः विञ्जन्ति
विनक्षि विङ्क्थः विङ्क्थ
विनज्मि विञ्ज्वः विञ्ज्मः

॥ उद्विनक्ति ॥

स० विञ्ज्यात् विञ्ज्याताम् विञ्ज्युः
विञ्ज्याः विञ्ज्यातम् विञ्ज्यात
विञ्ज्याम् विञ्ज्याव विञ्ज्याम
प० विनक्तु विङ्क्तात् विङ्क्ताम् विञ्जन्तु
विङ्ग्धि विङ्क्तात् विङ्क्तम् विङ्क्त
विनजानि विनजाव विनजाम
ह्य० अविनक्-ग् अविङ्क्ताम् अविञ्जन्
अविनक्-ग् अविङ्क्तम् अविङ्क्त
अविनजम् अविञ्ज्व अविञ्ज्म
अ० अविजीत् अविजिष्टाम् अविजिषुः
अविजीः अविजिष्टम् अविजिष्ट
अविजिषम् अविजिष्व अविजिष्म
प० विवेज विविजतुः विविजुः
विविजिथ विविजथुः विविज
विवेज विविजिव विविजिम
आ० विज्यात् विज्यास्ताम् विज्यासुः
विज्याः विज्यास्तम् विज्यास्त
विज्यासम् विज्यास्व विज्यास्म
श्व० विजिता विजितारौ विजितारः
विजितासि विजितास्थः विजितास्थ
विजितास्मि विजितास्वः विजितास्मः
भ० विजिष्यति विजिष्यतः विजिष्यन्ति
विजिष्यसि विजिष्यथः विजिष्यथ
विजिष्यामि विजिष्यावः विजिष्यामः
क्रि० अविजिष्यत् अविजिष्यताम् अविजिष्यन्
अविजिष्यः अविजिष्यतम् अविजिष्यत
अविजिष्यम् अविजिष्याव अविजिष्याम

॥ कृतैप्-वेष्टने ॥ विंटवुं

व० कृणत्ति कृन्त्तः कृन्तन्ति
कृणत्सि कृन्त्थः कृन्त्थ
कृणन्मि कृन्त्वः कृन्त्मः
स० कृन्त्यात् कृन्त्याताम् कृन्त्युः
कृन्त्याः कृन्त्यातम् कृन्त्यात
कृन्त्याम् कृन्त्याव कृन्त्याम

प० कृणत्तु कृन्त्तात् कृन्त्ताम् कृन्तन्तु
कृन्त्धि कृन्त्तात् कृन्त्तम् कृन्त्त
कृणतानि कृणताव कृणताम
ह्य० अकृणत्-द् अकृन्त्ताम् अकृन्तन्
अकृणत्-द् अकृन्त्तम् अकृन्त्त
अकृणतम् अकृन्त्व अकृन्त्म
अ० अकर्तीत् अकर्तिष्टाम् अकर्तिषुः
अकर्तीः अकर्तिष्टम् अकर्तिष्ट
अकर्तिषम् अकर्तिष्व अकर्तिष्म
प० चकर्त चकृततुः चकृतुः
चकर्तिथ चकृतथुः चकृत
चकर्त चकृतिव चकृतिम
आ० कृत्यात् कृत्यास्ताम् कृत्यासुः
कृत्याः कृत्यास्तम् कृत्यास्त
कृत्यासम् कृत्यास्व कृत्यास्म
श्व० कर्तिता कर्तितारौ कर्तितारः
कर्तितासि कर्तितास्थः कर्तितास्थ
कर्तितास्मि कर्तितास्वः कर्तितास्मः
भ० कर्तिष्यति कर्तिष्यतः कर्तिष्यन्ति
कर्तिष्यसि कर्तिष्यथः कर्तिष्यथ
कर्तिष्यामि कर्तिष्यावः कर्तिष्यामः
कर्त्स्यति कर्त्स्यतः कर्त्स्यन्ति
कर्त्स्यसि कर्त्स्यथः कर्त्स्यथ
कर्त्स्यामि कर्त्स्यावः कर्त्स्यामः
क्रि० अकर्तिष्यत् अकर्तिष्यताम् अकर्तिष्यन्
अकर्तिष्यः अकर्तिष्यतम् अकर्तिष्यत
अकर्तिष्यम् अकर्तिष्याव अकर्तिष्याम
अकर्त्स्यत् अकर्त्स्यताम् अकर्त्स्यन्
अकर्त्स्यः अकर्त्स्यतम् अकर्त्स्यत
अकर्त्स्यम् अकर्त्स्याव अकर्त्स्याम

॥ उन्दैप्-क्लेदने ॥ भीनुं थवुं
उनत्ति । औन्दीत् । उन्दाञ्चकार ।

॥ शिष्लृंप्-विशेषणे ॥ विशेष करवुं
व० शिनष्टि शिंष्टः शिंषन्ति
शिनक्षि शिंष्ठः शिंष्ठ
शिनष्मि शिंष्वः शिंष्मः
स० शिंष्यात् शिंष्याताम् शिंष्युः
शिंष्याः शिंष्यातम् शिंष्यात
शिंष्याम् शिंष्याव शिंष्याम
प० शिनष्टु शिंष्टात् शिंष्टाम् शिंषन्तु
शिण्ड्ढि शिण्ढि शिंष्टात् शिंष्टम् शिंष्ट
शिनषाणि शिनषाव शिनषाम
ह्य० अशिनड्-ट् अशिंष्टाम् अशिंषन्
अशिनट्-ड् अशिंष्टम् अशिंष्ट
अशिनषम् अशिंष्व अशिंष्म
अ० अशिषत् अशिषताम् अशिषन्
अशिषः अशिषतम् अशिषत
अशिषम् अशिषाव अशिषाम
प० शिशेष शिशिषतुः शिशिषुः
शिशेषिथ शिशिषथुः शिशिष
शिशेष शिशिषिव शिशिषिम
आ० शिष्यात् शिष्यास्ताम् शिष्यासुः
शिष्याः शिष्यास्तम् शिष्यास्त
शिष्यासम् शिष्यास्व शिष्यास्म
श्व० शेष्टा शेष्टारौ शेष्टारः
शेष्टासि शेष्टास्थः शेष्टास्थ
शेष्टास्मि शेष्टास्वः शेष्टास्मः
भ० शेक्ष्यति शेक्ष्यतः शेक्ष्यन्ति
शेक्ष्यसि शेक्ष्यथः शेक्ष्यथ
शेक्ष्यामि शेक्ष्यावः शेक्ष्यामः
क्रि० अशेक्ष्यत् अशेक्ष्यताम् अशेक्ष्यन्
अशेक्ष्यः अशेक्ष्यतम् अशेक्ष्यत
अशेक्ष्यम् अशेक्ष्याव अशेक्ष्याम

॥ पिष्लृंप्-संचूर्णने ॥ दळवुं, चूरा करवा,
व० पिनष्टि पिंष्टः पिंषन्ति
पिनक्षि पिंष्ठः पिंष्ठ
पिनष्मि पिंष्वः पिंष्मः
स० पिंष्यात् पिंष्याताम् पिंष्युः
पिंष्याः पिंष्यातम् पिंष्यात
पिंष्याम् पिंष्याव पिंष्याम
प० पिनष्टु पिंष्टात् पिंष्टाम् पिंषन्तु

पिण्ड्ढि पिण्ड्ढ पिंष्टम् पिंष्ट
पिनषाणि पिनषाव पिनषाम
ह्य० अपिनट्-ड् अपिंष्टाम् अपिंषन्
अपिनट्-ड् अपिंष्टम् अपिंष्ट
अपिनषम् अपिंष्व अपिंष्म
अ० अपिषत् अपिषताम् अपिषन्
अपिषः अपिषतम् अपिषत
अपिषम् अपिषाव अपिषाम
प० पिपेष पिपिषतुः पिपिषुः
पिपेषिथ पिपिषथुः पिपिष
पिपेष पिपिषिव पिपिषिम
आ० पिष्यात् पिष्यास्ताम् पिष्यासुः
पिष्याः पिष्यास्तम् पिष्यास्त
पिष्यासम् पिष्यास्व पिष्यास्म
श्व० पेष्टा पेष्टारौ पेष्टारः
पेष्टासि पेष्टास्थः पेष्टास्थ
पेष्टास्मि पेष्टास्वः पेष्टास्मः
भ० पेक्ष्यति पेक्ष्यतः पेक्ष्यन्ति
पेक्ष्यसि पेक्ष्यथः पेक्ष्यथ
पेक्ष्यामि पेक्ष्यावः पेक्ष्यामः
क्रि० अपेक्ष्यत् अपेक्ष्यताम् अपेक्ष्यन्
अपेक्ष्यः अपेक्ष्यतम् अपेक्ष्यत
अपक्ष्यम् अपेक्ष्याव अपेक्ष्याम

॥ हिसि-तृहप्-हिंसायाम् ॥ मारवुं,

व० हिनस्ति हिंस्तः हिंसन्ति
हिनस्सि हिंस्थः हिंस्थ
हिनस्मि हिंस्वः हिंस्मः
स० हिंस्यात् हिंस्यानाम् हिंस्युः
हिंस्याः हिंस्यातम् हिंस्यात
हिंस्याम् हिंस्याव हिंस्याम
प० हिनस्तु हिंस्तात् हिंस्ताम् हिंसन्तु
हिन्धि हिन्द्धि हिंस्तात् हिंस्तम् हिंस्त
हिनसानि हिनसाव हिनसाम
ह्य० अहिनत्-द् अहिंस्ताम् अहिंसन्
अहिनः-त्-द् अहिंस्तम् अहिंस्त
अहिनसम् अहिंस्व अहिंस्म
अ० अहिंसीत् अहिंसिष्टाम् अहिंसिषुः
अहिंसीः अहिंसिष्टम् अहिंसिष्ट
अहिंसिषम् अहिंसिष्व अहिंसिष्म
प० जिहिंस जिहिंसतुः जिहिंसुः
जिहिंसिथ जिहिंसथुः जिहिंस
जिहिंस जिहिंसिव जिहिंसिम
आ० हिंस्यात् हिंस्यास्ताम् हिंस्यासुः
हिंस्याः हिंस्यास्तम् हिंस्यास्त
हिंस्यासम् हिंस्यास्व हिंस्यास्म
श्व० हिंसिता हिंसितारौ हिंसितारः
हिंसितासि हिंसितास्थः हिंसितास्थ
हिंसितास्मि हिंसितास्वः हिंसितास्मः
भ० हिंसिष्यति हिंसिष्यतः हिंसिष्यन्ति
हिंसिष्यसि हिंसिष्यथः हिंसिष्यथ
हिंसिष्यामि हिंसिष्यावः हिंसिष्यामः
क्रि० अहिंसिष्यत् अहिंसिष्यताम् अहिंसिष्यन्
अहिंसिष्यः अहिंसिष्यतम् अहिंसिष्यत
अहिंसिष्यम् अहिंसिष्याव अहिंसिष्याम

व० तृणेढि तृण्ढः तृहन्ति
तृणेक्षि तृण्ढः तृण्ढ
तृणेह्मि तृंह्वः तृंह्मः
स० तृंह्यात् तृंह्याताम् तृंह्युः
तृंह्याः तृंह्यातम् तृंह्यात
तृंह्याम् तृंह्याव तृंह्याम
प० तृणेढु तृण्ढात् तृण्ढाम् तृंहन्तु
तृण्ड्ढि तृण्ढि तृण्ढम् तृण्ढ
तृणहानि तृणहाव तृणहाम
ह्य० अतृणेट्-ड् अतृण्ढाम् अतृंहन्
अतृणेट्-ड् अतृण्ढम् अतृण्ढ
अतृणहम् अतृंह्व अतृंह्म
अ० अतर्हीत् अतर्हिष्टाम् अतर्हिषुः
अतर्हीः अतर्हिष्टम् अतर्हिष्ट
अतर्हिषम् अतर्हिष्व अतर्हिष्म
प० ततर्ह ततृहतुः ततृहुः

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ततर्हिथ | ततृहथुः | ततृह |
| | ततर्ह | ततृहिव | ततृहिम |
| आ० | तृह्यात् | तृह्यास्ताम् | तृह्यासुः |
| | तृह्याः | तृह्यास्तम् | तृह्यास्त |
| | तृह्यासम् | तृह्यास्व | तृह्यास्म |
| श्व० | तर्हिता | तर्हितारौ | तर्हितारः |
| | तर्हितासि | तर्हितास्थः | तर्हितास्थ |
| | तर्हितास्मि | तर्हितास्वः | तर्हितास्मः |
| भ० | तर्हिष्यति | तर्हिष्यतः | तर्हिष्यन्ति |
| | तर्हिष्यसि | तर्हिष्यथः | तर्हिष्यथ |
| | तर्हिष्यामि | तर्हिष्यावः | तर्हिष्यामः |
| क्रि० | अतर्हिष्यत् | अतर्हिष्यताम् | अतर्हिष्यन् |
| | अतर्हिष्यः | अतर्हिष्यतम् | अतर्हिष्यत |
| | अतर्हिष्यम् | अतर्हिष्याव | अतर्हिष्याम |

॥ इति रुधादयः परस्मैपदिनः ॥

## ॥ अथात्मनेपदिनः ॥

॥ खिदिंप्–दैन्ये, ॥ खेद पामवो

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | खिन्ते | खिन्दाते | खिन्दते |
| | खिन्त्से | खिन्दाथे | खिन्द्ध्वे |
| | खिन्दे | खिन्द्वहे | खिन्द्महे |
| स० | खिन्दीत | खिन्दीयाताम् | खिन्दीरन् |
| | खिन्दीथाः | खिन्दीयाथाम् | खिन्दीध्वम् |
| | खिन्दीय | खिन्दीवहि | खिन्दीमहि |
| प० | खिन्ताम् | खिन्दाताम् | खिन्दताम् |
| | खिन्त्स्व | खिन्दाथाम् | खिन्द्ध्वम् |
| | खिनदै | खिनदावहै | खिनदामहै |
| ह्य० | अखिन्त | अखिन्दाताम् | अखिन्दत |
| | अखिन्त्थाः | अखिन्दाथाम् | अखिन्द्ध्वम् |
| | अखिन्दि | अखिन्द्वहि | अखिन्द्महि |
| अ० | अखित्त | अखित्साताम् | अखित्सत |
| | अखित्थाः | अखित्साथाम् | अखिद्ध्वम् अखिद्द्ध्वम् |
| | अखित्सि | अखित्स्वहि | अखित्स्महि |
| प० | चिखिदे | चिखिदाते | चिखिदिरे |
| | चिखिदिषे | चिखिदाथे | चिखिदिध्वे |
| | चिखिदे | चिखिदिवहे | चिखिदिमहे |
| आ० | खित्सीष्ट | खित्सीयास्ताम् | खित्सीरन् |
| | खित्सीष्ठाः | खित्सीयास्थाम् | खित्सीध्वम् |
| | खित्सीय | खित्सीवहि | खित्सीमहि |
| श्व० | खेत्ता | खेत्तारौ | खेत्तारः |
| | खेत्तासे | खेत्तासाथे | खेत्ताध्वे |
| | खेत्ताहे | खेत्तास्वहे | खेत्तास्महे |
| भ० | खेत्स्यते | खेत्स्येते | खेत्स्यन्ते |
| | खेत्स्यसे | खेत्स्येथे | खेत्स्यध्वे |
| | खेत्स्ये | खेत्स्यावहे | खेत्स्यामहे |
| क्रि० | अखेत्स्यत | अखेत्स्येताम् | अखेत्स्यन्त |
| | अखेत्स्यथाः | अखेत्स्येथाम् | अखेत्स्यध्वम् |
| | अखेत्स्ये | अखेत्स्यावहि | अखेत्स्यामहि |

॥ विदिंप्–विचारणे ॥ विचार करवो

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | विन्ते | विन्दाते | विन्दते |
| | विन्त्से | विन्दाथे | विन्द्ध्वे |
| | विन्दे | विन्द्वहे | विन्द्महे |
| स० | विन्दीत | विन्दीयाताम् | विन्दीरन् |
| | विन्दीथाः | विन्दीयाथाम् | विन्दीध्वम् |
| | विन्दीय | विन्दीवहि | विन्दीमहि |
| प० | विन्ताम् | विन्दाताम् | विन्दताम् |
| | विन्त्स्व | विन्दाथाम् | विन्द्ध्वम् |
| | विनदै | विनदावहै | विनदामहै |
| ह्य० | अविन्त | अविन्दाताम् | अविन्दत |
| | अविन्त्थाः | अविन्दाथाम् | अविन्द्ध्वम् |
| | अविन्दि | अविन्द्वहि | अविन्द्महि |
| अ० | अवित्त | अवित्साताम् | अवित्सत |
| | अवित्थाः | अवित्साथाम् | अविद्ध्वम् अविद्द्ध्वम् |
| | अवित्सि | अवित्स्वहि | अवित्स्महि |
| प० | विविदे | विविदाते | विविदिरे |
| | विविदिषे | विविदाथे | विविदिध्वे |
| | विविदे | विविदिवहे | विविदिमहे |

आ० वित्सीष्ट वित्सीयास्ताम् वित्सीरन्
वित्सीष्ठाः वित्सीयास्थाम् वित्सीध्वम्
वित्सीय वित्सीवहि वित्सीमहि

श्व० वेत्ता वेत्तारौ वेत्तारः
वेत्तासे वेत्तासाथे वेत्ताध्वे
वेत्ताहे वेत्तास्वहे वेत्तास्महे

भ० वेत्स्यते वेत्स्येते वेत्स्यन्ते
वेत्स्यसे वेत्स्येथे वेत्स्यध्वे
वेत्स्ये वेत्स्यावहे वेत्स्यामहे

क्रि० अवेत्स्यत अवेत्स्येताम् अवेत्स्यन्त
अवेत्स्यथाः अवेत्स्येथाम् अवेत्स्यध्वम्
अवेत्स्ये अवेत्स्यावहि अवेत्स्यामहि

॥ ञिइन्धैपि–दीप्तौ ॥ प्रकाशवुं.

व० इन्द्धे इन्धाते इन्धते
इन्त्से इन्धाथे इन्द्ध्वे
इन्धे इन्ध्वहे इन्ध्महे

स० इन्धीत इन्धीयाताम् इन्धीरन्
इन्धीथाः इन्धीयाथाम् इन्धीध्वम्
इन्धीय इन्धीवहि इन्धीमहि

प० इन्द्धाम् इन्धाताम् इन्धताम्
इन्त्स्व इन्धाथाम् इन्द्ध्वम्
इनधै इनधावहै इनधामहै

ह्य० ऐन्द्ध ऐन्धाताम् ऐन्धत
ऐन्द्धाः ऐन्धाथाम् ऐन्द्ध्वम्
ऐन्धि ऐन्ध्वहि ऐन्ध्महि

अ० ऐन्धिष्ट ऐन्धिषाताम् ऐन्धिषत
ऐन्धिष्ठाः ऐन्धिषाथाम् ऐन्धिढ्ढ्वम्
ऐन्धिषि ऐन्धिष्वहि ऐन्धिष्महि

प० इन्धाञ्चक्रे इन्धाञ्चक्राते इन्धाञ्चक्रिरे
इन्धाञ्चकृषे इन्धाञ्चक्राथे इन्धाञ्चकृढ्वे
इन्धाञ्चक्रे इन्धाञ्चकृवहे इन्धाञ्चकृमहे
इन्धाम्बभूव । इन्धामास

समिधाञ्चक्रे समिन्धाञ्चक्राते समिन्धाञ्चक्रिरे
समिधाञ्चकृषे समिधाञ्चक्राथे समिधाञ्चकृढ्वे
समिधाञ्चक्रे समिधाञ्चकृवहे समिधाञ्चकृमहे

मतान्तरे समीधे–इत्यादि रूपं न भवति
समोऽन्यत्रापि–इन्धेराम्विकल्प इत्य-
न्यस्तन्मते इन्धाञ्चक्रे ईधे इति

समीधे समीधाते समीधिरे
समीधिषे समीधाथे समीधिध्वे
समीधे समीधिवहे समीधिमहे

आ० इन्धिषीष्ट इन्धिषीयास्ताम् इन्धिषीरन्
इन्धिषीष्ठाः इन्धिषीयास्थाम् इन्धिषीध्वम्
इन्धिषीय इन्धिषीवहि इन्धिषीमहि

श्व० इन्धिता इन्धितारौ इन्धितारः
इन्धितासे इन्धितासाथे इन्धिताध्वे
इन्धिताहे इन्धितास्वहे इन्धितास्महे

भ० इन्धिष्यते इन्धिष्येते इन्धिष्यन्ते
इन्धिष्यसे इन्धिष्येथे इन्धिष्यध्वे,
इन्धिष्ये इन्धिष्यावहे इन्धिष्यामहे

क्रि० ऐन्धिष्यत ऐन्धिष्येताम् ऐन्धिष्यन्त
ऐन्धिष्यथाः ऐन्धिष्येथाम् ऐन्धिष्यध्वम्
ऐन्धिष्ये ऐन्धिष्यावहि ऐन्धिष्यामहि

॥ इति रुधादय आत्मनेपदिनः ॥

॥ इति रुधादिगणः ॥

इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंरक्षणप्रवण-विद्यापीठादिमस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजय-विरचितायां हैमधातुमालायां

॥ रुधादिगणः ॥

# ॥ अथ तनादयः ॥

## ॥ उभयपदिनः ॥

॥ तनूयी–विस्तारे ॥ ताणवुं, लांबु करवुं, विस्तारवुं,

व० तनोति तनुतः तन्वन्ति
तनोषि तनुथः तनुथ
तनोमि तन्वः तनुवः तन्मः तनुमः

स० तनुयात् तनुयाताम् तनुयुः
तनुयाः तनुयातम् तनुयात
तनुयाम् तनुयाव तनुयाम

प० तनोतु तनुतात् तनुताम् तन्वन्तु
तनु तनुतात् तनुतम् तनुत
तनवानि तनवाव तनवाम

ह्य० अतनोत् अतनुताम् अतन्वन्
अतनोः अतनुतम् अतनुत
अतनवम् अतन्व अतनुव अतन्म अतनुम

अ० अतानीत् अतानिष्टाम् अतानिषुः
अतानीः अतानिष्टम् अतानिष्ट
अतानिषम् अतानिष्व अतानिष्म

प० ततान तेनतुः तेनुः
तेनिथ तेनथुः तेन
ततान ततन तेनिव तेनिम

आ० तन्यात् तन्यास्ताम् तन्यासुः
तन्याः तन्यास्तम् तन्यास्त
तन्यासम् तन्यास्व तन्यास्म

श्व० तनिता तनितारौ तनितारः
तनितासि तनितास्थः तनितास्थ
तनितास्मि तनितास्वः तनितास्मः

भ० तनिष्यति तनिष्यतः तनिष्यन्ति
तनिष्यसि तनिष्यथः तनिष्यथ
तनिष्यामि तनिष्यावः तनिष्यामः

क्रि० अतनिष्यत् अतनिष्यताम् अतनिष्यन्
अतनिष्यः अतनिष्यतम् अतनिष्यत
अतनिष्यम् अतनिष्याव अतनिष्याम

व० तनुते तन्वाते तन्वते
तनुषे तन्वाथे तनुध्वे
तन्वे तन्वहे तनुवहे तन्महे तनुमहे

स० तन्वीत तन्वीयाताम् तन्वीरन्

तन्वीथाः तन्वीयाथाम् तन्वीध्वम्
तन्वीय तन्वीवहि तन्वीमहि
प० तनुताम् तन्वाताम् तन्वताम्
तनुष्व तन्वाथाम् तनुध्वम्
तनवै तनवावहै तनवामहै
ह्य०अतनुत अतन्वाताम् अतन्वत
अतनुथाः अतन्वाथाम् अतनुध्वम्
अतन्वि अतन्वहि अतनुवहि अतन्महि अतनुमहि
अ० अतत अतनिष्ट अतनिषाताम् अतनिषत
अतथाः अतनिष्ठाः अतनिषाथाम् अतनिढ्ढ्वम्
अतनिध्वम्
अतनिषि अतनिष्वहि अतनिष्महि
प० तेने तेनाते तेनिरे
तेनिषे तेनाथे तेनिध्वे
तेने तेनिवहे तेनिमहे
आ०तनिषीष्ट तनिषीयास्ताम् तनिषीरन्
तनिषीष्ठाः तनिषीयास्थाम् तनिषीध्वम्
तनिषीय तनिषीवहि तनिषीमहि
श्व०तनिता तनितारौ तनितारः
तनितासे तनितासाथे तनिताध्वे
तनिताहे तनितास्वहे तनितास्महे
भ० तनिष्यते तनिष्येते तनिष्यन्ते
तनिष्यसे तनिष्येथे तनिष्यध्वे
तनिष्ये तनिष्यावहे तनिष्यामहे
क्रि०अतनिष्यत अतनिष्येताम् अतनिष्यन्त
अतनिष्यथाः अतनिष्येथाम् अतनिष्यध्वम्
अतनिष्ये अतनिष्यावहि अतनिष्यामहि

॥ षणूयी–दाने ॥ आपवुं,

व० सनोति सनुतः सन्वन्ति
सनोषि सनुथः सनुथ
सनोमि सन्वः सनुवः सन्मः सनुमः,
स० सनुयात् सनुयाताम् सनुयुः
सनुयाः सनुयातम् सनुयात
सनुयाम् सनुयाव सनुयाम
प० सनोतु सनुतात् सनुताम् सन्वन्तु
सनु सनुतात् सनुतम् सनुत
सनवानि सनवाव सनवाम
ह्य० असनोत् असनुताम् असन्वन्
असनोः असनुतम् असनुत
असनवम् असन्व असनुव असन्म असनुम
अ० असानीत् असानिष्टाम् असानिषुः
असानीः असानिष्टम् असानिष्ट
असानिषम् असानिष्व असानिष्म
असनीत् असनिष्टाम् असनिषुः
असनीः असनिष्टम् असनिष्ट
असनिषम् असनिष्व असनिष्म
प० ससान सेनतुः सेनुः
सेनिथ सेनथुः सेन
ससान ससन सेनिव सेनिम
आ०सन्यात् सन्यास्ताम् सन्यासुः
सन्याः सन्यास्तम् सन्यास्त
सन्यासम् सन्यास्व सन्यास्म
श्व०सनिता सनितारौ सनितारः
सनितासि सनितास्थः सनितास्थ
सनितास्मि सनितास्वः सनितास्मः
भ० सनिष्यति सनिष्यतः सनिष्यन्ति
सनिष्यसि सनिष्यथः सनिष्यथ
सनिष्यामि सनिष्यावः सनिष्यामः
क्रि०असनिष्यत् असनिष्यताम् असनिष्यन्
असनिष्यः असनिष्यतम् असनिष्यत
असनिष्यम् असनिष्याव असनिष्याम
व० सनुते सन्वाते सन्वते
सनुषे सन्वाथे सनुध्वे
सन्वे सन्वहे सनुवहे सन्महे सनुमहे
स० सन्वीत सन्वीयाताम् सन्वीरन्
सन्वीथाः सन्वीयाथाम् सन्वीध्वम्
सन्वीय सन्वीवहि सन्वीमहि
प० सनुताम् सन्वाताम् सन्वताम्
सनुष्व सन्वाथाम् सनुध्वम्
सनवै सन्वावहै सन्वामहै
ह्य० असनुत असन्वाताम् असन्वत
असनुथाः असन्वाथाम् असनुध्वम्

असन्वि असन्वहि असनुवहि असन्महि
असनुमहि
असात असत असनिष्ट असनिषाताम् असनिषत
असाथा: असथाः } असनिषाथाम्
असनिष्ठाः } असनिड्ढ्वम्-ध्वम्
असनिषि असनिष्वहि असनिष्महि
पाणिनिमते असत असथा: इति न भवति
प० सेने सेनाते सेनिरे
सेनिषे सेनाथे सेनिध्वे
सेने सेनिवहे सेनिमहे
आ०सनिषीष्ट सनिषीयास्ताम् सनिषीरन्
सनिषीष्ठाः सनिषीयास्थाम् सनिषीध्वम्
सनिषीय सनिषीवहि सनिषीमहि
श्व०सनिता सनितारौ सनितारः
सनितासे सनितासाथे सनिताध्वे
सनिताहे सनितास्वहे सनितास्महे
भ० सनिष्यते सनिष्येते सनिष्यन्ते
सनिष्यसे सनिष्येथे सनिष्यध्वे
सनिष्ये सनिष्यावहे सनिष्यामहे
क्रि०असनिष्यत असनिष्येताम् असनिष्यन्त
असनिष्यथाः असनिष्येथाम् असनिष्यध्वम्
असनिष्ये असनिष्यावहि असनिष्यामहि

॥ क्षणू-क्षिणूयी-हिंसायाम् ॥ मारवुं
अत्र क्षिणूयीधातुं न पठन्त्येके,

व० क्षणोति क्षणुतः क्षण्वन्ति
क्षणोषि क्षणुथः क्षणुथ
क्षणोमि क्षण्वः क्षणुवः क्षण्मः क्षणुमः
स० क्षणुयात् क्षणुयाताम् क्षणुयुः
क्षणुयाः क्षणुयातम् क्षणुयात
क्षणुयाम् क्षणुयाव क्षणुयाम
प० क्षणोतु क्षणुतात् क्षणुताम् क्षण्वन्तु
क्षणु क्षणुतात् क्षणुतम् क्षणुत
क्षणवानि क्षणवाव क्षणवाम
ह्य० अक्षणोत् अक्षणुताम् अक्षण्वन्
अक्षणोः अक्षणुतम् अक्षणुत
अक्षणवम् अक्षण्व अक्षणुव अक्षण्म अक्षणुम
अ० अक्षणीत् अक्षणिष्टाम् अक्षणिषुः
अक्षणीः अक्षणिष्टम् अक्षणिष्ट
अक्षणिषम् अक्षणिष्व अक्षणिष्म
प० चक्षाण चक्षणतुः चक्षणुः
चक्षणिथ चक्षणथुः चक्षण
चक्षाण चक्षण चक्षणिव चक्षणिम
आ०क्षण्यात् क्षण्यास्ताम् क्षण्यासुः
क्षण्याः क्षण्यास्तम् क्षण्यास्त
क्षण्यासम् क्षण्यास्व क्षण्यास्म
श्व०क्षणिता क्षणितारौ क्षणितारः
क्षणितासि क्षणितास्थः क्षणितास्थ
क्षणितास्मि क्षणितास्वः क्षणितास्मः
भ० क्षणिष्यति क्षणिष्यतः क्षणिष्यन्ति
क्षणिष्यसि क्षणिष्यथः क्षणिष्यथ
क्षणिष्यामि क्षणिष्यावः क्षणिष्यामः
क्रि०अक्षणिष्यत् अक्षणिष्यताम् अक्षणिष्यन्
अक्षणिष्यः अक्षणिष्यतम् अक्षणिष्यत
अक्षणिष्यम् अक्षणिष्याव अक्षणिष्याम
व० क्षणुते क्षण्वाते क्षण्वते
क्षणुषे क्षण्वाथे क्षणुध्वे
क्षण्वे क्षण्वहे क्षणुवहे क्षण्महे क्षणुमहे
स० क्षण्वीत क्षण्वीयाताम् क्षण्वीरन्
क्षण्वीथाः क्षण्वीयाथाम् क्षण्वीध्वम्
क्षण्वीय क्षण्वीवहि क्षण्वीमहि
प० क्षणुताम् क्षण्वाताम् क्षण्वताम्
क्षणुष्व क्षण्वाथाम् क्षणुध्वम्
क्षणवै क्षणवावहै क्षणवामहै
ह्य० अक्षणुत अक्षण्वाताम् अक्षण्वत
अक्षणुथाः अक्षण्वाथाम् अक्षणुध्वम्
अक्षण्वि अक्षण्वहि अक्षणुवहि अक्षण्महि
अक्षणुमहि
अ० अक्षत अक्षणिष्ट अक्षणिषाताम् अक्षणिषत
अक्षथाः अक्षणिष्ठाः अक्षणिषाथाम्
अक्षणिड्ढ्वम्-ध्वम्
अक्षणिषि अक्षणिष्वहि अक्षणिष्महि

प० चक्षणे चक्षणाते चक्षणिरे
चक्षणिषे चक्षणाथे चक्षणिध्वे
चक्षणे चक्षणिवहे चक्षणिमहे
आ० क्षणिषीष्ट क्षणिषीयास्ताम् क्षणिषीरन्
क्षणिषीष्ठाः क्षणिषीयास्थाम् क्षणिषीध्वम्
क्षणिषीय क्षणिषीवहि क्षणिषीमहि
श्व० क्षणिता क्षणितारौ क्षणितारः
क्षणितासे क्षणितासाथे क्षणिताध्वे
क्षणिताहे क्षणितास्वहे क्षणितास्महे
भ० क्षणिष्यते क्षणिष्येते क्षणिष्यन्ते
क्षणिष्यसे क्षणिष्येथे क्षणिष्यध्वे
क्षणिष्ये क्षणिष्यावहे क्षणिष्यामहे
क्रि० अक्षणिष्यत अक्षणिष्येताम् अक्षणिष्यन्त
अक्षणिष्यथाः अक्षणिष्येथाम् अक्षणिष्यध्वम्
अक्षणिष्ये अक्षणिष्यावहि अक्षणिष्यामहि
व० क्षेणोति क्षेणुतः क्षेण्वन्ति
क्षेणोषि क्षेणुथः क्षेणुथ
क्षेणोमि क्षेण्वः क्षेणुवः क्षेण्मः क्षेणुमः
अत्रोप्रत्ययनिमित्तमुपान्त्यगुणं नेच्छन्त्येके ।
व० क्षिणोति क्षिणुतः क्षिण्वन्ति
क्षिणोषि क्षिणुथः क्षिणुथ
क्षिणोमि क्षिणुवः क्षिण्वः क्षिणुमः क्षिण्मः
स० क्षेणुयात् क्षेणुयाताम् क्षेणुयुः
क्षेणुयाः क्षेणुयातम् क्षेणुयात
क्षेणुयाम् क्षेणुयाव क्षेणुयाम
प० क्षेणोतु क्षेणुतात् क्षेणुताम् क्षेण्वन्तु
क्षेणु क्षेणुतात् क्षेणुतम् क्षेणुत
क्षेणवानि क्षेणवाव क्षेणवाम
ह्य० अक्षेणोत् अक्षेणुताम् अक्षेण्वन्
अक्षेणोः अक्षेणुतम् अक्षेणुत
अक्षेणवम् अक्षेण्व अक्षेणुव अक्षेण्म अक्षेणुम
अ० अक्षेणीत् अक्षेणिष्टाम् अक्षेणिषुः
अक्षेणीः अक्षेणिष्टम् अक्षेणिष्ट
अक्षेणिषम् अक्षेणिष्व अक्षेणिष्म
प० चिक्षेण चिक्षिणतुः चिक्षिणुः
चिक्षेणिथ चिक्षिणथुः चिक्षिण
चिक्षेण चिक्षिणिव चिक्षिणिम
आ० क्षिण्यात् क्षिण्यास्ताम् क्षिण्यासुः
क्षिण्याः क्षिण्यास्तम् क्षिण्यास्त
क्षिण्यासम् क्षिण्यास्व क्षिण्यास्म
श्व० क्षेणिता क्षेणितारौ क्षेणितारः
क्षेणितासि क्षेणितास्थः क्षेणितास्थ
क्षेणितास्मि क्षेणितास्वः क्षेणितास्मः
भ० क्षेणिष्यति क्षेणिष्यतः क्षेणिष्यन्ति
क्षेणिष्यसि क्षेणिष्यथः क्षेणिष्यथ
क्षेणिष्यामि क्षेणिष्यावः क्षेणिष्यामः
क्रि० अक्षेणिष्यत् अक्षेणिष्यताम् अक्षेणिष्यन्
अक्षेणिष्यः अक्षेणिष्यतम् अक्षेणिष्यत
अक्षेणिष्यम् अक्षेणिष्याव अक्षेणिष्याम
व० क्षेणुते क्षेण्वाते क्षेण्वते
क्षेणुषे क्षेण्वाथे क्षेणुध्वे
क्षेण्वे क्षेण्वहे क्षेणुवहे क्षेण्महे क्षेणुमहे
स० क्षेण्वीत क्षेण्वीयाताम् क्षेण्वीरन्
क्षेण्वीथाः क्षेण्वीयाथाम् क्षेण्वीध्वम्
क्षेण्वीय क्षेण्वीवहि क्षेण्वीमहि
प० क्षेणुताम् क्षेण्वाताम् क्षेण्वताम्
क्षेणुष्व क्षेण्वाथाम् क्षेणुध्वम्
क्षेणवै क्षेणवावहै क्षेणवामहै
ह्य० अक्षेणुत अक्षेण्वाताम् अक्षेण्वत
अक्षेणुथाः अक्षेण्वाथाम् अक्षेणुध्वम्
अक्षेण्वि अक्षेण्वहि अक्षेण्महि
अक्षेणुवहि अक्षेणुमहि
अ० अक्षित अक्षेणिष्ट अक्षेणिषाताम् अक्षेणिषत
अक्षिथाः अक्षेणिष्ठाः अक्षेणिषाथाम्
अक्षेणिढ्ढ्वम्-ध्वम्
अक्षेणिषि अक्षेणिष्वहि अक्षेणिष्महि
प० चिक्षिणे चिक्षिणाते चिक्षिणिरे
चिक्षिणिषे चिक्षिणाथे चिक्षिणिध्वे
चिक्षिणे चिक्षिणिवहे चिक्षिणिमहे
आ० क्षेणिषीष्ट क्षेणिषीयास्ताम् क्षेणिषीरन्
क्षेणिषीष्ठाः क्षेणिषीयास्थाम् क्षेणिषीध्वम्
क्षेणिषीय क्षेणिषीवहि क्षेणिषीमहि

श्व० क्षोणिता क्षोणितारौ क्षोणितारः
क्षोणितासे क्षोणितासाथे क्षोणिताध्वे
क्षोणिताहे क्षोणितास्वहे क्षोणितास्महे
भ० क्षोणिष्यते क्षोणिष्येते क्षोणिष्यन्ते
क्षोणिष्यसे क्षोणिष्येथे क्षोणिष्यध्वे
क्षोणिष्ये क्षोणिष्यावहे क्षोणिष्यामहे
क्रि० अक्षोणिष्यत अक्षोणिष्येताम् अक्षोणिष्यन्त
अक्षोणिष्यथाः अक्षोणिष्येथाम् अक्षोणिष्यध्वम्
अक्षोणिष्ये अक्षोणिष्यावहि अक्षोणिष्यामहि

॥ ऋणूयी-गतौ, ॥ नवुं

व० अर्णोति अर्णुतः अर्ण्वन्ति
अर्णोषि अर्णुथः अर्णुथ
अर्णोमि अर्णुवः अर्णुमः
स० अर्णुयात् अर्णुयाताम् अर्णुयुः
अर्णुयाः अर्णुयातम् अर्णुयात
अर्णुयाम् अर्णुयाव अर्णुयाम
प० अर्णोतु अर्णुतात् अर्णुताम् अर्ण्वन्तु
अर्णुहि „ अर्णुतम् अर्णुत
अर्णवानि अर्णवाव अर्णवाम
ह्य० आर्णोत् आर्णुताम् आर्ण्वन्
आर्णोः आर्णुतम् आर्णुत
आर्णवम् आर्णुव आर्णुम
अ० आर्णीत् आर्णिष्टाम् आर्णिषुः
आर्णीः आर्णिष्टम् आर्णिष्ट
आर्णिषम् आर्णिष्व आर्णिष्म
प० आनर्ण आनृणतुः आनृणुः
आनर्णिथ आनृणथुः आनृण
आनर्ण आनृणिव आनृणिम
आ० ऋण्यात् ऋण्यास्ताम् ऋण्यासुः
ऋण्याः ऋण्यास्तम् ऋण्यास्त
ऋण्यासम् ऋण्यास्व ऋण्यास्म
श्व० अर्णिता अर्णितारौ अर्णितारः
अर्णितासि अर्णितास्थः अर्णितास्थ
अर्णितास्मि अर्णितास्वः अर्णितास्मः
भ० अर्णिष्यति अर्णिष्यतः अर्णिष्यन्ति
अर्णिष्यसि अर्णिष्यथः अर्णिष्यथ
अर्णिष्यामि अर्णिष्यावः अर्णिष्यामः
क्रि० आर्णिष्यत् आर्णिष्यताम् आर्णिष्यन्
आर्णिष्यः आर्णिष्यतम् आर्णिष्यत
आर्णिष्यम् आर्णिष्याव आर्णिष्याम

व० अर्णुते अर्ण्वाते अर्ण्वते
अर्णुषे अर्ण्वाथे अर्णुध्वे
अर्ण्वे अर्णुवहे अर्णुमहे
स० अर्ण्वीत अर्ण्वीयाताम् अर्ण्वीरन्
अर्ण्वीथाः अर्ण्वीयाथाम् अर्ण्वीध्वम्
अर्ण्वीय अर्ण्वीवहि अर्ण्वीमहि
प० अर्णुताम् अर्ण्वाताम् अर्ण्वताम्
अर्णुष्व अर्ण्वाथाम् अर्णुध्वम्
अर्णवै अर्णवावहै अर्णवामहै
ह्य० आर्णुत आर्ण्वाताम् आर्ण्वत
आर्णुथाः आर्ण्वाथाम् आर्णुध्वम्
आर्ण्वि आर्णुवहि आर्णुमहि
अ० आर्त आर्णिष्ट आर्णिषाताम् आर्णिषत
आर्थाः आर्णिष्ठाः आर्णिषाथाम् आर्णिड्ढ्वम्
ध्वम्
आर्णिषि आर्णिष्वहि आर्णिष्महि
प० आनृणे आनृणाते आनृणिरे
आनृणिषे आनृणाथे आनृणिध्वे
आनृणे आनृणिवहे आनृणिमहे
आ० अर्णिषीष्ट अर्णिषीयास्ताम् अर्णिषीरन्
अर्णिषीष्ठाः अर्णिषीयास्थाम् अर्णिषीध्वम्
अर्णिषीय अर्णिषीवहि अर्णिषीमहि
श्व० अर्णिता अर्णितारौ अर्णितारः
अर्णितासे अर्णितासाथे अर्णिताध्वे
अर्णिताहे अर्णितास्वहे अर्णितास्महे
भ० अर्णिष्यते अर्णिष्येते अर्णिष्यन्ते
अर्णिष्यसे अर्णिष्येथे अर्णिष्यध्वे
अर्णिष्ये अर्णिष्यावहे अर्णिष्यामहे

क्रि० आर्णिष्यत आर्णिष्येताम् आर्णिष्यन्त
आर्णिष्यथाः आर्णिष्येथाम् आर्णिष्यध्वम्
आर्णिष्ये आर्णिष्यावहि आर्णिष्यामहि

मतान्तरे ऋणोति ऋणुते-इत्यादि
गुणाभावविशिष्टं रूपम् ।

॥ तृणूयी-अदने ॥ खावुं.

व० तर्णोति तर्णुतः तर्ण्वन्ति
तर्णोषि तर्णुथः तर्णुथ
तर्णोमि तर्णुवः तर्णुमः
स० तर्णुयात् तर्णुयाताम् तर्णुयुः
तर्णुयाः तर्णुयातम् तर्णुयात
तर्णुयाम् तर्णुयाव तर्णुयाम
प० तर्णोतु तर्णुतात् तर्णुताम् तर्ण्वन्तु
तर्णुहि तर्णुतात् तर्णुतम् तर्णुत
तर्णवानि तर्णवाव तर्णवाम
ह्य० अतर्णोत् अतर्णुताम् अतर्ण्वन्
अतर्णोः अतर्णुतम् अतर्णुत
अतर्णवम् अतर्णुव अतर्णुम
अ० अतर्णीत् अतर्णिष्टाम् अतर्णिषुः
अतर्णीः अतर्णिष्टम् अतर्णिष्ट
अतर्णिषम् अतर्णिष्व अतर्णिष्म
प० ततर्ण ततृणतुः ततृणुः
ततर्णिथ ततृणथुः ततृण
ततर्ण ततृणिव ततृणिम
आ० तृण्यात् तृण्यास्ताम् तृण्यासुः
तृण्याः तृण्यास्तम् तृण्यास्त
तृण्यासम् तृण्यास्व तृण्यास्म
श्व० तर्णिता तर्णितारौ तर्णितारः
तर्णितासि तर्णितास्थः तर्णितास्थ
तर्णितास्मि तर्णितास्वः तर्णितास्मः
भ० तर्णिष्यति तर्णिष्यतः तर्णिष्यन्ति
तर्णिष्यसि तर्णिष्यथः तर्णिष्यथ
र्णिष्यामि तर्णिष्यावः तर्णिष्यामः

क्रि० अतर्णिष्यत् अतर्णिष्यताम् अतर्णिष्यन्
अतर्णिष्यः अतर्णिष्यतम् अतर्णिष्यत
अतर्णिष्यम् अतर्णिष्याव अतर्णिष्याम

व० तर्णुते तर्ण्वाते तर्ण्वते
तर्णुषे तर्ण्वाथे तर्णुध्वे
तर्ण्वे तर्णुवहे तर्णुमहे
स० तर्ण्वीत तर्ण्वीयाताम् तर्ण्वीरन्
तर्ण्वीथाः तर्ण्वीयाथाम् तर्ण्वीध्वम्
तर्ण्वीय तर्ण्वीवहि तर्ण्वीमहि
प० तर्णुताम् तर्ण्वाताम् तर्ण्वताम्
तर्णुष्व तर्ण्वाथाम् तर्णुध्वम्
तर्णवै तर्णवावहै तर्णवामहै
ह्य० अतर्णुत अतर्ण्वाताम् अतर्ण्वत
अतर्णुथाः अतर्ण्वाथाम् अतर्णुध्वम्
अतर्ण्वि अतर्णुवहि अतर्णुमहि
अ० अतृत अतर्णिष्ट अतर्णिषाताम् अतर्णिषत
अतृथाः अतर्णिष्ठाः अतर्णिषाथाम्
अतर्णिढ्वम्-ध्वम्
अतर्णिषि अतर्णिष्वहि अतर्णिष्महि
प० ततृणे ततृणाते ततृणिरे
ततृणिषे ततृणाथे ततृणिध्वे
ततृणे ततृणिवहे ततृणिमहे
आ० तर्णिषीष्ट तर्णिषीयास्ताम् तर्णिषीरन्
तर्णिषीष्ठाः तर्णिषीयास्थाम् तर्णिषीध्वम्
तर्णिषीय तर्णिषीवहि तर्णिषीमहि
श्व० तर्णिता तर्णितारौ तर्णितारः
तर्णितासे तर्णितासाथे तर्णिताध्वे
तर्णिताहे तर्णितास्वहे तर्णितास्महे
भ० तर्णिष्यते तर्णिष्येते तर्णिष्यन्ते
तर्णिष्यसे तर्णिष्येथे तर्णिष्यध्वे
तर्णिष्ये तर्णिष्यावहे तर्णिष्यामहे
क्रि० अतर्णिष्यत अतर्णिष्येताम् अतर्णिष्यन्त
अतर्णिष्यथाः अतर्णिष्येथाम् अतर्णिष्यध्वम्
अतर्णिष्ये अतर्णिष्यावहि अतर्णिष्यामहि

मतान्तरे तृणोति तृणुते-इत्यादि ॥

॥ घृणूयी-दीप्तौ ॥ प्रकाशवुं.

व० घर्णोति घर्णुतः घर्ण्वन्ति
घर्णोषि घर्णुथः घर्णुथ
घर्णोमि घर्णुवः घर्णुमः
स० घर्णुयात् घर्णुयाताम् घर्णुयुः
घर्णुयाः घर्णुयातम् घर्णुयात
घर्णुयाम् घर्णुयाव घर्णुयाम
प० घर्णोतु घर्णुतात् घर्णुताम् घर्ण्वन्तु
घर्णुहि घर्णुतात् घर्णुतम् घर्णुत
घर्णवानि घर्णवाव घर्णवाम
ह्य० अघर्णोत् अघर्णुताम् अघर्ण्वन्
अघर्णोः अघर्णुतम् अघर्णुत
अघर्णवम् अघर्णुव अघर्णुम
अ० अघर्णीत् अघर्णिष्टाम् अघर्णिषुः
अघर्णीः अघर्णिष्टम् अघर्णिष्ट
अघर्णिषम् अघर्णिष्व अघर्णिष्म
प० जघर्ण जघृणतुः जघृणुः
जघर्णिथ जघृणथुः जघृण
जघर्ण जघृणिव जघृणिम
आ० घृण्यात् घृण्यास्ताम् घृण्यासुः
घृण्याः घृण्यास्तम् घृण्यास्त
घृण्यासम् घृण्यास्व घृण्यास्म
श्व० घर्णिता घर्णितारौ घर्णितारः
घर्णितासि घर्णितास्थः घर्णितास्थ
घर्णितास्मि घर्णितास्वः घर्णितास्मः
भ० घर्णिष्यति घर्णिष्यतः घर्णिष्यन्ति
घर्णिष्यसि घर्णिष्यथः घर्णिष्यथ
घर्णिष्यामि घर्णिष्यावः घर्णिष्यामः
क्रि० अघर्णिष्यत् अघर्णिष्यताम् अघर्णिष्यन्
अघर्णिष्यः अघर्णिष्यतम् अघर्णिष्यत
अघर्णिष्यम् अघर्णिष्याव अघर्णिष्याम

व० घर्णुते घर्ण्वाते घर्ण्वते
घर्णुषे घर्ण्वाथे घर्णुध्वे
घर्ण्वे घर्णुवहे घर्णुमहे
स० घर्ण्वीत घर्ण्वीयाताम् घर्ण्वीरन्
घर्ण्वीथाः घर्ण्वीयाथाम् घर्ण्वीध्वम्
घर्ण्वीय घर्ण्वीवहि घर्ण्वीमहि
प० घर्णुताम् घर्ण्वाताम् घर्ण्वताम्
घर्णुष्व घर्ण्वाथाम् घर्णुध्वम्
घर्णवै घर्णवावहै घर्णवामहै
ह्य० अघर्णुत अघर्ण्वाताम् अघर्ण्वत
अघर्णुथाः अघर्ण्वाथाम् अघर्णुध्वम्
अघर्ण्वि अघर्णुवहि अघर्णुमहि
अ० अघृत अघर्णिष्ट अघर्णिषाताम् अघर्णिषत
अघृथाः अघर्णिष्ठाः अघर्णिषाथाम्
अघर्णिढ्वम् अघर्णिध्वम्
अघर्णिषि अघर्णिष्वहि अघर्णिष्महि
प० जघृणे जघृणाते जघृणिरे
जघृणिषे जघृणाथे जघृणिध्वे
जघृणे जघृणिवहे जघृणिमहे
आ० घर्णिषीष्ट घर्णिषीयास्ताम् घर्णिषीरन्
घर्णिषीष्ठाः घर्णिषीयास्थाम् घर्णिषीध्वम्
घर्णिषीय घर्णिषीवहि घर्णिषीमहि
श्व० घर्णिता घर्णितारौ घर्णितारः
घर्णितासे घर्णितासाथे घर्णिताध्वे
घर्णिताहे घर्णितास्वहे घर्णितास्महे
भ० घर्णिष्यते घर्णिष्येते घर्णिष्यन्ते
घर्णिष्यसे घर्णिष्येथे घर्णिष्यध्वे
घर्णिष्ये घर्णिष्यावहे घर्णिष्यामहे
क्रि० अघर्णिष्यत अघर्णिष्येताम् अघर्णिष्यन्त
अघर्णिष्यथाः अघर्णिष्येथाम् अघर्णिष्यध्वम्
अघर्णिष्ये अघर्णिष्यावहि अघर्णिष्यामहि

मतान्तरे-घृणोति । घृणुते । इत्यादि

## ॥ इति तनादय उभयपदिनः ॥

---

## ॥ अथात्मनेपदिनौ ॥

॥ वनूयि-याचने ॥ मागवुं

व० वनुते वन्वाते वन्वते
वनुषे वन्वाथे वनुध्वे
वन्वे वनुवहे वन्वहे वनुमहे वन्महे

स० वन्वीत वन्वीयाताम् वन्वीरन्
वन्वीथाः वन्वीयाथाम् वन्वीध्वम्
वन्वीय वन्वीवहि वन्वीमहि

प० वनुताम् वन्वाताम् वन्वताम्
वनुष्व वन्वाथाम् वनुध्वम्
वनवै वनवावहै वनवामहै

ह्य० अवनुत अवन्वाताम् अवन्वत
अवनुथाः अवन्वाथाम् अवनुध्वम्
अवन्वि अवन्वहि अवनुवहि अवन्महि अवनुमहि

अ० अवत अवनिष्ट अवनिषाताम् अवनिषत
अवथाः अवनिष्ठाः अवनिषाथाम्
अवनिढ्ढ्वम् अवनिध्वम्
अवनिषि अवनिष्वहि अवनिष्महि

प० ववने ववनाते ववनिरे
ववनिषे ववनाथे ववनिध्वे
ववने ववनिवहे ववनिमहे

आ० वनिषीष्ट वनिषीयास्ताम् वनिषीरन्
वनिषीष्ठाः वनिषीयास्थाम् वनिषीध्वम्
वनिषीय वनिषीवहि वनिषीमहि

श्व० वनिता वनितारौ वनितारः
वनितासे वनितासाथे वनिताध्वे
वनिताहे वनितास्वहे वनितास्महे

भ० वनिष्यते वनिष्येते वनिष्यन्ते
वनिष्यसे वनिष्येथे वनिष्यध्वे
वनिष्ये वनिष्यावहे वनिष्यामहे

क्रि० अवनिष्यत अवनिष्येताम् अवनिष्यन्त
अवनिष्यथाः अवनिष्येथाम् अवनिष्यध्वम्
अवनिष्ये अवनिष्यावहि अवनिष्यामहि

॥ मनूयि-बोधने ॥ जाणवुं,

व० मनुते मन्वाते मन्वते
मनुषे मन्वाथे मनुध्वे
मन्वे मन्वहे मनुवहे मन्महे मनुमहे

स० मन्वीत मन्वीयाताम् मन्वीरन्
मन्वीथाः मन्वीयाथाम् मन्वीध्वम्
मन्वीय मन्वीवहि मन्वीमहि

प० मनुताम् मन्वाताम् मन्वताम्
मनुष्व मन्वाथाम् मनुध्वम्
मनवै मनवावहै मनवामहै

ह्य० अमनुत अमन्वाताम् अमन्वत
अमनुथाः अमन्वाथाम् अमनुध्वम्
अमन्वि अमन्वहि अमनुवहि अमन्महि-नुमहि

अ० अमत अमनिष्ट अमनिषाताम् अमनिषत
अमथाः अमनिष्ठाः अमनिषाथाम्
अमनिढ्ढ्वम्-ध्वम्
अमनिषि अमनिष्वहि अमनिष्महि

प० मेने मेनाते मेनिरे
मेनिषे मेनाथे मेनिध्वे
मेने मेनिवहे मेनिमहे

आ० मनिषीष्ट मनिषीयास्ताम् मनिषीरन्
मनिषीष्ठाः मनिषीयास्थाम् मनिषीध्वम्
मनिषीय मनिषीवहि मनिषीमहि

श्व० मनिता मनितारौ मनितारः
मनितासे मनितासाथे मनिताध्वे
मनिताहे मनितास्वहे मनितास्महे

भ० मनिष्यते मनिष्येते मनिष्यन्ते
मनिष्यसे मनिष्येथे मनिष्यध्वे
मनिष्ये मनिष्यावहे मनिष्यामहे

क्रि० अमनिष्यत अमनिष्येताम् अमनिष्यन्त
अमनिष्यथाः अमनिष्येथाम् अमनिष्यध्वम्
अमनिष्ये अमनिष्यावहि अमनिष्यामहि

॥ इत्यात्मनेपदिनौ ॥

इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंरक्षणप्रवण-
विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य
श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशा-
स्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजय-
विरचितायां हैमधातुमालायां
॥ तनादिगणः ॥

# ॥ अथ क्र्यादयः ॥

## ॥ उभयपदिनः ॥

॥ डुक्रींग्श्-द्रव्यविनिमये ॥ खरीदवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | क्रीणाति | क्रीणीतः | क्रीणन्ति |
| | क्रीणासि | क्रीणीथः | क्रीणीथ |
| | क्रीणामि | क्रीणीवः | क्रीणीमः |
| स० | क्रीणीयात् | क्रीणीयाताम् | क्रीणीयुः |
| | क्रीणीयाः | क्रीणीयातम् | क्रीणीयात |
| | क्रीणीयाम् | क्रीणीयाव | क्रीणीयाम |
| प० | क्रीणातु क्रीणीतात् | क्रीणीताम् | क्रीणन्तु |
| | क्रीणीहि क्रीणीतात् | क्रीणीतम् | क्रीणीत |
| | क्रीणानि | क्रीणाव | क्रीणाम |
| ह्य० | अक्रीणात् | अक्रीणीताम् | अक्रीणन् |
| | अक्रीणाः | अक्रीणीतम् | अक्रीणीत |
| | अक्रीणाम् | अक्रीणीव | अक्रीणीम |
| अ० | अक्रैषीत् | अक्रैष्टाम् | अक्रैषुः |
| | अक्रैषीः | अक्रैष्टम् | अक्रैष्ट |
| | अक्रैषम् | अक्रैष्व | अक्रैष्म |
| प० | चिक्राय | चिक्रियतुः | चिक्रियुः |
| | चिक्रयिथ चिक्रेथ | चिक्रियथुः | चिक्रिय |
| | चिक्राय चिक्रय | चिक्रियिव | चिक्रियिम |
| आ० | क्रीयात् | क्रीयास्ताम् | क्रीयासुः |
| | क्रीयाः | क्रीयास्तम् | क्रीयास्त |
| | क्रीयासम् | क्रीयास्व | क्रीयास्म |
| श्व० | क्रेता | क्रेतारौ | क्रेतारः |
| | क्रेतासि | क्रेतास्थः | क्रेतास्थ |
| | क्रेतास्मि | क्रेतास्वः | क्रेतास्मः |
| भ० | क्रेष्यति | क्रेष्यतः | क्रेष्यन्ति |
| | क्रेष्यसि | क्रेष्यथः | क्रेष्यथ |
| | क्रेष्यामि | क्रेष्यावः | क्रेष्यामः |
| क्रि० | अक्रेष्यत् | अक्रेष्यताम् | अक्रेष्यन् |
| | अक्रेष्यः | अक्रेष्यतम् | अक्रेष्यत |
| | अक्रेष्यम् | अक्रेष्याव | अक्रेष्याम |
| व० | क्रीणीते | क्रीणाते | क्रीणते |
| | क्रीणीषे | क्रीणाथे | क्रीणीध्वे |
| | क्रीणे | क्रीणीवहे | क्रीणीमहे |
| स० | क्रीणीत | क्रीणीयाताम् | क्रीणीरन् |
| | क्रीणीथाः | क्रीणीयाथाम् | क्रीणीध्वम् |
| | क्रीणीय | क्रीणीवहि | क्रीणीमहि |

प० क्रीणीताम् क्रीणाताम् क्रीणताम्
क्रीणीष्व क्रीणाथाम् क्रीणीध्वम्
क्रीणै क्रीणावहै क्रीणामहै
ह्य० अक्रीणीत अक्रीणाताम् अक्रीणत
अक्रीणीथाः अक्रीणाथाम् अक्रीणीध्वम्
अक्रीणि अक्रीणीवहि अक्रीणीमहि
अ० अक्रेष्ट अक्रेषाताम् अक्रेषत
अक्रेष्ठाः अक्रेषाथाम् अक्रेड्ढ्वम्
अक्रेढ्वम्
अक्रेषि अक्रेष्वहि अक्रेष्महि
प० चिक्रिये चिक्रियाते चिक्रियिरे
चिक्रियिषे चिक्रियाथे चिक्रियिध्वे-ढ्वे
चिक्रिये चिक्रियिवहे चिक्रियिमहे
आ० क्रेषीष्ट क्रेषीयास्ताम् क्रेषीरन्
क्रेषीष्ठाः क्रेषीयास्थाम् क्रेषीढ्वम्
क्रेषीय क्रेषीवहि क्रेषीमहि
श्व० क्रेष्टा क्रेष्टारौ क्रेष्टारः
क्रेष्टासे क्रेष्टासाथे क्रेष्टाध्वे
क्रेष्टाहे क्रेष्टास्वहे क्रेष्टास्महे
भ० क्रेष्यते क्रेष्येते क्रेष्यन्ते
क्रेष्यसे क्रेष्येथे क्रेष्यध्वे
क्रेष्ये क्रेष्यावहे क्रेष्यामहे
क्रि० अक्रेष्यत अक्रेष्येताम् अक्रेष्यन्त
अक्रेष्यथाः अक्रेष्येथाम् अक्रेष्यध्वम्
अक्रेष्ये अक्रेष्यावहि अक्रेष्यामहि

षिग्श् बन्धने । बांधवुं,

व० सिनाति सिनीतः सिनन्ति
सिनासि सिनीथः सिनीथ
सिनामि सिनीवः सिनीमः
स० सिनीयात् सिनीयाताम् सिनीयुः
सिनीयाः सिनीयातम् सिनीयात
सिनीयाम् सिनीयाव सिनीयाम
प० सिनातु सिनीतात् सिनीताम् सिनन्तु
सिनीहि सिनीतात् सिनीतम् सिनीत
सिनानि सिनाव सिनाम
ह्य० असिनात् असिनीताम् असिनन्
असिनाः असिनीतम् असिनीत
असिनाम् असिनीव असिनीम
अ० असैषीत् असैष्टाम् असैषुः
असैषीः असैष्टम् असैष्ट
असैषम् असैष्व असैष्म
प० सिषाय सिष्यतुः सिष्युः
सिषयिथ सिषेथ सिष्यथुः सिष्य
सिषाय सिषय सिष्यिव सिष्यिम
आ० सीयात् सीयास्ताम् सीयासुः
सीयाः सीयास्तम् सीयास्त
सीयासम् सीयास्व सीयास्म
श्व० सेता सेतारौ सेतारः
सेतासि सेतास्थः सेतास्थ
सेतास्मि सेतास्वः सेतास्मः
भ० सेष्यति सेष्यतः सेष्यन्ति
सेष्यसि सेष्यथः सेष्यथ
सेष्यामि सेष्यावः सेष्यामः
क्रि० असेष्यत् असेष्यताम् असेष्यन्
असेष्यः असेष्यतम् असेष्यत
असेष्यम् असेष्याव असेष्याम
व० सिनीते सिनाते सिनते
सिनीषे सिनाथे सिनीध्वे
सिने सिनीवहे सिनीमहे
स० सिनीत सिनीयाताम् सिनीरन्
सिनीथाः सिनीयाथाम् सिनीध्वम्
सिनीय सिनीवहि सिनीमहि
प० सिनीताम् सिनाताम् सिनताम्
सिनीष्व सिनाथाम् सिनीध्वम्
सिनै सिनावहै सिनामहै
ह्य० असिनीत असिनाताम् असिनत
असिनीथाः असिनाथाम् असिनीध्वम्
असिनि असिनीवहि असिनीमहि
अ० असेष्ट असेषाताम् असेषत
असेष्ठाः असेषाथाम् असेड्ढ्वम्-ध्वम्
असेषि असेष्वहि असेष्महि

प० सिष्ये　सिष्याते　सिष्यिरे
सिष्यिषे　सिष्याथे　सिष्यिध्वे-ढ्वे
सिष्ये　सिष्यिवहे　सिष्यिमहे
आ० सेषीष्ट　सेषीयास्ताम्　सेषीरन्
सेषीष्ठाः　सेषीयास्थाम्　सेषीध्वम्
सेषीय　सेषीवहि　सेषीमहि
श्व० सेता　सेतारौ　सेतारः
सेतासे　सेतासाथे　सेताध्वे
सेताहे　सेतास्वहे　सेतास्महे
भ० सेष्यते　सेष्येते　सेष्यन्ते
सेष्यसे　सेष्येथे　सेष्यध्वे
सेष्ये　सेष्यावहे　सेष्यामहे
क्रि० असेष्यत　असेष्येताम्　असेष्यन्त
असेष्यथाः　असेष्येथाम्　असेष्यध्वम्
असेष्ये　असेष्यावहि　असेष्यामहि

॥ प्रींग्श्-तृप्तिकान्त्योः ॥　तृप्तयर्थु, चळकवुं,

व० प्रीणाति　प्रीणीतः　प्रीणन्ति
प्रीणासि　प्रीणीथः　प्रीणीथ
प्रीणामि　प्रीणीवः　प्रीणीमः
स० प्रीणीयात्　प्रीणीयाताम्　प्रीणीयुः
प्रीणीयाः　प्रीणीयातम्　प्रीणीयात
प्रीणीयाम्　प्रीणीयाव　प्रीणीयाम
प० प्रीणातु प्रीणीतात् प्रीणीताम्　प्रीणन्तु
प्रीणीहि प्रीणीतात् प्रीणीतम्　प्रीणीत
प्रीणानि　प्रीणाव　प्रीणाम
ह्य० अप्रीणात्　अप्रीणीताम्　अप्रीणन्
अप्रीणाः　अप्रीणीतम्　अप्रीणीत
अप्रीणाम्　अप्रीणीव　अप्रीणीम
अ० अप्रैषीत्　अप्रैष्टाम्　अप्रैषुः
अप्रैषीः　अप्रैष्टम्　अप्रैष्ट
अप्रैषम्　अप्रैष्व　अप्रैष्म
प० पिप्राय　पिप्रियतुः　पिप्रियुः
पिप्रयिथ पिप्रेथ पिप्रियथुः पिप्रिय
पिप्राय पिप्रय पिप्रियिव पिप्रियिम

आ० प्रीयात्　प्रीयास्ताम्　प्रीयासुः
प्रीयाः　प्रीयास्तम्　प्रीयास्त
प्रीयासम्　प्रीयास्व　प्रीयास्म
श्व० प्रेता　प्रेतारौ　प्रेतारः
प्रेतासि　प्रेतास्थः　प्रेतास्थ
प्रेतास्मि　प्रेतास्वः　प्रेतास्मः
भ० प्रेष्यति　प्रेष्यतः　प्रेष्यन्ति
प्रेष्यसि　प्रेष्यथः　प्रेष्यथ
प्रेष्यामि　प्रेष्यावः　प्रेष्यामः
क्रि० अप्रेष्यत्　अप्रेष्यताम्　अप्रेष्यन्
अप्रेष्यः　अप्रेष्यतम्　अप्रेष्यत
अप्रेष्यम्　अप्रेष्याव　अप्रेष्याम
व० प्रीणीते　प्रीणाते　प्रीणते
प्रीणीषे　प्रीणाथे　प्रीणीध्वे
प्रीणे　प्रीणीवहे　प्रीणीमहे
स० प्रीणीत　प्रीणीयाताम्　प्रीणीरन्
प्रीणीथाः　प्रीणीयाथाम्　प्रीणीध्वम्
प्रीणीय　प्रीणीवहि　प्रीणीमहि
प० प्रीणीताम्　प्रीणाताम्　प्रीणताम्
प्रीणीष्व　प्रीणाथाम्　प्रीणीध्वम्
प्रीणै　प्रीणावहै　प्रीणामहै
ह्य० अप्रीणीत　अप्रीणाताम्　अप्रीणत
अप्रीणीथाः　अप्रीणाथाम्　अप्रीणीध्वम्
अप्रीणि　अप्रीणीवहि　अप्रीणीमहि
अ० अप्रेष्ट　अप्रेषाताम्　अप्रेषत
अप्रेष्ठाः　अप्रेषाथाम् अप्रेढ्ढ्वम्-ढ्वम्
अप्रेषि　अप्रेष्वहि　अप्रेष्महि
प० पिप्रिये　पिप्रियाते　पिप्रियिरे
पिप्रियिषे　पिप्रियाथे　पिप्रियिध्वे-ढ्वे
पिप्रिये　पिप्रियिवहे　पिप्रियिमहे
आ० प्रेषीष्ट　प्रेषीयास्ताम्　प्रेषीरन्
प्रेषीष्ठाः　प्रेषीयास्थाम्　प्रेषीढ्वम्
प्रेषीय　प्रेषीवहि　प्रेषीमहि
श्व० प्रेता　प्रेतारौ　प्रेतारः
प्रेतासे　प्रेतासाथे　प्रेताध्वे
प्रेताहे　प्रेतास्वहे　प्रेतास्महे

भ० प्रेष्यते प्रेष्येते प्रेष्यन्ते
प्रेष्यसे प्रेष्येथे प्रेष्यध्वे
प्रेष्ये प्रेष्यावहे प्रेष्यामहे
क्रि०अप्रेष्यत अप्रेष्येताम् अप्रेष्यन्त
अप्रेष्यथाः अप्रेष्येथाम् अप्रेष्यध्वम्
अप्रेष्ये अप्रेष्यावहि अप्रेष्यामहि

॥ श्रींग्श्-पाके ॥ रांधवुं

श्रीणाति । अश्रैषीत् । शिश्राय ।
श्रीणीते । अश्रेष्ट । शिश्रिये ।

॥ मींग्श्-हिंसायाम् ॥ मारवुं

व० मीनाति मीनीतः मीनन्ति
मीनासि मीनीथः मीनीथ
मीनामि मीनीवः मीनीमः
स० मीनीयात् मीनीयाताम् मीनीयुः
मीनीयाः मीनीयातम् मीनीयात
मीनीयाम् मीनीयाव मीनीयाम
प० मीनातु मीनीतात् मीनीताम् मीनन्तु
मीनीहि मीनीतात् मीनीतम् मीनीत
मीनानि मीनाव मीनाम
ह्य० अमीनात् अमीनीताम् अमीनन्
अमीनाः अमीनीतम् अमीनीत
अमीनाम् अमीनीव अमीनीम
अ० अमासीत् अमासिष्टाम् अमासिषुः
अमासीः अमासिष्टम् अमासिष्ट
अमासिषम् अमासिष्व अमासिष्म
प० ममौ मिम्यतुः मिम्युः
ममाथ ममिथ मिम्यथुः मिम्य
ममौ मिम्यिव मिम्यिम
आ०मीयात् मीयास्ताम् मीयासुः
मीयाः मीयास्तम् मीयास्त
मीयासम् मीयास्व मीयास्म
श्व०माता मातारौ मातारः
मातासि मातास्थः मातास्थ
मातास्मि मातास्वः मातास्मः

भ० मास्यति मास्यतः मास्यन्ति
मास्यसि मास्यथः मास्यथ
मास्यामि मास्यावः मास्यामः
क्रि०अमास्यत् अमास्यताम् अमास्यन्
अमास्यः अमास्यतम् अमास्यत
अमास्यम् अमास्याव अमास्याम
व० मीनीते मीनाते मीनते
मीनीषे मीनाथे मीनीध्वे
मीने मीनीवहे मीनीमहे
स० मीनीत मीनीयाताम् मीनीरन्
मीनीथाः मीनीयाथाम् मीनीध्वम्
मीनीय मीनीवहि मीनीमहि
प० मीनीताम् मीनाताम् मीनताम्
मीनीष्व मीनाथाम् मीनीध्वम्
मीनै मीनावहै मीनामहै
ह्य० अमीनीत अमीनाताम् अमीनत
अमीनीथाः अमीनाथाम् अमीनीध्वम्
अमीनि अमीनीवहि अमीनीमहि
अ० अमास्त अमासाताम् अमासत
अमास्थाः अमासाथाम् अमाध्वम्-द्ध्वम्
अमासि अमास्वहि अमास्महि
प० मिम्ये मिम्याते मिम्यिरे
मिम्यिषे मिम्याथे मिम्यिढ्वे-ध्वे
मिम्ये मिम्यिवहे मिम्यिमहे
आ०मासीष्ट मासीयास्ताम् मासीरन्
मासीष्ठाः मासीयास्थाम् मासीध्वम्
मासीय मासीवहि मासीमहि
श्व०माता मातारौ मातारः
मातासे मातासाथे माताध्वे
माताहे मातास्वहे मातास्महे
भ० मास्यते मास्येते मास्यन्ते
मास्यसे मास्येथे मास्यध्वे
मास्ये मास्यावहे मास्यामहे
क्रि०अमास्यत अमास्येताम् अमास्यन्त
अमास्यथाः अमास्येथाम् अमास्यध्वम्
अमास्ये अमास्यावहि अमास्यामहि

॥ युगृश्–बंधने ॥ बांधवु,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | युनाति | युनीतः | युनन्ति |
| | युनासि | युनीथः | युनीथ |
| | युनामि | युनीवः | युनीमः |
| स० | युनीयात् | युनीयाताम् | युनीयुः |
| | युनीयाः | युनीयातम् | युनीयात |
| | युनीयाम् | युनीयाव | युनीयाम |
| प० | युनातु युनीतात् | युनीताम् | युनन्तु |
| | युनीहि युनीतात् | युनीतम् | युनीत |
| | युनानि | युनाव | युनाम |
| ह्य० | अयुनात् | अयुनीताम् | अयुनन् |
| | अयुनाः | अयुनीतम् | अयुनीत |
| | अयुनाम | अयुनीव | अयुनीम |
| अ० | अयौषीत् | अयौष्टाम् | अयौषुः |
| | अयौषीः | अयौष्टम् | अयौष्ट |
| | अयौषम् | अयौष्व | अयौष्म |
| प० | युयाव | युयुवतुः | युयुवुः |
| | युयविथ युयोथ | युयुवथुः | युयुव |
| | युयाव युयव | युयुविव | युयुविम |
| आ० | यूयात् | यूयास्ताम् | यूयासुः |
| | यूयाः | यूयास्तम् | यूयास्त |
| | यूयासम् | यूयास्व | यूयास्म |
| श्व० | योता | योतारौ | योतारः |
| | योतासि | योतास्थः | योतास्थ |
| | योतास्मि | योतास्वः | योतास्मः |
| भ० | योष्यति | योष्यतः | योष्यन्ति |
| | योष्यसि | योष्यथः | योष्यथ |
| | योष्यामि | योष्यावः | योष्यामः |
| क्रि० | अयोष्यत् | अयोष्यताम् | अयोष्यन् |
| | अयोष्यः | अयोष्यतम् | अयोष्यत |
| | अयोष्यम् | अयोष्याव | अयोष्याम |
| व० | युनीते | युनाते | युनते |
| | युनीषे | युनाथे | युनीध्वे |
| | युने | युनीवहे | युनीमहे |
| स० | युनीत | युनीयाताम् | युनीरन् |
| | युनीथाः | युनीयाथाम् | युनीध्वम् |
| | युनीय | युनीवहि | युनीमहि |
| प० | युनीताम् | युनाताम् | युनताम् |
| | युनीष्व | युनाथाम् | युनीध्वम् |
| | युनै | युनावहै | युनामहै |
| ह्य० | अयुनीत | अयुनाताम् | अयुनत |
| | अयुनीथाः | अयुनाथाम् | अयुनीध्वम् |
| | अयुनि | अयुनीवहि | अयुनीमहि |
| अ० | अयोष्ट | अयोषाताम् | अयोषत |
| | अयोष्ठाः | अयोषाथाम् | अयोड्ढ्वम् ड्वम् |
| | अयोषि | अयोष्वहि | अयोष्महि |
| प० | युयुवे | युयुवाते | युयुविरे |
| | युयुविषे | युयुवाथे | युयुविढ्वे-ध्वे |
| | युयुवे | युयुविवहे | युयुविमहे |
| आ० | योषीष्ट | योषीयास्ताम् | योषीरन् |
| | योषीष्ठाः | योषीयास्थाम् | योषीढ्वम् |
| | योषीय | योषीवहि | योषीमहि |
| श्व० | योता | योतारौ | योतारः |
| | योतासे | योतासाथे | योताध्वे |
| | योताहे | योतास्वहे | योतास्महे |
| भ० | योष्यते | योष्येते | योष्यन्ते |
| | योष्यसे | योष्येथे | योष्यध्वे |
| | योष्ये | योष्यावहे | योष्यामहे |
| क्रि० | अयोष्यत | अयोष्येताम् | अयोष्यन्त |
| | अयोष्यथाः | अयोष्येथाम् | अयोष्यध्वम् |
| | अयोष्ये | अयोष्यावहि | अयोष्यामहि |

॥ स्तम्भू स्तुम्भू स्कम्भू स्कुम्भू ॥ स्तम्भादयः सर्वे सौत्राः धातवो रोधनार्थाः परस्मैपदिनः ॥ प्रथमतृतीयौ स्तम्भार्थौ, द्वितीयो निष्कोषणार्थः। तुर्यो धारणार्थ इति तु माधवः।

॥ स्तम्भू ॥ अक्कड थवुं, थंभवुं अटकवुं, गर्विष्ठ थवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | स्तभ्नाति | स्तभ्नीतः | स्तभ्नन्ति |
| | स्तभ्नासि | स्तभ्नीथः | स्तभ्नीथ |
| | स्तभ्नामि | स्तभ्नीवः | स्तभ्नीमः |

स्तभ्नोति स्तभ्नुतः स्तभ्नुवन्ति
स्तभ्नोषि स्तभ्नुथः स्तभ्नुथ
स्तभ्नोमि स्तभ्नुवः स्तभ्नुमः

विष्टभ्नाति । विष्टभ्नोति ।

दुर्गमवष्टभ्नाति । अवष्टभ्नोति

स० स्तभ्नीयात् स्तभ्नीयाताम् स्तभ्नीयुः
स्तभ्नीयाः स्तभ्नीयातम् स्तभ्नीयात
स्तभ्नीयाम् स्तभ्नीयाव स्तभ्नीयाम
स्तभ्नुयात् स्तभ्नुयाताम् स्तभ्नुयुः
स्तभ्नुयाः स्तभ्नुयातम् स्तभ्नुयात
स्तभ्नुयाम् स्तभ्नुयाव स्तभ्नुयाम

प० स्तभ्नातु स्तभ्नीतात् स्तभ्नीताम् स्तभ्नन्तु
स्तभान स्तभ्नीतात् स्तभ्नीतम् स्तभ्नीत
स्तभ्नानि स्तभ्नाव स्तभ्नाम
स्तभ्नोतु स्तभ्नुतात् स्तभ्नुताम् स्तभ्नुवन्तु
स्तभ्नुहि स्तभ्नुतात् स्तभ्नुतम् स्तभ्नुत
स्तभ्नवानि स्तभ्नवाव स्तभ्नवाम

ह्य० अस्तभ्नात् अस्तभ्नीताम् अस्तभ्नन्
अस्तभ्नाः अस्तभ्नीतम् अस्तभ्नीत
अस्तभ्नाम् अस्तभ्नीव अस्तभ्नीम
अस्तभ्नोत् अस्तभ्नुताम् अस्तभ्नुवन्
अस्तभ्नोः अस्तभ्नुतम् अस्तभ्नुत
अस्तभ्नवम् अस्तभ्नुव अस्तभ्नुम

अ० व्यष्टभत् व्यष्टभताम् व्यष्टभन्
व्यष्टभः व्यष्टभतम् व्यष्टभत
व्यष्टभम् व्यष्टभाव व्यष्टभाम
व्यष्टम्भीत् व्यष्टम्भिष्टाम् व्यष्टम्भिषुः
व्यष्टम्भीः व्यष्टम्भिष्टम् व्यष्टम्भिष्ट
व्यष्टम्भिषम् व्यष्टम्भिष्व व्यष्टम्भिष्म

प० तस्तम्भ तस्तम्भतुः तस्तम्भुः
तस्तम्भिथ तस्तम्भथुः तस्तम्भ
तस्तम्भ तस्तम्भिव तस्तम्भिम

वितष्टम्भ । दुर्गमवतष्टम्भ ।

आ० स्तभ्यात् स्तभ्यास्ताम् स्तभ्यासुः
स्तभ्याः स्तभ्यास्तम् स्तभ्यास्त
स्तभ्यासम् स्तभ्यास्व स्तभ्यास्म

श्व० स्तम्भिता स्तम्भितारौ स्तम्भितारः
स्तम्भितासि स्तम्भितास्थः स्तम्भितास्थ
स्तम्भितास्मि स्तम्भितास्वः स्तम्भितास्मः

भ० स्तम्भिष्यति स्तम्भिष्यतः स्तम्भिष्यन्ति
स्तम्भिष्यसि स्तम्भिष्यथः स्तम्भिष्यथ
स्तम्भिष्यामि स्तम्भिष्यावः स्तम्भिष्यामः

क्रि अस्तम्भिष्यत् अस्तम्भिष्यताम् अस्तम्भिष्यन्
अस्तम्भिष्यः अस्तम्भिष्यतम् अस्तम्भिष्यत
अस्तम्भिष्यम् अस्तम्भिष्याव अस्तम्भिष्याम

॥ स्तुम्भू ॥ रुंधवुं, ढांकवुं, बहार काढवुं,

व० स्तुभ्नाति स्तुभ्नीतः स्तुभ्नन्ति
स्तुभ्नासि स्तुभ्नीथः स्तुभ्नीथ
स्तुभ्नामि स्तुभ्नीवः स्तुभ्नीमः
स्तुभ्नोति स्तुभ्नुतः स्तुभ्नुवन्ति
स्तुभ्नोषि स्तुभ्नुथः स्तुभ्नुथ
स्तुभ्नोमि स्तुभ्नुवः स्तुभ्नुमः

स० स्तुभ्नीयात् स्तुभ्नीयाताम् स्तुभ्नीयुः
स्तुभ्नीयाः स्तुभ्नीयातम् स्तुभ्नीयात
स्तुभ्नीयाम् स्तुभ्नीयाव स्तुभ्नीयाम
स्तुभ्नुयात् स्तुभ्नुयाताम् स्तुभ्नुयुः
स्तुभ्नुयाः स्तुभ्नुयातम् स्तुभ्नुयात
स्तुभ्नुयाम् स्तुभ्नुयाव स्तुभ्नुयाम

प० स्तुभ्नातु स्तुभ्नीताम् स्तुभ्नन्तु
स्तुभ्नीतात्
स्तुभान स्तुभ्नीतात् स्तुभ्नीतम् स्तुभ्नीत
स्तुभ्नानि स्तुभ्नाव स्तुभ्नाम

ह्य० अस्तुभ्नात् अस्तुभ्नीताम् अस्तुभ्नन्
अस्तुभ्नाः अस्तुभ्नीतम् अस्तुभ्नीत
अस्तुभ्नाम् अस्तुभ्नीव अस्तुभ्नीम
अस्तुभ्नोत् अस्तुभ्नुताम् अस्तुभ्नन्
अस्तुभ्नोः अस्तुभ्नुतम् अस्तुभ्नुत

अस्तुभ्नवम् अस्तुभ्नुव अस्तुभ्नुम
अ० अस्तुम्भीत अस्तुम्भिष्टाम् अस्तुम्भिषुः
अस्तुम्भीः अस्तुम्भिष्टम् अस्तुम्भिष्ट
अस्तुम्भिषम् अस्तुम्भिष्व अस्तुम्भिष्म
प० तुस्तुम्भ तुस्तुम्भतुः तुस्तुम्भुः
तुस्तुम्भिथ तुस्तुम्भथुः तुस्तुम्भ
तुस्तुम्भ तुस्तुम्भिव तुस्तुम्भिम
आ० स्तुभ्यात् स्तुभ्यास्ताम् स्तुभ्यासुः
स्तुभ्याः स्तुभ्यास्तम् स्तुभ्यास्त
स्तुभ्यासम् स्तुभ्यास्व स्तुभ्यास्म
श्व० स्तुम्भिता स्तुम्भितारौ स्तुम्भितारः
स्तुम्भितासि स्तुम्भितास्थः स्तुम्भितास्थ
स्तुम्भितास्मि स्तुम्भितास्वः स्तुम्भितास्मः
भ० स्तुम्भिष्यति स्तुम्भिष्यतः स्तुम्भिष्यन्ति
स्तुम्भिष्यसि स्तुम्भिष्यथः स्तुम्भिष्यथ
स्तुम्भिष्यामि स्तुम्भिष्यावः स्तुम्भिष्यामः
क्रि० अस्तुम्भिष्यत् अस्तुम्भिष्यताम् अस्तुम्भिष्यन्
अस्तुम्भिष्यः अस्तुम्भिष्यतम् अस्तुम्भिष्यत
अस्तुम्भिष्यम् अस्तुम्भिष्याव अस्तुम्भिष्याम

॥ स्कम्भू ॥ रुंधवुं, ढांकवुं, थंभवुं

व० स्कभ्नाति स्कभ्नीतः स्कभ्नन्ति
स्कभ्नासि स्कभ्नीथः स्कभ्नीथ
स्कभ्नामि स्कभ्नीवः स्कभ्नीमः
स्कभ्नोति स्कभ्नुतः स्कभ्नुवन्ति
स्कभ्नोषि स्कभ्नुथः स्कभ्नुथ
स्कभ्नोमि स्कभ्नुवः स्कभ्नुमः
विष्कभ्नाति । विस्कभ्नोति ।
स० स्कभ्नीयात् स्कभ्नीयाताम् स्कभ्नीयुः
स्कभ्नीयाः स्कभ्नीयातम् स्कभ्नीयात
स्कभ्नीयाम् स्कभ्नीयाव स्कभ्नीयाम
स्कभ्नुयात् स्कभ्नुयाताम् स्कभ्नुयुः
स्कभ्नुयाः स्कभ्नुयातम् स्कभ्नुयात
स्कभ्नुयाम् स्कभ्नुयाव स्कभ्नुयाम
प० स्कभ्नातु स्कभ्नीताम् स्कभ्नन्तु

स्कभ्नीतात्
स्कभान „ स्कभ्नीतम् स्कभ्नीत
स्कभ्नानि स्कभ्नाव स्कभ्नाम
स्कभ्नोतु स्कभ्नुतात् स्कभ्नुताम् स्कभ्नुवन्तु
स्कभ्नुहि „ स्कभ्नुतम् स्कभ्नुत
स्कभ्नवानि स्कभ्नवाव स्कभ्नवाम
ह्य० अस्कभ्नात् अस्कभ्नीताम् अस्कभ्नन्
अस्कभ्नाः अस्कभ्नीतम् अस्कभ्नीत
अस्कभ्नाम् अस्कभ्नीव अस्कभ्नीम
अस्कभ्नोत् अस्कभ्नुताम् अस्कभ्नुवन्
अस्कभ्नोः अस्कभ्नुतम् अस्कभ्नुत
अस्कभ्नवम् अस्कभ्नुव अस्कभ्नुम
अ० अस्कम्भीत् अस्कम्भिष्टाम् अस्कम्भिषुः
अस्कम्भीः अस्कम्भिष्टम् अस्कम्भिष्ट
अस्कम्भिषम् अस्कम्भिष्व अस्कम्भिष्म
प० चस्कम्भ चस्कम्भतुः चस्कम्भुः
चस्कम्भिथ चस्कम्भथुः चस्कम्भ
चस्कम्भ चस्कम्भिव चस्कम्भिम
आ० स्कभ्यात् स्कभ्यास्ताम् स्कभ्यासुः
स्कभ्याः स्कभ्यास्तम् स्कभ्यास्त
स्कभ्यासम् स्कभ्यास्व स्कभ्यास्म
श्व० स्कम्भिता स्कम्भितारौ स्कम्भितारः
स्कम्भितासि स्कम्भितास्थः स्कम्भितास्थ
स्कम्भितास्मि स्कम्भितास्वः स्कम्भितास्मः
भ० स्कम्भिष्यति स्कम्भिष्यतः स्कम्भिष्यन्ति
स्कम्भिष्यसि स्कम्भिष्यथः स्कम्भिष्यथ
स्कम्भिष्यामि स्कम्भिष्यावः स्कम्भिष्यामः
क्रि० अस्कम्भिष्यत् अस्कम्भिष्यताम् अस्कम्भिष्यन्
अस्कम्भिष्यः अस्कम्भिष्यतम् अस्कम्भिष्यत
अस्कम्भिष्यम् अस्कम्भिष्याव अस्कम्भिष्याम

॥ स्कुम्भू ॥ ढांकवुं, रोकवुं,
धारण करवुं,

व० स्कुभ्नाति स्कुभ्नीतः स्कुभ्नन्ति
स्कुभ्नासि स्कुभ्नीथः स्कुभ्नीथ
स्कुभ्नामि स्कुभ्नीवः स्कुभ्नीमः

स्कुभ्नोति स्कुम्नुतः स्कुम्नुवन्ति
स्कुम्नोषि स्कुम्नुथः स्कुम्नुथ
स्कुभ्नोमि स्कुम्नुवः स्कुम्नुमः
स० स्कुभ्नीयात् स्कुभ्नीयाताम् स्कुभ्नीयुः
स्कुभ्नीयाः स्कुभ्नीयातम् स्कुभ्नीयात
स्कुभ्नीयाम् स्कुभ्नीयाव स्कुभ्नीयाम
स्कुभ्नुयात् स्कुभ्नुयाताम् स्कुभ्नुयुः
स्कुभ्नुयाः स्कुभ्नुयातम् स्कुभ्नुयात
स्कुभ्नुयाम् स्कुभ्नुयाव स्कुभ्नुयाम
प० स्कुभ्नातु स्कुभ्नीतात् स्कुभ्नीताम् स्कुभ्नन्तु
स्कुभान ,, स्कुभ्नीतम् स्कुभ्नीत
स्कुभ्नानि स्कुभ्नाव स्कुभ्नाम
स्कुभ्नोतु स्कुभ्नुतात् स्कुभ्नुताम् स्कुभ्नुवन्तु
स्कुभ्नुहि ,, स्कुभ्नुतम् स्कुभ्नुत
स्कुभ्नवानि स्कुभ्नवाव स्कुभ्नवाम
ह्य० अस्कुभ्नात् अस्कुभ्नीताम् अस्कुभ्नन्
अस्कुभ्नाः अस्कुभ्नीतम् अस्कुभ्नीत
अस्कुभ्नाम् अस्कुभ्नीव अस्कुभ्नीम
अस्कुभ्नोत् अस्कुभ्नुताम् अस्कुभ्नुवन्
अस्कुभ्नोः अस्कुभ्नुतम् अस्कुभ्नुत
अस्कुभ्नवम् अस्कुभ्नुव अस्कुभ्नुम
अ० अस्कुम्भीत् अस्कुम्भिष्टाम् अस्कुम्भिषुः
अस्कुम्भीः अस्कुम्भिष्टम् अस्कुम्भिष्ट
अस्कुम्भिषम् अस्कुम्भिष्व अस्कुम्भिष्म
प० चुस्कुम्भ चुस्कुम्भतुः चुस्कुम्भुः
चुस्कुम्भिथ चुस्कुम्भथुः चुस्कुम्भ
चुस्कुम्भ चुस्कुम्भिव चुस्कुम्भिम
आ० स्कुभ्यात् स्कुभ्यास्ताम् स्कुभ्यासुः
स्कुभ्याः स्कुभ्यास्तम् स्कुभ्यास्त
स्कुभ्यासम् स्कुभ्यास्व स्कुभ्यास्म
श्व० स्कुम्भिता स्कुम्भितारौ स्कुम्भितारः
स्कुम्भितासि स्कुम्भितास्थः स्कुम्भितास्थ
स्कुम्भितास्मि स्कुम्भितास्वः स्कुम्भितास्मः
भ० स्कुम्भिष्यति स्कुम्भिष्यतः स्कुम्भिष्यन्ति
स्कुम्भिष्यसि स्कुम्भिष्यथः स्कुम्भिष्यथ
स्कुम्भिष्यामि स्कुम्भिष्यावः स्कुम्भिष्यामः
अस्कुम्भिष्यत् अस्कुम्भिष्यताम् अस्कुम्भिष्यन्
अस्कुम्भिष्यः अस्कुम्भिष्यतम् अस्कुम्भिष्यत
अस्कुम्भिष्यम् अस्कुम्भिष्याव अस्कुम्भिष्याम

॥ स्कुंञ् आप्रवणे ॥ उद्धार करवो, उठाववुं,

व० स्कुनाति स्कुनीतः स्कुनन्ति
स्कुनासि स्कुनीथः स्कुनीथ
स्कुनामि स्कुनीवः स्कुनीमः
स्कुनोति स्कुनुतः स्कुन्वन्ति
स्कुनोषि स्कुनुथः स्कुनुथ
स्कुनोमि स्कुन्वः स्कुनुवः स्कुन्मः स्कुनुमः
स० स्कुनीयात् स्कुनीयाताम् स्कुनीयुः
स्कुनीयाः स्कुनीयातम् स्कुनीयात
स्कुनीयाम् स्कुनीयाव स्कुनीयाम
स्कुनुयात् स्कुनुयाताम् स्कुनुयुः
स्कुनुयाः स्कुनुयातम् स्कुनुयात
स्कुनुयाम् स्कुनुयाव स्कुनुयाम
प० स्कुनातु स्कुनीतात् स्कुनीताम् स्कुनन्तु
स्कुनीहि ,, स्कुनीतम् स्कुनीत
स्कुनानि स्कुनाव स्कुनाम
स्कुनोतु स्कुनुतात् स्कुनुताम् स्कुन्वन्तु
स्कुनु ,, स्कुनुतम् स्कुनुत
स्कुनवानि स्कुनवाव स्कुनवाम
ह्य० अस्कुनात् अस्कुनीताम् अस्कुनन्
अस्कुनाः अस्कुनीतम् अस्कुनीत
अस्कुनाम् अस्कुनीव अस्कुनीम
अस्कुनोत् अस्कुनुताम् अस्कुन्वन्
अस्कुनोः अस्कुनुतम् अस्कुनुत
अस्कुनवम् अस्कुनुव अस्कुन्व अस्कुनुम अस्कुन्म
अ० अस्कौषीत् अस्कौष्टाम् अस्कौषुः
अस्कौषीः अस्कौष्टम् अस्कौष्ट
अस्कौषम् अस्कौष्व अस्कौष्म
प० चुस्काव चुस्कुवतुः चुस्कुवुः
चुस्कविथ चुस्कोथ चुस्कुवथुः चुस्कुव

| | | | |
|---|---|---|---|
| | चुस्काव चुस्कव चुस्कुविव चुस्कुविम | | |
| आ० | स्कूयात् | स्कूयास्ताम् | स्कूयासुः |
| | स्कूयाः | स्कूयास्तम् | स्कूयास्त |
| | स्कूयासम् | स्कूयास्व | स्कूयास्म |
| श्व० | स्कोता | स्कोतारौ | स्कोतारः |
| | स्कोतासि | स्कोतास्थः | स्कोतास्थ |
| | स्कोतास्मि | स्कोतास्वः | स्कोतास्मः |
| भ० | स्कोष्यति | स्कोष्यतः | स्कोष्यन्ति |
| | स्कोष्यसि | स्कोष्यथः | स्कोष्यथ |
| | स्कोष्यामि | स्कोष्यावः | स्कोष्यामः |
| क्रि० | अस्कोष्यत् | अस्कोष्यताम् | अस्कोष्यन् |
| | अस्कोष्यः | अस्कोष्यतम् | अस्कोष्यत |
| | अस्कोष्यम् | अस्कोष्याव | अस्कोष्याम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | स्कुनीते | स्कुनाते | स्कुनते |
| | स्कुनीषे | स्कुनाथे | स्कुनीध्वे |
| | स्कुने | स्कुनीवहे | स्कुनीमहे |
| | स्कुनुते | स्कुन्वाते | स्कुन्वते |
| | स्कुनुषे | स्कुन्वाथे | स्कुनुध्वे |
| | स्कुन्वे | स्कुन्वहे | स्कुन्महे |
| स० | स्कुनीत | स्कुनीयाताम् | स्कुनीरन् |
| | स्कुनीथाः | स्कुनीयाथाम् | स्कुनीध्वम् |
| | स्कुनीय | स्कुनीवहि | स्कुनीमहि |
| | स्कुन्वीत | स्कुन्वीयाताम् | स्कुन्वीरन् |
| | स्कुन्वीथाः | स्कुन्वीयाथाम् | स्कुन्वीध्वम् |
| | स्कुन्वीय | स्कुन्वीवहि | स्कुन्वीमहि |
| प० | स्कुनीताम् | स्कुनाताम् | स्कुनताम् |
| | स्कुनीष्व | स्कुनाथाम् | स्कुनीध्वम् |
| | स्कुनै | स्कुनावहै | स्कुनामहै |
| | स्कुनुताम् | स्कुन्वाताम् | स्कुन्वताम् |
| | स्कुनुष्व | स्कुन्वाथाम् | स्कुनुध्वम् |
| | स्कुनै | स्कुनवावहै | स्कुनवामहै |
| ह्य० | अस्कुनीत | अस्कुनाताम् | अस्कुनत |
| | अस्कुनीथाः | अस्कुनाथाम् | अस्कुनीध्वम् |
| | अस्कुनि | अस्कुनीवहि | अस्कुनीमहि |
| | अस्कुनुत | अस्कुन्वाताम् | अस्कुन्वत |
| | अस्कुनुथाः | अस्कुन्वाथाम् | अस्कुनुध्वम् |
| | अस्कुन्वि | अस्कुनुवहि | अस्कुनुमहि |
| | | अस्कुन्वहि | अस्कुन्महि |
| अ० | अस्कोष्ट | अस्कोषाताम् | अस्कोषत |
| | अस्कोष्ठाः | अस्कोषाथाम् | अस्कोढ्वम् ड्ढ्वम् |
| | अस्कोषि | अस्कोष्वहि | अस्कोष्महि |
| प० | चुस्कुवे | चुस्कुवाते | चुस्कुविरे |
| | चुस्कुविषे | चुस्कुवाथे | चुस्कुविढ्वे-ध्वे |
| | चुस्कुवे | चुस्कुविवहे | चुस्कुविमहे |
| आ० | स्कोषीष्ट | स्कोषीयास्ताम् | स्कोषीरन् |
| | स्कोषीष्ठाः | स्कोषीयास्थाम् | स्कोषीढ्वम् |
| | स्कोषीय | स्कोषीवहि | स्कोषीमहि |
| श्व० | स्कोता | स्कोतारौ | स्कोतारः |
| | स्कोतासे | स्कोतासाथे | स्कोताध्वे |
| | स्कोताहे | स्कोतास्वहे | स्कोतास्महे |
| भ० | स्कोष्यते | स्कोष्येते | स्कोष्यन्ते |
| | स्कोष्यसे | स्कोष्येथे | स्कोष्यध्वे |
| | स्कोष्ये | स्कोष्यावहे | स्कोष्यामहे |
| क्रि० | अस्कोष्यत | अस्कोष्येताम् | अस्कोष्यन्त |
| | अस्कोष्यथाः | अस्कोष्येथाम् | अस्कोष्यध्वम् |
| | अस्कोष्ये | अस्कोष्यावहि | अस्कोष्यामहि |

क्नूग्श् शब्दे । शब्द करवो,
क्नुनाति । अक्नावीत् । चुक्नविथ ।
क्नुनीते । अक्नविष्ट । चुक्नुवे ।

ग्रहीश् उपादाने । पकडवुं, ग्रहण करवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | गृह्णाति | गृह्णीतः | गृह्णन्ति |
| | गृह्णासि | गृह्णीथः | गृह्णीथ |
| | गृह्णामि | गृह्णीवः | गृह्णीमः |
| स० | गृह्णीयात् | गृह्णीयाताम् | गृह्णीयुः |
| | गृह्णीयाः | गृह्णीयातम् | गृह्णीयात |
| | गृह्णीयाम् | गृह्णीयाव | गृह्णीयाम |
| प० | गृह्णातु | गृह्णीताम् | गृह्णन्तु |
| | गृहाण | गृह्णीतम् | गृह्णीत |
| | गृह्णानि | गृह्णाव | गृह्णाम |
| ह्य० | अगृह्णात् | अगृह्णीताम् | अगृह्णन् |

| | | |
|---|---|---|
| अगृह्णाः | अगृह्णीतम् | अगृह्णीत |
| अगृह्णाम् | अगृह्णीव | अगृह्णीम |
| अ० अग्रहीत् | अग्रहीष्टाम् | अग्रहीषुः |
| अग्रहीः | अग्रहीष्टम् | अग्रहीष्ट |
| अग्रहीषम् | अग्रहीष्व | अग्रहीष्म |
| प० जग्राह | जगृहतुः | जगृहुः |
| जग्रहिथ | जगृहथुः | जगृह |
| जग्राह जग्रह | जगृहिव | जगृहिम |
| आ० गृह्यात् | गृह्यास्ताम् | गृह्यासुः |
| गृह्याः | गृह्यास्तम् | गृह्यास्त |
| गृह्यासम् | गृह्यास्व | गृह्यास्म |
| श्व० ग्रहीता | ग्रहीतारौ | ग्रहीतारः |
| ग्रहीतासि | ग्रहीतास्थः | ग्रहीतास्थ |
| ग्रहीतास्मि | ग्रहीतास्वः | ग्रहीतास्मः |
| भ० ग्रहीष्यति | ग्रहीष्यतः | ग्रहीष्यन्ति |
| ग्रहीष्यसि | ग्रहीष्यथः | ग्रहीष्यथ |
| ग्रहीष्यामि | ग्रहीष्यावः | ग्रहीष्यामः |
| क्रि० अग्रहीष्यत् | अग्रहीष्यताम् | अग्रहीष्यन् |
| अग्रहीष्यः | अग्रहीष्यतम् | अग्रहीष्यत |
| अग्रहीष्यम् | अग्रहीष्याव | अग्रहीष्याम |
| व० गृह्णीते | गृह्णाते | गृह्णते |
| गृह्णीषे | गृह्णाथे | गृह्णीध्वे |
| गृह्णे | गृह्णीवहे | गृह्णीमहे |
| स० गृह्णीत | गृह्णीयाताम् | गृह्णीरन् |
| गृह्णीथाः | गृह्णीयाथाम् | गृह्णीध्वम् |
| गृह्णीय | गृह्णीवहि | गृह्णीमहि |
| प० गृह्णीताम् | गृह्णाताम् | गृह्णताम् |
| गृह्णीष्व | गृह्णाथाम् | गृह्णीध्वम् |
| गृह्णै | गृह्णावहै | गृह्णामहै |
| ह्य० अगृह्णीत | अगृह्णाताम् | अगृह्णत |
| अगृह्णीथाः | अगृह्णाथाम् | अगृह्णीध्वम् |
| अगृह्णि | अगृह्णीवहि | अगृह्णीमहि |
| अ० अग्रहीष्ट | अग्रहीषाताम् | अग्रहीषत |
| अग्रहीष्ठाः | अग्रहीषाथाम् | अग्रहीढ्वम् ढ्वम् ध्वम् |
| अग्रहीषि | अग्रहीष्वहि | अग्रहीष्महि |
| प० जगृहे | जगृहाते | जगृहिरे |
| जगृहिषे | जगृहाथे | जगृहिढ्वे ध्वे |
| जगृहे | जगृहिवहे | जगृहिमहे |
| आ० ग्रहीषीष्ट | ग्रहीषीयास्ताम् | ग्रहीषीरन् |
| ग्रहीषीष्ठाः | ग्रहीषीयास्थाम् | ग्रहीषीध्वम् ढ्वम् |
| ग्रहीषीय | ग्रहीषीवहि | ग्रहीषीमहि |
| श्व० ग्रहीता | ग्रहीतारौ | ग्रहीतारः |
| ग्रहीतासे | ग्रहीतासाथे | ग्रहीताध्वे |
| ग्रहीताहे | ग्रहीतास्वहे | ग्रहीतास्महे |
| भ० ग्रहीष्यते | ग्रहीष्येते | ग्रहीष्यन्ते |
| ग्रहीष्यसे | ग्रहीष्येथे | ग्रहीष्यध्वे |
| ग्रहीष्ये | ग्रहीष्यावहे | ग्रहीष्यामहे |
| क्रि० अग्रहीष्यत | अग्रहीष्येताम् | अग्रहीष्यन्त |
| अग्रहीष्यथाः | अग्रहीष्येथाम् | अग्रहीष्यध्वम् |
| अग्रहीष्ये | अग्रहीष्यावहि | अग्रहीष्यामहि |

## ॥ अथप्वादिः ॥

पूग्‌ श् पवने पवित्र करवुं.

| | | |
|---|---|---|
| व० पुनाति | पुनीतः | पुनन्ति |
| पुनासि | पुनीथः | पुनीथ |
| पुनामि | पुनीवः | पुनीमः |
| स० पुनीयात् | पुनीयाताम् | पुनीयुः |
| पुनीयाः | पुनीयातम् | पुनीयात |
| पुनीयाम् | पुनीयाव | पुनीयाम |
| प० पुनातु पुनीतात् | पुनीताम् | पुनन्तु |
| पुनीहि पुनीतात् | पुनीतम् | पुनीत |
| पुनानि | पुनाव | पुनाम |
| ह्य० अपुनात् | अपुनीताम् | अपुनन् |
| अपुनाः | अपुनीतम् | अपुनीत |
| अपुनाम् | अपुनीव | अपुनीम |
| अ० अपावीत् | अपाविष्टाम् | अपाविषुः |
| अपावीः | अपाविष्टम् | अपाविष्ट |
| अपाविषम् | अपाविष्व | अपाविष्म |

प० पुपाव पुपुवतुः पुपुवुः
पुपविथ पुपुवथुः पुपुव
पुपाव पुपव पुपुविव पुपुविम
आ० पूयात् पूयास्ताम् पूयासुः
पूयाः पूयास्तम् पूयास्त
पूयासम् पूयास्व पूयास्म
श्व० पविता पवितारौ पवितारः
पवितासि पवितास्थः पवितास्थ
पवितास्मि पवितास्वः पवितास्मः
भ० पविष्यति पविष्यतः पविष्यन्ति
पविष्यसि पविष्यथः पविष्यथ
पविष्यामि पविष्यावः पविष्यामः
क्रि० अपविष्यत् अपविष्यताम् अपविष्यन्
अपविष्यः अपविष्यतम् अपविष्यत
अपविष्यम् अपविष्याव अपविष्याम

व० पुनीते पुनाते पुनते
पुनीषे पुनाथे पुनीध्वे
पुने पुनीवहे पुनीमहे
स० पुनीत पुनीयाताम् पुनीरन्
पुनीथाः पुनीयाथाम् पुनीध्वम्
पुनीय पुनीवहि पुनीमहि
प० पुनीताम् पुनाताम् पुनताम्
पुनीष्व पुनाथाम् पुनीध्वम्
पुनै पुनावहै पुनामहै
ह्य० अपुनीत अपुनाताम् अपुनत
अपुनीथाः अपुनाथाम् अपुनीध्वम्
अपुनि अपुनीवहि अपुनीमहि
अ० अपविष्ट अपविषाताम् अपविषत
अपविष्ठाः अपविषाथाम् अपविढ्ढ्वम्
ढ्वम् ध्वम्
अपविषि अपविष्वहि अपविष्महि
प० पुपुवे पुपुवाते पुपुविरे
पुपुविषे पुपुवाथे पुपुविढ्वे ध्वे
पुपुवे पुपुविवहे पुपुविमहे
आ० पविषीष्ट पविषीयास्ताम् पविषीरन्
पविषीष्ठाः पविषीयास्थाम् पविषीढ्वम् ध्वम्
पविषीय पविषीवहि पविषीमहि
श्व० पविता पवितारौ पवितारः
पवितासे पवितासाथे पविताध्वे
पविताहे पवितास्वहे पवितास्महे
भ० पविष्यते पविष्येते पविष्यन्ते
पविष्यसे पविष्येथे पविष्यध्वे
पविष्ये पविष्यावहे पविष्यामहे
क्रि० अपविष्यत अपविष्येताम् अपविष्यन्त
अपविष्यथाः अपविष्येथाम् अपविष्यध्वम्
अपविष्ये अपविष्यावहि अपविष्यामहि

## ॥ अथ ल्वादिः ॥

लूग्श् छेदने । छेत्तुं,

व० लुनाति लुनीतः लुनन्ति
लुनासि लुनीथः लुनीथ
लुनामि लुनीवः लुनीमः
स० लुनीयात् लुनीयाताम् लुनीयुः
लुनीयाः लुनीयातम् लुनीयात
लुनीयाम् लुनीयाव लुनीयाम
प० लुनातु लुनीतात् लुनीताम् लुनन्तु
लुनीहि लुनीतात् लुनीतम् लुनीत
लुनानि लुनाव लुनाम
ह्य० अलुनात् अलुनीताम् अलुनन्
अलुनाः अलुनीतम् अलुनीत
अलुनाम् अलुनीव अलुनीम
अ० अलावीत् अलाविष्टाम् अलाविषुः
अलावीः अलाविष्टम् अलाविष्ट
अलाविषम् अलाविष्व अलाविष्म
प० लुलाव लुलुवतुः लुलुवुः
लुलविथ लुलुवथुः लुलुव
लुलाव लुलव लुलुविव लुलुविम
आ० लूयात् लूयास्ताम् लूयासुः
लूयाः लूयास्तम् लूयास्त
लूयासम् लूयास्व लूयास्म

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्व० | लविता | लवितारौ | लवितारः |
| | लवितासि | लवितास्थः | लवितास्थ |
| | लवितास्मि | लवितास्वः | लवितास्मः |
| भ० | लविष्यति | लविष्यतः | लविष्यन्ति |
| | लविष्यसि | लविष्यथः | लविष्यथ |
| | लविष्यामि | लविष्यावः | लविष्यामः |
| क्रि० | अलविष्यत् | अलविष्यताम् | अलविष्यन् |
| | अलविष्यः | अलविष्यतम् | अलविष्यत |
| | अलविष्यम् | अलविष्याव | अलविष्याम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | लुनीते | लुनाते | लुनते |
| | लुनीषे | लुनाथे | लुनीध्वे |
| | लुने | लुनीवहे | लुनीमहे |
| स० | लुनीत | लुनीयाताम् | लुनीरन् |
| | लुनीथाः | लुनीयाथाम् | लुनीध्वम् |
| | लुनीय | लुनीवहि | लुनीमहि |
| प० | लुनीताम् | लुनाताम् | लुनताम् |
| | लुनीष्व | लुनाथाम् | लुनीध्वम् |
| | लुनै | लुनावहै | लुनामहै |
| ह्य० | अलुनीत | अलुनाताम् | अलुनत |
| | अलुनीथाः | अलुनाथाम् | अलुनीध्वम् |
| | अलुनि | अलुनीवहि | अलुनीमहि |
| अ० | अलविष्ट | अलविषाताम् | अलविषत |
| | अलविष्ठाः | अलविषाथाम् | अलविड्ढ्वम् ढ्वम्-ध्वम् |
| | अलविषि | अलविष्वहि | अलविष्महि |
| प० | लुलुवे | लुलुवाते | लुलुविरे |
| | लुलुविषे | लुलुवाथे | लुलुविढ्वे-ध्वे |
| | लुलुवे | लुलुविवहे | लुलुविमहे |
| आ० | लविषीष्ट | लविषीयास्ताम् | लविषीरन् |
| | लविषीष्ठाः | लविषीयास्थाम् | लविषीढ्वम्-ध्वम् |
| | लविषीय | लविषीवहि | लविषीमहि |
| श्व० | लविता | लवितारौ | लवितारः |
| | लवितासे | लवितासाथे | लविताध्वे |
| | लविताहे | लवितास्वहे | लवितास्महे |
| भ० | लविष्यते | लविष्येते | लविष्यन्ते |
| | लविष्यसे | लविष्येथे | लविष्यध्वे |
| | लविष्ये | लविष्यावहे | लविष्यामहे |
| क्रि० | अलविष्यत | अलविष्येताम् | अलविष्यन्त |
| | अलविष्यथाः | अलविष्येथाम् | अलविष्यध्वम् |
| | अलविष्ये | अलविष्यावहि | अलविष्यामहि |

॥ धूगश्—कम्पने ॥ ध्रुजवुं.

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | धुनाति | धुनीतः | धुनन्ति |
| | धुनासि | धुनीथः | धुनीथ |
| | धुनामि | धुनीवः | धुनीमः |
| स० | धुनीयात् | धुनीयाताम् | धुनीयुः |
| | धुनीयाः | धुनीयातम् | धुनीयात |
| | धुनीयाम् | धुनीयाव | धुनीयाम |
| प० | धुनातु धुनीतात् | धुनीताम् | धुनन्तु |
| | धुनीहि धुनीतात् | धुनीतम् | धुनीत |
| | धुनानि | धुनाव | धुनाम |
| ह्य० | अधुनात् | अधुनीताम् | अधुनन् |
| | अधुनाः | अधुनीतम् | अधुनीत |
| | अधुनाम् | अधुनीव | अधुनीम |
| अ० | अधावीत् | अधाविष्टाम् | अधाविषुः |
| | अधावीः | अधाविष्टम् | अधाविष्ट |
| | अधाविषम् | अधाविष्व | अधाविष्म |
| प० | दुधाव | दुधुवतुः | दुधुवुः |
| | दुधविथ | दुधुवथुः | दुधुव |
| | दुधाव दुधव | दुधुविव | दुधुविम |

मतान्तरे—दुधोथ—इत्यापि

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | धूयात् | धूयास्ताम् | धूयासुः |
| | धूयाः | धूयास्तम् | धूयास्त |
| | धूयासम् | धूयास्व | धूयास्म |
| श्व० | धविता | धवितारौ | धवितारः |
| | धवितासि | धवितास्थः | धवितास्थ |
| | धवितास्मि | धवितास्वः | धवितास्मः |
| | धोता | धोतारौ | धोतारः |
| | धोतासि | धोतास्थः | धोतास्थ |
| | धोतास्मि | धोतास्वः | धोतास्मः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| भ० | धविष्यति | धविष्यतः | धविष्यन्ति |
| | धविष्यसि | धविष्यथः | धविष्यथ |
| | धविष्यामि | धविष्यावः | धविष्यामः |
| | धोष्यति | धोष्यतः | धोष्यन्ति |
| | धोष्यसि | धोष्यथः | धोष्यथ |
| | धोष्यामि | धोष्यावः | धोष्यामः |
| क्रि० | अधविष्यत् | अधविष्यताम् | अधविष्यन् |
| | अधविष्यः | अधविष्यतम् | अधविष्यत |
| | अधविष्यम् | अधविष्याव | अधविष्याम |
| | अधोष्यत् | अधोष्यताम् | अधोष्यन् |
| | अधोष्यः | अधोष्यतम् | अधोष्यत |
| | अधोष्यम् | अधोष्याव | अधोष्याम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | धुनीते | धुनाते | धुनते |
| | धुनीषे | धुनाथे | धुनीध्वे |
| | धुने | धुनीवहे | धुनीमहे |
| स० | धुनीत | धुनीयाताम् | धुनीरन् |
| | धुनीथाः | धुनीयाथाम् | धुनीध्वम् |
| | धुनीय | धुनीवहि | धुनीमहि |
| प० | धुनीताम् | धुनाताम् | धुनताम् |
| | धुनीष्व | धुनाथाम् | धुनीध्वम् |
| | धुनै | धुनावहै | धुनामहै |
| ह्य० | अधुनीत | अधुनाताम् | अधुनत |
| | अधुनीथाः | अधुनाथाम् | अधुनीध्वम् |
| | अधुनि | अधुनीवहि | अधुनीमहि |
| अ० | अधविष्ट | अधविषाताम् | अधविषत |
| | अधविष्ठाः | अधविषाथाम् | अधविड्ढ्वम् ढ्वम्-ध्वम् |
| | अधविषि | अधविष्वहि | अधविष्महि |
| | अधोष्ट | अधोषाताम् | अधोषत |
| | अधोष्ठाः | अधोषाथाम् | अधोड्ढ्वम्-ध्वम् |
| | अधोषि | अधोष्वहि | अधोष्महि |
| प० | दुधुवे | दुधुवाते | दुधुविरे |
| | दुधुविषे | दुधुवाथे | दुधुविढ्वे-ध्वे |
| | दुधुवे | दुधुविवहे | दुधुविमहे |

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | धविषीष्ट | धविषीयास्ताम् | धविषीरन् |
| | धविषीष्ठाः | धविषीयास्थाम् | धविषीढ्वम्ध्वम् |
| | धविषीय | धविषीवहि | धविषीमहि |
| | धोषीष्ट | धोषीयास्ताम् | धोषीरन् |
| | धोषीष्ठाः | धोषीयास्थाम् | धोषीढ्वम् |
| | धोषीय | धोषीवहि | धोषीमहि |
| श्व० | धविता | धवितारौ | धवितारः |
| | धवितासे | धवितासाथे | धविताध्वे |
| | धविताहे | धवितास्वहे | धवितास्महे |
| | धोता | धोतारौ | धोतारः |
| | धोतासे | धोतासाथे | धोताध्वे |
| | धोताहे | धोतास्वहे | धोतास्महे |
| भ० | धविष्यते | धविष्येते | धविष्यन्ते |
| | धविष्यसे | धविष्येथे | धविष्यध्वे |
| | धविष्ये | धविष्यावहे | धविष्यामहे |
| | धोष्यते | धोष्येते | धोष्यन्ते |
| | धोष्यसे | धोष्येथे | धोष्यध्वे |
| | धोष्ये | धोष्यावहे | धोष्यामहे |
| क्रि० | अधविष्यत | अधविष्येताम् | अधविष्यन्त |
| | अधविष्यथाः | अधविष्येथाम् | अधविष्यध्वम् |
| | अधविष्ये | अधविष्यावहि | अधविष्यामहि |
| | अधोष्यत | अधोष्येताम् | अधोष्यन्त |
| | अधोष्यथाः | अधोष्येथाम् | अधोष्यध्वम् |
| | अधोष्ये | अधोष्यावहि | अधोष्यामहि |

॥ स्तृंगृश्–आच्छादने ॥ ढांकवुं.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| व० | स्तृणाति | स्तृणीतः | स्तृणन्ति | |
| | स्तृणासि | स्तृणीथः | स्तृणीथ | |
| | स्तृणामि | स्तृणीवः | स्तृणीमः | |
| स० | स्तृणीयात् | स्तृणीयाताम् | स्तृणीयुः | |
| | स्तृणीयाः | स्तृणीयातम् | स्तृणीयात | |
| | स्तृणीयाम् | स्तृणीयाव | स्तृणीयाम | |
| प० | स्तृणातु | स्तृणीतात् | स्तृणीताम् | स्तृणन्तु |
| | स्तृणीहि | स्तृणीतात् | स्तृणीतम् | स्तृणीत |
| | स्तृणानि | स्तृणाव | स्तृणाम | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ह्य० | अस्तृणात् | अस्तृणीताम् | अस्तृणन् |
| | अस्तृणाः | अस्तृणीतम् | अस्तृणीत |
| | अस्तृणाम् | अस्तृणीव | अस्तृणीम |
| अ० | अस्तारीत् | अस्तारिष्टाम् | अस्तारिषुः |
| | अस्तारीः | अस्तारिष्टम् | अस्तारिष्ट |
| | अस्तारिषम् | अस्तारिष्व | अस्तारिष्म |
| प० | तस्तार | तस्तरतुः | तस्तरुः |
| | तस्तरिथ | तस्तरथुः | तस्तर |
| | तस्तार तस्तर | तस्तरिव | तस्तरिम |
| आ० | स्तीर्यात् | स्तीर्यास्ताम् | स्तीर्यासुः |
| | स्तीर्याः | स्तीर्यास्तम् | स्तीर्यास्त |
| | स्तीर्यासम् | स्तीर्यास्व | स्तीर्यास्म |
| श्व० | स्तरिता | स्तरितारौ | स्तरितारः |
| | स्तरितासि | स्तरितास्थः | स्तरितास्थ |
| | स्तरितास्मि | स्तरितास्वः | स्तरितास्मः |
| | स्तरीता | स्तरीतारौ | स्तरीतारः |
| | स्तरीतासि | स्तरीतास्थः | स्तरीतास्थ |
| | स्तरीतास्मि | स्तरीतास्वः | स्तरीतास्मः |
| भ० | स्तरिष्यति | स्तरिष्यतः | स्तरिष्यन्ति |
| | स्तरिष्यसि | स्तरिष्यथः | स्तरिष्यथ |
| | स्तरिष्यामि | स्तरिष्यावः | स्तरिष्यामः |
| | स्तरीष्यति | स्तरीष्यतः | स्तरीष्यन्ति |
| | स्तरीष्यसि | स्तरीष्यथः | स्तरीष्यथ |
| | स्तरीष्यामि | स्तरीष्यावः | स्तरीष्यामः |
| क्रि० | अस्तरिष्यत् | अस्तरिष्यताम् | अस्तरिष्यन् |
| | अस्तरिष्यः | अस्तरिष्यतम् | अस्तरिष्यत |
| | अस्तरिष्यम् | अस्तरिष्याव | अस्तरिष्याम |
| | अस्तरीष्यत् | अस्तरीष्यताम् | अस्तरीष्यन् |
| | अस्तरीष्यः | अस्तरीष्यतम् | अस्तरीष्यत |
| | अस्तरीष्यम् | अस्तरीष्याव | अस्तरीष्याम |
| व० | स्तृणीते | स्तृणाते | स्तृणते |
| | स्तृणीषे | स्तृणाथे | स्तृणीध्वे |
| | स्तृणे | स्तृणीवहे | स्तृणीमहे |
| स० | स्तृणीत | स्तृणीयाताम् | स्तृणीरन् |
| | स्तृणीथाः | स्तृणीयाथाम् | स्तृणीध्वम् |
| | स्तृणीय | स्तृणीवहि | स्तृणीमहि |
| प० | स्तृणीताम् | स्तृणाताम् | स्तृणताम् |
| | स्तृणीष्व | स्तृणाथाम् | स्तृणीध्वम् |
| | स्तृणै | स्तृणावहै | स्तृणामहै |
| ह्य० | अस्तृणीत | अस्तृणाताम् | अस्तृणत |
| | अस्तृणीथाः | अस्तृणाथाम् | अस्तृणीध्वम् |
| | अस्तृणि | अस्तृणीवहि | अस्तृणीमहि |
| अ० | अस्तरिष्ट | अस्तरिषाताम् | अस्तरिषत |
| | अस्तरिष्ठाः | अस्तरिषाथाम् | अस्तरिढ्वम् ढ्वम्-ध्वम् |
| | अस्तरिषि | अस्तरिष्वहि | अस्तरिष्महि |
| | अस्तरीष्ट | अस्तरीषाताम् | अस्तरीषत |
| | अस्तरीष्ठाः | अस्तरीषाथाम् | अस्तरीढ्ढ्वम् ढ्वम्-ध्वम् |
| | अस्तरीषि | अस्तरीष्वहि | अस्तरीष्महि |
| | अस्तीर्ष्ट | अस्तीर्षाताम् | अस्तीर्षत |
| | अस्तीर्ष्ठाः | अस्तीर्षाथाम् | अस्तीर्ढ्ढ्वम् अस्तीर्ढ्वम् |
| | अस्तीर्षि | अस्तीर्ष्वहि | अस्तीर्ष्महि |
| प० | तस्तरे | तस्तराते | तस्तरिरे |
| | तस्तरिषे | तस्तराथे | तस्तरिढ्वे-ध्वे |
| | तस्तरे | तस्तरिवहे | तस्तरिमहे |

एवं स्तरिषीष्ट, स्तरीषीष्ट, स्तरिता स्तरीता स्तरिष्यते स्तरीष्यते अस्तरिष्यत अस्तरीष्यत इत्यादि ।

॥ कॄश्-हिंसायाम् ॥ मारवुं.

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | कृणाति | कृणीतः | कृणन्ति |
| | कृणासि | कृणीथः | कृणीथ |
| | कृणामि | कृणीवः | कृणीमः |
| स० | कृणीयात् | कृणीयाताम् | कृणीयुः |
| | कृणीयाः | कृणीयातम् | कृणीयात |
| | कृणीयाम् | कृणीयाव | कृणीयाम |

प० कृणातु कृणीतात् कृणीताम् कृणन्तु
कृणीहि कृणीतात् कृणीतम् कृणीत
कृणानि कृणाव कृणाम
ह्य० अकृणात् अकृणीताम् अकृणन्
अकृणाः अकृणीतम् अकृणीत
अकृणाम् अकृणीव अकृणीम
अ० अकारीत् अकारिष्टाम् अकारिषुः
अकारीः अकारिष्टम् अकारिष्ट
अकारिषम् अकारिष्व अकारिष्म
प० चकार चकरतुः चकरुः
चकरिथ चकरथुः चकर
चकार चकर चकरिव चकरिम
आ०कीर्यात् कीर्यास्ताम् कीर्यासुः
कीर्याः कीर्यास्तम् कीर्यास्त
कीर्यासम् कीर्यास्व कीर्यास्म
श्व०करिता करितारौ करितारः
करितासि करितास्थः करितास्थ
करितास्मि करितास्वः करितास्मः
करीता करीतारौ करीतारः
करीतासि करीतास्थः करीतास्थ
करीतास्मि करीतास्वः करीतास्मः
भ० करिष्यति करिष्यतः करिष्यन्ति
करिष्यसि करिष्यथः करिष्यथ
करिष्यामि करिष्यावः करिष्यामः
करीष्यति करीष्यतः करीष्यन्ति
करीष्यसि करीष्यथः करीष्यथ
करीष्यामि करीष्यावः करीष्यामः
क्रि०अकरिष्यत् अकरिष्यताम् अकरिष्यन्
अकरिष्यः अकरिष्यतम् अकरिष्यत
अकरिष्यम् अकरिष्याव अकरिष्याम
अकरीष्यत् अकरीष्यताम् अकरीष्यन्
अकरीष्यः अकरीष्यतम् अकरीष्यत
अकरीष्यम् अकरीष्याव अकरीष्याम
व० कृणीते कृणाते कृणते
कृणीषे कृणाथे कृणीध्वे
कृणे कृणीवहे कृणीमहे

स० कृणीत कृणीयाताम् कृणीरन्
कृणीथाः कृणीयाथाम् कृणीध्वम्
कृणीय कृणीवहि कृणीमहि
प० कृणीताम् कृणाताम् कृणताम्
कृणीष्व कृणाथाम् कृणीध्वम्
कृणै कृणावहै कृणामहै
ह्य० अकृणीत अकृणाताम् अकृणत
अकृणीथाः अकृणाथाम् अकृणीध्वम्
अकृणि अकृणीवहि अकृणीमहि
अ० अकरिष्ट अकरिषाताम् अकरिषत
अकरिष्ठाः अकरिषाथाम् अकरिढ्ढ्वम्
ढ्वम्-ध्वम्
अकरिषि अकरिष्वहि अकरिष्महि
अकरीष्ट अकरीषाताम् अकरीषत
अकरीष्ठाः अकरीषाथाम् अकरीढ्ढ्वम्
ढ्वम् ध्वम्
अकरीषि अकरीष्वहि अकरीष्महि
अकीर्ष्ट अकीर्षाताम् अकीर्षत
अकीर्ष्ठाः अकीर्षाथाम् अकीर्ढ्वम्-ड्ढ्वम्
अकीर्षि अकीर्ष्वहि अकीर्ष्महि
प० चकरे चकराते चकरिरे
चकरिषे चकराथे चकरिढ्वे-ध्वे
चकरे चकरिवहे चकरिमहे
आ०करिषीष्ट करिषीयास्ताम् करिषीरन्
करिषीष्ठाः करिषीयास्थाम् करिषीध्वम्-ढ्वम्
करिषीय करिषीवहि करिषीमहि
कीर्षीष्ट कीर्षीयास्ताम् कीर्षीरन्
कीर्षीष्ठाः कीर्षीयास्थाम् कीर्षीध्वम्
कीर्षीय कीर्षीवहि कीर्षीमहि
श्व०करिता करितारौ करितारः
करितासे करितासाथे करिताध्वे
करिताहे करितास्वहे करितास्महे
करीता करीतारौ करीतारः
करीतासे करीतासाथे करीताध्वे
करीताहे करीतास्वहे करीतास्महे

भ० करिष्यते करिष्येते करिष्यन्ते
करिष्यसे करिष्येथे करिष्यध्वे
करिष्ये करिष्यावहे करिष्यामहे
करीष्यते करीष्येते करीष्यन्ते
करीष्यसे करीष्येथे करीष्यध्वे
करीष्ये करीष्यावहे करीष्यामहे
क्रि०अकरिष्यत अकरिष्येताम् अकरिष्यन्त
अकरिष्यथाः अकरिष्येथाम् अकरिष्यध्वम्
अकरिष्ये अकरिष्यावहि अकरिष्यामहि
अकरीष्यत अकरीष्येताम् अकरीष्यन्त
अकरीष्यथाः अकरीष्येथाम् अकरीष्यध्वम्
अकरीष्ये अकरीष्यावहि अकरीष्यामहि

॥ वृँञ्-वरणे ॥ स्वीकारवुं, वरवुं,

व० वृणाति वृणीतः वृणन्ति
वृणासि वृणीथः वृणीथ
वृणामि वृणीवः वृणीमः
स० वृणीयात् वृणीयाताम् वृणीयुः
वृणीयाः वृणीयातम् वृणीयात
वृणीयाम् वृणीयाव वृणीयाम
प० वृणातु वृणीतात् वृणीताम् वृणन्तु
वृणीहि ,, वृणीतम् वृणीत
वृणानि वृणाव वृणाम
ह्य० अवृणात् अवृणीताम् अवृणन्
अवृणाः अवृणीतम् अवृणीत
अवृणाम् अवृणीव अवृणीम
अ० अवारीत् अवारिष्टाम् अवारिषुः
अवारीः अवारिष्टम् अवारिष्ट
अवारिषम् अवारिष्व अवारिष्म
प० ववार ववरतुः ववरुः
ववरिथ ववरथुः ववर
ववार ववर ववरिव ववरिम
आ०वूर्यात् वूर्यास्ताम् वूर्यासुः
वूर्याः वूर्यास्तम् वूर्यास्त
वूर्यासम् वूर्यास्व वूर्यास्म
श्व०वरिता वरितारौ वरितारः
वरितासि वरितास्थः वरितास्थ
वरितास्मि वरितास्वः वरितास्मः
वरीता वरीतारौ वरीतारः
वरीतासि वरीतास्थः वरीतास्थ
वरीतास्मि वरीतास्वः वरीतास्मः
भ० वरिष्यति वरिष्यतः वरिष्यन्ति
वरिष्यसि वरिष्यथः वरिष्यथ
वरिष्यामि वरिष्यावः वरिष्यामः
वरीष्यति वरीष्यतः वरीष्यन्ति
वरीष्यसि वरीष्यथः वरीष्यथ
वरीष्यामि वरीष्यावः वरीष्यामः
क्रि०अवरिष्यत् अवरिष्यताम् अवरिष्यन्
अवरिष्यः अवरिष्यतम् अवरिष्यत
अवरिष्यम् अवरिष्याव अवरिष्याम
अवरीष्यत् अवरीष्यताम् अवरीष्यन्
अवरीष्यः अवरीष्यतम् अवरीष्यत
अवरीष्यम् अवरीष्याव अवरीष्याम
व० वृणीते वृणाते वृणते
वृणीषे वृणाथे वृणीध्वे
वृणे वृणीवहे वृणीमहे
स० वृणीत वृणीयाताम् वृणीरन्
वृणीथाः वृणीयाथाम् वृणीध्वम्
वृणीय वृणीवहि वृणीमहि
प० वृणीताम् वृणाताम् वृणताम्
वृणीष्व वृणाथाम् वृणीध्वम्
वृणै वृणावहै वृणामहै
ह्य० अवृणीत अवृणाताम् अवृणत
अवृणीथाः अवृणाथाम् अवृणीध्वम्
अवृणि अवृणीवहि अवृणीमहि
अ० अवरिष्ट अवरिषाताम् अवरिषत
अवरिष्ठाः अवरिषाथाम् अवरिढ्ढ्वम्
ढ्वम्-ध्वम्
अवरिषि अवरिष्वहि अवरिष्महि
अवरीष्ट अवरीषाताम् अवरीषत

अवरीष्ठाः अवरीषाथाम् अवरीढ्ढ्वम्
ढ्वम्-ध्वम्
अवरीषि अवरीष्वहि अवरीष्महि
अवूर्ष्ट अवूर्षाताम् अवूर्षत
अवूर्ष्ठाः अवूर्षाथाम् अवूर्ढ्वम्-ढ्ढ्वम्
अवूर्षि अवूर्ष्वहि अवूर्ष्महि
प० ववरे ववराते ववरिरे
ववरिषे ववराथे ववरिढ्वे-ध्वे
ववरे ववरिवहे ववरिमहे
आ०वरिषीष्ट वरिषीयास्ताम् वरिषीरन्
वरिषीष्ठाः वरिषीयास्थाम् वरिषीध्वम्
ढ्वम्
वरिषीय वरिषीवहि वरिषीमहि
वूर्षीष्ट वूर्षीयास्ताम् वूर्षीरन्
वूर्षीष्ठाः वूर्षीयास्थाम् वूर्षीढ्वम्
वूर्षीय वूर्षीवहि वूर्षीमहि
श्व०वरिता वरितारौ वरितारः
वरितासे वरितासाथे वरिताध्वे
वरिताहे वरितास्वहे वरितास्महे
वरीता वरीतारौ वरीतारः
वरीतासे वरीतासाथे वरीताध्वे
वरीताहे वरीतास्वहे वरीतास्महे
भ० वरिष्यते वरिष्येते वरिष्यन्ते
वरिष्यसे वरिष्येथे वरिष्यध्वे
वरिष्ये वरिष्यावहे वरिष्यामहे
वरीष्यते वरीष्येते वरीष्यन्ते
वरीष्यसे वरीष्येथे वरीष्यध्वे
वरीष्ये वरीष्यावहे वरीष्यामहे
क्रि०अवरिष्यत अवरिष्येताम् अवरिष्यन्त
अवरिष्यथाः अवरिष्येथाम् अवरिष्यध्वम्
अवरिष्ये अवरिष्यावहि अवरिष्यामहि
अवरीष्यत अवरीष्येताम् अवरीष्यन्त
अवरीष्यथाः अवरीष्येथाम् अवरीष्यध्वम्
अवरीष्ये अवरीष्यावहि अवरीष्यामहि

## ॥ इति क्र्यादय उभयपदिनः ॥

## ॥ अथ परस्मैपदिनः ॥

॥ ज्यांश्-हानौ ॥ क्षीण थवुं, घसाइ जवुं,

व० जिनाति जिनीतः जिनन्ति
जिनासि जिनीथः जिनीथ
जिनामि जिनीवः जिनीमः
स० जिनीयात् जिनीयाताम् जिनीयुः
जिनीयाः जिनीयातम् जिनीयात
जिनीयाम् जिनीयाव जिनीयाम
प० जिनातु जिनीतात् जिनीताम् जिनन्तु
जिनीहि जिनीतात् जिनीतम् जिनीत
जिनानि जिनाव जिनाम
ह्य० अजिनात् अजिनीताम् अजिनन्
अजिनाः अजिनीतम् अजिनीत
अजिनाम् अजिनीव अजिनीम
अ० अज्यासीत् अज्यासिष्टाम् अज्यासिषुः
अज्यासीः अज्यासिष्टम् अज्यासिष्ट
अज्यासिषम् अज्यासिष्व अज्यासिष्म
प० जिज्यौ जिज्यतुः जिज्युः
जिज्याथ जिज्यिथ जिज्यथुः जिज्य
जिज्यौ जिज्यिव जिज्यिम
आ०जीयात् जीयास्ताम् जीयासुः
जीयाः जीयास्तम् जीयास्त
जीयासम् जीयास्व जीयास्म
श्व०ज्याता ज्यातारौ ज्यातारः
ज्यातासि ज्यातास्थः ज्यातास्थ
ज्यातास्मि ज्यातास्वः ज्यातास्मः
भ० ज्यास्यति ज्यास्यतः ज्यास्यन्ति
ज्यास्यसि ज्यास्यथः ज्यास्यथ
ज्यास्यामि ज्यास्यावः ज्यास्यामः

क्रि०अज्यास्यत् अज्यास्यताम् अज्यास्यन्
अज्यास्यः अज्यास्यतम् अज्यास्यत
अज्यास्यम् अज्यास्याव अज्यास्याम

॥ रींश्-गतिरेषणयोः ॥ जवुं,
हिंसाकरवी

रिणाति । अरैषीत् । रिराय
रिरयिथ । रिरेथ ।

॥ लींश्-श्लेषणे, ॥ ओगळवुं मळीजवुं

व० लिनाति लिनीतः लिनन्ति
लिनासि लिनीथः लिनीथ
लिनामि लिनीवः लिनीमः
स० लिनीयात् लिनीयाताम् लिनीयुः
लिनीयाः लिनीयातम् लिनीयात
लिनीयाम् लिनीयाव लिनीयाम
प० लिनातु लिनीतात् लिनीताम् लिनन्तु
लिनीहि लिनीतात् लिनीतम् लिनीत
लिनानि लिनाव लिनाम
ह्य० अलिनात् अलिनीताम् अलिनन्
अलिनाः अलिनीतम् अलिनीत
अलिनाम् अलिनीव अलिनीम
अ० अलासीत् अलासिष्टाम् अलासिषुः
अलासीः अलासिष्टम् अलासिष्ट
अलासिषम् अलासिष्व अलासिष्म
अलैषीत् अलैष्टाम् अलैषुः
अलैषीः अलैष्टम् अलैष्ट
अलैषम् अलैष्व अलैष्म
प० लिलाय लल्लौ लिल्यतुः लिल्युः
लिलयिथ लिलेथ लिल्यथुः लिल्य
ललिथ ललाथ
लिलाय लिलय ललौ लिल्यिव लिल्यिम
आ०लीयात् लीयास्ताम् लीयासुः
लीयाः लीयास्तम् लीयास्त
लीयासम् लीयास्व लीयास्म

श्व०लाता लातारौ लातारः
लातासि लातास्थः लातास्थ
लातास्मि लातास्वः लातास्मः
लेता लेतारौ लेतारः
लेतासि लेतास्थः लेतास्थ
लेतास्मि लेतास्वः लेतास्मः
भ० लास्यति लास्यतः लास्यन्ति
लास्यसि लास्यथः लास्यथ
लास्यामि लास्यावः लास्यामः
लेष्यति लेष्यतः लेष्यन्ति
लेष्यसि लेष्यथः लेष्यथ
लेष्यामि लेष्यावः लेष्यामः
क्रि०अलास्यत् अलास्यताम् अलास्यन्
अलास्यः अलास्यतम् अलास्यत
अलास्यम् अलास्याव अलास्याम
अलेष्यत् अलेष्यताम् अलेष्यन्
अलेष्यः अलेष्यतम् अलेष्यत
अलेष्यम् अलेष्याव अलेष्याम

॥ ब्लींश्-वरणे ॥ वरवुं
ब्लिनाति । अब्लैषीत् । बिब्लाय ।

॥ प्लींश्-गतौ ॥ जवुं
प्लिनाति । अप्लैषीत् । पिप्लाय ।

॥ कॄॢशॄश्-हिंसायाम् ॥ मारवुं

व० कृणाति कृणीतः कृणन्ति
कृणासि कृणीथः कृणीथ
कृणामि कृणीवः कृणीमः
स० कृणीयात् कृणीयाताम् कृणीयुः
कृणीयाः कृणीयातम् कृणीयात
कृणीयाम् कृणीयाव कृणीयाम
प० कृणातु कृणीतात् कृणीताम् कृणन्तु
कृणीहि कृणीतात् कृणीतम् कृणीत
कृणानि कृणाव कृणाम
ह्य० अकृणात् अकृणीताम् अकृणन्

अकृणाः अकृणीतम् अकृणीत
अकृणाम् अकृणीव अकृणीम
अ० अकारीत् अकारिष्टाम् अकारिषुः
अकारीः अकारिष्टम् अकारिष्ट
अकारिषम् अकारिष्व अकारिष्म
प० चकार चकरतुः चकरुः
चकरिथ चकरथुः चकर
चकार चकर चकरिव चकरिम
आ० कीर्यात् कीर्यास्ताम् कीर्यासुः
कीर्याः कीर्यास्तम् कीर्यास्त
कीर्यासम् कीर्यास्व कीर्यास्म
श्व० करिता करितारौ करितारः
करितासि करितास्थः करितास्थ
करितास्मि करितास्वः करितास्मः
करीता करीतारौ करीतारः
करीतासि करीतास्थः करीतास्थ
करीतास्मि करीतास्वः करीतास्मः
भ० करिष्यति करिष्यतः करिष्यन्ति
करिष्यसि करिष्यथः करिष्यथ
करिष्यामि करिष्यावः करिष्यामः
करीष्यति करीष्यतः करीष्यन्ति
करीष्यसि करीष्यथः करीष्यथ
करीष्यामि करीष्यावः करीष्यामः
क्रि० अकरिष्यत् अकरिष्यताम् अकरिष्यन्
अकरिष्यः अकरिष्यतम् अकरिष्यत
अकरिष्यम् अकरिष्याव अकरिष्याम
अकरीष्यत अकरीष्यताम् अकरीष्यन्
अकरीष्यः अकरीष्यतम् अकरीष्यत
अकरीष्यम् अकरीष्याव अकरीष्याम

व० मृणाति मृणीतः मृणन्ति
मृणासि मृणीथः मृणीथ
मृणामि मृणीवः मृणीमः
स० मृणीयात् मृणीयाताम् मृणीयुः
मृणीयाः मृणीयातम् मृणीयात
मृणीयाम् मृणीयाव मृणीयाम
प० मृणातु मृणीतात् मृणीताम् मृणन्तु
मृणीहि ,, मृणीतम् मृणीत
मृणानि मृणाव, मृणाम
ह्य० अमृणात् अमृणीताम् अमृणन्
अमृणाः अमृणीतम् अमृणीत
अमृणाम् अमृणीव अमृणीम
अ० अमारीत् अमारिष्टाम् अमारिषुः
अमारीः अमारिष्टम् अमारिष्ट
अमारिषम् अमारिष्व अमारिष्म
प० ममार ममरतुः ममरुः
ममरिथ ममरथुः ममर
ममार ममर ममरिव ममरिम
आ० मूर्यात् मूर्यास्ताम् मूर्यासुः
मूर्याः मूर्यास्तम् मूर्यास्त
मूर्यासम् मूर्यास्व मूर्यास्म
श्व० मरिता मरितारौ मरितारः
मरितासि मरितास्थः मरितास्थ
मरितास्मि मरितास्वः मरितास्मः
मरीता मरीतारौ मरीतारः
मरीतासि मरीतास्थः मरीतास्थ
मरीतास्मि मरीतास्वः मरीतास्मः
भ० मरिष्यति मरिष्यतः मरिष्यन्ति
मरिष्यसि मरिष्यथः मरिष्यथ
मरिष्यामि मरिष्यावः मरिष्यामः
मरीष्यति मरीष्यतः मरीष्यन्ति
मरीष्यसि मरीष्यथः मरीष्यथ
मरीष्यामि मरीष्यावः मरीष्यामः
क्रि० अमरिष्यत् अमरिष्यताम् अमरिष्यन्
अमरिष्यः अमरिष्यतम् अमरिष्यत
अमरिष्यम् अमरिष्याव अमरिष्याम
अमरीष्यत् अमरीष्यताम् अमरीष्यन्
अमरीष्यः अमरीष्यतम् अमरीष्यत
अमरीष्यम् अमरीष्याव अमरीष्याम
व० शृणाति शृणीतः शृणन्ति
शृणासि शृणीथः शृणीथ
शृणामि शृणीवः शृणीमः

स० शृणीयात् शृणीयाताम् शृणीयुः
शृणीयाः शृणीयातम् शृणीयात
शृणीयाम शृणीयाव शृणीयाम
प० शृणातु शृणीतात् शृणीताम् शृणन्तु
शृणीहि शृणीतात शृणीतम् शृणीत
शृणानि शृणाव शृणाम
ह्य० अशृणात् अशृणीताम् अशृणन्
अशृणाः अशृणीतम् अशृणीत
अशृणाम् अशृणीव अशृणीम
अ० अशारीत् अशारिष्टाम् अशारिषुः
अशारीः अशारिष्टम् अशारिष्ट
अशारिषम् अशारिष्व अशारिष्म
प० शशार शशरतुः शशरुः
शशरिथ शशरथुः शशर
शशार शशर शशरिव शशरिम
शशार शश्रतुः शश्रुः
शशरिथ शश्रथुः शश्र
शशार शशर शश्रिव शश्रिम
आ० शीर्यात् शीर्यास्ताम् शीर्यासुः
शीर्याः शीर्यास्तम् शीर्यास्त
शीर्यासम् शीर्यास्व शीर्यास्म
श्व० शरिता शरितारौ शरितारः
शरितासि शरितास्थः शरितास्थ
शरितास्मि शरितास्वः शरितास्मः
शरीता शरीतारौ शरीतारः
शरीतासि शरीतास्थः शरीतास्थ
शरीतास्मि शरीतास्वः शरीतास्मः
भ० शरिष्यति शरिष्यतः शरिष्यन्ति
शरिष्यसि शरिष्यथः शरिष्यथ
शरिष्यामि शरिष्यावः शरिष्यामः
शरीष्यति शरीष्यतः शरीष्यन्ति
शरीष्यसि शरीष्यथः शरीष्यथ
शरीष्यामि शरीष्यावः शरीष्यामः
क्रि० अशरिष्यत् अशरिष्यताम् अशरिष्यन्
अशरिष्यः अशरिष्यतम् अशरिष्यत
अशरिष्यम् अशरिष्याव अशरिष्याम
अशरीष्यत् अशरीष्यताम् अशरीष्यन्
अशरीष्यः अशरीष्यतम् अशरीष्यत
अशरीष्यम् अशरीष्याव अशरीष्याम

पॄ॑श् पालनपूरणयोः ॥ पाळवुं-पुरुकरवुं,

व० पृणाति पृणीतः पृणन्ति
पृणासि पृणीथः पृणीथ
पृणामि पृणीवः पृणीमः
स० पृणीयात् पृणीयाताम् पृणीयुः
पृणीयाः पृणीयातम् पृणीयात
पृणीयाम् पृणीयाव पृणीयाम
प० पृणातु पृणीतात् पृणीताम् पृणन्तु
पृणीहि पृणीतात पृणीतम् पृणीत
पृणानि पृणाव पृणाम
ह्य० अपृणात् अपृणीताम् अपृणन्
अपृणाः अपृणीतम् अपृणीत
अपृणाम् अपृणीव अपृणीम
अ० अपारीत् अपारिष्टाम् अपारिषुः
अपारीः अपारिष्टम् अपारिष्ट
अपारिषम् अपारिष्व अपारिष्म
प० पपार पपरतुः पपरुः
पपरिथ पपरथुः पपर
पपार पपर पपरिव पपरिम
पपार पप्रतुः पप्रुः
पपरिथ पप्रथुः पप्र
पपार पपर पप्रिव पप्रिम
आ० पूर्यात् पूर्यास्ताम् पूर्यासुः
पूर्याः पूर्यास्तम् पूर्यास्त
पूर्यासम् पूर्यास्व पूर्यास्म
श्व० परिता परितारौ परितारः
परितासि परितास्थः परितास्थ
परितास्मि परितास्वः परितास्मः
परीता परीतारौ परीतारः
परीतासि परीतास्थः परीतास्थ
परीतास्मि परीतास्वः परीतास्मः

भ० परिष्यति परिष्यतः परिष्यन्ति
परिष्यसि परिष्यथः परिष्यथ
परिष्यामि परिष्यावः परिष्यामः
परीष्यति परीष्यतः परीष्यन्ति
परीष्यसि परीष्यथः परीष्यथ
परीष्यामि परीष्यावः परीष्यामः
क्रि० अपरिष्यत् अपरिष्यताम् अपरिष्यन्
अपरिष्यः अपरिष्यतम् अपरिष्यत
अपरिष्यम् अपरिष्याव अपरिष्याम
अपरीष्यत् अपरीष्यताम् अपरीष्यन्
अपरीष्यः अपरीष्यतम् अपरीष्यत
अपरीष्यम् अपरीष्याव अपरीष्याम

वॄश् भरणे, वरणे-इत्यन्ये ॥भरवुं वरवुं धारण करवुं,

व० वृणाति वृणीतः वृणन्ति
वृणासि वृणीथः वृणीथ
वृणामि वृणीवः वृणीमः
स० वृणीयात् वृणीयाताम् वृणीयुः
वृणीयाः वृणीयातम् वृणीयात
वृणीयाम् वृणीयाव वृणीयाम
प० वृणातु वृणीतात् वृणीताम् वृणन्तु
वृणीहि वृणीतात् वृणीतम् वृणीत
वृणानि वृणाव वृणाम
ह्य० अवृणात् अवृणीताम् अवृणन्
अवृणाः अवृणीतम् अवृणीत
अवृणाम् अवृणीव अवृणीम
अ० अवारीत् अवारिष्टाम् अवारिषुः
अवारीः अवारिष्टम् अवारिष्ट
अवारिषम् अवारिष्व अवारिष्म
प० ववार ववरतुः ववरुः
ववरिथ ववरथुः ववर
ववार ववर ववरिव ववरिम
आ० वूर्यात् वूर्यास्ताम् वूर्यासुः
वूर्याः वूर्यास्तम् वूर्यास्त
वूर्यासम् वूर्यास्व वूर्यास्म
श्व० वरिता वरितारौ वरितारः
वरितासि वरितास्थः वरितास्थ
वरितास्मि वरितास्वः वरितास्मः
वरीता वरीतारौ वरीतारः
वरीतासि वरीतास्थः वरीतास्थ
वरीतास्मि वरीतास्वः वरीतास्मः
भ० वरिष्यति वरिष्यतः वरिष्यन्ति
वरिष्यसि वरिष्यथः वरिष्यथ
वरिष्यामि वरिष्यावः वरिष्यामः
वरीष्यति वरीष्यतः वरीष्यन्ति
वरीष्यसि वरीष्यथः वरीष्यथ
वरीष्यामि वरीष्यावः वरीष्यामः
क्रि० अवरिष्यत् अवरिष्यताम् अवरिष्यन्
अवरिष्यः अवरिष्यतम् अवरिष्यत
अवरिष्यम् अवरिष्याव अवरिष्याम
अवरीष्यत् अवरीष्यताम् अवरीष्यन्
अवरीष्यः अवरीष्यतम् अवरीष्यत
अवरीष्यम् अवरीष्याव अवरीष्याम

भॄश् भर्जने च ॥ भरवुं, भर्त्सने-इत्यन्ये भुंजवुं शेकवुं

व० भृणाति भृणीतः भृणन्ति
भृणासि भृणीथः भृणीथ
भृणामि भृणावः भृणामः
स० भृणीयात् भृणीयाताम् भृणीयुः
भृणीयाः भृणीयातम् भृणीयात
भृणीयाम् भृणीयाव भृणीयाम
प० भृणातु भृणीतात् भृणीताम् भृणन्तु
भृणीहि ,, भृणीतम् भृणीत
भृणानि भृणीव भृणीम
ह्य० अभृणात् अभृणीताम् अभृणन्
अभृणाः अभृणीतम् अभृणीत
अभृणाम् अभृणीव अभृणीम
अ० अभारीत् अभारिष्टाम अभारिषुः

| | | | |
|---|---|---|---|
| | अभारीः | अभारिष्टम् | अभारिष्ट |
| | अभारिषम् | अभारिष्व | अभारिष्म |
| प० | बभार | बभरतुः | बभरुः |
| | बभरिथ | बभरथुः | बभर |
| | बभार बभर | बभरिव | बभरिम |
| आ० | भूर्यात् | भूर्यास्ताम् | भूर्यासुः |
| | भूर्याः | भूर्यास्तम् | भूर्यास्त |
| | भूर्यासम् | भूर्यास्व | भूर्यास्म |
| श्व० | भरिता | भरितारौ | भरितारः |
| | भरितासि | भरितास्थः | भरितास्थ |
| | भरितास्मि | भरितास्वः | भरितास्मः |
| | भरीता | भरीतारौ | भरीतारः |
| | भरीतासि | भरीतास्थः | भरीतास्थ |
| | भरीतास्मि | भरीतास्वः | भरीतास्मः |
| भ० | भरिष्यति | भरिष्यतः | भरिष्यन्ति |
| | भरिष्यसि | भरिष्यथः | भरिष्यथ |
| | भरिष्यामि | भरिष्यावः | भरिष्यामः |
| | भरीष्यति | भरीष्यतः | भरीष्यन्ति |
| | भरीष्यसि | भरीष्यथः | भरीष्यथ |
| | भरीष्यामि | भरीष्यावः | भरीष्यामः |
| क्रि० | अभरिष्यत् | अभरिष्यताम् | अभरिष्यन् |
| | अभरिष्यः | अभरिष्यतम् | अभरिष्यत |
| | अभरिष्यम् | अभरिष्याव | अभरिष्याम |
| | अभरीष्यत् | अभरीष्यताम् | अभरीष्यन् |
| | अभरीष्यः | अभरीष्यतम् | अभरीष्यत |
| | अभरीष्यम् | अभरीष्याव | अभरीष्याम |

दॄश्-विदारणे ॥ भय इत्यन्ये । चीरवुं फाडवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | दृणाति | दृणीतः | दृणन्ति |
| | दृणासि | दृणीथः | दृणीथ |
| | दृणामि | दृणीवः | दृणीमः |
| स० | दृणीयात् | दृणीयाताम् | दृणीयुः |
| | दृणीयाः | दृणीयातम् | दृणीयात |
| | दृणीयाम् | दृणीयाव | दृणीयाम |
| प० | दृणातु दृणीतात् | दृणीताम् | दृणन्तु |
| | दृणीहि दृणीतात् | दृणीतम् | दृणीत |
| | दृणानि | दृणाव | दृणाम |
| ह्य० | अदृणात् | अदृणीताम् | अदृणन् |
| | अदृणाः | अदृणीतम् | अदृणीत |
| | अदृणाम् | अदृणीव | अदृणीम |
| अ० | अदारीत् | अदारिष्टाम् | अदारिषुः |
| | अदारीः | अदारिष्टम् | अदारिष्ट |
| | अदारिषम् | अदारिष्व | अदारिष्म |
| प० | ददार | ददरतुः | ददरुः |
| | ददरिथ | ददरथुः | ददर |
| | ददार ददर | ददरिव | ददरिम |
| | ददार | दद्रतुः | दद्रुः |
| | ददरिथ | दद्रथुः | दद्र |
| | ददार ददर | दद्रिव | दद्रिम |
| आ० | दीर्यात् | दीर्यास्ताम् | दीर्यासुः |
| | दीर्याः | दीर्यास्तम् | दीर्यास्त |
| | दीर्यासम् | दीर्यास्व | दीर्यास्म |
| श्व० | दरिता | दरितारौ | दरितारः |
| | दरितासि | दरितास्थः | दरितास्थ |
| | दरितास्मि | दरितास्वः | दरितास्मः |
| | दरीता | दरीतारौ | दरीतारः |
| | दरीतासि | दरीतास्थः | दरीतास्थ |
| | दरीतास्मि | दरीतास्वः | दरीतास्मः |
| भ० | दरिष्यति | दरिष्यतः | दरिष्यन्ति |
| | दरिष्यसि | दरिष्यथः | दरिष्यथ |
| | दरिष्यामि | दरिष्यावः | दरिष्यामः |
| | दरीष्यति | दरीष्यतः | दरीष्यन्ति |
| | दरीष्यसि | दरीष्यथः | दरीष्यथ |
| | दरीष्यामि | दरीष्यावः | दरीष्यामः |
| क्रि० | अदरिष्यत् | अदरिष्यताम् | अदरिष्यन् |
| | अदरिष्यः | अदरिष्यतम् | अदरिष्यत |
| | अदरिष्यम् | अदरिष्याव | अदरिष्याम |
| | अदरीष्यत् | अदरीष्यताम् | अदरीष्यन् |
| | अदरीष्यः | अदरीष्यतम् | अदरीष्यत |
| | अदरीष्यम् | अदरीष्याव | अदरीष्याम |

जॄश्-वयोहानौ । क्षीण थवुं । वृद्ध थवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | जृणाति | जृणीतः | जृणन्ति |
| | जृणासि | जृणीथः | जृणीथ |
| | जृणामि | जृणीवः | जृणीमः |
| स० | जृणीयात् | जृणीयाताम् | जृणीयुः |
| | जृणीयाः | जृणीयातम् | जृणीयात |
| | जृणीयाम् | जृणीयाव | जृणीयाम |

प० जृणातु जृणीतात् जृणीताम् जृणन्तु
जृणीहि जृणीतात् जृणीतम् जृणीत
जृणानि जृणाव जृणाम

| | | | |
|---|---|---|---|
| ह्य० | अजृणात् | अजृणीताम् | अजृणन् |
| | अजृणाः | अजृणीतम् | अजृणीत |
| | अजृणाम् | अजृणीव | अजृणीम |
| अ० | अजारीत् | अजारिष्टाम् | अजारिषुः |
| | अजारीः | अजारिष्टम् | अजारिष्ट |
| | अजारिषम् | अजारिष्व | अजारिष्म |

एवं अजरत् अजरताम् अजरन् इत्याद्यपि

प० जजार जजरतुः जेरतुः जजरुः जेरुः
जजरिथ जेरिथ जजरथुः जेरथुः जजर जेर
जजार जजर जेरिव जजरिव जेरिम जजरिम

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | जीर्यात् | जीर्यास्ताम् | जीर्यासुः |
| | जीर्याः | जीर्यास्तम् | जीर्यास्त |
| | जीर्यासम् | जीर्यास्व | जीर्यास्म |
| श्व० | जरिता | जरितारौ | जरितारः |
| | जरितासि | जरितास्थः | जरितास्थ |
| | जरितास्मि | जरितास्वः | जरितास्मः |
| | जरीता | जरीतारौ | जरीतारः |
| | जरीतासि | जरीतास्थः | जरीतास्थ |
| | जरीतास्मि | जरीतास्वः | जरीतास्मः |
| भ० | जरिष्यति | जरिष्यतः | जरिष्यन्ति |
| | जरिष्यसि | जरिष्यथः | जरिष्यथ |
| | जरिष्यामि | जरिष्यावः | जरिष्यामः |
| | जरीष्यति | जरीष्यतः | जरीष्यन्ति |
| | जरीष्यसि | जरीष्यथः | जरीष्यथ |
| | जरीष्यामि | जरीष्यावः | जरीष्यामः |
| क्रि० | अजरिष्यत् | अजरिष्यताम् | अजरिष्यन् |
| | अजरिष्यः | अजरिष्यतम् | अजरिष्यत |
| | अजरिष्यम् | अजरिष्याव | अजरिष्याम |
| | अजरीष्यत् | अजरीष्यताम् | अजरीष्यन् |
| | अजरीष्यः | अजरीष्यतम् | अजरीष्यत |
| | अजरीष्यम् | अजरीष्याव | अजरीष्याम |

नॄश् नये । विनय करवो,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | नृणाति | नृणीतः | नृणन्ति |
| | नृणासि | नृणीथः | नृणीथ |
| | नृणामि | नृणीवः | नृणीमः |
| स० | नृणीयात् | नृणीयाताम् | नृणीयुः |
| | नृणीयाः | नृणीयातम् | नृणीयात |
| | नृणीयाम् | नृणीयाव | नृणीयाम |

प० नृणातु नृणीतात् नृणीताम् नृणन्तु
नृणीहि ,, नृणीतम् नृणीत
नृणानि नृणाव नृणाम

| | | | |
|---|---|---|---|
| ह्य० | अनृणात् | अनृणीताम् | अनृणन् |
| | अनृणाः | अनृणीतम् | अनृणीत |
| | अनृणाम् | अनृणीव | अनृणीम |
| अ० | अनारीत् | अनारिष्टाम् | अनारिषुः |
| | अनारीः | अनारिष्टम् | अनारिष्ट |
| | अनारिषम् | अनारिष्व | अनारिष्म |
| प० | ननार | ननरतुः | ननरुः |
| | ननरिथ | ननरथुः | ननर |
| | ननार ननर | ननरिव | ननरिम |
| आ० | नीर्यात् | नीर्यास्ताम् | नीर्यासुः |
| | नीर्याः | नीर्यास्तम् | नीर्यास्त |
| | नीर्यासम् | नीर्यास्व | नीर्यास्म |
| श्व० | नरिता | नरितारौ | नरितारः |
| | नरितासि | नरितास्थः | नरितास्थ |
| | नरितास्मि | नरितास्वः | नरितास्मः |
| | नरीता | नरीतारौ | नरीतारः |
| | नरीतासि | नरीतास्थः | नरीतास्थ |
| | नरीतास्मि | नरीतास्वः | नरीतास्मः |
| भ० | नरिष्यति | नरिष्यतः | नरिष्यन्ति |

| | | |
|---|---|---|
| नरिष्यसि | नरिष्यथः | नरिष्यथ |
| नरिष्यामि | नरिष्यावः | नरिष्यामः |
| नरीष्यति | नरीष्यतः | नरीष्यन्ति |
| नरीष्यसि | नरीष्यथः | नरीष्यथ |
| नरीष्यामि | नरीष्यावः | नरीष्यामः |
| क्रि० अनरिष्यत् | अनरिष्यताम् | अनरिष्यन् |
| अनरिष्यः | अनरिष्यतम् | अनरिष्यत |
| अनरिष्यम् | अनरिष्याव | अनरिष्याम |
| अनरीष्यत् | अनरीष्यताम् | अनरीष्यन् |
| अनरीष्यः | अनरीष्यतम् | अनरीष्यत |
| अनरीष्यम् | अनरीष्याव | अनरीष्याम |

गॄश् शब्दे । शब्दकरणे बोलवुं,

| | | |
|---|---|---|
| व० गृणाति | गृणीतः | गृणन्ति |
| गृणासि | गृणीथः | गृणीथ |
| गृणामि | गृणीवः | गृणीमः |
| स० गृणीयात् | गृणीयाताम् | गृणीयुः |
| गृणीयाः | गृणीयातम् | गृणीयात |
| गृणीयाम् | गृणीयाव | गृणीयाम |
| प० गृणातु गृणीतात् | गृणीताम् | गृणन्तु |
| गृणीहि ,, | गृणीतम् | गृणीत |
| गृणानि | गृणाव | गृणाम |
| ह्य० अगृणात् | अगृणीताम् | अगृणन् |
| अगृणाः | अगृणीतम् | अगृणीत |
| अगृणाम् | अगृणीव | अगृणीम |
| अ० अगारीत् | अगारिष्टाम् | अगारिषुः |
| अगारीः | अगारिष्टम् | अगारिष्ट |
| अगारिषम् | अगारिष्व | अगारिष्म |
| प० जगार | जगरतुः | जगरुः |
| जगरिथ | जगरथुः | जगर |
| जगार जगर | जगरिव | जगरिम |
| आ० गीर्यात् | गीर्यास्ताम् | गीर्यासुः |
| गीर्याः | गीर्यास्तम् | गीर्यास्त |
| गीर्यासम् | गीर्यास्व | गीर्यास्म |

| | | |
|---|---|---|
| श्व० गरिता | गरितारौ | गरितारः |
| गरितासि | गरितास्थः | गरितास्थ |
| गरितास्मि | गरितास्वः | गरितास्मः |
| गरीता | गरीतारौ | गरीतारः |
| गरीतासि | गरीतास्थः | गरीतास्थ |
| गरीतास्मि | गरीतास्वः | गरीतास्मः |
| भ० गरिष्यति | गरिष्यतः | गरिष्यन्ति |
| गरिष्यसि | गरिष्यथः | गरिष्यथ |
| गरिष्यामि | गरिष्यावः | गरिष्यामः |
| गरीष्यति | गरीष्यतः | गरीष्यन्ति |
| गरीष्यसि | गरीष्यथः | गरीष्यथ |
| गरीष्यामि | गरीष्यावः | गरीष्यामः |
| क्रि० अगरिष्यत् | अगरिष्यताम् | अगरिष्यन् |
| अगरिष्यः | अगरिष्यतम् | अगरिष्यत |
| अगरिष्यम् | अगरिष्याव | अगरिष्याम |
| अगरीष्यत् | अगरीष्यताम् | अगरीष्यन् |
| अगरीष्यः | अगरीष्यतम् | अगरीष्यत |
| अगरीष्यम् | अगरीष्याव | अगरीष्याम |

ॠश्-गतौ । जवुं,

| | | |
|---|---|---|
| व० ॠणाति | ॠणीतः | ॠणन्ति |
| ॠणासि | ॠणीथः | ॠणीथ |
| ॠणामि | ॠणीवः | ॠणीमः |
| स० ॠणीयात् | ॠणीयाताम् | ॠणीयुः |
| ॠणीयाः | ॠणीयातम् | ॠणीयात |
| ॠणीयाम् | ॠणीयाव | ॠणीयाम |
| प० ॠणातु ॠणीतात् | ॠणीताम् | ॠणन्तु |
| ॠणीहि ॠणीतात् | ॠणीतम् | ॠणीत |
| ॠणानि | ॠणाव | ॠणाम |
| ह्य० आर्णात् | आर्णीताम् | आर्णन् |
| आर्णाः | आर्णीतम् | आर्णीत |
| आर्णाम् | आर्णीव | आर्णीम |
| अ० आरीत् | आरिष्टाम् | आरिषुः |
| आरीः | आरिष्टम् | आरिष्ट |

आरिषम आरिष्व आरिष्म
प० अरांचकार अरांचक्रतुः अरांचक्रुः
अरांचकर्थ अरांचक्रथुः अरांचक्र
अरांचकार अरांचकृव अरांचकृम
अरांबभूव अरामास अरामासतुः
पारायणे तु आर, आरतुः, आरुः-इत्यादि,
आ० ईर्यात् ईर्यास्ताम् ईर्यासुः
ईर्याः ईर्यास्तम् ईर्यास्त
ईर्यासम् ईर्यास्व ईर्यास्म
श्व० अरिता अरितारौ अरितारः
अरितासि अरितास्थः अरितास्थ
अरितास्मि अरितास्वः अरितास्मः
अरीता अरीतारौ अरीतारः
अरीतासि अरीतास्थः अरीतास्थ
अरीतास्मि अरीतास्वः अरीतास्मः
भ० अरिष्यति अरिष्यतः अरिष्यन्ति
अरिष्यसि अरिष्यथः अरिष्यथ
अरिष्यामि अरिष्यावः अरिष्यामः
अरीष्यति अरीष्यतः अरीष्यन्ति
अरीष्यसि अरीष्यथः अरीष्यथ
अरीष्यामि अरीष्यावः अरीष्यामः
क्रि० आरिष्यत् आरिष्यताम् आरिष्यन्
आरिष्यः आरिष्यतम् आरिष्यत
आरिष्यम् आरिष्याव आरिष्याम
आरीष्यत् आरीष्यताम् आरीष्यन्
आरीष्य आरीष्यतम् आरीष्यत
आरीष्यम् आरीष्याव आरीष्याम

## ॥ इति प्वादिः ॥ ॥ इति ल्वादिः ॥

---

ज्ञांश् अवबोधने । जाणवुं,

व० जानाति जानीतः जानन्ति
जानासि जानीथः जानीथ
जानामि जानीवः जानीमः
स० जानीयात् जानीयाताम् जानीयुः
जानीयाः जानीयातम् जानीयात
जानीयाम् जानीयाव जानीयाम
प० जानातु जानीतात् जानीताम् जानन्तु
जानीहि जानीतात् जानीतम् जानीत
जानानि जानाव जानाम
ह्य० अजानात् अजानीताम् अजानन्
अजानाः अजानीतम् अजानीत
अजानाम् अजानीव अजानीम
अ० अज्ञासीत् अज्ञासिष्टाम् अज्ञासिषुः
अज्ञासीः अज्ञासिष्टम् अज्ञासिष्ट
अज्ञासिषम् अज्ञासिष्व अज्ञासिष्म
प० जज्ञौ जज्ञतुः जज्ञुः
जज्ञिथ जज्ञाथ जज्ञथुः जज्ञ
जज्ञौ जज्ञिव जज्ञिम
आ० ज्ञायात् ज्ञायास्ताम् ज्ञायासुः
ज्ञायाः ज्ञायास्तम् ज्ञायास्त
ज्ञायासम् ज्ञायास्व ज्ञायास्म
ज्ञेयात् ज्ञेयास्ताम् ज्ञेयासुः
ज्ञेयाः ज्ञेयास्तम् ज्ञेयास्त
ज्ञेयासम् ज्ञेयास्व ज्ञेयास्म
श्व० ज्ञाता ज्ञातारौ ज्ञातारः
ज्ञातासि ज्ञातास्थः ज्ञातास्थ
ज्ञातास्मि ज्ञातास्वः ज्ञातास्मः
भ० ज्ञास्यति ज्ञास्यतः ज्ञास्यन्ति
ज्ञास्यसि ज्ञास्यथः ज्ञास्यथ
ज्ञास्यामि ज्ञास्यावः ज्ञास्यामः
क्रि० अज्ञास्यत् अज्ञास्यताम् अज्ञास्यन्
अज्ञास्यः अज्ञास्यतम् अज्ञास्यत
अज्ञास्यम् अज्ञास्याव अज्ञास्याम

क्षिप्श् हिंसायाम् । मारवुं,
क्षिणाति । क्षिणीहि । अक्षैषीत् । चिक्षाय ।

व्रींश् वरणे । वरवुं, स्वीकारवुं,
व्रीणाति । व्रीणीहि । अव्रैषीत् । विव्राय ।

भ्रींश् भरणे । भरवुं धारणकरवुं,
भ्रीणाति । भ्रीणीहि । अभ्रैषीत् । बिभ्राय ।

हेठश् भूतप्रादुर्भावे हिठश् इत्यन्ये । थइ गयलानो फरीथी प्रादुर्भाव थवो,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | हेठ्णाति | हेठ्णीतः | हेठ्णन्ति |
| | हेठ्णासि | हेठ्णीथः | हेठ्णीथ |
| | हेठ्णामि | हेठ्णीवः | हेठ्णीमः |
| स० | हेठ्णीयात् | हेठ्णीयाताम् | हेठ्णीयुः |
| | हेठ्णीयाः | हेठ्णीयातम् | हेठ्णीयात |
| | हेठ्णीयाम् | हेठ्णीयाव | हेठ्णीयाम |
| प० | हेठ्णातु हेठ्णीतात् | हेठ्णीताम् | हेठ्णन्तु |
| | हेठान हेठ्णीतात् | हेठ्णीतम् | हेठ्णीत |
| | हेठ्णानि | हेठ्णाव | हेठ्णाम |
| ह्य० | अहेठ्णात् | अहेठ्णीताम् | अहेठ्णन् |
| | अहेठ्णाः | अहेठ्णीतम् | अहेठ्णीत |
| | अहेठ्णाम् | अहेठ्णीव | अहेठ्णीम |
| अ० | अहेठीत् | अहेठिष्टाम् | अहेठिषुः |
| | अहेठीः | अहेठिष्टम् | अहेठिष्ट |
| | अहेठिषम् | अहेठिष्व | अहेठिष्म |
| प० | जिहेठ | जिहेठतुः | जिहेठुः |
| | जिहेठिथ | जिहेठथुः | जिहेठ |
| | जिहेठ | जिहेठिव | जिहेठिम |
| आ० | हेठ्यात् | हेठ्यास्ताम् | हेठ्यासुः |
| | हेठ्याः | हेठ्यास्तम् | हेठ्यास्त |
| | हेठ्यासम् | हेठ्यास्व | हेठ्यास्म |
| श्व० | हेठिता | हेठितारौ | हेठितारः |
| | हेठितासि | हेठितास्थः | हेठितास्थ |
| | हेठितास्मि | हेठितास्वः | हेठितास्मः |
| भ० | हेठिष्यति | हेठिष्यतः | हेठिष्यन्ति |
| | हेठिष्यसि | हेठिष्यथः | हेठिष्यथ |
| | हेठिष्यामि | हेठिष्यावः | हेठिष्यामः |
| क्रि० | अहेठिष्यत् | अहेठिष्यताम् | अहेठिष्यन् |
| | अहेठिष्यः | अहेठिष्यतम् | अहेठिष्यत |
| | अहेठिष्यम् | अहेठिष्याव | अहेठिष्याम |

मृड्श् सुखने । सुखीथवुं,
मृड्णाति । मृडान । अमर्डीत् । ममर्ड ।

श्रन्थश् विमोचनप्रतिहर्षणयोः । मूकवुं हरखवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | श्रथ्नाति | श्रथ्नीतः | श्रथ्नन्ति |
| | श्रथ्नासि | श्रथ्नीथः | श्रथ्नीथ |
| | श्रथ्नामि | श्रथ्नीवः | श्रथ्नीमः |
| स० | श्रथ्नीयात् | श्रथ्नीयाताम् | श्रथ्नीयुः |
| | श्रथ्नीयाः | श्रथ्नीयातम् | श्रथ्नीयात |
| | श्रथ्नीयाम् | श्रथ्नीयाव | श्रथ्नीयाम |
| प० | श्रथ्नातु श्रथ्नीतात् | श्रथ्नीताम् | श्रथ्नन्तु |
| | श्रथान श्रथ्नीतात् | श्रथ्नीतम् | श्रथ्नीत |
| | श्रथ्नानि | श्रथ्नाव | श्रथ्नाम |
| ह्य० | अश्रथ्नात् | अश्रथ्नीताम् | अश्रथ्नन् |
| | अश्रथ्नाः | अश्रथ्नीतम् | अश्रथ्नीत |
| | अश्रथ्नाम् | अश्रथ्नीव | अश्रथ्नीम |
| अ० | अश्रन्थीत् | अश्रन्थिष्टाम् | अश्रन्थिषुः |
| | अश्रन्थीः | अश्रन्थिष्टम् | अश्रन्थिष्ट |
| | अश्रन्थिषम् | अश्रन्थिष्व | अश्रन्थिष्म |

अन्ये तु श्रन्थिग्रन्थिदम्भीनामवित्ति परोक्षाया नित्यमेत्वनलोपाविच्छन्ति तेन श्रेथतु रित्याद्विकमेकमेव कस्यचिन्मते शश्रन्थिथेत्यादिस्थाने सेटथवि श्रेन्थिथेत्यादि भवति-इति विशेषः

प० शश्रान्थ शश्रन्थतुः श्रेथतुः शश्रन्थुः श्रेथुः
शश्रन्थिथ श्रेथिथ श्रेथथुः शश्रन्थथुः श्रेथ शश्रन्थ
शश्रन्थ शश्रन्थिव श्रेथिव शश्रन्थिम श्रेथिम

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | श्रथ्यात् | श्रथ्यास्ताम् | श्रथ्यासुः |
| | श्रथ्याः | श्रथ्यास्तम् | श्रथ्यास्त |
| | श्रथ्यासम् | श्रथ्यास्व | श्रथ्यास्म |
| श्व० | श्रन्थिता | श्रन्थितारौ | श्रन्थितारः |
| | श्रन्थितासि | श्रन्थितास्थः | श्रन्थितास्थ |
| | श्रन्थितास्मि | श्रन्थितास्वः | श्रन्थितास्मः |
| भ० | श्रन्थिष्यति | श्रन्थिष्यतः | श्रन्थिष्यन्ति |
| | श्रन्थिष्यसि | श्रन्थिष्यथः | श्रन्थिष्यथ |

ग्रन्थिष्यामि ग्रन्थिष्यावः ग्रन्थिष्यामः
क्रि० अग्रन्थिष्यत् अग्रन्थिष्यताम् अग्रन्थिष्यन्
अग्रन्थिष्यः अग्रन्थिष्यतम् अग्रन्थिष्यत
अग्रन्थिष्यम् अग्रन्थिष्याव अग्रन्थिष्याम

मन्थश् विलोडने । वलोववुं,
मथ्नाति । मथान । अमन्थीत् । ममन्थ ।

ग्रन्थश् संदर्भे । गुंथवुं,

| | | |
|---|---|---|
| व० ग्रथ्नाति | ग्रथ्नीतः | ग्रथ्नन्ति |
| ग्रथ्नासि | ग्रथ्नीथः | ग्रथ्नीथ |
| ग्रथ्नामि | ग्रथ्नीवः | ग्रथ्नीमः |
| स० ग्रथ्नीयात् | ग्रथ्नीयाताम् | ग्रथ्नीयुः |
| ग्रथ्नीयाः | ग्रथ्नीयातम् | ग्रथ्नीयात |
| ग्रथ्नीयाम् | ग्रथ्नीयाव | ग्रथ्नीयाम |

प० ग्रथ्नातु ग्रथ्नीतात् ग्रथ्नीताम् ग्रथ्नन्तु
ग्रथान ग्रथ्नीतात् ग्रथ्नीतम् ग्रथ्नीत
ग्रथ्नानि ग्रथ्नाव ग्रथ्नाम

| | | |
|---|---|---|
| ह्य० अग्रथ्नात् | अग्रथ्नीताम् | अग्रथ्नन् |
| अग्रथ्नाः | अग्रथ्नीतम् | अग्रथ्नीत |
| अग्रथ्नाम् | अग्रथ्नीव | अग्रथ्नीम |
| अ० अग्रन्थीत् | अग्रन्थिष्टाम् | अग्रन्थिषुः |
| अग्रन्थीः | अग्रन्थिष्टम् | अग्रन्थिष्ट |
| अग्रन्थिषम् | अग्रन्थिष्व | अग्रन्थिष्म |

प० जग्रन्थ ग्रेथतुः जग्रन्थतुः ग्रेथुः जग्रन्थुः
जग्रन्थिथ ग्रेथिथ जग्रन्थथुः ग्रेथथुः ग्रेथ जग्रन्थ
जग्रन्थ ग्रेथिव जग्रन्थिव ग्रेथिम जग्रन्थिम

| | | |
|---|---|---|
| आ० ग्रथ्यात् | ग्रथ्यास्ताम् | ग्रथ्यासुः |
| ग्रथ्याः | ग्रथ्यास्तम् | ग्रथ्यास्त |
| ग्रथ्यासम् | ग्रथ्यास्व | ग्रथ्यास्म |
| श्व० ग्रन्थिता | ग्रन्थितारौ | ग्रन्थितारः |
| ग्रन्थितासि | ग्रन्थितास्थः | ग्रन्थितास्थ |
| ग्रन्थितास्मि | ग्रन्थितास्वः | ग्रन्थितास्मः |
| भ० ग्रन्थिष्यति | ग्रन्थिष्यतः | ग्रन्थिष्यन्ति |
| ग्रन्थिष्यसि | ग्रन्थिष्यथः | ग्रन्थिष्यथ |

ग्रन्थिष्यामि ग्रन्थिष्यावः ग्रन्थिष्यामः
क्रि० अग्रन्थिष्यत् अग्रन्थिष्यताम् अग्रन्थिष्यन्
अग्रन्थिष्यः अग्रन्थिष्यतम् अग्रन्थिष्यत
अग्रन्थिष्यम् अग्रन्थिष्याव अग्रन्थिष्याम

कुन्थश् सङ्क्लेशे । क्लेश करवो
कुथ्नाति । कुथान । अकुन्थीत् । चुकुन्थ ।

मृदश् क्षोदे । भुको करवो, चुरेचुरा करवा,
मृद्नाति । मृदान । अमर्दीत् । ममर्द ।

गुधश् रोषे । क्रोधकरवो,
गुध्नाति । गुधान । अगोधीत् । जुगोध ।

बन्धश् बन्धने । बांधवुं,

| | | |
|---|---|---|
| व० बध्नाति | बध्नीतः | बध्नन्ति |
| बध्नासि | बध्नीथः | बध्नीथ |
| बध्नामि | बध्नीवः | बध्नीमः |
| स० बध्नीयात् | बध्नीयाताम् | बध्नीयुः |
| बध्नीयाः | बध्नीयातम् | बध्नीयात |
| बध्नीयाम् | बध्नीयाव | बध्नीयाम |

प० बध्नातु बध्नीतात् बध्नीताम् बध्नन्तु
बधान बध्नीतात् बध्नीतम् बध्नीत
बध्नानि बध्नाव बध्नाम

| | | |
|---|---|---|
| ह्य० अबध्नात् | अबध्नीताम् | अबध्नन् |
| अबध्नाः | अबध्नीतम् | अबध्नीत |
| अबध्नाम् | अबध्नीव | अबध्नीम |
| अ० अभान्त्सीत् | अबान्द्धाम् | अभान्त्सुः |
| अभान्त्सीः | अबान्द्धम् | अबान्द्ध |
| अभान्त्सम् | अभान्त्स्व | अभान्त्स्म |
| प० बबन्ध | बबन्धतुः | बबन्धुः |
| बबन्धिथ | बबन्धथुः | बबन्ध |
| बबन्ध | बबन्धिव | बबन्धिम |
| आ० बध्यात् | बध्यास्ताम् | बध्यासुः |
| बध्याः | बध्यास्तम् | बध्यास्त |
| बध्यासम् | बध्यास्व | बध्यास्म |
| श्व० बन्द्धा | बन्द्धारौ | बन्द्धारः |

वन्द्धासि वन्द्धास्थः वन्द्धास्थ
वन्द्धास्मि • वन्द्धास्वः वन्द्धास्मः
भ० भन्त्स्यति भन्त्स्यतः भन्त्स्यन्ति
भन्त्स्यसि भन्त्स्यथः भन्त्स्यथ
भन्त्स्यामि भन्त्स्यावः भन्त्स्यामः
क्रि अभन्त्स्यत् अभन्त्स्यताम् अभन्त्स्यन्
अभन्त्स्यः अभन्त्स्यतम् अभन्त्स्यत
अभन्त्स्यम् अभन्त्स्याव अभन्त्स्याम

॥ क्षुभश्–सञ्चलने ॥ खळभळवुं, गभरावु
क्षुभ्नाति । क्षुभाण । अक्षोभीत् । चुक्षोभ ।

॥ णभ–तुभश्–हिंसायाम् ॥ मारवुं
नभ्नाति । प्रणभ्नाति । नभान । अनाभीत
अनभीत् । ननाभ । नेभिथ ।
तुभ्नाति । तुभान । अतोभीत् । तुतोभ ।

॥ खवश्–भूतप्रादुर्भावे ॥ थई गएला-
ना फरीथी प्रादुर्भाव थवो

व० खौनाति खौनीतः खौनन्ति
खौनासि खौनीथः खौनीथ
खौनामि खौनीवः खौनीमः
स० खौनीयात् खौनीयाताम् खौनीयुः
खौनीयाः खौनीयातम् खौनीयात
खौनीयाम् खौनीयाव खौनीयाम
प० खौनातु खौनीतात् खौनीताम् खौनन्तु
खवान खौनीहि इति चन्द्रप्रभायाम
,, खौनीतात् खौनीतम् खौनीत
खौनानि खौनाव खौनाम
ह्य० अखौनात् अखौनीताम् अखौनन्
अखौनाः अखौनीतम् अखौनीत
अखौनाम् अखौनीव अखौनीम
अ० अखावीत् अखाविष्टाम् अखाविषुः
अखावीः अखाविष्टम् अखाविष्ट
अखाविषम् अखाविष्व अखाविष्म
अखवीत् अखविष्टाम् अखविषुः

अखवीः अखविष्टम् अखविष्ट
अखविषम् अखविष्व अखविष्म
प० चखाव चखवतुः चखवुः
चखविथ चखवथुः चखव
चखाव चखव चखविव चखविम
आ० खव्यात् खव्यास्ताम् खव्यासुः
खव्याः खव्यास्तम् खव्यास्त
खव्यासम् खव्यास्व खव्यास्म
श्व० खविता खवितारौ खवितारः
खवितासि खवितास्थः खवितास्थ
खवितास्मि खवितास्वः खवितास्मः
भ० खविष्यति खविष्यतः खविष्यन्ति
खविष्यसि खविष्यथः खविष्यथ
खविष्यामि खविष्यावः खविष्यामः
क्रि० अखविष्यत् अखविष्यताम् अखविष्यन्
अखविष्यः अखविष्यतम् अखविष्यत
अखविष्यम् अखविष्याव अखविष्याम

॥ ऊटं नेच्छन्त्येके तन्मते खव्नाति
खवान ॥ हेठश्वत् । चान्तोऽयमित्येके
खच्नाति । खचान ।

॥ क्लिशौश्–विबाधने ॥ क्लेश करवो

व० क्लिश्नाति क्लिश्नीतः क्लिश्नन्ति
क्लिश्नासि क्लिश्नीथः क्लिश्नीथ
क्लिश्नामि क्लिश्नीवः क्लिश्नीमः
स० क्लिश्नीयात् क्लिश्नीयाताम् क्लिश्नीयुः
क्लिश्नीयाः क्लिश्नीयातम् क्लिश्नीयात
क्लिश्नीयाम् क्लिश्नीयाव क्लिश्नीयाम
प० क्लिश्नातु क्लिश्नीतात्-ताम् क्लिश्नन्तु
क्लिशान क्लिश्नीतात् क्लिश्नीतम् क्लिश्नीत
क्लिश्नानि क्लिश्नाव क्लिश्नाम
ह्य० अक्लिश्नात् अक्लिश्नीताम् अक्लिश्नन्
अक्लिश्नाः अक्लिश्नीतम् अक्लिश्नीत
अक्लिश्नाम् अक्लिश्नीव अक्लिश्नीम
अ० अक्लेशीत् अक्लेशिष्टाम् अक्लेशिषुः

अक्लेशीः अक्लेशिष्टम् अक्लेशिष्ट
अक्लेशिषम् अक्लेशिष्व अक्लेशिष्म
अक्लिक्षत् अक्लिक्षताम् अक्लिक्षन्
अक्लिक्षः अक्लिक्षतम् अक्लिक्षत
अक्लिक्षम् अक्लिक्षाव अक्लिक्षाम
प० चिक्लेश चिक्लिशतुः चिक्लिशुः
चिक्लेशिथ चिक्लिशथुः चिक्लिश
चिक्लेश चिक्लिशिव चिक्लिशिम

मतान्तरे चिक्लेष्ठ चिक्लिश्व

चिक्लिश्म इत्यपि

आ० क्लिश्यात् क्लिश्यास्ताम् क्लिश्यासुः
क्लिश्याः अक्लिश्यास्तम् क्लिश्यास्त
क्लिश्यासम् क्लिश्यास्व क्लिश्यास्म
श्व० क्लेशिता क्लेशितारौ क्लेशितारः
क्लेशितासि क्लेशितास्थः क्लेशितास्थ
क्लेशितास्मि क्लेशितास्वः क्लेशितास्मः
क्लेष्टा क्लेष्टारौ क्लेष्टारः
क्लेष्टासि क्लेष्टास्थः क्लेष्टास्थ
क्लेष्टास्मि क्लेष्टास्वः क्लेष्टास्मः
भ० क्लेशिष्यति क्लेशिष्यतः क्लेशिष्यन्ति
क्लेशिष्यसि क्लेशिष्यथः क्लेशिष्यथ
क्लेशिष्यामि क्लेशिष्यावः क्लेशिष्यामः
क्लेक्ष्यति क्लेक्ष्यतः क्लेक्ष्यन्ति
क्लेक्ष्यसि क्लेक्ष्यथः क्लेक्ष्यथ
क्लेक्ष्यामि क्लेक्ष्यावः क्लेक्ष्यामः
क्रि अक्लेशिष्यत् अक्लेशिष्यताम् अक्लेशिष्यन्
अक्लेशिष्यः अक्लेशिष्यतम् अकक्लेशिष्यत
अक्लेशिष्यम् अक्लेशिष्याव अक्लेशिष्याम
अक्लेक्ष्यत् अक्लेक्ष्यताम् अक्लेक्ष्यन्
अक्लेक्ष्यः अक्लेक्ष्यतम् अक्लेक्ष्यत
अक्लेक्ष्यम् अक्लेक्ष्याव अक्लेक्ष्याम

॥ अशश् भोजने ॥ जमवुं,

व० अश्नाति अश्नीतः अश्नन्ति
अश्नासि अश्नीथः अश्नीथ
अश्नामि अश्नीवः अश्नीमः
स० अश्नीयात् अश्नीयाताम् अश्नीयुः
अश्नीयाः अश्नीयातम् अश्नीयात
अश्नीयाम् अश्नीयाव अश्नीयाम
प० अश्नातु अश्नीतात् अश्नीताम् अश्नन्तु
अशान अश्नीतात् अश्नीतम् अश्नीत
अश्नानि अश्नाव अश्नाम
ह्य० आश्नात् आश्नीताम् आश्नन्
आश्नाः आश्नीतम् आश्नीत
आश्नाम् आश्नीव आश्नीम
अ० आशीत् आशिष्टाम् आशिषुः
आशीः आशिष्टम् आशिष्ट
आशिषम् आशिष्व आशिष्म
प० आश आशतुः आशुः
आशिथ आशथुः आश
आश आशिव आशिम
आ० अश्यात् अश्यास्ताम् अश्यासुः
अश्याः अश्यास्तम् अश्यास्त
अश्यासम् अश्यास्व अश्यास्म
श्व० अशिता अशितारौ अशितारः
अशितासि अशितास्थः अशितास्थ
अशितास्मि अशितास्वः अशितास्मः
भ० अशिष्यति अशिष्यतः अशिष्यन्ति
अशिष्यसि अशिष्यथः अशिष्यथ
अशिष्यामि अशिष्यावः अशिष्यामः
क्रि० आशिष्यत् आशिष्यताम् आशिष्यन्
आशिष्यः आशिष्यतम् आशिष्यत
आशिष्यम् आशिष्याव आशिष्याम

॥ इषश्-आभीक्ष्ण्ये ॥ फरी फरी करवुं

इष्णाति । इषाण । एषीत् । इयेष एषिता

मतान्तरे-एषिता एष्टा )

॥ विषश्-विप्रयोगे ॥ वियोग करवो,

जुदुं करवुं,

षिष्णाति । षिषाण । अषैषीत् षिषेष

प्रुष–प्लुषश्–स्नेहसेचनपूरणेषु ।

भीनुं करवुं सींचवुं, पूरवुं

प्रुष्णाति । पुप्राष । अप्रोषीत् । पुप्रोष ।

प्लुष्णाति । प्लुषाण । अप्लोषीत् । पुप्लोष ।

॥ मुषश्–स्तेये ॥ चोरवुं

मुष्णाति मुषाण । अमोषीत् । मुमोष ।

पुषश् पुष्टौ ॥ पुष्ट करवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | पुष्णाति | पुष्णीतः | पुष्णन्ति |
| | पुष्णासि | पुष्णीथः | पुष्णीथ |
| | पुष्णामि | पुष्णीवः | पुष्णीमः |
| स० | पुष्णीयात् | पुष्णीयाताम् | पुष्णीयुः |
| | पुष्णीयाः | पुष्णीयातम् | पुष्णीयात |
| | पुष्णीयाम् | पुष्णीयाव | पुष्णीयाम |
| प० | पुष्णातु पुष्णीतात् | पुष्णीताम् | पुष्णन्तु |
| | पुषाण पुष्णीतात् | पुष्णीतम् | पुष्णीत |
| | पुष्णानि | पुष्णाव | पुष्णाम |
| ह्य० | अपुष्णात् | अपुष्णीताम् | अपुष्णन् |
| | अपुष्णाः | अपुष्णीतम् | अपुष्णीत |
| | अपुष्णाम् | अपुष्णीव | अपुष्णीम |
| अ० | अपोषीत् | अपोषिष्टाम् | अपोषिषुः |
| | अपोषीः | अपोषिष्टम् | अपोषिष्ट |
| | अपोषिषम् | अपोषिष्व | अपोषिष्म |
| प० | पुपोष | पुपुषतुः | पुपुषुः |
| | पुपोषिथ | पुपुषथुः | पुपुष |
| | पुपोष | पुपुषिव | पुपुषिम |
| आ० | पुष्यात् | पुष्यास्ताम् | पुष्यासुः |
| | पुष्याः | पुष्यास्तम् | पुष्यास्त |
| | पुष्यासम् | पुष्यास्व | पुष्यास्म |
| श्व० | पोषिता | पोषितारौ | पोषितारः |
| | पोषितासि | पोषितास्थः | पोषितास्थ |
| | पोषितास्मि | पोषितास्वः | पोषितास्मः |
| भ० | पोषिष्यति | पोषिष्यतः | पोषिष्यन्ति |
| | पोषिष्यसि | पोषिष्यथः | पोषिष्यथ |
| | पोषिष्यामि | पोषिष्यावः | पोषिष्यामः |
| क्रि० | अपोषिष्यत् | अपोषिष्यताम् | अपोषिष्यन् |
| | अपोषिष्यः | अपोषिष्यतम् | अपोषिष्यत |
| | अपोषिष्यम् | अपोषिष्याव | अपोषिष्याम |

कुषश् निष्कर्षे । बहार खेंचवुं, ताणवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | कुष्णाति | कुष्णीतः | कुष्णन्ति |
| | कुष्णासि | कुष्णीथः | कुष्णीथ |
| | कुष्णामि | कुष्णीवः | कुष्णीमः |
| स० | कुष्णीयात् | कुष्णीयाताम् | कुष्णीयुः |
| | कुष्णीयाः | कुष्णीयातम् | कुष्णीयात |
| | कुष्णीयाम् | कुष्णीयाव | कुष्णीयाम |
| प० | कुष्णातु कुष्णीतात् | कुष्णीताम् | कुष्णन्तु |
| | कुषाण कुष्णीतात् | कुष्णीतम् | कुष्णीत |
| | कुष्णानि | कुष्णाव | कुष्णाम |
| ह्य० | अकुष्णात् | अकुष्णीताम् | अकुष्णन् |
| | अकुष्णाः | अकुष्णीतम् | अकुष्णीत |
| | अकुष्णाम् | अकुष्णीव | अकुष्णीम |
| अ० | निरकुक्षत् | निरकुक्षताम् | निरकुक्षन् |
| | निरकुक्षः | निरकुक्षतम् | निरकुक्षत |
| | निरकुक्षम् | निरकुक्षाव | निरकुक्षाम |
| | निरकोषीत् | निरकोषिष्टाम् | निरकोषिषुः |
| | निरकोषीः | निरकोषिष्टम् | निरकोषिष्ट |
| | निरकोषिषम् | निरकोषिष्व | निरकोषिष्म |
| प० | चुकोष | चुकुषतुः | चुकुषुः |
| | चुकोषिथ | चुकुषथुः | चुकुष |
| | चुकोष | चुकुषिव | चुकुषिम |
| आ० | कुष्यात् | कुष्यास्ताम् | कुष्यासुः |
| | कुष्याः | कुष्यास्तम् | कुष्यास्त |
| | कुष्यासम् | कुष्यास्व | कुष्यास्म |
| श्व० | निष्कोष्टा | निष्कोष्टारौ | निष्कोष्टारः |
| | निष्कोष्टासि | निष्कोष्टास्थः | निष्कोष्टास्थ |
| | निष्कोष्टास्मि | निष्कोष्टास्वः | निष्कोष्टास्मः |
| | निष्कोषिता | निष्कोषितारौ | निष्कोषितारः |
| | निष्कोषितासि | निष्कोषितास्थः | निष्कोषितास्थ |

निष्कोषितास्मि निष्कोषितास्वः-षितास्मः
भ० निष्कोक्ष्यति निष्कोक्ष्यतः निष्कोक्ष्यन्ति
निष्कोक्ष्यसि निष्कोक्ष्यथः निष्कोक्ष्यथ
निष्कोक्ष्यामि निष्कोक्ष्यावः निष्कोक्ष्यामः
निष्कोषिष्यति निष्कोषिष्यतः निष्कोषिष्यन्ति
निष्कोषिष्यसि निष्कोषिष्यथः निष्कोषिष्यथ
निष्कोषिष्यामि निष्कोषिष्यावः-षिष्यामः
क्रि०निरकोक्ष्यत् निरकोक्ष्यताम् निरकोक्ष्यन्
निरकोक्ष्यः निरकोक्ष्यतम् निरकोक्ष्यत
निरकोक्ष्यम् निरकोक्ष्याव निरकोक्ष्याम
निरकोषिष्यत् निरकोषिष्यताम् निरकोषिष्यन्
निरकोषिष्यः निरकोषिष्यतम् निरकोषिष्यत
निरकोषिष्यम् निरकोषिष्याव निरकोषिष्याम

निर् निस्भ्यामन्यत्र-अकोषीत् । व्यकोषीत् । कोषिता । कोषिष्यति । अकोषिष्यत् । इत्याद्येव ॥

ध्रसूश् उञ्छे । वीणवुं,

ध्रस्नाति । ध्रसान । अध्रसीत् । अध्रासीत् । दध्रास

उध्रस् इत्येके ।

उध्रस्नाति । औध्रसीत् । औध्रासीत् । उध्रसाञ्चकार

## ॥ इति क्र्यादयः परस्मैपदिनः ॥

## ॥ अथात्मनेपदी ॥

वृङ्श् संभक्तौ । सेववुं भजवुं,

व० वृणीते वृणाते वृणते
वृणीषे वृणाथे वृणीध्वे
वृणे वृणीवहे वृणीमहे
स० वृणीत वृणीयाताम् वृणीरन्
वृणीथाः वृणीयाथाम् वृणीध्वम्
वृणीय वृणीवहि वृणीमहि
प० वृणीताम् वृणाताम् वृणताम्
वृणीष्व वृणाथाम् वृणीध्वम्
वृणै वृणावहै वृणामहै
ह्य० अवृणीत अवृणाताम् अवृणत
अवृणीथाः अवृणाथाम् अवृणीध्वम्
अवृणि अवृणीवहि अवृणीमहि
अ० अवरिष्ट अवरिषाताम् अवरिषत
अवरिष्ठाः अवरिषाथाम् अवरिड्ढ्वम् ढ्वम् ध्वम्
अवरिषि अवरिष्वहि अवरिष्महि
अवरीष्ट अवरीषाताम् अवरीषत
अवरीष्ठाः अवरीषाथाम् अवरीड्ढ्वम् ढ्वम् ध्वम्
अवरीषि अवरीष्वहि अवरीष्महि
अवृत अवृषाताम् अवृषत
अवृथाः अवृषाथाम् अवृड्ढ्वम् ढ्वम्
अवृषि अवृष्वहि अवृष्महि
प० वव्रे वव्राते वव्रिरे
ववृषे वव्राथे ववृढ्वे
वव्रे ववृवहे ववृमहे
आ० वरिषीष्ट वरिषीयास्ताम् वरिषीरन्
वरिषीष्ठाः वरिषीयास्थाम् वरिषीध्वम् ढ्वम्
वरिषीय वरिषीवहि वरिषीमहि
वृषीष्ट वृषीयास्ताम् वृषीरन्
वृषीष्ठाः वृषीयास्थाम् वृषीढ्वम्
वृषीय वृषीवहि वृषीमहि
श्व० वरिता वरितारौ वरितारः
वरितासे वरितासाथे वरिताध्वे
वरिताहे वरितास्वहे वरितास्महे
वरीता वरीतारौ वरीतारः
वरीतासे वरीतासाथे वरीताध्वे
वरीताहे वरीतास्वहे वरीतास्महे
भ० वरिष्यते वरिष्येते वरिष्यन्ते
वरिष्यसे वरिष्येथे वरिष्यध्वे
वरिष्ये वरिष्यावहे वरिष्यामहे
वरीष्यते वरीष्येते वरीष्यन्ते

| | | |
|---|---|---|
| वरीष्यसे | वरीष्येथे | वरीष्यध्वे |
| वरीष्ये | वरीष्यावहे | वरीष्यामहे |
| क्रि० अवरिष्यत | अवरिष्येताम् | अवरिष्यन्त |
| अवरिष्यथाः | अवरिष्येथाम् | अवरिष्यध्वम् |
| अवरिष्ये | अवरिष्यावहि | अवरिष्यामहि |
| अवरीष्यत | अवरीष्येताम् | अवरीष्यन्त |
| अवरीष्यथाः | अवरीष्येथाम् | अवरीष्यध्वम् |
| अवरीष्ये | अवरीष्यावहि | अवरीष्यामहि |

इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंरक्षणप्रवण-
विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य
श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशा-
स्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजय-
विरचितायां हैमधातुमालायां
॥ क्र्यादिगणः ॥

# ॥ अथ चुरादयः ॥

## ॥ परस्मैपदिनः ॥

चुरण्-स्तेये । चोरवुं

| | | |
|---|---|---|
| व० चोरयति | चोरयतः | चोरयन्ति |
| चोरयसि | चोरयथः | चोरयथ |
| चोरयामि | चोरयावः | चोरयामः |
| स० चोरयेत् | चोरयेताम् | चोरयेयुः |
| चोरयेः | चोरयेतम् | चोरयेत |
| चोरयेयम् | चोरयेव | चोरयेम |
| प० चोरयतु चोरयतात् | चोरयताम् | चोरयन्तु |
| चोरय चोरयतात् | चोरयतम् | चोरयत |
| चोरयाणि | चोरयाव | चोरयाम |
| ह्य० अचोरयत् | अचोरयताम् | अचोरयन् |
| अचोरयः | अचोरयतम् | अचोरयत |
| अचोरयम् | अचोरयाव | अचोरयाम |
| अ० अचूचुरत् | अचूचुरताम् | अचूचुरन् |
| अचूचुरः | अचूचुरतम् | अचूचुरत |
| अचूचुरम् | अचूचुराव | अचूचुराम |
| प० चोरयामास | चोरयामासतुः | चोरयामासुः |
| चोरयामासिथ | चोरयामासथुः | चोरयामास |
| चोरयामास | चोरयामासिव | चोरयामासिम |
| चोरयांबभूव | चोरयाञ्चकार | चोरयाञ्चक्रतुः |
| आ० चोर्यात् | चोर्यास्ताम् | चोर्यासुः |
| चोर्याः | चोर्यास्तम् | चोर्यास्त |
| चोर्यासम् | चोर्यास्व | चोर्यास्म |
| श्व० चोरयिता | चोरयितारौ | चोरयितारः |
| चोरयितासि | चोरयितास्थः | चोरयितास्थ |

चोरयितास्मि चोरयितास्वः चोरयितास्मः
भ० चोरयिष्यति चोरयिष्यतः चोरयिष्यन्ति
चोरयिष्यसि चोरयिष्यथः चोरयिष्यथ
चोरयिष्यामि चोरयिष्यावः चोरयिष्यामः
क्रि० अचोरयिष्यत् अचोरयिष्यताम् अचोरयिष्यन्
अचोरयिष्यः अचोरयिष्यतम् अचोरयिष्यत
अचोरयिष्यम् अचोरयिष्याव अचोरयिष्याम

पृण् पूरणे । पुरवुं
पारयति । अपीपरत् । पारयाञ्चकार ३ ।

घृण स्रवणे । स्रववुं, झरवुं,
घारयति । अजीघरत् । घरयामास ३ ।

श्वल्कवल्कण्–भाषणे । बोलवुं,
श्वल्कयति । श्वल्कयाञ्चकार । अशश्वल्कत् ।
वल्कयति । अववल्कत् । वल्कयाञ्चकार

नक्क धक्कण्–नाशने । नाशकरवो,
नक्कयति । अननक्कत् । नक्कयामास
धक्कयति । अदधक्कत् । धक्कयाम्बभूव ।

चक्क चुक्कण् व्यथने । पीडवुं
चक्कयति । अचचक्कत् । चक्कयाञ्चकार ।
चुक्कयति । अचुचुक्कत् । चुक्कयामास ।

टकुण्–बन्धने । बांधवुं
टङ्कयति । अटटङ्कत् । टङ्कयाम्बभूव

अर्कण् स्तवने । स्तुति करवी,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | अर्कयति | अर्कयतः | अर्कयन्ति |
| | अर्कयसि | अर्कयथः | अर्कयथ |
| | अर्कयामि | अर्कयावः | अर्कयामः |
| स० | अर्कयेत् | अर्कयेताम् | अर्कयेयुः |
| | अर्कयेः | अर्कयेतम् | अर्कयेत |
| | अर्कयेयम् | अर्कयेव | अर्कयेम |
| प० | अर्कयतु अर्कयतात् | अर्कयताम् | अर्कयन्तु |
| | अर्कय अर्कयतात् | अर्कयतम् | अर्कयत |
| | अर्कयाणि | अर्कयाव | अर्कयाम |
| ह्य० | आर्कयत् | आर्कयताम् | आर्कयन् |
| | आर्कयः | आर्कयतम् | आर्कयत |
| | आर्कयम् | आर्कयाव | आर्कयाम |
| अ० | आर्चिकत् | आर्चिकताम् | आर्चिकन् |
| | आर्चिकः | आर्चिकतम् | आर्चिकत |
| | आर्चिकम् | आर्चिकाव | आर्चिकाम |

अर्कयाम्बभूव अर्कयाम्बभूवतुः अर्कयाम्बभूवुः
अर्कयाम्बभूविथ अर्कयाम्बभूवथुः अर्कयाम्बभूव
अर्कयाम्बभूव अर्कयाम्बभूविव अर्कयाम्बभूविम

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | अर्क्यात् | अर्क्यास्ताम् | अर्क्यासुः |
| | अर्क्याः | अर्क्यास्तम् | अर्क्यास्त |
| | अर्क्यासम् | अर्क्यास्व | अर्क्यास्म |

श्व० अर्कयिता अर्कयितारौ अर्कयितारः
अर्कयितासि अर्कयितास्थः अर्कयितास्थ
अर्कयितास्मि अर्कयितास्वः अर्कयितास्मः
भ० अर्कयिष्यति अर्कयिष्यतः अर्कयिष्यन्ति
अर्कयिष्यसि अर्कयिष्यथः अर्कयिष्यथ
अर्कयिष्यामि अर्कयिष्यावः अर्कयिष्यामः
क्रि० आर्कयिष्यत् आर्कयिष्यताम् आर्कयिष्यन्
आर्कयिष्यः आर्कयिष्यतम् आर्कयिष्यत
आर्कयिष्यम् आर्कयिष्याव आर्कयिष्याम

पिच्चण् कुट्टने । कुटवुं, खांडवुं, कचरवुं,
पिच्चयति । अपिपिच्चत् । पिच्चयाञ्चकार

पचुण् विस्तारे । विस्तारवुं,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | पञ्चयति | पञ्चयतः | पञ्चयन्ति |
| | पञ्चयसि | पञ्चयथः | पञ्चयथ |
| | पञ्चयामि | पञ्चयावः | पञ्चयामः ॥ प्रपञ्चयति |
| स० | पञ्चयेत् | पञ्चयेताम् | पञ्चयेयुः |
| | पञ्चयेः | पञ्चयेतम् | पञ्चयेत |
| | पञ्चयेयम् | पञ्चयेव | पञ्चयेम |
| प० | पञ्चयतु पञ्चयतात् | पञ्चयताम् | पञ्चयन्तु |
| | पञ्चय पञ्चयतात् | पञ्चयतम् | पञ्चयत |
| | पञ्चयानि | पञ्चयाव | पञ्चयाम |
| ह्य० | अपञ्चयत् | अपञ्चयताम् | अपञ्चयन् |
| | अपञ्चयः | अपञ्चयतम् | अपञ्चयत |

अपञ्चयम् अपञ्चयाव अपञ्चयाम

अ० प्रापपञ्चत् प्रापपञ्चताम् प्रापपञ्चन्

प्रापपञ्चः प्रापपञ्चतम् प्रापपञ्चत

प्रापपञ्चम् प्रापपञ्चाव प्रापपञ्चाम

प० पञ्चयामास पञ्चयामासतुः पञ्चयामासुः

पञ्चयामासिथ पञ्चयामासथुः पञ्चयामास

पञ्चयामास पञ्चयामासिव पञ्चयामासिम

पञ्चयाञ्चकार । पञ्चयाम्बभूव ॥

आ० पञ्च्यात् पञ्च्यास्ताम् पञ्च्यासुः

पञ्च्याः पञ्च्यास्तम् पञ्च्यास्त

पञ्च्यासम् पञ्च्यास्व पञ्च्यास्म

श्व० पञ्चयिता पञ्चयितारौ पञ्चयितारः

पञ्चयितासि पञ्चयितास्थः पञ्चयितास्थ

पञ्चयितास्मि पञ्चयितास्वः पञ्चयितास्मः

भ० पञ्चयिष्यति पञ्चयिष्यतः पञ्चयिष्यन्ति

पञ्चयिष्यसि पञ्चयिष्यथः पञ्चयिष्यथ

पञ्चयिष्यामि पञ्चयिष्यावः पञ्चयिष्यामः

क्रि० अपञ्चयिष्यत् अपञ्चयिष्यताम् अपञ्चयिष्यन्

अपञ्चयिष्यः अपञ्चयिष्यतम् अपञ्चयिष्यत

अपञ्चयिष्यम् अपञ्चयिष्याव अपञ्चयिष्याम

म्लेछण्-म्लेच्छने । अस्पष्ट बोलवुं अशुद्ध बोलवुं म्लेच्छयति । अमिम्लेच्छत् । म्लेच्छयाम्बभूव

ऊर्जण्-बलप्राणनयो. जीववुं बळ करवुं

व० ऊर्जयति ऊर्जयतः ऊर्जयन्ति

ऊर्जयसि ऊर्जयथः ऊर्जयथ

ऊर्जयामि ऊर्जयावः ऊर्जयामः

स० ऊर्जयेत् ऊर्जयेताम् ऊर्जयेयुः

ऊर्जयेः ऊर्जयेतम् ऊर्जयेत

ऊर्जयेयम् ऊर्जयेव ऊर्जयेम

प० ऊर्जयतु ऊर्जयतात् ऊर्जयताम् ऊर्जयन्तु

ऊर्जय ऊर्जयतात् ऊर्जयतम् ऊर्जयत

ऊर्जयानि ऊर्जयाव ऊर्जयाम

ह्य० और्जयत् और्जयताम् और्जयन्

और्जयः और्जयतम् और्जयत

और्जयम् और्जयाव और्जयाम

अ० और्जिजत् और्जिजताम् और्जिजन्

और्जिजः और्जिजतम् और्जिजत

और्जिजम् और्जिजाव और्जिजाम

प ऊर्जयाम्बभूव ऊर्जयाम्बभूवतु: ऊर्जयाम्बभूवुः

ऊर्जयाम्बभूविथ ऊर्जयाम्बभूवथुः ऊर्जयाम्बभूव

ऊर्जयाम्बभूव ऊर्जयाम्बभूविव ऊर्जयाम्बभूविम

ऊर्जयाञ्चकार । ऊर्जयामास ।

आ० ऊर्ज्यात् ऊर्ज्यास्ताम् ऊर्ज्यासुः

ऊर्ज्याः ऊर्ज्यास्तम् ऊर्ज्यास्त

ऊर्ज्यासम् ऊर्ज्यास्व ऊर्ज्यास्म

श्व० ऊर्जयिता ऊर्जयितारौ ऊर्जयितारः

ऊर्जयितासि ऊर्जयितास्थः ऊर्जयितास्थ

ऊर्जयितास्मि ऊर्जयितास्वः ऊर्जयितास्मः

भ० ऊर्जयिष्यति ऊर्जयिष्यतः ऊर्जयिष्यन्ति

ऊर्जयिष्यसि ऊर्जयिष्यथः ऊर्जयिष्यथ

ऊर्जयिष्यामि ऊर्जयिष्यावः ऊर्जयिष्यामः

क्रि० और्जयिष्यत् और्जयिष्यताम् और्जयिष्यन्

और्जयिष्यः और्जयिष्यतम् और्जयिष्यत

और्जयिष्यम् और्जयिष्याव और्जयिष्याम

तुजुण् पिजुण्-हिंसाबलदाननिकेतनेषु । हणवुं, बलकरवुं, आपवुं, घरकरवुं, तुञ्जयति । अतुतुञ्जत् । तुञ्जयाञ्चकार । पिञ्जयति । अपिपिञ्जत् । पिञ्जयामास ।

क्षजुण्-कृच्छ्रजीवने । दुःखेजीववुं दुःखथी जीववुं क्षञ्जयति । अचक्षञ्जत् । क्षञ्जयाम्बभूव ।

पूजण्-पूजायाम् । पूजवुं.

व० पूजयति पूजयतः पूजयन्ति

पूजयसि पूजयथः पूजयथ

पूजयामि पूजयावः पूजयामः

स० पूजयेत् पूजयेताम् पूजयेयुः

पूजयेः पूजयेतम् पूजयेत

पूजयेयम् पूजयेव पूजयेम

प० पूजयतु पूजयतात् पूजयताम् पूजयन्तु

पूजय पूजयतात् पूजयतम् पूजयत

पूजयानि पूजयाव पूजयाम

ह्य० अपूजयत् अपूजयताम् अपूजयन्
अपूजयः अपूजयतम् अपूजयत
अपूजयम् अपूजयाव अपूजयाम

अ० अपूपुजत् अपूपुजताम् अपूपुजन्
अपूपुजः अपूपुजतम् अपूपुजत
अपूपुजम् अपूपुजाव अपूपुजाम

प० पूजयामास पूजयामासतुः पूजयामासुः
पूजयामासिथ पूजयामासथुः पूजयामास
पूजयामास पूजयामासिव पूजयामासिम
पूजयाम्बभूव पूजयाञ्चकार पूजयाञ्चक्रतुः

आ० पूज्यात् पूज्यास्ताम् पूज्यासुः
पूज्याः पूज्यास्तम् पूज्यास्त
पूज्यासम् पूज्यास्व पूज्यास्म

श्व० पूजयिता पूजयितारौ पूजयितारः
पूजयितासि पूजयितास्थः पूजयितास्थ
पूजयितास्मि पूजयितास्वः पूजयितास्मः

भ० पूजयिष्यति पूजयिष्यतः पूजयिष्यन्ति
पूजयिष्यसि पूजयिष्यथः पूजयिष्यथ
पूजयिष्यामि पूजयिष्यावः पूजयिष्यामः

क्रि० अपूजयिष्यत् अपूजयिष्यताम् अपूजयिष्यन्
अपूजयिष्यः अपूजयिष्यतम् अपूजयिष्यत
अपूजयिष्यम् अपूजयिष्याव अपूजयिष्याम

॥ गज-मार्जण्-शब्दे ॥ शब्द करवो
गाजयति । अजीगजत् । गजयाञ्चकार ।
मार्जयति । अममार्जत् । मार्जयामास ।

॥ तिजण्-निशाने ॥ तीक्ष्ण करवुं छोलवुं
तेजयति । अतीतिजत् । तेजयाम्बभूव ।

वज-व्रजण्-मार्गणसंस्कारगत्योः । मार्गणसंस्कार) बाणनो संस्कार करवो, जवुं,
वाजयति । अवीवजत् । वाजयाञ्चकार
व्राजयति । अविव्रजत् । व्राजयामास ।

॥ रुजण्-हिंसायाम् ॥ मारवुं,
रोजयति । अरूरुजत् । रोजयाम्बभूव ।

॥ नटण्-अवस्यन्दने ॥ नाश करवो, पतित करवुं,
नाटयति । अनिनटत् । नाटयाञ्चकार ।

तुट-चुट-चुट्टुछुटण्-छेदने ॥ छेदवुं
तोटयति । अतूतुटत् । तोटयामास ।
चोटयति । अचूचुटत् । चोटयाम्बभूव ।
चुण्टयति । अचुचुण्टत् । चुण्टयाञ्चकार ।
छुण्टयति । अचुच्छुण्टत् । छुण्टयामास ।
॥ छुटण्-इति पाठे ॥
आच्छोटयति । आचुच्छुटत् । आच्छोटयामास

कुट्टण्-कुत्सने च । धिक्कारवुं, छेदवुं
कुट्टयति । अचुकुट्टत् । कुट्टयाम्बभूव ।

पुट्ट-चुट्ट-पुट्टण्-अल्पीभावे । टुंकु करवुं, ओछुं करवुं
पुट्टयति । अपुपुट्टत् । पुट्टयाञ्चकार ।
चुट्टयति । अचुचुट्टत् । चुट्टयामास ।
सुट्टयति । असुपुट्टत् । सुट्टयाम्बभूव ।

पुट-मुटण्-संचूर्णने । चुरो करवो ।
पोटयति । अपूपुटत् । पोटयाञ्चकार ।
मोटयति । अमूमुटत् । मोटयामास ।

अट्ट-स्मिट्टण्-अनादरे । अनादर करवो

व० अट्टयति अट्टयतः अट्टयन्ति
अट्टयसि अट्टयथः अट्टयथ
अट्टयामि अट्टयावः अट्टयामः

स० अट्टयेत् अट्टयेताम् अट्टयेयुः
अट्टयेः अट्टयेतम् अट्टयेत
अट्टयेयम् अट्टयेव अट्टयेम

प० अट्टयतु अट्टयतात् अट्टयताम् अट्टयन्तु
अट्टय अट्टयतात् अट्टयतम् अट्टयत
अट्टयानि अट्टयाव अट्टयाम

ह्य० आट्टयत आट्टयताम् आट्टयन्
आट्टयः आट्टयतम् आट्टयत
आट्टयम आट्टयाव आट्टयाम
अ० आट्टिटत आट्टिटताम् आट्टिटन्
आट्टिटः आट्टिटतम् आट्टिटत
आट्टिटम आट्टिटाव आट्टिटाम
प० अट्टयाञ्चकार अट्टयाञ्चक्रतुः अट्टयाञ्चक्रुः
अट्टयाञ्चकर्थ अट्टयाञ्चक्रथुः अट्टयाञ्चक्र
अट्टयाञ्चकार-चकर अट्टयाञ्चकृव अट्टयाञ्चकृम
आ० अट्ट्यात् अट्ट्यास्ताम् अट्ट्यासुः
अट्ट्याः अट्ट्यास्तम् अट्ट्यास्त
अट्ट्यासम् अट्ट्यास्व अट्ट्यास्म
श्व० अट्टयिता अट्टयितारौ अट्टयितारः
अट्टयितासि अट्टयितास्थः अट्टयितास्थ
अट्टयितास्मि अट्टयितास्वः अट्टयितास्मः
भ० अट्टयिष्यति अट्टयिष्यतः अट्टयिष्यन्ति
अट्टयिष्यसि अट्टयिष्यथः अट्टयिष्यथ
अट्टयिष्यामि अट्टयिष्यावः अट्टयिष्यामः
क्रि० आट्टयिष्यत् आट्टयिष्यताम् आट्टयिष्यन्
आट्टयिष्यः आट्टयिष्यतम् आट्टयिष्यत
आट्टयिष्यम् आट्टयिष्याव आट्टयिष्याम

स्मेटयति । असिस्मिटत् । स्मेटयाम्बभूव ।
लुण्टण्-स्तेये च । चोरवुं,
लुण्टयति । अलुलुण्टत् । लुण्टयाञ्चकार ।
स्निटण्-स्नेहने ।
स्नेटयति । असिस्निटत् । स्नेटयामास ।
घट्टण्-चलने । चालवुं,
घट्टयति । अजघट्टत् । घट्टयाम्बभूव ।
खट्टण्-संवरणे । ढांकवुं,
खट्टयति । अचखट्टत् । खट्टयाञ्चकार ।
षट्ट स्फिटण्-हिंसायाम् । मारवुं, दूरकरवुं
सट्टयति । अससट्टत् । सट्टयामास
स्फेटयति । अपिस्फिटत् । स्फेटयाम्बभूव
स्फुटण्-परिहासे । हसावबुं, मश्करी करवी
स्फोटयति । अपुस्फुटत् । स्फोटयाञ्चकार ।
कीटण्-वर्णने । वर्णन करवुं,
कीटयति । अचिकीटत् । कीटयामास ।
वटुण्-विभाजने । भागकरवा,
वण्टयति । अववण्टत् । वण्टयाम्बभूव ।
रुटण्-रोषे । क्रोधकरवो
रोटयति । अरूरुटत् । रोटयाञ्चकार ।
शठ श्वठ श्वठुण्-संस्कारगत्योः । संस्कार करवो जवुं,
शाठयति । अशीशठत् । शाठयामास ।
श्वठयति । अशिश्वठत् । श्वठयाम्बभूव ।
श्वण्ठयति । अशश्वण्ठत् । श्वण्ठयाञ्चकार ।
शुठण्-आलस्ये । आलसकरवी
शोठयति । अशूशुठत् । शोठयामास ।
गुठुण्-वेष्टने । विंटवुं
गुण्ठयति । अजुगुण्ठत् । गुण्ठयाम्बभूव ।
शुठुण्-शोषणे । शोसावुं सुकाइजवुं
शुण्ठयति । अशुशुण्ठत् । शुण्ठयाञ्चकार ।
लडण्-उपसेवायाम् । लाडकरावबां
लाडयति । अलीलडत् । लाडयामास ।
लालयति । अलीललत् । लालयामास ।
स्फुडुण्-परिहासे । मश्करीकरवी
स्फुण्डयति । अपुस्फुण्डत् । स्फुण्डयाम्बभूव ।
ओलडुण्-उत्क्षेपे । उच्छाळवुं

व० ओलण्डयति ओलण्डयतः ओलण्डयन्ति
ओलण्डयसि ओलण्डयथः ओलण्डयथ
ओलण्डयामि ओलण्डयावः ओलण्डयामः
स० ओलण्डयेत् ओलण्डयेताम् ओलण्डयेयुः
ओलण्डयेः ओलण्डयेतम् ओलण्डयेत
ओलण्डयेयम् ओलण्डयेव ओलण्डयेम
ओलण्डयतु-यतात् ओलण्डयताम् ओलण्डयन्तु
ओलण्डय-यतात् ओलण्डयतम् ओलण्डयत
ओलण्डयानि ओलण्डयाव ओलण्डयाम
ह्य० औलण्डयत् औलण्डयताम् औलण्डयन्
औलण्डयः औलण्डयतम् औलण्डयत

औलण्डयम् औलण्डयाव औलण्डयाम
अ० औललण्डत् औललण्डताम् औललण्डन्
औललण्डः औललण्डतम् औललण्डत
औललण्डम् औललण्डाव औललण्डाम
प०ओलण्डयामास ओलण्डयामासतुः-यामासुः
ओलण्डयामासिथ ओलण्डयामासथुः-यामास
ओलण्डयामास ओलण्डयामासिव-यामासिम
आ०ओलण्ड्यात् ओलण्ड्यास्ताम् ओलण्ड्यासुः
ओलण्ड्याः ओलण्ड्यास्तम् ओलण्ड्यास्त
ओलण्ड्यासम् ओलण्ड्यास्व ओलण्ड्यास्म
ओलण्डयिता ओलण्डयितारौ ओलण्डयितारः
ओलण्डयितासि ओलण्डयितास्थः-यितास्थ
ओलण्डयितास्मि ओलण्डयितास्वः-यितास्मः
ओलण्डयिष्यति ओलण्डयिष्यतः-यिष्यन्ति
ओलण्डयिष्यसि ओलण्डयिष्यथः-यिष्यथ
ओलण्डयिष्यामि ओलण्डयिष्यावः-यिष्यामः
औलण्डयिष्यत् औलण्डयिष्यताम्-यिष्यन्
औलण्डयिष्यः औलण्डयिष्यतम्-यिष्यत
औलण्डयिष्यम् औलण्डयिष्याव-यिष्याम
ओविद्दयमित्यन्ये तन्मते लण्डयतीत्यादि

पीडण्-गहने । पीडवुं

व० पीडयति पीडयतः पीडयन्ति
पीडयसि पीडयथः पीडयथ
पीडयामि पीडयावः पीडयामः
स० पीडयेत् पीडयेताम् पीडयेयुः
पीडयेः पीडयेतम् पीडयेत
पीडयेयम् पीडयेव पीडयेम
प० पीडयतु पीडयतात् पीडयताम् पीडयन्तु
पीडय पीडयतात् पीडयतम् पीडयत
पीडयानि पीडयाव पीडयाम
ह्य० अपीडयत् अपीडयताम् अपीडयन्
अपीडयः अपीडयतम् अपीडयत
अपीडयम् अपीडयाव अपीडयाम
अ० अपीपिडत् अपीपिडताम् अपीपिडन्
अपीपिडः अपीपिडतम् अपीपिडत
अपीपिडम् अपीपिडाव अपीपिडाम
अपिपीडत् अपिपीडताम् अपिपीडन्
अपिपीडः अपिपीडतम् अपिपीडत
अपिपीडम् अपिपीडाव अपिपीडाम
प० पीडयामास पीडयामासतुः पीडयामासुः
पीडयामासिथ पीडयामासथुः पीडयामास
पीडयामास पीडयामासिव पीडयामासिम
आ० पीड्यात् पीड्यास्ताम् पीड्यासुः
पीड्याः पीड्यास्तम् पीड्यास्त
पीड्यासम् पीड्यास्व पीड्यास्म
श्व० पीडयिता पीडयितारौ पीडयितारः
पीडयितासि पीडयितास्थः पीडयितास्थ
पीडयितास्मि पीडयितास्वः पीडयितास्मः
भ० पीडयिष्यति पीडयिष्यतः पीडयिष्यन्ति
पीडयिष्यसि पीडयिष्यथः पीडयिष्यथ
पीडयिष्यामि पीडयिष्यावः पीडयिष्यामः
क्रि०अपीडयिष्यत् अपीडयिष्यताम् अपीडयिष्यन्
अपीडयिष्यः अपीडयिष्यतम् अपीडयिष्यत
अपीडयिष्यम् अपीडयिष्याव अपीडयिष्याम

तडण्-आघाते । मारवुं

व० ताडयति ताडयतः ताडयन्ति
ताडयसि ताडयथः ताडयथ
ताडयामि ताडयावः ताडयामः
स० ताडयेत् ताडयेताम् ताडयेयुः
ताडयेः ताडयेतम् ताडयेत
ताडयेयम् ताडयेव ताडयेम
प० ताडयतु, ताडयतात् ताडयताम् ताडयन्तु
ताडय ताडयतात् ताडयतम् ताडयत
ताडयानि ताडयाव ताडयाम
ह्य० अताडयत् अताडयताम् अताडयन्
अताडयः अताडयतम् अताडयत
अताडयम् अताडयाव अताडयाम
अ० अतीतडत् अतीतडताम् अतीतडन्

अतीतडः अतीतडतम् अतीतडत
अतीतडम् अतीतडाव अतीतडाम
प० ताडयाञ्चकार ताडयाञ्चक्रतुः ताडयाञ्चक्रुः
ताडयाञ्चकर्थ ताडयाञ्चक्रथुः ताडयाञ्चक्र
ताडयाञ्चकार-चकर ताडयाञ्चकृव ताडयाञ्चकृम
ताडयाम्बभूव ताडयाम्बभूवतुः ताडयाम्बभूवुः
आ० ताड्यात् ताड्यास्ताम् ताड्यासुः
ताड्याः ताड्यास्तम् ताड्यास्त
ताड्यासम् ताड्यास्व ताड्यास्म
श्व० ताडयिता ताडयितारौ ताडयितारः
ताडयितासि ताडयितास्थः ताडयितास्थ
ताडयितास्मि ताडयितास्वः ताडयितास्मः
भ० ताडयिष्यति ताडयिष्यतः ताडयिष्यन्ति
ताडयिष्यसि ताडयिष्यथः ताडयिष्यथ
ताडयिष्यामि ताडयिष्यावः ताडयिष्यामः
क्रि० अताडयिष्यत् अताडयिष्यताम् अताडयिष्यन्
अताडयिष्यः अताडयिष्यतम् अताडयिष्यत
अताडयिष्यम् अताडयिष्याव अताडयिष्याम

मडुण्–भूषायाम् । शणगारवुं,

व० मण्डयति मण्डयतः मण्डयन्ति
मण्डयसि मण्डयथः मण्डयथ
मण्डयामि मण्डयावः मण्डयामः
स० मण्डयेत् मण्डयेताम् मण्डयेयुः
मण्डयेः मण्डयेतम् मण्डयेत
मण्डयेयम् मण्डयेव मण्डयेम
प० मण्डयतु मण्डयतात् मण्डयताम् मण्डयन्तु
मण्डय ,, मण्डयतम् मण्डयत
मण्डयानि मण्डयाव मण्डयाम
ह्य० अमण्डयत् अमण्डयताम् अमण्डयन्
अमण्डयः अमण्डयतम् अमण्डयत
अमण्डयम् अमण्डयाव अमण्डयाम
अ० अममण्डत् अममण्डताम् अममण्डन्
अममण्डः अममण्डतम् अममण्डत
अममण्डम् अममण्डाव अममण्डाम
प० मण्डयामास मण्डयामासतुः मण्डयामासुः
मण्डयामासिथ मण्डयामासथुः मण्डयामास
मण्डयामास मण्डयामासिव मण्डयामासिम
आ० मण्ड्यात् मण्ड्यास्ताम् मण्ड्यासुः
मण्ड्याः मण्ड्यास्तम् मण्ड्यास्त
मण्ड्यासम् मण्ड्यास्व मण्ड्यास्म
श्व० मण्डयिता मण्डयितारौ मण्डयितारः
मण्डयितासि मण्डयितास्थः मण्डयितास्थ
मण्डयितास्मि मण्डयितास्वः मण्डयितास्मः
भ० मण्डयिष्यति मण्डयिष्यतः मण्डयिष्यन्ति
मण्डयिष्यसि मण्डयिष्यथः मण्डयिष्यथ
मण्डयिष्यामि मण्डयिष्यावः मण्डयिष्यामः
अमण्डयिष्यत् अमण्डयिष्यताम् अमण्डयिष्यन्
अमण्डयिष्यः अमण्डयिष्यतम् अमण्डयिष्यत
अमण्डयिष्यम् अमण्डयिष्याव अमण्डयिष्याम

खड खडुण्–भेदे । खांडवुं
खाडयति । अचखडत् । खाडयामास ।
खण्डयति । अचखण्डत् । खण्डयाम्बभूव ।

कडुण्–खण्डने च । खांडवुं
कण्डयति । अचकण्डत् । कण्डयाञ्चकार ।

कुडुण्–रक्षणे । रक्षण करवुं
कुण्डयति । अचुकुण्डत् । कुण्डयामास ।

गुडुण्-वेष्टने च । वींटवुं रक्षणकरवुं
गुण्डयति । अजुगुण्डत् । गुण्डयाम्बभूव ।

चुडुण् छेदने । छेदवुं
चुण्डयति । अचुचुण्डत् । चुण्डयाञ्चकार ।

भडुण्–कल्याणे । कल्याण करवुं
भण्डयति । अबभण्डत् । भण्डयामास ।

पिडुण्–सङ्घाते । पकडुं करवुं
पिण्डयति । अपिपिण्डत् । पिण्डयाम्बभूव ।

ईडण्–स्तुतौ । वखाणवुं
ईडयति । ऐडिडत् । ईडयाञ्चकार ।

चडुण् कोपे । कोप करवो
चण्डयति । अचचण्डत् । चण्डयामास ।

॥ जुड-चूर्ण-वर्णण्-प्रेरणे ॥ प्रेरणा करवी

जोडयति । अजूजुडत् । जोडयाम्बभूव

चूर्णयति । अचुचूर्णत् । चूर्णयाञ्चकार

वर्णयति । अववर्णत् । वर्णयामास ।

॥ चूण-तूणण्-सङ्कोचने ॥ संकोच करवो

चूणयति । अचूचुणत् । चूणयाम्बभूव

तूणयति । अतूतुणत् । तूणयाञ्चकार

॥ श्रणण्-दाने ॥ आपवुं,

व० श्राणयति श्राणयतः श्राणयन्ति
श्राणयसि श्राणयथः श्राणयथ
श्राणयामि श्राणयावः श्राणयामः
विश्राणयति

स० श्राणयेत् श्राणयेताम् श्राणयेयुः
श्राणयेः श्राणयेतम् श्राणयेत
श्राणयेयम् श्राणयेव श्राणयेम

प० श्राणयतु श्राणयतात् श्राणयताम् श्राणयन्तु
श्राणय „ श्राणयतम् श्राणयत
श्राणयानि श्राणयाव श्राणयाम

ह्य० अश्राणयत् अश्राणयताम् अश्राणयन्
अश्राणयः अश्राणयतम् अश्राणयत
अश्राणयम् अश्राणयाव अश्राणयाम

अ० अशिश्रणत् अशिश्रणताम् अशिश्रणन्
अशिश्रणः अशिश्रणतम् अशिश्रणत
अशिश्रणम् अशिश्रणाव अशिश्रणाम
व्यशिश्रिणत्

अशश्राणत् अशश्राणताम् अशश्राणन्
अशश्राणः अशश्राणतम् अशश्राणत
अशश्राणम् अशश्राणाव अशश्राणाम
व्यशश्राणत

प० श्राणयामास श्राणयामासतुः श्राणयामासुः
श्राणयामासिथ श्राणयामासथुः
श्राणयामास

श्राणयामास श्राणयामासिव श्राणयामासिम

आ० श्राण्यात् श्राण्यास्ताम् श्राण्यासुः
श्राण्याः श्राण्यास्तम् श्राण्यास्त
श्राण्यासम् श्राण्यास्व श्राण्यास्म

श्व० श्राणयिता श्राणयितारौ श्राणयितारः
श्राणयितासि श्राणयितास्थः श्राणयितास्थ
श्राणयितास्मि श्राणयितास्वः श्राणयितास्मः

भ० श्राणयिष्यति श्राणयिष्यतः श्राणयिष्यन्ति
श्राणयिष्यसि श्राणयिष्यथः श्राणयिष्यथ
श्राणयिष्यामि श्राणयिष्यावः श्राणयिष्यामः

क्रि० अश्राणयिष्यत् अश्राणयिष्यताम् अश्राणयिष्यन्
अश्राणयिष्यः अश्राणयिष्यतम् अश्राणयिष्यत
अश्राणयिष्यम् अश्राणयिष्याव अश्राणयिष्याम

॥ पूणण् संघाते ॥ एकठुं करवुं

पूणयति । अपूपुणत् । पूणयाञ्चकार

॥ चितुण्-स्मृत्याम् ॥ विचारवुं

चिन्तयति । अचिचिन्तत् । चिन्तयाञ्चकार

पुस्त-बुस्तण्-आदरानादरयोः ।

आदर करवो, अनादर करवो

पुस्तयति । अपुपुस्तत् । पुस्तयाञ्चकार

बुस्तयति । अबुबुस्तत् । बुस्तयामास ।

॥ मुस्तण्-संघाते ॥ एकठुं करवुं

मुस्तयति । अमुमुस्तत् । मुस्तयाञ्चकार

॥ कॄतण्-संशब्दने ॥ वखाण करवा

व० कीर्तयति कीर्तयतः कीर्तयन्ति
कीर्तयसि कीर्तयथः कीर्तयथ
कीर्तयामि कीर्तयावः कीर्तयामः

स० कीर्तयेत् कीर्तयेताम् कीर्तयेयुः
कीर्तयेः कीर्तयेतम् कीर्तयेत
कीर्तयेयम् कीर्तयेव कीर्तयेम

प० कीर्तयतु कीर्तयतात्-ताम् कीर्तयन्तु
कीर्तय „ कीर्तयतम् कीर्तयत
कीर्तयानि कीर्तयाव कीर्तयाम

ह्य० अकीर्तयत् अकीर्तयताम् अकीर्तयन्
अकीर्तयः अकीर्तयतम् अकीर्तयत
अकीर्तयम् अकीर्तयाव अकीर्तयाम
अ० अचीकृतत् अचीकृतताम् अचीकृतन्
अचीकृतः अचीकृततम् अचीकृतत
अचीकृतम् अचीकृताव अचीकृताम
अचिकीर्तत् अचिकीर्तताम् अचिकीर्तन्
अचिकीर्तः अचिकीर्ततम् अचिकीर्तत
अचिकीर्तम् अचिकीर्ताव अचिकीर्ताम
कीर्तयाञ्चकार कीर्तयाञ्चक्रतुः कीर्तयाञ्चक्रुः
कीर्तयाञ्चकर्थ कीर्तयाञ्चक्रथुः कीर्तयाञ्चक्र
कीर्तयाञ्चकार-चकर कीर्तयाञ्चकृव
कीर्तयाञ्चकृम
आ० कीर्त्यात् कीर्त्यास्ताम् कीर्त्यासुः
कीर्त्याः कीर्त्यास्तम् कीर्त्यास्त
कीर्त्यासम् कीर्त्यास्व कीर्त्यास्म
श्व० कीर्तयिता कीर्तयितारौ कीर्तयितारः
कीर्तयितासि कीर्तयितास्थः कीर्तयितास्थ
कीर्तयितास्मि कीर्तयितास्वः कीर्तयितास्मः
भ० कीर्तयिष्यति कीर्तयिष्यतः कीर्तयिष्यन्ति
कीर्तयिष्यसि कीर्तयिष्यथः कीर्तयिष्यथ
कीर्तयिष्यामि कीर्तयिष्यावः कीर्तयिष्यामः
अकीर्तयिष्यत् अकीर्तयिष्यताम् अकीर्तयिष्यन्
अकीर्तयिष्यः अकीर्तयिष्यतम् अकीर्तयिष्यत
अकीर्तयिष्यम् अकीर्तयिष्याव अकीर्तयिष्याम

॥ स्वर्त-पथुण्-गतौ ॥ जवुं

स्वर्तयति । असस्वर्तत् । स्वर्तयाञ्चकार ।
पन्थयति । अपपन्थत् । पन्थयाञ्चकार ।
परिपन्थयति । पर्यपपन्थत् ।

॥ श्रथण्-प्रतिहर्षे ॥ हर्ष पामवो

श्राथयति । अशिश्रथत् । श्राथयाञ्चकार

॥ पृथण्-प्रक्षेपणे ॥ फेंकवुं

व० पर्थयति पर्थयतः पर्थयन्ति
पर्थयसि पर्थयथः पर्थयथ
पर्थयामि पर्थयावः पर्थयामः
स० पर्थयेत् पर्थयेताम् पर्थयेयुः
पर्थयेः पर्थयेतम् पर्थयेत
पर्थयेयम् पर्थयेव पर्थयेम
प० पर्थयतु पर्थयतात् पर्थयताम् पर्थयन्तु
पर्थय ,, पर्थयतम् पर्थयत
पर्थयानि पर्थयाव पर्थयाम
ह्य० अपर्थयत् अपर्थयताम् अपर्थयन्
अपर्थयः अपर्थयतम् अपर्थयत
अपर्थयम् अपर्थयाव अपर्थयाम
अ० अपीपृथत् अपीपृथताम् अपीपृथन्
अपीपृथः अपीपृथतम् अपीपृथत
अपीपृथम् अपीपृथाव अपीपृथाम
अपपर्थत् अपपर्थताम् अपपर्थन्
अपपर्थः अपपर्थतम् अपपर्थत
अपपर्थम् अपपर्थाव अपपर्थाम
प० पर्थयामास पर्थयामासतुः पर्थयामासुः
पर्थयामासिथ पर्थयामासथुः पर्थयामास
पर्थयामास पर्थयामासिव पर्थयामासिम
आ० पर्थ्यात् पर्थ्यास्ताम् पर्थ्यासुः
पर्थ्याः पर्थ्यास्तम् पर्थ्यास्त
पर्थ्यासम् पर्थ्यास्व पर्थ्यास्म
श्व० पर्थयिता पर्थयितारौ पर्थयितारः
पर्थयितासि पर्थयितास्थः पर्थयितास्थ
पर्थयितास्मि पर्थयितास्वः पर्थयितास्मः
भ० पर्थयिष्यति पर्थयिष्यतः पर्थयिष्यन्ति
पर्थयिष्यसि पर्थयिष्यथः पर्थयिष्यथ
पर्थयिष्यामि पर्थयिष्यावः पर्थयिष्यामः
क्रि० अपर्थयिष्यत् अपर्थयिष्यताम् अपर्थयिष्यन्
अपर्थयिष्यः अपर्थयिष्यतम् अपर्थयिष्यत
अपर्थयिष्यम् अपर्थयिष्याव अपर्थयिष्याम

॥ प्रथण्-प्रख्याने ॥ प्रसिद्ध करवुं,

व० प्राथयति प्राथयतः प्राथयन्ति
प्राथयसि प्राथयथः प्राथयथ.

प्राथयामि प्राथयावः प्राथयामः
स० प्राथयेत् प्राथयेताम् प्राथयेयुः
प्राथयेः प्राथयेतम् प्राथयेत
प्राथयेयम् प्राथयेव प्राथयेम
प० प्राथयतु प्राथयतात् प्राथयताम् प्राथयन्तु
प्राथय ,, प्राथयतम् प्राथयत
प्राथयानि प्राथयाव प्राथयाम
ह्य० अप्राथयत् अप्राथयताम् अप्राथयन्
अप्राथयः अप्राथयतम् अप्राथयत
अप्राथयम् अप्राथयाव अप्राथयाम
अ० अपप्रथत् अपप्रथताम् अपप्रथन्
अपप्रथः अपप्रथतम् अपप्रथत
अपप्रथम् अपप्रथाव अपप्रथाम
प्राथयाम्बभूव प्राथयाम्बभूवतुः प्राथयाम्बभूवुः
प्राथयाम्बभूविथ प्राथयाम्बभूवथुः प्राथयाम्बभूव
प्राथयाम्बभूव प्राथयाम्बभूविव प्राथयाम्बभूविम
आ० प्राथ्यात् प्राथ्यास्ताम् प्राथ्यासुः
प्राथ्याः प्राथ्यास्तम् प्राथ्यास्त
प्राथ्यासम् प्राथ्यास्व प्राथ्यास्म
श्व० प्राथयिता प्राथयितारौ प्राथयितारः
प्राथयितासि प्राथयितास्थः प्राथयितास्थ
प्राथयितास्मि प्राथयितास्वः प्राथयितास्मः
भ० प्राथयिष्यति प्राथयिष्यतः प्राथयिष्यन्ति
प्राथयिष्यसि प्राथयिष्यथः प्राथयिष्यथ
प्राथयिष्यामि प्राथयिष्यावः प्राथयिष्यामः
क्रि० अप्राथयिष्यत् अप्राथयिष्यताम् अप्राथयिष्यन्
अप्राथयिष्यः अप्राथयिष्यतम् अप्राथयिष्यत
अप्राथयिष्यम् अप्राथयिष्याव अप्राथयिष्याम

॥ छदण्–संवरणे ॥ ढांकवुं,
छादयति । अचिच्छदत् । छादयाञ्चकार
॥ चुदण्–सञ्चोदने ॥ प्रेरवु, हांकवुं
चोदयति । अचूचुदत् । चोदयाञ्चकार
॥ मिदुण्–स्नेहने ॥ चीकणुं करवुं, पलाळवुं
मिन्दयति । अमिमिन्दत् । मिन्दयाञ्चकार

॥ गुर्दण् निकेतने ॥ वसवुं,
गूर्दयति । अजुगूर्दत् । गूर्दयाञ्चकार
॥ छर्दण्–वमने ॥ ओकवुं, वमन करवुं
छर्दयति । अचच्छर्दत् । छर्दयाञ्चकार
ठान्तोऽयमित्येके तन्मते बुण्ठयतीत्यादि
॥ बुधुण्–हिंसायाम् ॥ मारवुं
बुन्धयति । अबुबुन्धत् । बुन्धयाञ्चकार
॥ वर्धण्–छेदनपूरणयोः ॥ छेदवुं पूरवुं
वर्धयति । अववर्धत् । वर्धयाञ्चकार
॥ गर्धण्–अभिकांक्षायाम् इच्छवुं ।
गर्धयति । अजगर्धत् । गर्धयाञ्चकार
॥ बन्ध–बधण्–संयमने ॥ नियमित रहेवुं
बन्धयति । अबबन्धत् । बन्धयाञ्चकार
बाधयति । अबीबधत् । बाधयाञ्चकार
॥ छपुण्–गतौ ॥ जवुं,
छम्पयति । अचच्छम्पत् । छम्पयाञ्चकार
॥ क्षपुण्–क्षान्तौ ॥ क्षमा करवी, खमवुं सहेवुं
क्षम्पयति । अचक्षम्पत् । क्षम्पयाञ्चकार
॥ स्तूपण्–समुच्छ्राये ॥ वधवुं
स्तूपयति । अतुस्तुपत् । स्तूपयाञ्चकार
॥ डिपण्–क्षेपे ॥ फेंकवुं
डेपयति । अडीडिपत् । डेपयाञ्चकार
॥ ह्लपण्–व्यक्तायां वाचि ॥ स्पष्ट बोलवुं
ह्लापयति । अजिह्लपत् । ह्लापयाम्बभूव
॥ डपु–डिपुण्–संघाते ॥ एकठुं करवुं
डम्पयति । अडडम्पत् । डम्पयाञ्चकार
डिम्पयति । अडिडिम्पत् । डिम्पयाञ्चकार
॥ शूर्पण्–माने ॥ मापवुं
शूर्पयति । अशुशूर्पत् । शूर्पयाञ्चकार
॥ शुल्वण्–सर्जने च ॥ सरजवुं, मापवुं
शुल्वयति । अशुशुल्वत् । शुल्वयाञ्चकार
॥ डबु–डिबुण्–क्षेपे ॥ फेंकवुं

डम्बयति । अडडम्बत् । डम्बयाञ्चकार
डिम्बयति । अडिडिम्बत् । डिम्बयाञ्चकार

॥ सम्बण्-सम्बन्धे ॥ सम्बन्ध करवो

सम्बयति । अससम्बत् । सम्बयाञ्चकार

॥ कुबुण्-आच्छादने ॥ ढांकवुं

कुम्बयति । अचुकुम्बत् । कुम्बयाञ्चकार

॥ लुबु-तुबुण्-अर्दने ॥ पीडवुं,

लुम्बयति । अलुलुम्बत् । लुम्बयाञ्चकार
तुम्बयति । अतुतुम्बत् । तुम्बयाञ्चकार

॥ पुर्वण्-निकेतने ॥

पूर्वयति । अपुपूर्वत् । पूर्वयाञ्चकार

॥ यमण्-परिवेषणे ॥ पोरसवुं, वींटवुं, घेरावुं,

व० यामयति यामयतः यामयन्ति
यामयसि यामयथः यामयथ
यामयामि यामयावः यामयामः
स० यामयेत् यामयेताम् यामयेयुः
यामयेः यामयेतम् यामयेत
यामयेयम् यामयेव यामयेम
प० यामयतु यामयतात् यामयताम् यामयन्तु
यामय „ यामयतम् यामयत
यामयानि यामयाव यामयाम
ह्य० अयामयत् अयामयताम् अयामयन्
अयामयः अयामयतम् अयामयत
अयामयम् अयामयाव अयामयाम
अ० अयीयमत् अयीयमताम् अयीयमन्
अयीयमः अयीयमतम् अयीयमत
अयीयमम् अयीयमाव अयीयमाम
प० यामयामास यामयामासतुः यामयामासुः
यामयामासिथ यामयामासथुः यामयामास
यामयामास यामयामासिव यामयामासिम
आ० याम्यात् याम्यास्ताम् याम्यासुः
याम्याः याम्यास्तम् याम्यास्त
याम्यासम् याम्यास्व याम्यास्म
श्व० यामयिता यामयितारौ यामयितारः
यामयितासि यामयितास्थः यामयितास्थ
यामयितास्मि यामयितास्वः यामयितास्मः
भ० यामयिष्यति यामयिष्यतः यामयिष्यन्ति
यामयिष्यसि यामयिष्यथः यामयिष्यथ
यामयिष्यामि यामयिष्यावः यामयिष्यामः
क्रि० अयामयिष्यत् अयामयिष्यताम् अयामयिष्यन्
अयामयिष्यः अयामयिष्यतम् अयामयिष्यत
अयामयिष्यम् अयामयिष्याव अयामयिष्याम

॥ अपरिवेषणार्थे ॥

व० यमयति यमयतः यमयन्ति
यमयसि यमयथः यमयथ
यमयामि यमयावः यमयामः
स० यमयेत् यमयेताम् यमयेयुः
यमयेः यमयेतम् यमयेत
यमयेयम् यमयेव यमयेम
प० यमयतु यमयतात् यमयताम् यमयन्तु
यमय „ यमयतम् यमयत
यमयानि यमयाव यमयाम
ह्य० अयमयत् अयमयताम् अयमयन्
अयमयः अयमयतम् अयमयत
अयमयम् अयमयाव अयमयाम
अ० अयीयमत् अयीयमताम् अयीयमन्
अयीयमः अयीयमतम् अयीयमत
अयीयमम् अयीयमाव अयीयमाम
प० यमयामास यमयामासतुः यमयामासुः
यमयामासिथ यमयामासथुः यमयामास
यमयामास यमयामासिव यमयामासिम
आ० यम्यात् यम्यास्ताम् यम्यासुः
यम्याः यम्यास्तम् यम्यास्त
यम्यासम् यम्यास्व यम्यास्म

श्व० यमयिता यमयितारौ यमयितारः
यमयितासि यमयितास्थः यमयितास्थ
यमयितास्मि यमयितास्वः यमयितास्मः
भ० यमयिष्यति यमयिष्यतः यमयिष्यन्ति
यमयिष्यसि यमयिष्यथः यमयिष्यथ
यमयिष्यामि यमयिष्यावः यमयिष्यामः
क्रि० अयमयिष्यत् अयमयिष्यताम् अयमयिष्यन्
अयमयिष्यः अयमयिष्यतम् अयमयिष्यत
अयमयिष्यम् अयमयिष्याव अयमयिष्याम

॥ व्ययण्-क्षये ॥ क्षीण थवुं, नाश थवुं
व्याययति । अविव्ययत् । व्याययाञ्चकार

॥ यन्त्रुण्-संकोचने ॥ संकोचवुं,
यन्त्रयति । अययन्त्रत् । यन्त्रयाञ्चकार

॥ कुन्द्रुण्-अनृतभाषणे ॥जुठुं बोलवुं,
कुन्द्रयति । अचुकुन्द्रत । कुन्द्रयाञ्चकार

॥ श्वभ्रण्-गतौ ॥ जवुं,
श्वभ्रयति । अशश्वभ्रत् । श्वभ्रयाञ्चकार

॥ तिलण्-स्नेहने ॥ चीकणुं करवुं
तेलयति । अतीतिलत् । तेलयाञ्चकार

॥ जलण्-अपवारणे ॥ रोकवुं, ढांकवु
जालयति । अजीजलत । जालयाञ्चकार

॥ क्षलण्-शौचे ॥ धोवुं
क्षालयति । अचिक्षलत् । क्षालयाञ्चकार

॥ पुलण्-समुच्छ्राये ॥ वधवुं,
पोलयति अपूपुलत । पोलयाञ्चकार

॥ बिलण्- भेदे ॥ जुदा करवुं. भेदवुं
बेलयति । अबीबिलत् । बेलयाञ्चकार

तलण्-प्रतिष्ठायाम् ॥ स्थापवुं,
तालयति । अतीतलत् । तालयाञ्चकार

॥ तुलण्-उन्माने ॥ तोळवुं, जोखवुं,
तोलयति । अतूतुलत् । तोलयाञ्चकार

॥ दुलण्-उत्क्षेपे ॥ हिंचोळवुं, डोलवुं
दोलयति । अदूदुलत् । दोलयाञ्चकार

॥ बुलण्-निमज्जने ॥ डुबवुं,
बोलयति । अबूबुलत । बोलयाञ्चकार

॥ मूलण्-रोहणे ॥ ऊगवुं, वधवुं, चढवुं
मूलयति । अमूमुलत् । मूलयाञ्चकार

मतान्तरे मुलण्
मोलयति । अमूमुलत् । मोलयाञ्चकार

॥ कल-किल-पिलण्-क्षेपे ॥ फेंकवुं
कालयति । अचीकलत् । कालयाञ्चकार
केलयति । अचीकिलत् । केलयाञ्चकार
पेलयति । अपीपिलत् । पेलयाञ्चकार

॥ पलण्-रक्षणे ॥ रक्षण करवुं,

व० पालयति पालयतः पालयन्ति
पालयसि पालयथः पालयथ
पालयामि पालयावः पालयामः

स० पालयेत् पालयेताम् पालयेयुः
पालयेः पालयेतम् पालयेत
पालयेयम् पालयेव पालयेम

प० पालयतु पालयतात् पालयताम् पालयन्तु
पालय ,, पालयतम् पालयत
पालयानि पालयाव पालयाम

ह्य० अपालयत् अपालयताम् अपालयन्
अपालयः अपालयतम् अपालयत
अपालयम् अपालयाव अपालयाम

अ० अपीपलत् अपीपलताम् अपीपलन्
अपीपलः अपीपलतम् अपीपलत
अपीपलम् अपीपलाव अपीपलाम

प० पालयामास पालयामासतुः पालयामासुः
पालयामासिथ पालयामासथुः पालयामास
पालयामास पालयामासिव पालयामासिम

आ० पाल्यात् पाल्यास्ताम् पाल्यासुः

पाल्याः पाल्यास्तम् पाल्यास्त
पाल्यासम् पाल्यास्व पाल्यास्म
श्व० पालयिता पालयितारौ पालयितारः
पालयितासि पालयितास्थः पालयितास्थ
पालयितास्मि पालयितास्वः पालयितास्मः
भ० पालयिष्यति पालयिष्यतः पालयिष्यन्ति
पालयिष्यसि पालयिष्यथः पालयिष्यथ
पालयिष्यामि पालयिष्यावः पालयिष्यामः
क्रि० अपालयिष्यत् अपालयिष्यताम् अपालयिष्यन्
अपालयिष्यः अपालयिष्यतम् अपालयिष्यत
अपालयिष्यम् अपालयिष्याव अपालयिष्याम

॥ इलण्-प्रेरणे ॥ प्रेरवुं, हांकवुं
एलयति । ऐलिलत् । एलयाञ्चकार ।
॥ चलण्-भृतौ ॥ भरवुं, चलाववुं
चालयति । अचीचलत् । चालयाञ्चकार
॥ सान्त्वण्-सामप्रयोगे ॥ शांत करवुं,
प्रिय वचन कहेवां
सान्त्वयति । अससान्त्वत् । सान्त्वयाञ्चकार
॥ धूशण्-कान्तीकरणे ॥ चकचकतुं करवुं
धूशयति । अदूधुशत् । धूशयाञ्चकार
॥ श्लिषण्-श्लेषणे ॥ भेटवुं,
श्लेषयति । अशिश्लिषत् । श्लेषयाञ्चकार
॥ लूषण्-हिंसायाम् ॥ मारवुं
लूषयति । अलूलुषत् । लूषयाञ्चकार
॥ रुषण्-रोषे ॥ क्रोध करवो
रोषयति । अरूरुषत् । रोषयाञ्चकार
॥ प्युषण्-उत्सर्गे ॥ त्याग करवो
प्योषयति । अपुप्युषत् । प्योषयाञ्चकार
॥ पसुण्-नाशने ॥ नाश करवो
पंसयति । अपपंसत् । पंसयाञ्चकार
॥ जसुण्-रक्षणे ॥ रक्षण करवुं
जंसयति । अजजंसत् । जंसयाञ्चकार
॥ पुसण्-अभिमर्दने ॥ मसळवुं, चोळवुं
पुंसयति । अपुपुंसत् । पुंसयाञ्चकार
ब्रूस-पिस-जस-बर्हण्-हिंसायाम् ॥
हिंसा करवी
ब्रूसयति । अबुब्रुसत् । ब्रूसयाञ्चकार ।
पेसयति । अपीपिसत् । पेसयाञ्चकार ।
जासयति । अजीजसत् । जासयाञ्चकार ।
बर्हयति । अबबर्हत् । बर्हयाञ्चकार ।
ष्णिहण्-स्नेहने । चीकणुं करवुं स्नेह करवो
स्नेहयति । असिष्णिहत् । स्नेहयाञ्चकार ।
म्रक्षण्-म्लेच्छने ।
म्रक्षयति । अमम्रक्षत् । म्रक्षयाञ्चकार ।
भक्षण्-अदने ॥ खावुं
भक्षयति । अबभक्षत् । भक्षयाञ्चकार ।
पक्षण् परिग्रहे । पक्ष लेवो-स्वीकारवुं
पक्षयति । अपपक्षत् । पक्षयाञ्चकार ।
लक्षीण्-दर्शनांकनयोः । जोवुं चिन्ह करवुं
अ० फलवत्कर्तरि आत्मनेपदी,
अन्यत्र परस्मैपदी ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | लक्षयते | लक्षयेते | लक्षयन्ते |
| | लक्षयसे | लक्षयेथे | लक्षयध्वे |
| | लक्षये | लक्षयावहे | लक्षयामहे |
| स० | लक्षयेत | लक्षयेयाताम् | लक्षयेरन् |
| | लक्षयेथाः | लक्षयेयाथाम् | लक्षयेध्वम् |
| | लक्षयेय | लक्षयेवहि | लक्षयेमहि |
| प० | लक्षयताम् | लक्षयेताम् | लक्षयन्ताम् |
| | लक्षयस्व | लक्षयेथाम् | लक्षयध्वम् |
| | लक्षयै | लक्षयावहै | लक्षयामहै |
| ह्य० | अलक्षयत | अलक्षयेताम् | अलक्षयन्त |
| | अलक्षयथाः | अलक्षयेथाम् | अलक्षयध्वम् |
| | अलक्षये | अलक्षयावहि | अलक्षयामहि |

अ० अललक्षत अललक्षेताम् अललक्षन्त
अललक्षथाः अललक्षेयाम् अललक्षध्वम्
अललक्षे अललक्षावहि अललक्षामहि
प० लक्षयाञ्चक्रे लक्षयाञ्चक्राते लक्षयाञ्चक्रिरे
लक्षयाञ्चकृषे लक्षयाञ्चक्राथे लक्षयाञ्चकृढ्वे
लक्षयाञ्चक्रे लक्षयाञ्चकृवहे लक्षयाञ्चकृमहे
लक्षयाम्बभूव, लक्षयामास लक्षयामासतुः॥
आ०लक्षयिषीष्ट लक्षयिषीयास्ताम् लक्षयिषीरन्
लक्षयिषीष्ठाः लक्षयिषीयास्थाम् लक्षयिषीढ्वम् ध्वम्
लक्षयिषीय लक्षयिषीवहि लक्षयिषीमहि
श्व०लक्षयिता लक्षयितारौ लक्षयितारः
लक्षयितासे लक्षयितासाथे लक्षयिताध्वे
लक्षयिताहे लक्षयितास्वहे लक्षयितास्महे
भ० लक्षयिष्यते लक्षयिष्येते लक्षयिष्यन्ते
लक्षयिष्यसे लक्षयिष्येथे लक्षयिष्यध्वे
लक्षयिष्ये लक्षयिष्यावहे लक्षयिष्यामहे
अलक्षयिष्यत अलक्षयिष्येताम् अलक्षयिष्यन्त
अलक्षयिष्यथाः अलक्षयिष्येथाम् अलक्षयिष्यध्वम्
अलक्षयिष्ये अलक्षयिष्यावहि अलक्षयिष्यामहि

व० लक्षयति लक्षयतः लक्षयन्ति
लक्षयसि लक्षयथः लक्षयथ
लक्षयामि लक्षयावः लक्षयामः
स० लक्षयेत् लक्षयेताम् लक्षयेयुः
लक्षयेः लक्षयेतम् लक्षयेत
लक्षयेयम् लक्षयेव लक्षयेम
प० लक्षयतु लक्षयतात् लक्षयताम् लक्षयन्तु
लक्षय लक्षयतात् लक्षयतम् लक्षयत
लक्षयाणि लक्षयाव लक्षयाम
ह्य० अलक्षयत् अलक्षयताम् अलक्षयन्
अलक्षयः अलक्षयतम् अलक्षयत
अलक्षयम् अलक्षयाव अलक्षयाम
अ० अललक्षत् अललक्षताम् अललक्षन्
अललक्षः अललक्षतम् अललक्षत
अललक्षम् अललक्षाव अललक्षाम

प० लक्षयामास लक्षयामासतुः लक्षयामासुः
लक्षयामासिथ लक्षयामासथुः लक्षयामास
लक्षयामास लक्षयामासिव लक्षयामासिम
आ०लक्ष्यात् लक्ष्यास्ताम् लक्ष्यासुः
लक्ष्याः लक्ष्यास्तम् लक्ष्यास्त
लक्ष्यासम् लक्ष्यास्व लक्ष्यास्म
श्व०लक्षयिता लक्षयितारौ लक्षयितारः
लक्षयितासि लक्षयितास्थः लक्षयितास्थ
लक्षयितास्मि लक्षयितास्वः लक्षयितास्मः
भ० लक्षयिष्यति लक्षयिष्यतः लक्षयिष्यन्ति
लक्षयिष्यसि लक्षयिष्यथः लक्षयिष्यथ
लक्षयिष्यामि लक्षयिष्यावः लक्षयिष्यामः
क्रि०अलक्षयिष्यत् अलक्षयिष्यताम् अलक्षयिष्यन्
अलक्षयिष्यः अलक्षयिष्यतम् अलक्षयिष्यत
अलक्षयिष्यम् अलक्षयिष्याव अलक्षयिष्याम

॥ इतोऽर्थविशेषे आलक्षिणः इतः परमर्थविशेषे चुरादयो लक्षिणपर्यन्ताः प्रस्तूयन्ते ॥

---

॥ ज्ञाण्-मारणादिनियोजनेषु ॥ मारवुं, संतोषवुं तीक्ष्णकरवुं आज्ञाकरवी, मारणतोषणनिशानेऽर्थे ज्ञातो ह्रस्वः

व० संज्ञपयति संज्ञपयतः संज्ञपयन्ति
संज्ञपयसि संज्ञपयथः संज्ञपयथ
संज्ञपयामि संज्ञपयावः संज्ञपयामः
स० संज्ञपयेत् संज्ञपयेताम् संज्ञपयेयुः
संज्ञपयेः संज्ञपयेतम् संज्ञपयेत
संज्ञपयेयम् संज्ञपयेव संज्ञपयेम
प० संज्ञपयतु-यतात् संज्ञपयताम् संज्ञपयन्तु
संज्ञपय ,, संज्ञपयतम् संज्ञपयत
संज्ञपयानि संज्ञपयाव संज्ञपयाम
ह्य० समज्ञपयत् समज्ञपयताम् समज्ञपयन्
समज्ञपय- समज्ञपयतम् समज्ञपयत
समज्ञपयम् समज्ञपयाव समज्ञपयाम
अ० समजिज्ञपत् समजिज्ञपताम् समजिज्ञपन्

समजिज्ञपः समजिज्ञपतम् समजिज्ञपत
समजिज्ञपम् समजिज्ञपाव समजिज्ञपाम
प० संज्ञपयामास संज्ञपयामासतुः संज्ञपयामासुः
संज्ञपयामासिथ संज्ञपयामासथुः संज्ञपयामास
संज्ञपयामास संज्ञपयामासिव संज्ञपयामासिम
आ० संज्ञप्यात् संज्ञप्यास्ताम् संज्ञप्यासुः
संज्ञप्याः संज्ञप्यास्तम् संज्ञप्यास्त
संज्ञप्यासम् संज्ञप्यास्व संज्ञप्यास्म
श्व० संज्ञपयिता संज्ञपयितारौ संज्ञपयितारः
संज्ञपयितासि संज्ञपयितास्थः संज्ञपयितास्थ
संज्ञपयितास्मि संज्ञपयितास्वः संज्ञपयितास्मः
भ० संज्ञपयिष्यति संज्ञपयिष्यतः संज्ञपयिष्यन्ति
संज्ञपयिष्यसि संज्ञपयिष्यथः संज्ञपयिष्यथ
संज्ञपयिष्यामि संज्ञपयिष्यावः संज्ञपयिष्यामः
समज्ञपयिष्यत् समज्ञपयिष्यताम् समज्ञपयिष्यन्
समज्ञपयिष्यः समज्ञपयिष्यतम् समज्ञपयिष्यत
समज्ञपयिष्यम् समज्ञपयिष्याव समज्ञपयिष्याम

मारणे संज्ञपयति पशुम्
तोषणे विज्ञपयति गुरुम्
निशाने प्रज्ञपयति शस्त्रम्
नियोजने आज्ञापयति भृत्यम्
उक्तार्थेभ्योऽन्यत्र तु ज्ञादित्वाच्छना
। आज्ञानातीत्यादि ।

॥ च्युण्–सहने ॥ सहन करवुं

च्यावयति । अचिच्यवत् । अचुच्यवत् ।
च्यावयाञ्चकार ।

॥ भूण्–अवकल्कने ॥ मिश्रित करवुं विचारवुं

व० भावयति भावयतः भावयन्ति
भावयसि भावयथः भावयथ
भावयामि भावयावः भावयामः
स० भावयेत् भावयेताम् भावयेयुः
भावयेः भावयेतम् भावयेत
भावयेयम् भावयेव भावयेम
प० भावयतु भावयतात् भावयताम् भावयन्तु
भावय भावयतात् भावयतम् भावयत
भावयानि भावयाव भावयाम
ह्य० अभावयत् अभावयताम् अभावयन्
अभावयः अभावयतम् अभावयत
अभावयम् अभावयाव अभावयाम
अ० अबीभवत् अबीभवताम् अबीभवन्
अबीभवः अबीभवतम् अबीभवत
अबीभवम् अबीभवाव अबीभवाम
प० भावयामास भावयामासतुः भावयामासुः
भावयामासिथ भावयामासथुः भावयामास
भावयामास भावयामासिव भावयामासिम
आ० भाव्यात् भाव्यास्ताम् भाव्यासुः
भाव्याः भाव्यास्तम् भाव्यास्त
भाव्यासम् भाव्यास्व भाव्यास्म
श्व० भावयिता भावयितारौ भावयितारः
भावयितासि भावयितास्थः भावयितास्थ
भावयितास्मि भावयितास्वः भावयितास्मः
भ० भावयिष्यति भावयिष्यतः भावयिष्यन्ति
भावयिष्यसि भावयिष्यथः भावयिष्यथ
भावयिष्यामि भावयिष्यावः भावयिष्यामः
क्रि० अभावयिष्यत् अभावयिष्यताम् अभावयिष्यन्
अभावयिष्यः अभावयिष्यतम् अभावयिष्यत
अभावयिष्यम् अभावयिष्याव अभावयिष्याम

॥ बुक्कण्–भषणे ॥ भसवुं बोलवुं

बुक्कयति । अबुबुक्कत् । बुक्कयाञ्चकार ।
बुक्कयति श्वा चौरान्

॥ रक–लक–रग–लगण्–आस्वादने । चाटवुं

राकयति । अरीरकत् । राकयाञ्चकार ।
लाकयति । अलीलकत् । लाकयाञ्चकार ।
रागयति । अरीरगत् । रागयाञ्चकार ।
लागयति । अलीलगत् । लागयाञ्चकार ।

॥ लिगुण्–चित्रीकरणे ॥ चीतरवुं

लिङ्गयति । अलिलिङ्गत् । लिङ्गयाञ्चकार ।

॥ चर्चण्–अध्ययने ॥ अभ्यास करवो चर्चा करवी

चर्चयति । अचचर्चत् । चर्चयाञ्चकार ।

॥ अंचण् विशेषणे ॥ स्पष्ट करवुं

अञ्चयति । आञ्चिचत् । अञ्चयाञ्चकार ।

॥ मुचण्-प्रमोचने, प्रयोजने इत्यन्ये ॥

मुकवुं छोडवुं जोडवुं

मोचयति । अमूमुचत् । मोचयाञ्चकार ।

॥ अर्जण् प्रतियत्ने ॥ संस्कार करवो

अर्जयति । आर्जिजत् । अर्जयाञ्चकार ।

भजण्-विश्राणने ॥ सारीरीते पकाववुं

भाजयति । अबीभजत् । भाजयाञ्चकार ।

॥ चट-स्फुटण्-भेदे ॥ भेदकरवो जुदुकरवुं

चाटयति । अचीचटत् । चाटयाञ्चकार ।

स्फोटयति । अपुस्फुटत् । स्फोटयाञ्चकार ।

॥ घटण्-संघाते ॥ पकठुं करवुं

घाटयति । अजीघटत् । घाटयाञ्चकार ।

उद्घाटति कपाटम् ।

हन्त्यर्थाश्च येऽन्यत्र हिंसार्थाः पठिताः तेऽप्यत्र चुरादौ वेदितव्याः । यथा-

॥ हनंक् हिंसागत्योः ॥ जवुं. मारवुं ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | घातयति | घातयतः | घातयन्ति |
| | घातयसि | घातयथः | घातयथ |
| | घातयामि | घातयावः | घातयामः |
| स० | घातयेत् | घातयेताम् | घातयेयुः |
| | घातयेः | घातयेतम् | घातयेत |
| | घातयेयम् | घातयेव | घातयेम |
| प० | घातयतु घातयतात् | घातयताम् | घातयन्तु |
| | घातय घातयतात् | घातयतम् | घातयत |
| | घातयानि | घातयाव | घातयाम |
| ह्य० | अघातयत् | अघातयताम् | अघातयन् |
| | अघातयः | अघातयतम् | अघातयत |
| | अघातयम् | अघातयाव | अघातयाम |
| अ० | अजीघतत् | अजीघतताम् | अजीघतन् |
| | अजीघतः | अजीघततम् | अजीघतत |
| | अजीघतम् | अजीघताव | अजीघताम |
| प० | घातयामास | घातयामासतुः | घातयामासुः |
| | घातयामासिथ | घातयामासथुः | घातयामास |
| | घातयामास | घातयामासिव | घातयामासिम |
| आ० | घात्यात् | घात्यास्ताम् | घात्यासुः |
| | घात्याः | घात्यास्तम् | घात्यास्त |
| | घात्यासम् | घात्यास्व | घात्यास्म |
| श्व० | घातयिता | घातयितारौ | घातयितारः |
| | घातयितासि | घातयितास्थः | घातयितास्थ |
| | घातयितास्मि | घातयितास्वः | घातयितास्मः |
| भ० | घातयिष्यति | घातयिष्यतः | घातयिष्यन्ति |
| | घातयिष्यसि | घातयिष्यथः | घातयिष्यथ |
| | घातयिष्यामि | घातयिष्यावः | घातयिष्यामः |
| क्रि० | अघातयिष्यत् | अघातयिष्यताम् | अघातयिष्यन् |
| | अघातयिष्यः | अघातयिष्यतम् | अघातयिष्यत |
| | अघातयिष्यम् | अघातयिष्याव | अघातयिष्याम |

॥ कणण्-निमीलने ॥ मीचवुं थोडाइ जवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | काणयति | काणयतः | काणयन्ति |
| | काणयसि | काणयथः | काणयथ |
| | काणयामि | काणयावः | काणयामः |
| स० | काणयेत् | काणयेताम् | काणयेयुः |
| | काणयेः | काणयेतम् | काणयेत |
| | काणयेयम् | काणयेव | काणयेम |
| प० | काणयतु काणयतात् | काणयताम् | काणयन्तु |
| | काणय ,, | काणयतम् | काणयत |
| | काणयानि | काणयाव | काणयाम |
| ह्य० | अकाणयत् | अकाणयताम् | अकाणयन् |
| | अकाणयः | अकाणयतम् | अकाणयत |
| | अकाणयम् | अकाणयाव | अकाणयाम |
| अ० | अचीकणत् | अचीकणताम् | अचीकणन् |
| | अचीकणः | अचीकणतम् | अचीकणत |
| | अचीकणम् | अचीकणाव | अचीकणाम |
| प० | काणयामास | काणयामासतुः | काणयामासुः |

काणयामासिथ काणयामासथुः काणयामास
काणयामास काणयामासिव काणयामासिम
काणयाम्बभूव काणयाञ्चकार काणयाञ्चक्रतुः
आ० काण्यात् काण्यास्ताम् काण्यासुः
काण्याः काण्यास्तम् काण्यास्त
काण्यासम् काण्यास्व काण्यास्म
श्व० काणयिता काणयितारौ काणयितारः
काणयितासि काणयितास्थः काणयितास्थ
काणयितास्मि काणयितास्वः काणयितास्मः
भ० काणयिष्यति काणयिष्यतः काणयिष्यन्ति
काणयिष्यसि काणयिष्यथः काणयिष्यथ
काणयिष्यामि काणयिष्यावः काणयिष्यामः
अकाणयिष्यत् अकाणयिष्यताम् अकाणयिष्यन्
अकाणयिष्यः अकाणयिष्यतम् अकाणयिष्यत
अकाणयिष्यम् अकाणयिष्याव अकाणयिष्याम

॥ यतण्-निकारोपस्कारयोः ॥ तीव्र दुःख देवुं, छुपाववुं,
यातयति । अयीयतत् । यातयाञ्चकार

॥ निरश्च-प्रतिदाने ॥ देवुं वाळवुं
ऋणं निर्यातयति प्रतिददातीत्यर्थः ॥
निरयीयतत् । निर्यातयामास ।

शब्दण्-उपसर्गात् भाषाविष्कारयोः ॥ बोलवुं, प्रगट करवुं,
शब्दयति । अशशब्दत् । शब्दयाञ्चकार
विशब्दयति । व्यशशब्दत् ।

॥ सूदण्-आस्रवणे ॥ झरवुं हणवुं
सूदयति । असूषुदत् । सूदयाञ्चकार

आङः-क्रन्दण्-सातत्ये ॥ निरंतर रडवुं
आक्रन्दयति । आचक्रन्दत् । आक्रन्दयाञ्चकार

॥ ष्वदण्-आस्वादने ॥ चाटवुं, स्वाद करवो

व० आस्वादयति आस्वादयतः आस्वादयन्ति
आस्वादयसि आस्वादयथः आस्वादयथ
आस्वादयामि आस्वादयावः आस्वादयामः
स० आस्वादयेत् आस्वादयेताम् आस्वादयेयुः
आस्वादयेः आस्वादयेतम् आस्वादयेत
आस्वादयेयम् आस्वादयेव आस्वादयेम
प० आस्वादयतु आस्वादयतात् आस्वादयताम्
आस्वादयन्तु
आस्वादय ,, आस्वादयतम् आस्वादयत
आस्वादयानि आस्वादयाव आस्वादयाम
ह्य० आस्वादयत् आस्वादयताम् आस्वादयन्
आस्वादयः आस्वादयतम् आस्वादयत
आस्वादयम् आस्वादयाव आस्वादयाम
अ० असिष्वदत् असिष्वदताम् असिष्वदन्
असिष्वदः असिष्वदतम् असिष्वदत
असिष्वदम् असिष्वदाव असिष्वदाम

प० स्वादयामास स्वादयामासतुः स्वादयामासुः
स्वादयामासिथ स्वादयामासथुः स्वादयामास
स्वादयामास स्वादयामासिव स्वादयामासिम
स्वादयाम्बभूव स्वादयाञ्चकार स्वादयाञ्चक्रतुः ।
आ० स्वाद्यात् स्वाद्यास्ताम् स्वाद्यासुः
स्वाद्याः स्वाद्यास्तम् स्वाद्यास्त
स्वाद्यासम् स्वाद्यास्व स्वाद्यास्म
श्व० स्वादयिता स्वादयितारौ स्वादयितारः
स्वादयितासि स्वादयितास्थः स्वादयितास्थ
स्वादयितास्मि स्वादयितास्वः स्वादयितास्मः
भ० स्वादयिष्यति स्वादयिष्यतः स्वादयिष्यन्ति
स्वादयिष्यसि स्वादयिष्यथः स्वादयिष्यथ
स्वादयिष्यामि स्वादयिष्यावः स्वादयिष्यामः
अस्वादयिष्यत् अस्वादयिष्यताम् अस्वादयिष्यन्
अस्वादयिष्यः अस्वादयिष्यतम् अस्वादयिष्यत
अस्वादयिष्यम् अस्वादयिष्याव अस्वादयिष्याम

॥ मुदण्-संसर्गे ॥ मिश्र करवुं,
मोदयति । अमूमुदत् । मोदयाञ्चकार
मोदयति सक्तून सर्पिषा । मोदयत्युष्णा

अपः शीताभिरद्भिः । उभयत्र सं-
सृजतीत्यर्थः

॥ शृधण्–प्रसहने ॥ अभिभव करवो

व० शर्धयति शर्धयतः शर्धयन्ति
शर्धयसि शर्धयथः शर्धयथ
शर्धयामि शर्धयावः शर्धयामः
स० शर्धयेत् शर्धयेताम् शर्धयेयुः
शर्धयेः शर्धयेतम् शर्धयेत
शर्धयेयम् शर्धयेव शर्धयेम
प० शर्धयतु शर्धयतात् शर्धयताम् शर्धयन्तु
शर्धय ,, शर्धयतम् शर्धयेत
शर्धयानि शर्धयाव शर्धयाम
ह्य० अशर्धयत् अशर्धयताम् अशर्धयन्
अशर्धयः अशर्धयतम् अशर्धयत
अशर्धयम् अशर्धयाव अशर्धयाम

अ० अशीशृधत् अशीशृधताम् अशीशृधन्
अशीशृधः अशीशृधतम् अशीशृधत
अशीशृधम् अशीशृधाव अशीशृधाम
अशशर्धत् अशशर्धताम् अशशर्धन
अशशर्धः अशशर्धतम् अशशर्धत
अशशर्धम् अशशर्धाव अशशर्धाम

प० शर्धयामास शर्धयामासतुः शर्धयामासुः ।
शर्धयामासिथ शर्धयामासथुः शर्धयामास
शर्धयामास शर्धयामासिव शर्धयामासिम
शर्धयाम्बभूव शर्धयाञ्चकार शर्धयाञ्चक्रुः
आ० शर्ध्यात् शर्ध्यास्ताम् शर्ध्यासुः
शर्ध्याः शर्ध्यास्तम् शर्ध्यास्त
शर्ध्यासम् शर्ध्यास्व शर्ध्यास्म
श्व० शर्धयिता शर्धयितारौ शर्धयितारः
शर्धयितासि शर्धयितास्थः शर्धयितास्थ
शर्धयितास्मि शर्धयितास्वः शर्धयितास्मः
भ० शर्धयिष्यति शर्धयिष्यतः शर्धयिष्यन्ति
शर्धयिष्यसि शर्धयिष्यथः शर्धयिष्यथ
शर्धयिष्यामि शर्धयिष्यावः शर्धयिष्यामः

अशर्धयिष्यत् अशर्धयिष्यताम् अशर्धयिष्यन्
अशर्धयिष्यः अशर्धयिष्यतम् अशर्धयिष्यत
अशर्धयिष्यम् अशर्धयिष्याव अशर्धयिष्याम

कृपण्–अवकल्कने, अवकल्पने इत्यन्ये
मिश्रण करवुं, समर्थ थवुं

कल्पयति । अचीक्लृपत् । अचकल्पत्
कल्पयाञ्चकार ।

॥ जभुण्–नाशने ॥ नाश करवु

जम्भयति । अजजम्भत् । जम्भयाञ्चकार

॥ अमण्–रोगे ॥ रोगी थवुं

आमयति । आमिमत् । आमयाञ्चकार

॥ चरण्–असंशये, । विचार करवो
संशय इत्यन्ये ॥ संशय करवो

चारयति । अचीचरत् चारयाञ्चकार

॥ पूरण्–आप्यायने ॥ पुरवुं,

पूरयति । अपूपुरत् । पूरयाञ्चकार

॥ दलण्–विदारणे ॥ फाडवुं, चीरवुं

व० दालयति दालयतः दालयन्ति
दालयसि दालयथः दालयथ
दालयामि दालयावः दालयामः
णिगि दलयतीत्येके
स० दालयेत् दालयेताम् दालयेयुः
दालयेः दालयेतम् दालयेत
दालयेयम् दालयेव दालयेम
प० दालयतु दालयतात् दालयताम् दालयन्तु
दालय ,, दालयतम् दालयत
दालयानि दालयाव दालयाम
ह्य० अदालयत् अदालयताम् अदालयन्
अदालयः अदालयतम् अदालयत
अदालयम् अदालयाव अदालयाम
अ० अदीदलत् अदीदलताम् अदीदलन्
अदीदलः अदीदलतम् अदीदलत

अदीदलम् अदीदलाव अदीदलाम
प०दालयामास दालयामासतुः दालयामासुः
दालयामासिथ दालयामासथुः दालयामास
दालयामास दालयामासिव दालयामासिम
आ०दाल्यात् दाल्यास्ताम् दाल्यासुः
दाल्याः दाल्यास्तम् दाल्यास्त
दाल्यासम् दाल्यास्व दाल्यास्म
श्व०दालयिता दालयितारौ दालयितारः
दालयितासि दालयितास्थः दालयितास्थ
दालयितास्मि दालयितास्वः दालयितास्मः
भ० दालयिष्यति दालयिष्यतः दालयिष्यन्ति
दालयिष्यसि दालयिष्यथः दालयिष्यथ
दालयिष्यामि दालयिष्यावः दालयिष्यामः
अदालयिष्यत् अदालयिष्यताम् अदालयिष्यन्
अदालयिष्यः अदालयिष्यतम् अदालयिष्यत
अदालयिष्यम् अदालयिष्याव अदालयिष्याम

॥ दिवण्-अर्दने ॥ पीडवुं,
देवयति । अदीदिवत् । देवयाञ्चकार
॥ पश-पषण्-बन्धने ॥ बांधवुं,
पाशयति । अपीपशत् । पाशयाञ्चकार
पाषयति । अपीपषत् । पाषयाञ्चकार
॥ पुषण् धारणे ॥ धारण करवुं, पोषण करवुं,
पोषयति । आभरणम् । अपूपुषत् ।
॥ घुषॅण्-विशब्दे ॥ उद्घोषणा करवी
जुदी जुदी जातना शब्द करवा,

व० घोषयति घोषयतः घोषयन्ति
घोषयसि घोषयथः घोषयथ
घोषयामि घोषयावः घोषयामः
स० घोषयेत् घोषयेताम् घोषयेयुः
घोषयेः घोषयेतम् घोषयेत
घोषयेयम् घोषयेव घोषयेम
प० घोषयतु घोषयतात् घोषयताम् घोषयन्तु
घोषय ,, घोषयतम् घोषयत
घोषयाणि घोषयाव घोषयाम
ह्य० अघोषयत् अघोषयताम् अघोषयन्
अघोषयः अघोषयतम् अघोषयत
अघोषयम् अघोषयाव अघोषयाम
अ० अजूघुषत् अजूघुषताम् अजूघुषन्
अजूघुषः अजूघुषतम् अजूघुषत
अजूघुषम् अजूघुषाव अजूघुषाम
प० घोषयामास घोषयामासतुः घोषयामासुः
घोषयामासिथ घोषयामासथुः घोषयामास
घोषयामास घोषयामासिव घोषयामासिम
घोषयाञ्चकार घोषयाञ्चक्रतुः घोषयाम्बभूव
आ०घोष्यात् घोष्यास्ताम् घोष्यासुः
घोष्याः घोष्यास्तम् घोष्यास्त
घोष्यासम् घोष्यास्व घोष्यास्म
श्व०घोषयिता घोषयितारौ घोषयितारः
घोषयितासि घोषयितास्थः घोषयितास्थ
घोषयितास्मि घोषयितास्वः घोषयितास्मः
भ० घोषयिष्यति घोषयिष्यतः घोषयिष्यन्ति
घोषयिष्यसि घोषयिष्यथः घोषयिष्यथ
घोषयिष्यामि घोषयिष्यावः घोषयिष्यामः
क्रि०अघोषयिष्यत् अघोषयिष्यताम् अघोषयिष्यन्
अघोषयिष्यः अघोषयिष्यतम् अघोषयिष्यत
अघोषयिष्यम् अघोषयिष्याव अघोषयिष्याम

॥ ऋदित्करणं चुरादिणिचोऽनित्यत्वे लिङ्गम्

व० घोषति घोषतः घोषन्ति
घोषसि घोषथः घोषथ
घोषामि घोषावः घोषामः
सस घोषेत् घोषेताम् घोषेयुः
घोषेः घोषेतम् घोषेत

घोषयेम् घोषेव घोषेम
प० घोषतु घोषतात् घोषताम् घोषन्तु
घोष ,, घोषतम् घोषत
घोषाणि घोषाव घोषाम
ह्य० अघोषत् अघोषताम् अघोषन्
अघोषः अघोषतम् अघोषत
अघोषम् अघोषाव अघोषाम
अ० अघुषत् अघुषताम् अघुषन्
अघुषः अघुषतम् अघुषत
अघुषम् अघुषाव अघुषाम
अघोषीत् अघोषिष्टाम् अघोषिषुः
अघोषीः अघोषिष्टम् अघोषिष्ट
अघोषिषम् अघोषिष्व अघोषिष्म
प० जुघोष जुघुषतुः जुघुषुः
जुघोषिथ जुघुषथुः जुघुष
जुघोष जुघुषिव जुघुषिम
आ: घुष्यात् घुष्यास्ताम् घुष्यासुः
घुष्याः घुष्यास्तम् घुष्यास्त
घुष्यासम् घुष्यास्व घुष्यास्म
श्व० घोषिता घोषितारौ घोषितारः
घोषितासि घोषितास्थः घोषितास्थ
घोषितास्मि घोषितास्वः घोषितास्मः
भ० घोषिष्यति घोषिष्यतः घोषिष्यन्ति
घोषिष्यसि घोषिष्यथः घोषिष्यथ
घोषिष्यामि घोषिष्यावः घोषिष्यामः
क्रि० अघोषिष्यत् अघोषिष्यताम् अघोषिष्यन्
अघोषिष्यः अघोषिष्यतम् अघोषिष्यत
अघोषिष्यम् अघोषिष्याव अघोषिष्याम

॥ आङः-क्रन्दे । रडवुं,
आघोषयति । आजूघुषत् । आघोषयामास
आक्रन्दः सातत्ये इत्यन्ये ॥ आक्रन्द पति नित्यम्
॥ भूष-तसुण्-अलङ्कारे ॥ शणगारवुं
भूषयति । अबूभुषत् । भूषयाञ्चकार
तंसयति । अवतंसयति । अततंसत्
तंसयाञ्चकार

॥ जसण्-ताडने ॥ मारवुं
जासयति । अजीजसत् । जासयाञ्चकार
॥ त्रसण्-वारणे ॥ रोकवुं, झालवुं
त्रास आपवो
त्रासयति । अतित्रसत् । त्रासयाञ्चकार
॥ वसण्-स्नेहछेदावहरणेषु ॥ छेदवुं,
भीनु करवुं, हणवुं
वासयति । अवीवसत् । वासयाञ्चकार
॥ ध्रसण्-उत्क्षेपे ॥ फेंकवुं,
ध्रासयति । अदिध्रसत् । ध्रासयाञ्चकार
॥ ग्रसण्-ग्रहणे ॥ पकडवुं,
ग्रासयति । अजिग्रसत् । ग्रासयाञ्चकार
॥ लसण्-शिल्पयोगे ॥ शिल्पा काम करवुं
लासयति । अलीलसत् । लासयाञ्चकार
अर्हण् पूजायाम् ॥ पुजवुं,
अर्हयति । आर्जिहत् । अर्हयाञ्चकार
॥ मोक्षण्-असने ॥ फेंकवुं
मोक्षयति । अमुमोक्षत् । मोक्षयाञ्चकार

लोकृ, तर्क, रघु, लघु, लोचृ विछ, अंजु,
तुजु, पिजु, लजु, लुजु, भजु, पट, पुट,
लुट, घट, घट्ट, वृत, पुथ, नद, वृध,
गुप, धूप, कुप, चीव, दशु, कुशु, त्रसु,
पिसु, कुसु, दसु, वर्ह, बृहु, वल्ह, अहु,
वहु, महुण्-भासार्थाः । भाषार्था इति
केचित् ॥ प्रकाशवुं. बोलवुं,

लोकयति । अलुलोकत् । लोकयाञ्चकार
तर्कयति । अततर्कत् । तर्कयाञ्चकार
रङ्घयति । अररङ्घत् । रङ्घयामास
लङ्घयति । अललङ्घत् । लङ्घयाञ्चकार

लोचयति । अलुलोचत् । लोचयाञ्चकार
विच्छयति । अविविच्छत् । विच्छयाञ्चकार
अञ्जयति । आञ्जिजत् । अञ्जयाञ्चकार
तुञ्जयति । अतुतुञ्जत् । तुञ्जयाञ्चकार
पिञ्जयति । अपिपिञ्जत् । पिञ्जयाञ्चकार
लञ्जयति । अललञ्जत् । लञ्जयाञ्चकार
लुञ्जयति । अलुलुञ्जत् । लुञ्जयाञ्चकार
भञ्जयति । अबभञ्जत् । भञ्जयाञ्चकार
पाटयति । अपीपटत् । पाटयाञ्चकार
पोटयति । अपूपुटत् । पोटयाञ्चकार
लोटयति । अलूलुटत् । अलुलोटत्
इत्याद्यपि । लोटयाञ्चकार
घाटयति । अजीघटत् । घाटयाञ्चकार
घण्टयति । अजघण्टत् । घण्टयाञ्चकार
वर्त्तयति । अवीवृतत् । अववर्त्तत्
वर्त्तयाञ्चकार
पोथयति । अपूपुथत् । पोथयाञ्चकार
नादयति । अनीनदत् । नादयाञ्चकार
वर्धयति । अवीवृधत् । अववर्धत्
वर्धयाञ्चकार
गोपयति । अजूगुपत् । गोपयाञ्चकार
धूपयति । अदूधुपत् । धूपयाञ्चकार
कोपयति । अचूकुपत् । कोपयाञ्चकार
चीवयति । अचीचिवत् । चीवयाञ्चकार
दंशयति । अददंशत् । दंशयाञ्चकार
कुंशयति । अचुकुंशत् । कुंशयाञ्चकार
त्रंसयति । अतत्रसत् । त्रंसयाञ्चकार
पिंसयति । अपिपिंसत् । पिंसयाञ्चकार
कुंसयति । अचुकुंसत् । कुंसयाञ्चकार

दंसयति । अददंसत् । दंसयाञ्चकार
बर्हयति । अबबर्हत् । बर्हयाञ्चकार
बृंहयति । अबबृंहत् । बृंहयाञ्चकार
वल्हयति । अववल्हत् । वल्हयाञ्चकार
अंहयति । आञ्जिहत् । अंहयाञ्चकार
वंहयति । अववंहत् । वंहयाञ्चकार
मंहयति । अममंहत् । मंहयाञ्चकार
गणान्तरपाठस्त्वेषामात्मनपदादि-
कार्यार्थः ॥

## ॥ इति परस्मैपदिनः ॥

## ॥ अथात्मनेपदिनः ॥

॥ युणि-जुगुप्सायाम् ॥ निंदवुं,
यावयते । अयीयवत । यावयाञ्चक्रे
॥ गृणि-विज्ञाने ॥ जाणवुं,
गारयते । अजीगरत । गारयाञ्चक्रे
॥ वंचिण्-प्रलंभने ॥ ठगवुं

व० वञ्चयते वञ्चयेते वञ्चयन्ते
वञ्चयसे वञ्चयेथे वञ्चयध्वे
वञ्चये वञ्चयावहे वञ्चयामहे
स० वञ्चयेत वञ्चयेयाताम् वञ्चयेरन्
वञ्चयेथाः वञ्चयेयाथाम् वञ्चयेध्वम्
वञ्चयेय वञ्चयेवहि वञ्चयेमहि
प० वञ्चयताम् वञ्चयेताम् वञ्चयन्ताम्
वञ्चयस्व वञ्चयेथाम् वञ्चयध्वम्
वञ्चयै वञ्चयावहै वञ्चयामहै
ह्य० अवञ्चयत अवञ्चयेताम् अवञ्चयन्त
अवञ्चयथाः अवञ्चयेथाम् अवञ्चयध्वम्
अवञ्चये अवञ्चयावहि अवञ्चयामहि

अ० अववञ्चत अववञ्चेताम् अववञ्चन्त
अववञ्चथाः अववञ्चेथाम् अववञ्चध्वम्
अववञ्चे अववञ्चावहि अववञ्चामहि

प० वञ्चयामास वञ्चयामासतुः वञ्चयामासुः
वञ्चयामासिथ वञ्चयामासथुः वञ्चयामास
वञ्चयामास वञ्चयामासिव वञ्चयामासिम
वञ्चयाञ्चक्रे वञ्चयाञ्चक्राते वञ्चयाञ्चक्रिरे
वञ्चयाम्बभूव

आ० वञ्चयिषीष्ट वञ्चयिषीयास्ताम् वञ्चयिषीरन्
वञ्चयिषीष्ठाः वञ्चयिषीयास्थाम् वञ्चयिषीढ्वम्
ध्वम्
वञ्चयिषीय वञ्चयिषीवहि वञ्चयिषीमहि

श्व० वञ्चयिता वञ्चयितारौ वञ्चयितारः
वञ्चयितासे वञ्चयितासाथे वञ्चयिताध्वे
वञ्चयिताहे वञ्चयितास्वहे वञ्चयितास्वहे

भ० वञ्चयिष्यते वञ्चयिष्येते वञ्चयिष्यन्ते
वञ्चयिष्यसे वञ्चयिष्येथे वञ्चयिष्यध्वे
वञ्चयिष्ये वञ्चयिष्यावहे वञ्चयिष्यामहे

अवञ्चयिष्यत अवञ्चयिष्येताम् अवञ्चयिष्यन्त
अवञ्चयिष्यथाः अवञ्चयिष्येथाम्
अवञ्चयिष्यध्वम्
अवञ्चयिष्ये अवञ्चयिष्यावहि अवञ्चयिष्यामहि

॥ कुटिण्–प्रतापने ॥ तपाववुं,
कोटयते । अचूकुटत । कोटयाञ्चक्रे

॥ मदिण्–तृप्तियोगे ॥ तृप्त थवुं,
मादयते । अमीमदत । मादयाञ्चक्रे

॥ विदिण्–चेतनाख्याननिवासेषु ॥
जाणवुं, कहेवुं, रहेवुं,

॥ मनिण्–स्तम्भे ॥ गर्व करवो

व० मानयते मानयेते मानयन्ते
मानयसे मानयेथे मानयध्वे
मानये मानयावहे मानयामहे

स० मानयेत मानयेयाताम् मानयेरन्
मानयेथाः मानयेयाथाम् मानयेध्वम्
मानयेय मानयेवहि मानयेमहि

प० मानयताम् मानयेताम् मानयन्ताम्
मानयस्व मानयेथाम् मानयध्वम्
मानयै मानयावहै मानयामहै

ह्य० अमानयत, अमानयेताम् अमानयन्त
अमानयथाः अमानयेथाम् अमानयध्वम्
अमानये अमानयावहि अमानयामहि

अ० अमीमनत अमीमनेताम् अमीमनन्त
अमीमनथाः अमीमनेथाम् अमीमनध्वम्
अमीमने अमीमनावहि अमीमनामहि

प० मानयामास मानयामासतुः मानयामासुः
मानयामासिथ मानयामासथुः मानयामास
मानयामास मानयामासिव मानयामासिम
मानयाञ्चक्रे मानयाञ्चक्राते । मानयाम्बभूव

आ मानयिषीष्ट मानयिषीयास्ताम् मानयिषीरन्
मानयिषीष्ठाः मानयिषीयास्थाम् मानयिषीढ्वम्
ध्वम्
मानयिषीय मानयिषीवहि मानयिषीमहि

श्व० मानयिता मानयितारौ मानयितारः
मानयितासे मानयितासाथे मानयिताध्वे
मानयिताहे मानयितास्वहे मानयितास्महे

भ० मानयिष्यते मानयिष्येते मानयिष्यन्ते
मानयिष्यसे मानयिष्येथे मानयिष्यध्वे
मानयिष्ये मानयिष्यावहे मानयिष्यामहे

अमानयिष्यत अमानयिष्येताम् अमानयिष्यन्त
अमानयिष्यथाः अमानयिष्येथाम्–यिष्यध्वम्
अमानयिष्ये अमानयिष्यावहि अमानयिष्यामहि

वलि भलिण्–आभण्डने । जोवुं रुप जोवुं
वालयते । अवीवलत । वालयाञ्चक्रे ।
भालयते । अबीभलत । भालयाञ्चक्रे ।
दिविण् परिकूजने ॥ शब्द करवो
देवयते । अदीदिवत । देवयाञ्चक्रे ।

वृषिण्-शक्तिबन्धे । शक्ति बांधवी
वर्षयते । अवीवृषत । अववर्षत । वर्षयाञ्चक्रे
कुत्सिण्-अवक्षेपे । निंदवुं दोषदेवो
कुत्सयते । अचुकुत्सत । कुत्सयाञ्चक्रे ।

लक्षिण्-आलोचने । जोवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | लक्षयते | लक्षयेते | लक्षयन्ते |
| | लक्षयसे | लक्षयेथे | लक्षयध्वे |
| | लक्षये | लक्षयावहे | लक्षयामहे |
| स० | लक्षयेत | लक्षयेयाताम् | लक्षयेरन् |
| | लक्षयेथाः | लक्षयेयाथाम् | लक्षयेध्वम् |
| | लक्षयेय | लक्षयेवहि | लक्षयेमहि |
| प० | लक्षयताम् | लक्षयेताम् | लक्षयन्ताम् |
| | लक्षयस्व | लक्षयेथाम् | लक्षयध्वम् |
| | लक्षयै | लक्षयावहै | लक्षयामहै |
| ह्य० | अलक्षयत | अलक्षयेताम् | अलक्षयन्त |
| | अलक्षयथाः | अलक्षयेथाम् | अलक्षयध्वम् |
| | अलक्षये | अलक्षयावहि | अलक्षयामहि |
| अ० | अललक्षत | अललक्षेताम् | अललक्षन्त |
| | अललक्षथाः | अललक्षेथाम् | अललक्षध्वम् |
| | अललक्षे | अललक्षावहि | अललक्षामहि |
| प० | लक्षयाञ्चक्रे | लक्षयाञ्चक्राते | लक्षयाञ्चक्रिरे |
| | लक्षयाञ्चकृषे | लक्षयाञ्चक्राथे | लक्षयाञ्चकृढ्वे |
| | लक्षयाञ्चक्रे | लक्षयाञ्चकृवहे | लक्षयाञ्चकृमहे |
| | लक्षयाम्बभूव | लक्षयामास | लक्षयामासतुः ॥ |
| आ० | लक्षयिषीष्ट | लक्षयिषीयास्ताम् | लक्षयिषीरन् |
| | लक्षयिषीष्ठाः | लक्षयिषीयास्थाम् | लक्षयिषीढ्वम् ध्वम् |
| | लक्षयिषीय | लक्षयिषीवहि | लक्षयिषीमहि |
| श्व० | लक्षयिता | लक्षयितारौ | लक्षयितारः |
| | लक्षयितासे | लक्षयितासाथे | लक्षयिताध्वे |
| | लक्षयिताहे | लक्षयितास्वहे | लक्षयितास्महे |
| भ० | लक्षयिष्यते | लक्षयिष्येते | लक्षयिष्यन्ते |
| | लक्षयिष्यसे | लक्षयिष्येथे | लक्षयिष्यध्वे |
| | लक्षयिष्ये | लक्षयिष्यावहे | लक्षयिष्यामहे |
| क्रि० | अलक्षयिष्यत | अलक्षयिष्येताम् | अलक्षयिष्यन्त |
| | अलक्षयिष्यथाः | अलक्षयिष्येथाम् | अलक्षयिष्यध्वम् |
| | अलक्षयिष्ये | अलक्षयिष्यावहि | अलक्षयिष्यामहि |

॥ इति अर्थविशेषे आलक्षिणः ॥

## ॥ अथार्थान्तरेऽप्यात्मनेपदिनश्चुरादय एव उच्यन्ते ॥

हिष्कि-किष्किण्-हिंसायाम् । मारवुं
हिष्कयते । अजिहिष्कत । हिष्कयाञ्चक्रे
किष्कयते । अचिकिष्कत । किष्कयाञ्चक्रे
निष्किण्-परिमाणे । मापवुं
निष्कयते । अनिनिष्कत । निष्कयाञ्चक्रे ।
तर्जिण्-संतर्जने । तिरस्कार करवो
तर्जयते । अततर्जत । तर्जयाञ्चक्रे ।
कूटिण्-अप्रमादे । निष्प्रमादी थवुं । आ प्रदाने इत्यन्ये ॥ आपवुं
कूटयते । अचूकुटत । कूटयाञ्चक्रे ।
त्रुटिण्-छेदने ॥ छेदवुं
त्रोटयते । अतुत्रुटत । त्रोटयाञ्चक्रे ।
शठिण्-श्लाघायाम् । वखाणवुं
शाठयते । अशीशठत । शाठयाञ्चक्रे ।
कूणिण्-संकोचने ॥ संकोचवुं
कूणयते । अचूकुणत । कूणयाञ्चक्रे ।
तूणिण्-पूरणे ॥ पूरवुं
तूणयते । अतूतुणत । तूणयाञ्चक्रे ॥
भ्रूणिण्-आशंसायाम् । आशा राखवी

भ्रूणयते । अबुभ्रुणत । भ्रूणयाञ्चक्रे ।

चितिण्-संवेदने ॥ संवेदवुं जाणवुं विचारवुं

चेतयते । अचीचितत । चेतयाञ्चक्रे ।

बस्ति गंधिण्-अर्दने । पीडवुं

बस्तयते । अबबस्तत । बस्तयाञ्चक्रे ।

गन्धयते । अजगन्धत । गन्धयाञ्चक्रे ।

डपि, डिपि, डंपि, डिंपि, डंभि, डिंभिण्-संघाते पकडुं थवुं

डापयते । अडीडपत । डापयाञ्चक्रे ।

डेपयते । अडीडिपत । डेपयाञ्चक्रे ।

डम्पयते । अडडम्पत । डम्पयाञ्चक्रे ।

डिम्पयते । अडिडिम्पत । डिम्पयाञ्चक्रे ।

डम्भयते । अडडम्भत । डम्भयाञ्चक्रे ।

डिम्भयते । अडिडिम्भत । डिम्भयाञ्चक्रे

स्यमिण् वितर्के । विस्मय पामवो वितर्क करवो

स्यामयते । असिस्यमत । स्यामयाञ्चक्रे ।

शमिण्- आलोचने ॥ जोवुं

शामयते । अशीशमत । शामयाञ्चक्रे ।

कुस्मिण्-कुस्मने ॥ आळचढाववा जेवुं हसवुं

कुस्मयते । अचुकुस्मत । कुस्मयाञ्चक्रे ।

गूरिण्-उद्यमे ॥ उद्योग करवो

गूरयते । अजूगुरत । गूरयामास ।

तंत्रिण्-कुटुंबधारणे ॥ कुटुम्बनुं पोषण करवुं

तन्त्रयते । अततन्त्रत । तन्त्रयाञ्चक्रे ।

मंत्रिण्-गुप्तभाषणे ॥ गुप्तवात करवी

मन्त्रयते । अममन्त्रत । मन्त्रयाञ्चक्रे ।

ललिण् ईप्साम् । इच्छवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | लालयते | लालयेते | लालयन्ते |
| | लालयसे | लालयेथे | लालयध्वे |
| | लालये | लालयावहे | लालयामहे |
| स० | लालयेत | लालयेयाताम् | लालयेरन् |
| | लालयेथाः | लालयेयाथाम् | लालयेध्वम् |
| | लालयेय | लालयेवहि | लालयेमहि |
| प० | लालयताम् | लालयेताम् | लालयन्ताम् |
| | लालयस्व | लालयेथाम् | लालयध्वम् |
| | लालयै | लालयावहै | लालयामहै |
| ह्य० | अलालयत | अलालयेताम् | अलालयन्त |
| | अलालयथाः | अलालयेथाम् | अलालयध्वम् |
| | अलालये | अलालयावहि | अलालयामहि |
| अ० | अलीललत | अलीललेताम् | अलीललन्त |
| | अलीललथाः | अलीललेथाम् | अलीललध्वम् |
| | अलीलले | अलीललावहि | अलीललामहि |
| प० | लालयामास | लालयामासतुः | लालयामासुः |
| | लालयामासिथ | लालयामासथुः | लालयामास |
| | लालयामास | लालयामासिव | लालयामासिम |
| | लालयाञ्चक्रे । | लालयाञ्चक्राते । | लालयाम्बभूव |
| आ० | लालयिषीष्ट | लालयिषीयास्ताम् | लालयिषीरन् |
| | लालयिषीष्ठाः | लालयिषीयास्थाम् | लालयिषीढ्वम् ध्वम् |
| | लालयिषीय | लालयिषीवहि | लालयिषीमहि |
| श्व० | लालयिता | लालयितारौ | लालयितारः |
| | लालयितासे | लालयितासाथे | लालयिताध्वे |
| | लालयिताहे | लालयितास्वहे | लालयितास्महे |
| भ० | लालयिष्यते | लालयिष्येते | लालयिष्यन्ते |
| | लालयिष्यसे | लालयिष्येथे | लालयिष्यध्वे |
| | लालयिष्ये | लालयिष्यावहे | लालयिष्यामहे |
| | अलालयिष्यत | अलालयिष्येताम् | अलालयिष्यन्त |
| | अलालयिष्यथाः | अलालयिष्येथाम् | -यिष्यध्वम् |
| | अलालयिष्ये | अलालयिष्यावहि | -यिष्यामहि |

स्पशिण्-ग्रहणश्लेषणयोः । पकडवुं भेटवुं

स्पाशयते । अपस्पशत । स्पाशयामास ।

दंशिण्-दंशने ॥ डंखदेवो करडवुं

दंशयते । अददंशत । दंशयाम्बभूव ।

दंसिण्-दर्शने च ॥ जोवुं

दंसयते । अददंसत । दंसयाञ्चक्रे ।

भर्त्सिण्-संतर्जने ॥ तिरस्कार करवो
भर्त्सयते । अबभर्त्सत । भर्त्सयामास

यक्षिण्-पूजायाम् ॥ पूजवुं
यक्षयते । अययक्षत । यक्षयाञ्चक्रे ।

## ॥ इत्यात्मनेपदिनः ॥

---

॥ अथादन्ताः ॥

अंकण्-लक्षणे ॥ आंकवुं चिन्ह करवुं
अंकयति । आञ्चिकत् । मतान्तरे आञ्चकत्
अंकयाञ्चकार ।

श्लेष्कण्-दर्शने ॥ जोवुं
श्लेष्कयति । अशिश्लेष्कयत् । श्लेष्कयामास

सुखदुःख-तत्क्रियायाम् ॥ सुखकरवुं दुःखकरवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | सुखयति | सुखयतः | सुखयन्ति |
| | सुखयसि | सुखयथः | सुखयथ |
| | सुखयामि | सुखयावः | सुखयामः |
| स० | सुखयेत् | सुखयेताम् | सुखयेयुः |
| | सुखयेः | सुखयेतम् | सुखयेत |
| | सुखयेयम् | सुखयेव | सुखयेम |
| प० | सुखयतु सुखयतात् | सुखयताम् | सुखयन्तु |
| | सुखय सुखयतात् | सुखयतम् | सुखयत |
| | सुखयानि | सुखयाव | सुखयाम |
| ह्य० | असुखयत् | असुखयताम् | असुखयन् |
| | असुखयः | असुखयतम् | असुखयत |
| | असुखयम् | असुखयाव | असुखयाम |
| अ० | असुसुखत् | असुसुखताम् | असुसुखन् |
| | असुसुखः | असुसुखतम् | असुसुखत |
| | असुसुखम् | असुसुखाव | असुसुखाम |
| प० | सुखयामास | सुखयामासतुः | सुखयामासुः |
| | सुखयामासिथ | सुखयामासथुः | सुखयामास |
| | सुखयामास | सुखयामासिव | सुखयामासिम |

सुखयाञ्चकार । सुखयाम्बभूव । सुयामाम्बभूवतुः

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ० | सुख्यात् | सुख्यास्ताम् | सुख्यासुः |
| | सुख्याः | सुख्यास्तम् | सुख्यास्त |
| | सुख्यासम् | सुख्यास्व | सुख्यास्म |
| श्व० | सुखयिता | सुखयितारौ | सुखयितारः |
| | सुखयितासि | सुखयितास्थः | सुखयितास्थ |
| | सुखयितास्मि | सुखयितास्वः | सुखयितास्मः |
| भ० | सुखयिष्यति | सुखयिष्यतः | सुखयिष्यन्ति |
| | सुखयिष्यसि | सुखयिष्यथः | सुखयिष्यथ |
| | सुखयिष्यामि | सुखयिष्यावः | सुखयिष्यामः |
| क्रि० | असुखयिष्यत् | असुखयिष्यताम् | असुखयिष्यन् |
| | असुखयिष्यः | असुखयिष्यतम् | असुखयिष्यत |
| | असुखयिष्यम् | असुखयिष्याव | असुखयिष्याम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | दुःखयति | दुःखयतः | दुःखयन्ति |
| | दुःखयसि | दुःखयथः | दुःखयथ |
| | दुःखयामि | दुःखयावः | दुःखयामः |
| स० | दुःखयेत् | दुःखयेताम् | दुःखयेयुः |
| | दुःखयेः | दुःखयेतम् | दुःखयेत |
| | दुःखयेयम् | दुःखयेव | दुःखयेम |
| प० | दुःखयतु दुःखयतात् | दुःखयताम् | दुःखयन्तु |
| | दुःखय दुःखयतात् | दुःखयतम् | दुःखयत |
| | दुःखयानि | दुःखयाव | दुःखयाम |
| ह्य० | अदुःखयत् | अदुःखयताम् | अदुःखयन् |
| | अदुःखयः | अदुःखयतम् | अदुःखयत |
| | अदुःखयम् | अदुःखयाव | अदुःखयाम |
| अ० | अदुदुःखत् | अदुदुःखताम् | अदुदुःखन् |
| | अदुदुःखः | अदुदुःखतम् | अदुदुःखत |
| | अदुदुःखम् | अदुदुःखाव | अदुदुःखाम |
| प० | दुःखयामास | दुःखयामासतुः | दुःखयामासुः |
| | दुःखयामासिथ | दुःखयामासथुः | दुःखयामास |
| | दुःखयामास | दुःखयामासिव | दुःखयामासिम |
| आ० | दुःख्यात् | दुःख्यास्ताम् | दुःख्यासुः |
| | दुःख्याः | दुःख्यास्तम् | दुःख्यास्त |
| | दुःख्यासम् | दुःख्यास्व | दुःख्यास्म |
| श्व० | दुःखयिता | दुःखयितारौ | दुःखयितारः |

दुःखयितासि दुःखयितास्थः दुःखयितास्थ
दुःखयितास्मि दुःखयितास्वः दुःखयितास्मः
भ० दुःखयिष्यति दुःखयिष्यतः दुःखयिष्यन्ति
दुःखयिष्यसि दुःखयिष्यथः दुःखयिष्यथ
दुःखयिष्यामि दुःखयिष्यावः दुःखयिष्यामः
क्रि० अदुःखयिष्यत् अदुःखयिष्यताम् अदुःखयिष्यन्
अदुःखयिष्यः अदुःखयिष्यतम् अदुःखयिष्यत
अदुःखयिष्यम् अदुःखयिष्याव अदुःखयिष्याम

अङ्कण्-पदलक्षणयोः ॥ डगलुं भरवुं चिन्ह करवुं
अङ्कयति । आञ्चिकत्, मतान्तरे-आञ्कत् ।
अङ्कयाञ्चकार ।

अघण्-पापकरणे ॥ पाप करवुं
अघयति । आजिघत् । मतान्तरे आजघत् ।
अघयामास ।

रचण्-प्रतियत्ने ॥ रचवुं
रचयति । अररचत् । रचयाम्बभूव ।

सूचण्-पैशून्ये ॥ चाडी खाघी सूचना करवी
सूचयति । असुसूचत् । सूचयाञ्चकार ।

भाजण्-पृथक्कर्मणि ॥ जुदुं करवुं
भाजयति । अबभाजत् । भाजयामास ।

सभाजण्-प्रीतिसेवनयोः ॥ प्रीति करवी सेववुं
सभाजयति । अससभाजत् । सभाजयाम्बभूव

लज-लजुण्-प्रकाशने ॥ प्रकाशवुं
लजयति । अललजत् । लजयाञ्चकार ।
लञ्जयति । अललञ्जत् । लञ्जयामास ।

कूटण् दाहे ॥ बाळवुं
कूटयति । अचुकूटत् । कूटयाम्बभूव ।

पट-वटण्-ग्रन्थे ॥ गुंथवुं
पटयति । अपपटत् । पटयाञ्चकार ।
वटयति । अववटत् । वटयामास ।

खेटण्-भक्षणे ॥ खावुं
खेटयति । अचिखेटत् । खेटयाम्बभूव ।

खोटण्-क्षेपे ॥ फेंकवुं
खोटयति । अचुखोटत् । खोटयाञ्चकार ।

पुटण्-संसर्गे ॥ संबंध थवो
पुटयति । अपुपुटत् । पुटयामास ।

वटुण्-विभाजने ॥ विभाग करवो
वण्टयति । अववण्टत् । वण्टयाम्बभूव ।

शठ श्वठण्-सम्यग्भाषणे ॥ सारुं भाषण करवुं
शठयति । अशशठत् । शठयाञ्चकार ।
श्वठयति । अशश्वठत् । श्वठयामास ।

दण्डण्-दण्डनिपातने ॥ शिक्षा करवी
दण्डयति । अददण्डत् । दण्डयाम्बभूव ।

व्रणण्-गात्रविचूर्णने ॥ शरीरना चुरेचुरा थवां, घायल करवुं
व्रणयति । अवव्रणत् । व्रणयामास ।

वर्णण्-वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु ॥ वखाणवुं वर्णन करवुं विस्तारवुं
वर्णयति । अववर्णत् । वर्णयाञ्चकार ।

पर्णण्-हरितभावे ॥ लीला रंगे रंगवुं
पर्णयति । अपपर्णत् । पर्णयामास ।

कर्णण् भेदे ॥ भेद पाडवो
कर्णयति । अचकर्णत् । कर्णयाम्बभूव

तूणण्-संकोचने ॥ संकोचवुं
तूणयति । अतुतूणत् । तूणयाञ्चकार ।

गणण्-संख्याने ॥ गणवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | गणयति | गणयतः | गणयन्ति |
| | गणयसि | गणयथः | गणयथ |
| | गणयामि | गणयावः | गणयामः |
| स० | गणयेत् | गणयेताम् | गणयेयुः |
| | गणयेः | गणयेतम् | गणयेत |
| | गणयेयम् | गणयेव | गणयेम |
| प० | गणयतु गणयतात् | गणयताम् | गणयन्तु |
| | गणय गणयतात् | गणयतम् | गणयत |
| | गणयानि | गणयाव | गणयाम |
| ह्य० | अगणयत् | अगणयताम् | अगणयन् |
| | अगणयः | अगणयतम् | अगणयत |
| | अगणयम् | अगणयाव | अगणयाम |

अ० अजीगणत् अजीगणताम् अजीगणन्
अजीगणः अजीगणतम् अजीगणत
अजीगणम् अजीगणाव अजीगणाम
अजगणत् अजगणताम् अजगणन्
अजगणः अजगणतम् अजगणत
अजगणम् अजगणाव अजगणाम
प० गणयामास गणयामासतुः गणयामासुः
गणयामासिथ गणयामासथुः गणयामास
गणयामास गणयामासिव गणयामासिम
आ० गण्यात् गण्यास्ताम् गण्यासुः
गण्याः गण्यास्तम् गण्यास्त
गण्यासम् गण्यास्व गण्यास्म
श्व० गणयिता गणयितारौ गणयितारः
गणयितासि गणयितास्थः गणयितास्थ
गणयितास्मि गणयितास्वः गणयितास्मः
भ० गणयिष्यति गणयिष्यतः गणयिष्यन्ति
गणयिष्यसि गणयिष्यथः गणयिष्यथ
गणयिष्यामि गणयिष्यावः गणयिष्यामः
क्रि० अगणयिष्यत् अगणयिष्यताम् अगणयिष्यन्
अगणयिष्यः अगणयिष्यतम् अगणयिष्यत
अगणयिष्यम् अगणयिष्याव अगणयिष्याम

कुण गुण केतण्–आमन्त्रणे ॥ आमन्त्रण करवुं
कुणयति । अचुकुणत् । कुणयामास ।
गुणयति । अजुगुणत् । गुणयामास ।
केतयति । अचिकेतत् । केतयामास ।
पतण्–गतौ वा ॥ जवुं
पतयति । अपपतत् । पतयाञ्चकार ।
पक्षे पततीत्यादि ।
वातण् गतिसुखसेवनयोः ॥ जवुं सुखसेववुं
वातयति । अववातत् । वातयाञ्चकार
कथण्–वाक्यप्रबन्धे ॥ कहेवुं
कथयति । अचकथत् । कथयाञ्चकार ।
श्रथण्–दौर्बल्ये ॥ दुर्बल थवुं
श्रथयति । अशश्रथत् । श्रथयाम्बभूव ।

छेदण्–द्वैधीकरणे । छेदवुं, बे भाग करवा
छेदयति । अचिच्छेदत् । छेदयाम्बभूव ।
गदण्–गर्जे ॥ गर्जना करवी
गदयति । अजगदत् । गदयाम्बभूव ।
अन्धण्–दृष्ट्युपसंहारे ॥ आंधळा करवुं
अन्धयति । आन्दिधत् मतान्तरे आन्दधत् ।
अन्धयाञ्चकार ।
स्तनण्–गर्जे ॥ गाजवुं
स्तनयति । अतस्तनत् । स्तनयाञ्चकार
ध्वनण्–शब्दे ॥ शब्द करवो
ध्वनयति । अदध्वनत् । ध्वनयाञ्चकार
स्तेनण्–चौर्ये ॥ चोरवुं
स्तेनयति । अतिस्तेनत् । स्तेनयामास
ऊनण्–परिहाणे ॥ उणुं करवुं
ऊनयति । औनिनत् । मतान्तरे औननत् ।
ऊनयामास ।
कृपण्–दौर्बल्ये ॥ दुर्बलथवुं
कृपयति । अचकृपत् । कृपयामास ।
रूपण्–रूपक्रियायाम् ॥ रूप जोवुं रुप घडवुं
रूपयति । अरूरूपत् । रूपयाम्बभूव ।
क्षप लाभण्–प्रेरणे ॥ प्रेरणा करवी
क्षपयति । अचक्षपत् । क्षपयाम्बभूव ।
लाभयति । अललाभत् । लाभयाम्बभूव
भामण्–क्रोधे ॥ क्रोध करवो
भामयति । अबभामत् । भामयाञ्चकार ।
गोमण्–उपलेपने ॥ लींपवुं
गोमयति । अजुगोमत् । गोमयामास ।
सामण्–सान्त्वने ॥ शांतकरवुं खुशीकरवुं
सामयति । अससामत् । सामयाम्बभूव
श्रामण्–आमन्त्रणे ॥ आमन्त्रण करवुं
श्रामयति । अशश्रामत् । श्रामयाञ्चकार ।
स्तोमण्–श्लाघायाम् ॥ वखाणवुं
स्तोमयति । अतुस्तोमत् । स्तोमयामास
व्ययण्–वित्तसमुत्सर्गे ॥ खर्च करवो
व्यययति । अवव्ययत् । व्यययाम्बभूव
सूत्रण्–विमोचने ॥ चिटवुं गूंथवुं

सूत्रयति । असुसूत्रत् । सूत्रयाञ्चकार ।
मूत्रण्–प्रस्रवणे । मूतरवुं झरवुं
मूत्रयति । अमुमूत्रत् । मूत्रयामास ।
पार–तीरण् कर्मसमाप्तौ । कामनी समाप्ति करवी
पारयति । अपपारत् । पारयाम्बभूव ।
तीरयति । अतितीरत् । तीरयाञ्चकार ।
कत्र गात्रण्– शैथिल्ये ॥ ढीलुं थवुं
कत्रयति । अचकत्रत् । कत्रयामास ।
गात्रयति । अजगात्रत् । गात्रयाम्बभूव ।
चित्रण्–चित्रक्रियाकदाचिद्दृष्ट्योः ॥ चितरवुं अद्भुत जोवुं
चित्रयति । अचिचित्रत् । चित्रयाञ्चकार
छिद्रण्–भेदे ॥ काणुं पाडवुं छेदवुं
छिद्रयति । अचिच्छिद्रत् । छिद्रयामास
मिश्रण्–संपर्चने ॥ भेळववुं मिश्रण करवुं
मिश्रयति । अमिमिश्रत् । मिश्रयाम्बभूव
वरण्–ईप्सायाम् ॥ इच्छवुं वरवुं
वरयति । अववरत् । वरयाञ्चकार ।
स्वरण्–आक्षेपे ॥ निंदवुं
स्वरयति । अससवरत् । स्वरयामास ।
शारण्–दौर्बल्ये ॥ दुबळा थवुं
शारयति । अशशारत् । शारयाम्बभूव
कुमारण्–क्रीडायाम् । रमवुं
कुमारयति । अचुकुमारत् । कुमारयाञ्चकार
कलण्–संख्यानगत्योः ॥ जवुं गणवुं
कलयति । अचकलत् । कलयामास ।
शीलण्–उपधारणे ॥ अभ्यास करवो परिचय करवो
शीलयति । अशिशीलत् । शीलयामास
वेल कालण्–उपदेशे ॥ उपदेश करवो
वेलयति । अविवेलत् । वेलयाम्बभूव ।
कालयति । अचकालत् । कालयाञ्चकार
पल्यूलण्–लवनपवनयोः ॥ छेदवुं पवित्रकरवुं
पल्यूलयति । अपपल्यूलत् । पल्यूलयामास
अंशण्–समाघाते ॥ विभाग करवो

अंशयति । आंशिशत् मतान्तरे–आंशशत् ।
अंशयाञ्चकार ।
पषण्–अनुपसर्गः गतावित्येव ॥ जवुं
पषयति । अपपषत् । पषयाञ्चकार ।

गवेषण्–मार्गणे ॥ शोधवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | गवेषयति | गवेषयतः | गवेषयन्ति |
| | गवेषयसि | गवेषयथः | गवेषयथ |
| | गवेषयामि | गवेषयावः | गवेषयामः |
| स० | गवेषयेत् | गवेषयेताम् | गवेषयेयुः |
| | गवेषयेः | गवेषयेतम् | गवेषयेत |
| | गवेषयेयम् | गवेषयेव | गवेषयेम |
| प० | गवेषयतु–यतात् | गवेषयताम् | गवेषयन्तु |
| | गवेषय ,, | गवेषयतम् | गवेषयत |
| | गवेषयाणि | गवेषयाव | गवेषयाम |
| ह्य० | अगवेषयत् | अगवेषयताम् | अगवेषयन् |
| | अगवेषयः | अगवेषयतम् | अगवेषयत |
| | अगवेषयम् | अगवेषयाव | अगवेषयाम |
| अ० | अजगवेषत् | अजगवेषताम् | अजगवेषन् |
| | अजगवेषः | अजगवेषतम् | अजगवेषत |
| | अजगवेषम् | अजगवेषाव | अजगवेषाम |
| प० | गवेषयामास | गवेषयामासतुः | गवेषयामासुः |
| | गवेषयामासिथ | गवेषयामासथुः | गवेषयामास |
| | गवेषयामास | गवेषयामासिव | गवेषयामासिम |
| आ० | गवेष्यात् | गवेष्यास्ताम् | गवेष्यासुः |
| | गवेष्याः | गवेष्यास्तम् | गवेष्यास्त |
| | गवेष्यासम् | गवेष्यास्व | गवेष्यास्म |
| श्व० | गवेषयिता | गवेषयितारौ | गवेषयितारः |
| | गवेषयितासि | गवेषयितास्थः | गवेषयितास्थ |
| | गवेषयितास्मि | गवेषयितास्वः | गवेषयितास्मः |
| भ० | गवेषयिष्यति | गवेषयिष्यतः | गवेषयिष्यन्ति |
| | गवेषयिष्यसि | गवेषयिष्यथः | गवेषयिष्यथ |
| | गवेषयिष्यामि | गवेषयिष्यावः | गवेषयिष्यामः |
| | अगवेषयिष्यत् | अगवेषयिष्यताम् | अगवेषयिष्यन् |
| | अगवेषयिष्यः | अगवेषयिष्यतम् | अगवेषयिष्यत |
| | अगवेषयिष्यम् | अगवेषयिष्याव | अगवेषयिष्याम |

मृषण्-क्षान्तौ ॥ सहन करवुं.
मृषयति । अममृषत् । मृषयामास ।

रसण्-आस्वादनस्नेहनयोः ॥ चाखवुं स्नेह करवो
रसयति । अररसत् । रसयाम्बभूव ।

वासण्-उपसेवायाम् ॥ सेववुं, वासआपवो
वासयति । अववासत् । वासयाञ्चकार

निवासण्-आच्छादने ॥ ढांकवुं
निवासयति । अनिनिवासत् । निवासयामास

चहण्-कल्कने ॥ ढोंगकरवो शठता करवी
चहयति । अचचहत् । चहयाञ्चकार ।

महण्-पूजायाम् ॥ पूजवुं

व० महयति महयतः महयन्ति
महयसि महयथः महयथ
महयामि महयावः महयामः
स० महयेत् महयेताम् महयेयुः
महयेः महयेतम् महयेत
महयेयम् महयेव महयेम
प० महयतु महयतात् महयताम् महयन्तु
महय महयतात् महयतम् महयत
महयानि महयाव महयाम
ह्य० अमहयत् अमहयताम् अमहयन्
अमहयः अमहयतम् अमहयत
अमहयम् अमहयाव अमहयाम
अ० अममहत् अममहताम् अममहन्
अममहः अममहतम् अममहत
अममहम् अममहाव अममहाम
प० महयाञ्चकार महयाञ्चक्रतुः महयाञ्चक्रुः
महयाञ्चकर्थ महयाञ्चक्रथुः महयाञ्चक्र
महयाञ्चकार चकर महयाञ्चकृव महयाञ्चकृम
आ० मह्यात् मह्यास्ताम् मह्यासुः
मह्याः मह्यास्तम् मह्यास्त
मह्यासम् मह्यास्व मह्यास्म
श्व० महयिता महयितारौ महयितारः
महयितासि महयितास्थः महयितास्थ
महयितास्मि महयितास्वः महयितास्मः
भ० महयिष्यति महयिष्यतः महयिष्यन्ति
महयिष्यसि महयिष्यथः महयिष्यथ
महयिष्यामि महयिष्यावः महयिष्यामः
क्रि० अमहयिष्यत् अमहयिष्यताम् अमहयिष्यन्
अमहयिष्यः अमहयिष्यतम् अमहयिष्यत
अमहयिष्यम् अमहयिष्याव अमहयिष्याम

रहण्-त्यागे ॥ त्याग करवो
रहयति । अररहत् । रहयामास ।

रहुण्-गतौ ॥ जवुं
रंहयति । अररंहत् । रंहयामास ।

स्पृहण्-ईप्सायाम् ॥ इच्छवुं
स्पृहयति । अपस्पृहत् । स्पृहयाम्बभूव

रूक्षण्-पारुष्ये ॥ कठोर थवुं
रूक्षयति । अरुरूक्षत् । रूक्षयाञ्चकार ।

॥ इत्यदन्ताः परस्मैपदिनः ॥

---

## ॥ अथात्मनेपदिनः ॥

मृगणि-अन्वेषणे ॥ शोधवुं

व० मृगयते मृगयेते मृगयन्ते
मृगयसे मृगयेथे मृगयध्वे
मृगये मृगयावहे मृगयामहे
स० मृगयेत मृगयेयाताम् मृगयेरन्
मृगयेथाः मृगयेयाथाम् मृगयेध्वम्
मृगयेय मृगयेवहि मृगयेमहि
प० मृगयताम् मृगयेताम् मृगयन्ताम्
मृगयस्व मृगयेथाम् मृगयध्वम्
मृगयै मृगयावहै मृगयामहै
ह्य० अमृगयत अमृगयेताम् अमृगयन्त
अमृगयथाः अमृगयेथाम् अमृगयध्वम्
अमृगये अमृगयावहि अमृगयामहि
अ० अममृगत अममृगेताम् अममृगन्त

अममृगथाः अममृगेथाम् अममृगध्वम्
अममृगे अममृगावहि अममृगामहि
प० मृगयाञ्चक्रे मृगयाञ्चक्राते मृगयाञ्चक्रिरे
मृगयाञ्चकृषे मृगयाञ्चक्राथे मृगयाञ्चकृढ्वे
मृगयाञ्चक्रे मृगयाञ्चकृवहे मृगयाञ्चकृमहे
मृगयामास । मृगयाम्बभूव
आ० मृगयिषीष्ट मृगयिषीयास्ताम् मृगयिषीरन्
मृगयिषीष्ठाः मृगयिषीयास्थाम् मृगयिषीढ्वम्
ध्वम्
मृगयिषीय मृगयिषीवहि मृगयिषीमहि
श्व० मृगयिता मृगयितारौ मृगयितारः
मृगयितासे मृगयितासाथे मृगयिताध्वे
मृगयिताहे मृगयितास्वहे मृगयितास्महे
भ० मृगयिष्यते मृगयिष्येते मृगयिष्यन्ते
मृगयिष्यसे मृगयिष्येथे मृगयिष्यध्वे
मृगयिष्ये मृगयिष्यावहे मृगयिष्यामहे
क्रि० अमृगयिष्यत अमृगयिष्येताम् अमृगयिष्यन्त
अमृगयिष्यथाः अमृगयिष्येथाम् अमृगयिष्यध्वम्
अमृगयिष्ये अमृगयिष्यावहि अमृगयिष्यामहि

अर्थणि-उपयाचने ॥ मागवुं
अर्थयते । आर्तिथत । मतान्तरे आर्तथत
अर्थयाञ्चक्रे ।

पदणि-गतौ ॥ जवुं
पदयते । अपपदत । पदयामास ।

संग्रामणि-युद्धे ॥ युद्धकरवुं
सङ्ग्रामयते । अससङ्ग्रामत । सङ्ग्रामयाम्बभूव

शूर वीरणि-विक्रान्तौ ॥ आक्रमण करवुं
पराक्रमी थवुं
शूरयते अशुशूरत । शूरयाञ्चक्रे ।
वीरयते । अविवीरत । वीरयाञ्चक्रे ।

सत्रणि-सन्दानक्रियायाम् । आपवानीक्रियाकरवी
सत्रयते । अससत्रत । सत्रयामास ।

स्थूलणि परिबृंहणे ॥ जाडुं थवुं
स्थूलयते । अतुस्थूलत । स्थूलयामास ।

गर्वणि-माने ॥ अभिमान करवुं
गर्वयते । अजगर्वत । गर्वयाम्बभूव ।

गृहणि ग्रहणे ॥ लेवुं, झालवुं
गृहयते । अजगृहत । गृहयाम्बभूव ।

कुहणि-विस्मापने ॥ विस्मयपामवो
कुहयते । अचुकुहत । कुहयाञ्चक्रे ।

## ॥ इत्यदन्ता आत्मनेपदिनः ॥

## ॥ अथ युजादयः परस्मैपदिनः ॥

युजण् संपर्चने ॥ जोडवुं

व० योजयति योजयतः योजयन्ति
योजयसि योजयथः योजयथ
योजयामि योजयावः योजयामः
स० योजयेत् योजयेताम् योजयेयुः
योजयेः योजयेतम् योजयेत
योजयेयम् योजयेव योजयेम
प० योजयतु योजयतात् योजयताम् योजयन्तु
योजय „ योजयतम् योजयत
योजयानि योजयाव योजयाम
ह्य० अयोजयत् अयोजयताम् अयोजयन्
अयोजयः अयोजयतम् अयोजयत
अयोजयम् अयोजयाव अयोजयाम
अ० अयूयुजत् अयूयुजताम् अयूयुजन्
अयूयुजः अयूयुजतम् अयूयुजत
अयूयुजम् अयूयुजाव अयूयुजाम
प० योजयामास योजयामासतुः योजयामासुः
योजयामासिथ योजयामासथुः योजयामास
योजयामास योजयामासिव योजयामासिम
आ० योज्यात् योज्यास्ताम् योज्यासुः
योज्याः योज्यास्तम् योज्यास्त
योज्यासम् योज्यास्व योज्यास्म

श्व० योजयिता योजयितारौ योजयितारः
योजयितासि योजयितास्थः योजयितास्थ
योजयितास्मि योजयितास्वः योजयितास्मः
भ० योजयिष्यति योजयिष्यतः योजयिष्यन्ति
योजयिष्यसि योजयिष्यथः योजयिष्यथ
योजयिष्यामि योजयिष्यावः योजयिष्यामः
क्रि० अयोजयिष्यत् अयोजयिष्यताम् अयोजयिष्यन्
अयोजयिष्यः अयोजयिष्यतम् अयोजयिष्यत
अयोजयिष्यम् अयोजयिष्याव अयोजयिष्याम

| | | |
|---|---|---|
| व० योजति | योजतः | योजन्ति |
| योजसि | योजथः | योजथ |
| योजामि | योजावः | योजामः |
| स० योजेत् | योजेताम् | योजेयुः |
| योजेः | योजेतम् | योजेत |
| योजेयम् | योजेव | योजेम |
| प० योजतु योजतात् | योजताम् | योजन्तु |
| योज योजतात् | योजतम् | योजत |
| योजानि | योजाव | योजाम |
| ह्य० अयोजत | अयोजताम् | अयोजन् |
| अयोजः | अयोजतम् | अयोजत |
| अयोजम् | अयोजाव | अयोजाम |
| अ० अयोजीत् | अयोजिष्टाम् | अयोजिषुः |
| अयोजीः | अयोजिष्टम् | अयोजिष्ट |
| अयोजिषम् | अयोजिष्व | अयोजिष्म |

णिजभावेऽनिट्कोऽयमिति केचित्। तन्मते। अयौक्षीत्। अयौक्ताम्। अयौक्षुः। योक्ता। योक्ष्यति। अयोक्ष्यत।

| | | |
|---|---|---|
| प० युयोज | युयुजतुः | युयुजुः |
| युयोजिथ | युयुजथुः | युयुज |
| युयोज | युयुजिव | युयुजिम |
| आ० युज्यात् | युज्यास्ताम् | युज्यासुः |
| युज्याः | युज्यास्तम् | युज्यास्त |
| युज्यासम् | युज्यास्व | युज्यास्म |
| श्व० योजिता | योजितारौ | योजितारः |
| योजितासि | योजितास्थः | योजितास्थ |
| योजितास्मि | योजितास्वः | योजितास्मः |
| भ० योजिष्यति | योजिष्यतः | योजिष्यन्ति |
| योजिष्यसि | योजिष्यथः | योजिष्यथ |
| योजिष्यामि | योजिष्यावः | योजिष्यामः |

क्रि० अयोजिष्यत् अयोजिष्यताम् अयोजिष्यन्
अयोजिष्यः अयोजिष्यतम् अयोजिष्यत
अयोजिष्यम् अयोजिष्याव अयोजिष्याम

लीण्-द्रवीकरणे-स्नेहद्रवार्थे ॥ मीनुं करवुं स्नेहथी पीगळवुं

| | | |
|---|---|---|
| व० विलीनयति | विलीनयतः | विलीनयन्ति |
| विलीनयसि | विलीनयथः | विलीनयथ |
| विलीनयामि | विलीनयावः | विलीनयामः |
| स० विलीनयेत् | विलीनयेताम् | विलीनयेयुः |
| विलीनयेः | विलीनयेतम् | विलीनयेत |
| विलीनयेयम् | विलीनयेव | विलीनयेम |
| प० विलीनयतु तात् | विलीनयताम् | विलीनयन्तु |
| विलीनय ,, | विलीनयतम् | विलीनयत |
| विलीनयानि | विलीनयाव | विलीनयाम |
| ह्य० व्यलीनयत् | व्यलीनयताम् | व्यलीनयन् |
| व्यलीनयः | व्यलीनयतम् | व्यलीनयत |
| व्यलीनयम् | व्यलीनयाव | व्यलीनयाम |
| अ० व्यलीलिनत् | व्यलीलिनताम् | व्यलीलिनन् |
| व्यलीलिनः | व्यलीलिनतम् | व्यलीलिनत |
| व्यलीलिनम् | व्यलीलिनाव | व्यलीलिनाम |

विलीनयामास विलीनयामासतुः विलीनयामासुः
विलीनयामासिथ विलीनयामासथुः-यामास
विलीनयामास विलीनयामासिव-यामासिम

| | | |
|---|---|---|
| आ० विलीन्यात् | विलीन्यास्ताम् | विलीन्यासुः |
| विलीन्याः | विलीन्यास्तम् | विलीन्यास्त |
| विलीन्यासम् | विलीन्यास्व | विलीन्यास्म |

श्व० विलीनयिता विलीनयितारौ विलीनयितारः
विलीनयितासि विलीनयितास्थः-यितास्थ
विलीनयितास्मि विलीनयितास्वः-यितास्मः

भ० विलीनयिष्यति वीलीनयिष्यतः-यिष्यन्ति
विलीनयिष्यसि विलीनयिष्यथः-यिष्यथ
विलीनयिष्यामि विलीनयिष्यावः-यिष्यामः
व्यलीनयिष्यत व्यलीनयिष्यताम् व्यलीनयिष्यन्
व्यलीनयिष्यः व्यलीनयिष्यतम् व्यलीनयिष्यत
व्यलीनयिष्यम् व्यलीनयिष्याव व्यलीनयिष्याम

व० विलाययति विलाययतः विलाययन्ति
विलाययसि विलाययथः विलाययथ
विलाययामि विलाययावः विलाययामः
स० विलाययेत् विलाययेताम् विलाययेयुः
विलाययेः विलाययेतम् विलाययेत
विलाययेयम् विलाययेव विलाययेम
प० विलाययतु तात् विलाययताम् विलाययन्तु
विलायय ,, विलाययतम् विलाययत
विलाययानि विलाययाव विलाययाम
ह्य० व्यलाययत् व्यलाययताम् व्यलाययन्
व्यलायय: व्यलाययतम् व्यलाययत
व्यलाययम् व्यलाययाव व्यलाययाम
अ० व्यलीलयत् व्यलीलयताम् व्यलीलयन्
व्यलीलयः व्यलीलयतम् व्यलीलयत
व्यलीलयम् व्यलीलयाव व्यलीलयाम
विलाययामास विलाययामासतुः विलाययामासुः
विलाययामासिथ विलाययामासथुः विलाययामास
विलाययामास विलाययामासिव विलाययामासिम
आ० विलाय्यात् विलाय्यास्ताम् विलाय्यासुः
विलाय्याः विलाय्यास्तम् विलाय्यास्त
विलाय्यासम् विलाय्यास्व विलाय्यास्म
श्व० विलाययिता विलाययितारौ विलाययितारः
विलाययितासि विलाययितास्थः विलाययितास्थ
विलाययितास्मि विलाययितास्वः विलाययितास्मः
भ० विलाययिष्यति विलाययिष्यतः विलाययिष्यन्ति
विलाययिष्यसि विलाययिष्यथः विलाययिष्यथ
विलाययिष्यामि विलाययिष्यावः विलाययिष्यामः
क्रि० व्यलाययिष्यत् व्यलाययिष्यताम् व्यलाययिष्यन्
व्यलाययिष्यः व्यलाययिष्यतम् व्यलाययिष्यत
व्यलाययिष्यम् व्यलाययिष्याव व्यलाययिष्याम

॥ अस्यापि वात्त्वमित्येके, तन्मते ॥

व० विलालयति विलालयतः विलालयन्ति
विलालयसि विलालयथः विलालयथ
विलालयामि विलालयावः विलालयामः
स० विलालयेत् विलालयेताम् विलालयेयुः
विलालयेः विलालयेतम् विलालयेत
विलालयेयम् विलालयेव विलालयेम
प० विलालयतु,यतात् विलालयताम् विलालयन्तु
विलालय ,, विलालयतम् विलालयत
विलालयानि विलालयाव विलालयाम
ह्य० व्यलालयत् व्यलालयताम् व्यलालयन्
व्यलालयः व्यलालयतम् व्यलालयत
व्यलालयम् व्यलालयाव व्यलालयाम
अ० व्यलीललत् व्यलीललताम् व्यलीललन्
व्यलीललः व्यलीललतम् व्यलीललत
व्यलीललम् व्यलीललाव व्यलीललाम
प० विलालयामास विलालयामासतुः-यामासुः
विलालयामासिथ विलालयामासथुः-यामास
विलालयामास विलालयामासिव-यामासिम
आ० विलाल्यात् विलाल्यास्ताम् विलाल्यासुः
विलाल्याः विलाल्यास्तम् विलाल्यास्त
विलाल्यासम् विलाल्यास्व विलाल्यास्म
श्व० विलालयिता विलालयितारौ विलालयितारः
विलालयितासि विलालयितास्थः विलालयितास्थ
विलालयितास्मि विलालयितास्वः विलालयितास्मः
भ० विलालयिष्यति विलालयिष्यतः विलालयिष्यन्ति
विलालयिष्यसि विलालयिष्यथः विलालयिष्यथ
विलालयिष्यामि विलालयिष्यावः विलालयिष्यामः
क्रि० व्यलालयिष्यत् व्यलालयिष्यताम् व्यलालयिष्यन्
व्यलालयिष्यः व्यलालयिष्यतम् व्यलालयिष्यत
व्यलालयिष्यम् व्यलालयिष्याव विलालयिष्याम
व० विलापयति विलापयतः विलापयन्ति

विलापयसि विलापयथः विलापयथ
विलापयामि विलापयावः विलापयामः
स० विलापयेत् विलापयेताम् विलापयेयुः
विलापयेः विलापयेतम् विलापयेत
विलापयेयम् विलापयेव विलापयेम

प० विलापयतु तात् विलापयताम् विलापयन्तु
विलापय ,, विलापयतम् विलापयत
विलापयानि विलापयाव विलापयाम

ह्य० व्यलापयत् व्यलापयताम् व्यलापयन्
व्यलापयः व्यलापयतम् व्यलापयत
व्यलापयम् व्यलापयाव व्यलापयाम

अ० व्यलीलपत् व्यलीलपताम् व्यलीलपन्
व्यलीलपः व्यलीलपतम् व्यलीलपत
व्यलीलपम् व्यलीलपाव व्यलीलपाम

विलापयामास विलापयामासतुः विलापयामासुः
विलापयामासिथ विलापयामासथुः विलापयामास
विलापयामास विलापयामासिव विलापयामासिम

आ० विलाप्यात् विलाप्यास्ताम् विलाप्यासुः
विलाप्याः विलाप्यास्तम् विलाप्यास्त
विलाप्यासम् विलाप्यास्व विलाप्यास्म

श्व० विलापयिता विलापयितारौ विलापयितारः
विलापयितासि विलापयितास्थः विलापयितास्थ
विलापयितास्मि विलापयितास्वः-यितास्मः

भ० विलापयिष्यति विलापयिष्यतः-यिष्यन्ति
विलापयिष्यसि विलापयिष्यथः-यिष्यथ
विलापयिष्यामि विलापयिष्यावः-यिष्यामः

व्यलापयिष्यत् व्यलापयिष्यताम् व्यलापयिष्यन्
व्यलापयिष्यः व्यलापयिष्यतम् व्यलापयिष्यत
व्यलापयिष्यम् व्यलापयिष्याव व्यलापयिष्याम

पाणिनीयमते विलाययति-इत्यादिकमेकमेव रूपम् । एवम्-उल्लापयते । आलापयते । अपलापयते-इत्याद्यप्येके ।

णिजभावे

व० विलयति विलयतः विलयन्ति
विलयसि विलयथः विलयथ
विलयामि विलयावः विलयामः

स० विलयेत् विलयेताम् विलयेयुः
विलयेः विलयेतम् विलयेत
विलयेयम् विलयेव विलयेम

प० विलयतु, तात् विलयताम् विलयन्तु
विलय ,, विलयतम् विलयत
विलयानि विलयाव विलयाम

ह्य० व्यलयत् व्यलयताम् व्यलयन्
व्यलयः व्यलयतम् व्यलयत
व्यलयम् व्यलयाव व्यलयाम

अ० व्यलायीत् व्यलायिष्टाम् व्यलायिषुः
व्यलायीः व्यलायिष्टम् व्यलायिष्ट
व्यलायिषम् व्यलायिष्व व्यलायिष्म

प० विलिलाय विलिल्यतुः विलिल्युः
विलिलयिथ विलिल्यथुः विलिल्य
विलिलाय विलिलय विलिल्यिव विलिल्यिम

आ० विलीयात् विलीयास्ताम् विलीयासुः
विलीयाः विलीयास्तम् विलीयास्त
विलीयासम् विलीयास्व विलीयास्म

श्व० विलयिता विलयितारौ विलयितारः
विलयितासि विलयितास्थः विलयितास्थ
विलयितास्मि विलयितास्वः विलयितास्मः

भ० विलयिष्यति विलयिष्यतः विलयिष्यन्ति
विलयिष्यसि विलयिष्यथः विलयिष्यथ
विलयिष्यामि विलयिष्यावः विलयिष्यामः

क्रि० व्यलयिष्यत् व्यलयिष्यताम् व्यलयिष्यन्
व्यलयिष्यः व्यलयिष्यतम् व्यलयिष्यत
व्यलयिष्यम् व्यलयिष्याव व्यलयिष्याम

पाणिनिमते णिजभावे । अलैषीत् । लेता । । लेष्यति । अलेष्यत् । इत्यादि ॥

मीण्-मतौ ॥ मनन करवुं

माययति । अमीमयत् । माययाञ्चकार ।

मयति । अमायीत् मतान्तरे-अमैषीत् । मिमयिथ ॥

प्रीग्‌ण्-तर्पणे ॥ खुश करवुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | प्रीणयति | प्रीणयतः | प्रीणयन्ति |
| | प्रीणयसि | प्रीणयथः | प्रीणयथ |
| | प्रीणयामि | प्रीणयावः | प्रीणयामः |
| स० | प्रीणयेत् | प्रीणयेताम् | प्रीणयेयुः |
| | प्रीणयेः | प्रीणयेतम् | प्रीणयेत |
| | प्रीणयेयम् | प्रीणयेव | प्रीणयेम |
| प० | प्रीणयतु तात् | प्रीणयताम् | प्रीणयन्तु |
| | प्रीणय ,, | प्रीणयतम् | प्रीणयत |
| | प्रीणयानि | प्रीणयाव | प्रीणयाम |
| ह्य० | अप्रीणयत् | अप्रीणयताम् | अप्रीणयन् |
| | अप्रीणयः | अप्रीणयतम् | अप्रीणयत |
| | अप्रीणयम् | अप्रीणयाव | अप्रीणयाम |
| अ० | अपिप्रिणत् | अपिप्रिणताम् | अपिप्रिणन् |
| | अपिप्रिणः | अपिप्रिणतम् | अपिप्रिणत |
| | अपिप्रिणम् | अपिप्रिणाव | अपिप्रिणाम |
| प० | प्रीणयामास | प्रीणयामासतुः | प्रीणयामासुः |
| | प्रीणयामासिथ | प्रीणयामासथुः | प्रीणयामास |
| | प्रीणयामास | प्रीणयामासिव | प्रीणयामासिम |
| आ० | प्रीण्यात् | प्रीण्यास्ताम् | प्रीण्यासुः |
| | प्रीण्याः | प्रीण्यास्तम् | प्रीण्यास्त |
| | प्रीण्यासम् | प्रीण्यास्व | प्रीण्यास्म |
| श्व० | प्रीणयिता | प्रीणयितारौ | प्रीणयितारः |
| | प्रीणयितासि | प्रीणयितास्थः | प्रीणयितास्थ |
| | प्रीणयितास्मि | प्रीणयितास्वः | प्रीणयितास्मः |
| भ० | प्रीणयिष्यति | प्रीणयिष्यतः | प्रीणयिष्यन्ति |
| | प्रीणयिष्यसि | प्रीणयिष्यथः | प्रीणयिष्यथ |
| | प्रीणयिष्यामि | प्रीणयिष्यावः | प्रीणयिष्यामः |
| क्रि | अप्रीणयिष्यत् | अप्रीणयिष्यताम् | अप्रीणयिष्यन् |
| | अप्रीणयिष्यः | अप्रीणयिष्यतम् | अप्रीणयिष्यत |
| | अप्रीणयिष्यम् | अप्रीणयिष्याव | अप्रीणयिष्याम |

मतान्तरे प्रायति-इत्यादि.

णित्वं णिजभावे उभयपदार्थम् ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| व० | प्रयति | प्रयतः | | प्रयन्ति |
| | प्रयसि | प्रयथः | | प्रयथ |
| | प्रयामि | प्रयावः | | प्रयामः |
| स० | प्रयेत् | प्रयेताम् | | प्रयेयुः |
| | प्रयेः | प्रयेतम् | | प्रयेत |
| | प्रयेयम् | प्रयेव | | प्रयेम |
| प० | प्रयतु | प्रयतात् | प्रयताम् | प्रयन्तु |
| | प्रय | प्रयतात | प्रयतम् | प्रयत |
| | प्रयाणि | प्रयाव | | प्रयाम |
| ह्य० | अप्रयत् | अप्रयताम् | | अप्रयन् |
| | अप्रयः | अप्रयतम् | | अप्रयत |
| | अप्रयम् | अप्रयाव | | अप्रयाम |
| अ० | अप्रायीत् | अप्रायिष्टाम् | | अप्रायिषुः |
| | अप्रायीः | अप्रायिष्टम् | | अप्रायिष्ट |
| | अप्रायिषम् | अप्रायिष्व | | अप्रायिष्म |

मतान्तरे अप्रैषीदित्यादीनीड्‌रहितानि रूपाणि भवन्ति,

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | पिप्राय | पिप्रियतुः | पिप्रियुः |
| | पिप्रयिथ | पिप्रियथुः | पिप्रिय |
| | पिप्राय | पिप्रियिव | पिप्रियिम |
| आ० | प्रीयात् | प्रीयास्ताम् | प्रीयासुः |
| | प्रीयाः | प्रीयास्तम् | प्रीयास्त |
| | प्रीयासम् | प्रीयास्व | प्रीयास्म |
| श्व० | प्रयिता | प्रयितारौ | प्रयितारः |
| | प्रयितासि | प्रयितास्थः | प्रयितास्थ |
| | प्रयितास्मि | प्रयितास्वः | प्रयितास्मः |
| भ० | प्रयिष्यति | प्रयिष्यतः | प्रयिष्यन्ति |
| | प्रयिष्यसि | प्रयिष्यथः | प्रयिष्यथ |
| | प्रयिष्यामि | प्रयिष्यावः | प्रयिष्यामः |
| क्रि० | अप्रयिष्यत् | अप्रयिष्यताम् | अप्रयिष्यन् |
| | अप्रयिष्यः | अप्रयिष्यतम् | अप्रयिष्यत |
| | अप्रयिष्यम् | अप्रयिष्याव | अप्रयिष्याम |
| व० | प्रयते | प्रयेते | प्रयन्ते |

प्रयसे प्रयेथे प्रयध्वे
प्रये प्रयावहे प्रयामहे
स० प्रयेत प्रयेतायाम् प्रयेरन्
प्रयेथाः प्रयेयाथाम् प्रयेध्वम्
प्रयेय प्रयेवहि प्रयेमहि
प० प्रयताम् प्रयेताम् प्रयन्ताम्
प्रयस्व प्रयेथाम् प्रयध्वम्
प्रयै प्रयावहै प्रयामहै
ह्य० अप्रयत अप्रयेताम् अप्रयन्त
अप्रयथाः अप्रयेथाम् अप्रयध्वम्
अप्रये अप्रयावहि अप्रयामहि
अ० अप्रयिष्ट अप्रयिषाताम् अप्रयिषत
अप्रयिष्ठाः अप्रयिषाथाम् अप्रयिड्ढ्वम् ढ्वम् ध्वम्
अप्रयिषि अप्रयिष्वहि अप्रयिष्महि
प० पिप्रिये पिप्रियाते पिप्रियिरे
पिप्रियिषे पिप्रियाथे पिप्रियिढ्वे ध्वे
पिप्रिये पिप्रियिवहे पिप्रियिमहे
आ० प्रयिषीष्ट प्रयिषीयास्ताम् प्रयिषीरन्
प्रयिषीष्ठाः प्रयिषीयास्थाम् प्रयिषीढ्वम् ध्वम्
प्रयिषीय प्रयिषीवहि प्रयिषीमहि
श्व० प्रयिता प्रयितारौ प्रयितारः
प्रयितासे प्रयितासाथे प्रयिताध्वे
प्रयिताहे प्रयितास्वहे प्रयितास्महे
भ० प्रयिष्यते प्रयिष्येते प्रयिष्यन्ते
प्रयिष्यसे प्रयिष्येथे प्रयिष्यध्वे
प्रयिष्ये प्रयिष्यावहे प्रयिष्यामहे
क्रि० अप्रयिष्यत अप्रयिष्येताम् अप्रयिष्यन्त
अप्रयिष्यथाः अप्रयिष्येथाम् अप्रयिष्यध्वम्
अप्रयिष्ये अप्रयिष्यावहि अप्रयिष्यामहि

धूगुण्–कम्पने ॥ हालवुं धूजवुं

व० धूनयति धूनयतः धूनयन्ति
धूनयसि धूनयथः धूनयथ
धूनयामि धूनयावः धूनयामः
स० धूनयेत् धूनयेताम् धूनयेयुः
धूनयेः धूनयेतम् धूनयेत
धूनयेयम् धूनयेव धूनयेम
प० धूनयतु धूनयतात् धूनयताम् धूनयन्तु
धूनय धूनयतात् धूनयतम् धूनयत
धूनयानि धूनयाव धूनयाम
ह्य० अधूनयत् अधूनयताम् अधूनयन्
अधूनयः अधूनयतम् अधूनयत
अधूनयम् अधूनयाव अधूनयाम
अ० अदूधुनत् अदूधुनताम् अदूधुनन्
अदूधुनः अदूधुनतम् अदूधुनत
अदूधुनम् अदूधुनाव अदूधुनाम
प० धूनयामास धूनयामासतुः धूनयामासुः
धूनयामासिथ धूनयामासथुः धूनयामास
धूनयामास धूनयामासिव धूनयामासिम
आ० धून्यात् धून्यास्ताम् धून्यासुः
धून्याः धून्यास्तम् धून्यास्त
धून्यासम् धून्यास्व धून्यास्म
श्व० धूनयिता धूनयितारौ धूनयितारः
धूनयितासि धूनयितास्थः धूनयितास्थ
धूनयितास्मि धूनयितास्वः धूनयितास्मः
भ० धूनयिष्यति धूनयिष्यतः धूनयिष्यन्ति
धूनयिष्यसि धूनयिष्यथः धूनयिष्यथ
धूनयिष्यामि धूनयिष्यावः धूनयिष्यामः
क्रि० अधूनयिष्यत् अधूनयिष्यताम् अधूनयिष्यन्
अधूनयिष्यः अधूनयिष्यतम् अधूनयिष्यत
अधूनयिष्यम् अधूनयिष्याव अधूनयिष्याम
मतान्तरे धावयतीत्यादि

॥ णिजभावे उभयपदी ॥

व० धवति धवतः धवन्ति
धवसि धवथः धवथ
धवामि धवावः धवामः
स० धवेत् धवेताम् धवेयुः
धवेः धवेतम् धवेत

धवेयम् धवेव धवेम

प० धवतु धवतात् धवताम् धवन्तु

धव धवतात् धवतम् धवत

धवानि धवाव धवाम

ह्य० अधवत् अधवताम् अधवन्

अधवः अधवतम् अधवत

अधवम् अधवाव अधवाम

अ० अधावीत् अधाविष्टाम् अधाविषुः

अधावीः अधाविष्टम् अधाविष्ट

अधाविषम् अधाविष्व अधाविष्म

प० दुधाव दुधुवतुः दुधुवुः

दुधविथ दुधुवथुः दुधुव

दुधाव दुधव दुधुविव दुधुविम

मतान्तरे दुधोथ-इत्यपि

आ० धूयात् धूयास्ताम् धूयासुः

धूयाः धूयास्तम् धूयास्त

धूयासम् धूयास्व धूयास्म

श्व० धविता धवितारौ धवितारः

धवितासि धवितास्थः धवितास्थ

धवितास्मि धवितास्वः धवितास्मः

धोता धोतारौ धोतारः

धोतासि धोतास्थः धोतास्थ

धोतास्मि धोतास्वः धोतास्मः

भ० धविष्यति धविष्यतः धविष्यन्ति

धविष्यसि धविष्यथः धविष्यथ

धविष्यामि धविष्यावः धविष्यामः

धोष्यति धोष्यतः धोष्यन्ति

धोष्यसि धोष्यथः धोष्यथ

धोष्यामि धोष्यावः धोष्यामः

क्रि० अधविष्यत् अधविष्यताम् अधविष्यन्

अधविष्यः अधविष्यतम् अधविष्यत

अधविष्यम् अधविष्याव अधविष्याम

अधोष्यत् अधोष्यताम् अधोष्यन्

अधोष्यः अधोष्यतम् अधोष्यत

अधोष्यम् अधोष्याव अधोष्याम

व० धवते धवेते धवन्ते

धवसे धवेथे धवध्वे

धवे धवावहे धवामहे

स० धवेत धवेयाताम् धवेरन्

धवेथाः धवेयाथाम् धवेध्वम्

धवेय धवेवहि धवेमहि

प० धवताम् धवेताम् धवन्ताम्

धवस्व धवेथाम् धवध्वम्

धवै धवावहै धवामहै

ह्य० अधवत अधवेताम् अधवन्त

अधवथाः अधवेथाम् अधवध्वम्

अधवे अधवावहि अधवामहि

अ० अधविष्ट अधविषाताम् अधविषत

अधविष्ठाः अधविषाथाम् अधविड्ढ्वम्

ध्वम्

अधविषि अधविष्वहि अधविष्महि

अधोष्ट अधोषाताम् अधोषत

अधोष्ठाः अधोषाथाम् अधोड्ढ्वम् ध्वम्

अधोषि अधोष्वहि अधोष्महि

प० दुधुवे दुधुवाते दुधुविरे

दुधुविषे दुधुवाथे दुधुविढ्वे ध्वे

दुधुवे दुधुविवहे दुधुविमहे

आ० धविषीष्ट धविषीयास्ताम् धविषीरन्

धविषीष्ठाः धविषीयास्थाम् धविषीढ्वम्

ध्वम्

धविषीय धविषीवहि धविषीमहि

धोषीष्ट धोषीयास्ताम् धोषीरन्

धोषीष्ठाः धोषीयास्थाम् धोषीढ्वम्

धोषीय धोषीवहि धोषीमहि

श्व० धविता धवितारौ धवितारः

धवितासे धवितासाथे धविताध्वे

धविताहे धवितास्वहे धवितास्महे

धोता धोतारौ धोतारः

धोतासे धोतासाथे धोताध्वे

| | | |
|---|---|---|
| धोताहे | धोतास्वहे | धोतास्महे |
| प० धविष्यते | धविष्येते | धविष्यन्ते |
| धविष्यसे | धविष्येथे | धविष्यध्वे |
| धविष्ये | धविष्यावहे | धविष्यामहे |
| धोष्यते | धोष्येते | धोष्यन्ते |
| धोष्यसे | धोष्येथे | धोष्यध्वे |
| धोष्ये | धोष्यावहे | धोष्यामहे |
| क्रि० अधविष्यत | अधविष्येताम् | अधविष्यन्त |
| अधविष्यथाः | अधविष्येथाम् | अधविष्यध्वम् |
| अधविष्ये | अधविष्यावहि | अधविष्यामहि |
| अधोष्यत | अधोष्येताम् | अधोष्यन्त |
| अधोष्यथाः | अधोष्येथाम् | अधोष्यध्वम् |
| अधोष्ये | अधोष्यावहि | अधोष्यामहि |

वृगण्-आवरणे ॥ ढांकवुं
वारयति । अवीवरत् । वारयाञ्चकार ।
पक्षे वरति ।
वरते । अवारीत् अवरिष्ट । अवरीष्ट ।
अवृत । शेषं वृगट्वत् ।

जॄण्-वयोहानौ ॥ वृद्धथवुं क्षीणथवुं
जारयति । अजीजरत । पक्षे जरति ।
अजरत् । अजारीत । शेषं जॄषवत् ।

चीक शीकण्-आमर्षणे ॥ सहवुं
चीकयति । अचीचिकत् । शीकयति ।
अशीशिकत् । पक्षे चीकति । अचीकीत्
शीकति । अशीकीत् ।

मार्गण्-अन्वेषणे ॥ शोधवुं
मार्गयति । अममार्गत् । मार्गति । अमार्गीत्

पृचण्-संपर्चने ॥ संबंध थवो
पर्चयति । अपीपृचत् । अपपर्चत् ।
पर्चति । अपर्चीत् ।

रिचण्-वियोजने ॥ जुदुं थवुं
रेचयति । अरीरिचत् । रेचति । व्यरेचीत् ।
मतान्तरे व्यरैक्षीत ॥

वचण्-भाषणे ॥ सन्देशन इत्येके ॥ बंचावबुं भाषण करवुं, बोलवुं संदेशो कहेवो
वाचयति । अवीवचत् । वचति ।
अवाचीत् । अवचीत् । वक्ता । अवाक्षीदित्यादि ।

मतान्तरे

अर्चिण्-पूजायाम् ।
अर्चयति । आर्चिचत् । अर्चते । आर्चिष्ट ।

वृजैण्-वर्जने ॥ वर्जवुं त्यागकरवुं,
वर्जयति । अवीवृजत् । अववर्जत् ।
वर्जति । अवर्जीत् ।

मृजौण्-शौचालंकारयोः ॥ धोवुं शणगारवुं शोधवुं

| | | |
|---|---|---|
| व० मार्जयति | मार्जयतः | मार्जयन्ति |
| मार्जयसि | मार्जयथः | मार्जयथ |
| मार्जयामि | मार्जयावः | मार्जयामः |
| स० मार्जयेत् | मार्जयेताम् | मार्जयेयुः |
| मार्जयेः | मार्जयेतम् | मार्जयेत |
| मार्जयेयम् | मार्जयेव | मार्जयेम |
| प० मार्जयतु, यतात् | मार्जयताम् | मार्जयन्तु |
| मार्जय ,, | मार्जयतम् | मार्जयत |
| मार्जयानि | मार्जयाव | मार्जयाम |
| ह्य० अमार्जयत् | अमार्जयताम् | अमार्जयन |
| अमार्जयः | अमार्जयतम् | अमार्जयत |
| अमार्जयम् | अमार्जयाव | अमार्जयाम |
| अ० अममार्जत् | अममार्जताम् | अममार्जन् |
| अममार्जः | अममार्जतम् | अममार्जत |
| अममार्जम् | अममार्जाव | अममार्जाम |
| अमीमृजत् | अमीमृजताम् | अमीमृजन् |
| अमीमृजः | अमीमृजतम् | अमीमृजत |
| अमीमृजम् | अमीमृजाव | अमीमृजाम |
| प० मार्जयामास | मार्जयामासतुः | मार्जयामासुः |
| मार्जयामासिथ | मार्जयामासथुः | मार्जयामास |
| मार्जयामास | मार्जयामासिव | मार्जयामासिम |
| आ० मार्ज्यात् | मार्ज्यास्ताम् | मार्ज्यासुः |
| मार्ज्याः | मार्ज्यास्तम् | मार्ज्यास्त |
| मार्ज्यासम् | मार्ज्यास्व | मार्ज्यास्म |

श्व० मार्जयिता मार्जयितारौ मार्जयितारः
मार्जयितासि मार्जयितास्थः मार्जयितास्थ
मार्जयितास्मि मार्जयितास्वः मार्जयितास्मः

भ० मार्जयिष्यति मार्जयिष्यतः मार्जयिष्यन्ति
मार्जयिष्यसि मार्जयिष्यथः मार्जयिष्यथ
मार्जयिष्यामि मार्जयिष्यावः मार्जयिष्यामः

अमार्जयिष्यत् अमार्जयिष्यताम् अमार्जयिष्यन्
अमार्जयिष्यः अमार्जयिष्यतम् अमार्जयिष्यत
अमार्जयिष्यम् अमार्जयिष्याव अमार्जयिष्याम

व० मार्जति मार्जतः मार्जन्ति
मार्जसि मार्जथः मार्जथ
मार्जामि मार्जावः मार्जामः

स० मार्जेत् मार्जेताम् मार्जेयुः
मार्जेः मार्जेतम् मार्जेत
मार्जेयम् मार्जेव मार्जेम

प० मार्जतु मार्जतात् मार्जताम् मार्जन्तु
मार्ज मार्जतात् मार्जतम् मार्जत
मार्जानि मार्जाव मार्जाम

ह्य० अमार्जत् अमार्जताम् अमार्जन्
अमार्जः अमार्जतम् अमार्जत
अमार्जम् अमार्जाव अमार्जाम

अ० अमार्जीत् अमार्जिष्टाम् अमार्जिषुः
अमार्जीः अमार्जिष्टम् अमार्जिष्ट
अमार्जिषम् अमार्जिष्व अमार्जिष्म

अमार्क्षीत् अमार्ष्टाम् अमार्क्षुः
अमार्क्षीः अमार्ष्टम् अमार्ष्ट
अमार्क्षम् अमार्क्ष्व अमार्क्ष्म

प० ममार्ज ममार्जतुः ममृजतुः ममार्जुः ममृजुः
ममार्जिथ ममार्जथुः ममृजथुः ममार्ज ममृज
ममार्ज ममार्जिव ममृजिव ममार्जिम ममृजिम
मतान्तरे ममार्ष्ठ ममृऽव ममृज्म इत्यादि

आ० मृज्यात् मृज्यास्ताम् मृज्यासुः
मृज्याः मृज्यास्तम् मृज्यास्त
मृज्यासम् मृज्यास्व मृज्यास्म

श्व० मार्जिता मार्जितारौ मार्जितारः
मार्जितासि मार्जितास्थः मार्जितास्थ
मार्जितास्मि मार्जितास्वः मार्जितास्मः

मार्ष्टा मार्ष्टारौ मार्ष्टारः
मार्ष्टासि मार्ष्टास्थः मार्ष्टास्थ
मार्ष्टास्मि मार्ष्टास्वः मार्ष्टास्मः

भ० मार्जिष्यति मार्जिष्यतः मार्जिष्यन्ति
मार्जिष्यसि मार्जिष्यथः मार्जिष्यथ
मार्जिष्यामि मार्जिष्यावः मार्जिष्यामः

मार्क्ष्यति मार्क्ष्यतः मार्क्ष्यन्ति
मार्क्ष्यसि मार्क्ष्यथः मार्क्ष्यथ
मार्क्ष्यामि मार्क्ष्यावः मार्क्ष्यामः

क्रि० अमार्जिष्यत् अमार्जिष्यताम् अमार्जिष्यन्
अमार्जिष्यः अमार्जिष्यतम् अमार्जिष्यत
अमार्जिष्यम् अमार्जिष्याव अमार्जिष्याम

अमार्क्ष्यत् अमार्क्ष्यताम् अमार्क्ष्यन्
अमार्क्ष्यः अमार्क्ष्यतम् अमार्क्ष्यत
अमार्क्ष्यम् अमार्क्ष्याव अमार्क्ष्याम

कुठुण्–शोके ॥ शोककरवो, उत्कंठा करवी
उत्कण्ठयति । उदचकण्ठत् । उत्कण्ठति ।
उदकण्ठीत् ।

श्रन्थ ग्रन्थण्–संदर्भे बन्धने ॥ बांधवुं
श्रन्थयति । अशश्रन्थत् । ग्रन्थयति ।
अजग्रन्थत् । श्रन्थति । ग्रन्थति ॥
क्रथ अर्दिण्–हिंसायाम् ॥ मारवुं
काथयति । अचक्रथत् । क्रथते । अक्रथिष्ट ।
अर्दयति । आर्दिदत् । अर्दते । आर्दिष्ट ।
परस्मैपद्ययमित्येके । अर्दति । आर्दीत् ।

श्रथण्–बन्धने च ॥ बांधवुं
श्राथयति । अशिश्रथत् । श्रथति ।
अश्रथीत् । अश्राथीत् ।

वदिण्–भाषणे ॥ बोलवुं वाद्यकरवो
वादयति । अवीवदत् । संवादयति । वदते ।

अवदिष्ट। यजादित्वाभावान्नास्य य्वृत्। वधात

छदण्-अपवारणे ॥ ढांकवुं

छादयति । अचिच्छदत् । छदति ।

अच्छदीत् । अच्छादीत् ।

आङः सदण् गतौ ॥ जवुं

आसादयति । आसीसदत् । आसीदति।

आसदीत्। आसादीत्। मतान्तरे-आसा-

त्सी दित्यादि

आसदतीत्येके। षद्ऌ-विशरणादौ असदत्।

छृदण्-सन्दीपने ॥ सळगाववुं

छर्दयति । अचिच्छृदत् । अचच्छर्दत् ।

पक्षे छर्दति । छर्दिष्यति अच्छर्दीत् ।

शुंधिण्- शुद्धौ ॥ शुद्ध थवुं

शुन्धयति । अशुशुन्धत् । शुन्धते ।

अशुन्धित् । मतान्तरे शुन्धिता ।

अशुन्धीत् ।

तनूण्-श्रद्धाघाते ॥ विश्वास करवो

तानयति । अतीतनत् । तनति । अतानीत

। अतनीत् । उपसर्गात् दैर्घ्यं वितानयति ।

व्यतीतनत् । वितनति । व्यतनीत् ।

व्यतानीत् ।

मानण्-पूजायाम् ॥ पूजवुं मानवुं,

मानयति । अमीमनत् । मानति ।

अमानीत् ।

तपिण्-दाहे ॥ तपावुं, बाळवुं,

तापयति । अतीतपत् । तपते । अतपिष्ट

मतान्तरे तप्ता । अतप्त इत्यादि

तृपण्-प्रीणने, सन्दीपन इत्येके ॥ सळगाववुं

दीप्तकरवुं

तर्पयति । अतीतृपत् । अततर्पत् ।

तर्पति । अतर्पीत् ।

आप्लृण्-लम्भने ॥ पामवुं

आपयति । आपिपत् । आपति । आपत्

आपिष्यति । मतान्तरे-आप्ता, आप्स्यति

इत्यादि

दृभेण्-भये ॥ बीवराववुं

दर्भयति । अदीदृभत् । अददर्भत् ।

दर्भति । अदर्भीत् ।

ईरण्-क्षेपे प्रेरणे । गतावित्येके । फेंकवुं

प्रेरवुं, जवुं

ईरयति । ऐरिरत् । ईरति । ऐरीत् ।

मृषिण्-तितिक्षायाम् ॥ सहनकरवुं

मर्षयति । अमीमृषत् । अममर्षत् ।

मर्षते । अमर्षिष्ट

शिषण्-असर्वोपयोगे ॥

अनुपयुक्तत्वे । शेषयति । अशीशिषत ।

शेषति । अशेषीत् । विपूर्वोऽतिशये ।

विशेषयति । व्यशीशिषत् । विशेषति ।

व्यशेषीत् ।

जुषण्-परितर्कणे ॥ तर्क करवो हणवुं

परितर्कणमूहो हिंसा वा । जोषति ।

अजूजुषत । जोषति । अजोषीत् ।

धृषण्-प्रसहने ॥ तिरस्कार करवो

धर्षयति । अदीधृषत । अदधर्षत् ।

धर्षति । अधर्षीत् ।

हिंसुण्-हिंसायाम् ॥ मारवुं

हिंसयति । अजिहिंसत । हिंसति ।

अहिंसीत ।

गर्हण्-विनिन्दने ॥ निंदवुं

गर्हयति । अजगर्हत । गर्हति । अगर्हीत् ।

षहण्-मर्षणे ॥ सहन करवुं

साहयति । असीषहत । सहति ।

असहीत् । बहुलमेतन्निदर्शनम् ।

बहुलमेतन्निदर्शनम् । यदेतद्भ्वत्यादिधातुपरिगणनं तद्बाहुल्येन निदर्शनत्वेन ज्ञेयम् । तेनात्रापठिता अपि क्रुधिप्रभृतयो लौकिकाः स्तम्भूप्रभृतयः सौत्राः चुलुम्पादयश्च वाक्यकरणीया धातव उदाहार्याः । वर्धन्ते हि धातुगणः । यल्लक्ष्यम ।

मिलन्त्याशासु जीमूता विक्लवन्ते दिवि ग्रहाः ।
उपक्षपयति प्रावृट् क्षीयन्ते कामिविग्रहाः ॥ इत्यादि ।
मुसलक्षेपहुंकारस्तोभैः कलमखण्डिनि ।
कुचविष्कम्भमुत्तम्भन्निस्कुम्भातीव ते स्मरः ॥
नीपानन्दोलयन्नेष प्रेङ्खोलयति मे नभः ।
पवनो वीजयन्नाशा ममाशामुच्चुलुम्पति ॥
तावत्खरः प्रखरमुल्ललयांचकार ॥

यद्वा भूवादिगणाष्टकोक्ताः स्वार्थे णिजन्ता अपि बहुलं भवन्ति । चुरादिपाठस्तु निदर्शनार्थः । यदाहुः ।

निवृत्तप्रेषणाद्धातोः प्राकृतेर्थे णिजिष्यते ॥ लक्ष्यम् ।
रामो राज्यमकारयत् ॥

अकरोदित्यर्थः । रञ्जयति वधम् रजतीत्यर्थः । भेदयति कृत्यान् भिनत्तीत्यर्थः । तापयति वाचयति वाहयति घातयति तपति वक्ति वहति हन्तीत्यर्थः । यद्वा प्रयोज्यव्यापारेऽपि प्रयोक्तृव्यापारानुप्रवेशो णिगं विनापि बुद्ध्यारोपाद्बहुलं भवति ।

जजान गर्भं मघवा इन्द्रः ॥

अजीजनदित्यर्थः ।

पक्षं द्वादशधा जज्ञे ॥

जनितमित्यर्थः । षड्भिर्हलैः कृषति कर्षयतीत्यर्थः ।

वान्ति पर्णशुषो वाता वान्ति पर्णमुचोऽपरे ।
वान्ति पर्णरुहोऽप्यन्ये ततो देवः प्रवर्षति ॥ इति ।

अथवा नाम्नो णिज् बहुलमित्येव सिद्धेस्तत्र सूत्रच्छिद्रान्धदण्डादय उदाहरणार्थाः । तेनादन्तेष्वनुक्ता अपि बहुलं द्रष्टव्याः । तेन स्कन्ध समाहारे ऊष छुरदे स्फुट प्रकटभावे वसं निवासे इत्यादयोऽपि भवन्ति । तथा ओजयत्योजः ।

तडित्खचयतीवाशाः ॥
पांसुर्दिशां मुखमतुत्थयदुत्थितोद्रेः ॥ इति ।

## ॥ इति युजादयः परस्मैपदिनः ॥



इतिश्रीतपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण
तीर्थसंरक्षणप्रवण-विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराध-
कसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्यश्रीमद्विजयनेमि-
सूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशास्त्र-
विशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्य-
मुनिगुणविजयविरचितायां हैमधातुमालायां
॥ चुरादिगणः ॥

## ॥ अथ प्रशस्तिः ॥

नमामि स्तम्भनोत्तंसं पार्श्वनाथं जिनेश्वरम् ।
सर्वथान्तस्तमोऽवित्री यस्य पादनखावली ॥ १ ॥
श्रीतपागच्छपाथोधि--विधवे भव्यभूतये ।
प्रौढप्रभावपूर्णाय नमःश्रीनेमिसूरये ॥ २ ॥
दर्शनोदयनामानौ यत्पट्टोदयभूधरे ।
पुष्पदन्ताविवाचार्यौ राजेते शास्त्रपारगौ ॥ ३ ॥
दर्शनसूरिशिष्यः स-त्प्रयत्नेन सुवोधिनीम् ।
धातुमालामिमां हैमीं गुणविजय आतनोत् ॥ ४ ॥
स्वर्गंगतस्य तस्येयं शुद्धचारित्रशालिनः ।
कृतिरानन्दमामेरु तन्यतां वोधकांक्षिणाम् ॥ ५ ॥
पन्न्यासनन्दनेनेयं संस्कृता परिवर्द्धिता ।
उदयसूरिशिष्येण नेमिसूरीशशासनात् ॥ ६ ॥
नेमिसूरीशशिष्येण गीर्वाणविजयेन च ।
निजेतरोपकाराय यत्नतः परिशोधिता ॥ ७ ॥

इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंर-
क्षणप्रवणविद्यापीठादिमस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टा-
रकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्या-
यवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्य-
मुनिगुणविजयविरचितायां हैमधातुमालायां

## ॥ प्रथमो विभागः ॥

अर्हम्

सकलस्वपरसमयपारावारपारीण--तीर्थसंरक्षणप्रवण- विद्यापीठादिम्-
स्थानपञ्चकसमाराधक-शासनसम्राट् सूरिचक्रचक्रवर्त्ति जगद्गुरु-
तपोगच्छाधिपतिभट्टारकाचार्यवर्य परमगुरु-श्रीमद्विजय-
नेमिसूरिभगवद्भ्यो नमः ॥

स्वपरसमयपारावारपारीण-तीर्थोद्धारैकनिबद्धकक्ष अखण्डविजय-
तपोगच्छाधिराज भट्टारक श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वर-
पट्टालङ्कारान्तेवासि न्यायवाचस्पति-शास्त्रविशारदाचार्य
श्रीविजयदर्शनसूरि-शिष्यरत्न
मुनिश्री---गुणविजयप्रणीता

# ॥ हैमधातुमाला ॥

सा चेयं

तपोगच्छाधिराज विद्यापीठादिमस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीय
तपोगच्छाचार्यश्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासि
सिद्धान्तवाचस्पति-न्यायविशारदाचार्यश्रीविजयोदय--
सूरि-पट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पति-सिद्धान्तमा-
र्त्तण्ड-शास्त्रविशारद-कविरत्न-विजयनन्दन-
सूरिणा बहुषु स्थलेषु परिवर्धिता
तस्याश्चायं

## ॥ द्वितीयो विभागः ॥

स च जैन ग्रन्थप्रकाशकसभाद्वारा प्रकाशितः



॥ अर्हम् ॥

॥ श्रीस्तम्भनपतिपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्रीश्रुतदेवतायै नमः ॥

॥ सकलस्वपरसमयपारावारपारीण--तीर्थसंरक्षणप्रवण--विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक--तपोगच्छाधिपतिभट्टारकाचार्यवर्य परमगुरु--श्रीमद्विजयनेमिसूरिभगवद्भ्यो नमः ॥

॥ स्वपरसमयपारावारपारीण--तीर्थोद्धारैकनिबद्धकक्ष अखण्डविजय--तपोगच्छाधिराजभट्टारकश्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासि न्यायवाचस्पति--शास्त्रविशारदाचार्य--श्रीविजयदर्शनसूरिभ्यो नमः ॥

॥ स्वपरसमयपारावारीण--तीर्थोद्धारैकनिबद्धकक्ष अखण्डविजय--तपोगच्छाधिराजभट्टारकाचार्यश्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासि सिद्धान्तवाचस्पति--न्यायविशारदाचार्य--श्रीविजयोदयसूरिभ्यो ज्ञानदातृभ्यो नमः ॥

॥ मुनिश्री गुणविजयप्रणीतायां ॥

# ॥ हैमधातुमालायां ॥

## ॥ द्वितीयो विभागः ॥

अथ प्रक्रिया प्रारभ्यते । तत्र पूर्वं प्रत्येकं यथाक्रमं णिगन्तादिप्रक्रियासु कतिपयधातूनां विस्तरतो रूपाण्युपदर्शिष्यन्ते । ततश्च बहूनां धातूनामुपयोगिनां भ्वादिक्रमेण संक्षेपत एव रूपाण्युपदर्शिष्यन्ते ॥ तत्र—

# ॥ णिगन्तप्रक्रिया ॥

भूङ्-प्राप्तौ ॥

प्राप्त्यर्थाभावेऽपि क्वचिदात्मनेपदम् । प्राप्त्यर्थेऽपि परस्मैपदमित्यन्ये ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | भावयते | भावयेते | भावयन्ते |
| | भावयसे | भावयेथे | भावयध्वे |
| | भावये | भावयावहे | भावयामहे |
| स० | भावयेत | भावयेयाताम् | भावयेरन् |
| | भावयेथाः | भावयेयाथाम् | भावयेध्वम् |
| | भावयेय | भावयेवहि | भावयेमहि |
| प० | भावयताम् | भावयेताम् | भावयन्ताम् |
| | भावयस्व | भावयेथाम् | भावयध्वम् |
| | भावयै | भावयावहै | भावयामहै |
| ह्य० | अभावयत | अभावयेताम् | अभावयन्त |
| | अभावयथाः | अभावयेथाम् | अभावयध्वम् |
| | अभावये | अभावयावहि | अभावयामहि |
| अ० | अबीभवत | अबीभवेताम् | अबीभवन्त |
| | अबीभवथाः | अबीभवेथाम् | अबीभवध्वम् |
| | अबीभवे | अबीभवावहि | अबीभवामहि |
| प० | भावयाञ्चक्रे | भावयाञ्चक्राते | भावयाञ्चक्रिरे |
| | भावयाञ्चकृषे | भावयाञ्चक्राथे | भावयाञ्चकृढ्वे |
| | भावयाञ्चक्रे | भावयाञ्चकृवहे | भावयाञ्चकृमहे |

भावयामास भावयाम्बभूव भावयाम्बभूवतुः

आ० भावयिषीष्ट भावयिषीयास्ताम् भावयिषीरन्
भावयिषीष्ठाः भावयिषीयास्थाम् भावयिषीध्वम् ढ्वम्
भावयिषीय भावयिषीवहि भावयिषीमहि

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्व० | भावयिता | भावयितारौ | भावयितारः |
| | भावयितासे | भावयितासाथे | भावयिताध्वे |
| | भावयिताहे | भावयितास्वहे | भावयितास्महे |
| भ० | भावयिष्यते | भावयिष्येते | भावयिष्यन्ते |
| | भावयिष्यसे | भावयिष्येथे | भावयिष्यध्वे |
| | भावयिष्ये | भावयिष्यावहे | भावयिष्यामहे |

अभावयिष्यत अभावयिष्येताम् अभावयिष्यन्त
अभावयिष्यथाः अभावयिष्येथाम्-यिष्यध्वम्
अभावयिष्ये अभावयिष्यावहि अभावयिष्यामहि

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | भवते | भवेते | भवन्ते |
| | भवसे | भवेथे | भवध्वे |
| | भवे | भवावहे | भवामहे |
| स० | भवेत | भवेयाताम् | भवेरन् |
| | भवेथाः | भवेयाथाम् | भवेध्वम् |
| | भवेय | भवेवहि | भवेमहि |
| प० | भवताम् | भवेताम् | भवन्ताम् |
| | भवस्व | भवेथाम् | भवध्वम् |
| | भवै | भवावहै | भवामहै |
| ह्य० | अभवत | अभवेताम् | अभवन्त |
| | अभवथाः | अभवेथाम् | अभवध्वम् |
| | अभवे | अभवावहि | अभवामहि |
| अ० | अभविष्ट | अभविषाताम् | अभविषत |
| | अभविष्ठाः | अभविषाथाम् | अभविड्ढ्वम् ढ्वम् ध्वम् |
| | अभविषि | अभविष्वहि | अभविष्महि |
| प० | बभूवे | बभूवाते | बभूविरे |
| | बभूविषे | बभूवाथे | बभूविढ्वे ध्वे |
| | बभूवे | बभूविवहे | बभूविमहे |

आ० भविषीष्ट भविषीयास्ताम् भविषीरन्
भविषीष्ठाः भविषीयास्थाम् भविषीढ्वम् ध्वम्
भविषीय भविषीवहि भविषीमहि

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्व० | भविता | भवितारौ | भवितारः |
| | भवितासे | भवितासाथे | भविताध्वे |
| | भविताहे | भवितास्वहे | भवितास्महे |

भ० भविष्यते भविष्येते भविष्यन्ते
भविष्यसे भविष्येथे भविष्यध्वे
भविष्ये भविष्यावहे भविष्यामहे
क्रि० अभविष्यत अभविष्येताम् अभविष्यन्त
अभविष्यथाः अभविष्येथाम् अभविष्यध्वम्
अभविष्ये अभविष्यावहि अभविष्यामहि

भू- सत्तायाम् ॥

व० भावयति भावयतः भावयन्ति
भावयसि भावयथः भावयथ
भावयामि भावयावः भावयामः
स० भावयेत् भावयेताम् भावयेयुः
भावयेः भावयेतम् भावयेत
भावयेयम् भावयेव भावयेम
प० भावयतु भावयतात् भावयताम् भावयन्तु
भावय „ भावयतम् भावयत
भावयानि भावयाव भावयाम
ह्य० अभावयत् अभावयताम् अभावयन्
अभावयः अभावयतम् अभावयत
अभावयम् अभावयाव अभावयाम
अ० अबीभवत् अबीभवताम् अबीभवन्
अबीभवः अबीभवतम् अबीभवत
अबीभवम् अबीभवाव अबीभवाम
प० भावयाञ्चकार भावयाञ्चक्रतुः भावयाञ्चक्रुः
भावयाञ्चकर्थ भावयाञ्चक्रथुः भावयाञ्चक्र
भावयाञ्चकार भावयाञ्चकर भावयाञ्चकृव
भावयाञ्चकृम भावयाम्बभूव भावयामास
आ० भाव्यात् भाव्यास्ताम् भाव्यासुः
भाव्याः भाव्यास्तम् भाव्यास्त
भाव्यासम् भाव्यास्व भाव्यास्म
श्व० भावयिता भावयितारौ भावयितारः
भावयितासि भावयितास्थः भावयितास्थ
भावयितास्मि भावयितास्वः भावयितास्मः
भ० भावयिष्यति भावयिष्यतः भावयिष्यन्ति
भावयिष्यसि भावयिष्यथः भावयिष्यथ
भावयिष्यामि भावयिष्यावः भावयिष्यामः
क्रि० अभावयिष्यत् अभावयिष्यताम् अभावयिष्यन्
अभावयिष्यः अभावयिष्यतम् अभावयिष्यत
अभावयिष्यम् अभावयिष्याव अभावयिष्याम

व० भावयते भावयेते भावयन्ते
भावयसे भावयेथे भावयध्वे
भावये भावयावहे भावयामहे
स० भावयेत भावयेयाताम् भावयेरन्
भावयेथाः भावयेयाथाम् भावयेध्वम्
भावयेय भावयेवहि भावयेमहि
प० भावयताम् भावयेताम् भावयन्ताम्
भावयस्व भावयेथाम् भावयध्वम्
भावयै भावयावहै भावयामहै
ह्य० अभावयत अभावयेताम् अभावयन्त
अभावयथाः अभावयेथाम् अभावयध्वम्
अभावये अभावयावहि अभावयामहि
अ० अबीभवत अबीभवेताम् अबीभवन्त
अबीभवथाः अबीभवेथाम् अबीभवध्वम्
अबीभवे अबीभवावहि अबीभवामहि
प० भावयाञ्चक्रे भावयाञ्चक्राते भावयाञ्चक्रिरे
भावयाञ्चकृषे भावयाञ्चक्राथे भावयाञ्चकृढ्वे
भावयाञ्चक्रे भावयाञ्चकृवहे भावयाञ्चकृमहे
भावयाम्बभूव । भावयामास ।
आ० भावयिषीष्ट भावयिषीयास्ताम् भावयिषीरन्
भावयिषीष्ठाः भावयिषीयास्थाम् भावयिषीढ्वम्
ध्वम्
भावयिषीय भावयिषीवहि भावयिषीमहि
श्व० भावयिता भावयितारौ भावयितारः
भावयितासे भावयितासाथे भावयिताध्वे
भावयिताहे भावयितास्वहे भावयितास्महे
भ० भावयिष्यते भावयिष्येते भावयिष्यन्ते
भावयिष्यसे भावयिष्येथे भावयिष्यध्वे
भावयिष्ये भावयिष्यावहे भावयिष्यामहे

अभावयिष्यत अभावयिष्येताम् अभावयिष्यन्त
अभावयिष्यथाः अभावयिष्येथाम् अभावयिष्यध्वम्
अभावयिष्ये अभावयिष्यावहि अभावयिष्यामहि

## जुं–गतौ, सौत्रो धातुः ॥

व० जावयति जावयतः जावयन्ति
जावयसि जावयथः जावयथ
जावयामि जावयावः जावयामः
स० जावयेत् जावयेताम् जावयेयुः
जावयेः जावयेतम् जावयेत
जावयेयम् जावयेव जावयेम
प० जावयतु, यतात् जावयताम् जावयन्तु
जावय ,, जावयतम् जावयत
जावयानि जावयाव जावयाम
ह्य० अजावयत् अजावयताम् अजावयन्
अजावयः अजावयतम् अजावयत
अजावयम् अजावयाव अजावयाम
अ० अजीजवत् अजीजवताम् अजीजवन्
अजीजवः अजीजवतम् अजीजवत
अजीजवम् अजीजवाव अजीजवाम
प० जावयाञ्चकार जावयाञ्चक्रतुः जावयाञ्चक्रुः
जावयाञ्चकर्थ जावयाञ्चक्रथुः जावयाञ्चक्र
जावयाञ्चकार,चकर जावयाञ्चकृव जावयाञ्चकृम
आ० जाव्यात् जाव्यास्ताम् जाव्यासुः
जाव्याः जाव्यास्तम् जाव्यास्त
जाव्यासम् जाव्यास्व जाव्यास्म
श्व० जावयिता जावयितारौ जावयितारः
जावयितासि जावयितास्थः जावयितास्थ
जावयितास्मि जावयितास्वः जावयितास्मः
भ० जावयिष्यति जावयिष्यतः जावयिष्यन्ति
जावयिष्यसि जावयिष्यथः जावयिष्यथ
जावयिष्यामि जावयिष्यावः जावयिष्यामः
क्रि० अजावयिष्यत् अजावयिष्यताम् अजावयिष्यन्
अजावयिष्यः अजावयिष्यतम् अजावयिष्यत
अजावयिष्यम् अजावयिष्याव अजावयिष्याम

व० जावयते जावयेते जावयन्ते
जावयसे जावयेथे जावयध्वे
जावये जावयावहे जावयामहे
स० जावयेत जावयेयाताम् जावयेरन्
जावयेथाः जावयेयाथाम् जावयेध्वम्
जावयेय जावयेवहि जावयेमहि
प० जावयताम् जावयेताम् जावयन्ताम्
जावयस्व जावयेथाम् जावयध्वम्
जावयै जावयावहै जावयामहै
ह्य० अजावयत अजावयेताम् अजावयन्त
अजावयथाः अजावयेथाम् अजावयध्वम्
अजावये अजावयावहि अजावयामहि
अ० अजीजवत अजीजवेताम् अजीजवन्त
अजीजवथाः अजीजवेथाम् अजीजवध्वम्
अजीजवे अजीजवावहि अजीजवामहि
प० जावयाञ्चक्रे जावयाञ्चक्राते जावयाञ्चक्रिरे
जावयाञ्चकृषे जावयाञ्चक्राथे जावयाञ्चकृढ्वे
जावयाञ्चक्रे जावयाञ्चकृवहे जावयाञ्चकृमहे
आ० जावयिषीष्ट जावयिषीयास्ताम् जावयिषीरन्
जावयिषीष्ठाः जावयिषीयास्थाम् जावयिषीध्वम्
ढ्वम्
जावयिषीय जावयिषीवहि जावयिषीमहि
श्व० जावयिता जावयितारौ जावयितारः
जावयितासे जावयितासाथे जावयिताध्वे
जावयिताहे जावयितास्वहे जावयितास्महे
भ० जावयिष्यते जावयिष्येते जावयिष्यन्ते
जावयिष्यसे जावयिष्येथे जावयिष्यध्वे
जावयिष्ये जावयिष्यावहे जावयिष्यामहे
क्रि० अजावयिष्यत अजावयिष्येताम् अजावयिष्यन्त
अजावयिष्यथाः अजावयिष्येथाम् अजावयिष्यध्वम्
अजावयिष्ये अजावयिष्यावहि अजावयिष्यामहि

## युक्–मिश्रणे ॥

व० यावयति यावयतः यावयन्ति
यावयसि यावयथः यावयथ

यावयामि यावयावः यावयामः
स० यावयेत् यावयेताम् यावयेयुः
यावयेः यावयेतम् यावयेत
यावयेयम् यावयेव यावयेम
प० यावयतु यावयतात् यावयताम् यावयन्तु
यावय यावयतात् यावयतम् यावयत
यावयानि यावयाव यावयाम
ह्य० अयावयत् अयावयताम् अयावयन्
अयावयः अयावयतम् अयावयत
अयावयम् अयावयाव अयावयाम
अ० अयीयवत् अयीयवताम् अयीयवन्
अयीयवः अयीयवतम् अयीयवत
अयीयवम् अयीयवाव अयीयवाम
प० यावयाञ्चकार यावयाञ्चक्रतुः यावयाञ्चक्रुः
यावयाञ्चकर्थ यावयाञ्चक्रथुः यावयाञ्चक्र
यावयाञ्चकार यावयाञ्चकर यावयाञ्चकृव
यावयाञ्चकृम यावयाम्बभूव यावयामास
आ० याव्यात् याव्यास्ताम् याव्यासुः
याव्याः याव्यास्तम् याव्यास्त
याव्यासम् याव्यास्व याव्यास्म
श्व० यावयिता यावयितारौ यावयितारः
यावयितासि यावयितास्थः यावयितास्थ
यावयितास्मि यावयितास्वः यावयितास्मः
भ० यावयिष्यति यावयिष्यतः यावयिष्यन्ति
यावयिष्यसि यावयिष्यथः यावयिष्यथ
यावयिष्यामि यावयिष्यावः यावयिष्यामः
क्रि० अयावयिष्यत् अयावयिष्यताम् अयावयिष्यन्
अयावयिष्यः अयावयिष्यतम् अयावयिष्यत
अयावयिष्यम् अयावयिष्याव अयावयिष्याम

व० यावयते यावयेते यावयन्ते
यावयसे यावयेथे यावयध्वे
यावये यावयावहे यावयामहे
स० यावयेत यावयेयाताम् यावयेरन्
यावयेथाः यावयेयाथाम् यावयेध्वम्
यावयेय यावयेवहि यावयेमहि
प० यावयताम् यावयेताम् यावयन्ताम्
यावयस्व यावयेथाम् यावयध्वम्
यावयै यावयावहै यावयामहै
ह्य० अयावयत अयावयेताम् अयावयन्त
अयावयथाः अयावयेथाम् अयावयध्वम्
अयावये अयावयावहि अयावयामहि
अ० अयीयवत अयीयवेताम् अयीयवन्त
अयीयवथाः अयीयवेथाम् अयीयवध्वम्
अयीयवे अयीयवावहि अयीयवामहि
प० यावयाञ्चक्रे यावयाञ्चक्राते यावयाञ्चक्रिरे
यावयाञ्चकृषे यावयाञ्चक्राथे यावयाञ्चकृढ्वे
यावयाञ्चक्रे यावयाञ्चकृवहे यावयाञ्चकृमहे
यावयाम्बभूव । यावयामास
आ० यावयिषीष्ट यावयिषीयास्ताम् यावयिषीरन्
यावयिषीष्ठाः यावयिषीयास्थाम् यावयिषीढ्वम् ध्वम्
यावयिषीय यावयिषीवहि यावयिषीमहि
श्व० यावयिता यावयितारौ यावयितारः
यावयितासे यावयितासाथे यावयिताध्वे
यावयिताहे यावयितास्वहे यावयितास्महे
भ० यावयिष्यते यावयिष्येते यावयिष्यन्ते
यावयिष्यसे यावयिष्येथे यावयिष्यध्वे
यावयिष्ये यावयिष्यावहे यावयिष्यामहे
क्रि० अयावयिष्यत अयावयिष्येताम् अयावयिष्यन्त
अयावयिष्यथाः अयावयिष्येथाम्–यिष्यध्वम्
अयावयिष्ये अयावयिष्यावहि अयावयिष्यामहि

॥ रु शब्दे ॥

रावयति । रावयते । अरीरवत् । अरीरवत

लूञ्–छेदने ॥

व० लावयति लावयतः लावयन्ति
लावयसि लावयथः लावयथ
लावयामि लावयावः लावयामः

स० लावयेत् लावयेताम् लावयेयुः
लावयेः लावयेतम् लावयेत
लावयेयम् लावयेव लावयेम

प० लावयतु लावयतात् लावयताम् लावयन्तु
लावय लावयतात् लावयतम् लावयत
लावयानि लावयाव लावयाम

ह्य० अलावयत् अलावयताम् अलावयन्
अलावयः अलावयतम् अलावयत
अलावयम् अलावयाव अलावयाम

अ० अलीलवत् अलीलवताम् अलीलवन्
अलीलवः अलीलवतम् अलीलवत
अलीलवम् अलीलवाव अलीलवाम

प० लावयाञ्चकार लावयाञ्चक्रतुः लावयाञ्चक्रुः
लावयाञ्चकर्थ लावयाञ्चक्रथुः लावयाञ्चक्र
लावयाञ्चकार लावयाञ्चकर लावयाञ्चकृव
लावयाञ्चकृम लावयाम्बभूव लावयामास

आ० लाव्यात् लाव्यास्ताम् लाव्यासुः
लाव्याः लाव्यास्तम् लाव्यास्त
लाव्यासम् लाव्यास्व लाव्यास्म

श्व० लावयिता लावयितारौ लावयितारः
लावयितासि लावयितास्थः लावयितास्थ
लावयितास्मि लावयितास्वः लावयितास्मः

भ० लावयिष्यति लावयिष्यतः लावयिष्यन्ति
लावयिष्यसि लावयिष्यथः लावयिष्यथ
लावयिष्यामि लावयिष्यावः लावयिष्यामः

क्रि० अलावयिष्यत् अलावयिष्यताम् अलावयिष्यन्
अलावयिष्यः अलावयिष्यतम् अलावयिष्यत
अलावयिष्यम् अलावयिष्याव अलावयिष्याम

व० लावयते लावयेते लावयन्ते
लावयसे लावयेथे लावयध्वे
लावये लावयावहे लावयामहे

स० लावयेत लावयेयाताम् लावयेरन्
लावयेथाः लावयेयाताम् लावयेध्वम्
लावयेय लावयेवहि लावयेमहि

प० लावयताम् लावयेताम् लावयन्ताम्
लावयस्व लावयेथाम् लावयध्वम्
लावयै लावयावहै लावयामहै

ह्य० अलावयत अलावयेताम् अलावयन्त
अलावयथाः अलावयेथाम् अलावयध्वम्
अलावये अलावयावहि अलावयामहि

अ० अलीलवत अलीलवेताम् अलीलवन्त
अलीलवथाः अलीलवेथाम् अलीलवध्वम्
अलीलवे अलीलवावहि अलीलवामहि

प० लावयाञ्चक्रे लावयाञ्चक्राते लावयाञ्चक्रिरे
लावयाञ्चकृषे लावयाञ्चक्राथे लावयाञ्चकृढ्वे
लावयाञ्चक्रे लावयाञ्चकृवहे लावयाञ्चकृमहे
लावयाम्बभूव लावयामास

आ० लावयिषीष्ट लावयिषीयास्ताम् लावयिषीरन्
लावयिषीष्ठाः लावयिषीयास्थाम् लावयिषीढ्वम्, ध्वम्
लावयिषीय लावयिषीवहि लावयिषीमहि

श्व० लावयिता लावयितारौ लावयितारः
लावयितासे लावयितासाथे लावयिताध्वे
लावयिताहे लावयितास्वहे लावयितास्महे

भ० लावयिष्यते लावयिष्येते लावयिष्यन्ते
लावयिष्यसे लावयिष्येथे लावयिष्यध्वे
लावयिष्ये लावयिष्यावहे लावयिष्यामहे

अलावयिष्यत अलावयिष्येताम् अलावयिष्यन्त
अलावयिष्यथाः अलावयिष्येथाम्-यिष्यध्वम्
अलावयिष्ये अलावयिष्यावहि-यिष्यामहि

॥ पूगश्–पवने ॥

पावयति । पावयते अपीपवत् । अपीपवत

॥ मूङ्–बन्धने ॥

मावयति । मावयते । अमीमवत् । अमीमवत ।

॥ श्रुं–श्रवणे ॥

व० श्रावयति श्रावयतः श्रावयन्ति
श्रावयसि श्रावयथः श्रावयथ
श्रावयामि श्रावयावः श्रावयामः

स० श्रावयेत् श्रावयेताम् श्रावयेयुः
श्रावयेः श्रावयेतम् श्रावयेत
श्रावयेयम् श्रावयेव श्रावयेम
प० श्रावयतु श्रावयतात् श्रावयताम् श्रावयन्तु
श्रावय ,, श्रावयतम् श्रावयत
श्रावयाणि श्रावयाव श्रावयाम
ह्य० अश्रावयत् अश्रावयताम् अश्रावयन्
अश्रावयः अश्रावयतम् अश्रावयत
अश्रावयम् अश्रावयाव अश्रावयाम
अ० अशिश्रवत् अशिश्रवताम् अशिश्रवन्
अशिश्रवः अशिश्रवतम् अशिश्रवत
अशिश्रवम् अशिश्रवाव अशिश्रवाम
अशुश्रवत् अशुश्रवताम् अशुश्रवन्
अशुश्रवः अशुश्रवतम् अशुश्रवत
अशुश्रवम् अशुश्रवाव अशुश्रवाम
प० श्रावयामास श्रावयामासतुः श्रावयामासुः
श्रावयामासिथ श्रावयामासथुः श्रावयामास
श्रावयामास श्रावयामासिव श्रावयामासिम
आ० श्राव्यात् श्राव्यास्ताम् श्राव्यासुः
श्राव्याः श्राव्यास्तम् श्राव्यास्त
श्राव्यासम् श्राव्यास्व श्राव्यास्म
श्व० श्रावयिता श्रावयितारौ श्रावयितारः
श्रावयितासि श्रावयितास्थः श्रावयितास्थ
श्रावयितास्मि श्रावयितास्वः श्रावयितास्मः
भ० श्रावयिष्यति श्रावयिष्यतः श्रावयिष्यन्ति
श्रावयिष्यसि श्रावयिष्यथः श्रावयिष्यथ
श्रावयिष्यामि श्रावयिष्यावः श्रावयिष्यामः
क्रि० अश्रावयिष्यत् अश्रावयिष्यताम् अश्रावयिष्यन्
अश्रावयिष्यः अश्रावयिष्यतम् अश्रावयिष्यत
अश्रावयिष्यम् अश्रावयिष्याव अश्रावयिष्याम

व० श्रावयते श्रावयेते श्रावयन्ते
श्रावयसे श्रावयेथे श्रावयध्वे
श्रावये श्रावयावहे श्रावयामहे
स० श्रावयेत श्रावयेयाताम् श्रावयेरन्
श्रावयेथाः श्रावयेयाथाम् श्रावयेध्वम्
श्रावयेय श्रावयेवहि श्रावयेमहि
प० श्रावयताम् श्रावयेताम् श्रावयन्ताम्
श्रावयस्व श्रावयेथाम् श्रावयध्वम्
श्रावयै श्रावयावहै श्रावयामहै
ह्य० अश्रावयत अश्रावयेताम् अश्रावयन्त
अश्रावयथाः अश्रावयेथाम् अश्रावयध्वम्
अश्रावये अश्रावयावहि अश्रावयामहि
अ० अशिश्रवत अशिश्रवेताम् अशिश्रवन्त
अशिश्रवथाः अशिश्रवेथाम् अशिश्रवध्वम्
अशिश्रवे अशिश्रवावहि अशिश्रवामहि
अशुश्रवत अशुश्रवेताम् अशुश्रवन्त
अशुश्रवथाः अशुश्रवेथाम् अशुश्रवध्वम्
अशुश्रवे अशुश्रवावहि अशुश्रवामहि
प० श्रावयामास श्रावयामासतुः श्रावयामासुः
श्रावयामासिथ श्रावयामासथुः श्रावयामास
श्रावयामास श्रावयामासिव श्रावयामासिम
श्रावयाञ्चक्रे श्रावयाम्बभूव श्रावयाम्बभूवतुः
आ० श्रावयिषीष्ट श्रावयिषीयास्ताम् श्रावयिषीरन्
श्रावयिषीष्ठाः श्रावयिषीयास्थाम् श्रावयिषीढ्वम्
ध्वम्
श्रावयिषीय श्रावयिषीवहि श्रावयिषीमहि
श्व० श्रावयिता श्रावयितारौ श्रावयितारः
श्रावयितासे श्रावयितासाथे श्रावयिताध्वे
श्रावयिताहे श्रावयितास्वहे श्रावयितास्महे
भ० श्रावयिष्यते श्रावयिष्येते श्रावयिष्यन्ते
श्रावयिष्यसे श्रावयिष्येथे श्रावयिष्यध्वे
श्रावयिष्ये श्रावयिष्यावहे श्रावयिष्यामहे
क्रि० अश्रावयिष्यत अश्रावयिष्येताम् अश्रावयिष्यन्त
अश्रावयिष्यथाः अश्रावयिष्येथाम् अश्रावयिष्यध्वम्
अश्रावयिष्ये अश्रावयिष्यावहि अश्रावयिष्यामहि

स्रुं-गतौ ॥ स्रावयति । असिस्रवत् । असुस्रवत् ॥ द्रुं-गतौ । द्रावयति । अदिद्रवत् । अदुद्रवत् । प्रुं-प्लुं-च्युङ् गतौ प्रावयति । अपिप्रवत् । अपुप्रवत् ।

प्लावयति । प्लावयते । अपिप्लवत्
अपिप्लवत । अपुप्लवत् । अपुप्लवत
च्यावयति । च्यावयते । अचिच्यवत्
अचिच्यवत । अचुच्यवत् । अचुच्यवत ।

॥ शासूक्-अनुशिष्टौ ॥

व० शासयति शासयतः शासयन्ति
शासयसि शासयथः शासयथ
शासयामि शासयावः शासयामः
स० शासयेत् शासयेताम् शासयेयुः
शासयेः शासयेतम् शासयेत
शासयेयम् शासयेव शासयेम
प० शासयतु शासयतात्-ताम् शासयन्तु
शासय ,, शासयतम् शासयत
शासयानि शासयाव शासयाम
ह्य० अशासयत् अशासयताम् अशासयन्
अशासयः अशासयतम् अशासयत
अशासयम् अशासयाव अशासयाम
अ० अशशासत् अशशासताम् अशशासन्
अशशासः अशशासतम् अशशासत
अशशासम् अशशासाव अशशासाम
प० शासयामास शासयामासतुःशासयामासुः
शासयामासिथशासयामासथुः शासयामास
शासयामासशासयामासिव शासयामासिम
आ०शास्यात् शास्यास्ताम् शास्यासुः
शास्याः शास्यास्तम् शास्यास्त
शास्यासम् शास्यास्व शास्यास्म
श्व०शासयिता शासयितारौ शासयितारः
शासयितासि शासयितास्थः शासयितास्थ
शासयितास्मि शासयितास्वः शासयितास्मः
भ० शासयिष्यति शासयिष्यतः शासयिष्यन्ति
शासयिष्यसि शासयिष्यथः शासयिष्यथ
शासयिष्यामि शासयिष्यावः शासयिष्यामः
अशासयिष्यत् अशासयिष्यताम् अशासयिष्यन्
अशासयिष्यः अशासयिष्यतम् अशासयिष्यत
अशासयिष्यम् अशासयिष्याव अशासयिष्याम

व० शासयते शासयेते शासयन्ते
शासयसे शासयेथे शासयध्वे
शासये शासयावहे शासयामहे
स० शासयेत शासयेयाताम् शासयेरन्
शासयेथाः शासयेयाथाम् शासयेध्वम्
शासयेय शासयेवहि शासयेमहि
प० शासयताम् शासयेताम् शासयन्ताम्
शासयस्व शासयेथाम् शासयध्वम्
शासयै शासयावहै शासयामहै
ह्य० अशासयत अशासयेताम् अशासयन्त
अशासयथाः अशासयेथाम् अशासयध्वम्
अशासये अशासयावहि अशासयामहि
अ० अशशासत अशशासेताम् अशशासन्त
अशशासथाः अशशासेथाम् अशशासध्वम्
अशशासे अशशासावहि अशशासामहि
प० शासयामास शासयामासतुः शासयामासुः
शासयामासिथ शासयामासथुः शासयामास
शासयामास शासयामासिव शासयामासिम
शासयिषीष्ट शासयिषीयास्ताम् शासयिषीरन्
शासयिषीष्ठाः शासयिषीयास्थाम् शासयिषीढ्वम्
ध्वम्
शासयिषीय शासयिषीवहि शासयिषीमहि
श्व०शासयिता शासयितारौ शासयितारः
शासयितासे शासयितासाथे शासयिताध्वे
शासयिताहे शासयितास्वहे शासयितास्महे
भ० शासयिष्यते शासयिष्येते शासयिष्यन्ते
शासयिष्यसे शासयिष्येथे शासयिष्यध्वे
शासयिष्ये शासयिष्यावहे शासयिष्यामहे
अशासयिष्यत अशासयिष्येताम् अशासयिष्यन्त
अशासयिष्यथाः अशासयिष्येथाम् अशासयिष्यध्वम्
अशासयिष्ये अशासयिष्यावहि अशासयिष्यामहि

॥ ढौकृङ् गतौ-ढौकयति । ढौकयते ।
अडुढौकत् । अडुढौकत
चकासृक्-दीप्तौ,
व० चकासयति चकासयतः चकासयन्ति

चकासयसि चकासयथः चकासयथ
चकासयामि चकासयावः चकासयामः
ल० चकासयेत् चकासयेताम् चकासयेयुः
चकासयेः चकासयेतम् चकासयेत
चकासयेयम् चकासयेव चकासयेम
प० चकासयतु चकासयतात्-ताम् चकासयन्तु
चकासय „ चकासयतम् चकासयत
चकासयानि चकासयाव चकासयाम
ह्य० अचकासयत् अचकासयताम् अचकासयन्
अचकासयः अचकासयतम् अचकासयत
अचकासयम् अचकासयाव अचकासयाम
अ० अचचकासत् अचचकासताम् अचचकासन्
अचचकासः अचचकासतम् अचचकासत
अचचकासम् अचचकासाव अचचकासाम

अपरे तु—

अ० अचीचकासत्अचीचकासताम्अचीचकासन्
अचीचकासः अचीचकासतम् अचीचकासत
अचीचकासम् अचीचकासाव अचीचकासाम
चकासयामास चकासयामासतुः चकासयामासुः
चकासयामासिथ चकासयामासथुः चकासयामास
चकासयामासचकासयामासिवचकासयामासिम
आ०चकास्यात् चकास्यास्ताम् चकास्यासुः
चकास्याः चकास्यास्तम् चकास्यास्त
चकास्यासम् चकास्यास्व चकास्यास्म
श्व०चकासयिता चकासयितारौ चकासयितारः
चकासयितासि चकासयितास्थः चकासयितास्थ
चकासयितास्मिचकासयितास्वःचकासयितास्मः
भ०चकासयिष्यतिचकासयिष्यतःचकासयिष्यन्ति
चकासयिष्यसि चकासयिष्यथः चकासयिष्यथ
चकासयिष्यामिचकासयिष्यावः चकासयिष्यामः
क्रि० अचकासयिष्यत् अचकासयिष्यताम्
अचकासयिष्यन् अचकासयिष्यः
अचकासयिष्यतम् अचकासयिष्यत
अचकासयिष्यम् अचकासयिष्याव
अचकासयिष्याम

व० चकासयते चकासयेते चकासयन्ते
चकासयसे चकासयेथे चकासयध्वे
चकासये चकासयावहे चकासयामहे
ल० चकासयेत चकासयेयाताम् चकासयेरन्
चकासयेथाः चकासयेयाथाम् चकासयेध्वम्
चकासयेय चकासयेवहि चकासयेमहि
प० चकासयताम् चकासयेताम् चकासयन्ताम्
चकासयस्व चकासयेथाम् चकासयध्वम्
चकासयै चकासयावहै चकासयामहै
ह्य० अचकासयत अचकासयेताम् अचकासयन्त
अचकासयथाः अचकासयेथाम्अचकासयध्वम्
अचकासये अचकासयावहि अचकासयामहि
अ० अचचकासत अचचकासेताम् अचचकासन्त
अचचकासथाः अचचकासेथाम् अचचकासध्वम्
अचचकासे अचचकासावहि अचचकासामहि

अपरे तु—

अचीचकासत अचीचकासेताम्अचीचकासन्त
अचीचकासथाःअचीचकासेथाम् अचीचकासध्वम्
अचीचकासे अचीचकासावहि अचीचकासामहि
प० चकासयाञ्चक्रे चकासयाञ्चक्राते चकासयाञ्चक्रिरे
चकासयाञ्चकृषेचकासयाञ्चक्राथे चकासयाञ्चकृढ्वे
चकासयाञ्चक्रे चकासयाञ्चकृवहे चकासयाञ्चकृमहे
आ० चकासयिषीष्ट चकासयिषीयास्ताम्
चकासयिषीरन् चकासयिषीष्ठाः
चकासयिषीयास्थाम् चकासयिषीढ्वम्-ध्वम्
चकासयिषीय चकासयिषीवहि चकासयिषीमहि
श्व०चकासयिता चकासयितारौ चकासयितारः
चकासयितासे चकासयितासाथे चकासयिताध्वे
चकसयिताहे चकसयितास्वहे चकसयितास्महे
भ०चकासयिष्यते चकासयिष्येते चकासयिष्यन्ते
चकासयिष्यसे चकासयिष्येथे चकासयिष्यध्वे
चकासयिष्ये चकासयिष्यावहे चकासयिष्यामहे
अचकासयिष्यत अचकासयिष्येताम् अचकासयिष्यन्त
अचकासयिष्यथाः अचकासयिष्येथाम्
अचकासयिष्यध्वम् अचकासयिष्ये
अचकासयिष्यावहि अचकासयिष्यामहि

॥ राजृग् दीप्तौ—राजयति । राजयते
अरराजत । अरराजत

॥ घटिष्–चेष्टायाम् ॥

व० घटयति घटयतः घटयन्ति
घटयसि घटयथः घटयथ
घटयामि घटयावः घटयामः
स० घटयेत् घटयेताम् घटयेयुः
घटयेः घटयेतम् घटयेत
घटयेयम् घटयेव घटयेम
प० घटयतु घटयतात् घटयताम् घटयन्तु
घटय घटयतम् घटयत
घटयानि घटयाव घटयाम
ह्य० अघटयत् अघटयताम् अघटयन्
अघटयः अघटयतम् अघटयत
अघटयम् अघटयाव अघटयाम
अ० अजीघटत् अजीघटताम् अजीघटन्
अजीघटः अजीघटतम् अजीघटत
अजीघटम् अजीघटाव अजीघटाम
प० घटयाञ्चकार घटयाञ्चक्रतुः घटयाञ्चक्रुः
घटयाञ्चकर्थ घटयाञ्चक्रथुः घटयाञ्चक्र
घटयाञ्चकार-चकर घटयाञ्चकृव घटयाञ्चकृम
घटयाम्बभूव । घटयामास
आ० घट्यात् घट्यास्ताम् घट्यासुः
घट्याः घट्यास्तम् घट्यास्त
घट्यासम् घट्यास्व घट्यास्म
श्व० घटयिता घटयितारौ घटयितारः
घटयितासि घटयितास्थः घटयितास्थ
घटयितास्मि घटयितास्वः घटयितास्मः
भ० घटयिष्यति घटयिष्यतः घटयिष्यन्ति
घटयिष्यसि घटयिष्यथः घटयिष्यथ
घटयिष्यामि घटयिष्यावः घटयिष्यामः
क्रि० अघटयिष्यत् अघटयिष्यताम् अघटयिष्यन्
अघटयिष्यः अघटयिष्यतम् अघटयिष्यत
अघटयिष्यम् अघटयिष्याव अघटयिष्याम

व० घटयते घटयेते घटयन्ते
घटयसे घटयेथे घटयध्वे
घटये घटयावहे घटयामहे
स० घटयेत घटयेयाताम् घटयेरन्
घटयेथाः घटयेयाथाम् घटयेध्वम्
घटयेय घटयेवहि घटयेमहि
प० घटयताम् घटयेताम् घटयन्ताम्
घटयस्व घटयेथाम् घटयध्वम्
घटयै घटयावहै घटयामहै
ह्य० अघटयत अघटयेताम् अघटयन्त
अघटयथाः अघटयेथाम् अघटयध्वम्
अघटये अघटयावहि अघटयामहि
अ० अजीघटत अजीघटेताम् अजीघटन्त
अजीघटथाः अजीघटेथाम् अजीघटध्वम्
अजीघटे अजीघटावहि अजीघटामहि
प० घटयाञ्चक्रे घटयाञ्चक्राते घटयाञ्चक्रिरे
घटयाञ्चकृषे घटयाञ्चक्राथे घटयाञ्चकृढ्वे
घटयाञ्चक्रे घटयाञ्चकृवहे घटयाञ्चकृमहे
आ० घटयिषीष्ट घटयिषीयास्ताम् घटयिषीरन्
घटयिषीष्ठाः घटयिषीयास्थाम् घटयिषीध्वम्
घटयिषीय घटयिषीवहि घटयिषीमहि
श्व० घटयिता घटयितारौ घटयितारः
घटयितासे घटयितासाथे घटयिताध्वे
घटयिताहे घटयितास्वहे घटयितास्महे
भ० घटयिष्यते घटयिष्येते घटयिष्यन्ते
घटयिष्यसे घटयिष्येथे घटयिष्यध्वे
घटयिष्ये घटयिष्यावहे घटयिष्यामहे
क्रि० अघटयिष्यत अघटयिष्येताम् अघटयिष्यन्त
अघटयिष्यथाः अघटयिष्येथाम् अघटयिष्यध्वम्
अघटयिष्ये अघटयिष्यावहि अघटयिष्यामहि

अत्रेदं बोध्यम् । घटादीनां पठितार्थ एव घटादिकार्यविज्ञानम्, तेनार्थान्तरे तु उद्घाटयति प्रविघाटयति । उद्घाटितः कपाट इत्यादौ ह्रस्वो न भवति । विघट-

यतीति तु अजन्तस्याद्न्तस्य वा णिज् बहुलं नाम्नः । ३ । ४ । ४२ ॥ इति करोत्यर्थे णिचि रूपमिति ।

स्मृं आध्याने ( उत्कण्ठायाम् ) ॥

व० स्मरयति स्मरयतः स्मरयन्ति
स्मरयसि स्मरयथः स्मरयथ
स्मरयामि स्मरयावः स्मरयामः

आध्यानादन्यत्र तु चित्तं स्मारयति विस्मारयति इत्यादि ॥

स० स्मरयेत् स्मरयेताम् स्मरयेयुः
स्मरयेः स्मरयेतम् स्मरयेत
स्मरयेयम् स्मरयेव स्मरयेम

प० स्मरयतु, तात् स्मरयताम् स्मरयन्तु
स्मरय ,, स्मरयतम् स्मरयत
स्मरयाणि स्मरयाव स्मरयाम

ह्य० अस्मरयत् अस्मरयताम् अस्मरयन्
अस्मरयः अस्मरयतम् अस्मरयत
अस्मरयम् अस्मरयाव अस्मरयाम

अ० असस्मरत् असस्मरताम् असस्मरन्
असस्मरः असस्मरतम् असस्मरत
असस्मरम् असस्मराव असस्मराम

प० स्मरयाञ्चकार स्मरयाञ्चक्रतुः स्मरयाञ्चक्रुः
स्मरयाञ्चकर्थ स्मरयाञ्चक्रथुः स्मरयाञ्चक्र
स्मरयाञ्चकार स्मरयाञ्चकृव स्मरयाञ्चकृम

आ० स्मर्यात् स्मर्यास्ताम् स्मर्यासुः
स्मर्याः स्मर्यास्तम् स्मर्यास्त
स्मर्यासम् स्मर्यास्व स्मर्यास्म

श्व० स्मरयिता स्मरयितारौ स्मरयितारः
स्मरयितासि स्मरयितास्थः स्मरयितास्थ
स्मरयितास्मि स्मरयितास्वः स्मरयितास्मः

भ० स्मरयिष्यति स्मरयिष्यतः स्मरयिष्यन्ति
स्मरयिष्यसि स्मरयिष्यथः स्मरयिष्यथ
स्मरयिष्यामि स्मरयिष्यावः स्मरयिष्यामः

अस्मरयिष्यत् अस्मरयिष्यताम् अस्मरयिष्यन्
अस्मरयिष्यः अस्मरयिष्यतम् अस्मरयिष्यत
अस्मरयिष्यम् अस्मरयिष्याव अस्मरयिष्याम

व० स्मरयते स्मरयेते स्मरयन्ते
स्मरयसे स्मरयेथे स्मरयध्वे
स्मरये स्मरयावहे स्मरयामहे

स० स्मरयेत स्मरयेयाताम् स्मरयेरन्
स्मरयेथाः स्मरयेयाथाम् स्मरयेध्वम्
स्मरयेय स्मरयेवहि स्मरयेमहि

प० स्मरयताम् स्मरयेताम् स्मरयन्ताम्
स्मरयस्व स्मरयेथाम् स्मरयध्वम्
स्मरयै स्मरयावहै स्मरयामहै

ह्य० अस्मरयत अस्मरयेताम् अस्मरयन्त
अस्मरयथाः अस्मरयेथाम् अस्मरयध्वम्
अस्मरये अस्मरयावहि अस्मरयामहि

अ० असस्मरत असस्मरेताम् असस्मरन्त
असस्मरथाः असस्मरेथाम् असस्मरध्वम्
असस्मरे असस्मरावहि असस्मरामहि

प० स्मरयाञ्चक्रे स्मरयाञ्चक्राते स्मरयाञ्चक्रिरे
स्मरयाञ्चकृषे स्मरयाञ्चक्राथे स्मरयाञ्चकृढ्वे
स्मरयाञ्चक्रे स्मरयाञ्चकृवहे स्मरयाञ्चकृमहे

स्मरयिषीष्ट स्मरयिषीयास्ताम् स्मरयिषीरन्
स्मरयिषीष्ठाः स्मरयिषीयास्थाम् स्मरयिषीध्वम्
ढ्वम्
स्मरयिषीय स्मरयिषीवहि स्मरयिषीमहि

श्व० स्मरयिता स्मरयितारौ स्मरयितारः
स्मरयितासे स्मरयितासाथे स्मरयिताध्वे
स्मरयिताहे स्मरयितास्वहे स्मरयितास्महे

भ० स्मरयिष्यते स्मरयिष्येते स्मरयिष्यन्ते
स्मरयिष्यसे स्मरयिष्येथे स्मरयिष्यध्वे
स्मरयिष्ये स्मरयिष्यावहे स्मरयिष्यामहे

क्रि० अस्मरयिष्यत अस्मरयिष्येताम्–यिष्यन्त

अस्मरयिष्यथाः अस्मरयिष्येथाम्–यिष्यध्वम्
अस्मरयिष्ये अस्मरयिष्यावहि–यिष्यामहि

दृ–भये ॥ दरयति । दरयते । अददरत् ।
अददरत । भयादन्यत्र तु काष्ठं दारयति ।

ञित्वरिष् संभ्रमे–त्वरयति । त्वरयते ।
अतत्वरत् । अतत्वरत

वेष्टि–वेष्टायाम्

व० वेष्टयति वेष्टयतः वेष्टयन्ति
वेष्टयसि वेष्टयथः वेष्टयथ
वेष्टयामि वेष्टयावः वेष्टयामः

स० वेष्टयेत् वेष्टयेताम् वेष्टयेयुः
वेष्टयेः वेष्टयेतम् वेष्टयेत
वेष्टयेयम् वेष्टयेव वेष्टयेम

प० वेष्टयतु वेष्टयतात् वेष्टयताम् वेष्टयन्तु
वेष्टय वेष्टयतात् वेष्टयतम् वेष्टयत
वेष्टयानि वेष्टयाव वेष्टयाम

ह्य० अवेष्टयत् अवेष्टयताम् अवेष्टयन्
अवेष्टयः अवेष्टयतम् अवेष्टयत
अवेष्टयम् अवेष्टयाव अवेष्टयाम

अ० अववेष्टत् अववेष्टताम् अववेष्टन्
अववेष्टः अववेष्टतम् अववेष्टत
अववेष्टम् अववेष्टाव अववेष्टाम

प० वेष्टयाञ्चकार वेष्टयाञ्चक्रतुः वेष्टयाञ्चक्रुः
वेष्टयाञ्चकर्थ वेष्टयाञ्चक्रथुः वेष्टयाञ्चक्र
वेष्टयाञ्चकार वेष्टयाञ्चकृव वेष्टयाञ्चकृम

आ० वेष्टयात् वेष्टयास्ताम् वेष्टयासुः
वेष्टयाः वेष्टयास्तम् वेष्टयास्त
वेष्टयासम् वेष्टयास्व वेष्टयास्म

श्व० वेष्टयिता वेष्टयितारौ वेष्टयितारः
वेष्टयितासि वेष्टयितास्थः वेष्टयितास्थ
वेष्टयितास्मि वेष्टयितास्वः वेष्टयितास्मः

भ० वेष्टयिष्यति वेष्टयिष्यतः वेष्टयिष्यन्ति
वेष्टयिष्यसि वेष्टयिष्यथः वेष्टयिष्यथ
वेष्टयिष्यामि वेष्टयिष्यावः वेष्टयिष्यामः

क्रि० अवेष्टयिष्यत् अवेष्टयिष्यताम् अवेष्टयिष्यन्
अवेष्टयिष्यः अवेष्टयिष्यतम् अवेष्टयिष्यत
अवेष्टयिष्यम् अवेष्टयिष्याव अवेष्टयिष्याम

व० वेष्टयते वेष्टयेते वेष्टयन्ते
वेष्टयसे वेष्टयेथे वेष्टयध्वे
वेष्टये वेष्टयावहे वेष्टयामहे

स० वेष्टयेत वेष्टयेयाताम् वेष्टयेरन्
वेष्टयेथाः वेष्टयेयाथाम् वेष्टयेध्वम्
वेष्टयेय वेष्टयेवहि वेष्टयेमहि

प० वेष्टयताम् वेष्टयेताम् वेष्टयन्ताम्
वेष्टयस्व वेष्टयेथाम् वेष्टयध्वम्
वेष्टयै वेष्टयावहै वेष्टयामहै

ह्य० अवेष्टयत अवेष्टयेताम् अवेष्टयन्त
अवेष्टयथाः अवेष्टयेथाम् अवेष्टयध्वम्
अवेष्टये अवेष्टयावहि अवेष्टयामहि

अ० अववेष्टत अववेष्टेताम् अववेष्टन्त
अववेष्टथाः अववेष्टेथाम् अववेष्टध्वम्
अववेष्टे अववेष्टावहि अववेष्टामहि

अविवेष्टत अविवेष्टेताम् अविवेष्टन्त
अविवेष्टथाः अविवेष्टेथाम् अविवेष्टध्वम्
अविवेष्टे अविवेष्टावहि अविवेष्टामहि

प० वेष्टयाञ्चक्रे वेष्टयाञ्चक्राते वेष्टयाञ्चक्रिरे
वेष्टयाञ्चकृषे वेष्टयाञ्चक्राथे वेष्टयाञ्चकृढ्वे
वेष्टयाञ्चक्रे वेष्टयाञ्चकृवहे वेष्टयाञ्चकृमहे

आ० वेष्टयिषीष्ट वेष्टयिषीयास्ताम् वेष्टयिषीरन्
वेष्टयिषीष्ठाः वेष्टयिषीयास्थाम् वेष्टयिषीढ्वम्
ध्वम्
वेष्टयिषीय वेष्टयिषीवहि वेष्टयिषीमहि

श्व० वेष्टयिता वेष्टयितारौ वेष्टयितारः
वेष्टयितासि वेष्टयितास्थः वेष्टयितास्थ
वेष्टयितास्मि वेष्टयितास्वः वेष्टयितास्मः

भ० वेष्टयिष्यते वेष्टयिष्येते वेष्टयिष्यन्ते
वेष्टयिष्यसे वेष्टयिष्येथे वेष्टयिष्यध्वे
वेष्टयिष्ये वेष्टयिष्यावहे वेष्टयिष्यामहे
क्रि० अवेष्टयिष्यत अवेष्टयिष्येताम् अवेष्टयिष्यन्त
अवेष्टयिष्यथाः अवेष्टयिष्येथाम् अवेष्टयिष्यध्वम्
अवेष्टयिष्ये अवेष्टयिष्यावहि अवेष्टयिष्यामहि

चेष्टि चेष्टयां चेष्टयति । चेष्टयते । अचचेष्टत् ।
अचचेष्टत । अचिचेष्टत् । अचिचेष्टत ।

कगे सौत्रो धातुः,
क्रियासामान्यार्थोऽयमिति केचित् ।
अनेकार्थोऽयमित्यन्ये ।

व० कगयति कगयतः कगयन्ति
कगयसि कगयथः कगयथ
कगयामि कगयावः कगयामः
स० कगयेत् कगयेताम् कगयेयुः
कगयेः कगयेतम् कगयेत
कगयेयम् कगयेव कगयेम
प० कगयतु कगयतात् कगयताम् कगयन्तु
कगय कगयतात् कगयतम् कगयत
कगयानि कगयाव कगयाम
ह्य० अकगयत् अकगयताम् अकगयन्
अकगयः अकगयतम् अकगयत
अकगयम् अकगयाव अकगयाम
अ० अचीकगत् अचीकगताम् अचीकगन्
अचीकगः अचीकगतम् अचीकगत
अचीकगम् अचीकगाव अचीकगाम
प० कगयामास कगयामासतुः कगयामासुः
कगयामासिथ कगयामासथुः कगयामास
कगयामास कगयामासिव कगयामासिम
आ० कग्यात् कग्यास्ताम् कग्यासुः
कग्याः कग्यास्तम् कग्यास्त
कग्यासम् कग्यास्व कग्यास्म
श्व० कगयिता कगयितारौ कगयितारः
कगयितासि कगयितास्थः कगयितास्थ
कगयितास्मि कगयितास्वः कगयितास्मः
भ० कगयिष्यति कगयिष्यतः कगयिष्यन्ति
कगयिष्यसि कगयिष्यथः कगयिष्यथ
कगयिष्यामि कगयिष्यावः कगयिष्यामः
क्रि० अकगयिष्यत् अकगयिष्यताम् अकगयिष्यन्
अकगयिष्यः अकगयिष्यतम् अकगयिष्यत
अकगयिष्यम् अकगयिष्याव अकगयिष्याम

व० कगयते कगयेते कगयन्ते
कगयसे कगयेथे कगयध्वे
कगये कगयावहे कगयामहे
स० कगयेत कगयेयाताम् कगयेरन्
कगयेथाः कगयेयाथाम् कगयेध्वम्
कगयेय कगयेवहि कगयेमहि
प० कगयताम् कगयेताम् कगयन्ताम्
कगयस्व कगयेथाम् कगयध्वम्
कगयै कगयावहै कगयामहै
ह्य० अकगयत अकगयेताम् अकगयन्त
अकगयथाः अकगयेथाम् अकगयध्वम्
अकगये अकगयावहि अकगयामहि
अ० अचीकगत अचीकगेताम् अचीकगन्त
अचीकगथाः अचीकगेथाम् अचीकगध्वम्
अचीकगे अचीकगावहि अचीकगामहि
प० कगयाञ्चक्रे कगयाञ्चक्राते कगयाञ्चक्रिरे
कगयाञ्चकृषे कगयाञ्चक्राथे कगयाञ्चकृढ्वे
कगयाञ्चक्रे कगयाञ्चकृवहे कगयाञ्चकृमहे
आ० कगयिषीष्ट कगयिषीयास्ताम् कगयिषीरन्
कगयिषीष्ठाः कगयिषीयास्थाम् कगयिषीढ्वम्
ध्वम्
कगयिषीय कगयिषीवहि कगयिषीमहि
श्व० कगयिता कगयितारौ कगयितारः
कगयितासे कगयितासाथे कगयिताध्वे
कगयिताहे कगयितास्वहे कगयितास्महे
भ० कगयिष्यते कगयिष्येते कगयिष्यन्ते
कगयिष्यसे कगयिष्येथे कगयिष्यध्वे

कगयिष्ये कगयिष्यावहे कगयिष्यामहे
क्रि॰अकगयिष्यत अकगयिष्येताम् अकगयिष्यन्त
अकगयिष्यथाः अकगयिष्येथाम् अकगयिष्यध्वम्
अकगयिष्ये अकगयिष्यावहि अकगयिष्यामहि

जनैचि–प्रादुर्भावे ॥

व॰ जनयति जनयतः जनयन्ति
जनयसि जनयथः जनयथ
जनयामि जनयावः जनयामः
स॰ जनयेत् जनयेताम् जनयेयुः
जनयेः जनयेतम् जनयेत
जनयेयम् जनयेव जनयेम
प॰ जनयतु जनयतात् जनयताम् जनयन्तु
जनय जनयतात् जनयतम् जनयत
जनयानि जनयाव जनयाम
ह्य॰ अजनयत् अजनयताम् अजनयन्
अजनयः अजनयतम् अजनयत
अजनयम् अजनयाव अजनयाम
अ॰ अजीजनत् अजीजनताम् अजीजनन्
अजीजनः अजीजनतम् अजीजनत
अजीजनम् अजीजनाव अजीजनाम
प॰ जनयाञ्चकार जनयाञ्चक्रतुः जनयाञ्चक्रुः
जनयाञ्चकर्थ जनयाञ्चक्रथुः जनयाञ्चक्र
जनयाञ्चकार-चकर जनयाञ्चकृव जनयाञ्चकृम
आ॰ जन्यात् जन्यास्ताम् जन्यासुः
जन्याः जन्यास्तम् जन्यास्त
जन्यासम् जन्यास्व जन्यास्म
श्व॰ जनयिता जनयितारौ जनयितारः
जनयितासि जनयितास्थः जनयितास्थ
जनयितास्मि जनयितास्वः जनयितास्मः
भ॰ जनयिष्यति जनयिष्यतः जनयिष्यन्ति
जनयिष्यसि जनयिष्यथः जनयिष्यथ
जनयिष्यामि जनयिष्यावः जनयिष्यामः
क्रि॰ अजनयिष्यत् अजनयिष्यताम् अजनयिष्यन्
अजनयिष्यः अजनयिष्यतम् अजनयिष्यत
अजनयिष्यम् अजनयिष्याव अजनयिष्याम

वनू–उपवनयति । उपवनयते । उपावीवनत् । उपावीवनत । अनुपसर्गस्यास्य तु वनयति वानयतीत्यादि

जॄष्–जरयति । जरयते । अजीजरत् । अजीजरत
क्नसू–क्नसयति । क्नसयते । अचिक्नसत् । अचिक्नसत ।

रञ्जी–मृगरमणे,

मृगरमणं–आखेटकम् मृगयेति यावत्

व॰ रजयति रजयतः रजयन्ति
रजयसि रजयथः रजयथ
रजयामि रजयावः रजयामः
रजयति मृगान् व्याधः ।
स॰ रजयेत् रजयेताम् रजयेयुः
रजयेः रजयेतम् रजयेत
रजयेयम् रजयेव रजयेम
प॰ रजयतु रजयतात् रजयताम् रजयन्तु
रजय रजयतात् रजयतम् रजयत
रजयानि रजयाव रजयाम
ह्य॰ अरजयत् अरजयताम् अरजयन्
अरजयः अरजयतम् अरजयत
अरजयम् अरजयाव अरजयाम
अ॰ अरीरजत् अरीरजताम् अरीरजन्
अरीरजः अरीरजतम् अरीरजत
अरीरजम् अरीरजाव अरीरजाम
प॰ रजयाञ्चकार रजयाञ्चक्रतुः रजयाञ्चक्रुः
रजयाञ्चकर्थ रजयाञ्चक्रथुः रजयाञ्चक्र
रजयाञ्चकार-चकर रजयाञ्चकृव रजयाञ्चकृम
आ॰ रज्यात् रज्यास्ताम् रज्यासुः
रज्याः रज्यास्तम् रज्यास्त
रज्यासम् रज्यास्व रज्यास्म
श्व॰ रजयिता रजयितारौ रजयितारः
रजयितासि रजयितास्थः रजयितास्थ

रञ्जयितास्मि रञ्जयितास्वः रञ्जयितास्मः
भ० रञ्जयिष्यति रञ्जयिष्यतः रञ्जयिष्यन्ति
रञ्जयिष्यसि रञ्जयिष्यथः रञ्जयिष्यथ
रञ्जयिष्यामि रञ्जयिष्यावः रञ्जयिष्यामः
क्रि० अरञ्जयिष्यत् अरञ्जयिष्यताम् अरञ्जयिष्यन्
अरञ्जयिष्यः अरञ्जयिष्यतम् अरञ्जयिष्यत
अरञ्जयिष्यम् अरञ्जयिष्याव अरञ्जयिष्याम

व० रञ्जयते रञ्जयेते रञ्जयन्ते
रञ्जयसे रञ्जयेथे रञ्जयध्वे
रञ्जये रञ्जयावहे रञ्जयामहे
स० रञ्जयेत रञ्जयेयाताम् रञ्जयेरन्
रञ्जयेथाः रञ्जयेयाथाम् रञ्जयेध्वम्
रञ्जयेय रञ्जयेवहि रञ्जयेमहि
प० रञ्जयताम् रञ्जयेताम् रञ्जयन्ताम्
रञ्जयस्व रञ्जयेथाम् रञ्जयध्वम्
रञ्जयै रञ्जयावहै रञ्जयामहै
ह्य० अरञ्जयत अरञ्जयेताम् अरञ्जयन्त
अरञ्जयथाः अरञ्जयेथाम् अरञ्जयध्वम्
अरञ्जये अरञ्जयावहि अरञ्जयामहि
भू० अरीरञ्जत अरीरञ्जेताम् अरीरञ्जन्त
अरीरञ्जथाः अरीरञ्जेथाम् अरीरञ्जध्वम्
अरीरञ्जे अरीरञ्जावहि अरीरञ्जामहि
प० रञ्जयाञ्चक्रे रञ्जयाञ्चक्राते रञ्जयाञ्चक्रिरे
रञ्जयाञ्चकृषे रञ्जयाञ्चक्राथे रञ्जयाञ्चकृढ्वे
रञ्जयाञ्चक्रे रञ्जयाञ्चकृवहे रञ्जयाञ्चकृमहे
आ० रञ्जयिषीष्ट रञ्जयिषीयास्ताम् रञ्जयिषीरन्
रञ्जयिषीष्ठाः रञ्जयिषीयास्थाम् रञ्जयिषीध्वम्
ढ्वम्
रञ्जयिषीय रञ्जयिषीवहि रञ्जयिषीमहि
श्व० रञ्जयिता रञ्जयितारौ रञ्जयितारः
रञ्जयितासे रञ्जयितासाथे रञ्जयिताध्वे
रञ्जयिताहे रञ्जयितास्वहे रञ्जयितास्महे
भ० रञ्जयिष्यते रञ्जयिष्येते रञ्जयिष्यन्त
रञ्जयिष्यसे रञ्जयिष्येथे रञ्जयिष्यध्वे
रञ्जयिष्ये रञ्जयिष्यावहे रञ्जयिष्यामहे
क्रि० अरञ्जयिष्यत अरञ्जयिष्येताम् अरञ्जयिष्यन्त
अरञ्जयिष्यथाः अरञ्जयिष्येथाम् अरञ्जयिष्यध्वम्
अरञ्जयिष्ये अरञ्जयिष्यावहि अरञ्जयिष्यामहि

मृगरमणादन्यत्र तु । रञ्जयति । रञ्जयते रजको वस्त्रम् । रञ्जयति रञ्जयते सभां नटः । अररञ्जत् अररञ्जत इत्यादि ॥

रमि

व० रमयति रमयतः रमयन्ति
रमयसि रमयथः रमयथ
रमयामि रमयावः रमयामः
स० रमयेत् रमयेताम् रमयेयुः
रमयेः रमयेतम् रमयेत
रमयेयम् रमयेव रमयेम
प० रमयतु रमयतात् रमयताम् रमयन्तु
रमय रमयतम् रमयत
रमयाणि रमयाव रमयाम
ह्य० अरमयत् अरमयताम् अरमयन्
अरमयः अरमयतम् अरमयत
अरमयम् अरमयाव अरमयाम
भू० अरीरमत् अरीरमताम् अरीरमन्
अरीरमः अरीरमतम् अरीरमत
अरीरमम् अरीरमाव अरीरमाम
प० रमयामास रमयामासतुः रमयामासुः
रमयामासिथ रमयामासथुः रमयामास
रमयामास रमयामासिव रमयामासिम
आ० रम्यात् रम्यास्ताम् रम्यासुः
रम्याः रम्यास्तम् रम्यास्त
रम्यासम् रम्यास्व रम्यास्म
श्व० रमयिता रमयितारौ रमयितारः
रमयितासि रमयितास्थः रमयितास्थ
रमयितास्मि रमयितास्वः रमयितास्मः
भ० रमयिष्यति रमयिष्यतः रमयिष्यन्ति
रमयिष्यसि रमयिष्यथः रमयिष्यथ
रमयिष्यामि रमयिष्यावः रमयिष्यामः

क्रि०अरमयिष्यत् अरमयिष्यताम् अरमयिष्यन्
अरमयिष्यः अरमयिष्यतम् अरमयिष्यत
अरमयिष्यम् अरमयिष्याव अरमयिष्याम

व० रमयते रमयेते रमयन्ते
रमयसे रमयेथे रमयध्वे
रमये रमयावहे रमयामहे
स० रमयेत रमयेयाताम् रमयेरन्
रमयेथाः रमयेयाथाम् रमयेध्वम्
रमयेय रमयेवहि रमयेमहि
प० रमयताम् रमयेताम् रमयन्ताम्
रमयस्व रमयेथाम् रमयध्वम्
रमयै रमयावहै रमयामहै
ह्य० अरमयत अरमयेताम् अरमयन्त
अरमयथाः अरमयेथाम् अरमयध्वम्
अरमये अरमयावहि अरमयामहि
अ० अरीरमत अरीरमेताम् अरीरमन्त
अरीरमथाः अरीरमेथाम् अरीरमध्वम्
अरीरमे अरीरमावहि अरीरमामहि
प० रमयाञ्चक्रे रमयाञ्चक्राते रमयाञ्चक्रिरे
रमयाञ्चकृषे रमयाञ्चक्राथे रमयाञ्चकृढ्वे
रमयाञ्चक्रे रमयाञ्चकृवहे रमयाञ्चकृमहे
आ०रमयिषीष्ट रमयिषीयास्ताम् रमयिषीरन्
रमयिषीष्ठाः रमयिषीयास्थाम् रमयिषीढ्वम्
ध्वम्
रमयिषीय रमयिषीवहि रमयिषीमहि
श्व०रमयिता रमयितारौ रमयितारः
रमयितासे रमयितासाथे रमयिताध्वे
रमयिताहे रमयितास्वहे रमयितास्महे
भ० रमयिष्यते रमयिष्येते रमयिष्यन्ते
रमयिष्यसे रमयिष्येथे रमयिष्यध्वे
रमयिष्ये रमयिष्यावहे रमयिष्यामहे
क्रि० अरमयिष्यतअरमयिष्येतामअरमयिष्यन्त
अरमयिष्यथाःअरमयिष्येथामअरमयिष्यध्वम्
अरमयिष्ये अरमयिष्यावहि अरमयिष्यामहि

गम्लृ-गमयति । अजीगमत्

कमू-कामयति । कामयते । अचीकमत्
अचीकमत ।
अम-आमयति । आमयते । आमिमत्
आमिमत ।
आ चमू-आचामयति, आचीचमत् ।

स्खदिष्

व० परिस्खदयतिपरिस्खदयतःपरिस्खदयन्ति
परिस्खदयसि परिस्खदयथः परिस्खदयथ
परिस्खदयामि परिस्खदयावः परिस्खदयामः
स० परिस्खदयेत् परिस्खदयेतामपरिस्खदयेयुः
परिस्खदयेः परिस्खदयेतम् परिस्खदयेत
परिस्खदयेयम् परिस्खदयेव परिस्खदयेम
परिस्खदयतु तात्-परिस्खदयतामपरिस्खदयन्तु
परिस्खदय ,, परिस्खदयतम् परिस्खदयत
परिस्खदयानि परिस्खदयाव परिस्खदयाम
पर्यस्खदयत् पर्यस्खदयताम् पर्यस्खदयन्
पर्यस्खदयः पर्यस्खदयतम् पर्यस्खदयत
पर्यस्खदयम् पर्यस्खदयाव पर्यस्खदयाम
अ० पर्यचिस्खदत् पर्यचिस्खदताम् पर्यचिस्खदन्
पर्यचिस्खदः पर्यचिस्खदतम् पर्यचिस्खदत
पर्यचिस्खदम् पर्यचिस्खदाव पर्यचिस्खदाम
परिस्खदयाञ्चकार परिस्खदयाञ्चक्रतुः याञ्चक्रुः
परिस्खदयाञ्चकर्थ परिस्खदयाञ्चक्रथुः-याञ्चक्र
परिस्खदयाञ्चकार परिस्खदयाञ्चकर
परिस्खदयाञ्चकृव परिस्खदयाञ्चकृम
परिस्खद्यात् परिस्खद्यास्ताम् परिस्खद्यासुः
परिस्खद्याः परिस्खद्यास्तम् परिस्खद्यास्त
परिस्खद्यासम् परिस्खद्यास्व परिस्खद्यास्म
श्व०परिस्खदयिता परिस्खदयितारौ-यितारः
परिस्खदयितासि यितास्थः परिस्खदयितास्थ
परिस्खदयितास्मि-यितास्वःपरिस्खदयितास्मः
भ०परिस्खदयिष्यति परिस्खदयिष्यतः
परिस्खदयिष्यन्ति परिस्खदयिष्यसि
परिस्खदयिष्यथः-यिष्यथ परिस्खदयिष्यामि
परिस्खदयिष्यावः परिस्खदयिष्यामः

परिस्खदयिष्यामः
क्रि० पर्यस्खदयिष्यत पर्यस्खदयिष्यताम्
पर्यस्खदयिष्यन् • पर्यस्खदयिष्यः-ष्यतम्
पर्यस्खदयिष्यत पर्यस्खदयिष्यम्
पर्यस्खदयिष्याव पर्यस्खदयिष्याम

परिस्खदयते परिस्खदयेते परिस्खदयन्ते
परिस्खदयसे परिस्खदयेथे परिस्खदयध्वे
परिस्खदये परिस्खदयावहे परिस्खदयामहे
परिस्खदयेत परिस्खदयेयाताम् परिस्खदयेरन्
परिस्खदयेथाः परिस्खदयेयाथाम् परिस्खदयेध्वम्
परिस्खदयेय परिस्खदयेवहि परिस्खदयेमहि
परिस्खदयताम् परिस्खदयेताम् परिस्खदयन्ताम्
परिस्खदयस्व परिस्खदयेथाम् परिस्खदयध्वम्
परिस्खदयै परिस्खदयावहै परिस्खदयामहै
ह्य० पर्यस्खदयत पर्यस्खदयेताम् पर्यस्खदयन्त
पर्यस्खदयथाः पर्यस्खदयेथाम् पर्यस्खदयध्वम्
पर्यस्खदये पर्यस्खदयावहि पर्यस्खदयामहि
अ० पर्यचिस्खदत पर्यचिस्खदेताम् पर्यचिस्खदन्त
पर्यचिस्खदथाः पर्यचिस्खदेथाम् पर्यचिस्खदध्वम्
पर्यचिस्खदे पर्यचिस्खदावहि पर्यचिस्खदामहि
परिस्खदयाञ्चक्रे परिस्खदयाञ्चक्राते-याञ्चक्रिरे
परिस्खदयाञ्चकृषे परिस्खदयाञ्चक्राथे-याञ्चकृढ्वे
परिस्खदयाञ्चक्रे परिस्खदयाञ्चकृवहे-ञ्चकृमहे
परिस्खदयिषीष्ट परिस्खदयिषीयास्ताम्-यिषीरन्
परिस्खदयिषीष्ठाः-यिषीयास्थाम्-यिषीढ्वम्
परिस्खदयिषीय परिस्खदयिषीवहि-यिषीमहि
परिस्खदयिता परिस्खदयितारौ-यितारः
परिस्खदयितासे परिस्खदयितासाथे-यिताध्वे
परिस्खदयिताहे परिस्खदयितास्वहे-यितास्महे
भ० परिस्खदयिष्यते परिस्खदयिष्येते-यिष्यन्ते
परिस्खदयिष्यसे परिस्खदयिष्येथे-यिष्यध्वे
परिस्खदयिष्ये परिस्खदयिष्यावहे-यिष्यामहे
क्रि० पर्यस्खदयिष्यत पर्यस्खदयिष्येताम्-यिष्यन्त
पर्यस्खदयिष्यथाः पर्यस्खदयिष्येथाम्-यिष्यध्वम्
पर्यस्खदयिष्ये पर्यस्खदयिष्यावहि-यिष्यामहि

एवं अपस्खदयति । अपस्खदयते । अपाचिस्खदत । अपाचिस्खदत ।
अन्यत्र तु प्रस्खादयति । प्रस्खादयते ।
प्राचिस्खदत् । प्राचिस्खदत ।

शम-अदर्शनेऽर्थे ।

व० शमयति शमयतः शमयन्ति
शमयसि शमयथः शमयथ
शमयामि शमयावः शमयामः
स० शमयेत् शमयेताम् शमयेयुः
शमयेः शमयेतम् शमयेत
शमयेयम् शमयेव शमयेम
प० शमयतु शमयतात् शमयताम् शमयन्तु
शमय शमयतात् शमयतम् शमयत
शमयानि शमयाव शमयाम
ह्य० अशमयत् अशमयताम् अशमयन्
अशमयः अशमयतम् अशमयत
अशमयम् अशमयाव अशमयाम
अ० अशीशमत् अशीशमताम् अशीशमन्
अशीशमः अशीशमतम् अशीशमत
अशीशमम् अशीशमाव अशीशमाम
प० शमयामास शमयामासतुः शमयामासुः
शमयामासिथ शमयामासथुः शमयामास
शमयामास शमयामासिव शमयामासिम
आ० शम्यात् शम्यास्ताम् शम्यासुः
शम्याः शम्यास्तम् शम्यास्त
शम्यासम् शम्यास्व शम्यास्म
श्व० शमयिता शमयितारौ शमयितारः
शमयितासि शमयितास्थः शमयितास्थ
शमयितास्मि शमयितास्वः शमयितास्मः
भ० शमयिष्यति शमयिष्यतः शमयिष्यन्ति
शमयिष्यसि शमयिष्यथः शमयिष्यथ
शमयिष्यामि शमयिष्यावः शमयिष्यामः
क्रि० अशमयिष्यत् अशमयिष्यताम् अशमयिष्यन्
अशमयिष्यः अशमयिष्यतम् अशमयिष्यत
अशमयिष्यम् अशमयिष्याव अशमयिष्याम

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | शमयते | शमयेते | शमयन्ते |
| | शमयसे | शमयेथे | शमयध्वे |
| | शमये | शमयावहे | शमयामहे |
| स० | शमयेत | शमयेयाताम् | शमयेरन् |
| | शमयेथाः | शमयेयाथाम् | शमयेध्वम् |
| | शमयेय | शमयेवहि | शमयेमहि |
| प० | शमयताम् | शमयेताम् | शमयन्ताम् |
| | शमयस्व | शमयेथाम् | शमयध्वम् |
| | शमयै | शमयावहै | शमयामहै |
| ह्य० | अशमयत | अशमयेताम् | अशमयन्त |
| | अशमयथाः | अशमयेथाम् | अशमयध्वम् |
| | अशमये | अशमयावहि | अशमयामहि |
| अ० | अशीशमत | अशीशमेताम् | अशीशमन्त |
| | अशीशमथाः | अशीशमेथाम् | अशीशमध्वम् |
| | अशीशमे | अशीशमावहि | अशीशमामहि |
| प० | शमयामास | शमयामासतुः | शमयामासुः |
| | शमयामासिथ | शमयामासथुः | शमयामास |
| | शमयामास | शमयामासिव | शमयामासिम |
| आ० | शमयिषीष्ट | शमयिषीयास्ताम् | शमयिषीरन् |
| | शमयिषीष्ठाः | शमयिषीयास्थाम् | शमयिषीढ्वम् ध्वम् |
| | शमयिषीय | शमयिषीवहि | शमयिषीमहि |
| श्व० | शमयिता | शमयितारौ | शमयितारः |
| | शमयितासे | शमयितासाथे | शमयिताध्वे |
| | शमयिताहे | शमयितास्वहे | शमयितास्महे |
| भ० | शमयिष्यते | शमयिष्येते | शमयिष्यन्ते |
| | शमयिष्यसे | शमयिष्येथे | शमयिष्यध्वे |
| | शमयिष्ये | शमयिष्यावहे | शमयिष्यामहे |
| | अशमयिष्यत | अशमयिष्येताम् | अशमयिष्यन्त |
| | अशमयिष्यथाः | अशमयिष्येथाम् | अशमयिष्यध्वम् |
| | अशमयिष्ये | अशमयिष्यावहि | अशमयिष्यामहि |

अन्यत्रार्थे तु–निशामयति । निशामयते रूपम् । न्यशीशमत् । न्यशीशमत ।

ज्वल–दी, दीप्तौ ज्वलयति । ज्वलयते । ज्वालयति । ज्वालयते । अजिज्वलत् । अजिज्वलत । चलने तु ज्वलयति । ज्वलयति

ह्वल–ह्वलयति । ह्वालयति । अजिह्वलत् । ह्मल ह्मलयति । ह्मालयति । अजिह्मलत् । ग्लै–ग्लपयति । ग्लपयते । ग्लापयति ग्लापयते । अजिग्लपत् । अजिग्लपत स्ना–स्नपयति । स्नपयते । स्नापयति स्नापयते । असिष्णपत् । असिष्णपत वम–वमयति । वमयते । वामयति । वामयते । अवीवमत् । अवीवमत । नम–नमयति । नमयते । नामयति । नामयते । अनीनमत् । अनीनमत ।

सोपसर्गाणामेषां ज्वलादीनां तु प्रज्वलयति, प्रह्वलयति, प्रह्मलयति, प्रग्लापयति प्रस्नापयति, प्रवमयति, प्रणमयति इत्यादि ॥

## भ्राज्

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | भ्राजयति | भ्राजयतः | भ्राजयन्ति |
| | भ्राजयसि | भ्राजयथः | भ्राजयथ |
| | भ्राजयामि | भ्राजयावः | भ्राजयामः |
| स० | भ्राजयेत् | भ्राजयेताम् | भ्राजयेयुः |
| | भ्राजयेः | भ्राजयेतम् | भ्राजयेत |
| | भ्राजयेयम् | भ्राजयेव | भ्राजयेम |
| प० | भ्राजयतु–तात् | भ्राजयताम् | भ्राजयन्तु |
| | भ्राजय ,, | भ्राजयतम् | भ्राजयत |
| | भ्राजयानि | भ्राजयाव | भ्राजयाम |
| ह्य० | अभ्राजयत् | अभ्राजयताम् | अभ्राजयन् |
| | अभ्राजयः | अभ्राजयतम् | अभ्राजयत |
| | अभ्राजयम् | अभ्राजयाव | अभ्राजयाम |
| अ० | अबिभ्रजत् | अबिभ्रजताम् | अबिभ्रजन् |
| | अबिभ्रजः | अबिभ्रजतम् | अबिभ्रजत |
| | अबिभ्रजम् | अबिभ्रजाव | अबिभ्रजाम |
| | अबभ्राजत् | अबभ्राजताम् | अबभ्राजन् |
| | अबभ्राजः | अबभ्राजतम् | अबभ्राजत |

अबभ्राजम् अबभ्राजाव अबभ्राजाम
प० भ्राजयाञ्चकार भ्राजयाञ्चक्रतुः भ्राजयाञ्चक्रुः
भ्राजयाञ्चकर्थ भ्राजयाञ्चक्रथुः भ्राजयाञ्चक्र
भ्राजयाञ्चकार-चकर भ्राजयाञ्चकृव भ्राजयाञ्चकृम
आ० भ्राज्यात् भ्राज्यास्ताम् भ्राज्यासुः
भ्राज्याः भ्राज्यास्तम् भ्राज्यास्त
भ्राज्यासम् भ्राज्यास्व भ्राज्यास्म
श्व० भ्राजयिता भ्राजयितारौ भ्राजयितारः
भ्राजयितासि भ्राजयितास्थः भ्राजयितास्थ
भ्राजयितास्मि भ्राजयितास्वः भ्राजयितास्मः
भ० भ्राजयिष्यति भ्राजयिष्यतः भ्राजयिष्यन्ति
भ्राजयिष्यसि भ्राजयिष्यथः भ्राजयिष्यथ
भ्राजयिष्यामि भ्राजयिष्यावः भ्राजयिष्यामः
अभ्राजयिष्यत् अभ्राजयिष्यताम् अभ्राजयिष्यन्
अभ्राजयिष्यः अभ्राजयिष्यतम् अभ्राजयिष्यत
अभ्राजयिष्यम् अभ्राजयिष्याव अभ्राजयिष्याम

व० भ्राजयते भ्राजयेते भ्राजयन्ते
भ्राजयसे भ्राजयेथे भ्राजयध्वे
भ्राजये भ्राजयावहे भ्राजयामहे
स० भ्राजयेत भ्राजयेयाताम् भ्राजयेरन्
भ्राजयेथाः भ्राजयेयाथाम् भ्राजयेध्वम्
भ्राजयेय भ्राजयेवहि भ्राजयेमहि
प० भ्राजयताम् भ्राजयेताम् भ्राजयन्ताम्
भ्राजयस्व भ्राजयेथाम् भ्राजयध्वम्
भ्राजयै भ्राजयावहै भ्राजयामहै
ह्य० अभ्राजयत अभ्राजयेताम् अभ्राजयन्त
अभ्राजयथाः अभ्राजयेथाम् अभ्राजयध्वम्
अभ्राजये अभ्राजयावहि अभ्राजयामहि
अ० अबिभ्रजत अबिभ्रजेताम् अबिभ्रजन्त
अबिभ्रजथाः अबिभ्रजेथाम् अबिभ्रजध्वम्
अबिभ्रजे अबिभ्रजावहि अबिभ्रजामहि
अबभ्राजत अबभ्राजेताम् अबभ्राजन्त
अबभ्राजथाः अबभ्राजेथाम् अबभ्राजध्वम्
अबभ्राजे अबभ्राजावहि अबभ्राजामहि
प० भ्राजयाञ्चक्रे भ्राजयाञ्चक्राते भ्राजयाञ्चक्रिरे
भ्राजयाञ्चकृषे भ्राजयाञ्चक्राथे भ्राजयाञ्चकृढ्वे
भ्राजयाञ्चक्रे भ्राजयाञ्चकृवहे भ्राजयाञ्चकृमहे
आ भ्राजयिषीष्ट भ्राजयिषीयास्ताम् भ्राजयिषीरन्
भ्राजयिषीष्ठाः भ्राजयिषीयास्थाम् भ्राजयिषीढ्वम्
ध्वम्
भ्राजयिषीय भ्राजयिषीवहि भ्राजयिषीमहि
श्व० भ्राजयिता भ्राजयितारौ भ्राजयितारः
भ्राजयितासे भ्राजयितासाथे भ्राजयिताध्वे
भ्राजयिताहे भ्राजयितास्वहे भ्राजयितास्महे
भ० भ्राजयिष्यते भ्राजयिष्येते भ्राजयिष्यन्ते
भ्राजयिष्यसे भ्राजयिष्येथे भ्राजयिष्यध्वे
भ्राजयिष्ये भ्राजयिष्यावहे भ्राजयिष्यामहे
अभ्राजयिष्यत अभ्राजयिष्येताम् अभ्राजयिष्यन्त
अभ्राजयिष्यथाः अभ्राजयिष्येथाम् यिष्यध्वम्
अभ्राजयिष्ये अभ्राजयिष्यावहि अभ्राजयिष्यामहि

॥ वृत् ॥

व० वर्त्तयति वर्त्तयतः वर्त्तयन्ति
वर्त्तयसि वर्त्तयथः वर्त्तयथ
वर्त्तयामि वर्त्तयावः वर्त्तयामः
स० वर्त्तयेत् वर्त्तयेताम् वर्त्तयेयुः
वर्त्तयेः वर्त्तयेतम् वर्त्तयेत
वर्त्तयेयम् वर्त्तयेव वर्त्तयेम
प० वर्त्तयतु वर्त्तयतात् वर्त्तयताम् वर्त्तयन्तु
वर्त्तय वर्त्तयतात् वर्त्तयतम् वर्त्तयत
वर्त्तयानि वर्त्तयाव वर्त्तयाम
ह्य० अवर्त्तयत् अवर्त्तयताम् अवर्त्तयन्
अवर्त्तयः अवर्त्तयतम् अवर्त्तयत
अवर्त्तयम् अवर्त्तयाव अवर्त्तयाम
अववर्त्तत् अववर्त्तताम् अववर्त्तन्
अववर्त्तः अववर्त्ततम् अववर्त्तत
अववर्त्तम् अववर्त्ताव अववर्त्ताम
अ० अवीवृतत् अवीवृतताम् अवीवृतन्
अवीवृतः अवीवृततम् अवीवृतत
अवीवृतम् अवीवृताव अवीवृताम

प० वर्त्तयाञ्चकार वर्त्तयाञ्चक्रतुः वर्त्तयाञ्चक्रुः
वर्त्तयाञ्चकर्थ वर्त्तयाञ्चक्रथुः वर्त्तयाञ्चक्र
वर्त्तयाञ्चकार,ञ्चकर वर्त्तयाञ्चकृव वर्त्तयाञ्चकृम

आ० वर्त्यात् वर्त्यास्ताम् वर्त्यासुः
वर्त्याः वर्त्यास्तम् वर्त्यास्त
वर्त्यासम् वर्त्यास्व वर्त्यास्म

श्व० वर्त्तयिता वर्त्तयितारौ वर्त्तयितारः
वर्त्तयितासि वर्त्तयितास्थः वर्त्तयितास्थ
वर्त्तयितास्मि वर्त्तयितास्वः वर्त्तयितास्मः

भ० वर्त्तयिष्यति वर्त्तयिष्यतः वर्त्तयिष्यन्ति
वर्त्तयिष्यसि वर्त्तयिष्यथः वर्त्तयिष्यथ
वर्त्तयिष्यामि वर्त्तयिष्यावः वर्त्तयिष्यामः

क्रि० अवर्त्तयिष्यत् अवर्त्तयिष्यताम् अवर्त्तयिष्यन्
अवर्त्तयिष्यः अवर्त्तयिष्यतम् अवर्त्तयिष्यत
अवर्त्तयिष्यम् अवर्त्तयिष्याव अवर्त्तयिष्याम

व० वर्त्तयते वर्त्तयेते वर्त्तयन्ते
वर्त्तयसे वर्त्तयेथे वर्त्तयध्वे
वर्त्तये वर्त्तयावहे वर्त्तयामहे

स० वर्त्तयेत वर्त्तयेयाताम् वर्त्तयेरन्
वर्त्तयेथाः वर्त्तयेयाथाम् वर्त्तयेध्वम्
वर्त्तयेय वर्त्तयेवहि वर्त्तयेमहि

प० वर्त्तयताम् वर्त्तयेताम् वर्त्तयन्ताम्
वर्त्तयस्व वर्त्तयेथाम् वर्त्तयध्वम्
वर्त्तयै वर्त्तयावहै वर्त्तयामहै

ह्य० अवर्त्तयत अवर्त्तयेताम् अवर्त्तयन्त
अवर्त्तयथाः अवर्त्तयेथाम् अवर्त्तयध्वम्
अवर्त्तये अवर्त्तयावहि अवर्त्तयामहि

अ० अवीवृतत अवीवृतेताम् अवीवृतन्त
अवीवृतथाः अवीवृतेथाम् अवीवृतध्वम्
अवीवृते अवीवृतावहि अवीवृतामहि
( अववर्तत अववर्तेताम्–इत्यादि )

प० वर्त्तयाञ्चक्रे वर्त्तयाञ्चक्राते वर्त्तयाञ्चक्रिरे
वर्त्तयाञ्चकृषे वर्त्तयाञ्चक्राथे वर्त्तयाञ्चकृढ्वे
वर्त्तयाञ्चक्रे वर्त्तयाञ्चकृवहे वर्त्तयाञ्चकृहे

आ० वर्त्तयिषीष्ट वर्त्तयिषीयास्ताम् वर्त्तयिषीरन्
वर्त्तयिषीष्ठा वर्त्तयिषीयास्थाम् वर्त्तयिषीध्वम्
ढ्वम्
वर्त्तयिषीय वर्त्तयिषीवहि वर्त्तयिषीमहि

श्व० वर्त्तयिता वर्त्तयितारौ वर्त्तयितारः
वर्त्तयितासे वर्त्तयितासाथे वर्त्तयिताध्वे
वर्त्तयिताहे वर्त्तयितास्वहे वर्त्तयितास्महे

भ० वर्त्तयिष्यते वर्त्तयिष्येते वर्त्तयिष्यन्ते
वर्त्तयिष्यसे वर्त्तयिष्येथे वर्त्तयिष्यध्वे
वर्त्तयिष्ये वर्त्तयिष्यावहे वर्त्तयिष्यामहे

क्रि० अवर्त्तयिष्यत अवर्त्तयिष्येताम् अवर्त्तयिष्यन्त
अवर्त्तयिष्यथाः अवर्त्तयिष्येथाम् अवर्त्तयिष्यध्वम्
अवर्त्तयिष्ये अवर्त्तयिष्यावहि अवर्त्तयिष्यामहि

मृजौ–मार्जयति मार्जयते अमीमृजत्
अमीमृजत । अममार्जत् । अममार्जत

॥ घ्रां ॥

व० घ्रापयति घ्रापयतः घ्रापयन्ति
घ्रापयसि घ्रापयथः घ्रापयथ
घ्रापयामि घ्रापयावः घ्रापयामः

स० घ्रापयेत् घ्रापयेताम् घ्रापयेयुः
घ्रापयेः घ्रापयेतम् घ्रापयेत
घ्रापयेयम् घ्रापयेव घ्रापयेम

प० घ्रापयतु घ्रापयतात् घ्रापयताम् घ्रापयन्तु
घ्रापय ,, घ्रापयतम् घ्रापयत
घ्रापयाणि घ्रापयाव घ्रापयाम

ह्य० अघ्रापयत् अघ्रापयताम् अघ्रापयन्
अघ्रापयः अघ्रापयतम् अघ्रापयत
अघ्रापयम् अघ्रापयाव अघ्रापयाम

अ० अजिघ्रपत् अजिघ्रपताम् अजिघ्रपन्
अजिघ्रपः अजिघ्रपतम् अजिघ्रपत
अजिघ्रपम् अजिघ्रपाव अजिघ्रपाम
अजिघ्रिपत् अजिघ्रिपताम् अजिघ्रिपन्
अजिघ्रिपः अजिघ्रिपतम् अजिघ्रिपत
अजिघ्रिपम् अजिघ्रिपाव अजिघ्रिपाम

प० घ्रापयाञ्चकार घ्रापयाञ्चक्रतुः घ्रापयाञ्चक्रुः
घ्रापयाञ्चकर्थ घ्रापयाञ्चक्रथुः घ्रापयाञ्चक्र
घ्रापयाञ्चकार-चकर घ्रापयाञ्चकृव घ्रापयाञ्चकृम
घ्रापयाम्बभूव । घ्रापयामास

आ० घ्राप्यात् घ्राप्यास्ताम् घ्राप्यासुः
घ्राप्याः घ्राप्यास्तम् घ्राप्यास्त
घ्राप्यासम् घ्राप्यास्व घ्राप्यास्म

श्व० घ्रापयिता घ्रापयितारौ घ्रापयितारः
घ्रापयितासि घ्रापयितास्थः घ्रापयितास्थ
घ्रापयितास्मि घ्रापयितास्वः घ्रापयितास्मः

भ० घ्रापयिष्यति घ्रापयिष्यतः घ्रापयिष्यन्ति
घ्रापयिष्यसि घ्रापयिष्यथः घ्रापयिष्यथ
घ्रापयिष्यामि घ्रापयिष्यावः घ्रापयिष्यामः

क्रि० अघ्रापयिष्यत् अघ्रापयिष्यताम् अघ्रापयिष्यन्
अघ्रापयिष्यः अघ्रापयिष्यतम् अघ्रापयिष्यत
अघ्रापयिष्यम् अघ्रापयिष्याव अघ्रापयिष्याम

व० घ्रापयते घ्रापयेते घ्रापयन्ते
घ्रापयसे घ्रापयेथे घ्रापयध्वे
घ्रापये घ्रापयावहे घ्रापयामहे

स० घ्रापयेत घ्रापयेयाताम् घ्रापयेरन्
घ्रापयेथाः घ्रापयेयाथाम् घ्रापयेध्वम्
घ्रापयेय घ्रापयेवहि घ्रापयेमहि

प० घ्रापयताम् घ्रापयेताम् घ्रापयन्ताम्
घ्रापयस्व घ्रापयेथाम् घ्रापयध्वम्
घ्रापयै घ्रापयावहै घ्रापयामहै

ह्य० अघ्रापयत अघ्रापयेताम् अघ्रापयन्त
अघ्रापयथाः अघ्रापयेथाम् अघ्रापयध्वम्
अघ्रापये अघ्रापयावहि अघ्रापयामहि

अ० अजिघ्रपत अजिघ्रपेताम् अजिघ्रपन्त
अजिघ्रपथाः अजिघ्रपेथाम् अजिघ्रपध्वम्
अजिघ्रपे अजिघ्रपावहि अजिघ्रपामहि
अजिघ्रिपत अजिघ्रिपेताम् अजिघ्रिपन्त
अजिघ्रिपथाः अजिघ्रिपेथाम् अजिघ्रिपध्वम्
अजिघ्रिपे अजिघ्रिपावहि अजिघ्रिपामहि

प० घ्रापयाञ्चक्रे घ्रापयाञ्चक्राते घ्रापयाञ्चक्रिरे
घ्रापयाञ्चकृषे घ्रापयाञ्चक्राथे घ्रापयाञ्चकृढ्वे
घ्रापयाञ्चक्रे घ्रापयाञ्चकृवहे घ्रापयाञ्चकृमहे
घ्रापयाम्बभूव । घ्रापयामास ।

आ० घ्रापयिषीष्ट घ्रापयिषीयास्ताम् घ्रापयिषीरन्
घ्रापयिषीष्ठाः घ्रापयिषीयास्थाम् घ्रापयिषीढ्वम्
ध्वम्
घ्रापयिषीय घ्रापयिषीवहि घ्रापयिषीमहि

श्व० घ्रापयिता घ्रापयितारौ घ्रापयितारः
घ्रापयितासे घ्रापयितासाथे घ्रापयिताध्वे
घ्रापयिताहे घ्रापयितास्वहे घ्रापयितास्महे

भ० घ्रापयिष्यते घ्रापयिष्येते घ्रापयिष्यन्ते
घ्रापयिष्यसे घ्रापयिष्येथे घ्रापयिष्यध्वे
घ्रापयिष्ये घ्रापयिष्यावहे घ्रापयिष्यामहे

क्रि० अघ्रापयिष्यत अघ्रापयिष्येताम् अघ्रापयिष्यन्त
अघ्रापयिष्यथाः अघ्रापयिष्येथाम् अघ्रापयिष्यध्वम्
अघ्रापयिष्ये अघ्रापयिष्यावहि अघ्रापयिष्यामहि

॥ ष्ठा ॥

व० स्थापयति स्थापयतः स्थापयन्ति
स्थापयसि स्थापयथः स्थापयथ
स्थापयामि स्थापयावः स्थापयामः

स० स्थापयेत् स्थापयेताम् स्थापयेयुः
स्थापयेः स्थापयेतम् स्थापयेत
स्थापयेयम् स्थापयेव स्थापयेम

प० स्थापयतु स्थापयतात् स्थापयताम् स्थापयन्तु
स्थापय ,, स्थापयतम् स्थापयत
स्थापयानि स्थापयाव स्थापयाम

ह्य० अस्थापयत् अस्थापयताम् अस्थापयन्
अस्थापयः अस्थापयतम् अस्थापयत
अस्थापयम् अस्थापयाव अस्थापयाम

अ० अतिष्ठिपत् अतिष्ठिपताम् अतिष्ठिपन्
अतिष्ठिपः अतिष्ठिपतम् अतिष्ठिपत
अतिष्ठिपम् अतिष्ठिपाव अतिष्ठिपाम

प० स्थापयाञ्चकार स्थापयाञ्चक्रतुः स्थापयाञ्चक्रुः
स्थापयाञ्चकर्थ स्थापयाञ्चक्रथुः स्थापयाञ्चक्र

स्थापयाञ्चकार-चकर स्थापयाञ्चकृवस्थापयाञ्चकृम
स्थापयाम्बभूव । स्थापयामास
आ०स्थाप्यात् स्थाप्यास्ताम् स्थाप्यासुः
स्थाप्याः स्थाप्यास्तम् स्थाप्यास्त
स्थाप्यासम् स्थाप्यास्व स्थाप्यास्म
श्व०स्थापयिता स्थापयितारौ स्थापयितारः
स्थापयितासि स्थापयितास्थः स्थापयितास्थ
स्थापयितास्मि स्थापयितास्वः स्थापयितास्मः
भ० स्थापयिष्यतिस्थापयिष्यतःस्थापयिष्यन्ति
स्थापयिष्यसि स्थापयिष्यथः स्थापयिष्यथ
स्थापयिष्यामि स्थापयिष्यावः स्थापयिष्यामः
अस्थापयिष्यत्अस्थापयिष्यताम् अस्थापयिष्यन्
अस्थापयिष्यः अस्थापयिष्यतम् अस्थापयिष्यत
अस्थापयिष्यम् अस्थापयिष्याव अस्थापयिष्याम

व० स्थापयते स्थापयेते स्थापयन्ते
स्थापयसे स्थापयेथे स्थापयध्वे
स्थापये स्थापावहे स्थापयामहे
स० स्थापयेत स्थापयेयाताम् स्थापयेरन्
स्थापयेथाः स्थापयेयाथाम् स्थापयेध्वम्
स्थापयेय स्थापयेवहि स्थापयेमहि
प० स्थापयताम् स्थापयेताम् स्थापयन्ताम्
स्थापयस्व स्थापयेथाम् स्थापयध्वम्
स्थापयै स्थापयावहै स्थापयामहै
ह्य० अस्थापयत अस्थापयेताम् अस्थापयन्त
अस्थापयथाः अस्थापयेथाम् अस्थापयध्वम्
अस्थापये अस्थापयावहि अस्थापयामहि
अ० अतिष्ठिपत अतिष्ठिपेताम् अतिष्ठिपन्त
अतिष्ठिपथाः अतिष्ठिपेथाम् अतिष्ठिपध्वम्
अतिष्ठिपे अतिष्ठिपावहि अतिष्ठिपामहि
प० स्थापयाञ्चक्रे स्थापयाञ्चक्राते स्थापयाञ्चक्रिरे
स्थापयाञ्चकृषे स्थापयाञ्चक्राथे स्थापयाञ्चकृढ्वे
स्थापयाञ्चक्रे स्थापयाञ्चकृवहे स्थापयाञ्चकृमहे
स्थापयाम्बभूव । स्थापयामास
स्थापयिषीष्ट स्थापयिषीयास्ताम् स्थापयिषीरन्
स्थापयिषीष्टाः-स्थाम् स्थापयिषीढ्वम् ध्वम्
स्थापयिषीय स्थापयिषीवहि स्थापयिषीमहि
श्व० स्थापयिता स्थापयितारौ स्थापयितारः
स्थापयितासे स्थापयितासाथे स्थापयिताध्वे
स्थापयिताहे स्थापयितास्वहेस्थापयितास्महे
भ० स्थापयिष्यते स्थापयिष्येते स्थापयिष्यन्ते
स्थापयिष्यसे स्थापयिष्येथे स्थापयिष्यध्वे
स्थापयिष्ये स्थापयिष्यावहे स्थापयिष्यामहे
अस्थापयिष्यत-यिष्येताम् अस्थापयिष्यन्त
अस्थापयिष्यथाः-ष्येथाम् अस्थापयिष्यध्वम्
अस्थापयिष्ये-यिष्यावहि अस्थापयिष्यामहि

॥ दुष् ॥

व० दूषयति दूषयतः दूषयन्ति
दूषयसि दूषयथः दूषयथ
दूषयामि दूषयावः दूषयामः
स० दूषयेत् दूषयेताम् दूषयेयुः
दूषयेः दूषयेतम् दूषयेत
दूषयेयम् दूषयेव दूषयेम
प० दूषयतु दूषयतात् दूषयताम् दूषयन्तु
दूषय ,, दूषयतम् दूषयत
दूषयाणि दूषयाव दूषयाम
ह्य० अदूषयत् अदूषयताम् अदूषयन्
अदूषयः अदूषयतम् अदूषयत
अदूषयम् अदूषयाव अदूषयाम
अ० अदूदुषत् अदूदुषताम् अदूदुषन्
अदूदुषः अदूदुषतम् अदूदुषत
अदूदुषम् अदूदुषाव अदूदुषाम
केचित्तु-अदुदूषदित्यादि ॥
प० दूषयाञ्चकार दूषयाञ्चक्रतुः दूषयाञ्चक्रुः
दूषयाञ्चकर्थ दूषयाञ्चक्रथुः दूषयाञ्चक्र
दूषयाञ्चकार-चकर दूषयाञ्चकृव दूषयाञ्चकृम
आ० दूष्यात् दूष्यास्ताम् दूष्यासुः
दूष्याः दूष्यास्तम् दूष्यास्त
दूष्यासम् दूष्यास्व दूष्यास्म
श्व०दूषयिता दूषयितारौ दूषयितारः

दूषयितासि दूषयितास्थः दूषयितास्थ
दूषयितास्मि दूषयितास्वः दूषयितास्मः
भ० दूषयिष्यति दूषयिष्यतः दूषयिष्यन्ति
दूषयिष्यसि दूषयिष्यथः दूषयिष्यथ
दूषयिष्यामि दूषयिष्यावः दूषयिष्यामः
क्रि०अदूषयिष्यत् अदूषयिष्यताम् अदूषयिष्यन्
अदूषयिष्यः अदूषयिष्यतम् अदूषयिष्यत
अदूषयिष्यम् अदूषयिष्याव अदूषयिष्याम

व० दूषयते दूषयेते दूषयन्ते
दूषयसे दूषयेथे दूषयध्वे
दूषयावहे दूषयामहे
स० दूषयेत दूषयेयाताम् दूषयेरन्
दूषयेथाः दूषयेयाथाम् दूषयेध्वम्
दूषयेय दूषयेवहि दूषयेमहि
प० दूषयताम् दूषयेताम् दूषयन्ताम्
दूषयस्व दूषयेयाथाम् दूषयध्वम्
दूषयै दूषयावहै दूषयामहै
ह्य० अदूषयत अदूषयेताम् अदूषयन्त
अदूषयथाः अदूषयेथाम् अदूषयध्वम्
अदूषये अदूषयावहि अदूषयामहि
अ० अदूदुषत अदूदुषेताम् अदूदुषन्त
अदूदुषथाः अदूदुषेथाम् अदूदुषध्वम्
अदूदुषे अदूदुषावहि अदूदुषामहि
केचित्तु-अदुदूषतेत्यादि ।
प० दूषयाञ्चक्रे दूषयाञ्चक्राते दूषयाञ्चक्रिरे
दूषयाञ्चकृषे दूषयाञ्चक्राथे दूषयाञ्चकृढ्वे
दूषयाञ्चक्रे दूषयाञ्चकृवहे दूषयाञ्चकृमहे
आ०दूषयिषीष्ट दूषयिषीयास्ताम् दूषयिषीरन्
दूषयिषीष्ठाः दूषयिषीयास्थम् दूषयिषीध्वम्
ढ्वम्
दूषयिषीय दूषयिषीवहि दूषयिषीमहि
श्व०दूषयिता दूषयितारौ दूषयितारः
दूषयितासे दूषयितासाथे दूषयिताध्वे

दूषयिताहे दूषयितास्वहे दूषयितास्महे
भ० दूषयिष्यते दूषयिष्येते दूषयिष्यन्ते
दूषयिष्यसे दूषयिष्येथे दूषयिष्यध्वे
दूषयिष्ये दूषयिष्यावहे दूषयिष्यामहे
क्रि०अदूषयिष्यत अदूषयिष्येताम् अदूषयिष्यन्त
अदूषयिष्यथाः अदूषयिष्येथाम् अदूषयिष्यध्वम्
अदूषयिष्ये अदूषयिष्यावहि अदूषयिष्यामहि

व० दोषयति दोषयतः दोषयन्ति
दोषयसि दोषयथः दोषयथ
दोषयामि दोषयावः दोषयामः
स० दोषयेत् दोषयेताम् दोषयेयुः
दोषयेः दोषयेतम् दोषयेत
दोषयेयम् दोषयेव दोषयेम
प० दोषयतु दोषयेतात् दोषयन्ताम् दोषयन्तु
दोषय ,, दोषयतम् दोषयत
दोषयाणि दोषयाव दोषयाम
ह्य० अदोषयत् अदोषयेताम् अदोषयन्
अदोषयः अदोषयतम् अदोषयत
अदोषयम् अदोषयाव अदोषयाम
अ० अदूदुषत् अदूदुषताम् अदूदुषन्
अदूदुषः अदूदुषताम् अदूदुषत
अदूदुषम् अदूदुषाव अदूदुषाम
प० दोषयाञ्चकार दोषयाञ्चक्रतुः दोषयाञ्चक्रुः
दोषयाञ्चकर्थ दोषयाञ्चक्रथुः दोषयाञ्चक्र
दोषयाञ्चकार-चकर दोषयाञ्चकृव दोषयाञ्चकृम
आ०दोष्यात् दोष्यास्ताम् दोष्यासुः
दोष्याः दोष्यास्तम् दोष्यास्त
दोष्यासम् दोष्यास्व दोष्यास्म
श्व०दोषयिता दोषयितारौ दोषयितारः
दोषयितासि दोषयितास्थः दोषयितास्थ
दोषयितास्मि दोषयितास्वः दोषयितास्मः
भ० दोषयिष्यति दोषयिष्यतः दोषयिष्यन्ति
दोषयिष्यसि दोषयिष्यथः दोषयिष्यथ
दोषयिष्यामि दोषयिष्यावः दोषयिष्यामः
क्रि०अदोषयिष्यत् अदोषयिष्यताम् अदोषयिष्यन्

अदोषयिष्यः अदोषयिष्यतम् अदोषयिष्यत
अदोषयिष्यम् अदोषयिष्याव अदोषयिष्याम

व० दोषयते अदोषयेते अदोषयन्ते
दोषयसे दोषयेते दोषयध्वे
दोषये दोषयावहे दोषयामहे
स० दोषयेत दोषयेयाताम् दोषयेरन्
दोषयेथाः दोषयेयाथाम् दोषयेध्वम्
दोषयेय दोषयेवहि दोषयेमहि
प० दोषयताम् दोषयेताम् दोषयन्ताम्
दोषयस्व दोषयेथाम् दोषयध्वम्
दोषयै दोषयावहै दोषयामहै
ह्य० अदोषयत अदोषयेताम् अदोषयन्त
अदोषयः अदोषयेथाम् अदोषयध्वम्
अदोषये अदोषयावहि अदोषयामहि
अ० अदूदुषत अदूदुषेताम् अदूदुषन्त
अदूदुषथाः अदूदुषेथाम् अदूदुषध्वम्
अदूदुषे अदूदुषावहि अदूदुषामहि
प० दोषयाञ्चक्रे दोषयाञ्चक्राते दोषयाञ्चक्रिरे
दोषयाञ्चकृषे दोषयाञ्चक्राथे दोषयाञ्चकृढ्वे
दोषयाञ्चक्रे दोषयाञ्चकृवहे दोषयाञ्चकृमहे
दोषयिषीष्ट दोषयिषीयास्ताम् दोषयिषीरन्
दोषयिषीष्ठाः दोषयिषीयास्थाम् दोषयिषीध्वम्
ढ्वम्
दोषयिषीय दोषयिषीवहि दोषयिषीमहि
श्व० दोषयिता दोषयितारौ दोषयितारः
दोषयितासे दोषयितासाथे दोषयिताध्वे
दोषयिताहे दोषयितास्वहे दोषयितास्महे
भ० दोषयिष्यते दोषयिष्येते दोषयिष्यन्ते
दोषयिष्यसे दोषयिष्येथे दोषयिष्यध्वे
दोषयिष्ये दोषयिष्यावहे दोषयिष्यामहे
क्रि०अदोषयिष्यत अदोषयिष्येताम्अदोषयिष्यन्त
अदोषयिष्यथाः अदोषयिष्येथाम्अदोषयिष्यध्वम्
अदोषयिष्ये अदोषयिष्यावहि अदोषयिष्यामहि

गूहौ—निगूहयति । निगूहयते । न्यजूगुहत
न्यजूगुहत । केचितु न्यजुगूहदित्यादि

( श्रिव— )

व० श्वाययति श्वाययतः श्वाययन्ति
श्वाययसि श्वाययथः श्वाययथ
श्वाययामि श्वाययावः श्वाययामः
स० श्वाययेत् श्वाययेताम् श्वाययेयुः
श्वाययेः श्वाययेतम् श्वाययेत
श्वाययेयम् श्वाययेव श्वाययेम
प० श्वाययतु श्वाययतात् श्वाययताम् श्वाययन्तु
श्वायय ,, श्वाययतम् श्वाययत
श्वाययानि श्वाययाव श्वाययाम
ह्य० अश्वाययत् अश्वाययताम् अश्वाययन्
अश्वाययः अश्वाययतम् अश्वाययत
अश्वाययम् अश्वाययाव अश्वाययाम
अ० अशूशवत् अशूशवताम् अशूशवन्
अशूशवः अशूशवतम् अशूशवत
अशूशवम् अशूशवाव अशूशवाम
अशिश्वयत् अशिश्वयताम् अशिश्वयन्
अशिश्वयः अशिश्वयतम् अशिश्वयत
अशिश्वयम् अशिश्वयाव अशिश्वयाम
प०श्वाययाञ्चकार श्वाययाञ्चक्रतुः श्वाययाञ्चक्रुः
श्वाययाञ्चकर्थ श्वाययाञ्चक्रथुः श्वाययाञ्चक्र
श्वाययाञ्चकार-कर श्वाययाञ्चकृव श्वाययाञ्चकृम
श्वाययाम्बभूव । श्वाययामास
आ०श्वाय्यात् श्वाय्यास्ताम् श्वाय्यासुः
श्वाय्याः श्वाय्यास्तम् श्वाय्यास्त
श्वाय्यासम् श्वाय्यास्व श्वाय्यास्म
भ० श्वाययिष्यति श्वाययिष्यतः श्वाययिष्यन्ति
श्वाययिष्यसि श्वाययिष्यथः श्वाययिष्यथ
श्वाययिष्यामि श्वाययिष्यावः श्वाययिष्यामः
क्रि०अश्वाययिष्यत्अश्वाययिष्यताम्अश्वाययिष्यन्
अश्वाययिष्यः अश्वाययिष्यतम् अश्वाययिष्यत
अश्वाययिष्यम् अश्वाययिष्याव अश्वाययिष्याम
व० श्वाययते श्वाययेते श्वाययन्ते
श्वाययसे श्वाययेथे श्वाययध्वे

प्रवायये प्रवाययावहे प्रवाययामहे
स० प्रवाययेत प्रवाययेयाताम् प्रवाययेरन्
प्रवाययेथाः प्रवाययेयाथाम् प्रवाययेध्वम्
प्रवाययेय प्रवाययावहे प्रवाययामहे
प० प्रवाययताम् प्रवाययेताम् प्रवाययन्ताम्
प्रवाययस्व प्रवाययेथाम् प्रवाययध्वम्
प्रवायये प्रवाययावहै प्रवाययामहै
ह्य० अप्रवाययत अप्रवाययेताम् अप्रवाययन्त
अप्रवाययथाः अप्रवाययेथाम् अप्रवाययध्वम्
अप्रवायये अप्रवाययावहि अप्रवाययामहि
अ० अशूशवत अशूशवेताम् अशूशवन्त
अशूशवथाः अशूशवेथाम् अशूशवध्वम्
अशूशवे अशूशवावहि अशूशवामहि
अशिश्वयत अशिश्वयेताम् अशिश्वयन्त
अशिश्वयथाः अशिश्वयेथाम् अशिश्वयध्वम्
अशिश्वये अशिश्वयावहि अशिश्वयामहि
प० प्रवाययाञ्चक्रे प्रवाययाञ्चक्राते प्रवाययाञ्चक्रिरे
प्रवाययाञ्चकृषे प्रवाययाञ्चक्राथे प्रवाययाञ्चकृढ्वे
प्रवाययाञ्चक्रे प्रवाययाञ्चकृवहे प्रवाययाञ्चकृमहे
प्रवाययाम्बभूव । प्रवाययामास
आ० प्रवाययिषीष्ट प्रवाययिषीयास्ताम् प्रवाययिषीरन्
प्रवाययिषीष्ठाः प्रवाययिषीयास्थाम् प्रवाययिषीढ्वम्
ध्वम्
प्रवाययिषीय प्रवाययिषीवहि प्रवाययिषीमहि
श्व० प्रवाययिता प्रवाययितारौ प्रवाययितारः
प्रवाययितासे प्रवाययितासाथे प्रवाययिताध्वे
प्रवाययिताहे प्रवाययितास्वहे प्रवाययितास्महे
भ० प्रवाययिष्यते प्रवाययिष्येते प्रवाययिष्यन्ते
प्रवाययिष्यसे प्रवाययिष्येथे प्रवाययिष्यध्वे
प्रवाययिष्ये प्रवाययिष्यावहे प्रवाययिष्यामहे
क्रि० अप्रवाययिष्यत अप्रवाययिष्येताम्-यिष्यन्त
अप्रवाययिष्यथाः अप्रवाययिष्येथाम्-यिष्यध्वम्
अप्रवाययिष्ये अप्रवाययिष्यावहि-यिष्यामहि
स्वप्-स्वापयति । असूषुपत् ।

ऋ

व० अर्पयति अर्पयतः अर्पयन्ति
अर्पयसि अर्पयथः अर्पयथ
अर्पयामि अर्पयावः अर्पयामः
स० अर्पयेत् अर्पयेताम् अर्पयेयुः
अर्पयेः अर्पयेतम् अर्पयेत
अर्पयेयम् अर्पयेव अर्पयेम
प० अर्पयतु अर्पयतात् अर्पयताम् अर्पयन्तु
अर्पय अर्पयतात् अर्पयतम् अर्पयत
अर्पयाणि अर्पयाव अर्पयाम
ह्य० आर्पयत् आर्पयताम् आर्पयन्
आर्पयः आर्पयतम् आर्पयत
आर्पयम् आर्पयाव आर्पयाम
अ० आर्पिपत् आर्पिपताम् आर्पिपन्
आर्पिपः आर्पिपतम् आर्पिपत
आर्पिपम् आर्पिपाव आर्पिपाम
प० अर्पयाञ्चकार अर्पयाञ्चक्रतुः अर्पयाञ्चक्रुः
अर्पयाञ्चकर्थ अर्पयाञ्चक्रथुः अर्पयाञ्चक्र
अर्पयाञ्चकार,चकर अर्पयाञ्चकृव अर्पयाञ्चकृम
आ० अर्प्यात् अर्प्यास्ताम् अर्प्यासुः
अर्प्याः अर्प्यास्तम् अर्प्यास्त
अर्प्यासम् अर्प्यास्व अर्प्यास्म
श्व० अर्पयिता अर्पयितारौ अर्पयितारः
अर्पयितासि अर्पयितास्थः अर्पयितास्थ
अर्पयितास्मि अर्पयितास्वः अर्पयितास्मः
भ० अर्पयिष्यति अर्पयिष्यतः अर्पयिष्यन्ति
अर्पयिष्यसि अर्पयिष्यथः अर्पयिष्यथ
अर्पयिष्यामि अर्पयिष्यावः अर्पयिष्यामः
क्रि आर्पयिष्यत् आर्पयिष्यताम् आर्पयिष्यन्
आर्पयिष्यः आर्पयिष्यतम् आर्पयिष्यत
आर्पयिष्यम् आर्पयिष्याव आर्पयिष्याम
व० अर्पयते अर्पयेते अर्पयन्ते
अर्पयसे अर्पयेथे अर्पयध्वे
अर्पये अर्पयावहे अर्पयामहे

स० अर्पयेत अर्पयेयाताम् अर्पयेरन्
अर्पयेथाः अर्पयेयाथाम् अर्पयेध्वम्
अर्पयेय अर्पयेवहि अर्पयेमहि
प० अर्पयताम् अर्पयेताम् अर्पयन्ताम्
अर्पयस्व अर्पयेथाम् अर्पयध्वम्
अर्पयै अर्पयावहै अर्पयामहै
ह्य० आर्पयत आर्पयेताम् आर्पयन्त
आर्पयथाः आर्पयेथाम् आर्पयध्वम्
आर्पये आर्पयावहि आर्पयामहि
अ० आर्पिपत आर्पिपेताम् आर्पिपन्त
आर्पिपथाः आर्पिपेथाम् आर्पिपध्वम्
आर्पिपे आर्पिपावहि आर्पिपामहि
प० अर्पयाञ्चक्रे अर्पयाञ्चक्राते अर्पयाञ्चक्रिरे
अर्पयाञ्चकृषे अर्पयाञ्चक्राथे अर्पयाञ्चकृढ्वे
अर्पयाञ्चक्रे अर्पयाञ्चकृवहे अर्पयाञ्चकृमहे
आ० अर्पयिषीष्ट अर्पयिषीयास्ताम् अर्पयिषीरन्
अर्पयिषीष्ठाः अर्पयिषीयास्थाम् अर्पयिषीध्वम्
अर्पयिषीढ्वम्
अर्पयिषीय अर्पयिषीवहि अर्पयिषीमहि
श्व० अर्पयिता अर्पयितारौ अर्पयितारः
अर्पयितासे अर्पयितासाथे अर्पयिताध्वे
अर्पयिताहे अर्पयितास्वहे अर्पयितास्महे
भ० अर्पयिष्यते अर्पयिष्येते अर्पयिष्यन्ते
अर्पयिष्यसे अर्पयिष्येथे अर्पयिष्यध्वे
अर्पयिष्ये अर्पयिष्यावहे अर्पयिष्यामहे
क्रि० आर्पयिष्यत आर्पयिष्येताम् आर्पयिष्यन्त
आर्पयिष्यथाः आर्पयिष्येथाम् आर्पयिष्यध्वम्
आर्पयिष्ये आर्पयिष्यावहि आर्पयिष्यामहि

री–रेपयति । रेपयते । अरीरिपत् ।
अरीरिपत ।

ब्ली–ब्लेपयति । ब्लेपयते । अबिब्लिपत् ।
अबिब्लिपत ।

ह्री–ह्रेपयति । ह्रेपयते । अजिह्रिपत् ।
अजिह्रिपत ।

क्नूयी,

व० क्नोपयति क्नोपयतः क्नोपयन्ति
क्नोपयसि क्नोपयथः क्नोपयथ
क्नोपयामि क्नोपयावः क्नोपयामः
स० क्नोपयेत् क्नोपयेताम् क्नोपयेयुः
क्नोपयेः क्नोपयेतम् क्नोपयेत
क्नोपयेयम् क्नोपयेव क्नोपयेम
प० क्नोपयतु क्नोपयतात् क्नोपयताम् क्नोपयन्तु
क्नोपय क्नोपयतात् क्नोपयतम् क्नोपयत
क्नोपयानि क्नोपयाव क्नोपयाम
ह्य० अक्नोपयत् अक्नोपयताम् अक्नोपयन्
अक्नोपयः अक्नोपयतम् अक्नोपयत
अक्नोपयम् अक्नोपयाव अक्नोपयाम
अ० अचुक्नुपत् अचुक्नुपताम् अचुक्नुपन्
अचुक्नुपः अचुक्नुपतम् अचुक्नुपत
अचुक्नुपम् अचुक्नुपाव अचुक्नुपाम
क्नोपयाञ्चकार क्नोपयाञ्चक्रतुः क्नोपयाञ्चक्रुः
क्नोपयाञ्चकर्थ क्नोपयाञ्चक्रथुः क्नोपयाञ्चक्र
क्नोपयाञ्चकार,चकर क्नोपयाञ्चकृव–याञ्चकृम
क्नोपयाम्बभूव । क्नोपयामास ।
आ० क्नोप्यात् क्नोप्यास्ताम् क्नोप्यासुः
क्नोप्याः क्नोप्यास्तम् क्नोप्यास्त
क्नोप्यासम् क्नोप्यास्व क्नोप्यास्म
श्व० क्नोपयिता क्नोपयितारौ क्नोपयितारः
क्नोपयितासि क्नोपयितास्थः क्नोपयितास्थ
क्नोपयितास्मि क्नोपयितास्वः क्नोपयितास्मः
भ० क्नोपयिष्यति क्नोपयिष्यतः क्नोपयिष्यन्ति
क्नोपयिष्यसि क्नोपयिष्यथः क्नोपयिष्यथ
क्नोपयिष्यामि क्नोपयिष्यावः क्नोपयिष्यामः
अक्नोपयिष्यत् अक्नोपयिष्यताम् अक्नोपयिष्यन्
अक्नोपयिष्यः अक्नोपयिष्यतम् अक्नोपयिष्यत
अक्नोपयिष्यम् अक्नोपयिष्याव अक्नोपयिष्याम
व० क्नोपयते क्नोपयेते क्नोपयन्ते
क्नोपयसे क्नोपयेथे क्नोपयध्वे
क्नोपये क्नोपयावहे क्नोपयामहे

स० क्नोपयेत क्नोपयेयाताम् क्नोपयेरन्
क्नोपयेथाः क्नोपयेयाथाम् क्नोपयेध्वम्
क्नोपयेय क्नोपयेवहि क्नोपयेमहि

प० क्नोपयताम् क्नोपयेताम् क्नोपयन्ताम्
क्नोपयस्व क्नोपयेथाम् क्नोपयध्वम्
क्नोपयै क्नोपयावहै क्नोपयामहै

ह्य० अक्नोपयत अक्नोपयेताम् अक्नोपयन्त
अक्नोपयथाः अक्नोपयेथाम् अक्नोपयध्वम्
अक्नोपये अक्नोपयावहि अक्नोपयामहि

अ० अचुक्नुपत अचुक्नुपेताम् अचुक्नुपन्त
अचुक्नुपथाः अचुक्नुपेथाम् अचुक्नुपध्वम्
अचुक्नुपे अचुक्नुपावहि अचुक्नुपामहि

क्नोपयाञ्चक्रे क्नोपयाञ्चक्राते क्नोपयाञ्चक्रिरे
क्नोपयाञ्चकृषे क्नोपयाञ्चक्राथे क्नोपयाञ्चकृढ्वे
क्नोपयाञ्चक्रे क्नोपयाञ्चकृवहे क्नोपयाञ्चकृमहे

क्नोपयाम्बभूव । क्नोपयामास ।

क्नोपयिषीष्ट क्नोपयिषीयास्ताम् क्नोपयिषीरन्
क्नोपयिषीष्ठाः क्नोपयिषीयास्थाम् क्नोपयिषीढ्वम्
ध्वम्
क्नोपयिषीय क्नोपयिषीवहि क्नोपयिषीमहि

श्व० क्नोपयिता क्नोपयितारौ क्नोपयितारः
क्नोपयितासे क्नोपयितासाथे क्नोपयिताध्वे
क्नोपयिताहे क्नोपयितास्वहे क्नोपयितास्महे

भ० क्नोपयिष्यते क्नोपयिष्येते क्नोपयिष्यन्ते
क्नोपयिष्यसे क्नोपयिष्येथे क्नोपयिष्यध्वे
क्नोपयिष्ये क्नोपयिष्यावहे क्नोपयिष्यामहे

क्रि० अक्नोपयिष्यत अक्नोपयिष्येताम्-यिष्यन्त
अक्नोपयिष्यथाः अक्नोपयिष्येथाम्-यिष्यध्वम्
अक्नोपयिष्ये अक्नोपयिष्यावहि-यिष्यामहि

क्री.

व० क्रापयति क्रापयतः क्रापयन्ति
क्रापयसि क्रापयथः क्रापयथ
क्रापयामि क्रापयावः क्रापयामः

स० क्रापयेत् क्रापयेताम् क्रापयेयुः
क्रापयेः क्रापयेतम् क्रापयेत
क्रापयेयम् क्रापयेव क्रापयेम

प० क्रापयतु क्रापयतात् क्रापयताम् क्रापयन्तु
क्रापय क्रापयतात् क्रापयतम् क्रापयत
क्रापयाणि क्रापयाव क्रापयाम

ह्य० अक्रापयत् अक्रापयताम् अक्रापयन्
अक्रापयः अक्रापयतम् अक्रापयत
अक्रापयम् अक्रापयाव अक्रापयाम

अ० अचिक्रपत् अचिक्रपताम् अचिक्रपन्
अचिक्रपः अचिक्रपतम् अचिक्रपत
अचिक्रपम् अचिक्रपाव अचिक्रपाम

प० क्रापयाञ्चकार क्रापयाञ्चक्रतुः क्रापयाञ्चक्रुः
क्रापयाञ्चकर्थ क्रापयाञ्चक्रथुः क्रापयाञ्चक्र
क्रापयाञ्चकार,चकर क्रापयाञ्चकृव क्रापयाञ्चकृम

क्रापयाम्बभूव । क्रापयामास ।

आ० क्राप्यात् क्राप्यास्ताम् क्राप्यासुः
क्राप्याः क्राप्यास्तम् क्राप्यास्त
क्राप्यासम् क्राप्यास्व क्राप्यास्म

श्व० क्रापयिता क्रापयितारौ क्रापयितारः
क्रापयितासि क्रापयितास्थः क्रापयितास्थ
क्रापयितास्मि क्रापयितास्वः क्रापयितास्मः

भ० क्रापयिष्यति क्रापयिष्यतः क्रापयिष्यन्ति
क्रापयिष्यसि क्रापयिष्यथः क्रापयिष्यथ
क्रापयिष्यामि क्रापयिष्यावः क्रापयिष्यामः

क्रि० अक्रापयिष्यत् अक्रापयिष्यताम् अक्रापयिष्यन्
अक्रापयिष्यः अक्रापयिष्यतम् अक्रापयिष्यत
अक्रापयिष्यम् अक्रापयिष्याव अक्रापयिष्याम

व० क्रापयते क्रापयेते क्रापयन्ते
क्रापयसे क्रापयेथे क्रापयध्वे
क्रापये क्रापयावहे क्रापयामहे

स० क्रापयेत क्रापयेयाताम् क्रापयेरन्
क्रापयेथाः क्रापयेयाथाम् क्रापयेध्वम्
क्रापयेय क्रापयेवहि क्रापयेमहि

प० क्रापयताम् क्रापयेताम् क्रापयन्ताम्

क्रापयस्व क्रापयेथाम् क्रापयध्वम्
क्रापयै क्रापयावहै क्रापयामहै
ह्य० अक्रापयत अक्रापयेताम् अक्रापयन्त
अक्रापयथाः अक्रापयेथाम् अक्रापयध्वम्
अक्रापये अक्रापयावहि अक्रापयामहि
अ० अचिक्रपत अचिक्रपेताम् अचिक्रपन्त
अचिक्रपथाः अचिक्रपेथाम् अचिक्रपध्वम्
अचिक्रपे अचिक्रपावहि अचिक्रपामहि
प० क्रापयाञ्चक्रे क्रापयाञ्चक्राते क्रापयाञ्चक्रिरे
क्रापयाञ्चकृषे क्रापयाञ्चक्राथे क्रापयाञ्चकृढ्वे
क्रापयाञ्चक्रे क्रापयाञ्चकृवहे क्रापयाञ्चकृमहे
क्रापयाम्बभूव । क्रापयामास ।
आ० क्रापयिषीष्ट क्रापयिषीयास्ताम् क्रापयिषीरन्
क्रापयिषीष्ठाः क्रापयिषीयास्ताम् क्रापयिषीढ्वम्
ध्वम्
क्रापयिषीय क्रापयिषीवहि क्रापयिषीमहि
श्व० क्रापयिता क्रापयितारौ क्रापयितारः
क्रापयितासे क्रापयितासाथे क्रापयिताध्वे
क्रापयिताहे क्रापयितास्वहे क्रापयितास्महे
भ० क्रापयिष्यते क्रापयिष्येते क्रापयिष्यन्ते
क्रापयिष्यसे क्रापयिष्येथे क्रापयिष्यध्वे
क्रापयिष्ये क्रापयिष्यावहे क्रापयिष्यामहे
क्रि अक्रापयिष्यत अक्रापयिष्येताम् अक्रापयिष्यन्त
अक्रापयिष्यथाः अक्रापयिष्येथाम् अक्रापयिष्यध्वम्
अक्रापयिष्ये अक्रापयिष्यावहि अक्रापयिष्यामहि

जि–जापयति । जापयते । अजीजपत् ।
अजीजपत ।

व० अध्यापयति अध्यापयतः अध्यापयन्ति
अध्यापयसि अध्यापयथः अध्यापयथ
अध्यापयामि अध्यापयावः अध्यापयामः
स० अध्यापयेत् अध्यापयेताम् अध्यापयेयुः
अध्यापयेः अध्यापयेतम् अध्यापयेत
अध्यापयेयम् अध्यापयेव अध्यापयेम
प० अध्यापयतु,तात् अध्यापयताम् अध्यापयन्तु
अध्यापय ,, अध्यापयतम् अध्यापयत
अध्यापयानि अध्यापयाव अध्यापयाम
ह्य० अध्यापयत् अध्यापयताम् अध्यापयन्
अध्यापयः अध्यापयतम् अध्यापयत
अध्यापयम् अध्यापयाव अध्यापयाम
अ० अध्यापिपत् अध्यापिपताम् अध्यापिपन्
अध्यापिपः अध्यापिपतम् अध्यापिपत
अध्यापिपम् अध्यापिपाव अध्यापिपाम
अध्यजीगपत् अध्यजीगपताम्
अध्यजीगपन् अध्यजीगपः
अध्यजीगपतम् अध्यजीगपत
अध्यजीगपम् अध्यजीगपाव
अध्यजीगपाम
प० अध्यापयाञ्चकार अध्यापयाञ्चक्रतुः
अध्यापयाञ्चक्रुः अध्यापयाञ्चकर्थ
अध्यापयाञ्चक्रथुः अध्यापयाञ्चक्र
अध्यापयाञ्चकार,चकर अध्यापयाञ्चकृव
अध्यापयाञ्चकृम
अध्यापयाम्बभूव । अध्यापयामास
आ० अध्याप्यात् अध्याप्यास्ताम् अध्याप्यासुः
अध्याप्याः अध्याप्यास्तम् अध्याप्यास्त
अध्याप्यासम् अध्याप्यास्व अध्याप्यास्म
श्व० अध्यापयिता अध्यापयितारौ अध्यापयितारः
अध्यापयितासि–यितास्थः अध्यापयितास्थ
अध्यापयितास्मि–तास्वः अध्यापयितास्मः
अध्यापयिष्यति अध्यापयिष्यतः अध्यापयिष्यन्ति
अध्यापयिष्यसि अध्यापयिष्यथः अध्यापयिष्यथ
अध्यापयिष्यामि अध्यापयिष्यावः अध्यापयिष्यामः
अध्यापयिष्यत् अध्यापयिष्यताम् अध्यापयिष्यन्
अध्यापयिष्यः अध्यापयिष्यतम् अध्यापयिष्यत
अध्यापयिष्यम् अध्यापयिष्याव अध्यापयिष्याम

षिधूच्

व० साधयति साधयतः साधयन्ति
साधयसि साधयथः साधयथ

साधयामि साधयावः साधयामः

मन्त्रं साधयति, अन्नं साधयति साधर्मिकेभ्यो दातुम् ॥

स० साधयेत् साधयेताम् साधयेयुः
साधयेः साधयेतम् साधयेत
साधयेयम् साधयेव साधयेम

प० साधयतु साधयतात् साधयताम् साधयन्तु
साधय ,, साधयतम् साधयत
साधयानि साधयाव साधयाम

ह्य० असाधयत् असाधयताम् असाधयन्
असाधयः असाधयतम् असाधयत
असाधयम् असाधयाव असाधयाम

अ० असीषधत् असीषधताम् असीषधन्
असीषधः असीषधतम् असीषधत
असीषधम् असीषधाव असीषधाम

प० साधयाञ्चकार साधयाञ्चक्रतुः साधयाञ्चक्रुः
साधयाञ्चकर्थ साधयाञ्चक्रथुः साधयाञ्चक्र
साधयाञ्चकार-चकर साधयाञ्चकृव
साधयाञ्चकृम

साधयाम्बभूव । साधयामास

आ० साध्यात् साध्यास्ताम् साध्यासुः
साध्याः साध्यास्तम् साध्यास्त
साध्यासम् साध्यास्व साध्यास्म

श्व० साधयिता साधयितारौ साधयितारः
साधयितासि साधयितास्थः साधयितास्थ
साधयितास्मि साधयितास्वः साधयितास्मः

भ० साधयिष्यति साधयिष्यतः साधयिष्यन्ति
साधयिष्यसि साधयिष्यथः साधयिष्यथ
साधयिष्यामि साधयिष्यावः साधयिष्यामः

क्रि० असाधयिष्यत् असाधयिष्यताम् असाधयिष्यन्
असाधयिष्यः असाधयिष्यतम् असाधयिष्यत
असाधयिष्यम् असाधयिष्याव असाधयिष्याम

व० साधयते साधयेते साधयन्ते
साधयसे साधयेथे साधयध्वे
साधये साधयावहे साधयामहे

स० साधयेत साधयेयाताम् साधयेरन्
साधयेथाः साधयेयाथाम् साधयेध्वम्
साधयेय साधयेवहि साधयेमहि

प० साधयताम् साधयेताम् साधयन्ताम्
साधयस्व साधयेथाम् साधयध्वम्
साधयै साधयावहै साधयामहै

ह्य० असाधयत असाधयेताम् असाधयन्त
असाधयथाः असाधयेथाम् असाधयध्वम्
असाधये असाधयावहि असाधयामहि

अ० असीषधत असीषधेताम् असीषधन्त
असीषधथाः असीषधेथाम् असीषधध्वम्
असीषधे असीषधावहि असीषधामहि

प० साधयाञ्चक्रे साधयाञ्चक्राते साधयाञ्चक्रिरे
साधयाञ्चकृषे साधयाञ्चक्राथे साधयाञ्चकृढ्वे
साधयाञ्चक्रे साधयाञ्चकृवहे साधयाञ्चकृमहे

साधयाम्बभूव । साधयामास

आ० साधयिषीष्ट साधयिषीयास्ताम् साधयिषीरन्
साधयिषीष्ठाः साधयिषीयास्थाम् साधयिषीढ्वम् ध्वम्
साधयिषीय साधयिषीवहि साधयिषीमहि

श्व० साधयिता साधयितारौ साधयितारः
साधयितासे साधयितासाथे साधयिताध्वे
साधयिताहे साधयितास्वहे साधयितास्महे

भ० साधयिष्यते साधयिष्येते साधयिष्यन्ते
साधयिष्यसे साधयिष्येथे साधयिष्यध्वे
साधयिष्ये साधयिष्यावहे साधयिष्यामहे

क्रि० असाधयिष्यत असाधयिष्येताम् असाधयिष्यन्त
असाधयिष्यथाः असाधयिष्येथाम् असाधयिष्यध्वम्
असाधयिष्ये असाधयिष्यावहि असाधयिष्यामहि

व० सेधयति सेधयतः सेधयन्ति

सेधयसि सेधयथः सेधयथ
सेधयामि सेधयावः साधयामः
स० सेधयेत् सेधयेताम् सेधयेयुः
सेधयेः सेधयेतम् सेधयेत
सेधयेयम् सेधयेव सेधयेम
प० सेधयतु सेधयतात् सेधयताम् सेधयन्तु
सेधय ,, सेधयतम् सेधयत
सेधयानि सेधयाव सेधयाम
ह्य० असेधयत् असेधयताम् असेधयन्
असेधयः असेधयतम् असेधयत
असेधयम् असेधयाव असेधयाम
अ० असीषिधत् असीषिधताम् असीषिधन्
असीषिधः असीषिधतम् असीषिधत
असीषिधम् असीषिधाव असीषिधाम
प० सेधयाञ्चकार सेधयाञ्चक्रतुः सेधयाञ्चक्रुः
सेधयाञ्चकर्थ सेधयाञ्चक्रथुः सेधयाञ्चक्र
सेधयाञ्चकार-चकर सेधयाञ्चकृव सेधयाञ्चकृम
सेधयाम्बभूव । सेधयामास
आ० सेध्यात् सेध्यास्ताम् सेध्यासुः
सेध्याः सेध्यास्तम् सेध्यास्त
सेध्यासम् सेध्यास्व सेध्यास्म
श्व० सेधयिता सेधयितारौ सेधयितारः
सेधयितासि सेधयितास्थः सेधयितास्थ
सेधयितास्मि सेधयितास्वः सेधयितास्मः
भ० सेधयिष्यति सेधयिष्यतः सेधयिष्यन्ति
सेधयिष्यसि सेधयिष्यथः सेधयिष्यथ
सेधयिष्यामि सेधयिष्यावः सेधयिष्यामः
क्रि० असेधयिष्यत् असेधयिष्यताम् असेधयिष्यन्
असेधयिष्यः असेधयिष्यतम् असेधयिष्यत
असेधयिष्यम् असेधयिष्याव असेधयिष्याम
व० सेधयते सेधयेते सेधयन्ते
सेधयसे सेधयेथे सेधयध्वे
सेधये सेधयावहे सेधयामहे
स० सेधयेत सेधयेयाताम् सेधयेरन्
सेधयेथाः सेधयेयाथाम् सेधयेध्वम्
सेधयेय सेधयेवहि सेधयेमहि
प० सेधयताम् सेधयेताम् सेधयन्ताम्
सेधयस्व सेधयेथाम् सेधयध्वम्
सेधयै सेधयावहै सेधयामहै
ह्य० असेधयत असेधयेताम् असेधयन्त
असेधयथाः असेधयेथाम् असेधयध्वम्
असेधये असेधयावहि असेधयामहि
अ० असीषिधत असीषिधेताम् असीषिधन्त
असीषिधथाः असीषिधेथाम् असीषिधध्वम्
असीषिधे असीषिधावहि असीषिधामहि
प० सेधयाञ्चक्रे सेधयाञ्चक्राते सेधयाञ्चक्रिरे
सेधयाञ्चकृषे सेधयाञ्चक्राथे सेधयाञ्चकृढ्वे
सेधयाञ्चक्रे सेधयाञ्चकृवहे सेधयाञ्चकृमहे
सेधयाम्बभूव । सेधयामास
आ० सेधयिषीष्ट सेधयिषीयास्ताम् सेधयिषीरन्
सेधयिषीष्ठाः सेधयिषीयास्थाम् सेधयिषीढ्वम्
ध्वम्
सेधयिषीय सेधयिषीवहि सेधयिषीमहि
श्व० सेधयिता सेधयितारौ सेधयितारः
सेधयितासे सेधयितासाथे सेधयिताध्वे
सेधयिताहे सेधयितास्वहे सेधयितास्महे
भ० सेधयिष्यते सेधयिष्येते सेधयिष्यन्ते
सेधयिष्यसे सेधयिष्येथे सेधयिष्यध्वे
सेधयिष्ये सेधयिष्यावहे सेधयिष्यामहे
क्रि० असेधयिष्यत असेधयिष्येताम् असेधयिष्यन्त
असेधयिष्यथाः असेधयिष्येथाम् असेधयिष्यध्वम्
असेधयिष्ये असेधयिष्यावहि असेधयिष्यामहि

चिगृद्

व० चाययति चाययतः चाययन्ति
चाययसि चाययथः चाययथ
चाययामि चाययावः चाययामः
स० चाययेत् चाययेताम् चाययेयुः
चाययेः चाययेतम् चाययेत
चाययेयम् चाययेव चाययेम

प० चाययतु चाययतात् चाययताम् चाययन्तु
चायय चाययतात् चाययतम् चाययत
चाययानि चाययाव चाययाम

ह्य० अचाययत् अचाययताम् अचाययन्
अचाययः अचाययतम् अचाययत
अचाययम् अचाययाव अचाययाम

अ० अचीचयत् अचीचयताम् अचीचयन्
अचीचयः अचीचयतम् अचीचयत
अचीचयम् अचीचयाव अचीचयाम

प० चाययाञ्चकार चाययाञ्चक्रतुः
चाययाञ्चकुः चाययाञ्चकर्थ
चाययाञ्चक्रथुः चाययाञ्चक्र
चाययाञ्चकार,चकर चाययाञ्चकृव
चाययाञ्चकृम

चाययाम्बभूव । चाययामास ।

आ० चाय्यात् चाय्यास्ताम् चाय्यासुः
चाय्याः चाय्यास्तम् चाय्यास्त
चाय्यासम् चाय्यास्व चाय्यास्म

श्व० चाययिता चाययितारौ चाययितारः
चाययितासि चाययितास्थः चाययितास्थ
चाययितास्मि चाययितास्वः चाययितास्मः

भ० चाययिष्यति चाययिष्यतः चाययिष्यन्ति
चाययिष्यसि चाययिष्यथः चाययिष्यथ
चाययिष्यामि चाययिष्यावः चाययिष्यामः

क्रि० अचाययिष्यत् अचाययिष्येताम्
अचाययिष्यम् अचाययिष्यः
अचाययिष्यतम् अचाययिष्यत
अचाययिष्यम् अचाययिष्याव
अचाययिष्याम

व० चाययते चाययेते चाययन्ते
चाययसे चाययेथे चाययध्वे
चायये चाययावहे चाययामहे

स० चाययेत चाययेयाताम् चाययेरन्
चाययेथाः चाययेयाथाम् चाययेध्वम्
चाययेय चाययेवहि चाययेमहि

प० चाययताम् चाययेताम् चाययन्ताम्
चाययस्व चाययेथाम् चाययध्वम्
चाययै चाययावहै चाययामहै

ह्य० अचाययत अचाययेताम् अचाययन्त
अचाययथाः अचाययेथाम् अचाययध्वम्
अचायये अचाययावहि अचाययामहि

अ० अचीचयत अचीचयेताम् अचीचयन्त
अचीचयथाः अचीचयेथाम् अचीचयध्वम्
अचीचये अचीचयावहि अचीचयामहि

प० चाययाञ्चक्रे चाययाञ्चक्राते चाययाञ्चक्रिरे
चाययाञ्चकृषे चाययाञ्चक्राथे चाययाञ्चकृढ्वे
चाययाञ्चक्रे चाययाञ्चकृवहे चाययाञ्चकृमहे

चाययाम्बभूव । चाययामास ।

आ० चाययिषीष्ट चाययिषीयास्ताम् चाययिषीरन्
चाययिषीष्ठाः चाययिषीयास्थाम् चाययिषीढ्वम्
ध्वम्
चाययिषीय चाययिषीवहि चाययिषीमहि

श्व० चाययिता चाययितारौ चाययितारः
चाययितासे चाययितासाथे चाययिताध्वे
चाययिताहे चाययितास्वहे चाययितास्महे

भ० चाययिष्यते चाययिष्येते चाययिष्यन्ते
चाययिष्यसे चाययिष्येथे चाययिष्यध्वे
चाययिष्ये चाययिष्यावहे चाययिष्यामहे

क्रि० अचाययिष्यत अचाययिष्येताम्
अचाययिष्यन्त अचाययिष्यथाः
अचाययिष्येथाम् अचाययिष्यध्वम्
अचाययिष्ये अचाययिष्यावहि
अचाययिष्यामहि

व० चापयति चापयतः चापयन्ति
चापयसि चापयथः चापयथ
चापयामि चापयावः चापयामः

स० चापयेत् चापयेताम् चापयेयुः
चापयेः चापयेतम् चापयेत
चापयेयम् चापयेव चापयेम

प० चापयतु चापयतात् चापयताम् चापयन्तु
चापय चापयतात् चापयतम् चापयत
चापयानि चापयाव चापयाम
ह्य० अचापयत् अचापयताम् अचापयन्
अचापयः अचापयतम् अचापयत
अचापयम् अचापयाव अचापयाम
अ० अचीचपत् अचीचपताम् अचीचपन्
अचीचपः अचीचपतम् अचीचपत
अचीचपम् अचीचपाव अचीचपाव

प० चापयाञ्चकार चापयाञ्चक्रतुः
चापयाञ्चक्रुः चापयाञ्चकर्थ
चापयाञ्चक्रथुः चापयाञ्चक्र
चापयाञ्चकार,चकर चापयाञ्चकृव
चापयाञ्चकृम

चापयाम्बभूव । चापयामास ।

आ० चाप्यात् चाप्यास्ताम् चाप्यासुः
चाप्याः चाप्यास्तम् चाप्यास्त
चाप्यासम् चाप्यास्व चाप्यास्म
श्व० चापयिता चापयितारौ चापयितारः
चापयितासि चापयितास्थः चापयितास्थ
चापयितास्मि चापयितास्वः चापयितास्मः
भ० चापयिष्यति चापयिष्यतः चापयिष्यन्ति
चापयिष्यसि चापयिष्यथः चापयिष्यथ
चापयिष्यामि चापयिष्यावः चापयिष्यामः

क्रि० अचापयिष्यत् अचापयिष्यताम्
अचापयिष्यन् अचापयिष्यः
अचापयिष्यतम् अचापयिष्यत
अचापयिष्यम् अचापयिष्याव
अचापयिष्याम

व० चापयते चापयेते चापयन्ते
चापयसे चापयेथे चापयध्वे
चापये चापयावहे चापयामहे
स० चापयेत चापयेयाताम् चापयेरन्
चापयेथाः चापयेयाथाम् चापयेध्वम्
चापयेय चापयेवहि चापयेमहि

प० चापयताम् चापयेताम् चापयन्ताम्
चापयस्व चापयेथाम् चापयध्वम्
चापयै चापयावहै चापयामहै
ह्य० अचापयत अचापयेताम् अचापयन्त
अचापयथाः अचापयेथाम् अचापयध्वम्
अचापये अचापयावहि अचापयामहि
अ० अचीचपत अचीचपेताम् अचीचपन्त
अचीचपथाः अचीचपेथाम् अचीचपध्वम्
अचीचपे अचीचपावहि अचीचपामहि
प० चापयाञ्चक्रे चापयाञ्चक्राते चापयाञ्चक्रिरे
चापयाञ्चकृषे चापयाञ्चक्राथे चापयाञ्चकृढ्वे
चापयाञ्चक्रे चापयाञ्चकृवहे चापयाञ्चकृमहे
चापयाम्बभूव । चापयामास ।
आ०चापयिषीष्ट चापयिषीयास्ताम् चापयिषीरन्
चापयिषीष्ठाः चापयिषीयास्थाम् चापयिषीढ्वम्
ध्वम्
चापयिषीय चापयिषीवहि चापयिषीमहि
श्व० चापयिता चापयितारौ चापयितारः
चापयितासे चापयितासाथे चापयिताध्वे
चापयिताहे चापयितास्वहे चापयितास्महे
भ० चापयिष्यते चापयिष्येते चापयिष्यन्ते
चापयिष्यसे चापयिष्येथे चापयिष्यध्वे
चापयिष्ये चापयिष्यावहे चापयिष्यामहे
क्रि०अचापयिष्यत अचापयिष्येताम्
अचापयिष्यन्त अचापयिष्यथाः
अचापयिष्येथाम् अचापयिष्यध्वम्
अचापयिष्ये अचापयिष्यावहि
अचापयिष्यामहि

स्फुर–स्फारयति । अपुस्फरत् ।
स्फोरयति । अपुस्फुरत् ।
॥ वी ॥

व० प्रवापयति प्रवापयतः प्रवापयन्ति
प्रवापयसि प्रवापयथः प्रवापयथ
प्रवापयामि प्रवापयावः प्रवापयामः
पुरोवातो गाः प्रवापयति गर्भं ग्राहयतीत्यर्थः

स० प्रवापयेत् प्रवापयेताम् प्रवापयेयुः
प्रवापयेः प्रवापयेतम् प्रवापयेत
प्रवापयेयम् प्रवापयेव प्रवापयेम

प० प्रवापयतु प्रवापयतात् प्रवापयताम् प्रवापयन्तु
प्रवापय ,, प्रवापयतम् प्रवापयत
प्रवापयाणि प्रवापयाव प्रवापयाम

ह्य० प्रावापयत् प्रावापयताम् प्रावापयन्
प्रावापयः प्रावापयतम् प्रावापयत
प्रावापयम् प्रावापयाव प्रावापयाम

अ० प्रावीवपत् प्रावीवपताम् प्रावीवपन्
प्रावीवपः प्रावीवपतम् प्रावीवपत
प्रावीवपम् प्रावीवपाव प्रावीवपाम

प० प्रवापयाञ्चकार प्रवापयाञ्चक्रतुः प्रवापयाञ्चक्रुः
प्रवापयाञ्चकर्थ प्रवापयाञ्चक्रथुः प्रवापयाञ्चक्र
प्रवापयाञ्चकार-चकर प्रवापयाञ्चकृव प्रवापयाञ्चकृम

प्रवापयाम्बभूव । प्रवापयामास

आ० प्रवाप्यात् प्रवाप्यास्ताम् प्रवाप्यासुः
प्रवाप्याः प्रवाप्यास्तम् प्रवाप्यास्त
प्रवाप्यासम् प्रवाप्यास्व प्रवाप्यास्म

श्व० प्रवापयिता प्रवापयितारौ प्रवापयितारः
प्रवापयितासि प्रवापयितास्थः प्रवापयितास्थ
प्रवापयितास्मि प्रवापयितास्वः प्रवापयितास्मः

भ० प्रवापयिष्यति प्रवापयिष्यतः प्रवापयिष्यन्ति
प्रवापयिष्यसि प्रवापयिष्यथः प्रवापयिष्यथ
प्रवापयिष्यामि प्रवापयिष्यावः प्रवापयिष्यामः
प्रावापयिष्यत् प्रावापयिष्यताम् प्रावापयिष्यन्
प्रावापयिष्यः प्रावापयिष्यतम् प्रावापयिष्यत
प्रावापयिष्यम् प्रावापयिष्याव प्रावापयिष्याम

व० प्रवाययति प्रवाययतः प्रवाययन्ति
प्रवाययसि प्रवाययथः प्रवाययथ
प्रवाययामि प्रवाययावः प्रवाययामः

स० प्रवाययेत् प्रवाययेताम् प्रवाययेयुः
प्रवाययेः प्रवाययेतम् प्रवाययेत
प्रवाययेयम् प्रवाययेव प्रवाययेम

प० प्रवाययतु प्रवाययतात् प्रवाययताम् प्रवाययन्तु
प्रवायय ,, प्रवाययतम् प्रवाययत
प्रवाययाणि प्रवाययाव प्रवाययाम

ह्य० प्रावाययत् प्रावाययताम् प्रावाययन्
प्रावाययः प्रावाययतम् प्रावाययत
प्रावाययम् प्रावाययाव प्रावाययाम

अ० प्रावीवयत् प्रावीवयताम् प्रावीवयन्
प्रावीवयः प्रावीवयतम् प्रावीवयत
प्रावीवयम् प्रावीवयाव प्रावीवयाम

प० प्रवाययाञ्चकार प्रवाययाञ्चक्रतुः प्रवाययाञ्चक्रुः
प्रवाययाञ्चकर्थ प्रवाययाञ्चक्रथुः प्रवाययाञ्चक्र
प्रवाययाञ्चकार-चकर प्रवाययाञ्चकृव
प्रवाययाञ्चकृम

प्रवाययाम्बभूव । प्रवाययामास

आ० प्रवाय्यात् प्रवाय्यास्ताम् प्रवाय्यासुः
प्रवाय्याः प्रवाय्यास्तम् प्रवाय्यास्त
प्रवाय्यासम् प्रवाय्यास्व प्रवाय्यास्म

श्व० प्रवाययिता प्रवाययितारौ प्रवाययितारः
प्रवाययितासि प्रवाययितास्थः प्रवाययितास्थ
प्रवाययितास्मि प्रवाययितास्वः प्रवाययितास्मः
प्रवाययिष्यति प्रवाययिष्यतः प्रवाययिष्यन्ति
प्रवाययिष्यसि प्रवाययिष्यथः प्रवाययिष्यथ
प्रवाययिष्यामि प्रवाययिष्यावः प्रवाययिष्यामः

क्रि० प्रावाययिष्यत् प्रावाययिष्यताम् प्रावाययिष्यन्
प्रावाययिष्यः प्रावाययिष्यतम् प्रावाययिष्यत
प्रावाययिष्यम् प्रावाययिष्याव प्रावाययिष्याम

॥ रुह् ॥

ज० रोहयति रोहयतः रोहयन्ति
रोहयसि रोहयथः रोहयथ
रोहयामि रोहयावः रोहयामः

स० रोहयेत् रोहयेताम् रोहयेयुः
रोहये. रोहयेतम् रोहयेत
रोहयेयम् रोहयेव रोहयेम

प० रोहयतु, रोहयतात् रोहयताम् रोहयन्तु
रोहय ,, रोहयतम् रोहयत
रोहयाणि रोहयाव रोहयाम

ह्य० अरोहयत् अरोहयताम् अरोहयन्
अरोहयः अरोहयतम् अरोहयत
अरोहयम् अरोहयाव अरोहयाम

अ० अरूरुहत् अरूरुहताम् अरूरुहन्
अरूरुहः अरूरुहतम् अरूरुहत
अरूरुहम् अरूरुहाव अरूरुहाम

प० रोहयाञ्चकार रोहयाञ्चक्रतुः रोहयाञ्चक्रुः
रोहयाञ्चकर्थ रोहयाञ्चक्रथुः रोहयाञ्चक्र
रोहयाञ्चकार,चकर रोहयाञ्चकृव रोहयाञ्चकृम
रोहयाम्बभूव । रोहयामास ।

आ० रोह्यात् रोह्यास्ताम् रोह्यासुः
रोह्याः रोह्यास्तम् रोह्यास्त
रोह्यासम् रोह्यास्व रोह्यास्म

श्व० रोहयिता रोहयितारौ रोहयितारः
रोहयितासि रोहयितास्थः रोहयितास्थ
रोहयितास्मि रोहयितास्वः रोहयितास्मः

भ० रोहयिष्यति रोहयिष्यतः रोहयिष्यन्ति
रोहयिष्यसि रोहयिष्यथः रोहयिष्यथ
रोहयिष्यामि रोहयिष्यावः रोहयिष्यामः

क्रि० अरोहयिष्यत् अरोहयिष्यताम् अरोहयिष्यन्
अरोहयिष्यः अरोहयिष्यतम् अरोहयिष्यत
अरोहयिष्यम् अरोहयिष्याव अरोहयिष्याम

व० रोहयते रोहयेते रोहयन्ते
रोहयसे रोहयेथे रोहयध्वे
रोहये रोहयावहे रोहयामहे

स० रोहयेत रोहयेयाताम् रोहयेरन्
रोहयेथाः रोहयेयाथाम् रोहयेध्वम्
रोहयेय रोहयेवहि रोहयेमहि

प० रोहयताम् रोहयेताम् रोहयन्ताम्
रोहयस्व रोहयेथाम् रोहयध्वम्
रोहयै रोहयावहै रोहयामहै

ह्य० अरोहयत अरोहयेताम् अरोहयन्त
अरोहयथाः अरोहयेथाम् अरोहयध्वम्
अरोहये अरोहयावहि अरोहयामहि

प० रोहयाञ्चक्रे रोहयाञ्चक्राते रोहयाञ्चक्रिरे
रोहयाञ्चकृषे रोहयाञ्चक्राथे रोहयाञ्चकृढ्वे
रोहयाञ्चक्रे रोहयाञ्चकृवहे रोहयाञ्चकृमहे
रोहयाम्बभूव । रोहयामास ।

आ० रोहयिषीष्ट रोहयिषीयास्ताम् रोहयिषीरन्
रोहयिषीष्ठाः रोहयिषीयास्थाम् रोहयिषीढ्वम् ध्वम्
रोहयिषीय रोहयिषीवहि रोहयिषीमहि

श्व० रोहयिता रोहयितारौ रोहयितारः
रोहयितासे रोहयितासाथे रोहयिताध्वे
रोहयिताहे रोहयितास्वहे रोहयितास्महे

भ० रोहयिष्यते रोहयिष्येते रोहयिष्यन्ते
रोहयिष्यसे रोहयिष्येथे रोहयिष्यध्वे
रोहयिष्ये रोहयिष्यावहे रोहयिष्यामहे

अरोहयिष्यत अरोहयिष्येताम् अरोहयिष्यन्त
अरोहयिष्यथाः अरोहयिष्येथाम् अरोहयिष्यध्वम्
अरोहयिष्ये अरोहयिष्यावहि अरोहयिष्यामहि

व० रोपयति रोपयतः रोपयन्ति
रोपयसि रोपयथः रोपयथ
रोपयामि रोपयावः रोपयामः

स० रोपयेत रोपयेताम् रोपयेयुः
रोपयेः रोपयेतम् रोपयेत
रोपयेयम् रोपयेव रोपयेम

प० रोपयतु रोपयतात् रोपयताम् रोपयन्तु
रोपय रोपयतात् रोपयतम् रोपयत
रोपयाणि रोपयाव रोपयाम

ह्य० अरोपयत् अरोपयताम् अरोपयन्
अरोपयः अरोपयतम् अरोपयत
अरोपयम् अरोपयाव अरोपयाम

अ० अरूरुपत् अरूरुपताम् अरूरुपन्
अरूरुपः अरूरुपतम् अरूरुपत
अरूरुपम् अरूरुपाव अरूरुपाम

प० रोपयाञ्चकार रोपयाञ्चक्रतुः रोपयाञ्चक्रुः
रोपयाञ्चकर्थ रोपयाञ्चक्रथुः रोपयाञ्चक्र

रोपयाञ्चकार,चकर रोपयाञ्चकृव रोपयाञ्चकृम
रोपयाम्बभूव । रोपयामास ।

आ० रोप्यात् रोप्यास्ताम् रोप्यासुः
रोप्याः रोप्यास्तम् रोप्यास्त
रोप्यासम् रोप्यास्व रोप्यास्म

श्व० रोपयिता रोपयितारौ रोपयितारः
रोपयितासि रोपयितास्थः रोपयितास्थ
रोपयितास्मि रोपयितास्वः रोपयितास्मः

भ० रोपयिष्यति रोपयिष्यतः रोपयिष्यन्ति
रोपयिष्यसि रोपयिष्यथः रोपयिष्यथ
रोपयिष्यामि रोपयिष्यावः रोपयिष्यामः

क्रि० अरोपयिष्यत् अरोपयिष्यताम् अरोपयिष्यन्
अरोपयिष्यः अरोपयिष्यतम् अरोपयिष्यत
अरोपयिष्यम् अरोपयिष्याव अरोपयिष्याम

व० रोपयते रोपयेते रोपयन्ते
रोपयसे रोपयेथे रोपयध्वे
रोपये रोपयावहे रोपयामहे

स० रोपयेत रोपयेयाताम् रोपयेरन्
रोपयेथाः रोपयेयाथाम् रोपयेध्वम्
रोपयेय रोपयेवहि रोपयेमहि

प० रोपयताम् रोपयेताम् रोपयन्ताम्
रोपयस्व रोपयेथाम् रोपयध्वम्
रोपयै रोपयावहै रोपयामहै

ह्य० अरोपयत अरोपयेताम् अरोपयन्त
अरोपयथाः अरोपयेथाम् अरोपयध्वम्
अरोपये अरोपयावहि अरोपयामहि

अ० अरूरुपत अरूरुपेताम् अरूरुपन्त
अरूरुपथाः अरूरुपेथाम् अरूरुपध्वम्
अरूरुपे अरूरुपावहि अरूरुपामहि

प० रोपयाञ्चक्रे रोपयाञ्चक्राते रोपयाञ्चक्रिरे
रोपयाञ्चकृषे रोपयाञ्चक्राथे रोपयाञ्चकृढ्वे
रोपयाञ्चक्रे रोपयाञ्चकृवहे रोपयाञ्चकृमहे
रोपयाम्बभूव । रोपयामास ।

आ० रोपयिषीष्ट रोपयिषीयास्ताम् रोपयिषीरन्
रोपयिषीष्ठाः रोपयिषीयास्थाम् रोपयिषीढ्वम्
ध्वम्
रोपयिषीय रोपयिषीवहि रोपयिषीमहि

श्व० रोपयिता रोपयितारौ रोपयितारः
रोपयितासे रोपयितासाथे रोपयिताध्वे
रोपयिताहे रोपयितास्वहे रोपयितास्महे

भ० रोपयिष्यते रोपयिष्येते रोपयिष्यन्ते
रोपयिष्यसे रोपयिष्येथे रोपयिष्यध्वे
रोपयिष्ये रोपयिष्यावहे रोपयिष्यामहे

क्रि० अरोपयिष्यत अरोपयिष्येताम्
अरोपयिष्यन्त अरोपयिष्यथाः
अरोपयिष्येथाम् अरोपयिष्यध्वम्
अरोपयिष्ये अरोपयिष्यावहि
अरोपयिष्यामहि

पांक्

व० पालयति पालयतः पालयन्ति
पालयसि पालयथः पालयथ
पालयामि पालयावः पालयामः

स० पालयेत् पालयेताम् पालयेयुः
पालयेः पालयेतम् पालयेत
पालयेयम् पालयेव पालयेम

प० पालयतु पालयतात् पालयताम् पालयन्तु
पालय पालयतात् पालयतम् पालयत
पालयानि पालयाव पालयाम

ह्य० अपालयत् अपालयताम् अपालयन्
अपालयः अपालयतम् अपालयत
अपालयम् अपालयाव अपालयाम

अ० अपीपलत् अपीपलताम् अपीपलन्
अपीपलः अपीपलतम् अपीपलत
अपीपलम् अपीपलाव अपीपलाम

प० पालयाञ्चकार पालयाञ्चक्रतुः पालयाञ्चक्रुः
पालयाञ्चकर्थ पालयाञ्चक्रथुः पालयाञ्चक्र
पालयाञ्चकार-चकर पालयाञ्चकृव पालयाञ्चकृम

आ० पाल्यात् पाल्यास्ताम् पाल्यासुः

पाल्याः पाल्यास्तम् पाल्यास्त
पाल्यासम् पाल्यास्व पाल्यास्म
श्व० पालयिता पालयितारौ पालयितारः
पालयितासि पालयितास्थः पालयितास्थ
पालयितास्मि पालयितास्वः पालयितास्मः
भ० पालयिष्यति पालयिष्यतः पालयिष्यन्ति
पालयिष्यसि पालयिष्यथः पालयिष्यथ
पालयिष्यामि पालयिष्यावः पालयिष्यामः
क्रि० अपालयिष्यत् अपालयिष्यताम्
अपालयिष्यन् अपालयिष्यः
अपालयिष्यतम् अपालयिष्यत
अपालयिष्यम् अपालयिष्याव
अपालयिष्याम

व० पालयते पालयेते पालयन्ते
पालयसे पालयेथे पालयध्वे
पालये पालयावहे पालयामहे
स० पालयेत पालयेयाताम् पालयेरन्
पालयेथाः पालयेयाथाम् पालयेध्वम्
पालयेय पालयेवहि पालयेमहि
प० पालयताम् पालयेताम् पालयन्ताम्
पालयस्व पालयेथाम् पालयध्वम्
पालयै पालयावहै पालयामहै
ह्य० अपालयत अपालयेताम् अपालयन्त
अपालयथाः अपालयेथाम् अपालयध्वम्
अपालये अपालयावहि अपालयामहि
अ० अपीपलत अपीपलेताम् अपीपलन्त
अपीपलथाः अपीपलेथाम् अपीपलध्वम्
अपीपले अपीपलावहि अपीपलामहि
प० पालयाञ्चक्रे पालयाञ्चक्राते पालयाञ्चक्रिरे
पालयाञ्चकृषे पालयाञ्चक्राथे पालयाञ्चकृढ्वे
पालयाञ्चक्रे पालयाञ्चकृवहे पालयाञ्चकृमहे
पालयाम्बभूव । पालयामास ।
आ० पालयिषीष्ट पालयिषीयास्ताम्
पालयिषीरन् पालयिषीष्ठाः
पालयिषीयास्थाम् पालयिषीढ्वम्-ध्वम्
पालयिषीय पालयिषीवहि
पालयिषीमहि
श्व० पालयिता पालयितारौ पालयितारः
पालयितासे पालयितासाथे पालयिताध्वे
पालयिताहे पालयितास्वहे पालयितास्महे
भ० पालयिष्यते पालयिष्येते पालयिष्यन्ते
पालयिष्यसे पालयिष्येथे पालयिष्यध्वे
पालयिष्ये पालयिष्यावहे पालयिष्यामहे
क्रि० अपालयिष्यत अपालयिष्येताम्
अपालयिष्यन्त अपालयिष्यथाः
अपालयिष्येथाम् अपालयिष्यध्वम्
अपालयिष्ये अपालयिष्यामहि
अपालयिष्यामहि

वांकु–विधूननार्थे

व० उपवाजयति उपवाजयतः उपवाजयन्ति
उपवाजयसि उपवाजयथः उपवाजयथ
उपवाजयामि उपवाजयावः उपवाजयामः
स० उपवाजयेत् उपवाजयेताम् उपवाजयेयुः
उपवाजयेः उपवाजयेतम् उपवाजयेत
उपवाजयेयम् उपवाजयेव उपवाजयेम
प० उपवाजयतु,तात् उपवाजयताम् उपवाजयन्तु
उपवाजय „ उपवाजयतम् उपवाजयत
उपवाजयानि उपवाजयाव उपवाजयाम
ह्य० उपावाजयत् उपावाजयताम् उपावाजयन्
उपावाजयः उपावाजयतम् उपावाजयत
उपावाजयम् उपावाजयाव उपावाजयाम
अ० उपावीवजत् उपावीवजताम् उपावीवजन्
उपावीवजः उपावीवजतम् उपावीवजत
उपावीवजम् उपावीवजाव उपावीवजाम
प० उपवाजयाञ्चकार उपवाजयाञ्चक्रतुः
उपवाजयाञ्चक्रुः उपवाजयाञ्चकर्थ
उपवाजयाञ्चक्रथुः उपवाजयाञ्चक्र
उपवाजयाञ्चकार-चकर उपवाजयाञ्चकृव

उपवाजयाञ्चकृम

उपवाजयाम्बभूव । उपवाजयामास

आ० उपवाज्यात् उपवाज्यास्ताम् उपवाज्यासुः
उपवाज्याः उपवाज्यास्तम् उपवाज्यास्त
उपवाज्यासम् उपवाज्यास्व उपवाज्यास्म

श्व० उपवाजयिता उपवाजयितारौ
उपवाजयितारः उपवाजयितासि
उपवाजयितास्थः उपवाजयितास्थ
उपवाजयितास्मि उपवाजयितास्वः
उपवाजयितास्मः

भ० उपवाजयिष्यति उपवाजयिष्यतः
उपवाजयिष्यन्ति उपवाजयिष्यसि
उपवाजयिष्यथः उपवाजयिष्यथ
उपवाजयिष्यामि उपवाजयिष्यावः
उपवाजयिष्यामः

क्रि० उपावाजयिष्यत् उपावाजयिष्यताम्
उपावाजयिष्यन् उपावाजयिष्यः
उपावाजयिष्यतम् उपावाजयिष्यत
उपावाजयिष्यम् उपावाजयिष्याव
उपावाजयिष्याम

पा.

व० पाययति पाययतः पाययन्ति
पाययसि पाययथः पाययथ
पाययामि पाययावः पाययामः

स० पाययेत् पाययेताम् पयायेयुः
पायये: पाययेतम् पाययेत
पाययेयम् पाययेव पाययेम

प० पाययतु पाययतात् पाययताम् पाययन्तु
पायय पाययतात् पाययतम् पाययत
पाययानि पाययाव पाययाम

ह्य० अपाययत् अपाययताम् अपाययन्
अपाययः अपाययतम् अपाययत
अपाययम् अपाययाव अपाययाम

अ० अपीप्यत् अपीप्यताम् अपीप्यन्
अपीप्यः अपीप्यतम् अपीप्यत
अपीप्यम् अपीप्याव अपीप्याम

प० पाययाञ्चकार पाययाञ्चक्रतुः
पाययाञ्चक्रुः पाययाञ्चकर्थ
पाययाञ्चक्रथुः पाययाञ्चक्र
पाययाञ्चकार,चकर पाययाञ्चकृव
पाययाञ्चकृम

पाययाम्बभूव । पाययामास ।

आ० पाय्यात् पाय्यास्ताम् पाय्यासुः
पाय्याः पाय्यास्तम् पाय्यास्त
पाय्यासम् पाय्यास्व पाय्यास्म

श्व० पाययिता पाययितारौ पाययितारः
पाययितासि पाययितास्थः पाययितास्थ
पाययितास्मि पाययितास्वः पाययितास्मः

भ० पाययिष्यति पाययिष्यतः पाययिष्यन्ति
पाययिष्यसि पाययिष्यथः पाययिष्यथ
पाययिष्यामि पाययिष्यावः पाययिष्यामः

क्रि० अपाययिष्यत् अपाययिष्यताम्
अपाययिष्यन् अपाययिष्यः
अपाययिष्यतम् अपाययिष्यत
अपाययिष्यम् अपाययिष्याव अपाययिष्याम

व० पाययते पाययेते पाययन्ते
पाययसे पाययेथे पाययध्वे
पायये पाययावहे पाययामहे

स० पाययेत पाययेयाताम् पाययेरन्
पाययेथाः पाययेयाथाम् पाययेध्वम्
पाययेय पाययेवहि पाययेमहि

प० पाययताम् पाययेताम् पाययन्ताम्
पाययस्व पाययेथाम् पाययध्वम्
पाययै पाययावहै पाययामहै

ह्य० अपाययत अपाययेताम् अपाययन्त
अपाययथाः अपाययेथाम् अपाययध्वम्

अपायये अपाययावहि अपाययामहि
अ० अपीप्यत अपीप्येताम् अपीप्यन्त
अपीप्यथाः अपीप्येथाम् अपीप्यध्वम्
अपीप्ये अपीप्यावहि अपीप्यामहि
प० पाययाञ्चक्रे पाययाञ्चक्राते पाययाञ्चक्रिरे
पाययाञ्चकृषे पाययाञ्चक्राथे पाययाञ्चकृढ्वे
पाययाञ्चक्रे पाययाञ्चकृवहे पाययाञ्चकृमहे
पाययाम्बभूव । पाययामास ।
आ० पाययिषीष्ट पाययिषीयास्ताम् पाययिषीरन्
पाययिषीष्ठाः पाययिषीयास्थाम् पाययिषीढ्वम्
ध्वम्
पाययिषीय पाययिषीवहि पाययिषीमहि
श्व० पाययिता पाययितारौ पाययितारः
पाययितासे पाययितासाथे पाययिताध्वे
पाययिताहे पाययितास्वहे पाययितास्महे
भ० पाययिष्यते पाययिष्येते पाययिष्यन्ते
पाययिष्यसे पाययिष्येथे पाययिष्यध्वे
पाययिष्ये पाययिष्यावहे पाययिष्यामहे
क्रि० अपाययिष्यत अपाययिष्येताम्
अपाययिष्यन्त अपाययिष्यथाः
अपाययिष्येथाम् अपाययिष्यध्वम्
अपाययिष्ये अपाययिष्यावहि
अपाययिष्यामहि

शोंच्-शाययति । शाययते ।
अशीशयत् । अशीशयत ।
छोंच्-अवच्छाययति । अवच्छाययते ।
अवाचिच्छयत् । अवाचिच्छयत ।
षोंच्-सैं; वा अवसाययति । अवसाययते । अवासीसयत् । अवासीसयत ।
वेंग्-वाययति । वाययते । अवीवयत् ।
अवीवयत ।
व्येंग्-व्याययति । व्याययते । अविव्ययत्
अविव्ययत ।

व० ह्वाययति ह्वाययतः ह्वाययन्ति
ह्वाययसि ह्वाययथः ह्वाययथ
ह्वाययामि ह्वाययावः ह्वाययामः
स० ह्वाययेत् ह्वाययेताम् ह्वाययेयुः
ह्वाययेः ह्वाययेतम् ह्वाययेत
ह्वाययेयम् ह्वाययेव ह्वाययेम
प० ह्वाययतु ह्वाययतात् ह्वाययताम् ह्वाययन्तु
ह्वायय ,, ह्वाययतम् ह्वाययत
ह्वाययानि ह्वाययाव ह्वाययाम
ह्य० अह्वाययत् अह्वाययताम् अह्वाययन्
अह्वाययः अह्वाययतम् अह्वाययत
अह्वाययम् अह्वाययाव अह्वाययाम
अ० अजुहावत् अजुहावताम् अजुहावन्
अजुहावः अजुहावतम् अजुहावत
अजुहावम् अजुहावाव अजुहावाम
अजूहवत् अजूहवताम् अजूहवन्
अजूहवः अजूहवतम् अजूहवत
अजूहवम् अजूहवाव अजूहवाम
प० ह्वाययाञ्चकार ह्वाययाञ्चक्रतुः ह्वाययाञ्चक्रुः
ह्वाययाञ्चकर्थ ह्वाययाञ्चक्रथुः ह्वाययाञ्चक्र
ह्वाययाञ्चकार,चकर ह्वाययाञ्चकृव ह्वाययाञ्चकृम
ह्वाययाम्बभूव । ह्वाययामास ।
आ० ह्वाय्यात् ह्वाय्यास्ताम् ह्वाय्यासुः
ह्वाय्याः ह्वाय्यास्तम् ह्वाय्यास्त
ह्वाय्यासम् ह्वाय्यास्व ह्वाय्यास्म
श्व० ह्वाययिता ह्वाययितारौ ह्वाययितारः
ह्वाययितासि ह्वाययितास्थः ह्वाययितास्थ
ह्वाययितास्मि ह्वाययितास्वः ह्वाययितास्मः
भ० ह्वाययिष्यति ह्वाययिष्यतः ह्वाययिष्यन्ति
ह्वाययिष्यसि ह्वाययिष्यथः ह्वाययिष्यथ
ह्वाययिष्यामि ह्वाययिष्यावः ह्वाययिष्यामः
क्रि० अह्वाययिष्यत् अह्वाययिष्यताम्
अह्वाययिष्यन् अह्वाययिष्यः
अह्वाययिष्यतम् अह्वाययिष्यत
अह्वाययिष्यम् अह्वाययिष्याव

अह्वायिष्याम

ल० ह्वाययते ह्वाययेते ह्वाययन्ते
ह्वाययसे ह्वाययेथे ह्वाययध्वे
ह्वायये ह्वाययावहे ह्वाययामहे

स० ह्वाययेत ह्वाययेयाताम् ह्वाययेरन्
ह्वाययेथाः ह्वाययेयाथाम् ह्वाययेध्वम्
ह्वाययेय ह्वाययेवहि ह्वाययेमहि

प० ह्वाययताम् ह्वाययेताम् ह्वाययन्ताम्
ह्वाययस्व ह्वाययेथाम् ह्वाययध्वम्
ह्वाययै ह्वाययावहै ह्वाययामहै

ह्य० अह्वाययत अह्वाययेताम् अह्वाययन्त
अह्वाययथाः अह्वाययेथाम् अह्वाययध्वम्
अह्वायये अह्वाययावहि अह्वाययामहि

अ० अजुहावत अजुहावेताम् अजुहावन्त
अजुहावथाः अजुहावेथाम् अजुहावध्वम्
अजुहावे अजुहावावहि अजुहावामहि

अजूहवत अजूहवेताम् अजूहवन्त
अजूहवथाः अजूहवेथाम् अजूहवध्वम्
अजूहवे अजूहवावहि अजूहवामहि

प० ह्वाययाञ्चक्रे ह्वाययाञ्चक्राते ह्वाययाञ्चक्रिरे
ह्वाययाञ्चकृषे ह्वाययाञ्चक्राथे ह्वाययाञ्चकृढ्वे
ह्वाययाञ्चक्रे ह्वाययाञ्चकृवहे ह्वाययाञ्चकृमहे

ह्वाययाम्बभूव । ह्वाययामास ।

आ० ह्वाययिषीष्ट ह्वाययिषीयास्ताम् ह्वाययिषीरन्
ह्वाययिषीष्ठाः ह्वाययिषीयास्थाम् ह्वाययिषीढ्वम्
ध्वम्

ह्वाययिषीय ह्वाययिषीवहि ह्वाययिषीमहि

श्व० ह्वाययिता ह्वाययितारौ ह्वाययितारः
ह्वाययितासे ह्वाययितासाथे ह्वाययिताध्वे
ह्वाययिताहे ह्वाययितास्वहे ह्वाययितास्महे

भ० ह्वाययिष्यते ह्वाययिष्येते ह्वाययिष्यन्ते
ह्वाययिष्यसे ह्वाययिष्येथे ह्वाययिष्यध्वे
ह्वाययिष्ये ह्वाययिष्यावहे ह्वाययिष्यामहे

क्रि० अह्वाययिष्यत अह्वाययिष्येताम्
अह्वाययिष्यन्त अह्वाययिष्यथाः
अह्वाययिष्येथाम् अह्वाययिष्यध्वम्
अह्वाययिष्ये अह्वाययिष्यावहि अह्वाययिष्यामहि

स्फायैङ्

व० स्फावयति स्फावयतः स्फावयन्ति
स्फावयसि स्फावयथः स्फावयथ
स्फावयामि स्फावयावः स्फावयामः

स० स्फावयेत् स्फावयेताम् स्फावयेयुः
स्फावयेः स्फावयेतम् स्फावयेत
स्फावयेयम् स्फावयेव स्फावयेम

प० स्फावयतु,तात् स्फावयताम् स्फावयन्तु
स्फावय ,, स्फावयतम् स्फावयत
स्फावयानि स्फावयाव स्फावयाम

ह्य० अस्फावयत अस्फावयेताम् अस्फावयन्
अस्फावयः अस्फावयतम् अस्फावयत
अस्फावयम् अस्फावयाव अस्फावयाम

अ० अपिस्फवत् अपिस्फवताम् अपिस्फवन्
अपिस्फवः अपिस्फवतम् अपिस्फवत
अपिस्फवम् अपिस्फवाव अपिस्फवाम

प० स्फावयाञ्चकार स्फावयाञ्चक्रतुः
स्फावयाञ्चक्रुः स्फावयाञ्चकर्थ
स्फावयाञ्चक्रथुः स्फावयाञ्चक्र
स्फावयाञ्चकार,चकर स्फावयाञ्चकृव
स्फावयाञ्चकृम

स्फावयाम्बभूव । स्फावयामास ।

आ० स्फाव्यात् स्फाव्यास्ताम् स्फाव्यासुः
स्फाव्याः स्फाव्यास्तम् स्फाव्यास्त
स्फाव्यासम् स्फाव्यास्व स्फाव्यास्म

श्व० स्फावयिता स्फावयितारौ स्फावयितारः
स्फावयितासि स्फावयितास्थः स्फावयितास्थ
स्फावयितास्मि स्फावयितास्व स्फावयितास्मः

भ० स्फावयिष्यति स्फावयिष्यतः स्फावयिष्यन्ति
स्फावयिष्यसि स्फावयिष्यथः स्फावयिष्यथ

स्फावयिष्यामि स्फावयिष्याव: स्फावयिष्याम:
क्रि० अस्फावयिष्यत् अस्फावयिष्यताम्
अस्फावयिष्यन् अस्फावयिष्य:
अस्फावयिष्यतम् अस्फावयिष्यत
अस्फावयिष्यम् अस्फावयिष्याव
अस्फावयिष्याम

व० स्फावयते स्फावयेते स्फावयन्ते
स्फावयसे स्फावयेथे स्फावयध्वे
स्फावये स्फावयावहे स्फावयामहे
स० स्फावयेत स्फावयेयाताम् स्फावयेरन्
स्फावयेथा: स्फावयेयाथाम् स्फावयेध्वम्
स्फावयेय स्फावयेवहि स्फावयेमहि
प० स्फावयताम् स्फावयेताम् स्फावयन्ताम्
स्फावयस्व स्फावयेथाम् स्फावयध्वम्
स्फावयै स्फावयावहै स्फावयामहै
ह्य० अस्फावयत अस्फावयेताम् अस्फावयन्त
अस्फावयथा: अस्फावयेथाम् अस्फावयध्वम्
अस्फावये अस्फावयावहि अस्फावयामहि
अ० अपिस्फवत अपिस्फवेताम् अपिस्फवन्त
अपिस्फवथा: अपिस्फवेथाम् अपिस्फवध्वम्
अपिस्फवे अपिस्फवावहि अपिस्फवामहि
प० स्फावयाञ्चक्रे स्फावयाञ्चक्राते स्फावयाञ्चक्रिरे
स्फावयाञ्चकृषे स्फावयाञ्चक्राथे स्फावयाञ्चकृढ्वे
स्फावयाञ्चक्रे स्फावयाञ्चकृवहे स्फावयाञ्चकृमहे

स्फावयाम्बभूव । स्फावयामास ।

आ० स्फावयिषीष्ट स्फावयिषीयास्ताम्
स्फावयिषीरन् स्फावयिषीष्ठा:
स्फावयिषीयास्थाम् स्फावयिषीढ्वम् ध्वम्
स्फावयिषीय स्फावयिषीवहि
स्फावयिषीमहि
श्व० स्फावयिता स्फावयितारौ स्फावयितार:
स्फावयितासे स्फावयितासाथे स्फावयिताध्वे
स्फावयिताहे स्फावयितास्वहे स्फावयितास्महे
भ० स्फावयिष्यते स्फावयिष्येते स्फावयिष्यन्ते
स्फावयिष्यसे स्फावयिष्येथे स्फावयिष्यध्वे
स्फावयिष्ये स्फावयिष्यावहे स्फावयिष्यामहे
क्रि० अस्फावयिष्यत अस्फावयिष्येताम्
अस्फावयिष्यन्त अस्फावयिष्यथा:
अस्फावयिष्येथाम् अस्फावयिष्यध्वम्
अस्फावयिष्ये अस्फावयिष्यावहि
अस्फावयिष्यामहि

॥ शद्लृं–अगतावथ ॥

व० शातयति शातयत: शातयन्ति
शातयसि शातयथ: शातयथ
शातयामि शातयाव: शातयाम:
स० शातयेत् शातयेताम् शातयेयु:
शातये: शातयेतम् शातयेत
शातयेयम् शातयेव शातयेम
प० शातयतु शातयतात् शातयताम् शातयन्तु
शातय शातयतात् शातयतम् शातयत
शातयानि शातयाव शातयाम
ह्य० अशातयत् अशातयताम् अशातयन्
अशातय: अशातयतम् अशातयत
अशातयम् अशातयाव अशातयाम
अ० अशीशतत् अशीशतताम् अशीशतन्
अशीशत: अशीशततम् अशीशतत
अशीशतम् अशीशताव अशीशताम
प० शातयाञ्चकार शातयाञ्चक्रतु: शातयाञ्चक्रु:
शातयाञ्चकर्थ शातयाञ्चक्रथु: शातयाञ्चक्र
शातयाञ्चकार,चकर शातयाञ्चकृव
शातयाञ्चकृम

शातयाम्बभूव । शातयामास ।

आ० शात्यात् शात्यास्ताम् शात्यासु:
शात्या: शात्यास्तम् शात्यास्त
शात्यासम् शात्यास्व शात्यास्म
श्व० शातयिता शातयितारौ शातयितार:
शातयितासि शातयितास्थ: शातयितास्थ

शातयितास्मि शातयितास्वः शातयितास्मः
भ० शातयिष्यति शातयिष्यतः शातयिष्यन्ति
शातयिष्यसि शातयिष्यथः शातयिष्यथ
शातयिष्यामि शातयिष्यावः शातयिष्यामः
क्रि० अशातयिष्यत् अशातयिष्यताम्
अशातयिष्यन् अशातयिष्यः
अशातयिष्यतम् अशातयिष्यत
अशातयिष्यम् अशातयिष्याव
अशातयिष्याम

व० शातयते शातयेते शातयन्ते
शातयसे शातयेथे शातयध्वे
शातये शातयावहे शातयामहे
स० शातयेत शातयेयाताम् शातयेरन्
शातयेथाः शातयेयाथाम् शातयेध्वम्
शातयेय शातयेवहि शातयेमहि
प० शातयताम् शातयेताम् शातयन्ताम्
शातयस्व शातयेथाम् शातयध्वम्
शातयै शातयावहै शातयामहै
ह्य० अशातयत अशातयेताम् अशातयन्त
अशातयथाः अशातयेथाम् अशातयध्वम्
अशातये अशातयावहि अशातयामहि
अ० अशीशतत अशीशतेताम् अशीशतन्त
अशीशतथाः अशीशतेथाम् अशीशतध्वम्
अशीशते अशीशतावहि अशीशतामहि
प० शातयाञ्चक्रे शातयाञ्चक्राते शातयाञ्चक्रिरे
शातयाञ्चकृषे शातयाञ्चक्राथे शातयाञ्चकृढ्वे
शातयाञ्चक्रे शातयाञ्चकृवहे शातयाञ्चकृमहे

शातयाम्बभूव । शातयामास ।

आ० शातयिषीष्ट शातयिषीयास्ताम् शातयिषीरन्
शातयिषीष्ठाः शातयिषीयास्थाम् शातयिषीढ्वम्
ध्वम्
शातयिषीय शातयिषीवहि शातयिषीमहि
श्व० शातयिता शातयितारौ शातयितारः

शातयितासे शातयितासाथे शातयिताध्वे
शातयिताहे शातयितास्वहे शातयितास्महे
भ० शातयिष्यते शातयिष्येते शातयिष्यन्ते
शातयिष्यसे शातयिष्येथे शातयिष्यध्वे
शातयिष्ये शातयिष्यावहे शातयिष्यामहे
अशातयिष्यत अशातयिष्येताम् अशातयिष्यन्त
अशातयिष्यथाः अशातयिष्येथाम्
अशातयिष्यध्वम् अशातयिष्ये
अशातयिष्यावहि अशातयिष्यामहि

गतौ तु–गोपालको गाः शादयति ।
अशीशदत् ।

षह–साहयति । साहयते । न्यसीषहत् ।
न्यसीषहत ।

षिवु–परिसेवयति । परिसेवयते ।
पर्यसीषिवत् । पर्यसीषिवत ।

स्तम्भ–विस्तम्भयति । विस्तम्भयते ।
व्यतस्तम्भत् । व्यतस्तम्भत ।

अनक्–प्राणयति । प्राणिणत् ।

उब्जत्–उब्जयति । उब्जयते । औब्जिजत्
औब्जिजत ।

अट्ट–अट्टयति । अट्टयते । आट्टिटत् ।
आट्टिटत ।

उन्देप्–उन्दयति । उन्दयते । औन्दिदत् ।
औन्दिदत ।

अर्च–अर्चयति । अर्चयते । आर्चिचत् ।
आर्चिचत ।

रभ

व० आरम्भयति आरम्भयतः आरम्भयन्ति
आरम्भयसि आरम्भयथः आरम्भयथ
आरम्भयामि आरम्भयावः आरम्भयामः
स० आरम्भयेत् आरम्भयेताम् आरम्भयेयुः
आरम्भयेः आरम्भयेतम् आरम्भयेत

आरम्भयेयम् आरम्भयेव आरम्भयेम
प०. आरम्भयतु आरम्भयताम् आरम्भयन्तु
आरम्भयतात्
आरम्भय „ आरम्भयतम् आरम्भयत
आरम्भयाणि आरम्भयाव आरम्भयाम
ह्य० आरम्भयत् आरम्भयताम् आरम्भयन्
आरम्भयः आरम्भयतम् आरम्भयत
आरम्भयम् आरम्भयाव आरम्भयाम
अ० आररम्भत् आररम्भताम् आररम्भन
आररम्भः आररम्भतम् आररम्भत
आररम्भम् आररम्भाव आररम्भाम
प० आरम्भयाञ्चकार आरम्भयाञ्चक्रतुः
आरम्भयाञ्चक्रुः आरम्भयाञ्चकर्थ
आरम्भयाञ्चक्रथुः आरम्भयाञ्चक्र
आरम्भयाञ्चकार-चकर आरम्भयाञ्चकृव
आरम्भयाञ्चकृम
आरम्भयाम्बभूव । आरम्भयामास ।
आ० आरम्भ्यात् आरम्भ्यास्ताम् आरम्भ्यासुः
आरम्भ्याः आरम्भ्यास्तम् आरम्भ्यास्त
आरम्भ्यासम् आरम्भ्यास्व आरम्भ्यास्म
श्व० आरम्भयिता आरम्भयितारौ
आरम्भयितारः आरम्भयितासि
आरम्भयितास्थः आरम्भयितास्थ
आरम्भयितास्मि आरम्भयितास्वः
आरम्भयितास्मः
भ० आरम्भयिष्यति आरम्भयिष्यतः
आरम्भयिष्यन्ति आरम्भयिष्यसि
आरम्भयिष्यथः आरम्भयिष्यथ
आरम्भयिष्यामि आरम्भयिष्यावः
आरम्भयिष्यामः
क्रि० आरम्भयिष्यत् आरम्भयिष्यताम्
आरम्भयिष्यन् आरम्भयिष्यः
आरम्भयिष्यतम् आरम्भयिष्यत
आरम्भयिष्यम् आरम्भयिष्याव
आरम्भयिष्याम
व० आरम्भयते आरम्भयेते आरम्भयन्ते
आरम्भयसे आरम्भयेथे आरम्भयध्वे
आरम्भये आरम्भयावहे आरम्भयामहे
स० आरम्भयेत आरम्भयेयाताम् आरम्भयेरन्
आरम्भयेथाः आरम्भयेयाथाम्
आरम्भयेध्वम् आरम्भयेय
आरम्भयेवहि आरम्भयेमहि
प० आरम्भयताम् आरम्भयेताम्
आरम्भयन्ताम् आरम्भयस्व
आरम्भयेथाम् आरम्भयध्वम्
आरम्भयै आरम्भयावहै
आरम्भयामहै
ह्य० आरम्भयत आरम्भयेताम् आरम्भयन्त
आरम्भयथाः आरम्भयेथाम् आरम्भयध्वम्
आरम्भये आरम्भयावहि आरम्भयामहि
अ० आररम्भत आररम्भेताम् आररम्भन्त
आररम्भथाः आररम्भेथाम् आररम्भध्वम्
आररम्भे आररम्भावहि आररम्भामहि
प० आरम्भयाञ्चक्रे आरम्भयाञ्चक्राते
आरम्भयाञ्चक्रिरे आरम्भयाञ्चकृषे
आरम्भयाञ्चक्राथे आरम्भयाञ्चकृढ्वे
आरम्भयाञ्चक्रे आरम्भयाञ्चकृवहे
आरम्भयाञ्चकृमहे
आरम्भयाम्बभूव । आरम्भयामास ।
आ० आरम्भयिषीष्ट आरम्भयिषीयास्ताम्
आरम्भयिषीरन् आरम्भयिषीष्ठाः
आरम्भयिषीयास्थाम् आरम्भयिषीढ्वमध्वम्
आरम्भयिषीय आरम्भयिषीवहि
आरम्भयिषीमहि
श्व० आरम्भयिता आरम्भयितारौ
आरम्भयितारः आरम्भयितासे
आरम्भयितासाथे आरम्भयिताध्वे
आरम्भयिताहे आरम्भयितास्वहे आरम्भयितास्महे

भ० आरम्भयिष्यते आरम्भयिष्येते
आरम्भयिष्यन्ते आरम्भयिष्यसे
आरम्भयिष्येथे आरम्भयिष्यध्वे
आरम्भयिष्ये आरम्भयिष्यावहे
आरम्भयिष्यामहे

क्रि० आरम्भयिष्यत आरम्भयिष्येताम्
आरम्भयिष्यन्त आरम्भयिष्यथाः
आरम्भयिष्येथाम् आरम्भयिष्यध्वम्
आरम्भयिष्ये आरम्भयिष्यावहि
आरम्भयिष्यामहि

लभ

व० लम्भयति लम्भयतः लम्भयन्ति
लम्भयसि लम्भयथः लम्भयथ
लम्भयामि लम्भयावः लम्भयामः

स० लम्भयेत् लम्भयेताम् लम्भयेयुः
लम्भयेः लम्भयेतम् लम्भयेत
लम्भयेयम् लम्भयेव लम्भयेम

प० लम्भयतु लम्भयतात् लम्भयताम् लम्भयन्तु
लम्भय लम्भयतात् लम्भयतम् लम्भयत
लम्भयानि लम्भयाव लम्भयाम

ह्य० अलम्भयत् अलम्भयताम् अलम्भयन्
अलम्भयः अलम्भयतम् अलम्भयत
अलम्भयम् अलम्भयाव अलम्भयाम

अ० अललम्भत् अललम्भताम् अललम्भन्
अललम्भः अललम्भतम् अललम्भत
अललम्भम् अललम्भाव अललम्भाम

प० लम्भयाञ्चकार लम्भयाञ्चक्रतुः लम्भयाञ्चक्रुः
लम्भयाञ्चकर्थ लम्भयाञ्चक्रथुः लम्भयाञ्चक्र
लम्भयाञ्चकार,चकर लम्भयाञ्चकृव
लम्भयाञ्चकृम

लम्भयाम्बभूव । लम्भयामास ।

आ० लम्भ्यात् लम्भ्यास्ताम् लम्भ्यासुः
लम्भ्याः लम्भ्यास्तम् लम्भ्यास्त
लम्भ्यासम् लम्भ्यास्व लम्भ्यास्म

श्व० लम्भयिता लम्भयितारौ लम्भयितारः
लम्भयितासि लम्भयितास्थः लम्भयितास्थ
लम्भयितास्मि लम्भयितास्वः लम्भयितास्मः

भ० लम्भयिष्यति लम्भयिष्यतः लम्भयिष्यन्ति
लम्भयिष्यसि लम्भयिष्यथः लम्भयिष्यथ
लम्भयिष्यामि लम्भयिष्यावः लम्भयिष्यामः

क्रि० अलम्भयिष्यत् अलम्भयिष्यताम्
अलम्भयिष्यन् अलम्भयिष्यः
अलम्भयिष्यतम् अलम्भयिष्यत
अलम्भयिष्यम् अलम्भयिष्याव
अलम्भयिष्याम

व० लम्भयते लम्भयेते लम्भयन्ते
लम्भयसे लम्भयेथे लम्भयध्वे
लम्भये लम्भयावहे लम्भयामहे

स० लम्भयेत लम्भयेयाताम् लम्भयेरन्
लम्भयेथाः लम्भयेयाथाम् लम्भयेध्वम्
लम्भयेय लम्भयेवहि लम्भयेमहि

प० लम्भयताम् लम्भयेताम् लम्भयन्ताम्
लम्भयस्व लम्भयेथाम् लम्भयध्वम्
लम्भयै लम्भयावहै लम्भयामहै

ह्य० अलम्भयत अलम्भयेताम् अलम्भयन्त
अलम्भयथाः अलम्भयेथाम् अलम्भयध्वम्
अलम्भये अलम्भयावहि अलम्भयामहि

अ० अललम्भत अललम्भेताम अललम्भन्त
अललम्भथाः अललम्भेथाम् अललम्भध्वम्
अललम्भे अललम्भावहि अललम्भामहि

प० लम्भयाञ्चक्रे लम्भयाञ्चक्राते लम्भयाञ्चक्रिरे
लम्भयाञ्चकृषे लम्भयाञ्चक्राथे लम्भयाञ्चकृढ्वे
लम्भयाञ्चक्रे लम्भयाञ्चकृवहे लम्भयाञ्चकृमहे
लम्भयाम्बभूव । लम्भयामास ।

आ० लम्भयिषीष्ट लम्भयिषीयास्ताम्
लम्भयिषीरन् लम्भयिषीष्ठाः
लम्भयिषीयास्थाम् लम्भयिषीढ्वम्-ध्वम्
लम्भयिषीय लम्भयिषीवहि लम्भयिषीमहि

श्व० लम्भयिता लम्भयितारौ लम्भयितारः
लम्भयितासे लम्भयितासाथे लम्भयिताध्वे
लम्भयिताहे लम्भयितास्वहे लम्भयितास्महे
भ० लम्भयिष्यते लम्भयिष्येते लम्भयिष्यन्ते
लम्भयिष्यसे लम्भयिष्येथे लम्भयिष्यध्वे
लम्भयिष्ये लम्भयिष्यावहे लम्भयिष्यामहे
क्रि० अलम्भयिष्यत अलम्भयिष्येताम्
अलम्भयिष्यन्त अलम्भयिष्यथाः
अलम्भयिष्येथाम् अलम्भयिष्यध्वम्
अलम्भयिष्ये अलम्भयिष्यामहि
अलम्भयिष्यामहि

॥ ईर्ष्य ॥

व० ईर्ष्ययति ईर्ष्ययतः ईर्ष्ययन्ति
ईर्ष्ययसि ईर्ष्ययथः ईर्ष्ययथ
ईर्ष्ययामि ईर्ष्ययावः ईर्ष्ययामः
स० ईर्ष्ययेत् ईर्ष्ययेताम् ईर्ष्ययेयुः
ईर्ष्ययेः ईर्ष्ययेतम् ईर्ष्ययेत
ईर्ष्ययेयम् ईर्ष्ययेव ईर्ष्ययेम
प० ईर्ष्ययतु,तात् ईर्ष्ययताम् ईर्ष्ययन्तु
ईर्ष्यय ,, ईर्ष्ययतम् ईर्ष्ययत
ईर्ष्ययाणि ईर्ष्ययाव ईर्ष्ययाम
ह्य० ऐर्ष्ययत् ऐर्ष्ययताम् ऐर्ष्ययन्
ऐर्ष्ययः ऐर्ष्ययतम् ऐर्ष्ययत
ऐर्ष्ययम् ऐर्ष्ययाव ऐर्ष्ययाम
अ० ऐर्ष्यियत् ऐर्ष्यियताम् ऐर्ष्यियन्
ऐर्ष्यियः ऐर्ष्यियतम् ऐर्ष्यियत
ऐर्ष्यियम् ऐर्ष्यियाव ऐर्ष्यियाम
मतान्तरे
ऐर्षिष्यत् ऐर्षिष्यताम् ऐर्षिष्यन् इ०
प० ईर्ष्ययाञ्चकार ईर्ष्ययाञ्चक्रतुः
ईर्ष्ययाञ्चक्रुः ईर्ष्ययाञ्चकर्थ
ईर्ष्ययाञ्चक्रथुः ईर्ष्ययाञ्चक्र
ईर्ष्ययाञ्चकार,चकर ईर्ष्ययाञ्चकृव
ईर्ष्ययाञ्चकृम

ईर्ष्ययाम्बभूव । ईर्ष्ययामास ।
आ- ईर्ष्यात् ईर्ष्यास्ताम् ईर्ष्यासुः
ईर्ष्याः ईर्ष्यास्तम् ईर्ष्यास्त
ईर्ष्यासम् ईर्ष्यास्व ईर्ष्यास्म
श्व० ईर्ष्ययिता ईर्ष्ययितारौ ईर्ष्ययितारः
ईर्ष्ययितासि ईर्ष्ययितास्थः ईर्ष्ययितास्थ
ईर्ष्ययितास्मि ईर्ष्ययितास्वः ईर्ष्ययितास्मः
भ० ईर्ष्ययिष्यति ईर्ष्ययिष्यतः
ईर्ष्ययिष्यन्ति ईर्ष्ययिष्यसि
ईर्ष्ययिष्यथः ईर्ष्ययिष्यथ
ईर्ष्ययिष्यामि ईर्ष्ययिष्यावः
ईर्ष्ययिष्यामः
क्रि० ऐर्ष्ययिष्यत् ऐर्ष्ययिष्यताम् ऐर्ष्ययिष्यन्
ऐर्ष्ययिष्यः ऐर्ष्ययिष्यतम् ऐर्ष्ययिष्यत
ऐर्ष्ययिष्यम् ऐर्ष्ययिष्याव ऐर्ष्ययिष्याम

व० ईर्ष्ययते ईर्ष्ययेते ईर्ष्ययन्ते
ईर्ष्ययसे ईर्ष्ययेथे ईर्ष्ययध्वे
ईर्ष्यये ईर्ष्ययावहे ईर्ष्ययामहे
स० ईर्ष्ययेत ईर्ष्ययेयाताम् ईर्ष्ययेरन्
ईर्ष्ययेथाः ईर्ष्ययेयाथाम् ईर्ष्ययेध्वम्
ईर्ष्ययेय ईर्ष्ययेवहि ईर्ष्ययेमहि
प० ईर्ष्ययताम् ईर्ष्ययेताम् ईर्ष्ययन्ताम्
ईर्ष्ययस्व ईर्ष्ययेथाम् ईर्ष्ययध्वम्
ईर्ष्ययै ईर्ष्ययावहै ईर्ष्ययामहै
ह्य० ऐर्ष्ययत ऐर्ष्ययेताम् ऐर्ष्ययन्त
ऐर्ष्ययथाः ईर्ष्ययेथाम् ईर्ष्ययध्वम्
ऐर्ष्यये ईर्ष्ययावहि ऐर्ष्ययामहि
अ० ऐर्ष्यियत ऐर्ष्यियेताम् ऐर्ष्यियन्त
ऐर्ष्यियथाः ऐर्ष्यियेथाम् ऐर्ष्यियध्वम्
ऐर्ष्यिये ऐर्ष्यियावहि ऐर्ष्यियामहि
मतान्तरे
ऐर्षिष्यत ऐर्षिष्येताम् ऐर्षिष्यन्त इ०
प० ईर्ष्ययाञ्चक्रे ईर्ष्ययाञ्चक्राते
ईर्ष्ययाञ्चक्रिरे ईर्ष्ययाञ्चकृषे
ईर्ष्ययाञ्चक्राथे ईर्ष्ययाञ्चकृढ्वे
ईर्ष्ययायाञ्चक्रे ईर्ष्ययाञ्चकृवहे

गमयाम्बभूव । गमयामास ।

आ० गमयिषीष्ट गमयिषीयास्ताम् गमयिषीरन्
गमयिषीष्ठाः गमयिषीयास्थाम् गमयिषीढ्वम्
ध्वम्
गमयिषीय गमयिषीवहि गमयिषीमहि

श्व० गमयिता गमयितारौ गमयितारः
गमयितासे गमयितासाथे गमयिताध्वे
गमयिताहे गमयितास्वहे गमयितास्महे

भ० गमयिष्यते गमयिष्येते गमयिष्यन्ते
गमयिष्यसे गमयिष्येथे गमयिष्यध्वे
गमयिष्ये गमयिष्यावहे गमयिष्यामहे

क्रि० अगमयिष्यत अगमयिष्येताम्
अगमयिष्यन्त अगमयिष्यथाः
अगमयिष्येथाम् अगमयिष्यध्वम्
अगमयिष्ये अगमयिष्यावहि
अगमयिष्यामहि

एवं–अधिगमयति । अधिगमयतः ।
अधिगमयन्ति । इत्यादि ॥

ज्ञानेऽर्थे तु–

व० प्रत्याययति प्रत्याययतः प्रत्याययन्ति
प्रत्याययसि प्रत्याययथः प्रत्याययथ
प्रत्याययामि प्रत्याययावः प्रत्याययामः

स० प्रत्याययेत् प्रत्याययेताम् प्रत्याययेयुः
प्रत्याययेः प्रत्याययेतम् प्रत्याययेत
प्रत्याययेयम् प्रत्याययेव प्रत्याययेम

प० प्रत्याययतु प्रत्याययताम् प्रत्याययन्तु
प्रत्याययतात्
प्रत्यायय ,, प्रत्याययतम् प्रत्याययत
प्रत्याययानि प्रत्याययाव प्रत्याययाम

ह्य० प्रत्याययत् प्रत्याययताम् प्रत्याययन्
प्रत्याययः प्रत्याययतम् प्रत्याययत
प्रत्याययम् प्रत्याययाव प्रत्याययाम

अ० प्रत्यायियत् प्रत्यायियताम् प्रत्यायियन्
प्रत्यायियः प्रत्यायियतम् प्रत्यायियत
प्रत्यायियम् प्रत्यायियाव प्रत्यायियाम

प० प्रत्याययाञ्चकार प्रत्याययाञ्चक्रतुः
प्रत्याययाञ्चक्रुः प्रत्याययाञ्चकर्थ
प्रत्याययाञ्चक्रथुः प्रत्याययाञ्चक्र
प्रत्याययाञ्चकार-चकर प्रत्याययाञ्चकृव
प्रत्याययाञ्चकृम

प्रत्याययाम्बभूव । प्रत्याययामास ।

आ० प्रत्याय्यात् प्रत्याय्यास्ताम् प्रत्याय्यासुः
प्रत्याय्याः प्रत्याय्यास्तम् प्रत्याय्यास्त
प्रत्याय्यासम् प्रत्याय्यास्व प्रत्याय्यास्म

श्व० प्रत्याययिता प्रत्याययितारौ प्रत्याययितारः
प्रत्याययितासि प्रत्याययितास्थः
प्रत्याययितास्थ प्रत्याययितास्मि
प्रत्याययितास्वः प्रत्याययितास्मः

भ० प्रत्याययिष्यति प्रत्याययिष्यतः
प्रत्याययिष्यन्ति प्रत्याययिष्यसि
प्रत्याययिष्यथः प्रत्याययिष्यथ
प्रत्याययिष्यामि प्रत्याययिष्यावः
प्रत्याययिष्यामः

क्रि० प्रत्याययिष्यत् प्रत्याययिष्यताम्
प्रत्याययिष्यन् प्रत्याययिष्यः
प्रत्याययिष्यतम् प्रत्याययिष्यत
प्रत्याययिष्यम् प्रत्याययिष्याव
प्रत्याययिष्याम

व० प्रत्याययते प्रत्याययेते प्रत्याययन्ते
प्रत्याययसे प्रत्याययेथे प्रत्याययध्वे
प्रत्यायये प्रत्याययावहे प्रत्याययामहे

स० प्रत्याययेत प्रत्याययेयाताम् प्रत्याययेरन्
प्रत्याययेथाः प्रत्याययेयाथाम् प्रत्याययेध्वम्
प्रत्याययेय प्रत्याययेवहि प्रत्याययेमहि

प० प्रत्याययताम् प्रत्याययेताम्
प्रत्याययन्ताम् प्रत्याययस्व
प्रत्याययेथाम् प्रत्याययध्वम्

प्रत्यायये प्रत्याययावहै
प्रत्याययामहै

ल० प्रत्याययत प्रत्याययेताम् प्रत्याययन्त
प्रत्याययथाः प्रत्याययेथाम् प्रत्याययध्वम्
प्रत्यायये प्रत्याययावहि प्रत्याययामहि

अ० प्रत्यायियत प्रत्यायियेताम् प्रत्यायियन्त
प्रत्यायियथाः प्रत्यायियेथाम् प्रत्यायियध्वम्
प्रत्यायिये प्रत्यायियावहि प्रत्यायियामहि

प० प्रत्याययाञ्चक्रे प्रत्याययाञ्चक्राते
प्रत्याययाञ्चक्रिरे प्रत्याययाञ्चकृषे
प्रत्याययाञ्चक्राथे प्रत्याययाञ्चकृढ्वे
प्रत्याययाञ्चक्रे प्रत्याययाञ्चकृवहे
प्रत्याययाञ्चकृमहे

प्रत्याययाम्बभूव । प्रत्याययामास ।

आ० प्रत्याययिषीष्ट प्रत्याययिषीयास्ताम्
प्रत्याययिषीरन् प्रत्याययिषीष्ठाः
प्रत्याययिषीयास्थाम् प्रत्याययिषीढ्वम् ध्वम्
प्रत्याययिषीय प्रत्याययिषीवहि
प्रत्याययिषीमहि

श्व० प्रत्याययिता प्रत्याययितारौ
प्रत्याययितारः प्रत्याययितासे
प्रत्याययितासाथे प्रत्याययिताध्वे
प्रत्याययिताहे प्रत्याययितास्वहे
प्रत्याययितास्महे

भ० प्रत्याययिष्यते प्रत्याययिष्येते
प्रत्याययिष्यन्ते प्रत्याययिष्यसे
प्रत्याययिष्येथे प्रत्याययिष्यध्वे
प्रत्याययिष्ये प्रत्याययिष्यामहे
प्रत्याययिष्यामहे

क्रि० प्रत्याययिष्यत प्रत्याययिष्येताम्
प्रत्याययिष्यन्त प्रत्याययिष्यथाः
प्रत्याययिष्येथाम् प्रत्याययिष्यध्वम्
प्रत्याययिष्ये प्रत्याययिष्यावहि
प्रत्याययिष्यामहि

## ॥ इति णिगन्तप्रक्रियायां कतिपयधातूनां विस्तरतो रूपाणि ॥

### ॥ अथ भ्वादिक्रमेण कतिपयधातूनां संक्षेपतो रूपाण्युपदर्श्यन्ते—

॥ भ्वादिः ॥

| | | |
|---|---|---|
| ध्मा | ध्मापयति-ते । अदिध्मपत् त । | |
| म्ना | म्नापयति-ते । अमिम्नपत्-त । | |
| दाम् | दापयति-ते । अदीदपत्-त । | |
| स्नु | स्नावयति-ते । असुस्नवत्-त । | |
| सृ | सारयति । असीसरत् । | |
| तॄ | तारयति-ते । अतीतरत्-त । | |
| दधे | धापयति-ते । अदीधपत्-त । | |
| ध्यै | ध्यापयति-ते । अदिध्यपत्-त । | |
| गै | गापयति (ते) । अजीगपत् (त) । | |
| लघु | लङ्घयति (ते) । अललङ्घत् (त) । | |
| शुच | शोचयति (ते) । अशूशुचत् (त) । | |
| लुञ्च | लुञ्चयति (ते) । अलुलुञ्चत् (त) । | |
| अर्च | अर्चयति (ते) । आर्चिचत् (त) । | |
| अञ्चु | अञ्चयति (ते) । आञ्चिचत् (त) । | |
| वञ्चु | वञ्चयति (ते) । अववञ्चत् (त) । | |
| वाञ्छु | वाञ्छयति (ते) । अववाञ्छत् (त) | |
| व्रज | प्रव्राजयति (ते) । प्राविव्रजत् (त) । | |
| अर्ज | अर्जयति (ते) । आर्जिजत् (त) । | |
| पजु | पञ्जयति । पेजिजत् । | |
| तर्ज | तर्जयति (ते) । अततर्जत् (त) । | |
| गर्ज | गर्जयति (ते) । अजगर्जत् (त) । | |
| त्यज | त्याजयति (ते) । अतित्यजत् (त) । | |

षञ्ज सञ्जयति (ते) । अससञ्जत् (त)
कटे णौ अद्यतन्यामेवास्य प्रयोगो दृश्यते – प्रचीकटत् ।
शट शाटयति (ते) । अशीशटत् (त)
खिट खेटयति (ते) । अचीखिटत् (त)
णट नत्यर्थे । नटयति ते । अनीनटत्–त
नृत्तौ हिंसायाञ्च–नाटयति (ते] । अनीनटत् (त) ।
उन्नाटयति (ते) । उदनीनटत् (त)
लुट लोटयति (ते) । अलूलुटत (त) ।
अलुलोटत् (त) ।
अट आटयति । आटिटत् ।
पट पाटयति । अपीपटत् ।
कट णौ प्रपूर्वस्यास्याद्यतन्यामेव प्रयोगः, प्राचीकटत् ।
लुटु लुण्टयति (ते) । अलुलुण्टत (त)
स्फुट स्फोटयति (ते) । अपुस्फुटत् (त)
पठ पाठयति (ते) । अपीपठत् (त) ।
हठ हाठयति (ते) । अजीहठत् (त) ।
क्रीडृ क्रीडयति । अचिक्रीडत् ।
लड लाडयति (ते) । अलीलडत (त)
लडयति (त) लालयति (ते) ।
अलीललत् (ते)
अड्ड अड्डयति (ते) । अड्डिडत (त) ।
रण राणयति (ते) । अरराणत् (त) ।
अरीरणत् (त) ।
भण भाणयति (ते) । अबभाणत् (त) ।
अबीभणत् । (त)
कण काणयति (ते) । अचकाणत् ।
अचीकणत् (त) ।
क्वण क्वाणयति (ते) । अचिक्वणत् (त)
ओणृ ओणयति (ते) । औणिणत् (त) ।
चितैः चेतयति (ते) । अचीचितत् (त)
अत आतयति । आतितत् ।

श्च्युतृ श्च्यातयति [ते) । अचुश्च्युतत् (त)
खादृ खादयति । अचखादत् ।
गद गादयति (ते) । अजीगदत् (त)
इदु इन्दयति (ते) । ऐन्दिदत । (त)
णिदु निन्दयति (ते) । अनिनिन्दत् (त)
टुनदु नन्दयति (ते] । अननन्दत् (त)
क्रदु क्रन्दयति (ते) । अचक्रन्दत् (त)
स्कन्दृ स्कन्दयति (ते) । अचस्कन्दत् (त)
षिधू निषेधयति (ते) । न्यषीषिधत् (त)
ध्वन शब्दार्थे ध्वनयति (ते) अन्यत्रार्थे तु ध्वानयति (ते) अदिध्वनत् (त)
स्वन स्वानयति (ते) । असिस्वनत् (त)
अशनार्थे तु–विस्वाणयति । अवस्वाणयति व्यषिष्वणत् । अवाषिष्वणत
गुपौ–गोपयति (ते) । अजूगुपत् (त)
गोपाययति, ते । अजुगोपायत्, त ।
तपं–तापयति (ते) । अतीतपत् (त) ।
धूप–धूपायति ते ॥ अदूधुपत (त) ।
धूपाययति (ते) । अदुधुपाययत् (त)
लप–लापयति (ते) । अललापत् (त)
अलीलपत् ।
जल्प–जल्पयति (ते) । अजजल्पत् (त)
जप–जापयति (ते) । अजीजपत् (त)
सृप्लं–सर्पयति । अससर्पत् । असीसृपत्
चुप–चोपयति । अचूचुपत् ।
चुबु–चुम्बयति ते । अचुचुम्बत (त)
जिमू–जेमयति । अजीजिमत् ।
क्रमू–क्रमयति । अचिक्रमत् ।
यमूं–परिवेषणे यामयति । अयीयमत् ।
अपरिवेषणे यमयति । अयीयमत ।
आयमयते । आयीयमत ।
चर–विचारयति । व्यचीचरत् ।
उच्चारयति, ते उदचीचरत । (त)
दल–दालयति ते । अदीदलत (त)

मील–मीलयति (ते) । अमीमिलत् ।
अमिमीलत् (त)
मूल–उन्मूलयति (ते) । उदमूमुलत (त)।
फल–फालयति, ते । अपीफलत्, त ।
फुल–फुल्लयति (ते) । अपुफुल्लत् (त) ।
वेल–उद्वेलयति । उदविवेलत ।
खेल–खेलयति । अचिखेलत् ।
स्खल–स्खलयति । अचिस्खलत् ।
गल–गालयति । अजीगलत् । उद्गालयते।
उदजीगलत् ।
चर्व–चर्वयति । अचिचर्वत् ।
गर्व–गर्वयति । अजिगर्वत् ।
जीव–जीवयति अजिजीवत अजीजिवत् त
दृश्–दर्शयति (ते) अदीदृशत अददर्शत् त
घुर्ष–घोषयति (ते) अजूघुषत् (त)
कृष–कर्षयति (ते) अचीकृषत् अचकर्षत् त
भष–भाषयति । अबीभषत ।
विष्–वेषयति (ते) अवीविषत (त)
मृष्–मर्षयति (ते) अमीमृषत अममर्षत् त
प्लुष्–प्लोषयति (ते) अपुप्लुषत (त)
घृष्–घर्षयति (ते) अजीघृषत अजघर्षत् (त
पुष–पोषयति (ते) अपूपुषत (त)
भूष–भूषयति (ते) अबुभुषत् (त)
रस–रासयति (ते) अरीरसत (त]
लस–लासयति (ते) अलीलसत (त)
हस–हासयति (ते) अजीहसत् [त)
शंस–शंसयति (ते) अशशंसत (त)
दह–दाहयति (ते) अदीदहत (त)
अर्ह–अर्हयति (ते) आर्जिहत् (त
उक्ष–उक्षयति, ते । औचिक्षत, त
रक्ष–रक्षयति (ते] अररक्षत (त)
तक्ष–तक्षयति (ते] अततक्षत् (त)
काक्षु–काङ्क्षयति [ते) अचकाङ्क्षत (त)

ष्मिङ् विस्मापयते (विस्माययति ष्यसि
ष्मपत असिष्मयत् )
डीङ्–डाययति ! अडीडयत ।
कुङ्–कावयति (ते) अचूकवत् (त)
मेङ्–मापयति (ते) अमीमपत् (त)
देङ् दापयति (ते) अदीदपत (त)
लोकृङ्–लोकयति (ते] अलुलोकत (त)
रेकृङ्–रेकयति । अरिरेकत् ।
शकुङ्–शङ्कयति । अशशङ्कत् ।
चकिङ्–चाकयति ते अचीचकत (त)
चकयति'
ढौकृङ्–ढौकयति । अडुढौकत ।
त्रौकृङ्–त्रौकयति । अतुत्रौकत् ।
टीकृङ् टीकयति । अटिटीकत ।
लघुङ् लङ्घयति । अललङ्घत ।
श्लाघृङ् श्लाघयति । अशश्लाघत ।
पचुङ् पञ्चयति [ते) अपपञ्चत (त) ।
ऋजि अर्जयति (ते) आर्जिजत (त)
भृजैङ् भर्जयति [ते) अबीभृजत्
अबभर्जत् (त)
तिजि तितिक्षयति ते अतितिक्षत
तेजयति [ते) अतीतिजत (त)
पिडुङ् पिण्डयति (ते) अपिपिण्डत् (त]
खडुङ् खण्डयति (ते) अचखण्डत, त ।
भडुङ् भण्डयति (ते] अबभण्डत (त)
हेडृङ् हेडयति (ते) अजिहेडत् (त)
हिडुङ् हिण्डयति (ते) अजिहिण्डत (त]
घुणि घोणयति अजूघुणत
घूर्णि घूर्णयति अजुघूर्णत
पणि पणाययति पाणयति (ते)
अपपणायत. अपीपणत (त]
यतैङ् यातयति अयीयतत्
नाथृङ् नाथयति (ते) अननाथत् (त)
वदुङ् वन्दयति (ते) अववन्दत् (त)

मुदि मोदयति अमूमुदत्
ददि दादयति (ते) अदीददत् (त)
हदि हादयति अजीहदत्
ष्वदि स्वादयति असिष्वदत्
स्वादि स्वादयति असिस्वदत्
कुर्दि कूर्दयति अचुकूर्दत्
ह्लादैङ् ह्लादयति (ते) अजिह्लदत् (त)
पर्दि पर्दयति अपपर्दत्
पधि पधयति (ते] पेदिधत् (त)
स्पर्धि स्पर्धयति अपस्पर्धत्
बाधृङ् बाधयति (ते) अबबाधत् (त)
दधि दाधयति (ते) अदीदधत् (त)
अर्थान्तरे बीभत्सयति (ते) अबीभत्सत्
बधि बाधयति (ते) अबीबधत् [त)
पनि पनाययति, पानयति (ते)
अपपनायत, अपीपनत (त]
मानि " मीमांसयति (ते) अमीमांसत् (त)
मानयति (ते) अमीमनत् (त)
टुवेपृङ् वेपयति अववेपत्
कपुङ् कम्पयति अचकम्पत्
त्रपौषि त्रापयति (ते) अतित्रपत् (त)
मतान्तरे-त्रपयति त्यादि
गुपि निन्दायाम् जुगुप्सयति (ते)
अजुगुप्सत (त) अर्थान्तरे तु
गोपयति (ते) अजूगुपत्
लबुङ् लम्बयति (ते) अललम्बत् (त)
कबृङ् काबयति (ते) अचकाबत् (त)
लभुङ् लम्भयति (ते) अललम्भत् (त)
ष्टभुङ् स्तम्भयति (ते) अतस्तम्भत् (त)
जृभुङ् जृम्भयति (ते) अजिजृम्भत् (त)
क्षमौषि क्षमयति (ते] अचिक्षमत् (त]
अयि आययति आयियत्
दयि दाययति (ते] अदीदयत् (त)
ओप्यायैङ् प्याययति (ते) अपिप्ययत् (त)
तायृङ् ताययति (ते) अततायत् (त]

वलि वालयति (ते) अवीवलत् (त)
कलि कालयति (ते] अचीकलत् (त)
सेवृङ् सेवयति (ते) असिसेवत् (त)
काशृङ् काशयति (ते) अचकाशत् (त)
भाषि भाषयति (ते) अबभाषत्,
अबीभषत, (त)
पषृ पषयति पेपिषत्
हेषृङ् हेषयति अजिहेषत्
कासृङ् कासयति (ते) अचकासत् (त)
ईहि ईहयति (ते] पेजिहत् [त)
गर्हि गर्हयति (ते) अजगर्हत् (त]
द्राहृङ् द्राहयति (ते) अदद्राहत् (त]
ऊहि ऊहयति (ते) औजिहत् (त)
गाहौङ् गाहयति [ते) अजीगहत् (त)
धुक्षि धुक्षयति (ते) अदुधुक्षत् (त)
शिक्षि शिक्षयति (ते) अशिशिक्षत् (त)
भिक्षि भिक्षयति (ते) अबिभिक्षत् (त)
दीक्षि दीक्षयति (ते) अदिदीक्षत् (त)
ईक्षि ईक्षयति (ते) पेचिक्षत् (त)
श्रिग् श्राययति (ते) अशिश्रयत् (त)
हृंग् हारयति (ते) अजीहरत् (त)
भृंग् भारयति (ते) अबीभरत् (त)
धृंग् धारयति (ते) अदीधरत् (त)
डुकृग् कारयति (ते) अचीकरत् (त)
डुयाचृ याचयति (ते) अययाचत् (त)
डुपचींष् पाचयति (ते) अपीपचत्
भजी भाजयति (ते) अबीभजत् (त)
बुधृग् बोधयति (ते) अबूबुधत् (त)
दानी दीदांसयति अदीदांसत् अदीदांसत
दानयति अदीदनत्
शपीं शापयति (ते) अशीशपत् (त)
धावूग् धावयति (ते) अदीधवत् त
लषी लाषयति (ते) अलीलषत् त

चषी ९. चाषयति, अचीचषत् 'आ' ते, त,
श्लक्षी श्लक्षयति. अशश्लक्षत्, श्लक्षयते
अशश्लक्षत
द्युति द्योतयति, अदिद्युतत् ,, द्योतयते
,, अदिद्युतत,
रुचि रोचयते अरूरुचत ,, रोचयति,
शुभि शोभयति अशूशुभत् ,, शोभयते
अशूशुभत
क्षुभि क्षोभयति अचुक्षुभत ,, क्षोभयते
अचुक्षुभत
स्रम्भुङ् स्रम्भयति अससम्भत् स्रम्भयते
अससम्भत
भ्रंशुङ् भ्रंशयति अबभ्रंशत् ( भ्रंशयते
अबभ्रंशत)
स्रंसुङ् स्रंसयति अससंसत् ,, स्रंसयते
अससंसत्
ध्वंसुङ् ध्वंसयति अदध्वंसत्
स्यन्दौङ् स्यन्दयति (ते) असस्यन्दत् (त)
वृधुङ् वर्धयति (ते) अवीवृधत् अववर्धत्
कुच कोचयति (ते) अचूकुचत् (त)
पत्लृ पातयति अपीपतत्
षद्लृ सादयति (ते) असीषदत् (त)
बुध बोधयति अबूबुधत्
टुवमू वमयति (ते) अवीवमत् (त)
भ्रमू भ्रमयति अबिभ्रमत् (त)
क्षर क्षारयति (ते) अचिक्षरत् (त)
(चल चलयति (चालयति) अचीचलत्)
शल शालयति अशीशलत्
कुश कोशयति (ते) अचुकुशत् (त)
कस कासयति अचीकसत्
यजीं याजयति (ते) अयीयजत् (त)
टुवपीं वापयति (ते) अवीवपत् (त)
वहीं वाहयति [ते) अवीवहत् (त)
वद वादयति (ते) अवीवदत् (त)

वस वासयति (ते) अवीवसत् (त)
प्रथिष प्रथयति (ते) अपप्रथत् (त)
क्रदुङ् क्रन्दयति अचक्रन्दत्
लगे लगयति (ते) अलीलगत् (त)
ष्ठगे स्तगयति (ते) अतिष्टगत् (त)
मदै मदयति अमीमदत् । अर्थविशेषे
मादयति. ते ।
अदं आदयति (ते) आदिदत् त
प्सांक् प्सापयति अपिप्सपत्
भांक् भापयति (ते) अबीभपत् त
यांक् यापयति अयीयपत्
द्रांक् द्रापयति अदिद्रपत्
रांक् रापयति (ते) अरीरपत् त
दांवक् दापयति (ते) अदीदपत् (त)
ख्यांक् ख्यापयति (ते) अचिख्यपत् (त)
मांक् मापयति (ते) अमीमपत् (त)
षुंक् सावयति, ते असूषवत्, त
तुंक् तावयति, ते अतूतवत्, त
णुक् नावयति, ते अनूनवत्; त
क्ष्णुक् क्ष्णावयति, ते अचुक्ष्णवत्, त
स्नुक् स्नावयति, ते असुस्नवत्. त
टुक्षु क्षावयति, ते अचुक्षवत् त
कुंक् कावयति अचूकवत्
रुदक् रोदयति अरूरुदत्
अन आनयति आनिनत्
श्वसक् श्वासयति अशिश्वसत्
जक्षक् जक्षयति अजजक्षत्
दरिद्रा दरिद्रयति अदीदरिद्रत, अददरिद्रत्
मतान्तरेदरिद्रापयति, अददरिद्रपत्-इत्यादि
जागृक् जागरयति अजजागरत्
वचंक् वाचयति, ते अवीवचत्, त
मृजौक् मार्जयति, ते अमीमृजत्
अममार्जत्, त
विदक् वेदयति, ते अवीविदत्, त
हनंक् घातयति, ते । अजीघतत्, त ।
वशक् वाशयति, ते । अवीवशत्, त ।

असक् । भावयति ।
शीङ्क् शाययति अशीशयत्
ह्नुङ्क् ह्नावयति, ते । अजुह्नवत्, त
षूङौक् सावयति, ते । असूषवत्, त
पृचैङ्क् पर्चयति ते अपीपृचत् अपपर्चत त
ईडिक् ईडयति, ते । ऐडिडत, त ।
ईरिक् ईरयति, ते । ऐरिरत्, त ।
ईशिक् ईशयति, ते । ऐशिशत्, त ।
वसिक् वासयति, ते । अवीवसत, त ।
आसिक् आसयति, ते । आसिसत, त ।
णिसुकि निंसयति, ते । अनिनिंसत्
चक्षिक् ख्यापयति क्शापयति, ते ।
अचिख्यपत् अचिक्शपत्, त ।
ऊर्णुगक् ऊर्णावयति, ते । और्णुनवत्, त ।
मतान्तरे-और्णूनवत
ष्टुंग्क् स्तावयति, ते । अतुष्टवत्, त ।
ब्रूग्क् वाचयति, ते । अवीवचत, त ।
द्विषींक् द्वेषयति, ते । अदिद्विषत्, त ।
दुहींक् दोहयति, ते । अदूदहत्, त ।
दिहींक् देहयति. ते । अदीदिहत, त ।
लिहींक् लेहयति, ते । अलीलिहत, त ।
हुंक् हावयति, ते । अजूहवत, त ।
ओहांक् हापयति, ते । अजीहपत, त ।
पृक् पारयति, ते । अपीपरत्. त ।
ऋंक् आरयति आरिरत्
डुधांगूक् धापयति, ते । अदीधपत, त ।
णिजृंकी नेजयति, ते । अनीनिजत, त ।
विजृंकी वेजयति, ते । अवीविजत, त ।
विष्लृंकी वेषयति, ते । अवीविषत्, त ।
दिवूच् देवयति, ते । अदीदिवत्, त ।
झॄषच् झारयति, ते । अजीझरत्. त ।
दो दापयति, ते । अदीदपत, त ।
व्रीड्च् व्रीडयति अविव्रिडत
नृतैच् नर्तयति, ते । अनीनृतत्

अननर्तत त
कुथूच् कोथयति, ते । अचूकुथत्, त ।
गुधच् गोधयति, ते । अजूगुधत्, त ।
व्यधंच् व्याधयति ते । अविव्यधत्, त ।
क्षिपंच् क्षेपयति (ते) अचिक्षिपत् (त)
तिम तेमयति (ते) अतीतिमत् (त)
तीम तीमयति (ते) अतीतिमत् (त)
ष्टिम स्तेमयति (ते) अतिष्टिमत् (त)
ष्टीमच् स्तीमयति (ते) अतिष्टिमत् (त)
षिवूच् सेवयति (ते) असीषिवत् (त)
ष्ठिवूच् ष्ठेवयति ते, अतिष्ठिवत् त,
अटिष्ठिवत्
इषच् एषयति ऐषिषत्
त्रसैच् त्रासयति, ते । अतित्रसत् (त) ।
षहच् साहयति, ते । असीषहत् (त) ।
पुषंच् पोषयति (त) अपूपुषत [त)
लुटच् लोटयति, ते । अलूलुटत्
अलुलोटत (त)
ष्विदांच् स्वेदयति असिष्विदत्
क्लिदौच् क्लेदयति ते, अचिक्लिदत्, त
शुधंच् शोधयति, ते अशूशुधत् त,
क्रुधंच् क्रोधयति अचुक्रुधत्
ऋधूच् अर्धयति, ते आर्दिधत् त,
गृधूच् गर्धयति ते, अजगर्धत् अजीगृधत त
तृपौच् तर्पयति, ते अतीतृपत् अततर्पत त
दृपौच् दर्पयति ते, अदीदृपत् अददर्पत त
कुपच् कोपयति अचूकुपत्
गुपच् गोपयति अजूगुपत्
लुभच् लोभयति अलूलुभत्
क्षुभच् क्षोभयति अचुक्षुभत्
नशौच् नाशय ते अनीनशत्
मृश् मर्शयति अमीमृशत् अममर्शत्
कृशच् कर्शयति ते, अचीकृशत् अचकर्शत् त
श्लिषंच् श्लेषयति ते, अशिश्लिषत, त

प्लुषूच् प्लोषयति ते, अपुप्लुषत् त,
ञितृषच् तर्षयति अतीतृषत् अततर्षत्
तुषं तोषयति अतूतुषत्
हृषच् हर्षयति अजीहृषत् अजहर्षत्
रुषच् रोषयति अरूरुषत्
असूच् आसयति ते, आसिसत्
यसूच् यासयति अयीयसत्
तमूच् तमयति ते, अतीतमत् त
क्षमौच् क्षमयति ते, अचिक्षमत् त,
मदैच् मदयति मादयति, ते अमीमदत्
क्लमूच् क्लमयति अचिक्लमत्
द्रुहौच् द्रोहयति अदुद्रुहत्
ष्णिहौच् स्नेहयति ते, असिष्णिहत् त,
श्रमू श्रमयति अशिश्रमत्
भ्रमू भ्रमयति ते, अबिभ्रमत् त,
भृशू भर्शयति अबीभृशत् अबभर्शत्,
भ्रंशू भ्रंशयति अबभ्रंशत्
कृश कर्शयति ते, अचीकृशत् त,
अचकर्शत् त,
लुप लोपयति ते, अलूलुपत् त,
क्लिदौ क्लेदयति ते, अचिक्लिदत् त,
ऋधू अर्धयति ते, आर्दिधत् त,
षूङौच् सावयति ते, असूषवत् त,
दूङ्च् दावयति ते, अदूदवत् त,
दीङ्च् दापयति ते, अदीदयत् त
डीङ्च् डाययति ते, अडीडयत् त,
पीङ्च् पाययति अपीपयत्
ईङ्च् आययति आयियत्
प्रीङ्च् प्राययति ते, अपिप्रयत् त,
युजिच् योजयति अयूयुजत्
सृजिच् सर्जयति ते, असीसृजत् असीसर्जत् त,
पदिच् पादयति अपीपदत्
विदिंच् वेदयति ते, अवीविदत् त
खिदिंच् खेदयति अचीखिदत्
युधिच् योधयति अयूयुधत्
मनिंच् मानयति ते, अमीमनत् त,
दीपैचि दीपयति ते, अदीदिपत् त,
तपिंच् तापयति ते, अतीतपत् त,
पूरैचि पूरयति ते, अपूपुरत् त,
क्लिशिच् क्लेशयति अचिक्लिशत्
काशिच् काशयति ते, अचकाशत् त,
वाशिच् वाशयति ते, अववाशत् त,
शपींच् शापयति ते, अशीशपत् त,
मृषीच् मर्षयति ते, अमीमृषत् अममर्षत्, त
णहींच् नाहयति ते, अनीनहत् त,
षुंगूट् सावयति ते, असूषवत् त,
षिंगूट् साययति ते, असीषयत् त,
डुमिंगूट् मापयति ते, अमीमपत् त,
धूगूट् धूनयति अदूधुनत् ।
स्तृगूट् स्तारयति ते, अतिस्तरत् त,
वृगूट् वारयति ते, अवीवरत् त,
हिंट् हाययति ते, अजीहयत् त,
पृंट् पारयति ते, अपीपरत्
शक्लृंट् शाकयति ते, अशीशकत् त,
राधं राधयति ते, अरीरधत् त,
साधंट् साधयति ते, असीसधत् त,
ऋधूट् अर्धयति ते, आर्दिधत् त,
आप्लृंट् आपयति ते, आपिपत् त,
तृपट् तर्पयति ते, अतीतृपत् अततर्पत् त,
दम्भूट् दम्भयति ते, अददम्भत् त,
धिवुट् धेवयति ते, अदीधिवत् त,
ष्टिघिट् स्तेघयति ते, अतिष्टिघत् त,
अशौटि आशयति ते, आशिशत् त,
तुदींत् तोदयति ते, अतूतुदत् त,
भ्रस्जींत् भ्रज्जयति भर्जयति ते अबभ्रज्जत्
अबभर्जत् त,
क्षिपींत् क्षेपयति ते, अचिक्षिपत् त,
दिशींत् देशयति ते, अदीदिशत् त,

कृषींत् कर्षयति ते, अचीकृषत् अचकर्षत् त
मुच्लृंती मोचयति ते अमूमुचत् त,
षिचींत् सेचयति ते, असीषिचत् त,
विदलृंती वेदयति ते, अवीविदत् त,
लुप्लृंति लोपयति ते, अलूलुपत्
अलुलोपत् त,
लिपींत् लेपयति ते अलीलिपत् त.
कृतैत् कर्तयति ते अचीकृतत् अचकर्तत्
मृंत् मारयति अमीमरत्
कृत् कारयति ते, अचीकरत्,
गृत् गारयति अजीगरत्
लिखत् लेखयति ते, अलीलिखत् त,
ओव्रस्चौत् व्रश्चयति ते, अवव्रश्चत् त,
सृजंत् सर्जयति ते, असीसृजत् त,
अससर्जत् त,
टुमस्जोंत् मज्जयति ते, अममज्जत् त,
घुण घोणयति अजूघुणत्
णुदंत् नोदयति ते, अनूनुदत् त,
विधत् वेधयति ते, अवीविधत् त,
छुपंत् छोपयति ते, अचुच्छुपत् त,
गुफ गोफयति ते, अजूगुफत् त,
गुंफत् गुम्फयति ते, अजुगुम्फत् त,
शुभ शोभयति ते, अशूशुभत् त,
शुंभ शुम्भयति ते, अशुशुम्भत् त,
दृभैत् दर्भयति ते, अदीदृभत् अददर्भत् त
स्फलत् स्फालयति अपिस्फलत्
स्पृंशत् स्पर्शयति ते, अपिस्पृशत्
अपस्पर्शत् त,
विशंत् वेशयति ते, अवीविशत् त,
मृशंत् मर्शयति ते, अमीमृशत् अममर्शत् त
इषत् एषयति ते; ऐषिषत् त,
मिषत् मेषयति ते, अमीमिषत् त,
कुटत् कोटयति ते, अचूकुटत् त,
णूत् नावयति ते, अनूनवत् त,
धूत् धावयति अदूधवत्
कुचत् कोचयति ते, अचूकुचत् त,
छुटत् छोटयति ते, अचुच्छुटत् त,
त्रुटत् त्रोटयति ते, अतुत्रुटत् त,
मुटत् मोटयति ते, अमूमुटत् त,
स्फुटत् स्फोटयति ते, अपुस्फुटत् त,
लुठत् लोठयति ते, अलूलुठत् त,
कृडत् कर्डयति ते, अचीकृडत् अचकर्डत् त
गुडत् गोडयति ते, अजूगुडत् त,
कुंङ् कावयति ते, अचूकुवत् त,
पृंङ्त् व्यापारयति ते, अपीपरत् त,
ओविजैति उद्वेजयति अवीविजत्
ओलस्जैति लज्जयति अललज्जत्
ष्वञ्जित् स्वञ्जयति ते, असस्वञ्जत् त,
जुषैति जोषयति ते, अजूजुषत् त,
रुधूंपी रोधयति ते, अरूरुधत् त,
रिचूंपी रेचयति ते, अरीरिचत् त,
विचूंपी वेचयति ते, अवीविचत् त,
युजूंपी योजयति ते, अयूयुजत् त,
भिदूंपी भेदयति ते, अबीभिदत् त,
छिदूंपी छेदयति ते, अचिच्छिदत् त,
क्षुदूंपी क्षोदयति ते, अचुक्षुदत् त,
पृचैप् पर्चयति ते, अपीपृचत् अपपर्चत् त,
भञ्जोंप् भञ्जयति ते, अबभञ्जत् त,
भुजंप् भोजयति ते, अबूभुजत् त,
अञ्जौप् अञ्जयति ते, आञ्जिजत् त,
शिष्लृंप् शेषयति ते. अशीशिषत् त,
पिष्लृंप् पेषयति ते, अपीपिषत् त,
हिसु हिंसयति ते, अजिहिंसत् त,
तृहप् तर्हयति ते, अतीतृहत् अततर्हत् त,
खिदिंप् खेदयति ते अचीखिदत् त.
विदिंप् वेदयति ते, अवीविदत् त,
ञिइन्धैपि इन्धयति ते, ऐन्दिधत् त,
तनूयी तानयति ते, अतीतनत् त,
षणूयी सानयति ते असीषणत् त,

| | |
|---|---|
| वनूयी वानयति ते | अवीवनत् त, |
| प्रीगूश् प्रीणयति ते, | अपिप्रीणत् त, |
| मीग्श् मापयति (ते) | अमीमपत् (त) |
| ग्रहीश् ग्राहयति ते, | अजिग्रहत् त, |
| पृगूश् पावयति ते, | अपीपवत् त, |
| स्तृंग्श् स्तारयति ते | अतिस्तरत् त, |

इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंर-
क्षणप्रवणविद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टा-
रकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्या-
यवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्य-
मुनिगुणविजयविरचितायां हैमधातुमालायां

## ॥ णिगन्तप्रक्रिया ॥

## ॥ अथ सन्नन्तप्रक्रिया ॥

### भू–सत्तायाम् । भवितुमिच्छति

व० बुभूषति बुभूषतः बुभूषन्ति
बुभूषसि बुभूषथः बुभूषथ
बुभूषामि बुभूषावः बुभूषामः

स० बुभूषेत् बुभूषेताम् बुभूषेयुः
बुभूषेः बुभूषेतम् बुभूषेत
बुभूषेयम् बुभूषेव बुभूषेम

प० बुभूषतु बुभूषतात् बुभूषताम् बुभूषन्तु
बुभूष ,, बुभूषतम् बुभूषत
बुभूषाणि बुभूषाव बुभूषाम

ह्य० अबुभूषत् अबुभूषताम् अबुभूषन्
अबुभूषः अबुभूषतम् अबुभूषत
अबुभूषम् अबुभूषाव अबुभूषाम

अ० अबुभूषीत् अबुभूषिष्टाम् अबुभूषिषुः
अबुभूषीः अबुभूषिष्टम् अबुभूषिष्ट
अबुभूषिषम् अबुभूषिष्व अबुभूषिष्म

प० बुभूषाञ्चकार बुभूषाञ्चक्रतुः बुभूषाञ्चक्रुः
बुभूषयाञ्चकर्थ बुभूषाञ्चक्रथुः बुभूषाञ्चक्र
बुभूषयाञ्चकार, चकर बुभूषाञ्चकृव
बुभूषाञ्चकृम बुभूषाम्बभूव । बभूषामास

आ० बुभूष्यात् बुभूष्यास्ताम् बुभूष्यासुः
बुभूष्याः बुभूष्यास्तम् बुभूष्यास्त
बुभूष्यासम् बुभूष्यास्व बुभूष्यास्म

श्व० बुभूषिता बुभूषितारौ बुभूषितारः
बुभूषितासि बुभूषितास्थः बुभूषितास्थ
बुभूषितास्मि बुभूषितास्वः बुभूषितास्मः

भ० बुभूषिष्यति बुभूषिष्यतः बुभूषिष्यन्ति
बुभूषिष्यसि बुभूषिष्यथः बुभूषिष्यथ
बुभूषिष्यामि बुभूषिष्यावः बुभूषिष्यामः

क्रि० अबुभूषिष्यत् अबुभूषिष्यताम् अबुभूषिष्यन्
अबुभूषिष्य. अबुभूषिष्यतम् अबुभूषिष्यत
अबुभूषिष्यम् अबुभूषिष्याव अबुभूषिष्याम

पठ–पिपठिषति अपिपठिषीत्
अट–अटिटिषति अटिटिषीत्
अद–जिघत्सति अजिघत्सीत्

### गुप्

व० जुगुप्सिषते जुगुप्सिषेते जुगुप्सिषन्ते
जुगुप्सिषसे जुगुप्सिषेथे जुगुप्सिषध्वे
जुगुप्सिषे जुगुप्सिषावहे जुगुप्सिषामहे

स० जुगुप्सिषेत जुगुप्सिषेयाताम् जुगुप्सिषेरन्
जुगुप्सिषेयाः जुगुप्सिषेयाथाम्
जुगुप्सिषेध्वम् जुगुप्सिषेय
जुगुप्सिषेवहि जुगुप्सिषेमहि

प० जुगुप्सिषताम् जुगुप्सिषेताम्
जुगुप्सिषन्ताम् जुगुप्सिषस्व
जुगुप्सिषेथाम् जुगुप्सिषध्वम्
जुगुप्सिषै जुगुप्सिषावहै
जुगुप्सिषामहै

ह्य० अजुगुप्सिषत अजुगुप्सिषेताम्
अजुगुप्सिषन्त अजुगुप्सिषथाः
अजुगुप्सिषेथाम् अजुगुप्सिषध्वम्
अजुगुप्सिषे अजुगुप्सिषावहि
अजुगुप्सिषामहि

अ० अजुगुप्सिषिष्ट अजुगुप्सिषिषाताम्
अजुगुप्सिषिषत अजुगुप्सिषिष्ठाः
अजुगुप्सिषिषाथाम् अजुगुप्सिषिढ्ढ्वम्-ध्वम्
अजुगुप्सिषिषि अजुगुप्सिषिष्वहि
अजुगुप्सिषिष्महि

प० जुगुप्सिषाञ्चक्रे जुगुप्सिषाञ्चक्राते
जुगुप्सिषाञ्चक्रिरे जुगुप्सिषाञ्चकृषे
जुगुप्सिषाञ्चक्राथे जुगुप्सिषाञ्चकृढ्वे
जुगुप्सिषाञ्चक्रे जुगुप्सिषाञ्चकृवहे
जुगुप्सिषाञ्चकृमहे
जुगुप्सिषाम्बभूव । जुगुप्सिषामास

आ० जुगुप्सिषिषीष्ट जुगुप्सिषिषीयास्ताम्
जुगुप्सिषिषीरन् जुगुप्सिषिषीष्ठाः
जुगुप्सिषिषीयास्थाम् जुगुप्सिषिषीढ्वम् ध्वम्
जुगुप्सिषिषीय जुगुप्सिषिषीवहि
जुगुप्सिषिषीमहि

श्व० जुगुप्सिषिता जुगुप्सिषितारौ
जुगुप्सिषितारः जुगुप्सिषितासे
जुगुप्सिषितासाथे जुगुप्सिषिताध्वे
जुगुप्सिषिताहे जुगुप्सिषितास्वहे
जुगुप्सिषितास्महे

भ० जुगुप्सिषिष्यते जुगुप्सिषिष्येते
जुगुप्सिषिष्यन्ते जुगुप्सिषिष्यसे
जुगुप्सिषिष्येथे जुगुप्सिषिष्यध्वे
जुगुप्सिषिष्ये जुगुप्सिषिष्यावहे
जुगुप्सिषिष्यामहे

क्रि० अजुगुप्सिषिष्यत अजुगुप्सिषिष्येताम्
अजुगुप्सिषिष्यन्त अजुगुप्सिषिष्यथाः
अजुगुप्सिषिष्येथाम् अजुगुप्सिषिष्यध्वम्
अजुगुप्सिषिष्ये अजुगुप्सिषिष्यावहि
अजुगुप्सिषिष्यामहि

॥ ईर्ष्य ॥

व० ईर्ष्यियिषति ईर्ष्यियिषतः ईर्ष्यियिषन्ति
ईर्ष्यियिषसि ईर्ष्यियिषथः ईर्ष्यियिषथ
ईर्ष्यियिषामि ईर्ष्यियिषावः ईर्ष्यियिषामः

स० ईर्ष्यियिषेत् ईर्ष्यियिषेताम् ईर्ष्यियिषेयुः
ईर्ष्यियिषेः ईर्ष्यियिषेतम् ईर्ष्यियिषेत
ईर्ष्यियिषेयम् ईर्ष्यियिषेव ईर्ष्यियिषेम

प० ईर्ष्यियिषतु, तात् ईर्ष्यियिषताम्
ईर्ष्यियिषन्तु ईर्ष्यियिष ,,
ईर्ष्यियिषतम् ईर्ष्यियिषत
ईर्ष्यियिषाणि ईर्ष्यियिषाव
ईर्ष्यियिषाम

ह्य० ऐर्ष्यियिषत् ऐर्ष्यियिषताम् ऐर्ष्यियिषन्
ऐर्ष्यियिषः ऐर्ष्यियिषतम् ऐर्ष्यियिषत
ऐर्ष्यियिषम् ऐर्ष्यियिषाव ऐर्ष्यियिषाम

अ० ऐर्ष्यियिषीत् ऐर्ष्यियिषिष्टाम् ऐर्ष्यियिषिषुः
ऐर्ष्यियिषीः ऐर्ष्यियिषिष्टम् ऐर्ष्यियिषिष्ट
ऐर्ष्यियिषिषम् ऐर्ष्यियिषिष्व ऐर्ष्यियिषिष्म

प० ईर्ष्यियिषाञ्चकार ईर्ष्यियिषाञ्चक्रतुः
ईर्ष्यियिषाञ्चक्रुः ईर्ष्यियिषाञ्चकर्थ
ईर्ष्यियिषाञ्चक्रथुः ईर्ष्यियिषाञ्चक्र
ईर्ष्यियिषाञ्चकार-चकर ईर्ष्यियिषाञ्चकृव
ईर्ष्यियिषाञ्चकृम
ईर्ष्यियिषाम्बभूव । ईर्ष्यियिषामास

आ० ईर्ष्यियिष्यात् ईर्ष्यियिष्यास्ताम्
ईर्ष्यियिष्यासुः ईर्ष्यियिष्याः
ईर्ष्यियिष्यास्तम् ईर्ष्यियिष्यास्त
ईर्ष्यियिष्यासम् ईर्ष्यियिष्यास्व
ईर्ष्यियिष्यास्म

श्व० ईर्ष्यियिता ईर्ष्यियितारौ ईर्ष्यियितारः
ईर्ष्यियितासि ईर्ष्यियितास्थः ईर्ष्यियितास्थ
ईर्ष्यियितास्मि ईर्ष्यियितास्वः ईर्ष्यियितास्म

भ० ईर्ष्यियिष्यति ईर्ष्यियिष्यतः
ईर्ष्यियिष्यन्ति ईर्ष्यियिष्यसि
ईर्ष्यियिष्यथः ईर्ष्यियिष्यथ
ईर्ष्यियिष्यामि ईर्ष्यियिष्यावः
ईर्ष्यियिष्यामः

क्रि० ऐर्ष्यियिष्यत् ऐर्ष्यियिष्यताम्
ऐर्ष्यियिष्यन् ऐर्ष्यियिष्यः
ऐर्ष्यियिष्यतम् ऐर्ष्यियिष्यत
ऐर्ष्यियिष्यम् ऐर्ष्यियिष्याव
ऐर्ष्यियिष्याम

ईर्ष्य

व० ईर्ष्यिषिषति ईर्ष्यिषिषतः ईर्ष्यिषिषन्ति
ईर्ष्यिषिषसि ईर्ष्यिषिषथः
ईर्ष्यिषिषथ ईर्ष्यिषिषामि
ईर्ष्यिषिषावः ईर्ष्यिषिषामः

स० ईर्ष्यिषिषेत ईर्ष्यिषिषेताम्
ईर्ष्यिषिषेयुः ईर्ष्यिषिषेः
ईर्ष्यिषिषेतम् ईर्ष्यिषिषेत
ईर्ष्यिषिषेयम् ईर्ष्यिषिषेव
ईर्ष्यिषिषेम

प० ईर्ष्यिषिषतु ईर्ष्यिषिषतात्
ईर्ष्यिषिषताम् ईर्ष्यिषिषन्तु
ईर्ष्यिषिष „ ईर्ष्यिषिषतम्
ईर्ष्यिषिषत ईर्ष्यिषिषाणि
ईर्ष्यिषिषाव ईर्ष्यिषिषाम

ह्य० ऐर्ष्यिषिषत् ऐर्ष्यिषिषताम्
ऐर्ष्यिषिषन् ऐर्ष्यिषिषः
ऐर्ष्यिषिषतम् ऐर्ष्यिषिषत
ऐर्ष्यिषिषम् ऐर्ष्यिषिषाव
ऐर्ष्यिषिषाम

अ० ऐर्ष्यिषिषीत् ऐर्ष्यिषिषिष्टाम्
ऐर्ष्यिषिषिषुः ऐर्ष्यिषिषीः
ऐर्ष्यिषिषिष्टम् ऐर्ष्यिषिषिष्ट
ऐर्ष्यिषिषिषम् ऐर्ष्यिषिषिष्व
ऐर्ष्यिषिषिष्म

प० ईर्ष्यिषिषाञ्चकार ईर्ष्यिषिषाञ्चक्रतुः
ईर्ष्यिषिषाञ्चक्रुः ईर्ष्यिषिषाञ्चकर्थ
ईर्ष्यिषिषाञ्चक्रथुः ईर्ष्यिषिषाञ्चक्र
ईर्ष्यिषिषाञ्चकार-चकर ईर्ष्यिषिषाञ्चकृव
ईर्ष्यिषिषाञ्चकृम
ईर्ष्यिषिषाम्बभूव । ईर्ष्यिषिषामास

आ० ईर्ष्यिषिष्यात् ईर्ष्यिषिष्यास्ताम्
ईर्ष्यिषिष्यासुः ईर्ष्यिषिष्याः
ईर्ष्यिषिष्यास्तम् ईर्ष्यिषिष्यास्त
ईर्ष्यिषिष्यासम् ईर्ष्यिषिष्यास्व
ईर्ष्यिषिष्यास्म

श्व० ईर्ष्यिषिषिता ईर्ष्यिषिषितारौ
ईर्ष्यिषिषितारः ईर्ष्यिषिषितासि
ईर्ष्यिषिषितास्थः ईर्ष्यिषिषितास्थ
ईर्ष्यिषिषितास्मि ईर्ष्यिषिषितास्वः
ईर्ष्यिषिषितास्मः

भ० ईर्ष्यिषिषिष्यति ईर्ष्यिषिषिष्यतः
ईर्ष्यिषिषिष्यन्ति ईर्ष्यिषिषिष्यसि
ईर्ष्यिषिषिष्यथः ईर्ष्यिषिषिष्यथ
ईर्ष्यिषिषिष्यामि ईर्ष्यिषिषिष्यावः
ईर्ष्यिषिषिष्यामः

क्रि० ऐर्ष्यिषिषिष्यत् ऐर्ष्यिषिषिष्यताम्
ऐर्ष्यिषिषिष्यन् ऐर्ष्यिषिषिष्यः
ऐर्ष्यिषिषिष्यतम् ऐर्ष्यिषिषिष्यत
ऐर्ष्यिषिषिष्यम् ऐर्ष्यिषिषिष्याव
ऐर्ष्यिषिषिष्याम

ग्रह

व० जिघृक्षति जिघृक्षतः जिघृक्षन्ति
जिघृक्षसि जिघृक्षथः जिघृक्षथ
जिघृक्षामि जिघृक्षावः जिघृक्षामः

स० जिघृक्षेत् जिघृक्षेताम् जिघृक्षेयुः
जिघृक्षेः जिघृक्षेतम् जिघृक्षेत
जिघृक्षेयम् जिघृक्षेव जिघृक्षेम

प० जिघृक्षतु जिघृक्षतात् जिघृक्षताम् जिघृक्षन्तु
जिघृक्ष जिघृक्षतात् जिघृक्षतम् जिघृक्षत
जिघृक्षाणि जिघृक्षाव जिघृक्षाम

ह्य० अजिघृक्षत् अजिघृक्षताम् अजिघृक्षन्
अजिघृक्षः अजिघृक्षतम् अजिघृक्षत
अजिघृक्षम् अजिघृक्षाव अजिघृक्षाम

अ० अजिघृक्षीत् अजिघृक्षिष्टाम् अजिघृक्षिषुः
अजिघृक्षीः अजिघृक्षिष्टम् अजिघृक्षिष्ट
अजिघृक्षिषम् अजिघृक्षिष्व अजिघृक्षिष्म

प० जिघृक्षाञ्चकार जिघृक्षाञ्चक्रतुः जिघृक्षाञ्चक्रुः
जिघृक्षाञ्चकर्थ जिघृक्षाञ्चक्रथुः जिघृक्षाञ्चक्र
जिघृक्षाञ्चकार-चकर जिघृक्षाञ्चकृव जिघृक्षाञ्चकृम

आ० जिघृक्ष्यात् जिघृक्ष्यास्ताम् जिघृक्ष्यासुः
जिघृक्ष्याः जिघृक्ष्यास्तम् जिघृक्ष्यास्त
जिघृक्ष्यासम् जिघृक्ष्यास्व जिघृक्ष्यास्म

श्व० जिघृक्षिता जिघृक्षितारौ जिघृक्षितारः
जिघृक्षितासि जिघृक्षितास्थः जिघृक्षितास्थ
जिघृक्षितास्मि जिघृक्षितास्वः जिघृक्षितास्मः

भ० जिघृक्षिष्यति जिघृक्षिष्यतः जिघृक्षिष्यन्ति
जिघृक्षिष्यसि जिघृक्षिष्यथः जिघृक्षिष्यथ
जिघृक्षिष्यामि जिघृक्षिष्यावः जिघृक्षिष्यामः

क्रि० अजिघृक्षिष्यत् अजिघृक्षिष्यताम्
अजिघृक्षिष्यन् अजिघृक्षिष्यः
अजिघृक्षिष्यतम् अजिघृक्षिष्यत
अजिघृक्षिष्यम् अजिघृक्षिष्याव
अजिघृक्षिष्याम

एवं जिघृक्षते । अजिघृक्षिष्ट इत्यादि ।
गुह-जुघुक्षति । अजुघुक्षीत । जुघुक्षते ।
अजुघुक्षिष्ट ।

रु-रुरूषति । अरुरूषीत् ।
रुद् रुरुदिषति । अरुरुदिषीत् ।
विदक्-विविदिषति । अविविदिषीत् ।
मुष-मुमुषिषति । अमुमुषिषीत् ।
स्वप सुषुप्सति । असुषुप्सीत् ।
पृच्छ-पिपृच्छिषति । अपिपृच्छिषीत् ।

चिं,

व० चिकीषति चिकीषतः चिकीषन्ति
चिकीषसि चिकीषथः चिकीषथ
चिकीषामि चिकीषावः चिकीषामः

स० चिकीषेत् चिकीषेताम् चिकीषेयुः
चिकीषेः चिकीषेतम् चिकीषेत
चिकीषेयम् चिकीषेव चिकीषेम

प० चिकीषतु तात्, चिकीषताम् चिकीषन्तु
चिकीष ,, चिकीषतम् चिकीषत
चिकीषाणि चिकीषाव चिकीषाम

ह्य० अचिकीषत् अचिकीषताम् अचिकीषन्
अचिकीषः अचिकीषतम् अचिकीषत
अचिकीषम् अचिकीषाव अचिकीषाम

अ० अचिकीषीत् अचिकीषिष्टाम् अचिकीषिषुः
अचिकीषीः अचिकीषिष्टम् अचिकीषिष्ट
अचिकीषिषम् अचिकीषिष्व अचिकीषिष्म

प० चिकीषामास चिकीषामासतुः
चिकीषामासुः चिकीषामासिथ
चिकीषामासथुः चिकीषामास
चिकीषामास चिकीषामासिव
चिकीषामासिम

आ० चिकीष्यात् चिकीष्यास्ताम् चिकीष्यासुः
चिकीष्याः चिकीष्यास्तम् चिकीष्यास्त
चिकीष्यासम् चिकीष्यास्व चिकीष्यास्म

श्व० चिकीषिता चिकीषितारौ चिकीषितारः
चिकीषितासि चिकीषितास्थः चिकीषितास्थ
चिकीषितास्मि चिकीषितास्वः चिकीषितास्मः

भ० चिकीषिष्यति चिकीषिष्यतः
चिकीषिष्यन्ति चिकीषिष्यसि
चिकीषिष्यथः चिकीषिष्यथ
चिकीषिष्यामि चिकीषिष्यावः
चिकीषिष्यामः

क्रि० अचिकीषिष्यत् अचिकीषिष्यताम्
अचिकीषिष्यन् अचिकीषिष्यः
अचिकीषिष्यतम् अचिकीषिष्यत
अचिकीषिष्यम् अचिकीषिष्याव
अचिकीषिष्याम

चिकीषते । चिकीषेत । चिकीषताम् ।
अचिकीषत । अचिकीषिष्ट ।
चिकीषाञ्चक्रे । चिकीषिषीष्ट । चिकीषिता
चिकीषिष्यते । अचिकीषिष्यत ।

एवं-चिचीषति । अचिचीषीत् ।
चिचीषते । अचिचिषिष्ट इत्यादि

कृ.

व० चिकीर्षति चिकीर्षतः चिकीर्षन्ति
चिकीर्षसि चिकीर्षथः चिकीर्षथ

चिकीर्षामि चिकीर्षावः चिकीर्षामः

स० चिकीर्षेत् चिकीर्षेताम् चिकीर्षेयुः
चिकीर्षेः चिकीर्षेतम् चिकीर्षेत
चिकीर्षेयम् चिकीर्षेव चिकीर्षेम

प० चिकीर्षतु चिकीर्षतात् चिकीर्षताम्
चिकीर्षन्तु चिकीर्ष ,, चिकीर्षतम्
चिकीर्षत चिकीर्षाणि चिकीर्षाव
चिकीर्षाम

ह्य० अचिकीर्षत् अचिकीर्षताम् अचिकीर्षन्
अचिकीर्षः अचिकीर्षतम् अचिकीर्षत
अचिकीर्षम् अचिकीर्षाव अचिकीर्षाम

अ० अचिकीर्षीत् अचिकीर्षिष्टाम् अचिकीर्षिषुः
अचिकीर्षीः अचिकीर्षिष्टम् अचिकीर्षिष्ट
अचिकीर्षिषम् अचिकीर्षिष्व अचिकीर्षिष्म

प० चिकीर्षामास चिकीर्षामासतुः
चिकीर्षामासुः चिकीर्षामासिथ
चिकीर्षामासथुः चिकीर्षामास
चिकीर्षामास चिकीर्षामासिव
चिकीर्षामासिम

आ० चिकीर्ष्यात् चिकीर्ष्यास्ताम्
चिकीर्ष्यासुः चिकीर्ष्याः
चिकीर्ष्यास्तम् चिकीर्ष्यास्त
चिकीर्ष्यासम् चिकीर्ष्यास्व
चिकीर्ष्यास्म

श्व० चिकीर्षिता चिकीर्षितारौ चिकीर्षितारः
चिकीर्षितासि चिकीर्षितास्थः
चिकीर्षितास्थ चिकीर्षितास्मि
चिकीर्षितास्वः चिकीर्षितास्मः

भ० चिकीर्षिष्यति चिकीर्षिष्यतः
चिकीर्षिष्यन्ति चिकीर्षिष्यसि
चिकीर्षिष्यथः चिकीर्षिष्यथ
चिकीर्षिष्यामि चिकीर्षिष्यावः
चिकीर्षिष्यामः

क्रि० अचिकीर्षिष्यत् अचिकीर्षिष्यताम्
अचिकीर्षिष्यन् अचिकीर्षिष्यः
अचिकीर्षिष्यतम् अचिकीर्षिष्यत
अचिकीर्षिष्यम् ,, अचिकीर्षिष्याव
अचिकीर्षिष्याम

चिकीर्षते । चिकीर्षेत । चिकीर्षताम् । अचिकीर्षत । अचिकीर्षिष्ट ।
चिकीर्षाञ्चक्रे । चिकीर्षिषीष्ट । चिकीर्षिता । चिकीर्षिष्यते । अचिकीर्षिष्यत ।

हन–जिघांसति । अजिघांसीत् ।
यु–यियविषति । अयियविषीत् ।
युयूषति । अयुयूषीत् ।

इङ्क्

व० अधिजिगांसते अधिजिगांसेते
अधिजिगांसन्ते अधिजिगांससे
अधिजिगांसेथे अधिजिगांसध्वे
अधिजिगांसे अधिजिगांसावहे
अधिजिगांसामहे

स० अधिजिगांसेत अधिजिगांसेयाताम्
अधिजिगांसेरन् अधिजिगांसेथाः
अधिजिगांसेयाथाम् अधिजिगांसेध्वम्
अधिजिगांसेय अधिजिगांसेवहि
अधिजिगांसेमहि

प० असिजिगांसताम् अधिजिगांसेताम्
अधिजिगांसन्ताम् अधिजिगांसस्व
अधिजिगांसेथाम् अधिजिगांसध्वम्
अधिजिगांसै अधिजिगांसावहै
अधिजिगांसामहै

ह्य० अध्यजिगांसत अध्यजिगांसेताम्
अध्यजिगांसन्त अध्यजिगांसथाः
अध्यजिगांसेथाम् अध्यजिगांसध्वम्
अध्यजिगांसे अध्यजिगांसावहि
अध्यजिगांसामहि

अ० अध्यजिगांसिष्ट अध्यजिगांसिषाताम्

अध्यजिगांसिपत अध्यजिगांसिषाः
अध्यजिगांसिपाथाम् अध्यजिगांसिध्वम्
अध्यजिगांसिढ्ढ्वम्
अध्ययिगांसिपि अध्यजिगांसिष्वहि
अध्यजिगांसिष्महि

प० अधिजिगांसयाञ्चक्रे अधिजिगांसयाञ्चक्राते
अधिजिगांसाञ्चक्रिरे अधिजिगांसाञ्चकृषे
अधिजिगांसाञ्चक्राथे अधिजिगांसाञ्चकृढ्वे
अधिजिगांसाञ्चक्रे अधिजिगांसाञ्चकृवहे
अधिजिगांसाञ्चकृमहे

आ० अधिजिगांसिषीष्ट अधिजिगांसिषीयास्ताम्
अधिजिगांसिषीरन् अधिजिगांसिषीष्ठाः
अधिजिगांसिषीयास्थाम् अधिजिगांसिषीध्वम्
अधिजिगांसिषीय अधिजिगांसिषीवहि
अधिजिगांसिषीमहि

श्व० अधिजिगांसिता अधिजिगांसितारौ
अधिजिगांसितारः अधिजिगांसितासे
अधिजिगांसितासाथे अधिजिगांसिताध्वे
अधिजिगांसिताहे अधिजिगांसितास्वहे
अधिजिगांसितास्महे

भ० अधिजिगांसिष्यते अधिजिगांसिष्येते
अधिजिगांसिष्यन्ते अधिजिगांसिष्यसे
अधिजिगांसिष्येथे अधिजिगांसिष्यध्वे
अधिजिगांसिष्ये अधिजिगांसिष्यावहे
अधिजिगांसिष्यामहे

क्रि० अध्यजिगांसिष्यत अध्यजिगांसिष्येताम्
अध्यजिगांसिष्यन्त अध्यजिगांसिष्यथाः
अध्यजिगांसिष्येथाम् अध्यजिगांसिष्यध्वम्
अध्यजिगांसिष्ये अध्यजिगांसिष्यावहि
अध्यजिगांसिष्यामहि

णिगन्तस्यास्य तु—

अधिजिगापयिषति । अध्यजिगापयिषीत ।
अध्यापिपयिषति । अध्यापिपयिषीत् ।

इण् अज्ञानेऽर्थे

ल० जिगमिषति जिगमिषतः जिगमिषन्ति
जिगमिषसि जिगमिषथः जिगमिषथ
जिगमिषामि जिगमिषावः जिगमिषामः

स० जिगमिषेत् जिगमिषेताम् जिगमिषेयुः
जिगमिषेः जिगमिषेतम् जिगमिषेत
जिगमिषेयम् जिगमिषेव जिगमिषेम

प० जिगमिषतु तात् जिगमिषताम् जिगमिषन्तु
जिगमिष ,, जिगमिषतम् जिगमिषत
जिगमिषाणि जिगमिषाव जिगमिषाम

ह्य० अजिगमिषत् अजिगमिषताम् अजिगमिषन्
अजिगमिषः अजिगमिषतम् अजिगमिषत
अजिगमिषम् अजिगमिषाव अजिगमिषाम

अ० अजिगमिषीत् अजिगमिषिष्टाम् अजिगमिषिषुः
अजिगमिषीः अजिगमिषिष्टम् अजिगमिषिष्ट
अजिगमिषिषम् अजिगमिषिष्वअजिगमिषिष्म

प० जिगमिषामास जिगमिषामासतुः
जिगमिषामासुः जिगमिषामासिथ
जिगमिषामासथुः जिगमिषामास
जिगमिषामास जिगमिषामासिव
जिगमिषामासिम

आ० जिगमिष्यात् जिगमिष्यास्ताम्
जिगमिष्यासुः जिगमिष्याः
जिगमिष्यास्तम् जिगमिष्यास्त
जिगमिष्यासम् जिगमिष्यास्व
जिगमिष्यास्म

श्व०जिगमिषिता जिगमिषितारौ जिगमिषितारः
जिगमिषितासि जिगमिषितास्थः
जिगमिषितास्थ जिगमिषितास्मि
जिगमिषितास्वः जिगमिषितास्मः

भ० जिगमिषिष्यति जिगमिषिष्यतः
जिगमिषिष्यन्ति जिगमिषिष्यसि
जिगमिषिष्यथः जिगमिषिष्यथ
जिगमिषिष्यामि जिगमिषिष्यावः जिगमिषिष्यामः

क्रि० अजिगमिषिष्यत् अजिगमिषिष्यताम्
अजिगमिषिष्यन् अजिगमिषिष्यः

अजिगमिषिष्यतम् अजिगमिषिष्यत
अजिगमिषिष्यम् अजिगमिषिष्याव
अजिगमिषिष्याम

इक् अज्ञानेऽर्थे

एवं–अधिजिगमिषति । अधिजिगमिषेत् ।
अधिजिगमिषतु । अध्यजिगमिषत् ।
अध्यजिगमिषीत् । अधिजिगमिषामास ।
अधिजिगमिष्यात् । अधिजिगमिषिता ।
अधिजिगमिषिष्यति । अध्यजिगमिषिष्यत

अनयोर्ज्ञानेऽर्थे तु

व० प्रतीषिषति प्रतीषिषतः प्रतीषिषन्ति
प्रतीषिषसि प्रतीषिषथः प्रतीषिषथ
प्रतीषिषामि प्रतीषिषावः प्रतीषिषामः
स० प्रतीषिषेत् प्रतीषिषेताम् प्रतीषिषेयुः
प्रतीषिषेः प्रतीषिषेतम् प्रतीषिषेत
प्रतीषिषेयम् प्रतीषिषेव प्रतीषिषेम
प० प्रतीषिषतु प्रतीषिषतात् प्रतीषिषताम्
प्रतीषिषन्तु प्रतीषिष प्रतीषिषतात्
प्रतीषिषतम् प्रतीषिषत प्रतीषिषाणि
प्रतीषिषाव प्रतीषिषाम
ह्य० प्रत्यैषिषत् प्रत्यैषिषताम् प्रत्यैषिषन्
प्रत्यैषिषः प्रत्यैषिषतम् प्रत्यैषिषत
प्रत्यैषिषम् प्रत्यैषिषाव प्रत्यैषिषाम
अ० प्रत्यैषिषीत् प्रत्यैषिषिष्टाम् प्रत्यैषिषिषुः
प्रत्यैषिषीः प्रत्यैषिषिष्टम् प्रत्यैषिषिष्ट
प्रत्यैषिषिषम् प्रत्यैषिषिष्व प्रत्यैषिषिष्म
प० प्रतीषिषामास प्रतीषिषामासतुः
प्रतीषिषामासुः प्रतीषिषामासिथ
प्रतीषिषामासथुः प्रतीषिषामास
प्रतीषिषामास प्रतीषिषामासिव
प्रतीषिषामासिम
आ० प्रतीषिष्यात् प्रतीषिष्यास्ताम् प्रतीषिष्यासुः
प्रतीषिष्याः प्रतीषिष्यास्तम् प्रतीषिष्यास्त
प्रतीषिष्यासम् प्रतीषिष्यास्व प्रतीषिष्यास्म
श्व० प्रतीषिषिता प्रतीषिषितारौ प्रतीषिषितारः
प्रतीषिषितासि प्रतीषिषितास्थः प्रतीषिषितास्थ
प्रतीषिषितास्मि प्रतीषिषितास्वः
प्रतीषिषितास्मः
भ० प्रतीषिषिष्यति प्रतीषिषिष्यतः
प्रतीषिषिष्यन्ति प्रतीषिषिष्यसि
प्रतीषिषिष्यथः प्रतीषिषिष्यथ
प्रतीषिषिष्यामि प्रतीषिषिष्यावः प्रतीषिषिष्यामः
क्रि० प्रत्यैषिषिष्यत् प्रत्यैषिषिष्यताम्
प्रत्यैषिषिष्यन् प्रत्यैषिषिष्यः
प्रत्यैषिषिष्यतम् प्रत्यैषिषिष्यत
प्रत्यैषिषिष्यम् प्रत्यैषिषिष्याव
प्रत्यैषिषिष्याम

शीङ्–शिशयिषते । अशिशयिषिष्ट ।
चर–चिचरिषति । अचिचरिषीत् ।
सञ्चिचरिषते । समचिचरिषिष्ट ।

द्युति,

दिद्युतिषते । दिद्युतिषेत । दिद्युतिषताम् ।
अदिद्युतिषत । अदिद्युतिषिष्ट ।
दिद्युतिषाञ्चक्रे दिद्युतिषिषीष्ट दिद्युतिषिता
दिद्युतिषिष्यते । अदिद्युतिषिष्यत ।
दिद्योतिषते । दिद्योतिषेत । दिद्योतिषताम्
अदिद्योतिषत । अदिद्योतिषिष्ट ।
दिद्योतिषाञ्चक्रे । दिद्योतिषिषीष्ट ।
दिद्योतिषिता । दिद्योतिषिष्यते ।
अदिद्योतिषिष्यत ।
लिख–लिलिखिषति । लिलेखिषति ।
अलिलिखिषीत् । अलिलेखिषीत् ।
भिद्–बिभित्सति । बिभित्सते ।
अबिभित्सीत् । अबिभित्सिष्ट ।

वृत,

व० विवृत्सति विवृत्सतः विवृत्सन्ति
विवृत्ससि विवृत्सथः विवृत्सथ
विवृत्सामि विवृत्सावः विवृत्सामः
स० विवृत्सेत् विवृत्सेताम् विवृत्सेयुः
विवृत्सेः विवृत्सेतम् विवृत्सेत
विवृत्सेयम् विवृत्सेव विवृत्सेम

प० विवृत्सतु-तात् विवृत्सताम् विवृत्सन्तु
विवृत्स ,, विवृत्सतम् विवृत्सत
विवृत्सानि विवृत्साव विवृत्साम
ह्य० अविवृत्सत् अविवृत्सताम् अविवृत्सन्
अविवृत्स अविवृत्सतम् अविवृत्सत
अविवृत्सम् अविवृत्साव अविवृत्साम
अ० अविवृत्सीत् अविवृत्सिष्टाम् अविवृत्सिषुः
अविवृत्सीः अविवृत्सिष्टम् अविवृत्सिष्ट
अविवृत्सिषम् अविवृत्सिष्व अविवृत्सिष्म
प० विवृत्सामास विवृत्सामासतुः विवृत्सामासुः
विवृत्सामासिथ विवृत्सामासथुः विवृत्सामास
विवृत्सामास विवृत्सामासिव विवृत्सामासिम
आ० विवृत्स्यात् विवृत्स्यास्ताम् विवृत्स्यासुः
विवृत्स्याः विवृत्स्यास्तम् विवृत्स्यास्त
विवृत्स्यासम् विवृत्स्यास्व विवृत्स्यास्म
श्व० विवृत्सिता विवृत्सितारौ विवृत्सितारः
विवृत्सितासि विवृत्सितास्थः विवृत्सितास्थ
विवृत्सितास्मि विवृत्सितास्वः विवृत्सितास्मः
भ० विवृत्सिष्यति विवृत्सिष्यतः विवृत्सिष्यन्ति
विवृत्सिष्यसि विवृत्सिष्यथः विवृत्सिष्यथ
विवृत्सिष्यामि विवृत्सिष्यावः विवृत्सिष्यामः
क्रि० अविवृत्सिष्यत् अविवृत्सिष्यताम्
अविवृत्सिष्यन् अविवृत्सिष्यः अविवृत्सिष्यतम्
अविवृत्सिष्यत अविवृत्सिष्यम् अविवृत्सिष्याव
अविवृत्सिष्याम

पक्षे-विवर्तिषते । विवर्तिषेत विवर्तिषताम्
अविवर्तिषत अविवर्तिषिष्ट विवर्तिषाञ्चक्रे
विवर्तिषिषीष्ट । विवर्तिषिता । विवर्तिषिष्यते
। अविवर्तिषिष्यत ।

कृत्,

व० चिकृत्सति चिकृत्सतः चिकृत्सन्ति
चिकृत्ससि चिकृत्सथः चिकृत्सथ
चिकृत्सामि चिकृत्सावः चिकृत्सामः
स० चिकृत्सेत् चिकृत्सेताम् चिकृत्सेयुः
चिकृत्सेः चिकृत्सेतम् चिकृत्सेत
चिकृत्सेयम् चिकृत्सेव चिकृत्सेम

प० चिकृत्सतु-तात् चिकृत्सताम् चिकृत्सन्तु
चिकृत्स ,, चिकृत्सतम् चिकृत्सत
चिकृत्सानि चिकृत्साव चिकृत्साम
ह्य० अचिकृत्सत् अचिकृत्सताम् अचिकृत्सन्
अचिकृत्सः अचिकृत्सतम् अचिकृत्सत
अचिकृत्सम् अचिकृत्साव अचिकृत्साम
अ० अचिकृत्सीत् अचिकृत्सिष्टाम् अचिकृत्सिषुः
अचिकृत्सीः अचिकृत्सिष्टम् अचिकृत्सिष्ट
अचिकृत्सिषम् अचिकृत्सिष्व अचिकृत्सिष्म
प० चिकृत्सामास चिकृत्सामासतुः चिकृत्सामासुः
चिकृत्सामासिथ चिकृत्सामासथुः चिकृत्सामास
चिकृत्सामास चिकृत्सामासिव चिकृत्सामासिम
आ० चिकृत्स्यात् चिकृत्स्यास्ताम् चिकृत्स्यासुः
चिकृत्स्याः चिकृत्स्यास्तम् चिकृत्स्यास्त
चिकृत्स्यासम् चिकृत्स्यास्व चिकृत्स्यास्म
श्व० चिकृत्सिता चिकृत्सितारौ चिकृत्सितारः
चिकृत्सितासि चिकृत्सितास्थः चिकृत्सितास्थ
चिकृत्सितास्मि चिकृत्सितास्वः चिकृत्सितास्मः
भ० चिकृत्सिष्यति चिकृत्सिष्यतः चिकृत्सिष्यन्ति
चिकृत्सिष्यसि चिकृत्सिष्यथः चिकृत्सिष्यथ
चिकृत्सिष्यामि चिकृत्सिष्यावः चिकृत्सिष्यामः
अचिकृत्सिष्यत् अचिकृत्सिष्यताम् अचिकृत्सिष्यन्
अचिकृत्सिष्यः अचिकृत्सिष्यतम् अचिकृत्सिष्यत
अचिकृत्सिष्यम् अचिकृत्सिष्याव अचिकृत्सिष्याम

पक्षे-चिकर्तिषति । चिकर्तिषेत् । चिकर्तिषतु
अचिकर्तिषत् । अचिकर्तिषीत् । चिकर्तिषामास
चिकर्तिष्यात् चिकर्तिषिता । चिकर्तिषिष्यति
अचिकर्तिषिष्यत् ।

चृत्-चिचृत्सति चिचर्तिषति । अचिचृत्सीत्
अचिचर्तिषीत् ।

नृत्-निनृत्सति निनर्तिषति । अनिनृत्सीत्
अनिनर्तिषीत् ।

दिव्,

दुद्यूषति । दुद्यूषेत् । दुद्यूषतु । अदुद्यूषत् ।
अदुद्यूषीत् । दुद्यूषामास । दुद्यूष्यात् ।
दुद्यूषिता । दुद्यूषिष्यति । अदुद्यूषिष्यत् ।

एवं-दिदेविषति अदिदेविषीत् ।
सिव-सिस्यूषति । सिस्यूषेत् । सिस्यूषतु ।
असिस्यूषत् । असिस्यूषीत् । सिस्यूषामास ।
सिस्यूष्यात् । सिस्यूषिता । सिस्यूषिष्यति ।
असिस्यूषिष्यत् ।
सिसेविषति सिसेविषेत् सिसेविषतु
असिसेविषत् असिसेविषीत् सिसेविषामास
सिसेविष्यात् सिसेविषिता सिसेविषिष्यति
असिसेविषिष्यत्

ऋधु

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | ईर्त्सति | ईर्त्सतः | ईर्त्सन्ति |
| | ईर्त्ससि | ईर्त्सथः | ईर्त्सथ |
| | ईर्त्सामि | ईर्त्सावः | ईर्त्सामः |
| स० | ईर्त्सेत् | ईर्त्सेताम् | ईर्त्सेयुः |
| | ईर्त्सेः | ईर्त्सेतम् | ईर्त्सेत |
| | ईर्त्सेयम् | ईर्त्सेव | ईर्त्सेम |
| प० | ईर्त्सतु ईर्त्सतात् | ईर्त्सताम् | ईर्त्सन्तु |
| | ईर्त्स ईर्त्सतात् | ईर्त्सतम् | ईर्त्सत |
| | ईर्त्सानि | ईर्त्साव | ईर्त्साम |
| ह्य० | ऐर्त्सत् | ऐर्त्सताम् | ऐर्त्सन् |
| | ऐर्त्सः | ऐर्त्सतम् | ऐर्त्सत |
| | ऐर्त्सम् | ऐर्त्साव | ऐर्त्साम |
| अ० | ऐर्त्सीत् | ऐर्त्सिष्टाम् | ऐर्त्सिषुः |
| | ऐर्त्सीः | ऐर्त्सिष्टम् | ऐर्त्सिष्ट |
| | ऐर्त्सिषम् | ऐर्त्सिष्व | ऐर्त्सिष्म |
| प० | ईर्त्सामास | ईर्त्सामासतुः | ईर्त्सामासुः |
| | ईर्त्सामासिथ | ईर्त्सामासथुः | ईर्त्सामास |
| | ईर्त्सामास | ईर्त्सामासिव | ईर्त्सामासिम |
| आ० | ईर्त्स्यात् | ईर्त्स्यास्ताम् | ईर्त्स्यासुः |
| | ईर्त्स्याः | ईर्त्स्यास्तम् | ईर्त्स्यास्त |
| | ईर्त्स्यासम् | ईर्त्स्यास्व | ईर्त्स्यास्म |
| श्व० | ईर्त्सिता | ईर्त्सितारौ | ईर्त्सितारः |
| | ईर्त्सितासि | ईर्त्सितास्थः | ईर्त्सितास्थ |
| | ईर्त्सितास्मि | ईर्त्सितास्वः | ईर्त्सितास्मः |
| भ० | ईर्त्सिष्यति | ईर्त्सिष्यतः | ईर्त्सिष्यन्ति |
| | ईर्त्सिष्यसि | ईर्त्सिष्यथः | ईर्त्सिष्यथ |
| | ईर्त्सिष्यामि | ईर्त्सिष्यावः | ईर्त्सिष्यामः |
| क्रि० | ऐर्त्सिष्यत् | ऐर्त्सिष्यताम् | ऐर्त्सिष्यन् |
| | ऐर्त्सिष्यः | ऐर्त्सिष्यतम् | ऐर्त्सिष्यत |
| | ऐर्त्सिष्यम् | ऐर्त्सिष्याव | ऐर्त्सिष्याम |

एवं-अर्दिधिषति अर्दिधिषेत् अर्दिधिषतु
आर्दिधिषत् आर्दिधिषीत् अर्दिधिषामास
अर्दिधिष्यात् अर्दिधिषिता अर्दिधिषिष्यति
आर्दिधिषिष्यत्

भ्रस्ज

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | बिभर्क्षति | बिभर्क्षतः | बिभर्क्षन्ति |
| | बिभर्क्षसि | बिभर्क्षथः | बिभर्क्षथ |
| | बिभर्क्षामि | बिभर्क्षावः | बिभर्क्षामः |
| स० | बिभर्क्षेत् | बिभर्क्षेताम् | बिभर्क्षेयुः |
| | बिभर्क्षेः | बिभर्क्षेतम् | बिभर्क्षेत |
| | बिभर्क्षेयम् | बिभर्क्षेव | बिभर्क्षेम |
| प० | बिभर्क्षतु-तात् | बिभर्क्षताम् | बिभर्क्षन्तु |
| | बिभर्क्ष ,, | बिभर्क्षतम् | बिभर्क्षत |
| | बिभर्क्षाणि | बिभर्क्षाव | बिभर्क्षाम |
| ह्य० | अबिभर्क्षत् | अबिभर्क्षताम् | अबिभर्क्षन् |
| | अबिभर्क्षः | अबिभर्क्षतम् | अबिभर्क्षत |
| | अबिभर्क्षम् | अबिभर्क्षाव | अबिभर्क्षाम |
| अ० | अबिभर्क्षीत् | अबिभर्क्षिष्टाम् | अबिभर्क्षिषुः |
| | अबिभर्क्षीः | अबिभर्क्षिष्टम् | अबिभर्क्षिष्ट |
| | अबिभर्क्षिषम् | अबिभर्क्षिष्व | अबिभर्क्षिष्म |
| प० | बिभर्क्षामास | बिभर्क्षामासतुः | बिभर्क्षामासुः |
| | बिभर्क्षामासिथ | बिभर्क्षामासथुः | बिभर्क्षामास |
| | बिभर्क्षामास | बिभर्क्षामासिव | बिभर्क्षामासिम |
| आ० | बिभर्क्ष्यात् | बिभर्क्ष्यास्ताम् | बिभर्क्ष्यासुः |
| | बिभर्क्ष्याः | बिभर्क्ष्यास्तम् | बिभर्क्ष्यास्त |
| | बिभर्क्ष्यासम् | बिभर्क्ष्यास्व | बिभर्क्ष्यास्म |
| श्व० | बिभर्क्षिता | बिभर्क्षितारौ | बिभर्क्षितारः |
| | बिभर्क्षितासि | बिभर्क्षितास्थः | बिभर्क्षितास्थ |
| | बिभर्क्षितास्मि | बिभर्क्षितास्वः | बिभर्क्षितास्मः |
| भ० | बिभर्क्षिष्यति | बिभर्क्षिष्यतः | बिभर्क्षिष्यन्ति |

विभक्षिष्यसि विभक्षिष्यथः विभक्षिष्यथ
विभक्षिष्यामि विभक्षिष्यावः विभक्षिष्यामः
क्रि० अविभक्षिष्यत् अविभक्षिष्यताम् अविभक्षिष्यन्
अविभक्षिष्यः अविभक्षिष्यतम् अविभक्षिष्यत
अविभक्षिष्यम् अविभक्षिष्याव अविभक्षिष्याम

एवं-विभर्जिषति । विभर्जिषेत् । विभर्जिषतु
अविभर्जिषत् । अविभर्जिषीत् । विभर्जिषामास
विभर्जिष्यात् । विभर्जिषिता । विभर्जिषिष्यति
अविभर्जिषिष्यत् ।

एवं-विभ्रक्षति । विभ्रक्षेत् । विभ्रक्षतु
अविभ्रक्षत् । अविभ्रक्षीत् । विभ्रक्षामास ।
विभ्रक्ष्यात् । विभ्रक्षिता । विभ्रक्षिष्यति ।
अविभ्रक्षिष्यत् ।

एवं-विभ्रज्जिषति । विभ्रज्जिषेत् । विभ्रज्जिषतु
अविभ्रज्जिषत् । अविभ्रज्जिषीत् । विभ्रज्जिषामास
विभ्रज्जिष्यात् विभ्रज्जिषिता । विभ्रज्जिषिष्यति । अविभ्रज्जिषिष्यत् ।

एवं- विभक्षते । अविभक्षिष्ट । विभर्जिषते
अविभर्जिषिष्ट । विभ्रक्षते । अविभ्रक्षिष्ट
विभ्रज्जिषते अविभ्रज्जिषिष्ट ।

दम्भ,

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | धीप्सति | धीप्सतः | धीप्सन्ति |
| | धीप्ससि | धीप्सथः | धीप्सथ |
| | धीप्सामि | धीप्सावः | धीप्सामः |
| स० | धीप्सेत् | धीप्सेताम् | धीप्सेयुः |
| | धीप्सेः | धीप्सेतम् | धीप्सेत |
| | धीप्सेयम् | धीप्सेव | धीप्सेम |
| प० | धीप्सतु धीप्सतात् | धीप्सताम् | धीप्सन्तु |
| | धीप्स | ,, | धीप्सतम् धीप्सत |
| | धीप्सानि | धीप्साव | धीप्साम |
| ह्य० | अधीप्सत् | अधीप्सताम् | अधीप्सन् |
| | अधीप्सः | अधीप्सतम् | अधीप्सत |
| | अधीप्सम् | अधीप्साव | अधीप्साम |
| अ० | अधीप्सीत् | अधीप्सिष्टाम् | अधीप्सिषुः |
| | अधीप्सीः | अधीप्सिष्टम् | अधीप्सिष्ट |
| | अधीप्सिषम् | अधीप्सिष्व | अधीप्सिष्म |
| प० | धीप्सामास | धीप्सामासतुः | धीप्सामासुः |
| | धीप्सामासिथ | धीप्सामासथुः | धीप्सामास |
| | धीप्सामास | धीप्सामासिव | धीप्सामासिम |
| आ० | धीप्स्यात् | धीप्स्यास्ताम् | धीप्स्यासुः |
| | धीप्स्याः | धीप्स्यास्तम् | धीप्स्यास्त |
| | धीप्स्यासम् | धीप्स्यास्व | धीप्स्यास्म |
| श्व० | धीप्सिता | धीप्सितारौ | धीप्सितारः |
| | धीप्सितासि | धीप्सितास्थः | धीप्सितास्थ |
| | धीप्सितास्मि | धीप्सितास्वः | धीप्सितास्मः |
| भ० | धीप्सिष्यति | धीप्सिष्यतः | धीप्सिष्यन्ति |
| | धीप्सिष्यसि | धीप्सिष्यथः | धीप्सिष्यथ |
| | धीप्सिष्यामि | धीप्सिष्यावः | धीप्सिष्यामः |
| क्रि० | अधीप्सिष्यत् | अधीप्सिष्यताम् | अधीप्सिष्यन् |
| | अधीप्सिष्यः | अधीप्सिष्यतम् | अधीप्सिष्यत |
| | अधीप्सिष्यम् | अधीप्सिष्याव | अधीप्सिष्याम |

एवं-धिप्सति । अधिप्सीत् । दिदम्भिषति
अदिदम्भिषीत् ।

श्रि-शिश्रीषति । अशिश्रीषीत् । शिश्रयिषति
अशिश्रयिषीत् । शिश्रीषते । अशिश्रीषिष्ट ।
शिश्रयिषते । अशिश्रयिषिष्ट ।

ऊर्णु-प्रोर्णुनूषति । प्रौर्णुनूषीत् । प्रोर्णुनविषति
प्रौर्णुनविषीत् । प्रोर्णुनुविषति । प्रौर्णुनुविषीत्
प्रोर्णुनूषते । प्रौर्णुनूषिष्ट । प्रोर्णुनविषते ।
प्रौर्णुनविषिष्ट । प्रोर्णुनुविषते । प्रौर्णुनुविषिष्ट

भृ-बुभूर्षति । अबुभूर्षीत् । बिभरिषति ।
अबिभरिषीत् । बुभूर्षते । अबुभूर्षिष्ट ।
बिभरिषते । अबिभरिषिष्ट ।

ज्ञा,

व० जिज्ञासते । अजिज्ञासिष्ट ।
यथा धर्मं जिज्ञासते ।
एवं-अवजिज्ञासते । अवाजिज्ञासिष्ट ।
अनोर्ज्ञ,
अनुजिज्ञासति । अन्वजिज्ञासीत् ।

यथा पुत्रमनुजिज्ञासति पाठाय ।
णिगन्तस्यास्य
मारणतोषणनिशानेऽर्थे चौरादिक-ज्ञप-
इत्यस्य च ।

व० ज्ञीप्सति ज्ञीप्सतः ज्ञीप्सन्ति
ज्ञीप्ससि ज्ञीप्सथः ज्ञीप्सथ
ज्ञीप्सामि ज्ञीप्सावः ज्ञीप्सामः
स० ज्ञीप्सेत् ज्ञीप्सेताम् ज्ञीप्सेयुः
ज्ञीप्सेः ज्ञीप्सेतम् ज्ञीप्सेत
ज्ञीप्सेयम् ज्ञीप्सेव ज्ञीप्सेम
प० ज्ञीप्सतु ज्ञीप्सतात् ज्ञीप्सताम् ज्ञीप्सन्तु
ज्ञीप्स ,, ज्ञीप्सतम् ज्ञीप्सत
ज्ञीप्सानि ज्ञीप्साव ज्ञीप्साम
ह्य० अज्ञीप्सत् अज्ञीप्सताम् अज्ञीप्सन
अज्ञीप्सः अज्ञीप्सतम् अज्ञीप्सत
अज्ञीप्सम् अज्ञीप्साव अज्ञीप्साम
अ० अज्ञीप्सीत् अज्ञीप्सिष्टाम् अज्ञीप्सिषुः
अज्ञीप्सीः अज्ञीप्सिष्टम् अज्ञीप्सिष्ट
अज्ञीप्सिषम् अज्ञीप्सिष्व अज्ञीप्सिष्म
प० ज्ञीप्सामास ज्ञीप्सामासतुः ज्ञीप्सामासुः
ज्ञीप्सामासिथ ज्ञीप्सामासथुः ज्ञीप्सामास
ज्ञीप्सामास ज्ञीप्सामासिव ज्ञीप्सामासिम
आ० ज्ञीप्स्यात् ज्ञीप्स्यास्ताम् ज्ञीप्स्यासुः
ज्ञीप्स्याः ज्ञीप्स्यास्तम् ज्ञीप्स्यास्त
ज्ञीप्स्यासम् ज्ञीप्स्यास्व ज्ञीप्स्यास्म
श्व० ज्ञीप्सिता ज्ञीप्सितारौ ज्ञीप्सितारः
ज्ञीप्सितासि ज्ञीप्सितास्थः ज्ञीप्सितास्थ
ज्ञीप्सितास्मि ज्ञीप्सितास्वः ज्ञीप्सितास्मः
भ० ज्ञीप्सिष्यति ज्ञीप्सिष्यतः ज्ञीप्सिष्यन्ति
ज्ञीप्सिष्यसि ज्ञीप्सिष्यथः ज्ञीप्सिष्यथ
ज्ञीप्सिष्यामि ज्ञीप्सिष्यावः ज्ञीप्सिष्यामः
क्रि० अज्ञीप्सिष्यत् अज्ञीप्सिष्यताम् अज्ञीप्सिष्यन्
अज्ञीप्सिष्यः अज्ञीप्सिष्यतम् अज्ञीप्सिष्यत
अज्ञीप्सिष्यम् अज्ञीप्सिष्याव अज्ञीप्सिष्याम

एवं जिज्ञपयिषति । अजिज्ञपयिषीत् ।

ज्ञा इत्यस्य णिगन्तस्य नियोजनायार्थे तु-
आजिज्ञापयिषति । आजिज्ञापयिषीत् ।
जिज्ञापयिषति । अजिज्ञापयिषीत् ।
खन-चिखनिषति । चिखनिषते ।
अचिखनिषीत् । अचिखनिषिष्ट ।
जन-जिजनिषते । अजिजनिषिष्ट ।

आप्लृ,

व० ईप्सति ईप्सतः ईप्सन्ति
ईप्ससि ईप्सथः ईप्सथ
ईप्सामि ईप्सावः ईप्सामः
स० ईप्सेत् ईप्सेताम् ईप्सेयुः
ईप्सेः ईप्सेतम् ईप्सेत
ईप्सेयम् ईप्सेव ईप्सेम
प० ईप्सतु ईप्सतात् ईप्सताम् ईप्सन्तु
ईप्स ईप्सतात् ईप्सतम् ईप्सत
ईप्सानि ईप्साव ईप्साम
ह्य० ऐप्सत् ऐप्सताम् ऐप्सन्
ऐप्सः ऐप्सतम् ऐप्सत
ऐप्सम् ऐप्साव ऐप्साम
अ० ऐप्सीत् ऐप्सिष्टाम् ऐप्सिषुः
ऐप्सीः ऐ ,, ऐप्सिष्ट
ऐप्सिषम् ऐप्सिष्व ऐप्सिष्म
प० ईप्सामास ईप्सामासतुः ईप्सामासुः
ईप्सामासिथ ईप्सामासथुः ईप्सामास
ईप्सामास ईप्सामासिव ईप्सामासिम
आ० ईप्स्यात् ईप्स्यास्ताम् ईप्स्यासुः
ईप्स्याः ईप्स्यास्तम् ईप्स्यास्त
ईप्स्यासम् ईप्स्यास्व ईप्स्यास्म
श्व० ईप्सिता ईप्सितारौ ईप्सितारः
ईप्सितासि ईप्सितास्थः ईप्सितास्थ
ईप्सितास्मि ईप्सितास्वः ईप्सितास्मः
भ० ईप्सिष्यति ईप्सिष्यतः ईप्सिष्यन्ति
ईप्सिष्यसि ईप्सिष्यथः ईप्सिष्यथ
ईप्सिष्यामि ईप्सिष्यावः ईप्सिष्यामः
क्रि० ऐप्सिष्यत् ऐप्सिष्यताम् ऐप्सिष्यन्

पेप्सिष्यः पेप्सिष्यतम् पेप्सिष्यत
पेप्सिष्यम् पेप्सिष्याव पेप्सिष्याम

सन

व० सिषासति सिषासतः सिषासन्ति
सिषाससि सिषासथः सिषासथ
सिषासामि सिषासावः सिषासामः
स० सिषासेत् सिषासेताम् सिषासेयुः
सिषासेः सिषासेतम् सिषासेत
सिषासेयम् सिषासेव सिषासेम
प० सिषासतु, तात् सिषासताम् सिषासन्तु
सिषास ,, सिषासतम् सिषासत
सिषासानि सिषासाव सिषासाम
ह्य० असिषासत् असिषासताम् असिषासन्
असिषासः असिषासतम् असिषासत
असिषासम् असिषासाव असिषासाम
अ० असिषासीत् असिषासिष्टाम् असिषासिषुः
असिषासीः असिषासिष्टम् असिषासिष्ट
असिषासिषम् असिषासिष्व असिषासिष्म
प० सिषासामास सिषासामासतुः सिषासामासुः
सिषासामासिथ सिषासामासथुः सिषासामास
सिषासामास सिषासामासिव सिषासामासिम
आ० सिषास्यात् सिषास्यास्ताम् सिषास्यासुः
सिषास्याः सिषास्यास्तम् सिषास्यास्त
सिषास्यासम् सिषास्यास्व सिषास्यास्म
श्व० सिषासिता सिषासितारौ सिषासितारः
सिषासितासि सिषासितास्थः सिषासितास्थ
सिषासितास्मि सिषासितास्वः सिषासितास्मः
भ० सिषासिष्यति सिषासिष्यतः सिषासिष्यन्ति
सिषासिष्यसि सिषासिष्यथः सिषासिष्यथ
सिषासिष्यामि सिषासिष्यावः सिषासिष्यामः
क्रि० असिषासिष्यत् असिषासिष्यताम्
असिषासिष्यन् असिषासिष्यः
असिषासिष्यतम् असिषासिष्यत
असिषासिष्यम् असिषासिष्याव असिषासिष्याम
एवं-सिसनिषति । असिसनिषीत् ।

तन

व० तितांसति तितांसतः तितांसन्ति
तितांससि तितांसथः तितांसथ
तितांसामि तितांसावः तितांसामः
स० तितांसेत् तितांसेताम् तितांसेयुः
तितांसेः तितांसेतम् तितांसेत
तितांसेयम् तितांसेव तितांसेम
प० तितांसतु-तात् तितांसताम् तितांसन्तु
तितांस ,, तितांसतम् तितांसत
तितांसानि तितांसाव तितांसाम
ह्य० अतितांसत् अतितांसताम् अतितांसन्
अतितांसः अतितांसतम् अतितांसत
अतितांसम् अतितांसाव अतितांसाम
अ० अतितांसीत् अतितांसिष्टाम् अतितांसिषुः
अतितांसीः अतितांसिष्टम् अतितांसिष्ट
अतितांसिषम् अतितांसिष्व अतितांसिष्म
प० तितांसामास तितांसामासतुः तितांसामासुः
तितांसामासिथ तितांसामासथुः तितांसामास
तितांसामास तितांसामासिव तितांसामासिम
आ० तितांस्यात् तितांस्यास्ताम् तितांस्यासुः
तितांस्याः तितांस्यास्तम् तितांस्यास्त
तितांस्यासम् तितांस्यास्व तितांस्यास्म
श्व० तितांसिता तितांसितारौ तितांसितारः
तितांसितासि तितांसितास्थः तितांसितास्थ
तितांसितास्मि तितांसितास्वः तितांसितास्मः
भ० तितांसिष्यति तितांसिष्यतः तितांसिष्यन्ति
तितांसिष्यसि तितांसिष्यथः तितांसिष्यथ
तितांसिष्यामि तितांसिष्यावः तितांसिष्यामः
अतितांसिष्यत् अतितांसिष्यताम् अतितांसिष्यन्
अतितांसिष्यः अतितांसिष्यतम् अतितांसिष्यत
अतितांसिष्यम् अतितांसिष्याव अतितांसिष्याम
एवं तितंसति अतितंसीत् तितनिषति
अतितनिषीत् । तितांसते अतितांसिष्ट
तितंसते अतितंसिष्ट तितनिषते अतितनिषिष्ट

रभ

व० आरिप्सते आरिप्सेते आरिप्सन्ते
आरिप्ससे आरिप्सेथे आरिप्सध्वे
आरिप्से आरिप्सावहे आरिप्सामहे
स० आरिप्सेत आरिप्सेयाताम् आरिप्सेरन्
आरिप्सेथाः आरिप्सेयाथाम् आरिप्सेध्वम्
आरिप्सेय आरिप्सेवहि आरिप्सेमहि
प० आरिप्सताम् आरिप्सेताम् आरिप्सन्ताम्
आरिप्सस्व आरिप्सेथाम् आरिप्सध्वम्
आरिप्सै आरिप्सावहै आरिप्सामहै
ह्य० आरिप्सत आरिप्सेताम् आरिप्सन्त
आरिप्सथाः आरिप्सेथाम् आरिप्सध्वम्
आरिप्से आरिप्सावहि आरिप्सामहि
अ० आरिप्सिष्ट आरिप्सिषाताम् आरिप्सिषत
आरिप्सिष्ठाः आरिप्सिषाथाम् आरिप्सिऽड्-
ढ्वम्-ध्वम्
आरिप्सिषि आरिप्सिष्वहि आरिप्सिष्महि
प०आरिप्साञ्चक्रे आरिप्साञ्चक्राते आरिप्साञ्चक्रिरे
आरिप्साञ्चकृषे आरिप्साञ्चक्राथे आरिप्साञ्चकृढ्वे
आरिप्साञ्चक्रे आरिप्साञ्चकृवहे आरिप्साञ्चकृमहे
आरिप्सिषीष्ट आरिप्सिषीयास्ताम् आरिप्सिषीरन्
आरिप्सिषीष्ठाः आरिप्सिषीयास्थाम् आरिप्सिषीध्वम्
आरिप्सिषीय आरिप्सिषीवहि आरिप्सिषीमहि
श्व०आरिप्सिता आरिप्सितारौ आरिप्सितारः
आरिप्सितासे आरिप्सितासाथे आरिप्सिताध्वे
आरिप्सिताहे आरिप्सितास्वहे आरिप्सितास्महे
भ०आरिप्सिष्यते आरिप्सिष्येते आरिप्सिष्यन्ते
आरिप्सिष्यसे आरिप्सिष्येथे आरिप्सिष्यध्वे
आरिप्सिष्ये आरिप्सिष्यावहे आरिप्सिष्यामहे
क्रिआरिप्सिष्यत आरिप्सिष्येताम् आरिप्सिष्यन्त
आरिप्सिष्यथाःआरिप्सिष्येथाम्आरिप्सिष्यध्वम्
अ.रिप्सिष्ये आरिप्सिष्यावहि आरिप्सिष्यामहि

लभ-लिप्सते अलिप्सिष्ट ।
शक शिक्षति अशिक्षीत् शिक्षते । अशिक्षिष्ट
पत-पित्सति अपित्सीत् ।
पद-पित्सते अपित्सिष्ट ।

वृ

व० प्राविवरिषति प्राविवरिषतः प्राविवरिषन्ति
प्राविवरिषसि प्राविवरिषथः प्राविवरिषथ
प्राविवरिषामि प्राविवरिषावः प्राविवरिषामः
स० प्राविवरिषेत् प्राविवरिषेताम् प्राविवरिषेयुः
प्राविवरिषेः प्राविवरिषेतम् प्राविवरिषेत
प्राविवरिषेयम् प्राविवरिषेव प्राविवरिषेम
प० प्राविवरिषतु प्राविवरिषतात् प्राविवरिषताम्
प्राविवरिषन्तु प्राविवरिष ,, प्राविवरिषतम्
प्राविवरिषत प्राविवरिषाणि प्राविवरिषाव
प्राविवरिषाम
ह्य० प्राविवरिषत् प्राविवरिषताम् प्राविवरिषन्
प्राविवरिषः प्राविवरिषतम् प्राविवरिषत
प्राविवरिषम् प्राविवरिषाव प्राविवरिषाम
प्राविवरिषीत् प्राविवरिषीष्टाम् प्राविवरिषीषुः
प्राविवरिषीः प्राविवरिषीष्टम् प्राविवरिषीष्ट
प्राविवरिषीषम् प्राविवरिषीष्व प्राविवरिषीष्म
प्राविवरिषामास प्राविवरिषामासतुः
प्राविवरिषामासुः प्राविवरिषामासिथ
प्राविवरिषामासथुः प्राविवरिषामास
प्राविवरिषामास प्राविवरिषामासिव
प्राविवरिषामासिम
श्व० प्राविवरिषिता प्राविवरिषितारौ
प्राविवरिषितारः प्राविवरिषितासि
प्राविवरिषितास्थः प्राविवरिषितास्थ
प्राविवरिषितास्मि प्राविवरिषितास्वः
प्राविवरिषितास्मः
भ० प्राविवरिषिष्यति प्राविवरिषिष्यतः
प्राविवरिषिष्यन्ति प्राविवरिषिष्यसि
प्राविवरिषिष्यथः प्राविवरिषिष्यथ
प्राविवरिषिष्यामि प्राविवरिषिष्यावः
प्राविवरिषिष्यामः
क्रि० प्राविवरिषिष्यत् प्राविवरिषिष्यताम्
प्राविवरिषिष्यन् प्राविवरिषिष्यः
प्राविवरिषिष्यतम् प्राविवरिषिष्यत

प्राविवरिषिष्यम् प्राविवरिषिष्याव
प्राविवरिषिष्याम

एवं प्रावुवूर्षति प्रावुवूर्षीत् प्राविवरीषति
प्राविवरीषीत् वुवूर्षते अवुवूर्षिष्ट विवरिषते
अविवरिषिष्ट विवरीषते अविवरीषिष्ट
तृ-तितीर्षति । अतितीर्षीत् । तितरीषति ।
अतितरीषीत् । तितरिषति । अतितरिषीत्
दरिद्रा-दिदरिद्रासति । अदिदरिद्रासीत् ।
दिदरिद्रिषति । अदिदरिद्रिषीत् ।

ऋ

व० अरिरिषति अरिरिषतः अरिरिषन्ति
अरिरिषसि अरिरिषथः अरिरिषथ
अरिरिषामि अरिरिषावः अरिरिषामः
स० अरिरिषेत् अरिरिषेताम् अरिरिषेयुः
अरिरिषेः अरिरिषेतम् अरिरिषेत
अरिरिषेयम् अरिरिषेव अरिरिषेम
प० अरिरिषतु-तात् अरिरिषताम् अरिरिषन्तु
अरिरिष „ अरिरिषतम् अरिरिषत
अरिरिषाणि अरिरिषाव अरिरिषाम
ह्य० आरिरिषत् आरिरिषताम् आरिरिषन्
आरिरिषः आरिरिषतम् आरिरिषत
आरिरिषम् आरिरिषाव आरिरिषाम
अ०आरिरिषीत् आरिरिषिष्टाम् आरिरिषिषुः
आरिरिषीः आरिरिषिष्टम् आरिरिषिष्ट
आरिरिषिषम् आरिरिषिष्व आरिरिषिष्म
प अरिरिषाञ्चकारअरिरिषाञ्चक्रतुःअरिरिषाञ्चक्रुः
अरिरिषाञ्चकर्थ अरिरिषाञ्चक्रथुः अरिरिषाञ्चक्र
अरिरिषाञ्चकार-चकर अरिरिषाञ्चकृव
अरिरिषाञ्चकृम

आ०अरिरिष्यात्अरिरिष्यास्तामअरिरिष्यासुः
अरिरिष्याः अरिरिष्यास्तम् अरिरिष्यास्त
अरिरिष्यासम अरिरिष्यास्व अरिरिष्यास्म
श्व०अरिरिषिता अरिरिषितारौ अरिरिषितारः
अरिरिषितासि अरिरिषितास्थः अरिरिषितास्थ
अरिरिषितास्मिअरिरिषितास्वःअरिरिषितास्मः

अरिरिषिष्यतिअरिरिषिष्यतःअरिरिषिष्यन्ति
अरिरिषिष्यसि अरिरिषिष्यथः अरिरिषिष्यथ
अरिरिषिष्यामिअरिरिषिष्यावःअरिरिषिष्यामः
आरिरिषिष्यत् आरिरिषिष्यताम्आरिरिषिष्यन्
आरिरिषिष्यः आरिरिषिष्यतम्आरिरिषिष्यत
आरिरिषिष्यम्आरिरिषिष्याव आरिरिषिष्याम

स्मि-सिस्मयिषते असिस्मयिषिष्ट
पूङ् पिपविषते । अपिपविषिष्ट ।
णिगन्तस्यास्य तु—
पिपावयिषति । अपिपावयिषीत् ।
पिपावयिषते अपिपावयिषिष्ट
पूञ्-पुपूषति । अपुपूषीत् । पुपूषते । अपुपूषिष्ट
णिगन्तस्यास्य तु । पिपावयिषति ।
अपिपावयिषीत् । पिपावयिषते । अपिपावयिषीष्ट
अञ्ज-अञ्जिजिषति । आञ्जिजिषीत् ।
अशौटि-अशिशिषते । आशिशिषिष्ट ।
अशश्-अशिशिषति । आशिशिषीत् ।
णिगन्तस्यास्य तु—
आशिशयिषति । आशिशयिषीत् ।
कॄत्-चिकरिषति । अचिकरिषीत् ।
चिकरीषति । अचिकरीषीत् ।
गॄत्-जिगरिषति । जिगरीषति ।
अजिगरिषीत् । अजिगरीषीत् ।
जिगलि (लीषति) मतान्तरे दीर्घोन
दृङ्त्-आदिदरिषते । आदिदरिषिष्ट ।
धृङ्त्-आदिधरिषते । आदिधरिषिष्ट ।
कॄश्-चिकरिषति । अचिकरिषीत् ।
चिकरीषति । अचिकरीषीत् ।
चिकीर्षति । अचिकीर्षीत् ।
गॄश्-जिगरिषति । अजिगरिषीत् ।
जिगरीषति । अजिगरीषीत् ।
जिगर्षति । अजिगीर्षीत् ।
धृ-दिधीर्षति । अदिधीर्षीत् ।

मिंगद्.

व० मित्सति मित्सतः मित्सन्ति
मित्ससि मित्सथः मित्सथ
मित्सामि मित्सावः मित्सामः

स० मित्सेत् मित्सेताम् मित्सेयुः
मित्सेः मित्सेतम् मित्सेत
मित्सेयम् मित्सेव मित्सेम

प० मित्सतु मित्सतात् मित्सताम् मित्सन्तु
मित्स मित्सतात् मित्सतम् मित्सत
मित्सानि मित्साव मित्साम

ह्य० अमित्सत् अमित्सताम् अमित्सन्
अमित्सः अमित्सतम् अमित्सत
अमित्सम् अमित्साव अमित्साम

अ० अमित्सीत् अमित्सिष्टाम् अमित्सिषुः
अमित्सीः अमित्सिष्टम् अमित्सिष्ट
अमित्सिषम् अमित्सिष्व अमित्सिष्म

प० मित्सामास मित्सामासतुः मित्सामासुः
मित्सामासिथ मित्सामासथुः मित्सामास
मित्सामास मित्सामासिव मित्सामासिम

आ० मित्स्यात् मित्स्यास्ताम् मित्स्यासुः
मित्स्याः मित्स्यास्तम् मित्स्यास्त
मित्स्यासम् मित्स्यास्व मित्स्यास्म

श्व० मित्सिता मित्सितारौ मित्सितारः
मित्सितासि मित्सितास्थः मित्सितास्थ
मित्सितास्मि मित्सितास्वः मित्सितास्मः

भ० मित्सिष्यति मित्सिष्यतः मित्सिष्यन्ति
मित्सिष्यसि मित्सिष्यथः मित्सिष्यथ
मित्सिष्यामि मित्सिष्यावः मित्सिष्यामः

क्रि० अमित्सिष्यत् अमित्सिष्यताम् अमित्सिष्यन्
अमित्सिष्यः अमित्सिष्यतम् अमित्सिष्यत
अमित्सिष्यम् अमित्सिष्याव अमित्सिष्याम

एवं-मित्सते । अमित्सिष्ट । इत्यादि ।
मींग्श्-प्रमित्सति । प्रामित्सीत् । प्रमित्सते
प्रामित्सिष्ट ।
मांक्-मित्सति । अमित्सीत् । केचित्तु
मिमासति । अमिमासीत् ।
माङ्क्-प्रमित्सते । प्रामित्सिष्ट ।
मेंङ्-अपमित्सते । अपामित्सिष्ट ।
दाम्-प्रदित्सति । प्रादित्सित् ।
देंङ्-दित्सते । अदित्सिष्ट ।
दांक्-दित्सति । अदित्सीत् । दित्सते । आदित्सिष्ट ।
दोंच्-दित्सति । अदित्सीत् ।
ट्धें-धित्सति । अधित्सीत् ।
धांक्-धित्सति । अधित्सीत् । धित्सते । अधित्सिष्ट

मुच्-अकर्मकः

मोक्षति । अमोक्षीत् । मोक्षते अमोक्षिष्ट ।
मुमुक्षति । अमुमुक्षीत् । मुमुक्षते । अमुमुक्षिष्ट
सकर्मकस्यास्य तु । मुमुक्षति । अमुमुक्षीत् ।
मुमुक्षते । अमुमुक्षिष्ट । इत्याद्येव ।

राधं - वधेऽथ,

व० प्रतिरित्सति प्रतिरित्सतः प्रतिरित्सन्ति
प्रतिरित्ससि प्रतिरित्सथः प्रतिरित्सथ
प्रतिरित्सामि प्रतिरित्सावः प्रतिरित्सामः

स० प्रतिरित्सेत् प्रतिरित्सेताम् प्रतिरित्सेयुः
प्रतिरित्सेः प्रतिरित्सेतम् प्रतिरित्सेत
प्रतिरित्सेयम् प्रतिरित्सेव प्रतिरित्सेम

प० प्रतिरित्सतु प्रतिरित्सताम् प्रतिरित्सन्तु
प्रतिरित्स प्रतिरित्सतम् प्रतिरित्सत
प्रतिरित्सानि प्रतिरित्साव प्रतिरित्साम

ह्य० प्रत्यरित्सत् प्रत्यरित्सताम् प्रत्यरित्सन्
प्रत्यरित्सः प्रत्यरित्सतम् प्रत्यरित्सत
प्रत्यरित्सम् प्रत्यरित्साव प्रत्यरित्साम

अ० प्रत्यरित्सीत् प्रत्यरित्सिष्टाम् प्रत्यरित्सिषुः
प्रत्यरित्सीः प्रत्यरित्सिष्टम् प्रत्यरित्सिष्ट
प्रत्यरित्सिषम् प्रत्यरित्सिष्व प्रत्यरित्सिष्म

प० प्रतिरित्सामास प्रतिरित्सामासतुः प्रतिरित्सामासुः
प्रतिरित्सामासिथ प्रतिरित्सामासथुः प्रतिरित्सामास
प्रतिरित्सामास प्रतिरित्सामासिव प्रतिरित्सामासिम

आ० प्रतिरित्स्यात् प्रतिरित्स्यास्ताम्
प्रतिरित्स्यासुः प्रतिरित्स्याः
प्रतिरित्स्यास्तम् प्रतिरित्स्यास्त
प्रतिरित्स्यासम् प्रतिरित्स्यास्व
प्रतिरित्स्यास्म

श्व० प्रतिरिरित्सिता प्रतिरिरित्सितारौ प्रतिरिरित्सितारः
प्रतिरिरित्सितासि प्रतिरिरित्सितास्थः प्रतिरिरित्सितास्थ
प्रतिरिरित्सितास्मि प्रतिरिरित्सितास्वः
प्रतिरिरित्सितास्मः

प्रतिरिरित्सिष्यति प्रतिरिरित्सिष्यतः प्रतिरिरित्सिष्यन्ति
प्रतिरिरित्सिष्यसि प्रतिरिरित्सिष्यथः प्रतिरिरित्सिष्यथ
प्रतिरिरित्सिष्यामि प्रतिरिरित्सिष्यावः प्रतिरिरित्सिष्यामः

प्रत्यरिरित्सिष्यत् प्रत्यरिरित्सिष्यताम् प्रत्यरिरित्सिष्यन्
प्रत्यरिरित्सिष्यः प्रत्यरिरित्सिष्यतम् प्रत्यरिरित्सिष्यत
प्रत्यरिरित्सिष्यम् प्रत्यरिरित्सिष्याव प्रत्यरिरित्सिष्याम

दीङ्

व० दिदासते दिदासेते दिदासन्ते
दिदाससे दिदासेथे दिदासध्वे
दिदासे दिदासावहे दिदासामहे

स० दिदासेत दिदासेयाताम् दिदासेरन्
दिदासेथाः दिदासेयाथाम् दिदासेध्वम्
दिदासेय दिदासेवहि दिदासेमहि

प० दिदासताम् दिदासेताम् दिदासन्ताम्
दिदासस्व दिदासेथाम् दिदासध्वम्
दिदासै दिदासावहै दिदासामहै

ह्य० अदिदासत अदिदासेताम् अदिदासन्त
अदिदासथाः अदिदासेथाम् अदिदासध्वम्
अदिदासे अदिदासावहि अदिदासामहि

अ० अदिदासिष्ट अदिदासिषाताम् अदिदासिषत
अदिदासिष्ठाः अदिदासिषाथाम् अदिदासिड्ढ्वम्
ढ्वम्
अदिदासिषि अदिदासिष्वहि अदिदासिष्महि

प० दिदासाञ्चक्रे दिदासाञ्चक्राते दिदासाञ्चक्रिरे
दिदासाञ्चकृषे दिदासाञ्चक्राथे दिदासाञ्चकृढ्वे
दिदासाञ्चक्रे दिदासाञ्चकृवहे दिदासाञ्चकृमहे

आ० दिदासिषीष्ट दिदासिषीयास्ताम् दिदासिषीरन्
दिदासिषीष्ठाः दिदासिषीयास्थाम् दिदासिषीध्वम्
दिदासिषीय दिदासिषीवहि दिदासिषीमहि

श्व० दिदासिता दिदासितारौ दिदासितारः
दिदासितासे दिदासितासाथे दिदासिताध्वे
दिदासिताहे दिदासितास्वहे दिदासितास्महे

भ० दिदासिष्यते दिदासिष्येते दिदासिष्यन्ते
दिदासिष्यसे दिदासिष्येथे दिदासिष्यध्वे
दिदासिष्ये दिदासिष्यावहे दिदासिष्यामहे

क्रि० अदिदासिष्यत अदिदासिष्येताम् अदिदासिष्यन्त
अदिदासिष्यथाः अदिदासिष्येथाम् अदिदासिष्यध्वम्
अदिदासिष्ये अदिदासिष्यावहि अदिदासिष्यामहि

एवं—दिदीषते । अदिदीषिष्ट ।
मतान्तरे दिदीषते इत्याद्येव भवति

तृह—तितृक्षति । अतितृक्षीत् । नितर्हिषति
अतितर्हिषीत् ।

जि—जिगीषति । अजिगिषीत् । विजिगीषते
व्यजिगीषिष्ट ।

इष—एषिषिषति । ऐषिषिषीत् ।

अन—प्राणिणिषति । प्राणिणिषीत् ।

ऊच्छ—उचिच्छिषति । औचिच्छिषीत् ।

हुंक—जुहूर्षति । अजुहूर्षीत् ।

णिगन्तस्यास्य तु—जुह्वावयिषति । अजुह्वावयिषीत् । जुह्वावयिषते । अजुह्वावयिषीष्ट

श्वि—शिश्वयिषति । अशिश्वयिषीत् ।

णिगन्तस्यास्य तु-शुशावयिषति । अशुशावयिषीत्
शुशावयिषते । अशुशावयिषिष्ट
शिश्वाययिषति । अशिश्वाययिषीत्
शिश्वाययिषते । अशिश्वाययिषिष्ट ।

स्फुर—पुस्फुरिषति । अपुस्फुरिषीत् ।

णिगन्तस्यास्य तु—पुस्फारयिषति ।
अपुस्फारयिषीत् । पुस्फारयिषते अपुस्फारयिषीष्ट
पुस्फोरयिषति । अपुस्फोरयिषीत् ।
पुस्फोरयिषते । अपुस्फोरयिषीष्ट ।

लू–लुलूषति । अलुलूषीत् । लुलूषते ।
अलुलूषिष्ट । णिगन्तस्यास्य तु–
लिलावयिषति । अलिलावयिषीत्
लिलावयिषते । अलिलावयिषीष्ट ।

श्रु–शुश्रूषते । अशुश्रूषिष्ट । संशुश्रूषते ।
समशुश्रूषिष्ट । आङ्प्रतिभ्यां तु–
आशुश्रूषति । आशुश्रूषीत् । प्रतिशुश्रूषति
प्रत्यशुश्रूषीत् । णिगन्तस्यास्य तु–शिश्रावयि
षति । अशिश्रावयिषीत् ।
शुश्रावयिषति । अशुश्रावयिषीत् ।
शिश्रावयिषते । अशिश्रावयिषिष्ट ।
शुश्रावयिषते । अशुश्रावयिषिष्ट ।

स्रु–सुस्रूषति । असुस्रूषीत् । णिगन्तस्या-
स्य तु–सिस्रावयिषति । असिस्रावयिषीत्
सुस्रावयिषीत् । असुस्रावयिषीत् ।

द्रु–दुद्रूषति । अदुद्रूषीत् । णिगन्तस्यास्य
तु–दिद्रावयिषति । अदिद्रावयिषीत् ।
दुद्रावयिषति । अदुद्रावयिषीत् ।

प्रु–पुप्रूषति । अपुप्रूषीत् ।
पुप्रावयिषति । अपुप्रावयिषीत् ।
पिप्रावयिषति । अपिप्रावयिषीत् ।

प्लु–पुप्लूषति । अपुप्लूषीत् ।
पिप्लावयिषति । अपिप्लावयिषीत् ।
पुप्लावयिषति । अपुप्लावयिषीत् ।
पिप्लावयिषते । अपिप्लावयिषीष्ट ।
पुप्लावयिषते । अपुप्लावयिषीष्ट ।

च्यु–चुच्यूषति । अचुच्यूषीत् ।
चिच्यावयिषति । अचिच्यावयिषीत् ।
चुच्यावयिषति । अचुच्यावयिषीत् ।
चिच्यावयिषते । अचिच्यावयिषीष्ट ।
चुच्यावयिषते । अचुच्यावयिषीष्ट ।

षेवृङ्–सिसेविषते । असिसेविषिष्ट ।
परिषिषेविषते । पर्यषिषेविषिष्ट ।
णिगन्तस्यास्य तु ।
सिषेवयिषति । असिषेवयिषीत् ।
एवं–सिषेवयिषते । असिषेवयिषिष्ट इत्यादि

ष्टु तुष्टूषति । अतुष्टूषीत् । तुष्टूषते ।
अतुष्टूषिष्ट ।

स्वद्–सिस्वदिषते । असिस्वदिषीष्ट । णिग-
न्तस्य–सिस्वादयिषति । असिस्वादयिषीत् ।
सिस्वादयिषते । असिस्वादयिषिष्ट ।

ष्विद–सिष्वित्सति । असिष्वित्सीत् ।
णिगन्तस्य—
सिस्वेदयिषति । असिस्वेदयिषीत् ।
सिस्वेदयिषते । असिस्वेदयिषिष्ट ।

षह्–सिसहिषते । असिसहिषिष्ट ।
णिगन्तस्य तु–
सिसाहयिषति । असिसाहयिषीत् ।
सिसाहयिषते । असिसाहयिषिष्ट ।

षुं–सुसूषति । असुसूषीत् । सुसूषते । असुसूषिष्ट
अभिसुसूषति । अभ्यसुसूषीत् ।
अभिसुसूषते । अभ्यसुसूषिष्ट ।

स्था–तिष्ठासति । अतिष्ठासीत् ।

षञ्ज–सिसङ्क्षति । असिसङ्क्षीत् । णिगन्तस्यास्य तु–
सिषञ्जयिषति असिषञ्जयिषीत्
सिसञ्जयिषति असिसञ्जयिषीत्
मतान्तरे–षत्वं नित्यमेवेति सिसञ्जयिषतीति नः
एवं–सिषञ्जयिषते असिषञ्जयिषिष्ट
सिसञ्जयिषते । असिसञ्जयिषिष्ट इत्यादि

स्वप–सुषुप्सति असुषुप्सीत्
णिगन्तस्यास्य तु–
सुष्वापयिषति असुष्वापयिषीत्
एवं–सुष्वापयिषते असुष्वापयिषिष्ट इत्यादि
एवं–स्वपन्तं प्रयुङ्क्त इति स्वापयति,
स्वापयतीति स्वापकः स्वापकमिच्छतीति
स्वापकीयति स्वापकीयितुमिच्छतीति
सिष्वापकीयिषति असिष्वापकीयिषीत्
एवं–सोषोपीतीति सषुपन् सोषुपतं प्रयुंक्ते

इति सोषोपयति सोषोपयितुमिच्छतीति सोषोपयिषति असोषोपयिषीत् सोषोपयिषते असोषोपयिषीष्ट

ष्मा-दिध्मासति । अदिध्मासीत्
सृ-सिसीर्षति । असिसर्षीत्
ध्यै-दिध्यासति । अदिध्यासीत्
लघु-लिलङ्घिषति । अलिलङ्घिषीत्
शुच-शुशुचिषति । शुशोचिषति
अशुशुचिषीत् । अशुशोचिषीत्
लुञ्च-लुलुञ्चिषति । अलुलुञ्चिषीत्
अर्च-अर्चिचिषति । आर्चिचिषीत्
वञ्चु-विवञ्चिषति । अविवञ्चिषीत्
वाञ्छु-विवाञ्छिषति । अविवाञ्छिषीत्
व्रज-विव्रजिषति । अविव्रजिषीत्
अर्ज-अर्जिजिषति । आर्जिजिषीत्
एजृ-एजिजिषति । ऐजिजिषीत्
त्यज-तित्यक्षति । अतित्यक्षीत्
कटे-चिकटिषति । अचिकटिषीत्
णट-निनटिषति । अनिनटिषीत्
स्फुट-पुस्फुटिषति । अपुस्फुटिषीत्
क्रीडृ-चिक्रीडिषति । अचिक्रीडिषीत् ।
रण-रिरणिषति । अरिरणिषीत्
भण-बिभणिषति । अबिभणिषीत्
चिते-चिचेतिषति । चिचितिषति
अचिचितिषीत् । अचिचेतिषीत्
खादृ-चिखादिषति । अचिखादिषीत्
गद-जिगदिषति । अजिगदिषीत्
णिदु-निनन्दिषति । अनिनन्दिषीत्
षिधू-सिसिधिषति । सिसेधिषति
असिसिधिषीत् । असिसेधिषीत्
गुपौ-जुगोपायिषति । जुगुपिषति
जुगोपिषति । जुगुप्सति
अजुगोपायिषीत । अजुगुपिषीत्
अजुगोपिषीत् । अजुगुप्सीत्

लप-लिलपिषति । अलिलपिषीत्
सृप्लृ-सिसृप्सति । असिसृप्सीत्
चुबु-चुचुम्बिषति । अचुचुम्बिषीत्
चर-चिचरिषति । अचिचरिषीत्
क्रमु-चिक्रमिषति । आचिक्रंसते
अचिक्रमिषीत् । अचिक्रंसिष्ट
दल दिदलिषति । अदिदलिषीत्
मील-मिमीलिषति । अमिमीलिषीत्
मूल-मुमूलिषति । अमुमूलिषीत्
फल-पिफलिषति । अपिफलिषीत्
फुल्ल-पुफुल्लिषति । अपुफुल्लिषीत्
खेल-चिखेलिषति । अचिखेलिषीत्
स्खल-चिस्खलिषति । अचिस्खलिषीत्
गल-जिगलिषति । अजिगलिषीत्
गर्व-जिगर्विषति । अजिगर्विषीत्
जीव-जिजीविषति । अजिजीविषीत्
दृश-दिदृक्षते । अदिदृक्षिष्ट
घुष-जुघुषिषति । अजुघुषिषीत
जुघोषिषति । अजुघोषिषीत
कृष-चिकृक्षति । अचिकृक्षीत
विषू-विविषिषति । अविविषिषीत्
विवेषिषति । अविवेषिषीत्
मृषू-मिमर्षिषति । अमिमर्षिषीत्
प्लुषू-पुप्लुषिषति । पुप्लोषिषति
अपुप्लुषिषीत । अपुप्लोषिषीत्
घृषू-जिघर्षिषति । अजिघर्षिषीत
पुष-पुपुषिषति । पुपोषिषति
अपुपुषिषीत् । अपुपोषिषीत्
भूष-बुभूषिषति । अबुभूषिषीत
हसे-जिहसिषति । अजिहसिषीत्
शंसु-शिशंसिषति । अशिशंसिषीत
दहं-दिधक्षति । अदिधक्षीत
अर्ह-अर्जिहिषति । आर्जिहिषीत्
रक्ष-रिरक्षिषति । अरिरक्षिषीत्

डीङ्-डिडयिषते । अडिडयिषिष्ट
कुङ्-चुकूषते । अचुकूषिष्ट
लोकृङ्-लुलोकिषते । अलुलोकिषिष्ट
शक्कुङ्-शिशङ्किषते । अशिशङ्किषिष्ट
ढौकृङ्-डुढौकिषते । अडुढौकिषिष्ट
श्लाघृङ्-शिश्लाघिषते । अशिश्लाघिषिष्ट
पचुङ्-पिपञ्चिषते । अपिपञ्चिषिष्ट
हेडृङ्-जिहेडिषते । अजिहेडिषिष्ट
घूर्णि-जुघूर्णिषते । अजुघूर्णिषिष्ट
यतैङ्-यियतिषते । अयियतिषिष्ट
मुदि-मुमुदिषते । मुमोदिषते ।
अमुमुदिषिष्ट । अमुमोदिषिष्ट ।
हर्दि-जिहत्सते । अजिहत्सिष्ट
ह्लादैङ्-जिह्लादिषते । अजिह्लादिषिष्ट
स्पर्धि-पिस्पर्धिषते । अपिस्पर्धिषिष्ट
टुवेपृङ्विवेपिषते । अविवेपिषिष्ट
कपुङ्चिकम्पिषते । अचिकम्पिषिष्ट
त्रपौषि-तित्रपिषते । अतित्रपिषिष्ट
तित्रप्सते । अतित्रप्सिष्ट
ष्टभुङ्-तिस्तम्भिषते । अतिस्तम्भिषिष्ट
जृभुङ्-जिजृम्भिषते । अजिजृम्भिषिष्ट
क्षमौषि-चिक्षमिषते । चिक्षंसते ।
अचिक्षमिषिष्ट । अचिक्षंसिष्ट ।
कमूङ्-चिकामयिषते । चिकमिषते ।
अचिकामयिषिष्ट । अचिकमिषिष्ट
दपि-दिदयिषते । अदिदयिषीष्ट ।
तायृङ्-तितायिषते । अतितायिषिष्ट
सेवृङ्-सिसेविषते । असिसेविषिष्ट
काशृङ्-चिकाशिषते । अचिकाशिषिष्ट
भाषि-बिभाषिषते । अबिभाषिषिष्ट
गर्हि-जिगर्हिषते । अजिगर्हिषिष्ट
ऊहि-ऊजिहिषते । औजिहिषिष्ट
गाहौङ्-जिगाहिषते । जिघाक्षते
अजिगाहिषिष्ट । अजिघाक्षिष्ट
शिक्षि- शिशिक्षिषते । अशिशिक्षिषिष्ट

दीक्षि—दिदीक्षिषते । अदिदीक्षिषिष्ट
हृंग्-जिहीर्षति(ते)अजिहीर्षीत् अजिहीर्षिष्ट
डुकृंग्-चिकीर्षति(ते) अचिकीर्षीत् अचिकीर्षिष्ट
डुपचींष्-पिपक्षति(ते)अपिपक्षीत् अपिपक्षिष्ट
खनूग्-चिखनिषति (ते) अचिखनिषीत्
अचिखनिषिष्ट
धावूग्—दिधाविषति (ते) अदिधाविषीत्
अदिधाविषिष्ट
लषी—लिलषिषति [ते) अलिलषिषीत्
अलिलषिषिष्ट
ध्वंसूङ्-दिध्वंसिषते । अदिध्वंसिषिष्ट
षदॢं—सिषत्सति । असिषत्सीत्
रमिं—रिरंसते । अरिरंसिष्ट
यजीं-यियक्षति (ते)अयियक्षीत् अयियक्षिष्ट
वेंग-विवासति [ते) अविवासीत् अविवासिष्ट
टुवपीं-विवप्सति (ते) अविवप्सीत् अविवप्सिष्ट
वहीं-विवक्षति (ते) अविवक्षीत् अविवक्षिष्ट
वसं—विवत्सति । अविवत्सीत्
ञित्वरिष्-तित्वरिषते । अतित्वरिषिष्ट
भांकृ—बिभासति । अबिभासीत्
ख्यांकृ-चिख्यासति । अचिख्यासीत्
षुंकृ-सुसूषति । असुसूषीत्
टुक्षु - चुक्षूषति । अचुक्षूषीत्
श्वसकृ — शिश्वसिषति । अशिश्वसिषीत्
जागृकृ-जिजागरिषति । अजिजागरिषीत्
शासूकृ शिशासिषति । अशिशासिषीत्
मृजौकृ-मिमार्जिषति । मिमृक्षति
अमिमार्जिषीत् । अमिमृक्षीत्
शीङ्कृ-शिशयिषते । अशिशयिषिष्ट
ईरिकृ—ईरिरिषते । ऐरिरिषिष्ट
चक्षिकृ-चिख्यासति (ते) चिक्शासति (ते)
चिक्शासति (ते) अचिख्यासीत्
अचिख्यासिष्ट अचिक्शासीत्
अचिक्शासिष्ट अचिक्शासीत् अचिक्शासिष्ट

द्विषिक्-दिद्विक्षति(ते)अदिद्विक्षीतअदिद्विक्षिष्ट
दुहिंक्-दुधुक्षति(ते) अदुधुक्षीत अदुधुक्षिष्ट
लिहिंक्-लिलिक्षति ते,अलिलिक्षीतअलिलिक्षिष्ट
ओहांक् - जिहासति । अजिहासीत
णिजूंकी-निनिक्षति(ते)अनिनिक्षीत्अनिनिक्षिष्ट
विष्लृंकी-विविक्षति,तेअविविक्षीत अविविक्षिष्ट
व्यधंच-विव्यत्सति ते अविव्यत्सीत्अविव्यत्सिष्ट
त्रसैंच्-तित्रसिषति (ते) अतित्रसिषीत्
अतित्रसिषिष्ट
कुधंच—चुकुत्सति । अचुकुत्सीत्
तृपौंच—तितर्पिषति । तितृप्सति
अतितर्पिषीत । अतितृप्सीत्
नशौंच—निनशिषति । निनङ्क्षति
अनिनशिषीत् । अनिनङ्क्षीत्
ञितृषच्-तितर्षिषति । अतितर्षिषीत्
शमूच्—शिशमिषति । अशिशमिषीत
दूङ्च्—दुदूषते । अदुदूषिष्ट
पीङ्च्—पिप्रीषते । अपिप्रीषिष्ट
युधिंच्—युयुत्सते । अयुयुत्सिष्ट
सृजिंच्—सिसृक्षते । असिसृक्षिष्ट
णहींच्-निनत्सति(ते) अनिनत्सीत् अनिनत्सिष्ट
स्तृंग्श्-तिस्तीर्षति(ते) अतिस्तीर्षीत् अतिस्तीर्षिष्ट
हिंट्—जिघीषति। अजिघीषीत्
साधंट्—सिषात्सति । असिषात्सीत्

दिशींत्—दिदिक्षति(ते)अदिदिक्षीत अदिदिक्षिष्ट
ओव्रश्चौत्—विव्रश्चिषति । विव्रक्षति
अविव्रश्चिषीत् । अविव्रक्षीत
टुमस्जोंत्- मिमङ्क्षति । अमिमङ्क्षीत्
कुटत्—चुकुटिषति । अचुकुटिषीत्
रुधृंपी-रुरुत्सति(ते)अरुरुत्सीत अरुरुत्सिष्ट
भञ्जौंप्—बिभङ्क्षति । अबिभङ्क्षीत्
भुजंप्—बुभुक्षति (ते)अबुभुक्षीत अबुभुक्षिष्ट
पिष्लृंप्—पिपक्षति । अपिपिक्षीत्
वनूयी—विवनिषते । अविवनिषिष्ट
चुरण्-चुचोरयिषति(ते) अचुचोरयिषीत
अचुचोरयिषिष्ट
पूजण्-पुपूजयिषति । (ते) अपुपूजयिषीत्
अपुपूजयिषिष्ट
तडण्-तिताडयिषति (ते अतिताडयिषीत
अतिताडयिषीष्ट
कथण्-चिकथयिषति (ते) अचिकथयिषीत्
अचिकथयिषिष्ट
शीलण्-शिशीलयिषति (ते) अशिशीलयिषीत
अशिशीलयिषीष्ट
महण्-मिमहयिषति (ते) अमिमहयिषीत्
अमिमहयिषिष्ट
स्पृहण्-पिस्पृहयिषति (ते, अपिस्पृहयिषीत
अपिस्पृहयिषीष्ट

इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंरक्षणमन्त्रणविद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजयविरचितायां हैमधातुमालायां

## ॥ सन्नन्तप्रक्रिया ॥

# ॥ अथ यङन्तप्रक्रिया. ॥

भू सत्तायाम्.

व० बोभूयते बोभूयेते बोभूयन्ते
बोभूयसे बोभूयेथे बोभूयध्वे
बोभूये बोभूयावहे बोभूयामहे

स० बोभूयेत बोभूयेयाताम् बोभूयेरन्
बोभूयेथाः बोभूयेयाथाम् बोभूयेध्वम्
बोभूयेय बोभूयेवहि बोभूयेमहि

प० बोभूयताम् बोभूयेताम् बोभूयन्ताम्
बोभूयस्व बोभूयेथाम् बोभूयध्वम्
बोभूयै बोभूयावहै बोभूयामहै

ह्य० अबोभूयत अबोभूयेताम् अबोभूयन्त
अबोभूयथाः अबोभूयेथाम् अबोभूयध्वम्
अबोभूये अबोभूयावहि अबोभूयामहि

अ० अबोभूयिष्टअबोभूयिषाताम्अबोभूयिषत
अबोभूयिष्ठाः अबोभूयिषाथाम्
अबोभूयिड्ढ्वम् ढ्वम् ध्वम्
अबोभूयिषिअबोभूयिष्वहिअबोभूयिष्महि

प० बोभूयाञ्चक्रे बोभूयाञ्चक्राते बोभूयाञ्चक्रिरे
बोभूयाञ्चकृषे बोभूयाञ्चक्राथे बोभूयाञ्चकृढ्वे
बोभूयाञ्चक्रे बोभूयाञ्चकृवहे बोभूयाञ्चकृमहे
बोभूयामास बोभूयाम्बभूव

आ० बोभूयिषीष्ट बोभूयिषीयास्ताम्
बोभूयिषीरन् बोभूयिषीष्ठाः
बोभूयिषीयास्थाम् बोभूयिषीढ्वम् ध्वम्
बोभूयिषीयबोभूयिषीवहिबोभूयिषीमहि

श्व० बोभूयिता बोभूयितारौ बोभूयितारः
बोभूयितासेबोभूयितासाथे बोभूयिताध्वे
बोभूयिताहेबोभूयितास्वहेबोभूयितास्महे

भ० बोभूयिष्यते बोभूयिष्येते बोभूयिष्यन्ते
बोभूयिष्यसे बोभूयिष्येथे बोभूयिष्यध्वे
बोभूयिष्ये बोभूयिष्यावहे बोभूयिष्यामहे

क्रि० अबोभूयिष्यत अबोभूयिष्येताम्
अबोभूयिष्यन्त अबोभूयिष्यथाः
अबोभूयिष्येथाम् अबोयिष्यध्वम्
अबोभूयिष्येअबोभूयिष्यावहिअबोभूयिष्यामहि

पच–पापच्यते । अपापचिष्ट ।
तोष्ट्रयते । तोष्ट्रयेत । तोष्ट्रयताम् ।
अतोष्ट्रयत। अतोष्ट्रयिष्ट । तोष्ट्रयाञ्चक्रे
तोष्ट्रयिषीष्ट । तोष्ट्रयिता ।
तोष्ट्रयिष्यते । अतोष्ट्रयिष्यत ।

॥ अत ॥

व० अटाट्यते अटाट्येते अटाट्यन्ते
अटाट्यसे अटाट्येथे अटाट्यध्वे
अटाट्ये अटाट्यावहे अटाट्यामहे

स० अटाट्येत अटाट्येयाताम् अटाट्येरन्
अटाट्येथाः अटाट्येयाथाम् अटाट्येध्वम्
अटाट्येय अटाट्येवहि अटाट्येमहि

प० अटाट्यताम् अटाट्येताम् अटाट्यन्ताम्
अटाट्यस्व अटाट्येथाम् अटाट्यध्वम्
अटाट्यै अटाट्यावहै अटाट्यामहै

ह्य० आटाट्यत आटाट्येताम् आटाट्यन्त
आटाट्यथाः आटाट्येथाम् आटाट्यध्वम्
आटाट्ये आटाट्यावहि आटाट्यामहि

अ० आटाटिष्ट आटाटिषाताम् आटाटिषत
आटाटिष्ठाः आटाटिषाथाम्
आटाटिड्ढ्वम्–ध्वम् आटाटिषि
आटाटिष्वहि आटाटिष्महि

प० अटाटाञ्चक्रे अटाटाञ्चक्राते अटाटाञ्चक्रिरे
अटाटाञ्चकृषेअटाटाञ्चक्राथेअटाटाञ्चकृढ्वे
अटाटाञ्चक्रेअटाटाञ्चकृवहेअटाटाञ्चमहे

आ० अटाटिषीष्ट अटाटिषीयास्ताम्
अटाटिषीरन् अटाटिषीष्ठाः
आटाटिषीयास्थाम् अटाटिषीध्वम्
अटाटिषीय अटाटिषीवहिअटाटिषीमहि

भ० अटाटिष्यते अटाटिष्येते अटाटिष्यन्त ।
अटाटिष्यसे अटाटिष्येथे अटाटिष्यध्वे
अटाटिष्ये अटाटिष्यावहे अटाटिष्यामहे
क्रि० आटाटिष्यत आटाटिष्येताम्
आटाटिष्यन्त आटाटिष्यथाः
आटाटिष्येथाम् आटाटिष्यध्वम्
आटाटिष्ये आटाटिष्यावहि अटाटिष्यामहि

ऋ

अरार्यते । अरार्येत । अरार्यताम् ।
आरार्यत । आरारिष्ट । अरारामास ।
अरारिषीष्ट । अरारिता । अरारिष्यते ।
आरारिष्यत ।
सूत्र-सोसूत्र्यते । असोसूत्रिष्ट
मूत्र-मोमूत्र्यते । अमोमूत्रिष्ट

सूच

सोसूच्यते । असोसूचिष्ट ।
अश-अशाश्यते । आशाशिष्ट

ऊर्णुञ्

प्रोर्णोनूय्यते । प्रोर्णोनूय्येत । प्रोर्णोनूय्यताम्
प्रोर्णोनूय्यत । प्रोर्णोनूयिष्ट । प्रोर्णोनूयाम्बभूव
प्रोर्णोनूयिषीष्ट । प्रोर्णोनूयिता । प्रोर्णोनूयिष्यते । प्रोर्णोनूयिष्यत ।

भण

बम्भण्यते । बम्भण्येत । बम्भण्यताम् ।
अबम्भण्यत । अबम्भणिष्ट । बम्भणामास
बम्भणिषीष्ट । बम्भणिता । बम्भणिष्यते ।
अबम्भणिष्यत । बम्भण्यते ।
क्रमु चंक्रम्यते । अचंक्रमिष्ट । चङ्क्रम्यते
जमु-जंजम्यते । अजंजमिष्ट । जञ्जम्यते ।
अजञ्जमिष्ट ।

जनैचि

जाजायते । जाजायेत । जाजायताम् ।
अजाजायत । अजाजायिष्ट । जाजायमास
जाजायिषीष्ट । जाजायिता । जाजायिष्यते
अजाजायिष्यत ।

एवं-जञ्जन्यते । अजञ्जनिष्ट । इत्यादि जजन्यते
गॄ-निजेगिल्यते । निजेगिल्येत ।
निजेगिल्यताम् । न्यजेगिल्यत ।
न्यजेगिलिष्ट । निजेगिलाञ्चक्रे ।
निजेगिलिषीष्ट । निजेगिलिता ।
निजेगिलिष्यति । न्यजेगिलिष्यत् ।
लुप्—लोलुप्यते । अलोलुपिष्ट
सद्—सासद्यते । असासदिष्ट
चर्—चञ्चूर्यते । अचञ्चूरिष्ट
फल्—पम्फुल्यते । अपम्फुलिष्ट
जप्—जञ्जप्यते । अजञ्जपिष्ट
जभ्—जञ्जभ्यते । अजञ्जभिष्ट
दह्—दन्दह्यते । अदन्दहिष्ट

दन्दश्यते । दन्दश्येत । दन्दश्यताम् ।
अदन्दश्यत । अदन्दशिष्ट । दन्दशामास
दन्दशिषीष्ट । दन्दशिता । दन्दशिष्यते ।
अदन्दशिष्यत ।
भञ्ज्-बम्भज्यते । अबम्भजिष्ट ।
पश-पम्पश्यते । अपम्पशिष्ट ।

नृतैच्

व० नरीनृत्यते नरीनृत्येते नरीनृत्यन्ते
नरीनृत्यसे नरीनृत्येथे नरीनृत्यध्वे
नरीनृत्ये नरीनृत्यावहे नरीनृत्यामहे
स० नरीनृत्येत नरीनृत्येयाताम नरीनृत्येरन्
नरीनृत्येथाः नरीनृत्येयाथाम नरीनृत्येध्वम्
नरीनृत्येय नरीनृत्येवहि नरीनृत्येवहि
प० नरीनृत्यताम्नरीनृत्येताम्नरीनृत्यन्ताम् ।
नरीनृत्यस्व नरीनृत्येथाम् नरीनृत्यध्वम्
नरीनृत्ये नरीनृत्यावहै नरीनृत्यामहै
ह्य० अनरीनृत्यत अनरीनृत्येताम्
अनरीनृत्यन्त अनरीनृत्यथाः
अनरीनृत्येथाम् अनरीनृत्यध्वम
अनरीनृत्ये अनरीनृत्यावहि अनरीनृत्यामहि
अ० अनरीनृतिष्ट अनरीनृतिषाताम्
अनरीनृतिषत अनरीनृतिष्ठाः

अनरीनृतिषाथाम् अनरीनृतिड्ढ्वम् ध्वम्
अनरीनृतिषि अनरीनृतिष्वहि
अनरीनृतिष्महि

प० नरीनृतामास नरीनृतामासतुः
नरीनृतामासुः नरीनृतामासिथ
नरीनृतामासथुः नरीनृतामास
नरीनृतामास नरीनृतामासिव
नरीनृतामासिम

आ० नरीनृतिषीष्ट नरीनृतिषीयास्ताम्
नरीनृतिषीरन् नरीनृतिषीष्ठाः
नरीनृतिषीयास्थाम् नरीनृतिषीध्वम्
नरीनृतिषीय नरीनृतिषीवहि नरीनृतिषीमहि

श्व० नरीनृतिता नरीनृतितारौ नरीनृतितारः
नरीनृतितासे नरीनृतितासाथे
नरीनृतिताध्वे नरीनृतिताहे
नरीनृतितास्वहे नरीनृतितास्महे

भ० नरीनृतिष्यते नरीनृतिष्येते नरीनृतिष्यन्ते
नरीनृतिष्यसे नरीनृतिष्येथे नरीनृतिष्यध्वे
नरीनृतिष्ये नरीनृतिष्यावहे नरीनृतिष्यामहे

क्रि० अनरीनृतिष्यत अनरीनृतिष्येताम्
अनरीनृतिष्यन्त
अनरीनृतिष्यथाः अनरीनृतिष्येथाम्
अनरीनृतिष्यध्वम्
अनरीनृतिष्ये अनरीनृतिष्यावहि
अनरीनृतिष्यामहि

पृच्छ—परीपृच्छ्यते अपरीपृच्छिष्ट
ग्रह—जरीगृह्यते अजरीगृहिष्ट
कृल्प—चलीकृल्प्यते । अचलीकृल्पिष्ट
व्रश्च—वरीवृश्च्यते । अवरीवृश्चिष्ट
गा-गै-जेगीयते । अजेगीयिष्ट
पां—पेपीयते । अपेपीयिष्ट ।
पांङ्-पापायते । अपापायिष्ट

॥ घ्रां—गन्धोपादाने ॥

जेघ्रीयते । जेघ्रीयेत । जेघ्रीयताम्
अजेघ्रीयत । अजेघ्रीयिष्ट । जेघ्रीयाञ्चक्रे
जेघ्रीयिषीष्ट । जेघ्रीयिता । जेघ्रीयिष्यते ।
अजेघ्रीयिष्यत ।

ध्मा—देध्मीयते । अदेध्मीयिष्ट
हन-वधेऽर्थे । जेघ्नीयते अजेघ्नीयिष्ट
गत्यर्थे तु-जङ्घन्यते । अजङ्घनिष्ट

शीङ्

व० शाशय्यते शाशय्येते शाशय्यन्ते
शाशय्यसे शाशय्येथे शाशय्यध्वे
शाशय्ये शाशय्यावहे शाशय्यामहे

स० शाशय्येत शाशय्येयाताम् शाशय्येरन्
शाशय्येथाः शाशय्येयाथाम् शाशय्येध्वम्
शाशय्येय शाशय्येवहि शाशय्येमहि

प० शाशय्यताम् शाशय्येताम् शाशय्यन्ताम्
शाशय्यस्व शाशय्येथाम् शाशय्यध्वम्
शाशय्यै शाशय्यावहै शाशय्यामहै

ह्य०अशाशय्यत अशाशय्येताम् अशाशय्यन्त
अशाशय्यथाः अशाशय्येथाम्अशाशय्यध्वम्
अशाशय्ये अशाशय्यावहि अशाशय्यामहि

अ० अशाशयिष्टअशाशयिषाताम् अशाशयिषत
अशाशयिष्ठाःअशाशयिषाथामअशाशयिड्ढ्वम्
ढ्वम्-ध्वम्
अशाशयिषि अशाशयिष्वहि अशाशयिष्महि

प० शाशयामास शाशयामासतुः शाशयामासुः
शाशयामासिथ शाशयामासथुः शाशयामास
शाशयामास शाशयामासिव शाशयामासिम

शाशयिषीष्ट शाशयिषीयास्ताम् शाशयिषीरन्
शाशयिषीष्ठाः शाशयिषीयास्थाम्
शाशयिषीढ्वम्-ध्वम्
शाशयिषीय शाशयिषीवहि शाशयिषीमहि

श्व०शाशयिता शाशयितारौ शाशयितारः
शाशयितासे शाशयितासाथे शाशयिताध्वे
शाशयिताहे शाशयितास्वहे शाशयितास्महे

भ० शाशयिष्यते शाशयिष्येते शाशयिष्यन्ते
शाशयिष्यसे शाशयिष्येथे शाशयिष्यध्वे
शाशयिष्ये शाशयिष्यावहे शाशयिष्यामहे

अशाशयिष्यत अशाशयिष्येताम् अशाशयिष्यन्त
अशाशयिष्यथाः अशाशयिष्येथाम्
अशाशयिष्यध्वम्
अशाशयिष्ये अशाशयिष्यावहि
अशाशयिष्यामहि

श्वि

व० शेश्वीयते शेश्वीयेते शेश्वीयन्ते
शेश्वीयसे शेश्वीयेथे शेश्वीयध्वे
शेश्वीये शेश्वीयावहे शेश्वीयामहे
स० शेश्वीयेत शेश्वीयेयाताम् शेश्वीयेरन्
शेश्वीयेथाः शेश्वीयेयाथाम् शेश्वीयेध्वम्
शेश्वीयेय शेश्वीयेवहि शेश्वीयेमहि
प० शेश्वीयताम् शेश्वीयेताम् शेश्वीयन्ताम्
शेश्वीयस्व शेश्वीयेथाम् शेश्वीयध्वम्
शेश्वीयै शेश्वीयावहै शेश्वीयामहै
ह्य० अशेश्वीयत अशेश्वीयेताम् अशेश्वीयन्त
अशेश्वीयथाः अशेश्वीयेथाम् अशेश्वीयध्वम्
अशेश्वीये अशेश्वीयावहि अशेश्वीयामहि
अ अशेश्वीयिष्ट अशेश्वीयिषाताम् अशेश्वीयिषत
अशेश्वीयिष्ठाः अशेश्वीयिषाथाम्
अशेश्वीयिढ्वम्-ड्ढ्वम् ध्वम् अशेश्वीयिषि
अशेश्वीयिष्वहि अशेश्वीयिष्महि
प० शेश्वीयामास शेश्वीयामासतुः शेश्वीयामासुः
शेश्वीयामासिथ शेश्वीयामासथुः शेश्वीयामास
शेश्वीयामास शेश्वीयामासिव शेश्वीयामासिम
आ० शेश्वीयिषीष्ट शेश्वीयिषीयास्ताम्
शेश्वीयिषीरन्
शेश्वीयिषीष्ठाः शेश्वीयिषीयास्थाम्
शेश्वीयिषीढ्वम्-ध्वम् शेश्वीयिषीय
शेश्वीयिषीवहि शेश्वीयिषीमहि
श्व० शेश्वीयिता शेश्वीयितारौ शेश्वीयितारः
शेश्वीयितासे शेश्वीयितासाथे शेश्वीयिताध्वे
शेश्वीयिताहे शेश्वीयितास्वहे शेश्वीयितास्महे
भ० शेश्वीयिष्यते शेश्वीयिष्येते शेश्वीयिष्यन्ते
शेश्वीयिष्यसे शेश्वीयिष्येथे शेश्वीयिष्यध्वे
शेश्वीयिष्ये शेश्वीयिष्यावहि शेश्वीयिष्यामहि
क्रि० अशेश्वीयिष्यत अशेश्वीयिष्येताम्
अशेश्वीयिष्यन्त
अशेश्वीयिष्यथाः अशेश्वीयिष्येथाम्
अशेश्वीयिष्यध्वम्
अशेश्वीयिष्ये अशेश्वीयिष्यावहि
अशेश्वीयिष्यामहि
एवं—शोशूयते । अशोशूयिष्ट । इत्यादि

॥ व्ये ॥

वेवीयते । वेवीयेत । वेवीयताम् ।
अवेवीयत । अवेवीयिष्ट । वेवीयामास
वेवीयिषीष्ट । वेवीयिता । वेवीयिष्यते
अवेवीयिष्यत ।
स्यम—सेसिम्यते । असेसिमिष्ट

॥ चायृ ॥

व चेकीयते चेकीयेते चेकीयन्ते
चेकीयसे चेकीयेथे चेकीयध्वे
चेकीये चेकीयावहे चेकीयामहे
स० चेकीयेत चेकीयेयाताम् चेकीयेरन्
चेकीयेथाः चेकीयेयाथाम् चेकीयेध्वम्
चेकीयेय चेकीयेवहि चेकीयेमहि
प० चेकीयताम् चेकीयेताम् चेकीयन्ताम्
चेकीयस्व चेकीयेथाम् चेकीयध्वम्
चेकीयै चेकीयावहै चेकीयामहै
ह्य० अचेकीयत अचेकीयेताम् अचेकीयन्त
अचेकीयथाः अचेकीयेथाम् अचेकीयध्वम्
अचेकीये अचेकीयावहि अचेकीयामहि
अ० अचेकीयिष्ट अचेकीयिषाताम्
अचेकीयिषत अचेकीयिष्ठाः
अचेकीयिषाथाम् अचेकीयिड्ढ्वम् ढ्वम्-ध्वम्
अचेकीयिषि अचेकीयिष्वहि अचेकीयिष्महि
प० चेकीयामास चेकीयामासतुः चेकीयामासुः
चेकीयामासिथ चेकीयामासथुः चेकीयामास
चेकीयामास चेकीयामासिव चेकीयामासिम
आ० चेकीयिषीष्ट चेकीयिषीयास्ताम्

चेकीयिषीरन् चेकीयिषीष्ठाः,
चेकीयिषीयास्थाम् चेकीयिषीढ्वम्ध्वम्
चेकीयिषीयचेकीयिषीवहिचेकीयिषीमहि
श्व० चेकीयिता चेकीयितारौ चेकियितारः
चेकीयितासेचेकियितासाथे चेकीयिताध्वे
चेकीयिताहेचेकीयितास्वहे चेकीयितास्महे
भ० चेकीयिष्यतेचेकीयिष्येते चेकीयिष्यन्ते
चेकीयिष्यसेचेकीयिष्येथे चेकीयिष्यध्वे
चेकीयिष्ये चेकीयिष्यावहे चेकीयिष्यामहे
क्रि० अचेकीयिष्यत अचेकीयिष्येताम्
अचेकीयिष्यन्त अचेकीयिष्यथाः अचेकीयिष्येथाम् अचेकीयिष्यध्वम् अचेकीयिष्ये अचेकीयिष्यावहि अचेकीयिष्यामहि
चिगट्-चेचीयते । अचेचीयिष्ट ।
वश-वावश्यते । अवावशिष्ट ।

॥ वंच् ॥

वनीवच्यते । वनीवच्येत । वनीवच्यताम्
अवनीवच्यत । अवनीवचिष्ट । वनीवचामास
वनीवचिष्ट । वनीवचिता । वनीवचिष्यते
अवनीवचिष्यत ॥
स्रंस्—सनीस्रस्यते । असनीस्रसिष्ट
ध्वंस्—दनीध्वस्यते । अदनीध्वसिष्ट
भ्रंश्—बनीभ्रश्यते । अबनीभ्रशिष्ट ॥
कस्—चनीकस्यते । अचनीकसिष्ट ।
पत्—पनीपत्यते । अपनीपतिष्ट ।
पद्—पनीपद्यते । अपनीपदिष्ट ।
स्कन्द्—चनीस्कद्यते । अचनीस्कदिष्ट ।

॥ षिच् ॥

सेसिच्यते । सेसिच्येत । सेसिच्यताम् ।
असेसिच्यत । असेसिचिष्ट । सेसिचाञ्चक्रे
सेसिचिषीष्ट । सेसिचिता । सेसिचिष्यते
असेसिचिष्यत ।
अभिसेसिच्यते अभ्यसेसिचिष्ट

॥ कुङ् ॥

व० कोकूयते कोकूयेते कोकूयन्ते
कोकूयसे कोकूयेथे कोकूयध्वे
कोकूये कोकूयावहे कोकूयामहे
स० कोकूयेत कोकूयेयाताम् कोकूयेरन्
कोकूयेथाः कोकूयेयाथाम् कोकूयेध्वम्
कोकूयेय कोकूयेवहि कोकूयेमहि
प० कोकूयताम् कोकूयेताम् कोकूयन्ताम्
कोकूयस्व कोकूयेथाम् कोकूयध्वम्
कोकूयै कोकूयावहै कोकूयामहै
ह्य० अकोकूयत अकोकूयेताम् अकोकूयन्त
अकोकूयथाः अकोकूयेथाम् अकोकूयध्वम्
अकोकूये अकोकूयावहि अकोकूयामहि
अ० अकोकूयिष्ट अकोकूयिषाताम्
अकोकूयिषत अकोकूयिष्ठाः
अकोकूयिषाथाम् अकोकूयिढ्वम् ध्वम्
अकोकूयिषि अकोकूयिष्वहिअकोकूयिष्महि
प० कोकूयामासकोकूयामासतुः कोकूयामासुः
कोकूयामासिथ कोकूयामासथुः कोकूयामास
कोकूयामास कोकूयामासिव कोकूयामासिव
आ० कोकूयिषीष्ट कोकूयिषीयास्ताम्
कोकूयिषीरन् कोकूयिषीष्ठाः
कोकूयिषीयास्थाम् कोकूयिषीढ्वम् ध्वम्
कोकूयिषीय कोकूयिषीवहि कोकूयिषीमहि
श्व० कोकूयिता कोकूयितारौ कोकूयितारः
कोकूयितासे कोकूयितासाथेकोकूयिताध्वे
कोकूयिताहे कोकूयितास्वहे कोकूयितास्महे
भ० कोकूयिष्यते कोकूयिष्येते कोकूयिष्यन्ते
कोकूयिष्यसे कोकूयिष्येथे कोकूयिष्यध्वे
कोकूयिष्ये कोकूयिष्यावहे कोकूयिष्यामहे
क्रि० अकोकूयिष्यत अकोकूयिष्येताम् अकोकूयिष्यन्त अकोकूयिष्यथाम् अकोकूयिष्येथाम्
अकोकूयिष्यध्वम् अकोकूयिष्ये
अकोकूयिष्यावहि अकोकूयिष्यामहि
कुंक्—चोकूयते । अचोकूयिष्ट
कुङ्त्—चोकूयते अचोकूयिष्ट
स्रु—सेस्रीयते असेस्रीयिष्ट

लघु—लालङ्घ्यते अलालङ्घिष्ट
शुच—शोशुच्यते अशोशुचिष्ट
लुञ्च—लोलुच्यते अलोलुचिष्ट
वाञ्छु—वावाञ्छ्यते अवावाञ्छिष्ट
त्यज—तात्यज्यते अतात्यजिष्ट
स्फुट—पोस्फुट्यते अपोस्फुटिष्ट
क्रीडृ—चेक्रीड्यते अचेक्रीडिष्ट
रण—रंरण्यते अरंरणिष्ट
चितै—चेचित्यते अचेचितिष्ट
खादृ—चाखाद्यते अचाखादिष्ट
गद—जागद्यते अजागदिष्ट
णिदु—नेनिन्द्यते अनेनिन्दिष्ट
सृप्लृ—सरीसृप्यते असरीसृपिष्ट
दल—दन्दल्यते दादल्यते अदन्दलिष्ट अदादलिष्ट
मील—मेमील्यते अमेमीलिष्ट
मूल—मोमूल्यते अमोमूलिष्ट
फुल्ल—पोफुल्ल्यते अपोफुल्लिष्ट
खेलृ—चेखेल्यते अचेखेलिष्ट
स्खल—चंस्खल्यते चास्खल्यते अचंस्खलिष्ट अचास्खलिष्ट
गल—जङ्गल्यते जागल्यते अजङ्गलिष्ट जंगल्यते अजागलिष्ट
चर्व-चाचर्व्यते अचाचर्विष्ट चाचर्व्यते अचाचर्विष्ट
गर्व—जागर्व्यते अजागर्विष्ट
जीव—जेजीव्यते अजेजीविष्ट
दृश—दरीदृश्यते। अदरीदृशिष्ट।
घुषृ—जोघुष्यते। अजोघुषिष्ट।
भष—बाभष्यते। अबाभषिष्ट।
मृषू—मरीमृष्यते अमरीमृषिष्ट।
घृषू—जरीघृष्यते। अजरीघृषिष्ट।
पुष—पोपुष्यते। अपोपुषिष्ट।
भूष—बोभूष्यते। अबोभूषिष्ट।
हसे—जाहस्यते। अजाहसिष्ट।
शसु—शाशस्यते। अशाशसिष्ट।

रक्ष—रारक्ष्यते। अरारक्षिष्ट।
लोकृङ्—लोलोक्यते अलोलोकिष्ट
शकुङ्—शाशङ्क्यते। अशाशङ्किष्ट
श्लाघृङ्—शाश्लाघ्यते। अशाश्लाघिष्ट
खडुङ्—चाखण्ड्यते। अचाखण्डिष्ट
यतैङ्—यायत्यते। अयायतिष्ट
मुदि—मोमुद्यते। अमोमुदिष्ट
हदि—जाहद्यते। अजाहदिष्ट
कपुङ्—चाकम्प्यते। अचाकम्पिष्ट
क्षमौषि—चङ्क्षम्यते। अचङ्क्षमिष्ट
भाजि—बाभाज्यते। अबाभाजिष्ट
गाहौङ्—जागाह्यते। अजागाहिष्ट
शिक्षि—शेशिक्ष्यते। अशेशिक्षिष्ट
वेङ्—वावायते। अवावायिष्ट
टुवपी—वावप्यते। अवावापिष्ट
भांकृ—बाभायते। अबाभायिष्ट
श्वसक्—शाश्वस्यते। अशाश्वसिष्ट
शासूङ्—शेशिष्यते। अशेशिषिष्ट
मृजौङ्—मरीमृज्यते। अमरीमृजिष्ट
चक्षिङ्—चाक्शायते। चाक्शायते। चाख्यायते। अचाख्शायिष्ट। अचाक्शायिष्ट। अचाख्यायिष्ट
द्विषिङ्—देद्विष्यते। अदेद्विषिष्ट
लिहिङ्—लेलिह्यते। अलेलिहिष्ट।
णिजुंङ्—नेनिज्यते। अनेनिजिष्ट।
विष्लृङ्—वेविष्यते। अवेविषिष्ट।
व्यधंच्—वेविध्यते। अवेविधिष्ट।
त्रसेच—तात्रस्यते। अतात्रसिष्ट।
कुधंच्—चोकुध्यते। अचोकुधिष्ट।
तृपौच्—तरीतृप्यते। अतरीतृपिष्ट।
नशौच्—नानश्यते। अनानशिष्ट।
शमूच्—शंशम्यते। अशंशमिष्ट
दूङ्च्—दोदूयते। अदोदूयिष्ट।
प्रीङ्च्—पेप्रीयते। अपेप्रीयिष्ट।
युधिच्—योयुध्यते। अयोयुधिष्ट।

सृजिच्—सरीसृज्यते । असरीसृजिष्ट
णहिंच्—नानह्यते । अनानहिष्ट ।
स्तृंगृहू—तास्तर्यते । अतास्तरिष्ट ।
हिंटु—जेघीयते । अजेघीयिष्ट ।
साधंट—सासाध्यते । असासाधिष्ट ।
दिशींत्—देदिश्यते । अदेदिशिष्ट ।
टुमस्जोंत्—मामज्ज्यते । अमामज्जिष्ट ।

कुटत्—चोकुटयते । अचोकुटिष्ट ।
रुधूंपी—रोरुध्यते । अरोरुधिष्ट ।
क्षुदृंपी—चोक्षुद्यते । अचोक्षुदिष्ट ।
भुजंप्—बोभुज्यते । अबोभुज्जिष्ट ।
पिष्लृप्—पेपिष्यते । अपेपिषिष्ट ।
वनूयी—वम्वन्यते । अवम्वनिष्ट ।
पूगश्—पोपूयते । अपोपूयिष्ट ।

इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थं सरक्षणप्रवणविद्यापीठादिमस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजयविरचितायां हैमधातुमालायां

## ॥ यङन्तप्रक्रिया ॥

## अथ यङ्लुबन्तप्रक्रिया.

भू—सत्तायाम् ।

व० बोभवीति बोभोति बोभूतः बोभुवति
बोभवीषि बोभोषि बोभूथः बोभूथ
बोभवीमि बोभोमि बोभूवः बोभूमः

स० बोभूयात् बोभूयाताम् बोभूयुः
बोभूयाः बोभूयाताम् बोभूयातम्
बोभूयाम् बोभूयाव बोभूयाम

प० बोभवीतु बोभोतु बोभूताम् बोभूवतु
बोभूहि बोभूतम् बोभूत
बोभवानि बोभवाव बोभवाम

ह्य० अबोभवीत् अबोभोत् अबोभूताम्
अबोभवुः अबोभवीः
अबोभोः अबोभूतम् अबोभूत
अबोभवम् अबोभूव अबोभूम

अ० अबोभोत् अबोभोताम्
अबोभूवन् अबोभोः
अबोभोतम् अबोभोत अबोभूवम्
अबोभोव अबोभोम
मतान्तरे अबोभूवीत् अबोभोत
अबोभूताम् अबोभूवुः अबोभूवीः
अबोभः, अबोभूतम् अबोभूत,
अबोभूवम् अबोभूव अबोभूम,

प० बोभवाञ्चकार बोभवाञ्चक्रतुः बोभवाञ्चक्रुः
बोभवाञ्चकर्थ बोभवाञ्चक्रथुः बोभवाञ्चक्र
बोभवाञ्चकार-चकर बोभवाञ्चकृव बोभवाञ्चकृम
बोभवामास बोभवाम्बभूव

आ० बोभूयात् बोभूयास्ताम् बोभूयासुः
बोभूयाः बोभूयास्तम् बोभूयास्त
बोभूयासम् बोभूयास्व बोभूयास्म
श्व० बोभविता बोभवितारौ बोभवितारः
बोभवितासि बोभवितास्थः बोभवितास्थ
बोभवितास्मि बोभवितास्वः बोभवितास्मः
भ० बोभविष्यति बोभविष्यतः बोभविष्यन्ति
बोभविष्यसि बोभविष्यथः बोभविष्यथ
बोभविष्यामि बोभविष्यावः बोभविष्यामः
क्रि० अबोभविष्यत् अबोभविष्यताम्
अबोभविष्यन् अबोभविष्यः
अबोभविष्यतम् अबोभविष्यत
अबोभविष्यम् अबोभविष्यावअबोभविष्याम

नाथ

व० नानाथीति नानात्ति नानात्तः नानाथति
नानाथीषि नानात्सि नानात्थः नानात्थ
नानाथीमि नानाथ्मि नानाथ्वः नानाथ्म
स० नानाथ्यात् नानाथ्याताम् नानाथ्युः
प० नानाथीतु नानात्तु नानात्तात् नानात्ताम्
नानाथतु नानाद्धि ,, नानात्तम्
नानात्त नानाथानि नानाथाव नानाथाम
ह्य० अनानाथीत् अनानात् द् अनानात्ताम्
अनानाथुः अनानाथीः
मतान्तरे-अनानाः इत्यपि
अनानात् द् अनानात्तम् अनानात्त
अनानाथम् अनानाथ्व अनानाथ्म
अ० अनानाथीत् अनानाथिष्टाम् अनानाथिषुः
नानाथाञ्चकार । नानाथ्यात् । नानाथिता
नानाथिष्यति । अनानाथिष्यत् ।

॥ स्पर्द्ध ॥

व० पास्पर्द्धीति पास्पर्द्धि पास्पर्द्धः पास्पर्द्धति
पास्पर्द्धीषि पास्पर्त्सि पास्पर्द्धः पास्पर्द्ध
पास्पर्द्धीमि पास्पर्ध्मि पास्पर्ध्वः पास्पर्ध्मः
स० पास्पर्ध्यात् पास्पर्ध्याताम् पास्पर्ध्युः
प० पास्पर्द्धीतु पास्पर्द्धु पास्पर्द्धात्
पास्पर्द्धाम् पास्पर्द्धतु पास्पर्द्धि
पास्पर्द्धात् पास्पर्द्धम् पास्पर्द्ध
पास्पर्द्धानि पास्पर्द्धाव पास्पर्द्धाम्
ह्य० अपास्पर्द्धीत् अपास्पर्द्-त् अपास्पर्द्धा
अपास्पर्द्धुः अपास्पर्द्धीः अपास्पर्द्-त
अपास्पाः अपास्पर्द्धम् अपास्पर्द्ध
अपास्पर्धम् अपास्पर्ध्म अपास्पर्ध्व
अ० अपास्पर्द्धीत् अपास्पर्द्धिष्टाम् अपास्पर्द्धिषुः
प० पास्पर्द्धाञ्चकार । पास्पर्ध्यात् ।
पास्पर्द्धिता । पास्पर्द्धिष्यति। अपास्पर्द्धिष्यत

॥ गाधृङ् ॥

व० जागाधीति जागाद्धि जागाद्धः जागाधति
जागाधीषि जागात्सि जागाद्धः जागाद्ध
जागाधीमि जागाध्मि जागाध्वः जागाध्म
स० जागाध्यात् जागाध्याताम् जागाध्युः
प० जागाधीतु जागाद्धु जागाद्धात्
जागाद्धाम् जागाधतु जागाद्धि
जागाद्धात् जागाद्धम् जागाद्ध
जागाधानि जागाधाव जागाधाम
ह्य० अजागाधी-त् अजाधात्-द् अजागाद्धा-म
अजागाधुः अजागाधीः अजाघात्-द
अजाघाः अजागाद्धम् अजागाद्ध
अजागाधम् अजागाध्व अजागाध्म
अ० अजागाधीत् अजागाधिष्टाम् अजागाधिषुः
प० जागाधीमास जागाध्यात् । जागाधिता
जागाधिष्यति । अजागाधिष्यत् ।

॥ दधि ॥

व० दादधीति दादद्धि दादद्धः दादधति
दादधीषि दाधत्सि दादद्धः दादद्ध
दादधीमि दादध्मि दादध्वः दादध्मः
स० दादध्यात् दादध्याताम् दादध्युः
प० दादधीतु दादद्धु दादद्धात्
दादद्धाम् दादधतु दादद्धि

दादद्धात् दादद्धम् दादद्ध
दादधानि दादधाव दादधाम
ह्य० अदादधीत् अदाधत्-द् अदादद्धाम्
अदादधुः अदादधीः अदाधत्-द्
अदाध: अदादद्धम् अदादद्ध
अदादधम् अदादध्व अदादध्म
अ० अदादाधीत् अदादाधिष्टाम् अदादाधिषुः
अदादधीत् अदादधिष्टाम् अदादधिषुः
प० दादधामास । दादध्यात् । दादधिता
दादधिष्यति । । अदादधिष्यत् ।

॥ स्कुन्द ॥

व० चोस्कुन्दीति चोस्कुन्ति चोस्कुन्तः
चोस्कुन्दति चोस्कुन्दीषि चोस्कुन्त्सि
चोस्कुन्थः चोस्कुन्थ चोस्कुन्दीमि
चोस्कुन्द्मि चोस्कुन्द्वः चोस्कुन्द्मः
स० चोस्कुन्द्यात् चोस्कुन्द्याताम् चोस्कुन्द्युः
प० चोस्कुन्दीतु चोस्कुन्तु चोस्कुन्तात्
चोस्कुन्ताम् चोस्कुन्दतु चोस्कुन्धि
चोस्कुन्तात् चोस्कुन्तम् चोस्कुन्त
चोस्कुन्दानि चोस्कुन्दाव चोस्कुन्दाम
ह्य० अचोस्कुन्दीत् अचोस्कुन् अचोस्कुन्ताम्
अचोस्कुन्दुः अचोस्कुन्दीः अचोस्कुन्
अचोस्कुन्तम् अचोस्कुन्त अचोस्कुन्दम्
अचोस्कुन्द्व अचोस्कुन्द्म
अचोस्कुन्दीत् अचोस्कुन्दिष्टाम् अचोस्कुन्दिषुः
चोस्कुन्दामास । चोस्कुन्द्यात् ।
चोस्कुन्दिता । चोस्कुन्दिष्यति ।
अचोस्कुन्दिष्यत् ।

॥ मुदि ॥

व० मोमुदीति मोमोत्ति मोमुत्तः
मोमुदति मोमुदीषि मोमोत्सि
मोमुत्थः मोमुत्थ मोमुदीमि
मोमोद्मि मोमुद्वः मोमुद्मः
स० मोमुद्यात् मोमुद्याताम् मोमुद्युः
प० मोमुदीतु मोमोत्तु मोमुत्तात् मोमुत्ताम्
मोमुदतु मोमुद्धि ,, मोमुत्तम्
मोमुत्त मोमुदानि मोमुदाव मोमुदाम
ह्य० अमोमुदीत्अमोमोत्-द्अमोमुत्ताम्अमोमुदुः
अमोमुदीःअमोमोत्-द्अमोमोः अमोमुत्तम्
अमोमुत्त अमोमुदम् अमोमुद्व अमोमुद्म
अ० अमोमोदीत् अमोमोदिष्टाम् अमोमोदिषुः
मोमोदामास । मोमुद्यात् । मोमोदिता ।
मोमोदिष्यति । अमोमोदिष्यत् ।

॥ कुर्दि ॥

व० चोकूर्दीति चोकूर्त्ति चोकूर्त्तः चोकूर्दति
चोकूर्दीषि चोकूर्त्सि चोकूर्त्थः चोकूर्त्थ
चोकूर्दीमि चोकूर्द्मि चोकूर्द्वः चोकूर्द्मः
स० चोकूर्द्यात् चोकूर्द्याताम् चोकूर्द्युः
प० चोकूर्दीतु चोकूर्त्तु चोकूर्त्तात् चोकूर्त्ताम्
चोकूर्दतु चोकूर्द्धि चोकूर्त्तात् चोकूर्त्तम्
चोकूर्त्त चोकूर्दानि चोकूर्दाव चोकूर्दाम
ह्य० अचोकूर्दीत् अचोकूर्त् अचोकूर्त्ताम्अचोकूर्दुः
अचोकूर्दीः । अचोकूर्त् । अचोकूः ।
अचोकूर्त्तम् । अचोकूर्त्त । अचोकूर्दम् ।
अचोकूर्द्व । अचोकूर्द्म ।
अ० अचोकूर्दीत् अचोकूर्दिष्टाम् अचोकूर्दिषुः
चोकूर्दामास । चोकूर्द्यात् । चोकूर्दिता ।
चोकूर्दिष्यति । अचोकूर्दिष्यत् ।

॥ वञ्च ॥

व० वनीवञ्चीति वनीवङ्क्ति वनीवक्तः
वनीवचति वनीवञ्चीषि वनीवङ्क्षि
वनीवक्थः वनीवक्थ वनीवञ्चीमि
वनीवञ्चिम वनीवच्वः वनीवच्मः
स० वनीवच्यात् वनीवच्याताम् वनीवच्युः
प० वनीवञ्चीतु वनीवङ्क्तु वनीवक्तात्
वनीवचतु वनिवग्धि ,,
वनीवक्तम् वनीवक्त वनीवञ्चानि
वनीवञ्चाव वनीवञ्चाम
ह्य० अवनीवञ्चीत् अवनीवन् अवनीवक्ताम्

अवनीवचुः अवनीवञ्चीः अवनीवन्
अवनीवक्तम् अवनीवक्त अवनीवञ्चम्
अवनीवञ्च्व अवनीवञ्च्म
अ० अवनीवञ्चीत् अवनीवञ्चिष्टाम् अवनीवञ्चिषुः
वनीवञ्चामास । वनीवच्यात् । वनीवञ्चिता
वनीवञ्चिष्यति । अवनीवञ्चिष्यत् ।

॥ गम्लृ ॥

व० जङ्गमीति जङ्गन्ति जङ्गतः जङ्गति
जङ्गमीषि जङ्गंसि जङ्गथः जङ्गथ
जङ्गमीमि जङ्गन्मि जङ्गन्वः जङ्गन्मः
स० जङ्गम्यात् जङ्गम्याताम् जङ्गम्युः
प० जङ्गमीतु जङ्गन्तु जङ्गतात् जङ्गताम्
जङ्गमतु जङ्गहि ,, जङ्गतम्
जङ्गत जङ्गमानि जङ्गमाव जङ्गमाम
ह्य० अजङ्गमीत् अजङ्गन् अजङ्गताम् अजङ्गमुः
अजङ्गमीः अजङ्गन् अजङ्गतम् अजङ्गत
अजङ्गमम् अजङ्गन्व अजङ्गन्म
अ० अजङ्गमीत् अजङ्गमिष्टाम् अजङ्गमिषुः
जङ्गमामास । जङ्गम्यात् । जङ्गमिता ।
जङ्गमिष्यति । अजङ्गमिष्यत् ।

॥ हन् गत्यर्थे ॥

व० जङ्घनीति जङ्घन्ति जङ्घतः जङ्घ्नति
जङ्घनीषि जङ्घंसि जङ्घथः जङ्घथ
जङ्घनीमि जङ्घन्मि जङ्घन्वः जङ्घन्मः
स० जङ्घन्यात् जङ्घन्याताम् जङ्घन्युः
प० जङ्घनीतु जङ्घन्तु जङ्घतात् जङ्घताम्
ये तु यमिरमीति लुगभावं हन्तेरपि
दीर्घत्वं चेच्छन्ति तन्मते जङ्घान्तः
जंघांहिः इत्यादि ।
जङ्घ्नतु जहि मतान्तरे जङ्घहि जङ्घतात्
जङ्घतम् जङ्घत जङ्घनानि
जङ्घनाव जङ्घनाम
ह्य० अजङ्घनीत् अजङ्घन् अजङ्घताम्
अजङ्घ्नुः अजङ्घनीः अजङ्घन्
अजङ्घतम् अजङ्घत अजङ्घनम्
अजङ्घन्व अजङ्घन्म
अ० अवधीत् अवधिष्टाम् अवधिषुः
जङ्घनामास । वध्यात् जङ्घनिता ।
जङ्घनिष्यति । अजङ्घनिष्यत् ।

॥ वधार्थे तु ॥

व० जेघ्नेति जेघ्नयीति जेघ्नीतः जेघ्नियति
जेघ्नेषि जेघ्नयीषि जेघ्नीथः जेघ्नीथ
जेघ्नेमि जेघ्नयीमि जेघ्नीवः जेघ्नीमः
स० जेघ्नीयात् जेघ्नीयाताम् जेघ्नीयुः
जेघ्नीयाः जेघ्नीयातम् जेघ्नीयात
जेघ्नीयाम् जेघ्नीयाव जेघ्नीयाम
प० जेघ्नेतु जेघ्नयीतु जेघ्नीतात् जेघ्नीताम्
ह्य० अजेघ्नेत् अजेघ्नयीत् अजेघ्नीताम् अजेघ्नयुः
अजेघ्नेः अजेघ्नयीः अजेघ्नीतम् अजेघ्नीत
अजेघ्नयम् अजेघ्नीव अजेघ्नीम
अ० अजेघ्नायीत् अजेघ्नायिष्टाम् अजेघ्नायिषुः
अजेघ्नायीः अजेघ्नायिष्टम् अजेघ्नायिष्ट
अजेघ्नायिषम् अजेघ्नायिष्व अजेघ्नायिष्म
प० जेघ्नयामास जेघ्नीयात् जेघ्नयिता
जेघ्नयिष्यति । अजेघ्नयिष्यत् ।
मतान्तरे जेघ्नेतीत्यादिरूपं न भवति

खन

व० चङ्खनीति चङ्खन्ति चङ्खातः चङ्खनति
चङ्खनीषि चङ्खंसि चङ्खाथः चङ्खाथ
चङ्खनीमि चङ्खन्मि चङ्खन्वः चङ्खन्मः
स० चङ्खन्यात् चङ्खन्याताम् चङ्खन्युः
प० चङ्खनीतु चङ्खन्तु चङ्खातात् चङ्खाताम्
चङ्खनतु चङ्खाहि ,, चङ्खातम् चङ्खात
चङ्खनानि चङ्खनाव चङ्खनाम
ह्य० अचङ्खनीत् अचन् अचङ्खाताम्, अचङ्खनुः
अचङ्खनीः ,, अचङ्खातम् अचङ्खात
अचङ्खनम् अचङ्खन्व अचङ्खन्म
अ० अचङ्खनीत् अचङ्खनिष्टाम् अचङ्खनिषुः अचङ्खनीः
प० चङ्खनाञ्चकार
चङ्खन्यात् । चङ्खनिता चङ्खनिष्यति । अचङ्खनिष्यत्

मतान्तरे-चञ्चूर्यात्

॥ चर ॥

व० चञ्चुरीति चञ्चूर्ति चञ्चूर्तः चञ्चुरति
चञ्चुरीषि चञ्चूर्षि चञ्चूर्थः चञ्चूर्थ
चञ्चुरीमि चञ्चूर्मि चञ्चूर्वः चञ्चूर्मः
स० चञ्चूर्यात् चञ्चूर्याताम् चञ्चूर्युः
प० चञ्चुरीतुचञ्चूर्तु-र्तात् चञ्चूर्तांम्चञ्चुरतु
चञ्चूर्हि ,, चञ्चूर्तम् चञ्चूर्त
चञ्चुराणि चञ्चुराव चञ्चुराम
ह्य० अचञ्चुरीत् अचञ्चूः अचञ्चूर्ताम् अचञ्चुरुः
अचञ्चुरीः अचञ्चूः अचञ्चूर्तम् अचञ्चूर्त
अचञ्चुरम् अचञ्चूर्व अचञ्चूर्म
अ० अचञ्चुरीत् अचञ्चुरिष्टाम् अचञ्चुरिषुः
चञ्चुरामास चञ्चूर्यात् चञ्चुरिता
चञ्चुरिष्यति अचञ्चुरिष्यत्

युक्

व० योयवीति योयोति योयुतः योयुवति
योयवीषि योयोषि योयुथः योयुथ
योयवीमि योयोमि योयुवः योयुमः

यङ्लुबन्तस्यापि-औरित्यन्ये तन्मते-योयौति, योयौषि, योयौमि, इति,

स० योयुयात् योयुयाताम् योयुयुः
प० योयवीतु योयोतु-तात् योयुताम् योयुवतु
योयुहि ,, योयुतम् योयुत
योयवानि योयवाव योयवाम
ह्य० अयोयवीत् अयोयोत् अयोयुताम् अयोयवुः
अयोयवीः अयोयोः अयोयुतम्
अयोयुत अयोयवम् अयोयुव अयोयुम
अ० अयोयावीत् अयोयाविष्टाम् अयोयाविषुः
योयवामास योयूयात् योयविता
योयविष्यति अयोयविष्यत्

ओहाक्

व० जहाति जहेति जहीतः जहति
जहासि जहेषि जहीथः जहीथ
जहामि जहेमि जहीवः जहीमः
स० जहीयात् जहीयाताम् जहीयुः
प० जहातु जहेतु जहीतात् जहीताम् जहतु
जहीहि जहीतात् जहीतम् जहीत
जहानि जहाव जहाम
ह्य० अजहात् अजहेत् अजहीताम् अजहुः
अजहाः अजहेः अजहीतम् अजहीत
अजहाम् अजहीव अजहीम
अ० अजहासीत् अजहासिष्टाम् अजहासिषुः
जहाञ्चकार । जहायात् । जहिता ।
जहिष्यति । अजहिष्यत् ।
मतान्तरे-जाहेति जाहातीत्यादि

स्वप्

व० सोषुपीति सोषोप्ति सोषुप्तः सोषुपति
सोषुपीषि सोषोप्सि सोषुप्थः सोषुप्थ
सोषुपीमि सोषोप्मि सोषुप्वः सोषुप्मः
सास्वपीति । सास्वप्ति । इत्याद्यन्ये ।
स० सोषुप्यात् सोषुप्याताम् सोषुप्युः
प० षुपीतु सोषोप्तु सोषुप्तात् सोषुप्ताम्
सोषुपतु सोषुब्धि ,, सोषुप्तम् सोषुप्त
सोषुपाणि सोषुपाव सोषुपाम
ह्य० असोषुपीत् असोषोप्-ब् असोषुप्ताम्
असोषुपुः असोषुपीः असोषोप् असोषुप्तम्
असोषुप्त असोषुपम् असोषुप्व असोषुप्म
अ० असोषोपीत् असोषोपिष्टाम् असोषोपिषुः
सोषोपामास सोषुप्यात् सोषोपिता
सोषोपिष्यति असोषोपिष्यत्

कृ

व० चर्कर्ति चर्करीति चर्कृतः चर्क्रति
चरिकर्ति चरिकरीति चरिकृतः चरिक्रति
चरीकर्ति चरीकरीति चरीकृतः चरीक्रति
चर्कर्षि चर्करिषि चर्कृथः चर्कृथ
चरिकर्षि चरिकरिषि चरिकृथः चरिकृथ
चरीकर्षि चरीकरीषि चरीकृथः चरीकृथ
चर्कर्मि चर्कृवः चर्कृमः

चरिकर्मि चरिकरीमि चरिकृवः चरिकृमः
चरीकर्मि चरीकरीमि चरीकृवः चरीकृमः
स० चर्कृयात् चर्कृयाताम् चर्कृयुः
चरिकृयात् चरिकृयाताम् चरिकृयुः
चरीकृयात् चरीकृयाताम् चरीकृयुः
प० चर्कर्तु चर्करीतु चर्कृतात् चर्कृताम् चर्कृतु
चरिकर्तु चरिकरीतु–चरिकृताम् चरिकृतु
चरीकर्तु चरीकरीतु–चरीकृताम् चरीकृतु
चर्कृहि, तात् चर्कृतम् चर्कृत
चरिकृहि ,, चरिकृतम् चरिकृत
चरीकृहि ,, चरीकृतम् चरीकृत
चर्कराणि चर्कराव चर्कराम
चरिकराणि चरिकराव चरिकराम
चरीकराणि चरीकराव चरीकराम
ल० अचर्करीत् अचर्कः अचर्कृताम् अचर्करुः
अचरिकरीत् अचरिकः अचरिकृताम्
अचरिकरुः अचरीकरीत् अचरीकः
अचरीकृताम् अचरीकरुः
अचर्करीः अचर्कः अचर्कृतम् अचर्कृत
अचरिकरीः ,, अचरिकृतम् अचरिकृत
अचरीकरीः ,, अचरीकृतम् अचरीकृत
अचर्करम् अचर्कृव अचर्कृम
अचरिकरम् अचरिकृव अचरिकृम
अचरीकरम् अचरीकृव अचरीकृम
अचर्कारीत् अचर्कारिष्टाम् अचर्कारिषुः
अचरिकारीत् अचरिकारिष्टाम् अचरिकारिषुः
अचरीकारीत् अचरीकारिष्टाम् अचरीकारिषुः
चर्करामास चरिकरामास चरीकरामास
चर्क्रियात् चरिक्रियात् चरीक्रियात्
चर्करिता चरिकरिता चरीकरिता
चर्करिष्यति चरिकरिष्यति चरीकरिष्यति
अचर्करिष्यत् अचरिकरिष्यत् अचरीकरिष्यत्

वृत

वर्वर्ति वर्वृतः वर्वृतति
वरिवर्ति वरिवृतीति वरिवृत्तः वरिवृतति
वरीवर्ति वरीवृतीति वरीवृत्तः वरीवृतति
वर्वर्त्सि वर्वृतीषि वर्वृत्थः वर्वृत्थ
वरिवर्त्सि वरिवृतीषि वरिवृत्थः वरिवृत्थ
वरीवर्त्सि वरीवृतीषि वरीवृत्थः वरीवृत्थ
वर्वर्त्मि वर्वृतीमि वर्वृत्वः वर्वृत्मः
वरिवर्त्मि वरिवृतीमि वरिवृत्वः वरिवृत्मः
वरीवर्त्मि वरीवृतीमि वरीवृत्वः वरीवृत्मः
स० वर्वृत्यात् वर्वृत्याताम् वर्वृत्युः
वरिवृत्यात् वरिवृत्याताम् वरिवृत्युः
वरीवृत्यात् वरीवृत्याताम् वरीवृत्युः
प० वर्वर्तु वर्वृतीतु वर्वृत्तात्
वर्वृत्ताम् वर्वृततु वरिवर्तु
वरिवृतीतु वरिवृत्तात् वरिवृत्ताम्
वरिवृततु वरीवर्तु वरीवृतीतु
वरीवृत्तात् वरीवृत्ताम् वरीवृततु
वर्वृद्धि वर्वृत्तम् वर्वृत्त
वरिवृद्धि वरिवृत्तम् वरिवृत्त
वरीवृद्धि वरीवृत्तम् वरीवृत्त
वर्वृतानि वर्वृताव वर्वृताम
वरिवृतानि वरिवृताव वरिवृताम
वरीवृतानि वरीवृताव वरीवृताम
ल० अवर्वृतीत् अवर्वर्त् अवर्वृत्ताम् अवर्वृतुः
अवरिवृतीत् अवरिवर्त् अवरिवृत्ताम् अवरिवृतुः
अवरीवृतीत् अवरीवर्त् अवरीवृत्ताम् अवरीवृतुः
अवर्वृतीः अवर्वर्त् अवर्वृत्तम् अवर्वृत्त
अवरिवृतीः ,, अवरिवृत्तम् अवरिवृत्त
अवरीवृतीः ,, अवरीवृत्तम् अवरीवृत्त
अवर्वृत्तम् अवर्वृत्व अवर्वृत्म
अवरिवृत्तम् अवरिवृत्व अवरिवृत्म
अवरीवृत्तम् अवरीवृत्व अवरीवृत्म
अ० अवर्वर्तीत् अवर्वर्तिष्टाम् अवर्वर्तिषुः
अवरिवर्तीत् अवरिवर्तिष्टाम् अवरिवर्तिषुः
अवरीवर्तीत् अवरीवर्तिष्टाम् अवरीवर्तिषुः
वर्वर्तामास । वरिवर्तामास । वरीवर्तामास
वर्वृत्यात् । वरिवृत्यात् । वरीवृत्यात् ।

वर्वर्तिता । वरिवर्तिता । वरीवर्तिता ।
वर्वर्तिष्यति । वरिवर्तिष्यति । वरीवर्तिष्यति
अवर्वर्तिष्यत् । अवरिवर्तिष्यत् अवरीवर्तिष्यत

नृतैच्-नर्तने.

व० नर्नृतीति नर्नर्ति नर्नृतः नर्नृतति
नरिनृतीति नरिनर्ति नरीनृत्तः नरिनृतति
नरीनृतीति नरीनर्ति नरीनृत्तः नरीनृतति
नर्नृतीषि नर्नर्त्सि नर्नृत्थः नर्नृत्थ
नरिनृतीषि नरिनर्त्सि नरिनृत्थः नरिनृत्थ
नरीनृतीषि नरीनर्त्सि नरीनृत्थः नरीनृत्थ
नर्नृतीमि नर्नर्मि नर्नृत्वः नर्नृत्मः
नरिनृतीमि नरिनर्मि नरिनृत्वः नरिनृत्मः
नरीनृतीमि नरीनर्मि नरीनृत्वः नरीनृत्मः

स० नर्नृत्यात् नर्नृत्याताम् नर्नृत्युः
नरिनृत्यात् नरिनृत्याताम् नरिनृत्युः
नरीनृत्यात् नरीनृत्याताम् नरीनृत्युः

प० नर्नृतीतु नर्नर्तु नर्नृत्तात् नर्नृत्ताम् नर्नृततु
नरिनृतीतु नरिनर्तु ,, नरिनृत्ताम् नरिनृततु
नरीनृतीतु नरीनर्तु नरीनृत्तात्
नरीनृत्ताम् नरीनृततु
नर्नृद्धि नर्नृत्तम् नर्नृत्त
नरिनृद्धि नरिनृत्तम् नरिनृत्त
नरीनृद्धि नरीनृत्तम् नरीनृत्त
नर्नृतानि नर्नृताव नर्नृताम
नरिनृतानि नरिनृताव नरिनृताम
नरीनृतानि नरीनृताव नरीनृताम

ह्य०अनर्नृतीत् अनर्नर्त् अनर्नृत्ताम् अनर्नृतुः
अनरिनृतीत् अनरिनर्त् अनरिनृत्ताम् अनरिनृतुः
अनरीनृतीत् अनरीनर्त् अनरीनृत्ताम् अनरीनृतुः
अनर्नृतीः अनर्नर्त् अनर्नृत्तम् अनर्नृत्त
अनरिनृतीः ,, अनरिनृत्तम् अनरिनृत्त
अनरीनृतीः ,, अनरीनृत्तम् अनरीनृत्त
अनर्नृतम् अनर्नृत्व अनर्नृत्म
अनरिनृतम् अनरिनृत्व अनरिनृत्म
अनरीनृतम् अनरीनृत्व अनरीनृत्म

अ० अनर्नर्तीत् अनर्नर्तिष्टाम् अनर्नर्तिषुः
अनरिनर्तीत् अनरिनर्तिष्टाम् अनरिनर्तिषुः
अनरीनर्तीत् अनरीनर्तिष्टाम् अनरीनर्तिषुः

प० नर्नर्तामास नरिनर्तामास नरीनर्तामास
आ० नर्नृत्यात् नरिनृत्यात् नरीनृत्यात्
श्व० नर्नर्तिता नरिनर्तिता नरीनर्तिता
भ० नर्नर्तिष्यति नरिनर्तिष्यति नरीनर्तिष्यति
क्रि० अनर्नर्तिष्यत् अनरिनर्तिष्यत् अनरीनर्तिष्यत्

|| गृह ||

व० जर्गृहीति जर्गर्ढि जर्गृढः जर्गृहति
जरिगृहीति जरिगर्ढि जरिगृढः जरिगृहति
जरीगृहीति जरीगर्ढि जरीगृढः जरीगृहति
जर्गृहीषि जर्घर्क्षि ,, जर्गृढ
जरिगृहीषि जरिघर्क्षि ,, जरिगृढ
जरीगृहीषि जरीघर्क्षि ,, जरीगृढ
जर्गृहीमि जर्गर्ह्मि जर्गृह्वः जर्गृह्मः
जरिगृहीमि जरिगर्ह्मि जरिगृह्वः जरिगृह्मः
जरीगृहीमि जरीगर्ह्मि जरीगृह्वः जरीगृह्मः

स० जर्गृह्यात् जर्गृह्याताम् जर्गृह्युः
जरिगृह्यात् जरिगृह्याताम् जरिगृह्युः
जरीगृह्यात् जरीगृह्याताम् जरीगृह्युः

प० जर्गृहीतु जर्गर्ढु र्गृढात् जर्गृढाम् जर्गृहतु
जरिगृहीतु जरिगर्ढु र्गृढात जरिगृढाम् जरिगृहतु
जरीगृहीतु जरीगर्ढु गृढात् जरीगृढाम् जरीगृहतु
जर्गृढि ,, जर्गृढम् जर्गृढ
जरिगृढि ,, जरीगृढम् जरीगृढ
जरीगृढि ,, जरीगृढम् जरीगृढ
जर्गृहाणि जर्गृहाव जर्गृहाम
जरिगृहाणि जरिगृहाव जरिगृहाम
जरीगृहाणि जरीगृहाव जरीगृहाम

ह्य० अजर्गृहीत् अजर्घर्ट् अजर्गृढाम् अजर्गृहुः
अजरिगृहीत् अजरिघर्ट् अजरिगृढाम् अजरिगृहुः
अजरीगृहीत् अजरीघर्ट् अजरिगृढाम् अजरीगृहुः
अजर्गृहीः ,, अजर्गृढम् अजर्गृढ
अजरिगृहीः ,, अजरिगृढम् अजरिगृढ

अजरिगृहीः ,, अजरिगृढम् अजरीगृढ
अजर्गृह्म अजर्गृह्व अजर्गृह्म
अजरिगृह्म् अजरिगृह्व अजरिगृह्म
अजरीगृह्म् अजरीगृह्व अजरीगृह्म
अ० अजर्गर्हीत् अजर्गर्हिष्टाम् अजर्गर्हिषुः
अजरिगर्हीत् अजरिगर्हिष्टाम् अजरिगर्हिषुः
अजरीगर्हीत् अजरीगर्हिष्टाम् अजरीगर्हिषुः
प० जर्गर्हामास जरिगर्हामास जरीगर्हामास
आ० जर्गृह्यात् जरिगृह्यात् जरीगृह्यात्
श्व० जर्गर्हिता जरिगर्हिता जरीगर्हिता
भ० जर्गर्हिष्यति जरिगर्हिष्यति जरीगर्हिष्यति
क्रि० अजर्गर्हिष्यत् अजरिगर्हिष्यत् अजरीगर्हिष्यत्

॥ प्रच्छ ॥

पर्पृच्छीति पर्पर्ष्टि पर्पृष्टः पर्पृच्छति
परिपृच्छीति परिपर्ष्टि परिपृष्टः परिपृच्छति
परीपृच्छीति परीपर्ष्टि परीपृष्टः परीपृच्छति
पर्पृच्छीषि पर्पर्क्षि पर्पृष्ठः पर्पृष्ठ
परिपृच्छीषि परिपर्क्षि परिपृष्ठः
परिपृष्ठ परीपृच्छीषि परीपर्क्षि
परीपृष्ठः परीपृष्ठ
पर्पृच्छीमि पर्पर्श्मि पर्पृश्व.
पर्पृच्छ्वः पर्पृश्मः परिपृच्छीमि
परिपर्श्मि परिपृश्व. परिपृच्छ्व. परिपृश्मः
परीपृच्छीमि परीपर्श्मि परीपृश्वः
परीपृच्छ्वः परीपृश्मः
स० पर्पृच्छयात् पर्पृच्छयाताम् पर्पृच्छयुः
पर्पृश्यात् पर्पृश्याताम् पर्पृश्युः
परिपृच्छयात् परिपृच्छयाताम् परिपृच्छयुः
परिपृश्यात् परिपृश्याताम् परिपृश्युः
परीपृच्छयात् परीपृच्छयाताम् परीपृच्छयुः
परीपृश्यात् परीपृश्याताम् परीपृश्युः
प० पर्पृच्छीतु पर्पर्ष्टु पर्पृष्टात्
पर्पृष्टाम् पर्पृच्छतु परिपृच्छीतु
परिपर्ष्टु परिपृष्टात् परिपृष्टाम्
परिपृच्छतु परीपृच्छीतु परीपर्ष्टु
परीपृष्टात् परीपृष्टाम् परीपृच्छतु
पर्पृड्ढि पर्पृष्टम् पर्पृष्ट
परिपृड्ढि परीपृष्टम् परिपृष्ट
परीपृड्ढि परीपृष्टम् परीपृष्ट
पर्पृच्छानि पर्पृच्छाव पर्पृच्छाम
परिपृच्छानि परिपृच्छाव परिपृच्छाम
परीपृच्छानि परीपृच्छाव परीपृच्छाम
ह्य० अपर्पृच्छीत् अपर्पट् अपर्पृष्टाम् अपर्पृच्छुः
अपरिपृच्छीत् अपरिपट् अपरिपृष्टाम्
अपरिपृच्छुः अपरीपृच्छीत् अपरीपट्
अपरीपृष्टाम् अपरीपृच्छुः
अपर्पृच्छीः अपर्पट् अपर्पृष्टम् अपर्पृष्ट
अपरिपृच्छीः अपरिपट् अपरिपृष्टम् अपरिपृष्ट
अपरीपृच्छीः अपरीपट् अपरीपृष्टम् अपरीपृष्ट
अपर्पृच्छम् अपर्पृच्छ्व अपर्पृश्व
अपर्पृश्म अपरिपृच्छम् अपरिपृच्छ्व
अपरिपृश्व अपरिपृश्म अपरीपृच्छम्
अपरीपृच्छ्व अपरीपृश्व अपरीपृश्म
अ० अपर्पृच्छीत् अपर्पृच्छिष्टाम् अपर्पृच्छिषुः
अपरिपृच्छीत् अपरिपृच्छिष्टाम् अपरिपृच्छिषुः
अपरीपृच्छीत् अपरीपृच्छिष्टाम् अपरीपृच्छिषुः
पर्पृच्छामास परिपृच्छामास परीपृच्छामास
पर्पृच्छयात् परिपृच्छयात् परीपृच्छयात्
पर्पृश्यात् परिपृश्यात् परीपृश्यात्
पर्पृच्छिता परिपृच्छिता परीपृच्छिता
पर्पृच्छिष्यति परिपृच्छिष्यति परीपृच्छिष्यति
अपर्पृच्छिष्यत् अपरिपृच्छिष्यत् अपरीपृच्छिष्यत्.

मृजौ

व० मर्मृजीति मर्मार्ष्टि मर्मृष्टः
मर्मृजति मरिमृजीति मरिमार्ष्टि
मरिमृष्टः मरिमृजति मरीमृजीति

मरीमार्ष्टि मरीमृष्टः मरीमृजति
मर्मार्जीति „ „ मर्मार्जति
मरिमार्जीति „ „ मरिमार्जति
मरीमार्जीति „ „ मरीमार्जति
मर्मृजीषि मर्मार्क्षि „ „
मरिमृजीषि मरिमार्क्षि मर्मृष्ठः मर्मृष्ठ
मरीमृजीषि मरीमार्क्षि मरिमृष्ठः मरिमृष्ठ
मर्मार्जीषि „ मरीमृष्ठः मरीमृष्ठ
मरिमार्जीषि „ „ „
मरीमार्जीषि „ मर्मृज्वः मर्मृज्मः
मर्मृजीमि मर्मार्ज्मि मरिमृज्वः मरिमृज्मः
मरिमृजीमि मरिमार्ज्मि मरीमृज्वः मरीमृज्मः
मरीमृजीमि मरीमार्ज्मि „ „
मर्मार्जीमि „ „ „
मरिमार्जीमि „ „ „
मरीमार्जीमि „ „ „
स० मर्मृज्यात् मर्मृज्याताम् मर्मृज्युः
मरिमृज्यात् मरिमृज्याताम् मरिमृज्युः
मरीमृज्यात् मरिमृज्याताम् मरीमृज्युः
प मर्मृजीतु मर्माष्टु मर्मृष्टात मर्मृष्टाम् मर्मृजतु
मरिमृजीतुमरिमाष्टु मरिमृ„मरिमृ„मरिमृजतु
मरीमृजीतुमरीमाष्टु मरीमृ „मरीमृ „मरीमृजतु
मर्मार्जीतु „ „ „ मर्मार्जतु
मरिमार्जीतु „ „ „ मरिमार्जतु
मरीमार्जीतु „ „ „ मरीमार्जतु
मर्मृड्ढि „ „ मर्मृष्टम् मर्मृष्ट
मरिमृड्ढि „ „ मरिमृष्टम् मरिमृष्ट
मरीमृड्ढि „ „ मरीमृष्टम् मरीमृष्ट
मर्मार्जानि मर्मार्जाव मर्मार्जाम
मरिमार्जानि मरिमार्जाव मरिमार्जाम
मरीमार्जानि मरीमार्जाव मरीमार्जाम
मर्मृजानि मर्मृजाव मर्मृजाम
मरीमृजानि मरिमृजाव मरिमृजाम
मरीमृजानि मरीमृजाव मरीमृजाम मतान्तरे-
वृद्धिरहितानि मर्मृजानीत्यादीनि
न भवन्ति

ह्य०अमर्मृजीत् अमर्माड् अमर्मृष्टाम् अमर्मृजुः
अमरिमृजीत्अमरिमाड् अमरिमृ„ अमरिमृजुः
अमरीमृजीत्अमरीमाड् अमरीमृ„ अमरीमृजुः
अमर्मार्जीत् „ „ अमर्मार्जुः
अमरिमार्जीत „ „ अमरिमार्जुः
अमरीमार्जीत „ „ अमरीमार्जुः
अमर्मृजीः „ अमर्मृष्टम् अमर्मृष्ट
अमरिमृजीः „ अमरिमृष्टम् अमरिमृष्ट
अमरीमृजीः „ अमरीमृष्टम् अमरीमृष्ट
अमर्मार्जीः „ „ „
अमरिमार्जीः „ „ „
अमरीमार्जीः „ „ „
मतान्तरे-ईत्यक्षेवृद्धिरहितं रूपं न भवति
अमर्मार्जम् अमर्मृज्व अमर्मृज्म
अमरिमार्जम् अमरिमृज्व अमरिमृज्म
अमरीमार्जम् अमरीमृज्व अमरीमृज्म
अमर्मृजम् अमरिमृजम अमरीमृजम् पाणिमते
वृद्धिरहितम् अमर्मृजमिति न
अ० अमर्मार्जीत् अमर्मार्जिष्टाम् अमर्मार्जिषुः
अमरिमार्जीत् अमरिमार्जिष्टाम् अमरिमार्जिषुः
अमरीमार्जीत् अमरीमार्जिष्टाम्अमरीमार्जिषुः
मर्मार्जामास मरिमार्जामास मरीमार्जामास
मर्मृज्यात् मरिमृज्यात् मरीमृज्यात्
मर्मार्जिता मरिमार्जिता मरीमार्जिता
मर्मार्जिष्यति मरिमार्जिष्यति मरीमार्जिष्यति
अमर्मार्जिष्यत्अमरिमार्जिष्यत्अमरिमार्जिष्यत्

ऋ

व० अररीति अरर्ति अऋतः आरति
अरियरीति अरियर्ति अरियतः अरियर्ति
अररीषि अरर्षि अऋथः अऋथ
अरियरीषि अरियर्षि अरियृथः अरियृथ
अररीमि अरर्मि अऋवः अऋमः
अरियरीमि अरियर्मि अरियृवः अरियृमः
स० अऋयात् अऋयाताम् अऋयुः
अरियृयात् अरियृयाताम् अरियृयुः

प० अररीतु अरर्तु अर्ऋतात् अर्ऋताम् अरतु
अरिय ,, अरियर्तु अरियृतात् अरियृताम् अरियृतु
अर्ऋहि ,, ,, अर्ऋतम् अर्ऋत
अरियृहि ,, ,, अरियृतम् अरियृत
अरराणि ,, ,, अरराव अरराम
अरियराणि अरियराव अरियराम
ह्य० आरः आररीत आर्ऋताम् आररुः
आरियः आरियरीत आरियृताम् आरियरुः
,, आररीः आर्ऋतम् आर्ऋत
,, आरियरीः आरियृतम् आरियृत
आररम् आर्ऋव आर्ऋम
आरियरम् आरियृव आरियृम
अ० आरारीत आरारिष्टाम् आरारिषुः
आरियारीत आरियारिष्टाम आरियारिषुः
अररामास । अरियरामास ।
आरियात् । अरियियात् ।
अररिता । अरियरिता ।
अररिष्यति । अरियरिष्यति ।
आरिय । अररिष्यत । आरिष्यत ।
एकेऽत्वत्रेयं नेच्छन्ति तन्मतेऽयं र्तिअपरीतीत्यादि

तॄ

व० तातरीति तातर्ति तातीर्तः तातिरति
तातरीषि तातर्षि तातीर्थः तातीर्थ
तातरीमि तातर्मि तातीर्वः तातीर्मः
स० तातीर्यात तातीर्याताम् तातीर्युः
प० तातरीतु तातर्तु तातीर्तात्-ताम् तातिरतु
तातीर्हि तातीर्तात् तातीर्तम् तातीर्त
तातराणि तातराव तातराम
ह्य० अतातरीत् अतातः अतातीर्ताम् अतातरुः
अतातरीः ,, अतातीर्तम् अतातीर्त
अतातरम् अतातीर्व अतातीर्म
तातरामास तातीर्यात् तातरिता तातरिष्यति
अतातरिष्यत तातरीता ततरीष्यति
अतातरीष्यत

कॄ

व० चाकरीति चाकर्ति चाकीर्तः चाकिरति
चाकरीषि चाकर्षि चाकीर्थः चाकीर्थ
चाकरीमि चाकर्मि चाकीर्वः चाकीर्मः
स० चाकीर्यात चाकीर्याताम् चाकीर्युः
प० चाकरीतु चाकर्तु चाकीर्तात् चाकीर्ताम्
चाकीरतु चाकीर्हि ,, चाकीर्तम् चाकीर्त
चाकराणि चाकराव चाकराम
ह्य० अचाकरीत् अचाकः अचाकीर्ताम् अचाकरुः
अचाकरीः ,, अचाकीर्तम् अचाकीर्त
अचाकरम् अचाकीर्व अचाकीर्म
अ० अचाकारीत् अचाकारिष्टाम् अचाकारिषुः
चाकरामास चाकीर्यात् चाकरिता-चाकरीता,ष्यति
चाकरिष्यति अचाकरिष्यत् अचाकरीष्यत्

हय

व० जाहयीति जाहन्ति जाहतः जाहयति
जाहयीषि जाहसि जाहथः जाहथ
जाहयीमि जाहामि जाहावः जाहामः
स० जाहय्यात् जाहय्याताम् जाहय्युः
प० जाहयीतु जाहतु जाहतात् जाहताम् जाहयतु
जाहहि ,, जाहतम् जाहत
जाहयानि जाहयाव जाहयाम
ह्य० अजाहयीत् अजाहत अजाहताम् अजाहयुःत
अजाहयीः अजाहः ,, अजाहतम् अजाह
अजाहयम् अजाहाव अजाहाम
अ० अजाहयीत् अजाहयिष्टाम अजाहयिषुः
जाहयामास जाहय्यात जाहयिता
जाहयिष्यति अजाहयिष्यत्

ग्रहीश

व० जर्गृहीति जर्गर्ढि जर्गृढः जर्गृहति
जरिगृहीति जरिगर्ढि जरिगृढः जरिगृहति
जरीगृहीति जरीगर्ढि जरीगृढः जरीगृहति
जर्गृहीषि जर्घर्क्षि ,, जर्गृढ
जरिगृहीषि जरिघर्क्षि ,, जरिगृढ
जरीगृहीषि जरीघर्क्षि ,, जरीगृढ
जर्गृहीमि जर्गर्ह्मि जर्गृह्वः जर्गृह्मः

जरिगृह्हीमि जरिगर्ह्मि जरिगृह्वः जरिगृह्मः
जरीगृह्हीमि जरीगर्ह्मि जरीगृह्वः जरीगृह्मः
स० जर्गृह्यात् जर्गृह्यातास् जर्गृह्युः
जरिगृह्यात् जरिगृह्यातास् जरिगृह्युः
जरीगृह्यात् जरीगृह्यातास् जरीगृह्युः
प० जर्गृहीतु जर्गर्ढु–ढात् जर्गृढाम् जर्गृह्वतु
जरिगृहीतुजरिगर्ढु–ढात् जरिगृढाम् जरिगृह्वतु
जरीगृहीतु जरीगर्ढु–ढात जरीगृढाम् जरीगृह्वतु
जर्गृढि ,, जर्गृढम् जर्गृढ
जरिगृढि ,, जरिगृढम् जरिगृढ
जरीगृढि ,, जरीगृढम् जरीगृढ
जर्गृहाणि जर्गृहाव जर्गृहाम
जरिगृहाणि जरिगृहाव जरिगृहाम
जरीगृहाणि जरीगृहाव जरीगृहाम
ह्य० अजर्गृहीत् अजर्घट् अजर्गृढाम् अजर्गृहुः
अजरिगृहीत् अजरिघर्ट् अजरिगृढाम् अजरिगृहुः
अजरीगृहीत् अजरीघर्ट् अजरीगृढाम् अजरीगृहुः
अजर्गृहीः ,, अजर्गृढम् अजर्गृढ
अजरिगृहीः ,, अजरिगृढम् अजरिगृढ
अजरीगृहीः ,, अजरीगृढम् अजरीगृढ
अजर्गृहम् अजर्गृह्व अजर्गृह्म
अजरिगृहम् अजरिगृह्व अजरिगृह्म
अजरीगृहम् अजरीगृह्व अजरीगृह्म
अ० अजर्गर्हीत् अजर्गर्हिष्टाम् अजर्गर्हिषुः
अजरिगर्हीत् अजरिगर्हिष्टाम अजरीगर्हिषुः
अजरीगर्हीत् अजरीगर्हिष्टाम् अजर्गर्हिषुः
प० जर्गर्हामास जरिगर्हामास जरीगर्हामास
आ० जर्गृह्यात् जरिगृह्यात जरीगृह्यात्
श्व० जर्गर्हिता जरिगर्हिता जरीगर्हिता
भ० जर्गर्हिष्यति जरिगर्हिष्यति जरीगर्हिष्यति
अजर्गर्हिष्यत् अजरिगर्हिष्यत् अजरीगर्हिष्यत

मतान्तरे जाग्रहीति, जाग्राढि, जागृढः
इत्यादि

हर्य

व० जाहर्यीति जाहर्ति जाहर्तः जाहर्यति
जाहर्यीषि जाहर्षि जाहर्थः जाहर्थ
जाहर्यीमि जाहर्मि जाहर्वः जाहर्मः
स० जाहर्य्यात् जाहर्य्याताम् जाहर्युः
प० जाहर्यीतु जाहर्तु जाहर्तात् जहर्त्ताम् जाहर्यतु
जाहर्हि ,, जाहर्तम् जाहर्त
जाहर्याणि जहर्याव जहर्याम
ह्य० अजाहर्यीत् अजाहः अजाहर्ताम् अजाहर्युः
अजाहर्यीः ,, अजाहर्तम् अजाहर्त
अजाहर्यम् अजाहर्व अजाहर्म
अ० अजाहर्यीत् अजाहर्यिष्टाम् अजाहर्यिषुः
जाहर्यामास जाहर्यात् जाहर्यिता
जाहर्यिष्यति अजाहर्यिष्यत्

मव

व० मामवीति मामोति मामूतः ममवति
मामवीषि मामोषि मामूथः मामूथ
मामवीमि मामोमि मामूवः मामावः मामूमः
स० मामव्यात् मामव्याताम् मामव्युः
प० मामवीतु मामोतु मामूतात् मामूताम् मामवतु
मामूहि ,, मामूतम् मामूत
मामवानि मामवाव मामवाम
ह्य० अमामवीत् अमामोत अमामूताम् अमामवुः
अमामवीः अमामोः अमामूतम् अमामूत
अमामवम् अमामूव अमामाव अमामूम
अ० अमामवीत् अमामविष्टाम अमामविषुः
मामवामास मामव्यात् मामविता
मामविष्यति अमामविष्यत्
वस्यानुनासिकत्वे मंमवीतीत्यादि
यस्यानुनासिकत्वे मामूयात्–इत्यादि

श्रिव

व० शेश्रिवीति शेश्रोति शेश्रूतः शेश्रिवति
शेश्रिवीषि शेश्रोषि शेश्रूथः शेश्रूथ
शेश्रिवीमि शेश्रोमि शेश्रूवः शेश्रिवः शेश्रूमः
स० शेश्रिव्यात शेश्रिव्याताम् शेश्रिव्युः

प० शेश्विवीतु शेश्वोतु शेश्वूतात् शेश्वूताम् शेश्विवतु
शेश्वूहि ,, शेश्वूतम् शेश्वूत
शेश्विवाणि शेश्विवाव शेश्विवाम
ल० अशेश्विवीत् अशेश्वोत् अशेश्वूताम् अशेश्विवुः
अशेश्विवीः अशेश्वोः अशेश्वूतम् अशेश्वूत
अशेश्विवम् अशेश्वव अशेश्विव अशेश्वूम
अ० अशेश्वेवीत् अशेश्वेविष्टाम् अशेश्वेविषुः
शेश्वयामास शेश्विव्यात् शेश्वेविता
शेश्वेविष्यति अशेश्वेविष्यत्
यस्यानुनासिकत्वे शेश्वूयात् इत्यादि

ज्वर

व० जाज्वरीति जाजूर्ति जाजूर्तः जाज्वरति
जाज्वरीषि जाजूर्षि जाजूर्थः जाजूर्थ
जाज्वरीमि जाजूर्मि जाजूर्वः जाज्वर्वः जाजूर्मः
स० जाज्वर्यात् जाज्वर्याताम् जाज्वर्युः
प० जाज्वरीतु जाजूर्तु जाजूर्तात् जाजूर्ताम्
जाज्वरतु जाजूर्हि ,, जाजूर्तम्
जाजूर्त जाज्वराणि जाज्वराव जाज्वराम
ल० अजाज्वरीत् अजाजूः अजाजूर्ताम् अजाज्वरुः
अजाज्वरीः अजाजूः अजाजूर्तम् अजाजूर्त
अजाज्वरम् अजाज्वर्व अजाजूर्व अजाजूर्म
अ० अजाज्वारीत् अजाज्वारिष्टाम् अजाज्वारिषुः
जाज्वरामास जाज्वर्यात् जाज्वरिता
जाज्वरिष्यति अजाज्वरिष्यत्
पक्षे जाजूर्यादित्यादि

त्वर

व० तात्वरीति तातूर्ति तातूर्तः तात्वरति
तात्वरीषि तातूर्षि तातूर्थः तातूर्थ
तात्वरीमि तातूर्मि तातूर्वः तातूर्मः
स० तात्वर्यात् तात्वर्याताम् तात्वर्युः
प० तात्वरीतु तातूर्तु तातूर्तात् तातूर्ताम् तात्वरतु
तातूर्हि ,, ,, तातूर्तम् तातूर्त
तात्वराणि तात्वराव तात्वराम
ल० अतात्वरीत् अतातूः अतातूर्ताम् अतात्वरुः
अतात्वरीः ,, अतातूर्तम् अतातूर्त
अतात्वरम् अतातूर्व अतात्वर्व अतातूर्म
अ० अतात्वारीत् अतात्वारिष्टाम् अतात्वारिषुः
तात्वरामास तात्वर्यात् तात्वरिता
तात्वरिष्यति अतात्वरिष्यत्
पक्षे तातूर्यादित्यादि

मव्य बन्धने

व० मामव्यीति मामौति मामति मामौतः मामव्यति
मामव्यीषि मामौषि मामसि मामौथः मामौथ
मामव्यीमि मामौमि मामौवः मामावः
मामामि मामौमः
स० मामव्यात् मामव्याताम् मामव्युः
प० मामव्यीतु मामौतु मामतु मामौतात्
मामौताम् मामव्यतु मामौहि ,,
मामौतम् मामौत मामव्यानि मामव्याव
मामव्याम
ल० अमामव्यीत् अमामौत् अमामत् अमामौताम्
अमामव्युः अमामव्यीः अमामौः अमामत्
अमामौतम् अमामौत अमामव्यम् अमामौव
अमामाव अमामौम
अ० अमामव्यीत् अमामव्यिष्टाम् अमामव्यिषुः
मामव्यामास मामव्यात् मामव्यिता
मामव्यिष्यति अमामव्यिष्यत्

तेव

व० तेतेवीति तेतयोति तेतेति तेतयूतः तेतेवति
तेतेवीषि तेतयोषि तेतेषि तेतयूथः तेतयूथ
तेतेवीमि तेतयोमि तेतयूवः तेतेवः तेतयूमः
स० तेतेव्यात् तेतेव्याताम् तेतेव्युः
प० तेतेवीतु तेतयोतु तेतेतु तेतयूतात् तेतयूताम्
तेतेवतु तेतयूहि ,, तेतयूतम्
तेतयूत तेतेवानि तेतेवाव तेतेवाम
ल० अतेतेवीत् अतेतयोत् अतेतेत् अतेतयूताम्
अतेतेवुः अतेतेवीः अतेतयोः अतेतेत्
अतेतयूतम् अतेतयूत अतेतवम् अतेतेव
अतेतयूव अतेतयूम

अ० अतेतेवीत् अतेतेविष्टाम् अतेतेविषुः
तेतेवामास तेतेव्यात् तेतेविता
तेतेविष्यति अतेतेविष्यत्
पक्षे तेतयूर्यादिति

दिवूच्

व० देदिवीति देद्योति देदेति देद्यूतः देदिव्रति
देदिवीषि देद्योषि देदेषि देद्यूथः देद्यूथ
देदिवीमि देद्योमि देद्यूवः देदिव देद्यमः
स० देदिव्यात देदिव्याताम् देदिव्युः
पक्षे देद्यूयादित्यादि
प० देदिवीतु देद्योतु देदेतु देद्यूतात् देद्यूताम्
देदिवतु देद्यूहि ,, देद्यूतम्
देद्यूत देदिवानि देदिवाव देदिवाम
ह्य० अदेदिवीत् अदेद्योत अदेदेत अदेद्यूताम्
अदेदिवुः अदेदिवीः अदेद्योः अदेदेः
अदेद्यूतम अदेद्यूत अदेदिवम अदेद्यूव
अदेदिव अदेद्यम
अ० अदेदेवीत अदेदेविष्टाम् अदेदेविषुः
देदेवामास देदिव्यात देदेविता
देदेविष्यति अदेदेविष्यत

षिव्

व० सेषिवीति सेष्योति सेषेति सेष्यूतः सेषिवति
सेषिवीषि सेष्योषि सेषेषि सेष्यूथः सेष्यूथ
सेषिवीमि सेष्योमि सेष्यूवः सेषिवः सेष्यूमः
स० सेषिव्यात सेषिव्याताम् सेषिव्युः
पक्षे सेष्यूयात् इत्यादि
प० सेषिवीतु सेष्योतु सेषेतु सेष्यूतात सेष्यूताम्
सेषिवतु सेष्यूहि ,, सेष्यूतम
सेष्यूत सेषिवाणि सेषिवाव सेषिवाम
ह्य० असेषिवीत असेष्योत असेषेत् असेष्यूताम
असेषिवुः असेषिवीः असेष्योः असेषेः, असेष्यूतम
असेष्यूत असेषिवम् असेष्यूव असेषिव असेष्यूम
अ० असेषेवित् असेषेविष्टाम् असेषेविषुः
सेषेवामास सेषिव्यात् सेषेविता
सेषेविष्यति असेषेविष्यम्

मुर्छा

व० मोमूर्छीति मोमोर्ति मोमूर्तः मोमूर्छति
मोमूर्छीषि मोमोर्षि मोमूर्थः मोमूर्थ
मोमूर्छीमि मोमोर्मि मोमूर्वः-छूर्वः मोमूर्मः
स० मोमूर्छ्यात मोमूर्छ्याताम् मोमूर्छ्युः
पक्षे मोमूर्यात्-इत्यादि
प० मोमूर्छीतु मोमोर्तु मोमूर्तात्-ताम्मोमूर्छतु
मोमूर्हि ,, मोमूर्तम् मोमूर्त
मोमूर्छानि मोमूर्छाव मोमूर्छाम
ह्य० अमोमूर्छीत् अमोमोः अमोमूर्ताम् अमोमूर्छुः
अमोमूर्छीः ,, अमोमूर्तम् अमोमूर्त
अमोमूर्छम् अमोमूर्व अमोमूर्छ्व अमोमूर्म
अ० अमोमूर्छीत् अमोमूर्छिष्टाम अमोमूर्छिषुः
मोमूर्छामास मोमूर्छ्यात् मोमूर्छिता
मोमूर्छिष्यति अमोमूर्छिष्यत

हुर्छा

व० जोहूर्छीति जोहोर्ति जोहूर्तः जोहूर्छति
जोहूर्छीषि जोहोर्षि जोहूर्थः जोहूर्थ
जोहूर्छीमि जोहोर्मि जोहूर्वः-छूर्वः जोहूर्मः
स० जोहूर्छ्यात् जोहूर्छ्याताम् जोहूर्छ्युः
पक्षे जोहूर्यादित्यादि
प० जोहूर्छीतु जोहोर्तु जोहूर्तात ताम् जोहूर्छतु
जोहूर्हि ,, जोहूर्तम् जोहूर्त
जोहूर्छानि जोहूर्छाव जोहूर्छाम
ह्य० अजोहूर्छीत् अजोहोः अजोहूर्ताम् अजोहूर्छुः
अजोहूर्छीः ,, अजोहूर्तम् अजोहूर्त
अजोहूर्छम् अजोहूर्व अजोहूर्छ्व अजोहूर्म
अ० अजोहूर्छीत् अजोहूर्छिष्टाम् अजोहूर्छिषुः
जोहूर्छामास जोहूर्छ्यात् जोहूर्छिता
जोहूर्छिष्यति अजोहूर्छिष्यत्

तुर्वै

व० तोतूर्वीति तोतोर्ति तोतूर्तः तोतूर्वति
तोतूर्वीषि तोतोर्षि तोतूर्थः तोतूर्थ
तोतूर्वीमि तोतोर्मि तोतूर्वः तोतूर्मः

स० तोतूर्व्यात् तोतूर्व्याताम् तोतूर्व्युः
पक्षे तोतूर्यादित्यादि
प० तोतूर्वीतु तोतोतु तोतूर्तात्-र्ताम् तोतूर्वतु
तोतूर्हि ,, तोतूर्तम तोतूर्त
तोतूर्वाणि तोतूर्वाव तोतूर्वाम
ह्य० अतोतूर्वीत् अतोतोः अतोतूर्ताम् अतोतूर्वुः
अतोतूर्वीः ,, अतोतूर्तम् अतोतूर्त
अतोतूर्वम अतोतूर्व अतोतूर्म
अ० अतोतूर्वीत् अतोतूर्विष्टाम् अतोतूर्विषुः
तोतूर्वामास तोतूर्व्यात् तोतूर्विता
तोतूर्विष्यति अतोतूर्विष्यत्

थुर्वै

व० तोथूर्वीति तोथोर्ति तोथूर्तः तोथूर्वति
तोथूर्वीषि तोथोर्षि तोथूर्थः तोथूर्थ
तोथूर्वीमि तोथोर्मि तोथूर्वः तोथूर्मः
स० तोथूर्व्यात् तोथूर्व्याताम् तोथूर्व्युः
पक्षे तोथूर्यादित्यादि
प० तोथूर्वीतु तोथोतु तोथूर्तात्-र्ताम तोथूर्वतु
तोथूर्हि ,, तोथूर्तम् तोथूर्त
तोथूर्वाणि तोथूर्वाव तोथूर्वाम
ह्य० अतोथूर्वीत् अतोथोः अतोथूर्ताम अतोथूर्वुः
अतोथूर्वीः अतोथोः अतोथूर्तम अतोथूर्त
अतोथूर्वम अतोथूर्व अतोथूर्म
अ० अतोथूर्वीत् अतोथूर्विष्टाम् अतोथूर्विषुः
तोथूर्वामास । तोथूर्व्यात् । तोथूर्विता ।
तोथूर्विष्यति । अतोथूर्विष्यत् ।

दुर्वै

व० दोदूर्वीति दोदोर्ति दोदूर्तः दोदूर्वति
दोदूर्वीषि दोदोर्षि दोदूर्थः दोदूर्थ
दोदूर्वीमि दोदोर्मि दोदूर्वः दोदूर्मः
स० दोदूर्व्यात् दोदूर्व्याताम् दोदूर्व्युः
पक्षे दोदूर्यादित्यादि
प० दोदूर्वीतु दोदोतु दोदूर्तात्-र्ताम् दोदूर्वतु
दोदूर्हि ,, दोदूर्तम् दोदूर्त
दोदूर्वाणि दोदूर्वाव दोदूर्वाम
ह्य० अदोदूर्वीत् अदोदोः अदोदूर्ताम् अदोदूर्वुः
अदोदूर्वीः ,, अदोदूर्तम् अदोदूर्त
अदोदूर्वम् अदोदूर्व अदोदूर्मः
अ० अदोदूर्वीत् अदोदूर्विष्टाम् अदोदूर्विषुः
दोदूर्वामास दोदूर्व्यात् दोदूर्विता
दोदूर्विष्यति अदोदूर्विष्यत्

धुर्वै

व० दोधूर्वीति दोधोर्ति दोधूर्तः दोधूर्वति
दोधूर्वीषि दोधोर्षि दोधूर्थः दोधूर्थ
दोधूर्वीमि दोधोर्मि दोधूर्वः दोधूर्मः
स० दोधूर्व्यात् दोधूर्व्याताम् दोधूर्व्युः
पक्षे दोधूर्यादित्यादि
प० दोधूर्वीतु दोधोतु दोधूर्तात्-र्ताम् दोधूर्वतु
दोधूर्हि ,, दोधूर्तम् दोधूर्त
दोधूर्वाणि दोधूर्वाव दोधूर्वाम
ह्य० अदोधूर्वीत् अदोधोः अदोधूर्ताम् अदोधूर्वुः
अदोधूर्वीः ,, अदोधूर्तम् अदोधूर्त
अदोधूर्वम अदोधूर्व अदोधूर्म
अ० अदोधूर्वीत् अदोधूर्विष्टाम् अदोधूर्विषुः
दोधूर्वामास । दोधूर्व्यात् । दोधूर्विता ।
दोधूर्विष्यति । अदोधूर्विष्यत् ।

अजक्षेपणे व्ये संवरणे द्वयोः समानरूपाणि भवन्ति ।

व० वेवयीति वेवेति वेवीतः वेव्यति
वेवयीषि वेवेषि वेवीथः वेवीथ
वेवयीमि वेवेमि वेवीवः वेवीमः
स० वेवीयात् वेवीयाताम् वेवीयुः
प० वेवयीतु वेवेतु वेवीतात् वेवीताम् वेव्यतु
वेवीहि ,, ,, वेवीतम् वेवीत
वेवयानि वेवयाव वेवयाम
ह्य० अवेवेत् अवेवयीत् अवेवीताम् अवेवयुः
अवेवेः अवेवयीः अवेवीतम् अवेवीत
अवेवयम् अवेवीव अवेवीम
अ० अवेवायीत् अवेवायिष्टाम् अवेवायिषुः
प० वेवयामास । वेवयाञ्चकार । वेवयाम्बभूव
वेवीयात् । वेवयिता । वेवयिष्यति ।
अवेवयिष्यत् ।

तमन्तान्तरे-अञ्धातोर्यङ्लुपि रूपाणि न भवन्ति

कुं शब्दे

व० चोकवीति चोकोति चोकुतः चोकुवति
चोकवीषि चोकोषि चोकुथः चोकुथ
चोकवीमि चोकोमि चोकुवः चोकुमः
स० चोकुयात् चोकुयाताम् चोकुयुः
प० चोकुवीतु चोकोतु-तात् चोकुताम् चोकुवतु
चोकुहि ,, चोकुतम् चोकुत
चोकवानि चोकवाव चोकवाम
ह्य०अचोकवीत् अचोकोत् अचोकुताम् अचोकवुः
अचोकवीः अचोकोः अचोकुतम् अचोकुत
अचोकवम् अचोकुव अचोकुम
अचोकावीत् अचोकाविष्टाम् अचोकाविषुः
चोकवामास । चोकुयात् । चोकविता
चोकविष्यति । अचोकविष्यत् ।

स्यम् शब्दे

व० सेसिमीति सेसेन्ति सेसीन्तः सेसिमति
सेसिमीषि सेसेंसि सेसीन्थः सेसीन्थ
सेसिमीमि सेसेन्मि सेसिन्वः सेसिन्मः
स० सेसिम्यात् सेसिम्याताम् सेसिम्युः
प० सेसिमीतु सेसेन्तु सेसीन्तात् सेसीन्ताम्
सेसिमतु सेसींहि ,, सेसीन्तम् सेसीन्त
सेसिमानि सेसिमाव सेसिमाम
ह्य० असेसिमीत् असेसेन् असेसीन्ताम्
असेसिमुः असेसिमीः असेसेन् असेसीन्तम्
असेसीन्त असेसिमम् असेसिन्व असेसिन्म
अ० असेसेमीत् असेसेमिष्टाम् असेसेमिषुः
सेसेमामास । सेसिम्यात् । सेसेमिता।
सेसेमिष्यति । असेसेमिष्यत् ।
मतान्तरे सास्यमीतीत्यादि ॥

श्वि

व० शोशवीति शोशोति शोशूतः शोशुवति
शेश्वयीति शेश्वेति शेश्वितः शेश्वियति
शोशवीषि शोशोषि शोशूथः शोशूथ
शेश्वयीषि शेश्वेषि शेश्वियथः शेश्वियथ
शोशवीमि शोशोमि शोशूवः शोशूमः
शेश्वयीमि शेश्वेमि शेश्विवः शेश्विमः
स० शोशूयात् । शोशूयाताम् । शोशूयुः
शेश्वियात् शेश्वियाताम् शेश्वियुः
प० शोशवीतु शोशोतु शोशूतात् शोशूताम्
शोशुवतु शोशूहि ,, शोशूत
शोशवानि शोशवाव शोशवाम शेश्वियतु
शेश्वेतु शेश्वितात् शेश्विताम् शेश्वियतु
शेश्विहि ,, शेश्वितम्
शेश्वित शेश्वयानि शेश्वयाव शेश्वयाम
अशोशवीत अशोशोत अशोशूताम् अशोशवुः
अशोशवीः अशोशोः अशोशूतम् अशोशूत
अशोशवम् अशोशूव अशोशूम
अशेश्वयीत् अशेश्वेत् अशेश्वियाताम् अशेश्वयुः
अशेश्वयीः अशेश्वेः अशेश्वितम् अशेश्वित
अशेश्वयम् अशेश्विव अशेश्विम
अ० अशेश्वयीत् अशेश्वयिष्टाम् अशेश्वयिषुः
अशोशवीत् अशोशाविष्टाम् अशोशाविषुः
अशोशुवत् अशोशुवताम् अशोशुवन्
अशेश्वियत् अशेश्वियताम् अशेश्वियन्
शोशवामास । शेश्वयामास । शोशूयात् ।
शोशविता । शेश्वयिता । शोशविष्यति
शेश्वयिष्यति । अशोशूविष्यत् ।
अशेश्वयिष्यत् ।
मतान्तरे शेश्वयीमीत्यादि इकारघटित मेरूपम्॥

डुधांग्क्

व० दाधेति दाधाति दात्तः दाधति
दाधेषि दाधासि दात्थः दात्थ
दाधेमि दाधामि दाध्वः दाध्मः
स० दाध्यात् दाध्याताम् दाध्युः
प० दाधेतु दाधातु दात्तात् दात्ताम् दाधतु
धेहि ,, दात्तम् दात्त
दाधानि दाधाव दाधाम
ह्य० अदाधेत् अदाधात् अदात्ताम् अदाधुः
अदाधेः अदाधाः अदात्तम् अदात्त
अदाधाम् अदाध्व अदाध्म

अ० अदाधात् अदाधाताम् अदाधुः
अदाधाः अदाधातम् अदाधात
अदाधाम् अदाधाव अदाधाम
दाधामास । दाधेयात् । दाधिता
दाधिष्यति । अदाधिष्यत् ।

डुदाञ्

व० दादेति दादाति दात्तः दादति
दादेषि दादासि दात्थः दात्थ
दादेमि दादामि दाद्वः दाद्मः
स० दाद्यात् दाद्याताम् दाद्युः
प० दादेतु दादातु दात्तात् दात्ताम् दादतु
देहि ,, दात्तम् दात्त
दादानि दादाव दादाम
ह्य० अदादेत् अदादात् अदात्ताम् अदादुः
अदादेः अदादाः अदात्तम् अदात्त
अदादाम् अदाद्व अदाद्म
अ० अदादात् अदादाताम् अदादुः
अदादाः अदादातम् अदादात
अदादाम् अदादाव अदादाम
दादामास । दादेयात् । दादिता ।
दादिष्यति । अदादिष्यत् ।

चायृञ्

व० चेकयीति चेकेति चेकीतः चेक्यति
चेकयीषि चेकेषि चेकीथः चेकीथ
चेकयीमि चेकेमि चेकीवः चेकीमः
स० चेकीयात् चेकीयाताम् चेकीयुः
प० चेकयीतु चेकेतु चेकीतात् चेकीताम्
चेक्यतु चेकीहि ,, चेकीतम् चेकीत
चेकयानि चेकयाव चेकयाम
ह्य० अचेकयीत् अचेकेत् अचेकीताम्
अचेकयुः अचेकयीः अचेकेः
अचेकीतम् अचेकीत अचेकयम्
अचेकीव अचेकीम
अ० अचेकायीत् अचेकायिष्टाम् अचेकायिषुः
चेकयामास । चेकीयात् । चेकयिता
चेकयिष्यति । अचेकयिष्यत्

ओप्याय

व० आपेपयीति आपेपेति आपेपीतः
आपेप्यति आपेपयीषि आपेपेषि
आपेपीथः आपेपीथ आपेपयीमि
आपेपेमि आपेपीवः आपेपीमः
स० आपेपीयात् आपेपीयाताम् आपेपीयुः
प० आपेपयीतु आपेपेतु आपेपीतात् आपेपीताम्
आपेप्यतु आपेपीहि ,, आपेपीतम्
आपेपीत आपेपयानि आपेपयाव आपेपयाम
ह्य० आपेपयीत् आपेपेत् आपेपीताम् आपेपयुः
आपेपयीः आपेपेः आपेपीतम् आपेपीत
आपेपयम् आपेपीव आपेपीम
आपेपायीत् । आपेपयामास । आपेपीयात्
आपेपयिता । आपेपयिष्यति । आपेपयिष्यत्
सृ—सरीसरीति सरिसरीति सर्सरीति
सरीसर्ति सरिसर्ति सर्सर्ति
असरीसारीत् असरिसारीत् असर्सारीत्
शुच—शोशुचीति शोशोक्ति अशोशोचीत्
लुञ्च—लोलुञ्चीति लोलुङ्क्ति अलोलुञ्चीत्
वाछि—वावाञ्छीति वावांष्टि अवावाञ्छीत्
त्यज—तात्यजीति तात्यक्ति अतात्याजीत्
अतात्यजीत्
षञ्ज—सासञ्जीति सासङ्क्ति असासञ्जीत्
स्फुट—पोस्फुटीति पोस्फोट्टि अपोस्फुटीत्—
क्रीड़—चेक्रीडीति चेक्रीट्टि अचेक्रीडीत्
रण—रंरणीति रंरण्टि अरंराणीत् अरंरणीत्
चितै—चेचितीति चेचेत्ति अचेचेतीत्
खादृ—चाखादीति चाखात्ति अचाखादीत्
गद—जागदीति जागत्ति अजागादीत् अजागदीत्
णिदु—नेनिन्दीति नेनिन्त्ति अनेनिन्दीत्
सृप्लृ—सरीसृपीति सरिसृपीति सर्सृपीति
सरीसृप्ति सरिसृप्ति सर्सृप्ति
असरीसर्पीत् असरिसर्पीत् असर्सर्पीत्
चुबु—चोचुम्बीति चोचुम्बति अचुचुम्बीत्
दल—दन्दलीति दादलीति दन्दलित

दादलित अदन्दालीत अदादालीत्
खेल—चेखेलीति चेखेल्ति अचेखेलीत्
स्खल-चंस्खलीति चास्खलीति अचास्खालीत्
चंस्खलति चास्खल्ति अचंस्खालीत्
गल-जागलीति जागल्ति अजागालीत्
जङ्गलीति जङ्गलित अजंङ्गालीत्
गर्व-जागर्वीति जागर्ति अजागर्वीत्
जीव-जेजीवीति जेज्योति जेजेति अजेजीवीत
दृश-दरीदशीति दरिदृशीति दर्दृशीति
दरिद्रष्टि दरिद्रष्टि दर्द्रष्टि
अदरीदर्शीत् अदरिदर्शीत् अदर्दर्शीत्
घुषृ-जोघुषीति जोघोष्टि अजोघोषीत्
मृषू-मरीमृषीति मरिमृषीति मर्मृषीति
मरीमर्ष्टि मरिमर्ष्टि मर्मर्ष्टि
अमरीमर्षीत् अमरिमर्षीत् अमर्मर्षीत्
पुष-पोपुषीति पोपोष्टि अपोपोषीत्
भूष-बोभूषीति बोभूष्टि अबोभूषीत्
शंसू-शाशंसीति शाशंस्ति अशाशंसीत्
रक्ष—रारक्षीति रारष्टि अरारक्षीत
लोकृङ्—लोलोकीति लोलोक्ति अलोलोकीत
शकुङ्—शाशङ्कीति शाशङ्क्ति अशाशङ्कीत्
श्लाघृङ्—शाश्लाघीति शाश्लाग्धि
अशाश्लाघीत
पचुङ्—पापञ्चीति पापङ्क्ति अपापञ्चीत
खडुङ्—चाखण्डीति चाखण्टि अचाखण्डीत
हेडृङ्—जेहेडीति जेहेट्टि अजेहेडीति
यतैङ्—यायतीति यायत्ति अयायातीत्
अयायतीत्
हर्दि—जाहर्दीति जाहर्त्ति अजाहार्दीत्
अजाहर्दीत्
कपुङ्—चाकम्पीति चाकम्प्ति अचाकम्पीत
लवुङ्—लालम्बीति लालम्बति अलालम्बीत
जृभुङ्—जरीजृम्भीति जरिजृम्भीति जर्जृम्भीति
जरिजृम्ब्धि जरीजृम्ब्धि जर्जृम्ब्धि अजरीजृम्भीत् अजरिजृम्भीत् अजर्जृम्भीत्

क्षमौषि—चङ्क्षमीति चङ्क्षन्ति अचङ्क्षमीत्
भाषि—बाभाषीति बाभाष्टि अबाभाषीत्
गाहौङ्—जागाहीति जागाढि अजागाहीत्
शिक्षि—शेशिक्षीति शेशिष्टि अशेशिक्षीत्
दीक्षि—देदीक्षीति देदीष्टि अदेदीक्षीत्
पच्-पापचीति पापक्ति अपापाचीत् अपापचीत्
यजीं—यायजीति यायष्टि अयायाजीत्
अयायजीत्
वेंग्—वावेति वावाति अवावासीत्
टुवपीं—वावपीति वावप्ति अवावापीत्
अवावपीत्
वहीं—वावहीति वावाढि अवावहीत्
भांक्—बाभेति बाभाति अबाभासीत्
श्वसक्—शाश्वसीति शाश्वस्ति अशाश्वसीत्
अशाश्वासीत्। मतान्तरे वृद्धिरहितं रूपम्
शासूक्- शाशासीति शाशास्ति शाशिष्टः
अशाशासीत्
चक्षिङ्—चाख्शीति चाक्शीति चाख्येति
चाख्शाति चाक्शाति चाख्याति अचा-
ख्शासीत् अचाक्शासीत् अचाख्यासीत्
द्विषींक्—देद्विषीति देद्वेष्टि अदेद्वेषीत्
दुहींक्—दोदुहीति दोदोग्धि अदोदोहीत्
लिहींक्—लेलिहीति लेलेढि अलेलेहीत्
णिजूंकी—नेनिजीति नेनेक्ति अनेनेजीत्
विष्लृंकी—वेविषीति वेवेष्टि अवेवेषीत्
व्यधंच्—वेविधीति वेवेद्धि अवेवेधीत
त्रसैच्—तात्रसीति तात्रस्ति अतात्रासीत्
अतात्रसीत्
क्रुधंच्—चोक्रुधीति चोक्रोद्धि अचोक्रोधीत
तृपौच्—तरीतृपीति तरितृपीति तर्तृपीति
तरी, तरि, तर्-इति तरीतप्ति तरितप्ति
तर्तप्ति अतरीतर्पीत अतरितर्पीत अतर्तर्पीत्
नशौच्—नानशीति नानंष्टि अनानाशीत्
अनानशीत्
शमूच्—शंशमीति शंशन्ति अशंशमीत्
दूङ्च्—दोदवीति दोदोति अदोदावीत्

प्रीङ्च्—पेप्रयीति पेप्रेति अपेप्रायीत्
सृजिच्—सरीसृजीति सरिसृजीति सर्सृजीति
सरीसृष्टि सरिसृष्टि सर्सृष्टि असरी-
सर्जीत् असरिसर्जीत् असर्सर्जीत्
णहिंच्—नानहीति नानद्धि अनानहीत्
स्तृंगुट्—तरीस्तरीति तरिस्तरीति तर्स्तरीति
तरीस्तर्ति तरिस्तर्ति तर्स्तर्ति अतरी-
स्तारीत् अतरिस्तारीत् अतर्स्तारीत्
हिंट्—जेघयीति जेघेति अजेघायीत्
साधंट्—सासाधीति सासद्धि असासाधीत्
दिशींत्—देदेशीति देदेष्टि अदेदेशीत्
टुमस्जोंत्—मामज्जीति मामङ्क्ति अमामज्जीत्
कुटत्—चोकुटीति चोकोट्टि अचोकोटीत्
रुधृंपी—रोरुधीति रोरोद्धि अरोरोधीत्
क्षुदृंपी—चोक्षुदीति चोक्षोत्ति अचोक्षोदीत्
भुजंप्—बोभुजीति बोभोक्ति अबोभोजीत्
पिष्लृंप्—पेपिषीति पेपेष्टि अपेपेषीत्
वनूयी—वंवनीति वंवन्ति वंवान्तः
अवंवानीत् अवंवनीत्
पूग्श्—पोपवीति पोपोति अपोपावीत्
अत्रोष्मभिन्नव्यञ्जनाद्यकारोपधानुनासिका-
न्तधातूनां अनुस्वारानुनासिकविशिष्टानि
रूपाणि भवन्ति, इति अनुनासिकविशि-
ष्टस्थलेऽनुस्वारविशिष्टमपि बोध्यम् ।

इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थंसंर-
क्षणप्रवणविद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टा-
रकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्या-
यवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्य-
मुनिगुणविजयविरचितायां हैमधातुमालायां

## ॥ यङ्लुबन्तप्रक्रिया ॥

॥ अथ नामधातुप्रक्रिया ॥

आत्मनः पुत्रमिच्छति, । पुत्रकाम्यति ।
पुत्रकाम्येत । पुत्रकाम्यतु । अपुत्रकाम्यत ।
अपुत्रकाम्यीत् । पुत्रकाम्याञ्चकार ।
पुत्रकाम्यात् । पुत्रकाम्यिता । पुत्रकाम्यिष्यति ।
अपुत्रकाम्यिष्यत् ।
पुत्रीयति । अपुत्रीयीत् ।
राज्ञीयति । अराजीयीत् ।
अहर्यति । आहर्यीत् । अहरीत् ।
गव्यति । अगव्यीत् ।
वाच्यति । अवाचीत् । अवाच्यीत्
अदस्यति । आदसीत् । आदस्यीत् ।
गीर्यति । अगीरीत् अगीर्यीत् ।
दिव्यति । अदिवीत् । अदिव्यीत् ।
गार्गीयति । अगार्गीयीत् ।
कर्त्रीयति । अकर्त्रीयीत् ।
प्रासादे-इवाचरतीति । प्रासादीयति ।
प्रासादीयीत् ।
अशनायति । आशनायीत् ।
उदन्यति । औदनीत् । औदन्यीत्

धनायति । अधनायीत् ।
मैथुनेच्छायाम् ।
वृषस्यति । अवृषसीत् । अवृषस्यीत्
अन्यत्रेच्छायां तु ।
वृषीयति । अवृषीयीत्
लौल्ये । ( उत्कटेच्छायाम् ) ।
दधिस्यति । अदधिसीत् । अदधिस्यीत्
दध्यस्यति । अदध्यसीत् । अदध्यस्यीत्
आचारेऽर्थे
अश्वति आश्वीत् ।
दधयति ।. अदधायीत् । अदधयीत् ।
गवति । अगावीत् । अगवीत् ।
नावति । अनावीत् ।
राजनति । अराजानीत् । अराजनीत् ।
अन्यमते । राजानति । अराजानीत् ।
पथेनति । अपथेनीत् । अन्यं । क्रि० र० पथिनति
पथीनति । अपथीनीत् ।
इदमति । पेदमीत् । अन्यमते ।
इदामति । पेदामीत् ।
अति । पत् । पताम् । पतुः । इत्यादि
मतान्तरे-ईत् ईताम्मित्यादि—येत् येताम्मिति
कवयति । अकवायीत् । अकवयीत् ।
(भूरिवाचरतीति) भवति अभावीत् अभवीत्
ऋभुक्षेणति । आर्भुक्षेणीत् । (मतान्तरे) ।
ऋभुक्षीणति । आर्भुक्षीणीत् ।
कति । अकीत् ।
अहनति । आहनीत् ।(क्रियारत्नसमुच्चये तु ।
अहरति । आहरीत् । मतान्तरे अहानति
आहानीत् ॥
अनडोहति । आनडोहीत् । ( क्रि. समु.) ।
अनडुहति । आनडुहीत् ।
गेरति । अगेरीत् । ( क्रि. स ) ।
गिरति । अगिरीत् ।
पयायते । पयस्यते । अपयायिष्ट ।
अपयसिष्ट । अपयस्यिष्ट ।
(ओजस्वीवाचरतीति) ओजायते । औजायिष्ट
(अभृशो भृशो भवति) भृशायते अभृशायिष्ट

उन्मनायते । उदमनायिष्ट ।
उत्सुकायते । औत्सुकायिष्ट ।
पटपटायति । पटपटायते ।
अपटपटायीत् । अपटपटायिष्ट ।
(अलोहितो लोहितो भवति) लोहितायति
(ते) अलोहितायीत् । अलोहितायिष्ट ।
(कष्टाय क्रमते) । कष्टायते । अकष्टायिष्ट ।
(रोमन्थमुच्चर्वयति) । रोमन्थायते ।
अरोमन्थायिष्ट ।
(फेनमुद्वमति) । फेनायते । अफेनायिष्ट ।
आचारेऽर्थे
गल्भते । अगल्भिष्ट ।
हंसायते । अहंसायिष्ट ।
पतायते । पेतायिष्ट ।
गार्ग्यायते । अगार्ग्यायिष्ट ।
(युवतिरिवाचरति, । युवायते । अयुवायिष्ट
पक्षे युवतीयते ॥
पाचिकायते । अपाचिकायिष्ट ।
पञ्चमीयते । अपञ्चमीयिष्ट ।
माहेश्वरीयते । अमाहेश्वरीयिष्ट
(सुखमनुभवति] । सुखायते । असुखायिष्ट
(शब्दं करोति) । शब्दायते । अशब्दायिष्ट
( तपः करोति ) तपस्यति ।
अतपसीत् । अतपस्यीत् ।
वरिवस्यति । अवरिवसीत् । अवरिवस्यीत्
(हस्तौ निरस्यति) । हस्तयते अजहस्तत
अहतिस्तत । मतान्तरे अजहस्ततेत्येव
(पुच्छमुदस्यति । उत्पुच्छयते । उदपुपुच्छत
उदपुपिच्छत ॥ मतान्तरे उदपुपुच्छतेत्येव
( भाण्डानि । समाचिनोति ) ।
समाण्डयते । समबभाण्डत ।
समभाणिण्डत । समभाण्डिढदिति कश्चित्
अन्यमते समबभाण्डत, इत्येव
(चीवराणि परिधत्ते) । (अर्जयतिवा)
परिचीवरयते । पर्यचिचीवरत ।
पर्यचीवबरत ॥ पर्यचीवरिरत मतान्तरे
पर्यचिचीवरत इत्येव ॥

(मुण्डं करोति( मुण्डयति अमुमुण्डत्
अमुनिण्डत् । अमुण्डिडदित्येके
अमुमुण्डदित्येवेत्यन्ये

(पटुमाचष्टे) । पटयति । अपीपटत् ।
। अपटिटत् । मतान्तरे अपीपटत्
अपपटत् ॥

(वृक्षं रोपयति) । वृक्षयति । अववृक्षत् ।
अवृचिक्षत् । मतान्तरे—अववृक्षदित्येव

(कृतम् (उपकारम्) गृह्णाति, ।
कृतयति ।
अचकृतत् ॥ अकृतितत् ॥ मतान्तरे अचकृतत्

(रूपं निध्यायति निरूपयति, न्यरुरूपत् ।
न्यरूपिपत् मतान्तरे—न्यरुरूपत् ॥

(लोमान्यहेमार्ष्टि) अनुलोमयति,अन्वलुलोमत्
अन्वलोमिमत् मतान्तरे एकमेव ॥

(हस्तिनाऽतिक्रामति) अतिहस्तयति
अत्यजहस्तत् । अत्यहतिस्तत् ॥ मतान्तरे
एकमेव ॥

[वर्मणा सन्नह्यति] संवर्मयति समववर्मत्
समववर्मत् । समवरिर्मत् । समवर्मिमदित्येके
मतान्तरे—समववर्मत् इत्येव ॥

(वीणया उपगायति)उपवीणयति।
उपाविवीणत् ॥ उपावीणिणत् । मतान्तरे
द्वितीयं न

(सेनयाभियाति)अभिषेणयति । अभ्यषेणिणत्
सर्वमते अभ्यषिषेणत्

(वास्याच्छिनत्ति) । वासयति । अवीवसत् ।
अवसिसत् मता० अवीवसत् अववसत्

(वाससोन्मोचयति) उद्वासयति । उदववासत्
॥ उद्वासिसत् । मतान्तरे—उदववासत् इत्येव

(श्लोकैरुपस्तौति)उपश्लोकयति उपाशुश्लोक
उपाश्लोकिकत् मता० उपाशुश्लोकत्

(हस्तेनाक्षिपति । अपहस्तयति । अपाजहस्तत् ।
अपाहतिस्तत्

(छन्दसोपचरति) उपच्छन्दयति । उपाचच्छन्दत्
। उपाच्छनिन्दत् । उपाच्छन्दिददित्येके मतान्तरे
उपाचच्छन्ददित्येव

(पाशेनसंयच्छति) । संपाशयति । समपपाशत
समपाशिशत् ॥ सर्वमते समपपाशत् ॥

(शूरो भवति) । शूरयति । अशुशूरत् ।
अशूरिरत् सर्वमते अशुशूरत् ।

(वीर उत्सहते) । वीरयति । अविवीरत् ।
अवीरिरत् सर्वमते अविवीरत् ।

(पुत्रं सूते) पुत्रयति । अपुपुत्रत् ।
अपुतित्रत् सर्वमते अपुपुत्रत् ।

(अर्थमाचष्टे) अर्थयति. आर्थर्त् ॥ (अत्र
र्थद्वित्वे कार्ये स्यानिनिमित्तापेक्षयापि प्रा-
ग्विधिरिष्यते ॥ )

(स्रग्विणमाचष्टे) । स्रजति । असस्रजत् ।
अस्रजिजत् ॥ सर्वमते अससृजत् ॥

(पयस्विनीमाचष्टे)पयसयति । अपपयसत् ।
अपययसत् ॥ अपयसिसत् । सर्वमते अपपयसत्
पययति, अपपयत्, अपयियदिति सूरिमते

(त्वग्वन्तमाचष्टे) । त्वचयति । अतत्वचत् ।
अत्वचिचत् ॥ सर्वमते अतत्वचत् ॥

(अल्पं युवानं वा आचष्टे) । कनयति
अचीकनत् । अकनिनत्
पक्षे । अल्पयति । आलिल्पत् ।
अलल्पत् । इति केचित्
यवयति । अयुयवत् ।

स्थूलम् आ० । स्थवयति । अतुस्थवत् ।

(दूरम्) । दवयति । अदुदवत् ।

[ह्रस्वम्) । ह्रसयति । अजह्रसत् ।
अह्रसिसत् ॥ अजह्रसत् इति सर्वमते

(क्षिप्रम्) । क्षेपयति । अचिक्षेपत् ।
अक्षेपिपत् ॥ सर्वमते अचिक्षेपत् ॥

(क्षुद्रम्) । क्षोदयति । अचुक्षोदत् ।
अक्षोदिदत् ॥ सर्वमते अचुक्षोदत् ॥

प्रशस्यम् । आ० । श्रयति । ज्ययति ।
अशिश्रत् ॥ केचित्तु अशिश्रयत् ॥ अजिज्यत्
अजिज्ययत् ॥ मतान्तरे प्रशस्ययति ॥

वृद्धम् । आ० । ज्ययति ॥ अजिज्यत् ॥
प्राशशस्यत् अजिज्ययत् इति केचित् ॥
मतान्तरे ज्यापयति अजिज्यपदिति ॥
बाढम् । आ० । साधयति । अससाधत् ।
असाधिधत् ॥ सर्वमते अससाधत् ॥
अन्तिकम् । नेदयति । अनिनेदत् । अनेदिदत्
प्रियम् । प्रापयति । अपिप्रपत् अप्रपिपत् ॥ कश्चित्तु
करोत्यर्थे णौ प्राद्यादेशं नेच्छन्ति, तन्मते
प्रिययति, स्थिरयतीत्यादि
स्थिरम् । स्थापयति । अतिस्थपत् ।
अस्थपिपत् । सर्वमते अतिस्थपत् ।
स्फिरम् । स्फापयति । अपिस्फपत् ।
अस्फपिपत् ॥ सर्वमते । अपिस्फपत् ॥
उरुम् । वरयति । अवीवरत् ॥ अवरिरत्
॥ अवीवरदिति सर्वमते वारयतीत्येके ॥
गुरुम् । गरयति । अजीगरत् । अगरिरत् ॥
सर्वमते अजीगरत् ॥
बहुलम् । बंहयति । अबबंहत् । अबंजिहत्
॥ सर्वमते अबबंहत् ॥
तृप्रम् । त्रपयति । अतित्रपत् । अत्रपिपत्
सर्वमते अतित्रपत् ॥
दीर्घम् । द्राघयति । अदिद्रघत् । अद्रजिघत्
॥ सर्वमते अदिद्रघत् ॥
वृद्धम् । वर्षयति । अववर्षत् । अवरिर्षत्
अवर्षिषदिति केचित् । सर्वमते । अववर्षत्
वृन्दाकरम् । वृन्दयति । अववृन्दत् ।
अवृनिन्दत् । अवृन्दिददिति केचित् । अववृ
न्दत् इति सर्वे
पृथुम् । प्रथयति । अपिप्रथत् ।
। अप्रतिथत् ॥ अपिप्रथत् । अपप्रथत्

–इति मतान्तरे
मृदुम् । म्रदयति । अमिम्रदत् ।
अम्रदिदत् । अमिम्रदत् ॥ अमम्रदत् ॥
भृशम् । भ्रशयति । अबभ्रशत् । अभ्रशिशत्
॥ सर्वमते अबभ्रशत् ॥
कृशम् । क्रशयति । अचक्रशत् । अक्रशि-
शत् ॥ सर्वमते अचक्रशत् ॥
बहून् आ० भूययति ॥ अभूयियत् ॥ अबू-
भुयत् ॥ भाययति ॥ अबीभव –इत्येके ॥
बहयति । अबीबहत् ॥ अबबहदित्येके ॥
ऊढिचाचष्टे । ऊढयति । औजिढ । अ-
ढिढदित्येके ।
(त्वां मां वाचष्टे) । त्वदयति । मदयति ।
। अत्वदिदत् ॥ अतित्वदत् ॥ अमीमदत् ॥
अममदिदत् ॥ त्वादयति
मादयति–इत्यन्ये त्वापयति मापयतीत्यपरे
अतित्वदत् अमीमदत् (अतित्वपत् अमीमपत्)
युवामावां वाचष्टे युष्मयति अस्मयति ।
अयुषिष्मत् ॥ अयुयुष्मत् । आसिस्मत् ॥
विद्वांसमा० । विद्वयति । विदावयति-इत्य-
न्ये विदयतीत्यपरे ) अविदिद्वत् ॥
अविविद्वत् ॥ मतान्तरे अविविदावत् ॥
अविविदत् ॥
(श्वानमाचष्टे) । श्वानयति । शावयतीत्यन्ये
शुनयतीत्यपरे । अश्वनिनत् ॥ अशिश्वनत् ॥
मतान्तरे अशुशावत् । अशूशुनत् ॥
(उदञ्चमाचष्टे) उदयति ॥ उदैयत् उदांयत्
इतिकेचित् ॥ मतान्तरे–उदीचयति ॥
उदैचिचत् ॥
प्रत्यञ्चम् । प्रत्ययति । प्रत्यैयत् । प्रत्यायत्
॥ इतिकेचित् ॥ मतान्तरे प्रतीचयति ॥
प्रत्यचिचत् ॥ प्रति अचिचत् ॥
दध्यञ्चम् । दध्ययति । अदधिध्यत् ॥
अददध्यत् ॥ मता-

न्तरे ॥ दधायति ॥ अदधायत् ॥
हलिं । कलिं । वा । गृह्णाति । हलयति।
कलयति । अदहलत् । अचकलत्
अजहलत । अचकलत् ।
भुवमाच० । भावयति । अबीभवत ।
भ्रुवमा०भ्रावयतिअबुभ्रवतअबुभ्रुवदितिकेचित
श्रियम् श्राययति अशिश्रयत्।
गाम् गावयति अजूगवत्
रायम् राययति अरीरयत्
नावम् नावयति अनूनवत
कर्तारम् । करयति अचकरत
दरदम् माच० दारदयति अददारदत्
अदाररदत ॥ अदारदिदत
पत्नीम् पतयति पेततत्
व्रतं करोति गृह्णाति वा व्रतयति अवव्रतत
अव्रतितत ॥ सर्वमते अवव्रतत् ॥
सत्यं करोति आचष्टे वा सत्यापयति
अससत्यपत असतत्यपत् ॥
असत्यपिपत् असतित्यपदिति केचित् ॥
सर्व—अससत्यपत्
एवम् वेदापयति अविवेदपत अवेदीदपत
अवेदपिपत् अवेददपत् ॥
सर्वमते अविवेदपत् ॥
एवम् अर्थापयति आर्तीथपत्
आर्थपिपत् ॥ आर्तथपत् । आर्तीथपदिति
कश्चित्
श्वेताश्वमाचष्टे श्वेतयति अशिश्वेतत्
अश्वेतितत् ॥ अशिश्वेतत् ॥

## ॥ इति नामधातुप्रक्रिया ॥

---

## ॥ अथ कण्ड्वादिः ॥

कण्डूञ् गात्रविघर्षणे
व कण्डूयति कण्डूयत कण्डूयन्ति इत्यादि

स० कण्डूयेत् कण्डूयेताम् कण्डूयेयुः
प० कण्डूयतु कण्डूयतात् कण्डूयताम् कण्डूयन्तु
ह्य० अकण्डूयत् अकण्डूयताम् अकण्डूयन्
अ० अकण्डूयीत् अकण्डूयिष्टाम् अकण्डूयिषुः
प० कण्डूयाञ्चकार कण्डूयाञ्चक्रतुः कण्डूयाञ्चक्रुः
आ० कण्डूय्यात् कण्डूय्यास्ताम् कण्डूय्यासुः
श्व०कण्डूयिता कण्डूयितारौ कण्डूयितारः
भ० कण्डूयिष्यति कण्डूयिष्यतः कण्डूयिष्यन्ति
क्रि० अकण्डूयिष्यत् अकण्डूयिष्यताम्
अकण्डूयिष्यन् एवम् कण्डूयते कण्डूयेत
कण्डूयताम् अण्डूयत अकण्डूयिष्ट कण्डूयाञ्चक्रे
कण्डूयिषीष्ट कण्डूयिता कण्डूयिष्यते अकण्डूयिष्यत

महीङ्—वृद्धौ पूजायाञ्च महीयते अमहीयिष्ट
हृणीङ्—रोषलज्जयोः हृणीयते अहृणीयिष्ट
वेङ् लाङ्—धौर्त्ये पूर्वभावे स्वप्ने च वायते
अवायिष्ट लायते अलायिष्ट
मन्तु—रोषवैमनस्ययोः मन्तूयति अमन्तूयीत्
वल्गु—माधुर्यपूजनोः वल्गूयति अवल्गूयीत्
असु—मानसोपतापे असूयति आसूयीत्
लेट् लाट—वेङ्वत् वेटयति अवेटीत्
लिट्—अल्पार्थे कुत्सायां च लिटयति अलिटीत्
लोट्—दीप्तौ लोटयति अलोटीत्
उरस्—ऐश्वर्ये उरस्यति औरसीत्
उषस्—प्रभातीभावे उषस्यति औषसीत्
इरस्—ईर्ष्यायाम् इरस्यति ऐरसीत्
तिरस्—अन्तर्धौ तिरस्यति अतिरसीत्
इयस् इमस् अस् पयस्—प्रसृतौ पयस्यति
अपयसीत्
संभूयस्—प्रभूतभावे भूयस्यति असम्भूयसीत्
दुवस्—परितापपरिचरणयोः दुवस्यति
अदुवसीत्
दुरज् भिषज्—चिकित्सायाम् दुरज्यति
भिषज्यति अभिषजीत
भिष्णुक्—उपसेवायाम् भिष्णुक्यति
अभिष्णुकीत्

रेखा—श्लाघासाधनयोः रेखायति अरेखायीत्
लेखा—विलासस्खलनयोः लेखायति अलेखायीत्
एला वेला केला खेला—विलासे खेलायति अखेलायीत्
गोधा मेधा—आशुग्रहणे गोधायति अगोधायीत् मेधायति अमेधायीत्
मगध—परिवेष्टने मगध्यति अमगधीत्
इरध इषुध—शरधारणे इरध्यति ऐरधीत् इषुध्यति ऐषुधीत्
कुषुम्भ—क्षेपे-इत्यनुशासने
कुषुभ्—क्षेपे कुषुभ्यति अकुषुभीत्
सुख दुःख—तत्क्रियायाम् सुख्यति असुखीत्
अगद—नीरोगत्वे अगद्यति आगदीत्
गद्गद—वाक् स्खलने गद्गद्यति अगद्गदीत्
तरण वरण—गतौ तरण्यति अतरणीत्
उरण तुरण—त्वरायाम् तुरण्यति अतुरणीत्
पुरण—गतौ पुरण्यति अपुरणीत्
भुरण—धारणपोषणयुद्धेषु भुरण्यति अभुरणीत्
चुरण—मतिचौर्ययाः चुरण्यति अचुरणीत्
भरण—प्रसादार्थः भरण्यति अभरणीत्
तपुस तम्पस—दुःखार्थौ तम्पस्यति अतम्पसीत्
अरर—आराकर्मणि अरर्यति आररीत्
सपर—पूजायाम् सपर्यति असपरीत्
समर—युद्धे समर्यति असमरीत्

॥ इति कण्ड्वादिः ॥

## ॥ अथ प्रत्ययमाला ॥

अश्वमिवाचरति अश्वीयति
अश्वीयितुमिच्छति अशिश्वीयिषति
अश्वीयियिषति अश्वीयिषति
आशिश्वीयिषीत् आश्वीयियिषीत्
आश्वीयिषीत्
पुत्रीयितुमिच्छति पुपुत्रीयिषति
पुतित्रीयिषति पुत्रीयियिषति
पुत्रीयिषति अपुपुत्रीयिषीत्
अपुतित्रीयिषीत् अपुत्रीयियिषीत्
अपुत्रीयिषीत्

सोपुष्यते सनि एकेषां मते-सुसोपुपिषते असुसोपुपिषिष्ट इति, अन्यमते सोपुपिषते असोपुपिषिष्ट

कण्डूयितुमिच्छति । कण्डूयियिषति, ते, अकण्डूयियिषीत् अकण्डूयियिषिष्ट
असूयियिषति आसूयियिषीत्
बुभूषन्तं प्रेरयति बुभूषयति
अबुभूषत् अबुबुभूषत् यङन्ताण्णिगि
बोभूययति (ते) अबुबोभूयत् (त)
अबोभूयत (त)
यङ्लुबन्ताण्णिगि बोभावयति (ते)
अबुबोभवत् (त) अबोभवत् (त)
ण्यन्तात्सनि बिभावयिषति
अबिभावयिषीत् यङ्सन्ण्यन्तात्सनि
बोभूयिषयिषति अबुबोभूयियिषीत्
अबोभूयिषयिषीत् यङ्णिक्सन्नन्ताण्णिगि
बोभूययिषयति अबुबोभूययिषत्
अबोभूययिषत्

इतिश्रीतपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंरक्षणप्रवण-विद्यापीठादि-प्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारा-न्तेवासिन्यायवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजयविरचि-तायां श्री हैमधातुमालायां

नामधातुप्रक्रिया कण्ड्वादिप्रत्ययमाला समाप्ता

## ॥ अथ भावकर्मप्रक्रिया. ॥

भू-सत्तायाम् ।

व० भूयते भूयेत भूयताम् अभूयत
अभावि बभूवे भाविषीष्ट भविषीष्ट
भाविता भविता भाविष्यते भविष्यते
अभाविष्यत अभविष्यत

अनुभू

व० अनुभूयते अनुभूयेते अनुभूयन्ते
अनुभूयसे अनुभूयेथे अनुभूयध्वे
अनुभूये अनुभूयावहे अनुभूयामहे
स० अनुभूयेत अनुभूयेयाताम् अनुभूयेरन्
अनुभूयेथाः अनुभूयेयाथाम् अनुभूयेध्वम्
अनुभूयेय अनुभूयेवहि अनुभूयेमहि
प० अनुभूयताम् अनुभूयेताम् अनुभूयन्ताम्
अनुभूयस्व अनुभूयेथाम् अनुभूयध्वम्
अनुभूयै अनुभूयावहै अनुभूयामहै
ह्य० अन्वभूयत अन्वभूयेताम् अन्वभूयन्त
अन्वभूयथाः अन्वभूयेथाम् अन्वभूयध्वम्
अन्वभूये अन्वभूयावहि अन्वभूयामहि
अन्वभावि अन्वभाविषाताम् अन्वभाविषत
अन्वभविषाताम् अन्वभविषत
अन्वभाविष्ठाः अन्वभाविषाथाम्
अन्वभाविढ्ढ्वम्-ध्वम्-ढ्ढ्वम्
अन्वभविष्ठाः अन्वभविषाथाम्
अन्वभविढ्ढ्वम्-ध्वम्-ढ्ढ्वम्
अन्वभाविषि अन्वभाविष्वहि अन्वभाविष्महि
अन्वभविषि अन्वभविष्वहि अन्वभविष्महि
प० अनुबभूवे अनुबभूवाते अनुबभूविरे
अनुबभूविषे अनुबभूवाथे अनुबभूविढ्वे-ध्वे
अनुबभूवे अनुबभूविवहे अनुबभूविमहे
आ० अनुभाविषीष्ट अनुभाविषीयास्ताम्
अनुभाविषीरन् अनुभाविषीष्ठाः
अनुभाविषीयास्थाम् अनुभाविषीढ्ढ्वम्
अनुभाविषीय अनुभाविषीवहि अनुभाविषीमहि

अनुभविषीष्ट अनुभविषीयास्ताम् अनुभविषीरन्
अनुभविषीष्ठाः अनुभविषीयास्थाम्
अनुभविषीढ्वम् अनुभविषीय
अनुभविषीवहि अनुभविषीमहि
श्व० अनुभाविता अनुभावितारौ अनुभावितारः
अनुभावितासे अनुभावितासाथे अनुभाविताध्वे
अनुभाविताहे अनुभावितास्वहे अनुभावितास्महे
अनुभविता अनुभवितारौ अनुभवितारः
अनुभवितासे अनुभवितासाथे अनुभविताध्वे
अनुभविताहे अनुभवितास्वहे अनुभवितास्महे
भ० अनुभाविष्यते अनुभाविष्येते
अनुभाविष्यन्ते अनुभाविष्यसे
अनुभाविष्येथे अनुभाविष्यध्वे
अनुभाविष्ये अनुभाविष्यावहे
अनुभाविष्यामहे अनुभविष्यते
अनुभविष्येते अनुभविष्यन्ते
अनुभविष्यसे अनुभविष्येथे
अनुभविष्यध्वे अनुभविष्ये
अनुभविष्यावहे अनुभविष्यामहे
क्रि० अन्वभाविष्यत अन्वभाविष्येताम्
अन्वभाविष्यन्त अन्वभाविष्यथाः
अन्वभाविष्येथाम् अन्वभाविष्यध्वम्
अन्वभाविष्ये अन्वभाविष्यावहि
अन्वभाविष्यामहि अन्वभविष्यत
अन्वभविष्येताम् अन्वभविष्यन्त
अन्वभविष्यथाः अन्वभविष्येथाम्
अन्वभविष्यध्वम् अन्वभविष्ये
अन्वभविष्यावहि अन्वभविष्यामहि

णिगन्त भू

व० भाव्यते भाव्येते भाव्यन्ते
भाव्यसे भाव्येथे भाव्यध्वे
भाव्ये भाव्यावहे भाव्यामहे
स० भाव्येत भाव्येयाताम् भाव्येरन्
भाव्येथाः भाव्येयाथाम् भाव्येध्वम्
भाव्येय भाव्येवहि भाव्येमहि

प० भाव्यताम् भाव्येताम् भाव्यन्ताम्
भाव्यस्व भाव्येथाम् भाव्यध्वम्
भाव्यै भाव्यावहै भाव्यामहै
ह्य० अभाव्यत अभाव्येताम् अभाव्यन्त
अभाव्यथाः अभाव्येथाम् अभाव्यध्वम्
अभाव्ये अभाव्यावहि अभाव्यामहि
अ० अभावि अभाविषाताम् अभाविषत
अभावयिषाताम अभावयिषत
अभाविष्ठाः अभाविषाथाम् अभाविढ्वम्-
अभावयिष्ठाः ध्वम्-ढ्वम्
अभावयिषाथाम अभावयिढ्वम-ध्वम-ढ्वम्
अभावयिषि अभाविष्वहि अभाविष्महि
अभाविषि अभावयिष्वहि अभावयिष्महि
प० भावयामासे भावयामासाते भावयामासिरे
भावयामासिषे भावयामासाथे भावयामासिध्वे
भावयामासे भावयामासिवहे भावयामासिमहे
भावयाम्बभूवे । भावयाञ्चक्रे
आ० भाविषीष्ट भाविषीयास्ताम भाविषीरन्
भाविषीष्ठाः भाविषीयास्थाम भाविषी
ढ्वम् ध्वम्
भाविषीय भाविषीवहि भाविषीमहि
भावयिषीष्ट भावयिषीयास्ताम्
भावयिषीरन् भावयिषीष्ठाः
भावयिषीयास्थाम भावयिषीढ्वम् ध्वम्
भावयिषीय भावयिषीवहि भावयिषीमहि
श्व० भाविता भावितारौ भावितारः
भावितासे भावितासाथे भाविताध्वे
भाविताहे भावितास्वहे भावितास्महे
भावयिता भावयितारौ भावयितारः
भावयितासे भावयितासाथे भावयिताध्वे
भावयिताहे भावयितास्वहे भावयितास्महे
भ० भाविष्यते भाविष्येते भाविष्यन्ते
भाविष्यसे भाविष्येथे भाविष्यध्वे
भाविष्ये भाविष्यावहे भाविष्यामहे
भावयिष्यते भावयिष्येते भावयिष्यन्ते
भावयिष्यसे भावयिष्येथे भावयिष्यध्वे
भावयिष्ये भावयिष्यावहे भावयिष्यामहे
क्रि० अभाविष्यत अभाविष्येताम् अभाविष्यन्त
अभाविष्यथाः अभाविष्येथाम् अभाविष्यध्वम्
अभाविष्ये अभाविष्यावहि अभाविष्यामहि
अभावयिष्यत अभावयिष्येताम् अभावयिष्यन्त
अभावयिष्यथाः अभावयिष्येथाम्
अभावयिष्यध्वम् अभावयिष्ये
अभावयिष्यावहि अभावयिष्यामहि

सन्नन्त—भू

बुभूष्यते बुभूष्येत बुभूष्यताम् अबुभूष्यत
अबुभूषि बुभूषाञ्चक्रे बुभूषिषीष्ट
बुभूषिता बुभूषिष्यते अबुभूषिष्यत

यङन्त—भू

बोभूय्यते बोभूय्येत बोभूय्यताम्
अबोभूय्यत अबोभूयि बोभूयाञ्चक्रे
बोभूयिषीष्ट बोभूयिता बोभूयिष्यते अबोभूयिष्यत

यङ्लुबन्त—भू

व० बोभूयते बोभूयेत बोभूयताम अबोभूयत
अबोभावि बोभवाञ्चक्रे बोभाविषीष्ट
बोभविषीष्ट बोभाविता बोभविता बोभाविष्यते
बोभविष्यते अबोभाविष्यत अबोभविष्यत

स्तु—स्तुतौ

व० स्तूयते स्तूयेते स्तूयन्ते
स स्तूयेत स्तूयेयाताम् स्तूयेरन्
प० स्तूयताम् स्तूयेताम् स्तूयन्ताम्
ह्य० अस्तूयत अस्तूयेताम् अस्तूयन्त
अ० अस्तावि अस्ताविषाताम् अस्ताविषत
अस्तोषाताम् अस्तोषत
अस्ताविष्ठाः अस्ताविषाथाम् अस्तावि-
ढ्वम ध्वम् ढ्ढ्वम्
अस्तोष्ठाः अस्तोषाथाम् अस्तोढ्ढ्वम् ढ्वम
अस्ताविषि अस्ताविष्वहि अस्ताविष्महि
अस्तोषि अस्तोष्वहि अस्तोष्महि

प० तुष्टुवे तुष्टुवाते तुष्टुविरे
तुष्टुषे तुष्टुवाथे तुष्टुढ्वे
तुष्टुवे तुष्टुवहे तुष्टुमहे
आ० स्ताविषीष्ट स्ताविषीयास्ताम् स्ताविषीरन्
स्तुषीष्ट स्तुषीयास्ताम् स्तुषीरन्
श्व० स्ताविता स्तावितारौ स्तावितारः
स्तोता स्तोतारौ स्तोतारः
भ० स्ताविष्यते स्ताविष्येते स्ताविष्यन्ते
स्तोष्यते स्तोष्येते स्तोष्यन्ते
क्रि० अस्ताविष्यत अस्ताविष्येताम् अस्ताविष्यन्त
अस्तोष्यत अस्तोष्येताम् अस्तोष्यन्त

ऋ--प्रापणे

अर्यते अर्येत अर्यताम् आर्यत
अ० आरि आरिषाताम् आरिषत आर्षाताम्
आर्षत आरिष्ठाः आरिषाथाम् आरिढ्वम्
ध्वम् ड्ढ्वम्
आर्ष्ठाः आर्षाथाम् आर्ढ्वम् ड्ढ्वम्
आरिषि आरिष्वहि आरिष्महि
आर्षि आर्ष्वहि आर्ष्महि
आरे आरिषीष्ट ऋषीष्ट
आरिता अर्ता आरिष्यते
अरिष्यते आरिष्यत आरिष्यत
स्मर्यते स्मर्येत स्मर्यताम् अस्मर्यत
अ० अस्मारि अस्मारिषाताम् अस्मारिषत
अस्मृषाताम् अस्मृषत
अस्मारिष्ठाः अस्मारिषाथाम् अस्मारि-
ढ्वम् ध्वम् ड्ढ्वम्
अस्मृष्ठाः अस्मृषाथाम् अस्मृढ्वम् ड्ढ्वम्
अस्मारिषि अस्मारिष्वहि अस्मारिष्महि
अस्मृषि अस्मृष्वहि अस्मृष्महि
सस्मरे स्मारिषीष्ट स्मृषीष्ट
स्मारिता स्मर्ता स्मारिष्यते
स्मरिष्यते अस्मारिष्यत अस्मरिष्यत

दा

व० दीयते दीयेते दीयन्ते
दीयसे दीयेथे दीयध्वे
दीये दीयावहे दीयामहे
स० दीयेत दीयेयाताम् दीयेरन्
दीयेथाः दीयेयाथाम् दीयेध्वम्
दीयेय दीयेवहि दीयेमहि
प० दीयताम् दीयेताम् दीयन्ताम्
दीयस्व दीयेथाम् दीयध्वम्
दीयै दीयावहै दीयामहै
ह्य० अदीयत अदीयेताम् अदीयन्त
अदीयथाः अदीयेथाम् अदीयध्वम्
अदीये अदीयावहि अदीयामहि
अ० अदायि अदायिषाताम् अदायिषत
अदिषाताम् अदिषत
अदायिष्ठाः अदायिषाथाम् अदायिढ्ढ्वम्
अदिथाः अदिषाथाम् अदिढ्वम् ड्ढ्वम्
अदायिषि अदायिष्वहि अदायिष्महि
अदिषि अदिष्वहि अदिष्मति
प० ददे ददाते ददिरे
ददिषे ददाथे ददिध्वे
ददे ददिवहे ददिमहे
आ० दायिषीष्ट दायिषीयास्ताम् दायिषीरन्
दायिषीष्ठाः दायिषीयास्थाम् दायिषीढ्वम् ध्वम्
दायिषीय दायिषीवहि दायिषीमहि
दासीष्ट दासीयास्ताम् दासीरन्
दासीष्ठाः दासीयास्थाम् दासीध्वम्
दासीय दासीवहि दासीमहि
श्व० दायिता दायितारौ दायितारः
दायितासे दायितासाथे दायिताध्वे
दायिताहे दायितास्वहे दायितास्महे
दाता दातारौ दातारः
दातासे दातासाथे दाताध्वे
दाताहे दातास्वहे दातास्महे
भ० दायिष्यते दायिष्येते दायिष्यन्ते

दायिष्यसे दायिष्येथे दायिष्यध्वे
दायिष्ये दायिष्यावहे दायिष्यामहे
दास्यते दास्येते दास्यन्ते
दास्यसे दास्येथे दास्यध्वे
दास्ये दास्यावहे दास्यामहे
क्रि० अदायिष्यत अदायिष्येताम् अदायिष्यन्त
अदायिष्यथाः अदायिष्येथाम् अदायिष्यध्वम्
अदायिष्ये अदायिष्यावहि अदायिष्यामहि
अदास्यत अदास्येताम् अदास्यन्त
अदास्यथाः अदास्येथाम् अदास्यध्वम्
अदास्ये अदास्यावहि अदास्यामहि

धा

धीयते धीयेत धीयताम् अधीयत
अ० अधायि अधायिषाताम् अधायिषत
अधिषाताम् अधिषत
अधायिष्ठाः अधायिषाथाम् अधायिढ्वम्
ध्वम्-इढ्वम्
अधिथाः अधिषाथाम् अधिढ्वम्-इढ्वम्
अधायिषि अधायिष्वहि अधायिष्महि
अधिषि अधिष्वहि अधिष्महि
दधे । धायिषीष्ट । धासीष्ट । धायिता ।
धाता । धायिष्यते । धास्यते ।
अधायिष्यत । अधास्यत ।

ष्ठां

स्थीयते स्थीयेत स्थीयताम् अस्थीयत
अस्थायि तस्थे स्थायिषीष्ट स्थासीष्ट
स्थायिता स्थाता स्थायिष्यते स्थास्यते
अस्थायिष्यत अस्थास्यत

ग्लैं

ग्लायते ग्लायेत ग्लायताम् अग्लायत अग्लायि
जग्ले ग्लायिषीष्ट ग्लासीष्ट ग्लायिता ग्लाता
ग्लायिष्यते ग्लास्यते अग्लायिष्यत अग्लास्यत

शीङ्क्

शय्यते शय्येत शय्यताम् अशय्यत
अशायि शिश्ये शायिषीष्ट शयिषीष्ट
शायिता शयिता शायिष्यते शयिष्यते
अशायिष्यत अशयिष्यत

हनक्

हन्यते । हन्येत । हन्यताम् । अहन्यत
अ० अघानि अघानिषाताम् अघानिषत
अवधि अवधिषाताम् अवधिषत
अहसाताम् अहसत
अघानिष्ठाः अघानिषाथाम् अघानिध्वम् इढ्वम्
अवधिष्ठाः अवधिषाथाम् अवधिध्वम्इढ्वम्
अहसाथाम् अहढ्वम्-ध्वम्
अघानिषि अघानिष्वहि अघानिष्महि
अवधिषि अवधिष्वहि अवधिष्महि
अहस्वहि अहस्महि
जघ्ने । घानिषीष्ट । वधिषीष्ट ।
घानिता । हन्ता । घानिष्यते ।
हनिष्यते । अघानिष्यत । अहनिष्यत

ग्रहीश्

गृह्यते । गृह्येत । गृह्यताम् । अगृह्यत ।
अ० अग्राहि अग्राहिषाताम् अग्राहिषत
अग्रहीषाताम् अग्रहीषत
अग्राहिष्ठाः अग्राहिषाथाम् अग्राहिइढ्वम्
ध्वम्-ढ्वम्
अग्रहीष्ठाः अग्रहीषाथाम् अग्रहीढ्वम्
अग्राहिषि अग्राहिष्वहि अग्राहिष्महि
अग्रहीषि अग्रहीष्वहि अग्रहीष्महि
जगृहे । ग्राहिषीष्ट । ग्रहीषीष्ट ।
ग्राहिता । ग्रहीता । ग्राहिष्यते ।
ग्रहीष्यते । अग्राहिष्यत । अग्रहीष्यत ।

दृशृ

दृश्यते । दृश्येते । दृश्यताम् । अदृश्यत
अ० अदर्शि अदर्शिषाताम् अदर्शित
अदृक्षाताम् अदृक्षत
अदर्शिष्ठाः अदर्शिषाथाम्अदर्शिध्वम्-इढ्वम्
अदृक्षाथाम् अदृक्षध्वम्

अदर्शिषि अदर्शिष्वहि अदर्शिष्महि
अदृक्षि अदृक्ष्वहि अदृक्ष्महि

ददृशे । दर्शिषीष्ट । दृक्षीष्ट । दर्शिता । द्रष्टा । दर्शिष्यते । द्रक्ष्यते । अदर्शिष्यत । अद्रक्ष्यत ।

गॄ

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | गीर्यते | गीर्येते | गीर्यन्ते |
| | गीर्यसे | गीर्येथे | गीर्यध्वे |
| | गीर्ये | गीर्यावहे | गीर्यामहे |
| स० | गीर्येत | गीर्येयाताम् | गीर्येरन् |
| | गीर्येथाः | गीर्येयाथाम् | गीर्येध्वम् |
| | गीर्येय | गीर्येवहि | गीर्येमहि |
| प० | गीर्यताम् | गीर्येताम् | गीर्यन्ताम् |
| | गीर्यस्व | गीर्येथाम् | गीर्यध्वम् |
| | गीर्यै | गीर्यावहै | गीर्यामहै |
| ह्य० | अगीर्यत | अगीर्येताम् | अगीर्यन्त |
| | अगीर्यथाः | अगीर्येथाम् | अगीर्यध्वम् |
| | अगीर्ये | अगीर्यावहि | अगीर्यामहि |
| अ० | अगारि | अगारिषाताम् | अगारिषत |
| | | अगालिषाताम् | अगालिषत |
| | | अगरिषाताम् | अगरिषत |
| | | अगलिषाताम् | अगलिषत |
| | | अगरीषाताम् | अगरीषत |
| | | अगलीषाताम् | अगलीषत |
| | | अगीर्षाताम् | अगीर्षत |

अ० अगारिष्ठाः अगारिषाथाम् अगारिढ्वम्
ध्वम्-ड्ढ्वम्
अगालिष्ठाः अगालिषाथाम् अगालिढ्वम्
ध्वम्-ड्ढ्वम्
अगरिष्ठाः अगरिषाथाम् अगरिढ्वम्
ध्वम्-ड्ढ्वम्
अगलिष्ठाः अगलिषाथाम् अगलिढ्वम्
ध्वम्-ड्ढ्वम्
अगरीष्ठाः अगरीषाथाम् अगरीढ्वम्
ध्वम्-ड्ढ्वम्
अगलीष्ठाः अगलीषाथाम् अगलीढ्वम्
ध्वम्-ड्ढ्वम्
अगीर्ष्ठाः अगीर्षाथाम् अगीर्ढ्वम् ढ्वम्

अगारिषि अगारिष्वहि अगारिष्महि
अगालिषि अगालिष्वहि अगालिष्महि
अगरिषि अगरिष्वहि अगरिष्महि
अगलिषि अगलिष्वहि अगलिष्महि
अगरीषि अगरीष्वहि अगरीष्महि
अगलीषि अगलीष्वहि अगलीष्महि
अगीर्षि अगीर्ष्वहि अगीर्ष्महि

| | | | |
|---|---|---|---|
| प० | जगरे | जगराते | जगरिरे |
| | जगरिषे | जगराथे | जगरिढ्वे-ध्वे |
| | जगरे | जगरिवहे | जगरिमहे |
| | जगले | जगलाते | जगलिरे |
| | जगलिषे | जगलाथे | जगलिढ्वे-ध्वे |
| | जगले | जगलिवहे | जगलिमहे |

आ० गारिषीष्ट गारिषीयास्ताम् गारिषीरन्
गारिषीष्ठाः गारिषीयास्थाम् गारिषीढ्वम्-ध्वम्
गारिषीय गारिषीवहि गारिषीमहि
गीर्षीष्ट गीर्षीयास्ताम् गीर्षीरन्
गीर्षीष्ठाः गीर्षीयास्थाम् गीर्षीध्वम्
गीर्षीय गीर्षीवहि गीर्षीमहि
गालिषीष्ट गालिषीयास्ताम् गालिषीरन्
गालिषीष्ठाः गालिषीयास्थाम् गालिषीढ्वम्-ध्वम्
गालिषीय गालिषीवहि गालिषीमहि
गरिषीष्ट गरिषीयास्ताम् गरिषीरन्
गरिषीष्ठाः गरिषीयास्थाम् गरिषीढ्वम्-ध्वम्
गरिषीय गरिषीवहि गरिषीमहि
गलिषीष्ट गलिषीयास्ताम् गलिषीरन्
गलिषीष्ठाः गलिषीयास्थाम् गलिषीढ्वम्-ध्वम्
गलिषीय गलिषीवहि गलिषीमहि

श्व० गारिता गारितारौ गारितारः

गारितासे गारितासाथे गारिताध्वे
गारिताहे गारितास्वहे गारितास्महे
गालिता गालितारौ गालितारः
गालितासे गालितासाथे गालिताध्वे
गालिताहे गालितास्वहे गालितास्महे
गरिता गरितारौ गरितारः
गरितासे गरितासाथे गरिताध्वे
गरिताहे गरितास्वहे गरितास्महे
गलिता गलितारौ गलितारः
गलितासे गलितासाथे गलिताध्वे
गलिताहे गलितास्वहे गलितास्महे
गरीता गरीतारौ गरीतारः
गरीतासे गरीतासाथे गरीताध्वे
गरीताहे गरीतास्वहे गरीतास्महे
गलीता गलीतारौ गलीतारः
गलीतासे गलीतासाथे गलीताध्वे
गलीताहे गलीतास्वहे गलीतास्महे
भ० गारिष्यते गारिष्येते गारिष्यन्ते
गारिष्यसे गारिष्येथे गारिष्यध्वे
गारिष्ये गारिष्यावहे गारिष्यामहे
गालिष्यते गालिष्येते गालिष्यन्ते
गालिष्यसे गालिष्येथे गालिष्यध्वे
गालिष्ये गालिष्यावहे गालिष्यामहे
गरिष्यते गरिष्येते गरिष्यन्ते
गरिष्यसे गरिष्येथे गरिष्यध्वे
गरिष्ये गरिष्यावहे गरिष्यामहे
गलिष्यते गलिष्येते गलिष्यन्ते
गलिष्यसे गलिष्येथे गलिष्यध्वे
गलिष्ये गलिष्यावहे गलिष्यामहे
गरीष्यते गरीष्येते गरीष्यन्ते
गरीष्यसे गरीष्येथे गरीष्यध्वे
गरीष्ये गरीष्यावहे गरीष्यामहे
गलीष्यते गलीष्येते गलीष्यन्ते
गलीष्यसे गलीष्येथे गलीष्यध्वे
गलीष्ये गलीष्यावहे गलीष्यामहे

क्रि० अगारिष्यत अगारिष्येताम् अगारिष्यन्त
अगारिष्यथाः अगारिष्येथाम् अगारिष्यध्वम्
अगारिष्ये अगारिष्यावहि अगारिष्यामहि
अगालिष्यत अगालिष्येताम् अगालिष्यन्त
अगालिष्यथाः अगालिष्येथाम् अगालिष्यध्वम्
अगालिष्ये अगालिष्यावहि अगालिष्यामहि
अगरिष्यत अगरिष्येताम् अगरिष्यन्त
अगरिष्यथाः अगरिष्येथाम् अगरिष्यध्वम्
अगरिष्ये अगरिष्यावहि अगरिष्यामहि
अगलिष्यत अगलिष्येताम् अगलिष्यन्त
अगलिष्यथाः अगलिष्येथाम् अगलिष्यध्वम्
अगलिष्ये अगलिष्यावहि अगलिष्यामहि
अगरीष्यत अगरीष्येताम् अगरीष्यन्त
अगरीष्यथाः अगरीष्येथाम् अगरीष्यध्वम्
अगरीष्ये अगरीष्यावहि अगरीष्यामहि
अगलीष्यत अगलीष्येताम् अगलीष्यन्त
अगलीष्यथाः अगलीष्येथाम् अगलीष्यध्वम्
अगलीष्ये अगलीष्यावहि अगलीष्यामहि

तनूयि

तायते । तन्यते । तायेत । तन्येत ।
तायताम् । तन्यताम् । अतायत । अतन्यत
अ० अतानि अतनिषाताम् अतनिषत
अतनिष्ठाः अतथाः अतनिषाथाम्
अतनिड्ढ्वम् ध्वम्
अतनिषि अतनिष्वहि अतनिष्महि
तेने । तनिषीष्ट । तनिता । तनिष्यते ।
अतनिष्यत ।

णिगन्त घटि,

घट्यते । घट्येत । घट्यताम् । अघट्यत
अ० अघाटि अघटि अघाटिषाताम् अघाटिषत
अघटिषाताम् अघटिषत
अघटयिषाताम् अघटयिषत
अघाटि अघाटिषाथाम् अघाटिड्ढ्वम्-ध्वम्
अघटिष्ठाः अघटिषाथाम् अघटिड्ढ्वम्-ध्वम्
अघटयिष्ठाः अघटयिषाथाम् अघटयिड्ढ्वम्

ध्वम्—ढ्वम्
अघाटिषि अघाटिष्वहि अघाटिष्महि
अघटिषि अघटिष्वहि अघटिष्महि
अघटयिषि अघटयिष्वहि अघटयिष्महि
घटयाञ्चक्रे । घटयामास । घटयाम्बभूव ।
घाटिषीष्ट । घटिषीष्ट । घटयिषीष्ट ।
घाटिता । घटिता । घटयिता ।
घाटिष्यते । घटिष्यते । घटयिष्यते ।
अघाटिष्यत । अघटिष्यत । अघटयिष्यत

शम्

शम्यते । शम्येत । शम्यताम् । अशम्यत
अशमि । अशमिष्ठाः । अशमिषि ।
शेमे । शमिषीष्ट । शमिता । शमिष्यते
। अशमिष्यत ।

णिचि

शम्यते । शम्येत । शम्यताम् । अशम्यत
अशामि अशमि अशामिषाताम् अशामिषत
अशमिषाताम् । अशमिषत
अशमयिषाताम् । अशमयिषत
अशामिष्ठाः अशामिषाथाम् अशामि-
ढ्वम्-ध्वम्
अशमिष्ठाः अशमिषाथाम् अशमि—
ढ्वम्-ध्वम्
अशमयिष्ठाः अशमयिषाथाम अशमयि-
ढ्वम-ढ्वम-ध्वम
अशामिषि अशामिष्वहि अशामिष्महि
अशमिषि अशमिष्वहि अशमिष्महि
अशमयिषि अशमयिष्वहि अशमयिष्महि
शमयामासे । शामिषीष्ट । शमिषीष्ट
शमयिषीष्ट । शामिता । शमिता ।
शमयिता । शामिष्यते । शमिष्यते ।
शमयिष्यते । अशामिष्यत । अशमिष्यत
अशमयिष्यत ।

यङन्ताद्–यङ्लुगन्ताच्च णिचि
शंशम्यते । शंशम्येत । शंशम्यताम् ।
अशंशम्यत ।
अशंशामि अशंशमि अशंशामिषाताम्
अशंशामिषत
अशंशमिषाताम् अशंशमिषत
अशंशमयिषाताम् अशंशमयिषत
अशंशामिष्ठाः अशंशामिषथाम् अशंशामि-
ढ्वम्-ध्वम्
अशंशमिष्ठाः अशंशमिषाथाम् अशंशमि-
ढ्वम्-ध्वम्
अशंशमयिष्ठाः अशंशमयिषाथाम् अशंशमयि-
ढ्वम्-ढ्वम्-ध्वम्
अशंशामिषि अशंशामिष्वहि अशंशामिष्महि
अशंशमिषि अशंशमिष्वहि अशंशमिष्महि
अशंशमयिषि अशंशमयिष्वहि अशंशमयिष्महि
शंशमयाञ्चक्रे । शंशमयिषीष्ट ।
शंशामिषीष्ट । शंशमिषीष्ट ।
। शंशामिता । शंशमिता ।
शंशमयिता । शंशामिष्यते । शंशमिष्यते
शंशमयिष्यते । अशंशामिष्यत ।
अशंशमिष्यत । अशंशमयिष्यत ।
भष्यमतेतु दीर्घो नास्तीति विशेषः

गम्लृ

गम्यते । गम्येत । गम्यताम् । अगम्यत
अ० अगामि अगंसाताम अगंसत
अगंस्थाः अगंसाथाम् अगंध्वम्-ढ्ध्वम्
अगंसि अगंस्वहि अगंस्महि
प० जग्मे जग्माते जग्मिरे
जग्मिषे जग्माथे जग्मिध्वे
जग्मे जग्मिवहे जग्मिमहे
आ० गंसीष्ट । गन्ता । गंस्यते । अगंस्यत ।

यम

यम्यते । यम्येत । यम्यताम् । अयम्यत
अयामि अयंसाताम अयंसत
अयंस्थाः अयंसाथाम् अयंध्वम्-ढ्ध्वम्
अयंसि अयंस्वहि अयंस्महि
येमे । यंसीष्ट । यन्ता । यंस्यते ।
अयंस्यत ।

रमि

रम्यते रम्येत रम्यताम् अरम्यत अरामि अरंस्थाः । अरंसि रेमे रंसीष्ट रन्ता रंस्यते अरंस्यत

नम

नम्यते । नम्येत । नम्यताम् । अनम्यत अनामि । अनंस्थाः । अनंसि । नेमे । नंसीष्ट । नंसीयास्ताम् नंसीरन् नन्ता नंस्यते । अनंस्यत ।

कम

काम्यते । कम्यते । काम्येत । कम्येत काम्यताम् । कम्यताम् । अकाम्यत । अकम्यत ।

अ० अकामि अकामिषाताम् अकामिषत
अकमिषाताम् अकमिषत
अकामयिषाताम् अकामयिषत
अकमिष्ठाः अकमिषाथाम् अकमिड्ढ्वम् ध्वम्
अकामिष्ठाः अकामिषाथाम् अकामिड्ढ्वम् ध्वम्
अकामयिष्ठाः अकामयिषाथाम् अकामयि-ड्ढ्वम्-ढ्वम् ध्वम्
अकमिषि अकमिष्वहि अकमिष्महि
अकामिषि अकामिष्वहि अकामिष्महि
अकामयिषि अकामयिष्वहि अकामयिष्महि

चकमे । कामयामासे । कमिषीष्ट । कामिषीष्ट । कामयिषीष्ट । कमिता । कामिता । कामयिता । कमिष्यते । कामिष्यते । कामयिष्यते । अकमिष्यत अकामिष्यत । अकामयिष्यत ।

वम

वम्यते । वम्येत । वम्यताम् । अवम्यत
अ० अवामि अवमिषाताम् अवमिषत
अवमिष्ठाः अवमिषाथाम् अवमिड्ढ्वम्-ध्वम्
अवमिषि अवमिष्वहि अवमिष्महि
ववमे । वमिषीष्ट । वमिता । वमिष्यते । अवमिष्यत ।

आचम

आचम्यते । आचम्येत । आचम्यताम् । आचम्यत ।

अ० आचामि आचमिषाताम् आचमिषत
आचमिष्ठाः आचमिषाथाम् आचमिड्-ढ्वम्-ध्वम्
आचमिषि आचमिष्वहि आचमिष्महि
आचेमे । आचमिषीष्ट । आचमिता । आचमिष्यते । आचमिष्यत ।

विश्रम

विश्रम्यते विश्रम्येत विश्रम्यताम् व्यश्रम्यत व्यश्रामि मतान्तरे व्यश्रमीति रूकमेव व्यश्रमि शश्रमे श्रमिषीष्ट श्रमिता श्रमिष्यते अश्रमिष्यत

भञ्ज

भज्यते । भज्येत । भज्यताम् । अभज्यत
अ० अभञ्जि अभाजि अभङ्क्षाताम् अभङ्क्षत
अभङ्क्थाः अभङ्क्षाथाम् अभङ्ग्-ढ्वम्-ग्ध्वम्
अभङ्क्षि अभङ्क्ष्वहि अभङ्क्ष्महि
बभञ्जे । भङ्क्षीष्ट । भङ्क्ता । भङ्क्ष्यते । अभङ्क्ष्यत ।

लभ

| | | | |
|---|---|---|---|
| व० | लभ्यते | लभ्येते | लभ्यन्ते |
| | लभ्यसे | लभ्येथे | लभ्यध्वे |
| | लभ्ये | लभ्यावहे | लभ्यामहे |
| स० | लभ्येत | लभ्येयाताम् | लभ्येरन् |
| | लभ्येथाः | लभ्येयाथाम् | लभ्येध्वम् |
| | लभ्येय | लभ्येवहि | लभ्येमहि |
| प० | लभ्यताम् | लभ्येताम् | लभ्यन्ताम् |
| | लभ्यस्व | लभ्येथाम् | लभ्यध्वम् |
| | लभ्यै | लभ्यावहै | लभ्यामहै |
| ह्य० | अलभ्यत | अलभ्येताम् | अलभ्यन्त |
| | अलभ्यथाः | अलभ्येथाम् | अलभ्यध्वम् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | अलभ्ये | अलभ्यावहि | अलभ्यामहि |
| अ० | अलाभि अलम्भि | अलप्साताम् | अलप्सत |
| | अलब्धाः | अलप्साथाम् | अलब्ध्वम् अलब्द्ध्वम् |
| | अलप्सि | अलप्स्वहि | अलप्स्महि |
| अ० | लेभे | लेभाते | लेभिरे |
| | लेभिषे | लेभाथे | लेभिध्वे |
| | लेभे | लेभिवहे | लेभिमहे |
| आ० | लप्सीष्ट | लप्सीयास्ताम् | लप्सीरन् |
| | लप्सीष्ठाः | लप्सीयास्थाम् | लप्सीध्वम् |
| | लप्सीय | लप्सीवहि | लप्सीमहि |
| श्व० | लब्धा | लब्धारौ | लब्धारः |
| | लब्धासे | लब्धासाथे | लब्धाध्वे |
| | लब्धाहे | लब्धास्वहे | लब्धास्महे |
| भ० | लप्स्यते | लप्स्येते | लप्स्यन्ते |
| | लप्स्यसे | लप्स्येथे | लप्स्यध्वे |
| | लप्स्ये | लप्स्यावहे | लप्स्यामहे |
| क्रि० | अलप्स्यत | अलप्स्येताम् | अलप्स्यन्त |
| | अलप्स्यथाः | अलप्स्येथाम् | अलप्स्यध्वम् |
| | अलप्स्ये | अलप्स्यावहि | अलप्स्यामहि |

ष्टा—स्थीयते अस्थायि
शुच—शुच्यते अशोचि
वाछु—वाञ्छ्यते अवाञ्छि
त्यजं—त्यज्यते अत्याजि
षञ्जं—सज्यते असञ्जि
क्रीड्—क्रीड्यते अक्रीडि
चुबु—चुम्ब्यते अचुम्बि
ष्मिङ्—स्मीयते अस्मायि
त्रैङ्—त्रायते अत्रायि
टुवेपृङ्—वेप्यते अवेपि
गाहौङ्—गाह्यते अगाहि
दीक्षि—दीक्ष्यते अदीक्षि
राजृग्—राज्यते अराजि

स्रंसूङ्—स्रस्यते अस्रंसि
षद्लृं—सद्यते असादि
वेंग्—ऊयते अवायि
वद—उद्यते अवादि
वहीं—उह्यते अवाहि
अदं—अद्यते अघासि
भांक्—भायते अभायि
इंक्—अधीयते अध्यगायि
टुक्षु—क्षूयते अक्षावि
रुदृंक्—रुद्यते अरोदि
ञिष्वपंक्—सुप्यते अस्वापि
श्वसक्—श्वस्यते अश्वासि
दरिद्राक्—दरिद्र्यते अदरिद्रि
अदरिद्रायि
जागृक्—जागर्यते अजागारि
चकासृक्—चकास्यते अचकासि
शासूक्—शिष्यते अशासि
मृजौक्—मृज्यते अमार्जि
विदक्—विद्यते अवेदि
दुहींक्—दुह्यते अदोहि
ओहांक्—हीयते अहायि
हांक्—हीयते अहायि
णिजूंकी—निज्यते अनेजि
दिवूच्—दीव्यते अदेवि
नृतैच्—नृत्यते अनर्ति
त्रसैच्—त्रस्यते अत्रासि
क्रुधंच्—क्रुध्यते अक्रोधि
नशौच्—नश्यते अनाशि
मुहौच्—मुह्यते अमोहि
दूङ्च्—दूयते अदावि
दीङ्च्—दीयते अदायि
प्रीङ्च्—प्रीयते अप्रायि
युधिंच्—युध्यते अयोधि
षुगृट्—सूयते असावि

| | |
|---|---|
| हिंट्—हीयते | अहायि |
| आप्लृंट्—आप्यते | आपि |
| तुदींत्—तुद्यते | अतोदि |
| मुच्लृंत्—मुच्यते | अमोचि |
| ओव्रश्चौत्—वृश्च्यते | अव्रश्चि |
| प्रछंत्—पृच्छ्यते | अप्रच्छि |
| टुमस्जोंत्—मज्ज्यते | अमज्जि |
| कुटत्—कुट्यते | अकोटि |
| रुधूंपी—रुध्यते | अरोधि |
| युजूंपी—युज्यते | अयोजि |
| पिष्लृंप्—पिष्यते | अपेषि |
| इन्धैपि—इध्यते | ऐन्धि |
| षणूयी—सायते-सन्यते | असानि |
| मनूयि—मन्यते | अमानि |
| डुक्रींग्श्—क्रीयते | अक्रायि |
| ज्यांश्—जीयते | अज्यायि |
| बन्धंश्—बध्यते | अबन्धि |
| क्षुभश्—क्षुभ्यते | अक्षोभि |
| अशश्—अश्यते | आशि |
| चुरण्—चोर्यते | अचोरि |
| भक्षण्—भक्ष्यते | अभक्षि |
| महण्—मह्यते | अमहि |
| स्पृहण्—स्पृह्यते | अस्पृहि |
| मार्गण्—मार्ग्यते | अमार्गि |
| ईरण्—ईर्यते | ऐरि |
| कण्डूग्—कण्डूय्यते | अकण्डूयि |

इतिश्री तपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण तीर्थसंर-
क्षणप्रवणविद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टा-
रकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्या-
यवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्य-
मुनिगुणविजयविरचितायां हैमधातुमालायां

## ॥ भावकर्मप्रक्रिया ॥

# उपसर्गवृत्ति—

नाम

## प्राद्युपसर्गार्थोदाहरणसंग्रहः

प्रपरापसमन्ववनिर्दुरभि—व्यधिसूदतिनिप्रतिपर्यपयः ।
उप आङिति विंशति(१)रेष सखे, उपसर्गगणः कथितः कविना ॥१॥

प्र आदिकर्मोदीर्णभृशैश्वर्यसंभववियोगनियोगतृप्तिशुद्धीच्छाशक्तिशान्तिपूजाग्रदर्शनेषु । प्र इत्ययमुपसर्ग एतेष्वर्थेषु वर्तते । आदिकर्मणि प्रयातः । उदीर्णे प्रवरो राजा । प्रबला मूषिका वा । भृशार्थे प्रवदन्ति शब्दान् । ऐश्वर्ये प्रभुर्देवदत्तस्य । सम्भवे हिमवतो गङ्गा प्रभवति । वियोगे प्रोषितः । नियोगे प्रयुक्तः । तृप्तौ प्रभुक्तमन्नम् । शुद्धौ प्रसन्नमुदकम् । इच्छायां प्रार्थयेत् कन्याम् । शक्तौ प्रचण्डो राजा । प्रशक्तो विद्यायां वा । शान्तौ प्रशान्तोऽग्निः । पूजायां प्राञ्जलिः स्थितः । अग्रे प्रवालो वृक्षस्य । दर्शने प्रविलोकयति ॥ १ ॥

परा वध्यमर्पणगतिविक्रमाभिमुख्यभृशार्थाप्राधान्यविमोक्षविक्षेपप्रातिलोम्येषु । परा इत्ययमुपसर्ग एतेष्वेकादशस्वर्थेषु वर्तते । वध्ये पराघातं । मर्षणे परामृष्टः । गतौ परागतः । विक्रमे पराक्रान्तः । आभिमुख्ये परावृत्तः । भृशार्थे पराजितः । अप्राधान्ये पराधीनः । विमोक्षे पराहतः ।[२]प्रातिलोम्ये पराङ्मुखः ॥२॥

अप वर्जनवियोगचौर्यहर्षनिर्देशविक्रियावारणविपर्ययेषु । एतेष्वष्टस्वर्थेषु वर्तते । वर्ज्जने अपगता वृतिः । वियोगे अपयाति । चौर्ये अपहरति । हर्षे अपहसति । निर्देशे अपदिशति । विक्रियायां अपकृतम् । वारणे अपसरति पापात् । विपर्यये अपवादः ॥ ३ ॥

सम् संयोगैक्यविप्रयोगप्रभवसत्यसमक्षसमन्ततोभावप्रेक्षणविभूषणाभिमुख्यश्लेषकार्यसिद्धिक्रोधस्वीकरणेषु । सम् एतेषु पञ्चदशस्वर्थेषु वर्तते । संयोगे संयुतः पुत्रेण । ऐक्ये संप्रवदन्ति मुख्याः । विप्रयोगे वियुक्तः प्रियेण । प्रभवे सम्भवत्यग्निः काष्ठेषु । सत्ये संमतः । (३) समंततोभावे सङ्कीर्णम् । प्रेक्षणे समीक्षितः । विभूषणे संस्कृता कन्या । आभिमुख्ये संमुखाः । श्लेषे संघातः । कार्यसंसिद्धौ संसिद्धिः । क्रोधे संक्रुद्धः । स्वीकरणे संगृह्णाति ॥ ४ ॥

---

(१) प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निर्, दुर्, अभि, वि अधि, सु, उत्, अति, नि, प्रति, परि, अपि, उप, आङ्, इति विंशतिः ॥

(२ अत्र विक्षेपोदाहरणं पुस्तके नास्ति

(३) संख्या वर्तते इत्यत्राधिकः पाठः पुस्तके दृश्यते ।

(२) अनुज्ञातो गच्छति इत्यत्राधिकः पाठः पुस्तके दृश्यते ।

अनु पश्चाद्भावाधिष्ठानसामीप्यस्वाध्यायानुबन्धविसर्गसादृश्याभिमुख्यलक्षणहीनेषु। अनु इत्ययमुपसर्ग एतेषु नवस्वर्थेषु वर्तते। पश्चाद्भावेऽनुरथम्। अधिष्ठाने अनुशोणं पाटलिपुत्रम्। सामीप्ये अनुवचनं गमनम्(२)। स्वाध्याये अनुवाक्यमधीते। अनुबन्धे अनुशयः। विसर्गे अनुगच्छति। सादृश्ये अनुकृतिः। आभिमुख्ये अनुमातरं धावति। लक्षणे अनुगमनं निर्गतिः। हीने अनुवाह्लीकं मगधाः॥५॥

अव विज्ञानावलम्बनशुद्धीषदर्थव्याप्तिपरिभववियोगेषु। अव इत्ययमुपसर्ग एतेषु सप्तस्वर्थेषु वर्तते। विज्ञाने अवगतोऽर्थः। अवलम्बने अवष्टभ्य यष्टिं गच्छति। शुद्धौ अवदातं मुखम्। ईषदर्थे अवलम्बते। व्याप्तौ अवकीर्णं पांशुभिः। परिभवे अवहसति। वियोगे अवमुक्तः कान्तया॥ ६॥

निर् वियोगभृशार्थपापात्ययावधारणादेशातिक्रमलाभेषु। निर् इत्ययमुपसर्ग एतेष्वर्थेषु। वियोगे निःशल्यम्। भृशार्थे निर्णीतम्। पापे निर्मर्यादम्। अत्यये निर्मेघं गगनम्। अवधारणे निश्चितम्। आदेशे निर्दिष्टः। अतिक्रमे निष्क्रान्तः। लाभे निर्दिशति दातारम्॥ ७॥

दुर् ईषदर्थकुत्सनवैवर्ण्यासंपत्त्यलाभेषु। दुर् इत्ययमुपसर्गः पञ्चस्वर्थेषु वर्तते। (१) वैवर्ण्ये दुश्चर्मा दुर्गतः। अलाभे असम्पत्तौ च दुष्प्रापम्॥ ८॥

अभि पुजाभिमुख्यभृशार्थसादृश्यप्रयोगेच्छाव्याधिनृत्तसौरूप्यवचनादनाम्नायेषु। अभि एतेषु दशस्वर्थेषु वर्तते। पूजायां अभिवादयति गुरून्। आभिमुख्ये अभिमुखं स्थितः। भृशार्थे अभिरतः। सादृश्ये अभिजातः। प्रयोगे अभिजानाति। इच्छायामभिलषति। व्याधौ अभ्यमितः। नृत्ते अभिनयः। सौरूप्ये अभिरूपः। वचने अभिवदति। अदने अभ्यवहरति। आम्नाये अभ्यस्यति॥ ९॥

वि नानार्थवियोगातिशयभयदूरार्थभृशार्थकलहैश्वर्यमोहनपैशून्योत्कर्षकुत्सनेषदर्थानाभिमुख्यानवस्थानाप्राधान्यदर्शनशौर्येषु। वि इत्ययमुपसर्ग एतेष्वष्टादशस्वर्थेषु वर्तते। नानार्थे विचित्रा सूत्रस्य गतिः पाणिनेः। वियोगे वियुक्तः। अतिशये विशेषा विद्या। भये विषण्णम्। दूरार्थे विकृष्टोऽध्वा। भृशार्थे विशुद्धा नद्यः। कलहे विभज्य धनम्। ऐश्वर्ये विभुर्देवदत्तः। मोहने विमनस्कः। पैशून्ये अधिकं विशीर्णयति। उत्कर्षे विस्मृतो देवदत्तः। कुत्सने विरूपः। ईषदर्थे विलोभितः अनाभिमुख्ये विमुखः। अनवस्थाने विभ्रान्तः। अप्राधान्ये विनष्टः। दर्शने विलोभनीया कन्या। शौर्ये विक्रान्तः॥ १०॥

---

(१) ईषदर्थकुत्सनयोरुदाहरणं पुस्तके न दृश्यते।

अधि वशीकरणाधिष्ठानाध्यापनैश्वर्यस्मरणाधिक्येषु । अधि इत्ययमुपसर्ग एतेषु षट्स्वर्थेषु वर्तते । वशीकरणे अधिकरोति रथी रथम् । अधिष्ठाने अधिगणः । अध्यापने अधीतगणः । ऐश्वर्ये अधिपतिः । स्मरणे मन्त्रमधिस्मरति । आधिक्ये अधिकृतो राजा बलेन ॥ ११ ॥

सु प्रशंसापूजाभृशार्थानुमतिसमृद्धिकृच्छ्रेषु । सु इत्ययमुपसर्ग एतेषु षट्स्वर्थेषु वर्तते । प्रशंसायां सुरूपो देवदत्तः । पूजायां सुब्राह्मणः । भृशार्थे सुतप्ता आपः । अनुमतौ सुकृतम् । समृद्धौ सुसमृद्धाः मगधाः । कृच्छ्रे सुदुष्करम् ॥१२॥

उत् प्राबल्यवियोगलाभोर्ध्वकर्मप्रकाशोत्स्वास्थ्यमोक्षाभावबन्धनप्राधान्यशक्तिषु । उत् इत्ययमुपसर्ग एतेष्वेकादशस्वर्थेषु वर्तते । प्राबल्ये उद्धतः सर्पः । वियोगे उत्पथेन गच्छति । लाभे उत्पन्नं द्रव्यम् । उर्ध्वकर्मणि शयनादुत्तिष्ठति । प्रकाशे उच्चरति । उत्स्वास्थ्ये उत्सुकः । मोक्षे उन्मुञ्चति । अभावे उत्पथः । बन्धने उद्बद्धा कन्या । प्राधान्ये उत्कृष्टः । शक्तौ उत्साहः ॥ १३ ॥

अति अतिशयभृशार्थविक्रान्त्यतिक्रमणवृद्धिषु । अति इत्ययमुपसर्ग एतेषु पञ्चस्वर्थेषु वर्तते । अतिशये मानुष्यमस्यातिज्ञानम् । भृशार्थे अतितप्ता आपः । विक्रान्ते अतिरथम् । अतिक्रमणे हस्तिनातिक्रामति । वृद्धौ अतिमेघं गगनम्॥१४॥

नि निवेशराशिभृशार्थाधोभावविन्यासद्वारकर्मश्रवणोपरमबन्धनकौशल्यान्तर्भावसामीप्यमोक्षाश्रयेषु । नि इत्यमुपसर्ग एतेषु चतुर्दशस्वर्थेषु वर्तते । (१) राशौ निकरोति धान्यस्य । भृशार्थे निगृहीतः । अधोभावे निपतितः । विन्यासे निवसते नगरम् । द्वारकर्मणि निविष्टो वर्द्धिकः । श्रवणे निशामयति । उपरमे निवृत्तः । बंधने नियमितः । कौशल्ये निपुणः । अन्तर्भावे निपीतमुदकं सिकतादिभिः । सामीप्ये निकृष्टः । मोक्षे निविष्टः । आश्रये निलयः ॥ १५ ॥

प्रति सादृश्यादानहिंसातद्योगविनियमप्रतिनिधिनिवृत्तिव्याध्याभिमुख्यव्याप्तिधारणेषु । प्रति एकादशस्वर्थेषु वर्तते । सादृश्ये प्रतिकृतं देवदत्तेन । आदाने प्रतिगृह्णाति । हिंसायां प्रतिहतः । तद्योगे प्रतिपन्नमनेन । विनिमये तैलेन घृतं प्रतिगृह्णाति प्रतिनिधौ प्रतिहस्ती । निवृत्तौ प्रतिक्रान्तः । व्याधौ प्रत्यामयः । आभिमुख्ये प्रतिसर्यम् । व्याप्तौ प्रतिकीर्णं पांशुभिः । धारणे प्रतिनिवृत्तः ॥ १६ ॥

परि समंततोभावव्याप्तिदोपाख्यानोपरमभूषणपूजावर्जनालिङ्गननिवसनव्याप्तिशोकवीप्सासु । परि एतेषु द्वादशस्वर्थेषु वर्तते । समन्ततोभावे परिमूढमतिः । व्याप्तौ परिमतोसिना(२)ग्रामः । दोपाख्याने परिभवति देवदत्तः । उपरमे

---

(१) निवेशस्योदाहरणं पुस्तके नास्ति । (२) असिना खड्गेन ।

परिपूर्णो घटः । भूषणे परिकरोति कन्याम् । पूजायां परिचारयति गुरून् । वर्जने परित्रिगर्तेभ्यो वृष्टो देवः । आलिङ्गने परिष्वजते कन्याम् । निवसने परिदधाति । व्याप्तौ परिवाहिकः । शोके परिदीव्यति । वीप्सायां वृक्षं वृक्षं परिसिञ्चति ॥१७॥

अपि संभावनानुवृत्त्यपेक्षासमुच्चयगर्हाशीरामर्शप्रश्नेषु । अपि इत्ययमुपसर्ग एतेष्वष्टस्वर्थेषु वर्त्तते । सम्भावने अपि सिञ्चेन्मूलसहस्रम् । अनुवृत्तौ अपि स दद्यात् । अपेक्षायां अप्यर्थाय विद्वानागच्छति । समुच्चये अपि सिञ्च अपि स्तुहि । गर्हायां अपि स्त्रियो वृषलाः । आशिषि अपि जीव्याद्वर्षशतम् । आमर्शे अपि श्वस्तनमेतत् । प्रश्ने अपि गच्छति ॥ १८ ॥

उप सामीप्यसामर्थ्यव्याप्त्याचार्यकरणदोषाख्यानदानदाक्षिण्यवीप्सारम्भपूजातद्योगाध्ययनमरणानशनेषु । उप एतेषु चतुर्दशस्वर्थेषु वर्तते । सामीप्ये उपकुम्भं तिष्ठति । सामर्थ्ये उपकरोति देवदत्तः । व्याप्तौ उपकीर्णः पांशुभिः । आचार्यकरणे उपदिशति शिष्यस्य । दोषाख्याने उपघातः । दाने उपहरत्यर्थं देवदत्तस्य । दाक्षिण्ये उपचारः । वीप्सायाम् उपकूलम् (१) पूजायां उपासितः । तद्योगे उपपन्नं वाक्यम् । अध्ययने उपाध्यायादधीते । मरणे उपरतो देवदत्तः । अनशन उपवासो देवदत्तस्य ॥ १९ ॥

आङ् प्राप्तीच्छाबंधनभयवाक्याश्लेषाभिविधिसाध्यकृच्छ्रादिकर्मग्रहणानिलयसामीप्यविक्रियानिमन्त्रणनिवृत्त्याशीरादानान्तर्भावस्पर्द्धाभिमुख्योर्ध्वकर्मविस्मयप्रतिष्ठानिर्देशशक्तिमर्यादासु । आङ् इत्ययमुपसर्ग एतेषु सप्तविंशत्यर्थेषु वर्तते । प्राप्तौ आसादितमनेन । इच्छायां आकाङ्क्षते । बन्धने आमुञ्चति कवचम् । भये आकम्पितः । वाक्ये आज्ञापयति । श्लेषे आलिङ्गयति । अभिविधौ आकुमारं यशः पाणिनेः । साध्ये आनयति कपटेन । कृच्छ्रे अपगतः । आदिकर्मणि आरभते कटम् । ग्रहणे आलम्बते । निलये आवसथः । सामीप्ये आसन्नम् । विक्रियायां आछत्रम् । निमन्त्रणे आमन्त्रितो देवदत्तः । निवृत्तौ आरमते । आशिषि आशास्ते कन्याम् । आदाने आदत्ते रसायनम् । अन्तर्भावे आपीतमुदकं सिकतादिभिः । स्पर्द्धायां आह्वयते । आभिमुख्ये आगच्छति । उर्ध्वकर्मणि आरोहति हस्तिनम् । विस्मये आनन्दितः प्रतिष्ठायां आस्पदम् । निर्देशे आदिशति । शक्तौ आभाति गगने चन्द्रमाः । मर्यादायां आवर्द्धमाना निष्पन्नाः शालयः ॥ २० ॥

## ॥ इत्युपसर्गवृत्तिः समाप्ता ॥

---

(१) आरम्भस्योदाहरणं पुस्तके नास्ति ।

# उपसर्गवर्गः ॥

सरस्वती शब्दजलप्रवाहा नानार्थवीचीरुचिरा विभाति ।
निष्णातचेताः* कविकर्मदक्षो यस्यां† भवेन्मन्दमतिर्नरोऽपि ॥ १ ॥
एकेन युग्मेन कृशानुभिर्वा‡ स्वार्थं परित्यज्य परार्थभाजः ।
शब्दा इति स्युर्विशदार्थबोधा विधीयतेऽसावुपसर्गवर्गः ॥ २ ॥

स्वतोऽर्थः सृज्यतेऽपूर्वः स हि येनोपसर्गकः ।
केवलं धारणार्थस्य धातोरर्थाः पृथग्यथा ॥ ३ ॥

डुधाञ् धारणपोषणयोः

उपधानं तूपबर्हे समाधानं मनःस्थितौ, । सन्धानमुभयोर्योग आसवादिकृतावपि, ४
अपिधानं पिधानं च द्वयमाच्छादने स्मृतम्, ।

प्रधानं प्रकृतौ मन्त्रिश्रेष्ठयो,. अथ नामनि ॥ ५ ।
अभिधान, मथोवस्त्रे परिधानं, विधानकम् ।
कृत्ये, सद्वस्तुसम्पूर्णे निधानं वस्तुनि स्मृतम्, ॥ ६ ॥
आधानं स्थापने वाच्यं, धारणार्थोद्भवा अमी ।

हृञ् हरणे.–प्रहारस्ताडने, भोज्य आहारः, कर्पणे मतः ॥ ७ ॥
संहारः, क्रीडने वाच्यो विहारः, परिवर्जने ।
परिहारो,ऽथ मयस्योद्धारो निःसारणे स्मृतः, ॥ ८ ॥
उपायने तूपहारो, हरणार्थोद्भवा इमे ।

डुकृञ् करणे-विधौ प्रकारः, आकारः स्वरूपे, योग्यतार्थकः ॥ ९ ॥
अधिकारः समुद्दिष्ट, उपकारो हितं भवेत् ।
अपकारोऽहितं ख्यात, मनुकारो विडम्बनम्, ॥ १० ॥
रूपस्वभाववैजात्ये विकारो, वरणार्थकः ।
प्राकारः, करणार्थस्य धातोः शब्दा उदाहृताः ॥ ११ ॥

---

* मातृकायां विसर्जनीयो नास्ति, उत्तरत्राप्येवमेवानेकस्थलेषु ॥
† ' यस्मां ' इतिमातृका ॥
‡ कृशानुः=अग्नि । अग्नीनां त्रित्वात् कृशानुभिरित्यस्य त्रिभिरित्यर्थः ॥

आकारः* खनिपर्यायः, सङ्करो वर्णभेदजे, ।
उदितः प्रकरः पुञ्जे, समूहे निकरोत्करौ, ॥ १२ ॥
परिवारे परिकरस्तथैव कथितो बुधैः, ।

भू सत्तायाम्,—उत्पत्तौ प्रभवो, भङ्गे पराभव, उपस्थितौ ॥ १३ ॥
सम्भवो,ऽनुभवः साक्षात्कारे, विभव अर्जिते†, ।
उद्भवोऽङ्कुरभावे,ऽनादरे परिभवः स्मृतः, ॥ १४ ॥
तिरस्कृता वभिभवः, सत्तार्थजनिता इमे ।
मा माने,—प्रमाणपरिमाणे स्तः स्वार्थवाचकशाक्तिके, ॥ १५ ॥
अपमानावमानौ तु तिरस्कारार्थवाचकौ, ।
संमानः सत्कृतावुक्ते ऽनुमानं तर्क इष्यते, ॥ १६ ॥
निर्माणं रचना व्योम्नो विमानं यानमुच्यते, ।
उन्मानं द्रोणपर्यायो, ऽभिमानो गर्वसंज्ञकः, ॥ १७ ॥
प्रतिमानं प्रतीच्छायो पमानं साम्यमीरितम्, ।
धातोर्मानार्थकस्योक्ताः शब्दा अर्थविशारदैः ॥ १८ ॥

दिश अतिसर्जने, *

सन्देशो वाचके सद्भि रपदेशो मिषे स्मृतः, ।
निदेशः शासने मान भेदे प्रादेश‡ ईरितः, ॥ १९ ॥
निर्देशः कथने, त्वाज्ञायामादेशः प्रकीर्तितः ।
उद्देशः स्यात्परिकर, उपदेशो गुरूक्तिषु, ॥ २० ॥
शब्दा दानार्थसम्भूता विनीर्णीताः पुरातनैः ।

णीञ् प्रापणे

प्रणयः प्रेम, सन्देशेऽपनेयोऽनय उच्यते, ॥ २१ ॥
सान्त्वनेऽनुनयो, निर्धारणे निर्णय इष्यते, ।
विनयः प्रश्रये, नृत्यभावेऽभिनयसंज्ञकः, ॥ २२ ॥

* 'आकार' इति मातृका ॥ † 'उर्जिते' इति मातृका ॥

* ऽतिसर्जनम्=दानम् इति सिद्धान्तकौमुदी ॥

‡ 'प्रदेश' इति मातृका । 'प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते' इत्यमरः । 'उपसर्गस्य घञीति दीर्घः' इति तट्टीका । 'समावप्रच्छिन्नाग्रौ दर्भौ प्रादेशमात्रौ पवित्रे कुरुते' इत्यापस्तम्बः (श्रौ० १।११।६) ॥

मौञ्जीविधावुपनयः, माङ्गैः परिणयो मतः ।
विवाहे, मापणार्थस्य धातोः शब्दा इमे स्मृताः ॥ २३ ॥
सृ गतौ-पुंश्चलीकर्मणि ख्यातोऽभिसारः शब्दकोविदैः, ।
संसारो जन्ममरणे, प्रसारो विसृतौ मतः, ॥ २४ ॥
निःसारः साररहिते,ऽपसारो दूरसर्पणे, ।
धारासम्पात आसारो,ऽतिसारो रेचनामये,‡ ॥ २५ ॥
प्रसरो विस्तरे ख्यातो, विसरो वृन्दवाचकः, ।
विडम्ब्यनुसरः* प्रोक्तः, समये ऽवसरः स्मृतः, ॥ २६ ॥
गत्यर्थसम्भवाः शब्दा निर्णीता निपुणैरिति ।
इण् गतौ-आयो द्रव्यागमे,ऽपायव्ययौ तु नशने मतौ, ॥ २७ ॥
गदितश्चाथ समयोऽनेहसङ्केतयोर्बुधैः, ।
अन्वयो वंशसम्बन्धे, निरयो दुर्गतौ मतः, ॥ २८ ॥
उपाय उपचर्यायां, विस्रम्भो† प्रत्ययः स्मृतः ।
शब्दशास्त्रप्रवीणैश्च गादितः स्वाद्यणादिषु‡, ॥ २९ ॥
समुदायः समुदयः समवायो गणार्थकाः, ।
पर्यायोऽपरनाम्नि स्या, त्तथा नाशेऽत्ययाप्ययौ, ॥ ३० ॥
उदयः प्रकटीभावे गत्यर्थोत्था अमी स्मृताः, ।
परेतः प्राप्तपञ्चत्वे प्रेतश्चापीदृशः स्मृतः ॥ ३१ ॥
अपेतो विगते, युक्ते समेतान्वितनामकौ, ।
दारिद्र्ये दुरितं, वीतं त्वसारं हस्ति वाजिनि, ॥ ३२ ॥
नीतं संप्रापिते§, दीप्ते प्राकट्य उदितः स्मृतः, ।
प्रतीतो निश्चयवति, व्यतीतस्तु गते भवेत्, ॥ ३३ ॥

‡ 'आसारो अतिसारेचनामये' इति मातृका ॥

* 'विडन्त्यनुसरः' इति मातृका ॥

† 'विश्रम्भ.' इति मातृकायां तालव्यमध्यो वर्तते । 'विस्रम्भदस्रविस्राणि' इति दन्त्यमध्येषूष्मविवेकः (९५ श्लो०) 'विस्रम्भ' शब्दव्याख्याने 'स्रम्भूङ् विश्वासे दन्त्यादिः ।' इति शब्दभेदप्रकाशव्याख्या ॥

‡ स्वादिषु अणादिषु च वैयाकरणै प्रत्ययशब्दो व्यवहृत इत्यर्थः ॥

§ 'नितसम्प्रापिते' इति मातृका ॥

युक्ते परीतः, संप्राप्त उपेतः प्राज्ञसंमतः, ।
अधीतस्तु कृताभ्यासे, शब्दा गत्यर्थसम्भवाः ॥ ३४ ॥
षञ्ज संगे-प्रस्तावे तु प्रसङ्गः स्या, न्निःसङ्गो बद्धचेतसि, ।
निषङ्ग इषुधौ, क्रोड उत्सङ्गः समुदाहृतः, ॥ ३५ ॥
अभिषङ्गः पराभूता-वनुषङ्गस्तु सङ्गतौ, ।
योगार्थसम्भवाः शब्दा विद्वद्भिः प्रकटीकृताः ॥ ३६ ॥
चर गतिभक्षणयोः-उच्चारो मेहने ख्यातो, ऽभिचारः कार्मणे* स्मृतः, ।
परिचारस्तु भृत्ये स्या, दुपचारोऽर्चने विधौ, ॥ ३७ ॥
अतिचारस्तु खेटस्याकाले† राश्यन्तरे गते, ।
प्रचारः प्रथितव्याप्ता, वपचारो विलुम्पने, ॥ ३८ ॥
संचारश्चेतसो भ्रान्तौ, विचारः स्याद्विमर्शने, ।
श्रुतिस्मृत्युदिते धर्म आचारः सम्प्रकीर्तितः, ॥ ३९ ॥
गत्यर्थप्रकृतेर्जाताः शब्दा वैशद्यमागताः ।
शीङ् स्वप्ने-संशयो द्वापरे ख्यात, आशयोऽन्तर्गते हृदः ॥ ४० ॥
कोष्ठे, चानुशयः पश्चात्तापे,थातिशयो भरे, ।
रुजां स्वरूपविज्ञानहेतावुपशयः स्मृतः, ॥ ४१ ॥
स्वप्नार्थधातुसम्भूताः शब्दाः ख्यातिमुपागताः ।
ग्रह उपादाने-प्रग्रहोपग्रहौ कारावन्धने, संस्मृतौ बुधैः ॥ ४२ ॥
संग्रहः सञ्चये वाच्यः, कथितस्त्वग्रहो हठे, ।
वर्षारोधेऽवग्रहः स्यात् पुनः स्तम्बेरमालिके‡ ॥ ४३ ॥
केतावुपग्रहः प्रोक्तो, विग्रहो वैरवर्मणोः, ।
अनुग्रहः कृपाभावे, घाते निग्रहः ईरितः, ॥ ४४ ॥
प्रतिग्रहस्तु दानाङ्गीकारे, ज्ञेयः परिग्रहः ।
दारे,ष्विति विशेषार्था उपादानार्थसम्भवाः ॥ ४५ ॥
सृज विसर्गे-संसर्गः स्पर्शने, भावे निसर्गः स्वस्थ उच्यते, ।

---

* 'कर्मणे' इति मातृका। 'मूलकर्म तु कार्मणम्' इत्यमरः । 'त्रासनोच्चाटनस्तम्भनवशीकरणादिकर्म' इति तद्व्याख्याने मुकुटः ॥

† 'स्तुखेटस्यात्काले' इति मातृका ॥

‡ यज्ञालिके यथा—'अवग्रहगृहीतोऽपि प्रतिभिन्नो नावरुध्यते' इति अवग्रहशब्दव्याख्याने अनेकार्थकैरवाकरकौमुदी ॥

विसर्गः सर्वैकृत्य*, उत्सर्गः प्रतिमोक्षणे, ॥ ४६ ॥
प्रतिसर्गः सृष्टिविधा,वुपसर्ग उपप्लवे ।
प्रादिष्वपीरिताः प्राज्ञैः, सर्जनार्थोद्भवा अमी ॥ ४७ ॥
षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु–प्रसादः परमामोदे, विषादस्तद्विपर्यये, ।
अवसादः कृशीभावे निषादो भिल्लनामनि, ॥ ४८ ॥
प्रसन्नः स्यात्प्रमुदिते, विषण्णः क्लिष्टचेतसि, ।
अवसन्नस्तनुतरे,निषण्णः संस्मृतः स्थिते, ॥ ४९ ॥
शब्दा एते †विशरणावसादनगतेर्भवाः ।
क्रमु पादविक्षेपे–प्रक्रमानुक्रमौ‡ स्यातां क्रमार्थावेव, संक्रमः ॥ ५० ॥
रवेराश्यन्तरगते, विपर्यासे त्वपक्रमः ।
पराक्रमो विक्रमश्च द्वौ स्यातां पौरुषार्थकौ§, ॥ ५१ ॥
निष्क्रमो निर्गमे ख्यात, आक्रमः परिवेष्टने, ।
उल्लङ्घनेऽतिक्रमो स्या, दुत्क्रमो मरणे स्मृतः, ॥ ५२ ॥
प्रदक्षिणार्थकः प्रोक्तः परिक्रम, उपक्रमः ।
आरम्भे, पादविक्षेपस्वार्थधातोरिति स्मृताः ॥ ५३ ॥
लष कान्तौ–विलासो नर्मणि ख्यात, उल्लासो मुदि संमतः, ।
मनोरथोऽभिलाषः, स्यात्परिलासस्तु मण्डने, ॥ ५४ ॥
दीप्त्यर्थसम्भवा एते शब्दाः प्रोक्ताश्च सूरिभिः ।
काशृ दीप्तौ–प्रकाशस्तेजसो धर्मे,ऽवकाशो महदन्तरे, ॥ ५५ ॥
स्फुटीभावेषु मनसो विकासः* संप्रकीर्तितः, ।

---

* 'सर्गवैकृत्ये' इति स्यात् ॥ † 'विसरण' इति मातृका ॥

‡ 'अनुगमौ' इति मातृका ॥ § पुरुषार्थकौ' इति मातृका ॥

| धातुपाठे 'लसश्लेषणक्रीडनयोः, लसशिल्पयोगे, लषकान्तौ' इति त्रयो धातवः पठ्यन्ते । आद्यौ दन्त्यान्तौ । अन्त्यस्तु मूर्धन्यान्तः । दीप्त्यर्थकः कोऽपि न दृश्यते । 'लषकान्तौ' इत्यत्र 'कान्तिरिच्छा' इति माधवाचार्यः । वोपदेवोऽपि 'लषञ् स्पृहि' इत्याह । तथा चैते सर्वे मूर्धन्यान्तलषधातूत्पन्नाः, लषधातुश्च दीप्त्यर्थक इति भ्रान्तिद्वयं ग्रन्थकर्तुर्वर्तते ॥

* 'विकासपर्णासधीरव्यूयासाः' (१०५ श्लो०) इत्यूष्मविवेकात् दन्त्यान्तः । तथा च 'कासृशब्दकुत्सायाम्' इति धातोर्व्युत्पाद्यः । 'दीप्त्यर्थकाशधातुरुत्पादनं तु भ्रममूलकम् ॥

प्रतीकाशश्च नीकाशः सङ्काशः सदृशार्थकाः, ॥ ५६ ॥
आकाशो वियति ज्ञेयो, दीप्त्यर्थप्रभवाः स्मृताः ।

डुदाञ् दाने–संप्रदानं चतुर्थ्यर्थेऽपादानं पञ्चमीगते, ॥ ५७ ॥
आदानं ग्रहणे, हेतौ निदानं परिकीर्तितम् , ।
दानार्थसम्भवाः शब्दाश्चत्वारः समुदाहृताः ॥ ५८ ॥

गम्लृ गतौ–सङ्गमो मिलने, वेदशास्त्रयोर्निगमागमौ, ।
विगमापगमौ द्वौ तु शब्दौ राहित्यवाचकौ, ॥ ५९ ॥
निर्गमो निष्क्रमे ख्यातो,ऽवगमोऽधिगतौ बुधैः, ।
बोधोऽभिगम उद्दिष्टः, साम्मुख्ये महतां गते, ॥ ६० ॥
उद्गमोपगमौ भावे प्राप्तौ च क्रमशः स्मृतौ, ।
सुगमो दुर्गमश्चेति शक्याशक्यगते मतौ, ॥ ६१ ॥
गत्यर्थसम्भवा एते शब्दा ज्ञेया विचक्षणैः ।

पद गतौ–प्रपन्नः शरणं प्राप्ते, सम्पन्नो धनपूरिते, ॥ ६२ ॥
उत्पन्नोऽपि च निष्पन्नो ह्यवप्येतौ समर्थकौ, ।
आपन्नश्च विपन्नश्च विपत्तिग्रस्त ईरितौ, ॥ ६३ ॥
प्रतिपन्नोपपन्नाभिपन्नाः प्राप्त्यर्थवाचकाः, ।
गत्यर्थसम्भवाः शब्दा विद्वद्भिः प्रकटीकृताः ॥ ६४ ॥

जि जये–विजयो विक्र(मे)* ... ... ... ।
.... .... ... .... ... ... ॥ ६५ ॥

श्लिष आलिंगने

... ... विश्लेषः परिरम्भवियोगयोः, ।
आलिङ्गनार्थसम्भूताविमौ विद्वद्भिरीरितौ ॥ ६६ ॥

---

* यद्यपि मातृकायामत्र त्रुट्यादिकं नास्ति परन्तु ६३ संख्यानन्तरं ६५ संख्याया निवेशो दृश्यत इति मध्ये पराजय, अपजयादिपदघटित एकः श्लोको भ्रष्ट इति स्पष्टमवसीयते ॥

† 'आघ्रणेषणं च विश्लेषः' इति स्यात् ॥

‡ 'उपचयोऽत्र लेपः' इति क्षीरतरंगिण्यां क्षीरस्वामी । भीमसेनधातुपाठे 'उपचयो न दृपः' इत्येष अस्यैवापपाठः । दिहञो लिपि' इति कविकल्पद्रुमे वोपदेवः । आभरणकार-मैत्रेयरक्षित-माधवाचार्यैः उपचयशब्दस्यार्थो न निरूपितः। सिद्धान्तकौमुद्यां 'उपचयो वृद्धिः' इति पाठः प्रामादिक इत्यनुमीयते ॥

दिह उपचये+-प्रदेहो लेपपर्यायः, सन्देहः संशये स्मृतः, ।
विदेहः परमो हंसे, उपलेपार्थसम्भवाः ॥ ६७ ॥

डुधाञ् धारणपोषणयोः-उपाधिर्वैकृतं, व्याधिश्चाधिर्देहमनोरुजः, ।
प्रधिर्नेमि, र्विधिरजे साधने नियतौ तथा, ॥ ६८ ॥
मर्यादाऽवधिरुद्दिष्टः, सन्धिर्योगे द्वयोर्मतः, ।
परिधिः परिवेषे स्या,द्धारणार्थोद्भवाः स्मृताः ॥ ६९ ॥

लप व्यक्तायां वाचि-प्रलापोऽनर्थवाक्यं स्या.दपलापस्तु निह्नुते, ।
संलापोऽन्योन्यवचन, मनुलापो मुहुर्मुहुः, ॥ ७० ॥
विप्रलापो विरुद्धे स्या, त्सुप्रलापस्तु सूनृते, ।
आलापो भाषणे प्रोक्तो, विलापः परिदेवने, ॥ ७१ ॥
उल्लापो नाम्नि पर्याये, भाषणार्थोद्भवा इमे ।

आप्लृ व्याप्तौ-प्राप्तावाप्तौ च लब्धार्थे, प्रविष्टे व्याप्त ईरितः ॥ ७२ ॥
आप्तः स्वीये, समाप्तः स्यात्पूर्णे, परिमिते त्वथ ।
पर्याप्त, इति निर्दिष्टाः शब्दा व्याप्त्यर्थसम्भवाः ॥ ७३ ॥

चिञ् चयने-प्रचयोऽतिशये ख्यातो, वृद्धावुपचयो मतः, ।
निर्धारणे निश्चयः स्या, न्निचयस्तु कदम्बके, ॥ ७४ ॥
ग्रहणे कुसुमादीनां सम्प्रोक्तोऽवचयो बुधैः, ।
उक्तः परिचयोऽभ्यासे, चयनार्थोद्भवा अमी ॥ ७५ ॥

विश प्रवेशने-गर्तौ प्रवेशो विज्ञेयः, स्वप्नः संवेश इत्यपि, ।
व्याप्तिः शरीरे दैवी या स आवेश उदाहृतः, ॥ ७६ ॥
निवेशः शिविरे ज्ञेयो, निर्वेशो भोगसम्भवः ।
उपवेशः स्थितौ प्रोक्तः, शब्दाः स्युर्वेशनार्थजाः ॥ ७७ ॥

विद ज्ञाने-संवेदो ज्ञानपर्यायो, निर्वेदः स्वावमाननम्, ।
उपवेदस्त वेदानामायुर्वेदादिषु स्मृतः, ॥ ७८ ॥
ज्ञानार्थधातुसञ्जाताः प्रसिद्धिं समुपागताः ।

वद व्यक्तायां वाचि-संवाद उभयोः प्रश्नोत्तरे ख्यातोमनीषिभिः, ॥ ७९ ॥
परिवादापवादौ तु निन्दायां, कलहे त्वथ ।

प्रवादश्च विवादश्च, दुर्वादो निष्ठुरं वचः, ॥ ८० ॥
अभिवादो नमस्कारे, ऽनुवादः कथने* स्मृतः, ।
व्यक्तवागर्थसम्भूताः शब्दा वैविध्यमागताः ॥ ८१ ॥
भिदिर् विदारणे-प्रभेदश्च विभेदश्च द्वौ स्यातां स्वार्थवाचकौ, ।
भवेदुद्भेद उत्पत्तौ, संभेदः सिन्धुसङ्गमे, ॥ ८२ ॥
विदारणार्थधातूत्थाः शब्दाः प्रोक्ता विशारदैः ।
रञ्ज रागे-औदासीन्ये विरागः स्या, दनुरागो रतौ मतः, ॥ ८३ ॥
उपरागः पुष्पवतोर्ग्रहणे* सम्प्रकीर्तितः, ।
रञ्जनार्थोद्भवाः शब्दा एत एवोपपादिताः ॥ ८४ ॥
युजिर् योगे-प्रश्नेऽनुयोगः, संयोगो मिलने संप्रकीर्तितः, ।
भेदे वियोग, उद्योगः प्रोक्तः परिकरे बुधैः, ॥ ८५ ॥
कल्पे प्रयोगः, कर्तव्ये विनियोग उदाहृतः, ।
उपयोगस्तु साकल्ये, योजनार्थसमुद्भवाः ॥ ८६ ॥
चिती संज्ञाने-प्रचेताः पाशिनि ख्यातो, विचेता मोहसङ्कुले, ।
संज्ञानार्थोद्भवावेतौ शब्दौ विख्यातिमागतौ ॥ ८७ ॥
भुज पालनाभ्यवहारयोः-शृङ्गारानुभवे ज्ञेयः सम्भोगः, पूर्णतार्थकः ।
आभोगः कविभिः प्रोक्त, उपभोगस्तु सेवने, ॥ ८८ ॥
पालनाभ्यवहारार्थधातोः शब्दा इति स्मृताः ।
रम क्रीडायाम्१-आरामः स्यादुपवने, विरामोऽन्ते प्रकीर्तितः, ॥ ८९ ॥
रमणीयेऽभिरामः स्यात्, क्रीडनार्थोद्भवा अमी ।
छद् अपवारणे-‡प्रच्छन्नं चापि विच्छन्नं §......स्यात्तिरोहिते, ॥ ९० ॥

* 'अववादः कथने, इति मातृका ॥

* पुष्पवतः=सूर्यचन्द्रयोः । 'एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ' इत्यमरः ॥

१ धातुपाठकोशेषु 'रमुक्रीडायाम्' इत्युदित्पाठः प्राय उपलभ्यते । अस्योदित्वं केचिदिच्छन्ति । तेषां मते रत्वा, रमित्वा ।' इति धातुप्रदीपे मैत्रेयरक्षितः । मनोरमायां-'अयमुदिदिति मत्वा वोपदेवाद्यो रत्वा, रमित्वेत्युदाजन्हुस्तन्महान्तो न सहन्ते इति माधवः । इत्युक्तेः उदित्वं परित्यक्तम् ॥

‡ 'प्रच्छिन्नं चापि विच्छिन्नं' इतीकारमध्यो मातृकायाम् ॥

§ अक्षरलोपसूचकं ˇ. एतादृशं हंसपदीचिह्नमात्रं मातृकायां वर्तते ॥

छादनार्थोद्भवावेतौ गदितौ शब्दवेदिभिः ।
छिदिर् द्वैधीकरणे-उच्छिन्नं चापि विच्छिन्नं नष्टे· चाथ विनिश्चिते ॥ ९१ ॥
परिच्छिन्नं बुधैः प्रोक्तं, छेदनार्थोद्भवा इति ।
असु क्षेपणे-निःसारणे निरसनं*, शराभ्यास उपासनम्, ॥ ९२ ॥
आसनं योगभेदे स्या, द्व्यसनं दुःखमीरितम्, ।
परासनं निहनन मपासनमपि स्मृतम्, ॥ ९३ ॥
स्थापने न्यसनं ख्यातं, क्षेपणार्थोद्भवा अमी ।
लीङ् श्लेषणे†-प्रलयो विलयश्चेति प्रणाशार्थप्रबोधकौ, ॥ ९४ ॥
तिरोभावार्थसम्भूता, भवने निलयालयौ, ।
आस उपवेशने-प्रासः कुन्ते, समासः स्यात् द्वन्द्वतत्पुरुषादिषु ॥ ९५ ॥
संक्षेपे च, निरासः स्याद्दूरीकरणसंज्ञकः, ।
कृष्णद्वैपायने व्यासो विस्तरे च प्रकीर्तितः, ॥ ९६ ॥
मन्त्राक्षराणामङ्गेषु धारणं न्याससंज्ञकम्, ।
अध्यासो मनसः सक्ता-वभ्यासः स्यात्परिश्रमे, ॥ ९७ ॥
उदासस्तु विरक्ते स्या, दुपवेशार्थसम्भवाः ।
ईक्ष दर्शने-इच्छाऽपेक्षा, तितिक्षा स्यादुपेक्षा,ऽऽलोकने वरे ॥ ९८ ॥
समीक्षा गुणदोषाणां, परीक्षा स्याद्विमर्शने,‡ ।
मार्गावलोके स्वेष्टस्य प्रतीक्षा समुदाहृता, ॥ ९९ ॥
दर्शनार्थसमुत्पन्ना इति शब्दा इहोदिताः ।
ष्ठा गतिनिवृत्तौ-आस्थानी ज्ञेयमास्थानं, प्रस्थानं गमनं मतम्, ॥ १०० ॥
चिह्नं संस्थान,मुत्थानं स्वास्थानादासनादितः, ।
उपस्थानं स्तवः प्रोक्त,मधिष्ठानं तु सन्निधिः, ॥ १०१ ॥

---

* 'निसरनम्' इति मातृका ॥

† धातुपाठे दिवादिषु लीङ् श्लेषणे, क्र्यादिषु ली श्लेषणे, चुरादिषु ली द्रवीकरणे इति त्रयो धातवः पठ्यन्ते । कविकल्पद्रुमेऽपि-'ली कि द्रावणे. ली ङ्य ओ श्लिषि, ली ल्पी गि च' इति त एव त्रय उपलभ्यन्ते । धातुवृत्तिष्वपि लीधातोः तिरोभावार्थकत्वं नोपलभ्यते । अतोऽत्र मूलं मृग्यं, तथापि क्षीरतरंगिण्यां निलय प्रलयशब्दौ दैवादिकाद्व्युत्पादिताविति स एवात्र निवेशितः ॥

‡ 'विमर्शमे' इति मातृका ॥

अवस्थानमवस्था स्यात्, सुस्थानं रुचिरे स्थले, ।
प्रतिष्ठानं दैवतस्य स्थापनं विधिवत् स्मृतम् ॥ १०२ ॥
अनुष्ठानं प्रयोगः स्या,द्धातोर्गतिनिवृत्तिजाः ।
या प्रापणे-प्रयातः प्रस्थिते ख्यातो,ऽनुयातोऽनुसृतः स्मृतः, ॥ १०३ ॥
प्रतियातोऽरिसाम्मुख्यं गते निगदितो बुधैः, ।
निर्यातो निःसृते ज्ञेयो,ऽपयातो विगते भवेत्, ॥ १०४ ॥
शठे वियातः संप्रोक्तो,ऽवयातो विदिते स्मृतः,* ।
प्रापणार्थसमुत्पन्नाः शब्दा विख्यातिमागताः ॥ १०५ ॥
तप सन्तापे-प्रतापस्तेजसः पुञ्जे नृपदर्पेऽपि सम्मतः, ।
सन्तापः संज्वरो ज्ञेय, आतपो घर्म† उच्यते, ॥ १०६ ॥
परितापोपतापौ स्तः सदृशार्थस्य बोधकौ, ।
पश्चात्तापोऽनुतापः स्या, त्सन्तापार्थोद्भवा अमी ॥ १०७ ॥
पत्लृ गतौ-निपातः सिद्धशब्देषु, संपातो दृष्टिसंज्ञकः, ।
प्रपातो भृगुरादिष्ट, उत्पातोऽरिष्टसूचकः, ॥ १०८ ॥
व्यतीपातस्तु योगेषु ज्योतिर्विद्भिः§ प्रकीर्तितः, ।
परिपातः* प्रवेशः स्यात्, पतनार्थसमुत्थिताः ॥ १०९ ॥
षु प्रसवैश्वर्ययोः- प्रसवो जनने, स्नानेऽभिसवः परिकीर्तितः, ।
आसवो मधुसंज्ञः स्या, दुत्सवः शर्मकर्मणि, ॥ ११० ॥
आविर्भावार्थसम्भूताः शब्दा उक्ता विशारदैः ।
पा पाने-निपानमुपकूपः स्या, दापानं पानगोष्ठिका, ॥ १११ ॥
अनुपानं भेषजस्यानुकूलं यत्प्रदीयते, ।
पानार्थधातुसञ्जाता इति शब्दाः प्रथां+ गताः ॥ ११२ ॥
षिध गत्याम्-निषेधप्रतिषेधौ तु वर्जनार्थप्रवर्तकौ, ।
उत्सेध उन्नतत्वे स्या, द्गत्यर्थजनिताः स्मृताः ॥ ११३ ॥

* 'अवयातविदिते' इति मातृका ॥
'नितापः' इति मातृका ॥
'परितापः' इति मातृका ॥
शर्म सुखम् । तत्साधनं कर्म शर्मकर्म । शुभकर्मेत्यर्थः ॥
'पृथं' इति मातृका ॥
† 'आतापो धर्म' इति मातृका ॥
§ 'जोतिर्विद्भिः' इति मातृका ॥

षिच क्षरणे–लालास्रावे प्रसेकः स्या॰ न्निषेको गर्भधारणः§ ।
आसेकः सिञ्चने ख्यातो, ऽभिषेको राज्यमङ्गले, ॥ ११४ ॥
परिषेकः प्रोक्षणे तु, सेचनार्थसमुद्भवाः ।
क्षिप प्रेरणे–प्रक्षेपो मिश्रणं सिद्धे भेषजे भेषजस्य यत्, ॥ ११५ ॥
आक्षेपः स्वयमुक्तस्य प्रतिषेधो विचारणात् ।
अर्थालङ्कार इत्युक्तः प्रवीणैः पूर्वसूरिभिः ॥ ११६ ॥
वह प्रापणे–ज्योतिश्चक्रभ्रमे+ वायुः प्रवहो, निवहो गणे ।
कार्यसिद्ध्यवसानो यो यत्नो निर्वाहसंज्ञकः ॥ ११७ ॥
धारागतिः प्रवाहः स्या, त्संवाहः पादसेवनम् ।
विवाहोद्वाहनामानौ गदितौ पाणिपीडने ॥ ११८ ॥
प्रापणार्थसमुद्भूताः शब्दाः प्रोक्ता मनीषिभिः ।
मुद हर्षे–प्रमोदामोदसम्मोदा इति हर्षार्थसम्भवाः ॥ ११९ ॥
णुद प्रेरणे–विनोदः परिहासे स्या त्प्रणोदः परिमार्जने* ।
तॄ प्लवनतरणयोः स्तॄञ् आच्छादने
उत्तरः श्रेष्ठपर्याय आतरस्तरवेतनम् ॥ १२० ॥
अवतारोऽवतरणं, दानं वितरणं स्मृतम् ।
जले प्रतरणं, क्लेशान्मुक्तिर्निस्तरणं मतम् ॥ १२१ ॥
पारङ्गते तूत्तरण, मासनास्तरणे समे ।
स्थण्डिले परितो दर्भैः परिस्तरणमीरितम् ॥ १२२ ॥
पाषाणे प्रस्तरः प्रोक्तो, ऽसंक्षेपे विस्तरो मतः ।
तरणाच्छादनार्थोत्थाः सुधीभिः संप्रकाशिताः ॥ १२३ ॥
प्लुङ् गतौ–परिप्लवस्तु चाञ्चल्य, उपप्लव उपद्रवे ।
विप्लवस्तु विपर्यास, आप्लवः स्नानकर्मणि ॥ १२४ ॥
उत्प्लवः कूर्दने ख्यात, स्तरणार्थोद्भवा† इति ।

§ गर्भस्य स्फुटताज्ञाने निषेकः परिकीर्तितः । ततस्तु स्पन्दनात् कार्यं सवनं तु विचक्षणे' इति शङ्खस्मृतिः २ अ॰ १ श्लो॰

+ 'ज्योतिश्चक्र' इति मातृका॥

* अत्र धात्वर्थसूचकाभावात्कश्चिद्ग्रन्थः पतित इति प्रतिभाति ॥

† 'तॄ प्लवनतरणयोः' इत्यत्र प्लवनस्याप्यर्थतया निर्देशादत्र तरणस्य प्लुधातोरर्थत्वेन निर्देशः संगच्छते ॥

बन्ध बन्धने-सङ्गीतेषु प्रबन्धः स्या, दनुबन्धोऽनुवृत्तिकृत् ॥ १२५ ॥
सम्बन्धोऽन्वय उद्दिष्टो, निर्बन्धस्तु हठे भवेत् ।
निबन्धो ग्रन्थरचना, प्रतिबन्धस्तु रोधकः ॥ १२६ ॥
विबन्धो मलरोधे स्या, द्बन्धनार्थसमुद्भवा ।
दुह प्रपूरणे*-जलनिःसारणे ख्यात उद्दोहस्तु जलाशयात् ॥ १२७ ॥
सन्दोहः समुदाये स्या, त्पूरणार्थोद्भवा इमौ ।
कटे वर्षावरणयोः-समीपवर्ति निकटं, प्रकटं प्रादुरागतम् ॥ १२८ ॥
सङ्कटं क्लेशपर्यायो, विकटं वक्रमुच्यते ।
उत्कटं प्रचुरं ख्यातं, शब्दाः शब्दार्थधातुजाः† ॥ १२९ ॥
बुधिर् बोधने-प्रबोधो जागरे ख्यातो,ऽवबोधो ज्ञानमुच्यते ।
अनुबोधः पत्रलेखा, ऽऽमन्त्रे सम्बोधनं स्मृतम् ॥ १३० ॥
बोधनार्थसमुत्पन्नाः शब्दाः प्रख्यातिमागताः ।
कॄ विक्षेपे-प्रकीर्णमवकीर्णं च प्रसृते च प्रसारिते ॥ १३१ ॥
सङ्कीर्णं स्यात्सङ्कुचिते, आकीर्णं व्याप्तमुच्यते ।
शब्दा विकीर्णार्थोत्थाश्च विनिर्णीताः कवीश्वरैः ॥ १३२ ॥
हन हिंसागत्योः-अभिघातस्तु शस्त्राद्यैः प्रहारस्तु उपस्थितः ।
प्रोक्तो निर्घात उत्पातः, शब्दा हिंसार्थसम्भवाः ॥ १३३ ॥
हत्यायामपघातः स्या, त्सङ्घातो गणवाचकः ।
कृष विलेखने-उक्तः प्रकर्ष आधिक्ये, ऽपकर्षोत्कर्षसंज्ञकौ ॥ १३४ ॥
अनुत्तमोत्तमत्वे च, निष्कर्षः सारसम्मतः ।
अनुकर्षो दार्वधःस्थं स्यन्दनस्य प्रकीर्तितम् ॥ १३५ ॥
प्रकृष्टमुदितप्राय, मुत्कृष्टं श्रेष्ठवाचकम् ।
आकृष्टं कर्षितं प्राहु, र्निकृष्टं नीचमुच्यते ॥ १३६ ॥
विलेखनार्थसम्भूता, अपकृष्टं तथैव च ।
वस निवासे-विदेशगमने विज्ञैः प्रवासः संप्रकीर्तितः ॥ १३७ ॥
ख्यातो निवासः संवास आवासो मन्दिरं स्मृतम् ।

* 'प्रपूरणं पूरणाभावो रिक्तीकरणम् । उपसर्गोऽत्र धात्वर्थं बाधते प्रस्थानवत्।'
इति भीमसेनधातुपाठः । अतोऽत्र पूरणार्थत्वलेखः प्रामादिकः ॥
† शब्दार्थकः कटधातुः धातुपाठेषु नोपलभ्यते ॥

अधिवासो दैवतस्य* पूजनात्प्रागुदीरितः ॥ १३८ ॥
विघासोद्वासनामानावुक्तावुच्चाटने बुधैः ।
उपवासो व्रते प्रोक्तो, वसधातोः समुत्थिताः ॥ १३९ ॥

रभ राभस्ये—उक्तः प्रारम्भ आरम्भः कार्यादिः, परिरम्भकः ।
आश्लेषे, वेगबाहुल्ये संरम्भः संप्रकीर्तितः ॥ १४० ॥
वेगार्थप्रकृतेर्जाताः शब्दाः धीरैः समीरिताः ।

णम महत्वे शब्दे च—नमस्कृतिः प्रणामो,ऽथ परिणामोऽन्तवाचकः ॥ १४१ ॥
विनामो वङ्क्षणानाहः, प्रणतो नम्रसंज्ञकः ।
ज्ञेयं परिणतं पक्वं, समुत्पन्नतमुच्यते ॥ १४२ ॥
सम्यगीषन्नते शब्दौ भवेतां सन्नतानतौ ।
मासे तूपनतं, धातोः स्तुत्यर्थात्समुपस्थिताः ॥ १४३ ॥

ऊह वितर्के समूहन्व्यूहनामानौ व्रजे,ऽथो वस्तिकर्मणि ।
निरूहो रूढिमायातो, वितर्कार्थसमुद्भवाः ॥ १४४ ॥

भा दीप्तौ-प्रभावः कान्तिसंस्थाने, प्रतिभावमतिक्रमे+ ।
दीप्त्यर्थसम्भवाः शब्दाः प्रथिता विदुषां मते ॥ १४५ ॥

वृञ् वरणे—गोत्राङ्के प्रवरः श्रेष्ठे, विले विवरमुच्यते ।
सङ्गोपने* संवरणं, व्याख्या विवरणं स्मृतम् ॥ १४६ ॥
वेष्टने स्यादावरणं, वास प्रावरणं मतम् ।
उत्तरीये तथैव स्यात्प्रावारः सूरिसम्मतः ॥ १४७ ॥
कुटुम्बं परिवारः स्या, त्सम्मते शब्दशास्त्रिणाम् ।
संवारश्च विवारश्च प्रयत्नावक्षरेष्विमौ ॥ १४८ ॥
दुर्वारो दुर्निवार्ये च, शब्दाः संवरणार्थजाः ।

---

* 'देवदत्तस्य' इति मातृका ॥

| मातृकायां 'संस्थाने' इत्यस्यानन्तर ˇ एवं हंसपदीचिह्नं दृश्यते । ततः 'प्रतिभामति' इति वर्तते । अनन्तरं भा इत्यस्योपरि तिर्यग्रेखाद्वयं विलिख्य पङ्क्त्याधोभागे 'व' इति, 'ति' इत्यस्यानन्तरं + एवं हंसपदीचिह्नं विलिख्य 'क्रमे' इति च शोधितम् । तथाचैषा आनुपूर्वी निष्पन्ना । 'दीप्त्यर्थसम्भवाः शब्दाः' इति बहुवचननिर्देशादत्र ग्रन्थपात अनुमीयते । एतत्संशोधनं तु ग्रन्थपाता-नभिज्ञकृतमिति ममाशयः ॥

* 'संगोपने' इति मातृका ॥

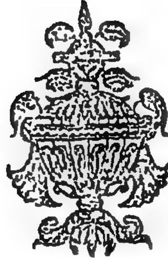
णह् बन्धने-संनाहो वर्मणि प्रोक्त, उपनाहो निबन्धने ॥ १४९ ॥
आनाहो व्याधिभेदे स्या,त्परिणाहो विशालता ।
बन्धनार्थभवाः शब्दा नानार्थद्योतकाः स्मृताः ॥ १५० ॥
रुधिर् आवरणे-निरोधो बन्धने वैरे विरोधः समुदाहृतः ।
अवरोधस्तु शुद्धान्ते, शब्दा आवरणार्थजाः ॥ १५१ ॥
ख्या प्रकथने-व्याख्या विवरणे,ऽभिख्या ऽऽभाया+ ,माख्या तु नामनि ।
गणनायां तु संख्या स्या, त्कथनार्थसमुद्भवाः ॥ १५२ ॥
क्लृपू सामर्थ्ये-सङ्कल्पश्च विकल्पश्च मनोधर्मावुदाहृतौ ।
अनिश्चयो विकल्पः स्या,त्सङ्कल्पो निश्चयात्मकः ॥ १५३ ॥
अनुकल्पोऽधमे कल्प, आकल्पो वेष उच्यते ।
सामर्थ्यार्थसमुत्पन्नाः कृतिभिः प्रतिपादिताः ॥ १५४ ॥
या प्रापणे-प्रयाणमाहुः प्रस्थाने,ऽपयानं स्यात्पलायनम् ।
निर्याणं मरणे चा थ, पक्षिनोपाङ्गयोरपि ॥ १५५ ॥
अभियानं रणे धैर्यं, प्रापणार्थसमुद्भवाः ।
श्रिञ् सेवायाम्-प्रश्रयो विनये ख्यातः, सहाये संश्रयाश्रयौ ॥ १५६ ॥
व्यपाश्रयस्तु दोषाणामभावे संप्रणोदितः ।
सेवार्थधातुसञ्जाताः प्रगीताः* पण्डितैरिति ॥ १५७ ॥
डुधाञ् (हि) धारणपोषणयोः-प्रहितं प्रेषिते प्रोक्तं, संहितं सन्धितं समम् ।
निक्षेपे निहितं ज्ञेय, माहितं तद्वदेव हि ॥ १५८ ॥
गदितं विहितं कृत्ये, पिहितापिहिते पुनः ।
आच्छादने, प्रकथनेऽभिहितं सम्यक्कीर्तितम् ॥ १५९ ॥
संधृते परिधानीये वस्त्रे परिहितं स्मृतम् ।
उक्तं चोपहितं प्राज्ञैरुपकारे पुरातनैः ॥ १६० ॥
अपकारे त्वपहितं, धातोः सन्धारणार्थजाः ।
फुल्ल विकसने-प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्ला विकासार्थभवाः स्मृताः ॥ १६१ ॥

---

+ आभा शोभेत्यर्थः । तथा चामरः—'अभिख्या नामशोभयोः' इति ॥
* 'प्रणीता' इति मातृका ॥

अन प्राणने–प्राणोदानसमानाश्चापानव्यानौ च वायवः ।
देहिनां देहिकृत्यार्थसातत्यगमनार्थजाः ॥ १६२ ॥
अञ्चु गतिपूजनयोः–प्राच्यवाची प्रतीची चाथोदीची च गतार्थजाः ।
शक्रान्तकजलेशैलविलानां क्रमशो दिशः ॥ १६३ ॥

उपसर्गवर्गः सम्पूर्णः ॥



॥ श्री जिनाय नमः ॥

# कलिकालसर्वज्ञभगवच्छ्रीहेमचन्द्राचार्यविरचित-तत्त्वप्रकाशिका--प्रकाशाभिधशब्दमहार्णवन्यासान्तर्गतं प्रादीनामर्थनिदर्शनम्

प्रादीनामर्थनिदर्शनमाचार्याः परानुग्रहार्थमारभन्ते । यथा— 'प्र' आदिकर्मोदीरणभृशार्थैश्वर्य-संभवातियोग-शुद्धीच्छा-प्रीति-शान्ति-पूजा-दर्शन-तत्पर-प्रशंसा-संग-दिग्योगावयववियोगान्तर्भाव-हिंसा-बहुत्व-महत्त्व-स्थिति-दान-नानार्थ-दक्षिणानुवृत्त्यादिषु । आदिकर्मणि-कर्तुमारब्धः प्रकृतः कटो देवदत्तेन । उदीरणे उदीर्णा मूषिका प्रबला मूषिकाः । भृशार्थे-भृशं वृद्धाः प्रवृद्धाः नद्यः । एश्वर्ये-ईश्वरो गृहस्य, प्रभवति गृहस्य, प्रभुर्देशस्य । संभवे-हिमवतो गङ्गा प्रभवति । नियोगे नियुक्ते सैन्ये प्रकृतः । शुद्धौ-प्रसन्ना आपः, प्रसन्ना द्यौः, प्रसन्नेन्द्रियः । इच्छार्थे इच्छति कन्यां प्रार्थयते कन्याम्, इच्छति परदारान् प्रकुरुते परदारान् । प्रीतौ-प्रीणाति राजा प्रसीदति राजा । शान्तौ-शान्तात्मा प्रश्रितः प्रशान्तः, प्रश्रितं वाक्यमाह । पूजायाम्—प्राञ्जलिः प्रह्वः । दर्शने-प्रियां दृष्ट्वा क्रीडति प्रक्रीडति । प्रशंसायाम्-शोभनं शास्त्रं प्रधानं शास्त्रम् । सङ्गे-प्रसक्तः प्रमत्तः । दिग्योगे-पूर्वा दिक् प्राची दिक् । अवयवे-पघणोऽगारस्य प्रगाणोऽगारस्य । वियोगे वियुक्तो वसति प्रवसति । अन्तर्भावे-अन्तर्भूतः प्रविष्टः, अन्तः क्षिप्तः प्रक्षिप्तः । हिंसायाम्-प्रहरति । बहुत्वे-बहुचौरो देशः प्रचौरो देशः । महत्त्वे-महानध्वा प्रकृष्टोऽध्वा स्थितौ शास्त्रं प्रमाणम्, लोकः प्रमाणम् । दाने-देवेभ्यो ददाति प्रयच्छति । नानार्थे नाना कीर्णा प्रकीर्णाः । नाना दक्षिणाः प्रदक्षिणम् । अनुवृत्तौ-अनुवृत्तः शिष्यः प्रशिष्य इति ॥

'परा' वध-घर्षण-स्वर्गति-विक्रमा-प्रत्यक्षानाभिमुख्य-भृशार्थ-मोह-प्रातिलोम्येषु । वधे-पराघातः । घर्षणे-परामर्शनम् । स्वगतौ स्वर्गतः परेतः । विक्रमे-पराक्रमः । अप्रत्यक्षे परोक्षम् । अनाभिमुख्ये-परावृत्तः पराङ्मुखः । भृशार्थे पराजितः । मोहे-पराभूतः । प्रातिलोम्ये-परावृत्तो युद्ध इति ॥

'अप' वर्जनवियोगालेखन-चौर्य-निर्देश-वैकृत-विधिविपर्यय-संग्रहणावयव-

पूजानिह्नवसव्यवृत्तिषु । वर्जने-अपसाकेताद् वृष्टो मेघः । वियोगे-अपयुक्ता गौर्वत्सेन । आलेखने-अपस्किरते वृषभः । चौर्ये-अपहरति । निर्देशे-अपदिशति परम् । वैकृते-अपजल्पति । विधिविपर्यये-अपशब्दः अपनयः । ऋणग्रहणे-अपमित्य याचते । अवयवे-अपस्करो रथाङ्गम् । पूजायाम्-अपचितो गुरुर्देवदत्तेन । निह्नवे शतमपजानीते, सहस्रमपजानीते । सव्यवृत्तौ अपसव्यं गच्छति ॥

'सम्'-मूर्ति-वचनैक्य-प्रभव-समन्ताद्भाव-भूषण-समवायाभिमुख्य-यौगपद्य-श्लेषण-भृशार्थ-दर्शनीयत्व-सादृश्यानास्थिताऽपिधान-क्रोध-मर्यादेर्ष्या-चीवरग्रहणास्पष्ट-प्रीतिस्वीकरणाल्पार्थाभ्यास-प्राधान्य-पुनःक्रियासु । मूर्तौ-संहता मूर्तिर्घटादीनाम् । वचनैक्ये एकवादः संवादः । प्रभवे-तिलेभ्यस्तैलं संभूतम् । समन्ताद्भावे-समन्ताद् गच्छति संगच्छते । भूषणे भूषिता कन्या संस्कृता कन्या । समवाये संकरः । आभिमुख्ये-समुत्तिष्ठति । यौगपद्ये युगपत्कृतः संकृतः । श्लेषणे-सन्धिः । भृशार्थे-सन्दहति । दर्शनीयत्वे-संस्थिता कन्या दर्शनीयेत्यर्थः । सादृश्ये-गोसंस्थानं गवयस्य । अनास्थिते-संस्थितः केतुः । अपिधाने-संवृतं द्वारम् । क्रोधे-संरम्भः । मर्यादायाम्-संस्था । ईर्ष्यायाम्-संलापः । चीवरग्रहणे-संचीवरयते भिक्षुः । अस्पष्टे संशयः । प्रीतौ-संभाषणम् । स्वीकरणे-संगृह्णाति । अल्पार्थे-समर्थम् । अभ्यासे-समीपम् । प्राधान्ये-समर्थः, सम्राट् । पुनःक्रियायाम्-पुनर्द्धावति संधावति, पुनस्तपति संतपति ॥ ४ ॥

'अनु' देशाधीष्ट-सामीप्य-स्वाध्याय-साम्यार्थाभावायति-निसर्ग-भृशार्थ-सादृश्यानुवृत्ति-हितार्थ-लक्षण-हीनार्थ-तृतीयार्थ-स्वाध्यायाधिवयवीप्सासु । देशे-अनुप्रदेशः । अधीष्टे-इन्द्रानुब्रूहि । सामीप्ये-अनुशोणं पाटलिपुत्रम् । स्वाध्याये-अनुपदम् अनुवाक्यम् । साम्ये अनुमतं अनुवदति । अर्थाभावे-अनुपतति । आयत्याम्-अनुशयः अनुबन्धः । निसर्गे-अनुज्ञातोऽसि । भृशार्थे-अनुरक्तः, अनुस्मरति । सादृश्ये अनुकरोति, अनुरूपम् । अनुवृत्तौ-सुवर्चला आदित्यमनुपर्येति । हितार्थे-अनुलोममनुक्रोशं करोति, अनुगृह्णाति । लक्षणे वृक्षमनु विद्योतते । हीने-अनुजिनभद्रगणि व्याख्यातारः । तृतीयार्थे-नदीमन्ववसिता सेना नद्या सहावबद्धेत्यर्थः । स्वाध्यायाधिक्ये-अनूचान उपाध्यायः । वीप्सायां-वृक्षमनुसिञ्चति ॥ ५ ॥

'अव' विज्ञानाधोभाव-स्पर्द्धा लम्बन-सामीप्य-शुद्धि-स्वादुकार-पदर्थ-व्याप्ति-भृशार्थ-निश्चय-परिभव-प्राप्ति-गाम्भीर्य-वृत्तान्त-वियोग-वर्चस्क देशाख्याऽहितक्रियाश्रयस्पर्शेषु । विज्ञाने-अवगच्छति । अधोभावे-अधःऽक्षेपणमवक्षेपणम् । स्पर्द्धायाम्-

अवक्षिपति मल्लौ मल्लं । आलम्बने-अवष्टभ्य यष्टिं गच्छति । सामीप्ये-अवष्टब्धा शरत् । शुद्धौ अवदातं मुखम् । स्वादुकारे अवदंशः पानस्य । ईषदर्थे-ईषल्लीढमवलीढम् । व्याप्तौ-अवकीर्णं पांशुभिः । भृशार्थे-अवगाढो दोषः । निश्चये-अवधृतं कार्यम् । परिभवे-अवमन्यते । प्राप्तौ-अवाप्तोऽर्थः । गाम्भीर्ये-अवस्थितः । वृत्तान्ते का अवस्था । वियोगे-अवमुक्तनुपूरा कन्या । वर्चस्के-अवस्करः । देशाख्यायाम्-अवकाशः । अहितक्रियायाम्-अवदुष्यन्ते कार्यं । आश्रये-अवलीनो वायसः । स्पर्शे अवगाहसुखं तोयम् ॥ ६ ॥

'निर्' वियोग-भृशार्था-भावात्यय-प्रादुर्भाव-हेत्व-वधारणा-देशा-तिक्रमणाभिनिःसरणेषु । वियोगे-वियुक्तः शल्ये निःशल्यः । भृशार्थे-भृशं दग्धः निर्दग्धः । अभावे-मक्षिकाणामभावो निर्मक्षिकं निर्मशकम् । अत्यये-अतीतमेघं नभः निर्मेघम् । प्रादुर्भावे-निर्मितं निष्पन्नम् । हेतौ-हेतुना उक्तं निरुक्तम् । अवधारणे-निश्चयः । आदेशे-निर्देशः । अतिक्रमणे-अतिक्रान्तः कौशाम्ब्या निष्कौशाम्बिः । अभिनिःस्सरणे-अभिनिःसृतजिह्वः निर्जिह्वः ॥ ७ ॥

'दुर्' ईषदर्थे-कुत्सा-वैकृत-व्यृद्धि-कृच्छ्रा-प्रतिनन्दनानीप्सासु । ईषदर्थे-दुर्बलः दुर्गृहीतः । कुत्सायाम्-दुर्गन्धः दुरन्तः । वैकृते-दुर्वर्णः दुश्चर्म्मा । व्यृद्धौ-कम्बोजानां व्यृद्धिः दुष्कम्बोजम् । कृच्छ्रे-कृच्छ्रेण क्रियते दुष्करम् । अप्रतिनन्दने असम्यगुक्तं दुरुक्तम्, अनीप्सायाम्-अनीप्सितभगा दुर्भगा ॥ ८ ॥

'वि' नानार्था-पाया-त्यय-भय-दूर-भृशार्थ-कलहै-श्वर्य-वियोग-मोह-हर्ष-कुत्सा प्रादुर्भावानाभिमुख्या-नवस्थान-प्राधान्य भोजन-संज्ञा-दाक्ष्य-व्यय-कृत्स्नाप्तिषु । नानार्थे-नाना चित्रं विचित्रम् । अपाये-विदुःखः विशोकः । अत्यये-व्यभ्रं नभः, विहिमः कालः । भये विषण्णः, विभीतः । दूरे-विकृष्टोऽध्वा । भृशार्थे-भृशं रुद्धा विरुद्धा नद्यः, भृशं रौति विरौति । कलहे-विग्रहः विवादः । ऐश्वर्ये-विभुर्देशस्य । वियोगे-विपुत्रः विभूषणः विशिरस्कः । मोहेविचितः विमनाः । हर्षे-विस्मितमुखः । कुत्सायाम्-कुत्सिभङ्गं यस्य स व्यङ्गः, विरूपः । प्रादुर्भावे-प्रादुर्भूतो लोहितः विलोहितः अनाभिमुख्ये विमुखः । अनवस्थाने विभ्रान्तः । प्राधान्ये-विशिष्टः । भोजने विपक्वम् । संज्ञायाम्-विष्किरः शकुनि विकिरो वा । दाक्ष्ये-दक्षो विक्रान्तः । व्यये-शतं विनयते सहस्रं विनयते । व्याप्तौ कृत्स्नमस्याप्तं शरीरं दोषैर्व्याप्तम् ८॥

'आङ्' मर्यादा-प्राप्ति-स्पर्श-लिप्सा-भय-श्लेष-कृच्छ्रा-दिकर्म-ग्रहण-नीड-समीप-विक्रियार्हणा तृष्ण्या-शीः-स्वीकरणे-षदर्था-भिविधि-क्रियायोगा-न्तर्भाव-स्पर्द्धा-भिमु-

ख्यो-र्ध्वकर्म-भृशार्थ-प्रादुर्भाव-समवाय-स्मरण-विस्मय-प्रतिष्ठा-निर्देश-शक्त्यप्रसाद-विहतानुबन्ध-पुनर्वसनेषु । मर्यादायाम्-आपाटलिपुत्राद् वृष्टो मेघः । प्राप्तौ-आसादितः । स्पर्शे-आलिप्तः आलभते । लिप्सायाम्-आकाङ्क्षति । भये-आविग्नः । श्लेषे-आलिङ्गति । कृच्छ्रे-आपत् । आदिकर्मणि-आरब्धः कर्तुम् । ग्रहणे-आलम्बते यष्टिम् । नीडे-आवसथः आलयः, आवासः । समीपे-आसन्नो देवः । विक्रियायाम्-आवृक्तं सुवर्णम्, आक्रन्दति बालः । अर्हणे आमन्त्रितः । आवृत्तौ-आवृत्तो दिवसः । आशिषि-आयुराशास्ते, पुत्रमाशास्ते । स्वीकरणे-आदत्ते फलानि, आदत्ते रसान् सूर्यः । ईषदर्थे ईषत्कृतिराकृतिः, आताम्रः आच्छाया। अभिविधौ-आकुमारं यशः शाकटायनस्य । क्रियायोगे-आयोगः एष्टिः । अन्तर्भावे-आपानमुदकम् । स्पर्द्धायाम् आह्वयते मल्लो मल्लम् । आभिमुख्ये-आगच्छति । ऊर्ध्वकर्मणि-आरोहति वृक्षम् । भृशार्थे-आधूता शाखा, आपीनानीव धेनूनां जघनानि प्रसुस्नुवुः । प्रादुर्भावे-आपन्नसत्त्वा स्त्री । समवाये आसेदा आकुलम् । स्मरणे-आभवतु विज्ञानम् । विस्मये-आश्चर्यम् । प्रतिष्ठायाम्-आस्पदम् । निर्देशे-आदिष्टम् । शक्तौ-आधर्षति । अप्रसादे-आविलमुदकम् । विहते-आकाशम् । अनुबन्धे-आयाति । पुनर्वचने-आम्रेडितम् ॥ ९ ॥

'नि' लेश-राशि-भृशार्था-धोभाव-प्रसाद-संन्यासा-र्था-र्थगत्यादेश-दारकर्मोपदर्शन-केतनोपरमणा-वृत्ति-बन्धन-दर्शना-दर्शना-वसान--कौशला--सेवा--नियम--समीपान्तर्भाव-मोक्ष-तमस्तापसान्ना-श्रय ग्रहण वर्ण-वृक्षा भावातिशयेषु । लेशे-लेशेन हसति निहसति, निहासः । निघर्षः । राशौ-धान्यनिकरः, यवनिकरः । भृशार्थे-भृशं गृहीतः निगृहीतः । अधोभावे-अधः पतति निपतति । प्रसादे-प्रसन्नं पानं निपानं निगता आपः । संन्यासे-निक्षेपः निश्रेणी । अर्थे-निधानम् । अर्थगतौ-गतार्थानि वाचयानि निगतानि वाक्यानि । आदेशे-आदिष्टः कर्तुं नियुक्तः कर्तुम् । दारकर्म्मणि-निविशते । उपदर्शने-अर्थं निदर्शयति । केतने-निमन्त्रयते । उपरमणे-निवृत्तः पापात् । आवृत्तौ निवृत्तः सूर्यः । बन्धने निगलम् । दर्शने-निध्यायति, निशामयति । अवसाने-निष्ठितम्, नितिष्ठति । कौशले-विद्यासु निष्णातः निपुणः । आसेवायाम्-नियतः पन्थाः नियतो रथः । नियमे-नियमः । समीपे-निपार्श्वः । अन्तर्भावे निपीतमुदकं निहितं द्रव्यम् । मोक्षे-निसृष्टम् । तमसि निहारः । तापसान्ने-निहारो व्रीहिः । आश्रये-निलयः निवासः । ग्रहणे-निग्रहः । वर्णे-नीलः । वृक्षे-नीपः । अभावे-निद्रव्यः । अतिशये न्यूनः, निपीडितः ॥ १० ॥

'प्रति' पुनःक्रियाऽऽदान-सादृश्य-हनन-निर्यातन-तद्योग-विनिमया-भिमुख्य-वामदिग्योग व्याप्त्या-ध्यान-मात्रार्थ-संभावन-तत्त्वाख्या-भाग-लक्षण-वारण-संबन्ध-वीप्सा-व्याधिस्थानेषु । पुनःक्रियायाम्-पुनरुक्ते प्रत्युक्तम् । आदाने-प्रतिगृह्णाति, प्रतियाचते । सादृश्ये-प्रतिरूपकम् । हनने-प्रतिहतं पापम् । निर्यातने-प्रतिकृतं प्रतीकारः । तद्योगे-प्रतिपन्नः प्रेष्यः । विनिमये तैलार्थी घृतं प्रतिददाति । आभिमुख्ये-प्रत्यग्नि शलभाः पतन्ति । वामे-प्रतिलोमं करोति । दिग्योगे-प्रतीची दिक् । व्याप्तौ-प्रतीकीर्णं पुष्पैः । आध्याने-प्रतिवेदयति मन्त्रम् । मात्रार्थे-सूपप्रति । संभावने-प्रत्ययः प्रतिपत्तिः । तत्त्वाख्यायाम्-शोभनो देवदत्तो धर्मं प्रति । भागे यदत्र मां प्रति स्यात् । लक्षणे-वृक्षं प्रतिविद्योतते । वारणे-प्रतिषिद्धः । संबन्धे अक्षसम्बद्धं प्रत्यक्षम् । वीप्सायाम्-वृक्षं वृक्षं प्रतिसिञ्चति । व्याधौ-प्रतिश्यायः । स्थाने-प्रतिष्ठितः ॥ ११ ॥

'परि' ईषदर्थ-व्याप्त्यु-पर्यर्थ-भृश-सान्त्व-समन्ताद्भाव-भूषण-पूजा-समवाय-वर्जनालिङ्गननिवसन-शोक-भोजन-लङ्घन वीप्साऽवज्ञान-तत्त्वाख्या-स्पर्श लक्षणा-भ्यावृत्ति-नियमेषु । ईषदर्थे पर्यग्निकृतं परिपेषितम् । व्याप्तौ-परिगतोऽग्निः परिवातम् । उपर्यर्थे-परिपूर्णः परिधानम् । अभ्यासे-गत्वा गत्वा आगच्छति परिगच्छति । सान्त्वे-परिगृह्णाति । समन्ताद्भावे-परिधावति परिवृत्तम् । भूषणे-सुवर्णपरिष्कृतमासनम् । पूजायाम्-परिचरति । समवाये-परिषत् । परिस्तरः । वर्ज्जने-परित्रिगर्त्तेभ्यो वृष्टो देवः, वर्ज्जयित्वा स्नाति परिस्नाति । आलिङ्गने-परिष्वजते कन्यां माणवकः । निवसने-परिधत्ते वासः । शोके-कृतं परिदेवयते । भोजने-प्राघूर्णान् परिवेषयति । लङ्घने-परिस्कन्दति । वीप्सायाम् वृक्षं वृक्षं परिसिञ्चति । अवज्ञाने-परिभवति । तत्त्वाख्यायाम् परिसंख्यातम् । स्पर्शे परिपक्वम् । लक्षणे-देवलक्षणे परिज्ञातश्चारः । अभ्यावृत्तौ-परिवृतः संवत्सरः । नियमे-परिसमाप्तम् ॥ १२ ॥

'उप' वर्ज्जन-प्रतियत्न-वैकृत वाक्याध्याहार-लवन-परीक्षा-संपत्सर्पण-गुह्यागः--क्षयसामर्थ्या-चार्यकरण-सादृश्य-स्वीकरण-पीडा-मन्त्रक्रिया-व्याप्ति--दोषाख्यान-युक्ति-संज्ञा-पूर्व कर्म्म-पूजा-दान-सामीप्या-धिक-हीन-लिप्सासु । वर्ज्जने-उपवासः उपवसति अशनवर्जनं करोति । प्रतियत्ने-एधोदकस्योपस्कुरुते । वैकृते-उपस्कृतं भुङ्क्ते उपस्कृतं सहते । वाक्याध्याहारे-सोपस्कारं वाक्यमाह । लवने-उपस्कीर्य मद्रका लुनन्ति । परीक्षायाम्-उपेक्षितव्यम् । संपदि उपपन्नस्य उपपन्ना शरत्,

उपपन्नवाक्यः साधुः । सर्पणे-उपसर्पति उपतिष्ठते कर्मकरः । गुह्ये-उपह्वरः उपांशुः उपगूर्णम् । आगसि-उपालम्भः उपाघातः । क्षये-उपक्षीणः उपयुक्तं द्रव्यम् । सामर्थ्ये उपचितः । आचार्यकरणे उपदिशति उपाध्यायः । सादृश्ये-उपमानम् । स्वीकरणे-उपगृह्णाति । पीडायाम्-स्तनोपपीडं शेते उपपीडितः । मन्त्रक्रियायाम्-उपनयते उपनयनम् । व्याप्तौ-उपकीर्णं सर्वतः । दोषाख्याने-उपघातः । युक्तौ-लवणोपसृष्टं देवोपसृष्टम् । संज्ञायाम्-उपधा उपसर्गः । पूर्वकर्मणि-उपक्रय उपकारः । पूजायाम् उपतिष्ठते देवम् उपस्थानम् उपचारः । दाने-उपहरत्यर्थम्, बलिमुपहरेत् । सामीप्ये-उपकुम्भम् उपमणिकम् । अधिके-उपखार्यां द्रोणः । हीने-उपार्ज्जुनं योद्धारः । लिप्सायाम्-उपयाचते उपसादितोऽर्थः ॥ १३ ॥

'अधि' अधिकारा-धिष्ठान-पाठो-पर्यैश्वर्य-बाधनाधिक्य-स्मरण-सहयोग स्ववशतासु । अधिकारे-अधिकारो राज्ञः,अधिकृतो ग्रामे । अधिष्ठाने मय्यधिष्ठितं अध्यात्मं कथा वर्तते । पाठे-अधीतं व्याकरणम् । उपर्यर्थे अधिरोहति, अधिक्रान्तम् । ऐश्वर्ये-अधिपतिर्देशस्य, अधिश्रेणिके मगधाः । बाधने-अधिकुरुते शत्रून् । आधिक्ये-अधिखार्यां द्रोणः । स्मरणे-मातुरध्येति, पितुरध्येति । सहयोगे—अधिवसति । स्ववशतायाम् आत्माधीनः ॥ १४ ॥

'अपि' पदार्थानुवृत्त्यपेक्षा-समुच्चयान्ववसर्ग-गर्हा-शीः-संभावन-भूषण-संवरण-प्रश्नावमर्षेषु । पदार्थे-सर्पिषोपि स्यात्, सर्पिषो मात्रापि स्यादित्यर्थः । अनुवृत्तौ अपि मा योजय ! अपेक्षायाम्-अयमपि विद्वान् । समुच्चये-अपि सिञ्च अपि स्तुहि अन्ववसर्गे-भवानऽपि च्छत्रं गृह्णातु । गर्हायाम्-अपि तत्र भवान् सावद्यं सेवते । आशिषि-अपि मे स्वस्ति पुत्राय अपि शिवं गोभ्यः । संभावने-अपि पर्वतं शिरसा भिन्द्यात् । भूषणे—अपि नह्यति हारम् । संवरणे—अपिहितं द्वारम् । प्रश्ने अपि कुशलम्, अपि गच्छामि । अवमर्षे—अपि भज्येय न नमेयम्, अपि काकः श्येनायते ॥ १५ ॥

सु पूजा-भृशार्थानुमति-समृद्धि-दृढाऽऽख्याऽकृच्छ्रेषु । पूजायाम्-पूजितो राजा सुराजा, सुगौः । भृशार्थे-सुसुप्तं सुषिक्तम् । अनुमतौ-सुकृतं सूक्तं सुदत्तम् । समृद्धौ समृद्धो देशः सुमगधं वर्तते, सुभद्रं वर्तते । दृढाख्यायाम्-सुबद्धं सुकृतम् । अकृच्छ्रे सुकरः कटो भवता ॥ १६ ॥

उत् प्राबल्य-संभव-लाभोर्ध्वकर्म-प्रकाशास्वस्थ-मोक्ष-दृश्य-समृद्धयत्ययान्याय-प्राधान्य-शक्त्यवरपर-दिग्योग-निर्देशेषु । प्राबल्ये-उद्बला-मूषिका. उद्गलं याति ।

संभवे-उद्गतो दर्पो नीचस्य । लाभे-उत्पन्नं द्रव्यम्, उदपादि भैक्षम् । ऊर्ध्वकर्मणि-आसनादुत्तिष्ठति । प्रकाशे-प्रकाशं चरति उच्चरति, उद्भवति । अस्वस्थे-उत्सुकः, उच्चितः, उन्मत्तः । मोक्षे उत्सृष्टः । दृश्ये-उत्सवः उद्यानम् । समृद्धौ-उत्थितं कुटुम्बम् । अत्यये अतीतमेघं नभ उन्मेघम् । अन्याये-उत्कुरुते कन्याम्, उत्कुरुते परदारान् । प्राधान्ये-उत्कृष्टोऽश्वः, उत्तमं कुलम् । शक्तौ-उत्सहते गन्तुम् । अत्र्यपरे उत्तरः । दिग्योगे उदीची दिक् । निर्देशे-उद्दिशति उद्देशः ॥ १७ ॥

अति पूजा—भृशार्थानुमत्यतिक्रमण समृद्धि-भूताभावावज्ञान-हीनार्थेषु । पूजायाम्-पूजितो राजा अतिराजा, अतिगौः । भृशार्थे अतिकृतम्, अतीसारः, अतिवृष्टिः । अनुमतौ-अतिचिन्तितम् । अतिक्रमणे-अतिक्रान्तोऽन्यान् स्थानतिरथः, अतिरि कुलम् । समृद्धौ-समृद्धो देशः अतिदेशः । भूताभावे-अतीतमेघं नभः । अवज्ञाने-अतिच्छिनत्ति, अतिहूतं धान्यम् । हीनार्थे-हीनं वाहयति अतिवाहयति ॥ १८ ॥

अभि आभिमुख्य-संनिकृष्ट-वशीकरणोर्ध्वकर्म-पूजा-कुल-सान्त्व-व्याप्तीच्छा दोषोल्वण-रूप-वचन-लक्ष्य-वीप्सा-नव-प्रणयेषु । आभिमुख्ये-अभितः । वशीकरणे अभिचरति मन्त्रैर्माणवकः कन्याम् । ऊर्ध्वकर्मणि-अभिरोहति वृक्षम् । पूजायाम्-अभिवादये । कुले-अभिजातो माणवकः । सान्त्वे-अभिमन्यते कन्याम् । व्याप्तौ-अभिकीर्णाः पांशुभिः । इच्छायाम्-अभिलषति मैथुनम् । दोषोल्वणे-अभिस्यन्दः । रूपे-अभिरूपो माणवकः । वचने-अभिधेयः साधुः । लक्ष्ये-अभिविध्यति । वीप्सायाम्-वृक्षं वृक्षमभिसिञ्चति । नवे-अभिनवं माल्यम् । प्रणये-अभिमन्त्रितोऽग्निः ॥ १९ ॥

## ॥ इति प्रादीनामर्थनिदर्शनम् ॥



# ॥ अथ विभक्तिप्रयोगविभागः ॥

पुरा. तदा. अथ यावद् ह शश्वदादियोगेऽद्यतनीह्यस्तनोपरोक्षावर्तमानाश्चतस्रो विभक्तयः ॥ यथा अवात्सुरिह पुराच्छात्राः अवसन् ऊषुः, वसन्ति वा ॥ तदाऽभाषिष्ट राघवः अभाषत, बभाषे, भाषते वा ॥ अथावोचन्महेश्वरः अब्रवीत्, उवाच आह वा ॥ यावद्गिरः खे अचारिषुः, अचरन् चेरुः, चरन्ति वा ॥ इति हाकार्षीत् अकरोत् चकार करोति वा ॥ शश्वदकार्षीत् अकरोत् चकार करोति वा ॥

स्मेन सहिते पुरादौ तु वर्तमानैव ॥ यथा नटेन स्म पुराऽधीयते ॥ इतिह स्मोपाध्यायः कथयति ( हशब्दोऽत्र स्मृत्यर्थे ) शश्वदधीते स्म बटुः ॥

ननावुपपदे पृष्टस्य प्रतिवचने भूतेऽर्थे वर्तमाना यथा किमकार्षीश्चैत्र कटम् ? ननु करोमि भोः ॥ ननु शब्दयोर्योगे भूतेऽर्थे वा वर्तमाना ( लट् ) अपाठीः किम् ? न पठामि नापाठिषम् ॥ कस्तत्रावोचत् ? अहं नु ब्रवीमि अवोचम् वा ॥ पुरा यावतोरुपपदयोर्भविष्यति वर्तमाना—यथा सत्वरं पुस्तकं गृहाण पुरा-अध्यापक आगच्छति ॥ अयं यावद् भुङ्क्ते तावत् प्रतीक्षस्व ॥

परिमाणार्थे तु न भवति यावद्दास्यते तावद्भोक्ष्यते ॥ ( यत्परिमाणमित्यर्थः ) कदा कर्ह्योर्योगे भविष्यति काले वा वर्तमाना (लट्) यथा कदा भुङ्क्ते, भोक्ष्यते, भोक्ता वा ॥ एवं कर्हि भुङ्क्ते भोक्षते भोक्ता वा ॥ भूते तु नित्यं परोक्षादयः ॥ कदा बुभुजे-इत्यादि ॥

विभक्त्यन्ते डतरडतमान्ते च किंवृत्ते ( किंशब्दनिष्पन्ने ) उपपदे प्रष्टुर्लब्धुमिच्छायां गम्यायां वर्त्स्यति ( भविष्यति ) वा वर्तमाना यथा—

कम्-कतरम्-कतमं वा भोजयसि-भोजयिष्यसि, भोजयितासि वा ॥

लब्धुमिष्यमाणान्तादेः स्वर्गाद्यवाप्तिलक्षणसिद्धौ गम्यायां वर्त्स्यति वा वर्तमाना ॥ यथा यो भिक्षां ददाति, दास्यति, दाता वा स स्वर्गं याति-यास्यति याता वा ॥ प्रैषानुज्ञावसराणाम् ( न्यक्कारपूर्वप्रेरणाकामचारानुमतिकर्तव्यकालप्राप्तीनाम् ) हेतौ वर्त्स्यति वा. वर्तमाना ॥ उपाध्यायश्चेदागच्छति आगमिष्यति आगन्ता वा, अथ त्वं सूत्रमधीष्व ॥ अत्रोपाध्यायागमनं प्रैषादेर्हेतुर्भवति ॥

ऊर्ध्वमौहूर्तिके (मुहूर्तादुपरितने, प्रैषादिहेतौ वर्त्स्यति सप्तमीवर्तमाने वा॥यथा-मुहूर्ताद् ऊर्ध्वं-परम्-उपरि,वा-उपाध्यायश्चेदा-गच्छेत् आगच्छति, आगमिष्यति,

आगन्ता वा अथ त्वं तर्कमधीष्व ॥ वर्तमानसमीपे भूते भविष्यति चार्थे वर्तमाना वा ॥ यथा कदागतोऽसि ? अयमागच्छामि अयमागमम् कदा मैत्र गमिष्यति । एष गच्छामि, गमिष्यामि वा ॥ अनागतः प्रियोऽर्थः प्राप्तुमिष्यमाण आशंस्यः तस्मिन्नर्थे भूतवत् सद्वच्च प्रत्ययाः भवन्ति–यथा देवश्चेदवर्षीत्–वर्षति वर्षिष्यति वा, धान्यमवाप्स्म वपामः वप्स्यामो वा॥ सामान्यातिदेशे विशेषस्यानतिदेशाद् ह्यस्तनी-परोक्षे न भवतः । अपिजात्वोरुपपदयोर्गर्हायां गम्यायां सर्वेषु कालेषु वर्तमाना ॥ यथा अपि तत्र भवान् जन्तून् हिनस्ति जातु तत्र भवान् अनृतं भाषते, धिग्गर्हामहे॥ ( अत्रापि जातुशब्दौ गर्हाद्योतकौ ) कथमित्युपपदे गर्हायां गम्यायां सर्वेषु कालेषु सप्तमीवर्तमाने वा भवतः ॥ सप्तमी ( लिङ् ) वर्तमाना ( लट् ) कथं धर्मं त्यजेः त्यजसि वा, धिग्गर्हामहे ॥ पक्षे ह्यस्तन्यादय आशीर्वर्जाः सर्वा अपि–कथं धर्म-मत्यजः, अत्याक्षीः, तत्यजिथ, त्यक्तासि, त्यक्ष्यसि ॥ सप्तमीनिमित्तमस्तीति भूते क्रियातिपतने वा क्रियातिपत्तिः, कथं धर्ममत्यक्ष्यः ॥ भविष्यति तु नित्यं क्रियातिपत्तिः–कथं नाम तत्र भवान् धर्ममत्यक्ष्यत् ॥

## अथ सप्तमी.

( विधिनिमन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थने ) विध्यादिविशिष्टेषु प्रत्ययार्थेषु धातोः सप्तमीपञ्चम्यौ–( लिङ् लोटौ ) भवतः ॥ विधिरप्राप्ते नियोगः क्रियायां प्रेरणे-त्यर्थः ।। अज्ञातज्ञापनमित्येके ॥ प्राणिनो न हिंस्यात् न हिनस्तु भवान्॥ प्रेरणा-यामेव यस्यां प्रत्याख्याने प्रत्यवायस्तन्निमन्त्रणम् इच्छामन्तरेणापि नियोगतः कर्तव्यमिति यावत् ॥ द्विसन्ध्यमावश्यकं कुर्यात्, करोतु भवान् ॥ यत्र प्रेरणा-यामेव प्रत्याख्याने कामचारस्तदामन्त्रणम् ॥ इहासीत, आस्तां भवान्, यदि रोचते ॥ प्रेरणैव सत्कारपूर्विकाऽधीष्टम् ॥ तत्त्वज्ञानं नः प्रसीदेयुः, प्रसीदन्तु वा गुरुपादाः ॥ तत्त्वज्ञानं कर्मतापन्नं–नोऽस्मभ्यं प्रसादपूर्वकं दधुरित्यर्थः॥ अथवा तत्त्वज्ञानं क्रियाविशेषणम् ॥ सम्प्रश्नः सम्प्रधारणा ॥ किं नु खलु भो व्याकरण-मधीयीय, अध्ययै, उत सिद्धान्तम् ॥ प्रार्थनं याञ्चा ॥ भो भोजनं लभेय, लभै, वा ॥ सामर्थ्यविषये सम्भावने ( श्रद्धाने ) गम्ये अलमर्थस्यानुक्तौ सप्तमी ( लिङ् ) ( सर्वविभक्त्यपवादः ) शक्यसम्भावने अपि मासमुपवसेत् ॥ प्रायेणायं मासमुपवस्तुं समर्थः, इत्यर्थः, ॥ अशक्यसम्भावने अपि शिरसा पर्वतं भिन्द्यात् ॥ प्रायेण पर्वतं भेत्तुमयं समर्थ इत्यर्थः ॥ अत्र सप्तमीनिमित्तमस्तीति भूते भविष्यति च क्रियातिपतने क्रियातिपत्तिः अपि पर्वतं शिरसाऽभेत्स्यत् ॥

अलमर्थोक्तौ तु न शक्तश्चैत्रो धर्मं करिष्यति ॥ किंवृत्ते उपपदे क्षेपे (गर्हायाम्) गम्ये सप्तमी भविष्यन्त्यौ ( लिङ्लृटौ ) ॥ सर्वविभक्त्यपवादः ॥ कः कतरः कतमो वा प्रभुं निन्देत्, निन्दिष्यति वा ॥ अत्रापि पूर्ववत् क्रियातिपत्तिः ॥ किं तत्र भवाननृतमवक्ष्यत् । पक्षे ब्रूयात् वक्ष्यति । भविष्यति तु नित्यं क्रियातिपत्तिः ॥ अकिंवृत्ते किंवृत्ते चोपपदे अश्रद्धामर्षयोर्गम्ययोः सप्तमीभविष्यन्त्यौ ॥ ( अश्रद्धा—असम्भावना, अमर्षोऽक्षमा ) सर्वविभक्त्यपवादः न श्रद्दधे, न सम्भावयामि वा तत्र भवानदत्तमाददीत, आदास्यते वा ॥ न श्रद्दधे नावकल्पयामि वा किमत्र भवान् गुरुं नाद्रियेत, आदरिष्यते वा ॥ न मर्षयामि, न क्षमे—तत्र भवान् हरिं गर्हेत, गर्हिष्यते वा ॥ अत्रापि क्रियातिपत्तिः पूर्ववत् ॥ जातु यद् यदा यदि—इत्येतेषूपपदेषु अश्रद्धामर्षयोर्गम्यमानयोर्धातोः सप्तमी ( लिङ् ) भविष्यन्त्यपवादः न श्रद्दधे न क्षमे वा जातु, यद् यदा यदि वा त्वादृशः सुरां पिबेत् ( जात्वादिशब्दाः अश्रद्धामर्षद्योतकाः ) अत्रापि भूते क्रियातिपतने वा क्रियातिपत्तिः न श्रद्दधे न क्षमे वा जातु, यद्, यदा, यदि वा तत्र भवान् सुरामपास्यत् पक्षे पिबेत् । भविष्यति तु नित्यं क्रियातिपत्तिः। क्षिप्रार्थे—आशंसार्थे चोपपदे—आशंस्येऽर्थे—वर्तमानाद्धातोर्यथासंख्यं भविष्यन्तीसप्तम्यौ ( भूतवच्चेत्यस्यापवादः ) उपाध्यायश्चेदागच्छति, आगमत्, आगमिष्यति वा क्षिप्रमाशुत्वरितं शीघ्रं वा सिद्धान्तम् अध्येष्यामहे ॥ श्वस्तनीविषयेऽप्येतद्वचनबलाद्भविष्यन्त्येव ॥ वृष्टिश्चेच्छ्वः शीघ्रमागमिष्यति, श्वःशीघ्रं वप्स्यामः ॥ गुरुश्चेदुपैति, उपागात्, उपैष्यति, उपैता वा आशंसे, अवकल्पये, संभावये वा युक्तोऽधीयीय ॥ द्वयोस्तूपपदयोः सप्तम्येव ( लिङेव ) आशंसे क्षिप्रमधीयीय ॥ हेतुभूते फलभूते च वत्स्र्यति सप्तमी वा ॥ यदि गुरुमुपासीत शास्त्रान्तं गच्छेत्, यदि गुरुमुपासिष्यते शास्त्रान्तं गमिष्यति ॥ ( अत्र ) गुरूपासनं हेतुः शास्त्रान्तगमनं फलम् ) भविष्यति क्रियातिपतने क्रियातिपत्तिः ॥ दक्षिणेन चेदयास्यन्न शकटं पर्याभविष्यत् ॥ हनिष्यतीति पलायिष्यते—इत्यत्र हेतु फलभावस्येति शब्देन द्योतितत्वान्न सप्तमी ॥ वर्तमानेऽर्थे—इच्छार्थाद्धातोः सप्तमी ( लिङ् ) वा भवति ॥ पक्षे वर्तमाना ( लट् ) ॥ चैत्रः सुखम्—इच्छेत्, इच्छति, उश्यात्, वष्टि कामयेत, कामयते वा क्षेपेऽपि जात्वोर्वर्तमाना, इत्यादावपि परत्वादयमेव विकल्पः ॥ अपि संयतस्सन्नकल्प्यं सेवितुमिच्छेत्, इच्छति वा, धिग्गर्हामहे ॥ इच्छार्थे धातावुपपदे प्रयोक्तुः कामोक्तौ गम्यायां ॥ सप्तमीपञ्चम्यौ ( लिङ्लोटौ ) अश्रद्धामर्षयोर्गर्हायाम् आश्चर्ये च

गम्ये यच्च यत्र शब्दयोरुपपदयोः सप्तमी ( लिङ् ) न श्रद्दधे न क्षमे वा यच्च यत्र वा त्वमेवं कुर्याः ॥ ( अत्र यच्च यत्र शब्दौ-अश्रद्धामर्षद्योतकौ ) यच्च यत्र वा तत्र भवानस्मानाक्रोशेत् धिग्गर्हामहे ॥ आश्चर्यं यच्च यत्र वा तत्र भवानकल्प्यं सेवेत ॥ शक्तेऽर्हे च कर्तरि गम्यमाने सप्तमी ॥ त्वं भारं वहेः ॥ ( वोढुं शक्त इत्यर्थः ) त्वं कन्यां वहेः । ( कन्यां वोढुं योग्य इत्यर्थः ) यच्छब्दप्रयोगे, कालादिपूपपदेषु सप्तमी ॥ कालः समये वेला वा यदधीयेत भवान् ॥ ( भवत्कर्तृकं यदध्ययनं तस्य काल इत्यर्थः) इच्छामि भुञ्जीत भुङ्क्तां वा भवान् ॥ अवसरः (प्राप्तकालता) तस्मिन् पञ्चमी ॥ अथ त्वं कुरु ॥ ( तव कर्तुमवसर इत्यर्थः ) भृशत्वाभीक्ष्ण्य-विशिष्टसर्वकालेऽर्थे धातोः सर्वविभक्तिसर्ववचनविषये पञ्चम्या हि स्वौ स्तः, यत एव धातोर्यस्मिन्नेव कारके हि स्वौ विधीयेते तत्रैव धातोस्तत्कारकविशिष्टस्यैव सम्बन्धेऽनुप्रयोगे सति ॥ तथा तध्वमौ बहुत्वविशिष्टे युष्मदि अभिधेये भवतः-हि स्वौ च यथाविधिधातोः सम्बन्धे ॥ लुनीहि लुनीहीत्येवायं लुनाति ॥ भृशं पुनः पुनर्वा लुनातीत्यर्थः ॥ ( गुणक्रियाणां क्रियान्तरैरव्यवहितानां साकल्यं फलातिरेको वा भृशत्वम् । प्रधानक्रियायाः क्रियान्तरैरव्यवहितायाः पौनः पुन्यम् आभीक्ष्ण्यम् ) ( प्रयोगे इति शब्दः सम्बन्धोपादानार्थः ) समुच्चये गम्ये सामान्यार्थस्य धातोः सम्बन्धे सति हिस्वौ बहुत्वविशिष्टे युष्मदि अभिधेये तध्वमौ च वा भवतः व्रीहीन् वप, लुनीहि, पुनीहीत्येव यतते ॥ पक्षे वपति लुनाति पुनातीत्येव यतते ॥ उभयतः सार्द्धरात्रमहरद्यतनकालः तस्मिन्नसति भूतेऽर्थे ह्यस्तनी ( लङ् ) अकरोत् ॥ हशश्वद्योगे पञ्चवर्षमध्यमप्रच्ये च भूतानद्यतने परोक्षेऽर्थे ह्यस्तनी परोक्षा-( लिट् ) च इति ह-अकरोत्-चकार वा ॥ शश्वदकरोत्-चकार वा ॥ आगच्छत्किम् ? जगाम किम् ? भूतानद्यतने परोक्षे परोक्षत्वेनाविवक्षिते ह्यस्तनी ॥ अभवत् सगरो राजा ॥ भूतेऽर्थेऽद्यतनी (लुङ्) अकार्षीत्-तपः ॥ विशेषस्याविवक्षायां व्यामिश्रणे च सति भूतेऽद्यतनी ॥ अपाम पयः ॥ रामो वनमगमत् ॥ अद्य श्वो वा अभुक्ष्महि ॥ माङ्युपपदे अद्यतनी । माकार्षीद्धर्मम् ॥ मा कुरु, इत्यादिप्रयोगाः स्वमतेऽसाधवः ॥ मतान्तरे तु साधवः-अङितो माशब्दप्रयोगात् ॥ स्मसहिते माङि उपपदे ह्यस्तनी अद्यतनी च ॥ मास्म करोत्, कार्षीद् वा ॥ ( अत्र माशब्देन निषेध उच्यते, स्मशब्देन स एव द्योत्यते ) संभावनम्-( हेतोः शक्तिश्रद्धानम् ) तस्मिन् विषये असिद्धेऽपि वस्तुनि सिद्धवत् प्रत्ययाः ॥ संभवे चेत्प्रयत्नोऽभूदुदभूवन् विभूतयः ॥ भूतानद्यतने परोक्षेऽर्थे परोक्षा- लिट्)

जघान कंसं कृष्णः ॥ कृतस्यापि व्यापारस्यास्मरणे, अत्यन्तनिह्नवे वा भूतेऽनद्यतनेऽर्थे परोक्षा ॥ सुप्तोऽहं किल विललाप ॥ कलिङ्गेषु त्वया ब्राह्मणो हतः इति पृष्ट आह-नाहं कलिङ्गान् जगाम इति ॥ आशिषि आशी पञ्चम्यौ ॥ जीयात्, जयतात् ॥ अनद्यतने भविष्यति श्वस्तनी- लुट् ) भवति श्वः कर्ता ॥ अद्य श्वो वा गमिष्यतीत्यत्र न भवति अनद्यतनग्रहणात् । श्वो गमिष्यतीत्यादि तु, पश्चात्-श्वः शब्देन योगात्साधु ॥ परिदेवने ( अनुशोचने ) गम्ये भविष्यति श्वस्तनी ॥ इयन्तु कदा गन्ता यैवं पादौ निदधाति ॥ धात्वर्थस्य सातत्ये सजातीयकालकृत सामीप्ये च गम्ये ह्यस्तनीश्वस्तन्यौ न भवतः ॥ यावज्जीवमन्नमदाद्दास्यति वा ॥ येयं पौर्णमास्यतिक्रान्ता तस्यां प्रद्युम्नमहः प्रावर्तिष्ट । येयममावास्यागामिनी तस्यामग्नीनाधास्यते ॥ देशस्यावधावुपपदे देशस्यैवार्वाग् एष्यति श्वस्तनी न भवति ॥ योऽयमध्वा गन्तव्य आपाटलिपुत्रात्तस्य यदवरं कौशाम्ब्यास्तत्र द्विर्भोक्ष्यामहे ॥ कालस्यावधावुपपदे कालस्यैवार्वाग्भागे एष्यत्यर्थे श्वस्तनी न भवति सोऽर्वाग्भागोऽहोरात्राणां सम्बन्धी न चेत् ॥ योऽयमागामी संवत्सरस्तस्य यदवरमाग्रहाण्यास्तत्र युक्ता अध्येष्यामहे ॥ अहोरात्रप्रयोगे तु योऽयं मास आगामी तस्य योऽवरः पञ्चदशरात्रस्तत्राध्येतास्महे ॥ कालस्यावधौ कालस्यैव परस्मिन् भागे एष्यति श्वस्तनी भविष्यन्ती च। आगामिनः संवत्सरस्य आग्रहाण्याः परस्ताद्द्विःसूत्रमध्येष्यामहे, अध्येतास्महे वा ॥ कालादन्यस्य परभागे तु आशत्रुञ्जयाद्गन्तव्येऽस्मिन्नध्वनि वलभ्याः परस्ताद्द्विरोदनं भोक्तास्महे यच्छब्दाप्रयोगे, स्मृत्यर्थे उपपदे भूतानद्यतनेऽर्थे भविष्यन्ती ( लृट् ) स्मरसि साधो स्वर्गे स्थास्यामः ॥ यच्छब्दप्रयोगे तु ह्यस्तनी-अभिजानासि कृष्ण यद्वने, अभुञ्ज्महि ॥ स्मृत्यर्थे उपपदे यद्यदि वा प्रयुज्यमाने प्रयोक्तुः क्रियान्तराकाङ्क्षायां सत्यां भूतानद्यतने वा भविष्यन्ती ॥ पक्षे ह्यस्तनी ॥ स्मरसि मित्र कश्मीरेषु वत्स्यामस्तत्रौदनं भोक्ष्यामहे स्मरसि मित्र कश्मीरेष्ववसाम तत्रौदनमभुञ्ज्महि । स्मरसि मित्र यत् कश्मीरेषु वत्स्यामः, अवसाम वा यत्तत्रौदनं भोक्ष्यामहे अभुञ्ज्महि वा ॥ ( अत्र वासो लक्षणं भोजनं लक्ष्यमिति लक्ष्यलक्षणयोः सम्बन्धे प्रयोक्तुराकाङ्क्षा भवति )

आश्चर्ये गम्ये यच्च यत्राभ्यामन्यस्मिन्नुपपदे यदिशब्दाप्रयोगे भविष्यन्ती ( सर्वविभक्त्यपवादः आश्चर्यमन्धो नामकृष्णं द्रक्ष्यति ॥ यदि प्रयोगे तु चित्रं यदि मूकोऽधीयीत ॥ ( अत्र जातु यद्यदा, इति सप्तमी ) किंकिलेति शब्दे अस्त्यर्थे चोपपदेऽश्रद्धामर्षयोर्गम्ययोर्भविष्यन्ती ॥ न श्रद्दधे न मर्षयामि वा किं किल त्वशूद्रान्नं भोक्ष्यसे ॥ ( किं किलेति समुदायः क्रोधद्योतकः ) अस्त्यर्थाः–अस्ति भवतिविद्यतयः ॥ न श्रद्दधे न मर्षये वा अस्ति भवति विद्यते वा परदारान् गमिष्यसि ॥ ( अत्र परदारान् गमिष्यसीत्यस्ति इत्यन्वयः ) हेतुफलकथनादिका सामग्री सप्तम्या अर्थः ( निमित्तम् ) तत्र भविष्यत्यर्थे धातोः कुतश्चिद्वैगुण्यात् क्रियायाः अनभिनिर्वृत्तौ सत्यां क्रियातिपत्तिः ( लृङ् ) भवति, स यदि गुरुनुपासिष्यत शास्त्रान्तमगमिष्यत् ॥ दक्षिणेन चेदयास्यः न शकटं पर्याभविष्यत् ॥ अगुरूपसनं दक्षिणगमनञ्च हेतुः शास्त्रान्तगमनमपर्याभवनञ्च फलम् ) क्रियाया अनिष्पत्तौ सत्यां सप्तम्यर्थे भूते क्रियातिपत्तिः ॥ यद्ययं धनमदास्यत् ततो विश्वेऽपि यशः प्रासरिष्यत् ॥

॥ इति विभक्तिप्रयोगविभागः ॥



| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चिन्त | चिन्तित | चिन्तितवत् | चिन्तयत् | चिन्तयमान | चिन्तयित्वा | सञ्चिन्त्य | चिन्तयितुम् |
| चुद् | चोदित | चोदितवत् | चोदयत् | चोदयमान | चोदयित्वा | सचोद्य | चोदयितुम् |
| चुर् | चोरित | चोरितवत् | चोरयत् | चोरयमाण | चोरयित्वा | सञ्चोर्य | चोरयितुम् |
| छम् | छान्त | छान्तवत् | छमत् | | छमित्वा छान्त्वा | आछम्य | छमितुम् |
| छिद् | छिन्न | छिन्नवत् | छिन्दन् | छिन्दान | छित्वा | प्रच्छिद्य | छेत्तुम् |
| जन् | जात | जातवत् | | जायमान | जनित्वा | सञ्जन्य | जनितुम् |
| जप् | जपित | जपितवत् | जपत् | | जपित्वा | प्रजप्य | जपितुम् |
| जल्प् | जल्पित | जल्पितवत् | जल्पत् | | जल्पित्वा | प्रजल्प्य | जल्पितुम् |
| जागृ | जागरित | जागरितवत् | जाग्रत् | | जागरित्वा | प्रतिजागर्य | जागरितुम् |
| जि | जित | जितवत् | जयत् | विजयमान | जित्वा | विजित्य | जेतुम् |
| जीव | जीवित | जीवितवत् | जीवत् | | जीवित्वा | सञ्जीव्य | जीवितुम् |
| ज्ञा | ज्ञात | ज्ञातवत् | जानत् | जानान | ज्ञात्वा | विज्ञाय | ज्ञातुम् |
| झट | झटित | झटितवत् | झटत् | | झटित्वा | प्रझट्य | झटितुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कम्प् | कम्पित | कम्पितवत् | कम्पयत् | ... | कम्पयित्वा | प्रकम्प्य | कम्पयितुम् |
| कृ | कृत | कृतवत् | कुर्वत् | कुर्वाण | कृत्वा | संस्कृत्य | कर्तुम् |
| कॄत् | कीर्ण | कीर्णवत् | किरत् | ... | कीर्त्वा | विकीर्य | करीतुम् करितुम् |
| कॄ | कीर्ण | कीर्णवत् | कृणत् | ... | कीर्त्वा | विकीर्य | ” |
| क्री | क्रीत | क्रीतवत् | क्रीणत् | क्रीणान | क्रीत्वा | विक्रीय | विक्रेतुम् |
| क्री | क्रीडित | क्रीडितवत् | क्रीडत् | ... | क्रीडित्वा | संक्रीड्य | क्रीडितुम् |
| क्षल् | क्षालित | क्षालितवत् | क्षालयत् | क्षालयमान | क्षालयित्वा | प्रक्षाल्य | क्षालयितुम् |
| क्षिप् | क्षिप्त | क्षिप्तवत् | क्षिपत् | | क्षिप्त्वा | प्रक्षिप्य | क्षेप्तुम् |
| क्षुद् | क्षुण्ण | क्षुण्णवत् | क्षुन्दत् | क्षुन्दान | क्षुत्वा | संक्षुद्य | क्षोत्तुम् |
| क्षुभ् | क्षुभित | क्षुभितवत् | क्षुभ्नत् | | क्षुभित्वा क्षोभित्वा | प्रक्षुभ्य | क्षोभितुम् |
| खन् | खात | खातवत् | खनत् | | खात्वा, खनित्वा | प्रखन्य | खनितुम् |
| खिद् | खिन्न | खिन्नवत् | | खिन्दान | खित्वा | संखिद्य | खेत्तुम् |
| गज | गजित | गजितवत् | गजत् | | गजित्वा | प्रगज्य | गजितुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | ल्यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गण् | गणित | गणितवत् | गणयत् | गणयमान | गणयित्वा | विगणय्य | गणयितुम् |
| गद् | गदित | गदितवत् | गदत् | | गदित्वा | अनुगद्य | गदितुम् |
| गम् | गत | गतवत् | गच्छत् | | गत्वा | आगम्य आगत्य | आगन्तुम् |
| गल् | गलित | गलितवत् | गलत् | | गलित्वा | निगल्य | गलितुम् |
| गल्भ् | गल्भित | गल्भितवत् | | गल्भमान | गल्भित्वा | प्रगल्भ्य | गल्भितुम् |
| गॄ | गीर्ण | गीर्णवत् | गिरत् | | गीर्त्वा | निगीर्य | गरीतुम् गरितुम् |
| ग्रन्थ् | ग्रथित | ग्रथितवत् | ग्रथ्नत् | | ग्रथित्वा | सङ्ग्रथ्य | ग्रन्थितुम् |
| ग्रह् | गृहीत | गृहीतवत् | गृह्णत् | गृह्णान | गृहीत्वा | निगृह्य | ग्रहीतुम् |
| गन्ध | गन्धित | गन्धितवत् | गन्धयत् | | गन्धित्वा | प्रगन्ध्य | गन्धितुम् |
| घ्रा | घ्रात, घ्राण | घ्रातवत् घ्राणवत् | जिघ्रत् | | घ्रात्वा | आघ्राय | घ्रातुम् |
| चर् | चरित | चरितवत् | चरत् | | चरित्वा | आचर्य | चरितुम् |
| चल् | चलित | चलितवत् | चलत् | | चलित्वा | सञ्चल्य | चलितुम् |
| चि | चित | चितवत् | चिन्वत् | चिन्वान | चित्वा | प्रचित्य | चेतुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ | इत | इतवत् | यत् | | इत्वा | उपेत्य | एतुम् |
| अधि इ | अधीत | अधीतवत् | | अधीयान | | अधीत्य | अध्येतुम् |
| इन्ध् | इद्ध | इद्धवत् | | इन्धान | इन्धित्वा | समिध्य | इन्धितुम् |
| इष् | इष्ट | इष्टवत् | इच्छत् | | एषित्वा, इष्ट्वा | प्रेष्य | एषितुं, एष्टुम् |
| ईर् | ईरित | ईरितवत् | ईरयत् | ईरयमाण | ईरयित्वा | प्रेर्य | ईरयितुम् |
| उज्झ् | उज्झित | उज्झितवत् | उज्झत् | | उज्झित्वा | प्रोज्झ्य | उज्झितुम् |
| उभ् | उभित | उभितवत् | उभत् | | ओभित्वा | समुभ्य | ओभितुम् |
| उष | उषित | उषितवत् | उषत् | | ओषित्वा | प्रोष्य | ओषितुम् |
| ऊह् | ऊहित | ऊहितवत् | समूहत् | समूहमान | ऊहित्वा | समुह्य | ऊहितुम् |
| ऋच् | ऋचित | ऋचितवत् | ऋचत् | | अर्चित्वा | समृच्य | अर्चितुम् |
| ओख | ओखित | ओखितवत् | ओखत् | | ओखित्वा | प्रोख्य | ओखितुम् |
| ओण् | ओणित | ओणितवत् | ओणत् | | ओणित्वा | समोण्य | ओणितुम् |
| कथ् | कथित | कथितवत् | कथयत् | कथयमान | कथयित्वा | संकथ्य | कथयितुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | शानच् | क्त्वा | ल्यप् | तुमुन् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| डप् | डपित | डपितवत् | डपत् | | डपित्वा | प्रडप्य | डपितुम् |
| तड् | ताडित | ताडितवत् | ताडयत् | ताडयमान | ताडयित्वा | संताडय | ताडयितुम् |
| तन् | तत | ततवत् | तन्वत् | तन्वान | तनित्वा, तत्वा | वितत्य | तनितुम् |
| तप् | तप्त | तप्तवत् | तपत् | तपमान | तप्त्वा | संतप्य | तप्तुम् |
| तुल् | तोलित | तोलितवत् | तोलयत् | तोलयमान | तोलयित्वा | प्रतोल्य | तोलयितुम् |
| तुष् | तुष्ट | तुष्टवत् | तुष्यत् | | तुष्ट्वा | संतुष्य | तोष्टुम् |
| तॄ | तीर्ण | तीर्णवत् | तरत् | | तीर्त्वा | वितीर्य | तरितुम्<br>तरीतुम् |
| दण्ड | दण्डित | दण्डितवत् | दण्डयत् | दण्डयमान | दण्डयित्वा | सन्दण्डय | दण्डयितुम् |
| दल् | दलित | दलितवत् | दलत् | | दलित्वा | प्रदल्य | दलितुम् |
| दह् | दग्ध | दग्धवत् | दहत् | | दग्ध्वा | सन्दह्य | दग्धुम् |
| दा | दत्त | दत्तवत् | ददत् | ददान | दत्त्वा | व्यादाय | दातुम् |
| दिश् | दिष्ट | दिष्टवत् | दिशत् | | दिष्ट्वा | उपदिश्य | देष्टुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिह् | दिग्ध | दिग्धवत् | दिहत् | दिहान | दिग्ध्वा | सन्दिह्य | देग्धुम् |
| दुह् | दुग्ध | दुग्धवत् | दुहत् | दुहान | दुग्ध्वा | प्रदुह्य | दोग्धुम् |
| दृश् | दृष्ट | दृष्टवत् | पश्यत् | | दृष्ट्वा | सन्दृश्य | द्रष्टुम् |
| दॄ | दीर्णदारित | दीर्णवत् दारितवत् | दृणत् दारयत् | दारयमाण | दीर्त्वा, दारयित्वा | विदीर्य विदार्य | दरितुम्, दरीतुम् दारयितुम् |
| दो | दित | दितवत् | द्यत् | | दीत्वा | प्रदाय | दातुम् |
| द्युत् | द्युतित | द्युतितवत् | | द्योतमान | द्युतित्वा द्योतित्वा | प्रद्युत्य | द्योतितुम् |
| घ्रा | घ्राणः | घ्राणवत् | घ्रात् | | घ्रात्वा | निघ्राय | घ्रातुम् |
| द्विष् | द्विष्ट | द्विष्टवत् | द्विषत् | द्विषाण | द्विष्ट्वा | विद्विष्य | द्वेष्टुम् |
| धा | हित | हितवत् | दधत् | दधान | हित्वा | निधाय | धातुम् |
| धाव् | धावित | धावितवत् | धावत् | धावमान | धावित्वा धौत्वा | प्रधाव्य | धावितुम् |
| धृ | धृत | धृतवत् | धरत् | धरमाण | धृत्वा | उद्धृत्य | धर्तुम् |
| ध्मा | ध्मात | ध्मातवत् | धमत् | | ध्मात्वा | आध्माय | ध्मातुम् |
| नद् | नदित | नदितवत् | नदत् | | नदित्वा | प्रणद्य | नदितुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | ल्यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नम् | नत | नतवत् | नमत् | | नत्वा | प्रणम्य<br>प्रणत्य | नन्तुम् |
| नश् | नष्ट | नष्टवत् | नश्यत् | | नशित्वा<br>नंष्ट्वा | प्रणश्य | प्रणंष्टुम्<br>प्रणशितुम् |
| नह् | नद्ध | नद्धवत् | नह्यत् | नह्यमान | नद्ध्वा | अपिनह्य | नद्धुम् |
| निज् | निक्त | निक्तवत् | नेनिजित् | नेनिजान | निक्त्वा | अवनिज्य | नेक्तुम् |
| नी. | नीत | तव | नयत् | नयमान | नीत्वा | आनीय | नेतुम् |
| नु | नुत | नुतवत् | नुवत् | | नुत्वा | प्रणुत्य | नोतुम् |
| नृत् | नृत्त | नृत्तवत् | नृत्यत् | | नर्त्तित्वा | प्रनृत्य | नर्तितुम् |
| पच् | पक्व | पक्ववत् | पचत् | पचमान | पक्त्वा | सम्पच्य | पक्तुम् |
| पठ् | पठित | पठितवत् | पठत् | | पठित्वा | प्रपठ्य | पठितुम् |
| पत् | पतित | पतितवत् | पतत् | | पतित्वा | प्रपत्य | पतितुम् |
| पा | पीत | पीतवत् | पिबत् | | पीत्वा | प्रपाय | पातुम् |
| पां्क्ष | पात | पातवत् | पात् | | पात्वा | प्रपाय | पातुम् |
| पिष | पिष्ट | पिष्टवत् | पिंषत् | | पिष्ट्वा | सम्पिष्य | पेष्टुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पुष् | पुष्ट | पुष्टवत् | पुष्यत् | | पुष्ट्वा | सम्पुष्य | पोष्टुम् |
| पू | पूत | पूतवत् | पुनत् | पुनान | पूत्वा | उत्पूय | पवितुम् |
| पूज् | पूजित | पूजितवत् | पूजयत् | पूजयमान | पूजयित्वा | सम्पूज्य | पूजयितुम् |
| पृ | व्यापृत | व्यापृतवत् | | प्रियमाण | पृत्वा | व्यापृत्य | व्यापर्तुम् |
| प्रच्छ् | पृष्ट | पृष्टवत् | पृच्छत् | | पृष्ट्वा | परिपृच्छ्य | प्रष्टुम् |
| प्रथ् | प्रथित | प्रथितवत् | प्रथयत् | प्रथयमान | प्रथयित्वा | परिप्रथय्य | प्रथयितुम् |
| प्री | प्रीत | प्रीतवत् | प्रीणत् | प्रीणान | प्रीत्वा | सम्प्रीय | प्रेतुम् |
| फण् | फणित | फणितवत् | फणत् | | फणित्वा | सम्फण्य | फणितुम् |
| फल् | फलित | फलितवत् | फलत् | | फलित्वा | सम्फल्य | फलितुम् |
| बन्ध् | बद्ध | बद्धवत् | बध्नत् | | बद्ध्वा | आबध्य | बद्धुम् |
| भज | भक्त | भक्तवत् | भजत् | भजमान | भक्त्वा | विभज्य | भभक्तुम् |
| भञ्ज | भग्न | भग्नवत् | भञ्जत् | | भक्त्वा<br>भङ्क्त्वा | सम्भज्य | भङ्क्तुम् |
| भष् | भषित | भषितवत् | भषत् | | भषित्वा | सम्भष्य | भषितुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | ल्यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भा | भात | भातवत् | भात | | भात्वा | विभाय | भातुम् |
| भिद् | भिन्न | भिन्नवत् | भिन्दत् | भिन्दान | भित्वा | विभिद्य | भेत्तुम् |
| भी | भीत | भीतवत् | बिभ्यत् | | भीत्वा | सम्भीय | भेतुम् |
| भुज् | भुक्त | भुक्तवत् | भुञ्जत् | भुञ्जान | भुक्त्वा | उपभुज्य | भोक्तुम् |
| भू | भूत | भूतवत् | भवत् | | भूत्वा | सम्भूय | भवितुम् |
| भूष् | भूषित | भूषितवत् | भूषयत् | भूषयमाण | भूषयित्वा | सम्भूष्य | भूषयितुम् |
| भृ | भृत | भृतवत् | बिभ्रत् | बिभ्राण | भृत्वा | सम्भृत्य | भर्तुम् |
| मथ् | मथित | मथितवत् | मथत् | | मथित्वा | प्रमथ्य | मथितुम् |
| मद् | मत्त | मत्तवत् | माद्यत् | | मदित्वा | सम्मद्य | मदितुम् |
| मन् | मत | मतवत् | | मन्यमान | मत्वा | सम्मत्य | मन्तुम् |
| मन् | मत | मतवत् | | मन्वान | मनित्वा, मत्वा | सम्मत्य | मनितुम् |
| मन्त्र | मन्त्रित | मन्त्रितवत् | | मन्त्रयमाण | मन्त्रयित्वा | सम्मन्त्र्य | मन्त्रयितुम् |
| मन्थ् | मथित | मथितवत् | मथ्नत् | | मथित्वा, मन्थित्वा | प्रमथ्य | मथितुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मा | मित | मितवत् | | निर्मिमाणः | मित्वा | प्रमाय | मातुम् |
| मुच् | मुक्त | मुक्तवत् | मुञ्चत् | मुञ्चमान | मुक्त्वा | विमुच्य | मोक्तुम् |
| मुष् | मुषित | मुषितवत् | मुष्णत् | | मुषित्वा | परिमुष्य | मोषितुम् |
| यज् | इष्ट | इष्टवत् | यजत् | यजमान | इष्ट्वा | प्रेज्य | यष्टुम् |
| यस् | यस्त | यस्तवत् | यस्यत्,यसत् | | यसित्वा | प्रयस्य | प्रयसितुम् |
| या | यात | यातवत् | यात् | | यात्वा | प्रयाय | यातुम् |
| युज् | युक्त | युक्तवत् | युञ्जत् | युञ्जान | युक्त्वा | प्रयुज्य | योक्तुम् |
| युध् | युद्ध | युद्धवत् | | युध्यमान | युद्ध्वा | संयुध्य | योद्धुम् |
| रक्ष् | रक्षित | रक्षितवत् | रक्षत् | | रक्षित्वा | संरक्ष्य | रक्षितुम् |
| रच | रचित | रचितवत् | रचयत् | रचयमान | रचयित्वा | विरचय्य | रचयितुम् |
| रट | रटित | रटितवत् | रटत् | | रटित्वा | संरट्य | रटितुम् |
| रम् | रत | रतवत् | विरमत् | रममाण | रत्वा | विरम्य, विरत्य | रन्तुम् |
| रुद् | रुदित | रुदितवत् | रुदत् | | रुदित्वा | विरुद्य | रोदितुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | ल्यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रुध् | रुद्ध | रुद्धवत् | रुन्धत् | रुन्धान | रुद्ध्वा | संरुध्य | रोद्धुम् |
| लज्ज् | लज्जित | लज्जितवत् | | लज्जमान | लज्जित्वा | प्रलज्ज्य | लज्जितुम् |
| लप् | लपित | लपितवत् | लपत् | | लपित्वा | प्रलप्य | लपितुम् |
| लभ् | लब्ध | लब्धवत् | | लभमान | लब्ध्वा | उपलभ्य | लब्धुम् |
| लष् | लषित | लषितवत् | लष्यत्, लषत् | | लषित्वा | अभिलष्य | लषितुम् |
| लिख् | लिखित | लिखितवत् | लिखत् | | लिखित्वा, लेखित्वा | विलिख्य | लेखितुम् |
| लिप् | लिप्त | लिप्तवत् | लिम्पत् | लिम्पमान | लिप्त्वा | विलिप्य | लेप्तुम् |
| ली | लीन | लीनवत् | लिनत् | | लीत्वा | विलीय | लेतुम्, लातुम् |
| लू | लून | लूनवत् | लुनत् | लुनान | लूत्वा | प्रलूय | लवितुम् |
| वद् | उदित | उदितवत् | वदत् | | उदित्वा | प्रोद्य | वदितुम् |
| वाद् | वादित | वादितवत् | | वादयमान | वादयित्वा | अभिवाद्य | वादयितुम् |
| वन् | वत | वनवत् | | वन्वान | वनित्वा, वत्वा | संवन्य | वनितुम् |
| वप् | उप्त | उप्तवत् | वपत् | | उप्त्वा | निरुप्य | वप्तुम् |
| वस् | उषित | उषितवत् | वसत् | | उषित्वा | प्रोष्य | वस्तुम् |
| वश् | वशित | वशितवत् | | वशान | वशित्वा | संवश्य | वशितुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ण् | वर्णित | वर्णितवत् | वर्णयत् | वर्णयमान | वर्णयित्वा | संवर्ण्य | वर्णयितुम् |
| वर्ष् | वर्षित | वर्षितवत् | वर्षत् | | वर्षित्वा | संवर्ष्य | वर्षितुम् |
| वह्<br>विद् | ऊढ<br>विन्न<br>निर्विण्ण | ऊढवत्<br>विन्नवत्<br>निर्विन्नवत् | वहत् | वहमान<br>विद्यमान | ऊढ्वा<br>वित्वा | उह्य<br>संविद्य | वोढुम्<br>वेत्तुम् |
| विद् | विदित | विदितवत् | विदत् विद्वान् | | विदित्वा | संविद्य | वेदितुम् |
| विश् | विष्ट | विष्टवत् | विशत् | | विष्ट्वा | निविश्य | वेष्टुम् |
| विष् | विष्ट | विष्टवत् | वेविषत् | वेविषाण | विष्ट्वा | परिविष्य | वेष्टुम् |
| वृ | वृत | वृतवत् | वृण्वत् | वृण्वान | वृत्वा | परिवृत्य | वरितुं, वरीतुम् |
| वृत् | वृत्त | वृत्तवत् | | वर्तमान | वर्तित्वा, वृत्वा | निवृत्य | वर्तितुम् |
| वृष् | वृष्ट | वृष्टवत् | वर्षत् | | वर्षित्वा, वृष्ट्वा | अभिवृष्य | वर्षितुम् |
| वॄ | वूर्ण | वूर्णवत् | वृणत् | | वूर्त्वा | परिवूर्य | वरितुं, वरीतुम्, |
| वे<br>शंस्<br>शक् | उत<br>शस्त<br>शक्त | उतवत्<br>शस्तवत्<br>शक्तवत् | वयत्<br>शंसत्<br>शक्नुवत् | वयमान | उत्वा<br>शंसित्वा, शस्त्वा<br>शक्त्वा | प्रवाय<br>प्रशस्य<br>प्रशक्य | वातुम्<br>शंसितुम्<br>शक्तुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | ल्यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शप् | शप्त | शप्तवत् | शपत् | शपमान | शप्त्वा | संशप्य | शप्तुम् |
| शम् | शान्त | शान्तवत् | शाम्यत् | | शान्त्वा, शमित्वा | प्रशम्य | शमितुम् |
| शश् | शशित | शशितवत् | शशत् | | शशित्वा | प्रशश्य | शशितुम् |
| शिष् | शिष्ट | शिष्टवत् | शिषत् | | शिष्ट्वा | विशिष्य | शेष्टुम् |
| शी | शयित | शयितवत् | | शयान | शयित्वा | उपशय्य | शयितुम् |
| श्रु | श्रुत | श्रुतवत् | शृण्वत् | | श्रुत्वा | संश्रुत्य | श्रोतुम् |
| श्लिष् | श्लिष्ट | श्लिष्टवत् | श्लिष्यत् | | श्लिष्ट्वा | आश्लिष्य | श्लेष्टुम् |
| श्वस् | श्वसित | श्वसितवत् | श्वसत् | | श्वसित्वा | निश्वस्य | श्वसितुम् |
| सन् | सात | सातवत् | सन्वन् | सन्वान | सनित्वा, सात्वा | संसन्य | सनितुम् |
| साध् | साद्ध | साद्धवत् | साध्नुवत् | | साद्ध्वा | संसाध्य | साद्धुम् |
| सिच् | सिक्त | सिक्तवत् | सिञ्चत् | सिञ्चमान | सिक्त्वा | परिषिच्य | सेक्तुम् |
| सु | सुत | सुतवत् | सुन्वत् | सुन्वान | सुत्वा | प्रसुत्य | सोतुम् |
| सू | सूत | सूतवत् | | सूयमान | सूत्वा | प्रसूय | सोतुम्, सवितुम् |
| सृ | सृत | सृतवत् | सरत् | | सृत्वा | अनुसृत्य | सर्तुम् |
| सेव् | सेवित | सेवितवत् | | सेवमान | सेवित्वा | प्रसेव्य | सेवितुम् |
| स्तु | स्तुत | स्तुतवत् | स्तुवत् | स्तुवान | स्तुत्वा | संस्तुत्य | स्तोतुम् |

| धातवः | क्त | क्तवतु | शतृ | आनश् | क्त्वा | यप् | तुम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्तृ | स्तृत | स्तृतवत् | स्तृण्वत् | स्तृण्वान | स्तृत्वा | आस्तृत्य | स्तर्तुम् |
| स्तॄ | स्तीर्ण | स्तीर्णवत् | स्तृणत् | स्तृणान | स्तीर्त्वा | आस्तीर्य | स्तरीतुम्,तुम्, स्तरितुम् |
| स्था | स्थित | स्थितवत् | तिष्ठत् | प्रतिष्ठमान | स्थित्वा | प्रस्थाय | स्थातुम् |
| स्ना | स्नात | स्नातवत् | स्नात् | | स्नात्वा | प्रस्नाय | स्नातुम् |
| स्निह् | स्निग्ध स्नीढ | स्निग्धवत् स्नीढवत् | स्निह्यत् | | स्निहित्वा,स्निग्ध्वा.स्नीढ्वा स्नेहित्वा | संस्निह्य | स्नेहितुम् |
| स्पृश् | स्पृष्ट | स्पृष्टवत् | स्पृशत् | | | संस्पृश्य | स्प्रष्टुम् |
| स्पृह् | स्पृहित | स्पृहितवत् | स्पृहयत् | स्पृहयमाण | स्पृहयित्वा | संस्पृहय्य | स्पृहयितुम् |
| हन् | हत | हतवत् | घ्नत् | आघ्नान | हत्वा | आहत्य | हन्तुम् |
| हस् | हसित | हसितवत् | हसत् | | हसित्वा | विहस्य | हसितुम् |
| हा | हीन | हीनवत् | जहत् | | हित्वा | विहाय | हातुम् |
| हि | हित | हितवत् | हिन्वत् | | हित्वा | प्रहित्य | हेतुम् |
| हु | हुत | हुतवत् | जुह्वत् | | हुत्वा | संहुत्य | होतुम् |
| हृ | हृत | हृतवत् | हरत् | हरमाण | हृत्वा | संहृत्य | हर्तुम् |
| ह्री | ह्रीत, ह्रीण | ह्रीणवत्, ह्रीतवत् | जिह्रियत् | | ह्रीत्वा | प्रह्रीय | ह्रेतुम् |
| ह्वे | हूत | हूतवत् | ह्वयत् | ह्वयमान | हूत्वा | आहूय | ह्वातुम् |

इतिश्रीतपोगच्छाधिराजसकलस्वपरसमयपारावारपारीण—तीर्थसंरक्षणप्रवण-विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्च-कसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्यश्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पति-शास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्य मुनिगुणविजयविरचितायां

॥ हैमधातुमालायां कृदन्तप्रकरणम् ॥

# ॥ सेडनिट्कारिकाः ॥

---- :o: ----

यद्यपि धातुपाठेष्वेव सेट्त्वानिट्त्वज्ञापकानि अनुबन्धविशेषरूपाणि चिह्नानि सङ्गतानि, तथापि सामान्यतया तत्स्वरूपावगतये शिष्यबुद्धिवैशद्यकारिकाः कारिकाः पूर्वाचार्यीयाः प्रतिपाद्यन्ते विव्रियन्ते च।

अथ सेट्त्वमनिट्त्वञ्च किं नामेति चेदुच्यते। इटा इकारस्यानुबन्धत्वाद् इकारेण सह वर्त्तते इति सेट् तस्य भावः सेट्त्वम्, न विद्यते इट् इकारो यस्य सोऽनिट् तस्य भावोऽनिट्त्वम्।

अत्रायं निष्कर्षः—येभ्यो धातुभ्यः परतो विधीयमानाः शित्संज्ञकभिन्नत्रोणादिभिन्नसकारादितकारादिप्रत्यया विशेषविधानं विहायादौ इकाररूपमिडागमं नित्यं गृह्णन्ति ते सेटः। ये न गृह्णन्ति तेऽनिटः। सेट्त्वानिट्त्वे च यद्यपि स्ताद्यशितोऽत्रोणादेरिति प्रत्ययस्यादौ विधानात्प्रत्ययस्यैव तथाप्युपचारेण धातोरपि। इह तावद्धातवो द्विधा, स्वरान्ता व्यञ्जनान्ताश्चेति। तत्र सूचिकटाहन्यायेनाल्पत्वादादौ स्वरान्तानां सेट्त्वानिट्त्वे विवेच्य तदनु व्यञ्जनान्तानां विवेचयति, तत्रापि ग्रन्थलाघवार्थं स्वरान्तेषु सेट्धातून् निर्दिश्य तद्व्यतिरेकेणानिटो व्यञ्जनान्तेषु अनिट्धातून् निर्दिश्य तद्व्यतिरेकेण सेटश्च दर्शयति।

> श्विश्रिडीशीयुरुक्ष्णुक्ष्णु–णुस्नुभ्यश्च वृगो वृङः।
> ऊदृदन्तयुजादिभ्यः स्वरान्ता धातवः परे ॥ १ ॥
> पाठ एकस्वराः स्युर्येऽनुस्वारेत इमे स्मृताः।

ये पाठे धातुपाठे धातुपाठोपदेशावस्थायामित्यर्थः। न तु द्विर्भावादौ। एकस्वरा एक एव स्वरो येषु ते एकस्वराः। तथा अनुस्वारेतः एति अपगच्छतीति।इत् प्रयोगकालेऽनवस्थायीत्यर्थः। अनुस्वार इत् येषु ते अनुस्वारेतः। तादृशा ये धातवः स्युस्ते इमे अभ्यस्ततमतया बुद्धिस्थत्वेन प्रत्यक्षा धातवः। अनिट इति पदमन्त्यकारिकान्तस्थमप्यत्र योज्यम्। स्मृताः। अर्थात्। धातुपाठोपदेशावस्थायां ये एकस्वरा अनुस्वारेतश्च भवेयुस्तेऽनिटो धातवो विज्ञेयाः। इदं च स्वरान्तव्यञ्जनान्तसाधारणं लक्षणं तेनोभयत्र योज्यम्। परे एतत्प्रथमकारिकोक्तेभ्योऽन्ये ये केचन स्वरान्ता एकस्वरा अनुस्वारेतश्च धातवस्ते सर्वेऽपि अनिटः। अस्यां कारिकायां चोक्ताः स्वरान्ताः धातवः सर्वेऽपि सेटः।

एवं निम्ननिर्दिशिता व्यञ्जनान्ता एकस्वरा अनुस्वारेतश्च धातवोऽनिटः।

तद्व्यतिरिक्ता व्यञ्जनान्ताः सेटश्च। इमे द्विविधा अपि धातवो ये औदितो न भवेयुस्ते ग्राह्याः औदितानामनुबन्धफलप्रतिपादकप्रकरणे वेट्त्वाभिधानात्। केभ्यः परे। श्विश्रिडीशीयुरुक्षुक्ष्णुस्नुभ्यः वृगः, वृङः उदृदन्तयुजादिभ्यः। अत्र वृद्ध्यर्थत्वेन माङ्गलिकत्वादादौ श्विधातोर्ग्रहणम्। ट्वोश्वि (श्वि) गतिवृद्ध्योः। श्रिग् (श्रि) सेवायाम्। डीङ् (डी) विहायसांगतौ। डीङ्च् (डी) गतौ। शीङ्क् (शी) स्वप्ने। यु-इति सामान्यनिर्देशेऽपि रुक्षुप्रभृतिसाहचर्यात्। युक् (यु) मिश्रणे इत्यस्यैव ग्रहणं। न तु युंग्श् (यु) बन्धने इत्यस्य। युणि (यु) जुगुप्सायामित्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन स्वत एव सेट्त्वम्। रु-इति सामान्यनिर्देशेऽपि क्षुप्रभृतिसाहचर्यात् रुक् (रु) शब्दे इत्यस्यैव ग्रहणं न तु रुङ् [रु] रेषणे च इत्यस्य। टुक्षुक् [क्षु] शब्दे। क्ष्णुक् (क्ष्णु) तेजने। णुक् (नु) स्तुतौ। स्नुक् (स्नु) प्रस्नवने वृग्ट् (वृ) वरणे। वृङ्श् (वृ) सम्भक्तौ। वृगण् (वृ) आवरणे इत्यस्य तु युजादिपाठे एव समावेशः। उकार एव ऊत ऋकार एव ऋत् ऊच्च ऋच्च ऊदृतौ तौ अन्ते एषामिति ऊदृदन्ताः ऊकारान्ता भूप्रभृतयः ऋकारान्ता तॄप्रभृतयः। युजादयो युजादिगणपठिता। इमे लीण् (ली) द्रवीकरणे। (प्रीण्) मतौ। प्रीगण् (प्री) तर्पणे धूगूण् (धू) कम्पने। अस्य ऊकारान्तत्वेनापि सेट्त्वम्। वृगूण् (वृ) आवरणे। जॄण् (जॄ) वयोहानौ अस्य ऋकारान्तत्वेनापि सेट्त्वम्। इमे सर्वेऽप्युक्ताः स्वरान्ताः सेटः। तद्व्यतिरिक्ताः स्वरान्ता अनिटः। अथ व्यञ्जनान्ताननिटो नामग्राहं दर्शयति—

द्विविधोऽपि शकिश्चैवं वचिर्विचिरिची पचिः ॥ २ ॥
सिञ्चतिर्मुचिरत्तोऽपि पृच्छतिर्भ्रस्जिमस्जिभुजयो युजिर्यजिः।
ष्वञ्जिरञ्जिरुजयो णिजिविजृषञ्जिभञ्जिभजयः सृजित्यजी ॥ ३ ॥
स्कन्दिर्विद्यविद्लविन्तयो नुदिः स्विद्यतिः शदीसदी भिदीच्छिदी
तुद्यदी पदिहृदी स्विदीक्षुदी राधिसाधिशुधयो युधिव्यधी ॥ ४ ॥
बन्धबुध्यरुधयः क्रुधिक्षुधी सिध्यतिस्तदनुहन्तिमन्यती।
आपिना तपिशापिक्षिपिच्छुपो लुम्पतिः सृपिलिपी वपिस्वपोः॥५॥
यभिरभिलभियम्भिरम्निमिगमयः क्रुशिलिशिरुशिदिशदिशितिदशयः
स्पृशिमृशतिविशलिहशिशिश्लिषशुपयस्त्विषिपिषिविष्लकृषितुषिदुषिपुषयः ॥ ६ ॥

श्लिण्यतिर्द्विषिरतो घसिवसति रोहतिर्लुहिरिही अनिड्गदितौ।
देग्धिदोग्धिलिह्यो मिहिवहती नह्यतिर्दहिरितिस्फुटमनिटः॥७॥

शकींच् ( शक् ) मर्षणे। शक्लृंट् ( शक् ) शक्तौ। अत्र शक्धातुरेव शकिः इकिश्तिव्र स्वरूपार्थे॥ इति स्वरूपे इप्रत्यये किप्रत्यये वा रूपम्, एवमग्रेतनधातुषु यथायोगं स्वरूपार्थे इप्रत्ययः किप्रत्ययः श्तिव्प्रत्यय इति ज्ञेयम्। वचंक् ( वच् ) भाषणे। ब्रूग्क् ( ब्रू ) व्यक्तायां वाचि इत्यस्य यो वच्-आदेशस्तस्य लाक्षणिकत्वेऽपि अत्र ग्रहणम्। अत एवास्य ब्रूधातोरूकारान्तत्वेन सेट्त्वप्राप्तावपि धातुपाठे सानुस्वारनिर्देशेनानिट्त्वं प्रतिपादितम्। वचण् ( वच् ) भाषणे इत्यस्य तु युजादिपाठात्सेट्त्वमेव। विचृंपी ( विच् ) पृथग्भावे। रिचृंपी [ रिच् ] विरेचने। रिचण ( रिच् ) वियोजने च इत्यस्य तु युजादिपाठात्सेट्त्वमेव। डुपचींष् ( पच् ) पाके। षिचींत् ( सिच् ) क्षरणे। अस्य स्वरूपे श्तिव् प्रत्यये सिञ्चतिरिति रूपम्। मुच्लृंती ( मुच् ) मोक्षणे। मुचण् ( मुच् ) प्रमोचने इत्यस्य चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव। प्रछंत् ( प्रच्छ ) ज्ञीप्सायाम्। भ्रस्जींत् ( भ्रस्ज् ) पाके। टुमस्जींत् ( मस्ज्-मज्ज् ) शुद्धौ। भुजींत् ( भुज् ) कौटिल्ये। भुजंप् ( भुज् ) पालनाभ्यवहारयोः। युजिंच् ( युज् ) समाधौ। युॕंपी ( युज् ) योगे। युजण् ( युज् ) संपर्चने इत्यस्य तु युजादिपाठात्सेट्त्वमेव। यजीं ( यज् ) देवपूजासंगतिकरणदानेषु। ष्वञ्जिंत ( स्वञ्ज् ) सङ्गे। रञ्जीं ( रञ्ज् ) रागे। रञ्जींच् (रञ्ज्) रागे। रुजोंत् ( रुज् ) भङ्गे॥ रुजण् ( रुज् ) हिंसायाम् अस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव। णिजूंकी निज् शौचे च। विॕकी ( विज् ) पृथग्भावे विज्ॄ इति ऋकारसहितग्रहणादस्यैव विज् धातोर्ग्रहणम्। न तु ओविजैति [विज्] भयचलनयोरित्यस्य ओविजैप् ( विज् ) भयचलनयोरित्यस्य च। ननु अत्यन्तान्तिकस्थनिज्-साहचर्यादभिमतस्यैव ग्रहणे किं पुनः ऋकारसहितनिर्देश इति चेत्साहचर्यपरिभाषाया अनित्यत्वसूचनार्थमेतत्तेन शब्दसहचरितासहचरितयोः सदोरत्र प्रकरणे ग्रहणम्। षञ्जं ( सञ्ज् ) सङ्गे। भञ्जींप् ( भञ्ज् ) आमर्दने। भजीं ( भज् ) सेवायाम्। भजण् ( भज् ) विश्राणने। इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव। सृजिंच् [सृज् ] विसर्गे। सृजंत् ( सृज् ) विसर्गे। त्यजं [त्यज्] हानौ। स्कन्दृं [ स्कन्द् ] गतिशोषणयोः। विद्य-इति श्यविकरणसहितग्रहणादनेन। विदिंच् [ विद् ] सत्तायामित्यस्य ग्रहणम्। विद्लृ-इति लृकारानुबन्धसहितग्रहणादनेन। विद्लृंती ( विद् ) लाभे इत्यस्य ग्रहणम्। विन्ति-इति श्नविकरणस-

हितग्रहणादनेन । विदिंपू ( विद् ) विचारणे इत्यस्य ग्रहणम् । एषां विशेषेणोपादानात् । विदक् ( विद् ) ज्ञाने इत्यस्य न ग्रहणम् । विदिण् ( विद् ) चेतनाख्याननिवासेषु इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वं सिद्धमेव ॥

वेत्तेर्विदितं वित्तेर्विन्नं वित्तश्च विद्यतेर्विन्नम् ॥
वित्तं धने प्रतीते च विन्दतेर्विन्नमन्यत्र ॥ १ ॥

णुदंत् ( नुद् ) प्रेरणे । स्विद्यतीति श्यविकरणसहितग्रहणादनेन ञिष्विदांच् ( स्विद् ) गात्रप्रक्षरणे इत्यस्यैव ग्रहणं नतु ञिष्विदाङ् ( स्विद् ) मोचने च इत्यस्य । शद्लृं ( शद् ) शातने षद्लृं ( सद् ) विशरणगत्यवसादनेषु । षद्लृंत् ( सद् ) अवसादने । भिदूंपी ( भिद् ) विदारणे । छिदूंपी ( छिद् ) द्वैधीकरणे । तुदींत् [ तुद् ] व्यथने । अदंक् ( अद् ) भक्षणे । पदिंच् [ पद् ] गतौ पदिण् ( पद् ) गतौ । इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव । हदिं [ हद् ] पुरीषोत्सर्गे । खिदिंच् [ खिद् ] दैन्ये । खिदंत् [ खिद् ] परिघाते । खिदिंप् ( खिद् ) दैन्ये । क्षुदूंपी ( क्षुद् ) संपेषे । राधंच् ( राध् ) वृद्धौ । राधंट् (राध्) संसिद्धौ । साधंट् ( साध् ) संसिद्धौ । शुधंच् ( शुध् ) शौचे । युधिंच् ( युध् ) सम्प्रहारे । व्यधंच् ( व्यध् ) ताडने । बन्धश् [ बन्ध् ] बन्धने । बन्धण् ( बन्ध् ) संयमने इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव । बुध्य-इति श्यविकरणसहितनिर्देशात् । बुधिंच् ( बुध् ) ज्ञाने इत्यस्यैव ग्रहणं नतु बुधूंग् ( बुध् ) बोधने बुध ( बुध् ) अवगमने इत्यस्य च। रुधूंपी ( रुध् ) आवरणे अनोरुधिंच (अनु-रुध्) कामे । क्रुधंच् [ क्रुध् । कोपे। क्षुधंच् [ क्षुध् ] बुभुक्षायाम् । सिध्यति-इति श्यविकरणसहितनिर्देशात् षिधूच् ( सिध् ) संराद्धौ इत्यस्यैव ग्रहणं न तु षिध् ( सिध् ) गत्यामित्यस्य षिधौ [ सिध् ] शास्त्रमाङ्गल्ययोरित्यस्य च।

हनंक् ( हन् ) हिंसागत्योः । मन्यति-इति श्यविकरणसहितनिर्देशात् । मनिंच् ( मन् ) ज्ञाने इत्यस्यैव ग्रहणं नतु । मनूयि ( मन् ) बोधने इत्यस्य ॥ मनिण् ( मन् ) स्तम्भे इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव । आप्लृंट् ( आप् ) व्याप्तौ । आप्लृण् ( आप् ) लम्भने इत्यस्य तु युजादिपाठात्सेट्त्वमेव । तपं [ तप् ] संतापे । तपिंच् ( तप् ) ऐश्वर्ये वा । तपिण् ( तप् ) दाहे इत्यस्य तु युजादिपाठात्सेट्त्वमेव । शपीं ( शप् ) आक्रोशे । शपींच् [ शप् ] आक्रोशे ॥ क्षिपंच् ( क्षिप् ) प्रेरणे । क्षिपिंत् ( क्षिप् ) प्रेरणे ।

छुपंत् (छुप् ) स्पर्शे लुम्पति इति मागमसहितनिर्देशात् लुप्लृंती [ लुप् ]

छेदने इत्यस्यैव मागमार्हस्य ग्रहणं नतु लुपच्व [ लुप् ] विमोहने इत्यस्य । सृप्लृं ( सृप् ) गतौ । लिँपत् [ लिप् ] उपदेहे डुवपीं ( वप् ) बीजसंताने । ञिष्वपंक् ( स्वप् ) शये । यभं [ यभ् ] मैथुने । रभिं [ रभ् ] राभस्ये । डुलभिंष् ( लभ् ) प्राप्तौ । यमूं [ यम् ] उपरमे । रमिं ( रम् ) क्रीडायाम् । णमं [ नम् ] प्रह्वत्वे गम्लृं [ गम् ] गतौ । क्रुशं [ क्रुश ] आह्वानरोदनयोः । लिशिंच्व ( लिश् ) अल्पत्वे लिशंत् ( लिश् ) गतौ । रुशंत् ( रुश् ) हिंसायाम् । रिशंत् ( रिश् ) हिंसायाम् ।दिशित् ( दिश् ) अतिसर्जने दंशं ( दंश् ) दशने । स्पृशंत् ( स्पृश् ) स्पर्शे । मृशंत् ( मृश् ) आमर्शने । विशंत् ( विश् ) प्रवेशने दृशृं ( दृश् ) प्रेक्षणे लृकारसहितग्रहणात् । शिष्लृंप् ( शिष् ) विशेषणे इत्यस्यैव ग्रहणं नतु शिष (शिष्) हिंसायामित्यस्य । शिषण ( शिष् ) असर्वोपयोगे इत्यस्य तु युजादिपाठात्सेट्त्वमेव शुषंच्व ( शुष् ) शोषणे त्विषीं ( त्विष् ) दीप्तौ । पिष्लंप् ( पिष् ) संचूर्णने । विष्लृ–इति लृकारसहितनिर्देशात् विष्लृंक्की ( विष् ) व्याप्तौ इत्यस्यैव ग्रहणं न तु विष् ( विष् ) सेचने इत्यस्य विषश् विष् ) विप्रयोगे इत्यस्य च । कृषं ( कृष् ) विलेखने । कृषींत् [ कृष् ] विलेखने । तुषंच्व [ तुष् ] तुष्टौ ।दुषंच्व ( दुष् ) वैकृत्ये दुष्–सहचर्यात् पुषंच्व ( पुष ) पुष्टौ इत्यस्यैव ग्रहणं न तु पुष ( पुष् ) पुष्टौ इत्यस्य पुषश् ( पुष् ) पुष्टौ इत्यस्य च पुषण् ( पुष् ) धारणे इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव । श्लिष्यति–इति श्यविकरणसहितनिर्देशात् । श्लिषंच्व ( श्लिष् ) आलिङ्गने इत्यस्यैव ग्रहणं न तु । श्लिषू ( श्लिष् ) दाहे इत्यस्य । श्लिषण् ( श्लिष् ) श्लेषले इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव । द्विषींक् ( द्विष् ) अप्रीतौ । घस्लृं ( घस् ) अदने । वसति–इति शव्विकरणसहितनिर्देशात् । वसं ( वस् ) निवासे इत्यस्यैव ग्रहणं न तु वसिक् ( वस् ) आच्छादने इत्यस्य । वसूच्व ( वस् ) स्तम्भे इत्यस्य च । वसण् ( वस् ) स्नेहच्छेदावहरणेषु इत्यस्य तु चौरादिकत्वेनानेकस्वरत्वात्सेट्त्वमेव । ( रुहं ) रुह् ) जन्मनि । अत्र रोहति–इति शव्विकरणसहितनिर्देशः श्लोकरचनार्थः । .लुहि रुहि ( लुह्–रुह् इमौ धातुपाठेषु न दृश्येते छान्दसौ मन्तान्तरीयौ वा संभाव्येते । देग्धीति । दिहींक् ( दिह् ) लेपे । दोग्धीति । दुहींक् ( दुह् ) क्षरणे । लिहींक् ( लिह् ) आस्वादने । मिहं मिह् ) सेचने वहीं ( वह् ) प्रापणे । णहींच्व ( नह् ) बन्धने । दहं दह् भस्मीकरणे । इति स्फुटं यथा स्यात्तथा इमे व्यञ्जनान्ता धातवोऽनिटः, तद्व्यतिरिक्ता व्यञ्जनान्ताः-सेटः । इति स्वरान्तव्यञ्जनान्तधातूनां सेट्त्वानिट्त्वे प्रपञ्चिते ॥

॥ समाप्ता अनिट्कारिकाः ॥

## ॥ अथ धातुप्रत्ययानुबन्धफलप्रतिपादकाः श्लोकाः ॥



उच्चारणेऽस्त्यवर्णाद्य आः क्तयोरिण् निषेधने ।
इकारादात्मनेपद-मीकाराच्चोभयं भवेत् ॥ १ ॥
उदितः स्वरान्नोन्तश्चो-क्त्वादाविटो विकल्पनम् ।
रूपान्त्ये ङेपरेऽह्रस्व ऋकारादङ् विकल्पकः ॥ २ ॥
लृकारादङ् समायात्येः सिचि वृद्धिनिषेधकः ।
एेः क्तयोरिण्निषेधः स्या-दोः क्तयोस्तस्य नो भवेत् ॥ ३ ॥
औकार इड्विकल्पार्थेऽनुस्वारोऽनिड्विशेषणे ।
लृकारश्च विसर्गश्चा-नुबन्धो भवतो नहि ॥ ४ ॥
कोऽदादिर्न गुणी प्रोक्तः खे पूर्वस्य मुमागमः ।
गे नोभयपदी प्रोक्तो घश्च चजोः कगौ कृतौ ॥ ५ ॥
आत्मने गुणरोधे ङ-श्चो दिवादिगणो भवेत् ।
ञो वृद्धौ वर्तमाने क्तः टः स्वादिष्ठवुंकारकः ॥ ६ ॥
त्रिमगर्थो डकारः स्याण् णश्चुरादिश्च वृद्धिकृत् ।
तस्तुदादौ नकारश्चेच्चापुंसीति विशेषणे ॥ ७ ॥
रुधादौ नागमे पोहि मो दामः सम्प्रदानके ।
यस्तनादौ रकारः स्यात् पुंवद्भावार्थसूचकः ॥ ८ ॥
स्त्रीलिङ्गार्थे लकारो हि उत ओर्विति वो भवेत् ।
शः क्र्यादिः क्यः शिति प्रोक्तः षः षितोङ् विशेषणे ॥ ९ ॥
पदत्वार्थे सकारो हि नोक्ता अत्र न सन्ति च ।
धातूनां प्रत्ययानाञ्चा-नुबन्धः कथितो मया ॥ १० ॥

उच्चारणम् उच्चारणार्थं श्रुतिसुखदोच्चारणार्थमिति यावत् । अवर्णाद्यः अवर्णस्तु अकार आकारश्च वर्णग्रहणे स्वसंज्ञकस्यापि ग्रहणमिति न्यायात् । तत्राकारव्यवच्छेदार्थमाह–अवर्णस्य अकाराकाररूपस्याद्यः प्रथम अकार इत्यर्थः । अस्ति । अकारः श्रुतिसुखदोच्चारणार्थं धात्वादौ अनुबन्धतया योज्यत इत्यर्थः । यथा तक ( तक् ) हसने । एवम् आ आकारः क्तयोः क्तक्तवतु प्रत्यययोरादौ इण्निषेधने इकारनिषेधार्थः । यथा हुर्छा ( हूर्छ् ) कौटिल्ये । अत्रादित्त्वात् आदित इति क्तयोरिडभावे

हूर्णः हूर्णवान्। इकाराद् आत्मनेपदं भवति। यथा ककि (कक) लौल्ये। अत्र इङ्गित इत्यात्मनेपदे ककते। चः समुच्चये। ईकाराद् उभयमुभयपदं भवति। भजीं [भज्] सेवायाम्। अत्र ईदित्वात्फलवत्कर्तरि ईगित इत्यात्मनेपदम्। अफलवति तु शेषात्परस्मै इति परस्मैपदमेवोभयपदं भवति। चो–उश्च ऊश्चानयोः समाहार इति ऊ ततः क्लीबे इति ह्रस्वत्वे उ इति ततः च–उ–इति अकारस्य उकारस्य च सन्धौ चो इति जातम्। तथा च चोशब्देन च, उः, ऊः, इति ज्ञेयम्। तत्र चकारः समुच्चये। उः उकार उदितः स्वरान्नोऽन्त इत्यत्र विशेषणार्थः। ऊः ऊकारः क्त्वादौ क्त्वाप्रत्ययस्य आदौ इड इकारस्य विकल्पनं करोतीतिशेषः। अथवा–उ–उदितः स्वरान्नोऽन्तः च–ऊः इति ऊदितस्वरान्नोऽन्तः, च–ऊः, इति ऊदितस्वरान्नोऽन्तश्चोः इति पाठो ज्ञेयः। तत्र प्रथमो य उशब्दस्तेन उरूपमक्षरमिति नपुंसकलिङ्गार्थं व्याख्येयम्। यथा तकु (तकु–तन्कु–तङ्क) कृच्छ्रजीवने। अत्र उदित्वाद् उदितः स्वरान्नोऽन्त इति नागमः। वञ्चू (वञ्चू) गतौ। ऊदितो वा इति वेट्। वक्त्वा। इटि तु ऋत्तृषेति क्त्वो वा कित्वे वचित्वा वञ्चित्वा ऋ उपान्त्ये इत्यवस्थायां सन्धौ रुपान्त्ये। ङे परे ङपरकणौ प्रत्यये इति यावत् अह्रस्वो ह्रस्वाभावः। ङपरकणिप्रत्यये परे सति ऋदितां धातूनामुपान्त्यस्य ह्रस्वो न भवति। यथा ओखृ (ओख्) शोषणालमर्थयोः। अत्र ऋदित्वाद् ङपरे णौ उपान्त्यस्येति न ह्रस्वः। मा भवानोचिखत्। ऋदित्वादेव चौतो नेत्संज्ञा प्रयोगित्वाच्च। एवं राखृ (राख्) शोषणालमर्थयोः। अरराखत्। ऋकाराद् अङः विकल्प एव विकल्पकः। च्युतृ (च्युत्) आसेचने। ऋदित्वाद् ऋदिच्छ्र्वीति वाङि अच्युतत् अच्योतीत्। लृकाराद् अङ् समायाति गम्लृं (गम्) गतौ। लृदित्वाद् लृदिद्द्युतादित्यङि अगमत्। एः एकारः सिचि वृद्धिनिषेधकः। कटे (कट्) वर्षावरणयोः। अत्र व्यञ्जनादेर्वोपान्त्यस्येति वा प्राप्ताया वृद्धेरेदित्वान्न श्विजाग्रिति प्रतिषेधे अकटीत्। ऐः ऐकारो यदि भवेत्तर्हि क्तयोःक्तक्तवतुप्रत्यययोरादौ इण्निषेधो भवति। कटै (कट्) गतौ। अत्रैदित्वात् डीयश्वैदितःक्तयोरिति क्तयोर्नेट् कट्टःकट्टवान्। ओः ओकारो यदि स्यात्तर्हि क्तयोः क्तक्तवतुप्रत्यययोस्तकारस्य नो नकारो भवेत् ओवैं (वै) शोषणे। अत्र ओदित्वात् सूयत्यादीति क्तयोस्तस्य नत्वे वानः वानवान्। ओस्टृ (स्टृ) शब्दोपतापयोः। अत्रौदित्वाद् धूगौदित इति वेट्। स्वर्ता स्वरिता सुस्वूर्षति सिस्वरिषति। अनुस्वारः विन्दुरूपोऽनिड्विशेषणे अनिट्त्वार्थं इत्यर्थः।

२. प्रां (पा) पाने। अत्रानुस्वारेत्त्वात् स्ताद्यशित इति प्राप्तस्येटः एकस्व-

रादनुस्वारेत इति निषेधः। पाता पास्यति । ॡकारो विसर्गश्चानुबन्धो न भवतः। ककारो यदि धातौ स्यात्तदा धातुः अदादिर्भवति। एवं ककारो यदि प्रत्यये स्यात्तदा तस्मिन् प्रत्यये परे धातुर्गुणी गुणवान् न भवति। हनंक् (हन्) हिंसागत्योः। कित्करणाददादित्वं तेन कर्तर्यनद्भ्यः शव् इत्यत्र अदादिवर्जनाच्छवभावे हन्ति। भूसत्तायाम्। भू-क्यात्-भूयात् अत्र कित्त्वेन नामिनो गुणोऽक्ङितीत्यत्र क्ङिद्वर्जनान्न गुणः खे पूर्वस्य—मुमागम इति मुम्-इति (म्)इत्यस्य प्राचां संज्ञा तया—इङ्व्यवहारः प्राचां—संज्ञाया व्यवहार इत्यत्र प्रमाणम्—यजादेः संप्रसारणमिति एवञ्च मुमागम इत्यस्य मागम इत्यर्थः। खे खिति पूर्वस्य म् आगमो भवति मनिच् (मन्) ज्ञाने कर्तुः खश् इति खशि खित्यनव्ययेति मागमे च पटुमात्मानं मन्यत इति पटुंमन्यः॥ श्रिग् (श्रि) सेवायाम्। गित्त्वात्फलवति कर्तरि ईगित इत्यात्मनेपदेऽन्यत्र शेषात्परस्मायिति परस्मैपदे चोभयपदं ज्ञेयम्। श्रयते श्रयति। घो घकारो यदि स्यात्तदा चजोः चकारजकारयोः कगौ क्रमेण ककारगकारौ कृतौ विहितौ ज्ञातव्यौ। भाविनि भूतोपचाराद्। घकारे इति चकारस्य चकारो जकारस्य गकारो भवतीत्यर्थः। डुपचींष् (पच्) पाके पचनं (पच्—घञ्) पाकः। यजीं (यज्) देवपूजासंगतिकरणदानेषु यजनं (यज्—घञ्) यागः। अत्र चजः कगमिति चकारस्य कत्वं जकारस्य गत्वञ्च। आत्मने इति पदैकदेशे पदसमुदायोपचाराद् आत्मनेपदे आत्मनेपदार्थं गुणरोधे गुणनिषेधार्थश्च ङो ङकारो भवति। गांङ् (गा) गतौ ङित्त्वाद् इङित इत्यात्मनेपदे गाते। द्युति (द्युत्) दीप्तौ। द्युत्–अङ् अद्युतत् अत्र ङित्त्वेन—नामिन इत्यत्र ङिद्वर्जनान्न गुणः। चः चकारो यदि स्यात्तदा दिवागणो भवेत् दिवादिगणीयो धातुर्भवेदित्यर्थः। कुथच् (कुथ्)पूतिभावे। अत्र चित्त्वाद्दिवादित्वेन दिवादेरिति श्ये कुथ्यति। ञो ञकारो वृद्धौ वृद्ध्यर्थः॥

एवं ञो नाम ञकारोपलक्षितो ञिर्यदि भवेत्तदा धातोर्वर्तमाने क्तप्रत्ययो भवति। भू सत्तायाम्। अनु–अ–भू–ञिच् अन्वभावि–अत्र ञित्त्वाद् ञ्णितीति वृद्धिः। ञिक्ष्विदा (क्ष्विद्) अव्यक्ते शब्दे। ञित्त्वाज्ज्ञानेच्छार्चेति सत्यर्थे क्तः। क्ष्विद्यते क्ष्विण्णः। टकारो यदि स्यात्तदा स्वादिः स्यात्। षिगट् (सि) अभिबवे। अत्र टित्त्वेन स्वादित्वात् स्वादेः श्नुरिति श्नौ सिनुते (टः स्वादिष्ठ्युकारकः) अत्र ठ्युकारकः, इति पाठो न समीचीनः ठानुबन्धानुपलम्भात् ठ-इत्यस्य निर्विभक्तिकत्वात् अयोग्यतया समासाभावात घुकारक इत्यत्र घुरूपकार्यानुपलम्भाच्च अतः टःस्वादिरशुकारकः, इति पाठः सम्यक् टकारः स्वादिः (षिं-

गट्–सिनुते इति उकारविशिष्टः–टकारः अथुकारकः यथा टुवपीं बीजसन्ताने, इति ' द्वितोऽथुः '.इति अथौ वपथुरिति । त्रिमगर्थो डकार इत्यग्रिमग्रन्थानुरोधेन–उकारविशिष्ट इति अवश्याध्याहार्यम्–इति तस्मिन् पाठे न कोऽपि दोष इति–त्रिमग् अर्थः प्रयोजनं यस्य तादृशो डकारः स्यात् अत्र डकारेण डकारोपलक्षितो डुकारो ज्ञेयः । डुपचींष् ( पच् ) पाके । ड्विक्त्वात्त्रिमकि पाकेन निर्वृत्तं पक्त्रिमम् । णो णकारो यदि स्यात्तदा चुरादिः धातुश्चुरादिगणीयो भवति, एवं णकारो वृद्धिकृदूअस्ति वल्कण् ( वल्क् ) भाषणे । णित्वाच्चुरादित्वेन चुरादिभ्य इति णिचि वल्कयति । दु (दु, गतौ णवि वृद्धौ दुदाव । क्षिपींत् ( क्षिप्) प्रेरणे । तित्वात् तुदादेः श इति क्षिपति । नकारश्च इच्चापुंसोऽनित्क्याप्परे इत्यत्र विशेषणार्थः । खट्वाकिका खट्वाका । अनिदिति किम् । दुर्गका पकारो रुधादौ नागमार्थः अर्थात् पकारेण रुधादित्वं भवति रुधादित्वाच्च नागमो भवति । रिचूंपी ( रिच् ) विरेचने रुधां स्वरादिति श्ने रिणक्ति किन्तु रुधादौ तागमे पोहि–इति पाठः सम्यक्–तस्येयं व्याख्या पकारो रुधादिघटकः पकारानुबन्धेन धातूनां रुधादित्वं भवतीति भावः, प्रत्ययस्थपकारानुबन्धः तागमप्रयोजकः–हृग्–इत्यादिना क्यपि ' ह्रस्वस्य तः पित्कृति ' तागमे आदृत्य प्राहृत्य इति, मो मकारः, दामः सम्प्रदाने ऽधर्म्ये आत्मने च इत्यत्र विशेषणार्थः । दास्या सम्प्रयच्छते कामुकः । यो यकारः तनादेः सूचकः । क्षणूयी ( क्षण् ) हिंसायाम् । हिंसायाम् । यित्त्वात् कृगृतनादेरित्यौ च तनुते । रकारः पुंवद्भावरूपो योऽर्थस्तत्सूचकः । पट्वी प्रकारोऽस्याः पटुजातीया । प्रकारे जातीयरिति जातीयरि प्रत्यये रितीति पुंवद्भावः । लकारो स्त्रीलिङ्गार्थः । जनानां समूहो जनता अत्र तल्प्रत्ययस्य लित्वात्स्त्रीत्वम् । वकार उत और्विंतिव्यञ्जनेऽद्वेरित्यत्र विशेषणार्थः द्युंकू (द्यु) अभिगमने । द्यौति । शकारो यदि स्यात्तदा क्र्यादिः स्यात् । षिंगूश् ( सि ) बन्धने । शित्त्वात्क्र्यादित्वेन क्र्यादेरिति श्नाप्रत्यये सिनाति । क्यःशितीत्यत्र विशेषणार्थः । भूयते अत्र भावकर्मविहिते शिति क्यः । षकारःषितोऽङ् इत्यत्र विशेषणार्थः । डुपचींष् (पच्) पाके । पच्यतेऽसाविति पचा । सकारः पदत्वार्थे पदत्वप्रयोजकः । भवतोरिकणीयसौ, इतीयसि नामसिदय्व्यञ्जने–इति पदत्वे धुटस्तृतीय इति दत्वे भवदीय इति येऽनुबन्धतया नोक्तास्तेऽनुबन्धा न सन्ति । अनुबन्धास्तु इयन्त एव । अपि तु अत्रानुबन्धानां यद्यत्फलमुक्तं तेन प्रयोजनान्तराण्यप्युपलक्ष्यन्ते । यथा टकारस्य प्रयोजनं स्त्रादित्वमेवोक्तं तथापि ट्धें ( धे ) पाने । अत्र टकारःशुनिंधयीत्यादौ

ङ्यर्थः । एवं ङकारस्यान्त्यस्वरलोपप्रभृतिप्रयोजनं स्वयमूह्यम् ।

अत्रार्थेऽन्येऽपि कतिचित्श्लोकाः

अदादयः कानुबन्धाश्चानुबन्धा दिवादयः
स्वादयष्टानुबन्धा–स्तानुबन्धास्तुदादयः ॥ १ ॥
रुधादयः पानुबन्धा यानुबन्धास्तनादयः ॥
क्र्यादयः शानुबन्धा णानुबन्धाश्चुरादयः ॥ २ ॥

॥ इत्यनुबन्धफलप्रतिपादकप्रकरणम् ॥

## ॥ वृत्गणफलनिरूपणम् ॥

द्युतादेरद्यतन्यां चाङात्मनेपदमिष्यते
वृदादिपञ्चकेभ्यो वा स्यसनोरात्मनेपदम् ॥ १ ॥
ज्वलादेर्णौ विकल्पेन यजादेः संप्रसारणम् ।
घटादीनां भवेद्ह्रस्वो णौ परेऽजीघटत् सदा ॥ २ ॥
अद्यतन्यां पुषादित्वादङ् परस्मैपदे भवेत् ।
स्वादित्वाच्च क्तयोस्तस्य नकारः प्रकटो भवेत् ॥ ३ ॥
प्वादीनां भवेद्ह्रस्वो ल्वादेस्क्तयोश्च नो भवेत् ।
युजादयो विकल्पेन ज्ञेयाश्चुरादिके गणे ॥ ४ ॥
मुचादेर्नागमः शे च कु टादित्वात्सिचि परे ।
गुणवृद्धेरभावश्च कथितो हेमसूरिणा ॥ ५ ॥
अदन्तानां गुणो वृद्धिर्यङ् चुरादेश्च नो भवेत् ।
संक्षेपेण फलश्चैतज्ज्ञेयं सूत्रानुसारतः ॥ ६ ॥

वृत् गणानामन्तर्गणास्तेषामान्तर्गणकरणे यत्फल तदुच्यते । द्युतादेर्द्युतादिगणपठितधातोरद्यतन्यामङ्आत्मनेपदश्च वा भवति । अर्थात्–द्युतादिगणस्य फलमद्यतन्यां विकल्पेनाङात्मनेपदभवनम् । द्यति ( द्युत् ) दीप्तौ । द्युद्भ्यो ऽद्यतन्यामित्यात्मनेपदिनोऽपि विकल्पनात्पक्षे शेषात्परस्मायिति परस्मैपदे लदिद्युतादीत्यङि अद्युतत् । पक्षे अद्योतिष्ट । वृदादिपञ्चकेभ्यो वृदादेः पञ्चनः स्यसनोः स्यादौ प्रत्यये सनि च विषये आत्मनेपदं वा भवति अयं वृदादिर्द्युताद्यन्तर्गणस्तेन द्युतादिफलन्तु अत्रैव तदतिरिक्तमिदं ज्ञेयम् । वृतूङ् ( वृत् ) वर्तने । अवृतत् अवर्तिष्ट । वृद्भ्य इति स्यसनोर्विषये वात्मनेपदमात्मनेपदाभावे च न वृद्द्भ्य इति नेट् । वर्तिष्यते, व-

त्स्यंति, अवर्तिष्यत, अवर्त्स्यत् । सनि विवृत्सति विवर्तिषते । ज्वलादेर्णः प्रत्ययो विकल्पेन भवति । ज्वल ( ज्वल् ) दीप्तौ । वा ज्वलादीति णे ज्वालः । पक्षे ज्वलः । यजादेर्यजादिगणस्य फलं सम्प्रसारणं स्मृत् । यजीं ( यज् ) देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु । यजादिवशिति पूर्वस्य स्वृति इयाज । यजादिवचेरिति स्वृति ईजे घटादीनां फलं तु णौ णिप्रत्यये परे ह्रस्वः । घटिष् ( घट् ) चेष्टायाम् । घटादेरितिह्रस्वे । घटयति । ( णौ परेऽजीघटत् सदा ) अयं भावः जासनाटक्राथपिषो हिंसायां इत्यत्र क्राथेत्याकारोपान्त्यनिर्देशादाकारश्रुतावस्य प्रवृत्तेः चौरस्योत्क्राथयतीति घटादेर्ह्रस्व इति ह्रस्वत्वाभावः । अद्यतन्यां तु ह्रस्वघटितमेत रूपं भवति इति अजीघटत्सदेत्यनेन सूचितमिति क्राथेरपि उदचिक्रथादिति ' उपान्त्यस्य ' इति ह्रस्वस्तु न निषिध्यते यस्मिन् प्राप्त एवेति न्यायादिति । पुषादित्वादद्यतन्यां परस्मैपदेऽङ् भवति । दिवाद्यन्तर्गणपुषादिगणस्य फलं परस्मैपदेऽद्यतन्यामङ् प्रत्ययभवनमित्यर्थः । पुषंच ( पुष् ) पुष्टौ । लदिदिति अङि अपुषत । स्वादित्वात् दिवाद्यन्तर्गणस्वादिगणपठितत्वात् क्तयोस्क्तक्तवतुप्रत्यययोस्तकारस्य नकारो भवति । षूङौच् ( सू ) प्राणिप्रसवे । सूयत्यादीति क्तयोस्तस्य नत्वे सूनः सूनवान् । प्वादीनां क्र्याद्यन्तर्गणप्वादिगणपठितधातूनां ह्रस्वो गदितः । पूग्श् ( पू ) पवने प्वादेरिति ह्रस्वे पुनाति पुनीते । ल्वादेः क्र्याद्यन्तर्गणप्वान्तर्गणल्वादिगणपठितधातोस्क्तयोस्तस्य नो भवेत् । लूग्श् ( लू ) छेदने । ऋल्वादेरिति क्तक्तीनां तो नत्वे लूनः लूनवान् लूतिः । युजादयो युजादिगणपठिता धातवश्चुरादिगणे विकल्पेन ज्ञेयाः । चुराद्यन्तर्गणयुजादिगणस्य फलं विकल्पेन णिच्ग्रहणमित्यर्थः । युजण् ( युज् ) सम्पर्चने । युजादेरिति वा णिचि योजयति । पक्षे न्यायविकरणः शव् योजति । मुचादेस्तुदाद्यन्तर्गणमुचादिगणस्य फलं शे शप्रत्यये नागमः । मुच्लृन्ती [ मुच् ] मोक्षणे मुचादीति स्वरात्परे नेन्ते मुञ्चति, मुञ्चते । कुटादित्वात् तुदाद्यन्तर्गणकुटादिगणपठितत्वात् सिचि परे गुणवृद्ध्यभावः । यथा कुटत ( कुट् ) कौटिल्ये । कुटादेरिति ङित्वात् गुणाभावे सिचि अकुटीत् । णूत ( णूत् ) स्तवने । कुटादेरिति ङित्वात् सिचि परस्मायिति वृद्ध्यभावे अनुवीत । चुरादेरदन्तानां चुरादिगणपठितादन्तधातूनामित्यर्थः । गुणो वृद्धिश्च न भवेत् । सुखण् ( सुख ) तत्क्रियायाम् । रचण् (रच्) प्रतियत्ने । रचयति । अत्रात इत्यल्युकः स्वरादेशत्वेन स्थानिवत्त्वाद् गुणवृद्ध्यभावः । अररचत् । असुसुखत् । अत्र समानलोपित्वादसमानलोप इति पूर्वस्य सन्वद्भावो लघोर्दीर्घ इति दीर्घश्च न भवति । सूचण् ( सूच् ) पैशून्ये अत्रोपान्त्यह्रस्वभावः ॥

## ॥ इतिवृत्गणफलनिरूपणम् ॥

## ॥ सकर्मकत्वाकर्मकत्वनिरूपणम् ॥

फलव्यापारयोरेक—निष्ठतायामकर्मकः ।
धातुस्तयोर्धर्मिभेदे सकर्मक उदाहृतः ॥ १ ॥

फलस्य गतिनिवृत्त्यादिरूपस्य व्यापारस्य गतिनिवृत्त्यनुकूलव्यापारादिरूपस्य च एकनिष्ठतायामेकाधिकरणवृत्तितायां सत्यां धातुरकर्मको भवति । फलसमानाधिकरणव्यापारबोधकत्वं समानाधिकरणफलावच्छिन्नव्यापारबोधकत्वं वा अकर्मकत्वमिति फलितोऽर्थः । यथा ष्ठां ( स्था ) गतिनिवृत्तौ अत्र फलं गतिनिवृत्तिः व्यापारस्तदनुकूल इति फलं व्यापारश्चोभयं देवदत्तस्तिष्ठति इत्यत्र देवदत्तरूपैकाधिकरणे वर्त्तते । देवदत्तस्तिष्ठतीति कोऽर्थः ?, गतिनिवृत्त्यनुकूलव्यापारवान् देवदत्तः । एवं तयोः फलव्यापारयोः धर्मिभेदेऽधिकरणभेदे भिन्नभिन्नाधिकरणवृत्तितायां सत्यां धातुः सकर्मको भवति । फलव्यधिकरणव्यापारबोधकत्वं व्यधिकरणफलावच्छिन्नव्यापारबोधकत्वं वा सकर्मकत्वमिति फलितोऽर्थः । यथा डुपचीँष् ( पच् ) पाके । देवदत्तस्तण्डुलान् पचति । कोऽर्थः ? तण्डुलनिष्ठविक्लृत्यनुकूलव्यापारवान् देवदत्तः । अत्र फलं विक्लृतिः सा तण्डुलेषु वर्त्तते व्यापारस्तदनुकूलः स देवदत्ते वर्त्तते इति फलव्यापारयोर्भिन्नाधिकरणता ।

अर्थान्तरे वर्त्तमानस्याकर्मकस्यापि सकर्मकत्वं भवति कालाध्वभावदेशापेक्षया च सर्व एव धातवः सकर्मकाः । मासमास्ते । क्रोशो गुडधानाभिर्भूयते । गोदोहं स्वपिति । कुरून् शेते । अर्थान्तरवृत्त्यादिना च सकर्मकस्यापि अकर्मकत्वं भवति यदाह—

धातोरर्थान्तरे वृत्ते-र्धात्वर्थेनोपसंग्रहात् ।
प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया ॥ २ ॥

अर्थान्तरे वर्त्तमानाद्धातोः सकर्मकस्यापि अकर्मिका क्रिया भवति । यथा भारं वहति उद्यच्छतीत्यर्थः, नदी वहति स्रवतीत्यर्थः । कर्मणो धात्वर्थान्तःप्रवेशादकर्मकत्वम् । यथा जीव ( जीव् ) प्राणधारणे जीवति । हदिं ( हद् ) पुरीषोत्सर्गे हदते । अत्र प्राणपुरीषाख्ये कर्मणी धात्वर्थेनैव क्रोडीकृते । कर्मणः प्रसिद्धत्वात् । यथा वृषू ( वृष् ) सेचने । देवो वर्षति । न पुनरत्र । रक्तं वर्षति । पार्थः शरान् वर्षति । कर्मणोऽविवक्षितत्वात् । यथा नेह पच्यते नेह भुज्यते । कर्माविवक्षा

चौदासीन्यनिवृत्तिमात्रपरतया प्रयोगात् । यथा किं करोतीति प्रश्ने पचति पठतीत्यादि प्रत्यवस्थानं नतु भवति विद्यते वेत्यादि तेषामपर्यनुयोज्यत्वात् । यत्तु किं करोतीति प्रश्ने भवतीत्युत्तरं तत्क्रियाख्यकर्मनिबन्धनं नतु बाह्यकर्मापेक्षं भवनं करोतीत्यर्थावगमात् । क्रिया हि सर्वधातूनामान्तरं कर्म । अत एव क्रियाविशेषणानां कर्मत्वं स्मरन्ति । नन्वेवं क्रियाविशेषणादिति योगो व्यर्थः, कर्मणीत्येव द्वितीयासिद्धेः । नैवम् । आन्तरकर्मणा सकर्मणोऽपि अकर्मककार्यप्रतिपत्त्यर्थत्वाद्योगस्य । तेन सुखं सुप्त इत्यादौ कर्त्तरि क्तः सिद्धः । सुखं स्थातेत्यादौ कृन्निमित्ता षष्ठी न भवतीति । अत एव सकर्मकाकर्मकव्यवहारो द्रव्यकर्मनिमित्त इत्युच्यते । यदाह— ॥ सकर्मकाकर्मकत्वं द्रव्यकर्मनिबन्धनम् ॥



## ॥ अथ द्विकर्मकगणनानिरूपणम् ॥

**नीहृवहिकृषो ण्यन्ता दुहिब्रूपृच्छिभिक्षिचिरुधिशास्वर्थाः ।**
**पचियाचि दण्डिकृग्रहमथिजिप्रमुखा द्विकर्माणः ॥ १ ॥**

इमे सर्वे धातवो द्विकर्मका विज्ञेयाः । णींञ् ( नी ) प्रापणे । गामजां नयति । हृंञ् (हृ) हरणे । निवासं हरति घासं । वहीं (वह्) प्रापणे । ग्रामं भारं वहति । कृषं (कृष्) विलेखने । कृषींत् [ कृष् ] विलेखने । ग्रामं बलिवर्दं कर्षति । ण्यन्ता इति । घ्रां ( घ्रा ) गन्धोपादाने । जिनदासं पुष्पाणि घ्रापयति । दुहिब्रूपृच्छिभिक्षिचि रुचिशास्धातूनामर्था इव अर्था येषां ते तथा । दुहिप्रभृतीनां षण्णां धातूनां येऽर्थाः प्रतिपादिताः तादृशा अर्था येषां धातूनां भवन्ति तेऽपि धातवो द्विकर्मका विज्ञेयाः । दुहींक् ( दुह् ) क्षरणे । गां दोग्धि पयः । ब्रूंगक् ( ब्रू ) व्यक्तायां वाचि । भव्यान् धर्मं ब्रूते । प्रच्छंत् ( प्रच्छ् ) ज्ञीप्सायाम् । जनं मार्गं पृच्छति । भिक्षि [ भिक्ष् ) याञ्चायाम् । भिक्षते गां राजानम् । चिंग्ट् [ चि ] चयने । वृक्षं पुष्पाणि अवचिनोति । रुधृंपी ( रुध् ) आवरणे । शठं गृहमवरुणद्धि । शासूक् [ शास् ] अनुशिष्टौ । मनुष्यं धर्मं शास्ति डुपचींष् ( पच् ) पाके तण्डुलानोदनं पचति । याचिरत्रानुनयार्थस्तेन भिक्ष्यर्थाद्भेदः । डुयाचृग् ( याच् ) याञ्चायाम् । शठं धर्मं याचतेऽनुनयतीत्यर्थः दण्डण् [ दण्ड् ] दण्डनिपाते । देवदत्तं शतं दण्डयति । डुकृंग् ( कृ ) करणे । मृदं घटं

करोति। ग्रहीश् [ ग्रह् ] उपादाने। द्रव्यं धान्यं प्रतिगृह्णाति। मन्थश् [ मन्थ् ] विलोडने। समुद्रममृतमथ्नात्। जिं ( जि ) अभिभवे। देवदत्तं शतं जयति। प्रमुखग्रहणात् मुषश् [ मुष् ] स्तेये। गोविन्दं शतं मुष्णाति। एतद्व्याख्या तु मतान्तरीयोक्तकारिकानुसारेण कृता। हेमचन्द्रसूरीशानैस्तु ॥ तच्च ( द्विविधं कर्म तु ) द्विकर्मकेषु दुहिभिक्षिरुधिमच्छिचिग्रूट्शास्वब्रूर्थेषु याचि जयतिप्रभृतिषु नीहृकृषवहेषु च भवति। अत्रोदाहरणानि तु निरुक्तान्येव। अत्रोक्तातिरिक्तधातूनामुपरि गणना कृता। सा अत्रैव समवसरति। इदं तस्या उपलक्षणं मतभेदो वेति स्वयमूह्यम्।

## ॥ इति द्विकर्मकगणनानिरूपणम् ॥

---

## ॥ अथ गौणमुख्यकर्मनिरूपणम् ॥

न्यादीनां कर्मणो मुख्यं प्रत्ययो वक्ति कर्मजः।
नीयते गौर्द्विजैर्ग्रामं भारो ग्राममथोह्यते ॥ १ ॥
गौणं कर्म दुहादीनां प्रत्ययो वक्ति कर्मजः।
गौः पयो दुह्यतेऽनेन शिष्योऽर्थं गुरुणोच्यते ॥ २ ॥

कर्म द्विविधं मुख्यं गौणञ्च। तत्र यदर्थं क्रिया आरभ्यते तत्प्रधानम्। तत्सिद्ध्यै यत्क्रियया व्याप्यते गवादि तदप्रधानम्। अन्यत्सर्वं स्फुटम्। किञ्च गत्यर्थानामकर्मकाणां तु णिगन्तानां प्रधाने एव कर्मणि गम्यते मैत्रो ग्रामम्। आस्यते मासं मैत्रः। बोधाहारार्थशब्दकर्मकाणां तु णिगन्तानामुभयत्र बोध्यते शिष्यो धर्मम्। बोध्यते शिष्यं धर्मो वा। भोज्यतेऽतिथिमोदनः। भोज्यतेऽतिथिरोदनम्। पाठ्यते शिष्यो ग्रन्थम्। पाठ्यते शिष्यं ग्रन्थो वा।

## ॥ इति गौणमुख्यकर्मनिरूपणम् ॥

---

## ॥ अथ धातूपसर्गजन्यभेदप्रकाशनिरूपणम् ॥

बीजकालेषु सम्बद्धा यथा लाक्षारसादयः।
वर्णादिपरिणामेन फलानामुपकुर्वते ॥ १ ॥
बुद्धिस्थादभिसम्बन्धा-त्तथा धातूपसर्गयोः।
अभ्यन्तरीकृतो भेदः पदकाले प्रकाशते ॥ २ ॥

व्याख्या—अथ किं धातुः पूर्वमुपसर्गेण युज्यते उत साधनेनेति ! साधनं हि क्रियां निवर्त्तयति [ साध्यत्ववैशिष्ट्येन बोधयतीति तामुपसर्गो विशिनष्टि ( स्वद्योत्यविशेषणवैशिष्ट्येन बोधयतीत्यर्थः ] अतः पूर्वं साधनेन साधनं कारकम् तदभिधायि कार्येण, युज्यत इति तद्युक्तम् पूर्वं हि धातोः साधनेन सम्बन्धे आस्यते गुरुणा इत्यकर्मकः उपास्यते गुरुरिति सकर्मकः केन स्यात्.

यस्माद्विशिष्टैव क्रिया साधनेन साध्यते नतु साधनाल्लब्धस्वरूपान्यतो विशेषं लभते तस्मात् पूर्वमुपसर्गेण युज्यते–इति युक्तम् । न च प्रत्ययसम्बन्धमन्तरेण क्रियाविशेषस्यानभिव्यक्तेर्न धातोः पूर्वमुपसर्गेण सम्बन्धो युज्यते इति वाच्यम् ? यतः—

**बीजकालेषु सम्बद्धा यथा लाक्षारसादयः**
**वर्णादिपरिणामेन फलानामुपकुर्वते ॥ १ ॥**

बीजकालेषु-बीजोत्पत्तिसमयेषु सम्बद्धाः सम्पृक्ताः, ( बीजैरिति शेषः ) लाक्षारसादयः–जतुरसप्रभृतयः फलानां वर्णादिपरिणामेन रूपरसादिपरिणमनद्वारा, यथा उपकुर्वते ।

**( बुद्धिस्थादभिसम्बन्धात्तथा धातूपसर्गयोः ॥**
**अभ्यन्तरीकृतो भेदः पदकाले प्रकाशते ॥ १ ॥ )**

तथा धातूपसर्गयोः बुद्धिस्थाद् ( बुद्धिविषयीकृतात्, ) अभिसम्बन्धात् भेदः ( उपसर्गार्थकृतो विशेषः ) अभ्यन्तरीकृतः [ बुद्धिस्थीकृतः, धातुनेति शेषः, पदकाले उपसर्गसंज्ञकशब्दप्रयोगकाले प्रकाशते. श्रोतुरिति शेषः ॥ इति अङ्कुरोत्पत्तिसमये लाक्षारसादिसेकेन फलानां रूपरसादिवैलक्षण्यं भवति इति लोकप्रसिद्धिः तत्र यथा लाक्षारसादीनां पूर्वकालिकसम्बधेन जायमाना विलक्षणता फलकाले प्रकाशते तथा पूर्वकालिकोपसर्गसम्बन्धेन जायमानः उपसर्गार्थकृतो विशेषः उपसर्गप्रयोगकाले प्रकाशते–एवं च पूर्वमुपसर्गयोगो नाम तदर्थसम्बन्धः तत उपसर्गशब्दात् पूर्वं साधनकार्ययोगः तत उपसर्गसंज्ञकशब्दप्रयोग इति तात्पर्यम्, इत्यलम् ।

---

## ॥ अथ षोपदेशनिरूपणम् ॥

**स्वरदन्त्यपरसकारादयः स्मिस्विदिस्वदिस्वञ्जिस्वपयश्च ।**

षोपदेशाः सृपि, सृजि, स्त्या, स्तॄ, स्तृ, सृ, सेकृवर्जम् ॥ १ ॥

स्वरा अवर्णादयो दन्त्या लृवर्णतवर्गलसास्ते परा यस्मात्तादृशो यः सकारः स आदौ येषां ते स्वरदन्त्यपरसकारादयः स्वरपरसादयः दन्त्यपरसादयश्च धातवः षोपदेशा ज्ञेयाः उत्तरदलदर्शितान् विहाय । यथा षहि ( सह् ) मर्षणे । ष्ठां (स्था) गतिनिवृत्तौ । उक्तलक्षणेनाग्रहादाह-स्मीत्यादि-स्मिप्रभृतयश्च षोपदेशा विज्ञेयाः । ष्मिङ् ( स्मि) ईषद्धसने । ञिष्विदाङ् ( स्विद् ) मोचने च । ष्विदांच् [स्विद् ] गात्रप्रक्षरणे । ष्वदि ( स्वद् ) आस्वादने । ष्वञ्जित् ( स्वञ्ज् ) सङ्गे । ञिष्वपंक् ( स्वप् ) शये । सृपिप्रभृतीन् विहाय । ते चेमे । सृप्लृं ( सृप् ) गतौ । सृजिच् [ सृज् ] विसर्गे । सृजंत् ( सृज् ) विसर्गे । स्त्यैं ( स्त्यै ) संघाते । स्तॄंग्श् (स्तॄ) आच्छादने । स्तृंग्ट् ( स्तृ ) आच्छादने । सृं [ सृ ] गतौ । सेकृङ् ( सेकृ ) गतौ । षोपदेशफलं तु असीषहत् इत्यादौ षत्वकरणम् । स्मिप्रभृतिभिः साहचर्यादेक-स्वराणामेव षोपदेशस्मृतिः । अत एव सूत्रसत्रसंग्रामसामसमाजस्थूलस्तनस्तेनस्तो-मसुखानामषोपदेशत्वात् सोसूत्र्यते सिसत्रयिषते इत्यादौ षत्वं न भवति ।

॥ इति षोपदेशप्रकरणम् ॥

—— :०: ——

## ॥ अथ णोपदेशनिरूपणम् ॥

सर्वे च नादयो णोपदेशा नृति नन्दि नर्दि नशि नाटि नक्कि नाधृ नाथृ नॄवर्जम् । येषां धातूनामादौ नकारो भवेत्ते णोपदेशा विज्ञेयाः, नृतिप्रभृतिन् विहाय ते चेमे ॥ नृतैच् ( नृत् नर्तने । टुनदु ( नन्द् ) समृद्धौ नर्द ( नर्द् ) शब्दे । नशौच् ( नश् ) अदर्शने । नाटीति नटण् ( नट् ) अवस्यन्दने इत्यस्यैवात्र वर्जनं नतु णट् लट् नृतौ । णट् (नट्) नतौ एतयोः । नक्कण् नक्क्) नाशने । नाधृङ् (नाध्) नाथङ्वत् । नाथृङ् (नाथ्) उपतापैश्वर्याशीःषु च । नॄ नये । नॄश् (नॄ) नये एतद्-व्यतिरिक्ता नकारादयः सर्वे णोपदेशाः यथा णख (नख्) गतौ णोपदेशफलन्तु प्र-णखतीत्यादौ णत्वम् । ननु नख [नख्] गतौ इत्यस्य अणोपदेशत्वात् कथमत्र न वर्जनमिति चेदुच्यते नख णख इति पाठसामर्थ्यादेव अणोपदेशत्वमेवान्यत्रापि ।

॥ इति णोपदेशप्रकरणम् ॥

## ॥ अथ धात्वर्थविशेषनिरूपणम् ॥

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।

विहाराहारसंहार प्रहारप्रतिहारवत् ॥ १ ॥
धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित्तमनुवर्तते ।
तमेव विशिनष्ट्यन्योऽनर्थकोऽन्यः प्रयुज्यते ॥ २ ॥

उपसर्गेण ॥

प्रपरापसमन्ववनिर्दुरभि–व्यधिसूदतिनिप्रतिपर्यपयः ।
उप आङिति विंशतिरेष सखे ! उपसर्गगणः कथितः कविभिः ॥ १ ॥

इत्याद्यन्यतमेन धात्वर्थो धातुपाठे य उक्तोऽर्थः स बलात्प्रतीतिसामर्थ्यादन्यत्रान्यस्मिन्नर्थे नीयते स्थाप्यते पर्यवसितो भवतीत्यर्थः। अत्र ये उपसर्गस्य द्योतकत्वमामनन्ति तन्मते तु अन्योऽप्यर्थस्तस्य धातोरेव ये तु वाचकत्वमाश्रयन्ति तन्मते धातुसम्बन्धात्तमन्यमर्थमुपसर्ग एवाभिधत्ते तदेवाह–हृंग् ( हृ ) हरणे। अस्य हरणार्थत्वेऽपि विहारः क्रीडा समीचीनगमनं वा॥ आहारो भोजनम्। संहारो विनाशः। प्रहारस्ताडनम्। प्रतिहारः द्वाःस्थकर्म। इत्यादौ उक्तादितिविविधार्थावगतेः। कश्चिदुपसर्गो धात्वर्थं बाधते। यथा–षिधू ( सिधू ) गत्याम्। प्रतिषेधति। अत्र गत्यर्थं बाधित्वा निषेधार्थमभिदधाति। कश्चित्तं मौलधात्वर्थमनुवर्त्तते यथा अधीयते। अत्र इंङ्क् (इ) अध्ययने। अयमधिनाऽवश्यंभावी योगो न चार्थविशेषः। अन्य उपसर्गस्तमेव मूलधात्वर्थं विशिनष्टि विशिष्टतामापादयति। यथा डुंपचींष् ( पच् ) पाके प्रपचति प्रकृष्टं प्रकर्षं वा पचतीत्यर्थः। अन्य उपसर्गोऽनर्थक एव प्रयुज्यते। गम्लृं ( गम् ) गतौ। अधिगच्छति। अत्र न धात्वर्थबाधो न वा धात्वर्थविशेषता न वा गम्–धातुनाऽवश्यंभावी योग इति।

उपसर्गेणैकेन द्वाभ्यां त्रिभिरपि धातुः ॥
संयुज्यतेऽर्थसिद्ध्यै चतुर्भिरपि युज्यते कश्चित् ॥१॥
एकेन यथा विहरति युग्मेनाभ्यवहरत्यनलैः ॥
समभ्यवहरति समभिव्याहरतीत्यब्धिसङ्ख्यैश्च ॥२॥

॥ इति धात्वर्थविशेषनिरूपणम् ॥

---

## ॥ अथ अनुस्वारनिरूपणम् ॥

नकारजावनुस्वार–पञ्चमौ झुटि धातुषु।
सकारजः शकारश्चे–षाट्टवर्गस्तवर्गजः ॥ १ ॥

धातुषु धुटि धुडादौ वर्णे परे सति योऽनुस्वारो वर्गपञ्चमाक्षरो वा दृश्यते स नकारस्थाने जात इति वेदितव्यम् । दंशं ( दन्श्-दंश् ) दशने दशति । अत्र यदि नकारजोऽनुस्वारो न भवेत्तर्हि दंशसञ्ज इति लुग्न स्यात् तुम्फत् (तुनफ्-तुम्फ्) तृप्तौ । तुफति । अत्रापि नकारजो मकाररूपपञ्चमो वर्णो न स्यात्तर्हि नो व्यञ्जनस्येति लुग्न स्यात् । एवं चे चकारे परे यः शकारः स सकारजः सकारस्थाने जातः । यथा ॥ पस्च ( सस्चू-सश्चू ) गतौ । सश्चति । अत्र शकारः सकारस्थाने जातः । षीत् रकारात् षकाराच्च परो यः टवर्गः स तवर्गो जातः । यथा ऊर्णुग्क् (ऊर्नु ऊर्णु) आच्छादने । ऊर्णुनाव । अत्र रकारात्परो यो णकारः स नकारस्थाने जातः अन्यथा ऊर्णुणाव इत्येव स्यात् । ष्ठां ( स्था ) गतिनिवृत्तौ । अत्र षकारस्तु षोपदेशार्थस्तदनन्तरं ठकाररूपटवर्णस्थकाररूपतवर्गजातः । एवं षींद् इत्यत्र पूर्वार्थे पञ्चमीविवक्षायां अट्ड ( अद्ड्-अड्ड् ) अभियोगे अड्डति इत्यादिकमपि भावनीयम् ।

## ॥ इत्यनुस्वारादिनिरूपणम् ॥

---

इतिश्री तपोगच्छाधिराज सर्व तन्त्रस्वतन्त्र शासनसम्राट् सूरिचक्र चक्रवर्त्ति जगद्गुरुतीर्थसंरक्षणप्रवणविद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधकसंविग्नशाखीयभट्टारकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासिन्यायवाचस्पतिशास्त्रविशारदाचार्य श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यमुनिगुणविजयविरचितायां

हैमधातुमालायां

## ॥ द्वितीयो विभागः ॥

## ॥ ग्रन्थप्रशस्तिः ॥

पाताले वत्सराणां व्यदधत धरणेन्द्रः सहस्राण्यशीतिं ।
यावद् यस्याः सपर्यां कृतसुकृततिर्भव्यभद्रप्रदायाः ॥
साक्षात्सा कल्पवल्ली प्रणमितशिरसः पातु बद्धाञ्जलीन्नः ।
श्रीमत्पार्श्वस्य मूर्तिः प्रकटितमहिमा स्तम्भनाधीश्वरस्य ॥ १ ॥

शास्त्रोक्तानघसार्वपद्धतितपागच्छाधिपत्यं वहन् ।
सद्दृग्बोधविशुद्धशीलचरणप्रौढप्रभावाद्भुतः ॥
निःशेषश्रुतयोगसम्पदचलः शश्वत्परार्थोद्यतः ।
स श्रीमाञ्जयतीह सूरिमुकुटः श्रीनेमिसूरीश्वरः ॥ २ ॥

दर्शनोदयनामानौ यत्पट्टोदयभूधरे ।
पुष्पदन्ताविवाचार्यौ राजेते शास्त्रपारगौ ॥ ३ ॥

दर्शनसूरिशिष्यः स-त्प्रयत्नेन सुबोधिनीम् ।
धातुमालामीमां हैमीं गुणविजय आतनोत् ॥ ४ ॥

स्वर्गगतस्य तस्येयं शुद्धचारित्रशालिनः ।
कृतिरारन्दमासेक नन्यतां बोधकांक्षिणाम् ॥ ५ ॥

सूरिणा नन्दनेनेयं प्रभूतं परिवर्द्धिता ।
उदयसूरिशिष्येण नेमिसूरीशशासनात् ॥ ६ ॥

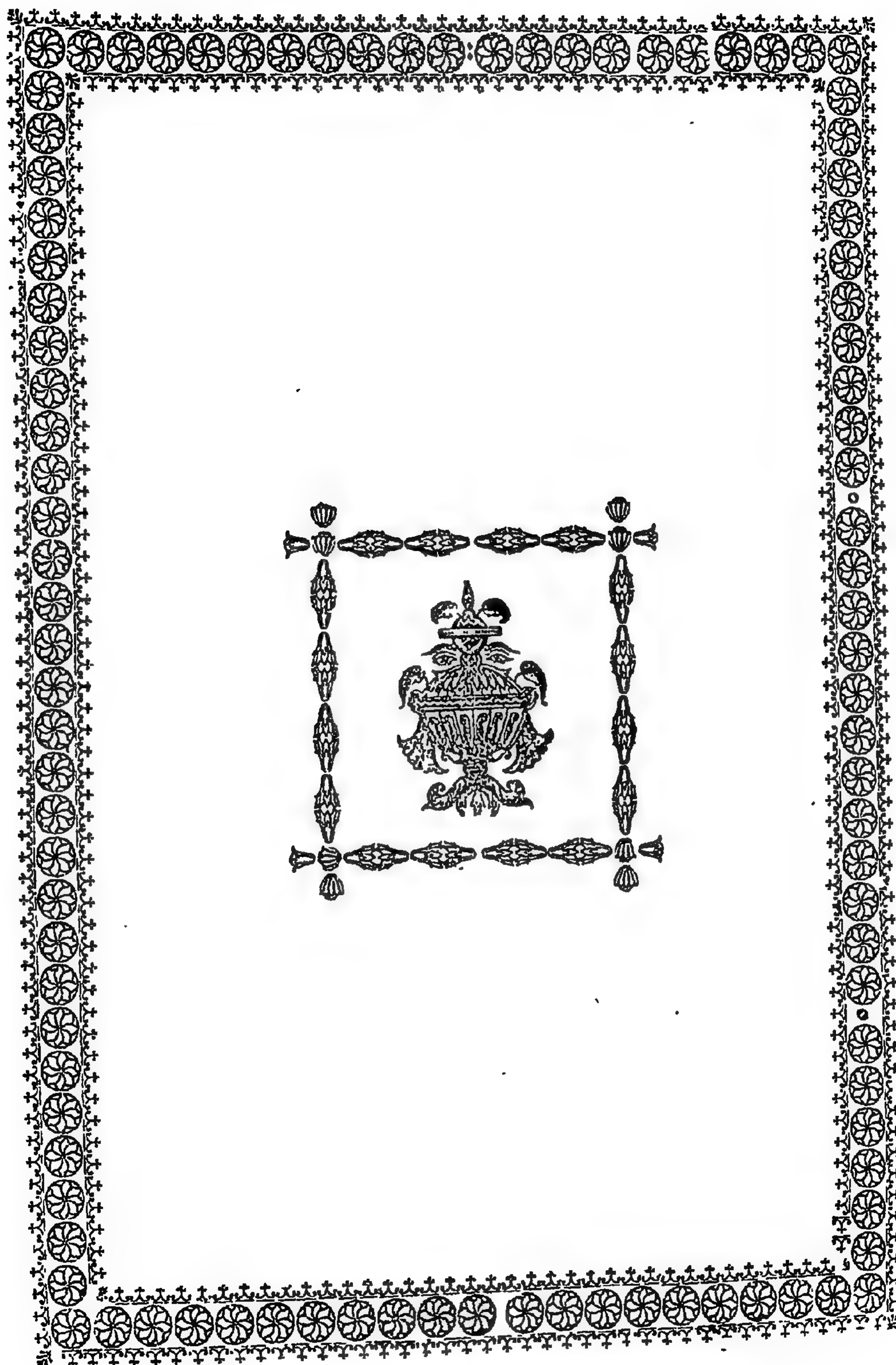
नेमिसूरीशशिष्येण गीर्वाणविजयेन च ।
निर्जेनरोपकाराय यत्नतः परिशोधिता ॥ ७ ॥

सिद्धयश्वाङ्कमहीप्रमाणकलिते संवत्सरे वैक्रमे ।
भाद्रस्योज्ज्वलपञ्चमीशुभदिने श्रीस्तम्भतीर्थे वरे ॥
सम्पूर्त्तिं गमितेयमासुरनगं जीयात्प्रमाणानुगा ।
शोध्या च स्खलनान्विता यदि भवेत् प्राज्ञैः परार्थोद्यमैः ॥ ८ ॥

धातुमालामिमां कृत्वा विजयेन गुणादिना ॥
यत्पुण्यमर्जितं तेन भव्योऽस्तु गुणभाजनम् ॥ ९ ॥



इति श्री सर्वतन्त्रस्वतन्त्र शासनसम्राट् सूरि-
चक्रचक्रवर्त्ति जगद्गुरु तीर्थसंरक्षणप्रवण-
विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-
संविग्नशाखीय प्रातःस्मरणीय
भट्टारकाचार्यवर्य श्रीमद्विजयनेमि-
सूरीश्वरपट्टालङ्कारान्तेवासि
न्यायवाचस्पति शास्त्रविशारदाचार्य
श्रीविजयदर्शनसूरिशिष्यरत्न-
मुनिगुणविजय
विरचिता
**हैमधातुमाला**
**संपूर्णा**



॥ ॐ अर्हम् नमः ॥

॥ श्री सर्वलब्धिसम्पन्न श्रीगौतमस्वामिने नमः ॥

सर्वतन्त्रस्वतन्त्रशासनसम्राट्सूरिचक्रचक्रवर्त्ति-जगद्गुरु-तपागच्छाधिपतिभट्टारकाचार्य-श्रीमद्विजयनेमिसूरि भगवद्भ्यो नमः ॥

# ॥ अथ बालसंस्कृतदीपिका. ॥

## ॥ शब्दरूपावलिः ॥

जिनो मुनिः करी भूभृत् भानुः कर्ता च चंद्रमाः ॥
तस्थिवान् भगवानात्मा दशैते पुंसि नायकाः ॥ १ ॥

### अकारांतः पुल्लिंगो जिनशब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | विभ० |
|---|---|---|---|
| जिनः | जिनौ | जिनाः | प्र. |
| जिनम् | ,, | जिनान् | द्वि. |
| जिनेन | जिनाभ्याम् | जिनैः | तृ. |
| जिनाय | ,, | जिनेभ्यः | च. |
| जिनात् | ,, | ,, | पं. |
| जिनस्य | जिनयोः | जिनानाम् | ष. |
| जिने | ,, | जिनेषु | स. |
| हे जिन | हे जिनौ | हे जिनाः | . |

एवं देव, पुत्र, शुक, दास, वीर, भक्त, सूर्य, राम इत्यादि.

### इकारांतः पुल्लिंगो मुनिशब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| मुनिः | मुनी | मुनयः | प्र. |
| मुनिम् | मुनी | मुनीन् | द्वि. |
| मुनिना | मुनिभ्याम् | मुनिभिः | तृ. |
| मुनये | ,, | मुनिभ्यः | च. |
| मुनेः | ,, | ,, | पं. |
| मुनेः | मुन्योः | मुनीनाम् | ष. |
| मुनौ | ,, | मुनिषु | स. |
| हे मुने | हे मुनी | हे मुनयः | सं. |

एवं अरि, ऋषि, रवि, कवि, नृपति, हरि, कपि, पवि, इत्यादि.

### इन्नंतः पुल्लिंगः करिन्शब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| करी | करिणौ | करिणः | प्र. |
| करिणम् | करिणौ | करिणः | द्वि. |
| करिणा | करिभ्याम् | करिभिः | तृ. |
| करिणे | करिभ्याम् | करिभ्यः | च. |
| करिणः | करिभ्याम् | करिभ्यः | प. |
| करिणः | करिणोः | करिणाम् | ष. |
| करिणि | करिणोः | करिषु | स. |
| हे करिन् | हे करिणौ | हे करिणः | सं. |

एवं पक्षिन्, रोगिन्, योगिन्, स्वामिन्, अपराधिन्, धनिन्, हस्तिन्, इत्यादि.

### तकारांतः पुल्लिंगो भूभृतशब्दः

| ए० | द्वि | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| भूभृत् | भूभृतौ | भूभृतः | प्र. |
| भूभृतम् | भूभृतौ | भूभृतः | द्वि. |
| भूभृता | भूभृद्भ्याम् | भूभृद्भिः | तृ. |
| भूभृते | भूभृद्भ्याम् | भूभृद्भ्यः | च. |
| भूभृतः | भूभृद्भ्याम् | भूभृद्भ्यः | पं. |
| भूभृतः | भूभृतोः | भूभृताम् | ष. |

| | | | |
|---|---|---|---|
| भूभृति | भूभृतोः | भूभृत्सु | स. |
| हे भूभृत् | हे भूभृतौ | हे भूभृतः | सं. |

एवं मरुत्, हरित्, ददत्, दधत् शासत्, चकासत्, तमोनुद् जाग्रत्, इत्यादि.

## उकारान्तः पुल्लिंगो भानुशब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| भानुः | भानू | भानवः | प्र. |
| भानुम् | भानू | भानून् | द्वि. |
| भानुना | भानुभ्याम् | भानुभिः | तृ. |
| भानवे | भानुभ्याम् | भानुभ्यः | च. |
| भानोः | भानुभ्याम् | भानुभ्यः | पं. |
| भानोः | भान्वोः | भानूनाम् | ष. |
| भानौ | भान्वोः | भानुषु | स. |
| हे भानो | हे भानू | हे भानवः | सं. |

एवं गुरु, साधु, बाहु, शम्भु, मनु, शिशु, वायु, सिन्धु, इत्यादि.

## ऋकारांतः पुलिंगः कर्तृशब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| कर्ता | कर्तारौ | कर्तारः | प्र० |
| कर्तारं | कर्तारौ | कर्तॄन् | द्वि. |
| कर्त्रा | कर्तृभ्याम् | कर्तृभिः | तृ. |
| कर्त्रे | कर्तृभ्याम् | कर्तृभ्यः | च. |
| कर्तुः | कर्तृभ्याम् | कर्तृभ्यः | पं. |
| कर्तुः | कर्त्रोः | कर्तॄणाम् | ष. |
| कर्तरि | कर्त्रोः | कर्तृषु | स. |
| हे कर्तः | हे कर्तारौ | हे कर्तारः | सं. |

एवं दातृ, वक्तृ, श्रोतृ, सवितृ, भोक्तृ. धातृ, भर्तृ, गन्तृ इत्यादि.

## सकारांतः पुल्लिंग द्रमस्शब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| चंद्रमाः | चंद्रमसौ | चंद्रमसः | प्र. |
| चंद्रमसम् | चंद्रमसौ | चंद्रमसः | द्वि. |
| चंद्रमसा | चंद्रमोभ्याम् | चंद्रमोभिः | तृ. |
| चंद्रमसे | चंद्रमोभ्याम् | चंद्रमोभ्यः | च. |
| चंद्रमसः | चंद्रमोभ्याम् | चंद्रमोभ्यः | पं. |
| चंद्रमसः | चंद्रमसोः | चंद्रमसाम् | ष. |
| चंद्रमसि | चंद्रमसोः | चंद्रमस्सु | स. |
| हे चंद्रमः | हे चंद्रमसौ | हे चंद्रमसः | सं. |

एवं वेधस्, सुमनस्, दुर्मनस्, दिवौकस्, दर्वासस्, वनौकस्, इत्यादि.

## वसुप्रत्ययांतः पुल्लिंगस्तस्थिवस्शब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| तस्थिवान् | तस्थिवांसौ | तस्थिवांसः | प्र. |
| तस्थिवांसम् | तस्थिवांसौ | तस्थुषः | द्वि. |
| तस्थुषा | तस्थिवद्भ्याम् | तस्थिवद्भिः | त. |
| तस्थुषेः | तस्थिवद्भ्याम् | तस्थिवद्भ्यः | पं. |
| तस्थुषः | तस्थुषोः | तस्थुषाम् | प. |
| तस्थुषि | तस्थुषोः | तस्थिवत्सु | स. |
| हे तस्थिवन् | हे तस्थिवांसौ | हे तस्थिवांसः | सं. |

एवं सेदिवस्, जग्मिवस्, जगन्वस् विद्वस्, अध्यूषिवस्, चक्रिवस्, इत्यादयः

## मतुप्रत्ययांतः पुल्लिंगो भगवत्शब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| भगवान् | भगवंतौ | भगवंतः | प्र. |
| भगवंतम् | भगवंतौ | भगवतः | द्वि. |
| भगवता | भगवद्भ्याम् | भगवद्भिः | तृ. |
| भगवते | भगवद्भ्याम् | भगवद्भ्यः | च. |
| भगवतः | भगवद्भ्याम् | भगवद्भ्यः | पं. |
| भगवतः | भगवतोः | भगवताम् | प. |
| भगवति | भगवतोः | भगवत्सु | स. |

| | | | |
|---|---|---|---|
| हे भगवन् | हे भगवंतौ | हे भगवंतः | सं. |

एवं भवत्, बुद्धिमत्, श्रुतिमत्, श्रीमत् विद्यावत्, धनवत्, गुणवत् धीमत् इत्यादयः

### नकारांतः पुल्लिंग आत्मन्शब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| आत्मा | आत्मानौ | आत्मानः | प्र. |
| आत्मानम् | आत्मानौ | आत्मनः | द्वि. |
| आत्मना | आत्मभ्याम् | आत्मभिः | तृ. |
| आत्मने | आत्मभ्याम् | आत्मभ्यः | च. |
| आत्मनः | आत्मभ्याम् | आत्मभ्यः | पं. |
| आत्मनः | आत्मनोः | आत्मनाम् | ष. |
| आत्मनि | आत्मनोः | आत्मसु | स. |
| हे आत्मन् | हे आत्मानौ | हे आत्मानः | सं. |

एवं ब्रह्मन्, यज्वन्, सुशर्मन्, अश्मन्, सुसब्रन्, इत्यादयः

### इति पुल्लिंगशब्दाः

---

रमा रुचिर्नदी धेनुर्वाग् धीः सरिदनंतरम् ॥
क्षुत्प्राट्ट् च शरच्चैव दर्शते स्त्रीषु नायकाः ॥२॥

### आबंतः स्त्रीलिंगो रमाशब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| रमा | रमे | रमाः | प्र. |
| रमां | रमे | रमाः | द्वि. |
| रमया | रमाभ्याम् | रमाभिः | तृ. |
| रमायै | रमाभ्याम् | रमाभ्यः | च. |
| रमायाः | रमाभ्याम् | रमाभ्यः | पं. |
| रमायाः | रमयोः | रमाणाम् | ष. |
| रमायाम् | रमयोः | रमासु | स. |
| हे रमे | हे रमे | हे रमाः | सं. |

एवं आज्ञा, आशा, कन्या, कृपा, माला, शाला, लता विद्या इत्यादयः

### इकारांतः स्त्रीलिंगो रुचिशब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| रुचिः | रुची | रुचयः | प्र. |
| रुचिम् | रुची | रुचीः | द्वि. |
| रुच्या | रुचिभ्याम् | रुचिभिः | तृ. |
| रुच्यै, रुचये | रुचिभ्याम् | रुचिभ्यः | च. |
| रुच्याः, रुचेः | रुचिभ्याम् | रुचिभ्यः | पं. |
| रुच्याः रुचेः | रुच्योः | रुचीनाम् | ष. |
| रुच्याम्, रुचौ | रुच्योः | रुचिषु | स. |
| हे रुचे | हे रुची | हे रुचयः | सं. |

एवं कीर्ति, बुद्धि, सिद्धि, शांति, मुक्ति भक्ति, भूति, प्रीति इत्यादयः

### ईबंतः स्त्रीलिंगो नदीशब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| नदी | नद्यौ | नद्यः | प्र. |
| नदीम् | नद्यौ | नदीः | द्वि. |
| नद्या | नदीभ्याम् | नदीभिः | तृ. |
| नद्यै | नदीभ्याम् | नदीभ्यः | च. |
| नद्याः | नदीभ्याम् | नदीभ्यः | पं. |
| नद्याः | नद्योः | नदीनाम् | ष. |
| नद्याम् | नद्योः | नदीषु | स. |
| हे नदि | हे नद्यौ | हे नद्यः | सं. |

एवं कुमारी, दासी, सखी, जननी, महिषी, रजनी, शची, इन्द्राणी इत्यादयः

### उकारांतः स्त्रीलिंगो धेनुशब्दः

| ए० | द्वि० | व० | वि० |
|---|---|---|---|
| धेनुः | धेनू | धेनवः | प्र. |
| धेनुम् | धेनू | धेनूः | द्वि. |
| धेन्वा | धेनुभ्याम् | धेनुभिः | तृ. |
| धेन्वै, धेनवे | धेनुभ्याम् | धेनुभ्यः | च. |
| धेन्वाः धेनोः | धेनुभ्याम् | धेनुभ्यः | पं. |
| धेन्वाः धेनोः | धेन्वोः | धेनूनाम् | ष. |
| धेन्वां, धेनौ | धेन्वोः | धेनुषु | स. |
| हे धेनो | हे धेनू | हे धेनवः | सं. |

एवं रज्जु, हनु, तनु, इत्यादयः

### चकारांतः स्त्रीलिंगो वाक्शब्दः

| ए० | द्वि० | व० | वि० |
|---|---|---|---|
| वाक्, वाग् | वाचौ | वाचः | प्र. |
| वाचम् | वाचौ | वाचः | द्वि. |
| वाचा | वाग्भ्याम् | वाग्भिः | तृ. |
| वाचे | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः | च. |
| वाचः | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः | पं. |
| वाचः | वाचोः | वाचाम् | ष. |
| वाचि | वाचोः | वाक्षु | स. |
| हे वाक्, हे वाग् | हे वाचौ | हे वाचः | सं. |

एवं शुच्, पयोमुच्, स्रज्, दृश्, हुतभुज्, इत्यादयः

### ईकारांतः स्त्रीलिंगो धीशब्दः

| ए० | द्वि० | व० | वि० |
|---|---|---|---|
| धीः | धियौ | धियः | प्र. |
| धियम् | धियौ | धियः | द्वि. |
| धिया | धीभ्याम् | धीभिः | तृ. |
| धियै, धिये | धीभ्याम् | धीभ्यः | च. |
| धियाः, धियः | धीभ्याम् | धीभ्यः | पं. |
| धियाः धियः | धियोः | धियां, धीनां | ष. |
| धियां, धियि | धियोः | धीषु | स. |
| हे धीः | हे धियौ | हे धियः | सं. |

एवं ह्री, श्री, सुश्री, सुधी, भी, इत्यादयः

### तकारांतः स्त्रीलिंगः सरित्शब्दः

| ए० | द्वि० | व० | वि० |
|---|---|---|---|
| सरित् | सरितौ | सरितः | प्र. |
| सरितम् | सरितौ | सरितः | द्वि. |
| सरिता | सरिद्भ्याम् | सरिद्भिः | तृ. |
| सरिते | सरिद्भ्याम् | सरिद्भ्यः | च. |
| सरितः | सरिद्भ्याम् | सरिद्भ्यः | पं. |
| सरितः | सरितोः | सरिताम् | ष. |
| सरिति | सरितोः | सरित्सु | स. |
| हे सरित्-द् | हे सरितौ | हे सरितः | सं. |

एवं हरित्, आवृत्, इत्, विद्युत्, इत्यादयः

### धकारांतः स्त्रीलिंगः क्षुध्शब्दः

| ए० | द्वि० | व० | वि० |
|---|---|---|---|
| क्षुत्-क्षुद् | क्षुधौ | क्षुधः | प्र. |
| क्षुधम् | क्षुधौ | क्षुधः | द्वि. |
| क्षुधा | क्षुद्भ्याम् | क्षुद्भिः | तृ. |
| क्षुधे | क्षुद्भ्याम् | क्षुद्भ्यः | च. |
| क्षुधः | क्षुद्भ्याम् | क्षुद्भ्यः | पं. |
| क्षुधः | क्षुधोः | क्षुधाम् | ष. |
| क्षुधि | क्षुधोः | क्षुत्सु | स. |
| हे क्षुत्-क्षुद् | हे क्षुधौ | हे क्षुधः | सं. |

एवं समिध्, युयुध् इत्यादयः

षकारान्तः स्त्रीलिङ्गः प्रावृष् शब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| प्रावृट्-ड् | प्रावृषौ | प्रावृषः | प्र. |
| प्रावृषम् | ,, | ,, | द्वि |
| प्रावृषा | प्रावृड्भ्याम् | प्रावृड्भिः | तृ. |
| प्रावृषे | प्रावृड्भ्याम् | प्रावृड्भ्यः | च. |
| प्रावृषः | प्रावृड्भ्याम् | प्रावृड्भ्य. | पं. |
| प्रावृषः | प्रावृषोः | प्रावृषाम् | ष. |
| प्रावृषि | प्रावृषोः | प्रावृट्सु | स. |
| हे प्रावृट्-ड् | हे प्रावृषौ | हे प्रावृषः | सं. |

एवं त्विष्, द्विष्, रत्नमुष्, इत्यादयः

दकारांतः स्त्रीलिंगः शरद्शब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| शरत्-द् | शरदौ | शरदः | प्र. |
| शरदम् | शरदौ | शरदः | द्विः |
| शरदा | शरद्भ्याम् | शरद्भिः | तृ. |
| शरदे | शरद्भ्याम् | शरद्भ्यः | च. |
| शरदः | शरद्भ्याम् | शरद्भ्यः | पं. |
| शरदः | शरदोः | शरदाम् | ष. |
| शरदि | शरदोः | शरत्सु | स. |
| हे शरत्-द् | हे शरदौ | हे शरदः | सं. |

एवं आपद्, तमोनुद् विपद्, सम्पद्,

इति स्त्रीलिंगाः

ज्ञानं दधि पयो वर्म धनुर्वारि जगत्तथा ॥
मधु नाम मनोहारि दर्शते तु नपुंसके । ३॥

अकारांतो नपुंसकलिंगो ज्ञानशब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| ज्ञानम् | ज्ञाने | ज्ञानानि | प्र. |
| ज्ञानम् | ज्ञाने | ज्ञानानि | द्वि. |

शेषं पुल्लिंगजिनशब्दवत्.

| | | | |
|---|---|---|---|
| हे ज्ञान | हे ज्ञाने | हे ज्ञानानि | सं. |

एवं जलम्, फलम्, दुःखम्, धनम्, मित्रं, कलत्रं, गृहं सुखं इत्यादयः

इकारांतो नपुंसकलिंगो दधिशब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| दधि | दधिनी | दधीनि | प्र. |
| दधि | दधिनी | दधीनि | द्वि. |
| दध्ना | दधिभ्याम् | दधिभिः | तृ. |
| दध्ने | दधिभ्याम् | दधिभ्यः | च. |
| दध्नः | दधिभ्याम् | दधिभ्यः | पं |
| दध्नः | दध्नोः | दध्नाम् | ष. |
| दध्नि-दधनि | दध्नोः | दधिषु | स. |
| हे दधे-दधि | हे दधिनी | हे दधीनि | सं. |

एवं अस्थि, सक्थि, अक्षि इत्यादयः

सकारांतो नपुंसकलिंगः पयस्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| पयः | पयसी | पयांसि | प्र. |
| पयः | पयसी | पयांसि | द्वि. |
| हे पयः | हे पयसी | हे पयांसि | |

शेषं चंद्रमस्शब्दवत्

एवं मनस्, वचस्, सुचन्द्रमस् छन्दस् तपस् तमस् तेजस् नभस् इत्यादयः

नकारांतो नपुंसकलिंगो वर्मन्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| वर्म | वर्मणी | वर्माणि | प्र. |
| वर्म | वर्मणी | वर्माणि | द्वि. |

शेषं आत्मन्शब्दवत्

| | | | |
|---|---|---|---|
| हे वर्मन्-हे वर्म | हे वर्मणी | हे वर्माणि | सं. |

एवं ब्रह्मन, शर्मन्, कर्मन् इत्यादयः

सकारांतो नपुंसकलिंगो धनुष्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| धनुः | धनुषी | धनूंषि | प्र. |

| | | | |
|---|---|---|---|
| धनुः | धनुषी | धनूंषी | द्वि. |
| धनुषा | धनुर्भ्याम् | धनुर्भिः | तृ. |
| धनुषे | धनुर्भ्याम् | धनुर्भ्यः | च. |
| धनुषः | धनुर्भ्याम् | धनुर्भ्यः | पं. |
| धनुषः | धनुषोः | धनुषाम् | प. |
| धनुषि | धनुषोः | धनुष्षु | स. |
| हे धनुः | हे धनुषी | हे धनूंषि | सं. |

एवं चक्षुष् आयुष हविष् इत्यादयः

इकारांतो नपुंसकलिंगो वारिशब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| वारि | वारिणी | वारीणि | प्र. |
| वारि | वारिणी | वारीणि | द्वि. |
| वारिणा | वारिभ्याम् | वारिभिः | तृ. |
| वारिणे | वारिभ्याम् | वारिभ्यः | च. |
| वारिणः | वारिभ्याम् | वारिभ्यः | पं. |
| वारिणः | वारिणोः | वारीणाम् | ष. |
| वारिणि | वारिणोः | वारिषु | स. |
| हे वारे-वारि | हे वारिणी | हे वारीणि | सं. |

एवं सुरभि, सुमुनि, इत्यादयः

तकारांतो नपुंसकलिंगो जगत्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| जगत् | जगती | जगन्ति | प्र. |
| जगत् | जगती | जगन्ति | द्वि. |

शेषं भूभृत्शब्दवत्

| | | | |
|---|---|---|---|
| हे जगत् | हे जगती | हे जगन्ति | सं. |

एवं वियत् इत्यादयः

उकारांतो नपुंसकलिंगो मधुशब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| मधु | मधुनी | मधूनि | प्र |

शेषं वारिशब्दवत्

वसु, तालु, वस्तु, अश्रु, इत्यादयः

नकारांतो नपुंसकलिंगो नामन्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | नाम्नी-नामनी | नामानि | प्र. |
| नाम | नाम्नी-नामनी | नामानि | द्वि. |
| नाम्ना | नामभ्याम् | नामभिः | तृ. |
| नाम्ने | नामभ्याम् | नामभ्यः | च. |
| नाम्नः | नामभ्याम् | नामभ्यः | पं. |
| नाम्नः | नाम्नोः | नाम्नाम् | ष. |
| नाम्नि-नामनि | नाम्नोः | नामसु | स. |
| हे नामन् | हे नाम्नी | हे नामानि | स. |
| हे नाम | हे नामनी | | |

एवं लोमन्, सामन्, व्योमन्, धामन्, हेमन्, प्रेमन् इत्यादयः

इन्नंतो नपुंसकलिंगो मनोहारिन्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| मनोहारि | मनोहारिणी | मनोहारीणि | प्र. |
| मनोहारि | मनोहारिणी | मनोहारीणि | द्वि. |

शेषं करिन् शब्दवत् सं. प्रथमावत्

एवं अपराधिन् कुशलिन् धनिन्, इत्यादयः

इति नपुंसकशब्दाः

सः सा तद्यश्च या यच्च कः का किं त्वमहं त्वयम्
इयं चेदं चैष चैषा चैतच्चासावसावदः ॥४॥

दकारान्तः पुंल्लिंगस्तद्शब्दः

| ए० | द्वि० | ब० | वि० |
|---|---|---|---|
| सः | तौ | ते | प्र. |
| तम् | तौ | तान् | द्वि. |
| तेन | ताभ्याम् | तैः | तृ. |
| तस्मै | ताभ्याम् | तेभ्यः | च. |
| तस्मात् | ताभ्याम् | तेभ्यः | पं. |
| तस्य | तयोः | तेषाम् | ष. |
| तस्मिन् | तयोः | तेषु | स. |

### दकारांतः स्त्रीलिंगस्तद्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| सा | ते | ताः | प्र. |
| ताम् | ते | ताः | द्वि. |
| तया | ताभ्याम् | ताभिः | तृ. |
| तस्यै | ताभ्याम् | ताभ्यः | च. |
| तस्याः | ताभ्याम् | ताभ्यः | पं. |
| तस्याः | तयोः | तासाम् | ष. |
| तस्याम् | तयोः | तासु | स. |

### दकारान्तो नपुंसकलिंगस्तद्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत् | ते | तानि | प्र. |
| तत् | ते | तानि | द्वि. |

शेषं पुल्लिंगतद्शब्दवत्

### दकारांतः पुल्लिंगो यद्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| यः | यौ | ये | प्र. |

शेषं पुल्लिंगतद्शब्दवत्

### दकारांतः स्त्रीलिंगो यद्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| या | ये | याः | प्र. |

शेषं स्त्रीलिंगतद्शब्दवत्

### दकारांतो नपुंसकलिंगो यद्शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| यत् | ये | यानि | प्र. |
| यत् | ये | यानि | द्वि. |

शेषं पुल्लिंगतत्शब्दवत

### मकारांतः पुल्लिंगः किम्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| कः | कौ | के | प्र. |

शेषं पुल्लिंगतद्शब्दवत्

### मकारांतः स्त्रीलिंगः किम्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| का | के | काः | प्र. |

शेष स्त्रीलिंगतद्शब्दवत्

### मकारांतो नपुंसकलिंगः किम्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| किम् | के | कानि | प्र. |
| किम् | के | कानि | द्वि. |

शेषं पुंवत्

### त्रिष्वपि लिंगेषु समानो दकारांतो युष्मद्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| त्वम् | युवाम् | यूयम् | प्र. |
| त्वाम्–त्वा | युवां–वाम् | युष्मान्–वः | द्वि. |
| त्वया | युवाभ्याम् | युष्माभिः | तृ. |
| तुभ्यं–ते | युवाभ्याम्–वाम् | युष्मभ्यं–वः | च. |
| त्वद् | युवाभ्याम्– | युष्मत् | पं. |
| तव–ते | युवयोः–वाम् | युष्माकम्–वः | ष. |
| त्वयि | युवयोः | युष्मासु | स. |

### त्रिषु लिंगेषु सरूपो दकारांतोऽस्मद्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| अहम् | आवाम् | वयम् | प्र. |
| मां–मा | आवां–नौ | अस्मान्–नः | द्वि. |
| मया | आवाभ्याम् | अस्माभिः | तृ. |
| मह्यं–मे | आवाभ्याम्–नौ | अस्मभ्यं–नः | च. |
| मत् | आवाभ्याम् | अस्मत् | पं. |
| मम–मे | आवयोः–नौ | अस्माकम्–नः | ष. |
| मयि | आवयोः | अस्मासु | स. |

### मकारांतः पुल्लिंग इदम्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| अयम् | इमौ | इमे | प्र. |
| इमं–एनम् | इमौ–एनौ | इमान्–एनान् | द्वि. |
| अनेन–एनेन | आभ्याम् | एभिः | तृ. |
| अस्मै | आभ्याम् | एभ्यः | च. |
| अस्मात् | आभ्याम् | एभ्यः | प. |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अस्य | अनयोः—एनयोः | एषाम् | ष. |
| अस्मिन् | अनयोः—एनयोः | एषु | स. |

मकारांतः स्त्रीलिंग इदम्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| इयम् | इमे | इमाः | प्र. |
| इमां-एनाम् | इमे-एने | इमाः-एनाः | द्वि. |
| अनया-एनया | आभ्याम् | आभिः | तृ. |
| अस्यै | आभ्याम् | आभ्यः | च. |
| अस्याः | आभ्याम् | आभ्यः | पं. |
| अस्याः | अनयोः—एनयोः | आसाम् | ष. |
| अस्याम् | अनयोः एनयोः | आसु | स. |

मकारांतो नपुंसकलिंग इदम्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| इदम् | इमे | इमानि | प्र. |
| इदं-एनत् | इमे-एने | इमानि-एनानि | द्वि. |

शेषं पुंवत्

दकारांतः पुल्लिंग एतद्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| एषः | एतौ | एते | प्र. |
| एतं-एनम् | एतौ-एनौ | एतान्-एतान् | द्वि. |
| एतेन-एनेन | एताभ्याम् | एतैः | तृ. |
| एतस्मै | एताभ्याम् | एतेभ्यः | च. |
| एतस्मात् | एताभ्याम् | एतेभ्यः | पं. |
| एतस्य | एतयोः एनयोः | एतेषाम् | ष. |
| एतस्मिन् | एतयोः-एनयोः | एतेषु | स. |

दकारांतः स्त्रीलिंग एतद्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| एषा | एते | एताः | प्र. |
| एताम्-एनाम् | एते-एने | एताः, एनाः | द्वि. |
| एतया-एनया | एताभ्याम् | एताभिः | तृ. |
| एतस्यै | एताभ्याम् | एताभ्यः | च. |
| एतस्याः | एताभ्याम् | एताभ्यः | पं. |
| एतस्याः | एतयोः-एनयोः | एतासाम् | ष. |
| एतस्याम् | एतयोः-एनयोः | एतासु | स. |

दकारांतो नपुंसकलिंग एतद्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| एतत्-एनत् | एते-एने | एतानि-एनानि | प्र. |
| एतत्-एनत् | एते-एने | एतानि-एनानि | द्वि. |

शेषं पुंवत्

सकारांतः पुल्लिंगोऽदस्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| असौ | अमू | अमी | प्र. |
| अमुम् | अमू | अमून् | द्वि. |
| अमुना | अमूभ्याम् | अमीभिः | तृ. |
| अमुष्मै | अमूभ्याम् | अमीभ्यः | च. |
| अमुष्मात् | अमूभ्याम् | अमीभ्यः | पं. |
| अमुष्य | अमुयोः | अमीषाम् | ष. |
| अमुष्मिन् | अमुयोः | अमीषुः | स. |

सकारांतः स्त्रीलिंगोऽदस्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| असौ | अमू | अमूः | प्र. |
| अमूम् | अमू | अमूः | द्वि. |
| अमुया | अमूभ्याम् | अमूभिः | तृ. |
| अमुष्यै | अमूभ्याम् | अमूभ्यः | च. |
| अमुष्याः | अमूभ्याम् | अमूभ्यः | पं. |
| अमुष्याः | अमुयोः | अमूषाम् | ष. |
| अमुष्याम् | अमुयोः | अमूषु | स. |

सकारांतो नपुंसकलिंगोऽदस्शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| अदः | अमू | अमूनि | प्र. |
| अदः | अमू | अमूनि | द्वि. |

शेषं पुंवत्

गतामातास्त्रसागौर्नौः स्रग्भूराजा पतिः सखा
र्वःसर्वा च सर्वं च द्वित्र्यादिश्च गणस्तथा ॥

---

ऋकारांतः पुलिंगः पितृ–शब्दः ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| पिता | पितरौ | पितरः | प्र. |
| पितरम् | पितरौ | पितॄन् | द्वि. |

पित्रा पितृभ्याम् इत्यादि अग्रे कर्तृव-ज्ज्ञेयम् । एवं भ्रातृ जामातृ–देष्टृ–शंस्तृ–सव्येष्टृ–नृ–इति षट् शब्दाः नृ–शब्दस्य षष्ठीबहुवचने तु नृणाम् नॄणाम् इति रूपद्वयम् । शेषं पितृवज्ज्ञेयम् ।

ऋकारान्तः स्त्रीलिंगो मातृशब्दः ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| माता | मातरौ | मातरः | प्र. |
| मातरम् | मातरौ | मातॄः | द्वि. |

मात्रा मातृभ्याम् इत्यादि शेषं कर्तृवज्ज्ञेयम् । एवं यातृ-दुहितृ–ननान्दृ-ननन्दृ–इति चत्वारः शब्दाः ।

ऋकारान्तः स्त्रीलिंगः स्वसृशब्दः ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| स्वसा | स्वसारौ | स्वसारः | प्र. |
| स्वसारम् | स्वसारौ | स्वसॄः | द्वि. |

स्वस्रा स्वसृभ्याम् इत्यादि शेषं कर्तृवज्ज्ञेयम् ।

४ ओकारन्त उभयलिंगो गो शब्दः ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| गौः | गावौ | गावः | प्र. |
| गाम् | गावौ | गाः | द्वि. |
| गवा | गोभ्याम् | गोभिः | तृ. |
| गवे | गोभ्याम् | गोभ्यः | च. |
| गोः | गोभ्याम् | गोभ्यः | प. |
| गोः | गवोः | गवाम् | ष. |
| गवि | गवोः | गोषु | स. |
| हे गौः | हे गावौ | हे गावः | सं. |

एवम् ओकारान्तः स्त्रीलिंगो द्यो–शब्दः ।

औकारान्तः स्त्रीलिंगो नौ–शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| नौ | नावौ | नावः | प्रः |
| नावम् | नावौ | नावः | द्वि. |
| नावा | नौभ्याम् | नौभिः | तृ. |
| नावे | नौभ्याम् | नौभ्यः | च. |
| नावः | नौभ्याम् | नौभ्यः | पं. |
| नावः | नावोः | नावाम् | ष. |
| नावि | नावोः | नौषु | स. |
| हे नौः | हे नावौ | हे नावः | सं. |

एवं ग्लौशब्दः

६ जकारान्तः स्त्रीलिंगःस्रज् शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| स्रक् स्रग् | स्रजौ | स्रजः | प्र. |
| स्रजम् | ,, | ,, | द्वि. |
| स्रजा | स्रग्भ्याम् | स्रग्भिः | तृ. |
| स्रजे | ,, | स्रग्भ्यः | च. |
| स्रजः | ,, | ,, | पं. |
| ,, | स्रजोः | स्रजाम् | ष. |
| स्रजि | ,, | स्रक्षु | स. |
| हे स्रक् हे स्रग् | हे स्रजौ | हे स्रजः | सं. |

एवं ऋत्विज् सुयुज् इ.

ऊकारान्तः स्त्रीलिंगो भूशब्दः ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| भूः | भुवौ | भुवः | प्र. |
| भुवम् | भुवौ | भुवः | द्वि. |
| भुवा | भूभ्याम् | भूभिः | तृ. |
| भुवै, भुवे | ,, | भूभ्यः | च. |

| | | | |
|---|---|---|---|
| भुवाः, भुवः | भूभ्याम् | भूभ्यः | पं. |
| ,, ,, | भुवोः | भूनाम् भुवाम् | ष. |
| भुवाम् भुवि | भुवोः | भूषु | स. |
| हे भूः | हे भुवौ | हे भुवः | सं. |

एवं सू–जू–भ्रू–सुभ्रू–इत्यादय ऊकारान्ताः स्त्रीलिङ्गाः

### नान्तः–पुल्लिंगो राजन् शब्दः।

| | | | |
|---|---|---|---|
| राजा | राजानौ | राजानः | प्र. |
| राजानम् | ,, | राज्ञः | द्वि. |
| राज्ञा | राजभ्याम् | राजभिः | तृ. |
| राज्ञे | ,, | राजभ्यः | च. |
| राज्ञः | ,, | ,, | पं. |
| राज्ञः | राज्ञोः | राज्ञाम् | ष. |
| राज्ञि, राजनि | ,, | राजसु | स. |
| हे राजन् | हे राजानौ | हे राजानः | सं. |

एवं महिमन् गरिमन् सुनामन् इ०

### इकारान्तः पुलिंगः पति–शब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| पतिः | पती | पतयः | प्र. |
| पतिम् | पती | पतीन् | द्वि. |
| पत्या | पतिभ्याम् | पतिभिः | तृ. |
| पत्ये | ,, | पतिभ्यः | च. |
| पत्युः | ,, | ,, | पं. |
| पत्युः | पत्योः | पतीनाम् | ष. |
| पत्यौ | पत्योः | पतिषु | स. |
| हे पते | हे पती | हे पतयः | सं. |

### १० इकारान्तः पुलिंगः सखि–शब्दः।

| | | | |
|---|---|---|---|
| सखा | सखायौ | सखायः | प्र. |
| हे सखे | हे सखायौ | हे सखायः | सं. |
| सखायम् | सखायौ | सखीन् | द्वि. |
| सख्या | सखिभ्याम् | सखिभिः | |

इत्यादि अग्रे पतिशब्दवज्ज्ञेयम्।

---

## अथ सर्वादयः शब्दाः।

### अकारान्तः पुलिंगः सर्वशब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर्वः | सर्वौ | सर्वे | प्र. |
| सर्वम् | ,, | सर्वान् | द्वि. |
| सर्वेण | सर्वाभ्याम् | सर्वैः | तृ. |
| सर्वस्मै | ,, | सर्वेभ्यः | च. |
| सर्वस्मात् | ,, | ,, | पं. |
| सर्वस्य | सर्वयोः | सर्वेषाम् | ष. |
| सर्वस्मिन् | सर्वयोः | सर्वेषु | स. |
| हे सर्व | हे सर्वौ | हे सर्वे | सं. |

### आबन्तः स्त्रीलिंगः सर्वाशब्दः।

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर्वा | सर्वे | सर्वाः | प्र. |
| सर्वाम् | सर्वे | सर्वाः | द्वि. |
| सर्वया | सर्वाभ्याम् | सर्वाभिः | तृ. |
| सर्वस्यै | ,, | सर्वाभ्यः | च. |
| सर्वस्याः | ,, | ,, | पं. |
| सर्वस्याः | सर्वयोः | सर्वासाम् | ष. |
| सर्वस्याम् | ,, | सर्वासु | स. |
| हे सर्वे | हे सर्वे | हे सर्वाः | सं. |

### अकारान्तो नपुंसकलिंगः सर्वशब्दः।

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर्वम् | सर्वे | सर्वाणि | प्र. |
| ,, | ,, | ,, | द्वि. |

शेषं पुंवज्ज्ञेयम्॥

एवं विश्व, उभ, उभय, डतर, डतम, अन्य, अन्यतर, इतर, त्वत्, त्व, नेम, सम, सिमशब्दाः ॥

अकारांतः सर्वनामसंज्ञक एकशब्द एकवचनान्तः । पुंसि एकः १ एकम् २ एकेन ३ । एकस्मै ४ । एकस्मात् ५ । एकस्य ६ । एकस्मिन् ७ । स्त्रियाम् । एका १ एकाम् २ । एकया ३ । एकस्यै ४ । एकस्याः ५–६ । एकस्याम् ७ नपुंसके एकम् । एकम् । शेषम्पुंवत्

इकारान्तः सर्वनामसंज्ञको द्विशब्दः ।

| पुंसि | नपुंसके | स्त्रियाम् | द्विवचनान्तः |
|---|---|---|---|
| द्वौ | द्वे | द्वे | प्र. द्वि. |
| | द्वाभ्याम् | तृतीया | च. पं. |
| | द्वयोः | षष्ठी | सप्तमी |

त्रिशब्दः ( बहुवचनान्तः )

| पुंसि | नपुंसके | स्त्रियाम् | |
|---|---|---|---|
| त्रयः | त्रीणि | तिस्रः | प्र. |
| त्रीन् | त्रीणि | तिस्रः | द्वि |
| त्रिभिः | ,, | तिसृभिः | तृ. |
| त्रिभ्यः | ,, | तिसृभ्यः | च–पं. |
| त्रयाणाम् | ,, | तिसृणाम् | प. |
| त्रिषु | ,, | तिसृषु | स. |

चतुर् शब्दः ।

| पुंसि | नपुंसके | स्त्रियाम् | |
|---|---|---|---|
| चत्वारः | चत्वारि | चतस्रः | प्र. |
| चतुरः | चत्वारि | ,, | द्वि. |
| चतुर्भिः | ,, | चतसृभिः | तृ. |
| चतुर्भ्यः | ,, | चतसृभ्यः | च-पं. |
| चतुर्णाम् | ,, | चतसृणाम् | ष. |
| चतुर्षु | ,, | चतसृषु | स. |

त्रिषु लिंगेषु समाः ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| पञ्चन् | षष् | अष्टन् | श. |
| पञ्च | षट् | अष्टौ, | प्र. द्वि. |
| पञ्चभिः | षड्भि | अष्टाभिः–अष्टभिः | तृ. |
| पञ्चभ्यः | षड्भ्यः | अष्टाभ्यः-अष्टभ्यः | च.पं. |
| पञ्चानाम् | षण्णाम् | अष्टानाम् | ष. |
| पञ्चसु | षट्सु षट्त्सु | अष्टासु-अष्टसु | स. |

सप्तन् नवन् दशन् इत्यादयः पञ्चन् शब्दवज्ज्ञेयाः । विंशतिशब्दः स्त्रीलिङ्गो रुचिशब्दवज्ज्ञेयः ।

एवं षष्टि-सप्तति अशीति-नवति इत्यादयः । त्रिंशत्शब्दः स्त्रीलिङ्गः सरित्शब्दवज्ज्ञेयः ।

एवं चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् इत्यादयः ।

शत–सहस्र–अयुत–लक्ष–प्रयुते एते नपुंसकज्ञानशब्दवज्ज्ञेयाः । कोटि-शब्दः स्त्रियां रुचिवज्ज्ञेयः ।

उभौ प्रथमा । उभौ द्वितीया । उभाभ्याम् तृतीया । उभाभ्याम् चतुर्थी । उभाभ्याम् पंचमी । उभयोः षष्ठी । उभयोः सप्तमी । हे उभौ संबोधनम् ।

---

## पूर्वादीनां तु विशेषः ।

अकारांतः पुलिंगः पूर्वशब्दः

| | | | |
|---|---|---|---|
| पूर्वः | पूर्वौ | पूर्वे-पूर्वाः | प्र. |
| पूर्वम् | पूर्वौ | पूर्वान् | द्वि. |
| पूर्वेण | पूर्वाभ्याम् | पूर्वैः | तृ |
| पूर्वस्मै | पूर्वाभ्याम् | पूर्वेभ्यः | च. |
| पूर्वस्मात्-पूर्वात् | ,, | ,, | पं. |
| पूर्वस्य | पूर्वयोः | पूर्वषाम् | प. |
| पूर्वस्मिन्-पूर्वे | पूर्वयोः | पूर्वेषु | स. |
| हे पूर्व | हे पूर्वौ | हे पूर्वे हे पूर्वाः | सं. |

एवं पर, अवर, दक्षिण, अपर, अधर, स्व, अंतर, इति ।

अकारांतः पुल्लिंगो निर्जरशब्दः ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| निर्जरः | निर्जरसौ / निर्जरौ | निर्जरसः / निर्जराः | प्र. |
| निर्जरसम् / निर्जरम् | निर्जरसौ / निर्जरौ | निर्जरसः / निर्जरान् | द्वि. |
| निर्जरसा / निर्जरेण | निर्जराभ्याम् | निर्जरैः / निर्जरसैः | तृ. |
| निर्जरसे / निर्जराय | निर्जराभ्याम् | निर्जरेभ्यः | च. |
| निर्जरसः / निर्जरात् | निर्जराभ्याम् | निर्जरेभ्यः | पं. |
| निर्जरसः / निर्जरस्य | निर्जरसोः / निर्जरयोः | निर्जरसाम् / निर्जराणाम् | ष. |
| निर्जरसि / निर्जरे | निर्जरसोः / निर्जरयोः | निर्जरेषु | स. |
| हे निर्जर | हे निर्जरसौ / निर्जरौ | हे निर्जरसः / निर्जराः | सं. |

पकारान्तः स्त्रीलिङ्गोऽपशब्दस्तु बहुवचनान्तः

आपः १ अपः २ अद्भिः ३ अद्भ्यः ४ अद्भ्यः ५ अपाम् ६ अप्सु ७ ।

## सात विभक्तिना अर्थ.

प्रथमा—जे, ते,
द्वितीया—ने, प्रत्ये,
तृतीया—ए, वडे, करीने
चतुर्थी—ने माटे लीधे, वास्ते, सारु
पंचमी—थी, थकी, उपरथी,
षष्ठी—नो, नी, नुं, नां,
सप्तमी -मां, विषे, अंदर, उपर,
संबोधन—हे,

इति बालसंस्कृतदीपिकायां शब्दरूपावलिः



# ॥ शिशुबोधिनी ॥

प्रणम्य श्रीमहावीरं गौतमं लब्धिसम्पदम् ।
सद्गुरुं नेमिसूरिं च तन्यते शिशुबोधिनी ॥ १ ॥

## ॥ अथ संज्ञाप्रकरणम् ॥

१ अ थी औ सुधीना वर्णों स्वर कहेवाय (अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ ( १४)

२ क थी ह सुधीना वर्णों व्यंजन कहेवाय (क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह (३३)

३ अ थी ॡ सुधीना स्वरो समान कहेवाय (१०)

४ अ अने आ सिवायना बाकीना स्वरो नामी कहेवाय (१२)

५ ए ऐ ओ औ ए चार सन्ध्यक्षर छे,

६ क वर्ग च वर्ग ट वर्ग त वर्ग प वर्ग ए पांच वर्ग छे,

७ ङ ञ ण न म ए पांच अनुनासिक छे.

८ य र ल व ए चार अन्तःस्था छे,

९ अनुनासिक अने अन्तःस्था सिवाय बाकीना व्यंजनो धुट् कहेवाय,

१० दरेक वर्गनो पहेलो बीजो अने श ष स ए अघोष कहेवाय (१३)

११ अघोष सिवाय बाकीना व्यंजनो घोष कहेवाय (२०)

१२ जेने छेडे विभक्ति होय ते पद कहेवाय जेमके जिनः । मुनिः ।

॥ इति संज्ञाप्रकरणम् ॥

## ॥ अथ स्वरसन्धिः ॥

१ छेल्ला चार स्वरो ( ए ऐ ओ औ ) सिवाय बाकीना कोइपण ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वर पछी स्वजातीय स्वर ह्रस्व के दीर्घ आवे तो पासे आवेला बे स्वरो मळी जइ बंनेने ठेकाणे दीर्घस्वर थाय छे. वृषभ–अजितौ वृषभा-

जितौ, दधि इदम्–दधीदम्, भानु उदयः–भानूदयः, पितृ ऋषभः पितॄषभः, होत्लृ लृकारः होतॄकारः,

२ अ के आ पछी ह्रस्व के दीर्घ इ उ ऋ के लृ आव्यो होय तो पासे आवेला बे स्वरने बदले अनुक्रमे ए ओ अर् अल् मूकाय छे. जेमके तव इदम्–तवेदम्, तव उदय–तवोदय, जिन ऋषभ–जिनर्षभः, तव लृकारः– तवल्कारः ॥

३ ह्रस्व के दीर्घ इ उ ऋ अने लृ पछी विजातीय (जुदी जातना) स्वर आवे तो ते इ, उ, ऋ, ने लृने ठेकाणे अनुक्रमे य, व, र ने ल, मुकाय छे. दधि आनय=दध्यानय, मधु आनय मध्वानय, पितृ अर्थः पित्रर्थः होतृ अकारः होत्लकारः,

४ अ के आ पछी ए के ऐ आवे तो बेउने ठेकाणे ऐ थाय अने ओ के औ आवे तो औ थाय छे. जेमके तव=ओदनः तवौदनः, तव=औपगवः तवौपगवः ॥

५ ए ऐ ओ के औ पछी कोइ पण स्वर आवे तो तेने बदले अनुक्रमे अय्, आय्, अव्, के आव्, मुकवामां आवे छे. ने अनम् नयनम्, नै अकः–नायकः, भो अनम्–भवनम् लौ अकः–लावकः

६ पदने छेडे अय् आय् अव् के आव् होय अने पछी कोइपण स्वर होय तो अय् आय् ना जे य् अने अव् आव् नो जे व् ते विकल्पे उडी जाय अने पछी संधि न थाय जेमके ते–इह–त–इह । तयिह । तस्मै–एतत् तस्मा–एतत् । तस्मायेतत् पटो–इह–पट–इह । पटविह । तौ–इह ता इह–ताविह ।

७ पदने छेडे ए के ओ होय अने पछी जो अ आवे तो ते अ उडी जाय जेमके रामे–अत्र । रामेऽत्र ॥ भानो–अत्र । भानोऽत्र ।

८ छेल्ला चार स्वर (ए ऐ ओ औ) सिवाय बीजा कोइ पण स्वर पछी ह्रस्व ऋ आवे तो सन्धि करवी अथवा तो सन्धि न करता पूर्वनो स्वर दीर्घ होय तो ह्रस्व करवो. महिषी ऋर्षि=महिषि ऋषिं,

॥ इति स्वरसन्धिः ॥



॥ अथासन्धिः ॥

१ द्विवचनान्त शब्दने छेडे ई ऊ के ए होय अने पछी कोइ पण स्वर आवे

तो संधि न थाय जेमके मुनी–एतौ । साधू आगच्छतः । माले इमे ॥

२ अदुस शब्दना अमी पछी को इपण स्वर आवे तो संधि न थाय जेमके अ-मी अश्वाः ।

॥ इत्यसन्धिः ॥

॥ अथ व्यञ्जनसन्धिः ॥

१ पदने छेडे वर्गनो पहेलो होय अने पछी स्वर के घोष व्यंजन आवे तो पहेलाने ठेकाणे ते वर्गनो त्रीजो थाय, जेमके–भूभृत्–अयम् । भूभृदयम् ।

२ पदने छेडे वर्गनो त्रीजो होय अने पछी अनुनासिक आवे तो त्रीजाने ठेकाणे ते वर्गनो पांचमो विकल्पे थाय, जेमके ककुम्मण्डलम् । ककुब्मण्डलम् ॥

३ पदने छेडे वर्गनो त्रीजो होय अने पछी ह आवे तो ह ने ठेकाणे जे वर्गनो त्रीजो होय ते वर्गनो चोथो थाय केमके वाक् हीनः–वाग् हीनः । वाग्घीनः ।

४ श ष स सिवायनो जे धुट् तेना पछी जो अघोष आवे तो धुट् ने ठेकाणे ते वर्गनो पहेलो थाय जेमके भेद्–ता । भेत्ता ।

५ पदने छेडे वर्गनो पहेलो होय, अने पछी श होय अने श पछी धुट् सिवायनो कोइपण व्यंजन के स्वर होय तो श ने ठेकाणे विकल्पे छ थाय, जेमके वाक् शूरः । वाक्छूरः ।

६ पदने छेडे न् होय अने पछी च छ ट ठ के त थ आवे अने तेना पछी जो कोइपण धुट् वर्ण न होय तो न् ने ठेकाणे अनुक्रमे श ष स थाय अने न् नी पहेलाना वर्ण उपर अनुस्वार अथवा अनुनासिक थाय जेमके भवान्–चर । भवांश्चरः । भवाँश्चरः । भवान्–छ्यति भवांश्छ्यति । । भवाँश्छ्यति भवान्-टकः । भवांष्टकः । भवाँष्टकः । भवान-ठकारः । भवांष्ठकारः । भवाँष्ठकारः ॥ भवान्–तनोति । भवांस्तनोति । भवाँस्तनोति ॥ भवान्–थुडति । भवांस्थुडति । भवाँस्थुडति ॥ आ नियम प्रशान् शब्दना न् ने ठेकाणे लागतो नथी जेमके प्रशान् तनोति ॥

७ पदने छेडे न होय अने पछी श आवे तो न पछी च् विकल्पे उमेराय छे अने तेनो विकल्पे लोप थाय छे जेमके भवान्–शूरः । भवाञ्छूरः । भवाञ्च्–शूरः । भवाञ्छूरः । भवाञ्शूरः ।

८ त वर्गने ठेकाणे श के च वर्गनो योग छतां च वर्ग थाय, जेमके-तत् शेते। । तच्-शेते । तच्छेते । तत्-चारु । तच्चारु ।

९ त वर्गने ठेकाणे ष के ट वर्गनो योग छतां ट वर्ग थाय, जेमके-पेष्-ता । पेष्टा । तत्-टीका । तट्टीका ।

१० स् ने ठेकाणे श के च वर्गनो योग छतां श् थाय अने ष के ट वर्गनो योग छतां ष थाय, जेमके-कस् शूरः-कश्शूरः । कस् चरति-कश्चरति । कस् पष्ठः-कष्षष्ठः । कस् टङ्कः-कष्टङ्कः ।

११ श पछी जो तवर्ग आवे तो तवर्गनो चवर्ग थतो नथी. जेमके-प्रश्नः ।

१२ तवर्ग पछी ष आवे तो तवर्गनो टवर्ग थतो नथी, जेमके-तीर्थकृन् षोडशः शान्तिः

१३ तवर्ग पछी जो ल आवे तो तवर्गने ठेकाणे ल थाय अने न् ने ठेकाणे अनुनासिक लँ थाय जेमके-तत् लुनानि-तल्लुनाति । भवान् लिखति-भवाँल्लिखति

१४ ह्रस्व पछी पदने छेडे ङ् ण् न् होय अने पछी कोइ पण स्वर आवे तो ङ् ण् न् बेवडाइ जाय जेमके क्रुङ् इह-क्रुङ्ङिह । सुगण् इह-सुगण्णिह । कुर्वन् आस्ते-कुर्वन्नास्ते ।

१५ पदने छेडे म् होय अने पछी कोइ पण व्यंजन आवे तो म् ने ठेकाणे अनुस्वार थाय अथवा म् पछीनो व्यंजन जे वर्गनो होय ते वर्गनो अनुनासिक थाय. जेमके त्वम्-करोषि-त्वं करोषि-त्वङ्करोषि ॥

१६ समान पदे ( एकने एकज शब्दमां) ऋ र् के ष् पछी लागलोज न आव्यो होय तो ते न नो ण थाय छे, वळी ऋ र, ष्, अने न नी वच्चे स्वर ह शिवाय अर्धस्वर महाप्राण ह तेमज कंठ्य के ओठ्य वर्गने व्यंजन होय तो पण न नो ण थाय छे परंतु जो पदान्ते आव्यो होय तो ते न् नो ण थतो नथी, नरान्, नृपेण, हरिणा, ऋषिणा,

१७ स्वर पछी छ् आवे तो च्छ थाय छे ते स्वर दीर्घ अने पदान्ते होय तो च्छ् विकल्पे थाय छे, पण मा (नहि) अने आ (उपसर्ग) पछी छ नो च्छ अवश्य थाय छे. वृक्ष छाया-वृक्षच्छाया. आच्छिद्यते. नदी छाया-नदीच्छाया-नदीछाया,

॥ इति व्यञ्जनसन्धिः ॥

---

॥ अथ रेफसन्धिः ॥

१ पदने छेडे स् के र् होय अने पछी जो अघोष आवे अथवा कोइपण वर्णन आवे तो स् अने र् नो विसर्ग थाय, जेमके-यशस् श्रूयते-यशः श्रूयते । यशस्-यशः । पुनर् करोति-पुनः करोति । पुनर्-पुनः ।

२ र् पछी र आवे तो पहेलां र् नो लोप थाय अने तेनी पहेला जे अ इ के उ होय तो दीर्घ थाय, जेमके-पुनर् रमते-पुना रमते । मुनिर् राजते-मुनी राजते । धेनुर् रम्या-धेनू रम्या ॥

॥ इति रेफसन्धिः ॥

---

## ॥ अथ विसर्गसन्धिः ॥

१ विसर्गनी पहेला अ होय अने विसर्ग पछी अ सिवायनो कोइ पण स्वर आवे तो विसर्गनो लोप थाय जेमके नृपः आगच्छति-नृप आगच्छति ।

२ विसर्गनी पूर्वे आ होय अने पछी कोइ पण स्वर के घोष व्यंजन आवे तो विसर्गनो लोप थाय अने लोप थया पछी सन्धि थती नथी, जेमके-कुशलाः इमे-कुशला इमे । मेघाः वर्षन्ति--मेघा वर्षन्ति ।

३ विसर्गनी पहेला अ होय अने पछी अ के घोष व्यंजन आवे तो विसर्गनो उ थाय, जेमके-प्राज्ञः अयम्-प्राज्ञोऽयम् । श्रीवीरः बभूव-श्रीवीरो बभूव ।

४ विसर्गनी पूर्वे नामी होय अने पछी कोइ पण स्वर के घोष व्यंजन आवे तो विसर्गनो र् थाय, जेमके-साधुः अयम्-साधुरयम् । मूर्तिः जिनस्य-मूर्तिर्जिनस्य । मुनिः राजते-मुनिर् राजते-मुनी राजते ।

५ विसर्ग पछी च छ ट ठ के त थ आवे तो विसर्गने ठेकाणे स् थाय जेमके कः चरति-कस् चरति-कश्चरति कः टङ्कः-कस्टङ्कः कष्टङ्कः । कः तनोतिः कस्तनोति

६ विसर्ग पछी श ष स आवे तो विसर्गने ठेकाणे विकल्पे स् थाय, जेमके-कश्शूरः । कःशूरः । कष्षष्ठः । कः षष्ठः । कस्साधुः । कः साधुः ।

७ तद् शब्दना प्रथमाना एकवचनना विसर्गनो स्वर तथा व्यंजन पर छतां लोप थाय छे, अने लोप थया पछी पादपूर्तिमाटे संधि करवी, नहींतर करवी नहि, जेमके-स एष भरतो राजा । सैष दाशरथी रामः ।

एतद् शब्दना प्रथमाना एकवचनना विसर्गनो व्यंजन पर छतां लोप थाय, जेमके-एषः राजा-एष राजा ।

॥ इति विसर्गसन्धिः ॥

॥ इति सन्धिप्रकरणम् ॥

## ॥ अथाव्ययानि ॥

१ जे शब्द त्रणे लिंगमां साते विभक्तिमां अने त्रणे वचनमां सरखो ज रहे फेरफार न पामे ते अव्यय कहेवाय, च । वा । एव । एवम् । अथ । अहो । ह्यस् । श्वस् । शनैस् । दिवा । नक्तम् । ईषत् । सहसा । किम् । प्रातर् । पुनर् । यावत् । तावत् । सुष्ठु । यथा । तथा । कथम् । इत्थम् । यतः । ततः । कुतः । अतः । अद्य । अधुना । यदा । तदा । कदा । तर्हि । यत्र । तत्र विगेरे

२ प्र विगेरे उपसर्गो पण अव्यय कहेवाय छे, प्र । परा । अप सम् । अनु । अव । निस् । निर् । दुस् । दुर् । वि आङ् । नि । प्रति । परि । उप । अधि । अपि । सु । उत् । अति । अभि । उपसर्ग धातुनी पहेला मुकाय छे, जेमके-प्रभवति ॥

३ जे शब्दने छेडे त्वा, य, तुम्, धा, कृत्वस्, विगेरे प्रत्ययो होय ते पण अव्यय कहेवाय, जेमके--कृत्वा । आगत्य । भोक्तुम् । द्विधा । पञ्चकृत्वः ॥

॥ इत्यव्ययानि ॥

## ॥ अथ स्त्रीप्रत्ययाः ॥

१ अकारान्तशब्दथी स्त्रीलिंगमां केटलेक ठेकाणे आ प्रत्यय थाय छे तथा केटलेक ठेकाणे ई प्रत्यय थाय छे. । अजा । शूद्रा । सर्वा । बाला । सुन्दरी । नदी । कुमारी । गौरी ।

२ जे शब्दने छेडे मत् के वत् प्रत्यय होय ते शब्दथी स्त्रीलिंगमां ई थाय छे. श्रीमती । गुणवती ।

३ जे शब्दने छेडे शतृ प्रत्ययनो यत् होय ते शब्दथी स्त्रीलिंगमां ई थाय छे, बिभ्रती । पहेला गणना अने चोथा गणना धातुथी जो शतृ प्रत्यय आवेलो होय तो त् नी पहेला न् उमेराय छे. । पचन्ती दीव्यन्ती । छठा गणना धातुथी जो शतृ प्रत्यय आवेलो होय तो विकल्पे न् उमेराय छे. तुदन्ती । तुदती ॥

४ नकारान्त शब्दथी अने स्वसृ तिसृ चतसृ ननान्द दुहितृ यातृ मातृ ए सात शब्द सिवाय ऋकारान्त शब्दथी स्त्रीलिंगमां ई थाय छे. करिणी । मनोहारिणी राज्ञी । सुनाम्नी । कर्त्री ।

५ पात्र युग भुवन शृङ्ग ए शब्द सिवाय अकारान्त द्विगुसमासथी ई थाय छे. पञ्चफली । त्रिलोकी । पञ्चपात्रम् । चतुर्युगम् । त्रिभुवनम् । द्विशृङ्गम् ।

६ अकारान्त जातिवाचक शब्दथी अने पुरुषना सम्बन्धथी स्त्रीलिंगमां वर्तता अकारान्त पुरुषबोधक शब्दथी ई थाय छे. ब्राह्मणी । गोपी ।

७ गुणवाचक उकारान्त शब्दथी विकल्पे ई थाय छे. । पट्वी पटुः । मृद्वी । मृदुः

८ इयसु प्रययान्त शब्दथी ई थाय छे. लघीयसी । गरीयसी ।

॥ इति स्त्रीप्रत्ययाः ॥



## ॥ अथ कारकाणि ॥

क्रियाने उत्पन्न करनार ते कारक कहेवाय ते छ छे. कर्ता–कर्म–करण–सम्पदान–अपादान–अधिकरण ।

१ देखनार खानार विगेरे अर्थात् मुख्यपणाए क्रियानो जे करनार ते कर्ता कहेवाय.

२ देखवानुं खावानुं एटले कर्ताना व्यापारथी उत्पन्न थएला फलनो जे आश्रय ते कर्म कहेवाय.

३ जेना व्यापारथी आन्तरारहित तरतज क्रियानी निष्पत्ति थाय ते करण कहेवाय

४ कर्म तथा क्रियाद्वाराए जेनाप्रत्ये संबन्ध करवानी इच्छा थाय ते सम्पदान कहेवाय

५ जेनाथी कोइपण वस्तुनो विभाग थाय ते आपादान कहेवाय

६ कर्ता अथवा कर्मद्वारा क्रियानो जे आधार अर्थात् क्रिया जेमां थाय ते अधिकरण कहेवाय.

प्रथमाविभक्ति–कर्तरिप्रयोगमां कर्तामां प्रथमा थाय. यथा–जिनदासो गच्छति । कर्मणि प्रयोगमां कर्ममां प्रथमा थाय–यथा जिनप्रतिमा भव्यैः पूज्यते । सम्बोधनमां प्रथमा थाय–यथा हे गुरो प्रसादं कुरु ।

अने कोइपण विभक्तिनी प्राप्ति न होय त्यां पण प्रथमा थाय, यथा–दयालुना भवितव्यम् ।

द्वितीयाविभक्तिः–कर्तरिप्रयोगमां कर्ममां द्वितीया थाय–यथा जिनं भव्यो ध्यायति । क्रियाविशेषणमां द्वितीया थाय, यथा–सत्वरं धावति । धिक् विगेरे

शब्दना योगमां द्वितीया थाय, यथा-धिग् जाल्मम् । समया ग्रामम् । निकषा गिरिम् । हा मैत्रं व्याधिः । अन्तरा निषधं नीलं च विदेहाः । अन्तरेण धर्मं न सुखम् । अध्यधि ग्रामम् । अध्यधो ग्रामम् । उपर्युपरि ग्रामम् । सर्वतो ग्रामम् उभयतो ग्रामम् । अभितो ग्रामम् । परितो ग्रामं क्षेत्राणि । वृक्षमभि । वृक्षं प्रति । वृक्षं परि । वृक्षमनु । अनुसिद्धसेनं कवयः । उपोमास्वातिं सङ्ग्रहीतारः । जिनजन्मोत्सवमन्वागच्छन् सुराः । गिरिमन्ववसिता सेना । तथा कालवाचक अने देशवाचक शब्दथी निरंतर पणानो विवक्षामां द्वितीया थाय छे, यथा--मासं सुखदा, क्रोशं कुटिला नदी

तृतीयाविभक्तिः—कर्मणि प्रयोगमां अने भावे प्रयोगमां कर्तामां तृतीया थाय, यथा—गुरुः शिष्येण पूज्यते । मैत्रेण स्थीयते । करणमां तथा हेतुमां तृतीया थाय यथा कुठारेण छिनत्ति । गुरुसेवया विद्वान् भवति । सह विगेरे शब्दना योगमां तृतीया थाय छे यथा-ज्ञानिना सह साकं सार्द्धम् वसति । दुष्टेन पृथक् । धर्मेण ऋते । ज्ञानेन विना । प्रकृत्या चारुः । सिंहेन सदृशः समानः तुल्यः

चतुर्थी विभक्तिः—सम्प्रदानमां चतुर्थी थाय यथा—दरिद्राय धनं देहि । पत्ये शेते । निमित्तमां चतुर्थी थाय यथा—ज्ञानायाध्ययनं कुरुते । नमस् स्वस्ति स्वाहा स्वधा अलम् वषट् इत्यादि शब्दना योगमां चतुर्थी थाय छे, यथा-जिनाय नमः । क्रोध द्रोह ईर्ष्या असूया अर्थवाळा धातुना योगमां जेनी प्रत्ये क्रोध थाय तद्वाचक शब्दथी चतुर्थी थाय, यथा-मैत्राय क्रुध्यति द्रुह्यति ईर्ष्यति असूयति । रुचि अर्थवाळा धातुना योगमां जेने रुचतुं होय तद्वाचकशब्दथी चतुर्थी थाय यथा—बालकाय रोचते मोदकः । ण्यन्तधृ धातुना योगमां लेणदार वाचकशब्दथी चतुर्थी थाय—यथा चैत्राय शतं धारयति । जेनो अथ उपरथी जणातो होय एवो जे तुम् प्रत्ययान्तशब्द तेना कर्मने विषे वर्तमान जे शब्द तेनाथी चतुर्थी थाय, यथा-फलेभ्यो याति फलान्यानेतुं यातीत्यर्थः । क्रियाने माटे जे बीजी क्रिया अर्थवाळा धातुओ पासे रहेते छते तुम् प्रत्ययना अथ विषे विद्यमान जे घञ् विगेरे प्रत्ययो ते छे अंतमां जेने, एवा शब्दथी चतुर्थी थाय, यथा—पाकाय व्रजति पक्तुं गच्छतीत्यर्थः । भोजनाय याति भोक्तुं गच्छतीत्यर्थं ।

पञ्चमीविभक्तिः—अपादानमां थाय छे हेतुमां थाय छे अपेक्षामां थाय छे यथा—ग्रामादायाति । पापाद् दुःखं भवति धनाद् विद्या गरीयसी । भय अर्थवाळा

अने ऋते विगेरे शब्दना योगमां पंचमी थाय, जेम सिंहाद्भयं ज्ञानादृते न दया। पुण्यादृते न सुखम् । मैत्राद् अन्यः इतरः भिन्नः । आराद् वनात् । ग्रामात् पूर्वः पश्चिमः उत्तरः दक्षिणः । पञ्चम्याः प्रभृति । प्राग् वनात् । दुर्जनात् पृथक् स्थेयम् । विना धर्मान्न मुक्तिः चतुर्थ्या अर्वाक् । चतुर्थ्याः प्रत्यक् । गृहाद् बहिः । जीवान्नाना कर्माणि ॥ भणावनार वाचकशब्दथी पंचमी थाय, यथा–उपाध्यायाद् अधीते । उत्पत्तिना हेतुवाचक शब्दथी पंचमी थाय यथा-मृदो घटो भवति । य प्रत्यान्तशब्दनो प्रयोग न होय पण तेनो अर्थ जणातो होयतो तेना कर्ममां अने अधिकरणमां पंचमी थाय छे यथा–प्रासादात् प्रेक्षते । प्रासादमारुह्य प्रेक्षते इत्यर्थः । आसनात् प्रेक्षते । असने उपविश्य प्रेक्षते इत्यर्थः । ज्यांथी रस्तानुं अने समयनुं नक्की थाय तद्वाचकशब्दथी पंचमी थाय अने रस्तावोधक शब्दथी प्रथमा अने सप्तमी थाय अने कालबोधक शब्दथी सप्तमी थाय, यथा–वनाद् ग्रामो योजनम् । योजने वा । कार्तिक्या आग्रहायणी मासे ॥

षष्ठीविभक्तिः–सबन्धमां षष्ठी थाय, यथा–राज्ञः पुरुषः । कृदन्तना योगमां कर्ता अने कर्म अर्थमां षष्ठी थाय, यथा–देवदत्तस्य गमनम् । शास्त्रस्य प्रणेता । कृदन्तना योगमां कर्ता अने कर्म बेउनो साथे प्रयोग रहेते छते कर्म अने कर्ता अर्थमा षष्ठी थाय अने कर्ता अर्थमां तृतीया पण थाय, यथा अमरेण अमरस्य वा समवसरणस्य कृतिः ॥ सम्बन्धविवक्षामां सर्व कारकमां षष्ठी थाय, यथा–मातुःस्मरति । निर्धारण अर्थमां षष्ठी थाय, ( जातिविशिष्ट गुणविशिष्ट क्रियाविशिष्ट अने संज्ञाविशिष्ट वस्तुने समुदायथी जुदी करवी ते निर्धारण कहेवाय ); यथा–नृणां क्षत्रिय शूरः । गवां कृष्णा सम्पन्नक्षीरा । क्रियापराणां जिनाज्ञाराधकः श्रेष्ठः। कवीनां सिद्धसेनो मुख्यः । तुल्य विगेरे शब्दना योगमां षष्ठी थाय, यथा-गुरोस्तुल्या गुरुभक्ताः । एवी रीते समानः सदृशः समः सदृक्षः सदृक् । दक्षिणतः विगेरे शब्दना योगमां षष्ठी थाय, यथा ग्रामस्य दक्षिणतः । ग्रामस्य पुरः । एवी रीते पुरस्तात् उपरि उपरिष्टात् । दूर विगेरे शब्दना योगमां षष्ठी थाय ग्रामस्य दूरे निकटे समीपे ।

सप्तमीविभक्तिः–अधिकरणमां सप्तमी थाय, यथा मोक्षे इच्छाऽस्ति । जेनाथी निर्धारण होय तेमां पण सप्तमी थाय. यथा–नृषु क्षत्रियः श्रेष्ठः । जेनी क्रियाथी

बीजी क्रिया जणाय ते थकी पण सप्तमी थाय. यथा–गोषु दुह्यमानासु गतः । आ ठेकाणे अनादर अधिक जणातो होय तो षष्ठी सप्तमी थाय, यथा –रुदति रुदतो वा प्रावाजीत् । स्वामिन् ईश्वर अधिपति दायाद साक्षिन् प्रतिभू प्रसूत विगेरे शब्दना योगमां षष्ठी सप्तमी थाय, यथा-गवां गोषु वा स्वामी । विगेरे,

॥ इति कारकाणि ॥

॥ अथ तद्धिताः ॥

१ नामथी अपत्य अर्थमां अ इ य एय ईय व्य ईन विगेरे प्रत्ययो थाय छे यथा-वसुदेवस्यापत्यं पुमान् (वसुदेवना पुत्र) वासुदेवः । दाशरथिः । गार्ग्यः । भागिनेयः । स्वस्रीयः । भ्रातृव्यः । कुलीनः । नाडायनः ।

२ रंगेलु एवा अर्थमां अ इक विगेरे प्रत्ययो थाय छे यथा-कुङ्कुमेन रक्तः । कौङ्कुमः पटः । लाक्षिकः । रौचनिकः । नीलकः ।

३ युक्तकाल अर्थमां आचरण करवा अर्थमां अने खरीद करवा आदि घणा अर्थमां अ विगेरे प्रत्ययो आवे छे यथा–पुष्येण युक्ता पौर्णमासी पौषी । पौषमहः । धर्मं चरतीति धार्मिकः । प्रस्थेन क्रीतः प्रास्थिकः । व्याकणरमधीते वेत्ति वा वैयाकरणः । नैयायिकः । सैद्धान्तिकः । धुरं वहतीति धुर्यः । धौरेयः । सवधुरीणः स्रुघ्नादायातः स्रौघ्नः । असिः प्रहरणं यस्य आसिकः ।

४ संबंधअर्थे विकारअर्थे विगेरे घणा अर्थमां अ ईय मय विगेरे प्रत्ययो थाय छे यथा–जिनस्य इदं जैनम् । पार्थः । देवकीयम् । स्वकीयम् । तदीयम् । त्वदीयम् । तावकः । मामकः । तावकीनः । मामकीनः । युवयोर्युष्माकं वायं योष्माकः । यौष्माकीणः । आवयोरस्माकं वायम् आस्माकः आस्माकीनः । आम्रस्य विकारः आम्रमयम् । मार्तिकः अन्नं प्रचुरमत्र अन्नमयो यज्ञः । अमृतं स्वरूपमस्यामृतमयश्चन्द्रमाः । इन्द्रो देवतास्य ऐन्द्रम् । द्वारे नियुक्तो दौवारिकः । फलानि जातान्यस्य फलितो वृक्षः ।

५ तुल्य अर्थमां वत् प्रत्यय आवे छे चन्द्रवन्मुखम् ।

६ नकारान्त संख्या वाचकशब्दथी पूरण अर्थमां म प्रत्यय अने द्वि अने त्रि शब्दथी तीय प्रत्यय चतुर् कति कतिपय अने षष् शब्दथी थ प्रत्यय आवे छे यथा-पञ्चानां पूरणः पञ्चमः । सप्तमः । द्वितीयः । तृतीयः । चतुर्थः । क-

तिथः । कतिपयथः । षष्ठः । एकादश विगेरे शब्दथी अ प्रत्यय आवे छे. यथा-एकादशः । द्वादशः । विंशति विगेरे शब्दथी तम अने अ प्रत्यय आवे छे, यथा-विंशतितमः । विंशः त्रिंशत्तमः । त्रिंशः शत सहस्र विगेरे शब्दथी तम प्रत्यय आवे छे शततमः । सहस्रतमः ।

७ प्रकार अर्थमां संख्यावाचकशब्दथी धा प्रत्यय आवे छे, द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां द्विधा द्वि विगेरे शब्दसिवाय सर्वनामसंज्ञकशब्दथी प्रकारअर्थमां था प्रत्यय आवे छे-सर्वथा । अन्यथा । यथा । तथा। प्रकारवाळा अर्थमां बधा नामथी जातीय प्रत्यय आवे छे-पटुजातीयः ।

८ वार अर्थमां संख्यावाचक शब्दथी केटलेक ठेकाणे कृत्वस् केटलेक ठेकाणे स् केटलेकठेकाणे शस् प्रत्यय आवे छे यथा पञ्चकृत्वः । द्विः । त्रिः । चतुः । बहुशः । अल्पशः । शतशः । एकशः । सकृत् ।

९ भाव अर्थमां (प्रकृतिजन्यबोधे प्रकारीभूतो भावः ) त्व त य अ प्रत्यय आवे छे यथा-कुशलस्य भावः कुशलत्वम् । कुशलता । कौशल्यम् । कौशलम् । लघुता । लाघवम् । गौरवम् । सौहृदम् । सौकुमार्यम् । दास्यम् । चातुर्यम् । औदार्यम् । धैर्यम् । सख्यम् । वीर्यम् । काश्यम् गाम्भीर्यम् । भाव अर्थमां इमन् प्रत्यय पण थाय छे यथा-महिमन् । लघिमन् । गरिमन् । अणिमन् कालिमन् । ऋजिमन् ।

१० अतिशय अर्थमां तर तम इष्ठ ईयस् प्रत्यय आवे छे यथा-अतिशयेन लघुः लघुतरः । लघुतमः । लघिष्ठः । लघीयान् । अतिशयेन लघुः । लघीयसी । लघीयः । गरिष्ठः । गरीयान् । कनिष्ठः । कनीयान् । स्थविष्ठः । स्थवीयान् । पापिष्ठः । पापीयान् । ह्रसिष्ठः । ह्रसीयान् । द्राघिष्ठः । द्राघीयान् ।

११ प्रमाण अर्थमां मात्र दघ्न द्वयस प्रत्यय थाय छे, यथा-हस्तः प्रमाणं यस्य हस्तमात्रम् । जानुमात्रम् । जानुदघ्नम् । जानुद्वयसम् । परिमाण अर्थमां यद् तद् एतद् शब्दथी वत् प्रत्यय थाय छे, यथा-यत्परिमाणं यस्य यावत् । तावत् । एतावत् । किम् अने इदम् शब्दथी यत् प्रत्यय आवे छे यथा-कियत् । इयत्

१२ नामथी स्वार्थमां क विगेरे प्रत्यय आवे छे यथा-लोहित एव लोहितकः । यावकः । प्रज्ञ एव प्राज्ञः । आनन्त्यम् । भैषज्यम् । नामधेयम् ।

१३ हैयङ्गवीन विगेरे शब्दो निपातनथी थाय छे ह्यो गोदोहोद्भवं हैयङ्गवीनम् । छन्दोऽधीते श्रोत्रियः । परक्षेत्रे चिकित्स्यः । क्षत्रियः । अनुपदमन्वेष्टा अनुपदी ।

१४ वाळाअर्थमां मत् इन् विगेरे प्रत्ययो थाय छे यथा–श्रीरस्यास्तीति श्रीमान् । गुणी । धनी । धनिकः । तुन्दिलः । मकारान्त मकारोपान्त्य अकारान्त अकारोपान्त्य अने पांचमासिवाय वर्गनो अक्षर जेना अंते होय एवा शब्द-थी मत् प्रत्ययना म नो व थाय छे यथा-लक्ष्मीवान् । धनवान् । विद्यावान ।

१५ हित अने साधु आदि अर्थमां य इय आदि प्रत्ययो आवे छे अपूपाय हितः । अपूप्यः । अपूपीयः । वत्सीयम् । आत्मनीनः । सर्वजनीनः विश्वजनीनः । सभायां साधुः सभ्यः । अग्र्यः ।

१६ समूह अर्थमां अ विगेरे प्रत्ययो थाय छे यथा–मयूराणां समूहो मायूरम् । क्षैत्रम् । जनता । गजता । केदार्यम् ।

॥ इति तद्धिताः ॥

---

॥ अथ कृदन्ताः ॥

१ सकर्मकधातुथी कर्म अर्थमां अने अकर्मकधातुथी भाव अर्थमां तव्य अनीय अने य प्रत्यय थाय छे अने ते प्रत्ययवाळा सकर्मक धातुओना रूपनुं लिंग अने वचन कर्मवाचक शब्दना जेवुं थाय छे. अने अकर्मक धातुओनुं रूप नपुंसकमां प्रथमानुं एकवचनज थाय छे, यथा--कर्तव्यो घटः । कर्तव्या माला । करणीयः । कार्यः । भवितव्यम् । स्थातव्यम् । आ शब्दो क्रियापदनु पण काम करे छे,

२ कर्ता अर्थमां धातुथी तृ अक अने अ प्रत्यय थाय छे यथा–कर्ता । जेता । कारकः । करः ।

३ भूतकाळना कर्ता अर्थमां तवत् प्रत्यय आवे छे, घटं कृतवान् । शास्त्रं पठितवान् । आ शब्दो पण क्रियापदनु काम करी शके छे, अने क्रियापदनुं काम न करे तो विशेषण तरीके रहे छे,

४ वर्तमानकाळना कर्ता अर्थमां परस्मैपदी धातुथी शतृ प्रत्यय थाय छे, आत्मानेपदी धातुथी शान प्रत्यय थाय छे, अने उभयपदी धातुथी बन्ने प्रत्ययो आवे छे, यथा–गच्छन् । ईक्षमाणः । कुर्वन् । कुर्वाणः भविष्यकाळमां कर्ता अर्थमां पण आवीज रीते शतृ अने शान प्रत्यय आवे छे, यथा–गमिष्यन् । ईक्षिष्यमाणः करिष्यन् । करिष्यमाणः ।

५ वर्तमानकाळनां अने भविष्यकाळना कर्म अर्थमां शान प्रत्यय आवे छे,

यथा–क्रियमाणः । करिष्यमाणः

६ कर्म उपपद होय तो कर्ता अर्थमां अण् प्रत्यय आवे छे. कुम्भं करोतीति कुम्भकारः । केटलेक ठेकाणे नाम उपपद रहेते छते धातुथी अ प्रत्यय आवे छे अने नामना अंतमां अनुस्वार अथवा पछीना अक्षरना वर्गनो पांचमो थाय छे, स्तनन्धयः । युगन्धरः । सर्वंकषः । नाम उपपद छतां ताच्छील्य अर्थ गम्यमान होयतो कर्ता अर्थमां इन् अंने ईषत् दुर् सु उपपद छतां अकर्मक अने सकर्मक धातुथी अनुक्रमे भाव अने कर्ममां अ थाय छे, उपकारी । ईषच्छयम् । सुकरः । इन् अने नाम उपपद छतां कर्म अर्थमां अ प्रत्यय आवे छे उपकारी । सुकरः ।

७ कर्ता अर्थमां सर्व धातुथी क्विप् प्रत्यय आवे छे अने तेनुं कंइ चिह्न रहेतुं नथी, दिक् वृत्रहन् । कटम् । स्रुक् । आ प्रत्यय केटलेक ठेकाणे भावमां आवे छे. यथा सम्पद् । विपद् ।

८ कर्ता अर्थमां इष्णु आलु विगेरे प्रत्ययो पण आवे छे यथा अलंकरिष्णुः । दयालुः जागरूकः । चलनः । कम्पनः । नम्रः । दीप्रः । तप्नः ।

९ सकर्मक धातुथी भूतकालमां कर्म अर्थमां अने केटलाक धातुओथी वर्तमानकालमां कर्म अर्थमां त प्रत्यय थाय छे यथा–कृतः । वृतः ॥ मतः । पूजितः ॥ अकर्मक अने गत्यर्थकआदि धातुथी भूतकालना कर्ता अर्थमां त प्रत्यय थाय छे यथा–भूतः । गतः । अकर्मक अने सकर्मक धातुथी भाव अर्थमां त विगेरे प्रत्ययो थाय छे यथा–हसितम् । भूतम् । क्रिया । कृतिः विभूतिः । कृत्या । प्रकारः । प्रभावः । करणम् । करण अने अधिकरण अर्थमां बधां धातुथी अन प्रत्यय आवे छे, यथा–पच्यतेऽनेनेति पचनोऽग्निः । पच्यतेऽस्यामिति पचनी स्थाली ।

१० धातुथी निमित्त अर्थमां तुम् प्रत्यय आवे छे, यथा–भोक्तुं व्रजति । पठितुमीष्टे । अनन्तर अर्थमां त्वा प्रत्यय थाय छे यथा–कृत्वा । भूत्वा ॥

११ उपसर्गनो संबन्ध होय तो त्वा ने ठेकाणे य आदेश थाय छे अने ह्रस्वान्त-धातुथी य नी पूर्वे त् थाय छे यथा–स्वर्गसुखमनुभूय । प्रणम्य । संस्कृत्य । सम्भृत्य ।

॥ इति कृदन्ताः ॥

पठतां स्मरतां चैव, सुबोधा शिशुबोधिनी ।
शिशूनां सुविनीताना-मानन्दाय सदाऽस्त्वियम् ॥१॥

॥ इति बालसंस्कृतदीपिकायां शिशुबोधिनी ॥

# ॥ अथ समासचक्रम्. ॥

अथ बालबोधार्थं प्रयोगविधिः कथ्यते । प्रयोगाः पञ्चविधाः । सकर्मकोऽकर्मकः कर्मणि भावे द्विकर्मकश्चेति भेदात् । सकर्मकप्रयोगो यथा-जिनो भक्तान् रक्षति ॥ १ ॥ अकर्मकप्रयोगो यथा-मैत्रस्तिष्ठति ॥ २ ॥ कर्मणि प्रयोगो यथा-चैत्रेण घटः क्रियते ॥ ३ ॥ भावे प्रयोगो यथा-मैत्रेण स्थीयते । द्विकर्मकप्रयोगो यथा-चैत्रो ग्राममजां नयति ॥४॥ कर्तृकर्मक्रियायुक्तः प्रयोगः स्यात्सकर्मकः । अकर्मकः कर्मशून्यः कर्मद्वन्द्वो द्विकर्मकः ॥

## ॥ अथ समासविधिः कथ्यते ॥

षोढा समासाः संक्षेपादष्टाविंशतिधा पुनः ॥ नित्यानित्यत्वयोगेन लुगलुक्त्वेन च द्विधा ॥ १ ॥ तत्राष्टधा तत्पुरुषः, सप्तधा कर्मधारयः ॥ सप्तधा च बहुव्रीहिर्द्विगुराभाषितो द्विधा ॥२॥ द्वंद्वोऽपि द्विविधो ज्ञेयोऽव्ययीभावो द्विधा मतः ॥ तेषां पुनः समासानां प्राधान्यं स्याच्चतुर्विधम् ॥ ३ ॥ चकारबहुलो द्वंद्वः स चासौ कर्मधारयः ॥ यस्य येषां बहुव्रीहिः शेषस्तत्पुरुषः स्मृतः ॥ ४ ॥

तत्रैकार्थवाचकतां प्राप्तो भिन्नार्थकानेकपदसमूहः समासः । यथा राजपुरुष इति । समासार्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः । यथा राज्ञः पुरुष इति । तत्राविग्रहो नित्यसमासः स्वघटकयावत्पदाघटितविग्रहो वा । तद्भिन्नोऽनित्यसमासः स्वघटकपदविग्रहो वा ।

तत्पुरुषः कर्मधारयो बहुव्रीहिर्द्विगुर्द्वन्द्वोऽव्ययीभावश्चेति भेदात् समासाः षड्विधाः ॥ तल्लक्षणानि तु–पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः ॥ उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः ॥ उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः ॥ अन्यपदार्थप्रधानो-बहुव्रीहिः ॥ द्विगुकर्मधारयौ तत्पुरुषभेदौ ॥ तत्राष्टधा तत्पुरुषक्रमः ॥ प्रथमातत्पुरुषो द्वितीयातत्पुरुषस्तृतीयातत्पुरुषश्चतुर्थीतत्पुरुषः पंचमीतत्पुरुषः षष्ठीतत्पुरुषः सप्तमीतत्पुरुषो नञ्तत्पुरुषश्चेति ॥ तत्र प्रथमातत्पुरुषो यथा ॥ अर्धं पिप्पल्याः अर्धपिप्पली ॥ पूर्वं कायस्येति पूर्वकायः ॥ १ ॥ द्वितीया तत्पुरुषो यथा ॥ जिनं श्रितः जिनश्रितः ॥ ग्रामं गतो ग्रामगतः ॥ कांतारमतीतः कांतारातीतः ॥ २ ॥ तृतीयातत्पुरुषो यथा ॥ शंकुलया खंडः शंकुलाखंडः ॥ धान्येनार्थो धान्यार्थः ॥ मासेन पूर्वो मासपूर्वः ॥ ३ ॥ चतुर्थीतत्पुरुषो यथा ॥ यूपाय दारु यूपदारु ॥ कुंडलाय हिरण्यं कुंडलहिरण्यम् ॥ गुरवे दक्षिणा गुरुदक्षिणा ॥ ४ ॥ पंचमीतत्पुरुषो यथा ॥ अर्थात् अपेतः अर्थापेतः ॥ सिंहात् भयं सिंहभयम् ॥ वृश्चिकात् भीः वृश्चिकभीः ॥ ५ ॥ षष्ठीतत्पुरुषो यथा ॥ जिनस्य भक्तः जिनभक्तः ॥ आम्रस्य फलं आम्रफलम् ॥ राज्ञः पुरुषो राजपुरुषः ॥ ६ ॥ सप्तमीतत्पुरुषो यथा ॥ अक्षेषु शौंडः अक्षशौंडः ॥ कर्मणि कुशलः कर्मकुशलः ॥ विद्यायां निपुणः विद्यानिपुणः ॥ ७ ॥ नञ्तत्पुरुषो यथा ॥ न ब्राह्मणः अब्राह्मणः ॥ न वृषभः अवृषभः ॥ पापाभावः अपापम् ॥ धर्मविरुद्धोऽधर्मः ॥ ८ ॥ इति तत्पुरुषः ॥ अथ कर्मधारयः कथ्यते ॥ स च विशेष्यपूर्वपदो विशेषणपूर्वपदो विशेषणोभयपद :उपमानपूर्वपद उपमानोत्तरपदः संभावनापूर्वपदोऽवधारणापूर्वपदश्चेति भेदात्सप्तविधः ॥ तत्र विशेषणपूर्वपदः कर्मधारयो यथा ॥ कृष्णश्चासौ सर्पश्च कृष्णसर्पः ॥ कृष्णौ च तौ सर्पौ च कृष्णसर्पौ ॥ कृष्णाश्च ते सर्पाश्च कृष्णसर्पाः ॥ रक्ता चासौ लता च रक्तलता ॥ रक्ते च ते लते च रक्तलते । रक्ताश्च ता लताश्च रक्तलताः । नीलं च तत् उत्पलं च नीलोत्पलम् ॥ नीले च ते उत्पले च नीलोत्पले । नीलानि च तानि उत्पलानि च नीलोत्पलानि ॥ १ ॥ विशेष्यपूर्वपदः कर्मधारयो यथा ॥ वैयाकरणश्चासौ खसूचिश्च वैयाकरणखसूचिः ॥ गोपालश्चासौ बालश्च गोपालबालः ॥ २ ॥ विशेषणोभयपदः कर्मधारयो यथा ॥ शीतं च तत् उष्णं च शीतोष्णम् ॥ ३ ॥ उपमानपूर्वपदः कर्मधारयो यथा ॥ मेघ इव श्यामो मेघश्यामः ॥ कंबुवत् ग्रीवा कंबुग्रीवा ॥ चंद्रवत् मुखं चंद्रमुखम् ॥ ४ ॥ उपमानोत्तरपदः कर्मधारयो यथा ॥ पुरुषः व्याघ्र इव पुरुषव्याघ्रः ॥ नरः सिंह इव नरसिंहः ॥ ५ ॥ संभावनापूर्व-

पदः कर्मधारयो यथा ॥ गुण इति बुद्धिः गुणबुद्धिः ॥ ६ ॥ अवधारणा पूर्वपदः कर्मधारयो यथा ॥ विद्येव धनं विद्याधनम् ॥ अविद्यैव शृंखला अविद्याशृंखला ॥ ७॥ मध्यमपदलोपी समासो यथा॥ शाकप्रियः पार्थिवः शाकपार्थिवः॥ देवपूजको-ब्राह्मणः देवब्राह्मणः इति कर्मधारयः ॥ अथ बहुव्रीहिः कथ्यते ॥ स च द्विपदो बहुपदः सहपूर्वपदः संख्योत्तरपदः संख्योभयपदो व्यतिहारलक्षणो दिगंतराललक्षणश्चेति भेदात्सप्तविधः ॥ तत्र द्विपदबहुव्रीहिर्यथा ॥ चित्राः गावो यस्य सःचित्रगुः गोपः ॥ प्राप्तं उदकं यं सः प्राप्तोदको ग्रामः ॥ भुक्तं ओदनं येन सः भुक्तोदनो भूपः निर्जितः कामो येन सः निर्जितकामः स्थूलभद्रः॥ विभक्तं धनं यैस्ते विभक्तधना बांधवाः॥दत्तः सूपो यस्मै स दत्तसूपो याचकः । उद्धृतं धनं यस्मात्तत् उद्धृतधनं कुंडम् ॥ चक्रं पाणौ यस्य सः चक्रपाणिः पुरुषः ॥ करस्थितं धनं यस्य सः करस्थितधनो वणिक् ॥ पुष्पिताः द्रुमाः यस्मिन् सः पुष्पितद्रुम आरामः ॥ बहवो यज्वानो यस्यां सा बहुयज्वा शाला ॥ पुष्पिता द्रुमाः यस्मिन् तत् पुष्पितद्रुमं वनम् ॥ खरस्य मुखमिव मुखं यस्य सः खरमुखस्तुरगः ॥ उष्ट्रस्य मुखमिव मुखं यस्य सः उष्ट्रमुखो यक्षः ॥ उच्चैर्घंटो यस्याः सा उच्चैर्घंटा नारी ॥ अंगगात्रोदरस्तनकंठोष्ठदंतमुखाक्षिकेशाः स्त्रियां बहुव्रीहौ ईवंता भवन्ति ॥ ते च यथा ॥ सुंदरं अंगं यस्याः सा सुंदरांगी ॥ शोभनं गात्रं यस्याः सा सुगात्री ॥ कृशं उदरं यस्याः सा कृशोदरी ॥ चारु स्तनौ यस्याः सा चारुस्तनी ॥ इंदीवरे इव अक्षिणी यस्याः सा इंदीवराक्षी ॥ कंबुरिव कंठो यस्याः सा कंबुकंठी ॥ कुटिला केशा यस्याः सा कुटिलकेशी ॥ इतरेषां अंगादिवाचकानां स्त्रीत्वेऽपि आवंतत्वमेव ॥ चारुदेहा विस्तृततालका आवृतकुचा कुंददशनेत्यादि ॥ उरुपृथुलघुबहुपटुऋजुस्वादुचारुमृदुशब्दानां स्त्रीलिंगविशेषणत्वे ईवंतत्वमपि॥ मृद्वी शाटी लघ्वी भार्येत्यादि ॥ इति द्विपदबहुव्रीहिः ॥ बहुपदो यथा ॥ अधिकः उन्नतः अंसो यस्य सः अधिकोन्नतांसः ॥ सह पूर्वपदो यथा ॥ सह कृष्णेन वर्तत इति सकृष्णः ॥ सह पुत्रेणेति सपुत्रः ॥ रामेण सह वर्तत इति सरामः ॥ संख्योत्तरपदो यथा ॥ दशानां समीपे ये संति ते उपदशाः ॥ संख्योभयपदो यथा ॥ द्वौ वा त्रयो वा द्वित्राः ॥ व्यतिहारलक्षणो यथा केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवर्तत इति केशाकेशि युद्धम् । दंडैर्दंडैः कृत्वा इदं युद्धं प्रवर्तत इति दंडादंडि युद्धम् ॥ दिगंतराललक्षणो यथा दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशो यदंतरालं सा दक्षिणपूर्वा । इति बहुव्रीहिः ॥ अथ द्विगुः ॥ द्विगुसमासो द्विविधः ॥ एकवद्भावी अनेकवद्भावी चेति ॥ एकवद्भावी द्विगुर्यथा ॥ त्रयाणां

शृंगाणां समाहारस्त्रिशृंगम् ॥ पंचानां फलानां समाहारः पञ्चफली ॥ अनेकवद्भावो द्विगुर्यथा ॥ सप्त च ते ऋषयश्च सप्तर्षयः ॥ अथ द्वन्द्वः । द्वन्द्वोऽपि द्विविधः ॥ इतरेतरसमाहारभेदात् ॥ इतरेतरद्वन्द्वो यथा ॥ प्लक्षश्च न्यग्रोधश्च प्लक्षन्यग्रोधौ ॥ देवश्च गुरुश्च धर्मश्च देवगुरुधर्मम् ॥ समाहारद्वन्द्वो यथा ॥ ऋषभश्चाजितश्च ऋषभाजितौ ॥ पाणितुर्यसेनांगानां द्वन्द्वैकवद्भावः पाण्यंगे यथा ॥ पाणी च पादौ च मुखं च पाणिपादमुखम् ॥ तुर्यांगे यथा ॥ मार्दंगिकश्च वैणविकश्च मार्दंगिकवैणविकम् ॥ शंखश्च पटहश्च शंखपटहम् ॥ सेनांगे यथा राजन्याश्च रथाश्च अश्वाश्च राजन्यरथाश्वम् ॥ इति द्वन्द्वः अथाव्ययीभावः—अव्ययीभावस्याव्ययत्वात्त्रिषु लिंगेषु समानं रूपम् ॥ स यथा तटं तटं प्रत्यनुतटम् ॥ गिरिं गिरिं प्रत्यनुगिरि ॥ क्रममनतिक्रम्य वर्तत इति यथानुक्रमम् ॥ वेलायामित्यधिवेलम् ॥ कुंभस्य समीपे वर्तत इत्युपकुंभम् ॥ कुम्भस्य समीपं-उपकुम्भम् । मद्राणां समृद्धिः—सुमद्रम् । यवनानां व्यृद्धिः । दुर्यवनम् । मक्षिकाणामभावो—निर्मक्षिकम् । हिमस्यात्ययोऽतिहिमम् । निद्राऽसंप्रति (२)—अतिनिद्रम् । रूपस्य योग्यं—अनुरूपम् । हरेः सादृश्यं—सहरि । सदृशः सख्या—ससखि । क्षत्राणां संपत्तिः—सक्षत्रम् । यावन्तः श्लोकास्तावन्तो—यावच्छ्लोकम् (अच्युतप्रणामाः) शाकस्य लेशः—शाकप्रति । अक्षेण विपरीतं वृत्तं—अक्षपरि । शलाकया विपरितं वृत्तं—शकालापरि ॥ शक्तिमनतिक्रम्य—यथाशक्ति (ददाति देवदत्तः) । *तृणमप्यपरित्यज्य—सतृणं ( अत्ति देवदत्तः )* । *ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण*—अनुज्येष्ठं (संस्कर्तव्याः पुत्राः । गङ्गाया अनु—अनुगङ्गम् (१) गङ्गायाः पारः—पारेगङ्गम् । गङ्गायाः मध्यं—मध्येगङ्गम् । तिष्ठन्ति गावो यस्मिन्—तिष्ठद्गु (२) ॥ अर्थमर्थं प्रति प्रत्यर्थं (उपदिशति गुरुः) वनाद्बहिः—बहिर्वनं (संचरन्ति व्याघ्राः) । वनात् प्राक्—प्राग्वनं (चरन्ति पशवः) । अग्नेः अभि—अभ्यग्नि । अग्निं प्रति प्रत्यग्नि (पतन्ति शलभाः) वनं अनु—अनुवनं (गतो ऽशनिः, वनस्य समीपं गत इत्यर्थः) मुक्तेः आ—[आमुक्ति संसारः, मुक्तिं मर्यादीकृत्य संसारस्तिष्ठतीत्यर्थः] बालेभ्य आ—आबालं (जिनभक्तिः, बालानभिव्याप्य जिनभक्तिर्मुक्तये प्रभवतीत्यर्थः) । इत्यव्ययीभावः ॥ इति षट् समासा निर्णीताः ॥ अथ लुक्समासो अलुक्समासश्च । लुक्समासो यथा । तनुरेव लता तनुलता । कृष्णा एव मेघा, कृष्णमेघाः । अलुक्समासो यथा । वने चरतीति वनेचरः । पंके रुहतीति पंकेरुहम् । मत्वर्थीयो यथा । बुद्धिरस्यातीति बुद्धिमान् ॥ धनमस्यास्तीति धनवान् । धीरस्य भावो धीरता । जनानां समूहो जनता । घटस्य

भावो घटत्वम् । वृक्षशाखा तत्पुरुषः श्वेताश्वः कर्मधारयः । रक्तवस्त्रो बहुव्रीहिर्द्वंद्व-श्चंद्रदिवाकरौ ॥ १ ॥ यल्लिंगं यद्वचनं या च विभक्तिर्विशेष्यस्य । तल्लिंगं तद्वचनं सैवविभक्तिर्विशेषणस्यापि ॥ २ ॥ सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु ॥ वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥३ ॥ आदौ कर्तृपदं वाच्यं द्वितीयादिपदं ततः क्त्वा तुमुल्ल्यप् च मध्ये तु कुर्यादंते क्रियापदम् ॥ ४ ॥ अथ कारकमुच्यते ॥ कर्ता कर्म च करणं संप्रदानं तथैव च । अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् ।५। निर्देशे प्रथमा प्रोक्ता सैव चामंत्रणेष्वपि । द्वितीया कर्मणि प्रोक्ता तृतीया कर्तृक-रणयोः ॥ ६ ॥ ज्ञानज्ञाप्येऽगविकारे हेतावपि च इष्यते । तादर्थ्ये संप्रदाने च च-तुर्थी स्याच्च सर्वदा ॥ ७ ॥ हेत्वपादानयोः पंचमी षष्ठीतु कर्तृकर्मसंबंधे । अधिक-रणनिमित्तसत्वे सप्तमी स्याच्च विषयेऽपि ॥ ८ ॥ यदा कर्तरि प्रथमा स्यात् कर्मणी द्वितीया तदा । यदा कर्तरी तृतीया स्यात् कर्मणि प्रथमा तदा ॥ ९ ॥ विशेषणं पु-रस्कृत्य विशेष्यं तदनंतरम् । कर्तृकर्मक्रियायुक्तमेतदन्वयलक्षणम् ॥ १ ॥ प्रथमांत-स्तृतीयांतः षष्ठ्यंतः कर्ता । द्वितीयांतं षष्ठ्यंतं कर्म । तृतीयांतं करणम् । चतु-र्थ्यंतं संप्रदानम् । पंचम्यंतमपादानम् । षष्ठ्यर्थः संबंधः ॥ सप्तम्यंतमधिकरणम् ॥ इति कारकाणि ॥

॥ इति बालसंस्कृतदीपिकायां समासचक्रम् ॥

ॐ नमोऽर्हद्भ्यः । ऐँ नमः ॥

महाकवि-श्रीधनञ्जयविरचिता—

# नाममाला.

तन्नमामि परं ज्योति-रवाङ्मनसगोचरम् ।
उन्मूलयत्यविद्यां यद्, विद्यामुन्मीलयत्यपि ॥ १ ॥

द्वयं द्वितयमुभयं, यमलं युगलं युगम् ।
युग्मं द्वन्द्वं यमं द्वैतं, पादयोः पातु जैनयोः ॥ २ ॥

ऋषिर्यतिर्मुनिर्भिक्षु-स्तापसः संयतो व्रती ।
तपस्वी संयमी योगी, वर्णी साधुश्च पातु वः ॥ ३ ॥

दीक्षितं शैक्षं शिष्यं च, तमन्तेवासिनं विदुः ।
कृतान्तागमसिद्धान्त-ग्रन्था-शास्त्रमतः परम् ॥ ४ ॥

भूमिर्भूः पृथिवी पृथ्वी, गह्वरी मेदिनी मही ।
धरा वसुमती धात्री, क्षमाविश्वंभराऽवनिः ॥ ५ ॥

---

प्रणम्य श्रीमहावीरं, धर्मरत्नप्रकाशकम् ।
धनञ्जयकवेर्नाम-मालाभाषां करोम्यहम् ॥ १ ॥

हुं ( धनंजय नामधारक कवि ) वचन तथा मनने अगोचर एवी परम ज्योतिने धारण करनार श्री जीनेन्द्र भगवानने नमस्कार करुं छुं, के जे परम ज्योति (भव्य जीवोना अज्ञाननो नाश करे छे, अने ज्ञानने प्रगट करे छे ॥ १ ॥ अथ युगल ( जोडलां ) ना दस नाम कहे छे-द्वय द्वितय, उभय, यमल, युगम, युग, युग्म, द्वन्द्व, यम. द्वैत ॥ श्री जीनेन्द्र प्रभुना चरणनुं युगल तमारुं रक्षण करो ॥ २ ॥

हवे मुनिना बार नाम कहे छे—ऋषि, यति, मुनि, भिक्षु, तापस, संयत् व्रतिन्, तपस्विन्, संयमिन्, योगिन्, वर्णिन्, साधु । ए साधुलोक तमारी रक्षा करो ॥ ३ ॥ अथ विद्यार्थी ( शिष्य ) ना नाम कहे छे—दीक्षित, शैक्ष, शिष्य अन्तेवासिन् । अथ शास्त्रनां पांच नाम कहे छे-कृतान्त, आगम, सिद्धान्त, ग्रन्थ, शास्त्र ॥ ४ ॥

हवे पृथ्वीना सत्यावीश नाम कहे छे—भूमि, भू, पृथिवी, पृथ्वी, गह्वरी मेदिनी, मही, धरा, वसुमती, धात्री, क्षमा, विश्वंभरा, अवनि ॥ ५ ॥

वसुधा धरणी क्षोणी,क्ष्मा धरित्री क्षितिश्च कुः ।
कुम्भिनीलोर्वरा चोर्वी, जगती गौर्वसुन्धरा ॥ ६ ॥
तत्पर्याय–धरः शैलः, तत्पर्याय–पतिर्नृपः ।
तत्पर्याय-रुड़ो वृक्षः, शब्दमन्यं च योजयेत् ॥ ७ ॥
दरीभृदचलः शृङ्गी, पर्वतः सानुमान् गिरिः ।
नगः शिलोच्चयोऽद्रिश्च, शिखरी त्रिककुन्मरुत् ॥ ८ ॥
प्रस्थं पार्श्वतटं सानु–मेंखलोपत्यका तटी । नितम्वमन्तोः दन्तश्च,तद्वानपि गिरिः स्मृतः ९
राजाऽधिपः पतिः स्वामी, नाथः परिवृढः प्रभुः ।
ईश्वरो विभुरीशानो, भर्तेन्द्र इन ईशिता ॥ १० ॥
अनोकहस्तरुः शाखी, विटपी फलिनो नगः ।
द्रुमोऽङ्घ्रिपः फलेग्राही, पादपोऽगो वनस्पतिः ॥ ११ ॥
तत्पर्याय–चरो ज्ञेयो, हरिर्वलिमुखः कपिः । वानरः प्लवगश्चैव, गोलाङ्गूलोऽथ मर्कटः ॥१२

वसुधा, धरणी, क्षोणी, क्ष्मा, धरित्री, क्षिति, कु, कुम्भिनी, इला उर्वरा, उर्वी, जगती, गो, वसुन्धरा, ॥ ६ ॥ ए पृथ्वीवाचक नाम थकी 'धर' शब्द, तथा धर शब्दना समान अर्थवाळा 'भर' आदि शब्दो जोडवामां आवे तो पर्वतवाचक नाम थाय छे. जेमके–भूमिधर, भूधर भूमिभर, भूभर इत्यादि नाम पर्वतवाची थया । तथा पृथ्वीवाचक नाम थकी 'पति' शब्द तथा पति शब्दना समान अर्थवाळा 'स्वामिन्' विगेरे शब्द जोडवामां आवे तो राजाना नाम थाय छे. जेमके–भूमिपति. भूपति, भूस्वामिन् इत्यादि नाम राजावाचक थया । तेमज पृथ्वीवाचक नाम थकी 'रुह' शब्द जोडवामां आवे तो वृक्षवाचक नाम थाय छे, जेमके–भूमिरुह भूरुह इत्यादि वृक्षना नाम थया ॥ ७ ॥

अथ पर्वतना नाम कहे छे–दरीभृत, अचल, शृंगिन्, पर्वत्, सानुमत, गिरि, नग, शिलोच्चय, अद्रि, शिखरिन्, त्रिककुद्, मरुत ॥ ८ ॥

प्रस्थ विगेरे शब्द थकी मतु प्रत्यय लगाडवाथी पण पर्वतवाचक नाम बने छे. जेमके–प्रस्थवत्, पार्श्ववत, तटवत, सानुमत, मेखलावत, उपत्यकावत्, तटीमत, नितम्बवत्. अन्तवत, दन्तवत् , ॥ ९ ॥ अथ राजा अथवा मालिकनां नाम कहे छे–राजन्, अधिप, पति, स्वामिन्, नाथ, परिवृढ, प्रभु ईश्वर विभु, ईशान भर्तृ, इन्द्र, इन, ईशितृ ॥ १० ॥ अथ वृक्षना नाम कहे छे–अनोकह, तरु, शाखिन्, विटपिन्, फलिन्, नग, द्रुम, अंङ्घ्रिप, फलेग्राहिन्, पादप, अग, वनस्पति ॥ ११ ॥

वृक्षवाचक नाम थकी–चर शब्द जोडवाथी वानरनां नाम थाय छे. जेमके–अनोकहचर, तरुचर, इत्यादि वानरनां नाम थयां, तथा बीजापण वानरनां नाम कहे छे–हरि, वलिमुख, कपि, वानर, प्लवग, गोलांगूल, मर्कट ॥१२॥

विपिनं गहनं कक्ष-मरण्यं काननं वनम् ।
कान्तारमटवी दुर्गं, तच्चरः स्याद् वनेचरः ॥ १३ ॥
पुलिन्दः शवरो दस्यु-र्निषादो व्याधलुब्धको ।
धानुष्कोऽथ किरातश्च, सोऽरण्यानीचरः स्मृतः ॥ १४ ॥
वार्वारिकं पयोऽम्भोम्बु, पाथोऽर्णः सलिलं जलम् ।
शरं वनं कुशं नीरं तोयं जीवनमब्विषम् ॥ १५ ॥
तत्पर्याय-चरो मत्स्य-स्तत्पर्याय-प्रदो घनः ।
तत्पर्यायोद्भवं पद्मं, तत्पर्याय-धरोऽम्बुधिः ॥ १६ ॥
पृथुरोमा षडक्षीणो, यादो वैसारिणो झषः ।
विसारी शफरो मीनः पाठीनाऽनिमिषस्तिमिः ॥ १७ ॥
घनाघनो घनो मेघो, जीमूतोऽभ्रं बलाहकः ।
पर्जन्यो मुदिरो नभ्राट्, शम्पा सौदामनी तडित् ॥ १८ ॥
आकालिकी क्षणरुचि-र्विद्युत् तत्पतिरम्बुदः ।
निर्घातमशनिर्वज्र-मुल्काशब्द च योजयेत् ॥ १९ ॥

---

हवे वन (जंगल) नां नाम कहे छे-विपिन, गहन, कक्ष, अरण्य, कानन, वन, कान्तार, अटवी, दुर्ग ॥ ए वनवाचक नामो थकी-चर शब्द जोडवाथी भील-नां नाम थाय छे जेमके-विपिनचर, अरण्यचर, काननचर इत्यादि समजवां. तथा बीजां पण भीलनां नाम कहे छे—वनेचर ॥ १३ ॥ पुलिन्द, शवर, दस्यु निषाद, व्याध, लुब्धक, धानुष्क, किरात, अरण्यानीचर ॥ १४ ॥

अथ जलवाचक नाम कहे छे-वार्, वारि, क, पयस्, अम्भस्, अम्बु, पाथस्, अर्णस्, सलिल; जल, शर, वन, कुश; नीर, तोय, जीवन, अप्, विष ॥ १५ ॥ पाणि (जल) वाचक नाम थकी चर शब्द जोडवाथी जलचर अम्बु-चर, इत्यादि माछलाना नाम थाय तथा प्रद शब्द जोडवाथी मेघना नाम थाय छे, जेमके-जलप्रद, वारिप्रद, इत्यादि मेघना नाम थाय छे, तथा उद्भव शब्द जोडवाथी-जलोद्भव, सलिलोद्भव, इत्यादि कमलनां नाम थाय छे, तथा धर शब्द जोडवाथी-जलधर, अम्बुधर, इत्यादि समुद्रनां नाम थाय छे, ॥१६॥ अथ माछलां आदि जलचर जीवनां नाम कहे छे-पृथुरोमन्, षडक्षीण, यादस्, वैसारिण, झष, विसारिन्, शफर, मीन, पाठीन अनिमिष, तिमि ॥ १७ ॥

हवे मेघनां नाम कहे छे - घनाघन, घन, मेघ, जीमूत, अभ्र, बलाहक, पर्जन्य, मुदिर, नभ्राज् । अथ वीजळीना नाम कहे छे—शम्पा, सौदामनी, तडित्, ॥ १८ ॥ आकालिकी, क्षणरुचि, विद्युत, । वीजळीवाचक शब्द थकी तथा निर्घात, अशनि, वज्र, उल्का, आ उपर कहेला शब्दो थकी पति शब्द जोडवाथी शम्पापति, आदि नाम पण मेघना थाय छे. ॥ १९ ॥

जम्बालः कर्दमः पङ्कः–स्तज्जं तामरसं विदुः ।
कमलं नलिनं पद्मं, सरोजं सरसीरुहम् ॥ २० ॥
खरदण्डं कोकनदं, पुण्डरीकं महोत्पलम् ।
इन्दीवरमरविन्दं, शतपत्रं च पुष्करम् ॥ २१ ॥
स्यादुत्पलं कुवलय–मथ नीलाम्बुजन्म च ।
इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्, सिते कुमुदकैरवे ॥ २२ ॥
तद्–वती विसिनी ज्ञेया, व्रतती वल्लरी लता ।
वल्लीनामानि योज्यानि, वारिधिर्वर्ण्यतेऽधुना ॥ २३ ॥
स्रोतस्विनी धुनी सिन्धुः, स्रवन्ती निम्नगाऽऽपगा ।
नदी नदो द्विरेफश्च, सरिन्नाम्नी तरङ्गिणी ॥ २४ ॥
तत्पतिश्च भवत्यब्धिः, पारावारोऽमृतोद्भवः ।
अवारपारोऽकूपारो, रत्नमीनाऽभिधा–ऽऽकरः ॥ २५ ॥
समुद्रो वारिराशिश्च, सरस्वान् सागरोऽर्णवः ।
सीमोपकण्ठं तीरं च, पारं रोधोऽवधिस्तटम् ॥ २६ ॥

---

हवे कीचडनां नाम कहे छे—जम्बाल, कर्दम, पङ्क । कीचडवाची ना साथे 'ज' शब्द जोडवाथी–जम्बालज, कर्दमज, पंकज आ त्रण नाम कमलनां थयां. तथा बीजां पण कमलनां नाम कहे छे–तामरस, कमल, नलिन, पद्म, सरोज, सरसीरुह ॥२०॥

खरदण्ड, कोकनद, पुण्डरीक. महोत्पल, इन्दीवर, अरविन्द. शतपत्र, पुष्कर, ॥ २१ ॥ अथ नील कमलना नाम कहे छे—उत्पल, कुवलय, नीलाम्बुजन्मन्, इन्दीवर । अथ श्वेत कमलनां नाम कहे छे—कुमुद कैरव. ॥ २२ ॥ कमलवाचक नामो थकी वती शब्द जोडवाथी; तथा व्रतती, वल्लरी, लता, वल्ली, इत्यादि वेलनां नाम जोडवाथी कमलवती, कमलव्रतती, कमलवल्ली, कमललता, इत्यादि; तथा विसिनी, ए कमलिनीना नामो थया. हवे समुद्रनां नामोनु वर्णन करे छे ॥ २३ ॥ तेमां पहेला नदीनां नामो कहे छे–स्रोतस्विनी; धुनी सिन्धु, स्रवन्ती, निम्नगा, आपगा, नदी नद, द्विरेफ, सरित्, तरङ्गिणी ॥ २४ ॥

आ नदी वाची नामो थकी 'पति' शब्द जोडवाथी–स्रोतस्विनीपति, इत्यादि समुद्रना नाम थाय छे. तथा बीजा पण समुद्रना नाम कहे छे–अब्धि; पारावार, अमृतोद्भव, अवारपार, अकूपार, रत्नाकर, मीनाकर, ॥ २५ ॥ समुद्र, वारिराशि, सरस्वत्, सागर अर्णव । हवे कीनाराना नाम कहे छे—सीमा, अथवा, सीमन्, उपकण्ठ, तीर पार, रोधस्, अवधि, तट ॥ २६ ॥

भङ्गस्तरङ्गकल्लोलौ, वीचिरुत्कलिकाऽऽवलिः ।
पाली वेला तटोच्छ्वासो, विभ्रमोऽयमुदन्वतः ॥ २७ ॥
मनुष्यो मानुषो मर्त्यो, मनुजो मानवो नरः ।
ना पुमान् पुरुषो गोधो, धवः स्यात्तत्पतिर्नृपः ॥ २८ ॥
भृत्योऽथ भृतकः पत्तिः, पदातिः पदगोऽनुगः ।
भटोऽनुजीव्यनुचरः शस्त्रजीवी च किङ्करः ॥ २९ ॥
स्त्री नारी वनिता मुग्धा, भामिनी भीरुरङ्गना ।
ललना कामिनी योषिद्, योषा सीमन्तिनी वधूः ॥ ३० ॥
नितम्बिन्यबला बाला, कामुकी वामलोचना ।
भामा तनूदरी रामा, सुन्दरी युवतिश्चला ॥ ३१ ॥
भार्या जाया जनिः कुल्या, कलत्रं गेहिनी गृहम् ।
महिला मानिनी पत्नी, तथा दाराः पुरन्ध्रयः ॥ ३२ ॥
वल्लभा प्रेयसी प्रेष्ठा, रमणी दयिता प्रिया ।
इष्टा च प्रमदा कान्ता, चण्डी प्रणयिनी तथा ॥ ३३ ॥
सती पतिव्रता साध्वी, पतिवत्न्येकपत्न्यपि ।
मनस्विनी भवत्यार्या, विपरीता निरूप्यते ॥ ३४ ॥

---

हवे ल्हेरीना नाम कहे छे-भङ्ग. तरङ्ग, कल्लोल. वीचि, उत्कलिका, आवलि । हवे समुद्रना विभ्रमना नाम कहे छे-पाली, वेला, तटोच्छ्वास ॥२७॥ हवे मनुष्यना नाम कहे छे—मनुष्य मानुष, मर्त्य, मानव, नर, नृ पुंस्, पुरुष, गोध, धव । तेओनो पति (स्वामि) अर्थात्—मनुष्यपति, आदि राजाना नाम थाय छे. ॥ २८ ॥ हवे नोकर अथवा सीपाइना नाम कहे छे-भृत्य. भृतक, पत्ति. पदाति, पदग अनुग भट, अनुजीविन्. अनुचर, शस्त्रजीविन्. किङ्कर, ॥ २९ ॥ हवे स्त्रीओना नाम कहे छे-स्त्री. नारी, वनिता. मुग्धा, भामिनी, भीरु. अंगना, ललना, कामिनी, योषित, योषा, सीमन्तिनी वधू ॥ ३० ॥ नितम्बिनी, अबला, बाला, कामुकी, वामलोचना, भामा, तनूदरी, रामा सुंदरी, युवती, चला, ॥३१॥

हवे पोतानी स्त्रीनां नाम कहे छे—भार्या, जाया, जनि कुल्या, कलत्र, गेहिनी, गृह, महिला, मानिनी, पत्नी, दारा, पुरन्ध्रि, ॥ ३२ ॥ हवे पोतानी व्हाली स्त्रीना नाम कहे छे—वल्लभा प्रेयसी, प्रेष्ठा, रमणी, दयिता. प्रिया, इष्टा प्रमदा, कान्ता, चण्डी, प्रणयिनी ॥ ३३॥ हवे शीलवती स्त्रीना नाम कहे छे—सती, पतिव्रता, साध्वी, पतिवत्नी, एकपत्नी, मनस्विनी, आर्या ॥ हवे व्यभिचारिणी स्त्रीनां नाम कहे छे, ॥ ३४ ॥

वन्धकी कुलटा मुक्ता, पुनर्भूः पुंश्चली खला ।
स्पर्शाऽभिसारिका दूती, स्वैरिणी शम्भली तथा ॥ ३५ ॥
गणिका लञ्जिका वेश्या, रूपाजीवा विलासिनी ।
पण्यस्त्री दारिका दासी, कामुकी सर्ववल्लभा ॥ ३६ ॥
कान्तेष्टौ दयितः प्रीतः, प्रियः कामी च कामुकः ।
वल्लभोऽसुपतिः प्रेयान्, विटश्च रमणो वरः ॥ ३७ ॥

सवित्री जननी माता, जनकः सविता पिता । देहोऽपघनकायाङ्गं वपुः संहननं तनुः ॥
कलेवरं शरीरं च, मूर्तिरस्माद्-भवः सुतः । पुत्रः सूनुरपत्यं च, तुक् तोकं चाऽऽत्मजः प्रजाः
उद्वहस्तनयः पोतो दारको नन्दनोऽर्भकः । स्तनन्धयोत्तानशयौ, स्त्रीत्वे दुहितरं विदुः

वयस्याऽऽली सहचरी, सध्रीची सवयाः सखी ।
आलीविवर्जितं मित्रं, सम्बन्धो मित्रयुः सुहृत् ॥ ४१ ॥

---

वन्धकी, कुलटा, मुक्ता, पुनर्भू, पुंश्चली, खला, स्पर्शा, अभिसारिका, दूती, स्वैरिणी, शम्भली, ॥ ३५ ॥ हवे वेश्यानां नाम कहे छे—गणिका, लञ्जिका, वेश्या, रुपाजीवा, विलासिनी, पण्यस्त्री, दारिका, दासी, कामुकी, सर्ववल्लभा ॥ ३६ ॥ हवे भर्तार (वर) नां नाम कहे छे—कान्त इष्ट, दयित, प्रीत, प्रिय, कामिन, कामुक, वल्लभ, असुपति, प्रेयस्, विट, रमण, वर ॥ ३७ ॥ हवे माताना नाम कहे छे—सवित्री, जननी, माता । हवे पिताना नाम कहे छे—जनक, सवितृ, पितृ, । हवे शरीरनां नाम कहे छे—देह, अपघन, काय अंग, वपुष्, संहनन, तनु, ॥ ३८ ॥

कलेवर शरीर मूर्ति । शरीर थकी भव (उत्पन्न थनार) पुत्र थाय छे. अर्थात् शरीर वाचक नामो थकी 'भव' शब्द जोडवाथी-देहभव आदि पुत्रना नाम थाय छे तथा बीजा पण पुत्रना नाम कहे छे—सुत, पुत्र, सूनु, अपत्य, तुक् तोक, आत्मज, प्रजा, ॥ ३९ ॥ उद्वह, तनय, पोत, दारक, नन्दन, अर्भक, स्तनन्धय, उत्तानशय, । पुत्रवाचक शब्दो थकी स्त्रीत्वबोधक प्रत्ययो जोडवाथी पुत्रीना नाम थाय छे, जेमके-देहभवा, सुता, पुत्री इत्यादि तथा दुहितृ नाम पण पुत्रीवाचक छे. ॥ ४० ॥ हवे सखी (साहेली)नां नाम कहे छे-वयस्या, आली, सहचरी, सध्रीची, सवयस्, सखी, । अली शब्द विना दरेक साहेली वाचक नाम मित्रना थाय छे. जेमके—वयस्य, सहचर, सध्र्यञ्च्, सवयस्, सखी; तथा मित्र सम्बन्ध, मित्रयु, सुहृद् ए चार नाम पण मित्रवाचक छे ॥ ४१ ॥

सहकृत्वा सहकारी, सहायः सामवायिकः ।
सनाभिः सगोत्रो बन्धुः, सोदर्योऽवरजोऽनुजः ॥ ४२ ॥
कनीयानग्रजो ज्येष्ठो, भ्रातृ–जामी स्वसाऽनुजा ।
भर्तुः स्वसा ननन्दा स्याद्, मातुलानी प्रियाम्बिका ॥ ४३ ॥
वैर्यरातिरमित्राऽरि–द्विट् सपत्नो द्विषद्रिपुः ।
असेव्यो दुर्जनः शत्रु–र्दुष्टो द्वेषी खलोऽहितः ॥ ४४ ॥
दीधीतिर्भानुरुस्रोंशु–र्गभस्तिः किरणः करः ।
पादो रुचिर्मरीचिर्भास्, तेजोऽर्चिर्गौर्द्युतिः प्रभा ॥ ४५ ॥
दीप्तिर्ज्योतिर्महो धाम, रश्मिरूर्जो विभावसुः। शीतोष्णभायपूर्वत्वे, तद्वन्ताविन्दुभास्करौ
शशी विधुः सुधासूतिः, कौमुदीकुमुदप्रियः। कलाभृच्चन्द्रमाश्चन्द्रः कान्तिमानौषधीश्वरः
उडूनि भानि तारर्क्षं,नक्षत्रं तत्पतिर्निशा। क्षणदा रजनी नक्तं, दोषा श्यामा क्षपा-करः

हवे मददगारनां नाम कहे छे—सहकृत्वन्, सहकारिन्. सहाय, सामवायिक. । हवे पितराइनां नाम कहे छे—सनाभि, सगोत्र, हवे भाइना नाम कहे छे-बन्धु, सोदर्य, । हवे नानाभाइना नाम कहे छे–अवरज, अनुज, ॥ ४२ ॥ कनीयस् । हवे मोटा भाइना नाम कहे छे—अग्रज, ज्येष्ठ, भ्रातृ, । हवे बेनना नाम कहे छे-जामि, स्वसृ, तथा अनुजा, नानी बेननुं नाम छे । ननान्द, ए नाम नणदलनुं छे. । हवे मामीना नाम कहे छे—मातुलानी प्रियाम्बिका ॥ ४३ ॥ हवे शत्रुना नाम कहे छे—वैरिन्, अराति, अमित्र, अरि, द्विष्, सपत्न, द्विषत, रिपु, असेव्य, दुर्जन, शत्रु, दुष्ट, द्वेषिन्, खल, अहित, ॥ ४४ ॥

हवे किरणना नाम कहे छे—दीधिति, भानु, उस्र, अंशु, गभस्ति, किरण, कर, पाद, रुचि, मरीचि, भास्, तेजस्, अर्चिष् गो द्युति, प्रभा, ॥ ४५ ॥ —दीप्ति, ज्योतिष्, महस्, धामन्, रश्मि, उर्जस्, विभावसु । प्रायः आ नामोनी पूर्वमां शीत शब्द जोडवाथी शीतकिरणवाळा-चन्द्रमानां नाम थाय छे. जेमके—शीतदिधिति, शीतकिरण विगेरे, तथा प्रथम उष्ण पद जोडवाथी उष्णकिरणवाळा—सूर्यना नाम थाय छे. जेमके-उष्णदीधिति, उष्णकिरण विगेरे. बीजा पण चन्द्रमानां नाम कहे छे-इन्दु, ॥ ४६ ॥ शशिन्, विधु, सुधासूति, कौमुदीप्रिय, कुमुदप्रिय, कलाभृत, चन्द्रमस, चन्द्र, कान्तिमत, औषधीश्वर ॥ ४७ ॥

हवे ताराओना नाम कहे छे—उडु, भ, तार, ऋक्ष, नक्षत्र । ए थकी पति शब्द जोडवाथी-उडुपति भपति, इत्यादि नामो चन्द्रमाना बने छे । तथा निशा क्षणदा, रजनी नक्त, दोषा, श्यामा, क्षपा, आ सर्व रात्रिना नामो छे । रात्रिवाचक नामो थकी कर शब्द जोडवाथी निशाकर इत्यादि चन्द्रमाना नाम थाय छे ॥ ४८ ॥

तरणिस्तपनो भानु-र्ब्रध्नः पूषाऽर्यमा रविः। तिग्मः पतङ्गो द्युमणि-र्मार्तण्डोऽर्को ग्रहाधिपः
इनः सूर्यस्तमोध्वान्त-तिमिराऽरिर्विरोचनः। दिनं दिवाहर्दिवसो, वासरस्तत्-करश्च सः
चक्रवाकाऽब्जपर्याय-बन्धुः कुमुदविप्रियः। यमुनायमकानीन-जनकः सविता मतः
वाहोऽश्वस्तुरगो वाजी, हयो धुर्यस्तुरङ्गमः। सप्तिरर्वा हरी रथ्यः,सप्ताद्यश्वो मयूखवान्
खं विहायो वियद् व्योम, गगनाऽऽकाशमम्बरम्।
द्योर्नभोऽभ्राऽन्तरिक्षं च, मेघवायु-पथोऽप्यथ ॥ ५३ ॥
तच्चरः खेचरस्तद्-गः, पक्षी पत्री पतत्र्यपि। शकुन्तिः शकुनिर्विश्च, पतङ्गो विष्किरो वयः
जाङ्गलं पिशितं मांसं, पलं पेशी च तत्-प्रियः। यातुधानस्तथा रक्षो,रात्र्यादि-चर इष्यते
सुतोऽदितेस्तडिद्धन्वा, सेन्द्रो देवः सुरोऽमरः।
स्वर्द्यौः स्वर्गोऽथ नाकश्च, तद्-वासस्त्रिदशो मतः ॥ ५६ ॥

---

हवे सूर्यना नाम कहे छे—तरणि. तपन, भानु, ब्रध्न, पूषन्. अर्यमन्, रवि तिग्म, पतङ्ग, द्युमणि, मार्तण्ड, अर्क, ग्रहाधिप, ॥ ४९ ॥ इन, सूर्य, तमोरि, ध्वान्तारि, तिमिरारि, विरोचन। हवे दिवसनां नाम कहे छे-दिन, दिवा, अहन्, दिवस, वासर, । दिवसवाचक शब्दो थकी कर शब्द जोडवाथी सूर्यना नाम थाय छे जेवां के, दिनकर दिवाकर इत्यादि ॥५०॥

चक्रवाक अने कमल वाचक शब्दो थकी बन्धु शब्द जोडवाथी सूर्यना नाम बने छे. जेमके—चक्रवाकबन्धु, कमलबन्धु इत्यादि तथा कुमुदविप्रय, तथा यमुना, यम. अने कानीन (कर्ण नामधारक पांडववंशी राजा) थकी जनक शब्द जोडवाथी यमुनाजनक यमजनक, कानीनजनक, इत्यादि सूर्यना नाम बने छे ॥ ५१ ॥ हवे घोडाना नाम कहे छे—वाह, अश्व, तुरग, वाजिन्, हय, धुर्य, तुरङ्गम, सप्ति, अर्वन, हरि, रथ्य ॥ अश्ववाचक नामोनी पहेला सप्त शब्द जोडवाथी सप्तवाह, इत्यादि सूर्यनां नामो थाय छे ॥ ५२ ॥ हवे आकाशना नामो कहे छे—ख विहायस्, वियत्, व्योमन्, गगन, आकाश, अम्बर, द्यो नभस, अभ्र. अन्तरिक्ष, मेघपथ, वायुपथ, ॥ ५३ ॥

आकाश वाचक शब्द थको 'चर' शब्द जोडवाथी खेचर आदि विद्याधरना नाम बने छे. अने आकाश थकी 'ग' शब्द जोडवाथी पक्षीनां नाम बने छे, .जेमके खग, विहायोग इत्यादि तथा पक्षिन्, पत्रिन्, पतत्रिन्, शकुन्ति, शकुनि, वि. पतङ्ग. विष्किर, वयस्, आ पण पक्षीना नामो छे ॥ ५४ ॥ हवे मांसना नाम कहे छे—जाङ्गल, पिशित, मांस, पल, पेशी । आ नामो थकी 'प्रिय' शब्द जोडवाथी जाङ्गलप्रिय आदि; तथा यातुधान, रक्षस्, रात्रिचर, इत्यादि राक्षसना नाम छे. ॥ ५५ । हवे देवना नाम कहे छे-अदितिसुत, तडिद्धन्वन्, सेन्द्र, देव, सुर, अमर । हवे स्वर्गना नाम कहे छे-स्वर्, द्यो, स्वर्ग, नाक । स्वर्गवाचक नाम थकी वास शब्द जोडवाथी पण देवताना नाम थाय छे, जेमके-स्वर्गवास इत्यादि तथा त्रिदश देवनुं नाम छे. ॥५६॥

तत्-पतिः शक्र इन्द्रश्च,सुनासीरःशतक्रतुः। प्राचीनबर्हिः सूत्रामा, वज्री चाखण्डलो हरिः
शत्रुर्वलस्य गोत्रस्य,पाकस्य नमुचेरपि। वृत्रहा च सहस्राक्षो, गीर्वाणेशः पुरन्दरः ५८
विडौजाश्चाऽप्सरोनाथो, वासवो हरिवाहनः। मरुतश्च मरुत्वांश्च, वृषा चैरावणाधिपः
शतमन्युस्तुराषाट् च, पुरुहूतश्च कौशिकः। संक्रन्दनोऽथ मघवा पुलोमारिर्मरुत्सखः

काष्ठा ककुब् दिगाशा च, दक्षकन्या तथा हरित्।
तत्पर्यायपरं योज्यं, प्राज्ञैः पालगजाऽम्बरम् ॥ ६१ ॥

पवनः पवमानश्च वायुर्वातोऽनिलो मरुत्। समीरणो गन्धवाहः, श्वसनश्च सदागतिः

नभस्वान् मातरिश्वा च, वरेण्युर्जवनश्चलः।
प्रभञ्जनोऽस्य पर्याय-पुत्रौ भीमाऽञ्जनात्मजौ ॥ ६३ ॥
तत्सखोऽग्निः शिखी वह्निः, पावकश्चाशुशुक्षणिः
हिरण्यरेताः सप्तार्चि-र्जातवेदास्तनूनपात् ॥ ६४ ॥

स्वाहापतिर्हुताशश्च,ज्वलनो दहनोऽनलः। वैश्वानरः कृशानुश्च, रोहिताश्वो विभावसुः

देव अने स्वर्गवाचक नाम साथे पति शब्द, अथवा पति शब्दना समान अर्थवाळा शब्द जोडवाथी इंद्रना नाम थाय छे. जेमके-अदितिसुतपति, देवस्वामिन, स्वर्गपति विगेरे तथा बीजां पण इंद्रनां नाम कहे छे-शक्र, इन्द्र, सुनाशीर, शतक्रतु, प्राचीनबर्हिस्, सूत्रामन्, वज्रिन्, आखण्डल, हरि, ॥ ५७ ॥ बलशत्रु, गोत्रशत्रु, पाकशत्रु, नमुचिशत्रु, वृत्रहन्, सहस्राक्ष, गीर्वाणेश, पुरन्दर, ॥ ५८ ॥ विडोजस्, अप्सरोनाथ; वासव, हरिवाहन, मरुत, मरुत्वत, वृषन्, ऐरावणाधिप ॥ ५९ ॥

शतमन्यु, तुरासाह्, पुरुहूत, कौशिक, संक्रन्दन, मघवन्, पुलोमारि, मरुत्सख ॥ ६० ॥ हवे दिशाओनां नाम कहे छे-काष्ठा, ककुभ्, दिश्, आशा, दक्षकन्या, हरित् । आ दिशा वाचक नामो थकी पाल शब्द जोडवाथी दिक्पालनां नाम, तथा गज शब्द जोडवाथी दिग्गजना नाम, तथा अम्बर शब्द जोडवाथी दिगम्बरना नाम बने छे. ॥ ६१ ॥ हवे पवनना नाम कहे छे-पवन, पवमान, वायु, वात, अनिल, मरुत्, समीरण, गन्धवाह, श्वसन, सदागति, ॥ ६२ ॥

नभस्वत्, मातरिश्वन्, वरेण्यु, जवन, चल, प्रभञ्जन, । तेना पुत्र, अर्थात् पवनपुत्र, वायुपुत्र, इत्यादि भीम तथा अञ्जनात्मज हनुमानजीनां नाम थाय छे ॥६३॥ पवननो सख (मित्र) अर्थात् पवनसख, पवमानसख इत्यादि; तथा अग्नि, शिखिन्, वह्नि, पावक आशुशुक्षणि, हिरण्यरेतस, सप्तार्चिस्, जातवेदस्, तनूनपात्, ॥ ६४ ॥ स्वाहापति, हुताश, ज्वलन, दहन, अनल, वैश्वानर, कृशानु, रोहिताश्व, विभावसु, ॥ ६५ ॥

वृषाकपिः शमीगर्भो हव्यवाहो हुताशनः। तदादि-सूनुः सेनानीः,स्कन्दश्च शिखिवाहनः
कार्तिकेयो विशाखश्च,कुमारः षण्मुखो गुहः। शक्तिमान् क्रौञ्चभेदी च,स्वामी शरवणोद्भवः
तत्पिता शङ्करः शम्भुः, शिवः स्थाणुर्महेश्वरः।
त्र्यम्बको धूर्जटिः शर्वः, पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ६८ ॥
त्रिपुरारिर्विशालाक्षो, गिरीशो नीललोहितः।
रुद्रेन्दुमौलियज्ञारि-त्रिनेत्रा वृषभध्वजः ॥ ६९ ॥
उग्रः शूली कपाली च, शिपिविष्टो भवो हरः।
उमापतिर्विरूपाक्षो,विश्वरूपः कपर्द्यपि ७०
भागीरथी त्रिपथगा, जाह्नवी हिमवत्सुता। मन्दाकिनी द्युपर्याय-धुनी गङ्गा नदीश्वरः ७१
विधिर्वेधा विधिता च, द्रुहिणोऽजश्चतुर्मुखः।
पद्मपर्याय-योनिश्च, पितामहविरिञ्चनौ ७२
हिरण्यगर्भः स्रष्टा च, प्रजापतिः सहस्रपात्।
ब्रह्मात्मभूरनन्तात्मा, कस्तत्पुत्रो हि नारदः ॥ ७३ ॥

---

वृषाकपि, शमीगर्भ हव्यवाह, हुताशन, आ नामो अग्निना छे। हवे कार्तिकेयस्वामीनां नाम कहे छे—अग्निवाचक नामो थकी सूनु शब्द जोडवाथी अग्निसूनु इत्यादि; तथा सेनानी स्कन्द, शिखिवाहन, ॥ ६६ ॥ कार्तिकेय, विशाख, कुमार, षण्मुख, गुह, शक्तिमत्, क्रौंचभेदिन, स्वामिन्, शरवणोद्भव, आ नाम कार्तिकेयस्वामीनां छे. ॥ ६७ ॥ तेना पिता, अर्थात् सेनानीपितृ आदि महादेवजीनां नाम बने छे तथा-शंकर, शम्भु, शिव, स्थाणु, महेश्वर, त्र्यम्बक, धूर्जटि, शर्व, पिनाकिन, प्रथमाधिप, ॥ ६८ ॥

त्रिपुरारि, विशालाक्ष, गिरीश, नीललोहित, रुद्र, इन्दुमौलि, यज्ञारि, त्रिनेत्र, वृषभध्वज, ॥ ६९ ॥ उग्र, शूलिन, कपालिन्, शिपिविष्ट, भव, हर, उमापति, विरूपाक्ष, विश्वरूप, कपर्दिन्, आ नामो महादेवजीना छे ॥ ७० ॥ हवे गंगाना नाम कहे छे-भगीरथी, त्रिपथगा, जाह्नवी, हिमवत्सुता, मन्दाकिनी; तथा स्वर्गना नाम थकी धुनी शब्द जोडवाथी—स्वर्धुनी आदि गंगाना नाम बने छे। गंगावाचक शब्दो थकी "ईश्वर" शब्द जोडवाथी—भागीरथीश्वर, इत्यादि महादेवना नाम थाय छे. ॥ ७१ ॥

हवे ब्रह्माना नाम कहे छे—विधि, वेधस, विधातृ, द्रुहिण, अज, चतुर्मुख, तथा कमलवाचक नामो थकी योनि शब्द जोडवाथी-कमलयोनि, पद्मयोनि इत्यादि ब्रह्माना नाम थाय छे, तथा पितामह, विरिंचन. ॥ ७२ ॥ हिरण्यगर्भ, स्रष्टृ, प्रजापति, सहस्रपाद्, ब्रह्मन्, आत्मभू, अनन्तात्मन, क, । ब्रह्मवाचक शब्द थकी पुत्र शब्द जोडवाथी अर्थात ब्रह्मानो पुत्र ए अर्थमां—विधिपुत्र, अजपुत्र, ब्रह्मपुत्र इत्यादि नारदनां नाम थाय छे. ॥ ७३ ॥

कृष्णो दामोदरो विष्णु–रुपेन्द्रः पुरुषोत्तमः ।
केशवश्च हृषीकेशः, शार्ङ्गी नारायणो हरिः ॥ ७४ ॥
केशी मधुर्बलिर्बाणो, हिरण्यकशिपुर्मुरः ।
तदादि–सूदनः शौरिः, पद्मनाभोऽप्यधोक्षजः ॥ ७५ ॥
गोविन्दो वासुदेवश्च, लक्ष्मीः श्रीर्गोमिनीन्दिरा ।
तत्पतिः शैलभूम्यादि–धरश्चक्रधरस्तथा ॥ ७६ ॥
तत्पुत्रो मन्मथः कामः, शूर्पकारिरनन्यजः ।
कायपर्याय–रहितो, मदनो मकरध्वजः ॥ ७७ ॥
शिलीमुखः शरो बाणो, मार्गणो रोपणः कणः ।
इषुः काण्डं क्षुरप्रं च, नाराचं तोमरं खगः ॥ ७८ ॥
कार्मुकं धन्व चापं च, धर्मं कोदण्डकं धनुः ।
शिलीमुखादेरासनं, तत्कोटिमटनीं विदुः ॥ ७९ ॥
पुष्पं च सुमनः फुल्लं, लतान्तं प्रसवोद्गमौ ।
प्रसूनं कुसुमं ज्ञेयं, तदाद्यस्त्रशरः स्मरः ॥ ८० ॥

---

हवे कृष्ण वासुदेवना नाम कहे छे—कृष्ण, दामोदर, विष्णु, उपेन्द्र, पुरुषोत्तम, केशव, हृषीकेश, शार्ङ्गिन्, नारायण, हरि, ॥ ७४ ॥ केशिसूदन, मधुसूदन, बलिसूदन, बाणसूदन, हिरण्यकशिपुसूदन, मुरसूदन, शौरि, पद्मनाभ, अधोक्षज, ॥ ७५ ॥ गोविन्द, वासुदेव, । हवे लक्ष्मीना नाम कहे छे—लक्ष्मी, श्री, गोमिनी इन्दिरा, । लक्ष्मीवाचक नाम थकी पति शब्द जोडवाथी तेमना पति ए अर्थमां—लक्ष्मीपति, श्रीपति, इत्यादि कृष्णनां नाम थाय छे ॥ तथा पर्वत अने पृथ्वीवाचक शब्द थकी धर शब्द जोडवाथी; अर्थात् पर्वतधर पृथ्वीधर, इत्यादि, तथा चक्रधर, ते सर्वे कृष्णना नाम थाय छे. ॥७६॥ तेमनो पुत्र, अर्थात् कृष्णपुत्र, दामोदरपुत्र; इत्यादि; तथा मन्मथ, काम, शूर्पकारि, अनन्यज; तथा शरीरवाचक नामो थकी रहित जोडवाथी–अर्थात शरीररहित, देहरहित, इत्यादि; तथा मदन, मकरध्वज, ए नामो कामदेवना छे. ॥ ७७ ॥

हवे बाणना नाम कहे छे-शिलीमुख, शर, बाण, मार्गण, रोपण, कण, इषु, काण्ड, क्षुरप्र, नाराच, तोमर, खग, ॥ ७८ ॥ हवे धनुष्यना नाम कहे छे–कार्मुक, धन्वन, चाप धर्म, कोदण्डक, धनुष् । तथा बाणवाचक नाम थकी आसन शब्द जोडवाथी—शिलीमुखासन, शरासन, इत्यादि नाम पण धनुष्यना थाय छे । धनुष्यना अग्र भागने अटनी कहे छे. ॥७९॥ हवे फूलना नाम कहे छे—पुष्प सुमनस्, फुल्ल, लतान्त, प्रसव, उद्गम, प्रसून, कुसुम । फूलवाचक नामथकी अस्त्र तथा शर शब्द जोडवाथी पुष्पास्त्र, पुष्पशर, इत्यादि कामदेवना नाम बने छे. ॥८०॥

स्वान्तमास्वनितं चित्तं, चेतोऽन्तःकरणं मनः ।
हृदयं विशिखाकूतं, मारस्तत्रोद्भवो मतः ॥ ८१ ॥
मौर्वी जीवा गुणो गव्या, ज्याऽलिर्भृङ्गः शिलीमुखः ।
भ्रमरः षट्पदो ज्ञेयो, द्विरेफश्च मधुव्रतः ॥ ८२ ॥
मौर्व्यादिभ्रान्तमल्यादि, कन्दर्पस्यैक्षवं धनुः ।
हेतिरस्त्रायुधं शस्त्रं, पुष्पाद्यस्त्रः स्मरो मतः ॥ ८३ ॥
ध्वजा पताका केतुश्च, चिह्नं तद्वैजयन्त्यपि ।
तत्तदन्तो झषाद्यादिः, शम्भोर्विघ्नकरः स्मरः ॥ ८४ ॥
कौक्षेयकोऽसिर्निस्त्रिंशः, कृपाणः करवालकः ।
तरवारिर्मण्डलाग्रं, खड्गनामावलिं विदुः ॥ ८५ ॥
अक्षौहिणी बलानीकं, वाहिनी साधनं चमूः ।
ध्वजिनी पृतना सेना, सैन्यं दण्डो वरूथिनी । ८६ ॥

हवे मननां नाम कहे छे—स्वान्त, आस्वनित, चित्त, चेतस्, अन्तःकरण, मनस्, हृदय, विशिख, आकूत ॥ मनमां उद्भव (उत्पन्न थनार ) अर्थात्-स्वान्तोद्भव इत्यादि कामदेवना नाम थाय छे ॥ ८१ ॥ हवे धनुष्यनी दोरीना नाम कहे छे-मौर्वी जीवा, गुण, गव्या ज्या, । हवे भमराना नाम कहे छे—अलि. भृङ्ग, शिलीमुख, भ्रमर, षट्पद. द्विरेफ, मधुव्रत. ॥ ८२ ॥ भमरावाचक नाम थकी—मौर्वी आदि शब्द जोडवाथी अलिमौर्वि इत्यादि कामदेवना नाम थाय छे । कामदेवना धनुष्यने ऐक्षव कहे छे । हवे शस्त्र (हथीआर) ना नाम कहे छे-हेति, अस्त्र, आयुध, शस्त्र, । हथीआरवाचक नामनी आदिमां पुष्प शब्द मुकवामां आवे तो-पुष्पहेति. पुष्पास्त्र, पुष्पायुध, पुष्पशस्त्र, इत्यादि नाम कामदेवना थाय छे. ॥ ८३ ॥

हवे ध्वजाना नाम कहे छे—ध्वजा, पताका, केतु, चिह्न, वैजयन्ति. । आ नामोनी पहेलां मत्स्यवाचक शब्द जोडवाथी कामदेवना नाम थाय छे. जेमके-झषध्वज, मकरध्वज विगेरे. तथा महादेववाचक शब्दो थकी विघ्नकर शब्द जोडवाथी शम्भुविघ्नकर शंकरविघ्नकर इत्यादि नामो पण कामदेव वाचक बने छे ॥ ८४ ॥ हवे तलवारना नाम कहे छे—कौक्षेयक, असि निस्त्रिंश कृपाण, करवालक, तरवारि, मण्डलाग्र, खड्ग ॥ ८५ ॥ हवे सेनावाचक शब्दो कहे छे—अक्षौहिणी, बल. अनीक, वाहिनी, साधन, चमूः ध्वजिनी, पृतना, सेना, सैन्य, दण्ड, वरुथिनी ॥ ८६ ॥

कदनं समरं युद्धं, संयुगं कलहं रणम् ।
संग्रामं संपरायाऽऽजि, संयदाहुर्महाहवम् ॥ ८७ ॥

गजो मतङ्गजो हस्ती, वारणोऽनेकपः करी ।
दन्ती स्तम्बेरमः कुम्भी, द्विरदेभमतङ्गमाः ॥ ८८ ॥

शुण्डालः सामजो नागो, मातङ्गः पुष्करी द्विपः ।
करेणुः सिन्धुरस्तेषु, यन्ता याता निषाद्यपि ॥ ८९ ॥

नागाद्यरिः कण्ठीरवो, मृगेन्द्रः केसरी हरिः ।
व्याघ्रश्चमूरुः शार्दूलः, शरभोऽष्टापदोऽष्टपात् ॥ ९० ॥

क्रोडो वराहो दंष्ट्री च घृष्टिः पोत्री च शूकरः ।
उष्ट्रो मयः शृङ्खलकः, करभः शीघ्रगामुकः ॥ ९१ ॥

कौलेयकः सारमेयो, मण्डलः श्वा पुरोगतिः ।
जिह्वापो ग्रामशार्दूलः, कुक्कुरो रात्रिजागरः ॥ ९२ ॥

हेम चाऽष्टापदं स्वर्णं, कनकाऽर्जुनकाञ्चनम् ।
सुवर्णं हिरण्यं भर्म, जातरूपं च हाटकम् ॥ ९३ ॥

---

हवे युद्धना नाम कहे छे—कदन, समर, युद्ध, संयुग, कलह, रण, संग्राम संपराय, आजि संयत, महाहव ॥ ८७ ॥ हवे हाथीना नाम कहे छे—गज, मतंगज, हस्तिन्, वारण, अनेकप, करिन्, दन्तिन्, स्तम्बेरम, कुम्भिन. द्विरद, इभ. मतंगम, । ८८ ॥ शुण्डाल, सामज, नाग, मातंग पुष्करिन्. द्विप, करेणु, सिन्धुर । हवे हाथी उपर बेसनारना, एटले हाथीना मावतना नाम कहे छे- यन्तृ, यातृ. निषादिन् ॥ ८९ ॥ हस्तिवाचक शब्दो थकी अरि शब्द लगाव-वाथी सिंहना नाम बने छे जेमके- गजारि वारणारि. तथा बीजा पण सिंहना नाम कहे छे— कण्ठीरव, मृगेन्द्र, केसरिन्, हरि, । व्याघ्र. चमूरु, शार्दूल, आ वाघना नाम छे । शरभ, अष्टापद, अष्टपाद्, आ नाम अष्टापद नामना पशुनां छे, जे सिंह करतां पण वधारे बलवान होयछे. ॥ ९० ॥ हवे डुक्करनां नाम कहे छे-क्रोड, वराह, दंष्ट्रिन्, घृष्टि, पोत्रिन्, शूकर, । हवे उंटना नाम कहे छे- उष्ट्र. मय शृंखलक, करभ, शीघ्रगामुक. ॥ ९१ ॥ हवे कूतराना नाम कहे छे— कौलेयक, सारमेय. मण्डल, श्वन् पुरोगति, जिह्वाप, ग्रामशार्दूल, कुक्कुर, रात्रिजागर, ॥ ९२ ॥

हवे सुवर्णना नाम कहे छे—हेमन्, अष्टापद स्वर्ण. कनक, अर्जुन, काञ्चन. सुवर्ण, हिरण्य, भर्मन्, जातरुप. हाटक. ॥ ९३ ॥

तपनीयं कलधौतं, कार्तस्वरं शिलोद्भवम् ।
रूप्यं रजतं गुलिका, शुक्तिजं मौक्तिकं तथा ॥ ९४ ॥
वित्तं वस्तु वसु द्रव्यं, स्वार्थं रा द्रविणं धनम्
कस्वरं तत्पतिं प्राहुः, कुबेरं चैकपिङ्गलम् ॥ ९५ ॥
वैश्रवणं राजराज-मुत्तराशापतिं तथा ।
अलकानिलयं श्रीदं, धनपर्याय-दायदम् ॥ ९६ ॥
राष्ट्रं जनपदो निर्गो, जनान्तो विषयः स्मृतः ।
पूः पुरं पुरी नगरी, पत्तनं पुटभेदनम् ॥ ९७ ॥
वक्त्रं लपनमास्यं च, वदन्ति वदनं मुखम् ।
आननं श्रवणं श्रोत्रं, श्रवः कर्णं श्रुतिं विदुः ॥ ९८ ॥
दृगक्षि चक्षुर्नयनं, दृष्टिर्नेत्रं विलोचनम् ।
कटाक्षं वेकराऽपाङ्गं, विभ्रमस्तस्य वैकृतम् ॥ ९९ ॥
दोर्दोषा च भुजो बाहुः, पाणिर्हस्तः करस्तथा ।
प्राहुर्बाहुशिरोंऽसं च, हस्तशाखा कराङ्गुलिः ॥ १०० ॥

---

तपनीय, कलधौत, कार्तस्वर, शिलोद्भव । हवे रुपानां नाम कहे छे—रूप्य, रजत, गुलिका, । शुक्तिज अने मौक्तिक मोतीवाचक छे ॥९४॥ हवे धनना नाम कहे छे—वित्त, वस्तु, वसु, द्रव्य, स्व, अर्थ, रै, द्रविण, धन, क, स्वर. । तेनो पति अर्थात् वित्तपति विगेरे शब्दो कुबेरवाचक बने छे. तथा—कुबेर, एकपिंगल, ॥ ९५ ॥

वैश्रवण, राजराज, उत्तराशापति, अलकानिलय, श्रीद; तथा धनवाचक शब्दो थकी दाय अने द जोडवाथी कुबेरना नाम बने छे, जेमके-वित्तद, धनद, वित्तदाय, इत्यादि ॥ ९६ ॥ हवे देशना नाम कहे छे—राष्ट्र, जनपद, निर्ग जनान्त, विषय, । हवे शहेरना नाम कहे छे- पूर, पुर, पुरी, नगरी; पत्तन, पुटभेदन, ॥ ९७ ॥ हवे मुखना नाम कहे छे-वक्त्र; लपन, आस्य, वदन, मुख, आनन, हवे कानना नाम कहे छे श्रवण,श्रोत्र, श्रवस्, कर्ण, श्रुति,॥९८॥ हवे आंखना नाम कहे छे-दृग्, अक्षि, चक्षुष्, नयन, दृष्टि, नेत्र, विलोचन । हवे आंखना कटाक्षना नाम कहे छे—कटाक्ष, वेकर, अपांग, विभ्रम, ॥ ९९ ॥ दोस्, दोषा, भुज, बाहु, आ नाम बाहुना छे । हवे हाथना नाम कहे छे-पाणि, हस्त, कर, । बाहुशिरस् अंस, आ नाम खभाना छे । हस्तशाखा, कराङ्गुलि-आ बे नाम हाथनी आंगळीओना छे, ॥ १०० ॥

दन्तवासोऽधरोऽप्योष्ठो, वर्णितो दशनच्छदः ।
शिरोधरा गलो ग्रीवा, कण्ठश्च धमनी धमः ॥ १०१ ॥

नासा घ्राणमुरो वक्षः, कुक्षिः स्याज्जठरोदरम् ।
स्तनः पयोधरः कुचो, वक्षोज इति वर्णितः ॥ १०२ ॥

कटिर्नितम्बः श्रोणिश्च, जघनं जानु जह्नु च ।
चलनं चरणं पादं, क्रमोऽङ्घ्रिश्च पदं विदुः ॥ १०३ ॥

शिरो मूर्द्धोत्तमाङ्गं कं, प्रारभ्यं प्रेरितेरितम् ।
वाग्वचो वचनं वाणी, भारती गीः सरस्वती ॥ १०४ ॥

*सिंहद्विपघने गर्जो, हेषाऽश्वे बृंहितं गजे ।*
स्फीत्कृतं धेनुकलभे, स्तनितं जलदे तथा ॥ १०५ ॥

स्यन्दने चीत्कृतं मन्त्रे, भटे घृष्टौ च हुङ्कृतम् ।
शीत्कृतं मणितं कामे, खूत्कृतं शृङ्खलायुधे ॥ १०६ ॥

---

हवे होठना नाम कहे छे– दन्तवास, अधर, ओष्ठ, दशनच्छद । हवे हवे डोकना नाम कहे छे–शिरोधरा, गल, ग्रीवा, कण्ठ धमनी, धम ॥ १०१ ॥ नासा, घ्राण, आ बे नाम नाकना छे । हवे छातीना नाम कहे छे—उरस्, वक्षस्, । कुक्षि, जठर, उदर, आ पेटना नाम छे । स्तन, पयोधर, कुच, वक्षोज आ नाम स्तनना छे. ॥ १०२ ॥ कटि ए कम्मरनुं नाम छे । नितम्ब ए कूलानुं नाम छे । श्रोणि, जघन, आ बे कम्मर नीचेना आगला भागना–साथळना नाम छे । जानु, जह्नु, आ बे गोठणना नाम छे । हवे पगना नाम कहे छे–चलन, चरण, पाद, क्रम, अंघ्रि, पद ॥ १०३ ॥ शिरस्, मूर्द्धन्, उत्तमाङ्ग, क आ मस्तकना नाम छे । हवे प्रेरणा करायेलाना नाम कहे छे—प्रारम्भ, प्रेरित, इरित । हवे वाणीना नाम कहे छे– वाच्, वचस्, वचन, वाणी, भारती, गिर्, सरस्वती ॥ १०४ ॥

सिंह हाथी तथा मेघना अवाजने गर्ज कहे छे । हेषा घोडाना हणहणाटनुं नाम छे । हाथीना शब्दने बृंहित कहे छे । स्फीत्कृत ए गायना, अथवा हाथीना बच्चाना अवाजने कहे छे । स्तनित ए मेघना शब्दनुं नाम छे ॥ १०५ ॥ रथना अवाजने चीत्कृत कहे छे । मंत्र सुभट तथा घसवाथी जे अवाज नीकळे तेने हुंकृत कहे छे । शीत्कृत मणित, आ मैथुन थकी थता शब्दना नाम छे । खूत्कृत ए सांकळ तथा हथीयारथी नीकळता शब्दनुं नाम छे ॥ १०६ ॥

मञ्जीरकं तुलाकोटि, नूपुरं तत्र झङ्कृतम् ।
झाङ्कृतं मरुति क्रौञ्च–हंसयोः क्रेङ्कृतं मतम् ॥ १०७ ॥
प्रतीतं संस्तुतं लब्धं, दृष्टं परिचितं स्मृतम् ।
संस्थितं दशमीस्थं च, परासु च मृतं विदुः ॥ १०८ ॥
खेदो दुर्वेषोऽप्यमर्षश्च, रुट् कोपक्रोधमन्यवः ।
हर्षः प्रमोदः प्रमदो, मुत्तोषानन्दमुत्सवः ॥ १०९ ॥
कृपानुकम्पाऽनुक्रोशो, हन्तोक्तिः करुणा दया ।
शेमुषी धिषणा प्रज्ञा, मनीषा धीस्तथाशयः ११०
प्राज्ञो मेधादिमान् विद्वा–नभिरूपो विचक्षणः ।
पण्डितः सूरिराचार्यो, वाग्मी नैयायिकः स्मृतः १११
पारिषद्यो बुधः सभ्यः, सदस्यः सन् सभोचितः ।
आस्थानाधिपती राजा, राजसूयो नृपक्रतुः ११२
विष्टरं मल्लिकां पीठ–मासन्दीमासनं विदुः विष्टपं भुवनं लोको, जगत्तस्य पतिर्जिनः ॥

मंजीरक तुलाकोटि, नूपुर, आ झांझरना नाम छे । झांझरना अवाजने झंकृत कहे छे । पवनना अवाजने झांकृत कहे । क्रेंकृत ए क्रौंच, तथा हंस पक्षीनीं बोलीनुं नाम छे ॥ १०७ ॥

हवे जणायेलाना नाम कहे छे-प्रतीत, संस्तुत, लब्ध, दृष्ट. परिचित, स्मृत । संस्थित, दशमीस्थ, आ बे पथारीए सूतेलाना नाम छे । परासु, मृत, आ बे मुडदाना नाम छे ॥ १०८ ॥ हवे क्रोधना नाम कहे छे—खेद, द्वेष, अमर्ष, रुष्, कोप, क्रोध, मन्यु । हवे हर्षना नाम कहे छे– हर्ष, प्रमोद, प्रमद, मुद्, तोष, आनन्द, उत्सव ॥ १०९ ॥ हवे दयाना नाम कहे छे—कृपा, अनुकम्पा, अनुक्रोश, हन्तोक्ति, करुणा, दया । हवे बुद्धिना नाम कहे छे—शेमुषी, धिषणा प्रज्ञा, मनीषा, धी, आशय ॥ ११० ॥ हवे पंडितना नाम कहे छे—प्राज्ञ, मेधावत्, बुद्धिमत्, धीमत, विगेरे, तथा–विद्वस्, अभिरुप, विचक्षण, पण्डित, सूरि, आचार्य, वाग्मिन्, नैयायिक, ॥ १११ ॥ हवे सभा लायक जे मनुष्य होय तेना नाम कहे छे—पारिषद्य, बुध, सभ्य सदस्य, सत, सभोचित । सभाना नामो थकी अधिपति शब्द जोडवाथी–आस्थानाधिपति सभाधिपति, इत्यादि राजाना नाम थाय छे । राजा वाचक नामो थकी सूय शब्द जोडवाथी- राजसूय नृपसुय, इत्यादि नाम राजाओना यज्ञना थाय छे ॥११२॥ हवे आसनना नाम कहे छे–विष्टर मल्लिका, पीठ आसन्दी आसन । हवे जगत्‌ना नाम कहे छे–विष्टप, भुवन, लोक, जगत । जगत वाचक नामथी पति शब्द जोडवाथी–विष्टपपति जगतपति विगेरे श्रीजिनेन्द्रनां नाम थाय छे बीजा पण जिनेन्द्रना नाम कहे छे-जिन, ॥ ११३ ।

सर्वज्ञो वीतरागोऽर्हन्, केवली धर्मचक्रभृत्
तीर्थङ्करस्तीर्थकर-स्तीर्थकृद् दिव्यवाक्पतिः ११४
चेलं निवसनं वास-श्चीरमम्बरमंशुकम्
वर्षीयान् वृषभो ज्यायान्, पुरुपाद्यः प्रजापतिः ११५
ऐक्ष्वाकः काश्यपो ब्रह्मा, गौतमो नाभिजोऽग्रजः
सन्मतिर्महतिवीरो, महावीरोऽन्त्यकाश्यपः ११६
ज्ञातान्वयो वर्धमानो, यत्तीर्थमिह सांप्रतम्
वस्त्राद्यन्तदिगाद्यादि-संज्ञितो वृषभेश्वरः ११७
कुङ्कुमं रुधिरं रक्तं, कस्तूरी मृगनाभिजा
कर्पूरं घनसारं च, हिमं सेवेत पुण्यवान् ११८
समालम्भोऽङ्गरागश्च, प्रसाधनविलेपनम्
भूषणाभरणं रुच्यं, माल्यं माला गुणिस्रजम् ११९
मेखला रसना काञ्ची, हेमपर्यायसूत्रकम् ।
श्रोणीबिम्बे कटीसूत्रं, मानसूत्रमिवाहितम् ॥ १२० ॥

---

सर्वज्ञ, वीतराग, अर्हत, केवलिन्, धर्मचक्रभृत, तीर्थंकर, तीर्थकृत, दिव्यवाक्पति ॥ ११४ ॥ हवे वस्त्रनां नाम कहे—चेल, निवसन, वासस्, चीर अम्बर, अंशुक । हवे प्रथम जिनेन्द्र श्रीआदीश्वर प्रभुना नाम कहे छे—वर्षीयम्, वृषभ, ज्यायस्, पुरुषाद्य, प्रजापति, ॥ ११५ ॥ ऐक्ष्वाक, काश्यप, ब्रह्मन्, गौतम, नाभिज, अग्रज, । हवे चोवीशमा जिनेन्द्रना नाम कहे छे—सन्मति, महतिवीर, महावीर, अन्त्यकाश्यप, ॥ ११६ ॥

ज्ञातान्वय अने वर्धमान; जेमनुं तीर्थ-शासन हालमां प्रवर्ते छे वस्त्र वाचक नामोनी पहेलां दिशा वाचक नाम जोडवाथी-दिगम्बर दिग्वसन आशाम्बर इत्यादि नाम दिगम्बरना थाय छे ॥ ११७ ॥ हवे केसरनां नाम कहे छे-कुंकुम, रुधिर, रक्त । हवे कस्तूरीनां नाम कहे छे-कस्तूरी मृगनाभिजा । हवे कपूरना नाम कहे छे-कर्पूर, घनसार, हिम, तेनुं सेवन पुण्यशाली करे छे ॥ ११८ ॥ हवे विलेपनना नाम कहे छे-समालम्भ, अंगराग, प्रसाधन, विलेपन । हवे घरेंणाना नाम कहे छे-भूषण, आभरण, रुच्य । हवे पुष्पनी मालाना नाम कहे छे-माल्य, माला, गुणिन्, स्रज्, ॥ ११९ ॥ हवे कणदोराना नाम कहे छे-मेखला, रसना, काञ्ची । तथा सुवर्ण वाचक नाम थकी "सूत्र" शब्द जोडवाथी-हेमसूत्र, स्वर्णसूत्र विगेरे पण कणदोराना नाम थाय छे । ते कणदोरो केडमां एवा प्रकारे शोभे छे के जाणे केडने मापवाने एक दोरोज होयनी ! ॥ १२० ॥

महिरां मद्यमैरेयं, सीधुं कादम्बरीमिराम् ।
प्रसन्नां वारुणीं हालां, मधु वारां सुरां विदुः ॥ १२१ ॥
शुण्डासवस्तद्विधायी, शौण्डो गद्येत मद्यपः ।
शक्तोऽक्षद्यूतपानेषु, विचित्रा शब्दपद्धतिः ॥ १२२ ॥
सर्पिर्हैयङ्गवीनाज्यं, दुग्धं क्षीराऽमृतं पयः । उदश्विन्मथितं तक्रं, कालसेयं पिबेद् गुरुः॥
प्रायो वयोदशाऽनेहः-पूर्णं यौवनिकं विदुः ।
तारुण्यं यौवनं चान्त्यो, वार्द्धीनः स्थविरो मतः ॥ १२४ ॥
वंशोऽन्वयोऽन्ववायः स्या-दाम्नायः सन्ततिः कुलम् ।
ओघो वर्गश्च सन्तानः, काव्यमेव कवेः स्थितिः ॥ १२५ ॥
हंसो मरालश्चक्राङ्गो, हंसवाहः सनातनः ।
मयूरो बर्हिणः केकी, शिखी प्रावृषिकस्तथा ॥ १२६ ॥
नीलकण्ठः कलापी च, शिखण्डी तत्पतिर्गुहः ।
वरटा वारला हंसी, कोक ईहामृगो वृकः ॥ १२७ ॥

हवे दारुना नाम कहे छे-मदिरा, मद्य, मैरेय, सीधु, कादम्बरी, इरा प्रसन्ना, वारुणी, हाला, मधु वारा, सुरा ॥ १२१ ॥

शुण्डा, आसव, आ बे एक प्रकारनी मदिराना नाम छे । मदिरा बनाववावाळाने-"शौण्ड" कहे छे तथा मदिरा पीवावाळाने पण शौण्ड कहे छे। वळी जे पासा खेलवामां तथा जुगार रमवामां, अने मदिरापानमां समर्थ (चतुर) होय ते पण "शौण्ड" कहेवाय छे; आ प्रमाणे शब्दोनी रचना आश्चर्यकारक होय छे. ॥१२२॥ हवे घीनां नाम कहे छे-सर्पिस्, हैयंगवीन, आज्य । हवे दुधना नाम कहे छे—दुग्ध, क्षीर, अमृत, पयस् । हवे छाशना नाम कहे छे-उदश्वित्, मथित, तक्र, कालसेय । छाशने मेदवाळो मनुष्य पीवे ॥ १२३ ॥ हवे जुवान मनुष्योना नाम कहे छे-वयःपूर्ण दशापूर्ण, अनेहःपूर्ण, यौवनिक । हवे जुवानीना नाम कहे छे-तारुण्य, यौवन हवे बुढ्ढा पुरुषना नाम कहे छे—अन्त्य, वार्द्धीन, स्थविर, ॥ १२४ ॥ हवे कुळना नाम कहे छे-वंश, अन्वय, अन्ववाय, आम्नाय, सन्तति, कुल, ओघ, वर्ग, संतान । काव्य कविनी रचनाने ज कहे छे. ॥ १२५ ॥ हवे हंसना नाम कहे छे-हंस, मराल, चक्राङ्गः । हंस वाचक नाम थकी 'वाह' शब्द जोडवाथी हंसवाह आदि ब्रह्माना नाम थाय छे । हवे मोरनां नाम कहे छे-मयूर, बर्हिण, केकिन्, शिखिन्, प्रावृषिक. ॥ १२६ ॥ नीलकण्ठ, कलापिन्. शिखण्डिन्, । मयूरनो पति, अर्थात् मयूरवाचक नाम थकी पति शब्द जोडवाथी - मयूरपति इत्यादि कार्तिकेयना नाम थाय छे । हवे हंसीनां नाम कहे छे—वरटा वारला हंसी । हवे वरुना नाम कहे छे-कोक, इहामृग, वृक, ॥ १२७ ॥

हरिणो मृगः पृषत-स्तदङ्कः शर्वरीकरः ।
पन्नगोऽहिर्विषधरो, लेलिहानो भुजङ्गमः ॥ १२८ ॥
नागोरगौ फणी सर्प-स्तद्वैरी विनतात्मजः ।
सुपर्णो गरुडस्तार्क्ष्यो, गरुत्मान् शकुनीश्वरः ॥ १२९ ॥
इन्द्रजिन्मन्त्रपूतात्मा, वैनतेयो विपक्षयः ।
खमिन्द्रियं हृषीकं च, स्रोतोऽक्षं करणं विदुः ॥ १३० ॥
पुण्यं भाग्यं च सुकृतं, भागधेयं च सत्कृतम् ।
अघमंहश्च दुरितं, पाप्मा पापं च किल्बिषम् ॥ १३१ ॥
वृजिनं कलिलमेनो, दुष्कृतं तज्जयी जिनः ।
सदनं सद्म भवनं, धिष्ण्यं वेश्माथ मन्दिरम् ॥ १३२ ॥
गेहं निकेतनाऽगारं, निशान्तं निवृतं गृहम् ।
वसत्यावसथावासं, स्थानं धामास्पदं पदम् ॥ १३३ ॥
निकायं निलयं पस्त्यं, शरणं विदुरालयम् ।
खेयं खातं च परिखा, वप्रः स्याद् धूलिकुट्टिमम् ॥ १३४ ॥

हवे हरणना नाम कहे छे—हरण, मृग, पृषत । हरणवाचक नाम थकी अंक शब्द जोडवाथी-हरिणांक मृगांक, इत्यादि चन्द्रमाना नाम थाय छे । हवे सर्पनां नाम कहे छे—पन्नग, अहि, विषधर, लेलिहान, भुजंगम ॥ १२८ ॥ नाग, उरग, फणिन्, सर्प । सर्प वाचक शब्द थकी वैरिन्, शब्द जोडवाथी-पन्नगवैरिन्, सर्पवैरिन्, इत्यादि नाम गरुडना थाय छे तथा विनतात्मज, सुपर्ण, गरुड, तार्क्ष्य, गरुत्मत, शकुनीश्वर, ॥ १२९ ॥ इन्द्रजित्, मन्त्रपूतात्मन् वैनतेय, विपक्षय; आ नामो गरुडना छे । हवे इन्द्रियोना नाम कहे छे—ख, इन्द्रिय, हृषीक, स्रोतस्, अक्ष करण, ॥ १३० ॥ हवे पुण्यनां नाम कहे छे—पुण्य, भाग्य, सुकृत, भागधेय, सत्कृत । हवे पापना नाम कहे छे-अघ, अंहस् दुरित, पाप्मन्, पाप, किल्बिष, ॥ १३१ ॥

वृजिन, कलिल, एनस्, दुष्कृत, । पापवाचक शब्द थकी जयिन शब्द जोडवाथी-अघजयिन्, इत्यादि श्रीजिनेन्द्रनां नाम थाय छे । हवे घरना नाम कहे छे—सदन, सद्मन्, भवन, धिष्ण्य, वेश्मन्, मन्दिर, ॥ १३२ ॥ गेह, निकेतन अगार, निशान्त निवृंत, गृह, वसति, आवसथ, आवास, स्थान, धामन्, आस्पद, पद, ॥ १३३ ॥ निकाय, निलय, पस्त्य, शरण, आलय । हवे खाइना नाम कहे छे—खेय, खात, परिखा, । खाइ उपर जे माटीनो कोट होय छे तेने-वप्र, धूलिकुट्टिम, कहे छे । १३४ ॥

प्राकारः परिधिः सालः, प्रतोली गोपुराकृतिः ।
प्रासादसौधहर्म्याणि, निर्व्यूहो मत्तवारणम् ॥ १३५ ॥
वातायनं मत्तालम्ब–मालम्ब्यं सुखमासताम् ।
समः सवर्णः सजातिः, सदृक्षः सदृशः सदृक् ॥ १३६ ॥
तुल्यः सधर्मः सरूप–स्तुलाकक्षोपमाभिधा ।
विन्मन्यो विद्यमानश्च, गुरुस्थानोऽम्बुजाननः ॥ १३७ ॥
सिंहनादीति पर्याय–मुपमानेषु योजयेत् ।
व्यपदेशं निभं व्याजं, पदं व्यतिकरं छलम् ॥ १३८ ॥
छद्म वृत्तान्तमुत्प्रेक्षा, शब्दमान्यं च निर्णयेत् ।
व्रातः पूगः समाजश्च, समूहः सन्ततिर्व्रजः ॥ १३९ ॥
व्यूहो निकायो निकरो, निकुरम्बं कदम्बकम् ।
ओघः समुदयः सङ्घः, सङ्घातः समितिस्ततिः ॥ १४० ॥
निचयः प्रकारः पङ्क्तिः, पशूनां समजो व्रजः ।
समीपाऽभ्याशमासन्न–मभ्यर्णं सन्निधिं विदुः ॥ १४१ ॥

---

हवे किल्लानां नाम कहे छे—प्राकार, परिधि, साल । 'प्रतोली' शेरीनुं नाम छे । 'गोपुर' नगरना दरवाजानुं नाम कहे छे । हवे महेलनां नाम कहे छे—प्रासाद सौध, हर्म्य । 'निर्व्यूह' भींतनी खीलीनुं नाम छे। 'मत्तवारण' महेलनी फरती दीवालनी वाडनुं नाम छे ॥ १३५ ॥ हवे झरुखानां नाम कहे छे—वातायन, मत्तालम्ब, । सुखेथी बेसनाराओनो ते आश्रय होय छे । हवे बराबर (सरखा) ना नाम कहे छे—सम, सवर्ण, सजाति, सदृक्ष, सदृस, सदृश्, ॥ १३६ ॥ तुल्य, सधर्म, सरूप, तुलाकक्ष, उपमा, । विन्मन्य विद्यमान, गुरुस्थान, अम्बुजानन, ॥ १३७ ॥

अने सिंहनादिन, इत्यादि उपमा आपवी होय त्यां जोडवा । हवे कपटनां नाम कहे छे—व्यपदेश, निभ, व्याज, व्यतिकर, छल, ॥ १३८ ॥ छद्मन्, वृत्तान्त, आ बे शब्द उत्प्रेक्षानां नामो छे, आवी रीतेज बीजा शब्द पण लेवा । हवे समूहना नाम कहे छे—व्रात, पूग, समाज, समूह, सन्तति, व्रज, ॥ १३९ ॥ व्यूह, निकाय, निकर, निकुरम्ब, कदम्बक, ओघ समुदय, संघ, संघात, समिति, तति, ॥ १४० ॥

निचय, प्रकर, पंक्ति । पशुओना समूहने 'समज' कहे छे । हवे समीपना नाम कहे छे—समीप, अभ्याश, आसन्न अभ्यर्ण सन्निधि, ॥ १४१ ॥

अविदूरं च निकट-मविलम्बमनन्तरम् ।
जित्या हलिर्हलः सीरं, लाङ्गलं तत्करो वलः ॥ १४२ ॥
रेवतीदयितो नील-वसनः केशवाग्रजः ।
अर्जुनः फल्गुनो जिष्णुः, श्वेतवाजी कपिध्वजः ॥ १४३ ॥
गाण्डिवी कार्मुकी सव्य-साची मध्यमपाण्डवः ।
वृषसेनः सुनिर्मोको, दैत्यारिः शक्रनन्दनः ॥ १४४ ॥
कर्णशूली किरीटी च, शब्दभेदी धनञ्जयः ।
समवर्ती यमः कालः, कृतान्तो मृत्युरन्तकः ॥ १४५ ॥
धर्मराजः पितृपतिः, सूरसूनुः परेतराट् ।
शमनो यमुनाभ्राता, श्राद्धदेवश्च दण्डभृत् ॥ १४६ ॥
कुरुकीचकयोः शत्रु-र्वायुपुत्रो वृकोदरः ।
धर्मात्मजोऽजातरिपुः, कौन्तेयो भरतान्वयः ॥ १४७ ॥
कौरव्यो राजलक्ष्मा च, सोमवंश्यो युधिष्ठिरः ।
कृष्णं नीलाऽसितं कालं, धूमं, धूम्रमलिप्रभम् ॥ १४८ ॥
तमोऽन्धकारतिमिरं, ध्वान्तं संतमसं तमम् ।
श्वेतार्जुनौ शुचिः श्येतो, वलक्षं सितपाण्डुरम् ॥ १४९ ॥

अविदूर, निकट, अविलम्ब, अनन्तर. हवे हळना नाम कहे छे—जित्या, हलि, हल, सीर, लांगल. । हळ वाचक नाम थकी कर शब्द जोडवाथी—जित्याकर, हलिकर, इत्यादिः तथा - वल ॥ १४२ ॥ रेवतीदयित, नीलवसन, केशवाग्रज, आ वलदेवजीना नाम छे । हवे अर्जुनना नाम कहे छे—अर्जुन, फल्गुन, जिष्णु, श्वेतवाजिन्, कपिध्वज, ॥ १४३ ॥ तथा—

गाण्डिविन्, कार्मुकिन्, सव्यसाचिन्, मध्यमपाण्डव, वृषसेन, सुनिर्मोक, दैत्यारि, शक्रनन्दन, ॥ १४४ ॥ कर्णशूलिन्, किरीटिन्, शब्दभेदिन्, धनञ्जय, । हवे यमदेवनां नाम कहे छे—समवर्तिन्, यम, काल, कृतान्त, मृत्यु, अन्तक, ॥ १४५ ॥ धर्मराज, पितृपति, सूरसूनु, परेतराज्, शमन, यमुनाभ्रातृ, श्राद्धदेव, दण्डभृत् ॥ १४६ ॥ हवे भीमना नाम कहे छे—कुरुशत्रु, कीचकशत्रु, वायुशत्रु; वृकोदर । हवे युधिष्ठिरजीनां नाम कहे छे—धर्मात्मज, अजातरिपु, कौन्तेय, भरतान्वय ॥ १४७ ॥

कौरव्य, राजलक्ष्मन, सोमवंश्य, युधिष्ठिर, । हवे काळा वर्णना नाम कहे छे-कृष्ण, नील, असित, काल, धूम, धूम्र, अलिप्रभा ॥ १४८॥ हवे अन्धकारना नाम कहे छे-तमस्, अन्धकार, तिमिर; ध्वान्त, सन्तमस, तम । हवे धोळा वर्णना नाम कहे छे, श्वेत, अर्जुन, शुचि, श्येत, वलक्ष, सित, पाण्डुर तथा ॥१४९

शुक्लावदातं धवलं, पाण्डुः शुभ्रं शशिप्रभम् ।
लोहितं रक्तमाताम्रं, पाटलं विशदारुणम् ॥ १५० ॥
गौरं पीतं हरिद्राभं, पालाशं हरितं हरित् ।
हरिणी लोहिनी शोणी, गौरी श्येनी पिशङ्ग्यपि ॥ १५१ ॥
सारङ्गी शबली काली, कल्माषी नीलपिङ्गली ।
परागं मधु किञ्जल्कं, मकरन्दं च कौसुमम् ॥ १५२ ॥
उपचाराद्रजः पांसुं, रेणुं धूलीं च योजयेत् ।
कलङ्काऽवद्यमलिनं, किञ्जल्कं लक्ष्म लाञ्छनम् ॥ १५३ ॥
निर्वादमधमं पङ्कं, मलीमसमपि त्यजेत् ।
जनोदाहरणं कीर्त्तिं, साधुवादं यशो विदुः ॥ १५४ ॥
वर्णं गुणावलिं ख्याति-मवदानं तु साहसम् ।
प्रेष्यादेशनिदेशाज्ञा-नियोगाः शासनं तथा ॥ १५५ ॥
संदेशः प्रिययोर्वार्ता, प्रवृत्तिः किंवदन्त्यपि ।

---

शुक्ल, अवदात. धवल, पाण्डु. शुभ्र, :शशिप्रभ, । हवे लाल वर्णनां नाम कहे छे-लोहित, रक्त, आताम्र, । धोळो वर्ण अने काळा वर्ण साथे मळे तो 'पाजल' (गुलाबी) कहेवाय छे ॥ १५० ॥

हवे पीळा वर्णनां नाम कहे छे-गौर, पीत, हरिद्राभ, । हवे लीला वर्णनां नाम कहे छे—पालाश, हरित. हरित्, । हरिणी लोहिनी, शोणी, गौरी, श्येनी, पिशंगी, तथा-॥ १५१ ॥ सारङ्गी, शबली, काली, कल्माषी, नीलपिंगली, आ नामो रंगना भेदो वडे भिन्न भिन्न स्त्रीओने कहे छे । हवे मकरन्द (कमळ विगेरे पुष्पनी अंदर रंग बेरंगी वाळ जेवा झीणा तंतु) ना नाम कहे छे—पराग. मधु, किंजल्क, मकरन्द. कौसुम. ॥ १५२ ॥ तथा-उपचारथी पुष्पना नामो साथे रजस्, पांसु, रेण, तथा धुली ते मांहेथी कोइपण शब्दनो योग करवामां आवे तो—पुष्परजस्, पुष्परेणु, इत्यादि पण मकरन्दनां नाम थाय छे । हवे कलंकना नाम कहे छे—कलंक, अवद्य, मलिन, किंजल्क, लक्ष्मन्, लांछन, ॥ १५३ ॥

तथा-निर्वाद, अधम, पङ्क, मलीमस । कलंकनो त्याग करवो जोइए। हवे कीर्तिनां नाम कहे छे—जनोदाहरण, कीर्ति, साधुवाद, यशस्, ॥ १५४ ॥ तथा वर्ण, गुणावली, ख्याति । अवदान अने साहस, ए बे पराक्रमनां नाम छे । हवे हूकमना नाम कहे छे—प्रेष्य, आदेश, निदेश, आज्ञा, नियोग, शासन, ॥ १५५ ॥ परस्पर प्रीति धारनारना कथनने "संदेश" कहे छे । जगतूनी वार्ताने "प्रवृत्ति" अने लोकोनी अफवाने "किंवदन्ती" कहे छे । हवे कठणना

कठोरं कठिनं स्तब्धं, कर्कशं परुषं दृढम् ॥ १५६ ॥
अश्लीलं काहलं फल्गु, कोमलं मृदु पेशलम् ।
प्रत्यग्रं साम्प्रतं नव्यं, नवं नूतनमग्रिमम् ॥ १५७ ॥
पुराणं जरठं जीर्णं, प्राक्तनं सुचिरन्तनम् ।
भो रे हहो हे चामन्त्र, कश्चित्किञ्चन संशये ॥ १५८ ॥
द्राक्क्षणेऽह्नाय सपदि, निषेधे मा न खल्वलम् ।
उच्चैरुच्चावचं तुङ्ग-मुच्चमुन्नतमुच्छ्रितम् ॥ १५९ ॥
नीचं न्यगानतं कुब्जं, नीचैर्ह्रस्वं नयेत् परम् ।
अमा सह समं साकं, सार्धं सत्रा सजूः समाः ॥ १६० ॥
सर्वदा सततं नित्यं, शश्वदात्यन्तिकं सदा ।
शृङ्गी द्रुतिहरिर्नाथ-हरिस्तिर्यञ्चशृङ्गिणः ॥ १६१ ॥
गौश्चतुष्पात् पशुस्तत्र, महिषी नाम देहिका ।
वियोगं मदनावस्था-विरहं फुल्लकं विदुः ॥ १६२ ॥

---

नाम कहे छे—कठोर कठिन, स्तब्ध, कर्कश, परुष, दृढ, ॥ १५६ ॥

हवे मिथ्या अथवा अव्यक्त शब्दनां नाम कहे छे—अश्लील काहल, फल्गु । हवे कोमळना नाम कहे छे—कोमल, मृदु, पेशल । हवे नवीनना नाम कहे छे—प्रत्यग्र, साम्प्रत, नव्य, नव, नूतन, अग्रिम, ॥ १५७ ॥ हवे जुनाना नाम कहे छे—पुराण, जठर, जीर्ण, प्राक्तन, सुचिरन्तन, । हवे आमन्त्रण अर्थात् सन्मुख बोलाववाने वपराता अव्ययो कहे छे—भोस्, रे, हहो, हे, । कश्चित्, किञ्चन: आ बे नाम संशय अर्थमां छे ॥ १५८ ॥ हवे जल्दी अर्थवाळा नाम कहे छे—द्राक्, क्षणे अह्नाय, सपदि । हवे निषेध अर्थवाळा अव्ययो कहे छे—मा, न, खलु, अलम् । हवे उंचाना नाम कहे छे—उच्चैस्, उच्चावच, तुंग, उच्च, उन्नत, उच्छ्रित, ॥ १५९ ॥

हवे "नीचुं" अर्थवाळां नाम कहे छे—नीच, न्यक्, आनत, कुब्ज, नीचैस्, ह्रस्व । हवे साथे अर्थवाळां नाम कहे छे—अमा, सह, समम्, साकम्, सार्धम्, सत्रा, सजुष्, ॥ १६० ॥ हवे हंमेशना नाम कहे छे—सर्वदा, सतत, नित्य, शश्वत्, आत्यन्तिक, सदा । हवे शींगडावाळा तिर्यंचना नाम कहे छे—शृङ्गिन्, द्रुतिहरि, नाथहरि, ॥ १६१ ॥ हवे पशुनां नाम कहे छे-गो, चतुष्पाद् पशु, । हवे भसना नाम कहे छे—महिषी, देहिका । कामनी अवस्थामां जे विरह (जुदाइ) थाय छे तेने वियोग, तथा फुल्लक कहे छे ॥ १६२ ॥

प्रेमाभिलाषमालम्बं, रागं स्नेहमतः परम् ।
संहितं सहितं युक्तं, संपृक्तं संभृतं युतम् ॥ १६३ ॥
संस्कृतं समवेतं च, प्राहुरन्वीतमन्वितम् ।
वर्त्माध्वा सरणिः पन्थाः, मार्गः प्रचरसञ्चरौ ॥ १६४ ॥
त्रिमार्गनामगा गङ्गा, घोषो गोमण्डलं व्रजः ।
कृती नदीष्णो निष्णातः, कुशली निपुणः पटुः ॥ १६५ ॥
क्षुण्णः प्रवीणः प्रगल्भः, कोविदश्च विशारदः ।
विदग्धश्चतुरो धूर्त्त-श्चाटुकृत्कितवः शठः ॥ १६६ ॥
क्वापि नागरिको ज्ञेयो, गोत्रं संज्ञाङ्कनाम तत् ।
मुग्धो मूढो जडो नेडो, मूको मूर्खश्च कद्वदः ॥ १६७ ॥
स देवानांप्रियोऽप्राज्ञो, मन्दो धीनामवर्जितः ।
षष्टिकः कलमः शालि-र्व्रीहिः स्तम्बकरिस्तथा ॥ १६८ ॥

---

हवे स्नेहनां नाम कहे छे—प्रेमन्, अभिलाष, आलम्ब, राग, स्नेह । हवे युक्त (जोडाएला)ना नाम कहे छे—संहित, सहित, युक्त, सम्पृक्त, संभृत, युत. ॥ १६३ ॥ तथा-संस्कृत, समवेत, अन्वीत, अन्वित, । हवे रस्ताना नाम कहे छे—वर्त्मन्, अध्वन्, सरणि, पथिन्, मार्ग, प्रचर, संचर, ॥ १६४ ॥ जो रस्ता वाचक नामनी पूर्वमां 'त्रि' शब्द अने अन्तमां 'गा' शब्द जोडवामां आवे तो "त्रिमार्गगा" इत्यादि गंगा नदीना नाम थाय छे । हवे गायना वाडाना नाम कहे छे—घोष, गोमण्डल, व्रज, । हवे चतुरनां नाम कहे छे-कृतिन्, नदीष्ण, निष्णात, कुशलिन्, निपुण, पटु, ॥ १६५ ॥

तथा-क्षुण्ण, प्रवीण, प्रगल्भ, कोविद, विशारद, विदग्ध, चतुर, । हवे धूर्तना नाम कहे छे—धूर्त, चाटुकृत, कितव, शठ ॥ १६६ ॥ "नागरिक" धूर्तनो पर्याय कोइ ठेकाणे जाणवो । हवे नाम वाचक शब्द कहे छे—गोत्र, संज्ञा अङ्क, नामन् । हवे मूर्खनां नाम कहे छे—मुग्ध, मूढ, जड, नेड, मूक, मूर्ख, कद्वद, ॥ १६७ ॥ तथा-देवानांप्रिय, अप्राज्ञ, मन्द, तथा बुद्धिवाचक नामो थकी 'वर्जित' शब्द जोडवाथी तथा "धीवर्जित" "बुद्धिवर्जित" इत्यादि मूर्खना नाम थाय छे । हवे चोखा—भातना कहे छे—षष्टिक, कलम, शालि, व्रीहि, स्तम्बकरि, ॥ १६८ ॥

वत्सः शकृत्करिर्जातः, पोडन् पड्दशनः स्मृतः ।
शौण्डीरो गर्वितःस्तब्धो, मानी चाहङ्कृदुद्धतः ॥ १६९ ॥
उद्ग्रीव उद्धरो दृप्तो, नीचश्च पिशुनोऽधमः ।
चौरैकागारिकस्तेना–स्तस्करः प्रतिरोधकः ॥ १७० ॥
निशाचरो गूढचरो, हारकः पारिपन्थिकः । प्रस्तरोपलपाषाण–दृषद्धातुशिलाघनाः ॥
तत्र जातमयो लोहं, शातकुम्भं नयेत्परम् ।
साधीयोऽत्यर्थमत्यन्तं, नितान्तं सुष्ठु वै भृशम् ॥ १७२ ॥
स्फुटं साधु खलु स्पष्टं, विशदं पुष्कलामलम् ।
चित्राश्चर्याद्भुतं चोद्यं, विस्मयः कौतुकोऽप्यहो ॥ १७३ ॥
अभियोगोद्यमोद्योगा, उत्साहो विक्रमो मतः ।
क्षामं क्षान्तं कृशं क्षीणं, हीनं जीर्णं पुरातनम् ॥ १७४ ॥
शीर्णावसानं न्यूनं च, धैर्यं शौर्यं च पौरुषम् ।
रहोऽनुरहसोपांशु, रहस्यं च भिनत्ति कः ? ॥ १७५ ॥

हवे वाछडाना नाम कहे छे—वत्स शकृत्करि, जात । पोडत्, पड्दशन, आ बे छ दांतवाळाना नाम छे । हवे अहंकारीना नाम कहे छे–शौण्डीर, गर्वित, स्तब्ध, मानिन, अहंकृत, उद्धत ॥ १६९ ॥ तथा–उद्ग्रीव, उद्धुर, दृप्त, । हवे नीच मनुष्यना नाम कहे छे-नीच, पिशुन, अधम, । हवे चोरना नाम कहे छे –चौर, एकागारिक, स्तेन, तस्कर, प्रतिरोधक ॥ १७० ॥ निशाचर, गूढचर, हारक, पारिपन्थिक । हवे पाषाणना नाम कहे छे—प्रस्तर, उपल, पाषाण, दृषद्, धातु, शिला, घन, ॥ १७१ ॥

पाषाणमां जात (पेदा थएल.) अर्थात्–पाषाण वाचक नाम थकी 'जात' शब्द जोडवाथी प्रस्तरजात, इत्यादि तथा अयस्; लोह, ए नामो लोढाना थाय छे । तथा पाषाण वाचक नाम थकी 'जात' 'उद्भव' विगेरे शब्द जोडवामां आवे तो प्रस्तरजात प्रस्तरोद्भव, इत्यादि सुवर्णना नाम थाय छे । हवे "बहु" अर्थवाळा शब्दो कहे छे—साधीयस्, अत्यर्थ, अत्यन्त, नितान्त, सुष्ठु, भृश, ॥ १७२ ॥ हवे 'स्फुट' अर्थवाळा नाम कहे छे-स्फुट, साधु, खलु, स्पष्ट, विशद, पुष्कल, अमल, । हवे "आश्चर्य" अर्थवाळा नाम कहे छे—चित्र, आश्चर्य, अद्भुत, चोद्य, विस्मय, कौतुक, अहो ॥ १७३ ॥ हवे उद्यमना नाम कहे छे–अभियोग, उद्यम, उद्योग, उत्साह, विक्रम । हवे दुर्बळना नाम कहे छे-क्षाम, क्षान्त, कृश, क्षीण, हीन, जीर्ण पुरातन, ॥ १७४ ॥ शीर्ण अवसान न्यून । हवे धीरजनां नाम कहे छे-धैर्य, शौर्य, पौरुष, । हवे गुप्त (छाना)नां नाम कहे छे-रहस्, अनुरहस उपांशु, रहस्य । कोइनी गुप्त वातने कोण प्रगट करे ? अर्थात् प्रगट करवी न जोइए ॥ १७५ ॥

कीनाशः कृपणो लुब्धो, गृध्नो दीनोऽभिलाषुकः ।
क्षिप्राशुमङ्क्ष्वरं शीघ्रं, सहसा झटिति द्रुतम् ॥ १७६ ॥
तूर्णं जवः स्यदो रंहो, रयो वेगस्तरो लघुः ।
प्राध्वंकृतः सितो बद्धः, सन्धां नीतो नियन्त्रितः ॥ १७७ ॥
नियमितः शृङ्खलितः, पिनद्धः पाशितो रिपुः ।
कान्तं कमनं कम्रं च, कमनीयं मनोहरम् ॥ १७८ ॥
अभिरामं रमणीयं, रम्यं सौम्यं च सुन्दरम् ।
चारु श्लक्ष्णं च रुचिरं, प्रशस्तं हृद्यबन्धुरम् ॥ १७९ ॥
दर्शनीयं मनोज्ञं च, चित्तपर्यायहारि च ।
अवश्यायं तुषारं च, प्रालेयं तुहिनं हिमम् ॥ १८० ॥
नीहारं तत्करं विद्धि, मृगाङ्कं रोहिणीपतिम् ।
चारोऽवसर्पः प्रणिधि-र्निगूढपुरुषश्चरः ॥ १८१ ॥
तद्वाँनुक्तः सहस्राक्षः, सत्यार्थे ऋतसूनृते ।
अत्यन्ताय चिरायेति, प्राह्णेऽकस्माद् बलादिति ॥ १८२ ॥

हवे कृपण (कंजुस) ना नाम कहे छे–कीनाश, कृपण, लुब्ध, गृध्न, दीन, अभिलाषुक, । हवे उतावळ (शीघ्र) वाचक शब्दो कहे छे–क्षिप्र, आशु, मङ्क्षु, अर शीघ्र, सहसा, झटिति, द्रुत, ॥ १७६ ॥ तथा–तूर्ण, जव, स्यद, रंहस्, रय, वेग, तरस्, लघु । हवे बांधेला (केद करेला) नाम कहे छे– प्राध्वंकृत, सित बद्ध संधानीत नियन्त्रित, ॥१७७॥ तथा–नियमित; शृंखलित, पिनद्ध पाशित । हवे सुन्दर (खुबसुरत) ना नाम कहे छे- कान्त, कमन, कम्र, कमनीय, मनोहर, ।१७८। तथा–अभिराम, रमणीय, रम्य,, सौम्य, सुन्दर, चारु, श्लक्ष्ण, रुचिर, प्रशस्त, हृद्य, बन्धुर, ॥ १७९ ॥ दर्शनीय, मनोज्ञ, तथा चित्तना पर्यायवाळा नाम थकी हारिन्, शब्द जोडवाथी मनोहारिन्, विगेरे पण मनोहर वाचक थाय छे । हवे बरफनां नाम कहे छे–अवश्याय, तुषार, प्रालेय तुहिन, हिम. ॥ १८० ॥

तथा–नीहार । बरफ वाचक नाम थकी कर शब्द जोडवाथी अवश्यायकर इत्यादि, तथा मृगाङ्क, रोहिणीपति ए नामो चन्द्रमाना छे । हवे गुप्त समाचार देवावाळानां नाम कहे छे—चार, अवसर्प, प्रणिधि, निगूढपुरुष, चर ॥ १८१ ॥ ए नामो थकी वत शब्द जोडवाथी चारवत इत्यादि इन्द्रना नामो थाय छे । हवे सत्यना नाम कहे छे—सत्य, ऋत, सूनृत, । "अत्यन्ताय" बहुवाचक छे । "चिराय" घणो वखत एवा अर्थमां छे । "प्राह्णे" दिवसना पहेला पहोरनुं नाम छे । "अकस्मात्" अचानक वाचक छे । "बलात्" जबराइनुं नाम छे ॥ १८२ ॥

प्रायेणेति कृतिश्चेति, विभक्तिप्रतिरूपकम् ।
रम्भा स्त्री कदली चिह्नं, मोचा सारतरुश्च सा ॥ १८३ ॥
कीचको ध्वनिमद्वेणु—स्तालो गेयक्रमोद्भवः ।
पुष्करं मुरजं पद्मं, हस्तिहस्ताग्रनामकम् ॥ १८४ ॥
निस्तलं वर्तुलं वृत्तं, स्थपुटं विषमोन्नतम् ।
दीर्घं प्रांशु विशालं च, बहुलं पृथुलं पृथु ॥ १८५ ॥
उल्वणं दारुणं तिग्मं, घो तीव्रोग्रमुत्कटम् ।
शीतकं तिमिरं याप्यं, मन्दं विद्धि विलम्बितम् ॥ १८६ ॥
सौहार्दं सौहृद्यं,हृद्यं, सौहृद्यं सख्यसौरभम् । मैत्री मैत्रेयिकाजर्यं,साहाय्यं सङ्गतं मतम् ॥
स्वभावः प्रकृतिः शीलं, निसर्गो विस्रसा निजः ।
योग्यो गुणनिकाभ्यासः, स्यादभीक्ष्णं मुहुर्मुहुः ॥ १८८ ॥
मृषालीकं मुधा मोघं, वितथं विफलं वृथा ।
विधुरं व्यसनं कष्टं, कृच्छ्रं गहनमुद्धरेत् ॥ १८९ ॥

---

"प्रायेण" अनिश्चय वाचक छे, "कृतिः" क्रिया अथवा कार्य अर्थमां छे आ बधा विभक्त्यन्त सदृश अव्ययो छे । रम्भा, कदली, अने मोचा, ए त्रण केळना नाम छे. वळी रम्भा, ए ते नामनी देवोनी अप्सरानु नाम छे कदलीए ध्वजानुं नाम छे,अने मोचा ए शीमळाना झाडनुं नाम छे ॥१८३॥ "कीचक" अवाजवाळा वांसने कहे छे ।"ताल"गायनना शब्दोना क्रम वडे जे उत्पन्न थाय छे ते कहेवाय छे । मृदंग. कमल, अने हाथीनी सुंढना अग्र भागने "पुष्कर" कहे छे ॥ १८४ ॥ हवे गोळ आकारना नाम कहे छे—निस्तल, वर्तुल, वृत्त । स्थपुट अने विषमोन्नत, उचा-नीचा विषम स्थळने कहे छे । हवे 'लांबा' अर्थवाळा नाम कहे छे—दीर्घ, प्रांशु, विशाल, । हवे विस्तारवाळाना नाम कहे छे—बहुल, पृथुल. पृथु ॥ १८५ ॥ हवे 'तीव्र' अर्थवाळां नाम कहे छे—उल्वण. दारुण, तिग्म घोर. तीव्र, उग्र, उत्कट । हवे वार लगाडीने काम करनारना नाम कहे छे—शीतक, तिमिर, याप्य, मन्द, विलम्बित, ॥ १८६ ॥

हवे मित्रतानां नाम कहे छे—सौहार्द, सौहृद, हृद्य. सौहृद्य, सख्य, सौरभ, मैत्री, मैत्रेयिका, अजर्य. साहाय्य, संगत, ॥ १८७ ॥ हवे स्वभावना नाम कहे छे—स्वभाव, प्रकृति, शील, निसर्ग, विस्रसा; निज, । "योग्य" लायकनुं नाम छे । हवे महावराना नाम कहे छे—गुणनिका, अभ्यास । हवे वारंवारना नाम कहे छे—अभीक्ष्ण, मुहुर्मुहुस ॥ १८८ ॥ हवे जुठाना नाम कहे छे—मृषा, अलीक, मुधा, मोघ, वितथ, विफल, वृथा । हवे दुःखना नाम कहे छे—विधुर, व्यसन, कष्ट कृच्छ्र, गहन । दुःखने दूर करवुं जोइए ॥ १८९ ॥

समस्तं सकलं सर्वं, कृत्स्नं विश्वं तथाखिलम् ।
शकलं विकलं खण्डं, शल्कं लेशं लवं विदुः ॥ १९० ॥
मर्मकोशं च कलहं, परिवादं छलं नयेत् ।
शोणितं लोहितं रक्तं, रुधिरं क्षतजासृजम् ॥ १९१ ॥
सततानारताजस्रा—न्वहं कन्यापतिर्वरः ।
उद्वाहः परिणयनं, विवाहश्च निवेशनम् ॥ १९२ ॥
शुषिरं विवरं रन्ध्रं,छिद्रं गर्तं च गह्वरम् ।
श्वभ्रं रस्यं च पातालं नरकं यान्त्यमेधसः ॥ १९३ ॥
अदभ्रं भूरि भूयिष्ठं, बंहिष्ठं बहुलं बहु ।
प्रचुरं नैकमानन्त्यं, प्रभूतं प्राज्यपुष्कले ॥ १९४ ॥
भावो भवश्च संसारः, संसरणं च संसृतिः ।
तत्त्वज्ञश्चतुरो धीरस्त्यजेज्जन्मजवं जवम् ॥ १९५ ॥
ओजस्व्यूर्जस्वी तेजस्वी, तरस्वी च मनस्व्यपि ।
भास्करो भासुरः शूरः, प्रवीरः सुभटो मतः ॥ १९६ ॥

---

हवे सघळा अर्थवाळां नाम कहे छे—समस्त, सकल, सर्व, कृत्स्न, विश्व अखिल । हवे पदार्थना कटकाना नाम कहे छे—शकल, विकल, खण्ड, शल्क, लेश, लव, ॥१९०॥ हवे झघडा वाचक शब्दो कहे छे—मर्मकोश, कलह, । "परिवाद" निन्दा अर्थमां छे, तथा "छल" शब्द कपटवाचक छे। हवे "लोहि" अर्थवाळां नाम कहे छे—शोणित, लोहित, रक्त, रुधिर, क्षतज, असृज् ॥१९१॥ हवे हर वखत (निरंतर) ना नाम कहे छे—सतत, अनारत, अजस्र, अन्वह, । कन्याना पतिने "वर" कहेवाय छे । हवे लग्नना नाम कहे छे—उद्वाह, परिणयन, विवाह निवेशन, ॥ १९२ ॥

हवे खाडाना नाम कहे छे—शुषिर, विवर, रन्ध्र, छिद्र गर्त, गह्वर । हवे नरकनां नाम कहे छे—श्वभ्र, रस्य, पाताल, नरक, जे दुष्ट मतिवाळा होय ते नरकमां जाय छे ॥ १९३ ॥ हवे पुष्कळ ( घणा ) ना नाम कहे छे—अदभ्र, भूरि, भूयिष्ठ, बंहिष्ठ, बहुल, बहु, प्रचुर, नैक, आनन्त्य, प्रभूत, प्राज्य, पुष्कल, ॥ १९४ ॥ हवे संसारना नाम कहे छे—भाव, भव, संसार, संसरण, संसृति, जन्मन् । तत्त्वनो ज्ञाता, चतुर, तथा धीर पुरुष जे होय ते आ संसारना वेगने जलदी त्यजी दे ॥ १९५ ॥ हवे प्रतापीनां नाम कहे छे—ओजस्विन्, उर्जस्विन, तेजस्विन, तरस्विन, मनस्विन्, । हवे शूरवीरनां नाम कहे छे—भास्कर, भासुर, शूर, प्रवीर, सुभट, ॥ १९६ ॥